প্রয়োগরভুমালা ব্যাকরণস্য

कार्तिकावली।



পুৰুষোত্তম হিদ্যাবাগীশনির্মিতা।

04.013

কোচবিহারান্তর্গত থাগারাবাটীনামক গ্রামনিবাসি

किमिषानाथ विद्यावागीएमन

প্রকাশিতা।

েকোচবিহার।

কোচবিহার রাজকীয় যন্ত্রে মুদ্রিতা।

শকাষ্ণঃ ১৮১৬। বজাব্দঃ :০০১। ^১ ১লা মাঘঃ। 1894

কৃতঃ শুদ্ধিপত্রম্।

| অধ্যম্ | शंकम् । | नृष्ठीग्रार । | পঙ্কো। |
|---------------------------------|---|---------------|------------|
| भ ्य | मृत्युत | ১২৬৮ | ъ |
| জ্বাপ্রভার: | কু শপ্রহার: | 32 9 0 | २७ |
| চিহিতাদপি | ্ব বিহিতামপি | 2 542 | २२ |
| রগুণেহপি | র গুণ ুত্বস্প | 5 298 | २৮ |
| नु कोस्त | ज् षीड्र्य · | 7 5 47 | > |
| ভূমান অ ত্ত ত্ত্ | ত ্ত | 91 | 7.7 |
| প্রম.ড প্রম.ড | প্রমিতি | • 254. | રછ |
| প্রাদূর্য্যা | था मृग्ग्। मि | 2 427 | ٥ |
| নিতাং র্থা ২মারস্ত: | নিত)†থেনির মা র ন্তঃ | ** | 22 |
| हेडि <u>क</u> ा | ইতিকু1 | • " | . 49 |
| ং।৽ভগ ম্বোতপি | ক্তে _। য | 5745 | ٠ هد |
| ডেম্ভ্বিথিমানে অস্ভ্বিথিমানে | অস্ভৃবিবি দ্য মানে | 79 | ۶. |
| क्रान्यश्चिम् इत्याश्चिम् | ছন্দোহস্থ:রাখা | 25P.C | ₹8 |
| তানি | শিতান | 7 58-0 | 8 |
| প্রস্থাব | প্রস্তাচ | •• | æ |
| রচ্যন্তরোঃ চার্থে | রচ্ <i>া</i> ন্ত:য় ঃ চ্ য র্থে | ,, | ୬ ୩ |
| म शनकर्ष ः | म श्नकर्य ः | >597 | ৩ |
| কেককৰ্ছত্বে | <u>রেকক র্থত্বে</u> | ,, | >> |
| নোকসন্মত | লে ্কসম্ম ত | 7595 | २७ |
| পহুচকে | পর্৴ ক | 7590 | ۶ |
| জ দীতো ব | ষ্পীতেন্ত্ৰ | 2 4 2 8 | 25 |
| ক্তোগপি | ক্তে _ৰ 'য পি | ** | ২৮- |
| র্রাডে | र्स ् | 2 < 29 | · ` a |
| স্থ ক | ় স্থ র | 7599 | ર |
| অবা.। | অপ্রা। | 2000 | 70 |
| প্রদা | প্রাদা : | ,, | ২৭ |
| ব্ৰদাইতা | ব্ৰশহত্য | 2007 | 58 |
| মিত্বৰ্থ | নি হার্থ• | 2005 | २७ |
| ৰবফ েশ | বৰঊন্ডে | >0° © | . ২8 |
| কপ্ | ক্যপ | 70.8 | >> |
| ৰা ধি তা | বাধিদ্বা | 70.4 | 3 |
| ছ:ণা | ঘ্যুগে! | , | • |
| - ব্যথিত্বা | বাধিত্ব | >025 | 49 |
| (ধয় | (ধর্ম ১ | 2010 | ર |
| | | | |

| खबर् । | অশুদ্ধ। | পৃষ্ঠায়াং। | পত জে 1 |
|----------------------------|--|------------------|------------------|
| অনাঙ্গাণ্ | অশ্বাদ্য।ণ্ | . \$0,0 c | c |
| ह गर <i>ड</i> ी | প্লুঙ্গ েড ী | >>>> | >@ |
| মুগন্ত:বাাদুর্গ | স্থস্তব্যঃ স্থ ণঃ হুৰ্গন্তব্যোহৰ্গঃ | ५७२ १ | • |
| બુ હ: | শেক্ষাপনুদঃ পুত্ৰঃ | :৩২৮ | ર |
| বকাদ:য়া | প্রবকাদয়েগ্ | 2 <i>00</i> 8 | . 39 |
| र्क्ष-क्र: | <i>क्</i> र व्हः | 2002 | 2 |
| ভাগ্যাৎ | ভা গগ ে | ,, | ર |
| নোচার্যাং | নোচ্চার্য্যৎ | 2080 | > α |
| বাচিবাদ্বা | বাচি স্থ†দ্বা | ., | 74 |
| ত্রিষ | ত্তি বু | 2 2 8 8 | ٩ |
| फ ल इ | ক ল হ | 2083 | २२ |
| ভন | (ভেন | ,, | ં ર |
| এতেমপ | এ: ত ৰূপ | 2 5 8 F | 20 |
| ন্দান্তর্ভ কন্ত্ৰ | নদাদ) ন্তর্গতত্ত্ব | ,, | ۶۶ |
| পতিহত্ন | প্ৰতি>ত্নী | 2062 | . 55 |
| ভদ্বাক্ য | ভদ্ব†ক ্য | ,, | \$8 |
| অব্তং | <u>অ</u> কু • | >3065 | ٥ |
| ऊ ब न्हार | ক্তৰ শুদ | ,, | 29 |
| डें ड | ই ত্তি | ; 0 (8 | २२ |
| (ক.ম ক র | (ক্ষমস্কর | ,. | ২৩ |
| কর্ম্মোপদে | কর্ম্ম ্পপ দে | > ७० व | ર |
| ই দ্বিং | इ. किः | 2 2 GF | 79 |
| कु कृ | শ্বাদৃক্ | १७७१ | 2.0 |
| শত্রুল্যা | শক্তুলো | ,• | ₹ € |
| छ। इंगः ड | ভাষ্যতে | ३ <i>७</i> ७२ | 2 |
| গোষা | (গেষ1 | ১৩৭০ | :0 |
| র্†বনংগ | র † বণঃয় া | ** | ₹¢ |
| मपृ≈ | . मर् का पृ*ग | 1991 | 71- |
| ব্রা ধারণ | ন ধারণ | ,, | •• |
| বেগেঃ | য†গঃ | 2090 | 9 |
| र् र नर छ े: | স্গতৌ - | ५७ १८ | २२ |
| শ্রেনে | শয়নে | 2042 | 40 |
| উপশ্ দসমশ্যেন | উপপদসম∤েসন | " | २४ |
| দেৱা | শেক্তাং | 7020 | ર |
| আভাবিভা তা নি | আভাবীহ্য ত্তাপি অস্তীতি | 30F8 | 38 |
| ञ्जाहि नक्ष | <u>ভাগে।</u> হ | 204 9 | ১৯ ২ ৬ |
| -1.7 | חחים , | | 13 |

| প্ৰভাষ | অশুদ্দ্ । | পৃষ্ঠারাং। | পঙ্কো |
|----------------------------|--|---------------|-----------|
| গল্ডমি শিচত | গন্তং নিশিত ভ | ১৩৮৮ | 32 |
| গল্ধায়ে স | গল্ভধা ষ্ য | 20pp | 34 |
| शन एड | গল্ভডে | ð | >€ |
| মৰ্ছ ভি | অহ্তি | ₫ | 3¢ |
| ইতাৰ্যাং | ইতাসগ্ৰ | . >245 | e |
| পানাদীনা 🕈 | পানানীনা ২ | ১৩৮৯ | 9 |
| স্যাদিতি তা ৎপর্যা° | যক্ ন স্ দিভিভা ৎপ ৰ্যিং | ンクケシ | 78 |
| উনঃ | ইন: . | १७५३ | 42 |
| দ্বিকান দি | দ্বিকচিনাদি | ५७५ ० | ۲۶ |
| বিদ্ <u>নে</u> | বিদ ্জানে | • ১৩৮৯ | 23 |
| ক†ৰ্যাদ্যা | কাৰ্য্য দ্বল | 2020 | 2. |
| নীবিকরণভাবঃ | নী বিকর্ণাভাব: | > > > 0 | 59 |
| চুরা দ্বি | চুরা দি | • 2020 | 3.9 |
| প্রমস্থ | পদর্মস্ত | ,• | ₹•' |
| প্রশ্ন্যান্তা | প্রশাস্যত্য | •• | ર ૭ |
| যুঙ | মু ঞ্ | 2007 | ٩ |
| আদৃৰ্ভঃ | তঃ পুতঃ | 202€ | • |
| রফ্টকদ্য | রফকপ্র | 9506 | 2 |
| দাহ্অ া্হ্যাৎ | <u> ৰাহচৰ্য্যাং</u> | " | \$2 |
| (লালুক্চ | নোলুক্চ | 55 0 6 | 42 |
| भान गर्भी ल : | শ্লনশীলঃ | >8.0 | 22 |
| नगर मीलः | नम ्भीलः | 28 • 8 | 2. |
| ভৰ্গ | उ र र्श | 2086 | ۲ |
| শ্ব ক্ল | শ্ব | 3808 | २७ |
| হূমি | ভূ মি | 2879 | 65 |
| <u> जर्</u> | छ इ _. ३ | 7872 | . 9 |
| অনুসাচঃ | ∞:নুবচেঃ | \$8\$2 | 8 |
| অ্শন্তেঃ | . অশন্তঃ | ,• | ۵۰ |
| ইত্ত | ই খ্যুত্ত | 7850 | 20 |
| প্রেরভাক | প্ৰেভ ত্মাচ | 7858 | 27 |
| ঘট | ঘ্ | 1850 | 29 |
| ব্যভেতি | নাতে তি | 280€ | . 2 |
| শীঙ্পু ঙ্ | बी ्शृष्ठ् | >৪৩৮ | > |
| निड्रंडितः | শিভ্ভেদঃ | 7804 | 2 |
| তপ্ল | তৃপ | >88¢ | 24 |
| क्रूटव्हा | <i>কু</i> (ক) | >889 | ¢ |
| | | | |



| শুষ্ | অ শুদ্ধ। | পৃষ্ঠায়াং। | পড় জে |
|----------------------------------|---------------------------------|------------------|------------|
| ডিয় ুনা | অন্সন† | , ,884 | 20 |
| ख श्चा | তথা . | , ,, | 39 |
| ङ म्राष्टः | ভ দ্যট ঃ | •> | ٤5 |
| যু ক্ততে | মু চ্যতে | 11 | ২৩ |
| অ্বাৰ্দ্ধ | क्र7र्भ\$ | >84> | ۷۵ |
| নুপতেঃ | নুপপ তেঃ | 2845 | , ,8 |
| পারারণং | পারায়ণং | 7868 | ₹ ৫ |
| माटनी | बाटना | 380= | 4 |
| जा टनो | ञ्दम1 | 1, | 34 |
| नाटको | নাদে। | ,, | ٥. |
| শাহুগং | मीचून९ | 7847 | ર |
| ৰমিঃ | যমি | ,, | 36 |
| জনবিত্র স্থি | জ্ব র্ক্ত রি | >8@8 | ۵ |
| इ क | 9 34 | 2896 | 29 |
| শিষুর্গতিঃ | গীয়ু ডিঃ | ,, | ೨೦ |
| क इंडिंग | অর্চ ্ | 389• | b |
| হ রেভ'ড্য াং | হ ের কাভ্যাৎ | , , | 28 |
| বা শুস্দ্য | বাশৰুস্য | 0184 | 39 |
| গুস্ গুৰ | শ্রু গুরু | 2* | २७ |
| क भ्य | ডি পিটকস্য | 2 8 4 8 | ٠ |
| ছাদাইতি | ঘ:স∛তি | ,, | 20 |
| যু্থপ | যূপ প | ,, | 78 |
| বক্স্যবিস্তার: | বাক ্য স্য িস্তরঃ | 3810 | • |
| জা :ড্রাকরং | छ . टेट्राकडूर | ,1 | 20 |
| ভূণান:৲বিস্থারে) | ভূগানা৲বি স্ত রো | ,, | 36 |
| তৃণস্যবিস্তারে৷ | তৃণদ্যবিস্তরো | ٠, | २७ |
| যুপ | যুপ | 389 9 | २३ |
| म म् | যস্য | >89> | २ • |
| বিক ্ত িম্ | সিদ্ধার্থমিদ ং | ,, | 20 |
| બ ર્તી (૧૪ ૭ ૦ | পরীণে ঘঞ | 28₽• | 28 |
| নপৃংশক | নপু্ৎসক | 2822 | 22 |
| বিধিকা | ৰী থিকা | ,, | >> |
| অ খ্ৰ | অ1গন | 9) | २७ |
| নিহ | খ নু | ,, | 26 |
| ब्रटन | घटना | 781-0 | ٩ |
| বিছক্তিলোপ | মবি ডক্তিলোপ: | 53 | >• |

| ध क्षम् । | অগ্ ৰম্। | পৃষ্ঠায়াং। | প্তকো |
|-------------------------|------------------------------|-------------|-------------|
| নিক্ষকৃট | নিক্ষপট | 28FC | ;2 |
| ভূমর:নাং | ভূম্রগোং | >878 | >9 |
| <u>ভারনাময়ে</u> | শ্রে শীয়ার | ,, | 59 |
| শাক চীকা | শাকটিক: | ,, | ₹• |
| ভূ তে) | <i>च</i> ्चे र | • ', | ₹• . |
| ৰীনাবিষয়ে | হ ী ণাবিহ ে য় | >864 | ર |
| ক্কানপ্ৰকান | ক্ৰণিপ্ৰহ্লাণ | " | ২৩ |
| বাৰ্থৎ | वं∫र्षः ं | >8ዾዾ | >2 |
| আন্দশ | আদেশে | 2872 | >• |
| মুৰ্ব্তোভূ | মূৰ্ন্তে ীসূ | • | >• |
| হরেদশ | ब ट्ड क न | 79 | >9 |
| ন্দে য | শৌষ | 7897 | |
| य कृतन् | স হ _ু র ন্ | • >895 | ۶. |
| সনোহরা ক্ষী ৎ | মনোহরা জী < | ,, | 2.7 |
| লৌহাদিবাম্মপি | লে)গদিকমপি | " | ેર |
| र्जनः | র্ডনঃ | 78%0 | • |
| जन्द्रीर ्थ श्चि | অনুর্কি:শুই | 7870 | 24 |
| প্রিয়াতে শ্বে | প্রি ঘ াতে>জ্ঞে | ,, | >0 |
| সোগভেদে ত স্থ | যোগতে:দ ধ্ র | ,' | • >8 |
| ভাগুনাং | অ †গুন?ং | :858 | 8 |
| উ গ্ | उ च्च | >8≥¢ | 58 |
| ৰ্যাদ্ব ে শ | ফ চ ঘূনো | ** | २ऽ |
| র ক্ষ ঃ | র্গ: | 5826 | ર |
| শিষ্টে | मीहरू इ | >8\$9 | \$\$ |
| শোষনয়োঃ | পোষণয়ো: | ,, | 10. |
| বাবণাৰ্গ | বারণাথ | 28.₽ | , 75 |
| হ:নিজ্ঞানি | • হানিডানি | 6 | ર |
| ୬ ୬/ଜେଖ୍ ଲ | শূলি দুনি | •• | • |
| রুষিদৃ শি ঃ | • পৃষিদূ শিঃ | ,, | 9 |
| न्बि | লূনিঃ | ** | 24 |
| ু ' ধুলিপাঠে | ্ ধূনপাঠে | ,, | २ ७ |
| के कि | টাক † রা∿ | > 0 • • | . 24 |
| কর্মান | क र्या [€] श | 24.2 | ٩ |
| অঞ্চি | <i>આ</i> ંકું | ., | 2 |
| প্রভৃতিনাথ | প্রভূতি,নাং | ٠, | 7.5 |
| ভ ্টিক ৷ | হঠাক: | > 4 0 2 | >8 |
| CIA A1 | • | | |

-7

| ए कम् । | कालंबम् । | शृ ष्ठीवर । | পৎক্রে । |
|---------------------|------------------------------|--------------------|------------|
| অ'প্ৰস্থ | আপ.পস্ত | . >0.3 | હદ |
| যোনাংখাপি | (হ্যাগার্থস্থাপি | ,, | 22. |
| দ্বা প্রোপ্ত | ত্বাপ্রাপ্তে | ,, | ۶. |
| कक्तीरंडविटीरः | <i>ক ম</i> াীতিরিভিদ্বিতীয়: | •• | \$2 |
| হিল্পনা | <u>মিশ্রণা</u> | 2600 | . 22 |
| दे न्द्रा | ঈপ্স। | >€ • 8 | २३ |
| ন্মাসঃ | ⊱∤ শ ম : শঃ | >€₹૭ | 78- |
| রোদত্তা | বে[দস্তা | > € ₹ 8 | 9 |
| ছৰ্ কাধ্ | হুব্ব ীধ্র | 2022 | २ 8 |
| লাখ্যা ৰ্থ: | मा स्तर्शः | 7600 | 10 |
| ভূকি জি:1 | ভূজি .ক্রিয়া | 2008 | • |
| পু জ্বা | পুৰে | 3000 | 43 |
| হ ৎসক(ন্ | ব ৎসকান্ | 5€ 0≥ | ર |
| এত্যলম্বেন | এতফুলত্বেন | 19 | : a |
| অ:কারান্ত দ্ব | আকারাশ্বাদ্য | 2680 | 25 |
| (লাপন | লে ' পনৎ | 2682 | 8 |
| ≈ .व.ित | শরদি | 2488 | 2 |
| | আখ্যাতস্থ | | |
| অধ্যবাস্তাৎ | অ্প্যবান্তাৎ | >> • | |
| विश्व ा ७ १ | অধ্যবাত্ত 🔍 | >>-> | ३३ |

আখ্যাতস্ত শুদ্ধিপত্ৰন্।

| অশ্ভম্। | शक्ष् | পৃষ্ঠায়াং। | পঙ্কৌ। |
|-------------------------|------------------------------|--------------------------------|------------|
| ম্ভাতাৰ :: | তীত্যস্বয়: | 282 | b |
| অ থছ্মনি | ন্দ্রী য়ত্মণি | , ,, | ۵ |
| ভ ক্ৰপা ণি | তদ্ৰপাণি | " | 5. |
| चन्मः | বশ্ব | 19 | 3 ર |
| ত্যাক্ষা ত | আ <i>খ্</i> য়া <u>ত</u> | ,, | *1 |
| নক্ষজণতে | নখ্যজ† তৌ | 2) | \$5 |
| কিডুতা | <u>কি</u> ডূতা | ≈⊄• | >> |
| रक् माপडा | দক্ষ শ্যাপত্য | " | 22 |
| প্রতিপাদিত | প্রতি পাদিতা | ,, | 78 |
| পূতী | দূতী | 1,9 | 5€ |
| म्राथ्रा । | দ্যাখা হা | \$0 \$ | ٠, |
| ক †দি | ज ः)†नि | ,, | ۵ |
| ধাৰূ ে ভা | ধা তুল্ভা1 | •, | 2. |
| বহ্নতে | বক্ষ্যতে | 21 | 59 |
| বক্ষাণ | বক্ষ্যাণ | ** | ₹8 |
| ভূবাদে | ভূবাদেশ | •, | 26 |
| ষুকতি | মূ ক তি | ৯৫৩ | P & |
| ষোৰুকক্যতে | <i>ন</i> োষুষ্ক্য ে ত | ୬୯୭ | 59 |
| যুদক ি | ষুকক ি | 29 | 34 |
| <u>বোষ্</u> দক্যতে | <u>ষোমুকক্যতে</u> | 248 | 25 |
| ष्य डिस् निरकी | ক্ষাতিদেশিকে | ,, | 35 |
| ৬)ম্ব রে | তাৰমে | ;• | 59 |
| স্থগগ্নাধতীতি | সুগন্ধ হী তি | ور | . ২৩ |
| নদ | ণদ | 91 | 48 |
| উত্তস | উऌ∓ . | 264 | 36 |
| मग्र ित्वा | দক্ষ ৎশেষো • | •9 | 29 |
| मत्त्रां ४ | সক্ষোধ্য | ,, | २១ |
| অস্ভূবি | অদ্ভূবি . | 29. | ۶۶ |
| প্যাগমে | পাগিয়ো | <i>5</i> , <i>6</i> , <i>6</i> | , ₹8 |
| অ ু বৃদিতি | অকারাদিত্তি | ३७ २ | ડ ૨ |
| ফায়তি | স্ফ ারতি | 3, | >> |
| রপানিসি দ্ধ ন্তি | <u>রূপ†ণিসিদ্ধাণ্ডি</u> | 19 | २४ |
| ব্যতিভো | বাজি ছে | " | २३ |
| অন্যোহগুণাঃ | অনুমাহপ্রণাঃ | ১৬ ৩ | २ऽ |
| | | | |

| | | | a S |
|------------------------------------|-------------------------------|----------------|-------|
| ष्य धक्रम् । | र्थक्षम् । | পৃষ্ঠায়াং। | পঙ্জো |
| र न् म जो दन | দন্শা)†দে | *, | રર |
| উণযুক্ত ৃ1 | গণমুক্ শ | 260 | ₹Ы. |
| গিতি | চুনি(ড | 846 | 39 |
| পুষোনরা | श ्यां त्र | 264 | ₹€ |
| होता खर्ग छ | দন্শ্যাদ)ভগত | 290 | . ь |
| নিগৃহীত:এহডিগৃহকঃ | নিগুহিতাগুহ ি গৃহকঃ | 21 | • \$3 |
| রে:কারউঃ | ' রোকারউঃ | ,, | 26 |
| মিতা ৰ য় | . নিভাষয় | 695 | 2. |
| পদক্তম | পদস্থাস | 215 | २४ |
| कृषः । सःरन | কৃঞঃ স্থানে | ≈9¢ | æ |
| গৃহুণতি গৃহীতে | গৃহ্লটে গৃহীতে | 295 | 8 |
| স ়াতি | য় িত | タトく | २७ |
| প্ঞাছন্য: | পঞ্চাড্যদ্যা | 848 | 35 |
| লু প্রভূতদে1 | नूथा चृष्टरहो | 25-4 | ₹8 |
| हेर् _{टा प} र् र म | ইভ্যস্ত্রে। | १४६ | 2 8 |
| হাতিজাগ্নিষেহাতিশজিকে | হ্যতিন্ধজিনে ব্যাহিন্স জিঞ্জে | ある そ | 5 |
| হজ:(দশ | জ জাবেশ | \$ 6 6 | 23 |
| <u>রভাগে</u> | হভা⁺দে> | ۵۶۵ | 71- |
| তা†নিন: | ভারিনা | > • • 8 | 97 |
| ক্মাবিস্কারে | কাম†বিষকারে | 2 • • • | 7 ; |
| मबारसारी | <i>ম</i> ন্ডাৰহামী | 200 9 | • |
| সদ্বন | সন্দাৰ্শ | " | 6 |
| क्या | <u>ক</u> ংবা | > • • 9 | 7 % |
| প্রার্দ্ধ | প্রাচ | 2004 | ₹3 |
| ক্র্ক(চং | क हि | 20:5 | 7.P |
| मस्त | मस्त | >075 | > 2 |
| मृकाद्भिः | মুক্ষাত্মিতি | 2020 | 4 |
| <u>মকিজেব্রু</u> | সাক†জাহা ং | ,, | 2: |
| পিন ৯৭ | পিযু৯ | 5078 | 50 |
| নোটঃ স্থ:নউতি | · লোটিশান ^ই তি | > 0 > € | 2 : |
| আত্রনিপাডঃ | আ†্নিপাতঃ | >0:9 | • |
| সিছেনি | <i>মিকে</i> শি | 2014 | 24 |
| মীতে: Ms | <u> নীতোৰিঃ</u> | 2022 | \$ |
| অন্তে'ন। লে'পঃ | জন্মোন ্ ল†পঃ | 5050 | 2 |
| অসম্বিতি | অসমরি তি | 2056 | \$ |
| অ†মি | ভামি | ५०२७ | 3 |
| পূরনয়ে': | •}त्र व्हाः |) • ર ৮ | 4 |

| षशंहर्। | ₹ क्षम् । | পৃষ্ঠায়াং। | পংকৌ। |
|--------------------|-------------------------|----------------|------------|
| क्रां भी मि | ক্ৰ্যানি | >• २ ৮ | २৮ |
| মন্ | সন্ | 2002 | २৫ |
| क्रमीतिजाः कथिजाः | কুনীরিতা ক থিত া | > 0 5 | ۶ |
| কলপ্তাপ্তে | কল্পাঞ্বে | ,, | 9) |
| প্রক্র স্ত গ্রাদি | প্রবন্ধেত্যানি | \$ · 8 · | ٠ ه٠ |
| ভিপ্ | ভিপ্ | 7 6 8 A | 70 |
| ८५ हिं ः | চেতি ' | 7089 | ۵ |
| শিপ্ | পিশ্ | > 82 | ;5 |
| প্রভাষিতেগ্যাদি | ভাষিতেত্যানি | 2082 | २४ |
| মাগাৎ মি | মাগা<দি | , 2005 | 7.0 |
| অন্যাসিন | অন্যশ্মি | >• @≥ | 58 |
| च ्थ जेता | ७ २ श्री उत्य | > • 48 | : 2 |
| নর্ভ্রদ্যনি | নৰ্ভুগ্যতি | , 30% | 8 . |
| যদবদা | যুক্বসাম | c. 60 c | 2 br |
| (इंग्रं: | হৈ ভাগঃ | 2000 | 5 |
| ভূ ৪্ৰ্জ | ङ् १८क | 91 | 8 |
| কু <u>ৰু</u> | কুভ | 3 • ७ | ٥ |
| ত ্ৰোপত্তে | ত ুহোপপতে | >090 | 2 & |
| टर माफीर्थः | ल भाके। र्यः | ** | 76 |
| দ্ব'দ্ব | फ्र [≈] रं? 3 | > 9 > | 74 |
| भाम नोक्षः - | श्रो <i>त</i> न्द्र4³ | ५० वान | २० |
| ভ জ গের | জজ াগ ে র | ১০৭৯ | 9 |
| ख्रुन†: | ख≈†ः | ; ob. | 69 |
| 7:31 | मा;:९ | 3043 | \$ à |
| म क् तः | म्ह ृत्< | 7020 | • |
| অত্যা স্তা | ચાગુ&' | > 0 20 2 | ર્• |
| ভূত | হূ ত | ১•৯৭ | 2 |
| অকাৰ্যু | ভংক:মূ <i>ি</i> | 2 0 % ₽~ | ą |
| শ্রিক | <u> </u> | 5.6.5 | 20 |
| অস্ত্রীফৌতি | • अभी <i>ः</i> कें हि | ,,, | ર ર |
| অপাশিষ্টা | অপাসিফা. | 2208 | 4. |
| বিধানা ং | . दिशांन्य | >> 3 | . 25 |
| জাযিাতা | আঞ্জিষাতাৎ | >> 0 € | 8 |
| भूक्षां पिः | त्यानिः | 2225 | ₹ 0 |
| মত্ত | · ধভঙ | 7278 | > 5 |
| ব্বিষ্ | ্বিষ ্ | 22.54 | 8 |
| ष्यन्त्राकी ९ | , অপ্রাক্তীৎ | 2229 | 9 |
| | | | |

| | MAT V | পৃষ্ঠায়া* | পঙ জে |
|---------------------------------------|-----------------------------|----------------|---------------|
| य उपाम् | গুন্ধন্ গুণে | 66 66 | ٠. |
| જુ રું વ | অভা প ৰ্নীং | • | 24 |
| <u>जल्</u> भ्र ^१ ८ | | >> > | ২ • |
| ₹ 55. | অচকমন্ত | 2252 | \$8 |
| हमाश [्] षः) २ | स्मानक्ष [†] श्रद | | 78 |
| ভটিই | অ াটিট: | ,, | • 20 |
| श्चारके | ধাতোঃ | " | 2 |
| ভূ'স্ভ্াস্'দেঃ | • ভুাস্ভুাসুাদেঃ | >> < • | |
| भीन् [.] | মীল ্ | 19 | ર છ |
| পৃথ্ যুৱে: | পৃথ্মূরো | ,, | |
| शृश् [†] (नः | शृश् रितः | ,, | 8 |
| মূরে) | क्रम्टमा | ••• | Œ |
| क्ष ⁺ श †६ | ऋ रे थे। रू | " | ৬ |
| ए सन [्] | <i>मृ</i> अप न ९ | ,, | ۵ |
| संनान इक | र्क्स ना कर क | >>58 | ¢ |
| क्षामा २००० चौम्हीलानि | ত:চ্ছীল)দি | ,, | 59 |
| ্যুস্থ্যোল ক্যেন্ত | ત્થર્ક | 2254 | ;2 |
| | মস্তি | 2202 | o |
| ₹ 3 | अ श्रहार्ग ः | >>0@ | ₹ 8 |
| সংক্রেণ্ড ই | 3.3° | >>8> | 20 |
| रद्र° ∙ | দি- <u>টী</u> হাক্সম | 2780 | æ |
| विकीरांकरमाः | পী ডকে যু | >>88 | २४ |
| भी इत्सम् - | मृ मृत्र ी डि | :586 | 8 |
| इ ट्रावडीडि | অহব্যথ দিতি | 5589 | 39 |
| অব্যি স্থনিতি | % टवीनत्। | >> €0 | >> |
| পুকে দিরা | বক্তৃপর [ং] | >> ¢ °. | 9 |
| ক ল্ পর°১ | জাহ | 5266 | १३ |
| জ'ৰূ | यः। <u>र</u> मः⊈ाम | , ,,,,, | 26 |
| 天气到坐师 | , | 3262 | 22 |
| ভাষর্শং | ভা হর্দ মিত্রকর্ণে | >>@ | 2 |
| মিতকর ণ | | >>>9 | ¢ |
| অন্তে ্যতিষি | অজ্যোতিষি ' | 2 2 FP | ৯ |
| উকালান | উ्क्षाग्र न | 3 78F | 39 |
| <u>উপদর্গেনেই</u> | উপসর্গেৎ তি | ;;;q ? | 30 |
| স্ <i>হিস্</i> ! | সহ ্যা | | 8 |
| (5 1 | চেত্ৰন | 3:45 | 3.5 |
| रुम्भागा थें | ক-ম্পূনাৰ্থ | " | |
| হেন্দ্রপ্রসং | (ধীতাপাক্ত্ | . ,, | 20 |
| कामकार्ण्ड राम्प्रोर्ण र | অনদৰাৰ্থক স্পাৰ্থাৎ | *2 | રૂ ૭ |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | | |

| অ শুদ্ধম | শু দ্ধম ্ | পৃষ্ঠায়া | পত কো |
|--------------------------|-----------------------------|-----------------------|--------------|
| ভূ প ্ | ভূপ | 27P-2 | 8 |
| - ইত্যনেব | ইত্যনেনৈব | 7728 | 25 |
| লিমিথিয়তি | লিলিখি বতি | 2>4¢ | ¢ |
| মুমুদিগভি | যুমুদি নতি | ११८८ | ર |
| দোপ্সর্ন্য | ন োপার্যস্ম্য | • ** | 2.2 |
| মিচ্ছাতীভি 🔸 | <u> নিত্ততীতি</u> | 7766 | २० |
| F.S. | मृड. | 3353 | २ ७ |
| দিবরীমতি | দিপরীয ি | 2253 | २७ |
| তথানা; | ઉજ ∤₊1*\$ | 1127 | 2 |
| অথিকার | অধিকার | • 7294 | 3 ¢ |
| ইচ্ছতি কিং | ইন্ফেডি কিং | ファタト | ¢ |
| স্থন ্ প | ख न्ध न | 2500 | ২৩ |
| সংপ্ৰাকেঃ | क हुनु "स्यः | • " | ₹ ¢ |
| ছান দয়তি | ছান র'তি | 2 909 | 45. |
| তাদিলয়ে | ড ়া'দি ত্রে | ५२० १ | ३७ |
| <u> </u> | উৰময়∫ি | *7 | ২৮ |
| শক्तिन्तरदा'\$ | कारका का नारका है | 2 5 oPm | 8 |
| পুলাতিভবয়োঃ | পূচাহিভদয়ে†: | \$250 | 5 C |
| ভাগ | হা | > <> > | 2 • |
| উপ্দ্রে | छेम णान | : 25 ¢ | 7.9 |
| গাইনাজ তি | গ্ৰহনহৈ 😉 | 7 5 5 7 | २२ |
| গ্ কন্ট্র | গ্ৰনায় | •• | ₹ 0 ° |
| ভরত্তি | ভব ঠাতি | \$ 2 0 • | २४ |
| श्रीवर्ग दला | %ল†েশ। | <i>ऽ२७</i> ० | ৩২ |
| र ु क्षां सं किका | राञ्चराहिका | 25,08 | 2.5 |
| কারাদ্ধনিক্ট | কার্বিল, বিশ্বঃ | ५२ ०७ | , •• |
| প ংগুল | %. ९३५ ल | 7 > 01- | Œ |
| পাংক্ল | পশ্চন | ১ ১৩৮ | ₹ 8 |
| পাংক ন ্তি | %;÷ুল ি∑ | •• | २ (१ |
| ङेक् म ृ क्∙। | • উল্ফুল্ণ | 2509 | २ व |
| इस्केल्डी | छ। <u>स्ती</u> र बी | ३ २ ९ २ | 2 |
| क्रापरल चित्र गिरिक | • ে ল িন্দিভি | 5 3 8 ¢ | b• • |
| म दी पुरिम | सर्व. <u>ज</u> ित्र | : २ 8 9 | > |
| গু হিচ্ছেন্ত :1 | গ্রাহি জ্যাহা | : 283 | ¢ |
| र्मे । ^{र्} | . भीर्यः | 9 9 | 9 |
| অ খাং | ভূ থ া | •, | ٥. |

| অশুদ্র | खक्रम् । | পৃষ্ঠায়1 । | পঙ্জো। |
|---------------------------|----------------------|--------------|------------|
| षे डिन यु ० | ই ভিনলত্ব ৎ | 3289 | • |
| ग त्रीमृ खः | অম্রীমৃ জ: | >280 | २ १ |
| रकाड: | যদ্য তঃ | 5263 | 39 |
| নৌশীতঃ | শেশীতঃ | >> ৫৩ | 12 |
| शृ वादम | পুষাদে | > < 48 | ٠ ٩ |
| দ্বিক ক্রিকার্য চনং | দ্বিকুক্তিদি বচনৎ | 2508 | २৮ |
| কণাপাদিমতে | কলাপাদি ম তে | >< 68 | २४ |
| क्रम्याः स्वित्रः | क्रयमारक ३ लढ | 2 5 a P | 20 |
| रेनकाञ्चमा | ট নকত্বস্য | ३२ ७৮ | 3 @ |
| श्रामिरगारग | थ :मिट्य:शांम | 2582 | \$ |
| পার্যান্তৎ | পর্য্যন্তৎ | : २ ७ २ | 7.7 |
| र्द्धका,दिषद्य | ৰ্ক(ক) বিষয়ে | ,,, | 7,2 |
| मीञरत्र | मी शस्य | •• | 25 |
| হিশ্যি | হিশেষ | ,• | 3 C |
| 2 5 [†] < | 21 51° | ,, | ર ર |
| म: श्रा ड्र | মা খ্য াতু৲ | ٠, | ₹ ® |
| | | | |

শ্রীযন্ত্রমণিগুরুচরণস্ফুরদরবিন্দানিবন্দারকঃ। মঞ্জরীস্তব্যতে। ১॥

প্রভাপ্রকাঙ্গিকা।

উর্রীকৃত মুররীরববিধৃতপীযূনমাধুরীরভদং। আলোল তিনিক কর্তিন্দান করিছিল বিদ্যালি কিছে করিছিল আমান্ব্রীখ্যাতি পদমঞ্জরীং। ২॥

অবাস্তরগ্রস্থারস্তেহপি বিশ্বদন্দেহমাকলয় হরিপ্রণামেনছরিতং দূরমুৎদারয়য়র্থমাবিষ্করোতি প্রীযন্ত্মনীত্যাদিনা। শ্রীপুরুনোভ্রমণর্মাপণ্ডিতঃ লোকিকপদমঞ্জরীমাখ্যাত গ্রন্থস্তকুতে বিস্তারয়স্তাত্যময়য় কিন্তুতঃ শ্রীযন্ত্মনিগুরুচরণক্ষুরদর্বন্দানিবন্দারুঃ শ্রিয়াযুক্তোযন্ত্বংশশ্রেষ্ঠঃ শ্রীকৃষ্ণঃ দএবগুরুঃ জগদ্গুরুঃ তম্ম চরণাম্মেব ক্দ্রন্তি বিকসন্তি যান্মরবিন্দানিকমলানি তক্রপাণিতানিবন্দারুর্বন্দনশীলঃ। বহুত্বনাদরে বন্দনং প্রণামঃ উদন্তর্কৎপ্রতায়ম্ম নিষ্ঠাদিয়াৎ কন্মণিন্দ্র্তী। অথবা শ্রীযন্ত্মণিশ্চ গুরুশেচতি। যদ্বাশ্রীশ্চ বন্তমণিশ্চ গুরুশেচতিবন্দঃ গুরুরুপদেন্টাতয়ো স্তেমান্বা অন্তৎ পূর্ববিৎ। লোকঃ সমান তান্ত্রিকেছিসমান তান্ত্রিকশ্চ তত্রভবইতীকণ্ ভবার্থে তাদৃশাং পদানাং মঞ্জরীব্যস্তর্রা পদমঞ্জরা গ্রন্থনাম নানাস্থানাং পদানামেকত্র সম্বলনাৎ। ১॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অধরপ্তত্তবংশোদ্ভবংশীনিনাদৈরপজতগ্রদমুচ্চৈ গোপগোগোপিকানাং। করধরধরণাশুত্রাত-তালোক্লতং যতুমণি মনিশংসংসেব ইস্টার্থসিদ্ধো।১। শ্রীসিদ্ধনাথভূদেবোযথাধিপদমঞ্জরীং। ব্যাখ্যাতি শিশুবোগাথ্যাক্ষাতপরনামিকাং।২॥

ব্যাকরণদ্বিভায়ভাগারস্তেহপি বিশ্বসন্দেহং প্রতিসন্ধায় হরিং প্রণমন্ গ্রন্থং কর্ত্ত্বমুদ্দিশতি এবি ব্যাবদ্ধীন ত্যাদিনা। যদোরপত্যানিযাদবাং অণপতোধায়কুরুর্যগন্ধকবিদাদিতইত্যণ্ রাজপ্রাসিদ্ধবংশাদেত্যণোল্পুকি প্রকৃতিকার্য্যানির্ভিঃ বদুনাং মণিরিতিবিগ্রহং। মণিঃ শ্রেষ্ঠেপুমানম্মজাতৌমুক্তাদিকেদ্বয়োরিতি। বন্দারুরিতি। বন্দি অভিবাদনস্ত ত্যোঃ মুচাদিরাল্গনেপদা। ইদমুবন্ধদানুম্ বন্দনশীলোবন্দারুঃ স্বন্দোরার্ক্ররিত্যারুপ্রত্যায় এই প্রক্রেষ্টেশশার্কেশ শ্রেছি । ইদমুবন্ধদানুম্ বন্দনশীলোবন্দারুঃ স্বন্দোরার্ক্রিক্রার্ক্রপ্রত্যায় । প্রাপ্রক্রেষ্টেশশান্ত । প্রক্রেষ্টির্ব্যার্ক্রপার্ক্রপ্রত্যান্তির্ব্যার্ক্র ভাষান্ত প্রাদ্ধির প্রামান্ত প্রক্রাতি প্রস্কান্যাক্রং তথাপি ইত্যাথ্যাতোগণদাধ্যবিন্যাসঃ প্রথমইত্যাদিবক্তব্যস্থাদাখ্যাতঞ্চ গ্রন্থনানিতির ত্রির্ব্যার্ক্র বিদ্বান্ত বিশ্বস্তার্ত্র কর্নাবিতি উবিকরণেরপং যদপুভেয়পদিধাতোঃ পরকলাভিসন্ধানে তনোতীতি প্রয়োগদানমূচিতং তথাপি সৎকীর্ত্তিলাভস্থাত্মগত্মকল্যাপুদ্দেশ্যক্রাৎ তন্তুতইত্যাত্মনেপদ প্রয়োগোপ্যবিক্রদ্ধইতিক্রেয়ং। শ্লোকার্যান্ত প্রভাপ্রক্রিশিকায়াং ক্রেইব্যঃ। উপগীতিচ্ছন্দঃ। ১॥

দাক্ষার্ণীয়মতকাত্যস্ত প্রবন্ধমন্ত্রঞ্জিতগুণাপদমঞ্জরীয়ং। আদীয়তাং প্রবসিনিঃ শ্রমবশ্যতায়ৈ ব্যুৎপত্তি পক্ষজদলায়তলোচনানাম্। ২॥

ভুবাদ্যাদিগণাদ্ধাতোজে রান্তিঙ্ কুৎসনাদয়ঃ। ভুবাদি দিবাদি তনাদি স্বাদি ক্র্যাদি ৰুধাদি অদাদি সপ্তগণাদ্ধাতোস্তিঙ্ কুদিন্পর্যান্তসনাদিপ্রত্যয়াজেয়াঃ। সন্যণ্ আয্যঙ্ ডিন্ ঈয়ঙ্ ইন্ কামাযিন্ ডিয় ড্বি যিঙ্ যিঞঃ। এতেসনাদয়ঃ। ৩॥

প্ৰভাপকাশিকা ৷

প্রেক্ষাবংপ্রবৃত্তিপায়িকম্ংকর্ষং প্রয়েজনঞ্চশয়তি দাক্ষায়ণীয়েত্যাদিনা। হেবালাঃ ইয়ং পদ্মপ্ররীপ্রবিদিকর্ণে আদীয়তাং গৃছতাং ক্রায়তামিতার্থং শ্রোত্রস্থেন্তির কেন করণরেহপি অধিকরণস্ববিক্ষয়া সপ্রমা। প্রবণফলমাহবাৎপত্তীতি। বাংপত্র এব পক্ষজদলায়তলোচনানায়িকাস্তাসাং নিঃশ্রমবশ্যতায়ৈ শ্রমন্থিনাবশীকরণায়মদীয়পদমপ্ররীজ্ঞানে তত্রায়াসোনাস্তাত্যর্থঃ। পক্ষজদলেইব পদ্মপত্রইবায়তে লোচনে যাসাং তাস্তথা কিন্তুতাপদমপ্ররীদাক্ষায়ণীয়মতকাতাম্বত প্রবন্ধমন্ত্রান্ত্রপ্রিতগুণা দক্ষম্পত্যমিত্যকারবাহ্বাদিল্যামিণ্ দাক্ষিঃ তস্তাপতামিতিগোণস্তাল্যামায়নণ্ স্থাদিত্যায়নণ্ দাক্ষায়ণঃ পাণিনিস্তদীয়ং মতং কতস্থাপতাং কাত্যঃ গর্গাদিরাহণাঃ তস্মস্তঃ কাত্যায়নোবররুচিস্তম্পপ্রবন্ধোগ্রন্থঃ তাবেবমন্ত্রোতাল্যামন্ত্রপ্রিতা অতিশ্রেনপ্রতিপাদিতগুণাঝটিতিবৃংপতিনাধনযোগ্যাঃ প্রকারায়স্থাং সাত্থা। অন্তাপি পুষ্পমপ্ররীমন্ত্রাপাদিতাকর্ষশক্তিঃ পক্ষজদলায়তলোচনানাং প্রমানানাং পৃতীপ্রেমণাদ্যায়াসংবিনেব বশীকরণায়প্রবিদ্ আদীয়তে কামাভিস্তান্তঃকরণেন বিদপ্রেনেভ্যর্থঃ। ২ ।

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

অধুনাহধ্যে ব্রপ্রবৃত্যর্থমভিধেরপ্রয়ে জনসম্বদ্ধান্দর্শয়িত দাক্ষায়ণীয়েত্যাদ্না। অত্রাভিধেয় পদসমূদায়ঃ প্রয়েজন পদবৃৎপতিলাভঃ সম্বন্ধাহভিধেয়েনসহ গ্রন্থ জ্ঞাপকভাবঃ প্রয়োজনেন সহজন্যজনক ভাবশ্বতি। শ্লোকাম্বয়ঃ প্রভাপ্রকাশিকায়ামবলাকনীয়ঃ বিশেষস্ত দাক্ষায়ণীয়মতকাত্যস্তপ্রবন্ধ সন্ত্রালিক ব্রন্থেতি। প্রকাল রাত্রলোচনানামিত্য ত্রচরপকং সাধর্মাস্ত প্রব্রকরণয়ং পরত্রবন্ধ স্থালিক মহার্থেতি। প্রবন্ধ বন্ধনে কর্মণি যঞ্। অনুরঞ্জিতেতি। অনুপ্রবর্ম করাগে কর্মণিকঃ ইট্। আদীয়তামিতি। আঙ্ পূর্বর ভুদাঞ্ দানে লোটস্তাং কর্মণি যক্কিতিহলি মাহাকস্থালিকাই ইট্। আদীয়তামিতি। আঙ্ পূর্বর ভুদাঞ্ দানে লোটস্তাং কর্মণি যক্কিতিহলি মাহাকস্থালিকাই করার ইত্যাকারস্থ করারঃ। বশ্যতেতিবশংগতোবশ্যঃ তুলায়াঃ সন্মিতেহপি চেত্যপি শব্দাৎ যঃ তম্মভাবোবশ্যতাতকৈ । ব্যুৎপত্তীতি। বিউৎপূর্বপদগতে ব্যুৎপদনং ব্যুৎপত্তিঃ ক্তিঃ স্থাং লিঙ্গবংপ্রথমাধুটাম্। ২॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

ন্তনন্ত প্রকরণ পামাপ্যতি ও ন্তপ্রকরণমারভমাণোধাত্বধিকারং বদন্তুবাদেঃ শিতীত্যাদিসূত্রাসুরোধেন গণবি ভাগ দশ্রেন্ বিধিমাহ ভুবাদ্যাদাতি। ভুরাদির্ব্যেশং, ভুবআদিয়ে যই ভুগভয়সমাসেন এধাদয়োহপি গৃহাতাভবন্তিভুবাদিরাদির্ঘ্যেশং তেভুবাদ্যাদয়ত্তেগণায়ন্ত তাদৃশাদ্ধাতোন্তিঙাদয়োজেয়াবিধেয়ত্বনেতিশেষঃ।

চুরাদয়োত্রবাদৌস্যুঃ সনাদ্যস্তাশ্চধাতবঃ। অপরেপ্রত্যয়াজ্ঞেয়াঃ স্বস্ববিধ্য-সুসারতঃ। অপরেতদ্ধিতাইন্ যণাদ্যখ্যাত। আপ্রত্যয়সণ্প্রত্যয়াদয়শ্চ। ৪॥

অত্রধাতোরিতিবিশেন্যং কুৎপর্য্যন্তমনুবর্ত্ততৈবিশেনানুক্তো। ননুদ্বিবিধঃ পদার্থোজাতিব্যক্তিশ্চ তত্ত্রব্য-ক্তিমাশ্রিত্যধাতোরিত্যেকত্বমনুপপন্নং নচজাতিমাশ্রিত্যৈকত্বং ধাতুত্বস্তাদান্ধর্য্যেণজাতিত্বাভাবাৎ থকারাদৌ-থত্বাদিধাতুত্বক সন্ধীর্ণং শৈলার্থকথকারেধাতুত্বং বিনাথত্বং থত্বং বিনাচধাতুত্বং তকারাদাবিতি তম্মাদ্যবহারা-কুগমক্রিয়াভাবকত্বেনৈকত্বাদেকত্বং । রসবত্যাঞ্চধাতোস্তিঙিতিসূত্রং বিধিসংজ্ঞাধিকার ইতিব্যাখ্যাতং। বক্ষ্য-মাণসুত্রেগণোহনিয়মেনিয়মকারিতয়াপরিভাগ। ভুবাদ্যাদীত্যাদিগ্রাহণ দর্শয়ন্সূত্রার্থমাহভুবাদীত্যাদিনা। সপ্তগণাদিতি তেননবগণাদেব্রদাসঃ। বিভাগাদেবসিদ্ধে সপ্তগ্রহণং ব্লুভেস্পিফার্থং। কাতন্ত্রেএধাদি অদাদি कुमानि निवानि कथानि जनानि स्वानि क्वानि ठूतानि हिटिनवर्शनाः। অন্যেজুহোত্যাদিং পৃথক্নিদ্দিশ্যদশ-গণাইতিবদন্তি। নমুসনাদয়স্ত্রয়োদশপ্রত্যয়াঃ তেয়াং মধ্যেসপ্তৈব প্রত্যয়াধাতৃভ্যোভবন্তি অন্যেতুলিঙ্গাদে-় বেতি কথমুচ্যতেসনাদয়ইতিমনসিকুত্যাহইনুপর্য্যন্তেতি। সনাদীনাং বহুত্বেহপি সপ্তৈবসনাদিপদেনেহগুহীতাঃ সর্কোনং গ্রহণেবাধাং। স্নাদিমাহস্নিত্যাদি। ধাতোঃ সন্বেত্যাদিনাসন্ কণ্ডাদিভ্যোযণশ্বিত্বরিত্যিণ গুপুধুর্নিছীত্যায় ক্রিয়াসমভিহারেয়ঙিতিয়ঙ কমের্ডিনস্থাদিতিঙিন্ ঋতেরীয়ঙিতীয়ঙ হেত্বধীনেতি চুরাদেরিতি তৎকরোতি তদাচফইতিচ ইন্বাত্মেচ্ছায়াং নাম্মং কাম্যইতিকাম্যঃ যিন্চানব্যয়মান্তাভ্যামিতি আচারেযিমি-বার্থকাদিতিচ আধারাচ্চবিনাচারইতিচ্যিন্চিত্রাংঙিরেল্কু তার্থকাদিতিঙ্কিঃ গল্ভক্লাববিহোডেভ্যোঙিুৰ্কেতিঙ্কিঃ উপমানাৎ কর্ত্ত্বিয়ঙাচারইতিযিঙ্ লোহিতাদিড়াজন্তাদিয়ঞিতিয়িঞ্ । অত্রসনাদিগণনং তদন্তানাং ধাতুসং-জ্ঞার্থম্অতোবক্ষতেসনাদ্যস্তাশ্চধাতবইতি। ৩॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

স্ববন্ত প্রকরণান্তরং তিঙক্ত প্রকরণমারভমাণোবিধিসূত্রমাহ ভ্বাদ্যাদীত্যক্র ইবর্ণাবর্ণয়ােরিতার মুকারস্থ বেষুবাবিত্যবাদেশঃ। ধাতােরিতি। ডুধাঙ্ধারণপােষণয়ােঃ দধাতি অর্থ।ন্ধারয়তাতিধাতৃঃ সিত্রনিমনি-ডনিশক্যবিধাঞ্ ক্রুশিভাস্তন্ ধাতােরিতিপদং গণানির্দ্দিউচুলুস্পাদেরপি গ্রহণার্থং তেনা য়াদপিতিঙাদয়াে বিধেয়াঃ। জ্রেরাইতি। জ্ঞাধাতােঃ জ্ঞায়ন্তামমীইতিবাক্যে ডেট্চাদন্তথনিভ্যামিতিয়ঃ ডেট্চ। জ্ঞেয়াবিধে য়জ্বেনেতিশেয় যদ্বাধাতুনামনেকর্যপাৎ জ্ঞেয়াবিধেয়াইতার্থঃ। সনাদয়ইত্যুক্তং বির্ণােতিইন্পর্যান্তেতি। সনাদ্যন্তাবইতি বক্ষমাণসনাদীনাহসনিত্যাদি। অত্যৎপ্রভাপ্রকাশিকায়ামনুসর্ত্বাং। ৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

এধাদের ভয়সমাসাশ্রয়ণেন ভ্বাদে গিত ছাত ছুপেক্ষ্যা হচুরাদয়ইতি ভুবাদ্যন্ত গতি ছেনাধিক গণ ছব্যুদাসঃ।
নকুইন্পর্যস্তানাং কুতোধাতুত্বং প্রতায়ান্তত্বেন ক্রিয়ামাত্রভাবক ছাভাবাদ্গণাপঠিত ছাচ্চ অন্তেয়াং লিঙ্গোভরবিধীয়মানতয়া স্নতরামধাতুত্বমিত্যত আহ্সনাদ্যন্তাক্ষেতি। সনাদিপ্রতায়ান্তাধাতবোভ্বাদে স্থারিতিযোজনা। ধাতুত্বং ভুবাদি ছঞাতি দিশ্যতেহনে নেতিভাবঃ। অন্তং কুব্যাখ্যান মুপেক্ষিতং। প্রসঙ্গোতি
পিতাকাঞ্চনায়াং নির্দিশতি অপরইতি। স্বীয়সীয়বিধায়ক সূত্রাকু সারেণেত্যর্থঃ। অপরইত্য স্থার্থং বিরুণোতি

ধাত্বাদেঃ ষস্যসঃ। যথাষহ্মর্যণেসহ্ষিধুগত্যাং সিধ্ইত্যাদি। ৫॥
তদ্মুক্ টঠণাং তথনাঃ ক্রমাং। তদ্মুজাং সকারসম্বন্ধিনাং টঠণাং তথনাঃ
ক্রমাংস্যঃ ফুঞ্ স্ততৌ স্তোতা ষ্ঠাস্থাতাফান্ধাতা। একস্বরব্যবহিতণকারে
সকারযোগাপরিত্যাগাং ষণুদানে সনোতি। ৬॥

তদ্ধিতাইত্যাদি। ইন্যণাদয়আখ্যাতাঃ তৎকরোতিতদাচক্টে ইত্যাদিলৈঙ্গিকইন্দিবাদেঃ কর্ত্তরীতিযণ্ আদিনাঅন্বিকরণাদিঃ আপ্রত্যয়ঃ ঈডাজাদয়ঃ দণপ্রত্যয়াদয়ঃ সণ্নাম্যপান্তাদিতিদণ্ আদিনাচঙ্ অঙপ্রভৃতিঃ। ৪॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

্চুরাদয়ইতি। চুরস্তেয়েসআদির্যোগাং তেচুরাদয়োভুবাদৌন্ডাঃ সনাদয়শ্চাব্যবহিতপ্রাপ্তকাঃ সনাদয়শ্চবাতবং সন্তঃ ভুবাদৌস্তারিতিযোজনা। চ্রাদানাং ভুবাদিস্থং সনাদ্যন্তানাং ভুবাদিস্থং সনাদ্যন্তানাং ধাতৃত্বং ভুবাদিস্থঞানিটিলেখতইতিভাবঃ। ভ্বাদেরিতি দীর্ঘপাঠোলেখকপ্রামাদিকঃ ইণ্ডোবাযবরো-ব্যাভ্রেনাইতানেন বাগমস্থ ব্যাভ্রিতত্বেন কাদাচিৎকরাৎ। অপরইতি। অপরেধাতৃত্রবিহিত পুর্বেরক্ত তিছু কুলিন্ প্রান্তমনাদীতেরে স্বস্ববিধ্যুসুসারতঃ স্বায়্ত্বীয় সূত্রাসুসারতোহেতান্তে য়াইতার্থঃ তথাচ কেচিৎপ্রাথকে কেচিদ্নাতাঃ পরেজেয়াইতিভাবঃ। অপরইত্যস্থার্থং প্রকটয়তি উদ্ধিতাইত্যাদিনা। তদ্ধিতা অণিণাদয়ঃ। ইন্ যণাদীতি। ইন্ লৈঙ্গিক ইন্ যণ আদিঃ যণ্ আদিং বর্ণ সাম্পুরভয়সমাসঃ যণাদয়ণ্ডতে আখ্যাতাশ্চেতি তেনান্বিকরণ ওবিকরণাদয়ঃ। আপ্রত্যে সণ্প্রায়্রাদয়শ্চেতি আদিশক্ষেভয়ত্র সন্ধায়ঃ অত্রাপি পুর্কবিত্বভয়সমাসাশ্রেয়ণেন প্রথমাদিনা ক্রপ্ ডাচ্ প্রত্রোদয়ং পরাদিনা ইট্ অঙ্ চঙ্ প্রভৃতয়োগৃহত্তে। ৪ য়

প্রভাপ্রকাশিকা।

. সত্ত নহাদি সামাত্যপাতু কার্য্যাহধাত্বাদেরিতি চতুষ্টয়েন। ধাত্বাদিভূতস্তবস্তাসত্ত ভবতি।
সহসিধিতি সহমর্ষণে বিধুগত্যাং বস্তাসত্তং অনয়োরাদিভূতস্ত প্রত্যয়নরপেক্ষনির্দেশঃ। আদিনা মুঞ্জিমবেস্তমোহত্তকমাণিসোহ্পাত্বপঠিতেতানুরোধাৎ সত্ত্বাভিদেশঃ উপদেশিক সম্ভনামিকরেতি নম্ভ্রম্ এতদভিদ্রতানামীত্যাদিনা উপদেশিক সম্ভয়্ত্বনিষ্ধেক্তাপন্য। ৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ধারাদেরিতি। ধাতোরাদিরিতিবিগ্রহঃ তস্ত। যহ্মর্ষণইতি। মর্ষণং সহনং। অভাৎপ্রভা / প্রকাশিকায়ামবলোকনায়ন্। ৫।

প্রভাপ্রকাশিকা।

তদ্যুক্। তংসরপং যুক্জন্তাতি কিপ ক্দন্তসমাদঃ তদ্যুজনতে ট ঠণান্চেতিতথা। ফুঞ্স্ততৌ সম্বেতঃ। ঠাগতি নির্ভৌফাশোচেশ্সভারপং। প্রত্যয়বিধানাতিরিক্তকার্য্যসন্ধাতদবসরেচ তস্ত

বাচ্যত্বাদতঃ স্ত্রোতীত্যাদিনোক্তমিতিভাবঃ। একস্বরেতি। মধ্যস্বরশৃন্থয়োর্হলোঃ সংযোগোভবিছি সচেহনাস্ত্রীত্যর্থঃ। এবঞ্চপ্রযোগানুরোধাদেকস্বরব্যবহিতমব্যবহিতমিতি ন্থায়েন সত্ত্বকল্পনয়াযোগঃ দিদ্ধইতিধ্যেয়ং। যকারযোগেতি পাঠোনসম্যক্ সম্প্রৈবযোগাপেক্ষণাৎ।৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

তদ্যুগিতি। যদ্যপি সমানানামসুক্রমাদিতি স্থায়াদেবাসুক্রমাদায়াতি তথাপি ক্রমাদিতি ছন্দোহর্থং স্পেন্টমুক্তং। স্তোতাদিত্রঃ শ্বস্তমাস্তাবিভক্তোসাধ্যং। একস্বরেতি। স্বুক্ টঠণামিতিগৃহীতে জ্ঞানলাঘবং দ্যাৎতদমুক্ত্বা যথ তদ্যুক্ টঠণামিতিগোরবং কৃতং তদেযাগস্থ বৈচিত্র্যার্থং তেনৈক স্বর্ব্বহ্রিত্মতি স্থায়েন একস্বরব্যবধানেহপি যোগস্থাপরিত্যাগাৎ যোগস্থা সম্ভবিত্বাদ্ধেতোঃ সনোতীতি প্রয়োগইত্যর্থঃ। নচ সন্থানেইতি দন্ত্যনকারঃ পঠনীয়ঃ কিমীদৃক্ কল্লনয়েতিবাচ্যং তথাসতি অদীদণদিত্যাদো ণত্বাপ্রসাক্রেঃ আতিদেশিকনকারেণত্ব বিধানাথ। এতচ্চবিস্তরেণণাদ্য়ইতি সূত্রব্যাখ্যায়াং বক্তবাং। ৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হিত্বতি। এতদ্বয়ং ত্যক্ত্বাবস্তমহামতিশেনঃ। তথনাইত্যস্ত তত্তনিয়ত তয়ানাবতারইতিভাবঃ। দ্বােরের নিষেধইতিঋজবঃ। ষ্টিবুনিরশনেষ্ঠীব্যতিদিবাদিহাদ্ যণ্ ভুবাদােনিষ্ঠীবতিষ্ঠিবােদিহাে- হপরােক্ষায়ামিতিদীর্ঘঃ। মুক্গতাের্কতি যভিষাের্ক্যতে। নষ্ঠিবুর্কাঃ ষ্ঠীব্যতীতিরসবত্যাং। মুক্পােঠােমৈত্রেয়াদে স্বাভাহেনৈবমােপদেশাৎ মুক্তি যাের্ক্যতে। ষ্ঠিবুর্কাঃ প্রতিষেধােবক্তব্যইতিবচনাৎ সহং নভবক্তীত্যবদেয়ং। মুকেতি পাঠোনবহুসন্মতঃ। ইতিস্ভাহতিরসবতী। ৭॥

গূতপ্রকাশিকা।

হিস্তেতি। ওহাক্ত্যাগে জহাতীতি হিস্তা' কর্তুরৈক্যইত্যাদিনাক্ত্বাব্রশ্চেরিট্জ্বিহাকশ্চেতীট্ ইট্যবর্ণস্থলোপনম্ অব্যয়স্থাৎ যঠ্যেক্বচনলুক্। ধাতুদ্বয়মনুকৃতং। ফ্ট্যেস্প্রাতশব্দক্ষেঃ অস্থাপি নমস্থ সন্থং ফ্ট্যায়তীতিবোপদেবঃ। অম্মাভিস্ত চকারেণ সোহপি গৃহীতইতি মন্তব্যম্। ৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ণাদয়ইতি। ণাদয়োধাতবোনাদয়ঃ স্থ্যঃ। গণপঠিতধাতু গ্রহণাশ্বামধাতোর্ম ণকারীয়তি। ননামধাতোঃ ণকারীয়তীতিসারঃ। অতিদেশনকারাদিতয়ার্যবর্ণেতি ণত্বপ্রাঞ্জিঃ ঔপদেশিকত্বেতুনস্থণত্বাপ্রাঞ্জিঃ অতএব নভবতিনাথতিনন্দীত্যাদৌণত্বনিষেধঃ। ৮॥

প্রত্যেকমন্তাদশভির্তনৈন্তিঙ্বিভক্তরঃ। দশস্যঃ। অন্টাদশভির্ম্টাদশ-ভির্বচনৈর্বর্তমানা লিঙ্ লোট্ ছন্তনা শ্বস্তনী আশীর্ভবিষ্যন্তী ক্রিয়াতিপত্তি পরোইক্ষাইদ্যত ন্যোদশতিঙ্ বিভক্তরঃ স্থাঃ। ১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ননুধাত্বাদিনকারাঃ পঠনীয়াঃ কিমেতেনদুত্রেণেতিসত্যম্ অত্তকেচিদেতৎ সূত্রাদিশব্দ-ব্যবস্থয়া তবণৌমিদরস্বতিপাদ্য্গমিতি কচিন্নণস্ত্রনাত্রদন্তি। বস্তুতস্তু এতৎদূত্রকরণাৎ ণত্ববিধায়ক-সূত্রেণাতি দেশিকস্থনস্পত্র নত্নেসিক্স উপদেশিকাশ্চ নাথ্নন্ নৃদ্ নাধ্নট্ নকাং নকারাঃ তেনপিতৃনাথইত্যত্র পিতরং নাথতীতি কর্মণ্যণি উপপদ্যনাদেএকপদ্তেহপি র্যুবর্ণাদিত্যাদিনান্ণস্থ্যু এবং মাতৃনন্দঃভ্ৰাত্তনারইত্যাদাবপিনগত্বং। এতদভিপ্রেটেত্যবনভবতি নাথতীত্যাদিনাগত্বনিষেযুক্তবান্। পাণিশ্ত-নুষায়িগণদর্পণেতুনট্ নাধোর্ণাদিয়ং পঠিয়াআতিদেশিকতয়াপ্রণটয়তাতিণয়মুক্তং। ত্রাপিণত্বং স্থাৎঅভিদেশিকৌপদেশিকভেদং বিনান্ট্রধার্ণত্বণত্বাভাবপক্ষরাানুপপভেঃ। নচৌপদেশিকস্থৈব নস্তারং স্তাৎ যত্রনণরং অত্রক্ষুলাদ্রেননণরং তস্তাকৃতিগণরাদিতিকল্পনায়মম্ ইথঞ্ণাদ্য়ইতিনভবতীতি সূত্ররয়স্তান্বেশ্যকত্যা লাঘবমিতিবাচ্যং নট্নাধোর্ণরণরাভাবদর্শনেন ক্ষুভাদিকেনানিকাহাং। নচন্ট্নাধো-গিরিমল্যালিত্বেন গ্রণহাভাবসিদ্ধিরিতিবাচ্য গিরিমল্যালীত্যাদিনাগ্রনিমিত্তসহকারিনাদিলিঙ্গানাং গ্রহণাৎ কেবলধাতু গ্ৰহণ, সন্তব্যং । অথন ভবতীতিসূত্ৰং নজিগতেকিন্তুণ স্ভাবাৰ্থং নাথ্ নন্দ্নুদ্দু নৃংনকঃ ক্ষুভাদয়ঃ নট নাধৌবাকুভু: দাইতিদূত্র র্ভৌবক্তবাং তথাচন ভবতাতি ণাদয়ইতি দূত্রছয়করণাপেকয়ালাঘবমিতি চেছ্ল-চাতেছুরে;রঞ্জের্থি নভবতাতিবৃত্তকরণমাবশ্যকংত্থাহিপ্রাদেরসূরোরাঞ্জ্বণাথেত্যাদীনাং নভবতীত্যন্ত্রেছু-রোরাগ্রত্ব স্থাদিত্রপত্তোগত্ব প্রাপ্যতেনভবতাতিসূত্রভোবেত্রসিদ্ধতোতিতৎ সূত্রমাবশ্যকং তথাসতিণাদ্যু-ইতি সূত্রকরণমপ্যাবশ্যকং। অত্রব জয়ক্ষ ভট্টাচার্য্যেরপি প্রভাপ্রকাশিকায়াও নভবভাতি সূত্রটীকায়াও নভবতিপ্রাদিরেকাণ্ণরমিতিশেক অর্থাদিছরোরাদিত্যভিপায়বদ্তিস্থাণাদ্যইতি সূত্রটীকায়ামতিদেশনকারাদি-ত্রার্ববর্ণেতিণ্ডপ্রাপ্তঃ উপদেশিকত্বেতুন্স গ্রাপ্তাপ্তঃ অত্এবন্তবতিনাগতিন্দীতাাদৌণ্ডনিষেধ্ইতি ব্যাথাতেবত্তিরয়মর্থঃ প্রকটীকৃতইতি। ধালাদিবণোঃ সনাবিতিকৃতেতদ্যুক টঠণামিতাত্রসন্যুক্টঠণাং স্মৃত্ৰচনাল্যণোক্তণাদিপাতু গ্ৰহণাৎ তথন্ঃ স্থারিতার্য়াৎ সুগ্রাগতীতি প্রয়োগাপতিঃ স্থাৎ। ণকারায়তাতি নামবাতোর্ণঅননত্ব । ণমিত্যাদি। গম্প্রহ্বত্বেশক্ষেত নদ্থলং কারেভুবাদিপরস্মৈপদি-নৌ গৃস্ততে অদাদিপরত্বৈপদী তৌপুর্ববিয়াদন্বিকরণঃ পরস্থানভ,স্কম্যোতঔস্থাদিত্যুকারস্থ छ। ৮ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইদার্নাং তিঙ্বিভক্তয়ঃ কতিবিধাঃ কতিভিশ্চবচনৈর্ঘটিতা ইত্যপেক্ষায়ামাহপ্রত্যেকেতি। একমেকং প্রতিপ্রত্যেক বিপান্ধামব্যয়াভাবঃ। তিঙশ্চতাবিভক্তয়শ্চেতি ইত্যত্রসংজ্ঞাসংজ্ঞিনোরভেদাৎপ্রথমাবভূত্বং। অক্টাদশভিরক্টাদশভিশ্বতনৈর্দশতিগুবিভক্তয়ঃ। ৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

প্রত্যেকতি। অফভিরধিকাদশেতিময়ূরব্যং দকাদিয়াৎ দমাদেমধ্যপদলোপঃ। প্রত্যেকমন্ত্রী-দশভিরিত্যুক্তোবাঁপার্থেলিকঃ তদাহান্টাদশভিরিত্যাদি। অত্রদশদখ্যাগুণেনব্যাপনেচ্ছাবীপা। ১॥

এষাং নবকং নবকং যদিভাগতঃ। ত্রষাং প্রত্যেকমফীদশবচনানাং।১০॥ পূর্বং পরস্কৈপদং স্যাৎ তৎপরস্থাত্মনেপদ্য।১১॥

ত্রয়ং ন্যাৎপ্রথমমধ্যমোক্তমমেত্যোঃ। ত্রত্যোঃ পর স্থৈপদাত্মনেপদয়োঃ। যথা তিত্রস্ অন্তিপ্রথমঃ নিথস্থ নধ্যমঃ মিবস্ মস্ উত্তমঃ এবং তেআতে অস্তে-ইতিপ্রথমান্ত্র্যায়েরং। ১২॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

এযামিতি। বিভক্ত্যপেক্ষয়া আদামিতিস্থাদত আহঅফীদশেতি। অথাচৈকৈকক্রমপঠিতানাং বিভক্তীনাং বিভাগতঃ পৃথক্করণেন্যান্নবকং নবকং। ১০॥

গূঢপ্রকাশিকা।

এয়ামিতি। বিপূর্বাৎ ভজ্ভাগদেবয়োঃ ভজ্গাতোর্ভাবেঘঞ্জস্তাঃ সর্ববিভক্তিভাস্তদিতি তৃতী-য়ান্তাত্রস্পুথক্ করণেনেতার্থঃ। তির্গুতীতিশেষঃ তেনসোপক্ষারং সূত্রম্। ১০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তত্ত্রকিমিত্যাকাজ্ঞায়া মাহপূর্বনিমিতি। পূর্বাং পরীশ্রেপদং চতুর্থালুক্সমাসঃ। নবকং নবকমিতি-বীপ্নানবকদ্বিত্যসমূদায়ঃ পরীশ্রেপদান্তানেপদরপাবয়বেন সর্বান্সংজ্ঞিনোব্যাপোতীত্যর্থাদিতি। নবক-মিতিস্বার্থেকঃ স্বার্থিকাঃ প্রকৃতিতোলিঙ্গবচনান্য তিবর্ত্তভূতিবচনাদেকত্বং। ১১॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

পুর্কামিতি। পরবৈত্রপদমিতি। পরবৈত্রপরফলায়পদম্ এবমাত্রনেআত্মফলায়পদমিতিচভূর্থ্যলুক্ ব্যাকরণেসংজ্ঞাচেদবগমতেইতিচভূর্থালুক্সমাসঃ। পূর্বি নবকং পরবৈত্রপদং তৎপরস্তমবকমাত্রনেপদং স্থাদিতিবাক্যবোজনা। তুশক*ছন্দোহর্থঃ। ১১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ত্রয়ংত্রয়মিতি। পরিস্থাপদায়নেপদয়োঃ তয়ং তয়ংত্রীনিত্রীনিবচনানিপ্রথমমধ্যমোত্তমশংজ্ঞকানি
ভবন্তি। প্রথমাদয়োনপুংসকস্থাবিশেষণং ভবস্তোনপুংসকাএবএতেহিলোকেপুরুষদ্বেনপ্রতীতাইতি।
প্রথমমধ্যমাভ্যাং সহিত্যতমমিতি তৃতীয়াসমাসাংসর্কোদন্দইতি ভায়াদেকদ্বেনর্কাবত্বেইতিপরে। তয়ং
ত্রয়মিতিবীপ্রানোপয়াব্যাপ্যস্থব্যাপকেনসহস্কাবয়বাবচ্ছিয়সম্বন্ধেসত্যেবসাভবতি য়থায়কং বৃক্ষংপ্রতি
সিক্ষতিইত্যাদৌ কস্পচিৎপ্রদেশস্প্রত্তাকমেবরকং সেচনক্রিয়য়াব্যাপ্রোতি অত্ত্রনত্রিকসম্পায়ঃ
প্রথমমধ্যমোত্তমং ব্যাপ্রোতিপ্রত্যক্ষৈত্রকার্ত্রেসত্যেববীপ্রাসম্ভবাৎস্কতং সংজ্ঞাত্রিতয়সম্পায়এবাবয়বেন সর্কান্সংজ্ঞিনোব্যাপ্রোতিয়থা একেনৈবকরতলেনদ্রব্যত্রয়ং ব্যাপ্যতে অসুল্যাদ্যবয়বদ্বারেণেতি
ভাবং। সংজ্ঞাফলং ক্রমেণাহ। ১২॥

নামিপ্রযুজ্যমানে ২পিপ্রথমঃ পুরুষঃ স্মৃতঃ। অপিশব্দাদপ্রযুজ্যমানে ২প্য ভিপ্রায়স্থে। ১৩॥

মধ্যমোযুম্মদিপ্রোক্তঃ। যুম্মচ্ছকোপস্থাপিতেসযোধ্যেবাচ্যে মধ্যমঃ পুৰুষঃ। ১৪॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ত্রয়ংত্রয়মিতি। আদিনাদেআথেধ্বেমধ্যমঃ এবহেমহেউত্তমইত্যুন্নেয়মিত্যর্থঃ। অন্তৎপ্রভাপ্রকা-শিকায়ামনুসর্ত্তব্যং। ১২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নান্ধীতি। কর্তৃকর্মস্বরূপেনান্ধ্যর্থেদশবিভক্তিয় প্রথমপুরুষোভবত্যেব অপ্রযুজ্যমানেনান্ধিচ প্রথমপুরুষোভবতীত্যর্থঃ। অপিরপ্রযুজ্যমানং সমৃচ্চিনোতীত্যর্থ ইত্যাহ অপ্রযুজ্যমানেহপীতি। নন্তুকথং প্রযুজ্যমানগ্রহণং নান্ধিইত্যুক্তএবপ্রযুজ্যমানাপ্রযুজ্যমানসাধারণ্যেন তত্নপপতিরিতিচেৎসত্যং বাচ্যবাচক সম্বন্ধলাভায়ৈবসার্থক্যাৎ তেন দেবদত্তেনপুপ্রপূর্যভাষামত্যাদে ধাতুনানান্ধঃ কর্তৃ স্বেনযোগসত্ত্বেহপিন ক্ষতিঃ। যথাযোগোহয়ংগোণঃ যুম্মদর্থস্থাভিধীয়মানস্বাৎ তেনৈবমুখ্যঃ সম্বন্ধইতিত্রিলোচনঃ। যদ্যেবং যুম্মদর্থস্থাত্বাৎযুম্মদিমধ্যমএব প্রবর্ত্তিয়াতেম্ব্যাপচ্যতেওদনইতি নামার্থস্থ্যম্বাৎপ্রথমোভবিষ্যতি ম্যাপচ্যতেওদনইতি কুতোহম্মত্যক্তমপুরুষইতি নস্থাৎসত্যং প্রযুজ্যমানগ্রহণং মুখ্যার্থমেবেতি। অত্র শব্দানুপস্থিতাবপিমনসাতত্বপস্থিতিরাবশ্যকীত্যাহ অভিপ্রায়েতি। ১০॥

भृष्धकाणिका।

নাম্মীতি। নাম্মীতিনামন্শব্দস্থসপ্তম্যেকবচনেঈঙোর্বিভাষয়েতিঅনোহকারলোপঃ। প্রপূর্বঃ যুক্তির্যোগেযুজ্ধাতুঃ রুধাদিরুভয়পদীতস্মাৎ প্রযুক্ত্যতামেতদিতিকর্মণিআনেতত্ত্রভূশিতিযক্ইতি যকি অকারামুট্ভবত্যানে। স্মৃধ্যৈচিস্তায়াং ভুবাদিপরস্মৈপদীতস্মাৎকর্মণিক্রঃ। ১৩॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

মধ্যমইতি। যুশ্বদর্থে। দম্বোধ্যইত্যুক্তোভবন্ত্শব্দেহপিস্তাদত আহ্যুশ্বচ্ছব্দেতি। যুশ্বচ্ছব্দজন্ত প্রতীতিবিষয়ইত্যর্থেতুদম্বোধ্যইতিবিফলং সত্যংলৈঙ্গিকেনাপ্রয়োগেহপিমধ্যমঃস্থাদতএতং। ১৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

মধ্যমইতি। যুশ্নংশব্দেবাচ্যেংপিমধ্যমঃ পুরুষঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অন্তৎপ্রভাপ্রকাশিকায়াং জ্ঞাতব্যম্। ১৪॥ অশ্বদ্ধান্ত মপৃক্ষঃ। অশ্বচ্ছকোপস্থাপিতেবক্তরিবাচ্যে উত্তমপুক্ষঃ। বাচ্যশ্চ শ্রোতআভি প্রায়িকোবেতি ন কশ্চিদ্বিশেষঃ। এতাদৃশযুষ্মদশ্বচ্ছেষো-নামেত্যুচ্যতে। ১৫॥

শ্বাম্য অস্মদ্বদেকত্বে। ইত্যভিধানং। যথাত্বামস্মিবচ্যিতং। যথা বা অন্যত্রযূয়ং কুস্থমাবচায়ং কুৰুধ্বমত্রান্মিকরোমি সখ্যঃ। ইত্যাদাবস্মিশব্দ-প্রয়োগে উত্তমপুৰুষৈকবচনং সিদ্ধ্যতি। ১৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অন্দ্রনীতি। অন্মেতি প্রথমদলেহদত্তে বক্তৃবাচকাদিশক্ষাগৈহিপি স্থাৎ চরমেহদত্তেলিঙ্গকেনাযোগঃস্থাদতঃ অন্মচহকজন্মপ্রতীতিবিষয়েইত্যর্থঃ তেনাগ্রন্মিন্যোগে নভবতীত্যত আহ অন্মেতি।
শ্রোতঃ প্রাতিগৃহীতঃ আভিপ্রায়িকোমনসাগৃহীতঃ। অত্রঅত্বং ত্বং সম্পদ্যতে ত্বং ভবতি অনহমহংসম্পদ্যতে অহং ভবতি নহমত্বং ভবতি নাহমনহং ভবতি অভিত্বং পচতি অত্যহং পচতি অত্যার্থপ্রত্যুগ্র্যদন্মদোগোঁ গরাম্মধ্যমোভমপুরুগোঁ। তুর্গঃ অত্বং ত্বং সম্পদ্যতেত্বতুবতি অনহমহং সম্পদ্যতেমন্ত্রতীতি
ভবিত্রসমেব বুল্লদ্র্যদোগাঁ গরাদেগাঁগত্বং পুন্র্যুল্লদ্বাবিকারত্বাহিবিকারোহি প্রকৃতিমপেক্ষাভবতি তেন্
প্রকৃত্তেরেব প্রাধান্তঃ প্রকৃতিঃ পুন্র্যুল্লদ্রদেব। অত্রানয়োত্ত্যহং সৌস্তইত্যত্তব্বমদোরপ্রবেশাৎ
বিকৃত্যাপ্রকৃতিরিতি স্থান্যভিয়েল্পমহং ভবতি তত্র তেনামিত্যনুজ্বাস্থামাঞ্রিত্যহমহানদেশাৎ কচিৎ
গৌণত্বেত্বমদোর্ন ব্রমহমে মুখ্যসমাদপ্রত্যয়্যোক্ত উত্রমধ্যমাবেব যথাপরমত্বং ত্রুপ্রাঃ ত্বংপাশঃ
পচসি পরমাহং মত্রপঃ মত্রমঃ মৎপাশঃ পচামি। এতাদৃশেতি। মুখ্যবুল্লদ্রশেষানামেত্যর্থঃ
তেন বুল্লদ্রদোর্গোতিনিপাতনাৎ স্থাদিত্যত্ত্বাহ। ১৫ ॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অস্মদীতি। পৃরুষইতি কচিদেকপদেহপি স্থাদিতদনেন দীর্যঃ। শ্রোতইতি তেন প্রোক্তং কৃতং গৃহং তচ্ছিষ্যস্তত্র আগতইত্যনেনাণি আদৌর্দ্ধিঃ ইবর্ণাবর্ণয়োল্লে পি ইত্যাদিনা শ্রুতেরিলোপঃ। আভিপ্রায়িকইতি। ইক্রিকৌস্তঃ কাশ্যাদেঃ শেষেহর্থইতীকণ্। এতাদৃশেতি। এতাদৃশোঃ সম্বোধবাচকমুখ্যযুদ্মদ্ বক্তৃবাচিমুখ্যাম্মদোঃ শেষঃ শব্দোনামেত্যুচ্যতে শৈষ্টেরিতিশেষইত্যর্থঃ। ১৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অস্মীতি। অস্মিগচ্ছামি একস্বইতি অহমর্থস্বেনেতিভাব:। উত্তমপ্রাপকমিদ:। স্বামস্মিবিচ্যুবিদুষাং সমবায়োহত্র তিষ্ঠতি। আত্মীয়াং মতিমাস্কায়স্থিতিমত্রবিধেহিতৎ। স্বামুপদিশামীত্যর্থ:। যথা
বা। নাহং বিত্বরং ভ্রমিতুং সমর্থাপ্রসীদতায়ং রচিতোহঞ্জলির্বিঃ। ইতিশেষপাদো। ১৬॥

এষাং যুগপছকোযোষৎপরঃ স্যাৎসপূৰুষঃ। সমুদায়স্যস্থ্যাবাং শুদ্বাচ্য-শ্চপরস্তথা। একৈকস্যান্বিভক্তোএষাং প্রথমমধ্যমোত্তমপুৰুষাণাং যুগপদনেক-প্রাপ্তানিলিতস্থ্যাবান্ যোষস্মাৎপরঃ পুৰুষঃ সম্যাৎ তদ্বাচ্যশ্চ পরস্তথাসমুদায়স্থ্যাবান্ পরপুৰুষসম্বন্ধীয়ঃ সএবপ্রযোক্তব্যঃ। যথাছাত্রোইণীতেত্বমধীষে অহমধীয়ে অত্রবয়মধীমহেতথা আদ্যয়োককোযুবামধীয়াথে অনাদ্যয়োককো আবামধীবহেএবং দ্বিবহুত্বয়োঃ। অত্রপুৰুষাণাং পরত্বেইপিপুৰুষসম্বন্ধিনোনপরত্বং তেনসত্ব্যহুগ্দাইরস্ত্যান্য। উক্তিমহিশ্লাক্তিশ্লমঃ পুৰুষঃ যথা অহং বাকুম্ভকর্ণোবাত্বং বাসেনাপতির্মান। ইক্রজিদ্বানিকুন্তোবাবহেয়ু-ভারমীদৃশ্যতি। ১৭॥

গৃত্পকাশিকা।

প্রভাপ্রকাশিকা।

এযামিতি। যুগপচ্ছকোহ্ব্যয়এককালার্থঃ। ক্রিয়াকালয়োরেকত্বেদতি নাময়ুয়দয়ৎ স্থবাচ্যের্ প্রথমমধ্যেমোত্রমানাং যঃ পরঃ দত্রতাত্যাহএকৈকেত্যাদিনা। লিঙ্লোটোর্ছ স্তক্তদাত্তাঃ শ্বনীভবিদ্যার্ভারিদান্যককাল গমনাদ্যেকক্রিয়াবিধায়কত্বাৎ তত্ত্বাপিতৎসম্ভবইত্যত একৈকস্থান্বিভক্তাবিতি। লটঃ প্রয়োগেলটএবপরঃ নলিঙার্দানাং পরইতি। সপচেৎত্বং পচইত্যত্রযম্পবিভক্তেঃ প্র্বেপুরুষঃ পরোহপিতস্থাএব সোহপচৎ অহমপাক্ষং ত্বং পক্তাদিঅহং পক্ষ্যামিইত্যাদোক্তমপ্রয়োগাপেক্ষয়াপ্রাক্ প্রকুয়োইত্যুক্তং কচিৎ পশ্চাৎ প্রয়ুক্তায়াত্মপি পরেণভাব্যং তেনত্বং পচসপচেৎত্বহং পচামিসপচেত অত্যাপিলিঙান্বিচনমিতিবজ্রপরঃ। তদ্বাচ্যশেচতি। অ্বস্থার্থমাহসমূলায়েতি। পুরুষম্প পরত্বনামাদীনামিপি বাচ্যানাং পরত্বনিতিভাবঃ। অত্যত্বদাদীনাং নিত্যমেকশেষইত্যতউপপত্তেকিবং পুরুষসন্বন্ধিনঃ পরত্ববিধান-

মিতিনবাচ্যং চান্দ্রাদিমতেএকশেষাভাবেক্রিয়াকালৈকত্বেযুয়ং বয়মিত্যাদিনস্থাৎ কিঞ্চভবন্ত শব্দস্থ পরস্থেন যুম্মদম্মদ্ভবন্ত শব্দবোগেভবন্তইতি স্থান্নযুৱং বয়মিত্যাদীতিভাবাৎ। ছাত্রো২ধীতেইত্যাদি ক্রমিকোক্তি-মাজিত্যপ্রয়োগেবজ্রধরানুমোদিতইতিবোধ্যং। সর্কেবয়মিতি গীতায়াম্ অহং ছমিমেজনাধিপাশ্চবয়ং নভবিষ্যামইতি সরস্বতীব্যাখ্যানায়ামাদিপ্রয়োগেহক্রমোক্তোবয়মিতিসিদ্ধং। বয়ংকনাদাইবেতিনৈষধঃ বয়ং হনামদ্বিতইতিমাঘঃ। আদ্যায়োঃপ্রথমমধ্যময়োঃ অনাদ্যয়োঃ মধ্যমোত্তময়োঃ। বস্তুতস্তুঅম্মচ্ছন্দ-আত্মার্থঃ আত্মত্বঞ্চপরভিন্নত্বং পরত্বঞ্চএকপ্রয়োজনবং সমূহভিন্নত্বং তথাচ পরভিন্নত্বেনাস্মচ্ছব্দবাচ্যের্বহুষুবয়-মিত্যাদিসিদ্ধৌকিমর্থং বাচ্যস্থপর স্বিধানম্ আত্মভিন্নত্বেনবহুযুয়্মিত্যাদয়শ্চেতি। হুর্গমত্যাহঅত্তেতি। এতন্মতেপুরুষাণামেবপরঃ ননামযুগদস্যদাং তদ্বাচ্যানামিতিসচত্বঞ্চাহঞ্চপচামইতিপ্রয়োগঃ। নচবয়মিত্যাদি-প্রয়োগানুপপত্তোমহান্দোয়ঃ একশেষস্থপাণিক্যক্তস্ম তদকুমতস্ম সত্ত্বেনোপপত্তেঃ। হিতদেবাস্তকথমুক্তং সচত্বঞ্চাহঞ্পচামইতি একশেষস্তদ্ধবিষয়ত্বাৎ পরস্পারসাহিত্যস্ততমতেদ্ধবিষয়ত্বাৎ ইহতুপরস্পরপ্রাধান্যাদেকশেষাদম্ভবাৎ। ক্রিয়ায়াএককালঃ উক্তেরপ্যেককালইতি বচনেএতিপাদ্যতে। শস্তুমতেউক্তেরপ্যেককালঃ সূত্রস্থৈবার্থঃ ক্রিয়ায়াএককালোবচনেনগৃহতে তেনএকদৈবনামাদীকুদ্দিশ্য ক্রিয়াসম্বন্ধেদত্যেবপরএবপুরুষঃ প্রযুজ্যতেন্চপরসম্বন্ধীযথাত্বঞ্চাহঞ্চমুনেঃ পুরংপ্রযাবঃ। সারেহপি সচত্বঞ্চা-ছঞ্পচামঃ সচত্ত্ঞপ্রচামঃ সচত্ত্রঞ্পচ্থঃ অহঞ্ত্তঞ্চসচ্পচামঃ যুগপদ্বচনেসর্ব্বেষামেবপ্রবৃত্তিঃ স্থাৎ, নচৈকদা-নেকমুপপদ্যতেইতি পর্যায়েনস্থাৎ অতঃ পরিভায়েঃ লিঙ্গবতীলিঙ্গং পুনরস্থাযুগপদ্বচনমেব তেনহিপুরুষো-লিঙ্গ্যতেইতি। নচবক্তব্যং পূর্ব্বপরয়োঃ পরোবলবানিতি কিমনেন্যতোযুগপদ্বচনেন ক্রমাভিধানং তৎকথং পূর্ব্বপরবিবক্ষাতদনুষঙ্গিণাং লক্ষণানামস্তাতি চেত্তগাপিপ্রতিপত্তিরিয়ং গরীয়সীতিএতৎসূত্রাভাবেপুরত্বং মস্তাৎ স্থাচ্চসচপচতিঅহং পচামিত্বং পচর্মাতিঅতঃ পরিভাষেমিতিকেচিৎ। ১৭॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

এবামিতি। অত্রাপি প্রুষইত্যত্র কচিদেকপদেহপিদ্যাদিত্যনেন দীর্যঃ। যদ্যপির্গপদেকদেত্যমর-কোমোক্তরেন এককালবাচার্গপংশকঃ প্রাপ্তস্তর্গাপপ্রাগুপন্থিতবর্ত্তমানালিঙাঃ প্রয়োগেএককালস্বান্থানাথ বর্ত্তমানালামেব যুগপত্তের্ব্যবস্থাপনাদ্যত্রাপ্যেকৈকস্তান্থিতকৌর্গপত্তিক্তর্গাতব্যা। নতু ভবিষ্যৎকালবাধকভিন্নবিভক্তির্ম্ অতীতকালবোধকভিন্ন বিভক্তির্যুবেতি। যঃ সইতিছন্দোহর্থযুক্তং। পরঃ পুরুষঃ স্থাদিত্যক্তে উক্তানুসারেণপরঃ স্থাদিতিত্বারণার যংপরইত্যুক্তং। তথাশক্ষেন পুর্বাপরামর্শাৎ সমুদায়সঙ্গাবানিত্যর্থঃ প্রাপ্তঃ। এতদেবপ্রকটয়নাহএককক্ষান্থিভক্তাবিত্যাদিনা। অধীতইতি অধিপূর্ববিশ্ব ক্ষার্যনে তেবিভক্তো অধারইতি সেবিভক্তো অত্রমন্থ অধানহেইতি মহেবিভক্তো রূপং। অহুইতি। ছুর্গিসংহাদ্যইত্যর্থঃ। উক্তিমহিল্লাতি তিক্তমহিল্লাউক্তিবৈচিত্রোণতথাহিপ্রথমমন্মৎপ্রত্ত্যাগোক্তিস্তৎপরং নামোক্তিস্ততোর্ম্মৎ প্রয়োগোক্তিঃ পুনস্ততোনামোক্তিরিত্যেণ রূপোন্তার্ম্যই ভারং যুদ্ধং কৃত্বাজ্যলাভকরণং বহের্থ প্রাপ্নুর্বিত্যর্থঃ। বহেয়ুরিতি। বহপ্রাপণে লিঙোযুস্বিভক্তো অন্বিকরণে যুরিযুসিতি মুসইযুস্ সন্ধিঞ্রণঃ। প্রস্তপ্রতিবারণবাক্যমিদং। ১৭ ॥

প্রহাসেমন্যতান্ত্র ক্রাদ্যত্যাসান্ত্রধ্য নেয়ান্ত্রমো। মন্যতাবেকবচ্চ। মন্যসম্বন্ধিনিধাতোব্যত্যয়েন প্রাপ্ত্যনুসারাদেকবচনাদি। দ্বিত্রাদি প্রাপ্তাবিপিমন্যতাবে-কত্বমেবেতিবিশেষঃ। ত্বন্ধন্যদেধ্যৎস্তহং যথা। তথাযূয়ং মন্যেবয়ং পয়ঃ পিবথইত্যাদ্যহনীয়ম্। ১৮॥

কালস্ত্রিধা বর্ত্তমানোভরিষ্যন্ ভূতইত্যপি । বর্ত্তমানে বর্ত্তমানা । তি তস্ অন্তি সিথস্ থমিবস্মস্ তে আতে অন্তে সে আথেধ্বেএবহে মহে । অত্র যজ্ধাতোঃ পূর্বপ্রক্রিয়ানুসারেণ যজাদিঞনুবন্ধভ্যামিনন্তাকোভয়ং বিছরিতি কর্ত্বপুর্ভিয়পদীয়ত্যাদিবচনানি । ১৯ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

মধ্যমোত্তময়োঃ প্রাপ্তয়োঃ উত্তমমধ্যমবিধানার্থং সূত্রমাহপ্রহাসইতি। মন্তশ্চতদ্যুক্তশ্চেতিবিগ্রহঃ মনজ্ঞানইত্যক্ত দৈবাদিকস্থগ্রহণার্থং মন্তনির্দেশঃ তেন মনুবোধনইত্যক্তব্যবচ্ছেদঃ। পরিহাদেগম্যেমন্ততে স্তদ্যুক্তাচধাতোর্ব্যাদেন মধ্যমোত্তমে ভবতঃ। মন্ততাবেকবচ্চ মন্ততিযোগেবহুত্বপ্রসক্তাবপি একর্মেব। মন্তসন্থলিয়ান্মন্ততি নৈকবাক্যন্থং। ত্বন্ধন্তেইতি মধ্যমেউত্যঃ দধ্যংশীতি উত্মেমধ্যমঃ যুয়ন্মন্তইতি একবচনম্বত্রেহপীতি মন্তধ্বইত্যত্র মন্তেপিবামইত্যত্রপিবথেতি। মন্ততের্যোগে যুম্মন্তাত্তমঃ মন্তসন্ধিযোগেহস্থাদিমধ্যমইতিবোধ্যং ক্রমানুসারাং। পরীহাদেমন্তাত্ত্রয়ং তদ্যুক্তান্মধ্যমঃ একবচ্চেতি এহিত্বন্যন্ত্র্যমহং পান্ত্রসাত্রিয়াঃ। লোডাদাবপ্যবং। কিন্মন্তেবিহিরিষ্যদেবত হতাং মুঞ্চান্তরাগ্যমানিতি। প্রহাদেকিম্ অংহাত্বং মন্তদেপটুত্রোহ্যমন্ত্রি। মন্তন্যন্ত্রে মন্তন্ত্রের একবচ্চেতিবহবঃ। মন্তন্যুক্তাদেবকবদিতিমতান্তরে। ১৮॥

गृष् अकामिका।

প্রহাসইতি। নিজপটব্যঙ্গোক্তিপ্রহাসঃ পরীহাসোহপি। ব্যত্যাসাদিতি। বিঅতিপূর্বঃ অস্ভূবিবিদ্যমানে অদাদিপরস্থৈপদী তম্মান্তাবে ঘঞ্ ব্যত্যাসোবিপর্যয়ঃ হেতৌপঞ্চমী। একবচ্চেতি। একস্থভাব একবং কুত্রচিন্তাবেইভিবং অভ এবানুপদং বক্ষ্যতেমম্যতাবেকস্থমেবেভীতি। মন্যইতি। মন্ত্রানেবর্ত্তমানায়া এবিভক্তোরপং। অংসীতি। অদ্ভক্ষণেলিঙ্গবং প্রথমোধূটামিতি দম্ভতঃ। পিবথইতি। প্রাপানে ভুবাদি পরস্মৈপদী বর্ত্তমানাথবিভক্তো ভুবাদেরিত্যনিপঃ পিবেতি পিবাদেশঃ। মাদিনা যুয়ংমন্যে হ্রশ্বমহং পান্তর্সনিভাগের্ত্রহণং। ১৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রটিলবসুহূর্ত্তপ্রহ্রাদিভেদেনকালস্থ বহুবিধত্বেহপি বক্ষ্যমাণ সূত্রোপযোগার্থং কালস্থত্তিবিধ্যমাহ-কালস্ত্রিধেতি। যদ্যপি গগনবৎ দর্কব্যাপকএবাস্তদ্রব্যাতিরিক্তঃ কালস্তথাপি ক্রিয়ারূপাণাং কালোপাধীনাং ভুবাদেঃ শিতিকর্ত্তর্যান্। কর্ত্তরিশিতিপরে ধাতৃভ্যঃ পরোইন্ বিকরণঃ স্যাৎ। যজতি যজতঃ। ২০॥

লোপআদস্য। অকারাৎপরস্য প্রত্যয়াকারস্য লোপঃ স্যাৎ। যজন্তি। ২১॥ আব্যোঃ। অকারস্যাকারোভবতিবমোঃ পরয়োঃ। যজামিযজাবঃ যজামঃ। আত্মনেপ্দেযজতে। ২২॥

বহুষাৰহুষং মন্তব্যং। যত্ৰাবৰ্ককলাত্মিকাক্ৰিয়া সকালোবৰ্ত্তমানঃ বৰ্ত্তইতিচ। তুল্মিন্ বৰ্ত্তমানে কালেধাতোঃ প্ৰাবৰ্ত্তমানাখ্যাবিভক্তিৰ্ভবিত। অস্থাইতি। বৰ্ত্তমানায়ালট্ সংজ্ঞাইত্যৰ্থঃ। সামীপ্য-স্থাত্ৰৈবান্তৰ্ভাবাৎত্ৰৈবিধ্যমানুপপন্নং। যত্ৰতাদৃশক্ৰিয়াধ্বংসঃ সভূতকালঃ যত্ৰ্তাদৃশক্ৰিয়া উৎপৎস্থতে সভবিষ্যন্। গ্ৰন্থকুচাগ্ৰেবক্ষ্যতি। সামান্যতঃ সাধনপ্ৰকারং দশ্য়তি অত্ৰেতি। অধিকবিষয়ত্মা প্ৰথমমেধভূধাত্বিহায়যজেত্যুক্তং। পূৰ্বপ্ৰক্ৰিয়া ভুবাদ্যাদীতি প্ৰক্ৰিয়া ভুবাদ্যাদীত্যাদিনা তিঙ্বিধানে যজাদীত্যাদিনা উভয়পদীয়ত্যাদি বচনানি কৃতানিতত্ৰিবিশেষ কাৰ্য্যাপেক্ষায়াং সূত্ৰমাহ। ১৯॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

কালইতি। কলগণনে কল্যতে গণ্যতে সর্বমনেনেতি ঘঞ্ রৃদ্ধিঃ কালঃ। ত্রিধেতি। ত্রি-প্রকারা অস্তারিধাবিধপ্ প্রকারেসঙ্গার্থাদ্ধাচেতিধা। রৃতির্প্রবর্তনে বর্ত্তইতি বর্ত্তমানঃ বর্ত্তমানেশন্ত্-শানাবিতিশানেশিক্বাদন্ বিকরণেগুণঃ অকারামুট্ভবত্যানে ইতিমাগমঃ। ভূসভায়াং ভবিষ্যভীতি ভবিষ্যন্ স্থাবৃকশন্ত্ স্থানোস্তইতি স্তন্তঃ ইটিগুণঃ। ভবতিম্মেতিভূতঃ গত্যথাকর্মকেত্যাদিনা কর্ত্তরিক্তঃ। বর্ত্তবানেবর্ত্তমানাইতি। ইদং গাথাছন্দঃ। অন্যৎ প্রভাপ্রকাশিকায়ামবলোকনীয়ম্। ১৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভুবাদেরিতি। শিৎ লট্ লোট্ লঙ্ লিঙ্ শন্ত শান্তেরু পরেমন্ বিকরণঃ। কর্তরীত্যধি-করতি অপভাবইত্যস্ত প্রাক্। অকারস্বর শৃত্যাধাতবঃ প্রায়েণেতিধ্যেয়ং। যজ্দেব পূজাসঙ্গতকরণদানেম্ব। যজন্তি যজনি যজ্ঞ যজ্প। ২০॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

ভুবাদেরিতি। শিতি বক্ষ্যমাণশিৎসংজ্ঞকবর্ণেপরে ভুবাদেঃ পরোঅন্বিকরণঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ভুবাদেঃ স্থানেইতিনাশঙ্কনীয়ং সর্ব্ববিধিভ্যোলোপবিধিব্বল্বান্ স্বরাদেশস্ততোবলীততোহপ্যাগমৌবলীতি। আয়েনাদেশাপেক্ষয়াগমস্থবলবত্ত্ববিধানাৎ ভুবাদে পরোহনাগমত্রবৈতি। ২০॥

গু ए प्रकामिक।।

লোপইতি। লুপ্৯ছেদনেলোপনং লোপঃ ঘঞ্গুণঃ স্বয়মেবসূত্রস্থ বিবরণমাহাকারাদিত্যাদিনা। যজস্তীতি। যজধাতোরন্বিকরণেতস্মাদস্তিপ্রত্যয়স্থাকারলোপঃ। এতৎসূত্রাভাবেযজান্তীতি স্থাদিতি বোধ্যম্। ২১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অকারা তথয়োঝ্ল দিরাইঃ স্যাৎ। অকারাৎ পরয়োস্তথয়োরাদিরাকারইকারঃ স্যাৎ। যজেতে। ২৩॥

এচ্যবর্ণলুক্। যজে। এবং রাজ্ভজ্বপ্পচ্ ক্ষায়প্রভৃতেরপং। তথাএধ্ স্পদ্ধ্ ভাজ্ রম্ ক্ষমাদীনাং ৰুচাদের্ভন্বন্ধাচেত্যাদিনাকর্ত্যাত্মনেপদিনাম্
অন্ পরোক্ষে বর্জয়িত্বেতিবচনান্ধবিনদুং আরভতে আলভতে লভতে। তথা অট্
পট্বদ্ গদ্ ভণ্ রণ্ ধেট্ কৈগে এস্ধ্যেবসাদীনাং স্যাৎ পরক্ষৈপদং কর্ত্য্যাত্মনেপদিশেষতইতি পরক্ষেপদিনাম্। ২৪॥

शृष् अकामिका।

আনমোরিতি। সামান্যগ্রাহকাভাবইতি নিয়মাদ্বিভক্তিলাভেবিভক্তিবমোঃ প্রয়োরিত্যর্থঃ। আদিতিবিভক্তিপরীণামেনানুবর্ত্তিহম্মেতি। অস্থাপার্থং স্বয়ং বিরুণ্যেতি অকারস্থেত্যাদিনা। ২২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

প্রভাপ্রকাশিকা।

এচাতি। এচ্দ জ্ঞাকে মমানুক্। রাজ্দীপ্তো রাজতি রাজতে ভজ্দেবায়াং ভজতি ভজতে টুবপবাজতন্ত্রসন্তানে বপতি বপতে ডুপচঞ্নপাকেপচতি পচতে ক্ষায়ীওপায়ীর্দ্ধা ক্ষায়তি ক্ষায়তে। এবং
হিব্দম্যানপুজায়াম্ অনুযাচনে বৃধিরবােধনে থনুঅবদারণে শপ্যাক্রোশেব্যয়্গতােবহপ্রাপণেইত্যাদয়োয়জাদয়ঃ। অল্মনেপদীয়ামুদাহর্তুং ভূমিকামাহতথেতি। পূর্বপ্রক্রিয়ামুদারেণেত্যথঃ।
এধ্রদ্ধোম্পর্ক্ সংহর্বে সংহর্বো জিগীয়াভ্রাজ্দািপ্তোরমুর্জ্লাভায়াং ক্ষমুদহনেআদিনাবায়্নােটনেবাধতেইত্যাদি
এধাদানামাল্যনেপদিনাং রূপে জেয়মিতিশেয়ঃ। আঙ্পুর্কারভিরারস্ভার্থঃ আঙ্পুর্কোলভির্যাতনার্থঃ। রভরাভাৎস্থলাত্তঃ। বিন্দুপ্রত্যানবিকরণস্থ বর্জনাদাহঅন্পরােক্ষেতি। পরস্থাপদীয়ান্ প্রস্তাবয়তি। তথেতি
শৈষিকবিধানাং শেনেউক্তামিদং। অট্ পট্গতাে বদ্ গম্ ভণ্ রণ্ শব্দার্থাঃ ধেট্পানেকৈগৈশকেএস্উদ্ধেগোধাৈচিন্তায়াং বস্নিরানেইত্যাদয়ঃ। এয়ামপিরপং বােধ্যমিতিশেষঃ। ২৪॥

গূতপ্রকাশিকা।

এচাবর্ণেতি। এচালুগিতিক্সতেপ্রদর্শিতধাভূনাং যজেরাজেইত্যাদিরপানিসিদ্ধন্তি কিন্তব্যতিভে-ইত্যাদি নিসিদ্ধাতীতাতোহবর্ণেতিগৃহাতং। নমুএচীতিকথমুচ্যতেএহবর্ণলুগিতি ক্তেব্যতিভ্যেইত্যস্থ গুণিন্যস্ত্রস্য ধাতৃনামুপাস্ত্রস্য লঘোগুণঃ। অগুণাঅতনুর্নাদিঃ কণঙনুবন্ধাঃ
কুটাদিতোংনিচিনট্। অন্দন্শ্যাদেরিড্বিজ উণোতের্বাবিদেরেবাম্। অতনুসংজ্ঞকানকারাদিপ্রত্য়াঃ ককারণকারঙকারান্ত্রনাশ্চাগুণাঃ স্থ্যঃ এতদ্ভিন্নগুণি নিপ্রত্যমেপরেগুণঃ স্যাৎ। জয়তি নয়তি স্রবতি ভবতি হরতি তরতি হরতে। ক্রিয়াবিনিম্য়েসর্বধাতৃত্য আত্মনেপদং ব্যতিজয়তে ব্যতিভবতে ব্যতি হরতইত্যাদি।
ধাতৃনামুপাস্তস্যলর্ঘোগুণঃ চেততেশ্বেততেনিষেধতি বোধতি বোধতে। লঘোঃ
কিং জীবতি মীলতি ঈহতে। অস্তম্যোপাস্তম্য কিং মুগয়তি বিধবতি। ২৫॥

দিদ্ধিসম্ভবাৎ নচ ঐবিভক্তোব্যতি ভৈইত্যাদিকথং দিদ্ধাতাতিবাচ্যং বৃদ্ধি শৈচচামিতি দশ্ধিনৈবোপপত্তেঃ
সত্যম্ এইত্যত্তবিভক্তানাঞ্চলেপনমিত্যনেন ভবতাসপ্তম্যেকবচনং লোপয়ি ব্বাত্তপাৰ্যাত্ব্যং স্ময়াতুত্বশুক ইশ্চেতি এইতি পরিকল্প্যাসপ্তমাদিব চনং লোপয়ি ব্বাত্তপাৰ্যা স্তেশঃ স্বাহ্বাং পরয়োঃ স্বোঃ স্বোঃ স্বোঃ স্বোঃ স্বোঃ বিভক্তেরকার ইকারয়োঃ পরয়োঃ স্বোঃরবর্ণলুক্ স্থাদিতিব্যাখ্যাতব্যং বিনিগমনাবিরহাৎ অয়্যবর্ণলুগিত্যুক্তেতুসূত্বস্থ তুল্য বেইপিত্রে বিশিষ্ণ স্থাৎ এশ্চইশ্চ অয়িবিভক্তি লোপেত য়োঃ পরতোহ বর্ণলুক্ স্থাদিতি স্পেনহাপত্তেঃ তস্মাৎ স্থাবোধার্থমে চীত্যুক্ত মিত্যবগন্তব্যং। অন্পরোক্ষেইতি। অন্পরোক্ষেকর্ যি বাবিন্দুর ভিলভোস্ত থেতি বচনাদিত্যর্থঃ। পরক্ষৈপদিনামপি ক্রিয়াবিন্দ্রের্ধিশত্ব্য ইত্যনেনা অপ্রকারেণবাত্মনেপদেশতি এবং রূপং বোধ্যমিতি শেষঃ। অতৎপ্রভাপ্রকাশিকায়াং জ্বেয়ং। ২৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গুণিনীতি। গুণিনিপ্রতায়েপরেশত্নামন্তস্তগ্য উপান্তস্তলঘোরেবগুণইত্যর্থঃ। যদ্যপি ধাতুরেবগুণীতলৈকাজনকাছ তথাপিযিমান্প্রতায়েগুণোভবতি তলৈকগুণিছং। এতচ্জপ্রগাইতানেন অতন্নানিপ্রতায়লৈগাগুণকেতদিতরস্তগুণিছপ্রতাতেং স্পান্তমেব। নাস্প্রিগণবেব্তেইগুণাঃ। অতনুসংজ্ঞাবাচ্যাথে। নামীপ্রভৃতিঃ ককারণকারঙকারান্ত্রমাঃ প্রতায়াঃ। কুটাদীতি। নইচ্ইন্ অট্ অনিচিনট্ ইচমিনমটক্ষহিদ্বাঅন্তাইগুণাঃ বথাক্ট্কোটিলোজকোটিকোটয়তিচুকোট। কুটাদয়োধাতুপাঠেইবগন্তব্যাঃ। দন্স্তাদেরন্বিকরণোইগুণাঃ বিজ্বাতোরিভগুণঃ উর্গু কোনেভগুণঃ ওবিজীভয়দঞ্চলনয়োঃ উদ্বিজিতাউদ্বিজিশ্যতি উদ্বেজিতইতীনস্তম্প প্রোণ্বিতা প্রোণ্বিতা প্রোণ্বিতা প্রোণ্বিত প্রোণ্বিতা প্রোণ্বিত প্রাণ্বাহা দেরবিত্তমান্ত ভবিজিতাউদ্বিজিশ্যতি উদ্বেজিতইতীনস্তম্প প্রোণ্বিতা প্রোণ্বিতা প্রোণ্বিতা প্রোণ্বিত প্রাণ্ত্রমাইভিত্তরঃ স্বীকারঃ উৎকর্মঃ আদ্যয়োঃ সকর্মকঃ চরমেইকর্মকঃ। জিগায়তস্তহত্যারমিতিভটিঃ মথৈরমজৈরজয়ৎ স্থরালয়নিতি কাদ্মরী। সাজয়তি সরস্বতীদেবীতিস্ববন্ধঃ। অনিগুণঃ প্রকৃত্তময়েপ্রজয়তি নীনয়েনীঞ্ প্রাপণে নয়তি নয়তে ক্রক্রমেক্রগতিভ্যায়াং ভবতি হঞ্হরণেহরতি হরতেঞিব্রাহ্ভয়পদং তৃপ্লবনসন্তরণয়াং তরতিনদং। ধাস্বপ্রন্মকুণউপাস্তপ্তণমাহধাতুনামিতি। চেততইত্যাদি। চিতীসংজ্ঞানেশিতাবর্শেষপুণত্যাং যত্তং নিধেবুধ্ববর্গমনে। লঘাঃ কিমিতি। জীব্রলপ্রাণধারণ্যাং জীব্পাণধারণেপ্রাণাম্বিজ্যন্তাং ধারণমাধারতিতি গোবিন্দভট্টঃ। মৈত্রেয়বোপদেব্বয়ারপ্রেরম্বাত্রমেবপাঠঃ। বলপাঠস্তসম্প্রদামবিজ্যনিজ্যতাঃ

গমিষ্যমোইস্ত স্ছেহিনিস্যাৎ। গচ্ছতি ইচ্ছতি যচ্ছতি। ২৬॥

দীর্ঘঃ স্যাদাচমক্লমোঃ। অনয়োরনিপরেদীর্ঘঃ স্যাৎ! আচামতিক্লামতি। আচমে এ হণাৎ বিচমতি। ২৭॥

ক্রমঃ পরশ্যে। অনিদীর্ঘঃ স্যাণ। ক্রামতি। পরশ্যৈকিং ক্রমতে। ২৮॥

মীলম্মালক্ষীলনিমেযণেঈহচেফীয়াং। অন্তস্তোপান্তস্থাকিমিতি। মুগান্তেযণেঅদন্তচুরাদিঃ আগর্ব্বা-দিতিচঙ্ অদন্তবাতোঋ কারস্তোপধোপধত্বাৎ নগুণঃ ইনিধাত্বস্তস্তইতি অলোপঃ। বিধুরিবাচরতিউপমানাৎ কর্ত্ত্বিডেঙাচারইতি যিঙ্বিঙ্লুক্চসর্বতইতি যিঙোলোপঃ অনিগুণঃ আদেশ্বিবন্ধগ্ৰঃ। ২৫॥

গূঢপুকাশিকা।

্ গুণিনীতি। গুণোহস্থাস্তীতিইন্। গুণিপ্রত্যয়স্থবহুতরত্বেনতদর্শনাশক্যত্বেন অগুণভিন্নতয়াগুণি-প্রত্যয়ং দর্শয়িত্বসগুণসংজ্ঞামাহঅগুণাইতি। দন্শদংশনেধাতুনির্দেশেইঃ। অগুণসংজ্ঞাবিধায়কং। সূত্রমার্য্যাছন্দোনিবদ্ধং। ২৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গমীতি। গম্ ইযুইচ্ছায়াং যমুউপরমেনোদসুবন্ধোহয়মিতিকশ্চিৎ। উপরমোনির্ত্তিঃ। যচ্ছতি পাপাল্লোকইতি মনোরমা। আযচ্ছতেপানাং।২৬॥

गृष् थ्रकानिका।

গুমাতি। গুম্নগতৌপরশ্বৈপদী। গুছুতীতি। অনিগমোহস্তস্তছাদেশেআঙ্ মাঙ্ স্বরাৎ প্রশেছচুগিতিচাগমঃ। এবম্যতা। ২৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দীর্য:। চমু ছমু জমু ঝমু জিম্ অদনে। ত্রেতাগ্রিরাচামতীত্যনর্য:। ২৭-॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

দীর্ঘইতি। আঙ্পূর্বর চম্ধাতোঃ ক্লমুগ্রানো ক্লম্ ধাতোশ্চানিদার্ঘঃ স্থাদিত্যর্থঃ। আচমেরিতি। আঙ্পূর্বর চম্ধাতোদ্ধীর্ঘবিধানাদক্যোপসগাত্তস্থ নদীর্ঘইত্যর্থঃ। এবমনুপসর্গস্থাপি নদীর্ঘঃ। চম্ভুবাদি-্
পরশ্যৈপদী ক্লম্ভুবাদি দিবাদিপরশ্যৈপদী। ২৭-॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রমঃ। ক্রমোবানুপদর্গতইত্যান্থনেপদেন্তাৎ। হেল্লেপাৎক্রাম। ২৮॥

গৃড়প্রকাশিক।।

ক্রমইতি। ক্রমুপাদবিক্ষেপেপ্রবৈদ্যপদা। প্রবৈদ্যইতি সংজ্ঞাপ্রতীতিঃ। প্রবৈদ্যপদেক্রমোহনি দীর্ঘঃ স্থাদীতার্থঃ। ২৮॥

দাণঃ স্যাদ্যছ। শ্বনিপরেষচ্ছতি।২৯॥ ঘোজিন্ত্র। জিন্ত্রতি।৩০॥ পঃ পিব। পিবতি।৩১॥ স্থাধ্যোন্তিষ্ঠধমৌন্তঃ। তিষ্ঠতি ধর্মতি।৩২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দাণঃ। দাণ্দানে যচ্ছতি যচ্ছেৎ যচ্ছতু অযচ্ছৎ অন্যত্ত্ৰদান্তা। যচ্ছতি প্ৰতিমুখন্দয়িতায়ৈবাচং চুক্।২৯॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

দাণইতি। ধাতুরয়ং মূর্দ্ধগ্যণসুবন্ধোভুবাদিপরস্বৈপদী। দাণোহনাচারইতি জগদীশ তর্কালক্ষারঃ। যছেতি লুপ্তপ্রথমৈকবচনান্তং। যচ্ছতীতি। ছেচুগাগমঃ।২৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্থো। ত্রাগন্ধোপাদানে পুষ্পং জিত্রতি পুষ্পবৃত্তিগন্ধলোকিকসাক্ষাৎকারণনিতিধীঃ। গন্ধমান্ত্রায় চোর্ব্যাইত্যত্রধাতোরুপাদানেলক্ষণা গন্ধবৃত্তিসাক্ষাৎকারং ক্ত্রেত্যর্থঃ। এবমামোদমুপজিত্রন্তাবিতি।৩০॥

গুড় প্রকাশিকা।

স্ত্ৰহিতি। স্ত্ৰহত্যাপাতোঃ মষ্ঠোকৰচনে অঘুট্স্বরেষু ধাতৃনামালোপইত্যালোপঃ। অয়ং ধাতৃঃ পরস্মৈপদী। জিম্রেতি লুপ্তপ্রথমৈকৰচনান্তং। ৩০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পঃপিব। পাপানেইত্যস্থানি পিবাদেশঃ। পিবতীতি। ব্যঞ্জনান্তত্বাৎগুণঃ প্রাপ্নোতীতি এবং সতিপ্রক্রিয়ালাঘবার্থং গুণরূপমেব কুর্য্যাদিতি। অদন্তাদেশোহয়ং তেনোপধোপধত্বামগুণইতি ছুর্গঃ। পারক্ষণেইত্যস্থাদাদেরিহনগ্রহণং। পঃ কিং পৈওশোষণে পায়তি। ৩১॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

পঃপিবেতি। পইত্যস্তাপি পূর্ব্ববদালোপঃ। অয়মপিপরস্থৈপদী। পারক্ষণেইত্যস্তাদাদিক্ষেনা নোহপ্রসক্তের্ম গ্রহণং। পিবেত্যত্রাপিপ্রথমৈকধচনলোপঃ। ৩১॥

প্রভাপ্রকাশিকা'।

স্থা। স্থাতিষ্ঠগাধমস্তাদনি। গ্রাশব্দাগ্নিসংযোগয়োঃ। ধমেৎ ধমতু অধমৎ। আনিকিম্ আগ্রায়তে গ্রাস্থতি আগ্রাপয়তি। ৩২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্থাধ্যোরিতি। ষ্ঠাগতিনিবৃত্তে উভোপরস্মৈপদিনো। স্থাধ্যোরিত্যস্থ ষষ্ঠীদ্বিবচনে পূর্ব্ববদা-লোপঃ। ৩২॥ মোমন্কার্য্যঃ। মনতি। আমনন্তিমনীষিণঃ।৩০॥
দৃশঃ পশ্যা। পশ্যাতি।৩৪॥
অর্ত্তেখ্য ছি। খাচ্ছতি।৩৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্মো। স্নাঅভ্যাদেমনেৎ মন্তু অমনৎ অন্তত্ত স্নাতা স্নায়াৎ। ৩৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

মইতি। মইতিষষ্ঠ্যেকবচনেপূর্ব্ববদালোপঃ। অয়মপিপরশৈপদী। আমনস্থীতি। এবং বাচ্যঃ সক্যার্থমিতি বোনোপদিশাতে। ভবৎপ্রণীতমাচারমামনন্তিমনীষিণঃ ইতিকুমারসম্ভবে। অস্থার্থঃ। সহিমালয়ঃ ক্যার্থমেবং বাচ্যোবক্তব্যইতি বোযুত্মাকং নউপদিশাতে নাজ্ঞপ্যতেময়েতিশেয়ঃ অত্রহেতুমাহ ভবৎপ্রণীতং ভবদ্ধিঃ কৃতমাচারং মনীষিণঃ পণ্ডিতাআমনন্তিকুর্ব্বস্তীতিযাবৎ। ষপ্তার্গীন্ প্রতি, শবচনমিদং। এবং মনেৎ মনতু অমনৎ মাতা মায়াৎ মাস্থাতি অম্লাস্থৎ মম্লো অম্লাসীৎ। আত্মনেব্যতিমনেত ব্যতিমনত্যঃ ব্যত্যমনত ব্যতিমাতা ব্যতিমাশীক ব্যতিমাশ্যতে ব্যত্যমাশ্যত ব্যতিমাদ্ধে ব্যত্যমাশ্যত। কর্মাণিলায়তে মায়েত স্নায়মানন্ অমায়ত মাতোমাশীক স্নাস্থাতে অম্লাস্থতমন্দ্র অম্লায়িসনিমিম্লাসতি ইনিম্লাপয়তি যণ্ডিমাম্লায়তে বঙ্গুকিমাম্লতি মাম্লেতি। এবমূহনীয়ং। ৩৩॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

দৃশঃ। দৃশিরপ্রেক্ষণে। পশ্যেৎপশ্যতু অপশ্যং। ৩৪॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

দৃশইতি। পরশৈপদ্যয়ং ধাতুঃ। পশ্যেতি লুগুপ্রথমৈকবচনান্তং। পশ্যেতি ব্যঞ্জনান্তমুচ্চারণার্থ-মকারঃ। যদ্যদন্তং তদাপশ্যতীত্যত্রলোপ আদস্যেত্যন্ বিকরণস্যলোপঃ। এবমন্যত্রাপি। ৩৪।

প্রভাপ্রকাশিকা।

অর্ত্তে। ঋণাতোরনি ঋছাদেশোভবতি। ঋগতো প্রাপণেচ অদাদিশ্চ শিতিতিপিগণক্ত-স্থানিত্যত্বান্নান্ বিকরণঃ। অথবা উণাদিক স্থিপ্। ঋছগতাবিত্যনেনাপি সাধ্যসিদ্ধো অরতীতিরূপ নির্ত্যপ্রচনং। ৩৫॥

গঢপ্ৰকাশিকা ৷

অর্ত্তেরিতি। অত্রগণপাঠাৎ তিপঃ পনুবন্ধকরণাদা অর্ত্তেরিত্যত্ত নান্ বিকরণঃ গুণস্তুভবত্যেব। নত্তরিতি গ্রহণাৎ জুহোত্যাদি গ্রহণীয়ঃ তম্মাদন্ধিকরণস্থাপ্রসক্তেঃ। ঋচ্ছতীতি। অনিঋছাদেশে চুগাগনঃ। ৩৫॥

অতিবেগার্থেসর্ক্তের্ধাব্। ধাবতিপত্তিঃ। অনতিবেগেমাভূং। সরতি প্রিয়মস্বুজেক্ষণা। তামনুসরসরসীৰুহলোচন। কথং ধনুষঃ প্রসরতি বাণঃ স্বাভাবিকগত্যধিক গত্যবিবক্ষয়া। তদ্বিবক্ষায়ান্ত গাণ্ডীবধন্বনো বাণা আভি-ধাবন্তি শাত্রবানিতি। ৩৬॥

সদঃ সাদ। সাদতি। সর্ব্রানীত্যেব অঘাৎ অসদৎ।৩৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অতি। ভুবাদিপরশ্বৈপদিনঃ স্থাতাবিত্যস্থাতিবেগেধাবাদেশঃ। ধাবতিজ্ঞবন প্রযাতীত্যর্থঃ। সরতীতি। অমুজেক্ষণানায়িকাপ্রিয়ং সরতিগছতি এবমভিসরতি বেগাভাবেনাতিবেগাভাবঃ। তামিতি। হেসরসীরুহলোচন! তাং কান্তামনুসরগছইতি জয়দেবঃ। ননুবেগার্থইত্যেবজ্ঞায়ঃ কথমতি বেগার্থইতি অতএবগত্যর্থস্বাদয়ং বেগেযদাবর্ত্ততে তদাসরতীতি প্রয়োগোমাভূদিতি ত্রিলোচন আহ ইত্যত আহ স্বাভাবিকেতি। বাণস্থাতিবেগস্থভাবস্থামাধিক বিবক্ষা অভিধাবন্তীত্যত্রাতিবেগাধিক বেগবিবক্ষাঅন্তথা তস্থাতিবেগ স্বভাবস্থ স্প্রসিদ্ধস্বাদযুক্তমাপদ্যেত। ননুধাবুগতাবপ্যন্তিসত্যং গত্যর্থাদয়ং স্থাতুর্য্যদাতিক্ষিবর্ত্তিত তদাসরতীতি প্রয়োগোমাভূদিতি। ৩৬ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অতীতি। দর্ত্তেরিতি গণপাঠাৎ তিপঃ পনুবন্ধকরণাদ্বানান্ বিকরণঃ গুণস্তভবত্তের সামান্তথাত্ব কার্যান্তাহ। গছ্ছতিপুরঃ শরীরং ধাবতিপশ্চাদসংস্থিতং চেতঃ। চীনাংশুকমিবকেতোঃ প্রতিবাতং নীয়মানস্থেতি শক্সুলানাটকে। যন্তর্রোষারুণাদৃষ্টিদ্ধাবতে যত্রশত্রেব। পাশপাণিস্তত স্তম্মিন্ যম্দ্রেক্তিপি ধাবতীতি কবিরহন্তে। সরতীতি। সরতিপ্রিয়মসুজেক্ষণাদ্বিজরাজবিরাজিতাননা। গজরাজ্বগতির্মনোহরার্বভানুস্থতাম্মরাত্রর। ইতিপদাং। তামনুসররতি। হরি হরি যাহি মাধব যাহি কেশবমাবদ কৈতববাদং। তামনুসরসরসারুহলোচন যাতবহরতু বিষাদ্মিতি গীতগোবিন্দে। পূর্বেত্ত মন্দর্গমনং পরত্রেশ্বভাবিকগমনমিতি বেগাভাবাদতি বেগাভাবঃ ননুতহিবেগার্থ ইত্যুচ্যতাং কিমতিবেগার্থ ইত্যালোচ্যপূর্বপক্ষয়িত্বাসমাধতেকথমিত্যাদিনা ধনুষঃ প্রসরতিবাণইত্যন্তর্যাকরণলিথিত্যুদ্ধতং। বাণস্থ বেগগতেঃ স্বাভাবিকস্বান্তদিকক্ষয়া প্রসর্বাতি প্রয়োগইত্যর্থঃ। অতএবাতিবেগার্থাভাবে মহানাটকপদ্যেহিপিন ধাবাদেশঃ যথা। নীতোদূরং কনকহরিণচ্ছদ্মনারামভদ্রঃ পশ্চাদেনাং ক্রত্যমনুসরত্যের বংস্ক কমিষ্ঠঃ। বিভাবিভাহ প্রবিশত্তিতঃ পর্ণশালাঞ্চ ভিক্ষ্থিগ্রিক্কফং প্রথয়তি নিজামাকৃতিং রাবণোহ্যমিতি। যত্রতু স্বাভাবিকবেগগতেরধিকবেগগতিবিবক্ষা তত্র স্ব্বাতোদ্বিভাহ অতিবেগেন স্রতীতি প্রয়োগপতেঃ। ৩৬ বিশাব্যতি স্বাত্রবাধ্যান্তিত। ননুধাবৃগতাবপ্যস্তিত্বদলমনেন সূত্রেণেতিচেন্ন তথাসতি অতিবেগেন স্রতীতি প্রয়োগপতেঃ। ৩৬ বি

প্রভাপ্রকাশিকা।

সদঃ। সদ্৯ বিসরণাদো নিষীদতি। অস্ত্রাদিতি। আখ্যাসাছেতি ঈসিচোলু ক্। অসদদিতি। ক্রদকুবদ্ধত্বাদিত কুঙোলঙ্। ৩৭ । .

শদেঃ শায়ঙ্। অন্বিকরণেস্যাৎ। শায়তে। ৩৮॥ কপেরোলঃ। কম্পতে। ৩১॥ ঋ৯কাপি। কৃপ্তবান্কুপ্তঃ। ৪০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সদইতি। অনিপরেইতি যোজনীয়ং। সীদতীতি। সদ্৯বিসরণভেদাবসাদনেষু পরিশ্বেপদী। অঘাদিতি পূর্ববিশ্বব্যাবৃত্তিঃ। এবমনিভিন্নেনান্ডেষাঞ্চান্যাদেশাইতি ব্যাবৃত্তিরুদাহর্ত্ব্যা। স্থামাইত্যাদ্যেত দন্তমুপগীতিচ্ছন্দঃ। ৩৭॥

প্রভাপকাশিকা।

শদেঃ। শদ্ভশাতনেতচ্চবিশীর্ণতা। ড়িব্রাদাত্মনেপদং। ৩৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শদেরিতি। ইশতিপোধাতুনির্দেশেশদেরিতিস্থানাদেশেষষ্ঠী। ৩৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কুপেঃ। অন্মাত্রং নামুবর্ত্তে কিন্তুযত্রকুপেরোলভ্যতেতত্রলইতিতদর্থঃ। অতোহগ্রেক্৯প্রবা-নিত্যদাহতং। কুপুষ্সামর্থেআলুনেপর্দা অনিগুণেরোলঃ কল্পতে। যাবতাফলবত্যুক্তিরিতিভায়াৎ কল্পনায়ং কল্পয়তি অচিক্৯পৎ কল্পপ্রভূতয়ঃ সিদ্ধান্তি। ৩৯॥

গূঢপ্রকাশিকা।

কুপেরিতি। যাবতাফলবতুর্ক্তিস্তাবৎ পর্যান্তকল্পনেতিভায়াৎ যত্রক্ষপেরকারোলভ্যতেতত্তলঃ স্থাৎ নতুমন্বিকরণ এবেতি অভ্যথাকল্পঃ কল্পনায়ং ক্লপ্তেত্যাদিপ্রয়োগানুপপতেঃ তথাচযত্রক্ষপেগুণস্তত্ত্ববরোল-ইতিভাবঃ। ক্৯পধাতুদ্বীকারেকুপাইত্যাদি নিদদ্ধতীতিএতদর্থং সূত্রং। ৩৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঋ ৯। ক্৯প্তবানিত্যাদি ক্তক্তবন্তুইত্যনেনক্তবন্তুঃক্তশ্চ। ঋ৯ ক্৯প্তিঃ ক্৯প্যতে। কাপীতিবচনাৎ কুৎপাণ টণাদিকঃ কুপাণঃ কুপীটঃ কুপা। ধার্ম্বাকারাৎকার্পণ্যং। ৯দৃতোরকুপাণাদেরিতিহুর্গঃ। ৪০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ৠ ৯ কাপীতি। যত্রগুণাভাবস্ত্র ৠ ৯ স্থাদিতিয়োজনা। কাপীতিপদাৎ কুপাণাদিসিদ্ধাতি।
বৃংপতিস্তুক্তাভেদনেক্স্ততাতি কুপাণকুপঐণাদিকঃ পাণঃ পুযোদরাদিস্বান্তলোপইতি প্রভাপ্রকাশিক্ষিতে। কল্লতেভেদেসমর্থোভবতীতি কুপেরোণাদিক আনগিত্যমর্টীকামতে। কল্লতেভুক্তধারণে
তুলানাশেচেতি ঈটক্। কুপীটমুদরেজলেউতিরত্নকোনঃ। কুপ্দয়দানেইত্যুমাৎ ভিদাদিস্বাৎ ভাবেহঙিকুপেতি। ৪০॥

গিরোইচিবা। দন্শ্যাদ্যন্তর্গতিস্য তুদাদেরশ্বং। অত্রশ্পদন্তস্যুরগুণেরোলঃ গিলতি গিরতি। অচিকিংগীর্যাতে। ৪১॥

রিযুকারস্যান্যগুণে। ধ্রিয়তে আদিয়তে ব্যাপ্রিয়তে। ঋকারস্যকিং কিরতি তুদ্তি সম্প্রসারণেপৃচ্ছতি ভূজ্জতি। ৪২॥

মুচাদের ম্স্বরাৎপরঃ। মুঞ্জি মুঞ্জে। মুচুর্পুঃ সিচিঃ রিদুঃ লিপ্ থিদৌপিশ ঞিতঃ রুতী। তুদাদ্যন্তর্ম চাদিঃ স্যাৎ। ৪০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গিরো গৃনিগরণেইত্যস্তরোলঃ স্থাদচিবা। অচীতিকরণাৎগরণং গলনং। ধাতোঃকিং গিরোগিরঃ। দন্শ্যাদেরনোহগুণস্বাত্তদন্তগত তুদাদেরপ্যনগুণইত্যর্থঃ উদ্গিরতি। ৪১॥

গুঢপ্রকাশিকা।

গিরোহচীতি। গৃইতিদীর্ঘান্তগ্রহণার্থ গিরইত্যসুক্রত্যগৃহীতং তেন গৃনিগরণেইতক্ষে ভুবাদ্যন্তর্গত-হুদাদিপরস্থৈপদিনঃ অচীতিনির্দেশাৎ ক্র্যাদিপরস্থৈপদিনশ্চ অচ্মাত্রে গিরোলঃ স্থাদিত্যর্থঃ। যথা গিরতি গিলতি জগরতুঃ জগলতুরিত্যাদি। ৪১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রিমৃ। অগুণেহনিঋস্থানেরিম্। প্রিয়তেইত্যাদি। ধ্রুজ্বস্থানে ধ্রুজ্ আদরেপুত্ ব্যাপারেতুদাদি-দ্বানগুণঃ। অনিকিং দর্প্রেকিরতীত্যাদি। কৃবিক্ষেপেতুদ্ব্যথনে ঋকারাভাবাদাদ্যঃ ঋবর্ণাভাবাদন্ত্যঃ। প্রচ্ছোগ্রহিজ্যেতি অগুণেহনিসম্প্রসারণং। ৪৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

রিগ্কারস্তেতি। ব্রস্থাকারস্ত স্থানেইতার্থঃ। প্রাদ্যস্তর্যস্তদাদরস্তমাদন্শ্যাদ্যস্তর্গতেভাস্তের্ভাহ্ম-গুণঃ। অগুণেহনিকিং পুঞ্ধারণেভ্বাদিরুভয়পদীতস্ত থাকারস্ত নরিষ্ধরতিধরতে। কিরতাতাত্রদীর্ঘ-প্লকারস্ত নরিষ্ কিন্তুগ্ধদন্তস্তেরগুণেইত্যনেনইর্। পৃচ্ছতীতি। প্রচ্ছাপায়াং প্রচ্ছ্জ্রীপায়ামিত্যপপাঠঃ অপ্রাক্ষাদিত্যত্র প্রবিচকারস্তানবস্থানাৎ অন্তথা অপ্রাক্ষাদিতি প্রয়োগাপত্তঃ পৃচ্ছতীত্যত্র চুগাগমস্তে কিন্নাচ্চ অতএব চুগাগমস্থলে গ্রন্থরুৎপুচ্ছতীতি প্রয়োগযুক্তবানিতি। ৪৩॥

.প্রভাপ্রকাশিকা।

মুচা। মুচাদের্ধাতোঃ স্বরাৎ পরোকুম্স্যাদনি। মুচ্৯মোক্ষণে লুপ্৯মোক্ষণে বিদ্৯লাভেলিপ্ উপদাহেদ্রবদ্রব্যস্থানিবিড়সম্বন্ধউপদাহঃ। থিদাদন্থেপিশ্অবয়বে কৃতীছেদনে। মুচাদয়ঃ পঞ্চৈবোভয়-পদিনইতিমৈত্রেয়ঃ লুম্পতি লুম্পতে সিঞ্চতি সিঞ্চতে বিন্দতি বিন্দতে লিম্পতি লিম্পতে থিন্দতি। দিবাদৌখিদ্যতে ক্লধাদৌখিন্তে পিংশতি কৃন্ততি।. পিশস্তাঞিতইতি মতান্তরেপাঠঃ। কৃতীমুচাদি-রিত্যর্থঃ। ৪৩॥

নতৃন্ফাদের্নকারলুক্। তেন তৃফ্তৃন্ফত্প্রোদৃফ্ দৃন্ফদন্তপে শুভশুদ্ত শোভার্থ ইত্যাদের্নকারলোপঃ তৃক্ষতিদৃক্ষতীত্যাদয়ঃ। ৪৪॥ ওকার উঃ স্বরেগোহেঃ। গৃহত্যেবং নিগৃহিতা। ৪৫॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

মুচাদেরিতি। অত্রোকারাসুবন্ধোহস্বরজ্ঞাপনায় মকারাসুবন্ধআগমজ্ঞাপনায়। ঞিতইতি। এইদসুবন্ধোযেধামিতিবিগ্রহঃ পিশ্পর্য্যন্তাঞিতঃ ঞুসুবন্ধাইত্যর্থঃ তেনৈতেভ্যউভয়ং পদমিতি ভাবঃ। পিশন্তাঙিতইতি মতান্তরেপাঠঃ। কৃতীনঞিং তেনাসোপরস্থৈপদীত্যাশয়ঃ। ভুদাদ্যন্তর্শুচ্চাদিরিতি। দাদ্যন্তর্গতিত্যামুচাদেঃ পরোহ্মগুণইতিস্চিতম্ অন্যথামোঞ্চীত্যাদিপ্রয়োগাপত্তঃ। ৪৩॥

প্রভাপকাশিকা।

নত। তৃন্দাদের্ধাতোরগুণেহস্তাব্যঞ্জনাদীতিনস্তনলোপঃ। আদিপদাৎ তুপ্ তুন্প তুক্ তুন্ক্ হিংসায়াং তুম্পতি তুক্তি তৃক্ তৃন্ক উৎক্লেশে তৃক্তি ঋক্ঋন্ক্ হিংসায়াম্ ঋক্ষতি গুক্ গুন্ক্ গ্রন্থে-গুক্তি উভ্ উন্ত্ পুরণে উন্ত তি তুক্তি তুক্তি তুক্তি ঋক্সন্ত থৈবগুক্তি। শুস্তি ক্সতিরিফাঅত্র পুরাতনৈঃ কৃতিভিঃ। ৪৪॥

গুঢপ্রকাশিকা।

নহৃদ্দেতি। যদ্যনীতিনিমিত্তমেতি তদাতৃন্ফাদের্বেতিসূত্রেণৈবচরিতার্থতয়া ঈদৃগ্গুরুসূত্রকরণং নস্তাং তথাচ ঈদৃকসূত্রকরণমগুণমাত্রেতৃন্কাদের্ম লোপনিষেধার্থং। নচ তর্হিতৃক্ তৃফিতৃপ্রেতিথান্যেযামপ্য- মুবন্ধে কৃত্রেগাতোরিদনুবন্ধস্তেত্যাদিনানুম্ সিদ্ধাবলমনেনসূত্রেণেতিবাচ্যং তথাসতি তৃফাদীনাং মুচাদিত্বেন মুম্প্রসক্তো তৃদ্দতীত্যাদি প্রয়োগাএবন সূত্রতালাদয়োহপীতি। নচতদাতৃফাদিধাতুনির্দেশেনকিং ফলমিতি বাচ্যম্ অনিভিন্নতিফিতেত্যাদি দ্বিবিধপ্রয়োগার্থং তত্তদ্ধাতুনির্দেশন্ত সাফল্যাৎ। মুচ্জদ্বুপ্ক্রিত্যাদি এতংসূত্রান্তমনুক্পুত্দেশং। ৪৪॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

ওকা। গুহুসম্বরণেইত্যস্থ কৃতগুণস্থ ওকারউর্ভবতি। স্বরইতিসামান্যার্থং তেননিগৃহিতা গ্রহতি গৃহকঃ। নহিগোহরূপোধাহুরস্তি যেনইনাদিনিদিশ্যতে তত্মাৎ কৃতগুণস্থনিদ্দেশাৎ জুগুহুরিত্যত্তনউঃ। ৪৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ওকারইতি। ওকারইত্যকুক্তেগোহেং গুহধাতোরিত্যয়য়াৎ জুগুহুরিত্যত্রউঃ স্থাৎ তন্মাৎকৃত্ত গুণস্থ গোহেরোকারউঃ স্বরেগুণিনিম্বরমাত্রেইতি বাক্যযোজনা। নমুধাতুনির্দ্দেশেংমুকৃতগোণধাতোরেব-ইবিধানং তত্র্বতগাপ্রাপ্তেঃ অনুকারোহিদাদৃশ্যং মুখ্যকার্যাং নবিদ্যতেইতিবচনাদতএব ছুহিযুজিত্যাদোনকণঃ দত্যাংগোহেরিতি সগুণনির্দ্দেশস্থাবশ্যকতয়া নঞোহনিত্যস্থাদ্গুণকরণাদিতি। নিগৃহিতেতি। স্বস্থাস্থাবিভক্তাবিটিগুণেওকারউঃ। স্বরেহ্নুক্তেহনিস্থাদিতি। ৪৫॥

ধাতোরিদন্বন্ধন্যস্থরানুন্স্যাৎ। যথেকতি। টুনদিস্মূদ্ধে নক্তি চন্দতি শঙ্কতে। ৪৬॥

অগুণেইস্তাব্যঞ্জনাদি ন লোপঃ স্যান্ন্যধিনা। অন্দন্শ্যাদেঃ দন্শ সন্জ রন্জ স্বন্জ তুদাদিবিহিতোইমগুণঃ। দশতি সজতি রজতি রজতে স্বজতে। অগুণে কিং স্থাংসতে ধাংসতে। অন্বিকরণাত্রাদ্য়ঃ। ৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ধাতোঃ। ইদকুবন্ধস্থধাতোঃ স্বরান্ন্স্থাৎ। ইন্দতীত্যাদি। ইদিপর্মেশ্র্য্যে চদিআহ্লাদনে-শকিশস্কারাং রুচাদিঃ। ইন্দ্যতে ইন্দিতা। নিমিত্তনিরপেক্ষমিদং। ৪৬॥

গুঢপ্ৰকাশিকা !

ধাতোরিতি। যদিপ্রাগুক্তস্বরেইদনুবন্ধস্থধাতোঃ স্বরানু মিত্যস্বয়ঃ স্থাত্তদাঅগুণেহস্ত্যব্যঞ্জনাদিনলোপঃ স্থান্ধুমন্ত্রিকেতি বক্ষামাণসূত্রমলগ্রকং স্থাদিতি নিমিত্তনিরপেক্ষমিদং কার্য্যং। সমৃদ্ধিরানন্দঃ। পূর্বিধাতৃত্রয়ং ভুবাদিপরস্থৈপদিপরোরুচাদিঃ। ৪৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অগুণে। অগুণেপ্রত্যয়েপরে অন্তঃ যদ্ব্যঞ্জনং তদাদিনস্থলোপঃ স্থানু মং বিনানুমন্বর্জয়িত্বেত্যর্থঃ।
দন্শ্যাদিধাতুসাধনায় স্থারয়তি অন্ দন্শ্যাদেরিতি। দন্শ্ দংশনে। মৈত্রেয়োহপি দশনইতিহুর্গঃ।
সামর্থ্যাদ্দশনইতিসিদ্ধং। যন্জ পরিষ্কের্জাত্যজাত পদার্থান্তরঃ কোপীভাবইতি মালতী। রন্জরাগে
যজাদিঃ। ঘন্জ পরিষ্কের পরিষ্ক্জতি পাঞ্চালীতি পরক্ষেচ। পরিষ্ক্তজে এতচ্চতুক্ষবিহিতো দন্শাদ্যন্তর্গততুদাদি বিহিতশ্চান্ অগুণঃ। তুদ্ব্যথনে গুদ্প্রেরণে দিশ্ অতিসর্জনে দিশতি এবং কৃষ্বিলেখনে যজাদিঃ
কৃষতীত্যাদি। স্রংসতইত্যাদি। স্রন্ম্ব জ্বংন্ম্ব অবস্রংসনে ধ্বন্ম্বগতোচ। দন্শ্যাদিম্বাভাবাদনো
গুণিত্বাবিং। ৪৬ ॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অগুণইতি। ন নাস্তিগুণোযশ্মিন্ নঞকারঃ সমাসে অন্তেভবমন্ত্যং দিগাদিভ্যোভবার্থে যঃ অন্ত্যক্ষতদ্ব্যঞ্জনক্ষেতি তস্থাদিঃ সচাসোনশ্চেতি তস্থালোপইতিবিগ্রহঃ। অন্ত্যেংসুক্তে অন্তায়তে ইত্যাদো

যিঙি অন্তশব্দস্থ নকারস্থ ব্যঞ্জনাদিত্বেনলোপঃ প্রসজ্যেত। মুমাগমস্থ এতদেবফলং। দন্শ্ সন্জো
পরশ্মৈপদিনো। অন্ত্য ধন্সাবাত্মনেপদিনো। অন্তিকরণাইতি। অনোবিশেষেণকরণং যেভ্যন্তে ভুবাদয়ইত্যর্থাঃ। অন্নিতি নমুবন্ধাকরণে অদন্শ্রাদেরিত্যুক্তো দদংশেতি অটোহকারস্থাগুণত্বমাশঙ্ক্যদদশেতি
প্রয়োগঃ স্থাদিত্যাশঙ্কেতেতি। ৪৭॥

দিবাদেঃ কর্ত্তরিশিতি যণ্। পন্সবন্ধত্বাদগুণঃ দিবুক্রীড়াদৌ অগুণে হলীতি দীর্ঘঃ। দীব্যতি সীব্যতি ষ্ঠীব্যতি ভ্রশ্যতি জুইর্ জীর্যতি আপদ্যতে ব্রীঙ্ ব্রীয়তে ডীঙ্ ডীয়তে সূঙ্ সূয়তে দূঙ্ দূয়তে মাঙ্ মায়তে। ৪৮॥

প্রকারস্য লুগ্যণি। দ্যতি ছ্যতি শ্যতি ষোহস্তকর্মাণ পর্য্যবস্যতি। ৪৯॥ শমিভ্রমিশ্রমিক্রিমিনিক্ষমাং। ক্রমশ্চ যণি দীর্ঘঃ স্যাং। শাম্যতি ভ্রাম্যতি বিক্রাম্যতি। যণি কিং ভ্রমতি ক্ষমতে। ৫০॥

প্রভাপকাশিকা।

দিবা। দিবুক্রীড়া বিজিগীষাব্যবহারত্যতিস্তৃতিকান্তিগতিষু। ষিবৃতস্ক্রসন্তানে। ভ্রশুতীতি। ভূশু ভ্রশু অধংপতনে ভ্রশুতুরীয়ইতি। জুষ্ ঝৃষ্ বয়োহানে ৠদন্তশ্রেতীর পদগতে প্রীঙ্প্রীতা প্রীঙ্গতা-বিতি মৈত্রেয়ঃ। মীয়তইতি কচিং তত্র মাঙ্ হিংসায়াং ডীঙ্ বিহায়সাংগতে সূঙ্প্রসবে দূঙ্উপতাপে মাঙ্ মানে ভুদাদে সূপ্রসবে স্থবতি অদাদে সূতে দাঙ্ ক্ষয়ে প্রীঙ্ অনাদরে পীঙ্পানে নিপীয় যস্ত ক্ষিতিরক্ষিণঃ কথামিতি নৈযধে। বুধ্অবগমনে বুধ্যতে অবোধি অবৃদ্ধ। ৪৮॥

গৃতপ্রকাশিকা ৷

দিবাদেরিতি। ষ্টিবুনিরশনে হিন্বাষ্ঠিবু যুক্ষতিঞাতি ধান্বাদি যস্ত নসন্থ । দিবাদয়ঃ পঞ্চপরশৈপদিনঃ । জীর্যাতীতি । জীর্যান্তি জীর্যাতঃ কেশাদন্তার্জীর্যান্তি জীর্যাতি । শ্রোত্রং জীর্যাতি চক্ষুশ্চ
তৃষ্ণৈকাতরুণায়তে । জুঃ জ্যাদি পরস্মৈপদীচ জুণাতি ব্রস্বঃ পাদেরিতি হ্রস্বঃ । কায়েনজীর্যাতি জুণাতি
ন যস্ত শক্তিরিতি কবিরহস্তে । ৪৮ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

'ওকা। ধাতোরোকারস্থ লুক্ যণিপরে। দ্যতীত্যাদি। দোঅবথওনে ছোছেদনে শোতকু-করণে। ৪৯ ।

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

ওকারেতি। ওকারস্থচেতিচ পাঠঃ প্রামাদিকঃ ছন্দোভঙ্গাপতেঃ নিক্ষলত্বাচ্চ। ধাতব*চত্বারঃ পরস্মৈপদিনঃ। দিবাদেঃ কর্ত্তরিশিতি যণোকারস্থ লুগ্যণীত্যেবঃ ছন্দঃ। ৪৯॥

প্রভাপকাশিকা।

শিম। শম্যাদ্যউকস্থ ক্রমশ্চ যণিপরেদার্যঃ স্থাৎ। শাম্যভাত্যাদি। শমুদমুউপশ্যে ভ্রম্ অনবস্থানে। দৈবাদিকঃ শমাদে পঠাতে ভ্রমুভোবাদিকঃ ভ্রাম্যতি ভ্রমভাতি তুর্গঃ। গণদ্বয়াস্পীকারাদন্ যণো। শ্রমুভপদিখেদেচ তমুকাঞ্জারাং ক্রমুগ্রানো মদীহর্ষেক্রমুগ্রহনে পরস্থাপদী। স্বয়িচক্ষাম্সমর্থএব যদিতিমাঘঃ। ক্রমুপাদবিক্ষেপে শ্রাম্যতি তাম্যতি দাম্যতি মাদ্যতি ক্ষাম্যতি বিক্রাম্যতি। পদন্যসবিশেষা-ভাবান্নাত্মনেপদম্। ৫০॥

আদি ভ্রাদিলিষিত্রসঃ। যণ্বা। ভ্রাস্যতে ভ্রাস্যতে অভিনয়তি ত্রস্তি বা ভ্রাস্তইত্যাদি। ৫১॥

য়নঃ সংযদশ্চ। স্যাৎ। যস্যতি যসতি সংযস্যতি সংযদতি। অন্যোপসর্গ যোগে যথেব প্রযম্যতি আযস্যতীত্যাদি। ৫২॥

জামেদৌজিমিদোর্মতো। জায়তে ঞি িদাস্নেহনেমেদ্যতি। যণ্ বিকরণা-দিবাদয়ঃ। ৫৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শমীতি। মদ্যন্তেভাঃ সপ্তভ্যোধাতুনির্দেশেইঃ। অত্র শমি শ্রমি তমি দমি মদয়োদিবাদি পর-স্মৈপদিনঃ ভ্রমি ক্রমা ক্রমাঃ ভুবাদি দিবাদি পরস্থোপদিনঃ। ক্ষমুদিবাদি পরস্থোপদী ভুবাত্ব্যপদীচ। ক্ষমতেযোদরিদ্রোণাং ছুফান্ নক্ষমতিপ্রভুঃ। নক্ষাম্যতি ক্রিভীশানামপরাধকণামপীতি কবিরহস্তে। ৫০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভ্রাদি। টুভ্রাস্থ টুভ়াস্থ দাঁপ্তো আত্মনেভাগোলন্কান্তো কান্তিরিচ্ছাদীপ্তো দন্তান্তোভাদিরেব এদীউদ্বেগে এভ্যোবাযণ্ ভুবাদিয়াৎ ভ্রাদতে ভ্রাদতে অভিলম্যতীতি অভিলম্যতে ইত্যাত্মনেপদমেবেতি ভাষ্যমৈত্রেয়াহ্যদাহরণাৎ। অভিলম্ভিবা। ৫১।

গুতপ্রকাশিকা।

ভাদীতি। নাত্রদীর্ঘানুর্তিঃ দর্কতারয়াৎ। ত্রস্ পরস্থৈপদী। আদিনা ভাসতে অভিলয়তি ত্রস্তীতিগ্রহণং। ৫১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

यमः। यञ्जश्रयाञ्च। ४२॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যদইতি। পরশ্বৈপদায়ং ধাতুঃ। আদিনা পরায়স্থতি অপয়স্থতি। ৫২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জামে। জনীপ্রাত্মভাবে ঞিমিদাস্নেহনে ভৌবাদিকস্ত মেদতে চুরাদৌ মেদয়তি। ৫৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

জামেলাবিতি। যণিপরে জন্মিদোঃ স্থানেক্রমাৎজামেদোমতাবিত্যন্বয়ঃ। জন্ আত্মনেপদী।
মিদ্ ধাতুর্দ্দিবাদি পরস্মৈপদী ভুবাদিরাত্মনেপদী কুরাদিরুভয়পদী। যণিতি। যণোবিকরণং যেভ্যস্তেদিবাদয়ইত্যর্থঃ। ৫৩ ॥

আদ্যালিড্নোটোঁচ ছন্তন্যপিচ শিক্ষশিং। বর্ত্তমানালিড্রোট ছন্তনী শন্ত্ব বন্ধাশ্চ প্রত্যয়াঃ শিৎসংজ্ঞকাঃ স্থাঃ। অনুবন্ধইদিতি পর্য্যায়ৌ শিংসার্বধাতৃক মিতিচ। ৫৪॥

শিতামেব উত্তমপুৰুষৌ লোটন্তিদিমিকদিনমন্তনঃ। আনি আব আম ঐ আবহৈ আমহৈ তিসদৃশত্বাতিপ্চ্ তিনিমিকদিস অম্ এতেতন্তনংজ্ঞকাঃ স্থাঃ। ৫৫॥

পরস্থ তন্তু:।, তনুভিন্নাঃ শিতামন্তর্গত প্রস্তারা অতনুসংজ্ঞকাঃ স্থ্যুঃ। ৫৬॥ তনাদিভ্যন্তনাও। কর্ত্তরি তনুবিস্তারে তনোতি। ৫৭॥

गृष्यकाणिका।

আদ্যতি। অস্তবিবরণ স্বয়মাহ বর্ত্তমানেত্যাদিনা। নমু সূত্রেশিচ্চশিদিত্যক্ত বিবরণেশমুবন্ধাশ্চ প্রতায়াইত্যক্ত তৎকস্তামুবন্ধইত্যর্থ ইত্যতআহ অমুবন্ধইদিতীতি। পর্যায়ে একনামানো। তথাচ ইংশব্দিস্তবামুবন্ধইত্যর্থ ইতিভাবঃ। অপরঞ্চ পর্যায়মাহ শিদিতি। সর্ব্বধাতুরেব সার্ব্বধাতুকঃ স্বার্থেক-স্তত্র ভবমিতি অণ্ তত্ত্রজাতং দৃশ্যঞ্জভবং ক্ষুণ্ণং সমুদ্ধতমিত্যণি আদে বৃদ্ধিঃ। অথবা সর্ব্বধাতুত্ব ভবইত্যর্থে ভবতস্থ বাইতি তুশব্দস্ত চকারার্থতয়া ভবতশ্চহেতু সর্ব্বধাতুভ্যাঞ্চ কণিত্যর্থতয়াহৈতুক সার্ব্বধাতুকপদ্বয়-দিদ্ধিরিতি। শিৎ সার্ব্বধাতুকমিতি চ পর্যায়াবিতি পূর্বেণসম্বন্ধঃ। ৫৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শিতা। তিপচেতি। গচ্ছতি যমির্ম্নমইতি ভবতের্ডবস্তুরিত্যাদিফলং। ৫৫॥

গ্ৰহপ্ৰকাশিকা।

শিতামিতি। শিতা শিংসংজ্ঞকানাং মধ্যেইতার্থঃ ছন্দোহর্থং বিসন্ধি। তিপ্চেতার্থঃ। তত্ত্র শনুবন্ধঃ শিংসংজ্ঞাজ্ঞাপকঃ তিসদৃশত্বাত্তিপ্চেতিকথনং তনুসংজ্ঞাজ্ঞাপকং। ৫৫ ॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

পরইতি। তুশকঃ শিতামন্তর্গত প্রত্যরগ্রাহকঃ। ইত্যভিপ্রেত্যাহ তমুভিন্নাঃ শিতামন্তর্গত-প্রত্যায় মতনুসংজ্ঞকাঃ স্থারিতি। আদ্যেত্যাদি এতৎসূত্রান্তং গীতিজাতিঃ। তত্র আদ্যালিঙ্গোটোচেতি প্রথমঃ হাস্তর্গুপিচ শিচ্চশিংশিতামেবইতি দ্বিতীয়ঃ উত্তমপুরুষো লোটইতি তৃতীয়ঃ তিদিমিতুদিসমন্তর্পুং পরস্তকুরিতিচভূপঃ পাদঃ। ৫৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

তনেতি। তমুসংজ্ঞকেপরেতনাদিভ্যোধাতুভ্যও স্থাদিত্যর্থ:। তন্ ধাতুরুভয়পদী তনোতি তমুডে ইত্যুভয়পদদর্শনাৎ। ৫৭ ॥ উরতনৌ। তন্তঃ তম্বস্তিমত্বং তনোষীত্যাদি এবং ষণুদানে ক্ষণু ক্ষিণু হিংসায়াং তৃণু অদনে ঋণুগতাবৃভয়তোভাষাঃ ঘৃণ্দীপ্তৌ পরস্মৈভাষঃ। ৫৮॥

অগুণাবুতো। ওউকারোস্যাত্যাং। তেঁনক্ষিণোতিত্ণোতি তৃণুতইত্যাদয়ঃ। মনুবোধনেবনু যাচনেৰুচাদী। ৫৯॥

কর্কুরৌচরুঞঃ। ওউকারয়োঃ পরয়োঃ রুঞঃ। স্থানেকরকুরাবাদেশো-ভবতঃ। করোতি কৰুতঃ করোষি। কুর্ম্মীতি ছান্দসং। উবিকরণাস্তনাদয়ঃ।৬০॥ স্বাদের্মোতনৌ। স্যাৎকর্ত্তরি। নকারাদি প্রত্যয়ো২গুণঃ যুঞ্জভিষবে-স্থানোতি।৬১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উরতনাবিতি। তনাদিভা ইতাকুবর্ত্তে। তনোষীত্যাদিনা সনোষি ক্ষণোষীত্যাদের্গ্রহণং। উভয়তোভাষাইতি উভয়ত উভয়পদেভাষ্যস্তেশ্মামীইতি কর্মণি ঘঞ্ এবমপরত্র উভয়তোভাষাউভয়পদিনঃ পরস্থৈভাষঃ পরস্থাপদীত্যর্থঃ। ৫৮ ।

প্রভাপ্রকাশিকা।

অগু। গুণমিচ্ছন্তিচ সংজ্ঞাপুর্শবকস্বাৎ। অগুণাবিতি নঞোহনিত্যবাদিতিকশ্চিৎ। তেন গোকর্ণতর্ণকোহয়ং তর্ণভাপকণ্ঠকচ্ছেম্বিতিমুরারিঃ। অর্ণোতি ঘর্ণোতি ইত্যাদি। ৫৯॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

অগুণেতি। ইত্যাদিয় ইত্যাদিনা ক্ষিণুতে ঋণোতি ঋণুতে স্থণোতীত্যাদেএহিণং। রুচাদীইতি। তেনমনুতেবনুতেইত্যাত্মনে পদপ্রয়োগইতিভাবঃ। ৫৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কর্। উবিকরণাইতি। উবিকরণস্থা বহুপ্রয়োগত্বাত্তদেবোল্লিখ্যতে। যদ্বাউবিকরণমেবপ্রাঞ্চঃ কুর্বস্থীতিতন্মতেনোক্তং। ৬০॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

করিতি। পরত্রউরতনাবিত্যক্তরাৎ পূর্বব্রতনাদিভ্যওইতি ক্তেইপিতনাবেবায়াতি তথাপিনাবিতিগ্রহণং তত্রকদাচিৎ উবিকরণার্থঞ্চ তেনকৃশ্মীতি। কিং ক্রোমিকথং কৃশ্মিকানুগচ্ছামিমাধব। ছর্যোধনবিহীনস্তুদর্বদৃশ্যমিদং জগদিতিমহাভারতে। প্রাচীনমতেউবিকরণমেবকিস্তুতনোত্র্য গুণেত-শ্মিন্কুঞঃ করাদেশইতি। অস্মাতেউকারস্য ধাতৃত্বাভাবেনগুণাপ্রাপ্তেওবিকরণঞ্চ। কৃঞইত্যনুবন্ধ-গ্রহণং স্থার্থং। ৬০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অতনৌতৃকুঃ। স্থলুতঃ স্থান্তিএবং চিঞ্ ধূঞ্ প্রভৃতেঃ। ৬২॥
শৃধিকশ্রুণিধিরিকন্বাং। এভ্যন্তন্বতন্বোর্নানৃন্তঃ শৃধিকইত্যাদেশাশ্চ প্রকৃভানাং রষ্বর্ণেদিত্যাদিনাগত্বং শৃণোতি কণোতি। ৬৩॥

বমোর্বাদিগণাত্বলুপ্। তনাদিস্বাদিভ্যাং বিকরণোকারোলোপ্যোবমোঃ পরয়োঃ। তনঃ তন্মঃ তনুমঃ সুনঃ সুনঃ সুনুমঃ সুনুমঃ। ৬৪॥

নিত্যং করোতেঃ। বমোঃ পরয়োককারলোপঃ ন্যাৎ। কুর্বঃ কুর্মাঃ কুর্বছে। ৬৫॥

গৃঢ়প্রকাশিকা ৷

স্বাদেরিতি। স্থরাদির্য্যস্তত্মাং। নকারআদির্যস্ত সচাদোপ্রত্যয়শ্চেতিবিগ্রহো। অভিষবঃ স্নানং। ৬১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অত। চিঞ্চয়নে ধৃঞ্কস্পনে। স্তন্মতেচ চিনোতি চিন্তুতে ধুনোতি ক্ষিহিংসায়াং ক্ষিণোতি। ৬২॥

গূতপ্রকাশিকা।

অতেতি। তুশকঃ স্বাদিসমূচ্যায়কঃ। প্রভৃতিনাটুছুউপ্তাপপীড়নয়োঃ ছুনোতি। ক্ষিণোতি পরস্থৈপনানাবেতেইত্যাদে এ হণং! ৬২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শৃধি। ধিবিশ্রীণনেকৃবিছিসায়াং করণেচ ইদনুবন্ধস্বানুম্ শ্রুণ্ডাভিদ্বন্ধঃ শৃধিকৃইত্যত্ত্র-জনোলোপঃ। ৬৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

শৃধাতি। শ্রুত্রবণেশ্রুধাতুঃ। এতেপরশ্রৈপদিনঃ। ৬৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বমোঃ। বিকল্পক্ষেত্রতঃ এবং ক্ষিণুঃ ক্ষিথুবইত্যাদি। ৬৪॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বমোরিতি। দ্বিগণাদিতি বির্ণোতিত্রনাদিস্বাদিভ্যামিতি। সুবিকরণে হপিউকার্স্থ বিকরণ-মস্ত্যেবেহুট্ক:। ৬৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নিত্যমিতি। যদ্যপি করেতেরিতি পৃথক্সূত্রকরণসামর্থ্যাৎসিদ্ধেসূত্রারস্তোনিত্যায়েতি স্থায়বলে নিত্যমারাতি তথাপি তর্যায়েনিত্যায়েত্যলয়রং নিয়মায়েত্যক্তরাৎ পৃথক্সূত্রং নিয়মার্থমিতিবক্তুং শক্তরা করোতেরেবোকারলোপোনভুক্ঞ্হিংসায়াং স্বাহ্যভয়পদিক্ধাভূতরনোরুকারলোপইত্যাপদ্যেত ইতিনিত্যমিত্যক্তং। বমোরিতি। পৃর্বস্থাদকুর্ত্তনাৎবমোঃ পরয়োরুকারলোপঃস্থাদিত্যক্তং। ৬৫॥

সংযোগান্ধসলোপ্যঃ। সংযোগাৎপরং সউকারোবমোঃ পরয়োর্নলোপ্যঃ
স্যাৎ। শকুবঃ শকুমঃ তর্ন্বঃ তর্ন্ধঃ। ৬৬॥

উবং স্বরে। সংযোগাৎ পরউকারঃ স্বরেউবং প্রাপ্নোতি। শক্কুবন্তি-আত্মনেস্কন্যুতে স্কুমাতে। ৬৭॥

আদন্যস্যাৎ পশ্চাদন্তে অস্তামন্তেত্যেশং নোলুক্। স্থনুতে তনুতে চিন্তে কুর্বতে অশুব্যাক্তো সজ্বাতেচ অশ্বতে অশ্বতে তদ্মোতি-কাষ্টম্ অন্যত্তক্ষতি দোষান্নিরস্থতাত্যথঃ স্তভাতি স্তভ্যেতীত্যাদয়ঃ । মুবিকরণাঃ স্বাদয়ঃ । ৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সংযো। তণুবইতি পূৰ্ববংগুণঃ। ৬৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সংযোগাদিতি। সংযোগইতিলক্ষণয়াসংযোগবৎপরঃ যদ্বাসংপূর্বাঃ যুজির্যোগেসংযুনক্তীতি অক-র্ত্তরিকারকেইতি নঞােহনিত্যন্বাং কর্ত্তরিকারকেচ ঘঞ্গুণেচজােঃ কগাবিতিজস্তাগঃ। সশব্দেনউকারঃ পরাম্বলতে। লুপ্তছেদনেলুপ্যতামদােলোপ্যঃ যঃ স্থাংস্বরপবর্গান্তেত্যাদিনাযেগুণঃ। শক্তসামর্থ্যে-পরস্মৈপদা। তৃণুঃ প্রাগুক্তঃ। ৬৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উবং। আত্মনইতি। উভয়পদিকাদিত্যর্থঃ। ৬৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উবমিতি। উবমিতিদ্বিতীয়ান্তনিৰ্দ্দেশাৎ প্ৰাপ্নোতীত্যধ্যাহৰ্ত্তব্যং। তেনসোপস্কারং সূত্রং। ৬৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আদ। অকারভিনাৎ পরভূতানামন্তেঅন্তাম্ অন্তবিভক্তীনাং নলোপঃ। প্রসূতইত্যাদি। উবি-করণে। অশুবতেইত্যাদি। অশুব্যাপ্রোসজ্ঞাতেচ অন্তণেউব্ অক্ষুসন্দর্শনেসজ্ঞাতেচস্বাদিঃ অক্ষুব্যা-প্রোসঙ্গাতেচ ভূবাদিঃ। তক্ষতীতি। তনুকরণইতিকিং সন্তক্ষতিবাগ্ভিঃ সন্তাপয়তীতিসারঃ। নির্ভৎসয়তীতিত্বর্গঃ। স্তম্ভু স্তম্ভু স্কন্ভু, স্কুন্ভু স্তম্ভার্থাঃ সৌত্রাধাতবইতি ত্বর্গঃ আদিপদাৎ স্তভ্বোতি স্কভ্বোতি স্কুভ্বাতি ফুক্ত্বাপ্রবরণেস্তনোতিস্তনাতি ইত্যুভয়ং। ৬৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

আদত্যেতি। অক্তক্ষেপরিয়েপদী যদাতক্ধাতুর্দোযনিরস্নার্থকঃ তদাভুবাদিয় স্বাদিরিত্যাহ অন্যত্তেতি তনুকরণার্থাদন্যত্তেত্যর্থঃ। স্তন্তাদয়ঃ স্বাদিক্র্যাত্যভয়গণীয়পরস্মৈপদিনঃ। নোবিকরণং যেভ্য- তদংক্র্যাদের্নানী ক্রাদিগণান্তনৃত ন্যের্নানীস্যাতাং কর্ত্তরি। নাবিকরণাঃ ক্র্যাদয়ঃ ক্রীণাতি ক্রীণীতঃ। ৬১॥

নীরয়মচিনিস্বর:। ক্রীণস্তি এবং ক্রীণীতে ক্রীণতে ক্রীণতে প্রীণাতি রঙ্ সংভক্তৌ রণীতে বগ্গতি ক্ষুভাতি সম্প্রসারণে গৃহ্বাতি গৃহ্বীতে জ্যাজিনাতি। ৭০॥ জ্ঞোজা। জানাতি জানীতে জানীতঃ। ৭১॥

স্তেপ্রাচীনৈর্পু বিকরণং কৃষাতনোতস্থতণং কৃর্বন্তিতমতমাশ্রিত্যসূবিকরণাঃ স্বাদয়ইত্যুক্তং। সূত্রমিদং কন্তাছন্দোবদ্ধং। গ্রেটিৎক্রেতি ছন্দোমঞ্জরীপ্রোক্তলক্ষণাৎ যদিপদেগ্রোচতুর্গু রবস্তদাকন্তেতিতদর্থঃ। ৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তদ্ব। তদ্বদিত্যস্থার্থঃ তম্বতমোরিতি নাবিকরণাইতি। প্রাচীনৈন্ন বিকরণস্থ ঈদ্ববিধানাৎ তস্থৈবসর্ব্বত্রপ্রয়োগঃ অতউক্তং নাবিকরণাইতি। ক্রীণাতিণত্বম্ এবংপরত্রাপি। ৬৯॥

शृष्प्रकाणिका।

তম্বদিতি। ভূঞীঞ্দ্রব্যবিনিময়ে। ঞ্চুবন্ধস্বাদস্যোভয়পদিস্বম্। ৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নীর। অয়ং ক্র্যাদিনীঃ অচি স্বরশূন্যঃ স্থাৎ নির্মান্তিস্বরোযত্তেতিবিগ্রহঃ নিশব্দোহভাবার্থঃ। প্রীঞ্ তর্পণেরঙ্ অবর্গিবঃ বন্ধ বন্ধনে অগুণেহস্তাব্যঞ্জনাদীত্যাদিনানলোপঃ। ক্ষুভ্দঞ্চলনে ক্ষুভাদিছার্মণতঃ। ক্ষোভতে ক্ষুভাতিচ। সম্প্রেতি। গ্রহিজ্যেত্যাদিনা। জ্যাবয়োহানো। ৬৯॥

गृष्यकाणिका।

নীরেতি। অচিত্ররিতি কৃতে অচীতিসামান্যনির্দেশাদশিতামপিস্বরে ক্র্যাদের্রাগমঃ স্থাৎ অধুনাতৃশিতাং স্বরেইতি। অয়মিতিনির্দেশোনীধাতোর্বারণার্থঃ। সম্ভক্তিঃ সেবা। বন্ধ্ পরস্থৈপদী ক্ষুভ্
দিবাদিক্র্যাদ্যোঃ পরস্থৈপদী ভুবাদাবাত্মনেপদী। গ্রহ্ উপদানে গৃহ্লাতীত্যাদো সম্প্রসারণং ণত্ত্বঞ্চ।
ভ্যাপরস্থৈপদী। ৬৯ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

रकाका। **च**थारिक रेष्ट्राज्यभने। १३ ॥

গৃতপুকাশিকা।

ट्यांटक्छि। नात्गाः **अद्र**त्यादिकार्यः। क्वाचनत्वार्थ। १১ ॥

ইস্বঃ পাদে:। পূঞ্ পুণাতি লুনাতি ধুনাতি। পাদে: কিং কীর্ণাতি শীর্ণাতি প্রীণাতীত্যাদয়:। ৭২॥

স্বরতোনাম্বরনোস্তোৰুধাদীনাং। ৰুধাদীনাং স্বরাৎ পরে নকারাম্বরনোত-নৃতম্বোঃ স্যাতাং। নবিকরণাৰুধাদয়ঃ। ৭৩॥

ঘঢ়ধভতস্তথয়োৰ্দ্সপ্ৰেৰ্য্যে মুস্থাৰ্ধ টাং ভৃতীয়াং স্বাঃ। ৰুণদ্ধিৰুদ্ধঃ। ৭৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হ্রস্থঃ। ক্রাদ্যন্তর্গতপাদেদীর্ঘস হ্রস্থোভবতি। পৃঞ্পবনে লুঞ্ছেদনে ধৃঞ্কম্পনে পুনীতে লুনীতে ধুনীতে এবং লীলেষণেপরস্থৈপদীলিনাতি। কীর্ণাতীত্যাদি। কৃঞ্ হিংসায়াং পাদিঃ কৃছিংসায়াং পাদীতরঃ কীর্ণাতি কীর্ণং কীর্ণিঃ গ্রন্থক্ষধাতুমঞ্জর্য্যামেব লিখিতবান্। কীর্ণাতীতি মৈত্রেয়াদ্যসম্মতোহপি। কীর্ণাতিতুরগান্ রণেইতি কবিরহস্তস্ত প্রয়োগাংসিদ্ধাতি। শৃহিংসায়াং শৃণাতি ইতিচ রূপং মৈত্রে-য়াদেশি কীর্ণাতীতি কাদাচিৎকমেব। প্রীণীতেপিপ্রায় প্রিয়েপ্রিয়ঃ এবং প্রীঞ্পাকে শ্রীণাতিশ্রেতেত্যাদি। ৭২॥

गृष्धकाणिका।

হ্রস্বইতি। কৃহিংসায়াং পরস্মৈপদী শৃ*চ। ইত্যাদয় ইত্যাদিনা শ্রীক্রীকৃঞ্শব্দে কুইত্যাদৈ-গ্রহণম্। ৭২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্বরতবিতি। স্বরতোননৌইতি কৃতে উচ্চারণার্থমকারঃ পূর্ব্বত্রইতিসন্দেহে বৈপরীত্যেসন্দেহঃ স্থাৎ ননুইতিকৃতে একত্রৈবোভয়ং স্থাদিতি সন্দেহাপত্তেঃ তথাচাস্বরগ্রহণমত্তমুপ্রাপ্তার্থমিতিভাবঃ। নস্থ বিকরণং যেভ্যস্তে অত্রাপি প্রাচীনমত্মবলম্ব্যোক্তমিতি। তদ্বদিত্যাদি এতৎসূত্রান্তমুপগীতিচ্ছন্দঃ। ৭৩॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

ঘঢ়। ঘঢ়ধভেভ্যস্তথয়োর্দ্ধঃ স্থাৎ। তুর্ব্যেষু চতুর্থেষু পরেষু ধুটাং স্থানে স্বীয়বর্গীয়াস্ত্তীয়াঃ স্থার্ভবেয়ুঃ। রুধির্ আবরণে স্বরান্ধঃ তেন্তস্তাধঃ তুর্য্যেদঃ। ৭৪॥

গূতপ্রকাশিক।।

ঘঢ়ধেতি। তথয়োরিতি স্থানাদেশেষষ্ঠী নতু সপ্তমীতস্তাঃ পশ্চাত্রপস্থিতেঃ। তুর্য্যেমিতি।
স্বাইত্যকুক্তেধ্টামিতি সামান্তগ্রহণাদবর্গি ধুটামিপি গাদিপ্রসক্তেরাহস্বাইতি। তদ্গ্রহণাৎ বর্গীয়ধুটামিতি
লভ্যতেস্ববর্গীয়াস্থতীয়াশ্চ। ৭৪ ॥
.

ব্যঞ্জনপরধুড্রোপোধুটিনিজরগ্যে বিকম্পেন। ৰুদ্ধঃ ৰুদ্ধে এবং ছিদির্ ভিদির্ ফুদির্ বিজির্ বিচিরাদেঃ। ৭৫॥

ধূটান্তেচচক্ষোঃ কঃ স্যাণ। প্রত্যমেধুটিবিরাবেচপরে। নিজবর্গ্যইতি-বচনাণ নধুড্রোপঃ। বিনক্তি বিঙ্ক্তঃ বিঞ্চন্তি যুনক্তিযুজ্জঃ বিজে যুজ্জেএতে-যজাদয়ঃ। ভুজেজ্জ্ঞাতে। অবনেতু ভুনক্তি পৃচীরজ্যাদেরপ্যেবং থিন্তে বিস্তে যকার টবর্গাত্তবর্গঃ পিনফিবিশিনফিপিংফঃ পিংযন্তি। ৭৬॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিক।।

ব্যপ্ত। নিজবর্গে স্বীয়বর্গীয়েধুটি ব্যঞ্জনপরত ধুটোবালোপোভবতি। বর্গাছীত দিগাদিস্বাদ্যঃ উভয়পনিস্থাদায়নেপদেরুদ্ধে। এবমিতি। ছিদির্দ্বিধাকরণে ছিনাত্তছিন্তেভিদির্ বিদার্নণৈভিনতিভিত্তে ক্ষুদির্দম্পেযণে সম্পেষণং সংচ্পনং ক্ষুণতিক্ষুত্তবিজির্ পৃথগ্ভাবে বিনক্তি বিঙ্কে বিঞ্জাতে বিচির্
বিবেচনে বিনক্তি বিঙ্কে বিঞ্চাতেইত্যাদয়ঃ। ৭৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ব্যঞ্জনৈতি। নিজেতি বিশেষণাদেশ্যবগীয়ধুটিনলোপঃ। ঘট্যভতইত্যাদি এতংসূত্রান্তমার্য্যা-রুক্তিঃ। ৭৫॥

প্রভাগ্রকাশিকা।

ধুটি। ভুঙ্কইতি। অনবনেভুজইত্যায়নেপদং। পৃচীত্যাদি। পৃচীসম্পর্কে পৃণক্তি অদাদৌপুক্তেবৃজ্ঞাবর্জনেবৃণক্তি বিদ্বিচারণেপিষ্৯দণ্চূর্ণনে। ধকারাচ্চেতিতস্তটঃ। টবর্গান্তবর্গস্থ টবর্গ ইতি
হণেটাত্যান্ত্রপ্যোগর্থেমুপত্যাসঃ শিষ্কবিশরণে। ৭৬॥

গূতপ্রকাশিকা।

ধূটীতি। অত্রধূটীত্যগৃহাতেচজাে কণ্টোষ্ঠুবদ্ধেধূটিচেতি বক্ষামাণসূত্রেধূড্গ্রহণেনপক্ষয়ইত্যাদিদিদ্ধার্থং বিশেষবিধিরাৎপ্রায়হ্মত্বেচকগৌনস্যাতামিতি তথাৈঃপ্রায়িধানার্থংধূড্গ্রহণমিতি বক্ষামাণসমাধানমলগ্রকং স্থাৎ তত্রধূটীত্যগৃহাতেহপি তৎসমাধানমলগ্রকম্ উক্তাদিপদিদিদ্ধিশ্চনস্থাৎ চটবর্গাবিতি বলবন্ত্বাৎ
তত্মাত্রভয়ত্র ধূড্গ্রহণেনতাদৃশপ্রয়োগদিদ্ধিঃ উক্তাদিপদিদিদ্ধিদি নব্যাঘাতইতি। যুনক্রীতি যুজির্যোগে।
ভূঙক্তইতিভূক্ষাপালনাভ্যবহারয়ােঃ পালনং রক্ষণম্ অভ্যবহারোভোজনং। ভূজীবক্রীকরণেভূদাদি পরস্মৈ
পদাভূক্ষতি। পৃত্যপর্বৈপ্রপদা। বুজাঅদাদে আল্লনেপদীরক্তে আদিনার্চী বুতিবর্জনয়াঃ পরস্মেপদী
বণক্রাত্যাদে গ্রহণং। খিলাদন্থেখিন্বিদাবাল্যনেপদিনো অন্তমতে। পাণিনিমতে উভয়পদিনোখিন্দতি
বিনত্রিবির্চারণেইতিচ। পিশ্শিয়েপরস্মেপদিনো। • শির্হিংসায়াং ভুবাদিপরস্মেপদীশেষতি। ৭৬॥

ষঢ়োঃ কঃসে। পিনক্ষিতৎ। বিশিনক্ষি ! ৭৭॥

চত্র্থেষস্যতঃ কার্য্যঃ। ব্যতিপিণ্টেব্যতি শিশ্বে। ভন্জোউন্দীঅন্জ। ৭৮॥ আভ্যাংনন্ভ্যাং নকারলুক্। ভনক্তিভঙ্জঃ উনত্তিউন্তঃ অনক্তি অঙ্জঃ ইন্ধে ইশ্ধাতে হিনস্তি হিংস্তঃ। ৭১॥

তৃহের্ন্নোনেহলিতনো। তৃণেঢ়ি তৃণ্ট আদয়ং। তৃংহন্তি তৃণেক্ষি। নির্বি-করণোইদাদিগণং। অত্রৈব জুহোত্যাদয়শ্চর্করীত সংজ্ঞাশ্চান্ত প্রবিশন্তি। অত্তি অত্তঃ অদন্তিব্যত্যতে ব্যত্যদাতে ব্যত্যদতে তথা ভাবারালাম্বাযাপ্সামাখ্যাপার-ক্ষণেপ্রভূতীনাং। ভাতি। ব্যতিভাতে একোদ্যোবহুবদ্বেত্যাদ্যহুনীয়ং।৮০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

सर्जि:। नक्तंत्रज्ञातर्याः कः खार्प्याप्ता । यः कर्षायुः । ११॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ষঢ়োরিতি। সেইতিসমাত্রেড়ঃ। কত্বমগ্রেবক্তব্যমিতিনাত্রোদাহরতি। ৭৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চতু। চতুর্থেপরেষক্ষতঃ কর্ত্তব্যঃ। ব্যতিপূর্কাৎপিনঃ শিনশ্চকর্ত্তর্যাত্মনেপদং পেরপরেষক্ষতত্ত্ব-চটবর্গাবিতিধক্ষতঃ নক্ষবিন্দুঃ বর্গেতদর্গেতিগঃ। ভেত্যাদি। ভঞ্জোআমন্দনেউন্দীউৎক্লেদনে অন্জুব্যক্তি-অক্ষণযোগতোচ এবাং ধাতুনলোপার্থং সূত্রমাহ। ৭৮॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

চতুর্থ ইতি। ষস্থেতিছন্দোহর্থমকারঃ। অগ্রিমসূত্রেণপাতুনলোপার্থং ভন্জাদিত্রিং দশ্য়িতি। ৭৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আভাাং। নকারোলুগিতিধাতোরিতার্থঃ। ভনক্রীতিনলোপেধুটান্তেচেতি জঃ কঃ এবমনক্তি উনক্রীতি লিঙ্গবং প্রথমইতিদস্যতঃ। ইন্ধইতি। জিইন্ধীদীপ্রোক্রচাদিঃ আভ্যামিতীন্ধের্মলোপেঘচধ-ভতইতি তস্থাবেতুর্য্যেধুটাং তৃতীয়ঃ বাঞ্জনাদ্বাধুড়োপঃ। হানস্তীতি। তৃহিহিসিহিংসায়াং কুমিহিন্স্ব্ধাতোস্তোসস্বরনঃ আভ্যামিতি কুম্লোপঃ। ৭৯ ।

গুঢ়প্রকাশিকা।

আভ্যামিতি। আভ্যামিত্যস্ম বিবরণমাহরুধাদিবিহিতেতি। ভনক্তীতি। ভন্জোপরশৈপদী। অনক্তীতি। অন্জ্ব্যক্তিমর্থণমক্ষণকান্তিগতিষু পরশৈপদী। ইন্ধইতি। ব্যঞ্জনপরধুড্লোপইত্যনেন প্রাক্ধকারলোপঃ। হিনস্তীতি। হিসিঃ পরশৈপদী। হিংস্তইতি। তসিঅস্বরনকারেনুম্লোপঃ। ৭৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভূহেঃ। ভূহ ধাতোঃ সম্বরনকারোনেস্থাৎ তমুহলি। সম্বরম্বজ্ঞাপনায়তমুগ্রহণং। তেনাতনো নেনস্থাৎ। লোটউত্তমপুরুষাদিবারণায়হলীতি। ভূণেঢ়ীতি। ননেততো হোঢ়োদাদেস্থিতি হস্তঢ়ঃ

বিদেশু। দ্যা নবাডাদ্যা নবস্থার।। বেদ বিদক্তঃ বিদ্রঃ বেশ্ব বিদ্বাঃ বিদ বেদ বিদ্ব বিদ্য বা বেত্তি বিক্তঃ বিদস্তি বেৎসীত্যাদি ব্যতিবিত্তে ব্যতিবিদাতে। ৮১॥

ঢাত্তস্থঃ চটবর্গাবিভিচ়ঃ ধাভূচ্লোপঃ দীর্ঘসাদার্যয়ঃ ণয়ঞা। তৃণ্টভি। পূর্ববৎ তদোহ্তমুম্বাৎ
অস্বরননেমাভূৎ। আদয়ইতি তৃণ্টঃ তৃণ তৃণেক্ষি তৃংহ্রঃ তৃংক্ষইতি। কলাপমতংকটাক্ষয়য়াহনির্বিকরণবিভি। তন্মতেহদাদিগণেপদ্বিকরণঃ কৃষালুপতে তচ্চগোরবমেব ফলাভাবাৎ। অত্র অদাদৌ
জুহোত্যাদিগণঃ প্রবিশতি নগণান্তরকল্পনাচক রীতায়ঙ লুগন্তান্ত। অতীত্যাদি। অন্তক্ষণে অৎসি অথঃ
অথ অদ্মি অয়ঃ অদাঃ। বাতিপূর্বেসাল্লনেপদ্ম আদল্যসাদিতি নলোপেব্যভ্যদতে। ভেত্যাদি।
ভাদীপ্রোবাগতিবন্ধনয়োঃ রাদানে লাআদানেফাশোচে য়প্রাপ্রেপিভাক্তদে মামানেয়াপ্রকথনে। একবিত্যাদি। একম্বেদিরক্তরেচেদং রূপং। বদাহনিমধে অপিলোকয়ুগল্দাবপিশ্রুতদৃষ্টারমণীগুণা
অপি। শ্রুতিগামিতয়াদমসম্পর্বভিভাতে স্তরাং ধরাপতে। ইত্যাদূয়নীয়মিতি। বাতি রাতি
লাতীত্যাদূয়্মমিত্রর্থঃ।৮০॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

তৃহেরিতি। তৃহ্হিংসায়াং পরস্তৈপদীভুবাদিমধ্যগততুদাদিরপায়ং তৃহতীতি। অস্বরনকারে বিন্দুর্গুটিতি বিন্দুঃ। তৃণেক্ষীতি নস্তান হোটোদাদেশ্বিতি হস্তাচ্ মটোং কং সেইতি চস্তকঃ ব্যঞ্জনং পর্বগামিণত্বং যত্ত্বঞা। নির্মান্তিবিকরণং বস্থাৎসোহদাদিগণইত্যর্থঃ। অদপিপরস্থাপদীভাদয়োহপি পরস্বৈপদিনঃ। প্রভূতীনামিতি প্রভূতিশব্দেন দরিদ্রান্তর্গতৌ দ্রাক্ত্বকুষ্ঠারমণীগুণাঅপি। প্রভিত্যাদেত্র্যহণঃ। ব্যতিভাতেইতি। অপিলোকয়্রগং দৃশাবপিক্রতন্ত্বটারমণীগুণাঅপি। ক্রতিগামিতয়াদমস্ব স্বর্গতিভাতেস্তরাং ধরাপতে। অস্তার্থঃ। হে ধরাপতে নল! দমস্বস্তঃ দমোনামভীমনৃপতেঃ পুত্রস্ত ভগিস্তাদময়ন্ত্যাঃ লোকয়্রগং মাতাপিতৃক্লয়ুগং প্রভিত্যামিতয়া বেদপ্রসিদ্ধতয়া স্বতরাং ব্যতিভাতেপরস্পরোৎকর্ষেণভাতি তথাদৃশোনেত্রেঅপি ক্রতিগামিতয়া কর্ণান্তবিশ্রান্ততয়া ব্যতিভাতেপরস্পরোৎকর্ষেণভাতি তথাদৃশোনেত্রেঅপি ক্রতিগামিতয়া কর্ণান্তবিশ্রান্তরা ব্যতিভাতেপরস্পরোৎকর্ষেণভাতি তথাস্ক্রামিতয়া স্কনিঃ ক্রেমণাতয়া ব্যতিভাতে লোকমতিক্রমাভান্তীতি নলংপ্রতি হংসবচনমিদং। ইত্যাদৃহিনীয়মিতি। বাতি রাতি লাতিয়াতি যাতিপ্রাতি মাতি থ্যাতি পাতীত্যায়্যব্রেমিতয়্রহিঃ। ৮০॥

প্রভাপকাশিকা।

বিদে:। বিদ্ধাতোঃ প্রতোবিহিতাস্ত্যাদ্যান্তিত্স্ অন্তীত্যাদ্যানববিভক্তয়ঃ অভাদ্যানব অট্ অতুসিত্যাদ্যালিট্ সমানরপাভবেয়ুর্বা। উভয়ত্ত নবগ্রহণং তেপ্রভৃতিস্থানে ইট্প্রভৃতিনিবেধার্থং। বেদেতি।
বিদ্জ্ঞানেগুণঃ অচোগুণিয়াদ্গুণ্যাদিকীয়াৎ দির্বাচনাদি নভবত্যাদেশয়াৎ। বিদেক্তানার্থসাদাদিয়ং।
বিন্দৃতি বিনতি বিদ্যুতে এয়াঃ ভুবাদি রুধাদি দিবাদি পরিগৃহীত্রাৎ। অবিভক্তো বিদ উত্তমাটিরপং
বেদ। ৮১॥

আত্মনেপদে অন্তত্ত্বাদোরাগমোবা। তদেতদেবব্যতি বিদ্রতেযদি। ব্যতি বিদতে।৮২॥

শীডোনিত্যং। অন্তত্তাদৌরাগমঃ স্যাৎ। ৮৩॥

गृष्धकामिका।

বিদেরিতি। বিদ্ঞানে ধাতুনির্দেশেইঃ। নমুধাতুনির্দেশেইগুপ্রত্যয়েগুণপ্রাপ্তিরস্তিতৎকথং নশুণইতি চেৎসত্যং গুণইতিসংজ্ঞাপূর্ব্বকর্থান্ধগণঃ। যদা ইশতিপোধাতুনির্দেশেইতাত্র শকারউভয়ত্ত সম্বন্ধাতি তেনাগুণপ্রত্যয়ন্ধান্ধানির এইচতৎসূত্র্যাখ্যায়াং বক্তব্যং। আদ্যা নব তি তস্ অন্তি সি থস্থ মি বস্ মস্ ইতিনবঅভাদ্যাঃ অট্ অতুস্ উস্ থল্ অপুস্ অ অট্ ব ম ইতিনবস্ত্যব্বেত্যয়য়ঃ। প্রথমনবেহন্মক্তে তেপ্রভৃতিস্থানেহপি অভাদিনবাদেশাপতিঃ শেষনবেহন্মক্তেত্যাদি নবস্থানে বিকল্পেন এপ্রভৃতি
নবাদেশাপতিশ্বেতি তদ্বারণার্থমূভয়ত্র নবগ্রহণং। অত্র যদ্যপি বিদেরিতি সামান্যনির্দেশঃ কৃতস্তথাপি
বিদ্ঞ্জানেহস্পৈবগ্রহণং বিনতি বিদ্যুতে বিন্দতি এবাং ক্রধাদি দিবাদি মুচাদিত্বেনগ্রহণাৎ বিদ্যভায়ামিত্যস্থাত্মনেপদিন্থেনতৎপরতস্ত্যাদিবিভক্তেরলাভাচ্চ। ততুক্তং বেত্তিরূপং বিদ্যজানে বিনতি বিদ্যিবাদিহিও।
বিদ্যুতা বিদ্যভায়াণি বিপ্র লাভেচ বিন্দতীতি। অত্র বিদ্যজানে বিদ্সভায়ামিত্যত্রাকারশ্চন্দোহর্থঃ।
বেৎসীত্যাদীত্যাদিনা বিপ্রং বিপ্র বিদ্যি বিদ্যং বিদ্যইতি। ৮১॥

প্রভাপ্রকাশিকা ৷

আত্মন। বিদ আত্মনেপদে অন্তবিভক্তেরাদেরিগিমঃ স্থাদা। ব্যতিপূর্বস্থকত্র ত্রিনেপদিনোরা-গমঃ সমোগমূচ্ছীত্যাদিনাবাত্মনেপদে অন্তথাদেরিঃ সন্মিদ্রতে সন্মিদ্রতে সন্মিদ্রতাং সন্মিদ্রত অন্তথাদিহেনা-শুণিফংরস্থ । ৮২॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

আলানেপদইতি। পদেঅন্তইত্যত্তছনোহর্ষং বিলম্বিতোচ্চারণেত্বিতিবা নদন্ধি। অন্তইতি অন্তভাগগ্রহণাৎ অন্তে অন্তামন্তএষামাদোরাগমোবা। ব্যতিবিদ্রতেইতি। স্মরন্তিলোকার্থমমীকিল-শ্রুতীরিতি প্রতিষ্ঠামধিগন্তমীশাহে। পরং যদেষাং পুনরন্তিবৈভবং তদেতএব ব্যতিবিদ্রতে যদীতানর্যে। অস্থার্যা। অমীকোশিকাদয়োলোকার্যং কিলনিশ্চয়ং শ্রুতীঃ স্মরন্তিশ্বৃতিরূপতাং নয়ন্তিইত্যেবং প্রতিষ্ঠামুৎকর্ষং বয়মধিগন্তঃ জ্ঞাতুমীশাহে প্রভবামঃ পুনঃ কিন্তু যদেষাং পরমুৎকৃষ্ঠং বৈভবমন্তিয়দীতিসজ্ঞাবনায়াং তৎএতএবব্যতিবিদ্রতে পরস্পরং জানন্তিনবয়মিতি এবাং শ্রুত্যর্থবৎস্মৃতিকরণং বয়ং জানামোনতৃগুহং বৈভবমিতি বর্তুলার্যঃ। ৮২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গুণঃ শিতি। শিতিপরে শীডোগুণঃ। শেতেশয়াতে। শেরতেতে-ইভিমাকতং। অন্তঃ কিংশেষে।৮৪॥

ব্ৰ এস্ত্যাদ্যাঃ পঞ্চাদ্যাবাস্থ্যক্ৰ এশ্চাহাদেশঃ আহ আহতঃ আহঃ।৮৫। আহোহস্তস্থে। আখে। থেকিম্ আহথুঃ।৮৬॥ ব্ৰুব সট্ পরাদিৰ্ব্যঞ্জনেতনো। ব্ৰবীতি তনৌকিং ব্ৰুতঃ।৮৭॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

শীঙোনিত্যমিতি। বাবারণায়নিত্যমিতি। অন্তখাদোরাগমইতি পূর্বাস্থাদনুবর্ত্তে। উদাহরণ-মগ্রেএকত্রৈবদেয়ং।৮৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

্গুণঃ। শেরতইতি। বিধায়বৈরং সামর্ঘেনরোহরোয উদাসতে। প্রক্ষিপোদর্চ্চিয়ং কক্ষে-শেরতেতেহভিমারুতমিতিমাঘঃ। অন্তঃ কিমিতি। অন্তে অন্তামন্তইতি ত্রয়োপাদানাদাহশেষইতি। শুণঃ শিতি।৮৪॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

গুণইতি। শয়াতইতি গুণেএকারস্মায়াদেশঃ। শেষইতিগুণেষত্বং। ৮৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রঞ। ক্রধাতোঃ পরতোবিহিতাস্তাদ্যাঃ পঞ্জতাদ্যাঃ পঞ্জবন্তিবাতাদিফেইডাদিয়ু ক্রঞঃ স্থানেআহাদেশশ্চ। পূর্ববিদন্তং। ক্রঞ্ব্যক্রায়া বাচি।৮৫॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

ক্রঞইতি। অত্রৈকপঞ্চপদউল্লেখ্পিত্যাদয়ঃ পঞ্চপঞ্চদাণিত্যকুত্যাদীনাং নবানাং পঞ্চাদ্যাঃ নবাত্যাদীনাং পঞ্চানাম্যাদিলা অসমানসঙ্গাহেনাবোগ্যকাদিতিক্তয়ং। পরত্রক্রঞ্চেত্যাদীনাং পঞ্চানাং বাআহাদেশইতিসন্দেহঃ স্থাং। তস্থ ইত্যুক্তেরু তুলামেবস্ত্রমিতি ক্রঞইত্যক্তং। অত্রাপিক্সাচন্দঃ। ৮৫।॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আহো। আহাদেশস্তহঃ স্থানেতঃ স্থাৎগেপরে। বিকল্পকেদ্রমাহ।৮৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আহইতি। আহইতানুক্তেহাধাতোঃ স্থানেহইতানুক্তআহঃ সমুদয়শুস্থানেতাদেশঃ প্রসজোতেত্যুক্তমাহোহইতি। থেকিমিতি। থেইতানুক্তামধ্যমেইত্যুক্তে অধুসিম্থাদিত্যভিপ্রায়ঃ। থেইতানুক্
ক্রেত্রআহইত্যাত্রেব ব্যার্তিমদশ্যিশ্যং প্রাক্পরিত্যাগেমানাভাবাং। ৮৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রব। ক্রধাতোরীট্ভবতিব্যঞ্জনেতনৌপরে। পরস্থতিপ্রভৃতেরাদিরবয়বঃ। ক্রতইতি। ব্যঞ্জনং নতমুং ব্যঞ্জনইতিলোটউত্মপুরুষবাধকং। তনাবপীটোগ্রুণিস্বমসিদ্ধং সাধ্য়তিপরাদিগ্রহণমিতিকেচিৎ। বস্তুতস্তুপরাদিগ্রহণং শিত্ত্বার্থং তেনক্রবোনবচ্। আত্মনেক্রতে ক্রবতে ক্রবতেইত্যাদি।৮৭॥ নুৰুস্ত্ৰশম্যমামীড্বা। সংস্ত্ৰীতি নবীতিচ। ব্যঞ্জনেতনৌপরে। রবীতি প্রশমীতি অভ্যমীতি বা স্তৌতীত্যাদি। ৮৮॥

অনভ্যস্তস্যোত ঔদ্যাং। ব্যঞ্জনে তনৌপরে। স্তৌতি নৌতি যৌতি প্রসৌতি এবং ৰুক্ষুপ্প ভূতেঃ। তনৌকিংস্তুতঃ ৰুতঃ।৮৯॥

উর্ণোতেস্তগুণশ্চবা। ব্যঞ্জনেতনোপরে। প্রোর্ণোতি। তনাবিত্যেব প্রোণ্ডঃ । ১০॥ ·

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্রবইতি। অনুকৃতক্রধাতোঃ পঞ্ম্যেকবচনে ঈকারোকারয়োর্দ্ধাতোরিভ্যুকারস্থ উব্। ক্রবঃ স্থানেইতিনাশঙ্কনীয়ং পঞ্ম্যপেক্ষয়াগর্ষ্ঠ্যাঃ পশ্চাত্রপস্থিতেঃ ঈডিতিটকুবন্ধস্থাগ্মসূচনাচ্চ। ৮৭॥

প্রভাপকাশিকা।

অত্রক্তস্তশস্ত্রমামী ছবা । সংস্তবীতিনবীতিচৈতি সূত্রং দেয়ং। অনৃতজ্ছবিরোধিরপমন্তর্রমণবন্ধ-নতুষ্থতাবিরুদ্ধং। অতিনিকটমবি ক্রয়ং মুরারেঃ পরমপদং প্রণয়াদভিন্টবীমীতিপ্রাচাং। নবীমিচ। ৮৮॥

গ্তপ্রকাশিকা।

সুরুত্ত্বিত। শমু উপশমেদিবাদিরদাদিঃ পরস্থৈপদা দিবাদেশি।ম্যতি। অম্রোগেচুরাদিরদাদিঃ পরস্থৈপদা ক্রাদেশি।ম্যতি। অম্রোগেচুরাদিরদাদিঃ পরস্থেপদা ক্রাদেশি।ম্যতি। অমন্তিব্যাধয়ে।হপ্যেন্দ্রাদিরদাদিঃ পরস্থেপদা অমতি। অমন্তিব্যাধয়ে।হপ্যেন্দ্রাদিরদাদিঃ পরস্থেপদা অমতি। অমন্তিব্যাধয়ে।হপ্যেন্দ্রাদিরদাদিঃ পরস্থেপদা অমতি। অমন্তিব্যাধ্যে । তাতি । অমন্তিব্যাধ্য । অমন্তিব্যাধ্য । তাতি । উত্বিক্সপক্ষেপরস্ত্রেণ্ঠ। আদি গ্রাহ্মিগ্রিম্যুত্রেবাধ্য । ৮৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনভ্য। ন অভ্যস্তেহিনভাস্তস্ত্রভাভ্যস্তমংজ্ঞকভিন্নস্ত্রধাতোরুংউস্থাৎ। স্ত্রেভিত্যাদি। ফুঞ্স্ত্রতো পুস্ততো কুটাদোসুবতি ভুবাদোনবতি ঘুমিশ্রণে যুপ্রসবে ভুদাদোস্ত্রতি রুশব্দেট্স্কুশব্দে-ক্ষুতেজনে।৮৯॥

গ্ গৃতপ্রকাশিকা।

অনভ্যতি। অভিপূর্কাঃ অস্ভ্রিবিদ্যমানে অভ্যস্ততে স্থাসোজভ্যস্তঃ কম্মণিক্তঃ। স্তুরুভয়পদী।
লুপ্রভৃতয়োহদাদিপর স্মৈপদিনঃ যুঞ্মিশ্রণামিশ্রণয়োঃ জ্যাদিঃ যুনাতি যুনীতে। যৌতিকালেকুলক্ষ্রীভিঃ
ক্ষেত্রসন্তানর্দ্ধয়ে। যুনাতি যৌবনস্থোহপি ন বেশ্যাবন্ধকীজনৈরিতিকবিরহস্তে। রুঙ্গতিহিংসয়োঃ
ভূবাদিঃ রবতে। প্রভৃতেরিত্যনেন কুশব্দে যুঅভিগমনেপর স্মৈপদিনো কোতি ঘোতি ইত্যাদিগ্রহণং ৮৯ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উর্ণোতেঃ। উর্ণোতের কারস্থবাগুণশ্চপক্ষে ঔরং তুপুনরর্থঃ। উণু ঞ্ আচ্ছাদনে প্রোর্ণোতু প্রোর্ণোতু প্রোর্ণোদিত্যাদি। ৯০॥ ইবর্ণোবর্ণয়োর্দ্বাবিশুবাবগুণেশ্বরে। স্তুবন্তি ক্রবন্তি প্রোর্পুবন্তি স্তুবন্তি ক্রবন্তি প্রোর্পুবন্তি স্তুবাতে স্তুবত ক্রবন্ত । শ্বরে কিংস্তুতে ওুতে ইঙ্অধ্যয়নেঅধিপূর্বঃ প্রযোক্তব্যঃ অধীতে ইয়াদেশঃ শ্বরেঅধীয়াতে অধীয়তে স্কাতৌউদীতে উদিয়াতে উদিয়তে আদীধীতে আববীতে। ১১॥

অনেকাচস্ত্র সংযোগস্থে বর্ণোয়ঃ। অগুণেশ্বরেপরতঃ। ইয়ো ২পবাদঃ। আদীধ্যাতে আবেব্যাতে আদীধ্যতে। অনেকাচঃ কিং বীগতি প্রজনকান্ত্য-সন্থাদনে যুবিয়ন্তি। স্থেতি ব্যঞ্জনযুক্ত গ্রহণাৎ ঈয়েইত্যাদৌন্যত্বন্। ১২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উর্ণোতেরিতি। গুণশ্চেতি চকারেণপূর্বেরাক্রঔসমুচ্চীয়তে। ৯০ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইবর্ণো। ধাতুসামান্যস্থাবিবর্ণোবণো তিয়ারিযুবোস্তঃ অগুণস্বরমাত্রে। অধীয়তেনলুক্। ঈগতাবদাদিশ্চুরাদিশ্চ। উদেতীতিইণ্গতো। অয়মুদয়তিমুদ্রাভঞ্জনঃ পদ্মিনীনামিতিউংপুর্ব্বোহয়্গতো পরিস্থাপদীরুচাদিপাঠাং। দীধীঙ্দীপ্তিদেবনয়োঃ বেবীঙ্বেদনাতুল্যয়োঃ ইমোছান্দসাবিত্যেকে। ৯১॥

গ্ छ थका निका।

ইবর্ণ ইতি। স্তবতে ক্রবতে ইত্যেতাভ্যামন্তেবিভক্তেঃ আদম্যাদিত্যাদিনানলুক্। ঙুতইতি। ঙুঙ্গতৌ। ঙুঙ্শব্দেচেৎভুবাদিঃ ঙবতে। ঈগতোচেৎভুবাদিঃ পরস্মৈপদী অয়তি উৎপূর্ব্বায়্ধাতুরপি-ভুবাদিপরস্মৈপদীতি প্রভাপ্রকাশিকা অন্যথাসাত্মনেপদী অয়তে প্রায়তেইত্যাদি। ১১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনেকাচঃ। অনেকেঅচোযস্ততস্থাতোরসংযোগস্থইবর্ণোযোভবতি। বীতি। বেতিবীতঃ। স্থেতিব্যঞ্জনবুক্তগ্রহণাদিতি। অসংযোগেতিষ্ঠতীতি বুৎপত্তাব্যঞ্জনযোগসম্ভবাৎ অসংযুক্তব্যঞ্জনস্থাৎ ইহনতথা। ঈয়েইতি। ইণ্গতোলিট এপরেদিঃ হল্যোগাভাবান্নযঃ পুর্বেণইয়াদেশঃ কর্মণ্যাত্মনেপদম্। ৯২॥

গূতপ্রকাশিকা।

অনেকাচইতি। ন সংযোগেইসংযোগইতি পূর্বনঞ্সমাসঃ তত্রতিষ্ঠতীতি অপ্রাদীত্যাদিনাতঃ
সচাসাবিবর্গদেচতি। ইয়োহপবাদইতি বিশেবলাদিতিভাবঃ। বীধাতুঃ পরস্মৈপদী। ঈয়েইত্যাদে
নবহমিতি। নম্ব্রম্বাপ্রাপ্তিঃ অনেকাচ্ছাভাবাৎ সত্যম্ তুশব্দাৎ কৃতদ্বিব্রচনানেকাচোপিগ্রহণাৎ
নাল্ডেইতিবংম্বপ্রাপ্রেনিস্কনন্থইবর্ণগ্রহণান্ময়ঃ কিল্ফিয়াদেশস্ততোদীর্ঘঃ। ব্রস্কোরস্থমন্বিধানং ধি
সারণেতুদাদিপরস্মেপদীদিধ্যকুঃ দিধ্যুঃ পিগতোত্দাদিপরস্মেপদীপিপ্যতুঃ পিপুঃ ব্যতিপিপ্যেইত্যাদে।।
কেবলদীর্ঘেকারগ্রহণেতুইত্যাদিসিদ্ধির্ম্পাদতইবর্ণইতিগৃহীতং। ৯২॥

ইণঃ শিতি। অগুণেস্বরেয়ঃ স্যাৎ। যত্তিইক্সারণেঅধিপূর্বোইয়ম্ ইণ্বদি-গিতিবচনাৎ ইণঃ সমানশীলঃ অধ্যেতিঅধীতঃ অধিয়ন্তিঅস্তি। ৯৩॥

অস্যলোপোইতনাবস্তেঃ। অতনৌপরে অস্তেরকারলোপাঃ। স্তঃ সম্ভি। ১৪॥ সৌসঃ। অস্তেঃ সকারস্যলোপাঃ স্যাৎসৌপরে। অসিব্যতিস্তে প্রাত্তঃ শব্দাচ্চাস্তের্য্যস্বর্য়োরিতিষত্বং ব্যতিষাতে ব্যতিষতে। যোগবিভাগাৎ সেপরে-চসলোপাঃ বতিষে। ব্যতিহেইত্যেকে। সৌকিং ব্যতিসাথে। ১৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইণঃ। যোহসুবর্ত্তে অগুণেস্বরইতিচ। যন্তীতি। অন্তোনিস্বরোয়ঃ এবং যন্ত। ইণ্বদিগিতি। অস্থার্থমাহ ইণঃ সমানেতি। ইণ্তুলাঃ তেনশিতি অগুণেস্বরেয়ঃ অধিযোগএবপ্রযোজ্যঃ। অধীয়ন্তীত্যন্তে। অন্তেরিতি তিপ্ অস্ ভুবি ভূঃসতা। ১৩॥

গৃতপ্রকাশিক।।

ইণইতি। ইণ্গতো। ইণ্ ইকো অদাদিপর সৈপদিনো। অধিযন্তীতি ইকোয়াদেশঃ। ৯৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অস্তেতি। অস্ভূবিবিদাসানে ভুবিভূধাত্বর্থেসভায়ামিভিয়াবং। অস্তেরিভি ধাতুনির্দ্দেশে শতিপ্ যঠ্যেকবচনেরপং। ৯৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সোদঃ। যোগেতি। যোগস্থাসম্বন্ধস্থাবিভাগঃ পৃথক্করণং যোগবিভাগান্ধপরমিতিস্থায়াৎ ঔকার-স্থাত্রবেশেসমাত্রক্রতোসেপরেচসলোপঃ ব্যতিষেত্রস্থালোপশ্চ লুপুএবধাতুরর্থপ্রত্যায়কঃ। ধাতুলোপমজান-তাং ততঃ প্রীত্যসুদয়াৎ ব্যতিহেইতি হকারোনিপাতঃ। ৯৫॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

সোসইতি। অসীতি। দিপ্রতায়েপরেহস্তেঃ দলোপঃ। ননুষদিদোপরেঅস্তেঃ দলোপস্তর্হিরাতি বেইতিকথং দিদ্ধাতিইত্যতআহ যোগবিভাগাদিতি। যোগস্থাররদম্বন্ধস্থাবিভাগাৎ পৃথক্করণাৎ নপরং পরংম্বরাক্ষরং ননিমিন্তমিত্যর্থঃ তথাচ দমাত্রশ্রুতোদেপরেচদলোপইতিভাবঃ। ব্যতিষেইত্যস্প্রামাণিকত্বাৎ ব্যতিহেইতি নদাধুইত্যেকইত্যেম্বরদোদ্ভাবনং। ব্যতিদ্দেইত্যেকেইতিকচিৎপাঠঃ স্থায়ানাদরণাৎ নদলোপইতি তেষাম্মতম্তদপি অপ্রামাণিকমিতিনাদরণীয়ং। ১৫॥

অন্যস্য ধ্বেতথা। অস্তেঃ সলোপোধ্বেপরে। বতিধ্ব। অত্রান্যস্চতিচকারঃ কাকক্ষিণোলকন্যায়েনধ্বেচেতি সমুচ্চিম্বন্ সৌচেতি সমুচ্চেনোতি। অন্যান্য সাচধাতোঃ সৌচসলোপঃ চকাসি অনুশাসি। তথেতি প্রসিদ্ধ্যন্ত্রসারণ চকাসি অনুশাসিবতিচকাধ্বে ব্যতিশাধ্বে আশাধ্বে আশাস্তে আশাসাতে আন্তেন্বকং স্থেপ্রভৃতেরেকং। হস্তি। ১৬॥

হন্তের্মনুগ্রুট্যত্যনা। হতঃ। ১৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অন্যন্ত। অয়মর্থঃ। ধ্বেপরেহস্তেঃ দলোপঃ চম্ভতং দম্চায়কত্বাং অন্যম্পাতোঃ ধ্বেদেচি দলোপইতি তত্রদোচেতিকথমর্থঃ স্থাৎ ধ্বেচেতি তৎসমুচ্চায়কচকারাভাবাদতআহঅত্রেতি। একেন-চক্ষুয়াযথা কাকোদিশোপশ্যতি তদ্বদেকেনচকারেণদ্বয়োঃ দম্চ্চয়স্তদেবাহধ্বেচেতীতি। অস্তেপ্রে চৈতি সমুচ্চিয়ন্ত্র্যাতাঃ দোচিতিসমুচ্চিনোতীত্যর্থঃ। উদাহর্ত্ত্বুং প্রস্তোতি অন্যম্যচেতি। চকাস্দীপ্রোশাস্ত্রকুশিকৌ। তথেত্যস্থার্থমাহতথেতীতি। চকাস্দীত্যাদোকচিন্নদলোপঃ। হুর্গমতে অন্যম্পকারেনদলাপঃ চকাস্থ্রে। পেরতল্লোপমাহব্যতীতি। পরস্থৈপদিত্বাৎ। এবং ব্যতিশাপের আশাপ্রেইতি পাঠে,আঙ্শান্তইচ্ছ্যাং দলোপঃ। আস্তইত্যাদি। আস্উপবেশনে বস্মাছাদনেকদিগতিশাতনয়োঃ আধ্বেবধ্বেকং প্রেপ্রভৃতিপদাৎ নিসিচুন্থনেনিং স্তেপ্রণিং স্থেণীং ধ্বে। ৯৬॥

গুঢপ্রকাশিকা।

অন্ত তে । চকাদ্ শাদ্ধা ভুপর স্থৈপিদিনো । আশান্ধেইতি । আঙ্শান্ত ইচ্ছায়ামাত্মনেপদী শেবদলোপঃ । আশান্ত ইতি । শান্তারীন্ধর্মমাসান্তেইতি কবিরহন্তে । আস্বস্কসয়আত্মনেপদিনঃ । অন্তংপ্রভাপ্রকাশিকায়ামনুসর্ত্ব্য । ১৬ ॥

প্রভাপকাশিকা।

হতেঃ। অতানোধ্টিপরেনলুক্। ধুটিত্যুনুক্তেহ্ন্তাদিত্যাদোনলোপঃ স্থাৎ অতন্দিতকার্য্যস্ততে-বুবিধানাং। ৯৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হত্তৈরিতি। হন্তেঃ হন্হিংসাগতিপ্রহারেষু হন্ধাতোরদাদিপরত্যৈপদিনোহতনোধুটিপরেনলুক্সাদিত্যময়। হিংসাধ্বংসঃ জহিশক্রংমহাবাহোগীতায়াং। অপহন্তিশক্তিং। মাধর্মং জহিভারতইত্যাদৌ। গতিঃ স্তরম্রোত্বিনী মেষহন্তিসম্প্রতিসাদরমিত্যাদৌ। প্রহারস্তাড়নং বাদনঞ্চ্ঞাহতেম্বং বক্ষঃ। ভার-বোগাগ্রীবীকনকশিলানিভং ভুজাভ্যামাজত্মবিষ্মবিলোচনস্তবক্ষইতি। অত্রাঙঃ পরাৎস্বাঙ্গকর্মকাদ্ধন-আত্মবেশ্বং তচ্চবক্তব্যং। ভূর্যামাজত্মবিত্যাদোতাড়নবাদনে। হতইতিত্সিনলোপঃ। ৯৭॥

য়ঃ স্থাদগুণিনিম্বরে। হন্তের্য়ঃ স্যাৎ। ব্লস্তি। অগুণিগ্রহণাৎ জন্নতুঃ। বশ্কান্তৌ কান্তিরিচ্ছা। ১৮॥

ধুটান্তেচছশোঃ ষত্বম্। বন্ধিসম্প্রসারণে উষ্টঃ। ধুটান্তেচকিন্ উশস্তি এবং বন্ধি উষ্ঠঃ উষ্ঠ বন্মি উশ্বঃ উশ্বঃ ব্যক্তাকে ব্যক্তাশাতে। ১৯॥

সংযোগাদিককারলুক্। ধুট্যন্তেচস্যাৎ। আচফে আচক্ষাতে আচক্ষতে আচক্ষে আচক্ষাথে আচড্চ্বে আচক্ষে আচক্ষাহে আচক্ষাহে। ১০০॥

প্রভাপকাশিকা।

খ্বঃ। আদ্যেকিং প্রহণানি। অন্তেকিং হথ। নিস্বরোদ্বাদেশস্তেনজন্মুঃ। জন্মতুরিতি লিটোহতুসি রূপং। অট্থলং বিনালিট্স্বরস্থাকিত্বেনাগুণিত্বাৎ। বশেতি।তালব্যান্তঃ। কান্তিরিচ্ছেতি। নতুশোভেত্যর্থঃ। ৯৮॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ত্মইতি। ত্মইত্যকার*ছন্দোহর্থঃ। অগুণিগ্রহণাদিতি। যদ্যতনুষ্বরেত্মগুলিষ্বরেইত্যুক্তেপুর্ব্ব-স্মাদতনাবিত্যনুবর্ত্তনসম্ভবাৎসিদ্ধ্যতি অগুণেগ্রহণাৎ শিদ্ভিন্নেহপিস্থাদিতিভাবঃ। ৯৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ধুটা। ধুটিপরে অন্তেবিরামেচ ছস্ত শশ্চ যত্ত্বং ভবতি। বক্ষীতি। সঢ়োঃ কঃ সইতি ষঃ কঃ এবমুশ্যাৎবফ্। ৯৯॥

গৃত্পকাশিকা।

ধুটান্তইতি। ছম্মদরং পশ্চাদ্বাচ্যম্ অত্র শঃ শত্বমুদাহরতিবষ্টীত্যাদি। উইইত্যত্রগ্রহিজ্যাব্যধ্ বশীত্যাদিনাসম্প্রদারণং। বক্ষীতি। শম্মধন্তে ষম্মকত্বে সিবিভক্তেঃ সম্মদন্ত। ১৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সংযোগা। সংযুক্তস্থাদিকলুক্। আচফইত্যাদি। আঙ্পূর্বাঃ চক্ষঙ্ব্যক্তায়াং বাচিকলুক্ তস্থটঃ আদন্তস্মাদিতিনলোপঃ। আচক্ষইতি সেরূপং। আচড্তৃইতি। ধ্বেকলুকিচতুর্থেষস্থডঃ চটবর্গাবিতি ধোচঃ। ১০০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

সংযোগাদীতি। সংযোগশব্দেন সংযুক্তউচ্যতে তৎপ্রাগ্ব্যুৎপাদিতং। আচন্টেইত্যত্রকলুকি যকারাচ্চটবর্গঃ স্থাদিতি তস্মটঃ আচক্ষাতেইত্যত্রব্যঞ্জনং পরগামি আচক্ষতেইত্যত্র আদমুস্মাদিত্যন্তেবিভ-ক্ষের্শলোপঃ এবমস্মত্রোহনীয়ং। ১০০॥ মুক্তোগুণিনির্দ্ধিঃ স্যাৎ। ভ্রজ্জাদিত্বাজ্জস্যয়ঃ। মার্ফি। গুণিনিকিং মুফীঃ। ১০১॥

অচ্যগুণেতৃবা। রদ্ধিঃ। মৃজন্তি মার্জ্জন্তি মার্ক্সি মৃষ্ঠং মৃষ্ঠ মার্জিনু ব্যতিমুক্তি ব্যতিমূজাতে ব্যতিমার্জতে। ১০২॥

হোটোদাদেস্ত্রযোধৃট্যস্তেচ স্যাৎ। চটবর্গাবিত্যাদিনা ধোটঃ ধাতুটোটে-লোপস্তৎ পূর্বস্চদীর্ঘতা লেচি লীটঃ লিহস্তি। তথা হুত্রমমুপলীটেসাধুসান্নায্য-মগ্নিঃ। দোগ্ধিভ্র্পাঃ। অমৃতেনমনোদেগ্ধি। সম্পূর্বোদিহিঃ সংশায়ার্থঃ সন্দিশ্ধঃ। ১০০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

য়জো। যুজ্পাতোঃ গুণিপ্রতায়েপরের্দ্ধিঃ স্থাৎ। ধুটান্তনির্ত্তির্বিশেষদর্শনাৎ। যুজশুনৌ বৃদ্ধিঃ জম্মনঃ তম্মটির্মিটঃ। ১০১॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

মূজো। মুজুপরকৈপদা। মুকটইত্যত্ত রুদ্ধাভাবঃ অন্তংমান্তি বিৎসাধাং। ১০১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অচ্য। অচিঅগুণে মুজোবার্দিঃ। মার্কীতি। রুদ্ধোজঃ যং যঢ়োং কং সেইতিকং যত্বং। এবং মুজঃ মূজ্য়। ব্যতিমূজাতেইতিপক্ষে ব্যতিমার্জাতে ব্যতিমার্জতেইতিপক্ষে ব্যতিমূজতে। অচীতিকিং মুফঃ অগুণইতিকিম্ অমার্জ্য। ১০২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অচ্যেতি। অত্রাপ্যচীতি দামান্যনিমিত্রহণাৎ ময়জতু মমার্জতুরিত্যাদি। তুর্রহণং বামুর্ত্তি-বারকং। রৃদ্ধিরিত্যসূবর্ত্তে। য়ুজোগুণিনিরৃদ্ধিঃস্থানা'ষ্টি অচ্যগুণেতুবেত্যেবং ছন্দঃ। ১০২॥

প্রভাপকাশিকা।

হোটো। ধাতুহস্তাঃ দাদিধাতোঃ পুনর্হস্তাঃ স্থাৎ ধুটান্তেচপরে। লেটাতি। সন্ধেঃ শৈষিকত্বাদাদেভিণঃ অতোনদীর্ঘঃ। প্রতিশরণমূর্শীর্ণজ্যেতিরম্যাহিতানাং বিধিবিহিতবিরিকৈঃ সামিধেনীরিধিত্য। কৃতগুরুত্ববিতোঘধাংসমধ্বয়া বিধ্যৈত্বিময়মপলীটেসাধুসামায্যমিয়ঃ। অয়মিয়ঃ সামায্যং হবিঃ উপলীটেআসাদয়তি লিহ্যজাদিঃ। এবং লেক্ষিলীটঃ লীটেত্যাদি। দোগ্ধীতি। তুহ্পপুরণেগুণঃ হোঘঃ ঘটণভতেতিতস্থাঃ তুর্যায়ুল্ররিতিঘস্থাঃ। দেগ্ধীতি। দিহ্উপচয়েপুর্ববৎ। সন্দিগ্ধইতিকেতিদকর্ত্বাদা তেন সন্ধিগ্ধঃ পুরুষো সন্প্রেবাদিহিঃ সংশ্রার্থঃ বিরুদ্ধানেককোট্যবগাহিক্তানং সংশয়ঃ। ১০০॥

সধ্বকারয়োস্কৃতীয়াদ্যাশ্চতুর্থাস্তাস্তর্য্যাদ্যাং। স্থ্যঃ। ধোক্ষিদক্ষেক্ষিতথা-ছম্মে। জ্ঞাতদারোইপিখন্মেকঃ সন্দিগ্ধেকার্য্যবস্তুনি। ছহাতে ছহতে ধ্বকা-রেদস্যধঃ ধুশ্বেদক্ষিধ্যে। ১০৪॥

দিসলুপ্যপি। তদ্ব ৰুৰ্য্যাদ্যাঃ স্থাঃ। ত্ৰহ্ অধাক্ অদোধাক্। ১০৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হোতইতি। দাদিভিন্নস্থাতোহঃ স্থানেতঃ দাদিধাতোঃ পুনর্হস্তবঃ স্থাদিত্যর্থঃ। লিহ্আস্থাদনে-উভয়পদী। তথেত্যনেনআত্মনেপদিস্বং প্রমাণয়তি হুত্ময়মুপলীতইতি। অয়মিয়িঃ দাধুযথাস্থাত্তথাহুতং দান্নায্যং হবিঃ উপলীতেআস্থাদয়তি দাধ্বিতি দান্নায্যবিশেষণন্ধা। দান্নায্যং হবিরিত্যমরঃ। মাঘশ্লোক-স্থাদোহয়ং। দোগ্ধীতি। হুহ্প্রপ্রণেতচ্চদোহনং গবাদিস্তনমাক্ষ্যক্ষীরনিঃদারণমিতিয়াবং। উভয়পদী। ছহির্অর্দনেতুভুবাদিপরস্থৈপদীদোহতি। অমৃতেনমনোদেগ্ধীতি। দিহ্উপচয়েউপচয়ো-র্দ্ধিঃ লেপনেচেতি বোপদেবঃ অয়মপ্যভয়পদী। অমৃতেনমনোদেগ্ধিবিষেণাপক্ষিণোতিহি। অতোমান-বিষংহিত্বাপায়য় স্থাধরাস্থতমিতি। ১০৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সধ্ব। তৃতীয়াদ্যাশ্চতুর্থান্তাধাতবস্তর্য্যাদ্যাশ্চতুর্থাদ্যাং হ্যঃ সধ্বকারয়োং প্রয়োং। ধোক্ষীতি। হস্তঘত্ত্বদস্তধং লিঙ্গবৎপ্রথমঃ। আত্মনেহুগ্নে। মাঘে মমতাবন্মতমদং শ্রুয়তামঙ্গবামপি। জ্ঞাতসার-ইতিপরার্দ্ধং। হুহতেনলোপঃ। ধুগ্নেইতি। ঘস্তগং তুর্য্যেরুস্থারিত্যাদিনা।১০৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সংধ্বতি। তুর্যাদ্যাইতি। চতুর্ণাংপূর্ণস্তর্যাঃ চতুরস্তবদীয়েচচকারস্থচলুক্তয়োরিতি চতুরোযাগমঃ চকারলুক্চতুর্যাস্থান্যোথেযাংতে। ধোক্ষাতি তুহঃ দিবিভক্তৌগুণঃ হস্তবঃ দস্তধঃ ঘস্তকঃ যত্ত্বং। সম্বেক্ষীতিতথা। ১০৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দিস। দিসোল্লোপেহপি কিমিত্যতআহতদ্ধিতি। তৃতীয়াদ্যাশ্চতুর্থান্তাস্ত্র্যাদ্যাভবন্তি। অধোগিতি। ব্যঞ্জনান্তাদাদোগুণোদিসোল্লোপেশৃহস্তম্যঃ দক্ষধঃ প্রথমঃ। অদোধোগিতি। তুহোমঙ্ দ্বিগুণোদোত্রহুধাতোর্য্যঙ্লুগ্নেতিযঙ্লোপেশরস্মৈপদ্যদাদিঃ আদাবট্গুণদিলোপোদশুধত্বেম্সকঃ। ১০৫॥

গृष्धकाश्विका।

দিসেতি। সম্পাকারশ্ছন্দোহর্থঃ। লুপ্তছেদনেলোপনং লুপ্সম্পদাদিত্বাৎ কিপ্লোপ্যোহনুব্দমইতি কলোপঃ বেঃ কেবলস্থলুবিতিবিলোপঃ দিসয়োলু বিতিষষ্ঠীসমাসঃ। অপিনাতৃতীয়াদ্যাশ্চতুর্থান্তান্ত্র্য্যাদ্যাঃ স্থারিতি সমুচ্চীয়তেতদেবাহতদ্বদিতি। অদোধোগিতি। পুনঃ পুনর্দ্দোগ্ধীতিবাক্যেক্রিয়াসমভিহারেযঙ্ঙিতিযঙ্ অন্তৎপ্রভাশিকায়ামুক্তং। হোঢোদাদেস্ত্রঘোধৃঢ়ান্তেচ স্থাৎ সধ্বকারয়োঃ।
তৃতীয়াদ্যাশ্চতুর্থান্তান্ত্র্যাদ্যাদিসলুপ্যপীত্যেবংছন্দঃ। ১০৫॥

ক্রদস্প্সনিযক্ষিভাইট্ শিতাদির্যস্বরে। যাদিং স্বরাদিঞ্বর্জয়িত্বাশিত আদিরব্য়বইডাগমঃ ন্যাৎ তেনগুণিনিগুণঃ অগুণেঅগুণঃ রোদিতি ক্রদিতঃ স্বরেনেট্রুদন্তি স্বপিতঃ যক্ষিতি যক্ষিতঃ অন্প্রাণনে প্রাণিতি অনি-তেরিতিণত্বং শ্বনিতি শ্বনিতঃ। শঃ যত্ত্বম্ ঈশোতে ঈশতে ঈটে ঈডাতে স্কিতঃ । ১০৬॥

ঈশীড্জনিড্যঃ সধ্বোরিক্। ত্বমেববিশ্বভ্তরাবিশ্বমীশিষে। ঈষিধে ঈড়িষে ঈডিগ্বে ব্যতিজাজ্ঞিষে বতিযজ্ঞিগ্বে। শাস্তি। ১০৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রদ্। রুদির্ অপ্রাবিমোচনে ঙিম্বপ্শয়েশ্বস্প্রাণনেঅন্চ যক্ষ্ ভক্ষ্ অদনেএভাইট্ নযস্বরেএতদ্ব্যপ্রয়তি যাদিমিত্যাদি। রোদিতাতিইটঃ শিতামাদিয়াদিহগুণিনি গুণিত্বাদগুণঃ। রুদিতইতি। শিতামগুণত্বাদিতপাগুণঃ এবমন্যত্র। পঞ্জুদাদয়ঃ মৈত্রেয়মতেজক্ষ্ ব্যিজঃ রোদিতিঃ স্বপিতিশৈচব শ্বশিতিঃ
প্রাণিতিস্তথা। যক্ষিতিশৈচব বিজ্ঞেয়োরুদাদিঃ পঞ্চকোগুণইতি। ঈউইতি। ঈশ্ঐশ্বর্যেধূট্যন্তেচেতি
শাং ষঃ। ঈটেইতি। ঈদ্স্তভোভাতস্ভটঃ প্রথমশ্চ। ১০৬॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

রুদিতি। রুদাদয়ঃ পঞ্চাদাদিপরস্মৈপদিনইতিসর্ব্বসম্মতং। শ্বস্ভুবাদিরপীতিউলোপঃ করো-তের্য্যেইতিসূত্রটীকায়াং পশ্চাদ্বক্তব্যম্। জক্ষিব্বিগিজইতি মৈত্রেয়মতং তদমুসারেণ গণদর্পণে২প্যুক্তং। অস্মাকংমতেহন্তস্থযকারাদিরিতি। যক্ষ্পুজায়ান্তচুরাদিরায়্মনেপদী। শিবং যক্ষয়তেভক্তোতিকবিরহস্তে। শঃ ষত্রমিতি। ধুটান্তেচছশোঃ ষত্রমিত্যনেন।১০৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঈশী। ঈশ্ ঈড্ জন্ এভাইক্ সধ্বয়োঃ পরয়োঃ। ইক্কিৎ অগুণঃ ফলং নাস্তিঅপ্রাপ্তেঃ কিন্তুব্য-তিজজ্ঞিনইত্যাদৌ কনুবন্ধস্বরে জজ্ঞজ্গোতুজন্গমোরিতি যজ্ঞাদেশঃ। জন্জননে নজনীযণাব্যবধানাৎ। স্বমেবেতি। উপপ্লুতং পাতুমদোমদোদ্ধতৈ স্ব্যেববিশ্বস্তুর বিশ্বমীশিষে। ঋতেরবেঃ ক্ষালয়িতুং ক্ষমেতকঃ ক্ষপাত্রমঃ কাণ্ডমলীমসং নভইতিমাঘে। এবমীড়িধ্বম্ ঈশিধ্বং। ১০৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঈশীতি। ঈশ্ ঈডো আত্মনেপদিনো। জন্পর সৈপদীজন্তি। জন্ জননেধাতুঃ জনীপ্রাত্মভাবে-ইত্য অন গ্রহণং দিবাদিত্বেন যণাব্যবধানাৎ জায়দে জায়ধের ইত্যাদি। ব্যতজ্ঞিষেইত্যাদি ক্রিয়াবিনিময়ে দর্বধাতু ভাইত্যাত্মনেপদম্ এবং বতিজ্ঞিধ্বং। ১০৭॥ শাসঃ শিষগুণেছলি। শিষ্টঃ চকাস্তি চকাস্তঃ ! ১০৮ ॥

অভ্যন্তাঃ শাস্চকাস্যক্ষি দরিদ্রাজাগ্রনেকিতাঃ। অনেকিতাঃ ক্রতিদ্বিচনা-ধাতবঃ। ১০১॥

শভিদ্ধি স্যাজ্জ্বহোত্যাদেঃ। শাসতি চকাসতি যক্ষতিজ্ঞাগৃতঃ জাগ্রতি।১১০॥ শিভিদ্ধি স্যাজ্জ্বহোত্যাদেঃ। অদাদ্যন্তর্গতস্য জুহোত্যাদেদি র্বচনং স্যাৎ শিভিপরে। অভ্যাসে হোজঃ জুহোতি জুহুতঃ।১১১॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

শাসঃ। শাস্ত্ৰপুশিষ্টো শাস্থাতোঃ শিষাদেশোহগুণেহলিপরে। অগুণেকিং শাস্তি। হলিকিং শাসতি। শস্তৃশাসৎ শাসতোঁ। শাস্তিরোণাদিকঃ ক্রোশিষ্টিঃ। ১০৮॥

गृष्धकार्मिका।

শাসইতি। শাস্পরস্মৈপদী। শাস্ইচ্ছাশিষোঃ ভুবাদিরদাদিরাত্মনেপদী নিত্যমাঙ্যোগইতি বোপদেবঃ। আঙ্পুর্ব্বোহয়ং প্রযোক্তব্যইত্যমাকং মতঞ্চ আশাসতে আশান্তেইত্যাদি। ১০৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অভ্যস্তদংজ্ঞামাহাভ্যস্তাইতি। এতেঅভ্যস্তদংজ্ঞকাঃ। যথাহশাস্চকাস্যক্ষ্দরিদ্রাজাগৃ। নএকঃ। অনেকং করোতীত্যর্থে ইন্ক্তপ্রত্যয়েঅনেকিতাঃ। চকাস্দীপ্রেদিরিদ্রান্থ্যতিজাগৃনিদ্রাক্ষয়ে। ১০৯॥

গূতপ্রকাশিকা।

অভ্যন্তাইতি। চকাস্জাগৃধাতুপরস্মৈপদিনো। অনেকিতাঅনেককরণবিষয়াস্তদর্থমাহক্তেতি। কৃতং দ্বির্বাচনং যেযাংতে। ১০৯॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিক।।

সংজ্ঞাফলমাহাভ্যন্তেতি। অন্তইতিনির্দেশাৎ অন্তিঅন্তেঅন্তাং শন্ত্ইতোষাং ন লোপঃ। ১১০॥

গুঢপ্রকাশিকা।

অভ্যস্তাদিতি। শাসতীত্যাদিত্রয়মন্তিবিভক্ত্যন্তঃ । জাগৃতইতি প্রয়োগদর্শনার্থমূক্তং । জাগুতীতি নলোপঋকারস্থসন্ধিজোরঃ । স্ত্রীছন্দঃ । ১১৫॥

প্ৰভাপকাশ্বিকা।

শিতি। ঔৎসর্গিকত্বাৎ পূর্বাং প্রত্যেবদিঃ। জুহোতীতি। হুদানেতচ্চপ্রক্ষেপাবচ্ছিন্ন-ত্যাগঃ। >>>॥

গুতপ্রকাশিকা।

শিতীতি। জুহোতিরাদির্যাস্থা আদিনাপিজিবর্ণে ডুদাঞ্দানে ব্রীলক্ষায়ামিত্যাদের্থ হণং। অভ্যাদেহোজইতিস্মারকং। ১১১॥ • জুহোতের্মোব। জুহ্বতি। তথা ব্যতিজুহুতে ব্যতিজুহ্বাতে জিছেতি জিছীতঃ জিছিয়তি স্বক্ষরণ দীপ্ত্যোঃ জঘর্ত্তি জন্বতঃ জদ্রতি সমর্ত্তি সমৃতঃ সম্রতি। ১১২॥

ঋধাতোঃ স্যাদিযভ্যাসে। ইয়ৰ্তী যৃত ই যুতি। ১১৩॥
নিজ্ বিজ্বিষাং গুণঃ কাৰ্য্যঃ। অভ্যাসেশিতিপরে। নেনেক্তি বেবিক্তে
বেবিষাতে। ১১৪॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

জুহো। নোবঅগুণেউবাদেশস্থবাধকমিদং। ব্যতিজুহ্বতেচ ব্রীলজ্জায়াং দ্বিঃ তত্রানাদিহল্লো-পেব্রস্বঃ অভ্যাদেহস্মজঃ জিব্রিয়তীতিইয্। জঘতীতি। মৃক্ষরণদীপ্র্যোঃ। সদর্তীতি। স্রদাদিশ্চ ভুবাদোসরতীত্যুক্তং। ১১২॥

গূতপ্রকাশিকা।

জুহোতেরিতি। ধাতুনির্দেশেশতিপ্। নোবইত্যকারশ্ছন্দোর্থঃ। হুদানেধাতুঃ তচ্চবিশিষ্টদেশ-প্রক্ষেপাবচ্ছিন্নত্যাগঃ বিশিষ্টদেশসংযোগাসুকূলক্রিয়াসুকূলহবির্ব্বৃত্তিনোদনাদিব্যাপারোবা। জুহোত্যা-দয়োহ্দাদ্যন্তর্গতাঃ পরস্মৈপদিনঃ। জহ্বতীত্যত্রাদক্তস্মাদিত্যাদিনাঅন্তেন্ন লোপঃ। ব্যতিজুহুতেইতি প্রয়োগন্বয়োক্রিয়াবিনিময়েসর্ব্বধাতুভ্যইত্যান্মনেপদং পরত্রনলোপন্চ সন্ধিজোবঃ। মুদেচনেভুবাদি-পরস্মিপদী ঘরতি মুদেচনাচ্ছাদনপ্রস্রবণস্রাবণেষু চুরাদিপরস্মৈপদী ঘারয়তি। ১১২॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিক।।

ঝ। অভ্যাদেইয্শিতিপরে। ইয়তীতি ঋষিঃ অভ্যাদইয্গুণঃ। ইয়র্তেরিতি কচিৎপাঠঃ শতিপিরপং। ১১৩॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ঋধাতোরিতি। ঋগতো অদাদিমধ্যগতজুহোত্যাদি পরস্মৈপদী। ঋগতিপ্রাপণয়োঃ ভুবাদি-পরস্মৈপদী ঋচ্ছতীত্যুক্তং। ১১৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নিজ্। নিজির্ শোচপোষণয়োঃ বিজির্ পৃথগ্ভাবে বিষ্৯ব্যপ্তো। শিতীত্যসুবর্ত্তে। নেনেক্তীতি। উভয়ত্রগুণেধুট্যন্তেচেতি জঃ কঃ। নেনিক্তইত্যাদো গুণাভাবোধাতো। এতেযজাদয়ঃ। ১১৪॥

गृष्धकाणिका।

নিজিতি। বিজীভয়সঞ্লয়োঃ তুদাদিরাত্মনেপদী উদ্বিজত ওবিজীভয়চলনয়োঃ রুধাদিপরস্মৈপদী বিনক্তি। ১১৪॥

পৃভৃঞ্ মাঙ্ হাঙ কারই:। অভাদেশিতিপরতঃ। পিপর্ত্তি বিভর্তি বিভৃতঃ বিভ্রতি বিভৃতে। ১১৫॥

অভ্যস্তস্যাকারোহল্যতনাবী। মিমীতে জিহীতে। হলিকিং মিমাতে। ১১৬॥

স্বরে২গুণেলোপ্যঃ। অভ্যস্তস্যাকারোলোপ্যঃ স্যাৎ। মিমতে জিহতে জিহাতে বিভেতি জহাতি দরিদ্রাতি। ১১৭॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

পৃত্ত। পৃপালনপুরণয়োঃ ভুতৃঞ্ধারণপোষণয়োঃ। ভূতরণইত্যস্থব্যাবর্তয়ে ভূঞ্নির্দ্দেশঃ। মাধা-তোহাকশ্চবারণায় মাঙ্ হাঙ্ নির্দ্দেশঃ। মাঝানে ওহাঙ্গতো। পিপত্তীতি। পৃদ্ধিঃ ঋবর্ণস্থ অত্তেইঃ। ১১৫॥

গূতপ্রকাশিকা।

পুত্রিতি। পৃঃ পরশ্রৈপদী। পৃঞ্জীতৌ স্বাদিপরশ্রৈপদী পৃণোতি পৃঙ্ব্যাপারেতুদাদিঃ প্রিয়তেব্যা-প্রিয়তে। ভূভরণেপরশ্রৈপদীবভর্ত্তি ভূঞ্ভরণপোষণয়োঃ ভূবাদিঃ ভরতি ভরতে মামানেশব্দেচজ্হোত্যা-দিরাত্মনেপদী মমীতে অদাদিপরশ্রৈপদীচেৎ মাতি ওহাক্ত্যাগে জুহোত্যাদি পরশ্রৈপদী জহাতি। ১১৫ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অভ্য। অভ্যস্তদংজ্ঞকস্মধাতোরাকারঈস্যাৎ হল্যতনো। অতনোকিং দদাতি। মিমীতইতি। প্রাকৃষিঃ অভ্যাদেঅস্তইঃ ধাতোরাকারস্তৃঈঃ ঈত্বেষিঃ অভ্যাদেহ্রস্বঃ ইতিকশ্চিৎ। এবংজিহীতে মিমাতে-ইতি। অভ্যাদেহ্রস্বেপ্রভৃঞ্মাঙ্ হাঙিতি ইস্বং। ১১৬॥

গৃত্পকাশিকা।

অভ্যন্তেতি। ননুচকাস্ধাতোরভ্যস্ততয়াত্দি আকারস্তৃষ্টঃ কথং ন স্থাদিতি ন সকারেণব্যবধানাৎ অন্যথাহলাবিতি নিমিত্তগ্রহণং নিক্ষলং স্থাৎ তথাচহলীতি গ্রহণং মুখ্যনিমিতার্থং তচ্চাব্যবহিতপর-ত্বেনেতি। ১১৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্বরে। মিমতইতি আলোপঃ। নমুপুর্বাস্ত্রেহনীতিকথম্ অতমুত্বেহপি স্বরেগুণেলোপাৎ পূর্বাপরয়োঃ পরস্থবলবত্ত্বাৎ সত্যং মুখ্যার্থং তদুপাত্তমিতি। বিভেতীতি। জিভীভয়েদিঃ হ্রস্বঃ চতুর্থস্থ তৃতীয়ঃ। জহাতীতি। ওহাক্ত্যাগে। ১১৭॥

গঢপ্ৰকাশিকা ৷

স্বরইতি। স্বরেইতিগ্রহণং সামান্তার্থং তেন জহতুঃ জহুরিত্যাদি। বস্তুতস্তুস্বরেইতি গ্রহণং জহাতুইত্যাদৌ আলোপবারণার্থং জহতুরিত্যাদৌ আলোপার্থক। অগুণেকিম্ অজহামিত্যাদাবপিলোপঃ স্থাংন ১১৭॥

ভীহাকোরী হস্তঃ পক্ষে। বিভীতঃ বিভিতঃ জহিতঃ জহীতঃ। ১১৮।
নিত্যং দরিদ্রাতঃ। ঈহস্তঃ। দরিদ্রিতঃ। অন্যত্রদরিদ্রতি দরিদ্রাদি
দদাতি। ১১১॥

मार्थात्रीनूक्। मगुज्ः म**खः मम्**जि मर्ख मथाजि। ১२०॥

দধোধৎস্যাত্তথসধ্বেপরে। যথা। ধত্তোধত্থঃ তথাধৎসেধদ্ধে অন্যত্তদধ-ত্যমী। অত্রবভন্তি দধন্তি জগন্তি জজন্তি জজন্তঃ জজ্ঞাদেশেজজ্ঞতি ব্যতিজ-জ্ঞিষে ইত্যাদয়শ্চান্দসত্য়ানোদাস্থতাঃ। ১২১॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

ভীহা। অনয়োরীহ্রম্বঃ স্থাৎপক্ষে। ১১৮॥

গুঢপুকাশিকা।

ভীহেতি। ভীহাকোরিঃ পক্ষেইতি ক্তেম্বরে২গুণেনিমিত্তেইত্যাপদ্যেত। অভ্যস্তশ্যাকারইতি সূত্রাৎ পরমশ্যকরণেতুঅনয়োরেবম্বরে২গুণেইত্যাপদ্যেত অধুনাতুযত্ত্রস্তত্ত্রপক্ষেব্রম্বইতি ন কাপ্যমুপ-পত্তিরিতি। ১১৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নিত্যং। অন্যত্রেতি। হল্তনোরন্যত্রেত্যর্থঃ। ১১৯॥

गृष्प्रकाणिका।

নিত্যমিতি। ঈহ্রস্বইত্যমুবর্ত্তে হল্যতনাবিত্যর্থাৎ। তত্ত্বৈস্কৃষ্ণাদেশবিধানাৎ। অভ্যস্তেত্যা-দ্যেতদম্ভবার্য্যাছন্দঃ। ১১৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দাধো। দাধাঅনয়োরীলুক্। দভেতি ঈলুকি। দদতীতি স্বরেগুণেলোপ্যইত্যালোপঃ। দত্তইতি ঞিত্তাত্ত্যপদং। দধাতীতি ডুধাঞ্ধারণপোষণয়োঃ। ১২০॥

গृष्ट्रकाषिका।

দাধোরিত। দাসংজ্ঞকস্মজহোত্যাদিস্বাভাবাৎ দইত্যুক্তেজুহোত্যস্তগামাত্রস্থ স্থাদিতি ধাইত্যস্থগ্রহণং। ১২০॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

দধো। ধানিম্পন্নদধইত্যেতস্থানেধৎ স্থাৎ তথসধ্বেষু পরেষু। ধত্তইতি। ধারিঃ ব্রস্থঃ তৃতীয় চ ঈলুক্দধঃ স্থানেধৎ। ধদ্ধইতি তুর্য্যেতৃতীয়ঃ। দধত্যমীইতি। অন্তিরূপম্ আলোপেঅন্তেম লোপঃ অত্তেতি। ভম্ ভৎর্সনদীপ্তোঃ ধন্ ধান্তে গম্ গত্যে জন্ জননে ইত্যস্তহান্দসত্বস্পীতি গৌমিচন্দ্রঃ।

বর্ত্তমানেবর্ত্তমানা। বিভক্তিঃ স্যাং। বর্ত্তমানকালশ্চ উদ্দেশ্যফলানুকূল-ব্যাপারসম্ভানেন ধর্মিণাবাবচ্ছিন্নঃ সামীপ্যশেচতিদ্বিধা। আদ্যেত্তশংমধেন যজত্তমাংসংনভুত্তেক্ত ন্যন্দন্তেনদ্যঃ নম্ভিণিরয়ঃ। দ্বিতীয়েকদাদেবদত্ত আগতোহিদি অয়মাগচ্ছমি কদাদেবদত্তযাস্যদি এষ্যামিযান্তমেবছিমাম্বিদ্ধি। ১২২॥

অন্যেতু জন্জননইত্যস্থভাষায়াং প্রয়োগং নমস্থন্তে। সর্ববর্ষমতেভাষায়ামপীতি ত্রিলোচনঃ। জজ্ঞাদেশইতি। কনুবন্ধভিন্নেংপীত্যর্থঃ। ইত্যাদয়শ্ছান্দসত্য়া পরাচার্য্যমে দিহিতাঃ। যদ্বা ইত্যাদয়ইতি
অতদ্গুণসন্মিজ্ঞানবহুত্রীহিণাছন্দসি অভ্যাপ্তে অড্যোতি দম্তাড়নে দম্মোতি চমুভক্ষণে চম্মোতি বি ক্ষি
চি কি দাশ্ ক্র জিঘাংসায়াং বিনোতি ক্ষিণোতি ভাষায়ামপ্যস্থপ্রয়োগমিচ্ছন্তি প্রতন্মপিমাং পঞ্চবাণঃ
ক্ষিণোতি। বস্তুতস্ত ক্ষণু ক্ষিণু হিংসায়ামিতি তনাদেরপং। চি চিনোতি কি কিনোতি দামোতি ক্রণোতি
এতে গৃহন্তেছান্দসত্য়ানোদাহতাময়েত্যর্থঃ। ১২১॥

গুঢপ্রকাশিকা।

দধইতি। দধাতীত্যাদিভাগমনুকৃতস্ত দধাইত্যস্ত মষ্ঠ্যেকবচনে স্বযুট্স্বরেষু ধাভূনামিত্যালোপঃ তেন ধানিষ্পান্নস্ত দধঃ স্থানে ধৎ স্তাৎ তথসধ্বেপরেইত্যর্থঃ। অন্তত্ত্তেতি। তথসধ্বাদন্তত্ত্তেত্যর্থঃ। অন্তত্ত্ব প্রভাপ্রকাশিকায়াম্বিলোকনীয়মিতি। ১২১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পূর্বাং বিভক্তিবিধানার্থং বর্ত্তমানইত্যুক্তম্ ইহলক্ষণকরণায়োপদ্যাতসঙ্গন্ত্যপূনরাহবর্ত্তমানইতি। তল্লক্ষণমাহউদ্দেশ্যেতি। উদ্দেশ্যং যৎফলং তদমুকূলোযোব্যাপারসন্তানঃ দএববর্ত্তমানক্রিয়াতেনাবচ্ছিন্দোবিশিন্টঃ কালোবর্ত্তমানঃ যথাগ্রামং গচ্ছতীত্যাদেউদ্দেশ্যকলমূন্তরসংযোগোগ্রামাদিপ্রাপ্তিরপঃ তজ্জনকর্ব্যাপারসন্তান আকুঞ্চনপাদপ্রসরণাদ্যাত্মকঃ ক্রিয়াকুটঃ অন্যথাএকস্থৈবগমনাদিক্রিয়াসন্তানশ্য কাচিৎ পরাকাচিছিল্যমানেতি অবস্থাপ্তাৎ অতএব পূর্ব্বাপরীভ্তাবয়রঃ সাধ্যাক্রিয়েতিসঙ্গচ্ছতে। এতাদৃশক্রিয়াভাবকাধাতবইতি। নম্বদাদীনামর্থশুক্রিয়াত্মাতাবঃ অন্তিরয়ং ভবত্যর্থঃ ভবতিশ্চদত্যর্থঃ সভাচ নিত্যৈকাজাতিঃ নিত্যশ্য একস্ম চক্রমর্কপত্মভাবাৎ পৌর্ব্বাপর্যঃ নান্তিএবং নাশোহভাবঃ কথং ক্রিয়াভবেৎ নহিত্বশ্য পৌর্ব্বাপর্যয়অন্তীতিকথং তরাচকশ্য নশেদ্ধাতৃত্বং শ্বেতসংযোগাবপিগুণৌগুণতাৎ পৌর্ব্বাপর্য্যাভাবইতিকথং স্থিতঃ সংযুক্তশ্চিথিত তথাসমবায়োহিপি নিত্যত্বাদক্রমরপত্মাচ্চ ক্রিয়াতোভিন্ধএবৈতিকথং তদ্বাচকশ্য সমরপূর্ব্বশ্য ইণোধাতুত্বমিতিসত্যং যন্মাদিহব্যাকরণেসাধন জন্যং নর্ব্যমণিত্যমনিত্যমিপ পৌর্বাপার্যারাং পূর্বাপরীভাবেনব্যাপারোপলন্তাৎ তদাতালিক্রমনিত্যং নিত্যমপীত্যর্থঃ। সত্তাবতোহর্থক্রমনন্ত্র্যাত্মপি ক্রিয়াত্ব্যবহারঃ। অত্রপ্রতীতেঃ ক্রমরপ্রতাজায়ামানত্বাৎ সভারাজ্বি ক্রমত্ব্যান্তির প্রতীয়্যমানত্বাৎ প্রতীয়্যমানত্বাৎ স্বির্ব্যমিতিবজ্রধরঃ। এবঞ্চসিন্ধং নিত্যভূতানামপি সত্তাদীনাং সাধনঘটপটাদ্যাঞ্জিতত্বন প্রতীয়্যমানত্বাৎ

তৈরেবক্রিয়তইতিভাসনাদস্ত্যাদের্ধাতুত্বমিতি । নতুসন্তিগিরয়ইত্যাদৌপর্বতাদের্দ্ধিমিণোব্যাপারানুপল-স্তাৎ পূর্ব্বাপরভাবোন ঘটতইত্যতআহধর্দ্মিণাবেতি। অয়মবচ্ছিন্নত্বেনকঃ। সামীপ্যশ্চেতি। বর্ত্তমান-কালইত্যন্বয়ঃ এষচদ্বিপ্রকারঃ ভূতসামীপ্যোভবিষ্যৎ সামীপ্যশ্চেতি। অশ্বমেধেনজ্যতইতি। ধেনেত্যত্রপ্রকৃত্যাদিস্বাতৃতীয়া তদর্থ-চাভেদঃ তেনাশ্বমেধাভিন্নযাগং করোতীত্যর্থঃ। উদ্দেশ্যফলমত্রস্বর্গাদিঃ তদনুকূলতা হোমমন্ত্রপাঠপ্রোক্ষণাদিরূপব্যাপারসন্তানতা যাবৎপরিসমাপ্তিস্তাবদেবতৎ প্রয়োগইতিভাবঃ। ধশ্ম্যবচ্ছিন্নমাহমাংসমিত্যাদিত্রয়ং। যাবন্মাংসংনভুজ্যতে তাবানেব কালোমাংসভোজনাভাবধৰ্মিণাব-চ্ছিনোভবতীত্যর্থঃ। স্থানন্তইত্যাদি। যাবৎ স্থাননং তাবানেবকালঃ স্থান্দবন্ধদীধর্ম্মিভিরবচ্ছিন্নঃ যাবৎস্থিতি-স্তাবানেবকালঃ স্থিতিমিলারিধর্ম্মিভিরবচ্ছিন্নোবর্ত্তমানইত্যর্থঃ। দ্বিতীয়েসামীপ্যেউদাব্লিয়তে। কদাদেবদত্ত-আগতোহদাতিপ্রশেষ্যমাগচ্ছামীত্যুত্রম্ আগমনকার্য্যেপ্রয়াসেদামীপ্যাত্মকদম্বন্ধেন কারণরূপাগমন-ক্রিয়োপসারাৎ এষ্যামাত্যত্রগমনকারণেদত্যাদোদামীপ্যদম্বন্ধেন কার্য্যরূপগমনস্থোপচারাৎ বর্ত্তমান-তেত্যর্থঃ। অত্রাগমনস্থাতীতস্থাপি বর্ত্তমানস্ববিবক্ষাতৎকৃতস্থাধুখেদাদেস্তথৈবপ্রতীয়মানস্থাৎ ভবিষ্যতো-ইপিগমনস্থ বর্ত্তমানত্ববিবক্ষাতদর্থদন্বিধানস্থ বর্ত্তমানত্বাদিতিত্রিলোচনঃ। এবমন্যত্রভূতভবিষ্যৎ সামীপ্যে-স্বরূপতোভূতভবিষ্যবাদিহন ইদানামাগতোহহং গমিষ্যামিকদাআগতোহদিএষোহহমাগ-চছামীত্যাদোনোপচারইতি। ১২২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইদানীং লক্ষণং বক্তুং পুনরাহবর্ত্তমানইতি। তল্লক্ষণমাহউদ্দেশ্যেতি। উৎপ্রবিদশ্ অতিসর্জ্জনে-কর্মাণিযঞ্ফল্ নিষ্পত্তোফলতীতি অচ্ উচ্ছেশ্যঞ্তৎফলঞ্চেতি তদনুকুলতীতি উৎপূর্বাৎকূল আবরণেইত্য-আদ্ভবাদিপরস্মৈপদিনো২চ্সচাসোব্যাপারশ্চেতি বিষাঙ্পৃধাতোঃ কর্মণিঘঞ্জিয়ারূপঃ তহ্মসন্তানঃ সমূহঃ সম্ তন্ ধাতোভাবেঘঞ্ তেন অবছিমোবিশিকটইত্যর্থঃ। অবছিদির্দিধাকরণেকর্মণিক্তঃ। ব্যাপারে-ণাবচ্ছিন্নএতাবন্মাত্রউক্তেএকস্থৈবগমনাদিক্রিয়াসন্তানশুকাচিৎ পূর্ব্বাকাচিদ্বিদ্যমানাকাচিৎপরেতি অবস্থা-ভেদাৎ পূর্ব্বক্রিয়ারস্তেগ্রামং গচ্ছন্গমিষ্যতি মধ্যক্রিয়ারস্তেগ্রামং গতোগচ্ছন্গমিষ্যতি পরক্রিয়ারস্তেগ্রামং গতোগচ্ছতাতিপ্রয়োগাপত্তিঃ স্থাৎ ব্যাপারসন্তানেনাবচ্ছিন্নএতন্মাত্রউক্তে যত্রগ্রামগমনাব্যবহিতোত্তরং পাদপ্রকালনং তদব্যবহিতোত্তরমুপবেশনং তত্ত্রসমুদয়ক্রিয়াবিশিষ্টকালস্থ বর্ত্তমানম্বপ্রসক্তেঃ গ্রামং গচ্ছতি পাদেপ্রিক্ষালয়তি উপবিশতীতিপ্রয়োগাপতিঃ স্থাৎ বিভিন্নফলজনকব্যাপারসম্ভানাবচ্ছিন্নকালস্থবিভিন্ন-বৰ্ত্তমানস্বাৰ্থং ফলজনকৈতিবিশেষণেদত্তেইপি যজ্জদস্মগমনেদেবদত্ত চৈত্ৰেয়োরগমনেইপিতাদৃশকালস্মদৰ্ক্ষেষাং বর্ত্তমানস্বপ্রদক্ত্যা যজ্ঞদত্তদেবদত্তচৈত্রাগচ্ছন্তীতি প্রয়োগাপতির্ঘটতে উদ্দেশ্যেতিফলবিশেষণকথনেতু যদ্যৈব উদ্দেশ্যফ্লানুকুলব্যাপারদন্তানবিশিটোয় কালঃ দতবৈশ্যবর্ত্তমানঃ নান্থেষাং তেষামুদ্দেশাভাবেনতাদৃশ-কালস্থতংক্রিয়ায়াং বর্ত্তমান হাভাবাৎ। যত্র কৃত্তিকয়ংক্রিয়ানন্তরমপরক্রিয়ানংক্ষ্যতিত্ত্রাপিক্রিয়ুমাণ্-গচ্ছতীতিপ্রয়োগেনাপলাপাপতিঃ অবশ্যম্ভাবিসম্ভাবনয়াতৎপ্রয়োগাৎ যথাশ্বঃ কর্ত্তাশ্মীতিনিশ্চিত্যনিমন্ত্রণ-যত্রপাকাদিকং কেনচিৎপ্রতিবন্ধেননজাতং তত্রপচামীত্যাদিপ্রয়োগকর্জ্বন্ধমিখ্যা-ভাষিত্বং ফলাভাবেহপিতজ্ঞানযোগ্যব্যাপারসন্তানস্ত বিদ্যামানত্বাৎ যথাচেতনারহিতস্ত সম্বোধকবিষয়ক-জ্ঞানাভাবেহপি তজ্জননযোগ্যযুসত্ত্বাৎ ভোবৃক্ষইত্যাদিসম্বোধনং স্থাৎতদ্বৎ। স্বাবচ্ছিম্নকালবৃত্তিত্বং বর্ত্তমানম্বমিতি সার্যঞ্জ্যাং। ১২২ ॥

স্মেনাতীতে। উদ্দেশ্যফলাসুকূলব্যাপারকূটস্য ধর্মিণোবাধৃংসাবচ্ছিন্নঃ কালোভূতঃ। স্মশব্দযোগে২তীতেবর্ত্তমানাস্যাৎ। পিনফিস্মদ্রোপদীবর্ণকং ত্রিপুরং স্মহরোহস্তিভবতিস্মনৃপোরঘুঃ।১২৩॥

পুরাতুবা। পুরাশব্দযোগে ২তীতেবর্ত্তমানাদ্যাণ। বসন্তীহপুরাছাত্রাঃ উষুর্বা। ১২৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্বেনা। উচ্ছেশ্যেতি। তাদৃশব্যাপারকৃটস্থার্শ্মণোবাধ্বংসাবচ্ছিন্নঃ কালোহতীতঃ ওদনমপাক্ষীদিত্যত্রেফলং বিক্৯তিঃ তদমুকূলব্যাপারকৃটঃ তুমর্মপ্রক্ষেপচুল্ল্যধিশ্রয়ণাধঃসন্তাপনাদিঃ তস্থবংসোবিনাশঃ
তদবচ্ছিন্নঃ কালইত্যর্থঃ। স্থাশব্দেতি। স্থোনসংধাতুযোগেসিদ্ধে তদ্ধারাহতীতার্থযোগঃ সিদ্ধইতিভাবঃ i
বর্ণকং স্থাদ্বিলেপনং। ১২৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শ্বেনেতি। অতীতইতি। অতিপূর্বেইণ্ধাতুঃ অত্যেতিস্মেত্যতীতঃ গত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনাকর্ত্তি । শেন স্মান্দেন সহধাতুযোগে অতীতে ভূতকালে বর্ত্তমানাবর্ত্তমানাবিভক্তিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অতীত-লক্ষণমাহ উদ্দেশ্যেতি। বর্ত্তমানধ্বংসপ্রতিযোগিত্বমতীতত্বমিতি সারমঞ্জর্য্যাম্। পিনপ্তীতি। পিষ্চ্চ সংচূর্ণনেতৌ স্বরতোনাস্বরনাবিতি নবিকরণং যকারাচ্চ তবর্গইতি তস্তুটঃ। স্মান্দোহ্ব্যয়ঃ প্রথমৈক-বচনান্তঃ। বর্ণক্মঙ্গলেপনচন্দনাদিকং। হন্হিংসাগত্যাদিয়ু হন্তিভূসতায়াং ভবতি। ১২৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পুরা। অব্যয়েহয়ং। উরুর্বেতি। বদতেলিটিধাতারভ্যাদেচ দম্প্রদারণমভ্যাদেগ্রহিবচ্যাদ্যোরিতি। শন্তুমতে পুরালুঙ্ লট্ স্মে। অত্রাবাৎস্থঃ পুরাছাত্রাবদন্তিস্মবা পুরাস্মাধীতেশিশুঃ স্মযোগেলট্
ন লুঙ্। পুরাধিরূঢ়ঃ শয়নং মহাধনং বিবোধ্যদেযস্তুতিগৃতিমঙ্গলৈরিতি ভারবিঃ। তুশব্দাদেতৎ।
পর্হায়ামপি জাত্বাশ্চ লট্ দর্বদা অপিশ্রোত্রিয়ঃ প্রতিগৃহ্লাতি মন্ত্রেজাতুবদন্ত্যজ্ঞাইতিচ ভাষতেরাঘবস্তদা
ইতিশিষ্টপ্রয়োগাৎসিদ্ধাতি। ১২৪॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

পুরেতি। তুশব্দাৎ তদ্শব্দপ্রয়োগেহপি অতীতেবা বর্ত্তমানা তথা নিন্দায়ামপি শব্দজাতুশব্দয়োঃ প্রয়োগেহতীতেনিত্যং লট্ তত্তৎপ্রয়োগাঃ প্রভাপ্রকাশিকায়াং দ্রফব্যাঃ। বসন্তীতি। বস্নিবাসেতুবাদি-পরস্মৈপদী। উন্নরিতি। পরোক্ষায়া উসিদ্বিভাবেধাতাবভ্যাসেচ সম্প্রসারণেযত্বেদীর্ঘত্বে পরগামিছে রসোর্বিসর্গঃ পদান্তইতি পদান্তসকারস্থ বিসর্গঃ। ১২৪॥

প্রভাৱেনস্ভাঞ্চ। পৃষ্ঠপ্রতিবচনেনস্ভাং যোগেইতীতেবর্দ্ধনানাগাং।
গুরুসেবামকার্মীস্থং নাকার্যং নকরোমিচ অকার্মীস্থং গয়াঞাদ্ধং স্বকার্যং লুক-রোমিচ। চকারামস্যোগেনিতাং ভবানধ্যায়মধ্যৈত নম্বধীয়েছিভঃ কিয়ান্। ১২৫॥
যাবংপুরাভবিষ্যতি। তাদৃশব্যাপারকলাপস্য ধর্মিণোবাপ্রাগভাবাবছিয়ঃ
কালোভবিষ্যন্। নিপাত্যাবংপুরাযোগেভবিষ্যতি কালেবর্দ্ধমানাস্যাং।
দৈবপ্রাপ্যং যাবংভুজেফ্যটোযাবদ্ভবতি নব্রবামিপুরাকিঞ্চিং। নিপাতেতিকিং
যাবদাস্যতি তাবদানেষ্যতি। বিপিনেইপিপুরাভবিষ্যতেধরণিং শাসতিতত্ত্র-পার্থিবে। পুরানগর্যোত্যর্থঃ। * । ইতিবর্ত্ত্বমানাপ্রকরণম্। * । ইতিপ্রোগ-

প্রভাপ্রকাশিক।।

রভুমালায়ামাখ্যাতে গণসাধ্যবিন্যাসঃ প্রথমঃ। ১২৬॥

প্রত্য । পৃষ্টপ্রতিবচনইতি। প্রশ্নোতরভাবেনত্বিরুদ্ধোতরপ্রত্যুত্তরভাবইত্যর্থঃ। অকাষীরিতিপ্রশ্নঃ নাকার্ষমিত্যুত্তরং। লুঙিশ্বরান্তস্থেতির্দ্ধিঃ বামুর্ত্ত্যালট্ পক্ষেনকরোমিননিষেধেনুসম্বোধনে। চকারাদিতি। নিত্যং ভূতেলট্ অধ্যৈতঅধীঙোলুঙিঅচাং বৃদ্ধিঃ নম্বধীয়েহ্ধীতবানিত্যর্থঃ। নমুশব্দঃ সম্বোধনেএবমকার্ষীস্ত্রং ভোজনং নমুকরোমিকৃতবানিত্যর্থঃ। ১২৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

প্রকার ইতি। অকার্যীরিতি। কুঞোলুঙঃ সীসিঅভাগমের্দ্ধিঃ ষত্বং রসোনিবসর্গঃ পদান্তে। অকার্যমিতি। লুঙঃ সমিপূর্নবং। ননিষেধে। নস্তান্ধিমেধোপময়োরিতি কুবিতর্কাপমানয়োঃ। বিকল্পানুনয়াতীতে প্রশোহেত্বপদেশয়োরিতিচমেদিনী। অধ্যৈতেতা। অধীঙোলঙ আত্মনেপদীয়তবিভক্তোসাধাং।
অধীয়েইতি। বর্ত্রমানায়াবিভক্তোইয়। ননুসন্মোধনে। তথাচমেদিনী ননুশন্দোবিনিগ্রহে। অনুপ্রশোধনরক্তাবধিকারেচ সম্ভ্রমে। আমন্ত্রপেইপ্যনুনয়্ত্রেশ্রমানুজ্ঞাবধারণইতি। ১২৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যাবং। তাদৃশেতি। উদ্দেশ্যেফলামুক্লেত্যর্থঃ। ব্যাপারকলাপস্থ ক্রিয়াক্টস্থ ধর্মিণোবাপ্রাগভাবাবচ্ছিন্নঃ কালোভবিষ্যন্। দৈবং ভাগ্যং যাবংসাকল্যেন ভুঙ্ক্তেভোক্ষ্যতেঘটোযাবং ভবতি ভবিষ্যতাত্যর্থঃ। যাবংব্যাপ্ত্যর্থঃ। নব্রবীমীতি। পুরাঅগ্রেকিঞ্চিদিপি নবক্ষ্যামীত্যর্থঃ। এবং পুরাযাতিঅগ্রেযাস্থতীত্যর্থঃ পুরাযাবদরণ্যানীভবতি যাবদশ্বাভিততোযাস্থতি পুরাভুঙ্ক্তেপশ্চাদ্রোক্ষ্যভইত্যর্থঃ।
পুরামুশেতেতবচঞ্চলং মনঃ। যাবংশোহধীতেপুরাশোহধীতে। বিপিনেহণীতি। পুরাভৃতীয়াস্তং। *
ইতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং রত্নমালাটীকায়াং গণসাধ্যবিবরণম্। ১২৬॥ *॥

বিধ্যা দিযুলিঙ্লোটো। বিধিনিমন্ত্রণ আমন্ত্রণ অধীষ্টসং প্রশ্ন প্রার্থনাপ্রেষ অতিসর্গ প্রাপ্তকাল অর্হশক্তাথে বুলিঙ্লোটোন্ডঃ। অজ্ঞাতজ্ঞাপনমাজ্ঞাচ-বিধিঃ জ্যোতিষ্টোমেনযজেত যজতাং। নিমন্ত্রণং প্রত্যায়প্রয়োজকাকরণ নিয়োগঃ যথা আদ্দেরপ্পতিভূঙক্তাং। আমন্ত্রণং সংকারপূর্বকোনিয়োগঃ যথেষ্টং গচ্ছেঃ গচ্ছ। অধীষ্টমধ্যেষণামামধ্যাপয়েং অধ্যাপয়ত্ব। সংপ্রশ্নঃ সম্প্রধারণা কিমুতর্কমধীয়ীয়উতব্যাকরণমধ্যয়ৈ। প্রার্থনাযাচ্ঞালভেয়ভিক্ষাং লভৈভিক্ষাং। প্রেষণমাত্রং প্রথমঃ অতিসর্গঃ কামাচারালুক্তা প্রাপ্তকালশ্চ। ক্রিয়ানিমিত্তকালে প্রেষাদিযুদ্ধ মৌহুর্ত্তিকেয়ু লিঙ্লোটো স্বযোগেতুলোডেবেত্যাদিশকাদ্যবস্থা। মুহুর্ত্তোপরিত্বং কটং কুর্য্যাঃ কুক্তএবং যথেষ্টং দদ্যাঃ দেহি রোহিণাদৃর্দ্ধং পার্বণং বিদ্ধীতবিধন্তাং। অর্হার্থে অর্হেদ্ভবান্কন্যাম্ অর্হত্ব। শক্ত্যথেবহেয়ুর্ভারং বহস্তু। ১২৭॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

যাবৎপুরেতি। যাবৎশব্দপুরাশব্দযোগেভবিষ্যতিকালেবর্ত্তমানাস্থাদিত্যর্থঃ। ভবিষ্যৎকাললক্ষণমাহ বর্ত্তমানপ্রাগভাবপ্রতিযোগিত্বং ভবিষ্যত্বমিতিদারমঞ্জর্য্যাং। নিপাতেতি। তাদুশেতি। পুরাযোগইত্যর্থঃ। ভবিষ্যতীতি। ভবিষ্যতীতিবাক্যেস্ত যুক্শন্তৃস্তমানৌস্তইতিস্তন্তঃ ইটিগুণঃ সপ্তম্যে-দৈবং দিফ্টং ভাগধেয়ং ভাগ্যং স্ত্রীনিয়তির্বিবধিরিত্যমরঃ। কবচনেরূপং। দৈবপ্রাপ্যমিতি। প্রপূর্ব্বাপ্৯ব্যাপ্তোভবিষ্যতিকর্মণিয়ঃ। যাবতাবচ্চসাকল্যেহ্বধোমানাবধারণেইত্যমরঃ। প্রাপামিতি। যাবৎকাৎস্মে হ্বধারণে। প্রশংসায়াং পরিচ্ছেদেনানাধিকারসম্ভ্রমে। পক্ষান্তরেচেতিমেদিনী। ত্রবীমীতি। ব্রবঈট্পরাদিব্ব্যঞ্জনেতনাবীতীট্। পুরাপুরাণেনিক্টেপ্রবন্ধাতীতভাবিধিতিমেদিনী। যাবদাস্ততীতি। যৎপরিমাণমস্থযাবৎ পরিমাণেতথাবস্তঃ কিং যত্তদিদমেতদঃ। দস্তাত্বমিদমিঃ কিম্কিরিকারাদ্বস্থযোভবেদিতি যদৃশব্দাদ্বস্তঃ দস্যাত্বঞ্চ যৎপরিমিতং ধৃনং দাস্সৃতিতৎপরিমিতং ধনমানেষ্যতীত্যর্থঃ অত্রানব্যয়্যাবৎশব্দ-প্রয়োগেনভবিষ্যতিলট্। বিপিনে২পীতি। পৃঃস্ত্রীপুরীনগর্য্যোবেত্যমরঃ। পুর্শব্দস্থধাত্বিররাবীরুরোস্থাতা-মিতিদীর্ঘঃ। দ্রুমরাজিনিরস্তরেসদার্কশাদূ লমুগাদিভিযু তৈইতিপুর্বার্ক্ম। * । ইতিশ্রীসিদ্ধনাথ-বিদ্যাবাগীশবিরচিতায়াং গৃঢ়প্রকাশিকায়াং গণসাধ্যবিন্যাসবিবরণং। ১২৬॥ 🛊 ॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

বিধ্যাদি। বিধ্যাদ্যর্থেষুবাচ্যেষুলিঙ্লোট্চস্থাৎ। ইমেসপ্তমীপঞ্ম্যোকলাপাদিমতে। বিধি-রাদির্যোষাং তেতথাতানাহবিধিনিমন্ত্রণেত্যাদি। অজ্ঞাতেতি। প্রমাণান্তরাবিদিতস্থ জ্ঞাপনং বিধিঃ লিঙাদ্যর্থঃ। আজ্ঞারাজাদিনিষ্ঠাপ্রবৃত্তিহেতুঃ রাজ্ঞাপ্রেষিতোবানেন প্রেরিতোবিপ্রেণপ্রেরিতোহ্হমিতি বক্তারোভবন্তিপ্রবর্ত্তমানাঃ তত্ত্রোৎকৃষ্টশু নিকৃষ্টশুতিপ্রবর্ত্তমানাপ্রেষণেতি আজ্ঞাচোচ্যতেযুদ্ধায়যাস্তুদৈ-নিকাঃ ইহগজান্তিষ্ঠেয়ুঃ। জ্যোতিষ্টোমেনেতি। পূর্ব্বাজ্ঞাতং যাগং জ্ঞাপয়তীত্যর্থঃ এবমশ্বমেধেনয জেতেত্যাদয়ঃ। কটং কুর্য্যাৎ করোতু। অহস্তিষ্ঠেয়মিত্যাদাবাত্মন এবভবিষ্যজ্ঞপস্থিত্যাদেরপ্যস্থ জ্ঞাপনমিতি। নিমন্ত্রণমিতি। প্রত্যবায়স্ত প্রযোজকমকরণং যত্রসতথা সচাসেনিযোগশ্চেতি তথা প্রত্যবায়ঃ পাপম্ অনিন্যোনামন্ত্রিতোনাপক্রামেদিতি প্রতিষেধাৎ নিমন্ত্রিতস্ত শ্রাদ্ধেহভোজনং পাপহেতঃ। নিয়োগতঃ করণং নিমন্ত্রণমিতিশস্তুঃ সন্ধ্যাৎ কুর্য্যাৎ দিবানিয়মং কুর্য্যাৎ। কেচিত অঙ্গীকৃতভোজনস্থা নিরাকরণেনাপ্রত্যবায়াপাদনং নিমন্ত্রণং অন্নং তদুঞ্জীতভবান্ইতিবদন্তি। সৎকারেতি। সৎকারঃ পূর্ব্বোযস্ত সসৎকারপূর্ব্বকোনিযোগঃ সৎকারআদরঃ যথেষ্টং গচ্ছেরিতি যথেচ্ছয়াগচ্ছেরিত্যর্থঃ। আমন্ত্রয়েত্তান স্কান্মল্রিণো ২থবিভীষণইতি অতএবইচ্ছ্য়াকরণমামন্ত্রণম্ ইহতুঙ্ক্তাম্ ইহত্বয়াভোক্তব্যম্ ইচ্ছ্য়াভুঙ্ক্তা-মিত্রর্থ ইতিরসবতী। যত্রপ্রত্যাখ্যানেকামাচারস্তদামন্ত্রণম্ ইহাসীতভবানিতিহুর্গঃ। অধীফমিতি। অধ্যেষণাঅধ্যাপনেচ্ছোৎপাদনা। অন্যেত্বনিকৃষ্টস্থোৎকৃষ্টং প্রতিপ্রবর্ত্তমানা যাদ্ধা অধ্যেষণাচোচ্যতে ধনাদ্যর্থা চেৎ প্রার্থনাত্তদক্তার্থাঅধ্যেষণা মামিতি স্বার্থা মাণবকমধ্যাপয়েদিতি পরার্থাইতিবদন্তি। সংকারপূর্ব্বিকাব্যাপারণাহধ্যেষণামাণবকমধ্যাপয়েৎ ভোময়িপ্রসন্মোভবেতিবজ্রধরঃ। সম্প্রধারণাবুভুৎসাবেদনং যদ্ধা স্বগতবিতর্কঃ এবং নানাকোটিবিচারণা। কিমুতর্কমিত্যাদি। প্রশ্নেনগুরোবুভুৎদামাবেদয়তীত্যর্থঃ এবং কিন্ধুখলুতর্কমধীয়ীয়উতছন্দোহধীয়ীয়অধ্যয়ৈচ। প্রার্থনাযাদ্ধা সাতধনার্থা এবং দেছিমেভিক্ষাম্ অপ্রার্থনেতুভিক্ষান্দদাতি। প্রৈষমাহপ্রেষণমাত্রমিতি। নিয়োগমাত্র মিত্রর্থঃ। অশিক্টব্যবহারইতি পঞ্জিকা। অতিদর্গঃ কামাচারাকুজ্ঞা। অত্যেতু অধিকদানার্থাপ্রাদা প্রার্থনৈতিসিদ্ধেলোড় বিধানার্থমতিসর্গঃ পঠ্যতইত্যাহঃ। প্রাপ্তকালশ্চক্রিয়ানিমিত্তং কালপ্রাপ্তিঃ প্রৈবকামাচারানুমতিপ্রাপ্তকালেয়ুরং গচ্ছগ্রামং ভূত্যত্বয়াগ্রামোগন্তব্যঃ স্বংপ্রেষিতোহনুমতঃ প্রাপ্তকালইতি-সারঃ। প্রৈয়েপ্রেয়িত স্থং গ্রামং গচ্ছক্রিয়ানিমিত্তং কালপ্রাপ্তিঃ প্রাপ্তকালঃ ভূঙক্তাং ভবানভোজনস্থায়ং কালইতিবজ্রণরঃ। প্রাপ্তকালঃ কটকরণেকটং কুর্য্যাঃ এতেচানূর্দ্ধমৌহুর্ত্তিক প্রৈয়াদিপ্রয়োগাঃ পরস্তু বহুমতং লোট্বিধানং লিঙ্বিধানং হুর্গমতমেব। এতচ্চানুদ্ধমৌছুর্ত্তিকেয়ু তুপ্রৈধাদিষিত্যনেনাগ্রেব্যক্তীভবিষ্যতি। প্রৈবাদেবিশেষমাহ ক্রিয়ানিমিত্তকালেইত্যাদিনা। মুহুর্ত্তাদূর্দ্ধমূহুর্ত্তঃ তত্তভবইতীকণ্ মুহুর্ত্তোর্দ্ধকালস্ত ক্রিয়ানিমিতত্বেগম্যে প্রৈষাতিসর্গপ্রাপ্তকালেয় ৢয়ুহুর্ত্তোর্দ্ধয়িক্রমাণরূপেয়ু লিঙ্ লোটাবিত্যর্থঃ। মুহুর্ত্তোপ-রীতি। সকালঃ কটকরণনিমিতভূতইত্যর্থঃ প্রৈষোদাহরণমিদং। এবং মুহুর্ত্তোপরিযথেষ্টং দদ্যাঃ সকালঃ কামাচারামুমতিনিমিত্মিত্যর্থঃ অতিসর্গোহয়ং। রৌহিণাদিতিপ্রাপ্তকালঃ। রৌহিণোনবমঘটিকাতছুপরি পার্ব্বণক্রিয়ানিমিত্তকালঃ প্রাপ্তইত্যর্থঃ। স্মযোগেলোট্ মাত্রং বক্ষ্যতি। স্মোদ্ধমুহূর্ত্তযোগে লোডেব স্মোপরিস্তাশ্মুহূর্ত্তস্তকটং কুরুইতি দারঃ। অহার্থেতু অর্হেদ্ভবানিতি। কন্তার্হঃ কন্তাধিকারীভবিষ্যতি যদ্মাৎ কন্তার্ছ বিদ্যারপাদিকং প্রান্ত্রপ্রতীয়তইত্যত্রাপি অর্হতির্গম্যতে। বহুবর্গদশ্মতমুদাহরণস্ত উদ্বহেম্ভবান্ কত্যামিতি ত্বং কত্যাৰ্হইতি কত্যোদ্বহনযোগ্যতা। বহেয়ুরিতি। ভারবহন সমর্থাইত্যর্থঃ। অত্র সর্ব্ব লকারাণামপবাদঃ তথাচ রসবতীবিধ্যাদিম্বকুশিষ্টেয়ু কর্ত্রাদিয়ু সংস্থলোট্ সংজ্ঞকাস্তপ্তাদয়োভবস্তি সর্ব লকারাণামপবাদঃ ভবতু ভবতামিত্যাদি। কলাপমতে ভবিষ্যত্যেব লোডাদি কর্তব্যোপদেশস্থ বিধিত্বেনা-

খ্যায়্যপদর্গদহিতর্ধাঞাদিভির্বিধ্যাদীনামর্থানামনভিহিতত্বালিঙ্ লোটো নপ্রাপ্নু ইতি অব্রোচ্যতে কৃত্য-রূপের বিধ্যাদির তয়ার্বিধানাৎ যদাতুপ্রকৃত্যর্থন্ত নকর্ত্তব্যভাতদাবিদ্ধাতীত্যাদয়ঃ দিদ্ধাঃ তথাচ কৃত্যরূপের বিধ্যাদির তয়ার্বিধানাৎ যদাতুপ্রকৃত্যর্থন্ত নকর্ত্তব্যভাতদাবিদ্ধাতীত্যাদয়ঃ দিদ্ধাঃ তথাচ কৃত্যরূপের নিযোগতঃ কর্ত্তব্যতায়াত্ত্বিধানাং । নচ প্রকৃতীনাং তথা বিধানমন্ত্রীতি কথমুক্তার্থতাম্থাৎ যদাপুনঃ প্রকৃত্তরর্থন্ত বিধ্যাদিলক্ষণন্ত কর্ত্তব্যতানিযোগঃ কার্য্যরূপতয়ানবিক্ষ্যতে তদাবর্ত্তমানৈর যথা বিদ্ধাতীতিকরণমাত্রং প্রতীয়তেনত্বজ্ঞাত জ্ঞাপনং নিমন্ত্রয়তীতি ভোজনকথনমাত্রং নাকরণপ্রত্যবায়েন কর্ত্তব্যতা আমন্ত্রয়তীতি সম্ভাবণমাত্রং নতুকামাচারাদিঃ এবমধীচ্ছতি সংপৃচ্ছতি প্রার্থয়তীতিদম্ভাবণমাত্রং নত্ববেয়বণাদিঃ অতএব চৈত্রোমপুরায়াং নিবসতীতি অজ্ঞাতার্থপ্রতিপাদনেহিপ নবিধিঃ কার্য্যরূপমেনবিক্ষণাদিতি। বজ্রধরস্ত যত্রাজ্ঞাত জ্ঞাপনে প্রবৃত্তি ভবতি তত্রবিধ্যর্থঃ তথাচ প্রবর্ত্তকত্বং ধাত্বর্থাদিধিকং লিঙাদিনাবোধ্যতে বিদ্ধাতি উপদিশতিনাত্রপ্রবৃত্তিঃ প্রকৃত্যর্থঃ এবঞ্চ বিদ্যাদিত্যাদে নি নপ্রবর্ত্তকত্বং লিঙাদ্যর্থএবেত্যাহ। ১২৭॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

यिषधानािष्विधः স্থাপ্তিং বিদধাতি বিধেকিধিং। বিধুন্তং স্থাবিধিপ্রাপ্তে বন্দেমাক্ষবিধায়কম্। ১।

বিধ্যাদিষিতি। বিধ্যাদিয়ু গম্যেয়ু ধাতুভ্যোলিঙ্ লোটেস্তিইতি যোজনা। যদ্যপি এতয়োঃ কিম্মন্ কালেবিধানং তং বিশিষ্যনোক্তং তথাপি বর্ত্তমানকালান্তরমেত্যোর্বিধানাৎ ভবিষ্যন্তীচবাহ্যদীত্যনেন যদৃশব্দাপ্রাোগেএতয়োঃ কালেভবিষ্যন্ত্যাবিধেয়ত্বাৎ এতয়োরনন্তরং ফোহবধিভূতেহান্তন্যাবিধেয়ত্বাচ এতয়োর্ভবিষ্যত্বমেবাবদীয়তে। তত্রবিধিঃ অজ্ঞাত জ্ঞাপন্য আজ্ঞাচ অজ্ঞাতস্থ প্রমাণান্তরাবিদিতস্থ প্রকৃতপ্রমাণাতিরিক্ত প্রমাণাবুদ্ধস্থ জ্ঞাপনমিতিপ্রথমস্থার্থঃ। যথা জ্যোতিফৌমেন যজেতেত্যাদৌ এতৎশ্রুতিপ্রমাণাতিরিক্ত প্রমাণাজ্ঞাতস্থ জ্যোতিফোমবিধানস্থ জ্ঞাপনাৎ বিধিঃ। অহস্তিষ্ঠেয়মিত্যাদা-বাত্মন এবভবিষ্যদ্রপস্থিত্যাদেরপ্যস্থ জ্ঞাপনাদিধিরেব। বস্তুতস্তু অজ্ঞাতস্থ জ্ঞাপনং কর্ত্তব্যতোপদেশো-বিধিরিতি তেন ইহ্যকোহস্তীত্যাদো অজ্ঞাতজ্ঞাপনেহপি নবিধিঃ। জ্যোতিযামগ্রীনাং স্তোমঃ সমূহোযত্র জ্যোতিরায়ুষঃ স্তোমস্তেতিষত্বং জ্যোতিফোমোযাগবিশেষঃ। অশ্বমেধং বিদ্ধাতীত্যাদৌকরণমাত্রপ্রতীতো অজ্ঞাতজ্ঞাপনাভাবে নবিধিঃ। অহন্তিষ্ঠেয়মিত্যাদে অজ্ঞাতস্ত কর্ত্ব্যতয়োপদেশাভাবেহপি আদিশব্দ-ব্যবস্থয়াহজ্ঞাতজ্ঞাপনমাত্রে লিঙাদ্যপ্রাপ্তাবপি বিধিস্থীকারেণলিঙাদিঃ। অতএব সারমঞ্জ্যাং বিধিঃ উৎকৃষ্ঠস্থ নিকৃষ্টং প্রতিপ্রেরণাআজাইতি দিতীয়স্থার্থঃ শতং কুলানি কর্ত্তব্যত্তয়োপদেশইত্যক্তং। ধূআণাং নির্গচ্ছন্ত মমাজ্ঞয়েত্যাদৌ আজ্ঞাবিধো। নিমন্ত্রণং প্রত্যবায়প্রয়োজকাকরণনিযোগঃ। বায়স্ত পাপস্থপ্রযোজকং কারণমকরণং যত্র সচাসোনিয়োগশ্চেতি যত্র নিয়োগবিষয়েনিমন্ত্রিতস্ত শ্রাদ্ধে ভোজনাকরণং প্রত্যবায়হেতুঃ স্থান্তরিয়োগোনিমন্ত্রণমিতি প্রভাপ্রকাশিকামতম্ অত্রমতে প্রযোজকশব্দঃ পাণিনিসূত্রভাষ্যেচ যত্র প্রত্যাখ্যানেপ্রত্যবায়স্তন্নিমন্ত্রণমিত্যুক্তবান্। প্রযোজকস্থপরম্পরা-কারণার্থত্বেতুনতাদৃগর্থঃ সম্ভবতি কিন্তু প্রত্যবায়স্তপ্রযোজকং পরম্পরাকারণমকরণং যস্তসচাসোনিযোগঃ আদ্ধেভুঞ্জীতেত্যাদি শাব্দক্রিয়াচেত্যেবমর্থঃ সম্ভর্কতিতথাহিশ্রাদ্ধমুপক্রম্যভোজয়িষ্যতি বিপ্রাগ্রান্ তন্মাত্র

•1

আশিষিসম্ভাবনায়াঞ্চ। লিঙ্লোটোন্তঃ। ইফ্টাশং সনমাশীঃ। আনন্দ-য়েদোইভিনবেন্দুচ্ড়ঃ। আনন্দয়তুপায়াদ্বঃ পাতৃবোহরিঃ। সম্ভাবনাক্রিয়াস্থযো গ্যতাসলগ্নজীবঃ শ্রুতিপারমাপুয়াৎ প্রাপ্নোতৃলক্ষীমপি বাহুবিক্রমাৎ। ১২৮॥

বিভবোনরইতি বিষ্ণুপুরাণীয়েনশ্রাদ্ধেভোজনদানপ্রতিপাদনাৎ ভোজনাদানং প্রত্যবায়করণং ভোজনাদানস্থ কারণং আন্ধেভুঞ্জীতেত্যাদিনিযোগরূপনিমন্ত্রণশ্তকরণং নিমন্ত্রণাকরণে আন্ধেভোজনাভাবস্তদভাবাদেব ভোজনদানাভাবইতি। আমন্ত্রণং সংকারপূর্ব্বকোনিযোগঃ। যত্রপ্রত্যাখ্যানেকামচারস্তদামস্ত্রণমিতি যত্রপ্রত্যাখ্যানেকামচারস্তদামন্ত্রণমিতি পাণিনিসূত্রভাষ্যং। সংকারপুর্ব্বকোনিযোগঃ। মামন্ত্রণমিতিরদবতী। অধীন্টমিত্যস্থার্থঃ অধ্যেষণাইতি অধ্যাপনেচ্ছোৎপাদনেতিতদর্থঃ। সংপ্রশ্নস্থার্থঃ সম্প্রধারণাজিজ্ঞাসেতিয়াবৎ। অধীয়ীয়েত্যাদি। ইঙঈয়বিভক্তাবগুণেই ইয্ অধ্যয়ৈইত্যত্রলোটঐবিভক্তো গুণঃ। প্রার্থনেতি প্রপূর্ব্বাদর্থযাদ্রায়ামিত্যস্মাদিনন্তাৎ ইনন্তাদপ্যনঃ স্মৃতইত্যনঃ স্ত্রীলিঙ্গতাপ্রকরণাৎ। যাদ্রাভিক্ষার্থনার্দ্দনেত্যমরঃ। প্রেষণমাত্রমিতি। নিযোগমাত্রং প্রেষঃ। অতিদর্গ ইতি। কামাচারাকুজ্ঞা ইচ্ছাচরণেহরুমতিঃ। প্রাপ্তকালইতি। কালস্থপ্রাপ্তঃ প্রাপ্তিরিতিষষ্ঠীদমাসঃ রাজদন্তানিঃ ক্রিয়ানিমিত্ত কালপ্রাপ্তিরিভিতদর্থঃ। আদিশব্দব্যবস্থয়াহপরং বিশেষমাহক্রিয়ানিমিত্তকালইত্যাদিনা। যথেষ্টদান পার্ব্বণবিধান ক্রিয়ানিমিত্তকালে উর্দ্ধমোহুর্ত্তিকেযু মুহুর্ত্তোর্দ্ধভবেষু প্রৈয়াদিয়ু নিযোগাদিয়ু ত্রিষু गमामात्व निष्टा । স্মযোগেতু লোডেবনলিঙিত্যর্থঃ এতত্ত্বক্ষ্যতি। **मृ**তেপ্রাপ্তকালে অর্হশক্ত্যোরেবান্বয়ইতিদর্শয়তি অর্থশব্দস্থান্ত্রাযোগ্যন্তাং অহার্থে ইতি। অহোত্ৰ যোগ্যোহধিকারীতি যাবৎশক্তিঃ দামর্থ্যং তদর্থেইত্যর্থঃ বহেয়ুর্ভারং ভারবহনদমর্থাভবিষ্যস্তীত্যর্থঃ। অহন্বাকুম্বকর্ণোবাত্বন্বাদেনাপতির্শ্বম। ইন্দ্রজিন্বানিকুম্বোবাবহেয়ুর্ভারমীদৃশমিতি। ১২৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আশিনি। আশাসনমাশীঃ সম্পদাদিয়াৎ কিপ্অপূর্ব্বস্থেইফলস্থ লাভেছাবিক্ষরণমাশীরিত্যর্থঃ।
সম্ভাবনং সম্ভাবনাইনন্তাদনঃ। অনয়োর্গম্যয়োর্দ্ধানোর্দ্ধিজা জৌবেছবানিতিবরক্ষচির্ভিঃ। আভনবোষইন্দৃঃ
তেনোপলক্ষিতাচূড়াযম্মসহেশঃ। জীবতুভবানিত্যপ্যাশীঃ জীবেছবানিতিবরক্ষচির্ভিঃ। নমুজীবতুভবানিতি প্রার্থনপ্রকারোহয়ং যদাহচন্দ্রগোমীপ্রার্থনং যাচনমিন্টাশংসনক্ষইতিপ্রার্থনে বিধ্যাদিলক্ষণোবাস্তিলোট্পরয়াআশীর্বিভক্ত্যাবাধ্যতে বাধিতাহপিস্থাদিতি পুনরাশীরিতি লোট্বিধায়ত-ইতিভাবঃ। ক্রিয়াম্যযোগ্যতেতি। অশক্যাম্যক্রিয়াম্বিত্যর্থঃ পরৈরশক্যেকর্মণিযেগ্যতাধ্যবসায়ঃ।
সম্ভাবনাসংপ্রার্থনাচোচ্যতে। সল্মেতি। সং পরিঃ প্রাপ্ত্র্মশক্যঃ প্রার্থনারং প্রাপ্ত্র্ং সমর্থঃ। হুর্গ-শ্চাহসমুদ্রমপিশোময়াণীতিকিশ্চিদাহ সমুদ্রং শোষয়িতুমশক্যঃ সআহসমুদ্রমপিশোময়াণীতি। পর্ব্বতমুৎ-পাটয়ানিইতিবজ্রধরঃ। সমর্থনালোট্নপাণিনীয়ানাং কিপ্তাবনাচার্য্যস্ব্রেম্থিরিক্তাইতিত্মতইয়ং। ১২৮॥

গৃ । अका भिका।

আশিষীতি। আশিষিগম্যায়াং সম্ভাবনায়াঞ্চগম্যায়াং ধাতুভ্যোলিঙ্লোটোস্তইত্যর্থঃ। আনন্দয়ে-দিতি। আঙ্পূর্বাঃ টুনদিসমৃদ্ধোভূবাদিপরস্মৈপদী নন্দন্তিকেচিৎ তামন্দয়েদিতি হেম্বধীনেত্যানিনাইন্-

ইচ্ছার্থোপপদেসতিকামাভিব্যঞ্জনেচস্তঃ। লিঙ্লোটোনর্বকালে। এদ-ধেত্বমধীয়াথাঃ সোমং পিবতৃকাময়ে। ইচ্ছার্থযোগেকিং ত্বমধ্যৈথাঃ সোমং পাস্যতিভবানিতি। ১২১॥

লিঙোগাৎ অন্বিকরণেগুণঃ অকারাৎ পরস্তুগাইঃ সন্ধিগুণঃ। বইতি। যুম্মানিত্যক্তম্বাননশাদেশঃ অভিনবইন্দুন্টন্মোয়ত্র অভিনবেন্দুঃ চূড়াশিথাযক্তমঃ। জটান্তরালম্বিতদেবসিষ্কুঃ কৈলাশবাসাবিশদোহহিমালী। বিভূতিসংভূবিতসর্বাগাত্রআনন্দরেছোহভিনবেন্দুচূড়ঃ। পান্ধিত। পারক্ষণেঅদাদিপরক্মোপদী। স্থরারিভরভারাপহারায়ধরণীং গতঃ। স্থরজ্যেষ্ঠস্পরেশাদ্যারাধিতঃ পাতুবোহরিঃ। ক্রিয়াম্বিত
অত্যৈরশক্যাস্থাক্রোম্বোগ্যতাপ্রাপণদামর্থাং। সলগ্রেত। লগ্নেন সহবর্ততেয়ইতি ভূতীয়াইতঃ
সহেতিপ্রথমার্থবিত্রীহিঃ সহশন্দস্পূর্কনিপাতঃ তত্রকর্তব্যাবাসহস্ত্যাঃ সলগ্নোজাবোরহস্পতিশ্যক্তমঃ
ক্রেতিপারং বেদস্যান্তমাধ্যাৎপ্রাপ্ত্রণ শক্ষাদিত্যর্থঃ আপ্তব্যাবোদ্যক্রিভক্তিরপিস্থাদিত্যবংর্ম্ অন্তথাতাশিগিলিগুলোট্বিধানং কৃতং তথাপ্যাশিয়াশীরিতিবক্ষ্যমাণ্যুত্রবলাদাশীর্কিভক্তিরপিস্থাদিত্যবংর্ম্ অন্তথাতৎকথনস্থা নিফ্লরাপ্তেরিতি। সন্থাবনাকল্পন্মিতি সারমঞ্জ্যাং। ১২৮॥

প্রভাগ্রকাশিকা।

ইচ্ছা। ইচ্ছার্থণাতুপপদেসতি কামাভিব্যঞ্জনেইচ্ছাজ্ঞাপনেগম্যে সর্বকালেলিঙ্লোটোস্যাতাং। দর্বকালইতি। বিশেষভাবাদিতিভাবং। প্রত্যাসভ্যায়ং প্রযুঙ্কেতিক্সৈব পরকায়ক্রিয়ায়ামিচ্ছা যথা-ভবতোভোজনমহ্মিচ্ছার্নাতিভাবং। প্রদ্ধেইচ্ছার্মাত্যথং ব্রদ্ধায়নং মদিচ্ছাবিষয়ইতিজ্ঞাপনং কামস্থ। ব্রমধ্যেয়ইতি প্রতিষ্ঠাপনিং কামস্থ। ব্রমধ্যেয়ইতি ভাগনিং বিদ্ধানি বিল্লাইভিং। ইচ্ছার্মাভ্রতাণ ভবানিতিচোদার্লাতঃ ভুঞাতিচএককর্ত্কাৎ লিঙইচ্ছাস্মানকর্ত্কাৎ গচ্ছেয়মিতিবাস্থতি। ইচ্ছার্থান্ত্রগানেচ লিঙ্বা ইচ্ছেত ইচ্ছতি। ইচ্ছেরিজস্কদং সর্বোব্রন্ধিসংস্থমতঃ স্তক্ষণিতি বাঞ্জনেচেতি চকারাদেতৎ। ১২৯॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

ইচ্ছাৰ্থ ইতি। ইয় ইচ্ছায়াম্ এনগমিচ্ছাদনুবদ্ধতিদাদৈরঙ্ভীবিচিন্ত্যাদিকাদপীত্যঙ্ পুনোদরাদিত্বাৎ বস্তুছঃ চুগাগমঃ আপ্রত্যয়ন্চ ইচ্ছায়াঅর্থ ইবার্থোয়ক্তবা দএব উপপদমিতিবিএহোঁ। কন্তকান্ত্যতিলাধয়োঃ ভাবেত্বঞ্ তস্ত্য অভিব্যঞ্জনং জ্ঞাপনম্ অভিবিপূর্ববান্জধাতোর্ভাবেহনট্। দর্বকালইতি। যদি ভবিষ্যৎ কাল এবস্যান্তদামন্ত্রণার্থেপুর্বেবিণব্যাতীতি দূত্রবৈয়র্থ্যং স্থাদিতিভাবঃ। শ্রদ্ধইতি। শ্রহুপপদেধাধাতো লটএবিভক্তো দাধনীয়ম্ অয়মিচ্ছার্থঃ। দোমং দোমলতারদং। কাময়ইতি। স্বার্থেকমের্ডিন্ রুদ্ধিঃ পরত্রেগঃ। ত্মধাথাইতি। অধিইঙঃ হস্তন্তাঃ থাদ্বিভক্তো অভ্ধাত্মাদাবচাং রুদ্ধিল্ল ভ্রিত্যাতিপত্তিদ্বিতি অভাগমঃ ধাতোরদ্বিন্দ অত্রইচ্ছার্থোপপদাভাবেহুপি ইচ্ছাজ্ঞাপনমস্ত্যেবেত্যাশয়ঃ। এবনপরত্রাপি। কামাভিব্যঞ্জনেকিন্ ইচ্ছমধীতেনাত্রকামনস্তং জ্ঞাপয়তি। বিধ্যাদিষিত্যাদিএতদন্তমুপগীতিচ্ছন্দঃ। ১২৯॥

কামপ্রবেদনে ক্ষিলিঙ্গ্যাণ। অকচিৎ কচিচ্ছকাপ্রয়োগেদর্বকালে। ভবান্বেদানধীয়ীতকামোমেশৃণুয়াণস্মৃতীঃ। অকচিচিদিতিকিং কচিজ্জীবতিতে-মাতা। ৩২০॥

সম্ভাব্যতেযদি। অলমিত্যলমোইসুক্তৌ। অলমিতি যদিসম্ভাব্যতে অলঞ্চনপ্রযুক্তাতে তদালিঙ্দ্যাৎ সম্ভাবনার্থধাত্বসক্তৌ অপিমুফিনাগিরিং ভিন্দ্যাৎ। সমুদ্রমপিশোষরেং। অর্জ্জুনং যোধরেদপি। এবং সম্ভাবনেকিং বিদেশস্থঃ প্রারোগায়ান্যতিগৃহং। অলং যোগেতুঅলং হন্তিনং হনিষ্যতি হন্যাদিতি নঞী-ষদপ্রতিষেধাং। ১৩১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কাম। কামজ্ঞাপনেগম্যে কচিতোহপ্রয়োগেসর্বকলেধাতোর্লিঙ। নাস্তিকচিদ্যান্তিন্ কামাণিকারেইতিবজ্ঞধরঃ। কামবিদ্ধতাবকচিচিচিশেছুঃ। ইহনেচ্ছার্থধাতুযোগঃ অপিতু ইচ্ছার্থলিঙোপপদত্বমন্তথাপূর্ববৃত্ত্রেণদিদ্ধে অলমনেনেতিটীকা। বেদানধারীতেতি। মধ্যস্থ কামোমেইত্যুভরারিরি অথবা
অন্নাংকামপ্রবেদনং ভাসতএবেতি কচিংপ্রয়োগমাত্রবর্জনাং। তবনেদস্মত্যোরগ্রমশ্রবণে অহমিচ্ছামীতার্থঃ। এবং কামোমেভুঞ্জীতভবান্ অনেনকত্যেশাভিপ্রায়োব্যজ্ঞতইতিবজ্ঞধরঃ। কামপ্রবেদনাকরণে
ইচ্ছন্করোতিইহনস্থাং ইচ্ছরাকরণবিশিক্টইতিবৃধ্যতে নত্বাত্মেচ্ছাং পরং জ্ঞাপরতীতি। কচিচিদিতি।
কচিহংকামপ্রবেদনেঅব্য়েঃ মাতুজ্জীবনেশ্বাভিপ্রায়ব্যঞ্জনম্। ১৩০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কামেতিঅকচিংপ্রয়োগমাত্রবর্জনায়ইচ্ছার্থনাত্র্যোগইতি শভুটীকামতং। অন্মাভিমতমপ্যেতৎঅন্যথাইচ্ছার্থেপিপদেদতিকামাভিব্যঞ্জনেচ স্তোহকচ্চিদিতিলিঙ্ইতিক্তেপুর্ন্দেণেবিদিদ্ধেরেতস্থাবৈর্ধ্যাপতিঃ
স্থাং। তেনকচ্চিচ্ছনাপ্রয়োগেইচ্ছার্থ উপপদেঅনুপপদেবালিঙ্স্থাদিতিয়োজনা। নচতহিইচ্ছার্থযোগেকিং
হুমধ্যেথাইত্যত্রলিঙ্প্রসক্তোকথং হস্তনীতিবাচ্যং চকারেণইচ্ছার্থোপপদাভাবেযথাপ্রাপ্তং বর্তুমানাহস্তন্থাদিশ্চেতিসমূচ্চয়াং। ইপ্রঞ্জমধারীথাইত্যপিপ্রয়োগং স্থাদিতিজ্ঞাতব্যং। দর্ব্বকালেইতি। পূর্বব্রদর্ববিদ্যোপ্তি অত্রাপিদর্ববিদাল এবেতিহৃদয়ং। ক্চিদিতি। কচ্ছিজ্জীবতিতেমাতাকিটিজ্জীবতিতেপিতা। হামারাবিদপ্তছামিকচ্ছিজ্জীবতিপার্যতাতি। আরাংবিন্দ্রতাতিবিদ্রলাভেইত্যম্মাং নামুপেধন্থাং
কঃ কর্বন্ধপ্রতায়েগুণাভাবঃ। আরাচন্মপ্রভিদিকেত্যমরঃ। সাচচন্মভেদনকারিশ্বচাদিঃ। ১৩০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সম্ভা। অলং দামর্থ্য লিঙ্ম্মাদিতি সম্ভাব্যেহর্থের ভাদ্ধাতোরলমর্থে গম্যেসর্ববিদ্ধন্কালে লিঙ্
যদ্যলংশব্দাপ্রয়োগোভবতি। তথাচ শদ্ভুঃ সম্ভাব্যুহুলমর্থাদলমোহপ্রয়োগে। পর্য্যাপ্তো দ্রোণপাকং
ভুঞ্জীতেতি সম্ভাব্যমেতৎ দ্রোণমিত বীজপাকভোজনসমর্থোহয়মিতার্থঃ। অলমর্থস্থাপ্রয়োগেহপি ভবতি

ভবিষ্যম্ভীচবাৰ্যদি। সম্ভাবনাৰ্থধভূক্তো : সম্ভাবয়ামিশতং দদ্যাৎদাস্যতিবা। যচ্ছকাপ্ৰয়োগেকিং লিঙেব শ্ৰদ্ধেযৎসভুঞ্জীত। ১৩২॥

অপিশির্দাপর্বতান্ভিন্দ্যাৎ অপিদ্রোণপাকং ভুঞ্জীত অপিং সম্ভাবনে। 'সম্ভাবনেতি। সন্তাব্যামীত্যাদ্যুক্ত্রেণি তছুক্তেণ্ডু লিঙাদির্বক্তব্যইতিভাবং। অপিমুষ্টিনেতি। মুট্ট্যাকরণেনগিরিভেদনদমর্থোহ্য়ং
সমুদ্রোশোষণসমর্থনিদমিতি সম্ভাব্যতেইত্যর্থং। শোষ্যেদেয়াধ্য়েদিনন্তো। এবমিতি। নাত্রদামর্থ্যং
সম্ভাব্যতেকিস্তাগমন্ত্রের প্রায়েণতি সম্ভাবনাদ্যোতনায়। আঘাস্ততীতি। মাভূদ্রবিষ্যন্তীবাপইতি।
কলাপেতু অলং দেবদভোহস্তিনং হন্তং হনিষ্যতিহ্যাদিতি। অলমিতিসামর্থ্যং হস্তিঘাতসমর্থোহ্যমিতি
সম্ভাব্যতেইত্যর্থং। হয়াদিতিকথং লিঙ্মলং যোগসন্তাদিত্যতআহনঞীষ্টিতি। অলমোহনুক্তাবিত্যত্র
নঞ্সন্তাৎ। অশক্যেকশ্বণ্যায়েসায়ঃ সম্ভাবনাত্যয়েশ্ত্রণত্রতিসমর্থনাতোভেদঃ সম্ভবনায়াঞ্চেত্যস্থাপ্রাপ্তাবিদং। অলং শক্ষেভ্রণণাদ্যর্থবেহপে শক্যাথ্যিক্যবগ্রহণমভিধানাদিতি। ১৩১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সন্তাব্তি । যদিঅলং সমর্থ ইতিসম্ভাব্যতে অলমোহসুক্তোঅলং শন্দাপ্রয়োগেসতিতদালিঙ্ আং। সম্ভাবনার্থতি। সম্ভাবনার্থগাভূক্তোভুলিঙাদের্সক্তব্যবেনাত্রসম্ভাবনার্থ শন্দপ্রয়োগোহপেক্ষিত্রব তনর্থদ্যোতনার। যদ্যপ্রলং শন্দপ্রভূষণাদ্যর্থস্বত্যাপিসমর্থার্থকস্পগ্রহণম্ এবং সম্ভাবনার্কমিতিবদ্তাগ্র-হরতাত্থাভিধানাং। অলংভূষণপর্য্যাপ্তিশক্তিবারণবাচকমিতি গর্হাসমুদ্ধরপ্রশাস্থাবনার্মপীতিচামরঃ। ভিন্দ্যাদিতি। ভিদর্বিদাবণেক্যাদিকভ্রপদা। শোষ্যাদিতি শুষ্ শোষ্যদেদিবাদিপরক্ষাপদী হেন্ধা-নেতানতঃ। রাজ্যনাশোবনেবাসোহতাদীতায়তঃ পিতা। একৈক্যপিয়াদ্ধুণং সমুদ্রমপিশোষ্য়ে-দিতিমহানাটকে। গোধ্যাদিতি। যুধ্যম্পুহারেদিবাদিরাল্যনেপদীইনতঃ। আ্যাস্থতীতি। আঙপুর্বাঃ যাপ্রাপণেসদাদিপরক্ষাপদা। হনিষ্যতীতি। স্পকারেহনুদন্তঃদিট্রিভক্তিসস্থনঃ । ১৩১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভবি। সম্ভাবনার্থবাতাবৃপপদর্মপেণপ্রযুক্তেদতি সম্ভাব্যহর্থের ভাদ্ধাতোঃ দর্ববিদ্দ্কালেভবিষ্যন্তী বাশব্দাল্লিঙ্। অযদি যচ্ছব্দক্তাপ্রয়োগ্ । সম্ভাব্যামীতি। শতং দাতুং সমর্থেহিয়মিতি সম্ভাব্যামীত্যর্থঃ। বজ্রপরস্ত সম্ভাব্যামিভুঞ্জীত ভবান্ এবিধনমন্ত্রাশিং পরৈর্ভোক্তুমশক্যং ভবান্ভোক্তুং সমর্থ ইতি। সম্প্রত্যেমিস্থং বহুভূঞ্জীথাইত্যাদয়ঃ ভোক্ষ্যদেবা। শ্রুদ্ধেবদিতি। বচ্ছব্দ্বোগেপদেহপিলিঙ নভবিষ্যন্তী । নমু সম্ভাবনার্থধাতোরভাবাদেব ভবিষ্যন্তীনস্থাৎ কৃত্যস্থাবারভ্যাসত্যং সূত্রস্থাস্থবিষয়ং পরিষ্ঠত্যবপূর্বতনসূত্রপ্রবৃত্তঃ। তহিকথমত্রায়দাতুক্তেং তৎসূত্রপ্রবাস্থোদাহর্ভুমুচিত্ত্বাৎ মৈবং লোট্ প্রসক্তেঃ ইথমত্রপ্রত্যুদাহরণফলং লোটোহপ্রাপ্তিরেব। কালাপাস্ত সম্ভাব্যামিযৎসভুঞ্জীত সমর্থনায়াং লিঙ্ যচ্ছব্দ্বোগেনিত্যং পূর্বেণনিত্যপ্রাপ্তে বিক্লার্থমিদং তেনায়দীত্যস্থব্যার্থতি পূর্ববক্তব্যেন নিত্যং স্প্রমীতিবদন্তি। ১৩২॥

হেতুহেতুমতোরপি। লিঙ্বাস্যাৎ। যোব্রাহ্মণায়াবগুরেৎ তংশতেন যাত্রেং দক্ষিণেন চেদ্যায়াংনশকটং পর্য্যাভবেৎ। পক্ষেভবিষ্যম্ভী। ১৩৩॥

লোডধীফপ্রেষণাদৌশ্বযোগে। লিঙোইপবাদঃ। মুহূর্ক্তোপরিমাংসং-পাঠরতৃশ্বমধ্যাহ্ণেঞাদ্ধং বিধেহিশ্ব। অনৃদ্ধ মৌহূর্ত্তিকেবৃশ্বযোগেমাযোগেচ-লোডেবাগ্রিমাপিস্বরসাং। ১৩৪॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

ভবিষ্যন্তীতি। লিঙেবেতি। নমু সম্ভাবনার্থ ধাতৃক্তোপক্ষে ভবিষ্যন্তীবিধানাত্রদভাবাদেব নভবিষ্যন্তীতিষ্কাঙ্গবিকলাব্যাস্থতিরিতি চেন্ন শ্রদ্ধেইতাস্থা ইচ্ছার্থঃ সম্ভাবনার্থশচ তেন সম্ভাবনার্থধাতৃপ্রয়োগে ভবিষ্যন্তীক্ষাৎ তদর্থ বংশব্দপ্রয়োগেন ভবিষ্যন্তী কিন্তু লিঙেবেতার্থঃ। অথবা বংশব্দস্থ সম্ভাবনার্থঃ তেন বংশব্দপ্রয়োগে সম্ভাবনার্থধাতৃক্তাবিপ ন ভবিষ্যন্তী কিন্তু লিঙেবেতার্থঃ। তহি শ্রাদ্ধেইতীচ্ছার্থোপপদে লোটোইপিপ্রসক্তিরন্তিকথং লিঙেবেত্যুচাতেমৈব্য অবধারণার্থচশব্দেনলোটোইপিব্যাস্থ্যতঃ অন্যথাচকারস্থা নিস্কলন্ত্রাপত্তেঃ। ১৩২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হেছু। হেছুং কারণং হেছুমংকার্যাং হেছুকার্যপ্রবৃত্তাদ্ধাতোর্ভবিষ্যতিকালে লিঙ্বাস্থাং। ব্যাব্রাহ্মণায়েতি। মৃনুঃ অবগ্র্যাচরেং কুছুমতি কুছুং নিপাতনেইতি। অবগ্র্যাহ্রাহ্মণতাড়নার্থং দণ্ডমুদামাকুছুং প্রাজাপতাং তাড়নেঅতিকুছুং প্রাজাপতাদ্বাং। অত্র লিঙ্বয়ক্তাতেঃ অবগোরণশত্যাতন-রোদ্ধিনতনৈমিত্তিকভাবোহ্বগ্ন্যতে ব্রাহ্মণাবগোরণং শত্যাতনানিমিতং প্রতীয়তে। তছ্তং প্রজাপতিপ্রাহ্মিনির্যাদেরের ক্রিণাক্রোরণফলক্ষেনশত্যাতনাভিহিতাইতি। ব্রাহ্মণায়েতাপি ক্রাহিঃ। এবং যদি গুরুমুপ্রাতশান্ত্রান্ত গচ্ছেদিতি। দক্ষিণেনেতি। দক্ষিণবন্ধ্রিমানা শক্টপ্র্যাভবনপ্রাগভাবসভাহেছুঃ। প্রেভ্রিমান্ত্রিপ্রতিত ক্রিয়াতিপতিশ্চবোধ্যা। ১৩৩॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

হেরিতি। হেতু হেতুমতোঃ কারণকার্যায়োঃ প্রবৃত্তাদ্ধাতোর্বালিঙ্ফাদিতার্থঃ। অত্রবালিঙ্ফাদিতি বিধিত্রাংপকে ভবিষান্তী ক্রিয়াতিপৃত্তিশ্চ। অত্রাপি শব্দ গ্রহণান্ধাত্র সর্বাক্তালিয়াতুর তিঃ কিন্তু ভবিষান্তাবিধানসামর্থান্তিবিদ্যাতিকালেইত্যেবারেতি। ক্রেছ্যাতিক্ছেঃ কুবরীতবিপ্রস্থাৎপাদ্য-শোণিতমিতিপবর্দ্ধি মনৌ। শত্যাতুনাকুনরক্যাতনা। দক্ষিণস্থামদূরদিশিদক্ষিণেন অপক্ষ্যাআদূরেদিক্ শব্দাদেনপ্। পরিআঙ্পুর্বি ভূধাতোঃ পর্যাভবেদিতি। পশ্চান্তবিষ্যতীত্যর্থঃ। তেন ন শক্ট পশ্চান্তবন প্রাগভাব সভাহের্দ্ধিকণ্দিগগ্যনমিতি। পক্ষেভবিষ্যন্তীতিপ্রদর্শনেমাত্রং ক্রিয়াতিপত্তিশ্চবোধা। ১৩৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

লোড। স্নযোগেলোডেব। অধীষ্টেস্মোপপদে লোডিতিরসবত্যাং। মুহুর্ত্তোপরিমামিত্যধী-ক্টোলাহরণং। পাণিনোচ মুহুর্ত্তোপরিমামধ্যাপয়তুম্মেত্যধীষ্টোলাহরণং। অন্সেতু ভবান্মামধ্যাপয়তু-স্মেত্যেবোলাহ্রতবন্তঃ। তেনাধীষ্টে উদ্ধমুহুর্তানিয়মঃ কিন্তু সম্ভবাত্তকুং।, উদ্ধং স্মরাজন্ময়িহোত্রং অনুমতাবপি। লোট্ স্থাং। চিকীর্যতোইনুজ্ঞাইনুমতিঃ কিমহং কর-বাণি এবং কুৰু। ভবতীতাভজন্ত্বীশং। লিঙ্ যাং যাতাম্ যুস্ যাস্ যাতম্ যাত যাম্ যাব যাম। ঈত ঈয়াতাম্ ঈরন্ ঈথাস্ ঈয়াথাস্ ঈধ্বম্ ঈয় ঈবহি ঈমহি। অনুয়োঃ পূর্বদিখিলং সাধ্যং প্রত্যয়বিধান গুণদীর্ঘাদেশাদি সর্বং পূর্বং। ইদমধিকং। ১০৫॥

ছুহুণীত্যণীন্টোদাহরণং কলাপে। সারেচ গুরোমামধ্যাপয়তুয়। মধ্যাক্ছইতি। মুহুর্ত্তোপরীতিবোধ্যং।
মুহুর্ত্তাত্বপরিমধ্যাক্ষকালঃ পার্বণজিয়ানিমিত্তং প্রাপ্তইত্যর্থঃ। গ্রামং গচ্ছতুয় ভবান্ শতং দদাতুয়।
মুহুর্ত্তোপরীতি প্রৈষাতি সর্গোদাহতী। স্মেনউর্জমৌহুর্ত্তিকেইপি মুহুর্ত্তোপরিকটং কুরুয়ইত্যক্সত্র।
উর্জমৌহুর্ত্তিক প্রৈষাদে লিঙ্ লোটোউল্লে তত্রৈবম্মযোগে লোডেবেত্যুক্ত্বা অনুর্জমৌহুর্ত্তিকে ব্যবস্থামাহ
অনুর্জ মৌহুর্ত্তিকইতি। মুহুর্ত্তাদুর্জঃ সমীপকাল এবোর্জ মুহুর্ত্তস্তর্পরীতো মুহুর্ত্তাদুর্জান্টরনালঃ মুহুর্ত্তাভ্তরকালশ্চ অনুর্জমুহুর্ত্তঃ ভবান্ মূহুর্ত্তাদূর্জং সমিহিতেন গ্রামং গচ্ছেময়া প্রেষিতইতিবজ্রধরঃ। এতাদৃশপ্রেষাদিয়ুয় বোগেলোডেবস্মাযোগেচ। যদাহবজ্রধরঃ প্রেষিতস্তং গ্রামং গচ্ছেতি। অনুসূত্রাভাবাদাহ
অগ্রিমেতি। অন্ত্রাপ্রেমিকার্থস্থাদিহতথাকল্পনা। অনুর্জমৌহুর্ত্তিকেকিং মুহুর্ত্তোপরিকটং কুর্যাৎ।
অনুমতাবপীত্যপি স্তন্ত্রাপ্রয়োজনোহধিকফলায়নির্দিন্টইত্যর্থঃ। অনূর্জমৌহুর্ত্তিক প্রৈমাদাবপি সপ্তমীতি
হুর্গঃ। উতাপ্যোর্ভুর্নেলিঙ্ ভূশার্থয়োঃ সর্ব্বদা উত্কুর্য্যাৎ অপিকুর্য্যাৎ। অপিদাক্ষাৎ প্রশিষ্যাস্থং
কুচ্ছেরিন্তপুরোধসন্। উত্রিষোহমুশোচেয়ুঃ পরেহিন্মন্ কিন্নবান্ধবাঃ। অন্তভূতলিঙ্ । ১৩৪॥

गृष्यकाणिका।

পূর্বাদশন্দব্যবস্থয়া উর্দ্ধমে ছুর্ভিকেষু প্রৈষাদিষু লিঙ্ লোটো স্মযোগেলোডেবেজ্যক্তং তত্ত্রসূত্রমাহ লোড থাকিতি। লিঙোহপবাদইতি। বিশেষ স্থাদিতিভাবঃ। মধ্যাক্ষইতি। অত্রাপি মুহুর্ত্তোপরীতি অনুষজ্যতে ত্রিমুহুর্ভাত্মক মধ্যাক্ষে সপ্তমমুহূর্ভাত্মপরিশ্রাদ্ধমেকো দিষ্টমিত্যর্থঃ। অনুর্দ্ধমো হুর্ভিকেষু প্রেষাদিষু তুলোডেবইত্যত্র সূত্রাভাবেহপি অনুমতাবপীত্যপি শব্দস্বর্সাদিত্যাহানুর্দ্ধইতি। অন্যথাত ত্রাপেরিক্ষলত য়া বৈয়র্থ্যাপতেরিতিভাবঃ। ১৩৪॥ •

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনু । অনুমতোবর্ত্তমানাদ্ধাতোলোঁট্ স্থাৎ। সাচানুমতিজ্ঞানাধীনেতিতামাই চিকীর্যতইতি।
অনুজ্ঞানমনুজ্ঞা আদন্তাদ্ভাবেহঙ্ কাঞ্চিৎক্রিয়াং কর্ত্ত্মিচ্ছতঃ পুংসন্তৎক্রিয়াস্থ প্রেরণমনুজ্ঞাহনুমতিঃ।
তত্ত্তং সমস্থ সমং প্রতি উৎকর্ষনিকর্ষোদাসীত্থেন প্রবর্ত্তনানুমতিরিতি। বহুষু কর্তব্যেষু মধ্যেপ্রথমং
কিং করবাণীতি প্চছাতে কুর্বিতিবচনেনানুমন্থতইত্যর্থঃ। প্রশ্নবচনেতু সংপ্রশার্থসাদিষু সূত্রেণ
লোট্ এবঞ্চ কিমহং কুর্য্যামিতিচ প্রশ্নঃ। ভকভীতাইতি কর্ত্বপদং। ঈশভজনেন ভবাপনোদঃ স্থাদিত্যর্থঃ। এবং তৃষ্ণাং ছিদ্ধিভজস্বমাং সত্যং ক্রহীত্যাদয়ঃ। ভবিষ্যৎকালেবিধিরয়ম্ অতীতে বর্ত্তমানেচ

অকারাৎ পরস্তুযাইঃস্যাৎ। অকারাৎ পরোলিঙোযাশকইঃস্যাৎ। যজেৎ যজেতাম্। ১৩৬॥

যুরিযুর্য্যামিয়ম্। অকারাৎপরোয়ুস্ ইযুস্ যাম্ইয়ম্স্যাৎ। যজেয়ৣঃ য়জেয়ম্ আত্মনেযজেত যজেয়াতাং যজেরন্ এবং নন্দেৎ ক্রামেৎ ধ্রিয়ভয়ুঞ্ছেৎ
দীব্যেৎ শামেয়েৎ। ১৩৭॥

ক্রিয়াসস্তানস্তজনিতত্বেনামুমতেরনপেক্ষণাদিতিভাবঃ। যতুপ্রাব্রন্তেইপি গমনাদাবমুমতিদৃ শ্রতে সাপ্যুতরোভরক্রিয়ায়ামিতি। অন্যেত্ চিকীর্যতোরমুমননং জ্ঞানমুমতিঃ সাচাত্মনোইপি। যথাকর্ত্ব্যাস্থ
বৃদ্ধিস্থবন্ত্র্ ক্রিয়াস্থ যুগপংকর্ত্ত্ মশক্যংমত্বা অন্যম্মিরাত্মন্তপিচ্ছতিকিমহমিত্যাদিএমুকর্ত্ব্যের্মধ্যেকিমহং
করবাণীতার্থঃ প্রথমং বাকিমহং করবাণীতি পশ্চাজ্জ্ঞানং ঘটতএবেতি বদন্তি। যত্রসংপ্রমেইপ্রেষেচামুমতি
স্তত্রবিধ্যাদিত্বেন লিঙ্ লোট্ প্রাপ্তৌলিঙ্ বারণায় সূত্রমিদং। এতেনয়ং কশ্চিৎ প্রাদ্ধাদি চিকীর্ষন্
বিপ্রাদেঃ সম্মতিমপেক্ষমাণোহমুজ্ঞাং প্রার্থিতবান্ তংপ্রতিকুরুষেত্যাবিদ্ধুর্বতাতৎকর্ম্মণি প্রেরণমনুমতি
স্তত্ত্র লিঙ্ ন। সংপ্রমেদিতীয়কল্পএব। লিঙ্ প্রকরণমারভ্যতে অনয়োরিতি। অনয়োল্লিঙ্ লোটোরমুপদং লোটোবাচ্যত্বাদিতিভাবঃ। পূর্ব্বিবং বর্ত্তমানাপ্রকরণবং। কিন্তদিত্যাহপ্রত্যয়েতি। ভুবাদ্যাদীত্যাদোবিহিতেস্থাৎ পরম্মাইতিরুচাদেরিতি যজাদীতি পরস্মৈত্বাত্মনেউভপদানিবোধ্যানি গুণিন্যস্তস্তেতিগুণঃ দীর্ঘঃ স্থাদাচমেত্যাদিনাদীর্ঘঃ আদেশোগমিষ্যমইতি জামেদো শৃধিকুইতি আদিনামুম্বিকরণিদ্র্বিচনাদয়ঃ। অধিকং লডুক্রাদধিকং লিঙিশ্রুতেমিতিভাবঃ। ১৩৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অনুমতাবপীতি। এতদপিস্বরদঃ পূর্ব্বিদূত্রেউক্তঃ। ভবেতি। বিল্পত্রাদিভির্ন্নিত্যং জপপূজা-পরায়ণাঃ। ভবভীতাভজন্বীশংধর্মার্থকামতৎপরাঃ। অন্যৎপ্রভাপ্রকাশিকায়ামবলোকনীয়ম্। ১৩৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অকা। যজেদিতি। অম্বিকরণেযাইঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ১৩৬॥

गृष्धकानिका।

অকারাদিতি। তুঃ পাদপুরণেছন্দোহর্থঃ। প্রকরণবশাৎ দিঙোযাই: স্থাদিত্যর্থঃ। ১৩৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যুরি। ক্রামেদিত্যাদি। ক্রমঃ পরস্বাইতিদীর্ঘঃ রিষ্ ঋকারস্থেতি রিষ্ মুচাদেশু মিতি সুম্
অপ্তণেহলীতিশমিভ্রমীতিদীর্ঘে। ১৩৭॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

ষুরিযুরিতি। লিঙোযুদ্ ইযুদ্ যাম্ ইয়ম্ স্থাদিত্যর্থঃ। এতেষাং ধাতুনামর্থগণপদানিপূর্ব-মুক্তানি। ১৩৭॥ আলুক্ছাকঃ। লিঙিস্যাং। জহ্মাং জহ্মাতাং জন্তঃ ব্যতিজহীত। ১৩৮॥ উলোপঃ করোতের্য্যে। স্যাং কুর্য্যাতাং কুর্য্যুঃ। যেকিং কুর্ন্থীত কুর্ন্থীয়াতাং কুর্ন্থীয়ন্ত্র কুর্নীর মিতিছান্দসং। এবং গণাস্তরে মতন্ত্রকার্য্যমুদাহার্য্যং। তনোর ভাবাদতন্দিতানি কার্য্যাণি কার্য্যাণি যথাতথৈব। ভেদাংস্থরব্যঞ্জনয়ো-স্তনাদিস্থাদি প্রভৃতের্গণস্য। তথাত সুয়াং তন্ময়াতাং তন্ময়ঃ তন্মত-যন্ত্র মাদিনিষোমে ট্ কুদ্যাং স্বপ্যাং শ্বস্যাং। সিদ্ধান্ধ নবিশ্বসেদিতিগণব্যত্যয়-শ্বান্দসঃ। জাগ্যাং দরি দ্রিয়াং জুল্যাং ইয্যাং। লোট্ তু তাম্ অন্ত হি তম্ ত আনি আব অমে। তাম্ আতাম্ অন্তাম্ স্ব আথাম্ ধ্বম্ প্রভাবহৈ স্থামহৈ। আত্র যজতীত্যাদিবৎ যজতুঃ যজতাম্ যজন্ত। ইদমধিকম্। ১৩৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আলুক্। ব্যতীতি। বতিপূর্ব্বাদাত্মনেপদং আলোপঃ। ১৩৮॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

আলুগিতি। যদ্যপ্যত্রযেনিমিত্তে আলুগিত্যায়াতি তথাপিপরসূত্রেযেইতিব্যক্তব্যত্বাল্লিঙিআলোপঃ স্থাদিত্যাহলিঙীতি।১৩৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উলোপঃ। কৃধাতোলিঙোযেকুরাদেশেউবিকরণলোপঃ। কুরীরন্নিভিউলোপশ্ছান্দমইত্যর্থঃ। এবমিতি। গণাস্তরেষুতনাদিস্বাদি প্রভৃতিষুত্রসুসংস্ঞাবিরহেণত সুকার্যস্থাসম্ভবাদিতিভাবঃ। ইদমেবস্পান্টয়তিতনোরভাবাদিতি। প্রভৃতিপদাৎ রুধাদিপ্রাফঃ। ভুবাদিদিবাদ্যোস্তম্বতনুবিভাগেনকার্য্যাভাবামদর্শনিমিতিভাবঃ। শিদস্তর্গতানাং যেবাং তনুসংক্ষানাস্তিতেয়ু অতনুদিতানি কার্য্যাণি উবিকরণাদীনি
কার্য্যাণি কর্ত্তব্যানি স্বরব্যপ্তনভেদনমথাযথং যথাস্বং লিঙ্লোট্ হস্তনীস্বেতদবগন্তব্যং। যদ্বাতনাদ্যাদিধাতুযোগেলিঙিতম্বভাবেনস্বর্যপ্তনভেদনমথাযথং যথাস্বং লিঙ্লোট্ হস্তনীস্বেতদবগন্তব্যং। যদ্বাতনাদ্যাদিধাতুযোগেলিঙিতম্বভাবেনস্বর্যপ্তনভেদনাতনোযথাযেনরপেণ কার্য্যাণিউবিকরণাদীনিউক্তানিতথৈবকার্যাণীতি। দরিদ্রিয়াৎ রুদ্ধ্যাৎ রুদ্ধীতজানীয়াৎ জানীতইতি স্বরব্যপ্তনভেদাদত সুকার্য্যং। যস্বরাদীতি।
রুদ্ধ্যপৃশ্বসনিযক্ষিভ্যইত্যনেনেভ্যর্থঃ। নবিশ্বসেৎ পূর্ববিরোধিতস্থেতিপঞ্চন্তইতিমন্তেয়ঃ। আশ্বসেয়ুরিশাচরাইতিভাটিঃ। নবিশ্বসেদবিশ্বস্তেবিশ্বস্তে নাতি বিশ্বসেদিতি নীতোচ ইত্যাদি প্রয়োগদর্শনাদ্ধ্বাদিরপ্যয়মিত্যন্তে। পঞ্জিকাস্বর্সাচ্ছান্দসইত্যক্তং। দরিদ্রাদিত্যাদি। অভ্যস্তস্থাকারবিতি
আঈনিত্যং দরিদ্রোতিরিতীহ্রস্বঃ। ছদ্বিভাবঃ ঋদিঃ ঋধাতোঃ স্থাদিযভ্যাসে। লোটমাহতু তামিত্যাদি।
যজতীত্যাদিবদিতি। যজাদিস্বাছ্তমপদীমুদ্বাদিবিধানে অন্ বিকরণঃ যজস্বিত্যাদি। ইদমধিকমিতি।
প্রথমবিস্থাসাদ্ধিকং যতলাই। ১৪৮॥

লোটিছিলোপ্যোংকারাং। যজ ভব বদ দ্য ভুদ মুঞ্চ জিধাতোস্বস্থোরনভি-ধানাত্যস্ত্যোঃ প্রয়োগঃ জয়তি জয়তাং। জয়স্তিযমুনাকুলেরহঃ কেলয়ঃ। তথা তনোতু স্থনোতু আপ্নোতু আপ্নুবস্তু। ১৪০॥

স্বাদিতনাদ্যোরসংযোগাং। হিলোপাঃ স্যাং। স্থন্ন চিন্ন মিন্ন তন্ত্র। অসংযোগাং কিম্ আপুহি তক্ষু হি তগ্নু হি সোমং। স্থন্নহীতিছান্দসং। তথা ক্রীণাতু ক্রীণীতাং ক্রীণন্ত মুফাতু মুফাতাং মুফন্তু। ১৪১॥

গৃত্পকাশিকা।

উলোপইতি। অত্রেথইত্যকুক্তে পূর্ব্বত্রাপি যেনিমিত্তেম্পাদিতি তদ্বারণায়যেইত্যক্তং। ক্রী-রিনিত। অত্রপুনর্লোপ ইত্যদীরণাৎ যভিন্নেইপি কচিছলোপইতিজ্ঞেয়ং। উপজাতিছন্দঃ পদ্যেনাহত-নোরিতি। নমুখনোহদাদিগণপাঠাৎশ্বস্থাদিত্যেব প্রয়োগাদ্শ্যতে কথং বিশ্বদেদিতি প্রয়োগইত্যতহাই দিদ্ধমিতি। গণং ভিন্নগণং যদগণে পঠিতস্তদ্বস্থগণমিতিযাবৎ বিশেষেণ অত্যয়ন মতিক্রমণমিতিবিঅতি-পূর্ব্বাদিনোহল্ গণব্যত্যয়োহপরগণগতিরিত্যর্থঃ ছন্দসিপদ্যেভবইতি অণ্ তত্রজাতমিত্যাদিনাহণ্ তথাচ পদ্যেছন্দোহর্থো ভ্রাদিগণে পাঠোহপীতিভাবঃ তেন প্রভাপ্রকাশিকোক্ত পঞ্চত্রাদিয়্ নবিশ্বদেদবিশ্বস্তং মিত্রঞ্গাপিনবিশ্বদেদিতিচানক্যপদ্যেশোভ্রেশ্বালিতকবরীনিঃশ্বস্তীবিশালমিতি পদ্বাঙ্কদৃতপদ্যেচ নদোষঃ। নবিশ্বদেদ বিশ্বস্তং বিশ্বস্তং নাতিবিশ্বদেৎ। নবিশ্বদেচমিত্রঞ্গদিদ্ধমন্ধং নবিশ্বদেৎ। অকারাৎপরইত্যাদি এতৎসূত্রস্থ কুর্যুরিতি বিবৃতি পর্যান্তমার্য্যাবৃত্তিঃ। ১৩৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

লোটি। লোটিবিষয়েহিলোপ্যোবিকরণাকারাদিত্যর্থঃ। হীতিসিলোপঃ। লোপইতিকচিৎপাঠঃ
তত্র হেল্লোপোহিলোপইতিসমস্তঃ। দ্যেতি। দোষণ্ ওকারস্থ লুগ্যণি সম্বর যণ্ বিকরণাৎ হিলোপঃ।
মুঞ্চেতি মুচাদেমুম্। অনভিধানাদপ্রসিদ্ধেঃ জয়তি লোডর্থন্চ লটাবোধ্যতইতিভাবঃ। জয়স্তি সর্বোৎকর্ষেণবর্দ্ধন্তামিত্যর্থঃ। মেঘৈর্শ্বেরমন্বরং বন্দুবঃ শ্রামাস্তমালক্রট্মর্মক্তঃ ভীরুরয়ং ম্বনেব তদিমং
রাধ্যেহং প্রাপয়। ইত্থং নন্দনিদেশতশ্চলিত্য়োঃ প্রত্যধ্বকুঞ্জক্রমং রাধামাধ্বয়োর্জয়ন্তি যমুনাইত্যাদি
জয়দেবঃ। স্বাদ্যাদিগণোদাহরণমাহ তথেত্যাদি। আপুবস্থিতি অতনোকুঃ উবং স্বরইত্যুব্। ১৪০॥

गृष्प्रकाणिका।

লোটীতি। ছন্দোহর্থং হীতিসিলোপঃ। জয়তীতি। জয়তিরযুবংশতিলকঃ কোঁশল্যানন্দ-বর্দ্ধনোরামঃ। দশ্বদননিধনকারী দাশরথিঃ পুগুরীকাক্ষঃ ইতিমহানাটকে। অন্তৎ প্রভাপ্রকাশিকায়া-মনুসর্ত্তব্যম্। ১৪০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্বাদি। স্বাদিতনাদিগণয়োঃ সংযোগবর্ণান্ত স্মাৎ লোটিছিলোপ্যইত্যর্থঃ। একসূত্রনির্দ্ধিউত্তে২প্যস্ত

ক্র্যাদিহলস্তান্নীস্থোরানো। শুঃ। মুষাণরত্নানি। পুষাণক্ষুভানবধান। বন্নীহিদেতুমিত্যার্যং। ১৪২॥

নশ্চগ্ৰহঃ। নীছোঃ স্যাৎ। গৃহাণ গৃহ্এতদাৰ্যমিতিকেচিং। গৃহায়েতি-চ্ছান্দসম্। অতু অত্তাম্ অদন্ত । ১৪০॥

সাকাজ্জ্বাৎ। তগুঁহীতি। তৃণুপুর্ববদ্গুণঃ। স্থ্নহীতি হিলোপাভাব ছান্দসঃ। ক্রীণস্থিতি। নীরয়মচীতি স্বরশূতঃ। মৃষ্ণস্থিতি। মৃষ্স্তেয়ে! ১৪১॥

গৃত্পকাশিকা।

স্বাদীতি। সংযোগশব্দঃ পূর্ববৈৎ সংযুক্তপরঃ। মিদ্বিতি। ডুমিঞ্প্রক্ষেপণেস্বাদিত্বেননুবিকরণঃ। তর্গু হীতি অগুণাবুভাবিতি নঞোহনিত্যপাদ্গুণঃ। স্বনুহীতি। আদেব্যবস্থয়া কচিদিকদ্পেনহিলোপ-ক্তেন নাত্রহিলোপইতিভাবঃ। মুফান্বিতি। মুণ্স্তেয়ে ক্র্যাদিপরশৈপদী। মুষ্থগুনেতুদিবাদি পরশৈপদী মুয়তি। একস্ত্রনির্দ্দিউন্বেহপ্যস্ত সর্বাপদেষু সাকাঙ্ক্ষান্বাৎ পৃথক্করণং নদোযাবহং। ১৪১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্র্যাদি। ক্র্যাদিগণেযেহলস্তাস্তেভ্যোনীবিকরণস্তহেশ্চস্থানে যথাক্রমমানাবাদেশোস্তঃ। মুযা-ণেতিণত্বঞ্চ। পুনাণেত্যাদি। পু্য্পুফৌক্ষুভ্দঞ্চলনেনক্ষুভ্রাদেরিতিনণত্বং বধ্বন্ধনে। আর্যমিতি আনোনস্তইত্যার্বং। স্তন্ভু স্থন্ভু স্কন্ভু স্কৃন্ভু ধাতবঃ স্বাদিক্র্যাদয়ঃ স্তভ্রোতুস্তভ্রাতু ইত্যাদিরূপম্। ১৪২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ক্রাদী। ক্র্যাদেহলন্তঃ ক্র্যাদিহলন্তইতিসপ্তমীসমাসঃ নতুক্র্যাদিশ্চহলন্তশেচতিসমাহারঃ সমাহার বন্দ্রেঅযথাসন্থারিয়স্তাসিদ্ধান্ত ডিভয়াত্রনীভোরম্বয়স্থাবশ্যকতয়াসামান্তহলন্তস্ত নীবিকরণাভাবাৎ। মুন্ধাতোঃ মুফ্টাহিস্থিতো নীস্থানে আ হিস্থানে নঃ ণছেমুগাণেতি। পূরীমবন্ধন্দলুনীহিনন্দনং মুযাণরত্নানি হরামরাঙ্গনাঃ। বিগৃহচক্রেন মুচিদ্বিদাবলীযইখনস্বাস্থ্য মহদ্দিবন্দিবইতিমাঘে। বগ্গীহিসেতুমিতি। নীরাণইতিকৃতে পূর্বস্বাৎহিপ্রবর্তনাৎ হিলোপাচ্চমুগাণেত্যাদি সিদ্ধেরীদৃক্সূত্রকরণং কচিদনিত্যার্থমিতি। কামংপ্রযাহিজহিবিপ্রবন্দাহবমেহং ত্রৈলোক্যরাবণ্মরাপ্রুহিবারপত্নীং। বগ্গীহিসেতুমিহতেযশসোবিতত্যে গায়ন্তিদিখিজয়িনোযমুপেত্যভূপাইতিশ্রীভাগবতে। অবমেহং পুরীমপ্রায়ং ত্রৈলোক্যরাবণং ত্রেলোক্যং রাবয়তি আক্রন্ময়তীতিতথাত্রৈলোকস্থার্তনাদ্যদিমহাশন্দকারকমিত্যর্থঃ। ১৪২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নশ্চ। চকারাদানোচ। গৃহায়েতিনীহোরায়াদেশঃ। ১৪৩॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

নশ্চেতি। গ্রহঃ পরয়োঃ নীছোঃ স্থানেনশ্চচকারদানৌকচিদায়াদেশশ্চেত্যর্থঃ। এতদার্যমিতি কেচিদিতি। গৃহ্লেতি বহুতরপ্রয়োগদর্শনামেদং ছান্দসং কিস্তুলৌকিকমপীত্যস্বরসোদ্ভাবনং। গৃহায়েতি চকারাদেতে । ১৪৩॥ ধুটোহেদ্ধি। স্যাৎ। অদ্ধিবশ্ উড্টি দিড্টি মুড্টি ৰুদ্ধি। ১৪৪॥
এ আবহৈ আমহৈ চৰুধাদেরতন্ত্ৰশ্চবা। তম্বতমোর্নাম্বরনো। কণধৈকদ্ধি
কণধাবহৈক্দ্ধাবহৈকণধামহৈক্দ্ধানহৈ ছিদ্ভিদাদেরবং ছিদ্ধি ভিদ্ধি পিণ্টি শিণ্টি
অঙ্গ্ধীত্যাদয়ঃ। হিসঃ সলোপঃ হিদ্ধিসূতাং স্থবাতাং স্থবতাং সৃষ। ১৪৫॥
সূতের্নিত্যং। এ আবহৈ আমহৈ অগুণঃ। স্থবৈ স্থবাবহৈ স্থবামহৈ।১৪৬॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

ধুটো। ধুটঃ পরস্থাহেদিঃ স্থাং। অন্অদ্ধি। উড্টীতি গ্রাহিজ্যেতিসম্প্রসারণং ধ্যাদেশেধুটান্তে চেতিশংষঃ চতুর্থেষস্থাইতি ষস্থাডঃ চটবর্গাবিতিধস্থাতঃ। দ্বিষ্অপ্রীতোধ্যাদেশেষস্থাঙঃ। মৃড্টীতি। মৃষ্আমর্দনে। রুদ্ধীতি। তুর্যোম্বিতিধস্থাদঃ ব্যঞ্জনপরেতিদলোপঃ। ১৪৪॥

गृष्धकाष्मिका।

ধুটবিতি। অন্ভক্ষণেঅদ্ধিবশ্কাস্তোদস্প্রদারণেউড্চিরুধির্আবরণেরুদ্ধি। ১৪৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঐ। লোটউত্তমপুরুষয়োস্তনুসংজ্ঞকোভয়োরায়নেপদীয়পুরুষয় বা অতমুসংজ্ঞাক্রিয়তেরয়ধাদিযোগে। ফলমাহতদ্বতি। সম্বরনস্বেণস্বেচরুণথৈ নিম্বরনস্বেরুক্তির। এবমিতি। ধুটোহেদ্ধিঃ ঐ
আবহৈআমহৈইত্যম্যুচ বা অত্যুব্বঞ্চেভাবঃ। পিণ্টীতি। পিষ্৯ং চূর্ণনেধ্যাদেশেষম্যুডঃ নিম্বরনঃ
সন্ধিকার্য্যেগ্রন্ধনপরধূড্লোপঃ। শিণ্টীতি। শিষ্বিশেষকরণেষম্যুডঃ নম্যুণঃ চটবর্গাবিতি সর্বত্ত।
অঙ্দ্মীতি। অঞ্জুমক্ষণেধোক্তে ধুট্যন্তেচেতিজম্যকঃ তুর্যোষুয়্যারিতিগঃ নম্যবিন্দুঃ বর্গেতদ্বর্গ ইতিঙঃ।
সলোপইতি। ধ্যাদেশে অন্যম্যুচেতিসলোপঃ। সূতামিতি। সূপ্রস্বেজ্বদাদিঃ। স্ব্বাতামিত্যাদি।
ইবর্ণোবর্গয়োরিত্যুব্সাদন্যম্মাদিতিনলোপঃ। ১৪৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঐ ইতি। ছিদির্ছেদনে। ভিদির্ধিধাকরণে। ইত্যাদয়ইত্যাদিনা থিদাদৈতেথিদ্বিচারণে পৃচীসম্পর্কেইত্যাদে গ্রহণং। হিদিহিংসায়াং হিন্ধাতি। অভৎপ্রভাপ্রকাশিকায়ামবলোকনীয়ং। ১৪৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সূতে। অগুণফলম্ ইবর্ণোবর্ণয়োরিতি উব্। সূতেরিত্যদাদিমির্দেশাৎ তুদাদিদিবাদ্যের গ্রহণং। ১৪৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

সূতেরিতি। নিত্যপদাদানির্ভিঃ। ঐ আবহৈ আমহৈ অগুণইতি পূর্বসাদসুবর্ততে। স্থবৈ ইত্যাদি। অগুণেইবর্ণোবর্ণযোদ্ধাতোরিযুবাবগুণেস্বরেইত্যুব্। ১৪৬॥ विद्मतीया। त्नाष्टिः कार्निमार। विद्मदेववां मध्ये । ১८१॥

করোত্বাদ্যান্ততঃ পরাঃ। প্রযোক্তব্যাঃ। বিদাঙ্করোত্বিদাঙ্কুকতাম্ বিদাঙ্ক্রস্ত্র পক্ষেবেতু বিত্তাম্বিদস্তর্সমিদাং কুক্কতাং বাসম্বিত্তাম্মমিদাতাং সমি দ্রতাং দদাতু দত্তাং দদতু দেহিদ্ধাতুধতাং দধতুধেহি জুহোতৃজুহতাং জুহ্বতৃ জুহিধি অস্ত্রস্তাং সন্তত্র্রি হন্তহতাং মন্ত্রজহি শাস্ত্রশিফীম্ শাসতুশাধি জহাতু জহিতাং জহীতাং জহতু জহিহি জহীহি জহাহি। ১৪৮॥

দেহিধেহিজুহুধ্যোধ জহিশাধিজহাহিচ। নিপাতনাৎ সিদ্ধান্তি ১৪৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিদেঃ। বিদামিতিনপ্রয়োগঃ বিদাস্করে।তুইতিপ্রয়োগইত্যাহ। ১৪৭॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

বিদেরিতি। যদ্যপ্যত্রবিদেরিতি সামান্যতোনি দিশ্যতেতথাপি অদাদিগণদাধ্যমধ্যেকথনাৎ অদাদিরেবতেনবিদ্জ্ঞানেইত্যস্তৈবগ্রহণং। নোটঃস্থানইতি। ঐ আবহৈ আমহৈ ইতিত্রয়স্যস্থানেইতি বজুং নশক্যতেআমঃ পরাঃকরোত্বাদ্যাঃ প্রযোক্তব্যাইতিসূত্রেণামাদেশকরণানন্তরং লোট্সামান্যপ্রযোগাণাং বিধেরতয়াআমঃ লোট্সামান্যস্থানীয়ত্রপ্রতি। বিদেরেবামগুণইতি। পূর্ব্বোক্তশ্র্যারকমিদং।১৪৭ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

করো। ততঃ পরাআমঃ পরাঃ। আদ্যাইতিবচনাৎবিদাং কুরুতাং বিদাং কুর্বস্তুইত্যাদি।
দিবিদাংকুরুতামিতি। দমোগমুচ্ছিপ্রচ্ছর্তিইত্যাদিনাদম্পূর্ববিদেরাত্মনেপদং। দিবিদ্রালিক্রিজ্বৎপ্রথমঃ
দোরাগমঃ। বিদেরিতিনির্দ্দোদদাদেরেববিদেরান্। দত্তামিত্যাদি। দাধোরীলুক্লিঙ্কবৎপ্রথমঃ
আলোপঃ অভ্যস্তাদন্তনোলোপঃ ধত্তামিতিদ্বোধৎ। স্তামিতিশ্বস্থলোপোহতনাবস্তেঃ। হতামিত্যাদি।
হত্তের্নসুক্ দ্বঃ স্তাদিতিত্রঃ শিক্তামিতিশাসঃ শিষ্যকারাচ্চেতিটঃ শাসতুপূর্ববৎ। জহীতামিত্যাদি।
অভ্যস্তস্যাকারইতিদীর্ঘঃ ভীহাকোরীহ্রস্বঃ পক্ষে। ১৪৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা ৷

করোত্বাদ্যাইতি। ততঃ পরাত্তামঃ পরাঃ করোত্বাদ্যাঃ প্রযোক্তব্যাইত্যন্বয়ঃ। অত্রাপিবান্বয়ঃ। বিদাংকুর্বন্ত্রিতি। বিদাংকুর্বনন্তরামশ্রন্ত্রমিত্যবদৎস্বকান্! রক্ষাংসিরক্ষিত্রু সীতামাশিষচ্চপ্রযন্ত্র বানিতিভট্টিঃ আশিষ্চাদিষ্টবাংশ্চ বারণইতিশেষঃ। ১৪৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দেহি। দ্বিভাবাভাবশ্চাত্রনিপাতঃ জুত্থীতিধুট্পরত্বাভাবেনধিন্নিপাতঃ। এধীতি অসএনিপাতঃ। জহীতিহস্তজোনিপাতঃ। শাধীতিশিষাদেশাভাবঃ সলোপশ্চ। জহাহীতিপক্ষে ঈনিষেধোনিপাতনাৎ। জহীহি শোকং বৈদেহিপ্রীতয়েধেহিমানসং। রাধণেজহিবিদ্বেষং জহাহিপ্রমদাবনমিতিভট্টিঃ। ১৪৯॥

ধাতুমাত্রান্তু স্থোরাশিষিতাংশবা। শনুবন্ধত্বাদতনুর্দ্বরমপি। নন্দতাদ্ভবান্।
ত্বঞ্চ। চিনুতাদীক্ষিতমচ্যুতশুব। কন্ধাং হতাং স্থাংশিফাং জুহুয়াং দক্তাং
ধতাং। দধাতুকুশলং তবনন্দসূনুঃ। ত্বং নন্দনন্দনমমুং হৃদিধেহি ধতাং। *।
ইতিলিঙ্ লোট্প্রক্রণম্। ১৫০॥ *॥

গূতপ্ৰকাশিকা।

দেহীতি। এতেনিপাতনাৎদিদ্ধান্তীত্যম্বঃ। দেহিধেহিইত্যত্তদ্বিভাবাভাবআত্তনিপাতঃ। জুত্ধী তত্ত্ৰহিস্থানেধিনিপাতঃ। এধীত্যত্ত্ৰধূটোহেৰ্দ্ধিঃ অসএনিপাতঃ। জহীতিহন্ধাতোর্হস্তজঃ। শাধীতিশাসঃ শিষভাবঃ সলোপশ্চ। জহাহীতি বা অভ্যস্তস্থাকারইতি সূত্রপ্রাপ্তঈনিষেধঃ। চকারাৎপক্ষেজহীহিভীহা কোরীহ্রস্বঃপক্ষেইতিজহিহিচ। নিপাতিসিদ্ধত্বাশ্বাত্তবাসুর্বিভঃ। ১৪৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ধাতু। আশিবিগম্যায়াং ধাতুমাত্রাৎদর্বধাতোঃ তুহিস্থানে তাৎশবাস্থাৎ। দ্বয়মপীতি। যদ্যপি হিরতকুরের তথাপি হিতাগানুবাদেন ইত্থমূক্তং। তাৎশাদেশে শনুবন্ধকরণং শিতামেবেত্যাদিনা অতনুসংজ্ঞয়ানুবিকরণাদ্যর্থং। ত্বঞ্চেতি নিন্দতাদিত্যন্বয়ি। টুনদিধাতোরিদম্বিতিকুম্ অন্। চিমুতাদিতি।
নুত্বঞ্চমন্বন্ধনীয়ঃ। স্তাদিতি অস্তেরলোপঃ। শিক্তাদিতি শিবাদেশঃ অতনুকার্য্যাণি। এবমন্যত্র।
দত্তাৎ ধত্তাৎ ঈলুক্ ধদাদেশঃ। এবং পিপর্ভুপি পৃতাৎ বিভর্তুবিভৃতাদিত্যাদি। য় । ইতিলিঙ্ লোট্
প্রকরণবিবরণম্। য়। ১৫০॥

গু ঢপ্রকাশিক।।

ধারিতি। ধাতোশ্মাত্রং কাৎশ্র্যমিতিবিগ্রহঃ। মাত্রং কাৎশ্ব্রোহ্বধারণেইত্যমরঃ। শেত্যজ্রা-কার্শ্চলোহর্থঃ। অনুবন্ধোহ্যমতনুদংজ্ঞাজ্ঞাপকঃ। টুনদিসমুদ্ধোনন্দতাৎতুম্বানে তাৎতত্ত্রভবানিত্যস্থাহয়ঃ হিস্থানেচ তাংতত্ত্রস্বঞ্চেত্যসাহয়ঃ। চিন্নুতাদিতি। চিঞ্চয়নে। নিজগোগোপগণৈরিতস্ততো
যমুনাকূলবনেপরিভ্রমন্। সহরামোহথিলখেলতৎপরশ্চিন্নুতাদীন্দিতমচুতন্তন্তব। রুদ্ধাদিতি রুধির্
আবরণে হতাদিতি হন্ হিংসার্গত্যোঃ হল্তের্ম লুর্গ্র্ট্যতনাবিতি নলোপঃ। স্তাদিতি অস্ ভূবিবিদ্যমানে।
শিক্তাদিতি শাল্প অনুশিক্তী যকারাচ্চ টবর্গঃ স্থাদিতিতাম্থানেটা। জুত্তাদিতি হুদানে শিতিহিঃ
অভ্যাসেহোজঃ। দত্তাদিতি ভুদাঞ্দানে অভ্যস্তস্থাকারোহল্যতনাবীদাধোরী লুক্ লিঙ্গবৎপ্রথমোধ্টাং।
ধত্তাদিতি ভুধাঞ্ ধারণপোষণয়োঃ। দধাছেতি। তাৎশাভাবপক্ষে। ইন্দ্রেনিজাপচিতিলোপরুষামুধারাং ধারাধরধ্বনিযুতাং কিরতিপ্রমত্তে। গোবর্দ্ধনোদ্ধরণরক্ষিতগোকুলম্থোনিত্যং দধাতু কুশলং তবনন্দ
সূন্ধুঃ। স্থাতি। জ্বীড়ারতসকলগোপবধূদমেতং সংসারহন্তরপ্রোনিধিপারকারং। ত্তক্ষেত্রপ্রশাদিবিতাৎশবেত্যবং
হেন্দঃ। ২। ইতিগৃত্পকাশিকারাং লিঙ্লোট্ প্রকরণবিবরণম্। ২। ১৫০ ॥

ছন্তনী ছোইবধীভূতে মান্মযোগেছদ্যতন্যপি। ছঃ প্রভৃতিভূতকালে ছন্তনীবিভক্তিভ্বতি। লঙ্সংজ্ঞাচাস্যাঃ মান্মযোগেছন্তন্যদ্যত ন্যৌদর্বকালে স্যাতাং। সাচ দি তাম্ অন্ স তং ত অম্ ব ম। ত আতাম্ অন্ত থাস্ আথাম্ধ্য ই বহি মহি। এতস্যাং বর্ত্তমানতোইধিকং সাধ্যমিয়াদ্যথা। ১৫১॥

অত্ধাত্বাদাবচাং রদ্ধির্নিঙ্ লুঙ্ ক্রিয়াতিপতিষু। অযজৎ অজযতাম্ অভবৎ ধাত্বাদিস্বরস্যর্দ্ধিঃ আটৎ আঞ্চৎ প্রক্রছৎ প্রজৎ প্রলৎ ইণ্ প্রতং এতাং। ১৫২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হস্ত। হোভবাহস্তনীকালার্থকাব্যয়াদিতিতনট্টিত্বাদী। হোহবধির্য্যসভূতস্তসফোবধিভূতঃ পূর্বাবধিরিত্যর্থঃ। তিমান্। দর্বকালইতি। মাম্মবোগাযোগযোগরোরেবভূতেলঙ লুঙোঃ প্রাপ্তেপিপঙিদুর্দ্দশাৎ দর্বকিলএবাদ্যতনী অপিশব্দাৎ হস্তনীচস্তাৎ। মাম্মশব্দোহয়মকৃতদ্বন্ধঃ সমুদায়োহঙ্গীক্রিয়তে। মাম্মইত্যনেন্বোগঃ মাম্মযোগঃ। ব্যস্তেহপিকন্চিদিতিত্বর্গঃ। মাম্মপচৎ মাম্মপাক্ষীৎ এতৎসূত্রারস্তাৎ পৃথগপিমাম্মশব্দীমিলিতাবেবগ্রাহ্যে এতেনবিপর্যাস্তোব্যবিতিচিনিমিতে। অথকামোম্মমাপুষইতিব্যত্যয়েহপিলুঙ্। জুগুপতিমানিতিমাম্মজুগুপতইতি যোজনা ব্যবধানস্বয়োশ্যাম্মশব্দয়োর্য্যোগেহস্তনী। ইতিহশশ্বোব্যাগেলিড্বাধিকাহস্তনীবাস্থাৎ ইতিহাকরোৎ পক্ষেলিট্ইতিহ্চকারশশ্বদকরোৎ শশ্বচ্চকার। ১৫১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হস্তনীতি। গতে২হ্নিছঃ দদ্যআদ্যাইত্যাদিনাফোনিপাতঃ। ফোগতে২নাগতে২হ্নিষ্ইত্যমরঃ।
লঙ্দংজ্ঞেতি। অস্যাহস্তন্যাইত্যর্থঃ। দেতি। সাচহস্তনীচেত্যর্থঃ। এতস্যামিতি। এতস্যাং
হস্তন্যাং বর্ত্তমানাতো২ধিকমিয়ৎসাধ্যং যথেত্যর্থঃ। অত্রহ্যো২বধাবিত্যুক্তেভূত এবায়াতি ভূতইতিগ্রহণাৎ
ইতিহশশ্বশ্বেরোর্য্যোগেপরো২ক্ষভূতে২পিলিভ্বাধিকাহস্তনীবাস্যাদিতি। ১৫১॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

অভ্ধা। লঙাদিযুপরেষুধাতোরাদাবড়াগমঃ ধৃাত্বাদিভূতানামচাং বৃদ্ধিক। অযজদিতি। অধিকরণঃ লোপ্যোহসুবদ্ধঃ লিঙ্গবৎপ্রথমোধুটামিতিদস্ততঃ এবমন্যত্র। আটদিত্যাদি। অট্ অঞ্ ইয়ু ইজ্ ইলধাতবঃ এবমৈধৎ উদৈৎ ঐহত ঔণদিত্যাদি। ১৫২॥ •

গৃতপ্রকাশিকা।

অডিতি। অডিতিটমুবন্ধ আগমদ্যোতকঃ। লুঙ্ অদ্যতনী। যজ্দেবপূজাসঙ্গতকরণদানেযু ভূসত্তায়াম্ অট্গতোঅন্চ্গতিপূজনয়োঃ ইযুইচ্ছায়ম্ ঈজ্গতি কুৎসয়োঃ ভূবাদিরাত্মনেপদী ইল্ম্বপ্লক্ষেপণয়োঃ ভূদাদিপরস্মৈপদীইণ্গতো অদাদি পরস্মৈপদী। ১৫২॥ অস্তীণ্ যকারাদাদাবাট্। আসীৎ আস্তাম্ আসন্ ইণোযাদিরাট্ আযন্ যাদিঃ কিম্ এঃ এতং। ১৫৩॥

নৈতেস্থ্যাশ্বমাশ্বয়ে। মানাশ্বসম্বন্ধে অড্রদ্ধ্যাটোনস্থ্যঃ। অদ্যমাশ্বক-রোৎ সাধুমাভবানটাটৎভবস্তোমাশ্বযন্ খেদং কাশীং মাশ্বভবানসীৎ। দ্রুত-পদমিতিমাবয়স্যাসীঃ। এবং মাশ্বকরিষ্যদিতি। ১৫৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অস্ত্রী। অস্তেরাদো ইণ্যাদোচ আট্স্তাং। আদীদিতি। অস্তেরীট্। ঐরিতিসবিভক্তোরপং। এবমৈত আ্যম্ ঐব ঐম। নৈবশনাস্থাধেঃ পারমিতি নঐবেত্যর্থঃ। বৃদ্ধাদিদ্ধে আট্করণং কথং সত্যম্ আন্তানিত্যালাবস্থালোপোহতনাবস্তেরিত্যকারলোপঃ স্থাং লোপছেনবিশেষত্বেনচবৃদ্ধিমপেক্ষ্যবলবত্বাদিতিভাবঃ। ইণোবৃদ্ধ্যাদন্ধিনৈবিদিদ্ধো আট্করণম্ ইণঃশিতীত্যস্তবিশেষত্বনপ্রথমং যাদেশে আটং বিন্যবিপ্রবাপত্তেরিতিভাবঃ। ১৫৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অস্তাতি। অস্তাতি ধাতুনির্দ্ধেশতিপ্ অন্তিশ্চইণোয়কারইণ্যকারঃ সচেতিবিপ্রহো । অত্রাপিটকরে আগানসূচরঃ। নাচেতেন স্ত্রেণালন্ অত্যুসামাতে অস্তালোপত্ত শিৎসামাতেইণ্যাদেশস্তাপক্ষা লণ্টানিক জিতিত রানিমিতে আদেশস্তাবিহিত রাৎ সর্ববিধি ভোলোপবিধির্বলবান্সরাদেশস্তাবেলীতিত লোগালে প্রেক্ষা নাদেশাপেকরাচ র্দ্ধিরপ্রাদেশস্তা বলবত্ত্বনত তৎ প্রয়োগসিদ্ধেনির্বিদ্ধত্বাদিতি বাচাণ প্রত্যানিমিতাং শাপেকরাপ্রকৃত্যং শবিশোস্থা বলবত্ত্বনত ক্যায়স্থানবতারাং। ইণোযাদিরাভিতি। ইণং স্থানে স্তলাদিরাভাগমইতার্থং। যাদৌকিমিতি কলকথন্যান্থ নত্ত্বাহাতিরপেণকথন্যিতিজ্ঞাতব্যং। ঐরিত্যাদি। ইণং শিতাতানেনশিতিস্বর্গর যাদেশবিধানাদিতিভাবং। সন্ধ্যাবন্দনবেলায়াং তড়াগান্তে জিঃ আলুল্যাপদং গুপুং বুবৈরপিনবুদ্ধাতে ইতিবিদ্ধমুখনগুনে। হেদিজোত্ম ! সন্ধ্যাবন্দনবেলায়াং তড়াগান্তে জিঃ আলুল্যাপিদং গুপুং বুবৈরপিনবুদ্ধাতে ইত্বিদিধমুখনগুনে। ত্রেরিসিনবুদ্ধাতে ইত্বিভিত্তিয়াপদং গুপুং বুবৈরপিনবুদ্ধাতে ইত্বিভিত্তিয়াপদং গুপুং বুবৈরপিনবুদ্ধাতে ইত্বিভিত্তিয়াপদং গুপুং বুবৈরপিনবুদ্ধাতে

প্রভাপ্রকাশিকা।

নৈতে। অদ্যেতি লঙি নাডাগমঃ সাধুক্রিয়াবিশেষণং কর্মবা। সর্বকালগ্রহণাদদ্যত নীভূতে ভবিদ্যতিবামান্যযোগেছস্থনী। মাভবানিতি। অট্ ইনি আটি লুঙি চঙ্ টিষিঃ উপান্তহ্রস্থঃ উপাশুর্বিতিদার্গিঃ মাযোগেরুঙি নর্দ্ধি। মাযায়মিতি। আড়ভাবঃ এবম্ অসীৎ। ক্রভপদমিতিমাবয়স্থাসীম্পুর্বিত্বিত্বামন্প:লগ্রান্ত্রাতীং। নহিনবিদিতখেদমেতদীয়স্তনজঘনোম্বনেতবাপিচেতঃ। ইতিমাঘঃ। এবনিতি। মান্ত্রেত্রনির্কুবন্ধমাগ্রহণাৎদাকুবন্ধমাযোগে মান্ত্রোগেজিয়াতিপতিঃ অন্তবিধানাবাধক ছালা। ১৫৪॥

রসোর্বিসর্গঃ পদান্তে। অযজঃ আঞ্চঃ প্রচ্ছত প্রচ্ছত প্রবিত প্রহত প্রহিত প্রহত প

लिङ्गवर প্রথমোধুটাং। लिङ्गरगुव পদান্তেইযোষেচ ধুটাং প্রথমঃ।১৫৬॥

গূতপ্রকাশিকা।

নৈতইতি। অদ্যেত্যাদি। অশ্নিমহনি অদ্যদদ্যআদ্যানিপাত্যন্তে ইত্যাদিনানিপাতঃ মাশ্বশব্দোহ্ব্য়ঃ কুঞ্দিঃ ওবিকরণঃ লোপ্যোহ্ত্বন্ধঃ দস্ততঃ। অটাটদিতি প্রভাপ্রকাশিকোক্তাদতিরিক্তৃদাধ্যমিয়ৎ চঙিইল্লোপঃ স্প্রত্য়াৎহস্তনীবপঠনীয়াদ্যতন্ত্রদাবিতি দাতোদঃ লোপ্যোহ্ত্বন্ধঃ লিঙ্গবৎপ্রথমইতি
দস্ততঃ। মাশ্বমমিতি। অনিইণোন্যাদেশঃ। অদাদিতি। অদ্যোদিবিভক্তে অস্তরীট্। কাশীমিতি
কালভাবাপ্রগন্তব্যদেশাঃ কর্মাণকে মণামিতিকর্ম। যাদীরিতি। দীদি। করিব্যদিতি। ক্রিয়াতিপত্তঃ স্থতি
স্থকারেহ্নৃদন্তাদিট্নত্বক্ষেতি। ১৫৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রদোঃ। পদান্তেন্সিত্রোরসোনিবসর্গঃ। ঐচহত্মিত্যাদিরপ্রদর্শনং প্রদক্ষাৎ। ঈহ্পর্যান্তাঃ
সর্ব্রেভুবাদয়ঃ। অতনগমতি। ওবিকরণঃ অমিসন্ধিঃ। অত্যেত্যাদি। বমোবাদিগণাত্বলুপ্।
এবমিতি। অতসূতাম্ অতবন্। আর্নইতি। যজাদিরাত্ভয়পদং। অতস্বতেতি। আদ্যুস্মাদিতি
নলোপঃ। অপুনাদিতি। ফ্রস্ফং পুনদেং এবন্ অপুনাতাং নারয়মচিনিবরং অপুনন্ আয়্রনে অপুনীত
অপুনাতাম্ অপুনতইত্যাদি। অকরবনিত্যাদি। অমি ও অব্নিত্যং করোতেরুলোপঃ অকুর্বত পূর্বনিত্য
বং।১৫৫॥

গঢপকাশিকা।

রদোরিতি। পদান্তেপ্রকরণাদ্ধাদ্বীয়পদান্তে। অত মজ্ উভয়পদী অন্চ্ ইম্ পরস্থৈপদিনো এধ্ বৃদ্ধো ঈহ্ চেফ্টায়াম্ আত্মনেপদিনো। তকু বিস্তারে যুঞ্ অভিষবস্থপন পীড়নস্থরাসন্ধানযোগমন্থনেযু পূঞ্ পবনে জ্ঞা অববোধনে ভুকুঞ্করণে উভয়পদিনঃ তত্তিদ্বিরণদর্শনাদ্যাণাউন্নেয়াঃ। ১৫৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

লিঙ্গ। লিঙ্গস্থ যথাচিত্রলিক্ তৎচিত্রলিক্ষুইত্যাদৌ অন্তেতৃতীয় ইত্যনেন অঘোমেচ প্রথমস্তথে-হাপীত্যর্থঃ। ১৫৬॥

গূতপ্রকাশিকা।

লিঙ্গবদিতি। লিঙ্গস্থ ইবলিঙ্গবং উপমানাতুপমেরেবতিরিন্টঃ বিভক্তিলোপঃ। যথালিঙ্গস্থ অন্তে অঘোষেচ প্রথমস্তব্যেহাপি অন্তে অঘোষেচ ধূটাং স্থানেপ্রথমঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ১৫৬॥ দিসোর্লোপোব্যঞ্জনাস্তাৎ। অৰুণংতৃতীয়মপীচ্ছন্ত্যেকে অৰুণদ্ অৰুদ্ধাম্ অৰুদ্ধাম্ অৰুদ্ধন্ অৰুণস্থং। ১৫৭॥

সোলোপেতস্যরোনবা। অৰুণৰুরোজীয়ণেক্ষণে কিমিতি। অৰুশ্ধম্ অৰুশ্ধ অৰুণধম্ অৰুশ্ধ অৰুশ্ধা অৰুশ্ধ অৰুশ্ধা অৰুশ্ধত অৰুশাঃ এবম্ অচ্ছিনদিত্যাদি। অভিনররীং স্তম্ অভিন্ত অভিন্দাতাম্ অভিন্দত অভনক্ অবপূর্বস্য অবাভনক্ অভজ্জাম্ অভঞ্জন্ ব্যানক্ ব্যাজ্জাম্ ব্যাঞ্জন্ অভুনক্ অভুজ্জ অভুঞ্জাতাম্ অভুঞ্জত অতৃণেট্ অতৃণাম্ অতৃং ইন্ উন্দী উনং উন্তাম্ উন্দন্ উনরম্ভসাত্ম্ উনং। ১৫৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দিসো। ব্যঞ্জনান্তধাতোঃ পরৌদিসোলোপ্যো। অরুণদিতি রুধঃ সম্বরনঃ দিলোপেপ্রথমঃ
ণত্ত্বন্ধ। তৃতীয়মপীতি। তন্মতেধস্থদঃ নেদং বহুসম্মতমিত্যস্বরসঃ। অরুদ্ধামিতি। বুধোধাৎপরস্থতামিতি
তক্ষঘটধভতইতিধঃ তুর্যোষু স্থ্যারিতিরুধোধস্থদঃ ব্যঞ্জনপরেতিপক্ষে দলোপঃ। অরুণরিতিদলোপে
প্রথমঃ তস্থারঃ রস্থাবিস্গাং বিস্গাস্থিসঃ। ১৫৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

দিসোল্লোপইতি। ব্যঞ্জনমন্তংযস্থা। ব্যঞ্জনান্তাদ্ধাতোঃ প্রয়োঃ হস্তন্তাদিসোর্ব্বিভক্ত্যোল্লোপঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অরুণদিত্যাদি। রুধির্ আবরণেআদাব্যাগমস্ততঃ নবিকরণাদীনিকার্য্যানি। ১৫৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সোলা। অরুণরিতি। তম্মরঃ বিদর্গঃ তংতেপরেপূর্ব্ববংঅরুদ্ধম্অরুদ্ধ। অরুণধমিতি। অমস্তমুদ্ধদ্বরনঃ বময়োঃ পরয়োঅরুদ্ধ অরুদ্ধা অতমুদ্ধাদ্ধরনঃ আত্মনে অরুদ্ধান্ত। অরুদ্ধতেতি অস্তোন। লোপঃ অরুদ্ধাইতি থাদ্পরেপূর্ব্ববং এবম্ অরুদ্ধম্ অরুদ্ধি অরুদ্ধহি অরুদ্ধহি । অভিনরিতি। সোলোপে প্রথমত্বেতম্মরঃ আত্মনে অভিন্তেভ্যাদি। অভনগিতি। দৌঅট্সম্বরনঃ আভ্যাং নন্ভ্যামিতিধাতুনলোপঃ ধূট্যস্তইতিজম্পরুঃ। অবপূর্বস্থেতিভন্জইতিশেষঃ। অভঞ্জনিতি। বিন্দুর্ধ্টিবর্গেতদ্বর্গ ইতিবিন্দোঞ্জঃ ধাতুনলোপঃ পূর্ববং। ব্যানগিতি। বিপূর্বস্থেঅন্জোরপম্। অভুনগিতি। ভূজোকোটিল্যে অবনার্থোভুজ্চ। অভুডেক্ততি। আত্মনেরূপং সর্ববং পূর্ববং। অত্নেডিতি। ভূহ্ধাতোঃ সম্বরনঃ ত্তেন্নেনিহলীতিনেদিলোপেহোঢ়োদাদেস্তইতিতঃ প্রথমঃ ণত্তঞ্চ। অভ্যামিতিনলোপঃ অচাং রৃদ্ধিঃ তম্মধঃ চটবর্গাবিতিধাতঃ ধাতুঢ়লোপঃ নদীর্ঘাবতারঃ। উণদিতি। আভ্যামিতিনলোপঃ অচাং রৃদ্ধিঃ দিলোপাদি। উন্তামিতিপক্ষেদলোপঃ। উনরিতি। সোলোপেপ্রথমত্বেতম্বরং পক্ষেত্নং। ১৫৮॥

অস্তেষফঃ। অপিনট্ অপিংফান্ অপিংষন্ অপিনট্ ব্যশিনট্ অন্তে ৎ অস্তু-তাম্ অস্তুবন্ অস্তৌঃ অব্ৰবীৎ অব্ৰতাম্ অব্ৰবন্ বচ্ অবক্ অবক্তাম্ বশ্ অবট্ উষ্টাম্ ঔশন্ অমাষ্ঠ অমুষ্ঠাম্ অমার্জন্ অমুজন্ আচফ আচক্ষাতান্ আচক্ষত আচষ্ঠাঃ এট্ট এডাতান্ এডত অধ্যৈত অধ্যৈয়াতাম্ অধ্যৈয়ত দ্বন্থ দিহ্ অধোক্ অধেক্ অহ্ধাম ্অত্তৰ্ সলোপে অধোক্ অধেক্ অহ্ধাম্ অদিধাম্ অহ্ধা অদোহম্ আত্মনে অহ্গ্বেত্যাদি অধুগ্বুম্ অধিগ্বম্ অহছি অহন্থ ি অহন্ধহি।১৫১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সইতিষষ্ঠ্যন্তং। সোলোপেসতিধাতৃতস্তস্থানেনবাবিক্লল্লেনরঃ স্থাদিত্যর্থঃ। সোলোপইতি। অরুণরিতি। নয়নসরোজং মমাকুলত্তেস্তনজঘনেদ্রস্থাপ্রহাসে। কমলমুথিপ্রাথনিপ্রকাত্তে অরুণরুরো-জৌয়গেক্ষণেকিমিতীতিপ্রাচীনপদ্যমিদং। অচ্ছিনদিত্যাদীতি। ছিদির্ছেদনেদৌ অভাগমঃ চুগাগমঃ সম্বরনঃদিলোপেদস্যতঃ আদিনা অচ্ছিস্তাম্ অচ্ছিন্দন্নিত্যাদি। অভিনরিত্যাদি। ভিদির্দ্বিধাকরণে। অভনগিত্যাদিভন্জোআমদিনে। ব্যানগিত্যাদি। অন্জুব্যক্তিমর্ঘণঅক্ষণকান্তিগতিরু অচাং রৃদ্ধিঃ সম্বরনঃ খাতুনলোপঃ দিলোপঃ ধুট্যন্তেচ চজোঃ কঃ স্থাদিতিজস্থকঃ । ব্যাঙ্ক্তামিত্যাদিদয়েঅস্বরনঃ ধাতুনলোপঃ পূর্ব্বত্রজম্মকঃ উভয়ত্রবিন্দুর্ধুটিবর্গেতদ্বর্গপঞ্চমইতি ক্রমেণঙ্ঞো। অভুনগিত্যাদি। ভুজো কোটিলে কোটিল্যং বক্রত্বং ভুজীপালনাভ্যবহারয়োঃ পালনার্থভুজ্পরস্থৈপদী । অভ্যবহারার্থভুজঃ অনবনে ভুজইত্যাত্মনেপদং। অত্ণেডিত্যাদি। তৃহ্ হিংসায়াং। অত্ণামিত্যাদিদ্বয়েবিন্দুর্ধৃটিপূর্বত্রবর্গেত্বর্গ পঞ্চমইতিবিন্দোর্ণঃ। উন্দীতি। উন্দী উৎক্লেদনেতচ্চার্দ্রীভাবঃ। উনরম্ভদেতি। স্বমস্ভদাজলেনওনঃ আর্দ্রভাবং 'নয়েত্যর্থঃ। অস্তোহর্ণস্তোয়পানীয়েত্যাদ্যমরঃ। এবং উত্তম্ উত্ত উনদম্ উন্দ্র উন্দা। ১৫৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অন্তে। অপিনডিতি। পিষোদিলোপেষ্টঃ। অপিষ্টামিতি। ধ্কারাচ্চেতিটঃ। অপিনডিতি সেরপং। ব্যশিন্ডিতি। শিষ্ঌবিদরণেশিষঃ ষক্টঃ। অদাদিমাহঅস্তোদিত্যাদিনা। অনভ্যস্তস্থেতিঔ অব্রবীৎক্রব ঈটপরাদিরিতি ঈট্গুণঃ। অবগিতি। চঃ কুঃ। অবডিতি। ধুট্যন্তেচেতিশঃ যথেঅস্তে ষষ্টঃ। ঔকীমিত্যাদি। গ্রহিজ্যেতিসম্প্রসারণেঅচাং রুদ্ধিঃ সামাক্তস্যবিশেষতোন্যুনবলত্বাদাদোসম্প্র-সারণং পরোক্তত্বাচ্চ। অমার্ফে তি। মূজঃ পূর্বেবিষ্ট্রমুজোগুণিনির্দ্ধিঃ স্থাদিতির্দ্ধিঃ ভ্রজ্জাদিত্বাজ্জ- শ্রষঃ দিলোপেটঃ দরিছিভাবঃ। অমার্জনিতি। অচ্যগুণেতুবেতিবার্দ্ধিঃ। আচফেতি। আত্মনেদংযোগাদিককারলুক্। আচক্ষতইতি। অন্তম্মনলোপঃ। আচষ্ঠাইতি। যাদিপরেআদিক-ঈড্রুচাদিঃ রুদ্ধোতফঃ। অধ্যৈয়াতামিতি। অধিইঙু ইয়াদেশেকুতেরুদ্ধিঃ। লোপেষকারাচ্চেতিঠঃ। অধোগিতি। দিলোপেদাদিহোঘঃ দিসলুপ্যপীতিচতুর্থাদিঃ ঘশুকঃ এবমধেক্। অন্নগামিতি। হশুঘত্তে ঘটধভতইতিতস্তধঃ তুর্য্যেষিতিগঃ। আত্মনেইতি। যজাদিত্বাৎ। অত্তশ্বেত্যাদি আদিপদাৎ অতুহা-তাম্ অত্তত। অত্থমিতি। ঘড়েস্ধাকারয়োরিতি হস্যাঘঃ ভূর্য্যেষিতিঘস্থাগঃ। ১৫৯॥

অট্ন্যাদদোদিনি॥ অদঃ পরোইট্ন্যাদ্দিনিপরে। আদং আতাম্ আদন্ ১৬০॥

অন্তেরীট্। দিনিপরে। অস আদিরাট্ আসীৎ আস্থাম্ আসন্ আসীঃ।১৬১॥

উভাবপি ৰুদাদিতঃ। দিসোঃ পরয়োঃ উভৌশ্বটিটোস্যাতাং। শ্বরোদং অরোদীৎ অশ্বপৎ অশ্বপীৎ অয়ক্ষৎ অয়ক্ষীৎ প্রাণৎ প্রাণীৎ অশ্বসৎ অশ্বসীৎ অরোদস্কমরোদীঃ। ১৬২॥ . . .

গূঢ়প্রকাশিকা।

অন্তইতি। অপুনিডিতাাদিপিষ্ঠসংচূর্ণনে। ব্যশিনিডিতি। দিলোরম্ভরিমিন্। অস্তোদিবাদিক কুঁ কুঁস্তুতোঁ। অববিদিত্যাদিক ক্রেতায়াংবাচি। অববিত্যাদিবচ্পরিভাষণে। অবিভিত্যাদিবশ্কান্তো। অমান্টে ত্যাদিম্ভূশুদোঁ। আচফইত্যাদিচক্ষণ্ডদংকথনে। ঐট্রেত্যাদি। ঈড্স্তুতো অদাদিরাম্মনেপদী। অধৈতেত্যাদি। অধিপূর্ববিষ্ট্রধায়নে। অধোবিত্যাদি। তুহ্ প্রপ্রণেদিহ্ উপচয়ে এবম্ অতুহল অতুক্ষা অদিয়াম্ অদিহন্ অদিগ্ধ অদেহম্ অদিহন অদিকা আদিনা অদিহাতাম্ অদিহতঅত্যাঃ অদিগাং অত্যাম্ অদিগাম্ অদিহিত অদিহাহি অদিহাহি হিতিগ্রাহানি। শীছনদঃ তল্লক্ষণং প্রাপ্তক্তম্। ১৫৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অট্স্থাৎ। অদোবৃদ্ধিঃ অট্চ। ১৬০॥

গূতপ্রকাশিকা।

অভিত্তি। অদ্ভক্ষণে এবং সেপরেচআদঃ। ১৬০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অস্তে। আদিরাডিতি। অস্তীণ্যকারাদিত্যাদিনা আসক্ষটি আসীৎ। আসীরিতিসবিভক্তো। ১৬১ ॥

গ্তপ্ৰকাশিকা।

অন্তেরিতি। অস্তুবিবিদ্যমানে। অসআদিরাডিতি। অস্তীণ্যকারাদাদাবাডিত্যনেনাসআদো আট্তদাদিরবয়বঃ তেন আদীদিত্যত্র ঈটিতস্থাশিত্বেংপি অশিত্যস্তেভূরিত্যনেন নভাদেশ আস্ধাতুতয়া তদপ্রাপ্তে:। ১৬১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উভা। রুদ্ স্বপ্ শ্বস্ অন্ যক্ষ এতে রুধাদয়ঃ। রুদ্ স্বপ্ ইতীজ্বাধকাবিমো। অস্তত্ত অরুদিতাম্ অরুদন্ অরুদিতম্ অরুদিত অরোদম্ অরুদিব অরুদিম। ১৬২॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

উভাবপীতি। ক্রদ্ স্বপ্ শ্বস্নিযক্ষিভ্যইত্যুক্ত সূত্রগৃহীতাঃ পঞ্চরদাদয়ঃ। দিসোবিশেষত্বেন রুদ্-স্বপিত্যাদি সূত্রবিহিতেড্বাধকাবিমো। রুদাদীনামর্থাঃ রুদ্স্বপিতি সূত্রটীকায়াং প্রাগুক্তা অতোহত্ত্র-নোচ্যন্তে। অরোদইত্যাদিদ্বয়ং সবিভক্তো সাধ্যং পদান্তসকারস্থা বিদর্গইত্যধিকং। ১৬২॥ উর্বোঞ্ডनः। স্যাर। खेवाधकः প্রোর্বোर। ১৬०॥

বাসঃসন্তে। সম্যুতকারঃ ম্যাৎ ছন্তন্যান্তস্বরূপেপরে। আত্ত আন্ত অবক্ত অবস্ত অবসাতাম্ অবসত আসাতাম্ আসত অংধ্বম্ অবধ্বং ধ্বেসলোপঃ।১৬৪॥ দের্লোপে সম্যুতঃ সদা। ম্যাৎ। অহিনৎ অহিংস্তাম্ অনুণাৎ অবকাৎ অনুশিষ্ঠাং। তম্বরূপগ্রহণান্ত সম্যুতঃ অচকাস্তাম্ অবেৎ অবিক্তাং।১৬৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উর্ণো। ঔবাধকইতি। অনভ্যস্তস্তেতি ধাতৃকারঔবাধকইত্যর্থঃ। দিসোরসুবর্ত্তনাৎসেচ প্রোর্ণোঃ প্রোর্ণুবাং প্রোর্ণুবন্ ব্যঞ্জনেতনাবোপ্রাপ্তেরিহনপ্রোর্ণবিম্। ১৬৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উর্ণোরিতি। উর্ণু আচ্ছাদনে। দিসোঃ পরয়োঃ উর্ণোগুণঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ঔবাধকইতি বিশেষত্বাদিতিভাবঃ। প্রোর্ণোদিতি। পূর্ব্বস্বরস্থাচাং ব্লদ্ধিরিতি ব্লদ্ধিঃ পরস্বরস্থাগুণঃ। ১৬৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাস। আত্তেতি। আসঃ লঙাত্মনেপদেতে সম্ভতোবার্দ্ধোনর্দ্ধিঃ ফলাভাবাৎ। অবত্তেতি। বসঃ সস্তঃ। ধ্বেদলোপইতি। অন্যম্ভদ্ধেতথেত্যনেনেত্যর্থঃ। ১৬৪॥

গূতপ্রকাশিকা।

বাদইতি। তম্বরপে পরেইতানেন উভয়পদেতে পরে আদ্উপবেশনে কদিগতিশাতনয়োঃ

ণিসিচ্ম্বনে বদ্ আচ্ছাদনে ইতাদাদ্যাত্মনেপদিনাম্ অদ্ শাদ্ শ্বদামদাদি পরিম্মেপদিনাঞ্চমন্তঃ। নমু

পরিম্মেপদেমধ্যমপুরুষবহুবচনেতেপরেহিপি বদ্ নিবাদে তুদাদি পরিম্মেপদিনঃ বহুস্তভেইতি দিবাদিপরিম্মেপদিনঃ বদ্ মেহচ্ছেদাপহরণবধেয়ু ইতিচ্রাদি পরিম্মেপদিনোহিপি সংস্থানেতাদেশসম্ভবাৎ কথমদাদীনামেব

সন্তইতিবদ্দাতিচেন্ন প্রথমাদন্বিকরণস্থা দিতীয়াৎ যণ্বিকরণস্থা তৃতীয়াদিন আগমতয়া সর্কবিধিভ্যো
লোপবিধির্কলবান্ স্বরাদেশস্ততোবল্যাততোপনাগমোবলীতিস্থায়াদ্বলবতয়াতাদেশস্থা ছ্র্কলস্থবাধাৎ।

অত্তর্বাদাদেরেব প্রয়োগোদতঃ নান্সেযামিতি। অবদ্ত আসতইত্যত্রাদন্তম্মাদিত্যাদিনা অন্তস্থন
লুক্। ১৬৪ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দেল্লো। সদানপক্ষেইতি। অহিনদিতি। হিসিনবিকরণোধাতুনলোপশ্চদিলোপঃ সস্ততঃ। অহিংস্তামিতি। অস্বরনোবিন্দুঃ। অনুশাদিতি। শাসঃ সন্তঃ। অনুশিক্টামিতি। শাসঃ শিষ্। অচকাস্তামিতি। আকারেণতস্বরূপাদাধিক্যমিত্যর্থঃ। অবেদিতি। প্রসূত্রপ্রয়োগাপেক্ষয়াপ্রয়োগস্বয়ং। ১৬৫॥

বিদভাস্তাদন উঃ। অবিহঃ অনুশাস্থঃ অচকাস্থঃ অযক্ষুঃ। ব্যবস্থিত বা-শব্দাৎ নসস্তঃ অচকাস্তঃ অদ্বেট্ অদ্বিফীং। ১৬৬॥

বাদিষঃ। অনউঃস্থাৎ। অদিষুঃ অদিষন্। ১৬৭॥

আদম্ভতশ্চবা। অনউঃস্যাৎ।১৬৮॥

অত্রালুক্। অত্রবিক্তে উসি। যথা অভুঃ অভান্। আৰুঃ আরান্ আলুঃ আলান্। অত্রকিম্ অভাঃ অরাঃ অদরিদ্রাৎ অদদ্রিতাম্ জাগগুণঃ। সপরন্তব্রপরঃ পুমানজাগঃ। অজাগৃতাম্। ১৬১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

দেল্লোপইতি। দেল্লোপেদতি সম্মতঃ স্থাদিত্যর্থঃ। সদেতি নসূত্রং ছন্দোংসুরোধাদেকত্রলিখিতং। সম্মতইতি গ্রহণাৎ বাসুবৃত্তিব্বারিতা তেন সদেতিলাভইতি। অহিনদিতি। হিদিহিংসিয়াং। অনুশাদিতি। শাস্ত্রস্থানিতা। অচকাস্তামিতি। চকাস্ফানিতো। অবেদিত্যাদি।
পরসূত্রপ্রয়োগাপেক্ষয়াবিদঃ প্রয়োগদ্বয়মত্রৈবপ্রদর্শিতিমিতিজ্ঞাতব্যং। ১৬৫॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

বিদ। বিদ্ধাতোঃ অভ্যস্তদংজ্ঞকাচ্চ অন্উদ্স্থাৎ। ব্যবস্থিতেতি। বাসস্তইত্যত্ত্ৰবাশব্দস্থ ব্যবস্থাৰ্থব্বাৎ তপরেহপিচকাদোনসম্ভঃ। অন্ধেডিতি। দ্বিষ্ অপ্রীতোষ্টঃ। ১৬৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বিদেতি। অভ্যস্তদাহচর্য্যাদদাদিবিদোগ্রহণং। অযক্ষুরিতি। যক্ষ্ অদনে। ব্যবস্থিতেতি। তথাচাচকাস্তইত্যেবপ্রয়োগঃ নতু অচকাতইত্যুপীতিভাবঃ। অদ্বেডিত্যাদি। অত্যাপিপ্রয়োগদ্ধরদর্শনং পূর্ববং। ১৬৬।

गृष्धंकाणिका।

বেতি। দ্বিষ্ণাভুরজাদিরুভয়পদী। অন্টরিতিপুর্বেস্মাদপুবর্ততে। ১৬৭ ॥

गृष्यकाणिका।

আদত্তেতি। চকারগ্রহণমনউরিতি অনুবর্ত্তনার্থং। বাগ্রহণং পরত্তানুবৃত্তিবারণার্থং। ১৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা ৷

অত্রা। ভাঅভুঃ রা আরুঃ পক্ষেআরন্লাআলুঃ। অত্রকিমিতি। বিকৃতিউসিকিমিত্যর্থঃ। আদরিদ্রিতামিতি। অভ্যস্তস্থাকারইতিঈঃ নিত্যং দরিদ্রোতেরীহ্রস্বঃ। জাগৃগুণইতি। গুণিসম্ভস্পেত্যনেনেতিশেমঃ। ততাদিদোপঃ বিকৃতেইপিধাতুস্থানপায়াদিত্যর্থঃ। ১৬৯॥

অভ্যানাম্যন্তাগুণিনঃ। বিক্তেউসিস্যাঃ। অজাগকঃ। ত্বমজাগারগাঙ্গণে। অজ্হোৎ অজ্হতাম্ অজ্হবুঃ অজিহ্রয়ুঃ অবিভেৎ অবিভীতাম্।
অন্যোন্যতঃ পথিবতা বিভিতানিভোক্তো। অবিভয়ুঃ ঋগুণঃ অভ্যাসেইয্রদ্ধিঃ
ঐয়ঃ ঐয়তাম্ ঐয়কঃ ঐয়ঃ সৃত্তমনঃ অসসৃতাম্ অসসকঃ পৃত্তাপিপঃ অপিপৃতাম্
অপিপকঃ ভূঞ্অবিভঃ অবিভূতাম্ অবিভকঃ। অত্ত্যেবজুহুবুঃ হাঙ্
অজিহীত মাঙ্ অমিনীত হাক্ অজহাৎ অজহীতাম্ অজহিতাম্ অজহন্ অজহঃ
অনেনেক্ অনেনিক্তাম্ অনেনিজুরিত্যাদি। ১৭০॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অত্রেতি। প্রায়েণামান্যক্ষরসঙ্কেতিতব্যগণপদে জ্ঞাতব্যেযথা ভূপভূবাদিপরস্মৈপদী ভূআভুবাদিরাত্মনেপদী এবমন্যত্রাপি অভূরিত্যাদি। ভূসত্রায়াং রালাদানে অপ দরিদ্রোত্র্গত্তী অপ জাগৃনিদ্রাক্ষয়ে জুপ। উচিতস্বপনোহপি শেষনাগ্যেপরিত্বগোদিধি মধ্যগন্তদানীং। ভূবনত্রয়কার্য্যদর্শনায়ইতি পূর্ব্বপাদত্রিয়ং। ১৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অভ্য। অভ্যস্তাএননাম্যস্তাগুণিনঃ স্থাঃ। অজাগরুরিতি। বিদভ্যস্তাদনউঃ দর্ববিত্তিসিপুরে ত্বমজাগারণাঙ্গণেইতি। অজাগর্স্থিতেতিরফেরোরেলোপঃ शृन्वमोर्घः। র্জাগুণঃ অজিহ্রয়ুরিতি। অবিভেদিত্যাদি। ভীষিঃ ব্রস্বঃ চতুর্থস্থত্তীয়োগুণঃ ভীহাকোরীব্রমঃ পকে। আরক্ষমগ্রমবমত্যশূণিং শিতাগ্রমেকঃ পলায়তজ্বেনকুতার্ভনাদঃ। অন্তঃ পুনর্ম্মুত্রুদপ্লবতাস্তভারমত্যোহ্যতঃ পথিবতাবিভিতামিভোষ্ট্রাবিতিমাঘঃ। অবিভয়ুরিতি। উদিগুণঃ। অভাবেসইযিতি। ঋধাতোঃ স্থাদিযভ্যাদেইত্যনেন্ত্তোবৃদ্ধিঃ এযক্ররিতি। উসিগুণঃ। অসমরিতি। পৃভৃজ্মাঙ্হাঙ্কারই:। এবমবিভঃ। অত্রেত্যেবতি। বিকৃতে গুণেরোবিদর্গঃ। অপিপরিতি। উদীত্যেবেত্যর্থঃ। জুছবুরিতি। লিটিউদি উব্নগুণঃ। অজহীতামিতি। পক্ষেব্রস্থঃ। অজহিষ্ণিতি। স্বরেহগুণেইত্যালোপঃ। অজহুরিতি। আদন্তমৎপরস্থবা অনউদ্ অত্রালুক্। অনেনেগিতি। নিজ্দ্বিঃ ধাতোগুণঃ নিজ্বিজ্ বিযামিতি অভ্যাসস্থইতোগুণঃ দিলোপেজস্তকঃ। আদিনাবিজ্ বিষপ্রভৃতী-নাম। ১৬৯॥

গৃত্পকাশিকা।

অভ্যতি। স্বমজাগেতি। প্রভূতশাত্রবাকীর্ণেস্বমজাগারণাঙ্গণে। অতোজয়মভূত্রেহ্দ্যশ-ভুণাঞ্চপরাজয়ঃ। অজুহোদিত্যাদি। হুদানে শ্রীলজ্জায়াং ঞিভীভয়েঋসগতৌপৃপালনপূরণয়োঃ ভুভূঞ্ ধারণপোষণয়োঃ ওহাঙ্গতোমাঙ্মানশব্দয়োঃ ওহাক্ত্যাগেনিজির্শুদ্ধিপোষণয়োরুভয়পদী। .আদিনঃ বিজির্ পৃথগ্ভাবেবিষ্৯ব্যাপ্রোইত্যাদেশ্রহণম্। ১৬৯॥ শোপান্তনামিনোইচিতনো। উপান্তনামিনোইভ্যন্তাঞ্পিনোনস্থারচিত-নোপরে। অনেনিজম্ অনেনিজেত্যাদি। বিজ্বিষোরেবং দাঞ্ অদদাং অদতাম্ অদত্তঃ অদদন্ধাঞ্ অদধাং অধন্তাম্ অদধ্য অদধন্ আত্মনে অদত্ত অধত্ত অদধাতাম্। *। ইতিছন্তনী প্রকরণম্। *। ইত্যাখ্যাতেলিঙাদি-বিন্যাসোদ্বিতীয়ঃ। ১৭১॥ *॥ *॥

অথ ভাবেকর্মণ্যপিদর্বম্মাদাত্মনেপদং প্রান্তঃ। অতঃপরং গণনিয়তকার্য্যা-ভাবঃ কিন্তুদকর্মকাৎ কর্মণ্যকর্মকান্তাবইতি। দ্বিচনবহুবচনয়োরনভিধানাদেক-বচনতেবৈতি তিঙ্ভাবেনিয়মঃ। যথা আনন্দ্যতে সূতাসদ্ভ্যাং সদ্ভিরেবং নিদর্শনম্। কন্তাবাস্তদকর্মকাদপি প্রযুজ্যন্তে সভাষানপ্রবেষ্টব্যং ধারৈঃ তথাব্যভিচারমুদ্ভাবিতং কৈশ্চিদত্যাদি। ১৭২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নোপা। প্রপ্রোনিষেধঃ। উপান্তোনামীযেষাং তেতথাআমিঅনেনিজম্ এবং দরীদৃশীতি। বিজ্বিষোরেবমিতি। অবেবিজম্অবেবিষমিতি। অদতামিতি। দাধোরীলুক্। অদত্তেতি। ঈলো-পেলিঙ্গবংপ্রথমঃ। অদধাতামিতি। স্বরেহ্গুণেলোপ্যঃ। এবম্অদধতেত্যাদি। ইতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং রহুমালাটীকায়াং লিঙাদিবিন্যাদ্বিবরণম্। ১৭১॥ ॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

নোপান্তেতি। আদিনাঅনেনিজ্মঅনেনিক্তেত্যাদি। সামাশ্ততোজুহোত্যাদিপ্রয়োগং দর্শরতি দাঞ্জিত্যাদিনা। আর্নইতি। ঞুকুবদ্ধরাত্ত্যপদম্। অত্তেত্যাদিঅনেনিজ্ব্যোদিপর্যান্তমুদ্দীতিছন্দঃ। তত্ত্বজ্বানুগ্ যথাভুরভাইতিপ্রথমঃ পাদঃ। ইতিহাস্তনীপ্রকরণবিবরণং। ইতিশ্রীসিদ্ধনাথবিদ্যাবাগীশ-বিরচিতায়াং গুঢ়প্রকাশিকায়াং প্রয়োগরত্বমালাটীকায়াং লিঙাদিবিশ্যাসবিবরণম্। ১৭১॥ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অথ। অথশব্দেহিধিকারার্থঃ আনন্তার্য্যার্থোবা। ভাবেকশ্মণিচ বাচ্যেসর্ব্বস্মাদ্ধাতোরাত্মনেপদং প্রাহ্রিত্যর্থঃ। প্রস্তাবাদেবভাবপদাচ্চধাতোরিভিলভ্যতেভাবঃ কেবলোধাত্মর্থঃ। অতঃপরমিতি। এত-দিধি ভুবাদি দিবাদাত্যাদিগণবিভাগেন যান্মুক্তানিতানি কার্য্যাণিস্ত্যরাসমাপ্তেঃ নিয়তবিকরণাদীনাং শিতিকর্ত্তরিবিধানাং। নমুধাতুঃ সকর্মাকোহকর্মকশ্রেকভি দ্বিবিধঃ। তত্রাকর্ম্মকস্থ কর্মণোবাধাৎ সকর্মকস্থাপি ভাববিধানবাধাদিত্যনধ্যবসায় ইত্যতন্মাহ কিন্তু সকর্মকাদিতি। অনভিধানাদিতি। অপ্রসিদ্ধ্যাকেনাপ্যমুক্তত্মাদিত্যর্থঃ। ভিঙ্ভাবেতি। তিঙ্গুপেস্থাপিতভাবে ভাববিহিত তিঙ্প্রত্যয়েবা। নমু ভাবোধাতুনৈবধোধ্যতেইতিকথং তিঙ্বাচ্যঃ সম্ভবতীতিচেৎ ধাতুনাতিঙাচ মিলিম্বাবোধনাত্ত্মাচ্যতা

তত্রতৃশিতিযক্। কন্সবন্ধত্বাদগুণঃ। মন্যত ঈক্ষ্যত ইত্যাদিবজ্ঞপং। তথাগ্ম্যতে গম্যেতে গম্যন্তে নীয়তে সূয়তে ৰুচ্যতে বিদ্যুতে। ১৭৩॥ শ্লুদন্তস্যুৱগুণে। ধাত্বস্তুস্যু শ্লুকারস্য ইর্স্যাৎ। ১৭৪॥

ব্যবহারঃ। আনন্দ্যতইতি। মোদনার্থসাদকর্মকোহয়ং ধাতুঃ। সতাসদ্যামিতি। কর্ত্ত্বিবহুত্বেহপ্যে-কত্বমস্তদর্শিতং নিদর্শনমুদাহরণং। ভাবইত্যত্র তিঙ্পদব্যার্তিমাহ কৃদ্ভাবইতি। অপিনাহকর্মকঃ সমুচ্চীয়তে। সভামিতি। কর্ম্মণাভিহিতং প্রপূর্ববিশঃ সকর্মকাদপিভাবেতব্যপ্রত্যয়ঃ। উৎপূর্ববাদ্ভাবে রিনন্তস্তভাবেক্তপ্রত্যয়ঃ। ১৭২॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

शांतिनः शांतिनः तोभित्रन्तावनविशांतिनः । ताथाधतस्याधाताशांतिनः वर्धातिनः ।

অথেতি। প্রাহুরিতি। প্রক্রঞ্ ক্রঞ্জ্যাদ্যাইত্যাদিনা অন্তেরুস্ ক্রঞ্চাহাদেশঃ। প্রগ্রহণান্নাত্রাস্বরদোদ্ভাবনং। সভামিতি। সভাম্বানপ্রবেষ্টব্যং বক্তব্যম্বাসমঞ্জসং। অক্রবন্ বিক্রবন্ বাপিনরোভবতি কিল্লিয়ীতি স্মৃতিঃ। আদিনাগ্রামং গতমিত্যাদি। ১৭২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তত্র। দশানামেবলকারাণাং ভাবকর্মণোরাত্মনেপদং বিহিতং তত্রশিতামাত্মনেপদেশাধ্যস্থানুক্তত্বাৎক্রমানুরোধাচ্চ তত্রাত্মনেপদেশিতি যক্স্থাৎ। কিৎকরণং গুণপ্রতিষেধার্থমিত্যাহ কনুবন্ধেতি।
মন্যতইত্যাদি। দৈবাদিকতনাদি মন্দ্রেরপ্রপং যকি। বিদ্ঞানাদে বিদ্যতে। কচিৎ ভিদ্যতেইতি
পাঠঃ। ১৭৩॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

তত্ত্বতি। তত্ত্রভাবকর্মবাচকাত্মনেপদেশিতি। তুঃ পুনরর্থঃ। নথত্রোটি ক্রটন্বন্ধন ইত্যত্র কর্মবাচক শস্তুরাত্মনেপদীয়শিত্বাভাবান্মযক্। মন্জ্ঞানে মনুবোধনেমন্ততে। ঈক্ষ্ সন্দর্শনে ঈক্ষ্যতে আদিনাভূয়তে দৃশ্যতে হন্যতে ইত্যাদেগ্রহণং। সূয়তইতি। মুপ্রসবে ভুবাদিরদাদিঃ যুঞ্গতৌ ভুবাদিঃ মুঞ্ অভিযবাদো স্থাদিঃ যুঙ্প্রাণিগর্ভবিমোচনে অদাদিঃ মুপ্রেরণেতুদাদিঃ এতেষাং যকিরূপং। অথেত্যাদি-ইত্যাদিবক্রপমিত্যন্তমার্য্যাছন্দঃ। অথতাবে কর্মণ্যুপীতিপ্রথমঃ সর্ক্যাদাত্মনেপদং প্রাহ্রিতি দ্বিতীয়ঃ তত্ত্বতু শিতিযক্মন্তইতিতৃতীয়ঃ ঈক্ষ্যতইত্যাদিবক্রপমিতিচ্ছুর্থঃ পাদঃ।১৭৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ৠদ । খদিতি ষষ্ঠ্যেকবচনলোপান্তং। অগুণইতিগ্রহণাৎ কিরিতি গিরতীত্যাদি ইরাসিদ্ধ্যতি।১৭৪॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ৠদেতি। ৠৎদীর্ঘ শ্বকারোহস্তোযস্য স্থানাদেশেষষ্ঠী। অগুণইতি গ্রহণাৎসামান্যগুণে ইর্। ১৭৪॥ উর্স্যাদোষ্ঠ্যাৎ পরস্থস্য। উবর্ণবর্গোপধ্যানীয়াপ্তষ্ঠ্যাঃ। ১৭৫॥
অগুণেহলিরবুপাস্তোনামাদীর্ঘোভবত্যকুর্চ্চুর্য্যাঃ। তৃ তীর্য্যতে তীর্য্যতে
পূর্য্যতে ভূ ভূর্য্যতে দীব্যতে সীব্যতে। অকুর্চ্চুর্য্যাঃ কিম্ কুর্য্যতে
চুর্য্যতে। ১৭৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উর্। ওষ্ঠ্যবর্ণাৎরম্বধাত্বস্তঞ্জত উর্স্থাদগুণে। ও্ষ্ঠ্যবর্ণানাহ উবর্ণেতি। উবর্ণন্চ পবর্গন্চোপ-শ্বানীয়ন্চ ওষ্ঠজাইতিবক্ষ্যতি। ১৭৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উর্স্থাদিতি। ওপ্তেভবওষ্ঠাঃ দিগাদিভ্যোভবার্থেযইতিয়া। ওষ্ঠ্যবর্ণানাহ উবর্ণেতি। উ উ প ফ ব ভ ম উপধ্যানীয়দংজ্ঞাশ্চওষ্ঠ্যাইত্যর্থঃ। ১৭৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অগুণে। রবয়েরপান্তনামীদীর্ঘঃ স্থাদগুণেহলিপরতঃ অগুণসামান্যানুরভৌহল্ গ্রহণং তেন
করিতীত্যাদোনদীর্ঘঃ। কুর্শব্দেতুদাদিঃ চুর্ছেদনেকুটাদিঃ ধাতুনির্দেশেইঃ নকুর্জুর্য্যার্মামীদীর্ঘঃ
অমানোনানিয়েধেস্থাদিতিন এথেছিকারঃ। যদাধাতোরিত্যনুবর্তনাৎ তদিশেগণমকুর্জুর্গ্যারিতিকুরচুর্ভিন্নস্থেত্যর্থঃ শব্দোন ঞিবযুগিতি আয়াৎদিব চনং। তৃইতি। তৃপ্পবনাদো যকি ইর্অগুণই তিদীর্ঘঃ। পূর্য্যতেইতি।
পূপালনাদো ওষ্ঠ্যপর দ্বাদৃত উর্ ততোদীর্ঘঃ। ভূর্যতেইতি ভূত্তর নেক্র্যাদিঃ উর্। অগুণেইতি স্থার্থং।
কুরিত্যনেনাতি দিক্তকুরোহ পিগ্রহণাৎ কুর্যাদিত্যাদো নদার্ঘইত্যেকে। অত্যেতুধাত্বতি দিক্ত স্থার্থং প্রতন্থান্ত্যাহ্যঃ। ১৭৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

অগুণইতি। নান্তিগুণোযশ্মিন্ সচাসেইল্চেতিবিগ্রহো। বেতিছন্দোহর্থমকারঃ বোনিস্বরএব পঠিতঃ। অন্তস্থ উপসমাপবর্ত্তীতি যতীসমাসঃ নয়ব্যয়ীভাবঃ ক্লীবলিঙ্গত্বাপতেঃ। নচস্ত্রেলিঙ্গবচন-কালাশ্চাস্বতন্ত্রাণীতি ভায়াদব্যয়াভাবেহপি পুল্লিঙ্গবং ভবিতুমইতীতি বাচ্যং যতীসমাসেনসিদ্ধের্ন্যয়াশ্রম-ণস্থাভাযায় মমাপত্র সমাপবর্ত্তিপরত্বে লক্ষণাপ্রসঙ্গাচ্চ। অগুণেহলিপরেসতি অকুর্চ্চুর্ ভিন্নস্থাতোরবয়েরাক্রপান্তোহস্তমাপবর্ত্তীনামাদীর্ঘোভবতীতি বাক্যযোজনা। অগুণইত্যমুক্তেহপি প্রস্কুষ্ণাদ্যুবর্ত্তনসন্তব্যহণাদ্যাত্রতিদিউকুরোহপিনদীর্ঘঃ অন্তথা চুর্সাহচর্ঘাৎকুর্ধাতোর্থ হণাত্রস্থাদিও ভালিত। হলীত্যমুক্তেঅগুণেম্বরেহপি স্থাদিতি তছক্তং। কুর্ধাত্ত্রদাদিঃ পরস্মেপদী চুর্কুটাদিঃ পরস্মেপদী। তৃইত্যাদি। তৃপ্লবন্সস্তরণয়োঃ অভিযবেচেতি বোপদেবঃ পুপালনপুরনয়োঃ ভৃভৎর্সনাপোষণ-ধারণভর্তনেম্ব ক্র্যাদিপিরস্কুণাদিপরস্বিস্পদীদি বুক্রীড়ায়াং সিবৃতন্ত সন্তানে। ৠদক্তেত্যাদিইত্যন্তম্বনীতিচ্ছন্দঃ।১৭৬॥

কিতিহলিমাহাক্স্যভিগৈপাস্থাদামন্তস্কারঃ। এষামাকারসকারঃ স্যাৎ কিতিহলিপরে। মাঘাঙ্মেঙাং মীয়তে হীয়তে অবসীয়তে গীয়তে অন্বিকরণি-সাহচর্যাৎ পাপানেপীয়তেস্থীয়তে। হলিকিং মমতুঃ তত্তদিশেষনির্দ্ধেশাৎ গাঙ্গতৌ গায়তে পারক্ষণে পায়তে কৈ জৈ সৈ ক্ষয়ে সায়তে ওহাঙ্নির্হায়তে বিধুনা। ১৭৭॥

দাংপিদাধৌ। দাপ্ দৈপৌপন্তকো ধাতৃবর্জয়িত্বাদাধাইত্যেতোদা সংজ্ঞকৌস্তঃ। ডুদাঞ্ দানে দাণ্ দেঙ্ দো দীয়তে ডুধাঞ্ ধেট্ ধীয়তে দাপ্ দৈপোস্ত ভাজনান্যবদায়ত্তে দায়ত্তেশালয়োজনৈঃ। ১৭৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কিতি। মামানে অদাদৌমাঙ্মানেজুহোত্যাদৌমেঙ্প্রণিদানেভুবাদৌ অবপূর্বাঃ সোহত্তকর্মণি। অন্বিকরণীতি। গৈন্থাইত্যনয়োভোঁবাদিকয়োরন্বিকরণকরণাত্তন্মধ্যপতিতস্তপাধাতোরপিভোবাদিকস্ত গ্রহণমিত্যার্থঃ। মমতুরিতি। লিটঃ অতুসিঅগুণেহপি নঈঃ আকারলোপইত্যালোপঃ অট্থলোহিস্বাকিৎ-করণাৎ। তত্তিদিশেনির্দেশাদিতি। গৈস্ত তাত্যাদিবিশেননির্দেশাদের্মাভূদী। ১৭৭॥

গুঢপ্রকাশিকা।

কিতাতি। কিতাতাকুক্তেহলীতিনিদেশদামর্থ্যাৎ হল্দামান্যেহলীতাকুক্তেকিতীতিনিদেশবলাং কিৎসর্হল্দামান্যেসাদিকুতে রোকদারণং। মামানেসদাদিঃ পরিশ্রেপদীদিবাদিরাক্সনেপদীচ। ওহাক্ ত্যাগে কৈগৈশকে ভ্বাদিঃ পরিশ্রেপদী প্রতিন্তি দাবক্ষ্যাণদাসংজ্ঞকঃ নহুদামাত্রং স্বংরূপং যদিনোসংজ্ঞেতিস্থিতেঃ। মাইতিসামান্যনিদেশান্মাত্ররস্থ গ্রহণমিত্যাহ্মামাঙ্মেঙামিতি। তত্তিদিশবদান্দিতি। স্থাতিগৈইত্যাদিবিশেষকথনাদিত্যর্থঃ অত্যাদাগাইত্যাদিনিদেশঃ স্থাদিতভাবঃ। গাঙ্ ভ্বাদিঃ পাজাদাদিঃ কৈ কৈ সৈ বাতবো ভ্বাদিপরশৈপদিনঃ। ওহাঙ্গতৌজ্হোত্যাদিঃ। বিধুনাচক্রেণ নির্হাতে মেঘার্নিগ্যাতেইত্যর্থঃ। ১৭৭॥

প্রভার্ত্রকাশিকা।

দাপ। পইংযক্ত সপিং নপিং অপিং অপিং অপিচাসৌদাশেচতি অপিদাশ্চধাশেচতিদ্বন্ধ নত্বপিদিতি ধান্ত্বিক্তাপিব্ৰাপ্তিদিকে। দাসংজ্ঞকাবিত্যথেদিপদং। পিদ্যুহণেনপন্তানুবন্ধত্যালোপ্যবাং দারপ্রেপিনেরপিনারপত্তিবর্জনমিত্যথঃ। অতোড়দাঞ্দানেইত্যাদেরপিদারপ্রেপপতিঃ দৈপোহপ্যজন্তবেনাকারে-সত্যেতত্বপদাতইতিবর্জনং। এতেনদাপ্ দৈপোর্বর্জনং কথং পকারান্তপাঠক্ত স্ব্রোক্তত্বাদাপোদারপ্রাসম্ভবাং দৈপঃ সন্ধ্যক্ষরান্তবাভাবেনাকারাভাবেদারপ্রাসম্ভবাচ্চেতি প্রভ্যক্তং পিত্বেন পাক্তম্পাত্বাভাবাং। যতু অদান্দাধাইতিসূত্রং ক্রাবর্জনদামর্থ্যাং পকারোহনুবন্ধঃ নাতোদাধাতুনাক্ত্যারপ্যং নবানুবন্ধঃ কৃতঃ সন্ধ্যক্ষরান্তব্বং বর্জনম্মজ্ঞাদিতি তদপিজ্ঞাপকত্বক্ষনং কল্পন্বেতি। দৈপ্দাপোঃ স্থিতিঃ দাসংজ্ঞকত্বাভাবেনকিতি হলীতি যকিনেকারঃ। দায়ন্তইতি। এচামিত্যাদিনাআত্বম্। ১৭৮॥

নানীযকিদীর্ঘঃ স্যাৎ। জীয়তে হীয়তে স্তুয়তে। ১৭৯॥
তনস্তাবা। যকিপরে। তন্যতে তায়তে। ১৮০॥
খাকারস্যরি। যকিস্যাং। কিন্নতে হ্রিয়তে। ১৮১॥
জাএর্ত্তিসংযোগান্তখাতাং গুণঃ। যকিপরে। জাগর্য্যতে অর্য্যতে
স্মর্য্যতে স্বর্য্যতে। ১৮২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

দাহপিদিতি। দাণিত্যাদি। দাণ্দানে দেঙ্পালনে দো অবথগুনে তচ্চছেদঃ ডুধাঞ্ধারণ-পোষণয়োঃ দাপ্ছেদনেদৈপ্শোধনে দাপ্দৈপোঃ পিৎকরণং দাসংজ্ঞকনিরাকরণার্থং। ভাজনানীতি। পাত্রাণিঅবদায়ন্তেশোদ্ধায়েইতার্থঃ। পাত্রামত্রঞভাজনমিত্যমরঃ। দায়ন্তইতি। ছিন্দান্তেইতার্থঃ।১৭৮।

প্রভাপ্রক†শিকা।

নামী। হীয়তইতি। হিগতো। কচিৎ হুয়তইতিপাঠঃ দ্বেঞঃ সম্প্রদারণেদীঘঃ হুধাতোর্কা। ১৭৯॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

ं নামীতি। যকিপরেধারন্তনামীদীর্ঘঃ স্থাদিত্যর্থঃ। জীয়তইত্যাদি। জিজয়ে। ছুয়তইতি পাঠে-স্বেঞাকানেইত্যস্ত্লানেইত্যস্থবারূপং। ফুঞ্স্ততো। ১৭৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

তনেতি। তুর্বিস্তারেইত্যস্থানেয়কিপরেবাতাস্থাদিত্যর্থঃ। খন্ জন্ সন্বেতি বক্ষ্যমাণসূত্রেবা-গ্রহণাৎ তৎপূর্ববর্ত্তিসূত্রকার্য্যাণাং নিত্যস্কং। তেনপরত্রনবানুস্কৃতিঃ। কিতিহলীত্যাদি এতৎসূত্র-পর্য্যন্ত্রমুপগীতিছেন্দঃ। ১৮০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঝকা। হ্রম্মকারস্থরিস্থাং। ১৮১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঋকারস্থেতি। রীতিছন্দোহনুরোধাই বিভক্তীনাঞ্চলোপনমিতি দিলোপঃ। ক্রিয়তেইজি ভুকুঞ্করণে। ব্রিয়তেইতি হৃঞ্হরণে। ১৮১॥

প্রভাপ্রকাশিক। 1

জাগ্র। জাগৃধাদংযোগস্থান্তঋৎ এষাং গুণঃ। জাগৃধাতোগুণইত্যত্ততদীয় ঋকারস্থাণইত্যর্থঃ ঝুমুর্যতেম্মু স্বুগুণঃ। ১৮২॥ প্রাদিভ্যউহের্থ্রেযেকিতি। অহ্যহুতে সমুহুতে যপিসমুহ্ছ। ১৮৩॥ শীঙঃ শয়ীরিতঃ। শয্যতে যপিসং শয্য। ১৮৪॥

খন্ জন্ সন্বা খাজা সাঃ স্থাঃ। খন্তে খায়তে জন্তে জায়তে সন্তে সায়তে প্রখায়। ১৮৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

জাগ্রেতি। জাগ্নিদ্রাক্ষয়েজাগৃশ্চঋগতিপ্রাপণয়োঃ ভুবাদিপরস্মৈপদী ঋগতৌজুহোত্যাদি-পরস্মৈপদীঋণ্চ সংযোগস্তমংযুক্তবর্ণস্থান্তঃ সংযোগান্তঃ সচাসৌঋদৃকারশ্চেতি সচেতিদ্বন্ধঃ তেষাং। অত্রঋসামান্তগ্রহণার্থমন্ত্রীতি উণাদিকতিপ্রত্যয়ান্তস্তগ্রহণং কৃত্রমন্তথাজাগৃসাহচর্যাদদাদ্যন্তর্গতজুহোত্যাদি-ঋগ্রহণেইয়ন্ত্রীত্যুক্তং স্থাৎ নবাভুবাদিঋমাত্রস্তগ্রহণম্ ঋচ্ছতীত্যকরণাৎ। স্মর্য্যতইতি। স্মৃচিন্তায়াং ভুবাদিপরস্মৈপদিনোর্মপং। স্বর্য্যতইতি। স্থান্দোপতাপয়োরিতি ভুবাদিপরস্মৈপদিনঃ স্থ্ননেইতি-ক্যোদিপরস্মৈপদিনশ্বরূপং। ১৮২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রাদি। প্রাদিভ্যঃ পরস্থ ভুবাদ্যাত্মনেপদিন উহ্ধাতোরহ্রস্বঃ। যকোহনুর্তৌ যেকিতীতি নির্দেশঃ কিতিয়মাত্রে হ্রস্বার্থঃ তেন যশ্চগৃহতে। অভ্যুহ্তইত্যাদি। অভি সম্পূর্ব উহেহ্রস্বঃ। সমুহেতি-ত্র্বাস্থানাদিউরাৎ যপঃ কিন্ত্রং। যতু অনুক্রমপ্যুহতিপস্থিতোজনইতি গণোক্তস্থানিত্যত্বাৎ। ১৮৩॥

গূঢপ্রকাশিকা।

প্রাদীতি। উহ্বিতর্কে ছুবাদিরাত্মনেপদী। সমুহোতি। সমউহঃ ক্রাপ্রত্যয়ঃ ততঃপ্রাদিসমাসে অনঞ্ সমাসেক্রোযপিতি ক্রাস্থানে যপ্ ততোহ্রস্থঃ ততঃ প্রথমৈকবচনেসর্কাব্যয়াদিতিসিলুক্। ১৮৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শীঙঃ। কিদযশ্চানুবর্ততে। ১৮৪॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

শীঙইতি। যেকিতিপরে শীঙঃ স্থানে শয় সরিতঃ ক্থিতইত্যর্থঃ। সর্ কথনে কর্মাণিক্রেইটি সরিত-ইতি। অত্রসরিতইতি পদাৎসামান্ত শীঙঃ প্রাপ্তিস্তেন নপ্রাদিভ্যইত্যস্থানুর্তিঃ। ১৮৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

খন্। খন্ অবদারণে জন্ মন্ এষাং বাকি দেয়খাজাসা আদেশাঃ স্তঃ। প্রখায়েতি। পক্ষে-প্রথম্য। ১৮৫॥

গূঢপ্রকাশিকা।

খনিতি। জনীপ্রাত্মভাবে দিবাদিরাত্মনেপদী সন্ সম্ভক্তো সাচসেবা ভুবাদি পরশ্বৈপদী। বা শব্দস্য মধ্যগৃহীতত্বান্মপরত্রানুস্বতিঃ। স্ত্রীছন্দঃ গোস্ত্রীতি ছন্দোমঞ্জরীকৃতলক্ষণাৎ অস্তার্যস্তরগ্রহণঃ পাদশ্বেৎ স্ত্রীনামছন্দইতি। ১৮৫॥ বচিম্বপ্ যজ্ বদি বপি শ্বিঞ্ব্যেঞ বহিহ্বয়াম্। বসঃ সঃ ষশ্চৈকক্তবঃ কিতিস্যাৎ সম্প্রদারণম্। উচ্যতে স্থপ্যতে ইজ্যতে উদ্যতে উপ্যতে দীর্ঘঃ শূয়তে উয়তে। এককৃত্বইতি বচনাৎ নপুনঃ বীয়তে উহ্যতে হ্য়তে বস-উষ্যতে। ১৮৬॥

গ্রহিজ্যাব্যধ্ বশি প্রচ্ছি ব্রশ্চি ভ্রজ্জি ব্যচোইগুণে। সম্প্রদারণং স্যাৎ। গৃহুতে জ্যাজিনাতি জীয়তে ব্যধ্বিধ্যতি অবিধ্যৎ উশ্যতে পৃচ্ছ্যতে পৃচ্ছ্যতে রশ্চ্যতাং ভূজ্জতাং বিচ্চাতে। অগুণেকিংবটি। ১৮৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বচি। এবাং সম্প্রদারণং বদঃ সম্প্রদারণং বদঃ য*চস্তাৎ এককৃত্ব একবারং কিতাঁতি কিৎমাত্রে। দীর্ঘইতি। শ্বিউত্বেনামাযকীতিদীর্ঘঃ। ঊয়তেইতি। বেঞ্তন্তসন্তানে। বায়তেইতিব্যেঞ্ সম্বরণে সম্প্রদারণং দীর্ঘঃ। নপুনরিতি। বীস্থানে পুনন্ধ উরিত্যর্থঃ। ১৮৬॥

গূঢপ্রকাশিকা।

বচাঁতি। বচ্পরিভাষণে ভুবাদি পরিশ্বপদাঁ ঞিষপ্ শয়নে অদাদিপরিশ্বপদাঁ যজ্দেব পূজাসঙ্গতকরণদানে ভুবাদিরুভয়পদা। বিপিমাহচর্যাৎবদোহস্তম্বাদে এইণং তেন বদ্যক্তায়াং বাচিভুবাদি পরিশ্বপদা
তক্ষগ্রহণং। বদ্দৈর্ঘাইতি ভুবাদি পরিশ্বপদা বর্গিবাদিশেচং বদাতে। ভুবপ্ বীজপ্রক্ষেপণ গর্ভাধানমুণ্ডনের ভুবাদিরুভয়পদা টু ভ্রিগতে ভুবাদিপরিশ্বপদা বেঞ্ তস্তমন্তানে ভুবাদিরুভয়পদাব্যঞ্ সম্বরণে
তচ্চাচ্ছাদনং ভুবাদিরুভয়পদা ব্যঞ্জইত্যকারশ্বদোর্থঃ বহ্প্রাপণে ভুবাদিরুভয়পদাহ্বেঞ্স্পর্জার্জানয়োঃ
ভুবাদিরুভয়পদা বস্ নিবাসে ভুবাদি পরিশ্বপদা সাহচর্যাদস্মগ্রহণং তেন বস্ আচ্ছাদনে অদাদিপরিশ্বপদাত্যন্ত বস্ততে এবমন্তত্ত। ১৮৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গ্রহি। জিনাতীতি। নামগুণঃ। বিধ্যতীতি যণ্। বিচ্যতইতি। ব্যচ্ব্যক্তীকরণে ভুবাদিঃ বঠীতি শং যং। ১৮৭।

গৃঢ়প্রকাশিকা।

এইছি। এই উপাদানে ক্র্যাদির ভয়পদা জ্যাবয়োহানো জ্যাদিপরস্মৈপদী বশ্কান্তো অদাদিপরস্মৈপদী প্রত্যাদিনার পাতুরয়মেকছকারয়ুক্তঃ সূত্তেপ্রচ্ছাতি ছন্দোর্থণচ আগমঃ তেন পৃচ্ছাতে ইত্যাদো অনুবন্ধচকারলোপে আঙ্ মাঙিত্যাদিনার গাগমঃ। নচ প্রচ্ছাতিছয়য়পাঠেকাক্ষতিরিতিবাচ্যং তথাসতি যঙ্ লুগন্তস্ম পরিপন্তী ত্যাদি প্রয়োগামুপতেঃ পৃক্ষছলোপস্মস্ত্রাভাবাৎ। ওব্রন্ত ছেদনেভ্রুপাকে ব্যচ্প্রভারণব্যক্তাকরণয়োস্তাদি পরস্মৈপদিনঃ। ১৮৭॥

এচাৎ পাঠস্থিতাস্তানামাকারোবিষয়েইননঃ। ত্রৈত্রায়তে ধ্যায়তাং শ্লাতা শোশায়তে দোদাতা ধেট্ ধাতা। পাঠসতঃকিং জেতা স্তোতা। অশ্বিষয়েন ধয়তি। বিষয়গ্রহণাৎ পরিশ্লঃ পরিশ্লঃ। ১৮৮॥

আকারলুগদরিদ্রাতেরশিত্যসননাকণি। সন্তান্তাকণ্ ভিয়েংশিতি দরিদ্রা-তেরাকারলুক্স্যাৎ। দরিদ্রিতা দরিদ্যুতে। অশিতিকিং দরিদ্রাতি সনাদি দি-দরিদ্রোসতি দরিদ্রাণং দরিদ্রারকঃ। ১৮১॥

দী ধী বে ব্যৌ বিহায়াম্ গুণরদ্বোরভাজনং। যেবর্ণয়োগুয়োরীলুক্। দীধ্যতে বেব্যতে যথা। ইবর্ণে দীধীত অদীধি দীধিতা বেবীঙ এবং। ১৯০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

এচাং। পাঠস্থিতত্বেসতি অস্তানামেচামাভবতি অননোবিষয়ে। স্নাতেত্যাদি। ক্লৈগাত্রবিনামে। শোতন্করণে। দাতাধাতেতি। শস্তন্থাং রূপং। ধেট্পানে। জেতেতি। গুণেক্তজেস্থিতিঃ নতু ধাতু-পাঠস্থ এচিতি। ধয়তীতি অনিগুণঃ। অননীত্যেবাস্তাকং বিষয়গ্রহণেনেত্যতআহ বিষয়গ্রহণাদিতি। অন্তির্নবিষয়ে পরিপ্লইত্যাদে অন্তাপিচেতি প্রাদাবাদন্তাৎ ডোনস্থাৎ তন্মিন্ সতিপ্রত্যয়াৎ পূর্বমাম্বে প্রিপ্লায়তীতি ডঃ। ১৮৮॥

গুড়প্রকাশিকা।

এচামিতি। অননোহন্ভিন্নস্ত বিষয়েপাঠস্থিতান্তানামেচাংস্থানে আকারঃ স্থাদিত্যম্বয়ঃ। 'ত্রে-ইত্যাদি। ত্রৈঙপালনেভু ধ্যৈচিন্তায়াং ভুপ শ্লৈহর্ষকান্তিক্ষয়ে গাত্রবিনামেইতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং ভূপ শোতন্করণেদোঅবথণ্ডনে দিবাদিপরশৈরপদিনো ধেট্ ভূবাদিপরশৈরপদী। অত্রচাননোবিষয়ইতি যথাসম্ভব-মদ্রেতি নতুদর্বত্র। জেতেত্যাদি। জিজয়ে ভুপ ফুঁঞ্স্ততো অপ পরিপূর্বঃ গ্লৈহর্ষধাতুক্ষয়ে ভুপ। ১৮৮॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

আকা। সন্ ইচ্ছাসন্ অনট্ অকণ্চ নসন্ অন্ অকণ্ অসনাকণ্ ঘলে নঞ্সমাসঃ। দরি-দ্রিতেত্যাদি। শ্বস্তব্যামিট্ পরত্র যক্। দরিদ্রাসন্দিঃ সভাবর্ণ ইরভ্যাসে বেট্ তয়া নেট্। দরিদ্রাণ মিত্যাদি। ভাবেহনট্ অকণ্ তৃচাবিত্যকণ্। ১৮৯॥.

গূচপ্ৰকাশিকা।

আকারেতি। অনোহকার হলে। হর্পাইর্পাইর্পাইর্পাইর্পাইর্পাইনির্পার্থিত আকারিলুক্। দরিদ্রাতে ইতিভাবে যক্ দরিদ্রোয়কইতি অকণি ইত্বৎ কার্যামিত্যাদিনা ইত্বদ্ধাবে ইচ্যাদন্তেভ্যোযুডিতি যাগমঃ। ১৮৯॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

দীধী। আমং বিহায় অক্সপ্রতায়ে দীধীবেবীধাতৃগুণরদ্বোর্ভাজনং নস্থাতাং। দীধীঙ্ দীপ্তাদৌ যিক ঈলুক্ দীধীতেতি। লিঙঈত। অদীধীতি ইচি ঈলুক্। দীধিতেতি। ঈট্ঈলোপঃ। এবমিতি। বেবীত অবেবি বেবিতা। ১৯০॥ অশিত্যস্তৈৰ্ভূঃ। ভূয়তে ভূয়তাং ভবিতা। অশিতিকিম্ অস্তি সাসীং।১৯১॥ ব্ৰুবোবচ্। অশিতিস্যাৎ। উচ্যতে ঔচ্যত বক্তাউ বাচউচে। অশিতী-ত্যেব ঈডাগমস্যপ্ৰত্যয়াদিশ্বাৎ শিতিমাভূং ব্ৰবীতি ব্ৰুতঃ।১৯২॥

অজেরীরননাদিয়। অশিতিস্যাৎ। বীয়তে বেতা। অননাদিম্বিতি কিম্
অন্ ণি যঞ্ অল্ কাপ্ স্থ মাভূৎ গামভ্যাজদণ্ডেন ণিঃ আজিঃ যঞ্জিমমাজঃ
সাধুনাম্ অলিসমজঃ পশ্নাম্ উদজঃ পশুপ্রেরণং ক্যপি সমজ্যা। আদের্ব্যব্দ্রাইনট্ তৃচশ্চবাগ্রহণং প্রবরণং প্রাজনং প্রবেতা প্রাজিতা। ১৯০॥

गृष्धकाणिका।

দীধীতি। দীধীঙ্ দীপ্তিক্রীড়নয়োঃ অদাদিঃ বেবীঙ্ গতিব্যাপ্তি ইচ্ছাক্ষেপণস্বাদন গর্ভগ্রহণেয়ু অদাদিঃ তৌ আমং বিহায়গুণরুদ্ধোরভাজনং গুণরুদ্ধাধারোনস্থাতাং যইবর্ণয়োঃ পরয়োঃ তয়োদীধীবে-ব্যারীলুগিত্যস্বয়ঃ। অদীধীতি। শ্বন্তব্যাঃ স্তবিভক্তোকশ্মণিস্তেম্খাদিট্স্তম্খলোপশ্চেতি ইট্ স্তলোপশ্চ। এবমিতি। যথাদীধীঙ্ক্তথাবেবীঙ্গেহপীত্যর্থঃ। ১৯০॥

গূতপ্রকাশিকা।

অশিতীতি। অশিতিপরে সতিঅস্তেঃ স্থানেভূরিাদেশঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ভূয়তইত্যাদি। বর্ত্তমানাতে বিভক্তোযকিভাদেশঃ। লোটস্থাং পূর্ববিৎ। শ্বস্তথাতাভূঃ ততহট্গুণঃ। অস্তীতি লটস্তো। আসীদিতি। হস্তত্যাদিঃ অস্তাণ্ যকারদাদাবাট্ অস্তেরাট্ দিসিপরেইতি ঈট্ লোপ্যোহসুবদ্ধঃ লিঙ্গবৎপ্রথমোধুটামিতি দস্ততঃ। ঈটিভাদেশাভাবকারণমস্তেরীভিতিসূত্রব্যাখ্যায়ামুক্তং। ১৯১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রবো। উচ্যতেইত্যাদি। বর্ত্তমানাহস্তত্যোধ্যকিসম্প্রদারণং বৃদ্ধিশ্চ। উবাচেতি। অভ্যাদেগ্রহিবচ্যাদ্যোরিতি অভ্যাদেসম্প্রদারণং। উচ্ইতি। লিটএবিভক্তো ধাতাবভ্যাদেচসম্প্রদারণং। ব্রবীতিইতি। পরাদিরিত্যনেনপ্রত্যয়াবয়বস্থাদীটইত্যর্থঃ। ১৯২॥

গূটপ্রকাশিকা।

ক্রবইতি। ক্রঞ্ব্যক্রায়াংবাচি। বক্তেতি। শ্বস্তখাস্তাবিভক্তো বচাদেশেধুট্যস্তেচচজোঃ কঃ স্থাদিতিচস্তকঃ। ঈডাগমস্তপ্রত্যয়াদিয়াদিতি। ক্রবঈটপরাদির্ব্যঞ্জনেতনাবিত্যনেন। ১৯২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অজে। অজ্গতিক্ষেপণয়োঃ তস্তবীস্থাৎ ন অনাদিষুঅননাদিষুঅনাদিভিমেংশিতীত্যর্থঃ। বীয়তইত্যাদি। যক্ নেট্ একাচ্ছাৎ। গামভ্যাজেতি। অভ্যাঙ্পুর্বঅজঃ হৌ অন্বিকরণঃ। ণিরিতি অবর্জনাভোজনয়োশ্চক্ষণ্ডঃ খ্যাঞ্ বিধীয়তে। অশিতিপরে। আখ্যায়তে আখ্যাসীফ আখ্যাতা। অবর্জনাভোজনয়োঃকিং পাপাসঙ্গঃ সাধুভিশ্চক্ষণীয়ঃ বর্জ্জ্যইত্যর্থঃ। নৃচক্ষারাক্ষসী। অশিতীত্যেব আচফে। * । ইতিযক্-প্রকরণম্। ১৯৪॥ *॥

অজাদিভ্যস্ত্রণিঃ। সমাজইতি। সম্পূর্বাদজঃ ঘঞ্ অল্ সমজঃ। পশূনাং সমজোহত্যেষাং সমাজোহথ-সধিমিণাং। সমজ্যেতি। ব্রজি যজি সমজাদিভ্যঃ ক্যপ্স্রিয়ামা। প্রবয়ণমিত্যাদি। অজোবীগুণঃ একস্বরম্বাদনিট্ প্রাজিতেতিইট্। ১৯৩॥ '

গূতপ্রকাশিকা।

অজেরিতি। অজ্ধাতুঃ ভূঁ বাদিপর স্থৈপদী। গামিতি। দণ্ডেনকরণেনগামভ্যাজক্ষিপপ্রেরয়েতি যাবং। অজ্যতেক্ষিপ্যতেশস্ত্রাদিকমস্থামিতি আজিঃ যুদ্ধং। রণেহপ্যাজিরিত্যমরঃ। সমাজইত্যাদি। দর্শ্বব্রভাবেপ্রত্যয়ং। উদজস্ত্রপশুপ্রেরণমিতি সমজ্যাপরিষদেগু। ষ্ঠীতি প্রাজনং তোদনং তোত্তমিতিচামরঃ। প্রাজতি প্রেরয়ত্যনেনেতি করণেহনট্ লগুড়ং। প্রাজিতেতি। প্রাজতীতি তৃচ্ নিয়স্তাপ্রাজিতা যন্তাদৃতঃ ক্ষত্রাচদারথিরিত্যমরঃ। ১৯৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অব। নৃচক্ষেতি। ধাতূনামনেকার্থস্বাদ্বর্জনভোজনেঅপিঅর্থো নৃন্চফেডুঙ্ক্তঅচ্নৃচক্ষা। আচফেইতি।। সংযোগাদিককারলুক্। । ইতিযক্প্রকরণবিবরণম্। ১৯৪। ॥।

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অবর্জনেতি। চক্ষণ্ড্কথনদর্শনয়োরদাদিঃ। খ্যাঞিতিঞকুবন্ধকরণমূভয়পদার্থং। পাপেতি। যশ্মাৎ পাপাৎ স্থাদিহৈবাতিনিন্দাপুণ্যেরস্পর্শন্চলোকৈরজ্ঞঃ। অন্তেঘোরোনারকশ্চাপিতস্মাৎ পাপাসঙ্গং সাধুভিশ্চক্ষণীয়ঃ। আচফইতি তেবিভক্তোরূপং। *। ইতিগুঢ়প্রকাশিকায়াং যক্ প্রকরণবিবরণম্। ১৯৪। *॥ ভবিষ্যতি শ্বঃ প্রভৃতীকালেশ্বন্ধু নারিতা। তা তারে তারস্ তাসিতাশ্বস্ তাশ্ব তাশ্বি তাশ্বস্। তাতারে তারস্ তাসে তাসাথে তাধে তাহে তাশ্বহে তাশ্বহে ইয়ং লুট্চ।১৯৫॥

অস্যাং কূপেঃ স্যাত্ত্রম্। পদং স্যাৎ। কল্প্তা কল্প্তার ইত্যাদি। ১৯৬॥

ইট্তাসে পরতোভবেং। কম্পিতাসে। তাসেকি কল্প্তাসাথে কল্প্তাধে ।১৯৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভবি। খঃ প্রভৃতির্যান্তখঃ প্রভৃতে ভাবিনিকালেশস্তনীবিভক্তিরুদীরিতাঃ কথিতাঃ প্রাচীনৈরিত্যর্থঃ। অদ্যতন ভবিষ্যতিকালেলুট্ সংজ্ঞান্তিপ্রাদয়োভবন্তী তিসারঃ। পরিদেবনেচ অদ্যতনে ভবিষ্যত্যপিশস্তনী অদ্যায়ং কদাগন্তা। ইয়ং খলুকদাগন্তাযৈব পাদোদধাতিমে। বাক্যগম্যেতু পরিদেবনেনস্তাৎ। অবসায়োভবিষ্যামি তুষ্থস্তাস্তকদান্তহমিতিভট্টিঃ। অদ্যতনানদ্যতনসমূদায়েনস্তাৎ অদ্যশোবাগমিষ্যন্তীত্যর্থঃ।
বাক্যার্থে শস্তনী নম্তাদিতিত্বর্গঃ। মাসেনগমিষ্যতি অত্রাপি স্তাদিত্যন্তে। তথাচভট্টিঃ অযোধ্যাং যঃ
প্রযাতাদিকপে ভরতপালিতামিতি। অন্ত্যুত্তনভূতেভাবিনিচ, হস্তনীচোক্তে তেক্রিয়ায়াঃ দামীপ্যেচনস্তঃ
আজ্মায়াঃ ধর্মকর্মাণি করিষ্যতি অনন্তরায়ামন্তম্যাং কাশীমগমৎ আগামিন্যাং গমিষ্যতি। যতঃ প্রভৃভ্যেব
বিমুক্তিশৈশবস্ততঃ সমারভ্যরণেয়ু যুদ্ধলঃ। ততোহপি জীবিষ্যতি যাবদেবসবিধাস্ততে তাবদরাতি
সংক্ষয়মিতি ব্যোষে। যেয়ং গতাপঞ্চদশীদশাস্ত স্তস্তাং ব্যক্তেতীশ্বময়ং সমুদ্ধে। আগামিনীচাপিচ
পৌর্ণমানী তত্রাপি জেষ্যত্যখিলানরাতীনিতি। ১৯৫॥

গঢপ্ৰকাশিক। 1

ভবিষ্যতীতি। অনাগতেহহ্নিশ্বঃ সদ্য আদ্যানিপাত্যস্তইত্যাদিনানিপাতুতঃ। শস্তনীতি। খোভবাশস্তনীকালার্থকাব্যয়াদিত্যাদিনাতনট্ টিব্রাদী। উৎপূর্বাঈরঃ ক্রেইট্। শস্তনীবিভক্তিমাহ তাতারাবিত্যাদিনা। উদীরিতাইতিপদাৎ পরিবেদনে অদ্যতনভবিষ্যতিচ শস্তনীস্থাত্ত্বদাহরণং প্রভা-প্রকাশিকায়ামবলোকনীয়ং। ১৯৫॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিক।।

অস্যাং। শস্তত্যাং ক্রপেরাল্মনেপদিন উভয়পদমিত্যর্থঃ। কল্পেতি। গুণেক্রপেরোলইতিরোলঃ ত্রমুভয়পদরূপং। ১৯৬॥

গুডপ্রকাশিকা।

অস্থামিতি। অসাং শ্বস্তুতামিত্যর্থঃ। অস্থামিতিস্থার্থং ছন্দোহর্থঞ। রূপুদামর্থ্যেধাতু-নির্দ্দেশেইঃ। আদিনা কল্প্তাদি কল্প্তাম্থঃ কল্প্তাম্বকল্প্তামীত্যাদি। ১৯৬॥

প্রভাপকাশিকা।

ইট্তা। উদনুবন্ধতয়া রূপুবেট্ তাদেইট্বিধানাদগ্যত্রপক্ষেহপিনেডিভিভাবঃ। ভেন কলপ্রাসাথেকলপ্রাধেরইত্যাদি। ১৯৭॥ অনেকাচঃ শ্বিশীঙ্ ডীশ্রিক্ষু যুক্ষ্ণ সুরু ধ্রঞঃ। উদ্দন্তা শৈচত এবাজন্তাঃ সেটো ২পরেহনিটঃ। ইতিনিয়নালেট্ দাতা ধাতা গুণঃ এতান্তোতাকর্তা। ১৯৮॥ দীঙ্মীনাতি মিনোতীনামেচামাত্বং। দীঙ্ দাতা মাতা। ১৯৯॥ লিয়স্ত্রবা। এচ আত্বং স্যাৎ বিলাতা বিলেতা। ২০০॥

গৃতপ্रকাশিক।।

ইডিতি। তাদেপরতঃ ক্পেরিট্ ভবৈদিতি ইড্বিধানং তেনাম্যত্র উদমুবদ্ধতয়া প্রাপ্তপাক্ষি-কেটোনিষেধঃ। নচতাদে নিত্যেড্ বিধানায় সূত্রমিদমন্যত্রবৈকল্লিকেটং নবাধতইতিবাচ্যং তথাসতি ইট্তাদেপরতঃ সদেতি কৃতং স্থাদিতি। ১৯৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনে। অজন্তাঃ স্বরান্তাএতএব সেটঃ অপরে এভ্যোহপরেস্বরান্তা অনিটইত্যর্থঃ। অনেকাচোধাতবঃ সেটঃ একস্বরাঅপিকেচনসেটইত্যাহ শ্বীত্যাদি। টুওশিগতিরক্ষ্যোঃ শীঙ্ ডীঙ্ শ্রিঞ্ ক্ষু যুক্ষুস্
রঙ্ সম্ভক্তো রঞ্ উচ্চৠচ্চেতি দ্বন্ধঃ উদ্তো অন্তোযেবাং তেউদ্দন্তাঃ নিরন্পবন্ধস্মযুধাতোঃ সেট্রং
তথাপাঠাৎ পূর্বাপর সাহচর্যাচ্চ। বিঞ্ বন্ধনইত্যনন্তরং যুঞ্বন্ধনে যুনাতি যুনীতে অস্তানিট্রং যোতা
যুযুষতীতি সৈত্রেয়ে। এতেতি ইণ্ ঈগতোচ উভয়ত্র। ১৯৮॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অনেকাচইতি। শিস্থবাদি পরশৈপদী শীঙ্ স্বপ্নেহদাদিঃ ওড়ীঙ্ বিহায়সাং গতো ভুবাদিদিবাদিঃ। উজ্ঞীয়ন্তেশরাযস্যকোটিশঃ সমরাঙ্গণে। ভগ্নানামরিসৈন্তানামন্ডয়ন্তেরজাংসিচেতি কবিরহস্তে। শ্রিঞ্ সেবায়াং ভুবাদিঃ ক্ষুতীক্ষীকরণেযুমিশ্রণামিশ্রণয়োঃ রুশব্দে ক্ষুশব্দে গুস্তুতো অদাদিপরশৈপদিনা রুঙ্ জ্রোদিঃ রুঞ্বরণেভুবাদিঃ স্বাদিঃ জ্যোদিঃ। এতেতি। ইণ্গতো ঈগতো ভুবাদি পরশৈপদিনো ইণ্গতো অদাদিপরশৈপদী সর্বত্তিওং। ই্ঞ্ স্তুতো অদাদিঃ। ১৯৮॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

দীঙ্। দীঙ্ক্ষয়েমীঞ্হিংসায়াং ডুমিঞ্প্রক্ষেপণে এষামেচামাত্বং স্থাৎ। দাতেতি। গুণেকৃতে এচ্আ। মাতেত্যুভয়ত্ত। ১৯৯॥ :

গৃতপ্ৰকাশিকা।

দীঙিতি। দীঙ্দিবাদিঃ মীঞ্জ্যাদিঃ মীনাতীতিনির্দেশাৎ মীঙ্হিংসায়াং দিবাদিরাত্মনেপদী তম্মনাত্বং মেতাচুরাদিপরস্মৈপদিনোমীগতাবিত্যস্মচমেতা। মিঞ্স্বাদিঃ। এতেযামেচামাদিষ্টএচা-মাত্বং স্থাৎ যত্রৈবএচাং স্থিতিস্তত্রৈবাত্বং নতুশ্বস্তনীমাত্রেমিম্যোর্মেতি বক্ষ্যমাণসূত্রজ্ঞাপকত্বাৎ। ১৯৯॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

नियः। नोक्ट्सयर निर्वापिः नीट्सयर नेक्यापिः अतरेया अनिष्दार्था इनः। २००॥

মিন্যোর্মথলটোর্ঘেচলিয়ঃ। নআত্বং স্যাৎ। ঈষন্মরোময়ঃ খল্ ঈষল্লয়ঃ অচ্বিলয়ঃ যেপ্রলয়ঃ।২০১॥

যনস্বরাদিভিন্নানামশিতামাদিরিড্ ভবেং। অশিতাং শ্বস্তনীপ্রভৃতীনাম্। আদিরিতিবচনাং গুণিনিগুণঃ অগুণে অগুণঃ। অনেকস্বরাদিট্ ইট্যবর্ণস্লোপনং জুগুপ্সিতাদরিদ্রিতা জাগরিতা শ্বরিতা শরিতা ডয়িতা। যকার নকার স্বরাদি নিষেধাং ভূয়াং পুনাতি শিশ্রিয়ে। ২০২॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

লিয়ইতি। লিয়ইতি সামাত্যহণাত্রভয়োত্রহণং। ২০০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

মিম্যো। মিঞ্মীঞোঃ খল্ অচ্ প্রতায়য়োরেচাং নাস্থং লিয়ঃ লীধাতোঃ খলচোর্যেচনাস্বমেচঃ। ঈয়শয়ইত্যাদি। ঈয়ৼয়পুর্ববাদিত্যাদিনা খল্ প্রত্যয়ঃ অচ্পচাদিস্থাৎ। ঘইতি। স্বরাস্তেভ্যোনাস্মিঘঃ স্থাদিতি প্রলায়ন্তে সর্বেহত্তেপ্রলয়ঃ সর্বত্তিগেএচ আত্মেলব্রেপ্রতিরেধঃ। অত্যেবর্ণআইতি কতে-মিম্যভুরিত্যাদয়োনম্যঃ এবঞ্জণাভাবেনৈচোহভাবাতৎসিদ্ধিঃ। ইটোবিধিমাহ। ২০১॥

গুঢপ্রকাশিকা।

. মিম্যোরিতি। থল্ অচো: পরয়ো: মিম্যোরেচআরং নদ্যাৎ লিয়ঃ খলচো: পরয়ো: র্ঘেচপরেনএচআত্বমিতার্থঃ। যদিশস্ত্রভামেচামাত্বমিতি কথ্যতেতদাখলচোরেত্বাপ্রদক্তে নিদেধদাবৈকল্যাপত্তেরিতি। ঈষনায়ইতি ভাবকর্মণোঃ খল্। ময়ইতি পচাদিয়াৎ কর্ত্তরি অচ্। ঈষলয়ইত্যত্রাপি খল্।
বিলয়ইত্যত্রাচ্। প্রলয়ইতি। দম্বর্তঃ প্রলয়ঃ কল্পঃ কল্পান্তইত্যপীত্যমরঃ। ২০১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যন। যশ্চ নশ্চ সরশ্চ আদির্য্যোমশিতাং তদ্তিরানাস্থিতামাদিরিডাগ্যঃ স্থাৎ। যাদিং নাদিং স্বরাদিং বর্জয়িত্বাহশিতামাদিরবয়বইট্তেনপ্রতয়গ্রহণেনেটোগ্রহণাৎ প্রতয়য়য়গুণিত্বেইগুণিত্বেবাইটো-গুণিত্বেইতার্থঃ। ক্রমশউদাহরতি অনেকস্বরাদিতি। জুগুপ্নিতেতি। গুপঃ স্বার্থিকসনিজ্পুপ্নধা-তোরনেকাচ্ছান্টি। দরিদ্রিতেতি। ইটাবর্ণলুক্। জাগুগুণঃ। শীঙ্ শয়িতা শয়িতঃ শয়িতবান্। ভীভুবাদিশ্চভয়তে ভয়িতো উড্য়েলয়তে নিষ্ঠাপ্রতয়য়য়য়িতয়য়য়জিনঃ ভীনবান্। ভীধাতুশ্চনিষ্ঠেটিগুণীতেন ভয়িতঃ ভয়িতবানিতি মৈতেয়ঃ। ২০২॥ .

গৃতপ্রকাশিকা।

যনস্ব্যাদীতি। শ্বন্তনাপ্রভূতীনামিতি। আদ্যালিঙ্লোটোহ্সন্তপিচশিচ্চশিদিত্যুক্তেং অশিতঃ
শ্বন্তনীপ্রভূতয়ঃ। অনেকস্বরাদিতি। অনেকাচইত্যাত্যুক্তরিতিভাবঃ। যকারেতি। যনস্ব্যাদিভিশানামিত্যুক্তয়ংং যকার নকারস্বরাদিনিযোগাদিত্যর্থঃ। ভূয়াদিতি। আশীর্যাবিভক্তো। শিশ্রেয়ইতি।
প্রিঞ্ এবিভক্তোদিঃ তত্রানাদিহলোলুম্পেদিতিরলোপঃ ইড্নিষেধাদিবর্ণোবর্ণয়োরিত্যাদিনাইয্। ২০২॥

ইড্দীর্ঘোবারৠদস্তাদপরসৈমিজাশিষোঃ। বরিতা বরীতা বরিষ্যতি বরিতৃং বরীতৃং ভরিতা ভরীতা ভরিতৃং ভরীতৃং সিচাত্মনে ব্যবরিষ্ট ব্যবরীষ্ট। পরস্মৈ সিচ্যাশিষিচনদীর্ঘঃ প্রাবারিষ্টাং বরিশীষ্ট। ২০০॥

স্যাদাত্মনেপদাযোগেশ্ব ক্রমিভ্যামিডাগমঃ। ব্যবহিতাব্যবহিতাত্মনেপদসম্বন্ধাভাবে আভ্যামিট্ প্রশ্নবিতা প্রশ্নবিষ্ঠি নৃপআক্রমিতারিপূন্ যিন্
প্রশ্নবিত্তীয়তি আক্রমিত্রীয়তি প্রশ্নবিত্ত্য আক্রমিতব্যং। আত্মনেপদযোগেতৃ
নেট্ প্রশ্নোষ্যতেগবা প্রকংসীষ্ট যিঙ্ প্রশ্নোত্তীয়তে প্রক্রন্ত্রীয়তে ব্যতিস্থশ্বতে উপচিক্রংসতে। প্রোপাভ্যামাদি কর্মণীত্যাত্মনেপদং।২০৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইড্দী। র্ৠদন্তাদিট্ বাদীর্ঘঃ সিচ আশিনশ্চ পরস্থৈপদং বিনা। ব্যবরিফেতি। বিপূর্বরগুণঃ পরস্থৈপদেবর্জনাদাত্মনে ইড্দীর্ঘঃ। প্রাবারিফামিতি। রুদ্ধিঃ স্বরান্তস্থা২০৩॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ইডিতি। র্ৠদন্তাদিত্যত্র বিলম্বিতোচ্চারণেশ্বিতি সন্ধ্যভাবঃ। রুঞ্বরণে ভুবাদি স্বাদিত্র্যাদিঃ রুঞ্ আবরণে স্বাদিঃ রুঙ্সন্তকৌ ক্র্যাদিঃ এতেষাং ব্বরণাভরণয়োঃক্র্যাদি পরশ্বৈপদী বৃঞ্বরণেক্র্যাদিঃ অনয়োদীর্যঞ্জদন্তত্যা বরিতাবরীতাইত্যাদিরপর্যে। অনেকাচ ইত্যাদি সূত্রবিহিতেটোবাদীর্যঃ। বরিছু-মিতি। বরণং বরিছুম্ অভিন্নকর্ত্তিকজ্ঞাগ্রেত্যাদিনা ভুম্। ভরিতেতি। ভূভংর্সনপোষণধারণভর্জনেষু ক্র্যাদি পরশ্বৈপদী তম্মরূপং। প্রাবারিক্যামিতি। অদ্যতনীস্তাং বিভক্তে ইটোনদীর্যঃ যত্বং। বরিশীক্ষ ইত্যত্রাপি নদীর্যঃ। ২০৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্থাদা। ভাবকশ্ম কর্ত্কশ্মস্বন্তাদয় চার্থাযয়ে বিবক্ষান্তে তৌ আত্মনেপদাযোগিনাবিত্যর্থঃ। আভ্যাং মুক্রমিভ্যাং। প্রস্নবিত্ত্যাদি। প্রপূর্ব্ধ মুধাতোরিট্। নৃপইতি আক্রমির্নালনেযোগী তুর্গাদৌ ক্রমিতা ক্রমিয়তি চিক্রমিষতি পরশ্মৈনিয়্নাং ব্যতিমোয়তে ব্যতিক্রম্যতে উপচিক্রং সতে প্রক্রাউপক্রতা আল্লনেবিষয়ক্রমের্ম কর্ত্তরি কৃতীট্। ক্রমেঃ কিং প্রস্নবিত্ত্যায়তেইতি। যিনিতি। প্রস্নুত্ত্ইট্ঞাণঃ প্রস্নবিত্শকাদাচারে যিন্ ঋতইড্ভবেদিতি ইট্ এনমাক্রমিত্রীয়তি। প্রস্নবিত্ত্মিতি আল্লনেপদাযোগাদিট্। পরশ্মৈকরণে এতানি ন সিদ্ধান্তি। এবং প্রস্নবিত্ত্যাং । প্রম্নোত্রীয়তইত্যাদি। অক্রমুক্রমিভ্যাং ব্যবধানাদাল্মনেপদযোগেহিপি নেট্ এতচ্চমতান্তরেণ পাণিন্যাদেরসন্মতন্তাৎ। ব্যতীতি ব্যতিযোগাদাল্মনেপদং। প্রক্রমিত্ত উপচিক্রংসতইত্যত্রাদিকশ্বণি আল্লনেপদমিত্যাহ প্রোপেতি। অক্রক্রমের সুধাতোর্নিযেধক্রমেশ্চ নিষেধাভাবাদিট্ সিদ্ধোনিয়মোহয়ং সচ সুক্রমিভ্যামেব। নবিপরীত নিয়্মঃ তদাহি পরশ্মৈপদেনান্তেয়ামিতি অনিটান্তরহলস্তানামিত্যক্রানিট্ গ্রহণং ব্যর্থং স্থাৎ। ২০৪॥

কর্ত্রাত্মনেপদপ্রাপ্তৌক্রমঃ কৃতিতুনেড্ভবেৎ। প্রক্রন্তা উপক্রন্তা সর্গার্থ-ক্রমেঃ সনস্তস্থাত্মনেপদপ্রাপ্তোনেট্। চিক্রং সয়াকৃত্রিমপত্রিপতেক্তরিতিমাথে। অন্যত্রকৃতি ইডুক্তএব। ক্রমঃ কিং ব্যতি প্রস্নবিত্রীয়া যিউস্তাদঃ। ২০৫॥

বাস্থৃয়তি ধূঞ্ মৃতি রধাদূ দেনুবন্ধতঃ। এভাইড্বাস্যাণ। স্বরিতা সর্ত্তা সবিতা সোতাধবিতাধোতা। রধির্মশিস্তৃ পিদৃপৌ দ্রুছিস্মুছিস্নিইঃ। এতে-দিবাদ্যম্ভর্গতাঃ অপরোক্ষেটিছলিচনবিন্দুঃ রধিতারদ্ধাঃ। ২০৬॥

गृष्धकानिका।

স্থাদান্তনেপদেতি। আত্মনেপদস্থাযোগাইসম্বন্ধঃ। তিমান্। ফুক্ষরণে অদাদিপরম্মৈপদীম্কুচ্চ ক্রমুপাদবিক্ষেপে স্থাদিপরম্মেপদীধাতুনির্দেশেইঃ ক্রমিশ্চেতি শ্বন্ধঃ তাভ্যাং। যোগস্তব্যবধানইব ব্যবধানেহপি তুল্যএবেত্যাহাব্যবহিতব্যবহিতেতি। প্রস্নবিত্যোদি। ক্রমেণশ্বন্ধনীভবিষ্যস্ত্যোর্মপদ্বর্ধ। প্রস্নবিত্তীয়তীত্যাদি। প্রস্নোতীতি অকণভূচাবিতি ভূচ্ ততইট্ প্রস্নবিতারমিবাচরতীতি যিন্ এবমাক্রমিত্রীয়তীত। প্রস্নবিভূমিতি অভিন্নকর্ত্বেইত্যাদিনাভূম্। আক্রমিতব্যমিতি কর্ম্মণিতব্যঃ। পর্মম্মপদ্যোগে ইডাগমইতিকরণে এতানি নিদ্ধান্তীতিতথা নক্তং। প্রস্নোত্রীয়তইতি অত্ত্রচ্প্রত্যয়েহপি পশ্চাদান্তনে পদ্যোগসম্ভাবান্নেট্ তেন প্রস্তোতাইব আচরতীতি উপমানাৎ কর্ত্ত্রিতিযিঙ্। ব্যতীতি স্নোভূমিচ্ছতীতি সন্বির্ভাবঃ তত্তানাদিহলোলুম্পেদিতি অভ্যাসনলোপঃ। প্রক্রমায়তইতি প্রথমক্রিয়াকর্ত্তীত্যর্থঃ। উপচিক্রংসতেইতি। প্রথমগমনক্রিয়ামিচ্ছতীত্যর্থঃ। ২০৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কর্ত্রা। কর্ত্তরিয়াল্পনেপদপ্রাপ্তে ক্রম্থাতোঃ কৃতিপরেইট্নভবেং। প্রক্রস্ত্রোদি। প্রেপোভ্যামিত্যাল্পনেপদং। নমুচিক্রংসরেত্যত্তকর্তৃ কৃতোহভাবাদিট্ স্থাৎ সনীত্যতমাহসর্গার্থেতি। পরোপাভ্যাঞ্চরত্যাদাবিতিসর্গার্থেক্রমেরাল্পনেপদং। চিক্রংসয়েতাত্রসনস্তস্থক্রমেঃ সর্গার্থস্থনাল্পনেপদ-প্রাপ্তিবিষয়েনেট্ অপ্রত্যয়েচিক্রংসয়েতিসিদ্ধং। চিক্রংসয়েত্যনন্তরং কপোতপালীয়্নিকেতনানাং। মার্জারমপ্যানতনিশ্চলাঙ্গং ষস্থাং জনঃ কৃত্রিমমেবমেনে। অন্তর্তেতি। কর্তৃক্তোহভাবেক্রমিতব্যং।২০৫॥

গ্ৰহাশিকা।

কর্ত্রেতি। সর্গার্থক্রমেরিতি। সর্গ উৎসাহস্তদর্থক্রমেরিত্যর্থঃ। তথাচ মেদিনী। সর্গস্তানিশ্চ-য়াধ্যায়মোহোৎসাহাত্মসৃষ্টিরিতি। চিক্রংসয়েতি। আক্রমণোৎ সাহেচ্ছয়েত্যর্থঃ। গ্রহণোদ্যমেচ্ছয়েতি-যাবং। সর্গোগ্রহণমিত্যক্তর। কুল্রিমপ্রিপড়েক্তঃ করণনিস্পন্নদারুময়পক্ষিশ্রেণেরিত্যর্থঃ। ২০৫॥

প্রভাপকাশিকা।

বাস্। স্শকাদে সূত্প্রসবেধ্ঞ্কম্পার্থঃ। রধীতি। রধ্হিংসাসম্পত্যোঃ নশ্নাশাদর্শনয়োঃ তৃপ্ প্রীশনে দৃপ্হর্ষণমোহনয়োঃ ফুহ্উদ্গিরণেঞিহ্প্রীতো। অপরোক্ষেটীতি। পরোক্ষেট্স্রয়োরধইতি।২০৬॥ স্থাদীনাং হস্যযত্তং বিকম্পেনধুডন্তরোঃ। স্নোগ্ধা স্নোহিতা মোগ্ধা মোহিতা স্নেগ্ধা স্নেহিতা ২০৭॥

ধুটিস্বরামজ্জিনসোর্ন্ট্যাং। নংফাবিনজ্জ্যতি। ধুটিকিংনশিতা। তৃপ্ দূপোরর্ব্যত্যয়োবা। এপ্তা তর্প্র তর্পিতা দ্রপ্তা দর্প্রা দর্পিতা দাদের্ঘঃ দোগ্ধা দোহিতা। উদসুবন্ধত্বাং গুপু গোপিতা গোপ্তা মুজু মার্ফা মার্জ্জিতা গাছ গাঢ়া গাহিতা গুছু নিগোঢ়া নিগৃহিতা। অপতি নিজু যোরিতি নিষেধাৎ নিজু ষ্চবেট্ নিজোষিতা নিজোফা। ২০৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বেতি। স্থাবেদাপতাপয়োঃ ভুবাদিপরস্থৈপদী স্হননে ক্র্যাদিপরস্থৈপদী দয়োগ্রহণম্ অস্মাদপ্রাপ্তাবিধানং। সূঙ্দিবাদিরদাদিশ্চ গুঞ্ছবাদিঃ স্বাদিঃ ক্র্যাদিশ্চ অস্পুর্বেণনিত্যপ্রাপ্তে বিকল্পবিধানং। তত্তিশোষনির্দেশাং যুপ্তেরণেতুদাদিপরস্থৈপদী গুকম্পনেতুদাদিপরস্থৈপদী অনয়োঃ উদন্তত্বেননিত্যমিট্। রধাদিমাহরধীতি। ক্রহ্জিঘাং সায়াং মুহ্বৈচিত্যেওতেদিবাদয়ঃ পরস্থৈপদিনঃ। অপরোক্ষেটিত। পরোক্ষেট্ সরয়োরধইত্যনেন পরোক্ষেট্ সরয়োরধইত্যনেন পরোক্ষেট্ বরয়োরধইত্যিন বিদ্বিত্যর্থঃ রধইতিশোষঃ। ২০৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সুহা। সুহ্ মুহ্ সিহ্এসাং হস্তঘত্বং বাধুটিঅন্তেচপরে। হস্তঘত্বেস্থান্তস্থাং তুর্ব্যেতৃতীয়ঃ ইটপক্ষেনতৎপরস্থাভাবাৎ। ২০৭॥

গুঢপুকাশিকা।

সুহাদী নামিতি। সুহ্ আদির্যোগাং তদ্গুণসন্ধিজ্ঞানবহুত্রীহিঃ তেন সুহ্ মুহ্ সিহামিত্যর্থঃ।
ধুট্ অন্তয়োঃ পরয়োঃ দতোঃ সুহাদীনাং ত্রয়াণাং হক্তস্থানেবিকল্পেনঘত্বং স্থাদিতি বাক্যযোজনা। অন্তেহক্তঘত্বং যঙ্লুকিয়থা অত্যর্থং মুহতীতি ক্রিয়াসমভিহারইত্যাদিনাযঙ্দিঃ অভ্যাদেগুণঃ যঙ্লুগাসর্বস্মাদ্ধাতোঃ
যঙ্লুগন্তাশ্চর্করীতাঃ পরস্পৈপদ্যদাদ্যইতিনিম্নমাৎ হস্তস্থাদিবিভক্তোনির্বিকরণেআদেশিঅট্ ধাতৃকারস্থত্তণঃ দিসোল্লোপোব্যঞ্জনান্তাদিতিদিলোপেঅনেনহস্থাত্বে ঘস্তপ্রথমত্বেঅমোমোগিত্যাদি। ২০৭ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ধূটি। মজ্জ্নশ্অনয়োঃ স্বরাৎ ধূটিসূট্স্ঠাৎ। ধূটীতিগ্রহণমন্তব্যাত্মত্যর্থং। নংক্টেতি। শঃ ষঃ তৃপ্দৃপোরিতি। ইড্বিকল্পক্ষেঅর্ব্যত্যয়োবা তৃপ্ দৃপ্ স্পান্থেতি। গুপ্রক্ষণে অশিত্যাযাদয়স্তবেতি আ্য্বিকল্পক্ষেবেট্। মার্ফেতি। মুজোগুণিনির্দ্ধিঃ স্থাৎ ভ্রজ্জাদিত্বাজ্জস্তমঃ যকারাচ্চেতিটঃ

ধুডন্তরোর্জাদিজোলুক্। মজ্জা মঙ্ক্যাতি। ২০১॥

ज्ङारिक गार्या ज्राप्त । ज्ञ्ज् यक् मृक् यका मृत्र मारा । जिञ्जलाराः जारा । ज्ञुलाराः नारा । ज्ञुलाराः । जञ्जुलाराः । जञुलाराः । जञ्जुलाराः । जञुलाराः । जञ्जुलाराः । जञुलाराः । जञ्जुलाराः । जञ्जुलाराः । जञ्जुलाराः । जञ्जुलाराः । जञ्जुलाराः । जञ्जुलाराः । जञुलाराः । जञ्जुलाराः । जञुलाराः । जञुलाराः । जञ्जुलाराः । जञुलाराः । जञ्जुलाराः । जञुलाराः ।

বাসম্প্রারণং লক্ষেঃ। ভর্ফ ভির্মাতিচামিশং। যক্ষী যক্ষ্যতি অর্ ব্যত্যয়ঃ স্রক্ষা। ২১১॥

গাছুবিলোডনেহোতঃ ঘত ধভেতি ধঃ চটবর্গাবিতি ধোতঃ ধাতুতলোপঃ। নিগৃহিতেতি। ওকারঊঃ স্বরেগোহেঃ। অপতীতি। নেট্স্থাৎ ডীদনুবন্ধস্বিবেটামপতি, নিন্ধু যোরিতি সূত্রেবেটামপতি নিন্ধু যো-রিতি নিষেধস্যজ্ঞাপকতয়াহনয়োর্বেট্ছমিত্যর্থঃ। কুষ্নিন্ধর্যেক্র্যাদিঃ। ২০৮॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

ধূটীতি। টুমক্জোশুদ্ধৌ তুদাদিপরিমেপদী মজ্জ্ নশ্ অনয়োরিত্যর্থঃ। মজ্জ্ধাতোরুদাহরণং পরত্রদাশতি অত্রনশউদাহরণমাহনংফেত্যাদি। ধূট্যস্তেচছশোষত্বং পরত্রষঃ কশ্চ। দাদের্ঘইতি। হোটোদাদেস্ত্রঘোধুট্যস্তেচেত্যনেন। তুহ্প্রপুরণেঅদাদিরুভয়পদী। গুপুভুবাদিপরিম্মপদী মুজুশুদ্ধৌ অদাদিপরিম্মপদী গাহুভুবাদিরাক্সনেপদী পত্৯গতিপতনয়োঃ ভুবাদিপরিম্মপদী কৃষ্পরিম্মপদী। ২০৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

· ধুড। ধুডন্তুয়োঃ পরয়োঃ জস্তাদিজঃ লুক্স্তাৎ। মঙ্ক্তেতি। মঙ্জ্ পূর্বেণমুট্জঃ কঃ। ২০৯ ॥

गृष्धकामिका।

ধুডেতি। মঙক্ষ্যতীতি। স্থতিবিভক্তো মজ্জোজলোপেনুটিধুট্যস্তেচেতিজঃ কঃ ষত্বং। অত্রাপিযঙ্লুকিঅস্তগ্রহণফলং জ্বেয়ং যথাঅমামক্। ২০৯॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

জ্জা। ধুডন্তরোরিত্যর্থ:। নমুজজ্জাদেরাদিজলোপঃ কথমন্তজলোপএবকিমিতিনোক্তঃ মৈবং মঙ্জ্জেত্যাদে ধুটিজস্তকস্থাসন্তবাৎ অন্তলোপেনান্তস্থালাক্ষণিকস্থাদিতিভাবঃ। ২১০॥

গৃত্পকাশিকা।

ভক্তেতি। ভক্তাদিশাহত্রজ্ যজ্ স্থজামিতি। ভক্তপাকেতুদাদিপরশৈপদী যজ্ সজ্ বিদর্গনির্মাণয়োঃ দিবাদিরাক্সনেপদী তুদাদিপরশৈপদীচ স্থজ্উক্তঃ। জেজদোপইতি। আদিজলোপ-জ্ঞাপকমিদং। ভক্তেতি। জক্তা আদিজলোপঃ জন্মবঃ ব্যঞ্জনং পরগামিষকারাচ্চত্রবর্গইতি ভাশ্বানেটা। ২১০॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

বাসম্প্র। ভর্ফেডি। রস্থাবেগুণঃ জঃ যঃ যাত্তফীঃ। ভর্ম্মাতীতি। জ্রজ্জাদিদ্বাজ্জস্থয়ঃ যঢ়োঃ কঃ সইতিয়ং কঃ যত্ত্বং। স্রুফেডি। গুণেমর্ব্যত্যয়ঃ। ২১১॥ বশ্চেশ্চঃ ষঃ শলোপশ্চ। ব্রফা বক্ষ্যতি সক্রমান্। ধুডন্তয়োরিত্যেব বশ্চিতা। ২১২॥

ষ্ঠিবোদীর্ঘোইপরোক্ষায়াম্। স্তীবিতা। অপরোক্ষে কিং টিপ্তেব। সংজ্ঞা-পূর্বক ত্বাং নিষ্ঠেবনং নিস্তীবনং। ২১৩॥

ইটোদীর্ঘোগ্রহেশুথা। গ্রহীতা। অপরোক্ষায়ামিত্যের জগৃহিব জগৃ-হিম। গ্রহেঃকিং ভণিতারণিত।। ২১৪॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বাসম্প্রদারণমিতি। ধৃডন্তয়োঃ পরয়োঃ। অত্রাপিযঙ্লুকিঅন্তনিমিত্তয়ফলং জ্রেয়ং যথাছন্তলাঃ দবিভক্তৌ অবরীভট্ অবরীভট্ যঙ্লুকিপূর্বকৃতসম্প্রদারণশ্রনিরত্তৌ আদাবট্ ততোব্যঞ্জনান্তাৎ দ লোপঃ ততঃ সম্প্রদারণং জাদিজনুক্ট। যদ্যপিযঙ্লুকিসম্প্রদারণাদেশ্বনিরতিরিত্যুক্তং তথাপি ভ্রজ্জ্ ধাতোরস্তেপুর্বসম্প্রদারণশ্রনিরতির স্থাকে তৎসাহচর্যাৎ ধৃট্যপিতয়ি-রতিঃ এতদভিপ্রেত্যযঙ্লুকিবরীভিষ্টি বিরীভষ্টীতি প্রয়োগোগ্রন্থকৃত্তির্বাদ্যেতে পূর্বকৃতসম্প্রদারণানিরত্তৌ বরীভষ্টীতিকথং স্থাদিতি। ২১১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ব্রশ্চে। ব্রশ্চিতেতি উদসুবন্ধসাদেই। ২১২ ॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

ব্রশ্চেরিতি। ধুডন্তরোঃ পরয়োঃ সতোর্ত্রশ্চেঃ চঃ ষঃ স্থাৎ শলোপশ্চ স্থাদিত্যর্থঃ। ব্রষ্টেতি। ওব্রশ্চ ছেদনেতুদাদি পরশ্বৈপদী। শ্বস্তনীতাবিভক্তো চকারস্থ ষঃ পূর্ব্বশলোপঃ ষকারাচ্চেতিতাটা। সক্রমানিত্যন্তঃ ছন্দঃ। ক্বচিৎ সতর্মনিতিপাঠোদৃশ্যতে সনমনোরমশ্ছন্দোভঙ্গাপতেঃ। ২১২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ষ্ঠিবো। ষ্ঠিবইন্দীর্যঃ স্থাদপরোক্ষায়াং পরোক্ষান্ত স্থিন। টিষ্ঠেবেতি। ষ্ঠিদিঃ অঘোষোর্ছেতি যলোপঃ প্রথমঃ স্থাদ্বিতীয়স্থ। নিষ্ঠেবনমিতি। অনট্ দীর্ঘ্যভাবেগুণঃ পক্ষেদীর্যঃ। ২১৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ষ্ঠিবইতি। টিষ্ঠেবেতি অটিরপং। সংজ্ঞাপুর্ব্বকত্বাদিতি। দীর্ঘইতিসংজ্ঞাপুর্ব্বকত্বাদ্বিতরেন দীর্ঘস্থানিত্যতেতিশেষঃ নঞাগমগণোদিষ্ট সংজ্ঞাপুর্ববা অনিত্যগাইতিবচনাদিতিভাবঃ। ২১৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইটো। তথাহপরোক্ষায়াং। জগৃহিবেতি। অগুণে সম্প্রসারণং দিঃ ঋবর্ণস্থাকারঃ কবর্গস্থ চবর্গঃ ইট্ নদীর্ঘঃ। ২১৪॥ শকুঃ কান্তে। অনিট্। নিফক্ষিতা ইত্যুত্তরেণ যথাযোগ্যমন্বয়ঃ শক্তা। শকুঃ কিং শক্ষিতা কোকিতা। ২১৫॥

চান্তে পচিবচিসিচোমুঞ্চতি রিচৌবিচিশ্চ। অনিটঃ। পক্তা ব্রূবচ্ বক্তা সেক্তামোক্তা। এতেকিং বঞ্চিতা। ২১৬॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

ইটইতি। গ্রহ্ উপাদানে ক্র্যাদিরভয়পদীতস্মাদিটোদীর্ঘোহপরোক্ষায়ামিত্যর্থঃ। ভণিতেত্যাদি। ভণ্ শব্দেরণ্ শব্দেভুবাদি পরস্মৈপদিনো। ২১৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শক্ষঃ। শক্বিভাষিতোমর্ঘণে শক্যতি শক্যতেমর্ঘণং ক্ষমাবিভাষিতইতিপাঠাৎ বিভাষয়াহয়ং পুষাদিঃ কর্ত্রনভিপ্রায়ে অস্মাৎপরস্বৈপদম্ অশক্দিতি। মর্ঘণে পুষাদিকার্য্যার্থং শক্ত্যর্থস্থ কর্ত্রভিপ্রায়ে-হকর্ত্রভিপ্রায়েহপি পুষাদিয়েন অশক্দিতিমৈত্রেরঃ। অক্যশ্চবিকল্পিত উভয়পদী পরস্বৈপদেহঙর্থমত্রপাঠঃ অশক্দিতিবদ্তি। শক্ষিতেতি। শকিশক্ষায়াং। কোকিতেতি কুক্। অদনে আদানইত্যেকে।২১৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

শক্তরিতি। শক্তসামার্থ্যে স্বাদিপরশ্বৈপদী। কবিরহস্তমতে উভয়পদী শক্ষোত্যশক্যমপ্যাজোঁ বিজেতৃং শক্ষুতেহপ্যরীনিতি। কান্তেকান্তমধ্যেশক্তঃ অনিট্ নিউস্কিতঃ কথিতইত্যর্থঃ। অগ্রিমসূত্রস্থ-নিউস্কিতাইতিপদস্ত বিভক্তিপরীণামেত্রান্বয়ইত্যাহ নিষ্ঠস্কিতাইত্যুত্তরেণ্যথাযোগ্যমন্বয়ইতি। শক্ষিতেতি শকিভুবাদিরান্মনেপদী। শক্মর্ঘণেদিবাদিক্তইয়পদীচ সেট্ শকিতেতি।২১৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চান্তে। ডুপচ্ঞ্য্ পচিবাক্তীকরণেবেতিত্বর্গঃ। নপাণিনীয়ে পঞ্চত। প্রপঞ্য়তি প্রপঞ্ইতি চুরাদি পাঠাং। বচ্ ক্রবচ্ সিচির্ মুচ্চ রিচির্ বিবেচনেরুধাদিঃ রেফাদ্যঃ বিচির্রুধাদিঃ রিনক্তি বিনক্তি। বচ্গ্রহণেনক্রবচশ্চগ্রহণমাবেদয়তি অতআহ ক্রবচিতি। সর্ব্বেধুটিচঃ কঃ। বঞ্চিতেতি। বঞ্প্রলম্ভনে। ক্রবচ্ সিচ্ মুচ্ রিচ্বিচ উভয়পদিনুঃ।২১৬॥

- গৃঢ়প্রকাশিকা।

চান্তইতি। ডুপচ্ঞ্যপাকে ভুবাদিপরশ্যৈপদী বচ্ পরিভাষণে ভুবাদিপরশ্যৈপদী ক্রবচ্চ সিচির্
ক্ষরণে ভুদাদির ভয়পদী মুচ্চ মোক্ষণে ভুদাদিঃ বিচির্ পৃথকরণে রুধাদিঃ জুহোত্যাদিরিতি বোপদেবঃ।
এতে অনিটোনিগদিতাশ্চান্তে চান্তধাভুমধ্যেইত্যম্মঃ। বঞ্চিতেতি বন্চু গতৌ ভুবাদিপরশ্যৈপদী বন্চু
প্রলম্ভনে ভচ্চবিপ্রলম্ভঃ প্রতারণমিতিযাবৎ চুরাদিরাত্মনেপদী উভৌ সেটো। ২১৬॥

একঃ প্রচ্ছিঃ। ছঃ ষঃ প্রফী। প্রচ্ছিঃকিং শ্লেচ্ছিতা মৃচ্ছিতা ২১৭॥
যুজি কজি সৃজি ভ্রন্জি যজয়ঃ। অথোমজ্জির্ভন্জি ত্যজি ভুজি নিজি
স্বন্জি বিজিরস্তথা রন্জিঃ সন্জির্ভজতিরপি জান্তেনিগদিতাঃ। অনিটঃ।
যোক্তা রোক্তা ভ্রম্টা অফা অফা মজ্জের্বিন্দুঃ মজ্জা ভঙ্জা ত্যক্তা ভোক্তা নেক্তা
স্বজ্জা বেক্তাইত্যাদি। এতে কিং কৃজিতা। ২১৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

একঃ। ছঃ ষইতি। ধুটান্তেচেতানেনেতার্থঃ। স্লেচ্ছ্ অব্যক্তেশব্দেইতিকেচিৎ। অত্তনঞ্ কুৎসার্থঃ কুৎসিতায়াং বাচীতার্থঃ। অন্তর্কেদ্যামসোবিদ্বান্ধস্কেচ্ছিতিধৃত ব্রতইতিইলায়ুধঃ। ব্যক্তশব্দইতি বহুবঃ। ভুবাদিচুরাদ্যোঃ সেট্ মূচ্ছামোহ সমুচ্ছায়য়োর্ভ্বাদিঃ।২১৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

একইতি। প্রছ্জীপায়াং তুদাদি পরস্মৈপদী। একইতিপ্রচ্ছিরিত্যস্থ বিশেষণং ছন্দোহর্থং। অনিট্ নিফস্কিতইতিপরসূত্রস্থেনাম্বয়ঃ। ক্লেছ্ যুচ্ছ পরস্থেপদিনো। প্রচ্ছিরিতি আঙিত্যাদিনাচুগাগম*ছন্দোহর্থঃ। ২১৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যুজি। যুজ্ রুধাদিঃ যুজ্ সমাধোদিবাদিঃ সোহপ্যানিট্ অতএব যুজিনিদেশঃ একতরস্থ এইণে যুনক্তিযুজ্যত ইতিবা নির্দেশঃ কৃতঃ স্থাৎ। রুজোপীড়ায়াম্ অন্যত্ত দৃশ্যতে রুজোভঙ্গেতুদাদিরনিট্। রুজ্ হিংসায়াং সেট্ সজর্ তুদাদিঃ সজ্বিসর্গেদিবাদিঃ দ্বাবপ্যনিটো। মজ্জোতুদাদিঃ ভন্জোরুধাদিঃ ত্যজ্ ব্যোহানো। কেচিত্তুত্যজ্ ব্যবহানো ব্যবপৃক্ষিকেন চোধ্যাদিকতাং হানিং ব্যবচ্ছিনত্তি এতেপঞ্চদশ অনিটঃ। নিগদিতাইত্যর্থঃ। যোক্তেত্যাদি। সক্ষিত্রোপান্তলঘোর্ত্তণঃ। অফেতি। অর আরুদেচতি অর্ব্যত্যয়ঃ। ভ্রেটিত। জাদিজনুক্ জম্মনঃ পক্ষেসম্প্রসারণে গুণঃ। বিন্দুরিতি। ধুটিস্বরামজ্জিনশোরিতিমুট্ বিন্দুঃ। ভোক্তেতি। ভুজঃ পরস্যৈপদান্মনে পদভেদেনরূপদ্বয়ং। আদিনারঙ্ক্তা ভঙ্কা এতাবুভয়পদিনো। কুজিতেতি। কৃজ্ অব্যক্তশক্ষেত্রবাদি পরক্ষেপদী।২১৮॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

যুজীতি। যুজির্যোগে রুধাদিরুভয়পদী যুজ্ সমাধে আত্মনেপদীঘাবনিটো। রুজীতি সামান্ত-নির্দেশাৎ রুজোপীড়ায়াং রুজ্হিংসায়াং তুদাদিপরস্মৈপদিনাবনিটো। স্থজির্ বিসর্গনির্মাণয়াঃ তুদাদিপরস্মৈপদী সজ্ বিসর্গনির্মাণয়াঃ তুদাদিপরস্মৈপদী সজ্ বিসর্গে দিবাদিরাত্মনেপদী ভ্রুজ্বপাকি পরস্মেপদী যজ্ দেবপূজাসঙ্গতকরণদানেষু ভ্রবাত্মভয়পদী টুমজ্জোশুদ্ধো তুদাদি পরস্মেপদীভন্জো আমর্দনে রুধাদি পরস্মেপদী ত্যজ্ হনো ভ্রবাদি পরস্মেপদী ত্যজ্ বয়েয়াহানাবিতি প্রভাপ্রকাশিকা। ত্যজ্ব্যবহানাবিতিকেচিৎ। ভূজীবক্রীকরণে ভূদাদি পরস্মেপদী ভূজ্ পালনাভ্যবহারয়েয়রুধাদি পরস্মেপদী ভ্রপালনে আত্মনেপদী উভাবপ্যনিটো ণিজির্ শোচ পোষণয়াঃ জুহোত্যাদি রুভয়পদী স্বন্জ পরিষক্ষে সচালিঙ্গনং ভূবাদিরাত্মনেপদী বিজির্

অদিতুদিরুদয়ঃ স্বিদ্যতি বিদ্যতি বিন্দতি বিনত্তয়শ্ছিদভিদৌ। খিদিশদিসদয়ঃ ক্ষন্দিক্ষুদিহদিপদয়োদকারাস্তে। অতা তোত্তা স্বেতা বিদ্যতায়াৎ বিদুলাভেবিদ্ বিচারণে এযুবেক্তা বিদক্তানেইত্যস্থাদিট্বেদিতা ছেক্তেত্যাদি। ২১৯॥

ৰুধি রাধি ক্ষুধি বন্ধি ক্রুধি বধি সিধি যুধি বুধি ব্যধয়ঃ। শুধি সাধী অপি-ধাস্তে। রোদ্ধা রাদ্ধা ক্ষোদ্ধা বন্ধা ক্রোদ্ধা বদ্ধা সেদ্ধা যোদ্ধা যুধি সাহচর্য্যাৎ বুধ্যতেঃ বোদ্ধা বোধতেস্তু বোধিতাব্যদ্ধা শোদ্ধা সাদ্ধা। এতেকিং বদ্ধি তা। ২২০॥

পৃথগ্ভাবে জুহোত্যাদিরুভয়পদী রন্জরাগে সচাতুরাগোবর্ণান্তরোৎসাদনক্ষ জুবাদিঃ দিবাদিরুভয়পদী ষন্জ সঙ্গেতুবাদিপরদৈয়পদী ভূজ ভক্তিদেকরাগাশ্রয়প্রাপ্তি বিভাগেষু ভূবাছাভয়পদী ভূজীবক্রীকরণেতৃপভূজ্ পালনাভ্যবহারয়োঃ রুপএতেহনিটঃ। আদিনা মঙ্ক্রা ইত্যস্থাপিগ্রহণং। শক্তরিত্যাদি এতৎসূত্রপর্যান্তঃ শিখরিণীছন্দঃ। যদিপ্রাচ্যোহ্রস্বস্তুলিতকমলে। পঞ্চন্তরবন্ততোবর্ণাঃ পঞ্চপ্রকৃতি স্বকুমারাঙ্গি। লঘবঃ। এয়োহল্যেদাপান্তাাঃ স্থতকুলঘবোভোগস্থভগেরদৈরীশৈর্যাস্থাং ভবতি বিরতিঃ সাশিখারিণী ইতি শ্রুতবোধে। রিসক্রদৈশিচন্নাযমনসভলাগঃ শিখরিণীভিছন্দোমঞ্জর্যাং। যস্থাঃ পাদে যঃ আদিলঘুগণঃ মেরিগ্রক্তরুগণঃ নির্ভালঘুগণঃ সঃ অন্তগ্তরুগণঃ ভ্রাদিগুরুগণঃ লএকলঘুঃ গএকগুরুঃ সাশিথরিণী কীদৃশীরিসেঃ ষ্ঠাক্ষরৈঃ রুদ্রেরকাদশাক্ষরৈশ্চিছিন্নাবিরামযুক্তাইতি ভদর্থঃ। ২১৮॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

অদি। এতেহনিটইতি পূর্ববিশ্বনাশ্বয়:। তুদ্ ব্যথনে গুদ্ প্রেরণে ঞিষিদাগাত্রক্ষরণেপুষাদিঃ স্কন্দির্গতিশোষণয়োঃ ভুবাদিঃ হদ্ পুরীষোৎসর্গেবিদিঅবয়বেতনাদিঃ অনিডিতি কেচিৎ। ক্রমেণোদা- হরণম্ অত্তেত্যাদি। লিঙ্গবদিতিদস্যতঃ সর্ব্বত। আদিপদাৎ ভেতা থেতা শতা সত্তা ক্ষন্তা ক্ষেত্রা পত্তেতি। অত্তিক্ষিদীতি পাঠশ্চিস্তাঃ থিদীত্যেবপাঠঃ। ২১৯॥

गृष्ट्रकाणिका।

অদীতি। অদ্ ভক্ষণে তুদ্ উভয়পদী গুদ্ তুদাদিরুভয়পদী স্বিদ্ দিবাদ্যস্তর্গতপুষাদিপরসৈপদী সিদ্তীতি নির্দেশাং ঞিস্থিদা স্নেহন মোচন মোহনেষুভুবাদিরাত্মনেপদী সেট্ স্বেদিতা। বিদ্যতিরাত্মনেপদী বিন্দতি বিনত্তী পরসৈপদিনো ছিদির ছেদনে ভিদির বিদারণেরুধাদীউভয়পদিনো থিদ্ পরীঘাতে তুদাদিপরসৈপদী থিদাদৈত্যেরুধাদিরাত্মনেপদী শদ্ভগতিশাতনয়োঃ শাতনঞ্চছেদনং বিশীর্ণতাপতনঞ্চষদ্ভ ভেদগমনাবসাদনেষু স্কন্দির এতেভুবাদিপরসৈপদিনঃ ক্ষুদির্ সম্পেষণেরুধাদিরুভয়পদী হছুবাদিরাত্মনেপদী উভয়পদীতিক শ্চিৎ পদ্গতোদিবাদিরাত্মনেপদী পদ্স্থৈগ্রেভুবাদিপরসৈম্পদীচ। এতেকিং বিদ্যাভিবাদনস্বত্যাঃ ভাদিরাত্মনেপদীবন্দিতা। আগ্রাহ্রিঃ। ২১৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রুপি। রাধ্দংসিদ্ধৌ স্বাদিঃ রাধ্রদ্ধৌদিবাদিরকশ্মকঃ। ধাভূনামনেকার্থস্বাদ্যদায়মকার্মকঃ
প্রস্ক্রতে তদার্দ্ধার্থএবদিবাদিরনিট্এতত্তুমৈত্তেয়মতং। তুর্গাদিমতেত্ব্রাধ্সংসিদ্ধৌদিবাদিস্বাদ্যোরনিট্

মন্যতিহস্তীনকারাস্তে। খস্তা হস্তা। ইমৌকিং মনু খনিতা তনিতা।২২১॥

গ্রহাদিশ্চায়মপপূর্বঃ দন্। ক্ষ্ধ্ বৃভুক্ষায়াং পুষাদিঃ বন্ধ্ বৃদ্ধনেক্র্যাদিঃ অনোষ্ঠ্যোবকারইতিভীমঃ দস্ত্যো ষ্ঠ্যাপীতিমতাস্তরে। অত্রৈববীভৎসতেইতি সাধিতং। বহুবস্তুবধ্বদ্ধনেসেট্ তেন মাবধিষ্ঠাজটায়্থ্যমিতি সিদ্ধাতি ভট্টিটকাচ বধ্ বন্ধনেইত্যস্যাত্মনেপদিনঃ সেটঃ মাবধিষ্ঠাঃ নহন্ধাতে হিবধাবাত্মনেপদেইতি বধাদেশাদয়ং প্রয়োগঃ স্বাঙ্গকত্মভাতাবাং। বধ্ বন্ধনেইত্যত্রবীভংসতেবপ্পাতের্বধঃ বধিতেতি ধাভুম-প্র্যামুক্তং। বিধুসংসিদ্ধোপুষাদিঃ। সিধূশান্ত্রেমাঙ্গল্যেভ্বাদিঃ সিধূগত্যাং দৌবেটেডিদমুবদ্ধত্মাছেট্ সিধূগত্যামিতিক্তাদোবেট্। অভ্যতানিট্। মুধ্সংপ্রহারেদিবাদিঃ বৃধ্জ্ঞানার্থোদিবাদিঃ শুধ্ শোচেপুষাদিঃ সাধ্সংসিদ্ধোদিবাদিয়ারপীতি হুর্গাদমতং। স্বাদিরেবেতিমৈত্রেয়ঃ। ধাস্তেএতেহনিটঃ। রোদ্ধেত্যাদি। ঘট্যভতইতি তস্তুধঃ ভুর্য্যেষু স্থ্যরিতি ধস্তুদঃ এবমন্ত্রাপি। বন্ধেতি। ব্যঞ্জনপরপুড্রোপইতি বাদলোপঃ বোদ্ধেতি দস্তোঠিহস্তবকারঃ নচভুর্থাদিঃ। বোধতের্ভোবাদিকক্ত ইডাগমইত্যর্থঃ। এবং শোদ্ধাসাদ্ধেতি। বৃদ্ধিতেতি। বৃধু বৃদ্ধো সংজ্ঞায়াং। অদ্ধিতেতি চকচিং ঋপুর্দ্ধোস্বাদিঃ। ২২০ ॥

गृष्यकाणिका।

রুধাতি। রুধির্ আবরণেউভয়পদী রাধ্ পরিশ্বপদী। বন্ধ্ত্যাপ কুধ্ ক্রোধেদিপ বধ্ বন্ধনচিত্ত-বিকারয়োঃ ভ্রা উ ক্রুধ্ সিধ্ সাহচর্য্যাৎ পরিশ্বপদে বধ্ অনিট্ আয়নেপদেতুসেট্ তেন মাবধিষ্ঠাজটায়ুং মামিতি ভট্টিপ্রয়োগঃ সাধুসঙ্গছতে নতু হত্তের্ব্বধাদেশেতস্মাদিট্ স্বকীয়াঙ্গকর্মাজভাবেন এবমাঙোযমহনইত্যনেনাল্মনেপদাপ্রাপ্তেঃ। এবমেব ভট্টীকাকারভরতসেনমতং। ভট্টীকাকার জয়মঙ্গলমতে তু বধ্ ধাতুরনিট্ হত্তের্ব্বধাদেশেমাবধিষ্ঠাইতি স্বকীয়াঙ্গকর্মাকহন্ধাতোরাল্মনেপদমিতি ব্যাভিচারাদাঙ্পৃর্ব্বাদেবতস্মাদাল্মনেপদমিতি। ধিধুগতৌভুপ ধিধুসংসিদ্ধৌ দিপএতাবনিটোধিধ্শান্তমাঙ্গল্যাভিচারাদাঙ্পৃর্ব্বাদেবতস্মাদাল্মনেপদমিতি। ধিধুগতৌভুপ ধিধুসংসিদ্ধৌ দিপএতাবনিটোধিধ্শান্তমাঙ্গল্যাভিত। ব্যাকেই উদসুবন্ধতাৎ। মুধ্ আ বুধ্ আ ব্যধ্তাড়নেদিপ শুধ্ দিবাদ্যন্তর্গতপুষাদিঃপ। মুধিসাহচর্য্যাদিতি। দিবাদিমুধিসহপাঠাৎ দিবাদির্ধিরেবানিট্ নত্ত্যক্তন বোধতে বুধ্ অবগমেভুবাদিপরশ্বৈপদী তস্মাৎ ভূশব্দাৎ বুধিরজ্ঞানেভুবাদি উভয়পদীতস্মাচ্চইডিত্যর্পঃ। বর্দ্ধতেতি। বুধুর্দ্ধৌভুআ। অন্তৎ প্রভাপকাশিকায়ামবগন্তব্যং। ২২০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

মন্য। মন্বিতি। মন্তুবোধনে। ২২১॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

মহাতীতি। মন্জানে দি আ হন্ হিংসাগত্যাদিয়ু ভুপঅনিটো। মনুংত আ। মনুতে মনুছু-ল্যোখসোপ্রজামাত্মজবৎপ্রভুঃ। পিতৃবন্মহাতেতঞ্চমান্তং জনপদঃ সদেতিকবিরহস্থে। তনিতেতি। তনুবিস্তারে ত উ। রুধীত্যাদি এতৎসূত্রপর্যান্তমুপগীতিছন্দঃ। ২২১ ॥ আপি বপি স্বপি তপ্ তিপি ক্ষিপি শপি লিপি লুপি সৃপি ছুপশ্চপাস্থে। অনিটঃ। আপ্তা বপ্তা স্বপ্তা তপ্তা ক্ষেপ্তা শপ্তা লেপ্তা লোপ্তা সর্প্তা ছোপ্তা। ইমেকিং লপিতা। ২২২॥

যভি রভি লভয়োভান্তে। অনিটঃ। য**ন্ধা আরন্ধা লব্ধা। এতে**কিং শোভিতা। ২২৩॥

গচ্ছতি যমিরমুমোমান্তে। গন্তা যন্তা রন্তা নন্তা। এতেকিংকমিতা।২২৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আপি। আপ্ প্রাপ্তার্থএকঃ আপ্ উপলম্ভনেইত্যপরঃ তপ্ সন্তাপেভুবাদিঃ তিপৃতেপৃক্টেপৃক্ষরণে-ভুবাদ্যাত্মনেপদী ক্ষিপ্ প্রেরণেভুদাদিঃ শপ্ আক্রশেভুবাদিদিবাদ্যোঃ শপ্ উপলম্ভনেআত্মনেপদী স্থপির্গত্যর্থঃ ছুপ্ম্পর্শে উত্নপধস্তদাদিঃ ছপিপাঠোরসবত্যাং। লপিতেতি। লপ্শব্দার্থঃ। ২২২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

আপীতি। আপ্ত্ষাভূপ বপ্বপনগর্ভাধানছেদনমুগুনেমুভূউ ঞিম্বপ্শয়নে অপ তপ্ ভূপ তপ্ দাহেভূউদ্বাবপানিটো ভিপ্ ভূ আ ক্ষিপ্ দিপ ভূউ শপ্ আক্রোশে ভূদি উ শপ্ উপলম্ভনেতচ্চজ্ঞানম্ উপালম্ভনশপথকরণয়োরিতি গণদর্পনেউপালম্ভনং ভংর্মনাভূদিআ। উভয়পদীতি গণদর্পণে। লিপ্ উপদেহলেপনয়োঃ ভূউ উপদেহোরদ্ধিঃ লুপ্তছেদনেভূউ লিপ্দাহচর্য্যাদস্তগ্রহণং লুপ্বিমোহনেদিপেনেট্-লোপিতা সপ্ত ভূপ ভূপ্ ভূপ। ললিতেতি। লপ্ কথনেভূপ। ২২২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যভি। যক্তি। যভ্নৈপুনেতথাচদণ্ডী যাভবতঃ প্রিয়েত্যত্ত্রযাভোনৈপুনং পক্ষেভবতোযাইত্য-শ্বয়ঃ। শুভ্শোভার্থঃ। ২২৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যভীতি। যভ্ভূপ রভ্রাভক্ষে তচ্চ উৎস্কীভাবঃ নির্বিকারপ্রকৃতিশ্চ ভূ আ ডুলভষ্ প্রাপ্তে ভূ আ। শোভিতেতি। শুভ্ভূ আ। ২২৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গচ্ছ। গস্তেতি। বিন্দোবর্গেতদর্গেতিনঃ। কমিতেতি। কমুকান্তো। ২২৪॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

গচ্ছতীতি। গম্৯গতোভূপ যম্ উপরমবন্ধনয়োঃ ভূপ রমুক্রীড়ায়াং ভূবাদ্যন্তর্গতরুচাদিঃ। ণম্ প্রহানমন্দরণশব্দেয়ভূপ। ণাদয়োনাদয়ঃ শ্বৃতাঃ। কমিতেতি কমুকান্তোকান্তিরিচ্ছাভূআ। আপী-ত্যাদি এতৎসূত্রপর্যান্তমার্যাছন্দঃ। ২২৪॥ ক্রেশি বিশি লিশি পশ্যতি স্পৃশোরিশি মৃশি দিশি দন্শিরিমেভবস্তিশান্তে। তনিটঃ। শঃ যঃ ক্রোফাবেফাড্রফাস্প্রফাস্ফাপ্রারফাত্রফামফ্রাদেফাদংফা। এতিকিংক্রেশিতা। ২২৫॥

কৃষিপিষিত্রষিপুষ্যতিত্বিষিশ্লিষিষিষিশিষিবিষিত্বয়ঃ শুষিশ্চষান্তে। অনিটঃ। কর্ম্যা পেক্ষা দোফা পোফা পোষতেস্তুপোষিতাত্বেফা শ্লেফাদ্বেফাইত্যাদয়ঃ। এতেকিঃ ভাষিতাহর্ষিতা। ২২৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কুশি। বিশ্হিংসায়াং কুদাদিঃ লিশ্গতো তুদাদিঃ লিশ্ অল্লীভাবেতুদাদিদিবাদিঃ দ্বোপরস্মৈ-পদিনো ম্পৃশ্ ঋতুপধঃ ম্পৃশ্রিশোতুদাদী মৃশ্সমালোচনার্থঃ। ক্রোফেত্যাদি। ধুট্যস্তেচেতিঃ ষঃ গুণশ্চ ষকারাচ্চেতি তস্তুটঃ এবমগ্রেহপি অরআরশ্চেতিব্যত্যাসঃ ম্পৃশে।বা অর্ব্যত্যাসঃ। ক্লেশিতেতি। ক্লিশ্বিবাধায়াং ক্র্যাদিঃ শিপ্ অব্যবেপিশিতেত্যপিধ্যেয়ং। ২২৫॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

কুশীতি। কুশ্ আহ্বানরোদনয়েঃ তুপ বিশ্ প্রবেশে হিংসায়ামিতি প্রভাপ্রকাশিকা তুপএষোহস্তস্থাদিঃ বিশ্বতাবিতি তুবাদিপরসৈপদীতুদেট্ বেশিতা। লিশ্বতো তুপ'লিশ্ অল্লীভাবেদিআইতিগণদর্পণে পরসৈপদীতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং দৃপির্ প্রেক্ষণে তুপ স্পৃশ্ স্পর্শে তুপ রিশ্ হিংসায়াং তুপ স্প্
স্পর্শসমালোচনয়াঃ তুপ দিশ অতিসর্জনে তচ্চদানমাজ্ঞাচ তুউ দন্শ্ দংশনে তুপ। শঃ ষইতি। ধুঠ্যস্তেচ
ছশোঃ ষত্বমিত্যানেন গুণিগুলুস্থেতি গুণঃ ষকারাচ্চেতি তস্পটঃ সর্বত্রপ্রয়োগেরু। দ্রুফাইতি। অর
আরশ্চবর্ণস্থ ব্যত্যাসঃ সজ্ দৃশোধু টীতি অর্ব্যত্যয়ঃ। প্রফাস্পর্ফাইতি। কৃষিমৃশিস্পৃশিভাঃ সণ্চপাক্ষিকইতি পাক্ষিকঃ অর্ব্যত্যয়শ্চ এবং এফাএফেতি। ক্লিশুক্র্যাপ। ২২৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা 1

কৃষি। কৃষ্বিলেখনেতোদাদিকোভোবাদিকশ্চ কৃষ্বিনিট্। যত্তু ভট্টনারায়ণেনোক্তং পুষ্যতি সাহচর্য্যাদৈবাদিকস্ম ক্ষেরনিট্রং তমকৃশ্ তন্করণেইত্যক্তৈব দৈবাদিকর্বাৎকৃশ্যতি কৃশ্যতেইতি মৈত্রেয় লেখনাং। কৃশশিখং শশিশিখগুনিবচ্যুত্মিতিমাঘ্যমকাচ্চ গিরিশভ্শকৃশাইত্যুন্মভেদাচ্চ তেন তত্ত্ব কর্শিতাকর্শিধ্যতীতি। পিষ্ কৃষাদিঃ তুষ্ বৈকৃত্যেপুধাদিঃ পুষ্ পুষ্ঠো ভুবাদি পুষাদি জ্যাদিয় ঘনিদ্দেশাং পুষাদি স্থনিট্। নিষ্দাপ্তি শ্লিষ্ আলিঙ্গনে নিষ্ অপ্রতিশিষ্ঠবিশরণেকধাদিঃ বিষ্ঠ ব্যাপ্তোজুহোত্যাদিঃ তুষ্ তুফো পুষাদিঃ শুষ্ শোষণে পুষাদিঃ। কফেত্যাদি। গুণেষাভক্তঃ পোষতে-রিত্যুপলক্ষণং পুফাতেরপিমন্তব্যং। শিষ্ অপুর্ব্যোগেবৈশিক্য্যর্ম্যঃ লষ্কান্তোভুবাদিঃ দিবাদোন পরিম্পদম্ অভিলয়তে দেবইতিভাষাকৃত্বদাহরণাদিত্যক্তে। প্রভাষিত্যেতাদি। ভাষ্কথনেক্ষম্ আলোক্যে। ২২৬॥

বসতিযদৌদান্তে। বস্তাঘন্তা এতৌকিংভাসিতা। ২২৭॥ অপিদহিদিহিনহিবহয়োহাপ্তেনিফক্কিতা মেহতিলিহিদোগ্ধিরোহতয়ঃ। अभिष्टे । মেতানেতাদোগ্ধারোতাদগ্ধাদেশ্ধা। ২২৮॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

ক্ষীতি। কৃষ্ভুপতুউপিষ্৯সংচূর্ণনেরুপ তুষ্ দিপ পুষ্ প পুষ্তীতিযণন্তনির্দেশাৎ ভুবাদিক্র্যাদিঃসেট্ স্বিষ্ দিউ শ্লিষ্ দিপ স্বিষ্পাহচর্য্যাদিবাদেরেবাদ্যগ্রহণং তেনশ্লিষ্দাহেইতিভুবাদিপরস্থৈপদীদেট্ শ্লেষিতেতি। দ্বিষ্ অ উ শিষ্৯রূপ শিষ্হিংসায়াং ভুপঅয়মপ্যনিট্ শিষীতিসামান্তনির্দেশাৎ বিষ্৯জুউ বিষ্ সেচনেভুপঅয়মপ্য-নিট্ অবিশেষনিৰ্দেশাৎ অন্যথাবিষ্ক্ৰবিষতীতিবা উক্তংস্থাৎ তুষ্দিপ। শুষ্দিপ পোষতেস্বিতি তুশব্দাৎপুঞাতে-শ্চ গ্রহণং আদিনা শেষ্টা বেষ্টা ভোষ্টা শোষ্টেতি। ক্রুশীত্যাদি এতৎসূত্রপর্য্যন্তমৌপছন্দসকং মাত্রাবৃত্তং। তত্রৈবছন্দোমঞ্জ্য্যাং। ষড্বিষমে২ফৌসমেকলাস্তাশ্চসমেস্ত্রুমের্ননিরন্তরাঃ। ন সমাত্রপরাশ্রিতাকলা-বৈতালীয়ে২ন্তেরলোগুরুঃ ইতিবৈতালীয়লক্ষণমুক্ত্বাঅত্রৈবান্তেহধিকেগুরোস্থাদোপচ্ছন্দসকং কবীন্দ্রহৃদ্যং। ইতি। অস্তার্যঃ বৈতালীয়ের্ত্তেবিষমেপ্রথমতৃতীয়পাদয়োঃ ষট্ কলামাত্রাঃ সমেদ্বিতীয়চতুর্থপাদয়োরক্ষৌ-কলাআদোদোমাইতিশেষঃ অন্তেষট্কলান্তেঅফকলান্তেচরলোগুরুঃ রলগাদেয়াঃ তেনযত্রবিষমেচতুর্দশমাত্রাঃ সমেচ ষোড়শমাত্রাঃ স্থ্যঃ অত্রসমেপাদেতাআদিস্থাঅউকলানোনিরন্তরাঃ কেবললযুরূপাঃ কেবলগুরুরূপা-বানস্ত্যঃ কিন্তুলযুগুরুমিশ্রাঃ স্থারিত্যর্থঃ আফুকলাস্থমধ্যেসমাদ্বিতীয়াদ্যাকলাপরাশ্রিতানভবেৎ দ্বিতীয়া তৃতীয়া চতুৰ্থী পঞ্চমী ষষ্ঠী সপ্তমকলাস্থএকগুৰুত্ম কাৰ্য্যইতিযাবৎ তত্ত্ৰৈববৈতালীয়েঅন্তেপাদশেষেগুরৌ অধিকেসতি কৰীক্ৰহ্নদুৰ্য ঔপচ্ছন্দসকং নামস্থাৎ তেন প্ৰথম তৃতীয়পাদয়োঃ ষোড়শ্যোড়শমাত্ৰাঃ দ্বিতীয়-চতুর্থপাদয়োরফীদশাফীদশমাত্রাযত্রতদৌপচ্ছন্দসকং নামমাত্রাব্রতমিতিফলিতার্থঃ। ২২৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বসতীতিনির্দ্দেশাৎ বস্ আচ্ছাদনেবস্তস্তস্তেইত্যদাদিকয়েশরনয়োর্ব্যবচ্ছেদঃ। ঘদত অদনে। ভাসিতেতি। ভাসদীপ্রে। ২২৭॥

পূত প্রকাশিকা।
বসতীতিনির্দেশাৎ বস্নিবাসেইত্যস্তভুবাদিপরক্ষৈপদিনোহত্রগ্রহণং। ঘদ্ঠভুপ। ভাষভুষা। ২২৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

মিহ্ সেচনে লিহ্ তুহাবদাদী রুহ্ ভুবাদিঃ দহ্ দাহার্থঃ নহ্ দিবাক্সভয়পদী। নিফক্ষিতা অবধারিতাঃ। মেঢেত্যাদি। হোটঃ গুণঃ ঘটধভেতিতস্যধঃ চটবর্গাবিতি ধস্মটঃ ধাতু ট লোপঃ। দাদেস্ত্রঘঃ ঘাত্রঅধ্যেত্র হুর্য্যের বুল্রারিতি ঘত্রগাঃ। দিহিতুর হির্দেহতি রোহতী বহির হিস্তুযুঠোদহতিস্তথালি-হিরিতি পাণিনিঃ। মতান্তরেবিহ্ রুহ্ ধাতূ আদায়দশহান্তাঃ রিহ্ রুহোদোত্রোধাতুকেচিম্পঠন্তীতি ছুর্গঃ। ২২৮॥

আওচেদ্যাৎসহিবহোঃ। সহিবহোরাকারস্য ওকারোভবতিচেপরে। সোঢাবোঢা। ঢেকিং অবাহিবিদ্যমানচগ্রহণাৎ অবাক্ষীৎ। ২২৯॥ নহের্দ্ধোঢাপবাদকঃ। হস্যধঃ স্যাৎনদ্ধা। এতেকিংগর্হিতা অর্হিতা। ২৩০॥

গুঢপ্রকাশিকা।

মেহতীতি। মিহ্ভুপ লিহ্ আসাদনে তুহ্ প্রপুরণে অপ রুহ্ বীজজন্মপ্রাত্রভাবয়োঃ ভুপ দহ্ ভস্মীকরণেভুপ দিহ উপচয়েসচর্দ্ধিঃ লেপনেচেভিবোপদেবঃ অ উ ণহ্ বন্ধনেনহ্ বহ্ প্রাপণেভুউ। সর্বত্ত ধাতুনির্দেশেইঃ। নিউক্ষিতাইতি। নিস্পূর্বাঃ টকিবন্ধনেইত্যস্মাভুবাদিপরস্মৈপদিনঃ ধাতোরিদসুবন্ধস্তেতিমুম্ নিউক্ষান্তেসামীনিউক্ষিতাঃ কর্মণিক্তঃইট্ উপসর্গোধলাদখ্যত্রনীয়তেইভিবচনাৎ অবধারিতাইত্যর্থঃ কথিতাইভিযাবৎ। বসতীত্যাদি এতৎসূত্রপর্যান্তমুপগীতিচ্ছন্দঃ। ২২৭ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আও। সেটেতাদি। সহ্গতোর্হস্তত্ত্ববিভক্তিতস্থধরং চত্ত্বেপূর্ববিচলোপঃ পূর্বিদীর্ঘঃ আস্থানে-ওকারঃ। অবাহীতি। ইচিবৃদ্ধিঃ। অবাক্ষীদিতি। বহুগতে অনিটান্থিতিবৃদ্ধিরদ্যতন্যাং হোচঃ চস্থকঃ বন্ধং পরগমনঞ্চ চন্থিতিসময়েওপ্রাপ্তিঃ স্থাদত আহবিদ্যমানেতি। চস্থান্যথান্থে উত্তরকালাসত্ত্বাদিত্যর্থঃ। বস্তুতঃ পদস্থিতে সত্যামেতৎ সূত্রস্থবিষয়তাতদাচ্চবিগমএবেত্যপ্রাপ্তিঃ। ২২৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

আওইতি। ষহ্মর্ধণেসহ্ভুআ। বিদ্যমানেতি। অওঢেইতি কুতিচলোপেদীর্ঘস্ত নদীর্ঘইতি প্রাপ্তক্তেঃ পূর্বেদীর্ঘতাকরণাভাবাদেতস্থলঘাদিস্বাচ্চসূত্রস্থলাঘবং স্থাৎ আইতিদীর্ঘগ্রহণং বিদ্যমানটেওকারার্থ মিতিভাবঃ। ২২৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নহে। ঢাপবাদকইতি। ঢবাধকঃ ঢবাধশ্চহসৈত্যবধইত্যর্থলভ্যন্দর্শয়তি হস্পেতি। এতেকিমিতি মিহাদয়ঃ কিমিত্যর্থঃ। গহিতেত্যাদি। গর্হনিন্দায়াম্ অর্হপূজায়াং। ২৩০॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

নহেরিতি। ণহ্বন্ধনেদি উণাদয়োনাদয়ঃ স্মৃতাইতিণস্থানম্বং নহের্হস্থানেধঃ স্থাৎকীদৃশোঢাপবাদকঃ চবাধকঃ। ঢাপবাদকইত্যনেন হস্মস্থানেইতিলভ্যতেঅভ্যথানহেঃ পরোধঃ স্থাদিত্যন্বয়াপত্তেঃ। নমুনহের্হস্থাইত্যুক্তাবেবঢাপবাদঃ সম্ভবতিকিং ঢাপবাদকইত্যনেনেতিসত্যং তাদৃশেসূত্রেক্তেপ্রস্তাববশাদশিত্যেব আয়াতি নতুশিত্যপি অধুনাতুযত্রতপ্রাপ্তিস্তত্রেবধইতি তেন নহ্ ধাতোঃ ধ্বেবিভক্তো হস্থধম্বেপরগামিম্বে তুর্যের স্থ্যরিতি পূর্ব্বধস্থদম্বে নদ্ধেইতিপ্রয়োগঃ নপুনঃ হস্যদ্রেপরগামিত্বে চটবর্গাবিতি ধ্বেবিভক্তের্ধস্থদ্বে রোরেলোপোধাতুঢ়োঢ়েইত্যাদিনা পূর্ববঢ়লোপেতৎপূর্বদীর্ঘক্বে নাঢ়েইতিপ্রয়োগইতি। গর্হ ভুআ অর্ছ্ ভুপ। ২৩০॥

ভাবেকর্মণ্যপি তদ্ম্ৎকর্ত্ত্য্যাত্মনেপদেরপম্। অশিতিস্তাদন্যত্ত্রস্যাদধিকং যত্তদাচক্ষে। ২৩২॥

তকারাদৌপান্ধিকেটঃ সহীযুরিষিলুক্রফঃ। দোঢাসহিতা। সোঢাছেশত-মাগাংসি। সহিতাহে এফাএষিতারেফারেষিতা লোক্কালোভিতারোফারোষিতা। তকারাদৌকিং সহিষ্যেবিরহং নাথ। এষিষ্যামি। ২৩১॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা i

তকা। তকারআদির্য্যস্থ প্রতায়স্থ তস্মিন্তকারাদোসাতিইযুরিধিলুভ্রুষঃ পাক্ষিকেটঃ স্থাঃ পাক্ষিকো-বৈকল্পিকইড্যেভ্যস্তেস্তথা। রিষ্কুষ্ হিংসায়াং তুদাদীপরস্মৈপদিনোরেফাদীলুভ্গার্দ্ধ্যেদিবাদিঃ লুভ্বিমোহনে। সোঢ়েতিপূর্ব্ববং। রিষইডপ্রাপ্তোঅন্যেষাং নিত্যমিট্প্রাপ্তোবিকল্পঃ। ২৩১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

তকারাদাবিতি। তকারাদোপ্রত্যেপেরেষহ্মর্ঘণেসহ্ভু আমর্ষণং সহনং ধাতুনির্দ্দেশেইঃ ইয়ুইচ্ছায়াং ভুপরিষ্ক্রষ্ দিবাদিপরস্মৈপদিনোচোত গণদর্পণকারমতং। লুভ্গার্দ্ধোভুদিপরস্মেপদী গার্দ্ধ্যমাকাজ্জা বিমোহনার্থস্তুত্ব । সোঢাহেইতি। সোঢাহেশতমাগাং মিসূনোক্তইতিযত্ত্বয়া। প্রতীক্ষ্যং তৎপ্রতীক্ষায়ৈ পিতৃষ্বস্রেপতিশ্রুতমিতিমাঘে। আগাং দিঅপরাধান্। আগোহপরাধোমস্তক্ষেত্রমারঃ। প্রতীক্ষ্যং প্রতীপালনীয়ং পিতৃষ্বস্রেশিশুপালজনকৈ। সহিষ্যেইতি। স্পেরেসহোনিত্যমিট্ অনিট্প্রস্তাবেহনুক্ত্রত্বাদিতিভাবঃ। সহিষ্যেবিরহং নাথ! দেহুদ্খাঞ্জনং মম। যদক্তনেত্রাং কন্দর্পঃ প্রহর্ত্তুং মাং নপশ্যতীতিদণ্ডী। কম্পচিন্নায়কস্প্রপ্রাসগ্যননিষ্ণেকং নায়িকাবাক্যমিদং। ২৩১॥

প্রভাপ্রকাশিক। ।

ভাবে। কর্ত্তরিবাচ্যে আত্মনেপদেই শিতি মজেপং ভাবেকর্মাণ্যপিতদেবরূপমিত্যর্থঃ অদ্যতনীস্তাদন্যান্মিন্অধিকং কর্ত্রে শিল্পনেপদাদধিকং যৎস্থাৎ তদাচক্ষেবদামি। আচক্ষইতি। চক্ষঙ্লটউত্তমপুরু ধৈকবচনেরূপং। ২৩২ ।

গুঢ়প্রকাশিকা।

ভাবে। ইতি। উভয়পদিষু আত্মনেপদিষুচ ধাতুষু অশিতিশিন্তিমেশ্সুন্তাদোস্তাদত্যত্তব্যস্ত-বিভক্তেরগুমিনাত্মনেপদে পরেকর্ত্তরিবাচ্যেযক্রপং ভাবেবাচ্যেকর্মণ্যপি বাচ্যেতক্রপং স্থাৎ। অধিকং কর্ত্তরিবাদ্যেদিকং সাধননিষ্পন্নংরূপং তদাচক্ষেকথয়ামীত্যর্থঃ। অত্যভবিষ্যৎ সামীপ্যে-বর্ত্তমানাবিভক্তিঃ। সমানরপং যথা। বিরহং সহিতাহং বিরহঃ সহিতাময়া রম্ভাজনঃ রম্ভাজনেন-ইত্যাদিষু। স্তেভিন্নরূপং যথাঅভিত্তঅভেদি ইত্যাদি। কর্ত্ত্ কর্মণোঃ ব্যত্তাভবিক্তঅভাবীত্যাদিকর্ত্তাবন্ধের্মারপং। স্তাদ্যত্ত্তিস্তেপ্রায়িকভিন্নরূপরার্থমূক্তং তেন্উদপাদিশস্তঃ শস্তেনবাজদীপিভাব্যঃ ভাকুনাবা অত্যায়ি অপ্যায়ি অজনি অপ্রি অবোধীত্যেষাং বিকল্পেনকর্ত্তরিভাবকর্ম্মসানরপত্তেহপি নক্ষতিরিতি। আর্য্যাছন্দঃ। ২৩২॥

স্বরাস্তধাতৃপ্রহিহন্দৃশিভ্যোভাবকর্মণোঃ। তাসীঃ স্যাদ্যতনীম্বিজ্বদিদ্বাসইট্
পরং প্রতি। ধাতৃবিধানকালস্বরাস্তগ্রহ্ণ দৃশ্ এভ্যোভাব কর্মবিহিতাস্থতাসীস্যাদ্যতনীমুইজ্বিদ্যাভবতি। ইচ্যাদন্তেভ্যইত্যাদিকার্য্যং দায়িতাগৌস্বুয়াভাবিতাসম্পদাতব স্থংনায়িতাসেভাগীরথীং ভাগ্যেন। পরকার্য্যস্প্রতিইড়িতিবচনাৎ
ইটোনদীর্যঃ। ত্রর্ব্তাদৃশকন্ধর প্রভৃত্যোনিগ্রাহিতারস্বয়া। অকারিষ্ঠাইত্যা
দৌনেটঃ পরস্যানিচোলোপঃ তথাইটঃ পরোবাধোঢ়ঃ অকারিচুম্ অকারিধ্বং
রামেণ্যানিতারক্ষঃ দর্শিতাজাহ্ববীমায়া পক্ষেদাতাভবিতেত্যাদি। আশীঃ
সীকারেদায়ীষীইভাবিষীইত্যোদি। স্যকারেদায়িষ্যতে দাস্যতে অদায়িষ্যতঅদাস্যতগ্রাহিষ্যতেগ্রহীষ্যতে। যানিষ্যতেহনেনদশাস্যপক্ষঃ। হনিষ্যতেদর্শিষ্যতে
দক্ষ্যতে অদর্শিষ্যত অদক্ষ্যত লুঙি অকারিষাতাম্ অক্ষ্যাতাং। স্বরান্তধাত্বন
ইনস্ত্র্যালিগ্রহণাংকারিষ্যতেলন্তিতেত্যাদাবিজ্বদিটি ইনোলোপঃ ইনন্ত্র্যুমোপলন্তিষ্যতেত্যাচার্য্যপ্রোগইত্যান্ত্র্যানহার্যং। লুট্সংজ্ঞাচাস্যাঃ।২৩০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ষরা। ষরান্তাশ্চতে ধাতনশ্চেতি তথাপশ্চাদ্দন্ধঃ। উপদেশিকমাত্রস্বরান্তস্য তদর্থন্থে অবোধিযতেতি নিগ্রাহিতারইত্যাদো কথমিডিজ্ন্ডারঃ ইনাসরান্তরেন উপদেশিকস্বাভাবাদিটীনোলোপোত্র্কর
ইত্যতআহ ধাতুবিধানেতি। বিভক্তো যদাধাতুবিধায়তে তদৈব স্বরান্ততা নতু পাঠসময়মাত্র স্বরান্ততা
তথাচ উপদেশিক লাক্ষণিকস্বরান্তধাতুগ্রহণং তেনেজ্বিদিটীল্লোপে অবোধিযতেত্যাদি পদস্থিতিঃ তাশ্বস্তনী
আশীঃ দীন্টেত্যাদিঃ স্থঃ লূট্ অদ্যতনী লুঙ্ এতায়়। ইজ্বিতি প্রধমান্তাদ্বতিঃ ইচিয়ৎ কার্যাং তিদিটাতিদিশ্যতেইত্যর্থঃ। ইত্যাদীতি ইল্লোপাদিরাদিগ্রাহ্মঃ। দায়িতেত্যাদি। গোঃ কর্মাভিধেয়ং স্বয়েতি।
কর্তৃতীয়াপক্ষেদাতা। ভূ ইকামস্থৈবৈতির্ব্বিঃ ভবিতাচ। জং গোণকর্মাভিহিতং। ভাগ্যেনানভিহিতকর্ত্রেবিকর্মকোহয়ং। দেসকর্মকেমধ্যেহকর্মকস্থোদাহরণং। সইট্পরং প্রতীত্যস্তফলমাহ পরকার্য্যমিতি।
তথাচইচিযৎকার্যাং তৎকার্য্যমিজ্বিটাপীতি পরকার্য্যেতর, র্ব্ব্যাদিকং প্রতীক্ষ্তারঃ তেন নিগ্রাহিতার
ইত্যত্রপরকার্য্যেতর ইড্দীর্যং প্রতীজ্বজাবেনেট্রবিরহাদিটোদীর্যইতিস্ত্রেণ ইড্দীর্ঘইতিভাবঃ। অকারিষ্ঠা
ইত্যত্র ইটজ্বাবে ইট্রাভাবাৎ ধূট্রস্বতইতি সিচ্লোপঃ স্থাৎ পরকার্য্যমেনেজ্ব্রাবাভাবেত্যুধ্ঃ।
হাবিতেতি। ইচ্কার্য্যং হস্বের্যন্ র্বিঃ। অকারিযাতামিতি। লুঙ্ আত্মনেগাতাম্ অডাগমঃ ইস্ক্রহাবিতেতি। ইচ্কার্য্যং হস্তের্যন্ র্বিঃ। অকারিযাতামিতি। লুঙ্ আত্মনেগাতাম্ অডাগমঃ ইস্ক্র-

আশিষ্যাশীঃ। আশীরিষ্টাশংসনম্ আশংসার্থেভবিষ্যতিকালে আশীর্বি-ভক্তির্ভবতি। আশীঃ যাৎ যাস্তাত্মাত্মাত্ম যাস্যাস্থং যাস্থাস্ম্যাস্ম্। সীষ্ট সীয়াষ্টাং সীরন্ সীষ্টাম্ সীয়াথাম্ সীধ্বং সীয় সীবহি সীমহি। লীঙ্সংজ্ঞা চাস্যাঃ। ২৩৪॥

দিট্রদ্ধিঃ ষয়ং। অরুষাতামিতি। ঋবর্ণনাম্যুপান্তানামিতি কিন্তানগুণঃ। লম্ভিতেতি। অন্ পরোক্ষে বর্জয়িয়াবিন্দূরভিলভোস্তথেতি বিন্দৌউপধাম্বাভাবানর্দ্ধিঃ। আদিপদাৎদাপিতাস্থাপিষ্যতে ত্যাদি। মোপলম্ভিষতেতি। লুঙঃ সতমাযোগেহটোনিষ্বেধঃ ষত্বং। ইত্যাদীত্যাদি পদাৎচোরিতা-চোরয়িতা চিন্তিষ্যতে অচিন্তয়িষ্যতইত্যাদি।২৩৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্বরান্তেতি। ধাকুপদগ্রহণং ধাকু বিধানকালে স্বরান্তধাকুগ্রহণার্থং। ইচীতি। ইচ্যাদন্তেভাানুষ্ডিত্যাদিকার্য্যমিত্যর্থঃ। দায়িতেতি ডুদাঞ্দানে ভুসভায়ং ভাবিতা নীঞ্ প্রাপণেনায়িতাসে। ছর্বভাইতি। ত্বং তান্তাঃ স্মৃতবানুচোদশভ্রীস্ত্বংপ্রতীয়ে যজ্জিঃ স্বাহাকারমুপাহিতং হবিরহত্রেতাগ্নিরাচামতি। ত্বাং ক্ষীরোদজলেশয়ং ক্রন্তভুজঃ পৃথীমবাতীতরন্ধিতি পূর্বপাদত্রমনর্যরাঘবে। ঘানিষ্যতভ্রতি। ঘানিষ্যতভ্রেনন দশাস্থপক্ষঃ স্থায়িষ্যতে যেন রণেপুরস্তাং। মামাং মহাত্মন্ পরিভূরযোগ্যে নমদ্বিধান্যস্থতি ভারমগ্রামিতিভটিঃ। ঘানিষ্যতেহনেন মহান্ বিপক্ষইত্যাধুনিকঃ পাঠঃ। মাপরিভূঃ মাবজ্ঞাং ক্রু। অগ্রং শ্রেষ্ঠং। ইনন্তস্থাপিগ্রহণাদিতি৷ ইনন্তস্থধাতুবিধানকালে স্বরাস্ততায়া স্তৌল্যাদিতিভাবঃ। লম্ভিতেতি। ভূলভ্রপ্রাপ্তে । ইনন্তস্থধাতুবেধানকালে স্বরাস্ততায়ার্যা প্রেল্যাদিতিভাবঃ। লম্ভিতেতি। ভূলভ্রপ্রাপ্তেরী। ইনন্তস্থধাতুবেনগ্রহণং প্রমাণয়তিমোপলম্ভিষতেত্যাচার্য্য প্রয়োগইতি। সর্বত্রহের্থীনেত্যাদিনা ইন্। তেমোপলম্ভিষত বক্তিমুথৈঃ স্থধানৈর্দৈত্যাঃ প্রবালধিনতং ভূজগন্ত রাজ্ঞান ক্রান্তরং প্রমাণির্হা ক্রান্তরং নতং প্রবালধিকতং শিরোদিত্যাবিজ্যমুথৈরিক্রাদিভিঃ মাউপলম্ভিষত নজ্ঞাপিতাঃ অন্তৎস্পন্তং। বালান্কচান্ দধতীতি কৃস্জন্ ধাঞ্মদিনমামিতি কিঃ। চিকুরঃ ক্স্তলোবালঃ কচঃ কেশঃ শিরোক্রছহ্তিয়নঃ। অন্তৎপ্রতাপ্রাদিকায়ামনুস্ত্রিং। ২৩৩ ॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

আশি। আশিষিবাচ্যায়ামিত্যর্থঃ। ২৩৪॥

शृष्थकाणिका।

আশিষ্যাশীরিতি। আশিষিবাচ্যায়ামাশীর্বিভক্তির্ভবতীত্যর্থঃ। আশীঃ পদার্থমাহাশীরিতি। ইফাশংসনমিফকথনং। ভবিষ্যতীতি। অর্থতোভবিষ্যৎকাললাভাৎ তস্মিন্ গম্যেইতিভাবঃ। লীঙিতি। অস্তা আশীর্বিভক্তেরিত্যর্থঃ। ২৩৪॥ যোইস্যায়থাং। আশীর্য্যোয়থাদতিদিশ্যতে তেন যকঃ কার্য্যাণিগুণনিষেধ-দীর্ঘাদীনিভবন্তি। ভূয়াৎ জীয়াৎ কীর্য্যাং পূর্য্যাৎ দীব্যাং ঋকারস্যারিক্রিয়াং। কল্যাণয়ঃ ক্রিয়াস্থঃ। জাগর্যাং অর্যাং সংস্থায়াংসম্প্রাণ উচ্যাং স্থপ্যাং ইজ্যাং সূয়াং উশ্যাং গৃহ্থাং সূজ্যাং বংকরণাং কচিন্নয়থাং তেন তন্যাং সন্যাং খন্যাদিতিনাত্বং। ২৩৫॥

ৰপ্ৰাদ্যন্তন্যোদীৰ্যঃ। উদিয়াৎ সমিয়াৎ অন্বিরাং। প্রাদ্যন্তন্যকিষ্ ইয়াং।২৩৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যোহস্যা। দীর্ঘাদীত্যাদিপদাৎ জাগর্তীত্যাদিনাগুণাদের্গ্রহণং। কীর্যাদিত্যাদি। ৠদস্তম্যের্
উর্স্যাদোষ্ঠাদিতিউর্ অগুণেহলীতিদীর্যঃ। কল্যাণস্বঃ ক্রিয়াস্বঃ কিসলয়রুচয়স্তেকরাভাস্করম্যেতি
সূর্যাশতকং। জাগর্যাদিত্যাদিত্রেজাগর্ত্তিসংযোগান্তথতাংগুণইতিগুণঃ। সম্প্রসারণমিতি। বচিস্বপ্যজিত্যাদিনা। সূয়াদিত্যাদি। সম্প্রসারণেদীর্যঃ। উশ্যাদিত্যাদি। বশোগ্রহীজ্যেত্যাদিনাসম্প্রসারণং। তেনেতি। তনস্তাবেতি থন্ জন্ সন্বাথাজাসাঃ স্থ্যারিতি থন্ সনোঃ থাসাইতিপক্ষেনেত্যর্থঃ।
আত্বমিতি। প্রাচীনেরেশাং নস্থাত্বংক্রিয়তইতি তন্মতজ্ঞাপনার্থং। ২৩৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বোহস্তাইতি। অস্থাআশীর্বিভক্তের্যঃ যধনতিদিশ্যতেইত্যর্থঃ। কার্য্যাতিদেশোহয়ং। জীয়াদিতি। জিজয়েনামীয়কিদীর্যঃ। কীর্যাদিত্যাদি। কৃ ক্ষেপণে পৃ পালনপূরণয়োঃ দিবুক্রীড়ায়াং ডুর্ক্ঞ্করণে। কল্যাণমিতি। ভক্তিপ্রহ্লায়দাতুং মুক্লপুটকুটীকোটরক্রোড়লীনাং লক্ষ্যীমাকর্ত্বকামাইব ক্ষলবনাদ্যাটনং কুর্বিতেয়ে। কালাকারাদ্ধকারাননপতিতজগৎ সাধ্বসধ্বংসকল্যাঃ কল্যাণদ্বঃ ক্রিয়াস্থঃ কিসলয়রুচয়স্তেকরাভাস্করস্তেতিসূর্য্যশতকে। জাগর্য্যাদিত্যাদি। জাগ্নিদ্রাক্ষয়ে ঋগতি প্রাপণয়োঃ সংপূর্বেঃ স্থাকোপতাপয়োঃ বচ্ ক্রবচ্ চ ঞিষপ্শয়েধাত্বাদিয়স্তাঃ য়জ্ইজ্যাৎ স্থপ্রবিঃ বেঞ্তস্তমন্তানেক্রাজাে গ্রহ্উপাদানে স্জ্বিস্র্যাণয়েয়ঃ তকুবিস্তারে য়ণুদানেধাত্বাদিয়স্তাঃ ণস্তনঃ থকুঅবদারণে। ২৩৫॥

প্রভাগ্রকাশিকা।

নপ্রা। প্রাদ্যন্তস্তপ্রাদিপরস্তইণোদীর্ঘোনস্যাদিত্যর্থঃ। ঈয়াদিতি। নামীযকিদীর্ঘঃ স্যাদিতিদীর্ঘঃ। ২৩৬॥

গৃচপ্রকাশিকা।

নপ্রেতি। প্রাদেরস্তইতি বিগ্রহং তস্যইণ্গর্তো ইত্যস্থনদীর্ঘঃ। উদিয়াদিত্যাদি। উৎপূর্ব্বস্য সম্পূর্ব্বস্য অনুপূর্ববস্যইণোনদীর্ঘঃ। সমীয়াদিতি প্রয়োগস্তইগতাবিত্যস্যস্গতাবিত্যস্যবা ভৌবাদিকস্য-পরস্মৈপদিনঃ। ২৩৬॥

•

মাদীনামাএকারোযে। মাজহাত্যাদিসপ্তকস্যাকারএকারঃ স্যান্থেপরতঃ। মেয়াৎ হেয়াৎ অবসেয়াৎ গেয়াৎ পেয়াৎ দেয়াৎ ধেয়াৎ। যেকিং মাসীফ দাসীফ। মাদীনাং কিং পারক্ষণেপায়াৎ দরিদ্র্যাৎ। ২৩৭॥

বাসং যোগাদীনামস্থঃ। সংযোগাদিধাতৃনামাকার একারঃ স্যাং। ধ্যেয়াং জ্ঞা স্না শ্লাদেরেবং। যইত্যেব গ্লাসীষ্ট। অস্থঃ কিং স্থেয়াং। আত্মনে ব্যবস্থানুসারাদিট্ বদিষীষ্ট শ্বি শ্বরিষীষ্ট শ্রি শ্রেষীষ্ট শ্রেষীষ্ট নেট্ নেষীষ্ট বিজেষীষ্ট উদেষীষ্ট। ২০৮॥

হন্তে ৰ্ধাশিষি। বধ্যাৎধাত্তস্তাস্যলোপঃ স্যাৎ অদন্তত্ত্বাদিট্বধিষীফ ।২৩৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

মাদী। অবসেয়াদিত্যাদি। সোগৈ এচাং পাঠস্থিতান্তানামিত্যাত্বে এত্বং। দরিদ্র্যাদিতি। আকারলুগ্ দরিদ্রাতেরিত্যালোপঃ। ২৩৭॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

মাদীনামিতি। মাআদির্য্যোং তেনমাহাক্স্ততিগৈপাস্থাদামিত্যর্থঃ। অত্রস্থবোধার্থং বিসন্ধি-মৈকারোযেইত্যুক্তে ঐকারদন্দেহঃ স্থাৎ। স্থাধাতোরুদাহরণমগ্রেদাস্থতীত্যত্তনোক্তং। ২৩৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাসং। অস্থঃ স্থাভিন্নানামিত্যর্থঃ শব্দোনঞিবেতি ভাষাদেকবচনং। ধ্যেয়াদিতি। এচামিতি প্রথমমাত্বেএবং বা। জেতি। জেয়াৎ জায়াৎ স্লেয়াৎ স্লায়াৎ স্লেয়াৎ স্লায়াৎ স্লেয়াৎ গ্লেয়াৎ গ্লেয়াছিত। তিত্বস্বাধিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত। তিত্বস্বাধিত গ্লেয়াছিত। তিত্বস্বাধিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত। তিত্বস্বাধিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত। তিত্বস্বাধিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত। তেই গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত। তেই গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত। তেই গ্লেয়াছিত গ্লেয়াছিত

গুঢ়প্রকাশিকা।

বাসং যোগাদিতি। ধ্যেয়াদিত্যাদি। ধ্যৈচিন্তায়াং জ্ঞাঅববাধনেফাশোচে ষম্ভদঃ ণশুনঃ মৈকৈহর্ষক্ষয়ে। আদিনাল্লাঅভ্যাসেত্রাগন্ধোপাদানেদ্রাকৃৎসায়াং গতোচ প্রাপ্রণেপ্লাভক্ষণে প্রাপাকবেদয়োরিত্যাদর্গ্রহণং। ব্যবস্থানুসারাদিতি। অনেকাচ ইত্যাদিনাম্বরান্তানাং যনস্বরাদিভিন্নানামিত্যনেনানিত্ ভিন্নানাং হলন্তানামিত্ বিধানানুসামাদিত্যথঃ। নেডিতি। একস্বরম্বাদিতিভাবঃ। নেষীফেতি।
নীঞ্প্রাপণে। বিজেনীফেতি। জিজয়েবিপ্রাভ্যাং জেরিত্যাল্মনেপদং। আশিষ্যাশীরিত্যাদি এতৎসূত্র
পর্যান্তং বিত্যানালাছন্দস্তল্লক্ষণং ছন্দোমঞ্জর্যাং কৃত্য্ যথামোমোগোগোবিত্যুন্মালেতি। গুর্বাফাকরঃ
পাদইত্যর্থঃ। ২০৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হন্তে। বর্ধইত্যশ্মাদ্বিভক্তীনাঞ্চলোপনমিতি প্রথমৈকবচনলোপঃ। বধ্যাদিতি। ধাত্বস্তুস্তেতি অলোপঃ পরগতিঃ। অদন্তেতি। অদন্তত্বেনানেকাচ্ত্বাদিতিভাবঃ। বধীতি ইট্যবর্ণস্তলোপনং। ২৩৯॥ গমোগঃ দেবা। সঙ্গদীষ্টতং। সঙ্গুং দীষ্ট। দেকিং গম্যাং। আশি-ষ্যেবগংস্যতে। ২৪০॥

ঋবর্ণনাম্যুপাস্তানামনিডাশীর্লুডোকিতো। লুঙ্অদ্যতনীকিত্বারগুণঃ। কৃঞ্ কৃষীষ্ট কৃষীয়াস্তাং কৃষীরন্ভিৎসীষ্ট ৰুৎসীষ্ট। আশীঃ সাহচর্য্যাৎ লুঙাত্মনেপদ-গ্রহণম্অকৃত অভিত্ত দৃক্ষীষ্ট। ২৪১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হত্তের্ব্ধধেতি। যেবধস্থাদিত্যন্বয়াপত্তিবারণায়াশিষীতি। তথাচাশিষীতিগ্রহণমুভয়পদেবধাদেশার্থং। নচাদেশাপেক্ষয়া আগমস্থ বলবন্ত্বাদ্ধন্তেঃপরোবধস্থাদিতিবাচ্যং পূর্ব্বত্রাদেশদর্শনাৎ সাংদৃষ্টিকন্যায়াদত্রাপি তথাস্বীকারাৎ। যদ্যপিব্যঞ্জনান্তত্বে অদন্তত্বেবাবধাশিষীতি স্থাৎ তথাপি ধাত্মন্তস্থাস্থলোপঃ অদন্তত্বাদিতি কথনাদদন্তএবায়মিতি তৎকলন্ত আশিষিষনস্বরাদিভিন্নায়ামিডিধানং বিধিষীফেতি। স্বরান্তধাতুগ্রহি-ছিন্নত্যাদিনাবিহিত্যু ইজ্দিটোবিকল্পপক্ষেবধাদেশোবোদ্ধব্যঃ তেন ঘানিষাফেত্যপি। ২৩৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গমো। গম্পাতোর্গ: আশীঃ সকারেবা। সঙ্গান্টেতি। সমোগমূছীত্যাদিনাত্মনেপদং গচ্ছতি যমীতীড্ নিষেধঃ। আশিব্যেবেত্যেব ইতিপাঠঃ আশিষিকিমিতিপ্রামাদিকঃ। ২৪০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গমইতি। আশিবিষয়েদেপরতইত্যর্থঃ। সঙ্গশীষ্টতদিতিকর্তৃপ্রয়োগঃ। সঙ্গংসীষ্টেতি। গাদেশাভাবপক্ষেবিন্দুর্ধু টীত্যাদিনামশুবিন্দুঃ। ৰুচিদাশিষি কিমিতি পাঠোহস্তি সপ্রামাদিকঃ সূত্রে-আশিবীতিগ্রহণাভাবাৎ।২৪০॥

প্রভাপকাশিকা।

খাব। খাবর্ণপদেনখাদন্তগ্রহণং নামীউপাত্তোরেবাংতেতথাপশ্চাদ্দন্তঃ নাস্তিইট্যয়োস্তাদৃশ্রে আশীল্লুডোকিতোকসুবন্ধস্যাতামিত্যর্থঃ। কিন্তুাদিতি। কণ্ডসুবন্ধাইত্যুক্তত্বাৎ পরত্রযজাদিত্বা-দাত্মনেপদঞ্চ। ২৪১॥

গৃঢ়প্রকাশিকা 1

ঋবর্ণেতি। ঋ ৠইত্যেত্যোঃ পরিশ্বপদিয়াৎ ঋবর্ণপদেন ঋদন্তৠদন্তগ্রহণম্ ঋদন্তইত্যুক্তে দীর্ঘ্ধাদন্তপ্রাপ্রসক্তের ঋদন্তইত্যুক্তে ব্রস্থাদন্তগ্রহণপক্ষেদংশরাপত্তেঃ ঋবর্ণেত্যুক্তং। কুঞ্ কুষীফেত্যাদি। ভিদির্ দ্বিধাকরণেভিৎধীফা। কুৎসীফেতি। ক্রধির্ অশ্রুবিমোচনে ক্রধির্ আবরণেইত্যন্তবারূপং। আশীঃ দাহচর্য্যাদিতি। আশীঃ পরিশ্বেপদিয়কারস্যয়াদিত্যুক্তত্বাৎ অত্যাশীরাত্মনেপদগ্রহণাত্তৎসাহচর্য্যাদেক-পাঠাদিত্যুর্থঃ। দৃক্ষীফেতি। দৃশির্ প্রেক্ষণে। ২৪১॥

আশীঃ পরোক্ষাদ্যতনীধোঢোনাম্যন্তধাতুতঃ। রুষীদৃষ্ এবং বিজেষীদৃং স্তোষীদৃং লিটিচরুদ্বেলুঙি অরুদৃং তথালবিষীফেত্যাদি। ২৪২॥

জাসাংধাঢ়ইটোবাস্যাৎ। লবিষীত্বং যথারিপূন্। লবিষীধ্বং তথাব্যতি ভবিষীত্বং ব্যতিভবিষীধ্বমিত্যাদি। তিস্নাং পাঠাৎ স্ত্রধ্বে স্তধ্বমিত্যাদৌন-ধোটঃ। ২৪০॥

সংযোগাদি ঋদুদন্তর্ভ্যইড়াত্মনেতয়োঃ। আশীলুডোঃ পরতঃ। শ্বরিষীফ শ্বরিষীফ শ্বীফ ধ্বরিষীফ তরিষীফ অগুণেহলীতিদীর্ঘঃ তীর্ষীফ শুরিষীফ শুরিষীফ পূপরিষীফ পূর্ষীফ রর্ষীফ বরিষীফ ব্যত্যশ্বরিষ্ঠ ব্যত্যশ্বত। সংযোগাদি-শ্বদন্তগ্রহণাৎ নেহসংশ্বষিফ্রাণ বকং। নাম্যুপান্তশ্বরণান্যশ্বান্নকিং যজ্ যক্ষীফ বচ্ বক্ষীফ ব্যধ্ ব্যৎদীফ অশ্বরিষ্ঠ। অশ্বত। অনিট্কিং মোদিষীফ সম্বেদিষীফ শ্বোহ্যীফ। ২৪৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আশীঃ। আশীশ্চপরোক্ষাচাদ্যতনীচেতিদ্বন্দ্বঃ পশ্চাদাসাংধইতি যন্তীতৎপুরুষঃ। নাম্যন্তধাতুত-আসাংধোতঃ স্থাৎ। চকুতুইতি কর্ত্তকর্মণোঃ। ২৪২।

গৃতপ্ৰকাশিকা।

আশীরিতি। বিজেষীদুমিতি। বিপুর্কোজিগুণেষত্বং। চকুদুেইতি। লিটিকুদ্বিভাবেঋবর্ণস্থাকারঃ কবর্গদ্য চবর্গঃ স্থাদিতিকদ্যতঃ। অকৃদুমিতি। আদাবডাগমঃ। লবীদীক্টেতি। লুঞ্ছেদনে। আদিনা পবিদীক্টেত্যাদি। ২৪২॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

আসাং। আসাং ইট্পরস্থ আসাং পুর্বেবাক্তানাং ধস্যস্থানেতঃ স্থাদিত্যর্থঃ। স্পবিষীত্বমিতি। ঞিব্রাদায়নেপদঞ্চ উদন্তবাৎ বেট্। ব্যতাত্যাদিও ক্রিয়াবিনিময়েআল্লনেপদং। তিস্থামাশীঃ পরোক্ষাদ্যতনীনাং। স্তুপ্রেইতি। বর্ত্তমানায়াআল্লনেপদমধ্যমপুরুষবহুবচনং পরক্রলোড্বিভক্তঃ। ২৪৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আসামিতি । আসামিতিক্ষুটার্থং। পূর্বাদিনাব্যতিলবিধীদুং ব্যতিপবিধীদুমিত্যাদেঃ পরাদিনাধুধ্বেইত্যাদেগ্রহিঃ। ২৪০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সংযো। সংযোগআদির্ঘ্যস্ততথাদ্বন্দস্থান্তপদাশ্বয়াদৃদন্তঃ সচাসোঞ্চন্ততে কর্মধারয়ঃ সংযো-গাদিঝদন্তঃ দীর্ঘশ্লন্ত-চর্ধাভুশ্চৈভ্যইত্রর্থঃ। যদাসংযোগাদিঝচয়্পদন্তশচ্বতে যদ্যপিপ্রসূত্রেভিস্ণা-

তাশিৎসকারেসস্তঃ স্যাৎ। যথা বৎসীষ্ট বৎস্যতি। ঘৎসীষ্ট ঘৎস্যতী ত্যাদি। ২৪৫॥

মুপাদানাত্রোরিতি সংশায়কং তথাপি তৎপূর্বসূত্রেআশীর্লু ছোগ্রহণাত্রোরেবপরামর্শ ইত্যাহআশীর্লু ছোঃ যবাঝবর্ণান্তস্থানিট্রেআশীর্লু ছোঃ কিন্ত্রবিধানাত্তস্থিত বেট্রবিধানেনেট্ পক্ষেকিন্ত্রাভাবপ্রদর্শনার্থাচ্চ তয়োর্গ্রহণমিতি ভাবাদাহাশীর্লু ছোরিতি। স্মরিষীফেতি। স্মুপ্রভৃতেঃ পরস্মৈপদিন্ত্রেন কর্মণিপ্রয়োগা-আমীইতিবেদিতব্যং। সেট্রামকিৎতেনগুণঃ। ধ্বরিষীফেতি। ধ্বৃষ্ঠদেনভচ্চকোটিল্যং। স্মুবীফেত্যাদি। অনিট্পক্ষেকিন্ত্রাদগুণাভাবঃ। সংযোগাদিখাদস্তমুদাহন্ত ৠদস্তমুদাহরতিতরিষীফেত্যাদি। তীর্ষীফেত্যাদি। ইডভাবেকিন্ত্রাদগুণভাবঃ। উর্স্থাদোষ্ঠ্যাদিত্যগুণেউর্। র্বীফেতি। কিন্ত্রামগুণঃ লুঙ্মুদাহরতি ব্যত্যস্মরিফেত্যাদি। সংযোগাদীতি। স্বভাবতঃ সংযোগাদিখাদস্তগ্রহণাদিত্যগুণ স্থটাসংযোগাদিছ-মোপাধিকমতোনাত্রপক্ষেইট্ অগুণস্বস্তপ্রেবিক্তমস্ত্যেবেতিভাবঃ। অত্রকর্ত্র্যান্থনেপদং কর্মণ্যপ্রেবেমব ক্রেব্যং ভাবেকর্ম্মণ্যগীতিসূত্রাহ। নাম্যপান্তেতি। খাবর্ণনাম্যপান্তানামিত্যনেনানিভাশীর্লু ছে। নাম্যপান্তেতি। খাবর্ণনাম্যপান্তানামিত্যাদিনাসম্প্রান্ত্রাদিনাসম্প্রান্ত্রহণ ব্যহশীফেত্যাদি। নাম্যপান্তবেহপি নেয়মনিট্তেনগুণঃ মৃদ্হর্বেআল্যনেপদী সম্পূর্ববিদ্সমোগস্থছীত্যাল্নেপদী ইমেমিটো। স্মুহ্বের্রধাদিরাহ অনিট্পক্ষেমু্যীফ। ২৪৪॥

গু ঢপ্রকাশিক।।

সংযোগাদীতি। দ্বন্দ্রসাসস্থান্তপদস্থ ঋইত্যত্রাপ্যন্তরাৎ ঋদন্তইতি লভ্যতেতেনসংযোগাদিশ্চাসার্দন্তশ্চেতিবিগ্রহঃ। স্মরিধীফেত্যাদি। স্মৃচিন্তায়াং স্থান্দোপতাপ্রোঃ ভুবাদিঃ স্থ্ননেজ্যাদিশ্চ
ধর্ভুপ ভূপ্লবনসংতরণয়োঃ পৃপালন পূরণয়োঃ রুঞ্বরণে। ব্যত্যস্মরিফেতি। অদতন্ত্যাঃ স্তবিভক্তোঅভাগমে ইভাগমে ঘরেরপং। বত্যস্তেতি। ধুড্ব্রস্বতোধুটীতিসিজ্লোপঃ। সংযোগাদীতি। এতচ্চাদিশব্দব্যবস্থয়োক্তং। সংস্কৃষীফেতি। সম্পরিভ্যাঃ কৃঞঃ প্রাক্স্ডিতিস্ট্। বচ্ শব্দেনবচ্ ক্রবচ্ ইত্যুভয়োগ্রহণং। ব্যধ্তাড়নে বিদজ্ঞানেফুহ্ উদ্গিরণেদিপ। অন্তৎপ্রভাপ্রকাশিকায়ামনুসন্ধেয়ং। ২৪৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অশি। শিৎসংজ্ঞকভিন্নসকারেধাতোঃ সম্ভতঃ স্থাৎ। বৎসীষ্টেতিভাবেরপং কর্ত্ত্যাত্মনেহভাবাৎ। বৎসতীতিবাচ্যবিভক্ত্যুদাহরণং লাঘবার্থং। ঘৎসীষ্টেতি। কর্মাণিসান্তেইমাবনিটো। কচিদম্মতেতিপাঠঃ। নশ্বয়ং পরস্মৈপদী কর্মাণিতিপ্রাপ্তোত্মসারীত্যেবরূপত্তত্মভাং ব্যতিপূর্ব্বত্মভিপ্রেত্যেথমুক্তং। যদাইজ্ বাছহিম্বান্তেত্যত্ত অকৃতইতিবৎকর্মকর্ত্তিরিঅম্মরিউ অম্মতেতিসিদ্ধন্। ২৪৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ভবিষ্যভিভবিষ্যন্তী। স্যৃতি স্যৃতঃ স্যৃথস্ স্যৃথি স্যাধি স্যাধ্য স্যামস্। স্যৃতে দ্যুতে সংস্তে স্থানে স্যোধে স্যোধি স্যোধহে স্যামহে। ইয়ং ল্ট্চ। শ্বস্ত ন্যামিবসাধ্যমিডাগমাদি। ভবিষ্যভিভবিষ্যতঃ ভবিষ্যন্তীত্যাদয়ঃ। লবিষ্যতিজে ষ্যভিবিজেষ্যতে অধ্যেষ্যতেদাস্যতি দাস্যতে দরি দ্রিষ্যতি প্রাহীষ্যতি ক্রবচ্ বক্ষ্যতি দ্বন্যতি স্পর্ক্যতি স্প্রাতি নিষ্যুতি বন্ধ্ ভন্ত্ স্যতি। ২৪৬॥

সন্স্যোগিপর সৈত্বের্ধুস্যন্দিশৃধ্রূপঃ। রতাদেরাত্মনেপদিনঃ সন্স্যো-গিপরসৈথদঞ্চবতি! স্যত্স্যতি সিস্যন্দিষতেস্যন্দিষ্তে শব্ধিষ্যতি শব্ধিষ্যতে রত্রধ্বর্জ্স্যতি বিরংসতি চিকম্পিষ্তি চিকম্পিষ্তেকম্পন্যতি। ২৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভবিষ্যন্তীপ্রকরণমারভতে ভাবষ্যতীতি। ভবিষ্যতিকালেভবিষ্যন্তীবিভক্তির্ভবিত। ইডাগমাদীতি। আর্দীর্ঘাদিরাদিপদগ্রাহ্য। ভবিষ্যতীত্যাদি দ্বে ভুপুদেটোইটিগুণঃ। জেষ্যতীতি। অনিডেকস্বরন্ধাৎ। এবমন্যত্র। বিজেষ্যতইতি। বিপরাভ্যামিত্যাত্মনেপদং। দাঞ্জিত্মভূষ্যপদী। গ্রহীষ্যতীতিইটোদীর্ঘঃ। ক্রবচ্ইতি। ক্রবোবচ্বচ্ধাতুশ্চ উভয়ত্রধূটান্তেচেতি চঃ কঃ। দৃশ্ অব্যত্যাসঃ। স্পর্য্যাদি। স্পৃশ্গুণেস্পৃশির্শিক্শান্থেতিবাহর্বত্যাসঃ। তুহ্ দিহ্ দাদিহোঘইতিঘঃ তৃতীয়াদ্যাইতিত্র্য্যাদিঃ লিঙ্গবদিতিঘঃ কঃ কাংষত্বং বন্ধ পূর্ববিদ্যাভঃ ধ্যাতঃ। ২৪৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ভবিষ্যভীতি। ভবিতেতি ভবিষ্যন্ স্যুক্শন্ত স্মানোস্তইতি স্যন্তঃ ইট্গুণঃ ষত্বং সপ্তম্যেকবচনে অন্তাব্যঞ্জনেতিনলোপঃ পরগামির্ঞ। ভবিষ্যন্তী অন্তন্তরাংশ্রিয়ামী অনকারাদেবেতিনিয়মায়লোপাভাবঃ। প্রথমেক বচনেঅবাস্থীকারতঃ সেল্লুক্। তামাহস্যভিইত্যাদি। ইয়মিতি। ইয়ং ভবিষ্যন্তীলৃট্চ লৃট্ সংজ্ঞাচেত্যর্থঃ। শ্বন্তামিবেতি। শ্বন্তন্যাং যদিভাগমাদি সাধ্যং তদীহাপীত্যর্থঃ ভবিষ্যতীত্যাদি। ভ্রন্তায়াংলুক্ছেদ্নে জিল্লয়ে অধিঙ্ অধ্যানে ভূদাক্দানে দরিদ্রো ত্র্গতো এই উপাদানেক্রঞ্ব্যক্তায়াং বাচিম্পৃণ্ম্পর্ণনে তৃহ্প্রপুরণে দিহ্ উপচয়ে বঞ্বন্ধনে। অনুষ্ঠপত্রকপাদা বাচ্ছিয়ং গাথাছন্দঃ। ২৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সন্স । সন্সয়োর্যোগিসন্সযোগিপরিশ্বেপদং চকারাদাত্মনেপদঞ্চ । সন্ত স্থাতি । স্থান বেট্
প্রথমঃ সিদ্যান্তি । স্থানি ভূমিচ্ছতীতিসন্চঙ্সন্ধিতিদ্বিঃ অনাদিহল্লুক্সন্থবর্ণ ইঃ সিম্পান্দিষতেচ ।
শর্জিয়তিশর্জিয়তেশৃধুশন্দকুৎসায়াং সেট্সনিশিশর্জিয়তিবর্ত্স্যতীতিগুণের্ধ্ পক্ষে প্রথমঃ । বির্ৎ
স্তাতি । সনিদ্বির ঝার্ণিস্থকারইত্য গুণোনাস্তিনামিমতামিতিনগুণঃ । চিকল্লিষতীতি । কুপ্সনিদিঃ
কম্পতঃ গুণেক্পেরোলঃ উদনুবন্ধবাবেট্ ঝাধুর্দ্ধো অর্জিয়তীতিত্র্গমতে । ২৪৮ ॥

রংরধ্রুপুস্যন্দইট্স্যাদাত্মনেপদসেপরে। বর্ত্তিষ্যতে বর্দ্ধিষ্যতেকম্পিষ্যতেপ-রক্ষৈপদেবর্ত্ন্যতি। ২৪৮॥

কৃতীনৃৎ নিৰ্দ্দিদ্ধ কৈ সৰ্বত্রাসিচিসেনবা। ইট্কার্য্যঃ। কর্ত্স্যিতি কর্ত্ব্যিতি নর্ত্ব্যতি নর্ত্ব্যিতি নর্ত্ব্যতি নর্দিষ্যতি নংস্যৃতীত্যাদি। চিকন্তি যতি চিক্নৎ সতীত্যাদি। অসিচিকিং নিত্যমিট্ অকর্ত্তীৎ। সেকিংকন্তি তা। ২৪৯॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

সন্তাযোগীতি। রতুবর্তনে বারচ্চ রধ্ রন্ধে রধ্চক্তন্দুক্ষরণেধাতুনির্দেশেইঃ স্থানিন্দ শৃধ্ভু আ শৃধ্ চ কৃপ্য্নামর্থ্যেকৃপ্চেতিদ্বন্ধঃ সর্বোদ্বাবিভাষয়েকবদিতিবচনাৎ পঞ্চম্যেকবচনেরপং। যদ্যপি শৃধ্ উন্দনেভুবাদিঃ পরস্মৈপদীচান্তি তথাপিতস্থনগ্রহণং কিন্তুস্থানিকৃপ্সাহচর্য্যাদান্মনে পদিনএবগ্রহণমিত্যাহ রতাদেরাত্মনেপদিনইতি। যদ্যপিপাঠক্রমেণপ্রথমং র্হরধোরুদাহরণমুচিতং তথাপির্ধোধান্ততয়াতৎ পৃর্বাং দান্তস্থান্দউদাহরণং সঙ্গত মিত্যভিপ্রেত্যপ্রথমংস্থানঃ পশ্চাৎপাঠক্রমেণধান্তস্থাধ্য ততোব্যতিজ্মেণএকরপসাধ্যর্হ রুধোন্তদনন্তরং পান্তস্থক্সপউদাহরণং দক্তমিতিবোধ্যং। ২৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

র্থ। রতুবর্ত্তনেরধুরদ্ধৌ আদ্যো সেটো অন্ত্যো বেটোআল্লনেপদসম্বন্ধিসেইত্যর্থঃ তেন বর্তিগ্যতে। বর্ত্ত্ স্থাতীতি। পরস্মৈপদেনেট্ সনিতুইট্ যথাপ্রাপ্তি। ২৪৮॥

গূঢপ্রকাশিকা।

বৃদিতি। তান্ত ধান্তমধ্যের্থ রুধোরনিট্রাপ্রাপ্তেরুভোদেটো কৃপ্সুন্দোবেটোরধাদ্যুদনুবন্ধত ইত্যানেন উদনুবন্ধস্তবেট্রবিধানাথ। অত্রাদ্যয়োরাত্মনেপদব্যার্ত্যাপরস্থৈপদদেইট্নস্যাৎ অন্তয়োস্ত আত্মনপদদেপরেনিত্যমিট্ অন্তত্র বৈকল্পিকঃ স্থাদেব। নচ তয়োরপি পরস্থৈপদদেপরেবৈকল্পিকেড্ বাধঃ স্থাদিতি বাচ্যম্একস্থাবাধেনসফলত্বেবাধানোচিত্যাৎ। ২৪৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কৃতী। উশ্বদির্ হিংসাদানয়োঃ উছর্দ্ দীপ্তিদেবনয়োঃ। র্ৎ র্ধ্ নৃৎ শ্বদ্ ছ্দ্ কর্ত্ত কর্তিয়িত ইতিসারঃ। চ্ৎহিংসাগ্রন্থনাস্ত্রদাদিঃ চৎর্দ্যতি চর্তিয়তীতিসারঃ তন্মতে চ্ৎ সেবেট্। অভ্যমতেনর্দিস্থানে র্ৎপাঠঃ নর্দিয়াতি ইত্যুদাহরণস্থানেবর্তিয়াতি বৎস্ত তীত্যাদি। নৎস্ত তীত্যাদিপদাৎ মর্দিয়াতি মৎর্স্যতি ছর্দেয়াত ছৎর্স্যতি। চিকর্তিয়তীতি। কর্তিয়্মচ্ছতীতিবাক্যং পরত্রগুণোনাস্তিনামিমতামিতিগুণনিয়েধঃ। আদিপদাৎ নিনর্তিয়তি নিন্ৎসতি নিনর্দিয়তি নিনৎসতি মিমর্দিয়তি মিয়্ৎসতি চিছর্দিয়তি চিছর্পতি। ২৪৯॥ ব

স্থ্যকারেহনৃদন্তাদিট। হনিষ্যতি হনিষ্যতে করিষ্যতি করিষ্যতে। স্যুক্রেকিং চিকীর্যতি। ২৫০॥

গমঃ সেইনাত্মনেপদে। ইট্স্যাৎ। গমিষ্যতি। সেকিংগন্তা। অনাত্মনেপদে কিংগংস্যতে। পরস্মাইত্যকরণাৎ জিগণিষতি জগমিষুরিতি। ভাবকর্মণোরি-জ্বিড্বাকরিষ্যতে। বটুনাকিন্তেনকারিষ্যতে। নায়িষ্যতে নেষ্যতে। ২৫১॥

গঢপকাশিকা।

কৃতীতি। কৃতীছেদনে পুপ কৃতীবেষ্ঠনেরুপ নৃতীগাত্রবিনামেদিপ নর্দ্দ্রশাস্থানিদ্র্দেশেইঃ সৃদ্ মদ্দনেক্র্যাপমৃদির চ ছর্দ্দীপ্তিদেবনয়োঃ উছদির দীপ্তিদেবনয়োঃ রু উ ইতিগণসর্পণে। নিত্যমি-ডিতি। যনস্বাদিভিন্নানামিত্যনেন। অক্তীদিতি। অভাগমঃ ইটিইটঃ সিজ্লোপঈকারএবেতি সিজলোপেদীর্ঘং স্বর্ণ ইতিদীর্ঘঃ। কর্তিতেতিশ্বস্তৃতাং। ২৪৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্থান। মন্যতি হন্তীনকার তেইতি অনেকাচইতি ইড্বিধানাৎ হন্দন্ত যোর্নিষেধেপ্রতিপ্রসবঃ স্থাহণাৎ অকরিষ্যৎ অহনিষ্যৎ এবং 'স্পরিষ্যতি হারিষ্যতি হরিষ্যতে। চিকীর্ষতীতি সনিমাভূদিট্। ২৫০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

স্থারইতি। মন্যতিহতীনকারান্তেইত্যনেন হনইড্নিষেধাৎ অনেকাচইতি সূত্রেণনির্দিষ্টেতর-একাচইড্নিষেধাৎ অপ্রাপ্তপ্রাপকমিদমিড্বিধানং। হনিষ্যতইতিকর্মণিপ্রয়োগঃ হনঃ পরস্মৈপদিস্বাৎ পক্ষেঘানিষ্যতেত। করিষ্যতেইতিতুকর্ত্তরিকর্মণিচঞিত্রেনোভয়পদিস্বাৎ। কর্মণিকারিষ্যতেচতদ্বক্ষ্যতি। ইডিতিনসূত্রঃ ছন্দোহর্থমেকত্রলিথিতং। ২৫০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গনঃ। আন্নেপদভিন্নসহত্যথঃ। গংস্তত্ইতি। কর্মণিকর্ত্ররিত্নগংস্থতে। পরেতি। পরিশেইতি ক্তেদনোগ্রহণং নস্থাৎ পরিশ্রেপদন্বাভাবাদিত্যথঃ আন্নেপদীয়সভিম্বেত্সস্থাপীট্। দিঃজিগমিনুরিতি। সন্ দিঃ গশুজঃ অবর্ণ ইঃ সনন্তভিক্ষেত্যুঃ ধাত্তলোপঃ। যজ্ঞোপপ্লবশান্তয়েপরিণতোরাজাস্তং যাচিতস্তকানীয়বিনীয়চায়ুধ্বিধা তেজ্মিরেরাক্ষ্নাঃ। ত্রৈযক্ষং বিদল্য্যকার্ম্ক্রমথস্বীকার্য্যসীতামিতোনোবিদ্যঃ কুহনাবিটেনবটুন।কিন্তেনকারিয়তে ইতিমুরারিঃ। কারিয়তইতি। ইজ্দিট্করণাদিকামসৈত্বতি বৃদ্ধিঃ। নায়িয়তেইতিবৃদ্ধিঃ। পক্ষে ন ইজ্দিট্। ২৫১॥

গূতপ্রকাশিকা।

গমইতি। অনাজনেপদেদেপরেগমঃ পরইট্সাদিত্যর্থঃ। গংস্ততইতি। গমোমস্যবিন্দুর্ধুটীতি বিন্দুঃ কর্মণিপ্রয়োগোহয়ং গমঃ পরস্থৈপদিস্থাৎ। ভাবকর্মণোরিজ্বদিড্বেতি। স্বরান্তধাতুগ্রহিহন্দৃশি-

ভবিষ্যতি ভবিষ্যন্তী। যাস্যামঃ শ্বোমধুপুরীং দাস্যামোন্পতেঃকরং। ২৫২॥
স্মৃত্যর্থানাং সমন্বয়ে। যদপ্রয়োগে ভূতেচ। স্মৃত্যর্থপ্রয়োগে যৎশব্দাপ্রয়োগেভূতকালে ভবিষ্যন্তীস্যাং। স্মরসিসথেকাশ্যাং দেবান্তমধ্যেষ্যামছে।
স্মরস্যদোবিলঙ্ঘ্যলঙ্কাং নিক্ষাহনিষ্যতি। এবং চিন্তয়িসভাবয়িন। ষংশব্দাপ্রয়োগে কিং স্মরসিকর্ণাটে যদবসাম। চকারাং কচিন্নভবতি। স্মরসি
কথমাসীদ্দশমুখইতি মুরারিঃ। ২৫৩॥

ভ্যোভাবকর্মণোঃ। তাশীঃ স্থাদ্যতনীম্বিজ্বিদ্বাসইট্পরং প্রতীত্যনেনেত্যর্থঃ। করিষ্যতইতি কেবলেট্-পক্ষেকারিষ্যতইতীজ্বনিট্পক্ষে। এবং নায়িষ্যতে। নেষ্যতইতি। পক্ষেইডপ্রাপ্তঃ। ২৫১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভবি । পুনগ্রহণমনদ্যতনেভাবিনিল্ট্বিধানার্থং । যাস্থামইতি । শ্বঃ পদযোগেহপীত্যর্থঃ । অতএববাক্যগম্যেহনদ্যতনকালেহপি লুট্ তথাচ শ্বঃ করিন্যেইতিসারঃ । ২৫২ ॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

ভবিষ্যতীতি। পূর্বাং ভবিষ্যৎকালমাত্রেভবিষ্যন্তী হ্যক্তম্ অনদ্যতনেভবিষ্যতি সাস্যাদিতি জ্ঞাপনার্থং পুনরাহ। ২৫২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্মৃত্য। সমন্বয়েযোগে। স্মারস্থাদইতি। স্মৃত্যর্থযোগেপ্রদর্শনার্থং। মাঘে স্মারস্থাদোশারথি-ভবন্ ভবানমুংবনান্তান্তনিতাপহারিণং। পয়োধিমাবদ্ধচলজ্জলাবিলং বিলক্ষ্যেতিশেষঃ। স্মারসীতি। যদবসাযদয়ং নিরাকাঞ্চ্পউত্তরবাক্যেগতত্বাৎ। জানামি বয়স্তা! গ্রামমধ্যেহ্বসাম স্মারসি যদগঙ্গাং গত্বাহতিষ্ঠামইতিসারঃ। তথাচশস্তুঃ হাস্তনেহ্যদিস্মৃত্যর্থে লৃট্। গমিষ্যামোহভিজানাসি তত্তিলকপর্বতং সম্ভবিষ্যাব একস্থামভিজানাসিমাত্রীতি। চকারাদিতি। চকারাদ্যদোহপ্রয়োগেহ্নদ্যতনভূতেহিপি কচিশ্বভবিষ্যন্তীহ্স্তন্তেব। আসীদিতিনিরাকাঞ্চ্বং যদঃ স্মারসীত্যবিবক্ষিতং কর্মবাক্যার্থঃ কর্মবা। ২৫৩॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

শ্বত্যতি। শ্বৃচিন্তায়াং শ্বরণং শ্বৃতিঃ জিঃ প্রিয়ামিতিক্তিঃ শ্বৃতিরর্থোযেবাং। সম্ অমু ইণ্গতে ইগতে ঈগতে অয়্গতোবা সময়য়য় ময়য়য়য় অল্মরান্তেতি অল্পরকল্লেকচিদত্যতইত্যল্। অধ্যেয়ামহে ইতি। অধিইঙ্ স্থামহেগুণে পূর্ব্বভ্রবর্ণোযমিতীকারস্থ যা পরভ্রমত্বং। এতৎসূত্রাভাবে অধ্যমহীতি স্থাৎ। লঙ্কাং নিক্ষেতি। অভিতঃ পরিতঃ সময়ানিক্ষেত্যাদিনা নিক্ষাশন্ধ্যোগেদিতীয়া। নিক্ষাহিত্যেমরঃ। শ্বৃত্যথান্দশ্যতি এবমিত্যাদিনা। কর্ণাইছিত। কর্ণাটেদেশ্বিশেষে। অবসাম ইতি। বস্নিবাসে ইত্যুস্থস্থস্থামবিভক্তেরপং। চকারাদিতি। ভূতেচেতিসূত্রন্থ চকারাদিত্যর্থং।

সাকাজ্যেবপদেতুবা। স্মর্সি বয়স্য পুরুষোত্তমে ভগবস্তমবলোকয়স্তো-যদ্বস্যামঃ যদবসামবা। ২৫৪॥

আদ্যাশ্বস্তন্যে কিংব্রত্তেনলিপ্সায়াং। কিম্ কতরকতমযোগেলিপ্সায়াং। গম্যমানায়াং বর্ত্তমানাশ্বস্তনীভবিষাস্ত্যোভবতি। কোভিক্ষাং দদাতি
দাতাদাস্যতি কতরোধনবানাগচ্ছতি আগন্তা আগমিষ্যতি কত্যোষজতিষ্টায ক্যুতি। ২৫৫॥

শারসীতি। মরুত্বদন্তোলিক্ষণঘটিতঘোরশ্বরপুনানিদর্গোদরোণপ্রদভমুরদাপীতগগনঃ। প্রিয়ং দেবদ্রীচীং নিজভুজবলোদামকারিণীময়ং কুর্বন্বীরঃ শারদিকথমাদীদ্দশমুখঃ। অস্তার্যঃ। দশমুখোরাবণঃ কথ-মাদীৎশারদি। অত্রবাক্যার্থঃ কর্মাকীদৃশঃ উরদাবক্ষদাপ্রদভং হঠাৎপীতগগনঃ আচ্ছাদিতাকাশঃ কীদৃশেন মরুত্বতইন্দ্রস্ত দন্তোলিনা বজেণক্ষণংঘটিত আঘাতেন জনিতোঘোরঃ প্রবলঃ শ্বয়পুঃ শোথঃ স্ফীততা যত্ত্র পুনঃ কীদৃশেন নিদর্গোদগ্রেণ স্বভাবোন্ধতেন পুনঃকীদৃশঃ দেবদ্রীচীং দেবগামিনীং প্রেয়ং লক্ষ্যীং নিজভুজবন্সত্বশগামিতিয়াবৎ কুর্বন্ পুনঃ কীদৃশঃ বীরঃ শ্রইতি। ২৫০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দাকাঞ্চে। বক্তুরাকাঞ্জনায়াং গম্যমানায়াং স্মৃত্যর্থযোগে যৎপদপ্রয়োগেহস্তনেভূতে বালৃট্। আকাঞ্জনাচ লক্ষ্যলক্ষণসম্বন্ধইতি জয়মঙ্গলঃ। বাক্যান্তরেসম্বন্ধাপেক্ষেত্যপরে। নাভিজ্ঞাতে সমক্ষেদ্রং ভক্ষ্যাবোযদ্যমং বলাৎ। রক্লানিচ হরিষ্যাবঃ প্রাপ্ত্যাবশ্চপুরীমিমামিতিভটিঃ। অত্রজ্ঞােলক্ষণং রক্লাহরণাদি লক্ষ্যং। যদংস্থামোহত্র তদ্বেৎদি ভূয়োগচ্ছামমন্দিরমিতিব্যামঃ। ২৫৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সাকাজ্বইতি। আকাজ্ব্যাসহবর্ত্তেসাকাজ্ব্য তৃতীয়াজ্যৈ সহেতি প্রথমার্থ বহুব্রীহিঃ সহস্থপূর্ব্বনিপাতে তত্রকর্ত্তব্যাবাসহস্থসইতি সহস্থানেসঃ। লক্ষ্যাকাজ্ব্যাযুক্তেস্মৃত্যর্থপ্রয়োগেছস্তনেভূতে
ভবিষ্যন্তীস্থাৎ। তুশব্দঃ পূর্বিস্মান্তেদবোধনায়। পূর্বিত্রস্মরসিকর্ণাটে যদবসামেতি যচ্ছব্যোনিরাকাজ্ব্ব উত্তরবাক্যগতস্থাৎ অত্রভূত্তরবাক্যগতত্বেহপি লক্ষ্যসাক্ত্রক্ষন্ত যচ্ছব্দস্থপ্রয়োগেবা ভবিষ্যন্তী। হে বয়স্থা।
স্মরসিপুরুষোত্তমেত্রমামকক্ষত্রে ভগবন্তঃ জগন্নাথমবলোক্যন্তঃ পশ্যন্তোযন্তংস্থামইতি। অত্রযন্ত্রসম্প্র
লক্ষণস্থ ভগবদ্দর্শনলক্ষ্যসাকাজ্ক্রয়ং স্তেয়ং। ২৫৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আদ্যা। কিংব্রত্তেনকিমোনিম্পানেন। অভিধানাৎ কিম্ ডতর ডতমান্তোচ। তথাচ শস্তুঃ কিম্ কতর কতমেয় লিপ্পায়াং। এগুপপদেষনাশিবিভবিষ্যৎকালে বর্ত্তমানাবাস্যাৎ কোহপিভিক্ষাং দদাতি দাস্যতি দাতেতি। কোভোজয়তি ভোজয়িতা ভোজয়িষ্যতিবেত্যুয়েয়ং। ডতরঃ কিংযত্তদেকাভোইতি ডতরপ্রতায়ঃ বহুনাং ভেদকপ্রশ্নেইতিডতমঃ ডিত্তাদন্ত্যস্বরলোপঃ। কিমাদিযোগেবিভক্ত্যালিপ্সা-দ্যোত্যতে। ২৫৫॥ লিম্পিত্র নিদ্ধোটেতাঃ। আকাজ্মিত নিদ্ধেহিতাবুপন্যন্তে এতাবর্ত্তঃ নাশ্বন্তনী ভবিষ্যন্ত্যোভবস্তি। যোইশ্লং দদাতিদাতাদাস্যতি সম্বর্গং যাতিযাতাষাস্যতি ২৫৬॥ আদ্যাপ্রকৃতেকদাকছে । কদাকহিযোগেবর্ত্তমানাভবিষ্যন্ত্যৌস্তঃ। কদাব্র-ত্রেক্ষ্যতিকহিভূতেতভোক্ষ্যতে। ২৫৭॥

গৃতপুকাশিকা ৷

আদ্যেতি। কিমোরতং নিষ্পন্ধং তেনকর্ত্রিতৃতীয়া। লক্ষুমিচ্ছতীতি দন্ ইং শক্ পৎ পদির-ভ্লভামিতি স্বরস্তইং পশ্চাদ্ভাবেগুরোং দেটইত্যাদিনাআং স্ত্রিয়ামাপ্রত্যয়শ্চ। কিং প্রয়োগেইত্যুক্তেকিং নিষ্পন্ধসমুদয়প্রয়োগআয়াতিনপুনং কিংমাত্রপ্রয়োগেতৎপরতং শব্দপদয়োরপ্রয়োগাৎ যৎপুনর্ব্বৃত্তপদগ্রহণং তদ্বিবক্ষিতপদপ্রাপ্র্যমিত্যাশয়েনাহকিষ্ কতরকতমযোগেইতি। এতচ্চশন্তুসূত্রদর্শনাদেব। চকারাদ্ভবিষ্য-স্তীচেত্যাহবর্ত্তমানেত্যাদি। আগমিষ্যতীতি। গমং সেহনাত্মনেপদেইতীট্। যফেতি। ভক্ষাদের্জস্তব্যাভবেৎষাৎতাটা। যক্ষ্যতীতি। ষেষ্টোঃকঃ সেকাৎষত্বং। ২৫৫॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

লিপি। আকাজ্জিতং লিপিতং তদ্যদিদ্ধেহেতো। যোহন্নং দদাতীত্যাদি শব্দেউপস্থান্তেপ্রযুক্তে। যোহন্নমিতি। অন্নাদেঃ স্বর্গদিদ্ধিদ্বদন্দানেনদাতঃ প্রকৃষ্টোৎদাহং জনয়তীত্যর্থঃ। তথাচশস্তুঃ অর্থ্যদিদ্ধো অর্থাদ্ধেতোরিয়ন্থা। অর্থ্যস্থার্থ্যান্ধাদিদ্ধিরর্থ্যদিদ্ধিঃ ফলাবাপ্তিঃ তস্থাং গম্যমানারাং কার্য্যাদ্ধেতোশ্চানাশিষি-ভবিষ্যতিকালেলড্বাদ্যাৎ। যোভক্তং দদাতি দাস্যতিদাতাসম্বর্গং যাতীত্যাদি। দাতুর্দ্ধানাৎ স্বর্গাদিদ্ধিনাচক্ষাণোদানেপ্রবর্ত্তরতি দানপ্রবর্ত্তনং লিপিতিদিদ্ধিহেতুরিতি। ২৫৬॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

লিপ্সিতেতি। লিপ্সিতস্থাসিদির্য্যেনেতি বিগ্রহেণবাঞ্ছিতসিদ্ধিহেতুলাভঃ। আকাজ্জিতসিদ্ধের্হে-তোউপস্তস্তেকারণধাতোশ্চকারাৎ কার্য্যধাতোশ্চএতাঃ স্থ্যরিত্যর্থঃ। অমদানং লিপ্সিতকারণং স্বর্গযানং লিপ্সিতকার্য্য উভয়স্মাৎ বর্ত্তমানাশ্বস্তনীভবিষ্যস্তঃঃ। এবংদিশাস্তত্তাপু্রেয়ং। ২৫৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আদ্যা। কদাদাতেতিশ্বস্তনীবেত্যন্তে। অনাশীর্ভাবিনীতিবোধ্যং। কিংকিলঅস্ত্যর্থোপপদে লৃট্
সর্বাকালেঅক্ষাস্ত্যবমর্যয়োঃ কিঙ্কিলায়ং স্থরাংপাদ্যতি। কিংক্রমিষ্যতি কিলৈষবামনইতিমাঘঃ।
অন্তিনামশুদ্রোবেদমধ্যেষ্যতেনশ্রদ্ধনেমর্যয়ামি। অক্ষাস্ত্যদন্তাবনয়োঃ কিঙ্কিলভবান্ত্র্যলং যাজয়িষ্যতি
কিঙ্কিলত্ত্বলোহোষ্যতিইতিদারঃ। হস্তনীলিটোর গ্রহণম্ আগচ্ছদিতি হস্তমুদাহরণং মতাস্তরেইতিবজ্ঞধরঃ। ২৫৭॥

गृष्धकाणिका।

আদ্যেতি। আদ্যাপ্রকৃতেবর্ত্তমানাভবিষ্যস্ত্যোস্থাতাং কদাকর্হ্যোর্যোগেইত্যর্থঃ। কদাকর্হ্যোরিতি,। কিমান্কদাকর্হিদাসর্ব্বযদেকান্যক্রিমঃ পরঃ অনদ্যতনকালেয়ুকিংযতন্তেয়ার্হি ডিবন্তাবে ত্যদাদ্যত্বং। আদ্যাশ্ব-স্ত্রপাবিত্যাদ্যেতৎসূত্রপর্যান্তমুপগীতিছন্দঃ। ২৫৭ ।

3099

আদ্যাং ভূতোক্তাঅপ্যাত্রাশংসায়ামক্ষিপ্রার্থিঃ। ভূতোক্তাহ্মস্তান্য ক নীক্রিয়াতিপত্তরঃ। উপাধ্যায়শ্চেদাগচ্ছতি আগচ্ছং আগমং আগনিষ্যং তদা-ব্যাকরণমধীমহে অধ্যৈমহি অধ্যগীম্মহি অধ্যগীম্মামহি। আয়াতিগুরুরস্মাকং ব্য়মধ্যমহিস্মৃতিং। চক্রমানেকশোষজ্ঞান্মহাদানান্যদিম্মহি। আংশংসায়াংকিং প্রবাসীচেদায়াস্যতি তদাগৃহেস্থাস্যতি। অক্ষিপ্রার্থিঃ কিন্ অধ্যাপকশ্চেৎ শীঘ্রমেষ্যতি তদাত্রিতং পঠিষ্যামঃ। ২৫৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আদ্যাং। ভূতোক্তাপদস্যাভিপ্রেতার্থং বর্ণয়তি হস্তনীত্যাদিনা আস্বেবসঙ্কেতঃ কৃতইতিভাবঃ। আগমদিতি। লুঙি অঙি। অধীমহেলডাত্মনেপদেরপং। অধ্যমহিলণ্ডাচাং বৃদ্ধিঃ। অধ্যমীষ্টামহিল্টিরপং গীরিঙোনবা। আয়াতি আয়াস্থতীত্যর্থং গুরোরাগমনমাশংসমধ্যয়নমাশং সতি। চকুমেতি। ক্বং লিট্ অনুক্তত্বাৎ প্রত্যক্ষরাচ্চসত্যং তিঙ্কপ্রতিরপকমব্যয়ং। চক্রেম্বন্ধুঃ স্বজনৈকবন্ধুরিতি বাসবদত্তা। যরাআশং সায়াং ভূতবচ্চেতি পাণিনিসূত্রং ভাবিনিভূতবত্বপচারইত্যর্থঃ। অতএব আরোপতং যদিগরিশেনপশ্চাদনস্থনারীকমনীয়মন্ধমিতি কালিদাসং ভূতোপচারাৎক্রপ্রত্যয়ঃ। চিত্রিক্ষেপে কর্ত্রপরোক্ষত্বেহপি লিট্ বিক্ষেপোহপ্রকৃতাবস্থা মহাদানং করিয়ামীতি প্রমোদাৎ চক্রেম্বন্ধুরিতি ব্যাতেনে কিরণাবলীমূদ্যনইতি চলিটোহপ্যতীতোক্তম্বাদিত্যপরে। প্রবাদীচেদিতি। চেদ্যদি আয়াস্থতি তদেতিনেয়মাশংসা আগমনেসতি গৃহেন্থিতিরিত্যর্থঃ। ক্ষিপ্রার্থযোগেভবিষ্যন্ত্যেব শীত্রং ত্বরিতং ক্ষিপ্রার্থং। শ্বঃক্রিমধ্যেয়ামহেচেতিসারঃ। ২৫৮॥

গুড়প্রকাশিকা।

অদ্যামিতি। ভূতেউক্তা ভূতোক্তাইতিবিগ্রহঃ দ্বিতীয়াবহুবচনেরপং। আঙ্ শন্ প্রকথনেভাবে আঃ ক্ষিপ্রং শীত্রমর্থোনেগাং তৈঃ। লবুক্ষিপ্রমরং ক্রুতমিত্যমরঃ। আশংসায়াং।প্রশংসায়াং গম্যমানায়াম্ অক্ষিপ্রাথির্ব্যোগে ভবিগ্যতিকালে আদ্যাং বর্ত্তমানাঃ ভূতোক্তা হস্তনী অদ্যতনী ক্রিয়াভিপত্তীরপি আহ্ব্র্যাকরণাচার্য্যাইতিশেষ ইত্যর্থং। আগচ্ছলিতি। আঙ্ গম্৯লটপ্তি অন্বিকরণঃ গমিষ্যমোহস্তশেছাহনি-স্থালিতিমঃ স্থানেছঃ চুগাগমঃ। আগচ্ছলিতি। লঙোদিবিভক্তে পূর্ববেৎ। আগমিষ্যদিতি। লৃটঃ স্থাতি গমঃ সেহনাত্মনেপদেইতীট্। আয়াতীতি। অস্যাকং গুরুরায়াতি আয়াস্থাতি বয়ং স্থাতিং ধর্মসংহিতাং মন্থালিপ্রণীতামধ্যমহি অধ্যেয়ামহে অনেকশোইন্তানেকান্ যজ্ঞান্ চকুমকরিষ্যামঃ মহাদানানি অদিম্মহি দাস্থামইত্যর্থঃ। মহাদানানিচ মহম্পুরাণে। অথাতঃ সম্প্রক্যামি মহাদানস্কক্ষণং। আদ্যম্ভ সর্ব্বদানানাং তুলাপুরুষ্পগজ্ঞিং। হিরণ্যাশ্বস্তবিধা । হিরণ্যাশ্বস্তবিধা । ক্রমণালানাক ক্রেপান্থস্তবিধা । হিরণ্যাশ্বস্তবিধা । দেশং বিফুচক্রঞ্জতঃ কল্পলতাত্মকং। সপ্তসাগরদানঞ্চ রত্ত্বধেন্ত । মহাস্থাতং ঘটস্তবংশাভ্রণঃ পরিকীর্তিতঃ। কৃশ্বপুরাণেচ। কনকাশ্বতিলানাগাদাশীরথ মহীগ্হাঃ।

ক্রিয়াতিপত্তিভূতেচবিধেয়া। কুতুশ্চিদেগুণ্যাৎক্রিয়ায়াঃ সম্যানিষ্পতিঃ
ক্রিয়াতিপত্তিঃ ভূতেচকচিদ্ধবিষ্যতিচ সাচ স্যাৎ স্যতাং স্যান্ স্যান্ স্যান্তং স্যান্ত স্মান্ত আকল্প ক্রাণ্ড অনংক্রাণ অভবিষ্যাৎ অবিদ্যান্ত অকল্পে স্যাৎ অকল্পিস্যান্ত আকল্পিস্যান্ত আকল্পিস্যান্ত আকল্পিস্যান্ত আকল্পিস্যান্ত আকল্পিস্যান্ত আকল্পিস্যান্ত আলিষ্যাৎ ৷ ২৫৯ ॥

কন্তাচ কপিলাধেনুর্মহাদানানিবৈদশেতি। অদিমহীতি। দাঅদ্যতন্তা অন্তানপদম্মহি অভাগমঃ আইম্ব-মাত্মনেপদেইতি দাঞ্জ্ঞাইত্বং। প্রবাসীচেদিতি। চেদ্যদি। পক্ষান্তরেচেদ্যদিচেত্যমরঃ। স্বরূপ-কথনমিদং নাশং সাক্থনমিতি ভবিশ্যন্ত্যেব। এয্যতীত্যাদি। ক্ষিপ্রার্থযোগে উভয়ত্র ভবিষ্যন্তীনাদ্যাদ্যা-ইতি। কন্তাছন্দঃ তত্তুক্তং প্রাক্। ২৫৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রিয়া। ক্রিয়াতিপত্তিপদার্থং বিবেচয়ন্ বির্ণোতি ক্তশ্চিদত্যাদি। ক্তশ্চিৎ কয়াচ্চিবৈগুণ্যং ক্রিয়াসামগ্রীবিরহাদিতার্থঃ। ক্রিয়ায়াঃ সম্যগনিম্পত্তির্বাবদভাবইতার্থঃ। ক্রিয়াসস্ভাবনাপি নাস্তীত্য সম্যক্ত্রং। অত্রবজ্ঞপরঃ সপ্তমীনিমিত্তেইতিপত্তোভ্তেচ ক্রিয়াতিপত্তিঃ সপ্তমীকারণসামর্থ্যেচি অনিম্পত্তিবৃক্তেভ্তেভাবিনিচ ক্রিয়াতিপত্তিঃ হেতৃফলাদে সপ্তমাবিদয়ে ক্রিয়াতিপত্তোসত্যাং লৃঙ্ স্থাদিতিতদর্থঃ। যদিশিলেতি। শিলাযদিকোমলাস্থাৎ তদাশৃগালৈর্ভক্ষিতাস্থাদিতার্থঃ যতঃ শিলায়ান কোমলাভাবেগহতোভক্ষণাভাবইতি অত্রকোমলভক্ষণয়োহেতৃহেতৃমন্তারঃ নতদভাবয়োঃ অত্যন্তাভবস্যা জন্মস্থাই। এবং যদিবর্ষসহস্রমজীবিদ্যং পুক্রশতমজনিদ্যমিত্যাদি। উতাভোক্ষ্যদিপনাদক্ষ্যহেদাপি দর্শনিক্রিয়ায়া অনিম্পত্তিরত্তনক্তির প্রতিপাদ্যতেত্তথাপ্যক্তার্থেক্রিয়াতিপত্তিরত্তবিহিতেতি বজ্রদরঃ। যদিমহদমীপমাগমিষ্যন্তবান্ তদায়তেনাভোক্ষাই হেতৃহহতুমতোর্ক্রমিপাগমনয়ত ভোজনয়োরনিম্পত্তি রত্ত্বাক্যাক্ষায়তে। যদ্যর্থাপিথিকোইত্ত্বদ্টোভবিষ্যত্তদাপ্যভোক্ষ্ইঅন্পাস্যতেনপ্যাস্থাতানভূক্তবানিতিসারঃ। অনং ক্ষ্যদিতি। ধুটিস্বরাম্মজ্জিনশোরিতিমুট্দদ্ধিঃ রধাদিম্বাদেইঅনশিষ্ট। বৃধ্রপ্রতাং হন্ক্ঞোশ্চ প্রবিহ্নাধ্যং। স্বরাদেরিতিঅভ্ধান্ধাদাবিত্যাদিনা। ইয়ুউষ্থাধ্যশাং সেট্রাদিটা রপাণি। ২৫৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্রিয়েতি। ভূতেচকারান্তবিষ্যতিচ ক্রিয়াতিপত্তিবিধেয়াইত্যর্থঃ। ক্রিয়াতিপত্তিমাহস্তদিত্যাদি। ইয়-মিতি। ইয়ং ক্রিয়াতিপত্তিঃ লুঙ্চ লুঙ্দংজ্ঞাচেত্যর্থঃ। অদরিদৃষ্যদিতি। অনেকাচ্ছাদিট্। অদ্রক্ষ্যদিতি। দুশোগুণেঅর আরশ্চবর্ণস্থ ব্যত্যাসঃ স্থজ্দৃশোধু টীতি অব্যাত্যাসঃ। অম্প্রক্ষ্যদিত্যাদি। কৃষিষ্থশিম্পৃশিভ্যঃ গীরিঙোনবা। ইঙঃ স্থানেগীর্ভবিতি। গীতিনিদ্দেশারগুণঃ। অধ্যগীষ্যত অধ্যগীষ্যেতাং বা অধ্যয়ন্ত্র্যদ্যমী। তদাবিদ্বা দোব্যরাজিষ্যন্ত । ভাবকর্মণো-রিডিজ্বং অভাবিষ্যতভবতা অভবিষ্যত ইনন্তস্য অদাপিষ্যং অদাপিষ্যতে-ত্যাদি। *। ইত্যাখ্যাতেইসার্বধাতুকবিন্যাসন্ত্তীয়ঃ। ২৬০॥ *॥ *॥

সণ্তপাক্ষিকইতিবার্ব্যত্যাসঃ। অবর্দ্ধিয়তেত্যাদি। রুৎরুধ্ কুপুস্থন্দইট্স্থাদাল্মনেপদসেপরইতীট্রুপেশুণি কুপেরোলঃ আল্পনেপদেতুইট্।কৃতীনৃৎ নর্দ্দিয়দ্ছদ্ভ্য সর্ব্ব্রোসিচিসেনবেতিবাইট্। আদিপদাৎ অনর্ত্তিয়ত অনর্ত্ত্তিস্থাদিত্যাদি। অহনিষ্যদিত্যাদি। হন্কৃঞ্সকারেহন্দন্তাদিট্। ঐষিষ্যদিত্যাদি। ইষুইচ্ছারাম্ উষ্দাহেশ্ধুর্দ্ধো অশ্ভোজনে। ২৫৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গীরি। গীতীতি। যদিগুণোভবেত্তদাগেইতিকৃতং স্থাদিত্যর্থঃ। অধ্যৈষ্যস্তেতিবৃদ্ধিঃ। ইডিজ্বদিতি। স্বরাস্তধাত্বিত্যাদিনা। ইনস্তস্থেতি। ভবিষ্যস্তীক্রিয়াতিপত্যোরুদাহরণমিত্যর্থঃ। আদিপদাৎকারিষ্যতেকারয়িষ্যতে অকারিষ্যত অকারয়িষ্যতেত্যাদিমস্তব্যং। ॥ ইতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং রত্নমালাটীকায়ামাখ্যাতেহ্সার্ক্ষধাতুকবিস্থাসবিবরণম্। ২৬০॥ ॥ ॥ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গীরীতি। অধ্যাীয্তইত্যাদিত্রয়েইছ। ব্যরাজিষ্যন্তেতি। রাজ্দীপ্রোভ্বাদ্যন্তর্গত্যজাদিঃ বিপূর্ববিদান্তর্গত্যজাদিঃ বিপূর্ববিদান্ত্র্যুশ্চ। সর্বত্রনামিপরস্থ বিভক্তিদকারস্থযক্ষং। অধ্যাগীয়তাধ্যাগীয়েতাং বাধ্যৈযন্ত যদ্যমীইত্যন্তং ছন্দঃ। অন্তৎপ্রভাপ্রকাশিকায়ামবগন্তব্যম্। ॥ ইতিশ্রীদিদ্ধনাথবিদ্যাবাগীশবিরচিতায়াং গুঢ়প্রকাশিকায়াং প্রয়োগরত্বমালাটীকায়ামাখ্যাতেহ্সার্বধাত্কতৃতীয়বিন্যাসবিবরণম্। ২৬০॥ ॥ ॥ ॥

ভূতেপরোক্ষাট্ থলন্যাকিং। অক্ষাণাং পরেকর্ত্ত্রিন্দ্রিয়া দ্যুগোচরেভূত-কালেলিট্বিভক্তির্বতীত্যরয়াং পরোক্ষাচ অট্থলোছিত্বাকিদতিদিশ্যতে। অট্ অতৃস্ উস্থল্ অথুস্ অ অট্ ব ম। এ আতেইরে সে আথে ধ্বে এ বছে মহে ইয়ং লিট্চ। দ্বির্চন প্রক্রিয়া। ২৬১॥

ইকামসৈ্যবোপধায়াঅটীচানিচরদ্ধাঃ । পপাচ পপাঠ ররাণ বভাণ জগাম-জগাদ। এযুকিং বভণতুঃ বভণুঃ জগদতুঃ জগদঃ জগদিথ জগদপুঃ জগদ। ২৬২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভূতেপ। বক্ত্রপরোক্ষেহনদ্যতনেহতীতেইত্যর্থঃ। শভুনাহনদ্যতনাতীতেলিড্বিধানাৎ। বহুকালীনোহতীতঃ পরোক্ষাইতিপঞ্জিকারুতঃ তন্মতান্তরেণ। অক্ষাণাং পরইতি ষষ্ঠীদমাদেরাজদঁন্তাদিত্বাদক্ষপদং পরংযাতি পরাস্থান্তেতি স্থট্দক্ষিঃ। ত্রিলোচনস্থপরশব্দস্থপ্র্বনিপাতোহভিধানাদিত্যাহ। ক্রিয়োপহিতঃ কর্ত্রাযদিপ্রযোক্ত্রিন্দ্রিয়াগোচরোভবতি তদালিড্বিভক্তিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। কর্ত্ত্রিতি। প্রযোক্তরিত্যর্থঃ অন্থাকর্ত্রাক্রিয়মাণায়াঃ ক্রিয়ায়াঃ কর্ত্র্রিন্দ্রিয়াগোচরস্বাদস্তবাৎ। যদিকর্ত্র্রিন্দ্রিয়াগোচরকালেলিড্বিভক্তির্তবিত ইত্যর্থস্তদাকালস্থাডিন্দ্রিয়াবেদ্যত্বেনেন্দ্রিয়গোচরস্ববিরহাত্ত্ব্যান্তরেইন্দ্রিয়াগোচরইতিপদং ব্যর্থমেবভবতীতি। কিদ্তিদিশ্যতইতি। কইদন্ত্বন্ধোযস্থাঃ সাকিৎ তেন আট্থলোগ্রণাদ্যভাগ্যসনগুণইত্যর্থঃ। দ্বির্ব্বচনপ্রক্রিয়োগান্ত্রাগ্রাণ্য বির্ব্বান্তর্থঃ। দ্বির্হান্ত্রাগ্রান্ত্র্যান্ত্রাগ্রান্ত্রান্ত্রাণ্য বির্ব্বান্ত্র্যান্ত্র্যান্ত্রাণ্য ধাতুকার্য্যমাহ। ২৬১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ভূতেশংভূতস্কমধ্যস্থিতং ভূতাসুকম্পিনং। ভূতভব্যভবৎকালবর্তিনং তমহংভজে। ভূতেপরোক্ষেতিঅক্ষাণামিন্দ্রিয়াণাংপরাহগোচরাপরোহক্ষারাজদন্তাদিঃ বিভক্তিবিশেনণত্বেনস্ত্রিয়ামাপ্রত্যয়ঃ। পরোক্ষাপদস্তব্যুৎপত্তিমাহাক্ষাণামিতি। অথাক্ষমিন্দ্রিয়ে। নাদ্যতাঙ্গেকর্ষেচক্রেব্যবহারেকলিক্রমে ইত্যমরঃ।ভূতেপরোক্ষাট্থলন্তাকিৎ দ্বির্বাচনপ্রক্রিয়েতিচ্ছনঃ। অন্তৎপ্রভাপ্রকাশিকায়াং বেদ্যং। ২৬১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইকা। ইকাংবৃদ্ধয়ইত্যয়য়ঃ। অস্থাকারস্থাত্তপৈধাভূতস্থৈববৃদ্ধয়ঃ। অট্লিটএব ইচ্স্তেম্থাদিচ্ ইন্হৈতুকোলৈঙ্গিকশ্চোরাদিকশ্চেতি তেন জ্রয়তীত্যাদে]হ্রস্বঃ সম্পদ্যতে। পপাচেত্যাদি। পচাদের-স্থবৃদ্ধিরটিচতুর্থস্যতৃতীয়কইতি ভণোভস্থবঃ। অতুসাদোনবৃদ্ধিরিত্যাহ্এম্বিতি। ইট্জগদিথ। স্বরাদি-বর্জ্জনাদতুসাদোনেট্। জগদেতি। অবিভক্তো।২৬২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ইকামিতি। অটীতি। প্রথমপুরুষাটি উত্তমপুরুষাটি বিকল্পরদ্ধেক্ষ্যমাণত্বাৎ। পঠ্ব্যক্তায়াং বাচিপপাঠ রণ্ ভণ্ শব্দেররাণ বভাণ গদ্শব্দেজগাদ। এম্বিতি। অটিচিন্স্বিত্যর্থঃ। ২৬২॥ অট্যুত্তমেবার্ড্রিঃস্যাং। জগাদ জগদ বভাণ বভাণ। অটিকিং বভণিব বভণিম বভণে বভণাতইত্যাদি। অস্যৈবেতি নিয়মাদিকাং পুনরস্তানাং র্ড্রিঃ নিনায় ৠআর ব্রুরাব চকারশুশ্রাব অতএব লিঙ্গুস্যাপীকাং র্ড্রিঃ অন্যথা গুণেক্তে অকার র্দ্ধ্যানিনায়জহারেত্যাদিসিদ্ধাবস্তেকাং র্দ্ধিরফলাস্যাং তেন ইরিং পটুঞ্চাথ্যদিতীনির্দ্ধ্যাঅস্ত্যুম্বরস্যাসমানদ্য লুপ্তত্বাৎ সম্বদ্ধাবে অজীহর দপীপটদিত্যাদিসিদ্ধ্যতি। র্দ্ধেঃ প্রাণেবাস্ত্যুম্বরাদিলোপে অজহরদপপট দিত্যপিকেচিং। অস্তানামিকাং কিং গ্রয়তিস্মর্জ্জ দদর্শ স্কৃত্ত্বঃ কিত্তান্ধগুণঃ দদৃশত্বঃ দদৃশুঃ। ২৬০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অট্য। উত্তমপুরুষীয়েইটিনতুপ্রথমপুরুষীয়ে। বভণইতি। কর্মণ্যেবিভক্তো আদিনাবভণিরেব-ভণিদেবভণাথেইত্যাদি। অস্তৈবাপধায়াইত্যবধারণায়াল্যস্থাপধাভূতস্থেত্যর্থ ইতি প্রকৃতেইকায়পধাভূতনানং বর্জনাদস্তানামিতি পারিশেয়্যাদর্থ ইত্যাহাস্তৈবেতি। নিনায়েতি। দ্বিরভ্যাদেব্রস্বঃ র্দ্ধাবৈত্যায়্। আরিতি। নাত্রপ্রথমং দ্বিঃ দ্বিতীয়াক্ষরাভাবাৎ র্দ্ধোদিঃ। চকারেতি। কৃদ্ধিঃ ঝবর্ণস্থেতি ঋকারস্থাকারঃ ক্বর্গস্থেতিচঃ। শুসাবেতি। অভ্যাদেত্রানাদীতি পরহল্লোপঃ র্দ্ধিরো সদ্ধিঃ। অতএব অস্তেকাং গ্রহণাদেব লিঙ্গস্থাপীকামন্তেকাং। নচ ধাতোরেবতৎফলমন্তিকিং লিঙ্গস্থাপীতিবাচ্যং শুণাদপিতত্রোপত্রেরিত্যেবদর্শয়িত অন্যথেতি। লিঙ্গেকামর্দ্ধাবিত্যর্থঃ। বৈফল্যমাহগুণেকৃতেহকারর্দ্ধ্যেতি। তুদ্ধানিঙ্গস্থাপীকাং র্দ্ধিরিত্যাশয়াদাহতেনেতি। বৃদ্ধিং কৃত্বাএকারস্থ ঔকারস্থাসামানস্থলোপাদিন্ত লুপ্তসমানামামিতিলুঙি সমন্তাবঃ দল্যবর্ণ ইঃ উপাগুরুলঘোদ্দিহাই ইনোলোপঃ স্বপ্রত্যাদ্দিতি সীৎস্থানেদিঃ প্রেমন্ত্রত। বৃদ্ধেঃ প্রাগন্ত্যস্বরলোপে লুপ্তসমানস্বান্সমন্তাবইত্যর্থঃ। কেচিদিতিমতান্তরং। গবয়তীতি। গামাচকেইতীনি একাক্ষরত্বাদন্ত্যস্বরুস্ত নলোপঃ নাত্রদ্ধিঃ অন্তত্ত্বেইপীকোহভাবাৎ অবাদেশে গ্রিস্থিকা তিবিভক্তাবিত্যক্রণাদি। স্বর্জেত্যাদি। ইক্নান্তঃ অতেপ্তর্গঃ এবং পরত্র সম্জতুরিত্যান্ত্যন্ত্রণমাত্র। ২৬০॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

অট্যুত্তমইতি। উত্তমইতি সংক্রৈকদেশে সংজ্ঞাপ্রতীতিঃ উত্তমপুরুষেইত্যর্থঃ। নিনায়েত্যাদি।
নীঞ্প্রাপণে ঋগতৌরুরাবে ভুকুঞ্করণে শুশ্রাবণে। কঞ্হরণে জহার আদিনায়্রসাবেত্যাদেপ্রহণং।
আন্তেকাং বৃদ্ধিরকলাস্থাৎ অস্তবৃদ্ধিরিত্যুক্তাবেব তত্তৎপ্রয়োগিসিদ্ধেরন্তেকাং বৃদ্ধিরিক্ষলাম্থাদিত্যর্থঃ।
অপীপটদিত্যাদীত্যাদিনা কবিমাখ্যাদিত্যাদিবাক্যে অচীকবদিত্যাদি। কেচিদিতি। সর্কবিধিভ্যোলোপ
বিধিক্রিলবান্যরাদেশস্ততোবলীতি স্থায়াৎ গুণবৃদ্ধ্যোক্রলবত্বাচ্চবৃদ্ধেঃ প্রাগন্ত্যম্বরাদিলোপাসম্ভবইত্যমরসোদ্ভাবনং। ২৬০॥

সৃজদৃশৌথলিবানিটো। স্যাতাং। সসজ্জিথ দদশিথজশোঃ ষত্বং। অর্ব্যত্যয়ঃ সম্রপ্তদদ্রপ্ত অস্থান্ ক্রোদিনিয়মাদন্যস্মাদিট্ দদৃশিব দদৃশিম তথাইটোবাধোটঃ দদৃশিধের দদৃশিদ্ধে এবং বিভেদক্ষরোধইত্যাদ্যুহ্বং। ২৬৪॥

অস্বর্ট্ ক আ ব ভ্ স্তু দ্রে আ আ আ এবানিটোলিটি। ক্রাদিস্পর্যান্তা অফৌএব-লিট্যনিটঃ। চক্রব চক্রম চক্ষে। নাম্যন্তেভ্যঃ পরোক্ষায়াং ধোটঃ চক্চত্বে স্বাক্রব স্বাক্রম বর্ব বর্ম বভ্ব বভ্ম ভুফুব ভৃষ্টুম সস্ব সদম। অস্বডিতিকিং সঞ্চারিব সঞ্চারিম এভ্যোইন্যেলিটিসেটঃ চিচ্ছিদির চিচ্ছিদিমেত্যান্তান্থং।২৬৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সৃজ্। নাস্তিইট্ যাভ্যামিতিবিগ্রহঃ। অস্থট্ ক্রাদিনিয়মান্নিত্যমিট্ প্রাপ্তে পক্ষেইড্ভাবো-বিধীয়তে। জনোঃ ষত্বমিতি। ভ্রজ্জাদের্জ্জস্বনোভাবেদিতি জস্তমত্বং। ধুটান্তেচ্ছশোঃ ষত্বমিত্যনেন শস্তমত্বং। অর্ব্যত্যয়ইতি। অর আরশ্চ বর্ণস্তব্যাত্যাসঃ সৃজ্দৃশোধু টীত্যনেন। ইটোবেতি। আসাং ধোচ ইটোবাস্তাদিত্যনেন। এবং বিভেদরুরোধেত্যাদীতি। অটিগুণঃ অতুসাদৌকিস্বান্ধগুণইত্যাদি। ২৬৪॥

গৃত্পকাশিকা।

স্থাতি। স্জ্ বিদর্গনির্মাণয়োঃ দৃশির্ প্রেক্ষণে। বিভেদেত্যাদি। ভিদির্ দ্বিধাকরণে রুধির্ আবরণে আদিনা চিচ্ছেদকুনোদ ইত্যাদিগ্রহণং। উহুমিতি। অট্ থলোগুণঃ অতুসাদোকিত্বামগুণ-ইত্যাহ্যমেয়মিত্যর্থঃ। ২৬৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অয়। নাস্তিয়্রট্ যত্র পশ্চাৎকর্মধারয়ঃ তেনয়ট্ শৃত্যক্ষাত্বঃ অত্যৈ সহদক্ষ। নামান্তেভ্য ইত্যাদি। আশীঃ পরোক্ষাদ্যতনীধোঢোনাম্যন্তধাতুতইতিসূত্রেণেতার্যঃ। স্থ্রুবেতি। ব্র্ব্রেণে দিয়ে অনাদি হল্ লোপঃ। বর্বেতি। রুঞােরূপঃ রুঙােহ্পি সূত্রেগ্রহণং তদহুদাহরণমাত্মনেপদে ইত্যাদীত্যেকে। অত্যেতু উভয়পদি ভৃস্তমাহ্চর্যাত্রভয়পদির্ঞােগ্রহণং নাল্মনেপদি রঙইত্যাহ্যঃ। দিছে ঝবর্ণস্থাকারঃ। বভ্মেতি। প্রাচিচতুর্থস্থাত্তীয়কঃ। তুর্কুবেতি। স্তাদিরে অঘােদােদ্ধিস্থিতান্ শিট্টিত্যাস্কুকার স্থালোপঃ যত্ত্বং। সঞ্জারিবেতি। সম্পরিভাা্র কৃঞ্যঃ প্রাক্ষ্যতিতি পূর্বাং য়ট্ ততাােদ্বিক্তিনাদি। এভ্যাহেন্থ ইতি। এভাাহস্মট্ক্রাদিভাাহন্থইত্যর্থঃ। চিচ্ছিদিবেতি। ছিদােদিত্বেপ্রথমঃ স্থাদ্বিতীয়স্থেতি ছস্তাঃ। অন্ত্রানিডপিলিটিট্। ইত্যাদািত্যাদিপদাৎবিভিদিব বিভিদিমপ্রভ্তয়ঃ। ২৬৫॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

অস্ট্রিকিতি। স্রু স্রবণেতচ্চক্ষরণং ভূপ দ্রু গতিপ্রবাহয়োঃ গতিবিশেষেসচদ্রবীভাবঃ পলায়নঞ্ছ ভূপ দ্রু শ্রোস্ত তুদ্রুব শু শ্রুমইতি রূপং। ২৬৫॥ ঋসুটক্রন্যেথল্যদন্তাএব। অনিটঃ স্থ্যঃ। চকর্থ জহর্থ ববর্থ সমর্থ। থলিকিং জব্বি জব্বি ঋসুট্ কুঞোস্তু আরিথ সঞ্চন্ধরিথ। ২৬৬॥

অজন্তান্তবানিটঃ। থলিস্যাঃ। তুফোথ তুফবিথ শুশোথ শুশ্রবিথলী লিলেথ লিলয়িথ। থলীত্যেব লিল্যব লিল্যিম শিশ্রিয়িম দ্বংবিব দ্বধ্বিম ইযুবৌ।২৬৭॥

আকারাদট ঐকারঃ। স্যাৎ। দদৌ দধৌ বভৌ জ্ঞাে। ছন্দসিত্রট্ সার্বধাতৃকঃ তত্রাম্বিকরণাদট ঐঃ পচৌ ভবৌ । অটঃ কিং দদতুঃ দহঃ দধতুঃ দধুঃ। ২৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঋন্ত। ঋশ্চন্তটাসহিতঃ কঃ স্থট্কঃ সচতাভায়মন্যেভিন্নাঋদন্তাএবধাতবস্থলিঅনিটঃ স্তাঃ। চকর্থেত্যাদি। কৃদ্বিত্বেঋকারস্তাত্বং কবর্গস্যচবর্গঃ হু অভ্যাসেহস্যজঃ। জহ্রিবেত্যাদি। পূর্বিনিয়মেনসেট্রাদিট্। আরিথেতি। ঋদিত্বেহ্অভ্যাসেহকারঃ ধাতোগুণেসদ্ধিঃ। ২৬৬॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

ঋত্রট্ক্রন্যইতি। অত্রৈবকার গ্রহণং স্পান্তার্থ:ছন্দোহর্থঞ। বুঞ্ববর্থ স্থ সমর্থ। সঞ্চরবেথতি। সম্পরিত্যাং কুঞঃ প্রাক্ হুট্ থলি ইট্ স্কৃদ্ধিত্বে অঘোমোদ্ধিস্থিতান্শিটইতি ককারস্থমলোপঃ ধাতোগুণিঃ। ২৬৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জন। থলীতানুবর্ত্তে। জজনাঃ পূর্ব্বোক্তঝদন্তভিনাঃ পুনব্বানিটঃ। তুফোঁথেত্যাদি। স্তুঞ্ ইডভাবেদ্বিত্বেগুণঃ যত্বং যকারাচ্চটবর্গঃ স্থাৎ পক্ষেইটিগুণঃ। লেলিথেতি। লীশ্লেষণেপরস্মৈ-ক্রিয়াদিঃ। লিল্যিবেতি। জনেকাচইত্যাদিনায়ঃ। ইযুবাবিতি। ইবর্ণোবর্ণযোদ্ধাতোরিযুবাবগুণে-স্বরেইত্যনেন।২৬৭॥

,গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অজন্তাইতি। অচ্ অন্তোষেবাং। তুশব্দোভেদবোধনায় তেন ঋদস্তভিশ্নাঅজন্তাইত্যর্থঃ। যদাপরত্রবানুর্ভিবারকস্তশব্দঃ ঋদন্তভিশ্নাইতিতুঅর্থতোলভাতে। বাপষ্যন্তং সূত্রং পূর্বস্মাদনিটইত্যনু-বর্ত্তত ছন্দোহনুরোধাদেকত্রলিথিতং। শিশ্রিয়িবেত্যাদি। শ্রিঞ্চেবায়াং ভুউ ধৃঞ্ কম্পনে স্বাদিক্রাদ্যোঃ উ । ২৬৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আকা। আকারাৎ পরস্থাটঃস্থানে উকারঃ স্থাৎ। দধাবিতি। অভ্যাদেচতুর্থস্থতৃতীয়কঃ। জ্যাবিতি। এচাংপাঠস্থিতান্তানামাকারইত্যাদিনাপুর্বমাত্বেউকারঃ অভ্যাদেরস্থানাদিহল্লোপচবর্গা-

ইট্যবর্ণস্লোপনং। দদিথ দিথি দীঙ্মিনাতিত্যাদিনা আত্তেমমিথ লী ল-লিথ। ইটিকিং মমাথ ললাথ দদাথ। ২৬৯॥

অত্নপান্তব্যঞ্জনাদ্যাঅনিটোবাইনিটস্থলি। স্থ্যঃ। বৰ্বধিথ বৰদ্ধ। অত্নপান্তাঃ কিং নিত্যমিট্যুমোচিথ। ব্যঞ্জনাদ্যাঃ কিম্ আদিথ আটিথ আশিথ। নিষিদ্ধেটঃ কিং দধ্বনিথপেঠিথ সেডপিকশ্চিৎ ততন্ত্তনিথ।২৭০॥

দেশাঃ। ছন্দদীতি। ছন্দদিবেদে। ভ্বাবিতি। অনিগুণেমটেও। দদতুরিত্যাদি। আকারলোপঃ কর্ত্তব্যইত্যাদিনাকারলোপঃ। ২৬৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আকারাদিতি। দদাবিত্যাদি। ডুদাঞ্দানেডুধাঞ্ধারণপোষণয়োঃ ভাদীপ্তো গ্রৈহর্ষক্ষয়ে। জগাবিতিপাঠে গৈ শব্দেইত্যস্তরপং। প্রদক্ষাদাহ ছন্দদীতি। বেদেইত্যর্থঃ। ছন্দঃ পদ্যেচবেদেচেত্য-মরঃ। বেদে অট্ অট্ বিভক্তিঃ দার্ক্ষধাতুকঃ শিৎসংজ্ঞঃ স্থাদিত্যর্থঃ শিৎসার্ক্ষধাতুকমিতিচেতি প্রাপ্তক্তত্বাৎ সার্ক্ষধাতুকইত্যনেন শিদিতিলভ্যতে। অত্রান্থিকরণাদিতি। অনেন ভুবাদিগণাদেবাট্ সার্ক্ষধাতুকইতি সূচিতং। পচাবিত্যাদি। উভয়ত্রান্ বিকরণে পরত্রগুণেচ অট টঃ। অত্রাগমত্বেনবলবত্বাৎ প্রাগনিকরণেতেন ব্যবধানায়দ্বিভাবইতি। ২৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইট্য। ইডাগমেপরস্মিন্ধাতোরকারস্থাকারস্থচলোপনং স্থাৎ। মমাথেত্যাদি। অজন্তাস্তবা-নিটইতি পক্ষেইডাগমাভাবঃ। দদাথেতিদাঞোরপং।২৬৯॥

গূঢপ্রকাশিকা।

ইট্যেতি। দিনিথেত্যাদি। দাঞ্ধাঞোরপং। মিনিথেতি। ডুমিঞ্প্রক্ষেপণেস্বাউ মীঞ্হিংদায়াং জ্যা উ দীঙ্ মিনাতিমিনোতানামেচামান্বমিতানেন উভধান্বোগুণানন্তরমান্তে ইটিন্নিন্তে অভ্যাসস্ত্রুস্বঃ ধাতোরাকারলোপঃ। ললিথইতি। নিয়স্তবেতিএচামান্তে পূর্ববং। মমাথেত্যাদি। ইডভাবপক্ষে। এক্বাভাবপক্ষরপম্ক্রমেব। ইট্যলোপস্তহস্কের্প্রধইত্যদন্তাদেশে অবধীৎঅবধিষ্টামিত্যাদে। ২৬৯॥

প্রভাপকাশিকা।

অতৃ। অংউপাস্তউপধাযেষাং ব্যঞ্জনমাদ্যংযেষামিতিবহুব্রীহোত্মপ্রপাস্তাশ্চতেব্যঞ্জনাদ্যাশ্চেতিপশ্চাৎ কর্মধারয়ঃ। ব্যঞ্জনাদ্যাত্মকারোপধাইডাগমরহিতাধাতবস্থলিপরেবাত্মনিটঃ বিকল্পেনইট্রহিতাঃ স্থারিত্যর্থঃ। ববদ্ধেতি। বধ্দিত্মিডভাবে ঘটধভতস্তথয়োর্দ্ধইতিথস্তধঃ তুর্য্যেষুস্থারিতিধস্থানেদঃ পরগমনং। নিত্যাদিতি। অস্ট্রাদিনিয়মাদিত্যর্থঃ। আশিথেতি। অশ্ভোজনে। দধ্বনিথেতি। ধ্বনপঠোসেটোপঠ্ছিত্মস্যানাদেশ্যেকহলোরিত্যাদিনা এত্মপ্রামোপো। সেটোহপিকচিদিতিপ্রামাদিকঃ পাঠঃ সেড-শীতিসাধুঃ। তেনিথেতিএত্বপ্রামোপো।২৭০॥

অস্যানাদেশ্যেক হলোর্মধ্য এত্বমনট্ম্বরে। অভ্যাসলোপশ্চ। একয়োরসং যুক্তয়োর্ব্যঞ্জনয়োর্মধ্যে অকারস্য এত্বং ভবতিঅটং হিত্বাম্বরেপরে অভ্যাস-লোপশ্চস্যাং। পেঠত্বং পেঠ্বং পেচতুং পেচ্বং পেচিথ। স্বরেকিং পপক্থ শশক্থ। অনডিতিকিং সমাদ দদাহ ননাহ। অস্যোতিকিং ত্রত্তহত্বঃ ত্রত্তহুঃ মিমিহতুঃ মিমিহুঃ। অনাদেশীতিকিং চকমেজঘটে। একহলোর্মধ্যে কিং শ্রমত্বঃ তত্যজতুঃ ররক্ষতুঃ শশক্ষে আদতুঃ।২৭১॥

ফলিশ্রথিভজ্তাথিতৃত্তপাং। এব প্রায়োপৌস্তঃ। ফেলতুঃ ফেলুং নলোপ পক্ষেশ্রেথতুঃ গ্রেথতুঃ গ্রেথাঃ ভেজতুঃ ভেজিঃ ভেজিথ তেরতুঃ তেব্বুঃ ত্রেপেত্রে-পাতে। অনট্ স্বরইত্যব পফালবভক্থ। ২৭২॥

গূঢপ্রকাশিকা।

অদিতি। ববধিথেত্যাদি। বধ্বন্ধনেক্র্যাপ মুচ্৯মোক্ষণেমুপ অট্গতৌভুপ ধ্বন্শব্দেভুপ পঠ্ব্যক্তায়াং বাচিভুপ। সেদণীতি। নঞোহমিত্যন্তাদিতিহৃদয়ং। ততন্থেত্যাদি। তনুবিস্তারেতউ। সেটস্থলীত্যক্তেসেটোবাঅনিটঃ স্থারিত্যন্ত্রাপত্রেরনিটইত্যক্তং। অত্যানিভ্দয়ানুক্তে একতরোক্তেবা বা অনিটঃ স্থারিত্যন্ত্রাকৃত্তিঃ। ২৭০॥

প্রভাপকাশিক। 1

অসা। আদেশোহস্তাস্থাদেশী অভ্যাসস্থাদেশেনধাতোরপ্যাদেশিরম্ ন আদেশী অনাদেশী অভ্যাসস্থাদেশরহিতস্থাতোরেকহলাবিতিষষ্ঠীতৎপুরুষঃ। পেঠতুরিত্যাদোদিরেহকারস্থৈত্বেহভ্যাসলোপঃ। পপক্থেতি। অত্পান্তেতিবাহনিট্ ধুট্যন্তেচ চজোরিতিচঃ কঃ। সসাদেত্যাদি। সদ্ভদহ্নহাং রুদ্ধিঃ। চকমইত্যাদি। উভয়ত্রাভ্যাসাদেশেনধাতোরাদেশিরং। শশ্রমভুরিত্যাদি। এমুসংযুক্তরং। আদতুরিতি। অত্ত হল দ্বাভাবঃ। ২৭১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অস্তে । অনট্দরেপরেহনাদেশ্যেকহলোরাদেশরহিতাদংযুক্তহলোর্মধ্যেইস্তম্থানেএজংপ্রাগ্নোপশ্চ স্থাদিত্যর্থঃ। শশক্থেত্যাদি । শক্ষদামর্থ্যে শক্ষর্ষণেইত্যস্তদেটজাৎদেকিথা। সদ্কভেদগমনাবসাদনেষু ভুপ দহ্ভান্মাকরণেভুপ নহবন্ধনেদিউ মিহ্দেচনেভুপ কমুকান্তোভুআ ঘট্চেন্টায়াং ভুআ শ্রমুতপস্থা থেদয়োঃ দিপ ত্যজ্হানোভুপ রক্ষ্পালনেভুপ শকিশঙ্কায়াং ভুআ অদ্ভক্ষণেঅপ। পরত্রবিকঙ্কেনৈত্বপ্রাগেপবিধানাদ্ত্রনিত্যতাপ্রাপ্তেশ্ববিদ্বুহিরিতি। ২৭১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ফলি। ফল্ভজোরাদেশিস্বাৎশ্রথিত্রপোঃ সংযুক্তত্বাৎগ্রথেরুভয়ত্বাৎ পূর্ব্বসূত্রেণাপ্রাপ্তাবনেনৈত্ব-প্রামোপো বিধীয়েতে। তৃধাতোস্তগুণেকৃতএত্বপ্রাপ্তোনিয়মার্থং। নলোপপক্ষইতি। শ্রন্থি দন্ভি গ্রন্থি- বাজ্রজিত্রসি ভাসিভ্রম্ ভাজিশ্যম্ ফণিস্বনাং। স্থাকারস্যাচ। এত্বং প্রাপ্রোপশ্চ। জেরতুঃ জজরতু রেজতুঃ ররাজতুঃ রেজুঃ ত্রেসতুঃ ভ্রেসতুঃ বভ্রাসতুঃ ভ্রেমতুঃ বভ্রমতুঃ ভ্রেজ বভ্রাজে শ্যেমতুঃ শশ্যমতুঃ ফেণতুঃ প্রফণতুঃ স্বেনতুঃ সম্বনতুঃ। ২৭৩॥

হিংসায়াং রাধঃ। এত্বপ্রাপ্রোপৌস্তঃ। রেধতুর্বিরিণঃ রুষ্ণো। তাটিতু-ররাধ। হিংসায়াং কিম্ আররাধতুর্দ্দেবং। ২৭৪॥

স্বন্জামিত্যনেন। ভেজতুরিত্যাদি। দ্বিষ্ণেচতুর্থস্ম তৃতীয়ঃ। তেরতুরিত্যাদি। দ্বিষ্ণেবর্ণস্যাকারঃ শ্লুদন্ত ঋছ্ জাগৃতামপীতিগুণেএত্বপ্রাগ্লোপোঁ। ত্রেপেইত্যাত্মনেপদে। অনডিত্যাদি। অনডিত্যস্থ পফালেত্যত্র স্বরইত্যস্থ বভক্থেত্যত্রব্যাব্ধতিঃ। ভজ্ অত্নপান্তেত্যাদিনাবানেট্।২৭২।

গুঢপ্রকাশিকা।

ফলীতি। পূর্বেনাপ্রাপ্তোবিধীয়তে। ঞিফলাভেদেফল্নিপ্সত্তৌ ভূপ শ্রন্থ সন্দর্ভেক্যাপ ভর্মেবায়াং ভূত গ্রন্থ সন্দর্ভেক্যাপ তৃপ্পবনসন্তরণয়ােঃ ভূপ ত্রপৃষ্ লক্ষায়াং ভূআ। ভেজভুরিত্যাদিত্র য়েদিয়ে চতুর্থ স্তৃতীয়ে এরপ্রাপ্রাপ্রাপ্রাদির গ্রেদির গ্লাদ্বাধার গ্লাদ্বাধার প্রাদ্বাধার প্রাদ্বা

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাজ্। চকারাদকারস্থাচ। জেরতুরিত্যাদি। ৠদন্তেত্যাদিনাগুণেকৃতে এত্বপ্রাশ্লোপো এতস্থ গুণান্তরমেত্বং সূত্রবলাৎ। রেজতুরিতি। আকারস্থৈত্বেহভ্যাসলোপঃ পক্ষেএত্বাভ্যাসলোপোন। ভ্রেসতুরিতি। ভ্রাস্থাকারস্থ এত্বং। ভ্রেজইতি। ভ্রাজ্ইহাপ্যাকারস্থৈত্বং।২৭৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বাজ্বজীতি। জৃষ্বয়োহানোদিপ জৃবয়োহানো জ্যাপউভয়োগ্রহণং জৃষিতি ষমুবদ্ধতাগাৎ রন্জরাগে ভুদিউ ত্রদীউদ্বেগদিপ টুল্রাস্দীপ্তো ভুদিআ ভ্রমুচলনে ভুদিপ টুল্রাজ্দীপ্তো ভুআ শুমুশব্দে ভুপ ফণ্ গতিনিঃমেহয়োঃ ভুপ স্বন্ শব্দেভুপ! এযামাকারস্থ চকারাদকারস্থচ এবং প্রায়োপশ্চানট্স্বরেবা ইতিবাক্যযোজনা। তত্রসভুরিত্যাদি। এযামেরপ্রায়োপাভারপক্ষে অভ্যাসে সংযুক্তস্থানাদি হল্ লোপঃ চতুর্থস্যভৃতীয়ঃ দ্বিতীয়স্পপ্রথমঃ। ২৭৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হিংসা। রেধতুরিত্যাদি। কুষ্ণোবলভদ্রদামোদরৌবৈরিণঃ শক্রন্ রেধতুরিত্যর্থঃ। আররাধতুঃ
পূজয়ামাসতুঃ নাত্রৈত্বপ্রায়োপৌ। রাধ্ বাধ্ সাধ্ সংসিদ্ধৌ দিবাদিঃ স্বাদিশ্চ অবিশেষাত্রভয়োর্থ হণং।
অনেকার্যন্ত্রিদ্বিহিংসার্থোহপি। ২৭৪॥

নবাদিদদ্শসাং। বকারাদিদদ্শস্থাতৃনামেত্বপ্রাগ্রোপৌনভবতঃ। ববলতুঃ ববলুঃ ববজতুঃ ববজুঃ ববমতুঃ ববমুঃ। নঞোইনিত্যত্বাৎ উদ্বেমুঃ। বসনং ববসে। ববয়েভিক্ষুকোবনং। ইহান্ত স্থ বকারাদিগ্রহণাৎ বর্গিবাদেরেত্বপ্রাগ্রোপৌন্তঃ। বদ্ধৈস্থগ্রে বেদতুঃ বেত্রঃ। ত্রদাদং দদদে। বিশশসতুঃ বিশশস্থঃ। ২৭৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

হিংদেতি। রাধ্নিস্বাপচ্রাদিশ্চায়ং। রেধতুরিতি। জিহিংসতুরিত্যর্থঃ। কৃষ্ণাবিতি। কৃষিভূ-বাচকঃশব্দোনশ্চনির্বতিবাচকঃ। তয়োরৈক্যং পরং ব্রহ্মাকৃষ্ণইত্যভিধীয়তে ইতিবচনপ্রতিপাদিত পরব্রহ্মাক্রপের কৃষ্ণবলরামো নতুক্ষবর্ণো বলরামেহ্ব্যাপ্তেরিতি প্রভাপ্রকাশিকাকারভাবঃ। যদা কৃষ্ণো কৃষ্ণার্জ্জ্বনিতয়াঃ কৃষ্ণবর্ণানিতি ঋজ্বঃ। অত্যাতুনামনেকার্থস্বাদ্রাধ্হিংসার্থোহিপি। ভট্টোচ চকাসাঞ্চ কুক্রত্তমুর্মে তুরানশিরেদিশঃ। বানরাভূধরান্ রেধুর্বভঞ্জ্শ্চ ততন্তর্কনিতি। রেধুঃ উন্মূলিতবন্তঃ জিহিংস্করিতিযাবং। আররাধতুরিতি। আঙ্ পুর্বোরাধ্ পূজার্থঃ। ২৭৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নবা। ববলত্রিত্যাদি। বল্ বল্ল্ সদ্বরণেপরস্থৈপণীত। বলদাধাং রাধামিতিজয়দেবঃ। বজ্ বজ্গতৌ টুবমুউলিরণে। বেমুশ্চকেচিক্রধিরমিতিচগুঁ। ববয়ইতি। অয়বয়েত্যাদিদগুকঃ। ছুদ্দাং দদদে ছুদ্দাং প্রহারং শব্রং বাদদদেদের। দাদদিল্যাদ্দ ছুদ্দাণ দাদাদা ছুদ্দাদদেবাঃ। ছুদ্দাং দদদে ছুদ্দাং প্রহারং শব্রং বাদদদেদের। দাদদবিত্যাদি। ছুদ্দেশতৌ ছুদ্দাং শব্রং প্রহারদ্বাদদদেদভবান্ প্রস্তবাংক্ষঃ। টুছুউপতাপেদবনং ছুংসম্পদাদিছাং কিপ্ দদ্দানে ছুত্ং দলতইতি কর্মণ্যণ্ ছুদ্দাং শব্রং প্রহারঞ্চবা ছুত্মপতাপং দদাতীতি ডঃ ছুদ্দঃ শক্রঃ। কীদুক্দাদদঃ দৈপ্ শোধনে সম্পদিল্যাং কিপিদাঃ শুদ্ধা তত্যাদদোদাতাদর্শননামগ্রহণাদিনা পাবিত্রপ্রদেইত্যর্থঃ। দদ্ধাতোরেচ্ পুনঃ কীছ্দছদানি ছুদ্দস্থাত্রিত্বপুণাপং সাধ্ববস্থাংবা দদতইতি দদতের্ণিন্ শত্রপতাপাবস্থাং কর্ত্তের্থঃ পুনঃ কীদাদাদঃ রক্ষাপ্রদঃ দেঙ্রক্ষণে দাংরক্ষণং দদতইতি কর্মণ্যণ্ পুনঃকাদুদদীদদেশঃ দুঙ্ পরিতাপে দবনং দুঃ পরিতাপঃ কিপ্ তাংদদাতীতি দৃদঃ শত্রুঃ তত্মদমনং দীঃ ক্ষয়ঃ দীঙ্ক্ষয়ে তাংদদতীতি ডঃ দুদ্দী দৌ শত্রুক্ষয়েদী দোমো বাছুস্তা সত্যা শত্রুক্ষপ্রপ্রদাহরিত্যর্থঃ তথাদদতইতি দদোদাতা অদদে অদাতা দদাদাভাগং দাবেদাভূল্যাং দদতইতি দদাদদেদ্দঃ দাঙ্ভোহ্দাভূল্যাহ্পি দদাতীত্যর্থঃ উপকারিষুচানুপকারিষু চতুল্যদানশ্চপুনঃ কী অদ্ভক্ষণে অদন্তীত্যর্ছ আদাহিংদক।রাক্ষসাদয়ঃ তান্দ্যতি খণ্ডয় তীতি অচ্ দোশ্বর্থণ্ডনে অদদঃ ভক্ষকরাক্ষসাদিথণ্ডকইত্যর্থঃ। অভ্যাখ্যানং বিস্তরভ্যাম্বলিথিতং। ২৭৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নবাদীতি। বআদির্য্যোগ বাদয়শ্চ দদ্ দানধারণয়োঃ ভুআদদ্চ শন্ত্ম কথনস্তুতিহিংসাত্ম শন্স্চ দ্বানন্তরমামি অন্তাব্যঞ্জনেতি নলোপঃ। অত্র দন্তজ দদ্সাহচর্য্যাৎদন্ত্যোষ্ঠবাদিধাভুগ্রহণং তেন বর্গিবাদে- জভঃ স্থর†ৎস্বরেবিন্দুঃ। জজন্ত জজন্ততুঃ। ২৭৬॥

পরোকেট্সরয়োরধঃ। ররন্ধররন্ধতুঃ ইটিররন্ধিথ। পরোকেট্সরয়োঃ কিং রিধিতারদ্ধা। ২৭৭॥

অন্পরক্ষেবর্জয়িত্বাবিন্দূরভিলভোস্তথা। স্বরাৎস্বরেপরে। আরেভে আলেভে অন্যত্ররম্ভয়তি লম্ভরতীত্যাক্যুদাহরণং।২৭৮॥

বেরপ্রায়োপোন্তঃ। ববলতুরিত্যাদি। বল্ধাতুর্তুবাদিঃ। বজ্বমৌতুবাদিপরস্থৈপদিনো। উদ্মের্রিত। উদ্মেন্তত্ত্রক্ষধিরং রথিনোহন্তেপরস্পারং। পরশ্বভিহিতং রক্তং সরসং চন্দনং যথা। বসনং ববসেইতি। বস্আচ্ছাদনে অআ। করক্ষনীবিদয়িতোপগতে গলিতং ত্বরাবিরহিতাসনয়া। ক্ষণদৃইহাটকশিলা-সদৃশক্ষুরদূক্ষভিত্তিবসনং ববসেইতিমাঘঃ। ববয়েইতি। বয়্গতোতুআ। ইহেতি। ইহস্ত্তে অস্তম্বকারাদিগ্রহণাৎ দন্তাদদ্শাহচর্যাদিতিভাবঃ। বদ্সৈহর্যে তুআ। বিশশসতুরিত্যাদি। বিপূর্বাঃ শন্ম্বক্থনস্ততি হিংসায় তুপ অগুণেহস্তাব্যঞ্জনাদীতিনলোপঃ। ২৭৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জভঃ। জভীগাত্রবিনামে। ২৭৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

জভইতি। জভীগাত্রবিনামে জভ্ধাতুর্ভুবাদিরান্মনেপদীতি গণদর্পণে উক্তঃ তথাসতি গ্রন্থ-কুরুক্তঃ জজন্ত জজন্ততুরিতি পরস্মৈপদপ্রয়োগোহসঙ্গতঃ স্থাদিত্যুভয়পদ্যয়ং ধাতুরিতি স্বীক্রিয়তে। ২৭৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পরো। পরোক্ষারাইট্ স্বরোপরোক্ষেট্ স্বরোতয়োর্বিনয়য়য়াঃ। ররক্ষেতি। রধ্হিংসারাধ্যাঃ দিবাদি প্রাথিন্দোনর্দ্ধিঃ। ইটাতি। পক্ষেটাত্যর্থঃ। রধিতেত্যাদি। বাস্সূম্ভীত্যাদিনা বেট্।২৭৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

পরোক্ষেডিতি। অত্রেট্ সাহচর্য্যাদশিৎস্বরমাত্রে আপদ্যেতেতিপরোক্ষেতিকথিতং। রধ্ হিংসানিষ্পত্তি পাকেষু দিপ। ইটীতি। বাস্থৃসূয়তি ধূঞ্ সূতি রধাদ্যদকুবন্ধতইত্যনেন পাক্ষিকেটীত্যর্থঃ। রধিতেত্যাদি। পূর্ব্ব্রোপরোক্ষেটিপর্ত্রইট্ স্বরাভাবেনবিন্দুরিত্যর্থঃ। ২৭৭॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

অন্প। রভ্লভ্ধাত্বোস্তথাস্বরাৎ স্বরেপরেবিন্দুঃ স্থাৎ অন্বিকরণং পরোক্ষাঞ্চত্যক্ত্রের্থঃ। বিন্দৃইতি। বিদর্গস্তরত্বে তস্থলোপে পূর্বেদীর্ঘঃ। যদানিমিত্তধাতুদ্বয়াপেক্ষয়াদ্বিচনং। পরোক্ষায়াং বিন্দ্বভাবোদাহরণমারেভেইত্যাদি দ্বয়ং। অন্ বিকরণেতু আরভতে আলভতেইত্যাদিবোধ্যং। অন্তিতি। অন্পরোক্ষাভিন্নেইনাদো। লভইনি প্রায়িন্দোনর্দ্ধিঃ। আদিপদাত্বপলম্ভইত্যাদি।২৭৮॥

নাত্রনোলুক্। অত্রপরোক্ষায়ায়গুণেইপি ররঞ্জইত্যাদিবং ননকারলোপঃ। ররঞ্জতুঃ ররঞ্জুঃ সমঞ্জুঃ সমঞ্জুঃ ববন্ধজুঃ। বলির্বন্ধেজলিধির্মমন্থে। এবং বভঞ্জতুঃ বভঞ্জুঃ বভঞ্জেবভংশে। অত্রইন্ধের্মলোপশ্চন্দিসি সমীধেভাষায়াস্ত সমিন্ধাঞ্চক্রইতি। ২৭৯॥

শ্রন্থি এছি স্বন্জান্তবানটি। এষাং নকারলোপোবাস্যাৎ অটং বর্জিয়িত্বা। শশ্রস্থানু জত্রস্থান্ত । নলোপক্ষে এত্রপ্রাপ্রোপৌ দেভতুঃ দেস্থা দেভিথ দদন্তিথ শেল্পথি শশ্রস্থি। সানন্দং পরিসম্বজে। ২৮০॥

गृष्धकाणिका।

অন্ পরোক্ষেতি। অন্ অন্ বিকরণঃ পরোক্ষাচতে র্জীবর্জনে চুপ বর্জয়তীতি কর্তুরৈক্যইত্যাদিনাক্রাইট্ সপ্তম্যেকবচনান্তং। সপ্রকারস্তথাপ্রকারেথাঙিবত্তসাদোত্যদাদ্যত্বং। অত্রবিন্দুরিত্যসূক্তে
তথাবিন্দুরিত্যম্বয়সন্তবাৎ ব্যঞ্জনেহপি স্থাদিত্যাপদ্যেত তথাইত্যসুক্তেহপি তদ্দোষঃস্থাদিত্যাপদ্যেত অধুনাতু
তথাশব্দস্ত স্বরাৎস্বরে ইতিপরামর্শকত্বমিতি। আরেভেইত্যাদি। আঙ্রভ্রাভাস্থে তচ্চোৎস্ক্কতা ভূআ
ভূলভ্র্ প্রাপ্তো ভূআ। ২৭৮॥

প্রভাপকাশিকা।

নাত্র। অত্রেতি। অত্রপরোক্ষায়াং বিষয়ইত্যর্থঃ। ররঞ্জেত্যাদিবদিতি। যথাপরোক্ষায়াং গুণিনিনলোপাপ্রসক্তোনস্থিতিস্তথাই গুণেইপিনলোপনিষেধান্নস্থিতিরিতিভাবঃ। সমীধইতি। প্রাত্ত্ব-লোপেইকারস্থবিভাবঃ। সমিন্ধাঞ্চক্রইতি। গুরুনাম্যাদিধাতুত্বাৎ অয়াস্দয়েত্যাদিনাআম্ততঃ কুঞঃ প্রয়োগঃ। ২৭৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নাত্রেতি। নইতিষষ্ঠ্যন্তং। ররঞ্জুরিত্যাদি। রন্জরাগে রাগশ্চ অনুরাগোবর্ণান্তরোৎ পাদানঞ্ ভুদিউ মন্জসঙ্গে ভুপ বন্ধ্ বন্ধনেক্র্যাপ। বলিরিতি। জহ্রেংমৃতং দৈত্যকুলং বিজিগ্যে। কল্পান্তত্বঃ স্থাবস্তথাতথোহেযেনেষভারোহতি গুরুর্গতম্ভেতি শেষপাদত্রয়ং ভট্টো। বভঞ্জুরিত্যাদি। ভন্জো-আমর্দনে রু উ ভ্রন্শু অবস্রং সনে ভু আ ঞি ই দ্বী দী প্রে) রু আ। ২৭৯॥

প্ৰভাগৰাশিকা।

শ্রন্থি। শশ্রন্থ কুরিতি। শ্রন্থ সন্দর্ভে। দদন্ত পুরিতে। দন্ত পুরণে। দেভতুরিতি। নলোপে অস্থানাদেশী ত্যাদিনা এরপ্রায়োপো। দেভিথেতি। ইটিম্বরে এরাদি। দদন্তিথেতি। নন্থিতিপক্ষে- একহল্ রাভাবান্ধেরপ্রায়োপো। শ্রেথিথেতি। দলোপেফলিশ্রণীতিতোঁ। সানন্দমিতি। এতৎ ক্রিয়া বিশেষণং পরিসম্বন্ধইতি নমন্থং। ২৮০॥

খকারস্যগুণঃ কার্য্যঃ সংযোগাদেঃ স্থাতি । স্বতঃ সংযোগাদেঃ স্থাপি সহসংযোগাদেঃ খকারস্য গুণোভবতি। সম্মর্তুঃ সম্মুক্তঃ সম্মুক্তঃ সম্মুক্তি দধ্বরতুঃ দধ্বকঃ সঞ্চ্বরিবেত্যাদি। সংযোগাদেঃ কি মন্ত্রতুঃ। দুগ্রেমণিদ্ধীধিতি দীপিতাশঃ। স্পটিতুসম্মার সঞ্চ্বার। ২৮১॥

ৠদস্ত ঋছ্জাগৃতামপি। এতৎপঞ্চক্যা গুণঃ অটিতু রদ্ধিপ্রাপ্তৌ রদ্ধিরেব। কৃবিচকারকোরকাণি বিচকরতুঃ।. বিচকরেচ করেণ বরোক্তভিঃ। গৃনিজগরতুঃ ঋছ্ আনচ্ছ আনচ্ছ তুঃ আনচ্ছ ঋতার আরতুঃ জজাগর জজাগরতুঃ ঋণ্ইতি সৌত্রোধাতুরশ্বাদীনাং গতিবিশেষেবর্ত্তে আনর্ত্ত আনর্ত্ততুঃ। ২৮২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শ্রন্থীতি। শ্রন্থ করে দন্তু দন্তে স্বাপ দন্ত্প্রেরণে চুপউভয়স্থ গ্রহণমবিশেষাৎ। গ্রন্থ দন্ত্-ক্র্যাপ স্বন্জপরিষঙ্গে ভূআ। সানন্দমিতি। আনন্দেন প্রবর্তইতি তৃতীয়াজ্যৈ সহেতিপ্রথমার্থ-বহুব্রীহিঃ সহস্থপূর্ব্বনিপাতে তত্রকর্ত্তব্যোবাসহস্থসইতি সহস্থসঃ। পরিসম্বজইতি। লিটিম্বন্জি সদোরিতি বন্ধনিষ্ধেঃ। বিহায়গোপান্ বৎসাংশ্চরাধিকাং গোপনন্দনঃ। যমুনায়ানিকুঞ্জেথসানন্দং পরিসম্বজে। ২৮০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

খাকা। খাকারস্থেতি ধাত্বন্তথাকারস্থেত্যর্থঃ অডুজ্জিত স্বরেপরেগুণঃ কার্যাইত্যর্থঃ। কিন্তান্দানুণা-প্রাপ্তো অনেনগুণোবিধীয়তে। স্মুধ্ব ইমোস্বতঃ সংযোগাদী। সম্মর্থেত্যেতৎ সূত্রস্থনোদাহরণং কিন্ত্বা-ভাবাদেবগুণপ্রাপ্তেঃ কিন্তুক্রমেণপরোক্ষোদাহরণং। দধ্বরতুরিতি। ধ্বৃক্র্চনে তচ্চকোটিল্যং। স্থুটা সংযোগাদি মুদাহরতি সঞ্চ্সরিবেতি। সম্পরিভ্যামিতি প্রাক্স্পরি সংযোগাদিত্বং। মত্রুরিতি। বিত্রিয়তে রাশীরদ্যতনীশিতামন্যত্রপরস্থৈপদং। দুর্গ্রহিত। ধুঞ্ধারণে। তেনাস্ত্বসাংসারময়ঃ প্রো-ধের্দিপ্রেমিণিজিধিতিদীপিতাশঃ। অন্তর্বসন্ বিদ্বগত্ত্বদক্ষেসাক্ষাদিবালক্ষ্যত যত্রলোকইতিমাঘঃ। ২৮১॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ঋকারস্থেতি। স্মৃচিন্তায়াং ভূপ আদিনাসম্মরপুরিত্যাদিগ্রহণং। ধ্বৃভূপ। পরাদিনাসঞ্চম্বরম পরিচক্ষরিব পরিচক্ষরিমেতি। মন্ত্রভুরিতি। মৃঙ্প্রাণত্যাগ্রেডু আ ওনুবন্ধত্বেনাত্মনেপদপ্রাপ্তাবপিত্রিয়তে রাশীরদ্যতনীশিতামিত্যনেনাত্মনেপদনিয়মাদন্তত্র পরস্মৈপদং। সম্মারেত্যাদো ইকামস্থৈবোপধায়া ইত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ। ২৮১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ৠদ। ৠদন্তশ্চ ঋছ্চঋশ্চ জাগৃশ্চ ঋৎচেতিবিগ্রহঃ। অটীতি। অনটীত্যস্থানুর্ত্তেরিত্যর্থঃ। কোরকাণীতি। কলিকাকোরকঃ পুমানিত্যমরঃ। পুমান্ পুম্ শব্দবৎ শব্দবাচ্যলিঙ্গবানিতি ব্যাখ্যানামপুংসকত্বঞ্চ কোরকশব্দস্য। কোরকোহন্ত্রী কুট্মলেস্থাৎককোলক মুণালয়োরিতিমেদিনী। অসকল-

শু দু পৃণস্তুবা। গুণঃ স্যাদনটি তুধাতোরেত্বপ্রাপেবিধানাদন্যগুণিনামেত্বং নাস্তি শশরতুঃ দদরতুঃ পপরতুঃ বা শশ্রতুঃ দদ্দতুঃ পপ্রতুঃ পপ্রারথ শশরিথ অটিতু দদার পপার। ২৮৩॥

কলিকাকুলীকুতানি শ্বলনবিকীণবিকাদিকেশরাণাং। মরুদবনিরুহাংরজোবধূভ্যঃ সমুপহরন্ বিচকার-কোরকাণি ইতিমাঘঃ। বিচকরেইতি কর্ম্মণিপ্রয়োগঃ। নিদধিরেদয়িতোরদিতৎক্ষণস্রপনবারিত্বারভ্তঃ স্তুনাঃ। সরসচন্দনরেণুরণুক্ষণং বিচকরেচেতিচরমং। ইতিমাঘঃ। ঋছিতি। ঋছ্গতি ইন্দ্রিয়প্রলয় হিংসাদানেয়। আনচের্ছত্যাদিয়ু পূর্বাং দ্বিঃ ঋবর্ণস্থাকারঃ গুণেকুতেরসংযোগাৎপুরোহকারেচেতি পশ্চাদান্। সোত্রইতি। ঋতেরীয়ঙিতিসূত্রেপঠিতঃ। ২৮২ ॥

গৃত্পকাশিকা।

ৠদত্তেতি। বৃদ্ধিপ্রাপ্তাবিতি। এতেনগুণপ্রাপ্তেগিগুণইতিসূচিতং। কৃবিক্ষেপেতুপ। কোরকাণীতি। কিলিকাকোরকঃ পুমানিত্যমরঃ। পুমান্ পুম্শক্ষবং শক্ষরাচ্যলিঙ্গবানিত্যর্থঃ। যদ্বারূপভেদেন পুলিঙ্গব্ধ প্রানিতি বিশেষণং ক্লীবলিঙ্গব্ধসূচকং। কোরকোহন্ত্রীকুট্মলেস্থাং ককোলকমুণালয়োরিতি মেদিনী। ঈষদ্বিদ্যতেক্লীবং মুকুলেকোরকঃ পুমানিতি রত্নকোষঃ। অন্তেতু কোরকঃ পুম্ আন্ নপুংসকশ্চ তথাহি নোলাহুং নোপভোক্তুঞ্জ শক্ষোতি কুপণোধনং। নিত্যং স্পৃশতি হস্তাভ্যাং দিব্যন্ত্রীমান্ যথানিশীত্যত্র আন্ নপুংসকইতি প্রাপ্তইতিবদন্তি। গুনিগরণস্তত্যোঃ ক্র্যাপ গুভঙ্গণেতুপ উভয়োর্মিজ-গরতুরিতিরূপং। ঋছ্তুপ ঝগতিগ্রাপণ্যােঃ ভূপ জাগ্নিদ্রাক্ষয়েভূপ ঋৎস্পর্কেশ্বর্য্য দয়াগতিনিন্দান্ত ভূপধাত্ননামনেকার্থব্রাদশাদীনাং গতিবিশেষেচ বর্ত্তে। ২৮২॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

শৃ দূ। শৃশ্চ দৃশ্চ পৃশ্চেতি সমাহার দ্বন্ধঃ র্রাবলিঙ্গঃ সমাহারইতি ক্লীবন্ধং নপুংসকে স্বরোহ্রস্ইতি শ্লাকারস্তর্বঃ নামিনঃ স্বরেইতিনুঃ গর্প। তৃপাতোরেত্বেতি। ফলিশ্রথিভজ্ প্রথিত্ত্রপামিত্যনেনেত্যগঃ। দদর কুরিত্যাদি। দৃবিদারণেক্র্যাদিঃ আদ্যন্তসাহচর্যাৎ পৃপালন পূরণয়োং ক্র্যাদিঃ কেষাঞ্চিন্মতে জুহোত্যাদিশ্চ। বাশশ্রহুরিত্যাদি। সক্রমাধিতভাষাদৃকারস্তনইর্। বরক্রচিপ্রভৃতয়স্ত এতেষাংপক্ষে হ্রস্থং ক্রিতি। অস্যাক্মপির্দ্ধপুত্রে শ্লান্ত গাভূজাগৃত্যং হ্রস্বঃ শৃদৃপৃণস্তবেতি পাঠোগ্রন্থক্দভিমতঃ। ২৮৩॥

গৃড়প্রকাশিকা।

শৃদ্ইতি। শৃহননেজ্যাপ দ্বিদারণেজ্যাপ অত্যৈবগ্রহণমাদ্যন্তসাহচর্যাৎ তেন দৃভয়েতুপ দ্বিদারে দিপ এতয়ার্ম গ্রহণং। পৃণ্জ্যাপ। গুণঃ স্থাদনটীতি পূর্বস্থাদমুবর্ততে। তৃধাতোরেছেতি। যদি ৠদন্তমাত্রস্থুণেএবং স্থান্তদা কলিশ্রথিভজ্গ্রথিত্ত্রপাতিসূত্রে তৃগ্রহণং ব্যর্থং স্থাৎ তথাচ তেন সূত্রেণ তৃধাতোরেছবিধানাদন্ত ৠদন্তগুণিনামেত্বং নান্তিএছাভাবারপ্রাধাপশ্চেতি পর্যাবসিতোহর্থঃ। বাশশ্রতুর্বিলাদি। গুণাভাবপক্ষে ৠদন্তস্থেরগুণে ইত্যনেন ইর্ প্রাপ্তাবিপ তৃগ্রহণেন সক্ষাধিতইতি স্থায়সূচনাম ইর্। বরক্রচিপ্রভূতীনাং মতেতু পক্ষেত্রস্বতয়া ইরপ্রাপ্তবয়া ন ইরিতি। পপরিথেত্যাদি। অজন্তান্ত বানিটইত্যনেন থলিবিকল্পেন সেট্ছবিধানাদিট্ পক্ষেপপর্য শশর্থেত্যাদি। অটিছিতি। অনটিগুণবিধানাদ্টি বৃদ্ধিরেত্যুণ্ট তেন ইকামস্থৈবেত্যাদিনা বৃদ্ধিরিতি। ২৮৩॥

অস্যাভ্যাসস্যানৃকারে। ঋধ্ আনৃধে আনৃণে আনৃণাতে ঋফ্ ঋন্ফ হিংসায়াম্ আনৃফে আনৃক্ষে। ঋকারেকিম্ আট আটতুঃ। ২৮৪॥

অশোতে চ। প্রাগকারস্যান্স্যাৎ। ব্যানশেদিশঃ। ব্যানশাতে। ২৮৫॥ রসংযোগাৎ পুরোইকারেচ। প্রাগকারস্যান্স্যাৎ। আনর্চজানর্চ তুঃ আনর্হ আনর্হতুঃ আনর্দ্ধ। আন্চুরিব্রুং দেবাঃ আন্হর্দেবর্ষয়োবলিমিতি ভান্দসং। ২৮৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অস্তা। অভ্যাদস্ত অকারস্ত্রখানে আন্স্যাৎ ঋকারেপরে। প্রাচাং দূত্রদর্শনাদ্গ্রন্থরুদাহরণদর্শনাচ্চ ম অন্ তথাদত্যপি অকারস্ত অকারকরণেপ্রয়োজনশূন্যত্বাৎ নকারাগমএবকৃতঃ স্তাদিতি। ঋথেত্যাদি। ঋথুরদ্ধৌ ঋকারদ্বিভাবে ঋবর্ণস্থাত্বোন্ ঋণুগতৌ। ২৮৪॥

গূতপ্রকাশিকা।

অস্তেতি। অভ্যাসস্থ দ্বিরুক্ত্যালব্ধপ্রাগ্বর্ণস্থ। ঋধ্ দি স্বাপ আনুধেইতিভাবেপ্রয়োগঃঃ। ঋণ্ তউ তেন আনুণেইতি কর্ত্তরি কর্মণিচসাধ্যং। ৠফ্ ঋন্ফ্ তুপ তেন আনুফেইত্যাদি প্রয়োগোকর্মণি নকর্ত্তরি। আটেত্যাদি। অট্গতেভিপুপ।২৮৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অশো। ব্যানশইতি। দিশোদশদিশঃ ব্যানশেব্যাপ্রোতিস্ম। ২৮৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

অশ্বোতোচিত। অশ্ব্যাপ্তিসজ্ঞাতয়োঃ স্বা আ ধাতুনির্দেশেশতিপ্ স্বাদেশ্লেতনাবিতি নোবিকরণঃ। অশ্বোতোচ পরেঅভ্যাসস্থাস্থ স্থানেআন্ স্থাদিত্যর্থঃ। অশ্বোতিগ্রহণাৎ অশ্ভোজনেক্র্যাপ তম্থবুদোসঃ। চকারআন্সস্থজায়কঃ। ব্যানশইতি। বিপূর্ব্বোহশঃ এদ্বিভাবে অভ্যাসস্থান্। আজন্ম স্থ্র্যজ্ঞাতানিতৃষ্ট্-বুশ্চামুজীবিনঃ। অজঃ প্রবর্ধেঘারং ঘোষশ্চব্যানশেদিশইতিভটিঃ। ২৮৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা i

রসং। রসংযোগাৎপুরঃ পূর্ব্বশ্মিন্নকারেচপরে। আনুচ্জেত্যাদি। অর্চ্চ্পুজায়ান্ অর্চ্পুজায়ান্ অর্দ্গতো যাচনেচ সর্বতিদিশ্বানন্তরমান্। আনুচ্রিতি। আনিসত্যকারস্থাত্বং রলোপশ্চএব মানৃহঃ।২৮৬॥ र

গৃতপ্রকাশিকা।

রসংযোগাদিতি। রেণসংযোগোযস্তেতিবিগ্রহঃ রসংযুক্তাদিত্যর্থঃ। রসংযোগাদিতি
সামান্তেনাভিধানাৎ আদিরেণসংযোগান্তরেণ সংযোগাচ্চতেন আনভ্রইত্যাদোপরস্থরসংযোগাৎ
পুরোহকারেপরে অভ্যাসস্থাস্থ আনাদেশঃ। অভ্গতোভুপ। অর্চ্ছ্প অর্ছ্ড্প অর্দ্ ভূপ ভ্রমাদিস্থ আনর্দেতিরূপমবিশেষাৎ। আন্চুরিত্যাদি। অত্রপৃষোদরাদিস্থাৎ অস্থান্থং রলোপশ্চ

অন্যতোন ভবত্যপি। রেফান্যসংযোগাৎ পূর্বাকারেপ্রাগকারস্যান্স্যাৎ। আনপ্র আনঞ্চ আনংছ। ক্ষতিমভবত্যপি আঞ্জ আঞ্জতুঃ আঞ্চ আংছ। ২৮৭॥ অভ্যাসেইন্যম্বরেস্থাতামিছন্ত্যামাগমৌযবৌ। ইযু ইয়েষ উবোষ ইয়ায়। অন্যম্বরেকিম্ সয়তুঃ সয়ুঃ উষতুঃ উষুঃ। ২৮৮॥

প্রাদেরিশোবানদিঃ স্যাৎকিতি। উদিয়তুঃ উদিয়ুঃ বাউদীয়তুঃ উদীয়ুঃ সমীয়তুঃ সমীয়ুঃ। ৩৮৯॥

পুজয়ামাস্থরিত্যর্থঃ উভয়ং ছান্দসং। নমুআনৃচুরিতিকথং ছান্দসং তুদাদিপরস্মৈপদিনোগত্যর্থক ঋচ্ধাতোঃ অস্তাভ্যাসস্তানৃকারেইত্যনেন আনৃচুরিতি সিদ্ধেরিতিচেশ্বআনৃচুঃ পুজিতবস্তইত্যর্থাঘটনাৎ। যদিমানৃচুর্গত বস্তইত্যর্থঃ স্যাত্তদা আনৃচুরিতি নচ্ছান্দসংকিস্কুআনৃহুরিত্যের চ্ছান্দসংঋহ্ধাতোরসন্ত্রাৎ। ২৮৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অন্য। আনঞ্জেত্যাদি। অন্জ্ব্যক্তিত্রক্ষণ মর্ষণ কান্তিগতিষু অন্চুগতিপুজনয়োঃ অহিগতৌ। আঞ্জেতিনাত্রআন্। ২৮৭॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

অন্তইতি। নভবত্যপীতি অপিশব্দঃ কাচিৎকত্বার্থঃ তেনপ্রায়েণভবতি। অন্জরূপ অন্চ ভূপ অহিরিদমুবন্ধঃ ভূআতেনধাতোরিদমুবন্ধস্ম স্বরাশুম্। আনংহেত্যত্র অটি বিন্দুর্ধুটীতি মুমো-বিন্দুঃ।২৮৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অভ্যা। অভ্যাদেইকারোকারাভ্যাং যবোআগমেস্যিতামিত্যর্থঃ ইকারোকারভিন্নেস্বরেপরতঃ। ইয়েষেতি। ইকারদিম্বেধাত্বিকারস্তগ্রণে অন্যস্বরত্বাদ্যাগমঃ। ঊবোষেতি। উষ্দাহে অত্যোকারাদ্বা গমঃ। ইয়ায়েতি। ইণ্দিত্বানস্তরং রুদ্ধোযাগমঃ ততঃ সদ্ধিঃ সন্ধ্যে পশ্চাদ্বাযাগমঃঃ। ২৮৮॥

গুঢপ্রকাশিকা।

অভ্যাসইতি। আগমাবিতি আগচ্ছতীতি আগমঃ অচ্পচাদেরিত্য চ। উষ্দাহেহননেচেতি বোপদেবঃ ভুপ। ঈয়তুরিত্যাদি ইণ্ ইদ্বিভাবেগুণাপ্রসক্তেঃ ধাতোরিকারস্থ ইয্ ততঃ সন্ধিদীর্ঘঃ উষ তুরিত্যাদৌদিস্থানস্তরং সন্ধিদাত্রং। ২৮৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রাদ। উপসর্গাৎপরস্থোতার্ব্বাদ্বিত্বং নস্থাৎকিতিকসুবন্ধেপরে। উদিয়তুরিত্যাদি। দ্বিত্বাভাবে ইবর্ণোবর্ণযোর্দ্ধাতো রিতীয়াদেশঃ। দ্বিত্বপক্ষেইয়াদেশানস্তরং সন্ধিঃ। ২৮৯॥ দীর্ঘস্তদঃ কচিৎ। মণ্ড্কপ্লুত্যাইভ্যাসেকিতিপরে। তৃতুদতুঃ তৃতুত্বঃ তুতুত্বঃ।২১০

জেগীঃ। পরোক্ষায়ামাদিশ্যতে। ইত্যগ্রেইপি। জিগায়জিগ্যতুঃ জিগুয় জিগেথজিগয়িথবিজিগ্যে। ২১১॥

ইঙোগা। অধিজগেঅধিজগাতে। ২৯২॥

· গৃতপ্রকাশিকা।

প্রাদেরিগোবেতি। বাদিঃ স্থাদিতিকৃতেসূত্রস্থলাঘবং স্থাত্তথাপিনঞ্সমভিব্যাহৃতগোঁরবকরণং পরত্রপ্রাদেরিত্যনুর্ত্তিবারণার্থম্ অধিকমধিকং ব্যাচটেইতিন্থায়াৎ। ২৮৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দীর্ঘ। তুদ্ধাতোরভ্যাদেদীর্ঘঃ কচিৎ। তুতুদতুরিত্যাদি। দিত্বেদীর্ঘঃ। ২৯০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

দীর্ঘইতি। তুদ্ব্যথনেতুউ। মণ্ড্কপ্লুত্যেতি। মণ্ড্কস্পপ্লুতিস্তদিবাসুবর্ত্তনং বিলজ্যাসুবর্ত্তন-মিতিতদর্থঃ তেনাভ্যাদেহঅস্বরেস্থাতামিতি সূত্রস্থাভ্যাদেইতি পদস্থাসুর্তিরিতিভাবঃ। তুতুত্রিত্যত্ত কচিদ্গ্রহণান্নদীর্ঘঃ। ২৯০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জেগী:। জিগ্যতুরিতি। আদেশানন্তরং দ্বির্ভাবেহ্রস্বং কবর্গস্ত চবর্গঃ অনেকাচইত্যাদিনাধাত্বীকারস্ত যত্বং। অত্রদীর্ঘপাঠঃ সম্পাতায়াতঃ। জিগয়িথেতি। অজন্তাস্তবাহনিটইতি পক্ষেসেট্ফাদিট্গুণঃ। বিজিগ্যইতি। বিপরাভ্যাং জেরিতিকর্ত্ব্যাত্মনেপদং। ২৯১॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

জের্গীরিতি। পরোক্ষায়াংপরতঃ জিধাতোঃ স্থানেগীঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অত্রগীরিতিদীর্ঘপাঠফলং জিগীপুরিত্যদৌজ্যেয়। ইত্যগ্রেহ্পীতি। বিশেষনির্মিতোল্লেখাভাবেঅগ্রেহপিপরোক্ষায়ামতিদিশ্যতে ইত্যনুর্তিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ২৯১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইঙো। অধিজগেইতি। প্রাগাদেশেদ্বিঃ। আকারলোপঃ কর্ত্তব্যইত্যালোপঃ। ২৯২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইঙইতি। পরোক্ষায়াং পরতইঙঃ স্থানেগাস্থাদিত্যর্থঃ। অত্রাপিগাইতিআকারান্তফলমধি জগাসেইত্যাদৌ। ২৯২॥ প্যায়ঃ পীঃ। আপিপ্যে আপিপ্যাতে।২৯৩॥

চেঃ কীর্বা। চিকায় চিক্যকুঃ চিচায়চিচ্যকুঃ। ২৯৪॥

তথাহেৰ্যীঃ। জিষায় জিষ্যতুঃ জিহায় জিহ্নতুঃ। ২৯৫॥

চক্ষঃ খ্যাঞ্ বাকার্য্যঃ। আচখ্যে আচখ্যকুঃ আচখ্যুঃ ঞিত্ত্বাৎ আচখ্যে ভারতং ব্যাসঃ বা আচচক্ষে বিচক্ষণঃ আচচক্ষাতে। ২৯৬॥

প্রভাপকাশিকা।

প্যায়ইতি। প্যৈঙ্রদ্ধৌস্ফায়ীওপ্যায়ীরদ্ধেতিভয়োঃ আপিপ্যেইতি। ২৯৩ ॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

প্যায়ইতি। প্যৈঙ্ভুআপ্যায়ীভুআঅবিশেষাত্নভয়গ্রহণং। উভয়স্বীকারফলং বক্ষ্যামি। পীরিতি দার্যপাঠফলং পিপীষেইত্যাদোক্তেয়ং অন্যথাহ্রস্বকরণে কত্ত্বেনতত্রগুণাপ্রাপ্তেঃ পিপিষেইত্যাদিপ্রয়োগঃ স্থাদিতি। ২৯৩॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

চেংকীর্ব্বৈতি। পরোক্ষায়াং পরস্থাং চেঃ স্থানেবাকীঃ স্থাদিত্যর্থঃ। চিকায়েতি। অটিপ্রথমং বির্ভাবে ধাতুচিস্থানেক্যাদেশে ইকামস্থৈবেত্যাদিনার্দ্ধিঃ একারেকারয়ারিতি ঐকারস্থায়্ ব্যঞ্জনং পরগামি। চিক্যতুরিতি। চিকীস্থিতে অনেকাস্ত্রসংযোগস্থেবর্ণোযইতীকারস্থযোনিঃস্বরঃ অকারস্ত ছন্দোহর্থঃ তেন ব্যঞ্জনং পরগামীতি যস্তপরগমনং প্রাক্সরোচ্চারণীয়োহণীতি পরস্বরেণসম্বরঃ। ধাতুরয়ং চিঞ্ চয়নেস্থাদিঃ ঞ্লুবন্ধস্থাতুভয়পদী। চিচায়েত্যাদৌপক্ষেনক্যাদেশঃ অন্তৎপূর্ববিৎ। ২৯৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তথা। হিগতিরুদ্ধ্যোঃ। জিঘায়েতি। প্রাগাদেশে দ্বিত্বেচতুর্থস্থ তৃতীয়কইতি ঘষ্ষগত্বে কবর্গস্থ চবর্গঃ স্থাদিতি গম্মজঃ রুদ্ধ্যাদি। ২৯৫॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

তথেতি। যথাচেঃ স্থানেকীস্তথাহেঃ স্থানেঘীঃস্থাৎ তেন বা ইতিলভ্যতে। হিধাতুঃ স্থাপ। জিঘ্যতুরিতি। ঈকারস্থ যত্বং। জিহায়েত্যাদোঘ্যাদেশাভাবঃ অন্তৎ পূর্ববেৎ। পূর্ববৈত্রগৃতকী এতৎ সূত্রগৃত্যাএতয়োঃ থুপ্রভৃতোফলং চিকাথুঃ জিঘীথুরিত্যাদি। ২৯৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চক্ষঃ। আচথ্যাবিতি। ঞকুবন্ধনির্দেশেনোভয়পদিত্বাৎ পরস্মৈপদং দ্বির্ভাবঃ হ্রস্বইত্যাহ্রস্বঃ তত্রানাদিহলোলুম্পেদিতি যলোপে কবর্গেতি খস্তছঃ প্রথমঃ স্থাদ্বিতীয়স্থেতি ছস্তচঃ আকারাদট ঔকারঃ। আচথ্যতুরিতি। আকারলোপঃ কর্ত্তব্যইত্যালোপঃ। ২৯৬॥ হস্তের্ঘন্ স্যাৎ। জয়ান ম্বঃ স্যাদগুণি নিশ্বরেইতিম্বঃ জম্বতুঃ জম্বুঃ। ২৯৭॥ অংথানিপাত্যন্তে। ২৯৮॥

খনশ্চখাঃ। চখুতুঃ চখ্নুঃ। ২৯১॥

घटमाङकः। ङक्कवुः ङक्क्वियः। ७००॥

গুঢপ্রকাশিকা।

চক্ষইতি। চক্ষণ্ড কথনদর্শনয়েঃ অদাদিঃ। পূর্ব্বম্ অবর্জনাভোজনয়োশ্চক্ষণ্ডঃ খ্যাঞ্ বিধীয়তে ইত্যনেনাশিতি চক্ষণ্ডঃ খ্যাঞ্ সদাবিহিতঃ অত্রতৎপ্রাপ্তাবিপি বর্জন ভোজনভিন্নকথনদর্শনয়েঃ নিত্যখ্যাঞ্প্রদক্তৌ বর্জনভোজনয়াঃ খ্যাঞোহপ্রসক্তৌ সূত্রস্থাস্থ বিকল্পবিধায়কত্বং পরোক্ষামাত্রনিমিতত্বন বিশেষ-ত্বাভ। চক্ষণ্ডঃ ওত্রবন্ধত্বনাত্মনেপদিত্বেহপি যত্রখ্যাঞ্ বিধানং তত্রোভয়পদিত্বম্ অত্যথাঞ্চনুবন্ধনির্দেশস্থ নিক্ষলত্বাৎ অত্রবাচথ্যো আচখ্যতুঃ আচখ্যরিত্যনন্তরং ঞিত্বাৎ আচথ্যেইত্যাহ গ্রন্থকারঃ। যত্রতু ন খ্যাঞাদেশস্তর্রাত্মনেপদিত্বং ওত্রবন্ধত্বাদিতি। বাআচচক্ষেইত্যাদি। গুরুদ্বয়ায়গুরুণোরুভযোরথকার্য্যয়োঃ। হরিবিপ্রতিষেধন্তমাচচক্ষেবিচক্ষণইতিমাঘঃ। খ্যাঞাদেশাভাবপক্ষে আত্মনেপদীয়প্রয়োগদ্বয়ং প্রদর্শিতং। অত্রবাগ্রহণমনুবৃত্তিবারণার্থং। ২৯৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হন্তে। জন্মতুরিতি। দ্বাদেশে অস্বরত্বাৎপরগমনং।২৯৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হত্তেরিতি। পরোক্ষায়াং পরতোহতেঃ স্থানেঘন্স্থাদিত্যর্থঃ। জহানেতি। প্রথমং ঘনাদেশে-ঘদ্বিভাবে কবর্গস্থ চবর্গঃ চতুর্যস্তৃতীয়ঃ ধাতোবৃদ্ধিঃ পরগমনং জন্নতুরিত্যাদৌদ্বাদেশেদিভাবাদি। ২৯৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অথো। মঙ্গলানন্তরারম্ভপ্রশ্নকার্য্যেস্বথোঅথ। ২৯৮॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

অথোইতি। অথোঅনন্তরং নিপাত্যন্তেইত্যর্থঃ। নিপূর্ব্বস্থাহৈতুকেনন্তস্থাপংধাতোঃ কর্মাণপ্রয়োগঃ যকিপরে ইল্লোপঃ। জেগীরিত্যাদি ইত্যন্তমূলীতিছন্দঃ তল্লক্ষণমূক্তং প্রাক্। ২৯৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

খনঃ। খনু অবদারণে। ২৯৯॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

খনইতি। খন্ ভুউ। পরোক্ষায়াঃ ক্রুবন্ধস্বরেষু পরতঃ খনঃ স্থানে কৃত্দ্বির্বচনশ্চথ্যোনিপাত্য-তেইত্যর্থঃ। ২৯৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঘদো। ঘদ্ঠ অদনে। ৩০০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঘদোযক্ষইতি। ঘদ্ভুপ। অস্থাপি পূর্ববদেবার্থঃ। এবমগ্রেহপি। এতৎদূত্রাভাবে জঘদ-ভুরিত্যাদিস্থাৎ। ৩০০॥ যজ্ঞ জঝৌতু জন্ গমোঃ। জজ্ঞে জজ্ঞাতে জগ্মতুঃ জগ্মঃ। ৩০১॥
কনুবন্ধস্বরেশ্বেতে। ক্তিদির্বচনানিপাত্যন্তেইতি পূর্বস্থেনায়য়ঃ। কনুবন্ধেতিকিং চখান চখনিথ জগান জগমিথজগন্থ। স্বরেকিং জগন্ধান্। ৩০২॥
ভূর্বভূঃ। পরোক্ষামাত্রেস্যাৎ। ৩০৩॥
বাগমোইপ্যাচি। বভূব বভূবতুঃ বভূবঃ বভূবে। অচিকিং বভূবান্। ৩০৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যজ্ঞ। জন্ গম্ ধাড়োঃ ক্রমেণ যজ্ঞ জগ্মোস্থাতাং। ৩০১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যজেতি। জনীপ্রাহূর্ভাবে দি আ গম্৯ গতো ভুপ এতয়োঃ স্থানে ক্রমেণ যজ্ঞ জগ্মোস্থাতাং সমানানামকুক্রমাদিতিভায়াৎ। তুশ্ছন্দোহর্থঃ। ৩০১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

করু। এতে আদেশাঃ। পূর্বস্থেনেতি। অথোনিপাত্যন্তেইত্যনেন। জগমিথেতি। অদু-পান্তব্যঞ্জনাদ্যাইত্যাদিনাবাইট্। জগন্তেতি। বিন্দুর্বুটীতি বিন্দোবর্গেত্দর্গেতি নঃ। জগন্বানিতি। কন্ত্র কানোপরোক্ষাবদিতি বন্ত্রঃ পরোক্ষাতিদেশাদ্ধিঃ গম্ বিদ্ঠ হন্ দৃগ্বিশান্তেতি পক্ষেইডভাবঃ মোনত্বং স্থাৎ কোবমোশ্চেতি মন্তনত্বং। এবং জঘানেতি জঘন্বানিতি। ৩০২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উক্তনিপাতানাং নিমিত্তং দর্শয়তি কন্ত্বদ্ধেতি। এতেচখাদয়ঃ কন্ত্বদ্ধস্বরেষু অড্ ভিশ্নস্বরেষু। কৃতেতি। কৃতং দ্বিব্বচনং যেষাংতে। জগম্থেতি। প্রয়োগদর্শনমাত্রং নতু স্বরেকিমিতি ব্যাবৃত্তিদর্শনং তস্তাবক্তব্যস্থাৎ। ৩০২॥

গুঢপ্রকাশিকা।

ভূর্বভূরিতি। অগ্রিমনূত্রেইচিবাগমইতি বক্তব্যস্থাদত্রব্যঞ্জনেইপি আদেশপ্রাপ্তেরাই পরোক্ষামাত্র-ইতি। ৩০০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাগ। অচিপরে বস্থুস্করপাদ্বাগমোহপি স্থাদিত্যর্থঃ। বস্থুবেইতিভাবে। বস্থুবানিতি কন্সৌ সেটেবিক্লক্ত্যৈকস্বরাদন্তে নিচাপরে ইতীড্নিশেংঃ। ৩০৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বাগমইতি। নকেবলংবভূঃ অচিবভূস্বরূপাদ্বাগমোহপীত্যর্থঃ। অত্রাচীতিগ্রহণং পরোক্ষাচ্সামান্ত-প্রাপ্তার্থং। ৩০৪॥ দয়তেঃ স্যাদ্দিগীঃ। দিগ্যে দিগ্যাতে দিগ্যিরেযথা। ৩০৫॥ বয়তের্বিব্যয়। বিব্যয়তুঃ বিব্যয়ুঃ। ৩০৬॥

কিতিপক্ষেইযোলু ক্চ। বিব্যতঃ। সম্বির্যুরম্ববিকাশিচমূসমুত্থং। বিব্য-য়েবিব্যে। ৩০৭॥

শ্রতেন্তঃ শিশিশুশ্। শিশায় শিশিয়তুঃ শুশাব শুশুবতুঃ। ৩০৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা 1

দয়। দেও রক্ষণে তস্ত দিগীঃস্থাৎ। ৩০৫॥

গৃতপুকাশিকা ৷

দয়তেরিতি। দেঙ্ ভুবাদিঃ। দিগ্যেইত্যাদি। অনেকাচস্ত্রসংযোগেতি যত্বং। যথেত্যন্তং ছন্দঃ। ৩০৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ব্যয়। ব্যেঞ্সম্বরণে ব্যয়্গতোএতয়োর্কিব্যয়াদেশস্ততোবৃদ্ধ্যাদি। ৩০৬॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

ব্য়তেরিতি। ব্য়তেরিতি সামান্তেনাভিধানাৎ ব্যেঞ্ব্যয় উভয়োগ্রহণম্ এতৌভুউ। বিব্যয়েত্যকারঃ সিলোপশ্চ ছন্দোহর্থঃ। বিব্যায়েত্যত্র অটিরুদ্ধিঃ। ৩০৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কিতি। কনুবন্ধলিটি বিব্যয়াদেশস্ত অকার যকারয়োঃ পক্ষেলোপশ্চস্থাৎ। বিব্যন্ত্রিতি। অয়লোপেপরগমনং। ভাস্বৎকরব্যতিকরোল্লসিতাম্বরান্তাঃ সাপত্রপাইব মহাজনদর্শনেন। সংবিব্যুরম্বর বিকাশিচমূসস্তর্থং পৃথীরজঃ করভক্ঠকড়ারমাশাঃ। ইতিমাঘঃ। ৩০৭॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

কিতীতি। চকারগ্রহণং পরত্রপক্ষেইত্যস্তানুর্তিবারণ।র্থং। সংবিব্যুরিতি। চমূসমুখং সেনা-ভিরুথিতং রজোধূলীং সংবিব্যুরার্তবন্ত্যঃ কাদৃশমম্বর্রিকাশি আকাশেবিকশনশীলমিত্যর্থঃ। ধ্বজিনী বাহিনী সেনাপৃত নাহনীকিনী চমূরিতি অম্বরং ব্যোম্বিবাসমীতিচামরঃ। বিব্যুত্রিত্যস্তং ছলঃ। ৩০৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্বয়। টুওশ্বিগতির্দ্যোঃ অস্থাশিশিশুশুআদেশোভবতঃ। শিশীতি সম্পতায়াতং শুশুর্বেজুক্তে-২পিস্বতঃ শিশিসিদ্ধেঃ। ৩০৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শ্বয়তেরিতি। শ্বিধাতুঃ ভূপ। শিষিশুশূইতি প্রথমাদ্বিচনান্তং। যদ্যপিশুশুর্কেত্পপ পক্ষেশ্বিদ্বিভাবে অনাদিহল্লোপেশিশ্বীতিসিদ্ধিঃ স্থাতথাপিবাগ্রহণেপরত্রতদনুর্ত্তিসম্ভবাৎ শিশ্বীতিচগৃ-হীতং। শিশ্বায়েত্যাদি। আদেশানন্তরমটির্দ্ধিঃ অতুসিইযুর্বো। ৩০৮॥ হ্বেঞাজু হঃ। জুহাবসঃ। জুহুবতুঃ। ৩০৯॥ দীঙঃ স্বরেযুক্। দিদীয়ে। ৩১০॥

জকারোদিঃ স্বরেভূজঃ। বভূজ্জে বভূজ্জাতে। ৩১১॥

অভ্যাদেএছিবচ্যাদের্লি টিস্যাৎ সম্প্রদারণং। ধাতোর্য্যত্রসম্প্রদারণং নাস্তিতত্রায়ং বিধিঃ। উবাশ উশতুঃ ব্যধ্বিব্যাধ বিবিধতু বিবিধুঃ বিব্যধতুঃ বিব্যধুরিত্যাদি ব্যধেরিহবিকপেমাহঃ। জ্যাজিজ্যৌ জিজ্যতুঃ জিজ্যঃ। বচ্যাদেঃ
উবাচ উচতুঃ উচুঃ উবিচিথ উবক্থ স্বস্থাপদোঃ সদ্যৈব্যত্বঃ স্ব্যুপতুঃ যজ্ ইয়াজ
ঈজতু বস্ উবাদ উষষতঃ উষুঃ উবিদিথ উবস্থ বহু উবাহ উহতুঃ উহুঃ উবাহিথ
উবোঢ়। ৩১২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হ্বেঞা। জুহুবতুরিতি উবাদেশঃ। ৩০৯॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

স্থেঞ্ইতি। স্বেঞ্স্পর্দ্ধান্তানয়েঃ তুউ। এতে২পি কৃতদ্বির্দ্ধচনানিপাত্যন্তেইতি পুর্ব্ধেশেনাম্বয়ঃ। কিস্তুপরোক্ষামাত্রেইতিবিশেষঃ। জুহুথুরিত্যাদোদীর্ঘপাঠফলং। জুহাবসইত্যন্তং ছন্দঃ। ৩০৯॥

গূড়প্রকাশিকা।

দীঙ্ইতি। দীঙ্ক্ষয়েদিবাদিঃ। পরোক্ষাস্বরেপরেদীঙ্কঃ পরোযুগাগমঃ স্থাদিত্যর্থঃ। দিদীয়েইতি এবিভক্তোরপং। এতৎসূত্রাভাবেইযাদেশে দিদিয়েইতিস্থাৎ। ৩১০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জকা। ভূজ্ ধাতোর্জকারোদ্বিভূ তিঃ স্থাৎস্বরেলিটিপরতঃ। বভূজ্জেইতি। ভূজীভর্জনেরুচাদিঃ। এবিভক্তৌজকারস্থান্তিরে পরগামিত্বে পরস্বরেণসম্বরহুম্ এবমন্যত্ত। ৩১১॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

জকারইতি। স্বরেপরোক্ষাস্বরেভূজোজকারোদ্বিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। সেভূজোজস্তকত্বে বভূক্ষে-ইত্যাদিরূপাণি। ৩১১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অভ্যা। এহাদেএ হিজ্যেত্যাদেঃ বচ্যাদের্ব্বচিম্বপিত্যাদেশ্চগণদ্বয়স্থ্যাভ্যাদেসম্প্রসারণং স্থাৎ। উবচিথেতি। অনুপান্তব্যঞ্জনাদ্যাইত্যাদিনাবাহনিট্রং। সোঃ সম্প্রৈবেতি। স্থবিনির্ভ্যঃ স্থপীত্যনেনে-ত্যর্থঃ। উবোঢ়েতি ! অনিট্পক্ষেহোঢ়ঃ ঘৃচ্ধভেতিথস্তধঃ পরগমনেচটবর্গাবিতি ধস্তাচ্ছেসন্ধিঃ আওঢ়ে স্থাংসহিবহোরিত্যাকারস্থওকারঃ। ৩১২॥

নব্রশ্চি ভজ্জিপ্রচ্ছীনাং। যথাতীব্রশ্চতুশুরূন্। বভ্রজ্জুঃ পপ্রচ্ছতুঃ পপ্রচ্ছুঃ। কেচিম্নগ্রোইনিত্যত্বাৎ সম্প্রসারণমাহঃ বভূজ্জতুঃ। ৩১৩॥ বেগ্রোবয়ির্বা। পরোক্ষায়াং পরতঃ। উবায়। ৩১৪॥ কিতিযোবত্বং বা। উয়তঃ উবতুঃ। উয়ুঃ। কিতিকিম্ উবয়িথ। ৩১৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

অভ্যাসইতি। গ্রহিবচ্যাদ্যোরিতিদ্বিব্দনাদ্ গ্রহিজ্যেতি সূত্রধৃতধাতুগণস্য বচিস্বপিতিসূত্রধৃতধাতুগণস্থ চাভ্যাদেসম্প্রসারণং স্যালিটিপরে। সম্প্রসারণবিধানাৎ কিতিস্যাদিতিসন্দেহবারণায়লিটিতিগৃহীতং। ধাতোরিতি। যত্রাট্থলোরিত্যর্থঃ যত্রতুসম্প্রসারণমস্তিত্রসম্প্রসারণানন্তরং দ্বিভাবেতত্তৎপদসিদ্ধিঃ স্থাদিতিভাবঃ। উবাশেত্যাদি। বশ্কান্তোব্যধৃতাড়নে। আদিনাবিবিধপুঃ অন্তমতে বিব্যধতুরিত্যাদি। আহুরিতি। বিকল্পসম্প্রসারণস্বত্ত্বং নাস্তীত্যস্বরসঃ। জ্যেত্যাদি। জ্যাবয়োহানোক্রঞ্ব্যক্তায়াং বাচি ক্রবচ্ বচ্ পরিভাবণে উভবচোক্রবাচেত্যাদিপ্রয়োগাঃ। ক্রিস্বপ্শয়েক্রস্থাপেতি। স্থবিনিত্রভ্যঃ স্থপিস্তিসমাইত্যনেনকৃতসম্প্রসারণদ্যৈব মন্ত্রিধানান্ধাত্রযন্থং। সোরিতি। স্থমাত্রান্ধতুকেবলস্পদর্গাদিত্যর্থঃ। যজ্দেবপুলাসন্থতকরণদানেরু বস্নিবাদেবহ্প্রাপণে। ৩১২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নব। ব্রশ্চাদীনাং সম্প্রদারণং নস্যাদিত্যর্থঃ। সম্প্রদারণমাহুরিতিধাতোরিত্যর্থঃ। ৩১৩॥

গুঢপ্রকাশিকা।

নেতি। ওবশ্চ্চেদনে ক্রজ্জ্পাকেপ্রছক্তীপ্সায়াং চুগাগমঃ। তর্ত্তনিত্যন্তং ছন্দন্তেনব্যতি ক্রমোদাহরণং নত্তং। কেচিদিতি। প্রায়শঃ সর্বাসম্মতইত্যসরসঃ। ৩১৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বেঞো। বয়িরিতীকারউচ্চারণার্থঃ। উবায়েতি। বেঞ্তস্তুসন্তানেবয়াদেশেহভ্যাসেসম্প্র-সারণং। ৩১৪॥

গুতপ্রকাশিকা।

বেঞ্ইতি। উবায়েতি। বয়াদেশপক্ষে তদাদেশনাগ্যান্নবেঞ্ উরিত্যগ্রিমসূত্রসরসাচ্চাভ্যাদেউঃ ধাতৌর্দ্ধিঃ। ৩১৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কিতি। কিৎপরোক্ষায়াং ব্যাদেশেয়ঃ স্থানেবাবত্বং স্যাদিত্যর্থঃ। ঊয়তুরিত্যাদি। অভ্যাদে-ধাতোচসম্প্রসারণম্। ৩১৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কিতীতি। পুনর্বাগ্রহণং পরত্রামুর্তিবারণার্থং। পক্ষেউবুরিতি। উবতুরিত্যন্তং ছন্দঃ। ৩১৫॥

নবেঞ্টঃ। যথাবস্ত্রং সম্ববৌববকুঃ ববুঃ। ৩১৬॥

অয়াসদয় কাসিভ্যোইনেকাচঃ প্রত্যয়ান্ততঃ। গুরুনাম্যাদিধাতোশ্চ আম্-স্যাদৃচ্ছূৰ্বৰ্জিতাং। অয়াঞ্জে আসাঞ্জে। অধ্যাসামাস্কত্তু স্কৃহৈমপাঠানি যান্যমীইতিমাহঃ। দয়াঞ্চক্রেনরাক্ষসঃ। কাদশব্দকুৎসায়াৎ দীপ্তেচি দন্ত্যসান্তঃ। কাসাঞ্চক্রেজরাতুরঃ। কাসাঞ্চক্রেপুরীসৌধৈরিতিভট্টিঃ। কাশৃদীপ্তৌতাল-ব্যান্তঃ সূত্রেভদ্যাগ্রহণাণ। স্ফুরংপ্রভামগুলয়াচকাশে। রত্নস্তম্ভেষুসংক্রান্ত-প্রতিখান্তেচকাশিরেইত্যাদাবাম্নাস্তি। অনেকস্বরাৎ চকাদাঞ্চকারদরিদ্রাস্থত্ব। দরি দ্রাতের্নভবত্যপীত্যাহঃ তেনদদরিদ্রো। চুলুম্পিরয়ং প্রাগল্ভ্যার্থেগণানিদ্ধি-ষ্টোইপিধাতুঃ ক্রিয়াভাবকত্বাৎ চুলুম্পাঞ্চ কারঅশ্বাঞ্চকার অশ্বাঞ্চক্রতঃ প্রগল্-ভাঞ্চকার বোভবামাসইত্যাদি। প্রত্যয়ান্তাৎ চিকীর্যাঞ্চকো। সন্ত্রাসয়াঞ্চকারারিং। পুত্রকাম্যামভূবসঃ ভূয়ন্তং বেভদাঞ্চকে গাং গোপায়ামভূবসঃ কংপ্রজা-পতিমাচখ্যাবিত্রীনিক্ষচিদাপকোইনিত্যত্ত্বাৎ কয়াশ্বভূবস্বনিবচচারেতি লুপ্ত-যিওন্তস্য স্বাঞ্চলারেত্যাদাবেকস্বরাদপ্যামার্থং প্রত্যয় এহণং। ঈক্ষাঞ্কে ইস্কাঞ্জে গ্ৰেপ্ৰাঞ্জে ইস্কায়ভূব উজ্বামাস এবম্ উর্ উন্দ্ এজ্ তথ্ ওণ্ প্রভৃতেঃ। গুরিতিকিম্ ঈষতৃঃ পরনিরপক্ষগুরুতাহণাৎ ঈয়েষ। ঋচ্ছু-ণু বিৰ্ক্তি তাৎ কিম্ আনচ্ছ প্ৰোৰ্ণাব প্ৰোৰ্ণুবৰ্ঃ। ৩১৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নবেঞা উঃ সম্প্রাসারণমিত্যর্থঃ। সম্বাবিতি। আত্বে অটউকারঃ অভ্যাসেসম্প্রাসারণাভাবঃ। ববজুরিত্যাদৌত্তয়ত্রসম্প্রাসারণাভাবঃ। ৩১৬॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

নবেঞ্টরিতি। বেঞঃ অভ্যাদেধাতোচনতঃ নদম্প্রদারণমিত্যর্থঃ। বেঞ্ইতিগ্রহণাদ্বযাদেশেতঃ স্যাদিতিজ্ঞাপিতং। বরুরিত্যন্ত ছন্দঃ। ৩১৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অয়। অয়বয়েত্যাদি দওকোপাতুং আদ্ দয়্ দানগত্যাদে কাদ্ এভাঃ পরোক্ষায়ামাম্ ভবতি অনেকেহচঃ স্বরায়েবার্রাভুনাং তেহনেকাচোধাতবঃ এভাঃ প্রত্যায়েবাদিরস্তোযেয়াম্ এভা ত গুরুশ্চামে নামাচেতি গুরুন্মান এবাদির্যান্তান্ত প্রাক্তামনিট্। প্রত্যায়ন্ত ইতিপঞ্চান্তান্ত শুছু গত্যাদে

উর্ণু আভ্যাং বর্জিতান্তিয়াৎ এতেগিগুরুনাম্যাদীহিত্বেত্যর্থঃ সংযোগপুর্বাবাদ্গুরুত্বমনয়োঃ। ক্রইতি। আমৃ কুঞঃ প্রয়োগআমস্তাদিতিকুঞঃ প্রয়োগঃ রুচাদিরয়ং। এবং পলায়াঞ্জেকপিলিকাদি-ছাৎরোলঃ। আদাঞ্চক্রইতি। কর্তাল্মনেপদী অতোনানয়োরস্ভুবোঃ প্রয়োগঃ। অধ্যাদামাস্থরিতি। অধেঃ পরেনামিত্যাধারঃ কর্মতেন সকর্মকঃ। অধিপূর্স্বাসঃ পরস্মৈপদঞ্চ কর্ত্তাত্মনেপদস্ত পরস্মৈপদঞ্চাতি-দিশ্যতে যথাঈক্ষামাসঈক্ষাম্বভূবইত্যাদি। ইহাঞ্চকারাকুলভাবমগুইতিব্যোদঃ। তৈরহেকেশরিক্রান্ত-ত্রিকূটশিখরোপমেতিপরার্দ্ধং। দীপ্তার্থমাহকাসাঞ্চক্রেপুরাতি। এবং কাসাঞ্চক্রেকপীশ্বরঃ। চকাশইতি লিটএরপং। তয়াত্হিত্রাস্থতরাং সবিত্রীক্ষুরং প্রভামগুলয়াচকাশে। বিদূরভূমিয় বমেঘশকাত্তিয়য়া রত্বশলাকয়েবইতি কুমারদম্ভবে। রত্নন্তম্বেধিতি। একাকিনোহপিপরিতঃ পৌরুষেয়র্তাইবেতিপরার্দ্ধং। চকাশিরইতি। কাশ্ইরেদ্বিভাবাদি। চুলুম্পিবয়মিতি। গর্দ্ধনার্থ-চুলুম্পেরিতিকশ্চিৎ। প্রগল্ভাঞ্চ-কারেত্যাদিত্রয়াণাং লুপ্তপ্রত্যয়ানাং প্রত্যয়ান্তবেনাম্বিধানেহিপ অলুপ্তপ্রত্যয়তোভিয়বেন পৃথগুদাহরণং প্রগল্ভাঞ্কারেতি। একস্বরপ্রতায়ান্তগ্রহণমপ্যেতদর্থমিতি প্রদর্শনায়চ তেনস্বাঞ্কারইত্যাদিবক্ষ্যতে। গল্ভআধার্য্যে গল্ভক্লীবেতিঙ্গি বেঃ কেবলস্থেতি বেলুপ্ পপ্রগল্ভইতিচ। অশ্বাঞ্চকারেতি। অশ্বইবাচ-রতীতি যিঙ্ যিন্ যিঙোর্কোতি যিঙ্লুক্। বোভবামার্দেতি। ভূক্রিয়াসমভিহারেয়ঙ্ছিরা।দঃ য়ঙ্লুঝেতি য়ঙ্ লুগন্তাদাম্গুণঃ আদিনাগজাঞ্চকার ক্লীবাঞ্চকারেত্যাদি। প্রত্যয়ান্তাদ্লুপ্তপ্রত্যয়ান্তাৎ কুঞঃ সমন্তাদামাদিঃ। দল্লাদ্যামিতি। দম্পূর্দ অদইন্র্দ্ধিঃ। পু্ত্রকাম্যামিতি। পুত্রমিচ্ছত্যালনইতিবালছ;য়ামিতিকাম্যঃ বেভিদাঞ্জইতি। যঙ্ভাদান্ অচি যঙ্ লুগভূরিশইতি যঙোলোপঃ যদ্মিনাতোর্যান্তাশেইতি গুণ নিমেধঃ। বেবিদাঞ্জুইতি কচিৎপাঠোখনিবিত্যাত্পেক্ষিতঃ। গোপায়ামভূবতুরিতি। গুপুগ্লিছীত্যায্ ততআম্ভূপ্রয়োগো। আপকোহনিত্যখাদিতি। অদন্তাচ্চেতি নাম্মএকস্বরাদাপক্ প্রাপ্তে তস্তা-নিত্যত্বাদিত্যর্থঃ। প্রত্যয়গ্রহণমিতি। চিকীর্ঘাদানামনেকস্বরত্বেনোপপভৌতদর্থং তদ্গ্রহণক্ষলমিত্যর্থঃ। ঈক্ষাঞ্চক্রইত্যাদি। সংযোগপূর্বত্বেন নামীগুরুঃ। ইন্ধোণা ইন্ধাঞ্চক্রেসমীধেইতিসারঃ। উপস্গাদিন্ধঃ সমিদ্ধাঞ্জে কচিদিন্ধিরুপদর্গেণনাম্ প্রত্যয়ান্তইত্যুক্তং সমীধেদর্কদেবান্ দইভিভট্টঃ। বাসমিদ্ধেইতি শন্তঃ প্রেমাঞ্চকে প্রেধেইতি। প্রোঞ্চাঞ্জকারেতি। উছি উন্চে প্রপূর্বঃ তত্মাদাম্। এবমিতি। উব্বীহিংসায়াং ওগৃদণ্ডকঃ শোষণালমর্থয়োঃ উব্বীঞ্চকার উন্দামাদ এজাম্বভূব ওণামাদ ওথাম্বভূবইতি। এবং শোণবর্ণসত্যোঃ শোণতি শোণাঞ্চকার শোণ্দংঘাতে শোণতি শ্রোণামাদ পৈণুগতি প্রেরণাশ্লেষণেচ পৈণতি পৈণাম্বস্থুবৈত্যাদি। ঈণ্ডুরিয়েণেত্যত্রসন্ধোগুণেচ কৃত্যেক্তনাম্যাদিস্বাদাম্ প্রাপ্তো তল্লিরাসায়াহ গুর্বিরতি কিমিতি। ঈণ্ডুরিত্যাদি। লিটি অহুদিদিঃ। প্রনিরপেক্ষতি। বিভক্তিনিরপেক্ষগুরু গ্রহণাদিত্যর্থঃ। ইয়েষেতি। অটিবি গুণঃ অভ্যাদেহঅম্বরইতি যাগমঃ তথাসতি গুরুনাম্যাদিঃ প্র-সাপেক্ষঃ বিভক্তিসাপেক্ষইত্যর্থঃ অত্যথাচুগাগমেন গুরুত্বেকুত আম্প্রদঙ্গঃ অতউদাহত্ত্য্ প্রোঞ্চাঞ্চারেতি ইদসুবন্ধত্বান্নাগমেদতি তৎপূর্বানামিনোবিভক্তি নিরপেক্ষগুরুত্বমৃ উবোষপদক্ষৈবং। লাক্ষণিকত্বাদেব ন স্থাদিতিকথং নোক্তম্ ঋছেঃ প্রতিষেধস্থ লাক্ষণিক পরিগ্রহার্থস্থাৎ। আনচ্ছেতি। ঋছ্ অট্ ঋদ্বিঃ ঋবর্ণস্থ অঃ অস্তাভ্যাসস্থানৃকার ইত্যান্গুণঃ। প্রেগ্নুণাবেতি প্রপূর্ব্ব ঊর্ণু অটিনবদ রসংযোগেত্যস্তাক্ষরং দ্বিঃ বৃদ্ধিঃ অতু্যিউব। ৩১৭ ।

উষজাগৃবিদানায়া। ওয়ামাসউবোষচ। জাগরাঞ্কার জজাগার বিদ-জানার্থোজাগৃসাহচর্যাৎ বিদেরেবামগুণঃ বিদায়ভূব। বিদান্ বিদামাসশনৈর্যাতং। বিবেদ। ৩১৮॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অয়াদেতি। অয়্গতৌ ভুআ আদ্ দত্তাবাদ উপবেশনস্থিতিযু অ আ দয়্গতি হিংদাদান রক্ষণদান দয়াস্থ ভুআ কাস্ত ভুআ। এতেভাঃ অনেকাচোধাতোঃ প্রত্যয়ান্ততঃ ঋছ্ উণুভিন্নাদ্গুরুনাম্যাদিধাতো চ পরঃ পরোক্ষায়াং পরত আম্ স্থাদিত্যর্থঃ। দয়াঞ্চক্রেইতি। হস্তং ক্রোধবশাদীহাঞ্চ্রাতেতো পরস্পরং। নবাপলায়াঞ্জেবির্দ্দয়াঞ্চক্রেন রাক্ষসইতি ভটিঃ। কুৎসিতশব্দার্থমাহ কাসাঞ্চক্রে জরাতুরইতি। জরা-তুরোবৃদ্ধঃ কাদাঞ্চক্রে কুৎসিতশব্দং কুতবানিত্যর্থঃ। দীপ্তার্থমাহ কাদাঞ্চক্রে পুরীতি। অধ্যাদিসিষ্-মাণেহথবিয়ন্মধ্যং নিশাকরে। কাদাঞ্চক্রে পুরীদোধৈরতীবোদ্ভাদিতৈঃ দিতৈরিতি ভটিঃ। অতীবোদ্ভা-দিভিরিতিচ পাঠোদৃশ্যতে। কাশৃভুদিআ। অবহুসম্মতমেবাহুরিতাস্বরস্বীজং। সন্ত্রাসয়ামিতি। সম্ভ্রাদয়াঞ্চকারারিং স্থরানু পিপ্রায়পশ্যতঃ। সত্যাজয়াঞ্চকারাথদীতাং বিংশতিবাহুনাইতি ভটিঃ। ভূয়স্ত-মিতি। অদীতোরাবণঃ কাদাঞ্চকে শদ্রৈরিরাকুলঃ। ভূয়ন্তং বেভিদাঞ্চক্রেনথতুতায়ুধঃ খগইতি ভটিঃ। অদীতঃ পরিত্যক্তদীতঃ অর্থাদাকাশস্থোরাবণঃ কাদাঞ্চক্তে কুৎদিতশব্দমভিহিতবানিত্যর্থঃ অন্তৎ স্পষ্টং। ঈক্ষাঞ্চক্রেইত্যাদি। ঈক্ষ্দন্দর্শনে ভুআ ঞি ইন্ধীদীপ্তো রুআ প্রপূর্ব্ব উছি উন্ছে সচ কণশ আদানং ভুবাদ্যন্তর্গত তুপ উদ্বাত্যাগে তুপ উব্বী ভুপ উন্দী উৎক্লেদনে রুপ, এজ্কম্পনে ভুপ দীপ্তার্থন্চেৎ ভুত্মা ওথ ভুপ ওণ অপনয়নে তুপ। পরনিরপেক্ষতি। বিভক্তিনিরপেক্ষঃ পরনিরপেক্ষঃ নতু পরমাত্রনিরপেক্ষঃ তথাসতি ঋছগতীন্দ্রিয়প্রলয়কাঠিন্সভাবেষু তুপ তস্তাবর্জনং ব্যর্থং স্থাৎ পরসাপেক্ষ চুগাগমেন গুরুত্বাৎ। তস্তবর্জনাদেববিভক্তিনিরপেক্ষগুরুনাম্যাদেরাম্ অতএব প্রোঞ্গঞ্জেইতাত্রাম্। প্রপৃক্তির্ণু আচ্ছাদনে অউ অটিনবদরসংযোগান্তরমেষামূর্জোযঙি চেতিউর্জোহন্তাক্ষরগুদ্বির্ভাবে ব্রদ্ধ্যাদি। প্রোণুর্কুরিত্য-ত্রাপ্তণেহতুসি উব্। ৩১৭॥

প্রভাপকাশিকা।

ঊষ। উষ্দাহে আমগুণঃ অস্প্রয়োগঃ। 'উবোষেতি। গুণেঅভ্যাদেহশুইতিবঃ। জ্বজাগা-রেতি। বিঃ জাগৃসহপঠিতোবিদিরদাদিরিভ্যাহ বিদির্জানার্থ ইতি। নতু দিবাদিরুধাদিতুদাদীনাং বিদাম্। ৩১৮॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

উদেতি। উষ্ভূপ উদেতিছন্দোহর্থমকারঃ জাগৃনিদ্রাক্ষয়ে অপ বিদজ্ঞানে অপ। বিদ্বানিতি। উপের্যোবর্থনিরন্তরাভিরদোনিরুচ্ছাসমনীকিনীভিঃ। রথস্থতস্থাম্পুরিদত্তচক্ষুরিতি পুর্বপাদত্তয়ং মাঘে। ৩১৮॥ ভীষ্ট্রাভৃঞ্ হভ্যসাম্ বাস্যাদামিশিৎ কার্য্যমিষ্যতে। দ্বির্চনমভ্যাসকার্য্য ভূঞইত্বঞ্চ। বিভয়াঞ্চকার বিভায় জি ভ্রয়ামান জিন্তায় বিভরাঞ্চ ক্রেবস্থররাং কমঠঃ বভারজুহবামভূবেত্যাদয়ঃ জুহাব। ৩১৯॥

কুঞঃ প্রয়োগ স্বামস্তাদস্ভুবোঃ কর্দ্র নাজুনে। আমস্তাদবিশেষেণৈবক্তঞঃ প্রয়োগোভবতি অস্ভুবোস্ত কর্ত্তবিহিতাজ্বনেপদং বিহায়ভাববিহিতাজ্বনেপদে পরশ্বৈপদেচার প্রয়োগইতি তথৈবোদাহ্বতং ভাবকর্মণোস্ত । কাদামাদেবৈজয়-স্তাভিকতিঃ। নিরস্তরালেইপি বিমৃচ্যমানেদূরং পথিপ্রাণভৃতাঙ্গণেন। তেজো-মহদ্রিস্তমসেব দীপৈর্দ্রি পৈরসন্বাধ হয়ান্বভূবে। নরেক্রেরোপেন্দ্রং বপুর্থবিশ-দ্বাম বীক্ষান্বভূবে। তস্যাতপত্রং বিভরাস্তভূবে। ইতিমান্বপ্রোগাঃ। নঞ্যান্বদ্প্রতিষ্ধাৎ ক্রিয়াবিনিময়েসর্বত্রকর্ত্রাজ্বনেপদেইপ্যস্ভুবোঃ প্রয়োগঃ তেনব্যতিহামাদেবরঃ কন্যামিতি । অত্রসাক্ষাৎক্রিয়ান্বরিকারকক্রিয়াবিশেষণোপদর্গ ব্যবধানেইপ্যামঃ কুঞাদিক মনুপ্রযুক্ততে শিক্ষাঃ যথা। প্রভং সয়াং যোনভ্ষং বভূব। তম্পাত্রাং প্রথমমাসপপাতপশ্চাদিতিরঘুকাব্যে। আমন্তপ্রতিরূপকনব্যামিতি কেচিং। তথাপাঠয়াং প্রচকার। উক্ষাম্পুচক্রের্নগ্রস্যমার্গানিতি প্রয়োগোদৃশ্যতইতিহুর্গঃ। ভূগ্রহণাদস্তের্নভূভাবঃ। ৩২০॥

প্রভাপ্রকাশিক। ।

ভীহ্রী। দ্বির্বাচনমিত্যাদি। দ্বির্বাচনমভ্যাসকার্য্যং ভ্ঞইত্বঞ্চশিৎকার্য্যমিত্যর্থঃ। বিভয়াঞ্চ-কারেতি। ভীআম্দ্রিঃ হুস্বঃ তৃতীয়চতুর্থঃ ধাতৌগুণঃ কুপ্রয়োগঃ। বিভায়েতি। বৃদ্ধিঃ। জিহ্রয়াঞ্চকারেতি। হ্রীদ্বিঃ অনাদিহল্লোপঃ হ্রস্বোহভ্যাসেহস্যজঃ গুণঃ পক্ষেনাম্। বিভরাঞ্চকারেতি। ভূআম্দ্রিঃ ঋত্যঃ ভস্তবঃ পৃভূমাঙ্হাঙকারইঃ। উষ্বিদ্ভূপ্রভৃতেশ্চাপ্রাপ্তোজাগুঃ প্রাপ্তোবাবিধিঃ। ৩১৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ভীতি। ক্রিভীভয়ে ব্রীলজ্জায়াং ভৃঞ্ধারয়পোষণদানেষু অউ ভীব্রীসাহচর্য্যদক্তিবগ্রহণং নতুভৃঞ্ভ-রণেইত্যস্তভ্বাত্মভয়পদিনঃ। হুদানেউভয়্রাম্ গ্রহণং ছন্দোর্থং। যদত্রবাগ্রহণং তদসুর্ত্তিবারণার্থম্। শিৎকার্য্যমাহদ্বির্বাচনমিতি। শিতিদ্বিঃ স্বাজ্জ্হোত্যাদেরিত্যনেনদ্বির্বাচনম্ অভ্যাসেরস্বঃ হোজঃ ঋবর্ণ-স্থাকারঃ অনাদিহল্লোপঃ চতুর্বস্তৃতীয়ইত্যভ্যাসকার্যাং। ভৃঞইত্বঞ্চেতি। পৃভ্যাঙ্হাঙকারইরিতি ভৃঞইত্বঞ্চেত্যর্থঃ। বহুদ্ধরাং পৃথিবীং কমঠঃ কুর্মঃ। আদিনাজুহ্বাঞ্চকারেত্যাদয়ঃ। ৩১৯॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

কুঞঃ। তবৈববিতি। পরস্মৈপদে অধ্যাসামাস্থরিত্যাদো। কাসামাসইতি। কাসআম্ভাববিহি-তাত্মনেপদত্মাদস্প্রয়োগঃ। দ্বিপৈরিত্যাদি। অয়্ধাতোরামস্তাৎ ভূপ্রয়োগাভাবে। নিরস্তরালেপি বিমৃচ্য- মানে দ্রাৎপথিপ্রাণভ্তাং গণেন। তেজামহন্তিস্তমদেবদীপৈদ্বিপৈরিতিশেষফ কিকা। বীক্ষাম্বভূবইতি। প্রিয়াভূফীং দিব্যৈঃ দপটহরবৈরন্বিতং পুস্পবর্ধর্মপুষ্টশেচ্যক্ষ ক্ষণম্বিগণৈস্ত্র্যমানং নিরীয়। প্রকাশেনাকাশেদিনকরকরান্ধি:ক্ষিপদ্বিত্যিশৈরিতিপূর্বপাদত্রয়ং। বিপ্রবৃহক্ষতেরাম্ভূপ্রয়োগঃ। বিভরাম্বভূবইতিচভূপ্রয়োগঃ এতদ্বয়ং কর্মাণ। জগৎপবিত্রৈরপিতমপাদৈপ্রফুং জগৎপূজ্যমযুজ্যতার্কঃ। যতো রহৎপার্বণচন্দ্রচার্রুক্তক্ষাতপত্রমিতিশেষঃ। নঞীতি। কর্ত্রনাম্বাইতি নঞোহনিত্যম্বাদিত্যর্থঃ। ব্যতীহামাসইতি। বিঅতিপূর্বে ঈহ আম্ অসঃ প্রয়োগঃ। অত্রেতি। সাক্ষাৎক্রিয়াম্বয়িযৎকারকং ক্রিয়ায়া বিশেশণম্ উপদর্গশ্চতাত্র্যবধানেহপীত্যর্থঃ। ইনস্তাৎভ্রংশ্বাতোরাম্ যইতিনভ্রমিতিচকারকম্বামা র্কেণাদি প্রয়োগপ্রতিব্যবহিত্মিতি। পাত্রামিতি। ইনস্তঃ পতিঃ প্রথমং যথাস্বাত্তথাপাত্রান্মানেত্যর্থাৎ প্রথমমিতি ক্রিয়াবিশেষণং। আমন্তেত্যাদি। তথাচ ততোহমুপ্রয়োগোনান্তি কিন্তু স্বাতম্ব্রেগ বভূবেত্যাদিপ্রয়োগঃ। কশ্চিদিত্যস্বরমঃ তিঙন্তপ্রতিক্রপক্ষেবদৃষ্টং নামন্তপ্রতিক্রপক্ষিতি। তং পাত্রাং প্রথমমাদপ্রপাতপশ্চাদিত্যাদিরদাধুরিতিজূমরঃ। উপদর্গব্যবহিত্মুদাহরতি পাঠয়াঞ্চকারেত্যাদি। পাঠেরিনস্তাদাম্। উক্ষাং প্রচক্রুরিতি। উক্ষ্ সেচনেগুরুনাম্যাদিঃ। এবং সংযোজয়াম্বিধিবদাসমত্বের্কুরিতি। ভ্রহণাদিতি। অস্ ভূবোরিতি ভূগ্রহণাৎ অন্তের্ম্বাহির্যাহরিত্বং। বিভক্ত্যর্ধিনাক্রিয়াম্বায়ির্যমের নীলপ্টমান্যেত্যাদে নীলগুণাম্বিনীক্রিয়াপ্রম্পরয়াভবতি। ৩২০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কুঞইতি। কাদামাদইতি। কাফদীপ্তো ভুআ আম্ অদঃ প্রয়োগঃ পরোক্ষায়া এবিভক্তো অক্তীন্ যকারাদাদাবাট্। ভাবপ্রয়োগোহয়ং। তস্তাং রম্যাগারর্দোপরিফীদ্বায়োশ্মন্দান্দোলনা কম্পিতাভিঃ। সদর্ণাভিঃ সাদরং প্রেক্ষিতাভিরিতি পূর্ব্বপাদত্রয়ং। ব্যতীহামাসইতি। বিঅতিপূর্ব্ব ঈহ্চেফায়াম্ এপরে আমি অসঃ প্রয়োগঃ বরঃ স্ববিবাহার্থং কন্তাং চেফতইত্যর্থঃ বরপক্ষসন্বন্ধিনীং চেফাং স্বয়ং করোতীতি ক্রিয়াবিনিময়ঃ। অত্তেতি। আমইত্যকুকুা আমস্তাদিতিকথনং তাদৃশপ্রয়োগেহস্মাকং বীজং। প্রত্রং শয়ামিতি। ভ্রন্শু অবস্রংসনে দিপ। ভ্রন্তঙ্গমাত্তেণপদান্মঘোনঃ। তস্থাবিলম্বং পরিশুদ্ধিহেতোভূ মৌমুনেঃ স্থানপরিগ্রহোয়মিতিশেষপাদত্তয়ং। তম্পাতয়ামিতি। পত৯গতে ভুপ তম্মাদিনস্তাদাম্। তেনাভিঘাতরভদস্ম 'বিকৃষ্যপত্রীবন্যস্থানেত্রবিবরে মহিষ্ম্যযুক্তঃ। বিগ্রহমদোনিতলিপ্তমশ্রইতি পূর্ববপাদত্রয়ং। অস্তার্থঃ। তেন বীরেণান্তঃ পত্রীঅপরোবাণোই ভিঘাতায়-মারণায়রভদোবেগোযভা তভা বভাভা বনভবভা মহিষভা নেত্রবিবরেযুক্তঃ প্রযুক্তঃ তদ্ভিম্ববিগ্রহং তেন পত্রিণাভিন্নশরীরং অদোনিতলিপ্তং তং মহিষং প্রথমং পাতায়ামাদপশ্চাৎপপাতনেত্রবিবরান্নির্গত্য স্বয়ং ভূমোপপাতইতি। রভদোবেগহর্ষয়োরিতিবিশ্বঃ। আমন্তপ্রতিরূপকমিতি। আমন্ততুল্যমব্যয়মিত্যর্থঃ। কশ্চিদিত্যস্বরসোদ্ভাবনমেতদেব উক্তব্যবধানেধাতুমাত্রাদামঃপ্রয়োগাভাবাৎপাঠয়াম্প্রচকারগময়াংপ্রথমমাস ঈক্ষাং প্রবস্থবেত্যাদি দক্ষধাতুপ্রয়োগাদিদ্ধিরিতি। উক্ষামিতি। ধ্বজান্ ববন্ধুশুমুচুঃ থধুপান্। দিশশ্চ পুল্পৈ-চকরুর্বিচিত্রৈরর্থেয় রাজ্ঞা নিপুণানিমুক্তাইতিশেষপাদত্রয়ং ভট্টো। বিচিত্তৈর্মানাবিধৈঃ পুল্পৈদ্দিশ-শ্চকরুশ্ছাদিতবন্তঃ ক্বিক্ষেপে ইত্যস্তলিটউসিগুণেরূপং। ৩২৯॥

অধ্যক্ষেইপিকুত্র চিং। কর্তৃ প্রত্যক্ষেইপি! বিশ্বতোঁ। স্বপ্তোইং কিং বিললপ। চিত্রবিক্ষিপ্তোঁ। সাইপ্রকৃতাবস্থা। যথাবহুজগদ পুরস্তাত্তস্য মন্তাকিলাইং চকরচ বহুচাটুং প্রোচ্যোষিদ্দদ্যেতিমাঘঃ। ক্রোধাদ্যমন্তোক্তো চ। প্রোকাচ্ছদক্রচ্ছটাজিহ্বালেজুইবাস্বভূবিমক্ষারাজন্যসন্তামপীতিমুরারিঃ। অত্যন্তাপহ্নবেইপিচ। যথাকিং কলিঙ্গেন্থিতোইনিনাইং কলিঙ্গেলগাম নিরপ্রাধান্তাক্ষণঃ কথং অ্যাপক্তঃ নাসৌম্যা দদৃশেইপীত্যাদ্যুইনীয়ম্। *॥ ইত্যাধ্যাতেলিট্ প্রকরণং চতুর্থোবিন্যানঃ। *॥ *॥ ৩২১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অধ্য। অধ্যক্ষং প্রত্যক্ষং পূর্ব্বমধ্যকেলিট্ প্রতিষেধাৎ প্রতিপ্রদবঃ। অধ্যক্ষেহপি লিড্ বিভক্তিঃ বিশ্বতোকুত্রচিৎ ন দর্বত্র বিশ্বতাবর্থেস্থাদিত্যর্থঃ। স্থপ্তোহ্ছমিতি। কিমহং বিললাপেতি অট্যুত্তমেরূপং স্বাপকালীনবিলাপোবিশ্বত ইত্যর্থঃ। বহুজগদেতি। তস্তপুরস্তাৎম তাহং কিলনিশ্চিতং বহুজগদ উত্তমৈকবচনেরপং পক্ষেনর্দ্ধিঃ অস্থবহুচাটুং চকরচ প্রোঢ়যোধিদ্বং প্রোঢ়যোধিদিব। বিদিতমিতি স্থীভ্যোরাত্রিবৃত্তং বিচিন্ত্যব্যপগতমদয়াব্রীত্রীড়িতং মুগ্ধবধ্বেতি পরার্দ্ধং। অত্রত্রিলোচনঃ স্থপ্তোহ্তং কিং বিললাপেত্যাদো অহং সমাধ্যায়াঃ ক্রিয়ায়াঃ প্রত্যক্ষত্বাৎ কথমুচ্যতে চিত্তবিক্ষেপাৎসাহিক্রিয়াস্বয়ং কৃতাহপিবিক্ষিপ্তচিত্তত্বাৎ কর্ত্রাত্মনে উপলক্ষিতাকেবলং ফলেনানুমীয়তে ইতিপরোক্ষতেত্যদোষঃ। নিদ্রামধুপানাদিনাহপ্রকৃতিস্থচিত্তঃ স্বয়ং ক্রিয়মাণমপি কর্মেদমহং করোমীতি নপ্রত্যেতি তেন স্বয়মপি কৃতমপ্রত্যক্ষমেব তৎকালেপ্রতীতমা বিক্ষিপ্তচিত্তত্বেন পটুপ্রত্যয়াভাবাৎ সংস্কারোহকুপন্নইতি নিদ্রামধু-মদাদিবিগমেকেনচিৎস্মার্য্যমাণো২পি নম্মরতীত্যপ্রত্যক্ষমেব। ক্রোধেতি। ক্রোধাত্রমতোক্রোচাপ্রকৃতা-জুহবাম্বভূবিমেতি। উত্তমপুরুষবহুবচনং ক্রোধবশাদ্বিক্ষিপ্তচিত্ততা। সহস্রনলকপ্রোদ্গাচ্ছদস্রচ্ছটাইতিপুর্বার্দ্ধি। অত্যান্তাপহ্নবে অত্যন্তমি থ্যোক্তো! নাহং কলিঙ্গে-জগামেতি। ন কেবলং কলিঙ্গবিষয়াবস্থানমপহ্নুতে অপিতু গমনস্ত দোষেণ যোগাৎ প্রত্যক্ষমপি কলিঙ্গ-গমনমপহ্নুতে ইত্যত্যন্তাপহ্লবেহপি পরোক্ষত্বং বিবক্ষিতং। তত্নুক্তং কৃতস্থাস্মরণে কর্ত্ত্রবাত্তাপহ্লবে-হপিচ। দর্শনাদেরভাবেহপিত্রিষু বিদ্যাৎপরোক্ষতামিতি। 'নিরপরাধইতি। অপকারমপ্রুবানোদর্শন-মপ্যপহ্নতেইত্যন্তাপহ্নবঃ। এবংব্যাতেনেকিরণাবলীমিতি চ্ক্রেম্ববন্ধুরিতিচিত্রবিক্ষেপেকর্ত্পত্যক্ষেহিপি ক্রোধাদীত্যাদিপদাদ্ধর্যাতিশয়েনাপ্রকৃতাবস্থবাল্লিট্। ইতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং রত্নমালাটীকায়ামাখ্যাতে **চ**ष्ट्रर्थिनियोमिविवर्त्त १ । # । # । ७२ > ॥

গুঢপ্রকাশিক। ।

অধ্যক্ষেৎপীতি। অক্ষোরধিবিষয়ইতি কারকার্থেইত্যব্যয়ীভাবঃ অব্যয়ীভাবেইক্ষঃ সমন্থ্পত্যধিভ্য-ইত্যৎ। অধ্যক্ষমক্ষিবিষয়ঃ প্রত্যক্ষমিতিযাবং। অধ্যক্ষেইত্যস্থাবিবরণং কর্তৃপ্রত্যক্ষইতি কুত্রচিদিত্যস্থ বিবরণং বিশ্বতাবিতি। কুত্রচিদিত্যস্থাপরং বিবরণমাহচিত্তবিক্ষিপ্তাবিতি। বহুজগদেতি। মধুপানা-দিনাহপ্রকৃতাবস্থায়াঃ কস্তাশ্চিন্নবোঢ়ায়ানায়িকায়াবচনমিদং। অপরঞ্চিবরণমাহক্রোধেতি। প্রোদ্যাচ্ছেতি। যশ্মিমর্জ্জুনদোঃ সহস্রনলকপ্রোদ্যাচ্ছদ স্রচ্ছটাজিহ্বালেজুহবাম্বভূবিমরুষারাজম্মসন্তামপি। অদ্যপ্রাক্কবলগ্রহস্তবিঘসীভূতেম্বপিক্ষত্রিয়ক্ষুদ্রেযুক্ষুধিতশ্চিরেণপরশুস্তেনায়মনিষ্যতে। পরশোরুষাক্রোধেনরাজন্যসন্তাং ক্ষত্রিয়জাতিমপি অপিনারাজ্ঞকজুহ্বাম্বভূবিমহ্বনং চকুমবয়মিতিশেষঃ কীদৃশে অর্জ্বনস্থ কার্ত্তবীর্য্যার্জ্জ্নস্থদোঃসহস্রনলকেভাঃ প্রোদ্যাচ্ছন্তীঅনবরতং বহির্মির্গচ্ছন্তীযাপ্রস্রচ্চটা-রুধিরধারা দৈবজিহ্বাদাহস্তাস্তীতি স্বাঙ্গাদন্তাতু লজ্বাস্তাদিতিলচিতাদৃশজিহ্বাবিশিষ্টে অদ্যপ্রাক্ষবলগ্রহস্ত প্রথমগ্রাসগ্রহণস্থ বিঘদীভূতেষুভোজনশেষেরু। অমৃতং বিঘদোযজ্ঞশেষভোজনশেষয়োরিত্যমরঃ। ক্ষজ্রিয় ক্ষুদ্রেষু চিরেণক্ষুধিতোহয়ং পরশুঃ তেন অন্বিষ্যতেমুগ্যতইতি। অপরঞ্চবিবরণমাহাত্যম্ভাপহ্নবেহপিচেতি। কিং কৃলিঙ্গেন্থিতোহদীতিকেনচিৎপৃষ্টো অঙ্গবঙ্গকলিঙ্গেয়ু দোৱাষ্ট্রমগধেষু চ। তীর্থযাত্রাং বিনাগচ্ছন্ পুনঃ সংস্কারমর্হতীতি স্মরণাৎআস্তাং তাবত্তত্তাবস্থানং গমনমপিদোষাবহমিত্যালোচ্যনাহং জগামেত্যত্যস্তাপহ্নবঃ ইত্যাদ্যহনীয়মিতি। ব্যাতেনেকিরণাবলীমুদয়নইতিচক্রেস্ববন্ধুঃ স্বজনৈকবন্ধুরিত্যাদোহর্ষেণ-চিত্তবিক্ষিপ্তাবপিপ্রত্যক্ষেপরোক্ষা। অধ্যক্ষেহ্পীত্যাদিইত্যস্তমার্য্যাছন্দস্তত্রাধ্যক্ষেহ্পি কুত্রচিদিতি প্রথমঃ চিত্রবিক্ষিপ্তোসা২প্রকৃতাবস্থেতিদ্বিতীয়ঃ ক্রোধাত্ম্যান্তোক্তাবিতিতৃতীয়ঃ চ অত্যস্তাপহ্লবে২পিচেতিচতুর্থঃ পাদঃ। *। ইতিশ্রীসিদ্ধনাথবিদ্যাবাগীশনির্মিতায়াং গুঢ়প্রকাশিকায়াং প্রয়োগরত্বমালাটীকায়ামাখ্যাতে **ह**जूर्थिविद्यामितिवज्ञ । # । # । ७२ > ॥

ভূতকালে২দ্যতন্মুক্তা। অদ্যপ্রভৃতিভূতকালমাত্রে২দ্যতনীবিভক্তিভবিত। ইয়মেবলুঙিভ্যুচ্যতে। ৩২২॥

মাগেছপরদারান্ মাকৃৰধনজনযৌবনগর্ষমিতি। তত্ত্রমাশব্দস্যোগো

মাগছপরদারান্ মাকৃৰধনজনযৌবনগর্ষমিতি। তত্ত্রমাশব্দস্যযোগা

মাগছপরদারান্ আকৃৰধনজনযৌবনগর্মিতি। তত্ত্রমাশব্দস্যযোগা

হয়ঞ্

মাগ্ছিত্তিক। প্রায়িকং লুঙ্বিধানমন্যবিধানং নবিৰুণদ্ধীত্তি। ইয়ঞ্

সীস্ত্তাং স্থস্সীস্তং তা সম্স্বা। তা সাতাং সত স্থাস্ সাথাম্

ধরম্ সি স্বহি স্মহি। তায়ংসকারঃ সিচ্ সংজ্ঞকঃ। ৩২০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভুত। অদ্যভবাঅদ্যতনীপূর্ব্ববত্তনট্। অদ্যতনীপদব্যৎপত্তিবলাদাছঅদ্যপ্রভৃতীতি। ৩২২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

স্তাবিতাম্ভোভবসম্ভবাদিভিঃ সদাভবাভাববতীভবার্ফিতা। ভবোদ্ভবাযাভবপালনায়মেভবচ্ছিদে-সাভবভাবিনাভবেৎ। ১॥

ভূতেতি। ভবতিশ্লেতিভূতঃ গত্যথাকর্মকেত্যাদিনাকর্ত্তরিক্তঃ ভূতশ্চাদোকালশ্চেতিতশ্মিন্। ইয়মেবেতি। অদ্যতন্তেবেত্যর্থঃ লুঙ্নুঙ্দংজ্ঞাউচ্যতে ব্যাকরণাচাথ্যৈরিতিশেষঃ। বর্ত্তমানাদিদশ-তিঙ্বিভক্তানাং ক্রমাৎলডাদিসংজ্ঞাঃ কৃতাঃ কস্থাশ্চিদত্রনিক্ষলত্বেহপি পাণিন্থাদিব্যাকরণান্তরান্তরোধাদিতি মন্তব্যং। ৩২২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

মানো। সার্ব্বকালিকী সর্ব্বকালভবাতেন মাশক্ষে । তেম কর্মণান ক্ষাণান ক্ষাণান ক্ষাণান তি । অপাত্রায় অন্যোগ্যায় দানং অবর্ণা দিমাদাং নদেহি দীয়তেই দং দানং কর্মণান ক্ষাণান ক্ষাণা ক্ষাং আছিল হৈ আনু ক্ষানা ক্যানা ক্ষানা ক্ষানা ক্ষানা ক্ষানা ক্ষানা ক্ষানা ক্ষানা ক্ষানা ক্ষা

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

মাযোইতি। দর্ফোচতেকালাশ্চেতিবিগ্রহানন্তরং তেয়ুভবাইতি বাক্যেইকণ্চেদং ভবার্থেম্বিতীকণি অনুশতিকাদ্বিত্বাত্বভারপদর্দ্ধি। মাদাদানমপাত্রায়দেহিপাত্রায়দর্শ্বদা। অপাত্রদত্তদানং হিভামসং পরিকীর্তিতং। এতচ্চামদানেতরশ্মিন্ তথাচত্রক্ষবৈবর্ত্তপুরাণেশ্রীকৃষ্ণজন্মথণ্ডেযট্দপ্তত্যাধ্যায়ে

র্দ্ধিঃ স্বরাপ্তস্যাজাগৃক্টাদেঃ সিচ্যনাত্মনে অকার্যিং। স্বরাদেশত্বাং রিদ্ধিণোবনবস্তো অকার্যাম্ অকার্যা অহার্যাই অহার্যাং অহার্যাম্ অস্মার্যাই অস্মার্যাম্ অবৈষীৎ অনুষ্ঠাম্ অবৈষীৎ অনুষ্ঠাম্ অবং চিঞ্ িঞ্ ধুঞ্ ছী ভূ ভী প্রভূতেঃ। অনাত্মনেকিম্ অচেফ অনেফ। অজাগৃকুটাদেঃ কিম্ অজাগরীং কুটাদিত্বাদগুণেউব্ ন্যধুবীং ন্যধুবিফাং। ২২৪॥

অন্ধদানাৎ পরং দানং নভূতং ন ভবিষ্যতি। নাত্রপাত্রপরীক্ষাস্তান্ধকালনিয়মঃ কচিদিতি। ইত্যাদীত্যাদিনা জ্রীরত্নমিনিং ভূঃ কুরুগাত্রেযুভূষণং। মাং প্রাপ্যহিকথং বাস্তাস্ত্রমনহাস্ত্রবিগ্রহেইত্যাদি। স্থান্দরকাণ্ডেন্টাতাং প্রতিরাবণবাকামিদং। মাগচ্ছেতি। মাগচ্ছপরদারান্ স্বদারেষুনিরতোভব। পরদারাগমেপাপং স্বদারাভিগমের্ষঃ। ইতি পদাং। অন্তইতিস্বমত্মপ্যতেৎ। তথাচপ্রায়িকার্থং সূত্রমিতিভাবঃ। ইয়মিতি। অদ্যতনীত্যর্থঃ। অয়মতি। অন্যত্নতাঃ সকারঃ সিচ্সজ্ঞকইত্যর্থঃ। অস্তফলম্ ইটঃ সিজ্লোপ সকারএবেত্যাদোজ্রেয়ং। ৩২৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

র্দ্ধিঃ। জাগৃক্টাদিভিন্নস্থ সরাস্তস্থাতোর্ব্দ্ধিরাত্মনেপদভিম্নেসিচিপরকৈপদিচিপরইত্যর্থঃ। অকার্যাদিতি। কৃষ্ণাগমঃ র্দ্ধিরার্দ্যং। স্বরাদেশসাদিতি। তেন ধুড্র্স্ততোধুটীতি নপ্রাক্সিচোলাপঃ এবমপরেষপি। এবমিতি। অচৈনীৎ অমৈনীৎ ধুঞ্কম্পনেস্বাদিঃ অধোরীৎ অহৈনীৎ অভৈনীৎ অতৈরীৎ অতৈরীৎ অতৈরীৎ অতিরামিত্যাদি। অজাগরীদিতি। জাগৃত্মনেকস্বর্ত্বাদিট্গুণঃ ইটঃসিজ্লোপেদীর্ঘঃ। তথ্পুনীদিতি। ধুবিধুননে। অধুবিফীমিতি। ঈকারাভাবান্নসিজ্লোপঃ। ৩২৪॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

র্দ্ধিরিতি। আকর্ষীদিতি। ভুক্তঞ্করণে। নৃত্ব অকার্যামিতাত্র ধুড্ ব্রস্বতাধূটীতানেন ধুড্ লোপপ্রাপ্তে কথং নস্তাদিত্যত আহ স্বরাদেশক্রাদিতি। তথাচ সর্ববিধিভ্যোলোপবিধির্বলবান্ স্বরাদেশ স্ততোবলীতিন্যায়াৎলোপাপেক্ষয়া স্বরাদেশস্তাবলবত্ত্বনাত্র স্বরাদেশক্রাৎর্দ্ধি গুণোবলবন্তে তেনাকার্যাদিত্যার নপ্রাক্তিয়ামাং লোপইত্যাশয়ঃ। এবমপরত্রাপি। অহার্যীদিত্যাদি। হুক্ হ্রণে ভূস্মচিন্তায়াং ভূপ নীক্পপ্রাপণে ভু জিজরে ভূপ চিক্র্রেন স্বাউ চিক্ত্ সঞ্চরে ভূউ ভুমিক্ত্ প্রক্ষেপণে স্বাউ ধুক্ত্মপনে স্বাউ যস্ত ধূক্ত্মপনে ভূসাক্রাট অন্তিত্য উদন্তত্বেন সেট্রাং অধবীৎ ব্রীলজ্জায়াং জুপপ্রভৃতিনাহ্ প্রভৃতীনাং গ্রহণং। অচেক্টেত্যাদি জিব্রান্ত্রপদং। অজাগরীদিত্যাদি জাগ্নিদ্রাক্ষয়ে অপ ধু ভূপ অস্ত কুটাদিবেন তন্মাদিটোহগুণতয়োব্। ৩২৪॥

ইটঃ নিজ্লোপঈকারএব। অযাবীং অরাবীৎ অনাবীং। ঈকারএবেতি নিয়মাং অলাবিষ্টাম্ অলাবিষুঃ অলাবীঃ অতারীং অতারিষ্টাং রঞ্ অবারীৎ। ৩২৫॥

ধুড্ইস্বতোধৃটি। সিজ্লোপঃ স্যাৎ। অক্ত অহত অহত অগত অদৃত অরত। ধৃটীতি কিম্ অক্ষাতাম্ অক্ষত অক্তং। ধুড্ইস্বাভ্যাংকিম্ অহেষ্ট ব্যজেষ্ট অতীষ্ট অন্তীৰ্ষাভাং বেট্ অতরিষ্ট অতরীষ্টবাদীর্ঘঃ অতরীষ্বাতাং ব্যবরিষ্ট ইটস্তবাধোতঃ অলবিদৃষ্ অলবিধ্বং। ৩২৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইটঃ। ইডাগমাংসিচোলোপঃ স্থাদীকারএব নাম্যস্মিন্। অ্যাবীত্যাদি। যুরুলুধাঙুভাইট বৃদ্ধিঃ ইটঃ সিজ্লোপঃ। অলাবিফামিত্যাদি। ঈকারনিমিত্তাভাবান্নসিজ্লোপঃ যত্বং। অলাবীরিতি অলাবীদিতিবৎবিদর্গোহধিকঃ। অতারীদিতি তৃধাতৌ। ৩২৫॥

গৃত্পকাশিকা।

ইটইতি। অ্যাবীত্যাদি। যুমিশ্রণামিশ্রণয়োঃ রুরাবে লুঞ্ ছেদনে অনেকাচঃ শ্বিশীঙ্ডিশ্রিক্ষযুরুক্ষুনুর্ঙ্র্ঞঃ। উদ্দন্তাশৈচত এবাজন্তাঃ সেটোহপরেহনিটইত্যনেন নিয়মাদিট্। অতারীদিতি।
তপ্লবনসন্তরণয়োঃ। অলাবীরিত্যাদিপ্রয়োগাঃ প্রদর্শনার্থমুক্তাইতিজ্ঞেয়ং। ৩২৫।

প্রভাপ্রকাশিকা।

ধুড্র। ধুড্ ব্রস্তঃ। অক্তেত্যাদি। কুঞ্ ঞিল্বাদাল্নেপদং। পরেহনিটইভীডভাবঃ। ঝাবর্ণনাম্যুপান্তানামনিডাশীর্ভি কিতাবিতিকিল্বাদগুণঃ ব্রস্তাৎ ধুটিসিজ্লোপঃ। অধ্তেত্যাদি। ধুঙ্ দৃঙোরপে। অস্তেতি। ক্রিয়াবিনিময়ে। অবতেতি। সংযোগাদি ঋদ্দন্তরভাইড্যাল্নেন তয়ারিত্যানেন ইডভাবপক্ষে গুর্ণান্যেঃ। অক্যাতামিত্যাদি। অনয়োঃ ধরস্তা পরত্বং। অক্ষুমিতি আশীঃ পরোক্ষেতি সূত্রে ব্যুৎপাদিতং। অব্রেকেত্যাদি। স্বরাদেশত্বাৎপ্রাক্তিণেহপি জিধাতোর্বলবল্বাৎ গুণেক্সভাবঃ পরন্বয়মুদাহরণমাত্রং। অস্তাক্তিতি। স্তুঞ্ংঅচ্ছাদনে পূর্ববিদিডভাবপক্ষেকিল্বাদিরাদেশ দীর্ঘেষ্টিছে। পক্ষে অস্তরিষ্ট অস্তরীষ্ট। বাদার্ঘইতি। ইড্দীর্ঘোবার্খাদন্তাদিত্যনেন। ইটস্তবাধোচ ইতি। আসাংধোচইটোবাস্তাদিত্যনেনেত্র্বাং। ৩২৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ধুডিতি। ধুটিপরেদতি ধুড্ ব্রস্বতঃ দিজ্লোপঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অক্তেত্যাদি। ডুক্ঞ্ করণে স্বঞ্হরণে ভৃঞ্ভরণে। ধুঙ্ অবস্থানে দৃঙ্ আদরে র্ঞ্বরণে ধুঙ দৃঙোভিত্তাদাজনেপদং। অত্যেষাং ক্রিত্বাক্তয়পদিত্বেনাত্মনেপদং র্থাতোরাশীলুভোকেউ্রাদন্যেযামনিট্রাদিডভাবে অনিডাশীলুভাঃ কিত্ত্বনগুণাভাবে ব্রস্বাৎধুটিদিজ্লোপঃ। অক্ষাতামিত্যাদিরয়েস্বরপরত্বেন

অনিটান্তহলন্তানাং বৃদ্ধিঃ স্যাৎ সিচ্যনাত্মনে। অপাক্ষীৎ অপাক্তাম্ অপাক্ষঃ। অনাত্মনেকিম্ অপক্ত অপকাতাম্ এবং তুদ্অতোৎদীৎ অতো তাম্ अयाकी अयाकार नाहर्यः अनारमी अनामाम् अनारमुः वह् अवाकीर অবোঢাম্ ভবস্তো অবাক্ষঃ যুবামবোঢ়ম্ আত্মনে অবোঢ় অবকাতাং সহ্ অস-हिरकेठा। कि हेरे कह अक्षाकी वजवजा थाक्तिक्रां लार्यना कि कुर्यज्ञ अने-শ্বাম্ অধাক্ষ্ণ বধ্ অভাৎদীৎ অবাদাম্ অভাৎস্থ বন্ধ্ অতোলঘুগ্ৰহণাদিছ-সংযোগপূর্বস্যাপিরদিঃ অভান্ত্রমীৎ অবান্ধাম্ অভান্ত্রুঃ রন্জ অরাঙ্কাং অরাজ্জান অরাঙ্ক্ষুঃ দন্জ অদাজ্জীং অদাজ্জাং ভাজ্ অভাক্ষীং অভাক্ষীং মজ্জ অমাজ্জীৎ অমাজ্জাৎ দন্শ অদাঙ্ক্ষীৎ ছশোঃষত্বম্ অদাৎষ্ঠাম্ অদাঙ্ক্ষুঃ প্রছ অপ্রাক্ষীৎ বস্ অবাৎসীৎ। দণ্ডকামধ্যবাস্তাৎ যৌবীররক্ষঃ প্রকাণ্ডকা-বিতিভটিঃ। অবাৎ সুঃ স্বপ্ অস্বাপ্সী ৎ আত্মনেতু মন্জ্ঞানে অমংস্ত অমংসা-তাম্ অর্জ্ত অর্জ্মাতাম্ অস্জ্ত অস্জ্মাতাম্ অস্ত অসুক্ষাতাম্ অবিত অবিৎসাতাং মুজু অমার্ক্ষীৎ অমার্ক্তাম্ ইটিগুণিনিপরে রদ্ধিঃ অমাজ্জীৎ অমা-ব্ৰুফীং। অনিটাং কিং বিদ্জ্ঞানে অবেদীৎ অবেদিষ্টাং কুষ্ অকোষীৎ। কুটাদের্লগুণঃ। উদকুটীৎ সমপুটীৎ করযুগ্মং। ৩২৭॥

ধ্টপরয়ভাবানসিজ্লোপঃ। অকুসুমিতি। আশীঃ পরোক্ষাদ্যতনিধোনোনায়ন্তধাতুতইত্যনেন ধকারস্ত চঃ। অফুটেইত্যত্র ইাধাতোদীর্ঘেকারান্ততয়া প্রথমং ততোগুণেকতেয়েইত্যুম্মাচ্চ সিজ্ লোপাপ্রসক্তিঃ। আদেকেত্যত্রপ্রথমং গিজ্লোপপ্রাপ্তাবিপি স্বরাদেশত্বাদ্বলবতয়াপ্রথমং গুণেকতে সিজ্লোপোনেত্যর্থঃ। অতীক্ষেত্যাদি। ঋদন্তসেরগুণেইতীরাদেশে অগুণেইলিরবুপান্তোনামীত্যাদিনা দীর্ঘঃ। অতাৎ সাধ্যং প্রভাপ্রকাশিকারামবগন্তব্যঃ। ৩২৬॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

অনি । অনান্ননিদিচিনিত্যং । অপাক্ষীদিতি । পচ্চান্তেপচিবচীত্যনেনানিট্ ধুট্যন্তেচচজোঃ কঃ স্থাৎ । অপাক্তামিতি । ধুড্বস্বতোধূটীতিসিজ্লোপঃ । অতোৎদীদিত্যাদি । তুদ্ অদিতুদীত্যাদিনাহনিট্রন্ধৌ অতৌৎসাৎ অতৌতামিত্যত্ত্রসিজ্লোপঃ । যজ্যুজিরুজিম্বজিভ্রজ্জিয়জিয়ইত্যনিট্
ভ্রজ্জাদিবাজ্জপ্রয়ং কঃ সেমবঃ । নহের্দ্ধইতি নহের্ধোঢ়াপবাধকইত্যনেন । বহ্অপিদহিদিহিনহিবহয়োহান্তইত্যনিট্হোঢ়ঃ যঢ়োঃ কঃ সেমবঃ । অবোঢামিতি । হোঢ়ঃ সিজ্লোপঃ ঘৃণ্ধভেতিধঃ চটবর্গাবিতি
ধস্তাব্বে গ্রুটেটলোপঃ আওটেস্থাৎ সহিবহাঃ । যুবামবোঢ্মিতি । তং বিভক্তিপুর্ক্বং ।

मरुट्मि शामिश्रामा पर्वा । বলবন্ত্রা-দিতি। অদাঝামিত্যাদৌর্দ্ধোহস্থাত্ত সর্ববিধিভ্যোলোপবিধির্বলবানিতিন্যায়াৎ ধৃড্বুস্বতোধূটীতি প্রাক্সলোপেনিমিত্তাভাবাৎ তৃতীয়াদ্যাইত্যাদিনানদস্তধত্বং। বধ্বধিরুধিরাধীত্যাদিনাহনিট্রুদ্ধোতুর্য্যা-র্দ্ধোসিজ্লোপেঅবাদ্ধাং। সেতুর্য্যাদ্যত্বেঅভাৎস্থঃ। অভাস্ত্,সীদিত্যাদি। কারস্তেত্যগ্রেল্যুগ্রহণাৎ বৃদ্ধোতুর্য্যাদ্যত্বং লিঙ্গবৎপ্রথমোধুটাং ঘটধভতইত্যাদিনাতশুধঃ বৃদ্ধিঃ পক্ষেব্যঞ্জনপরধুড্লোপঃ। অরাজ্ফীদিত্যাদি। রন্জতথারন্জিরিত্যাদিনাহনিট্ রুদ্ধৌজঃ কঃ অরাং ক্তাং অসাজ্ফীদিত্যাদি। সন্জ্অনিট্রুদ্ধোজস্তকঃ সলোপেঅসাঙক্তাং। রুদ্ধে সিজ্লোপঃ। দিত্যাদি। অঙ্জ অনিট্ধুডন্তয়োর্জ্জাদি জোলুক্অজ্জাদের্জস্তমঃ বৃদ্ধিঃ মঢ়োঃ কঃ বৃদ্ধোজলোপেজস্তমত্ত্ব সিজ্লোপেঅভাষ্টাং। অমাজ্জীদিত্যাদি। দন্শ অনিট্রুদ্ধৌধুট্যক্তেচছশোঃ ষত্বং ষঢ়োঃ কঃ সিজ্লোপে-শস্তবত্বেঅদাং ফাং। অপ্রাক্ষীদিত্যাদি। প্রছএকঃ প্রচ্ছিরিত্যনিট্ রূদ্ধোছস্তবত্বেকত্বং সিজ্লোপেছস্ত ষত্বেঅপ্রাফীং। অবাৎসীদিত্যাদি। বস্বসতিঘসোদোসাত্ত্বেইত্যনিট্রদ্ধিং অশিৎসকারেসস্তঃ স্থাৎরদ্ধৌ সিজ্লোপে অধ্যবাস্তাং বীরাণাং রক্ষসাং প্রকাণ্ডো শ্রেষ্ঠো। স্বপ্অস্বাপ্সীৎ। অমংস্তেতি। মন্ততি হস্তীনকারাস্তেইত্যনিট্দ্বেংপি আত্মনেপদিচিনর্দ্ধিঃ। অরঙক্তেতি। রন্জঅনিট্ধুড্হস্বতইতি সিজ্লোপাভাবেঅরজ্ফাতাং। অসঙক্তেতি। স্থন্জঅনিট্সলোপঃ। অভুক্তেতি। ভুজ্অনিট্সলোপঃ জস্তকঃ। অবিভেতি। বিদ্বিদ্যতিবিন্দতীত্যাদিনাহনিট্ সলোপঃ। অমাক্ষীদি। মৃজ্বাস্ সূয়তীত্যাদিনা বেট্রদ্ধোভ্রজ্জাদের্জশুষঃ ষঢ়োঃ কঃ সলোপেঅমার্ফাং। ইটীতি। মুজোগুণিনির্দ্ধিঃ স্থাদিতি ইতাগমের্দ্ধিঃ। অমাজ্জীদিত্যাদি। ইটঃ দিজ্লোপঈকারএব গুণিনিরদ্ধোঅমার্জিষ্টাং। অবেদীদিতি। বিদ্জানেহদাদিঃ সেটবিদ্যতিবিন্দতীত্যনেন দিবাদেঃ বিদসভায়ামিত্যাদেরেবানিট্যাৎ ইডাগমেগুণেসিজ্লোপঃ। অকোষী দিত্যাদি। কুষ্ বেট্ ইটিগুণেদিজ্ লোপঃ। কুটাদেরিতি। ইচ্ ইন্ অট্ ভিন্নপ্রতায়ানামগুণত্বাদিডাগমে হপিনগুণঃ। উদক্টীদিতি। কুট্ কোটিল্যেইটঃ দিজ্লোপঃ পুট্দংশ্লেষণেসমপুটীৎ। ৩২৭॥

शृष्यकाषिका।

অনিটামিতি। ননান্তিইট্ যেভ্যন্তেষাং। হল্অন্তোযেষামিতিবিগ্রহঃ। তুগ্রহণং বেটামপীডভাবপক্ষেবৃদ্ধার্থম্ অন্যথানিত্যানিটামেবস্থাৎ। অনাত্মনেইতিকথনং কদাচিমঞোহনিত্যতাসূচনার্থং তেন পরিমেইত্যুক্ত্যানিসিদ্ধিঃ। ইতিসম্প্রদায়ঃ। অতেৎিসীত্যাদি। তুদ্ব্যথনেতৃউ গহ্বদ্ধনেদিউ বহ্প্রাপণেভুউ ষহ্মর্যণেভুআএতৎ প্রয়োগপ্রদর্শনমাত্রং। দ্রভ্স্মীকরণে বধ্ বন্ধনিচিত্রিকারয়োঃ ভুউ বন্ধ্ বন্ধনেক্র্যাপ রন্জরাগেভুদিউ ষন্জসক্ষে ভূপ টুলাজ্দিপ্তোভুউ টুমজ্লোভদ্ধোভূপ দন্শ দংশনেভূপ প্রচ্জ্ঞীপায়াং বস্নিবাসে। দণ্ডকামিতি। নৃত্যাং সজ্যোহকুষাতাং তোসভ্ত্যো ভূমিবর্দ্ধনাবিতিপরার্দ্ধং। ভূমিবর্দ্ধনোশবৌত্মকুষাতাং কৃতাবিত্যর্থঃ। শবস্তম্ভানবর্দ্ধনইতিত্রিকাগুশেষঃ। ঞিষপ্ শ্রেষপ্র মন্ দিআ মন্জ পরিষক্ষে ভূআ ভুজী কোটিল্যেভুপ ভুজীপালনাভ্যবহারয়োঃ রূপ উভয়োঃ অভুক্তেত্যাদিপ্রয়োগঃ বিদ্কলাভেত্দাদ্যন্তর্গতমুচাদিক্রভয়পদী। বিদ্সত্তায়াং বিদ্বিচারণে দিবাদিক্রধাদ্যোরনিট্ত্মেহপিনগ্রহণং তয়োরাত্মনেপদিত্বাৎ। মৃজুশুদ্ধৌ অপ কৃষ্নিকর্ষেক্র্যাপ কৃট্ ভূপ্ পুট্ ভুপ্। সর্বত্রধান্বাদাবট্ অন্তৎসাধ্যং প্রভাপ্রকাশিকার্যামবগন্তব্যং। ৩২৭॥

লখোরকারক্ষ তথালাম্ভরেফান্তবদ্বজাং। তথাপরকৈমপদেসিচির্দ্ধিঃ। অমালীংঅফালীং অবাদীং অব্যজং। লখোঃ কিম্ অমল্লীং অল্বল্গতৌ অবল্রীং। অকারস্যাকিম্ অমোলীং অখোরাং আত্তবিদ্ধি। ওপ্ততঃ সমচরিষ্টরসোইত্র। ৩২৮॥

বাদেটাং ব্যঞ্জনাদীনামন্ধ্যান্তক্ষণশ্বসাং। অনেকারান্ত্রদ্ধানাং। পরদ্ধৈ-পদদিচলঘোরকার স্যর্দ্ধিঃ। অপাঠীং অপঠীৎ অভাণীং অভণীং অভাণিফীম্ অভণিফীমিত্যাদি। এবং রণ্ স্বন্ধন্ তন্ সন্ গদ্ নদাদেঃ। ব্যঞ্জনাদীনাং কিং মাভবানটাং। দেটাং কিং ব্যধ্ অব্যাৎ সীং নিত্যং রৃদ্ধিঃ। অস্যেত্যের অনোবীং অক্রোযাং। লঘোরিত্যের অরক্ষীং অভক্ষীং অরক্ষিফীং। হকার মকার যকারান্ত ক্ষণ্ শ্বন্ একারান্ত্রন্ধ ধাতৃনাং পর্যুদাসঃ কিম্ অগ্রহীং অগ্রহীয়াম্ অমহীং অভ্যমীং অভ্যমীং অব্যাহীং অক্ষণীং অগ্রমীং লগে অলগীং পথে অপথীং মথে অম্থীং। ২১॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিক।।

লঘা। লকারান্ত রেফান্ত বদ্বজাংধাত্নাং। অমালীদিতি মল্ মল্ধারণে লান্তস্থলঘোকারস্ত রুদ্ধোইটঃ সিজ্লোপঃ। অফালীদিতি। ফল্নিস্পত্তে। চর্গতিভক্ষণয়োঃ অচারীৎ। অবাদীদিতি। বদ্ব্যক্তায়াং বাচিরদ্ধিঃ। অমেলীদিতি। মিল্ সন্মিলনেইকারস্ত রুদ্ধ্যভাবেগুণঃ। অঘোরীদিতি। যুর্ভীমার্ভশব্দমোঃ। ব্যত্যবদিক্টেতি। ক্রিয়াবিনিময়েসর্ব্ধাণুভ্য আত্মনেপদং। গুষ্ঠতইতি। অত্রন্ধ্নি এইতোরসঃ সমচরিক্ট সমস্থতীয়য়াযুতাদিত্যাত্মনেপদং। স্বাদ্বেনস্থতনোরবিচারাদোষ্ঠতঃ সমচরিক্টরসোহত্ত। অত্যমন্ত লিব্যন্ধ্যূনঃ স্বাদমিক্ট মতনিক্টতদেবইতিমাঘঃ। ৩২৮॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

লঘো। অত্রপূর্বানুর্ত্তিবারণার্থং তথেত্যুক্তং তেনাত্রদেটামেব। বস্তুতস্ত তথেত্যনেন পরিস্থাপদেদিচির্দ্ধিরিত্যস্থৈবপরামর্শঃ নম্বনিটাং পূর্বেণিদিদ্ধোসূত্রবৈফল্যাপত্তেঃ। মল্ভুউ আত্মনেপদী-তিগণদর্পণে। ঞিফলাভেদেভুপ ইত্যস্থাপি অফালীদিতিপ্রয়োগঃ লাস্তম্বাবিশেষাং। অব্রাজীদিতি। বিজ্ঞাতিভূপ মিল্যুরোতুপ। ৩২৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাদে। হমযান্তক্ষণ্যদ্ ভিন্নানা মেকারাসুবন্ধভিন্নানাং বার্দ্ধিঃ লাঘারকারস্থা। অপাঠীদিতি। পঠ্। ভণ্শব্দে অভাগীৎ অভণীৎ রণ্শব্দে অরাণীৎ স্বন্ধন্ শব্দে অস্বানীৎ অস্বনীৎ তন্মু অতানীৎ উর্ণোতের্রাউকার ত্রঃ। পর শৈপদেসিচিত্তঃ স্যাৎ। প্রোর্ণাবীৎ প্রোর্ণবীৎ প্রোর্ণাবিষ্টাং প্রোর্ণ্ বীৎ প্রোর্ণবিষ্টামিত্যাদি। আত্মনেতু প্রোর্ণবিষ্ট প্রোর্ণ - বিষ্টেত্যাদি। ৩০০॥

অতনীৎষমু অসানীৎ অসনীৎ গদ্ অগাদীৎ অগদীৎ নদ্ অনাদীৎ অনদীৎ। মেতি। অট্মাযোগেনাদোর্দ্ধিং সেট্রেইপি স্বরাদের্মঘারস্থ নর্দ্ধিঃ দিজ্লোপঃ। ব্যধ্ রুধিরাধীত্যাদিনাহনিট্ অনিটান্ত হলন্তানামিতি নিত্যং ব্রদ্ধিঃ ব্যঞ্জনাদিত্বেইপি সেট্রেব্যঞ্জনাদিত্বেইপি উকারস্থনবৃদ্ধিও। লঘোরকারস্থৈববাবৃদ্ধিরিত্যমুক্তর্নাদিত্যর্থঃ। মুধ্থগুনে সেট্রেব্যঞ্জনাদিত্বেইপি উকারস্থনবৃদ্ধিগুলিব। অকোষীদিতি। রুমুগুণঃ লঘোরের অকারস্থবৃদ্ধিঃ নগুরোঃ তেন বৃদ্ধুঃ দেট্রেব্যঞ্জনাদিত্বেইপি গুরোরস্থ নর্দ্ধিঃ। পর্যুদাসইতি। পর্যুদ্দেনং পর্যুদ্দানঃ বর্জ্জনমিতিয়াবৎ। অগ্রহীদিতি। গ্রহঃ সেট্রেইপি ব্যঞ্জনাদিত্বেইপিহান্তবৃদ্ধিঃ। ব্যর্গতো বৃদ্ধিঃ। অনুমান্তবৃদ্ধহার্দ্ধিঃ। অশ্মীদিতি। শুমুমান্তবৃদ্ধহার্দ্ধিঃ। ব্যর্গতো যান্তবৃদ্ধহাত্বদ্ধহান্তবিঃ। স্প্থাতোশ্চনবৃদ্ধিঃ অক্ষণীৎ অশ্বসীৎ। অপথীদিতি। পথেগতো গুক্রার্মুক্রভাল্বদ্ধভাবঃ। ৩২৯॥

गृष्ध्रकाणिका।

বাদেটামিতি। ইটাসহপ্রবর্তন্তেযেতেযাং কীদৃশানাং ব্যঞ্জনমাদিযেষাং তাদৃশানাং পুনঃ কীদৃশানাং হান্ত মান্ত যান্ত ক্ষণ্ শ্বস্ ভিন্নানাং লঘোরকারস্থবাবৃদ্ধিঃ স্থাদিত্যন্তরঃ। অপাঠীদিত্যাদি। পঠ্ব্যক্তায়াং বাচি ভণ্শব্দে আদিনাঅভাণিযুরিত্যাদি রণ্ ধ্বন্ স্বন্শব্দেএতেভূপ তনুবিস্তারেতেউ ষণুদানেতেউ ষণ্সম্ভক্তৌ ভূপ গদ্ নদ্ শব্দেভূপ আদিনাপট্গতেভূপইত্যাদি। অট্গতেভি ভূপ ব্যধ্ভাড়নেদিপ মুযক্ত্যাপ রক্ষ্পালনেভূপ ভক্ষ্ অদনেভূউ গ্রহ্ উপাদানেক্র্যান্ত মহ্ ভূপ ভ্রম্কলনেভূদিপ শমুউপশ্মেদিপ ব্যয়ভূ উ ক্ষণুহিংসায়াং তিউ শ্বস্ প্রাণনেঅপ লগেদঙ্গেভূপ পথেগতেভিূপ মথেবিলোডনেভূপ। ৩২৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উর্ণো। প্রোণ্বিদিতি। উণু জ অব্যঞ্জনাদিস্বাছ্দ্যপ্রসক্তেরীবিধানং গুণে প্রোণ্বীৎ বা প্রোণু বীৎ ঔত্বস্থ গুণস্থচবৈকল্পিকত্বাছ্ভয়াভাবেউব্। আত্মনপদিচিনঔঃ উর্ণোতেগুণশ্চবা প্রোণ্বিফ বা প্রোণু বিফউব্ধাত্বাদাবচাংবৃদ্ধিঃ। ৩৩০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা i

উর্ণোতেরিতি। উর্কু আচ্ছাদনেহপনয়নেচ অউ। প্রোণাবীদিতি। ঔত্বেপ্রোণাবীৎ উর্ণোতেস্ত্রগুণশ্চবেতি গুণে প্রোণবীৎ উভয়োর্ব্যিকল্পেনাভবনেইটোহগুণত্বেপ্রাপ্তে ঈকারোকারয়োর্দ্ধাতো-রিযুবাবগুণেস্বরেইত্যনেনউব্। প্রথমাদিনাপ্রোণাবিযুরিত্যাদেঃ শেষাদিনা প্রোণবিষাতামিত্যা-দের্গ্রবং। ৩৩০॥ ইট্ স্থস্ত প্রত্থেপদে। প্রাসাবীৎ প্রাস্তাবিং অধাবীৎ অধাবি আধাবি আধাবি

• যমিরমিনম্যাদন্তাৎ সকারযুক্। ইট্স্যাৎ। অযংসীং। রাত্রিরেব ব্যরং সীং। ব্যরং দিফাং ব্যরং দিযুঃ। অনং সীং অযাসীং অভাসীং অগ্লাসীং অজ্ঞাসীং অপাসীং অপাশিফামিত্যাদি। পরস্মাইত্যেব অরংস্ত পর্য্যাণংশু ব্যত্যপাশু। ৩৩২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইট্। মুঞ্ ফুঁঞ্ ধৃঞ্ এভ্যইট্অনেকাচইত্যাদিনা। মুফুঁঞোরনিটম্বাৎপরস্মৈপদেসিচিইড্বিধানং ধৃঞ্উদ্দন্তাইত্যনেনদেট্মাৎপরস্মৈপদসিচ্যেতেত্বিধানং। ইটির্দ্ধৌ প্রাদাবীৎ দিজ্লোপঃ এবমস্তাবীদিতি। ধৃঞিতিঞিকুবন্ধনির্দেশাৎ ধৃবিধূননইত্যস্মউদ্দন্তাইত্যনেন দেট্মাত্রভয়-পদেহপীডাগমঃ অধুবীদিতি। অজাগৃক্টাদেরিতিনিধেধাৎ ন রৃদ্ধিঃ কুটাদিতোহনিচিনডিতি ইডাগমস্থা-গুণিমারগুণশ্চ। আজানেঅধুবিষ্ঠাং স্থপ্রভৃতেঃ পরস্মৈপদেইড্বিধানাদাত্মনেপদেগুণেপ্রাদোর্ফ ইত্যাদি। ৩০১॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

ইডিতি। স্থৃইতি সামান্যগ্রহণেহপিষ্টুধ্সাহচর্যাৎ ক্রন্থবর্ষকৈষ্টবর্গাং নতুস্পপ্রসবেজদাদিপরক্ষৈপদনঃ ইট্তেনপ্রাদৌষীদিতি। বুক্গতে ইত্যক্ষভুবাদিউভয়পদিনঃ বুক্ স্নানাদৌ ইত্যক্ষাদিউভয়পদিনঃ ইট্তেনপ্রাদৌষীদিতি। বুক্গতে ইত্যক্ষাদিউভয়পদিনঃ বুক্ সামাদিতি টক্ষতঃ। ধুক্কম্পনেক্র্যাদিউভয়পদী। ধুক্রম্পনেইত্যক্ষান্যভয়পদিনস্তমনিট্যাদেতৎ সূত্রেণাপ্রাপ্তমাচ্চ অধোষীতিপ্রয়োগঃ। আদিনান্যধ্বিষ্বিত্যাদেগ্রহণং। ন্যধ্বীদিত্যাদোক্টাদিতঃ ইচ্ ইন অট্ ভিন্নানাং প্রত্যানামগুণত্যাভিব। ৩০১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যমি। যমুরমুনমএভ্যাকারাস্তধাতোশ্চসকারমুক্ সমুক্তইডাগমঃ পরস্মৈপদেস্থাৎ। গচ্ছতি যমিরম্ নমোমাস্তইত্যনিট্রাদেষামনেকাচইত্যাদিনানিয়মাদাদস্তানাঞ্চানিট্রাৎ সমুক্তেড্বিধানং। অয়ং সীদিতি। সিজ্লোপঃ যদ্যপি অয়ংসীদিত্যাদি সমুক্তেড্বিধানম্বিনাপিসিদ্ধ্যতি তথাপি অয়ংসিফী-মিত্যাদিসিদ্ধ্যর্থং সমুক্তেড্বিধানাং। অবিদিতগত্যামারাত্রিরেবব্যরং সীদিতিভবভূতিঃ বিরতাভূদিত্যর্থঃ ব্যাঙ্পরিভ্যোরমইতি পরস্মৈপদং। নম্ অনংসীৎ। আত্মনেরম্ অরংস্ত নম্পর্যাণংস্ত। ব্যত্যপাফেতি। ক্রিয়াবিনিময়ে আত্মনেপদং। ৩৩২॥

দরিদ্রোবা। সকারযুক্ ইট্স্যাৎ। অদরিদ্রাসীৎ অদরিদ্রাসিষ্টাং বা অদি-রিদ্রীৎ অদরিদ্রিষ্টাং। পরস্মাইত্যেব ব্যত্যদরিদ্রিষ্ট। ৩৩৩॥

অন্জোলুঙীট্স্যাং। আঞ্চীং আঞ্জিষ্টইত্যপি। আঞ্জিষ্টাম্ আঞ্জিষুঃ তথা আঃিষাতাং। লুঙীড্গ্রহণং পরস্থৈপদ সকারযুক্ নিরত্ত্যর্থং। ৩৩৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যমীতি। অযংসীদিতি। যমুউপর্মেভুপ। ব্যরংসীদিতি। বিপূর্বাং রমুক্রীড়ায়াং রুআ বিপূর্বাতয়াপরিশ্বেপদং। সজলজলদর্দং বিদ্যতেজাতবিত্যদ্বিমলিতকিরণোঘং সর্বারীনায়কোহসো।
অবিদিতগত্যামারাত্রিরেবব্যরংসীদ্বন্থবিধ্বমনোভীরঞ্জিতস্লিগ্ধশায়া। অনংসীদিত্যাদি। গম্ প্রহ্বন্ধ
নমস্করণশব্দেষুভুপ যাগতে অপ ভাদীপ্তো অপ গ্রৈহ্বন্ধয়েভুপ এচাংপাঠস্থিতান্তানামিত্যৈকারস্থাকারঃ।
ভা অববোধনেক্র্যান্ত পারক্ষণেঅপ। পিবতেরপীতি সিজ্লোপস্থবক্তব্যন্থামপাপানে ইত্যস্থাপাসীদিতিরূপং। আদিনাঅমাসীৎ অস্বাসীৎ অন্নাসীৎ অন্নাসীদিত্যাদের্গ্রহণ্য অরংস্তইতি কর্তৃভাবয়োঃ।
পর্যাণংস্তইতি কর্মাণি। ব্যত্যপাস্তইতি ক্রিয়াবিনিময়েকর্ত্ব্যান্মনেপদং। ইট্স্প্ত্র্ধ্ঞ্ভ্যোযমিরমিনম্যাদন্তাৎ
সকার্যুগিতিগাথাছন্দঃ তৃতীয়পাদেএকাক্ষরাধিক্যাৎ। ৩৩২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দরি। অদরিদ্রাদীদিতি সযুগিট্। বেতি। অনেকস্বরত্বাদিটিইট্যবর্ণস্থ লোপনম্ইটঃ সিজ্লোপ ঈকারএব অদরিদ্রাৎ। ব্যত্যদরিদ্রিফেতি। ইট্নভুসযুগিট্। ৩৩৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

দরীতি। দরিদ্রান্তর্গতো অপ অনুকৃতগোণধাতুত্বেন পঞ্চম্যেকবচনে অঘুট্স্বরেষুধাভূনামালো-পইত্যালোপঃ। দরিদ্রঃ পরোবাসকার্যুগিট্ স্থাদিত্যময়ঃ। ব্যত্যদরিদ্রিফেতি। ক্রিয়াবিনিময়ে সর্বাধাতুভ্যইতি কর্ত্তগাত্মনেপদং। ৩৩৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অন্জো। আঞ্জীদিতি। অন্জূ অস্থাদিট্ ধাস্বাদাবচাং বৃদ্ধিঃ সিজ্লোপঃ। আত্মনেআঞ্জিষ্ট। তথেতি আঞ্জিষাতাং। লুঙীতি। লুঙীত্যেবনিয়মার্থঞ। ৩৩৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অন্জইতি। অন্জ্ব্যক্তিমর্বণঅক্ষণকান্তিগতিষুরুপ। আঞ্জিউইত্যপীতি। ভাবকর্মণোঃ প্রয়োগঃ। তথেতি। আঞ্জিউবৎভাবকর্মণোরিত্যর্থঃ। লুঙীড্গ্রহণমিতি। লুঙীতিগ্রহণমুভয়পদ-গ্রহণার্থম্ইড্গ্রহণং সকারযুগিড্নির্ভ্যর্থং। অত্রবান্ত্রতিবারণকারণস্ত অগ্রিমসূত্রব্যাখ্যায়াং বাচ্যং। দরিদ্রোবান্জোলুঙীট্ স্থাদাঞ্জীদাঞ্জিউইত্যপীত্যেবং ছন্দঃ। ৩৩৪॥ ইঙোগীবা। অদ্যতন্যাং পরতঃ। অধ্যগীষ্ট অধ্যগীষাতাম্ অধ্যগীষত। বা অধ্যৈষ্টবেদান্। অধ্যৈষাতাং। ৩৩৫॥

বা হস্তের্বধ। পরস্মৈ। অদস্তাদিট্। অবধীচ্ছক্রং। অবধিষ্টাং। ৩৩৬॥ হবধাবাত্মনেপদে। আহত আহসাতাম্ আহসত আবধিষ্ট আবধি-যাতাং। ৩৩৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইঙো। ইঙ্ ইত্যস্থ তস্থাং বাগীআদেশঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অধ্যগীষ্টেতি। গীআদেশেধাত্বাদাবট্ । বেতি। সোহধ্যৈউবেদান্ ত্রিদশান্যই পিতৃনপারীৎসমমংস্তবন্ধুন্। ব্যজেইযভূর্গমরংস্তনীতে সমূলঘাতং অবধীদরীং শেচতি ভট্টিঃ। অচাং বৃদ্ধো অধ্যৈষ্ট। ৩৩৫॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

ইঙইতি। অদ্যতন্থাং পরতইতি। লুঙীত্যনেন পূর্ব্বাদ্যতনীমাত্রপ্রাপ্তেরিতিভাবঃ। নমু গীরিঙানবেত্যত্র লুঙিচেত্যক্তে এতংস্ত্রমনাবশ্যকমিতি সত্যম্ অতৈত্যকরণং দ্বয়োর্বিকল্পয়োর্মধ্যে নিত্যবিধিরিতি ন্যায়সূচনার্থং তেনান্জোলুঙীডিত্যত্রনিত্যত্বং প্রাপ্তং। নচান্জোলুঙীড্ নিত্যং স্থাদিতি বাচ্যমিতি বাচাং তথাত্বে গোরবাপত্তেঃ। অতএব হন্তের্বিধইত্যত্রাপি নবাপ্রবৃত্তিঃ অন্যথা উক্তন্সায়ানম্পীকারেবাপত্তেঃ। ৩৩৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হত্তে। অস্তাদন্তবধাদেশঃ অদ্যতন্তাং পরস্মৈপদে। অদন্তত্বাদিতি। অদন্তত্বেনানেকাচ্ছাদি-দ্যাগমঃ ইটালোপঃ দিজলোপঃ অবধীং অবধিষ্ঠাম অবধিষুরিত্যাদি। ৩৩৬॥

গূঢপ্রকাশিকা।

হন্তেরিতি। হন্হিংসাগত্যোরিত্যক্ত স্থানেবধাদেশঃ স্থাল্লুঙিপরস্মৈপদেইত্যর্থঃ। পরস্মৈইতি। আত্মনেহবধাদেশয়োর্ব্বাচ্যস্থাদিত্যাশয়ঃ। অদন্তাদিড়িতি। বধিতিব্যঞ্জনান্তাদেশেজু রুধিরাধিকুধিবন্ধি ক্রুধিবধীত্যাদিনাহনিট্ স্থাদিতিভাবঃ। ৩৩৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হব। হন্ধাতোঃ স্থানে আত্মনেপদেহব্ধাবিত্যাদেশাবদন্তোন্তইত্যর্থঃ। আহতেতি। আঙ্পুর্ব হনঃ এবমাঙোযমহনইত্যাত্মনেপদং হ্যাদেশে ধুট্ হ্রস্বতোধুটীতিদিজ্লোপঃ। আহ্সাতামিত্যাদে ধুট্ পরস্থাভাবান্নধুড্লোপঃ। পক্ষেবধাদেশে অনেকস্বর্ত্থাদিটি অলোপে অবধিষ্টেত্যাদি। ৩৩৭॥

গৃতপ্ৰকাশিকা ৷

হবেতি। নচ হশ্চেতিক্তে পূর্বস্মাদ্ধসমুচ্চয়সম্ভবাং কিং বধেতি গ্রহণমিতিবাচ্যং হশ্চহাধাতো-শ্চেতি সন্দেহাপত্তে:। আহতেত্যাদি। স্ববক্ষঃ প্রভৃত্যঙ্গানীতিশেষঃ। এতদর্থাভাবে আত্মনেপদং নস্তাং এবমাঙোযমহন ইত্যনেন স্কিয়াঙ্গকর্মকাদকার্ম্মকাচ্চহন আত্মনেপদবিধানাং। ৩৩৭॥ ইণোগাঃ। অদ্যতন্যাঃ পরতঃস্যাৎ। ৩৩৮॥ ঈসিচোল্লু ক্স্যাৎপরস্থৈ। ইত্যধিকারঃ। ৩৩১॥

পিবতেরপি। ইণশ্চ ঈসিচোল্ল্ক্পরস্থৈন্যাং। অগাং অগাতাম্অগুঃ ইক্ স্থারণে অধ্যগাং অগাঃ অপাং অপাতাম্ অপুঃ। পরস্থৈকিম্ অগায়ি অগায়ি যাতাম্। ৩৪০॥

দ্রাধাশাছাসাধেটায়া। অন্ত্রাতাম্অন্তঃ অধাণ অধাতাম্ অধাঃ শো অশাৎ ছোঅচ্ছাৎ সোঅসাৎ ধেট্অধাৎ বা অন্ত্রাসীৎ অন্ত্রাসিফীমিত্যাদি। ৩৪১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইণো। ইণ অস্থাগাদেশঃ স্থাৎ। ৩৩৮॥

গৃত্পকাশিকা।

ইণোগেতি। ইণ্গতো অপএতস্তস্থানে গাদেশোহদ্যতন্তাং পরতইত্যন্বয়ঃ। ৩৩৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঈদি। দীর্ঘেকার দিচ দংজ্ঞকদকারয়োলোপঃ। ৩৩৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঈদিচোরিতি। ইত্যধিকারইতি। স্বপ্রতায়াদিতি সূত্রাৎপ্রাক্তৎপরং তদধিকারাৎ। ৩০৯॥

প্রভাপুকাশিকা।

পিব। পাইত্যন্ত ইণশ্চ পরিশ্বৈসিদিজ্লোপে অগাৎ। অগাতামিতি। দিজ্লোপঃ অত্রালুক্
অন্তঃ। ইক্ স্মরণেইতি। ইণোভেদার্থকঃ অধিপূর্ব্বএবায়ম্ ইণ্বদিক্ ইতিবচনাদিণঃ সমানশীলঃ
তেনগা আদেশে অধ্যগাৎ ঈদিজ্লোপে অগাঃ। পিবতেঃ অপাৎ। অগায়ীতি। গাদেশে আত্মনেপদে
দিজ্লোপাভাবেস্থেটাদিচ্ স্তম্পলোপশ্চ আদন্তাদ্যঃ স্বরান্তথাত্বিত্যাদিনা ইজ্দিট্যে অগায়িযাতাং। ৩৪০॥

গৃতপ্রকাশিকা।.

পিবতেরিতি। অপিনাইণশ্চেতি সমুচ্চীয়তে। অগাদিতি। ইণঃ প্রথমংগাদেশস্তভঈসিচোলু ক্। অপাদিত্যাদি। পত্তগতোপতনেচভূপ। ৩৪০॥

প্রভাপকাশিকা।

স্রা। স্রাথাশোছোদোধেট্পানেএষাং বা ঈদিচোল্লুক্পরস্মৈ। অস্ত্রুরিতি। অত্তালুক্। অদাদিত্যাদি। এচামিত্যাদিনাওকারস্থাত্বং। বেতি। ঈদিজ্লোপাভাবপক্ষেঅস্ত্রাসীদিত্যাদি। যমিরমিনম্যাদন্তাৎ সকারযুগিট্ অস্ত্রাসিফামিত্যাদি। ৩৪১॥

শেজ্ঞণীেচভুবো বোইচি। ভুবঃ পরস্থৈপদে ঈিসিচোলু ক্ ইড্গুণীেচনভ-বতঃ অচিবপ্রত্যয়শ্চস্যাৎ। অভূং অভূতাম্ অভূবন্ যঙ্লুকি অবোভূবন্। ব্যবস্থিতবাম্মরণাৎ উসিভুবোনবপ্রত্যয়ঃ কুত্রচিৎ তেন অবোভূব্রিতিম তান্তরং। অভূবম্ অভূব অভূম। সর্বত্রপরস্থাইত্যেব বাত্য পাস্ত বা ব্যত্যপা সাতাং ব্যত্যভবিষ্ট অম্বভবিষাতাং। ৩৪২॥

স্থাদোশ্চ। পরস্থৈ ঈসিচোলুক্। অস্থাং অস্থাং দাঞ্দোজদাৎ অদাতাম্ অত্বঃ ধাঞ্ অধাং অধাতাম্ অধুঃ। ৩৪৩॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

স্রেতি। স্রাগন্ধোপাদানেভুপ খাশব্দোপতাপয়োঃ ভুপ শোতনূকরণেদিপ ছো ছেদনে দিপ সোহন্তকর্মাণিদিপ ধেট্ভুপ। আদিনাঅগ্রাসিয়ুরিত্যাদি। স্ত্রীচ্ছন্দঃ তল্লক্ষণং প্রাগুক্তং। ৩৪১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নেত্। উদ্দন্তাইত্যনেনদেট্বেহপিনইডাগমঃ। গুণশ্চচকারাদীদিচোলু ক্চ। ইডাগমগুণাভাবিদির্দ্ধে বিদিজ্লোপেঅভ্নেগে সলোপেবোহচি স্বপ্রত্যয়াৎ হস্তনীবপঠনীয়া তেন উসঃ স্থানেহন্অভ্নন্। অবোভ্নমিতি। ক্রিয়াদমভিহারেয়ঙিঅভ্যাদেগুণেসলোপেবোহচি। ব্যবস্থিতেতি। ত্রায়াশাছাসাবেটান্বেতি অতোবাল্মরণাৎ সলোপেউসিবপ্রত্যয়াভাবেস্বপ্রত্যয়াভাবাৎ হস্তনীবপাঠাভাবেঅগুণেউব্অবোভ্নঃ সংবিভক্তো সলোপেঅমিবাগমেঅবোভ্নং স্বশ্মবিভক্তো সলোপেঅভ্ন অভ্ম।
ইসিচোল্লুক্ স্থাৎ পর্বৈশ্বইত্যতঃ পর্বশ্বইত্যকুর্বর্তনাৎ পিবতেরপিঈসিজ্লোপাভাবেব্যত্যপাস্তইডাগমেব্যত্যভবিষ্ট অন্বভবিষাতাম্ ইজ্বিডভাবপক্ষেইডাগমোনসিজ্লোপঃ। ৩৪২॥

গুঢ়প্রকাশিক।।

নেডিতি। ভুবইত্যবিশেষাৎ ভূধাতোঃ অসআদেশিভুবশ্চগ্রহণং। নাত্রবাশ্বয়ঃ নঞ্গ্রহণস্থ-বৈয়র্থ্যাৎ। নচভুবইড্গুণোনচকারাদীসিচোলুর্ক্চনৈতি বাচ্যমিতিবাচ্যং তল্লুকোহধিকারাৎ অচিবাগম-বিধানাচ্চ। অনুভূবোজ্ঞানার্থতয়াজানাত্রিবৎ সক্র্মকঃ যথাঘটমনুভবতীতি তেনাশ্বভবিষাতামিতি কর্মণিপ্রয়োগঃ। ৩৪২॥

প্রভাপ্রকাশিকা ৷

স্থাদোঃ। স্থাধাতোদ্দাসংজ্ঞকস্মচ। অস্থাদিতি। ঈসিজ্লোপঃ। অস্থুরিতি। সলোপে-অত্রালুক্। এবমত্নঃ ভূধাঞাধেট্যধাৎ অধাতাম্ অধুঃ। ৩৪৩।

গুঢপ্ৰকাশিকা।

স্থাদোরিতি। সংজ্ঞাসদ্ভাবেস্বরূপস্থাহণাভাবাদ্দাশব্দেনদাসংজ্ঞকস্থগ্রহণং তেন স্থাদাধাইতি দাসংজ্ঞরোরিত্যর্থঃ। ৩৪৩॥ আইবনাত্মনে। স্থাতার্দাসংজ্ঞস্য আকারইবং প্রাপ্নোতি। সমস্থিত সমস্থিতাম্ অদিত। ন্যাধিতমিমানইবাবনিং পদানি। অধিষাতাং। ৩৪৪॥ স্প্রত্যাদ্ভ্স্তনীবপঠনায়াদ্যতন্যসো। ইত্যাধিকারঃ। ৩৪৫॥ কর্ত্যাঙ্ঙ্স্যতেঃ থক্চ। স্যাং। আস্থং আস্থ্তাম্ আস্থ্ন নিরাস্থ্ত নিরাস্থ্তাং। ৩৪৬॥

প্রভাপক শিকা।

আই। আত্মনেসিচি। সমস্থিতেতি। আকারস্থইত্বেসিজ্লোপঃ। দাঞোজদিত ধাঞো অধিত। অবনিং মিমানইবপরিমাণং কুর্বিন্নিবপদানিঅধিতনিহিত্বান্। ইতিগদতি স্থীজনেহ্নুরাগা-দ্য়িত্তমামপরশ্চিরংপ্রতীক্ষ্য। তদ্নুগমবশাদনায়তানিঅধিতেতি চতুর্থচরণোমাঘে। ৪৪৪॥

गृष्यकामिका।

আইন্থমিতি। সমস্থিতেতি। ধুত্ত্রস্বতোধুটীতিদিজ্লোপঃ সমস্থিতামিত্যত্তধুট্পরত্বা-ভাবামনিজলোপঃ। ৪৪৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্থা। স্থত্যয়াদদ্যতন্তা অদাধারণপ্রত্যয়াৎ পরাদ্যতনীহস্তনীবপঠনীয়া। ৩৪৫॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

শ্বেতি। স্বস্থানিজস্থপ্রত্যয়ঃ স্বপ্রত্যয়ঃ অদ্যতনীসম্বন্ধিপ্রত্যয়ইত্যর্থঃ যদ্বাস্থাস্থিন্প্রত্যয়ঃ স্বপ্রত্যয়ঃ অদ্যতনীদম্বন্ধিপ্রত্যয়ঃ ব্যাদ্দাবদ্যতনীহাস্তনীবপঠনীয়াইত্যর্থঃ। কেচিভুদণ্নাম্যুপান্তাদিতিসনেড্ শুণোচভুবোবোহটীতিবঃ ছন্দোহর্থমুভৌনিস্বরোপঠিতো অঙ্চঙিত্যাদিঅঃ স্বঅশ্চাদো প্রত্যয়শ্চেতিত স্মাদিত্যাহঃ। ৩৪৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কর্ত্ত । অব্যক্তপণেদিবাদিঃ অস্মাদস্যতেরঙ্থাগমশ্চ । আস্থদিতি । অচাং রুদ্ধোঅঙিথাগমেছ স্তনীপাঠঃ আস্থতাম্ আস্থন্ হস্তনীবপাঠঃ নিরাস্থতইতি । • প্রাদেরস্তত্যুহতিভ্যামিতি কর্ত্ত্যাগ্রনেপদং অঙিথেছস্তনীভাবে অকারাত্তথয়োরিতি ইত্বেনিরাস্থেতাং । ৩৪৬ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কর্ত্তবিতি । অসতেরিতিযণন্তনির্দেশোদিবাদিপরশৈপদ্যস্থাতুগ্রহণার্থঃ তেন অদাদিঅসঃ ভুবাদ্যসশ্চবাদাসঃ অত্তঙ্কুবন্ধগ্রহণমঙিপরেথগাগমার্থম্ অন্তথা অঃ স্থাৎপক্ষেচকারসমুচ্চিতথক্চেত্যম্বরা-পত্তঃ। নিরাম্বতেতি। প্রাদেরস্থাত্তভোমিত্যনেনোভয়পদবিধানাদাল্পনেপদং। যশাংসিসর্বেষু ভূতাং নিরাম্বদিতিপরশৈপদী ভট্টো। ৩৪৬॥

বচেরঙ্বশ্চবোভবেং। ব্রুবচ্ অবোচং অবোচতাম্ অবোচন্ অবোচত অবোচতাম্। ৩৪৭॥

খ্যাতেরঙ্। অঙ্যালোপঃ। চক্ষঙ্খ্যাঞ্। আখ্যৎ আখ্যতাম্ আখ্যন্ আখ্যত আখ্যতাং। ৩৪৮॥

লিপ্সিচিহ্বাভ্যঃ। অঙ্স্যাৎ অলিপৎ অসিচৎ ডিত্তাদগুণঃ। আহ্বৎ আহ্বতাং। ৩৪১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিচেঃ। বচ্অস্মাদঙ্বোচস্থাৎ বকারোবোইত্যাদেশমাপদ্যতইত্যর্থঃ। অশিতিব্রুবোবচ্ তেনো ভয়োরুদাহরণমবোচদিতি। অভিবস্থবোভাবেহস্তনীবদ্ধাবে অবোচতামিত্যাদি। আত্মনেপদেঅবোচতে ত্যাদি। ৩৪৭॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

বচেরিতি। অত্রাঙ্গ্রহণং থক্নিরাসার্থং। নমুবচেরইতি কুতেসিদ্ধেকথমনুবন্ধগ্রহণমিতিচেন্দ্র পরত্রানুবর্ত্তনার্থম্। ৩৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

খ্যাতেঃ। খ্যাপ্রকথনে অকারলোপঃ কর্ত্তব্যঃ স্বরেকঙকুবন্ধিনীত্যনেন। অশিতিআখ্যদিতি। চক্ষঙ্ব্যক্তায়াং বাচিঅস্থ্যাঞ্ আঙ্পূর্ব্বখ্যাঞোহঙ্যালোপেহস্তনীবপাঠঃ। ঞকুবন্ধাৎকর্ত্ত্যাত্মনেপদে আখ্যত। ৩৪৮॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

খ্যাতেরিতি। অঙিতিনসূত্রমন্থুবর্ত্তনলব্ধং ছন্দোহর্থমেকত্রলিখিতং। খ্যাতেরিত্যবিশেষাৎচক্ষঙ্খ্যাঞঃ খ্যাধাতোশ্চগ্রহণং। ৩৪৮।

প্রভাপকাশিক।।

লিপ্। লিপ্দিচির্হ্বেঞ্ অঙিহস্তনীবস্তাবেঅলিপৎ। ঙিত্তাদিতি। **ঙমুবন্ধতাদগুণঃ তেনালিপ** দিত্যাদৌনগুণঃ অঙিঙনুবন্ধেআলোপে আহ্বত। ৩৪৯॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

লিপ্সিচীতি। লিপ্উপদেহেসচর্দ্ধিল্লেপনঞ্ছুউ যিচির্ রক্ষণেতুউ স্বেঞাহ্বানেভুউ ঙিত্বাদিতি। কণঙ্কুবন্ধাইত্যুক্তেঃ। ৩৪৯॥ আত্মনতুবিভাষয়া। অঙ্অলিপত অসিচত। গতভীরাহ্বতচেদিরাণ্মুরারিং। আহ্বেতাম্ আহ্বস্ত বা অলিপ্ত অলিপ্সাতাম্ অসিক্ত অসিক্ষাতাং। আহ্বাস্ত-মেরা বনরাবতীং যা। আহ্বাসাতাং। ৩৫০॥

আকারলোপঃ কর্ত্তব্যঃ স্বরেকঙনুবন্ধিনি। ৩৫১॥

পুষাদেন্ত্র তাদেঠ কারানুবন্ধাৎ পরশ্বৈপদে অঙ্। স্যাৎ অপুষৎ অপুষাতাম্ অপুষন্ অশুষত্ পুনস্তরাং বদনো সরোজনিবিদং। অসত্যালিঙ্গনেশ্লিষঃ। সমাশ্লিষজ্জতুকান্ঠং। অন্যত্রসমাশ্লিক্ষৎপ্রিয়ঃ কান্তাম্ অন্ত্রতং অশ্বিতং অকচং অব্দেশ অধ্বনং অত্নাং। অব্দেশ অধ্বংনং। ত্যুতাদয়োলুঙু ভ্রপদিনঃ। 'মুচু অমুচ্ছ শকু অশকং সদ্ধ সমাসদং এবং লুপু বিদ্ধ ঘমু বিশু গমু সূপু প্রভৃতেঃ। পরশ্বৈপদেকিং সণ্ব্যত্যপুক্ষত। ব্যদ্যোতিষ্টসভাবেদ্যাং। অবিত্তম্মুক্ত। ৩৫২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আত্ম। এবামেবাত্মনেবাঙ্স্থাৎপক্ষে। অলিপত অসিচতেত্যাদি। গতেতি। গতভীশ্চেদিরাট্শিশু-পালোমুরারিমাহ্বতঅঙ্। মুখমুল্লসিতত্রিলেখমুকৈর্ভিত্রক্রমুগভীষণং দধানঃ। সমিতাবিতিবিক্রমাদ স্বায়ন্গতভীরিতিতুর্যাংমাঘে। বাঅঙভাবেধুড্হুস্বতোধুটীতিসিজ্লোপঃ অলিপ্ত ধুট্নিমিত্তাভাবাদলিপ্রাতা মিত্যাদৌনসিজ্লোপঃ। অসিক্তোত। ধুটান্ডেচচজোঃ কঃ। আহ্বাস্তেতি। সিজ্লোপাভাবঃ। মেরোস্থমেরুগিরোঅমরাবতীং বাআহ্বাস্তআত্তবতী। নিষেব্যমাণেনশিবৈশ্মক্তিরধ্যাস্থমানাহরিণা চিরায়। উদ্বিম্বিত্রাক্ষুরধান্মিসিক্ষাবাহ্বাস্তেতিচরমং মাঘে। ৩৫০॥

গৃচপ্ৰকাশিকা।

আত্মনইতি। তুশন্দোবিভাষয়েত্যস্থানুর্ত্তিবারকঃ। মুরারিং শ্রীকৃষ্ণং। যাদ্বারকা। অশুৎ প্রভাপ্রকাশিকায়াং দ্রুষ্টব্যং। ৩৫০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আকা। ককারঙকারানুবন্ধেস্বরে আলোপঃ স্থাৎ। অনুবন্ধোবিদ্যতে অস্থেতি অনুবন্ধী-তত্ত্ব। ৩৫১॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

আকারেতি। কঙ্মুবন্ধিনিস্বরেইতি সামান্যনির্দেশাদন্যত্রাপি তাদৃশেস্বরেআলোপঃস্থাদিতি।৩৫১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পুষা। পুষ্ পুষ্ঠাবিত্যাদেঃ ত্যুতাদীপ্তাবিত্যাদেঃ ৯দনুবন্ধাচ্চধাতোরঙ্। শুষ্ শোষণে অশুষৎ তুষ্ তুষ্টো অতুষৎ। পুনস্তরাং পুনঃ পুনঃ অস্বিদৎ স্বেদবদভূৎ এবং তুষ্ বৈকৃত্যে অতুষৎ। অসত্ত্ত্যি

গুণশ্চার্ত্তিসর্ব্ত্যোঃ। অঙ্চ। আরং মাত্বমরঃ। অর্তেরাত্মনেপদে প্যঙ-মিচ্ছন্তি। সমারত সমারেতাং। সমারম্ভমমাভীষ্টাঃ সঙ্কম্পাস্তযুগাগতে-অসরং। ৩৫৩॥

অপ্রাণ্যালিঙ্গনে শ্লিষঃ জতু লাক্ষাকান্ঠং সমাশ্লিষং। অন্যত্রসন্থালিঙ্গনে সমাশ্লিকং সণনাম্যুপাস্তাদিতি সণ্প্রত্যয়াং হস্তনীপাঠঃ। অভি অন্যতংখিতাবর্ণে অখিতং। অক্স জন্শু জন্শু অবস্রংসনে অগুণে অভি অন্তাব্যঞ্জনাদিনলোপঃ অস্রসং ধন্ত্রতে অধ্বসং। অগ্রইতি। শুন্চু স্তভীত্যাদিনাই্তিমসূত্রে স্তভাদেলু প্রনপাঠবলাং অন্যেষামগুণেইপান্তি ন লোপং নেচছন্তি তেনাস্রংসং অবাধ্বংসং। ক্রকারামুব্দ্রাং অভ্ অমুচং অশকং সদ্ক সম্ আঙ্ পূর্বঃ সমাসদং এবম্ অলুপং বিদ্ক অবিদং ঘস্ক অম্পং বিশ্ক অবিদং ঘস্ক অম্পং। সণিতি। সণ্নাম্যুপান্তাদিনিটঃ শিভন্তাদ্ শিবর্জিতাদিত্যনেন ক্রিয়াবিনিময়ে আত্মনেপদং যতোঃ কঃ সেষত্বং সিজ্লোপে ব্যত্যপুক্ষত। সেট্ডাদিডাগমে। জাজ্ল্যুনাজগতঃ শান্তয়েসমুপেষুধী। ব্যদ্যোতিষ্ঠ সভাবেদ্যামসোনরশিথিত্রয়ীতিমাঘঃ। সভৈববেদীতস্থাং। মৃচ্ক ধৃট্যন্তেচ চজাঃ কঃ ধৃট্যুস্বতোধ্টীতি সিজ্লোপঃ অমুক্ত। অবর্ণনাম্যুপান্তানামনিডাশীর্লুঙৌ কিতে। বিদ্ক সিজ্লোপে অবিত্ত। ৩৫২॥

গৃত্পকাশিকা।

পুষাদেরিতি। অঙিতি ন সূত্রং কিন্তুসুবর্ত্তনলব্ধং ছন্দোহর্থমেকত্রলিখিতং। অপুষদিত্যাদি।
পুষ্ শুষ্ তুষোদিবান্তর্গতপুষাদয়ঃ পরস্মৈপদিনঃ। পুনস্তরামিতি। পুনঃ পুনরিত্যর্থে ক্রিয়াপ্রকর্ষেতি

৪ন্তাৎ কিমেদন্তাব্যয়াদপি তরাম্ তমামোভবতইতিতরাম্প্রত্যয়ঃ। অম্বিদদিতি। ক্রিয়াগাত্রপ্রকরণে
পুপ। প্রকুপাতঃ শ্বনন সমীরণাহতি ক্লুটোম্বভিস্তনুবসনান্তমারুতৈঃ। যুধাজিতঃ কৃতপরিভূর্ণবীজনমিতি
পুর্বিপাদত্রয়ঃ মাঘে। অসত্ত্বেতি। পুষাদেরাদি শব্দব্যবস্থয়া অতদর্থে শ্লিয়ঃ পরোহঙ্ শ্লিষ্ আলিঙ্গনে

অয়মপি দিবান্যন্তর্গত পুম্পাদিঃ প। অত্যতদিত্যাদি। ত্যুৎথিৎক্রতদীপ্ত্যভিপ্রীত্যোঃ স্রন্ত্র ধরন্ত্র অবস্রং
সনগত্যোঃ ত্রন্ত এতেভূবাদ্যাত্মনেপদিনঃ কিন্ত লুঙ্গুভয়পদিনঃ। অস্ত্রসৎকরিণাং গৈর্বমিতি রযুপ্রয়োগাৎ
শক্রমধ্বসদিতিভটিপ্রয়োগান্নকারলোপএব শিন্তসম্মতইত্যন্তেইত্যস্বরসঃ। মুচ্৯মোক্ষণে তুপ শক্৯সামর্থ্যে

স্বাপ বদ্কভেদ গমনাবদাদনেষু তুপ লুপ্কছেদনে তুউ বিদ্কলাভে মুপ ঘস্ক অদনেভূপ বিশ্কপ্রবেশনে তুপ
গম্ক স্বন্ত্রতি ভূপ প্রভৃতিনাপত্কগতে ভুপ শদ্কগতি মানি শাতনেষু ভূপইত্যাদের্গ্রণঃ। ৩৫২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গুণশ্চা। ঋত্ইত্যেত্রোরঙ্ গুণশ্চস্থাদিত্যর্থঃ। অভিগুণেঅচাং রুদ্ধৌসপ্রত্যয়াৎ ছন্তনীবদ্ধাবেআরং। মেতি। অভিগুণেমাযোগের্দ্ধাভাবেঅরঃ সীস্বিভক্তৌরপং। অর্ত্তেরিতি। ঋধাতোরাত্মনেপদেহপান্ত মিচ্ছন্তিপ্রাঞ্ইতিশোষঃ। সমারতেতি। সমোগমুছিপ্রছন্তীত্যাদিনাত্মনেপদং। মুমাভীষ্টাঃ
সক্ষমান্ত্রিদ্যাপাগতে সুমারত্সমাগ্তাঃ। সর্ত্তেরভিগুণেঅসরং। ৩৫৩॥

শান্তঃ শিষ্চ। অঙ্। অশিষৎ চকারস্যান্তক সমুচ্চরার্থত্বাশ্পএত্বঞ্চ অনেশং অনশৎ। ৩৫৪॥

পতেঃ পপ্ত। পতু অপপ্তৎ। ৩৫৫॥

অঙ্বাস্যাজ্দুদ্যোর্ণী। অজরৎ অজারীৎ অদর্শৎ অদ্রাক্ষীত্। ৩৫৬॥

भृष्यकाणिका।

গুণলেতি। অর্ক্তিনর্ত্ত্যোরিত্যোণাদিকস্তিঃ। অর্ত্তীতিসামান্যনির্দ্দেশাৎ ঋগতিপ্রাপণয়োঃ ভূপ ঋগতোঁ জুপ উভয়োর্য্রহণং স্থাতোভূপ। চঁকারাদছ্চ। অর্ত্তীতিসামান্যনির্দ্দেশাৎ প্রদর্শিত ঋদয়স্ত উভয়পদেচ অঙ্চস্থাদিত্যভিপ্রেত্যাহার্ত্তেরিতি। ইচ্ছস্তিপ্রাঞ্চইতিশেষঃ নাত্রাস্বরদঃ আহুরিত্যাদ্যুক্তস্থাৎ তেনবয়মীচ্ছামইতিভাবঃ। সমারস্তেতি। সংশৃণুষকপে! মৎকৈঃ সঙ্গচ্ছস্ববনৈঃ শুভৈরিতি
পূর্বার্দ্ধং ভট্টো। ইতিহন্মন্তং প্রতিমৈনাকবাক্যং। পুষাদেরিত্যাদি এতৎসূত্রান্তং সোমরাজীছন্দঃ।
দিয়াসোমরাজীতিতল্লক্ষণাৎ। যস্তাঃ পদেআদিলঘুগণদয়ং সাসোমরাজীতিফলিতার্থঃ। পুনরাদিলঘুর্য্যইতিপরিভাষা। ৩৫৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শাস্তে:। শাস্ত্ত্যমাদঙ্গাতোঃ শিষাদেশশ্চস্তাৎ। অশিষদিতি। অঙিশিষ্। শিষ্চেতি চস্তা-মুক্ত সমুচ্চয়ার্থকতয়া নশইত্যমাদঙ্ নশএত্বঞ্চ তেনানেশৎ বা অনশৎ। ৩৫৪॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

শান্তেরিতি। শাস্ত্রপুশিষ্টোঅপ অশিষ্থ। অনশদিতি। গশ্নাশাদর্শনয়োঃ।২৫৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পতেঃ। অঙ্অপপ্তং। ৩৫৫॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

পতেরিতি। পতের্কারাকুবন্ধতয়া পুযাদেরিত্যাদি নাঙিপপ্তাদেশঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ৩৫৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অঙ্। জুদৃশির্। অজরদিতি। অঙিগুণে। উদৃদন্তাশ্চেতি সেট্থাদিডাগমের্দ্ধিঃ স্বরান্তস্থেতি ত্যাদিনার্দ্ধে ইটঃ সিজ্লোপঈকারএব অজারীৎ। অঙিগুণেঅদর্শৎ। অনিটান্তহলন্তানামিতির্দ্ধে আর্ব্যত্যাসেধুটান্তে চ ছ শোঃ ষত্বং যঢ়োকঃ সেয়ত্বে অদ্রাক্ষীৎ। ৩৫৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অঙ্বেতি। অচিত্যকুক্তেজ্দৃশোঃ পরোগুণী মর্থাদ্যিমিন্গুণঃ প্রাপ্নোতিতাদৃশঃ প্রত্যায় স্থাদিত্যা-পদ্যেত। অঙিত্যুক্তেতু অঙেব বা গুণীস্থাদিত্যায়াতি। অজরদিত্যাদি। জুষ্দিপ জুবয়োহানোক্র্যাপ উভয়োরত্রগ্রহণং। দৃশির্প্রেক্ষণেভূপঅদর্শং। অদ্রাক্ষীদিতি। অরআরশ্চবর্ণস্থ ব্যত্যাদোসজ্ দৃশো-ধু টীত্যাব্যত্যাসঃ। ৩৫৬॥ অঙ্স্যাদিরসুবন্ধাদ্ধ। ভিদির্ অভিদং অভিদতাম্ অভিদন্ বা অভৈৎ সীং অভৈত্তাম্ অভিংস্থঃ অচ্ছিদং অক্তধং এবং ক্ষুদির্ যুজির্ বিজির্ তৃপির্ দৃপিরাদেঃ। পরস্বাইত্যেব অভিত্ত অভিংসাতাম্ অৰুদ্ধ অযুক্ত। ৩৫৭॥

গ্নুন চুস্তভিমুচুগুচঃ। অঙ্বাস্যাৎ। অগ্নুচং। গ্নুন্চপাঠান্ধনলোপইত্যন্যে অগ্নুঞ্চং অগ্নুঞ্চিৎ অস্তভং অস্তভীং অস্তত্তি অস্তৃচং অমুঞ্চং অমুঞ্চঃ মুঞ্চি মুঞ্চি

প্রভাপ্রকাশিকা।

অঙ্। ইরসুবদ্ধাদাঅঙ্। বেতিঅনিটান্তহলন্তানামিত্যাদিনার্দ্ধে অভৈৎদীৎ ধুড্রস্বতো ধুটীতি দলোপে অভৈত্তাং ছিদির্ অচ্চিদৎ বা অচ্ছেৎ দীৎ রুধির্ অরুধৎ বা অরোৎ দীৎ ক্ষুদির্ অক্ষুদৎ আক্ষোৎদীৎ যুক্তির্ অযুক্তৎ অযৌক্ষীৎ বিজির্ অবিজৎ অবৈক্ষীৎ এবং বিচির্ তৃপির্ দৃপিরাদেঃ। পুষাদেনিরত্যাদি দূত্রাৎ পরব্যৈপদইত্যনুবর্ত্তনাদাহ পরস্মাইত্যেবেতি। আত্মনেপদেভিদঃ দিজ্লোপঃ অভিত্ত রুধির্ দিজ্লোপেঘতস্ততভস্তথয়োর্দ্ধঃ অরুদ্ধ যুক্ত্রস্তকঃ অযুক্ত। ৩৫৭॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অঙ্সাদিতি। অত্রপুনরঙ্গ্রহণং গুণীতিনির্ত্ত্যর্থং তেনাভিদদিত্যাদোনগুণঃ। অঙ্গ্রহণাদ্গুণীতি নির্ত্তিবং বা ইত্যস্তাপিনির্ত্তিঃ স্তাদিতি বা শব্দোগৃহীতঃ। অভিদদিত্যাদি। ভিদির্বিদারণে ছিদির্ ছেদনে রুধির্আবরণে ক্ষুদির্ সম্পেষণে যুজির্ যোগেএতেরু উ বিজির্ পৃথগ্তাবে জুউ তৃপির্প্রীণনেদিয়াউ দৃপির্হর্ষমোহনয়োঃ দিপ। আদিনা রুদির্ অক্রাবিমোচনে অপ বিচির্ পৃথক্করণে রুউইত্যাদের্গ্রহণং। ৩৫৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা ৷

রুন্চ । রুন্চগতোন্তন্ত স্তম্ভার্থ: বন্চ চন্চ্ তন্চ্ অন্চ্ মুন্চ্ মুচ্গতার্থা: গ্রচ্ রুদ্ কুদ্ খুদ্ স্তেয়করণে অন্তাগঞ্জনাদিনলোপেঅঙি অরুচৎ নলোপাভাবে অরুঞ্ধৎ অঙভাবপক্ষেইটঃ সিজ্লোপ স্বকার এবঅরুঞ্ধীৎ অঙিঅন্তভৎ ইটিঅন্তন্তীৎ মুন্চ্ধাতোরঙিনলোপঃ অমুচৎ বা অমুঞ্জীৎ নশূন্ত মুচ্ধাতোঃ অমুচৎ বা অমুঞ্জীৎ নশূন্ত মুচ্ধাতোঃ অমুচৎ ইতিগুণেঅম্যোচীৎ। অগ্রচদিতিগ্রচ্ধাতোঃ ইটিঅগ্রোচীৎ। আগ্রনেক্রিয়া বিনিময়ে আগ্রনেপদে ইডাগমেব্যতান্তন্তিন্তিগ্রাদি। ৩৫৮॥

গূঢপ্রকাশিকা।

র্ন্চুইতি। র্ন্চুইতি নযুক্তগ্রহণং রুচুস্তেয়করণে ইত্যস্থবার্ত্ত্যর্থং তেন স্তেয়করণার্থর্যুচ্ছ অগ্রোচীদিত্যেবরূপং নতুঅগ্লুচদিতি। অতোগ্লুন্চোর্ধাতোরঙিনলোপইতিবহুসম্মতঃ। য়ুন্চুমুচুসাহচর্যাৎ পরস্মৈপদেঙ্বিধানাচ্চক্র্যাদিস্বাদিস্তন্ভোগ্রহণং নতুস্তভিস্তন্ভেইত্যস্থতস্থভুবাদ্যাত্মনেপদিত্বাৎ স্তভীতি অদ্যতন্যামদোষসু। অঙ্ । ৯দনুবদ্ধত্বাং অষসং ব্যত্যযন্তগমু অগমং। ৩৫৯॥ গমোগোবাত্মনেপদে। সমগত সমগংস্ত সমগংসাতাং সমগসাতাং। ৩৬০॥ যমোয়ঃ স্যাংসূচনার্থে। আত্মনেপদেস্যাং। আযতধনিনং পিশুনঃ আযসাতাং সূচনার্থেকিম্ আযংস্তপাদং পরস্বৈত্ অযংসীত্। ৩৬১॥

লুপ্তনকারপাঠস্ত দূত্রলাঘবার্থঃ। অ চুইতিলুপ্তনকারপাঠাৎ মুন্চু মু চু উভয়োগ্রহণং। নচ্মু চুগ্রহণং মুন্চুব্যার্ভ্যর্থমিতিবাচ্যং তয়োরেকার্থতয়া অমুচ্ৎ অমুচীৎ অগ্রোচীদিতিপদত্রয়িদদ্ধেরবিশেষাৎ তদ্ধার্তৌনিস্ফলত্বাৎ। নচতর্হি মুন্চুইত্যেবপঠ্যতামিতিবাচ্যং গোরবাৎ। স্তভিভিন্নাভুবাদয়ঃ সর্বে। ব্যত্যস্তস্তিকৈত্যাদীত্যাদিনাব্যত্যস্তস্তিষাতাং ব্যত্যস্তস্তিষ্যতেত্যাদিগ্রহঃ। ৩৫৮॥

প্ৰভাপৰাশিকা।

অদ্য। অদ্ অস্থবস্ক আদেশঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ককারানুবন্ধস্বাদঙ্ অঘদদিতি। আত্মনেবসতিঘদৌ দাবিতীড্নিষেধঃ সলোপঃ ব্যত্যঘস্ত। ৩৫৯॥

গুঢপ্রকাশিকা।

অদ্যেতি। অদ্যতন্তামিতিবদনং পরস্মৈপদমাত্রব্যার্ত্ত্যর্থং ৯দস্তকরণং পুষাদেরিত্যাদিনানিত্য মঙর্থং। তেন নবাপ্রবৃত্তিঃ। ৩৬৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গমো। গইতিঅদন্তঃ সমোগমূছীত্যাদিনাত্মনেপদেগাদেশেসলোপঃ সমগত বাসমগংস্ত। ৩৬০

গৃতপ্ৰকাকিশা।

গমবিতি। পুর্বত্ত নিত্য প্রাপ্তাবত্তবাইতি গৃহীতং। আত্মনেপদইতি গ্রহণমদ্যতনী মাত্রনিরা-সার্থং। ৩৬০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

यমো। আযতেতি। আযতসূচিতবান্ পিশুনঃ থলঃ এবমাঙোযমহনইত্যাত্মনেপদম্ আঙ্পুর্বাঃ। আযংস্তদীঘীকৃতবান্ গচ্ছতি যমীতীড্ নিষেধঃ। ৩৬১॥ .

গুঢপ্ৰকাশিকা।

যমইতি। যম্ উপরমে ভূপ আত্মনেপদেহস্ত যঃ স্থাৎসূচনার্থে। সূচনং ব্যক্তাকরণং। পিশু-নোহূর্জ্জনঃ থলইত্যমরঃ। অযংসীৎবিরতোহভূদিত্যর্থঃ। পরত্রপাক্ষিকইতিবাচ্যম্বাদত্রনিত্যং তেন নবাপ্রবৃত্তিঃ। ৩৬১॥ বিবাহার্থেতুপান্ধিকঃ। উপাযতকন্যাম্ উপাযংস্তবা। অবেরামত্বং মাজ-নকপপতিপুল্রীমুপযথাঃ। উপযৎস্থাঃ। ৩৬২॥

তনাদের্নসিটাং লুগাতথাসোঃ। অততাতথাঃ। অতনিষ্ট অতনিষ্ঠাঃ। ত্যজতিকষ্টমদাবচিরাদসূন্ বিরহবেদনয়েত্যঘশঙ্কিভিঃ। প্রিয়তয়াগদিতাস্ত্রিনি বান্ধবৈরবিতথা বিতথাঃ সথিমগিরঃ। মনুঅমত অমনিষ্ট। ৩৬৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিবা। আত্মনেপদে। উপযত বূঢ়বান্ উপাদযমঃ পরিত্রহে ইত্যাত্মনেপদং। সমস্তাত্মতালৈরিত্যাদি মুরারিঃ। মাউপযথানবিবহমাযোগেহডভাবঃ মাযোগেসার্ককালিকীঅদ্যতনী। বা উপমং স্থাঃ। ৩৬২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

বিবাহেতি। তুশব্দঃ সমুচ্চয়ে তেনাত্মনেপদেযমোয়ঃ স্থাদিতি সমুচ্চীয়তে। অরেইতি। সম-স্তাত্ত্তালৈঃ স্থরসহচরীচামরমক্তরকৈরুশ্মীলভুজপরিঘসোরভাশুচিনা। স্বয়ং পোলস্তোনত্রিপুবনভুজাচেত সিক্কতামিতি পূর্ববপাদত্রয়ং। অস্থার্থঃ। অরে রাম! স্বং স্বয়ং পোলস্তেন রাবণেন মনসিক্কতাং জনক-পতিপুত্রীং সীতাং মাউপযথাঃ নবিবহ কীদৃশেন ত্রিভুবনভুজাত্রিলোকভোগকারিণা পুনঃকীদৃশেন স্থরসহচরীচামরমক্তরকৈঃ অপ্সরোধৃতচামরবায়ুপ্রবাহৈঃ উন্মীলভুজপরিঘসোরভাশুচিনা ইতস্ততঃ প্রসরৎ যৎভুজপরিঘসোরভাং ভুজপরিঘযাঃ পরিমলস্তেন শুচিনাশুদ্ধেন কীদৃশৈঃ সমস্তাত্ত্তালৈঃ সর্বতোভাবেন-ভোষ্ঠেরিতি। উত্তালউৎকটেশ্রেষ্ঠেবিকরালে প্রবঙ্গমেইতিমেদিনা। রাবণমন্ত্রিশৌদ্ধলবাক্যমিদং। ৩৬২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তনা। নকার সকার ইটাং বালোপঃ তথাসোরেতয়োঃ পরয়োঃ। অততেতি। তনুউভয়পদী স্থেপরেনকার সকারইটাং লোপঃ অতথাইত্যত্রচ। পরস্মৈতুবাসেটামিত্যাদিনা বার্দ্ধোঅতানীৎ অতনীৎ। প্রিয়েতি। ত্যজতিকইসমাবচিরাদসূনিত্যাদি মাঘে। অস্তার্যঃ সে সথি। ছয়িছছিয়য়েবান্ধবৈঃ স্বজনৈর্গিরোবাচঃ প্রিয়তয়া প্রেমাগদিতামাবিতথামিথ্যামাকার্যীঃ মাবজানীছীতি ভাবঃ। কিন্তু অবিতথাঃ সত্যাএব। অসোবরাকী কইটমেতদিতি কুত্বাবিরহবেদনয়াবিয়োগ-প্রীড়য়াইচিরাৎ অসূন্ প্রাণান্ ত্যজতি ত্যক্ষণতি ইত্যঘশক্ষিভিঃ নাশশক্ষিভিঃ বান্ধবেচসিবিশ্বাসং কৃত্বা প্রাণানবলম্যপ্রিয়ঃ প্রতীক্ষ্যতামিতিভাবঃ। অন্তেতু গিরোহবিতথাঃ সত্যাঃ বিতথামা অসত্যানেতি যোজয়ন্তি। পূর্বাং তন্থাতোঃ মাযোগেহডভাবঃ মাযোগেসার্বকালিকী অদ্যতনী। ৩৬৩ য়

गृष्धकाणिका।

তনাদেরিতি। তনাদেরিত্যবয়বসামীপ্যসম্বন্ধে য**ন্ঠী** তেন তনাদেরবয়বনকারস্থ সমীপবর্ত্তি-বিভক্ত্যবয়বসইটোশ্চলোপইত্যর্থঃ। ত্যজতীতি। ভবিষ্যৎসামীপ্যবর্ত্তমানা। **অঘন্তব্যসনে হুষ্থে-**ছুরিতেচ নপুংসকমিতি মেদিনী। তেনাঘশঙ্কিভিব্বিপত্তিশঙ্কিভিরিত্যর্থঃ। বিতথম্বনৃতমিত্যমরঃ। ৩৬৩ ॥ সণ্নাম্যপাস্তাদনিটঃ শিডস্তাদ্শিবজ্জিতাং। দিশ্ অদিক্ষণ অদিক্তাম্ অদিক্ষন্ বিশ্ অবিক্ষণ। তথা নবাস্থদশ্যামতনুৰ্ব্যবিক্ষত। ৩৬৪॥

সণোইন্তলুক্ স্বরেইনন্তে। ইকারাপবাদঃ। ন্যবিক্ষাতাং নবিক্ষাপাং ন্যবি-ক্ষিত্বিয়্ অত্বিক্ষণ পিযুব্যত্যপিক্ষতিমিত্ অমিক্ষণ ক্রত্ত্বক্ষণ গুরু উদন্বন্ধতাদেট্ অঘুক্ষণ অলিক্ষণ। অনন্তেইতিকিং ন্যবিক্ষন্ত আদন্যখাদিতিনন্দোপঃ। স্বরেকিং ন্যবিক্ষপাঃ। ৩৬৫॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা ৷

সণ্না। নাম্যুপধাদনিটঃ শস্যহান্তাৎ অদ্যতন্তাং সণ্সাৎ। অদিক্ষদিতি। সনিধুট্যন্তেচ ছশোঃ যঃ যঢ়োঃ কঃ সেয়স্থঃ। হস্তনীবদ্ধাবঃ। তথেতি। নেকিশেইত্যাত্মনেপদং ন্তবিক্ষত। ৩৬৪ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সিধিতি। অনিটইত্যাদিত্রয়ং নামুপোন্ডাদিত্যস্থবিশেষণং। শাধিত্যসুবন্ধগ্রহণং সণোহন্তবুক্
সণস্তপাক্ষিকইতি বক্ষ্যমাণসূত্রদ্বয়ে সপ্রয়োজনকন্ অভ্যথাসস্থান্তলুক্ স্বরেহনন্তেইতিবক্তব্যে অস্ত্রসমিত্যাদে।
সলোপাপতেঃ। মূর্দ্ধভানুবন্ধস্ত সন্প্রত্যয়ব্যাবর্ত্তকঃ অদিক্ষদিত্যাদে। গুণনিষেধ ফলকশ্চ। দিশ্
অতিসর্জ্জনে তুউ বিশ্প্রবেশে তুপ। নবেতি। সকাঞ্চনেযত্রমুনের সুক্তয়ানবামুদস্থামত মুর্ন্যবিক্ষত।
জিগায়জমূজনিত প্রিয়ঃ প্রিয়ং স্থানকশুক্ষস্থা তদাতদাসনমিতিমাঘঃ। ৩৬৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সণো। সণোহন্তস্থ অকারস্থ লোপোহন্তভিন্নেমরে। ইকারেতি। শুবিক্ষাতাং শুবিক্ষাথা মিত্যত্র সাতাং সাথাং বিভক্তোর্হান্তবাবদ্ধাবে আতাম্ আথাস্তাবে সণোহকারাৎ অকারাভ্থয়োরাদিরাইঃ স্থাদিতি ইপ্রাপ্তেঃ সণোহলোপস্তবাধকইত্যর্থঃ। সিবিভক্তেরিভাবে অলোপেশুবিক্ষি ত্বিষ্দাপ্তো সণি অত্বিক্ষৎ পিষ্কতিয়াবিনিময়ে আত্মনেপদে ব্যত্যপিক্ষত। মিহেতি। হোঢ়ঃ মঢ়োঃ কঃ সেমত্বে অমিক্ষৎ এবমরুক্ষৎ। উদসুবন্ধতাদিতি। রধাদ্যদুক্ব্রতইত্যনেন। হোঢ়ঃ সধ্বকারয়োস্থতীয়াদ্যাইত্যাদি নাত্র্যাদ্যাহেষ্যঢ়োঃ কঃ সে অযুক্ষৎ লিহ্ অলিক্ষৎ। অনন্তইতি। শুবিক্ষন্তেতি। সত্বিভক্তি স্থানেহন্তভাবে নান্তলোপঃ শুবিক্ষণাঃ। ৩৬৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

সণোহন্তেতি। অলুক্ সণঃ স্বরেহনন্তেইত্যক্ত্বাহন্তলোপকরণং স্বরাদেশকার্যাদিপি লোপস্থ বলবন্ত্বার্থম্ অতোবক্ষ্যতি ইকারাপবাদইতি অন্থথা স্বরাদেশত্বেন লোপাপেক্ষ্যা ইকারাদেশস্থ বলবন্ত্বাৎ কথমিকারাপবাদঃ স্থাৎ। অত্বিক্ষদিত্যাদি। ত্বিষ্ ভুউ পিষ্ঠ সংচূর্ণনেরুপ মিহ্ সেচনে ভুপ রুহ্ বীজ-জন্মপ্রাত্মভাবয়োঃ ভুপ গুহুসম্বরণে ভুউ লিহ্ আস্বাদনে অউ সর্ব্বিত্রস্তুনীবদ্ধাবঃ। ৩৬৫॥ দন্ত্যাদাবাত্মনেপদে। দিহি ত্বহি লিহি গুহি ভাস্তুসগস্তু পাক্ষিকঃ।
সণএবলুক্দ্যাং। লুগ্লোপ্যইত্যাদিনা প্রকৃতিভাবঃ আদিচতুর্থনিরতিঃ অদিধ অধিক্ষত অত্ত্বধ অধুক্ষত অলীচ অলিক্ষত অপূচ অযুক্ষত। দন্ত্যান্তথধাঃ অত্ব্বধাঃ অত্ব্বধায় অধ্বক্ষত অলীচাইত্যাত্ময়েং। দন্ত্যাদোকিষ্ অধুক্ষাতাম্ অধুক্ষত অধুক্ষি অধুক্ষাহি। নাম্যুপান্তাংকিষ্ অদাংক্ষীং অবাংশীৎ গাহ্বিলো-ডনে অগাচ অযাক্ষাতাম্ অযাক্ষত। অনিটঃ কিষ্ অগৃহিষ্ট এশিষ্ট। শিড়ন্তাং কিষ্ অতিপদাং অচেজিপাং অচ্ছাপ্সাং দৃশিবজ্জিতাং কিং সিচির্দ্ধৌ। ৩৬৬॥

প্রভাপকাশিকা।

দন্তা। দন্তাদে আত্মনেপদেপরে দিহ্ তুহ্ লিহ্ গুহএন্ডোবাসণ্ লোপঃ স্থাৎ। শিড়ন্তাৎ সণি সণ্ লোপঃ। অদিন্ধেতি। সণিদাদিহস্থ ঘ্রেতুর্য্যাদ্যম্বেদলোপ সণ্লোপেতুর্য্যাদ্যম্বনির্ভে হত্ধভতইত্যাদি সণ্ লোপাভাবপক্ষেলিঙ্গবদিতি ঘস্ত কেষত্বম্ অধিক্ষত তুহ্ হোঘঃ তুর্য্যাদ্যম্বং সণ্লোপঃ অত্র্য্য লিহ্ সণিহোতঃ সলোপে সণ্লোপে ঘত ধ ভ ত ইত্যাদিনাতস্থধত্বে চটবর্গাবিত্যাদিনাধস্থতত্বে ধাতুতোতেইতি তলোপে পূর্বিদীর্ঘঃ অলীত সণ্ লোপাভাবে মতোঃ কঃ হস্তনীবদ্রাবঃ অলিক্ষত। দন্ত্যাইতি। তবর্গস্থাদন্তব্যহং। সণোহন্তলোপে অধুক্ষি। অদাং ক্ষীদিতি। দন্শ্শিডন্তত্বেহপি নাম্যপান্তব্যভাবাৎ সণভাবে অনিটান্থিতি অগ্রেলযুগ্রহণাদিহসংযোগপুর্বেস্থাপি বৃদ্ধিঃ নস্থাবিন্দোন্তম্বং। গুহুবেট্ সণভাবে ইটিগুণেওকার উঃ স্বরে। ঐশিষ্টেতি। ঈশ্ শিতন্তহিপি সেট্রাম্মণ্। অতৈপ্লীদিত্যাদি। আপিব-পীতিনেট্ শিতন্তবাভাবান্নাত্রসণ্ অনিটান্থিতি বৃদ্ধিঃ! সিচিবুদ্ধাবিতি। অনিটান্থিত্যনেন। ৩৬৬॥

গৃতপ্রকাশিক।।

দত্যেতি। দত্যাদন্তভবাস্তথনা আদয়োযস্ততাদৃশে আত্মনেপদেপরেদিছি ছুছিলিছিগুছিভ্যঃ পরস্থানিকঃ সণস্ত্রদান এবলুক্স্যাদিত্যর্থঃ। চোহবধারণে। যদ্যপিলুগিত্যস্তসম্পদাদিকিবন্তত্বেন স্ত্রীলিঙ্গত্বঃ ভবিত্মইতি তথাপিক তশ্চাস্ত্রচেতিবচনাং ধ্বনি লুক্ নীর্দাদেঃ পুংস্বঞ্চ তেন ত্বিশেষণস্থপাক্ষিকইত্যন্ত যু পুংস্বৃন্ন। লুগিত্যস্তকলমাহলুগ্রোপ্যইত্যাদিনেতি। অদিগ্রইত্যাদি। দিহ্উপচয়ে অ উ তুহ্ প্রপুরণে অ উ লিহ্ আপাদনে অ উ গুহু সম্ববণে ভুউ। দন্ত্যাইতি। দন্তেরুভবাদন্ত্যাঃ দিগাদিভ্যোভবার্থেয়ঃ ইবর্ণাবর্ণযোলোনে পোষেচাযোত্রিকিতেপরেইত্যকারলোপঃ ব্যক্তনং পরগামিতেচ অত্রতথধাঃ ৯ ঃ তবর্গোলকারঃ সকারণ্টেতি দন্তগাইতি বক্ষ্যমাণবচনাং। ইত্যাত্যুন্নের্মিতি। স্তাম্প্রভিত্ত্ব অদিগ্ধাম্ অদিগ্ধম্ অদিগ্রইত্যাদিকস্থানের্মিত্যুর্থঃ। অদাং ক্ষাদিত্যাদি। দন্শু দংশনেভুপ সীতি অভাপমেঅনিটান্বিত্যাদিনা রক্ষেণ্ট্যতেচ ছশোঃ বহুং যঢ়োঃকঃ সেমহং নস্থবিন্দুঃ কেবিন্দোর্ডকারঃ। বস্নিবাসেভুপ অভাগমের্দ্রোচ অনিংস্বান্ত্র স্তাদিভিধাত্সস্ত্র । গাহুভুআ ঈশ্ঐশ্চর্যে অ আ তিপ্ ক্ষরণে ভুআ অস্ক্রচাদিছেন পরিস্থান্যপিন তিন্তর স্ত্রটীকারাং বক্ষ্যতি। ছুপ্ স্পেশ্রেভ্রপ। ৩৬৬॥

অর অরশ্চ বর্ণস্থ ব্যত্যাসঃ সৃজ্ দৃশোর্ষ্টি। অপ্রাক্ষীৎ অপ্রাক্ষীয় অদ্যাক্ষীৎ অদ্যান্টাম্। ধুটিকিম্ অদর্শত্। ৩৬৭॥

তৃপ্দৃপ্সৃপায়া। অরার্ব্যত্যাসঃ তৃপির্ তৃপ্তৌ অত্রাপ্সীত্ অতাপ্সীৎ দৃপির্হর্ষে অদ্রাপ্সীৎ অদাপ্সীৎ রধাদিস্বাদেট্ অতপীৎ অঙ্ অতৃপৎ অদৃপৎ সৃপু অঙ্ অসৃপৎ। ৩৬৮॥

রুষি মূশি স্পৃশিভ্যঃ সণ্চপাক্ষিকঃ। ধুট্যরার্ব্যত্যাসঃ। অরুক্ষণ অক্রা-ক্ষাণ অকার্ক্ষণি অমুক্ষণ অত্যাক্ষীণ অস্পাক্ষীণ অস্পাক্ষাণি এ৬১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অর। অরআরশ্চ অর্ আর্ স্বরূপশুধুটিপরেব্যত্যাদঃ স্থাদিত্যর্থঃ। গুণেঅর্র্দ্ধৌ আর্ ব্যত্যয়েশস্থ্যস্থাদি। ৩৬৭॥

গৃতপ্রকাশিকা ৷

অরইতি। অর আরশ্চেতি ষষ্ঠান্তে। গুণেদ্রন্থীস্রন্ধীইত্যাদাবরোব্যত্যাসঃ প্রাকৃপ্রদর্শিতঃ অত্রেদ্ধি আরোবর্ণস্থাত্যাসঃ। সজ্ বিদর্গনিশ্বাণয়োঃ তুপ্ দৃশির প্রেক্ষণেভুপ জশয়োঃ যত্বং যঃ কঃ বিভক্তিসস্থারঃবকারাৎ ত্যাটঃ। অদর্শদিতি। সীতি অঙ্বাদ্যাস্জ্ দৃশোগুণীতি অঙ্গুণশ্চধুট্ পরত্বাভাবান্ধারোব্যত্যাসঃ। ৩৬৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তৃপ্। এবামরআরশ্চব্যত্যাসঃ স্থাদ্বাইত্যর্থঃ। আর্ব্যত্যয়েঅত্রাপ্নীৎ ইটঃ সিজ্লোপে অতপ্নীৎ অঙ্স্যাদিরসুবদ্ধেতি অতৃপৎ পুষাদেরিতি ৯কারানুবন্ধন্বাদঙ্ অস্পৎ। ৩৬৮॥

গূতপ্রকাশিকা।

তৃপ্ইতি। তৃপির্ দি স্বাপ দৃপির্ দিপ, স্প্লগতৌভুপ। রধাদিছাদিতি। বাস্ সূয়তিধৃঞ্ স্তিরণাদ্দেসুবন্ধতইতি সূত্রাদ্বেডিত্যর্থঃ। তেন তৃপ্দৃপোশ্চত্রপাণি স্পোরপত্রয়মিতি। ৩৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কৃষি। কৃষ্ মৃষ্ স্পৃশ্ স্পর্শনেএভ্যঃ সণ্তপাক্ষিকোধুটিপরে অর্ আর্ ব্যত্যাসশ্চবাদ্যাৎ। সণি-অকৃক্ষৎ অনিটান্ত্রিতিরুদ্ধো আর্ব্যত্যাদেঅক্রাক্ষীৎ। ৩৬৯॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

কৃষীতি। কৃষ্ বিলেখনেতুউ মৃশ্ আমদিনেতুপ স্পৃশ্ তুপ ধাতুনির্দেশেইঃ। পরত্রনির্বত্তার্থং পাক্ষিকইতিগ্রহণং গাথাছনঃ। ৩৬৯॥ ইনন্ত শ্রিক মিদ্রুভ্যশ্চঙ্ কর্ত্তরি। অদ্যতন্যাং পরতঃ। চঙি দ্বির্ধ চনাদিকার্য্যম্ ইযুবৌচ। অশিশ্রিয়ং অচকমং অদ্রুদ্রুবং। ৩৭০॥

ব্রুবাইপিচ। অস্কুব্রুবং পাদযুগং। চরণযুগমস্কুব্রুবদিতি মাঘপ্রয়োগঃ। এবাচং দেহিধৈর্যাং ন স্তবহেতোরস্কুব্রুবদিতিভাট্টঃ। ব্রুবঃ কিম্ অশ্রোধীং। তাত বিশ্বামিত্রমুখাদক্রোধমিত্যনর্যঃ। ৩৭১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইনন্ত। প্রিঞ্ কমুকান্তোহিক্ত প্রকারত। ইর্বাবিতি। অশিত্যাযাদয়স্তবেতি ভিনোবিকল্প-পক্ষে। ইন্চঙিঅচীকমদিত্যুদাহরিষ্যতি। ক্রু অতুক্রবংউব্। ৩৭০॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

ইনন্তেতি। ইনন্তশ্চশ্রিঞ্দেবায়াং শ্রিশ্চ কমুকান্তৌভুত্থাকমিশ্চ জ্রু ভুপদ্রুশ্চেতিদ্বন্তঃ ; দ্বির্বাচনাদীতি। আদিনাঅভ্যাসহল্লোপাদি। ইযুবাবিতি ইবর্ণোবর্ণয়োরিত্যনেন। ইনন্তস্যপ্রয়োগঃ পশ্চাদাস্যতে অত্রশ্র্যাদীনামিতি। ৩৭০॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

ক্রানে বিদ্বান্ধর ক্রান্ধর ক্রান্ধর ক্রান্ধর কর্ত্তি চঙ্কর্ত্তি । চরণেতি । গুরুনিবিড়নিতম্বভারাক্রমণ নিপীড়িতমঙ্গনাগণস্থ । চরণযুগমস্রক্রবং পদেয়ু স্বরসমশক্তমলক্তকছলেনেতি । অস্থার্থঃ অঙ্গনাগণস্থ চরণযুগং পদেয়ু স্থানেয়ু স্বরসং নিজলোহিত্যঃ রুধিরমিতিকেচিং অস্ত্রক্রবং উজ্জগার অলক্তছলেন লাক্ষাব্যজেনকী অশক্তমসমর্থং কুশমিতিয়াবং অত্তহেতুমাহ গুরুরহংনিবিড়ং কঠোরং যন্নিতম্ববিদ্বং তস্থ ভারাক্রমণেন গোরবযন্ত্রণেন নিপীড়িতম্ অন্তদপি ভারপীড়িতং রুধিরমুদ্বমতি । অশ্রোবীদিতি । রুদ্ধিঃ স্বরান্তস্থেত্যাদিনার্দ্ধিঃ । অত্তকেচিদ্ব্যস্থাকারক্রধাতোরকর্মকত্বং মন্তমানামাঘে ইনন্তক্রধাতোরস্থক্রবদ্দিতিপঠেং কল্পরিয়াতালব্যশকার ক্রাত্রর্থ ক্রধাতোঃ ক্রাব্সবেতি সূত্রং পঠিয়া বিকল্পেন চঙ্গিধায় অভ্যাবং অশ্রোবীদিতিরপদ্বমাত্তঃ । তন্পপাণিন্যাদি ব্যাকরণবিরোধাৎ মহাকবিপ্রয়োগস্থান্তথাকল্পনানর্হয়ংবদ্বাহাং সকর্মকত্বন ক্ষরণার্থন্ত ক্রধাতোরপি সকর্মকত্বাচ্চেতি । যথারন্দাবন্যমকং বিদ্ধচ্ছন্মশ্ছনঃ কৃটজৈঃ ক্ষরতি প্রগীতগোপোহগোহপইতি । অগোগোবর্দ্ধনঃ অপোজলানিক্ষরতি প্রবতীতিযোজনা । যদ্বা হ্যক্রগতাবিত্যন্ত দন্ত্যসকারবতোধাতূনামনেকার্যত্বাদারণার্থন্ত রূপম্ । ৩৭১ ॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

শ্রুবইতি। শ্রুপুপ অস্তশ্রুবৎ চঙোঙ্মুবন্ধত্বেনাগুণস্বান্ত্ব্। এবাচমিতি। স্থানোমতি মিবাধানীর ক্রীপ্রাণানিবাদধইতি পরার্জ্ধঃ। এসম্বোধনে। তথাচমেদিনী এক্ষুতাবপ্যসূত্মানুকম্পামস্ত্রণহূতিধিতি। রাবণাপহ্নতাং সীতামুদিশ্ররামবাক্যমিদং। তাতেতি। অনর্যরাঘবচুর্ণিকাইয়ং। ৩৭১ ॥

इनाल्खनमानामानामन्यविक्तार । इन् ठषुाशास्त्र नार नमकावकरत লঘৌ। উপাগুরুলঘোদীর্ঘঃ। ইন্ চঙীত্যধিকারঃ। এষাং ধাতুনামভ্যাস কার্য্যং প্রতিসন্থং লঘুধাত্বক্ষরে পরে উপসমীপে নান্তিগুরুর্য্যস্য তল্য লঘোর্দ্বীর্যঃ স্যাৎ ইল্লোপঃ অচীকমৎ অচীকরৎ অজীগমং অজীহরৎ মাত্রং চীকরঃ। অচ্-চুরচ্চক্রমসোইভিরামতাং। অজ্গুনং অনীনৃণং অন্তস্ত জপবর্গেত্যাদিনা ইন্ কার্য্যে রদ্ধি সন্ধ্যাদিকেরুভেদিঃ অ্যাযবং অরীরবং অলীলবং জুরিতি সৌত্রো-ধাতুরশ্বাদীনাং গতিবিশেষেবর্ত্ততে অজীজবং অপীপবং অবীভবং অন্তস্থজ পবর্গস্থোবর্ণেন্কার্য্যাদন্যত্রয়দ্ধিদক্ষ্যন্ত্যক্ষরাদিলোপাৎ প্রাগেবদিঃ অভ্যাত্তবৎ অদূদবং অদূধবৎ অজূহবৎ মাভবানটীটং ঔজচে। অশাসদসুবন্ধিনাং কিম্ অশশাদৎ খাদৃ অচ খাদৎ ভাসৃ অবভাদৎ চকাসৃ অচচকাদৎ অচচকাসতাং। ইনালুপ্তাসমানানাং কিম্ অচকথৎ কথগণাদয়ো ২দন্ত চুরাদয়ঃ অমহালৎ হরৎ পটং দৃশঞ্চাখ্যৎ অজহরৎ অপপট্রৎ অদদৃশৎ অত্যজহন্তং ইন্যলুপ্তেতি বিশিষ্ট নিৰ্দেশাৎ ঞিমিদা অমীমিদৎ ত্ৰদী অতিত্ৰসৎ ইতিসন্বং। লখে কিম্ অশশং-সং। লঘোঃ কিম্ অনিহ্যাৎ অবিভ্ৰমং। গুৰুসমীপস্বৰ্জনাৎ অটিটৎ অধ্যাপি-পং। ইন্চঙীতি। কিম্অচকনত। ৩৭২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইয়। ইনিপরে অনুপ্তঃ সমানোযেবামিতিবিএইঃ অলুপ্তসমান সংজ্ঞকানাং শায় ঝদকুবন্ধ-ভিন্নানাং ধাতৃনামিন্ চঙিপরে উপান্তব্রস্থঃ স্থাৎ। সনীবসন্থংকার্য্যে অতিদিশ্যতে সপ্তম্যস্তাত্নপ্রনানাত্নপমেরেবিতঃ। লঘৌ ধাত্মকরে পরে শুর্কস্মীপে লঘোদীর্যঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অচীক্মদিতি। কমের্ডিন্ কাময়তে কশ্চিত্তমিতরঃ প্রযুঙ্জে হেত্বধীনধাত্বর্থে সর্ব্ধগতুতইতি ইনিইকামস্থৈবেত্যাদিনা রদ্ধৌ কামিধাতোঃ চঙিদ্বিভাবেক্রস্থঃ কস্থচঃ ইন্ চঙ্গুপান্তব্রস্থে সম্বদ্ধাবে সন্থবর্ণ ইরভ্যাসে উপাপ্তর্মলযোদীর্ঘেইলোপইডনামাদিবর্জ্জেস্পপ্রত্যয়াৎহন্ত্মনীবপঠনীয়া। এবং গম্ পরস্থৈ অজীগমৎরদ্ধৌমিতাং ক্রস্থঃ কঞ্ছহরতিকশিচ্দিতীনিহারিধাতোঃ অজীহরৎ কুঞ্অচীকরৎ মাযো-গেহডভাবেমাত্বং চীকরঃ। অচুকুব্দিতি। চুরস্তেয়েচুরাদেরিন্চোরিধাতোঃ চঙিউপান্তব্রস্থেওকারতঃ উপাপ্তরুলঘোদীর্ঘঃ অভিরামতাং সৌন্দর্যাং। মহামহানীলশিলাক্রচঃ পুরোনিযেদিবান্কংসকৃষঃ সবিফরে। ভিতেদেয়ান্দেরভিমায়মুচ্চকৈরচ্চুরদিত্যাদিশেযোমাঘে। অজুগুন্দিতি। গোশ্চনোশ্চেতি দ্বন্ধঃ গোনাবাবাথ্যদিতিতৎকরেতিত্যাদিনাগোনেশিকাদিনি একলিঙ্গতাপ্রাপ্তবাক্যস্থ সমাসত্বাৎ

গোনোলিক্ষত্ত লিক্ষতানেকাক্ষরতেত্যাদিনাহত্ত্যস্বরাদিলোপে গোনিধাতোশ্চঙি গোদিছেইস্বেউক্তে গশুজত্বে উপাগুরুলঘোদীর্ঘঃ ইল্লোপাদি। অনীনৃণদিতি। নাচনোখেতিবিগ্রহেনৃনোশকাৎনৃনাবাখ্য দিতীনিচঙ্দ্বিব্বচনেঝবর্ণস্থাকারঃ সম্বদ্ধাবেদন্থবর্ণ ইরভ্যাদেদীর্ঘাদিণত্বং। অযীযবদিত্যাদি। পুভূধাতুভাইনি অযীযবদিত্যাদিরূপাণি। অতুঊবদিত্যাদি। স্ত ছু ধূ ত্ধাতুনামিনন্তানাং রূপাণি। মাভবানিতি। অট্থাতোরিনির্দ্ধো পরবর্ণযোজনেচঙি উপান্তহ্রস্ববিতীয়াক্ষরবিভাবো উপাত্তরুলঘো-দ্বীর্যন্থং মাযোগেধাত্বাদ্যচোনরদ্ধিঃ। ইল্লোপাদি। ঔজচদিতি বহনমূচং ভাবেক্তাদি উচমাথ্যদিতি ইনিচঙ্ডি অকারলোপাৎ প্রাগেবদ্বিতীয়াক্ষরতস্থাদিঃ পশ্চাদস্ত্যস্বরলোপঃ আদাবচাংরৃদ্ধিঃ উঢ়োচকারস্থা-ভ্যাদেজঃ স্থাদিতিত স্তলঃ ইল্লোপাদি। অশশাদদিত্যাদি।. শাসঃ পাঠাৎখাদৃপ্রভৃতীনাম্ ঝদমুবিশ্বিত্বা-অচকথদিতি। ইনিধাহন্তস্থাস্থলোপঃ স্থাদননীতি অকারস্থ সমানস্থলোপাৎ মোপান্তহম্বাদি। অম্মালদিতি। মালামাখ্যদিতীনি অন্তঃম্বরাকারস্ত স্মানস্তলোপাৎলুপ্তস্মানত্বং। बमबद्धावानि । হরমিত্যাদি। আদ্যরোরকারস্থশেষস্থান্ত্যস্বরাদেরকারাদের্লোপাৎলুপ্ত সমানত্বমতোনসন্থ। অত্যজ হস্তদিতি। হস্তিনমতিক্রামতি সাইতীনিঅস্তাম্বরাদেরিকারাদের্গেপাৎ লুপ্তদমানত্বেনলযুধাত্বক্ষরেংপি নসন্থ। ঞিমিদাইতি। ঞিমিদাস্থেহনেলোপ্যোহসুবন্ধইত্যনেনঞেরাকারস্তচলোপানন্ত:মিন্নিধানাদিক লুপ্তদমানত্বম্। অমীমিদদিতি। হৈতুকেনন্তমেদিধাতোশ্চঙি উপান্তহ্রস্বঃ দরভাবে অভ্যাদে অস্ট্রস্বম্ ত্রদীতি। ত্রদীউরেণেভুবাদির্দিবাদিশ্চ অতাভ্যাদেইকারস্থ সংযোগপুর্বতত্ত্বন छेशाञ्चकलरपाकीर्यः। অশশংসদিত্যাদি। উভয়ত্রসংযোগপুর্ববেননিমিত্রব্যুণাত্রক্ষরাভাবান্নসন্ত্র। প্রক্রামদীর্ঘঃ। অদিত্যুদিতি। ইনন্তদ্যোতিধাতোশ্চঙিহ্রস্বসন্তর্ভাবৌদ্বিভাবেসম্প্রসারণমভ্যাদেব্যথিত্যুত্যোরিতি সম্প্রসারণং সংযোগপূর্ব্বস্মগুরুত্বন লঘুষাভাবান্নদীর্ঘঃ এবমবিভ্রমদিতি। আটিটদিতি। আটিধাতোর্দ্ধিতীয়াক্ষর দ্বিভাবে আকারগুরু সমীপস্থেকারস্থন দীর্ঘঃ। অধ্যাপিপদিতি। অধিপূর্বাদিঙঃ অধ্যগীষ্টকশ্চিত্তমন্তঃ প্রায়ঙ্কেতিইনি আসরস্থাজিক্রীঙামিতীকারস্থাত্বে অর্তিহ্রীরীত্যাদিনাপাগমঃ অচকমতেতি। ইনন্তশ্ৰিকমীত্যাদিনাহনি নন্তাৎ কমেশ্চঙবিধানান্নাত্ৰইন্চঙ্। ৩৭২॥

গৃত্পকাশিকা।

ইললুপ্তেতি। ইনিঅলুপ্তদমানদংজ্ঞকানাং •শাদশাদমুবন্ধভিন্নানাং ধাতুনামিন্চঙিপরেউপান্তব্রুদ্ধং স্থাৎলঘোধাত্বক্ষরেপরেচঙ্দরৎদনীবকার্য্যমন্ত্যাদইং চঙাপিস্থাৎ উপাগুরুলঘোঃ গুর্বদমীপবর্তিলঘোদীর্যং স্থাদিত্যর্থং। উপলযুলঘোদীর্যইত্যুক্তে আটিটদিত্যত্রটেরিকারস্থদীর্যদ্বাপত্তেঃ উপাগুরুলঘোরিত্যক্তে বুনতদাপত্তির্নিকটবর্তিগুরুষাৎ। অধিকারইতি। স্তেম্যাদিজিতিসূত্রাৎপ্রাক্ । অচীকমদিত্যাদি। কমুকান্তোতু সা গম্৯গতোত্বপ কঞ্হরণেভুই ছু কুঞ্করণেতই। অযাযবদিতি। যুমিশ্রণামি প্রণয়োঃ অপ যুঞ্বন্ধনেক্র্যাপ্রয়োতিব্যাতিবাকশ্চিত্মিতরঃ প্রযুঙ্কেম্মেতিইনির্দ্ধো আবাদেশেপরগামিশ্বে অভ্যাগরেচ অভ্যাসহ্রে অভ্যাসইত্রে ইন্চঙ্গুপান্তব্রুমে লঘোধাত্বক্ষরে উপাগুরু লঘোদীর্যঃ। এবমন্তেম্বপি। কুঙ্গাতিহি স্যোঃ ভুআ কুরাবে অপ লুঞ্ছেদনে জ্যাই জুবেগগতোভুপ পৃঙ্পবনে ভুআ পৃঞ্পুতোজ্যা পৃঙ্পুজারাং চুপ ভূসভারাং ভুপ ভূচিন্তামিশ্রণশুদ্ধিয়ু চুপ ভূপ্রাপ্তো চুআ জু উ ফুঞ্ স্ততো অপ হুগতোভুপ চুহু উপতাপে যাপ দূঙ্ উপতাপেদিআব্যামদূদবদিতি। ধুঞ্ ধৃঞ্কম্পনে ক্র্যাস্থাই হুদানে জুপ অট্

ভাজভনাদের্দ্বর্য । উপাস্তহুস্বঃ সম্বচ্চ। ভাজঅবিভ্রজংঅবভাজং এবং ভাসূভ্রাস্তাদেঃ অবীভণং অবভাণৎ এবং রণ্দীপ্মীন্পীড্রুষাং। ৩৭৩॥

ত্বরাদীনামিকারোইত্বং। প্রাপ্তেচ্ডীনিপরে। অতত্বরৎ পৃথুমূদোরিনি রদ্ধাবন্ত্যস্বরাদিলোপঃ। রঋকার্ন্যপৃথাদেঃ অপপ্রথৎ অমন্ত্রদৎ আদিনাদৃস্তৃ স্থগোগ্রাহ্যাঃ অদদর দিত্যাদি। ত্বরাদীনাং কিং পট্ং হরিঞ্চাখ্যাৎ অপীপটৎ অজীহরং। ৩৭৪॥

গতোভুপ। ঔরত্দিতি। বহ্পাপণেভুউ কর্মণিক্তেসম্প্রদারণেহোতৃইত্যাদি কার্যানন্তরম্ উত্যাখ্যাদিতীনিচঙাদি। শাস্ত্রঅমুশির্ফো অপ থাদৃ অদনেভুপ ভাস্দীপ্রোভুআ চকাস্দীপ্রো অপ কথনাক্পুরক্ষে
অদন্তচুরাদিঃ দৃষদং শিলাং। ঞিমিদাভুআ দিপত্রদীপ। শন্স্তকথনপ্রশংদাহিংদাস্তভুপ দন্শদংশনে
ভুবাদ্যন্তর্গতদন্শাদিপ ত্যুৎদীপ্রো ভুআ ভ্রমুদঞ্জননেভুদিপ। আটিটদিতি। উপাগুরুলঘোদীর্ঘইত্যমুক্তে
উপলঘুলঘোদীর্ঘইত্যুক্তেবার্টিসমীপবর্ত্তিলঘুটকারসত্ত্বাৎসমীপবর্ত্তিগুরুসত্তেইপিদীর্ঘঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অধ্যাপিপদিতি। অধিপূর্ব্বইঙ্মধ্যয়নেঅআ। অন্তৎপ্রভাপ্রকাশিকারাংক্ষেয়ং। ৩৭২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভাজ। আদেরভয়ত্রাষয়াৎ ভাজাদেরভণাদেশেচত্যর্থঃ। অবিভাজদিত্যাদি। অত্র ব্রস্থমন্ত্রাবেণ পরত্রদ্বয়োরভাবঃ। এবমিতি। অবিভ্রমৎ অবভামৎ অবিভূমৎ অবভামদিত্যাদি। অবীভণদিত্যাদি। অত্রস্থমন্ত্রাবদীর্যাঃ পরত্র উভয়াভাবঃ। এবমিত্যাদি। রাণি অরীরণৎ দীপীদীপ্তো অদীদিপৎ অদিদীপৎ অণীপিড়ৎ অণ্ রণ্ বণ্ ভণ্ মণ্ কণ্ কণ্ ষণ্ ভণ্ শব্দার্থাঃ অচীকণৎ অচকাণৎ কুষ্ নিক্ষেষ্ব অচুকুন্ধৎ অচুকোন্থ। ৩৭৩॥

गृष्धकाशिका।

ভাজিতি। টুভাজ্দীপ্তে তুআ ভণ্ শব্দৈ ভূপ ভাজ্চ ভণ্চেতিদ্বন্ধঃ ভাজ্ভণাবাদীয়স্ত দ্বনাৎপরঃ
পূর্বোবা শ্রেমাণঃ শব্দঃ প্রত্যেকমভিসম্বয়তে ইতিভায়াদাদিশব্দ্যোভয়ত্রাম্বয় তেন ভাজাদের্ভণাদেশেচত্যর্থঃ। অত্রচকারঃ প্রধানদ্বয়সমুচ্চয়ার্থস্তেন উপান্তহ্রম্বঃ সম্বচ্চ। অবিভ্রজদিতি ইন্ চঙি ভাদ্বিভাবে
অভ্যাসহ্রম্বে অনাদি হলোপে উপান্তহ্রম্বেদম্বভাবেদভাবর্ণ ইরভ্যাদে স্বপ্রয়াদিতি দীতোদিঃ। ভাস্বভালাদেরিতি। টুভাশ্ ভাস্ভাশ্ভাস্দীপ্তো ভুদিআ আদিনা ভাশ্ভাশ্লাদের্গ্রিং। রণ্শব্দে ভূপ দীপ্
দিআ মীল নিমেষ সঙ্গোচয়োঃ ভূপ পীড় অবগাহন পীড়নয়োঃ চুপ কৃষ্ ক্র্যাপ। ৩৭৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ত্বরা। অতত্বরদিতি। ত্বরিধাতোশ্চঙিদ্বিত্বে অনাদি হল্লোপে সম্মবর্ণ ইরভ্যাদে ইত্যকারস্থ ইত্তে অনেনাত্বং। পৃথুং মৃত্বং চাথ্যদিতি তৎকরোতি তদাচফ ইত্যাদিনা ইনীতার্থঃ। বৃদ্ধাবিতি। স্বরাদেশত্বেনবলবত্ত্বাদিতার্থঃ। অপপ্রথদিতি। প্রথিধাতোশ্চঙি সমন্তাবেদ্বিত্বে অনাদিহল্লোপে সম্মবর্ণ ইতীকারঃ তম্মাত্বং। এবমপরত্র। আদিনেতি। স্থ অতস্তরৎ স্মৃত্মসম্মরৎ অপম্পার্শং। ৩৭৪। বেফিচেফ্যোর্বিভাষয়া। ইকারোহত্বং প্রাপ্তোতিবা। **অববেফং অ**বি-বেফং অচচেফং অচিচেফং। ৩৭৫॥

গণের্চ্জকারোজী। বাস্যাৎ। অজীগণং অজগণৎ। ৩৭৬॥ দ্রাপেরাকারইঃ। বাস্যাং। অজিঘ্রিপং। অজিঘ্রপং। ৩৭৭॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ত্বরতি। ঞিররাবেগে ভূআ। আদিনেতি। দৃভ্য়েভূপ দৃবিদারে দিপ দৃবিদারণভয়য়োঃ ক্র্যাপ এষামদদরৎ স্তৃ আচ্ছাদনে ক্র্যাউ স্মৃচিস্তায়াং ভূপ স্পৃশ্ স্পর্শেরুপ্। অদদরদিত্যাদিনা অতস্তরৎ অসম্মরং অপস্পর্শং। অপীপটদিত্যাদি। পটোর্ছরেশ্চ ইনি ইকামস্যৈবেত্যাদিনাদোর্দ্ধিঃ ততওঁকারৈ-কারয়োল্লোপে অনুপ্রসমানত্বাৎ চঙিদ্বিভাবে ইন্ চঙ্গুপাস্তহ্নস্থাদি পরত্রাভ্যাদেহোজঃ নাত্রইকার-স্থান্থং। ৩৭৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বেস্তি। ইকারস্থাত্বে অববেষ্টং তদভাবে অবিবেষ্টং। এবং পরোদাহরণদ্বয়ে। বেষ্ট্রেষ্টনে চেষ্ট্ চেষ্টায়াং ভুবাদ্যাত্মনেপদিনো। ৩৭৫॥

গুঢপ্রকাশিকা।

বেষ্টীতি। অত্রবিভাষয়েতিগ্রহণাৎ পূর্ব্বসূত্রেনিত্যম্ অন্যথাতৎপদগ্রহণবৈয়র্থ্যাপতেঃ। ৩৭৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গণে। অজীগণদিতি। গণসগ্যানেহদন্তশ্চুরাদিঃ ইনিধাত্বনোপঃ ইনিলুপ্তসমানত্বাল্পসন্থতিত্ব ক্বর্গস্ম চবর্গঃ জীভাবঃ জীঅভাবপক্ষে অজগণৎ। ৩৭৬॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

গণেরিতি। অজীগণদিতি। অজীগণদাশরথং নবাক্যং যদাসদর্পেণ তদাকুমারঃ। ধমুর্ব্যকার্যী-দ্গুরুবাণগর্ভং লোকানলাবীদ্বিজিতাংশ্চতক্ষেতি ভট্টিঃ। ৩৭৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ত্রাপে। ইন্চঙিস্থাদা। অজিপ্রিপদিতি। প্রাপিধাতোশ্চঙি আকারস্থাচ ঈদ্বেষ্টিদ্বিদ্ধিচনে বা ব্রুমানাদিহল্লোপচতুর্থ তৃতীয়ত্ব কবর্গ চবর্গহানি প্রাপক্ষেমন্তাবে অভ্যাসাকারস্যইঃ। ইকারাভাব-পক্ষেধাভূপান্তব্রমঃ। ৩৭৭॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

ত্রাপেরিতি। ইনন্তস্ম ত্রাগন্ধোপাদানেইত্যস্ম আকারইঃ স্থাদ্বাচঙিপরে। অজিন্ত্রিপদিত্যস্তং ছন্দঃ। ৩৭৭॥ নিত্যংস্থাপেঃ। আকারইঃ। অতিষ্ঠিপং। ৩৭৮॥ পায়য়তেরলোপঃ। অপীপ্যং। ৩৭৯॥ হ্বয়তেস্তুহুঃ। অজূহবং। ৩৮০॥ স্বাপেঃ স্বাস্থঃ। অসূযুপং। ৩৮১॥

শ্বেস্ত্রপ্তর্রা। অশৃশবদশিশ্বরং। ৩৮২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নিত্যং। অতিষ্ঠিপদিতি। স্থাপিধাতো চঙি স্থাদিঃ হ্রস্বঃ অঘোষোর্দ্ধ শিভ্লোপঃ দিতীয়স্থপ্রথমঃ সম্বদ্ধাবেদত্যবর্ণ ইরভ্যাদেয়ত্বং দক্ষিঃ। ৩৭৮॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

নিত্যমিতি। স্থাধাতোরিনি অর্তিহ্রীরিব্লাদন্তাৎপঃ স্থাপিঃ তস্থা। অতিষ্ঠিপদিত্যত্র দ্বিভাবাভ্যাস-কার্য্যানন্তরং স্থাকারস্থাইঃ মন্বানন্তরং যকারাচ্চেতিসন্ধিঃ। ৩৭৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পায়। ইন্চঙি। অপীপ্যদিতি। পাধাতোরিনি শাছাসাহ্রাব্যাবেপাং যইতিযাগমেপায়ি-ধাতোশ্চঙ উপাস্তহ্রস্কঃ সম্বদ্ধাবাদি অকারলোপেপ্রগমন্ম্ ইল্লোপাদি। ৩৭৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

পায়েতি। ইনস্তস্থ পপানেইত্যস্থাকারলোপঃ। ইনন্তপারক্ষণেইত্যস্ভূপাতেল্ল ইতিলাগমে অপীপলদিতি। ৩৭৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হবয়। হ্বেঞ্ইনিচঙি হু আদেশেদ্বিব্দচনাদিততোবৃদ্ধ্যাদি। ৩৮০॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

হ্বয়তেরিতি। হ্বয়তেরিত্যনিনন্তপ্রয়োগঃ তুঃ পুনরর্থেতেনহ্বয়তেঃ হ্বেধাতেঃ স্থানেপুনরিন্চঙিহুঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ৩৮০ ।

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্বাপেঃ। ইন্চঙি ইনন্তম্বপ্ধাতোঃ স্বাস্থ্য স্থাৎ। অসূমুপদিতি। স্বপইনির্দ্ধোচিঙি স্তভাবে-দ্বিবিচনাদিযক্ষঃ। ৩৮১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্বাপেরিতি। ইনস্কস্ত ঞিষপ্ধাতোঃ স্বাস্থ্যাচ্চ ভীতর্থঃ। ৩৮১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্বেস্ত। অশৃশবদিতি। শ্বিইন্চঙিশুভাবঃ দ্বিভাবের্দ্ধিহ্রস্বাদি। বা অশিশ্য়দিত্যাদি। ৩৮২॥

উঢ়োচকারস্যাভ্যাসেজঃস্যাং। ওজচদৌজিচং। ইন্যকারলোপাংপ্রাগে-বঢ়োদ্বিঃ। ৩৮৩॥

ইঙোগাবা। বেদমধ্যাপি পদেষো>ধ্যজীগপং। অধ্যাপয়তেঃ পুনরিনিন-গাদেশঃ তেন অধ্যাপিপতাং। ৩৮৪॥

গুণিনোবাঋত্রপধাঃ। অববর্দ্ধদধীরধং। অদীদৃশং অদদর্শৎ। চঙীনস্তস্য রূপাণামিভূযহারৈদিগীরিতা। ৩৮৫॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

শ্বেস্থিতি। তুশব্দইন্চঙীত্যস্তসমুচ্চায়কঃ। টুওশ্বিগতির্দ্ধ্যোঃ। ইন্চঙিপরেশ্বেস্তস্থঃ স্তাদ্ধা-ইত্যর্থঃ। অশিশ্বয়দিতি। শুভাবাভাবপক্ষেদ্বিভাবাদি। অশিশ্বয়দিত্যন্তং ছন্দঃ। ৩৮২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঊঢ়ো। ঔজিঢ়দিতি। বহনমূঢ়িরিতি ক্তিঃ তামাখ্যদিতীনাদি। অকারলোপাদিতি। উঢ়া-পেক্ষয়োক্তং। ৩৮৩॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

উচইতি। উচইতিব্যঞ্জনান্তগ্রহণমূচ্ছটিইত্যুভয়গ্রহণার্থং। ঔজচদিতিক্তান্তবহ্ধাতোরূপং। উজিচদিতিক্তান্তম্ম রূপং। ঔজিচদিত্যন্তং ছন্দঃ॥ ৩৮৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইঙ্ো। ইঙঃ স্থানেবাগাদেশঃ স্থাৎ। অধ্যাপিপদিতি। ইঙ্ইনিআস্বরস্থান্ধিজিক্রীঙামিত্যাশ্বে অর্ত্তিব্রীরীত্যাদিনাপঃ উপান্তব্রস্থেহপ্যচাং বৃদ্ধিঃ দ্বিতীয়াক্ষরদ্বিতা গুরুসমীপস্থান্ধনীর্ঘঃ। অধ্যজীগ-পদিতি। গাদেশেপাগমেগাপিস্থিতো উপান্তব্রস্থাদিঅভাগমঃ। ৩৮৪॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

ইঙইতি। ইন্ চঙিপরে ইঙোগাবাস্থাদিত্যর্থ:। অধ্যাপিধাত্ববিদ্ধানিত্তঃ স্বরূপত্বাভাবাদাহাধ্যাপয়তেরিতি। অধ্যাপয়তেরিনন্তঅধীঙঃ পুনরিনিদতি নগাদেশইত্যর্থ:। অধ্যাপিপতামিতি।
অধীতেম্মকন্চিত্তমন্থ: অধীষেতিপ্রযুক্তবান্ ইতি ইনিইঙ্মাকারেপাগমে অধ্যাপিধাতোঃ অধ্যাপয়তি
ম্মকন্চিত্তমপ্যতঃ অধ্যাপয়স্বৈতি প্রযুক্তবানিতি পুনরিনি ইল্লোপইত্যাদিনা প্রাগিনোলোপে পরেনাসস্বরেস্তাং বিভক্তোচিঙি দ্বিতীয়াক্ষরদ্বিভাব ইল্লোপাদি। অধ্যজীগপদিত্যন্তং ছন্দঃ। ৩৮৪॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিক।।

গুণি। ঋৎঋকার উপধাযেশাং তেইন্ চঙিবাগুণিনঃ স্থাঃ। অববর্দ্দিত্যাদি। রুধ্ ইনিগুণেবিষেদিং যোগ পূর্বব্বন গুরুত্বাৎ নদম্বং অবীর্ধদিত্যত্রগুণাভাবেদিছে লঘুধাত্বক্ষরস্ত নিমিত্ত্বাদভাবদ

দম্ভাবাদি কার্য্য্ এবং দৃশ্ধাতোঃ। চঙীত্যাদি। চঙিপরে ইনস্তম্ভধাতোরপাণামূহায়ৈতর্কনায়ইতি
দিক্ ঈরিতাকথিতা অনয়েবদিশাহপরে প্রয়োগাউহনীয়াইত্যর্থঃ। দিক্ পদাৎস্প্ অসদর্পৎ
কুশ্ অচকর্শৎ অচীকুশদিতি। ৩৮৫॥

ইল্লোপইডনামাদিবজ্ঞেনিষ্ঠেটিচস্মৃতঃ। ইট্ অন্ আম্ ইফুচ আলু অন্ত আয়া ইতু বজ্ঞেপ্রতায়েনিষ্ঠেটিচ ইল্লোপঃ। তথৈবোদাহ্নতং। নিষ্ঠেটি কারিতঃ কারিতবান্ এযুনইল্লোপঃ ইটিগময়িতা অন্বিকরণেগময়তি আমি গমরামাসইনস্তাদিষ্কুচ চক্রং ধার্য়িষ্কুঃ গৃহ্খাদেরালুঃ গৃহ্য়ালুঃ স্পৃহ্য়ালুঃ অন্তঃ গডয়ন্তঃ আয়ঃ গৃহ্য়াযাঃ ইতুঃ শুন্য়িতুর্বলালাহ্কঃ। ৩৮৬॥ ধেটঃ সিট্ চঙ্ চবা। অধাসীৎ অদধৎ ক্ষীরমপ্যধাৎ। ৩৮৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গুণিনইতি। অত্রপুনর্বাগ্রহণং পরত্রানুর্ভিবারণার্থং। অববর্দ্ধিত্যাদি। রুধুর্দ্ধোভুআ দৃশির্ প্রেক্ষণে ভুপ। উহ বিতর্কেভুআ ভাবেহঙ্ স্ত্রীলিঙ্গতয়া আপ্রত্যয়ঃ। ঈর্ গতিকম্পনয়োঃ অআ হৈতুকেনি কর্মণিক্তঃ ইট্ ইল্লোপ আপ্রত্যয়ঃ জ্ঞাপিতাইত্যর্থঃ। প্রভাপ্রকাশিকায়াং কথিতাইত্যক্তং। তৎপক্ষেধাভূনামনেকার্থয়ং জ্ঞেয়ং। অভৎপ্রভাপ্রকাশিকায়ামবলোকনীয়ং। অববর্দ্ধনীর্ধদিত্যন্তমনুর্মুপ্ ছন্দঃ। ৩৮৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইলো। কারিতইত্যাদি। কারিধাতোঃ কশ্মণিক্তঃ কর্ত্তরিক্তবস্তঃ। ইটীতি। গময়িতেতি। গম্ধাতোরিনি রুদ্ধোজ্রন্জিজন্ কুষোহমস্তাইতিমিন্তাৎমিতাং হুস্বঃ শ্বস্তন্যাস্তাপরে ইটিইলোপাভাবেগুণঃ। গময়ামাদেতি। গমইন্ প্রত্যয়ান্তত্বেন অয়াদেতি আমিগুণেকুঞঃ প্রয়োগইত্যাদিনা অসঃ প্রয়োগঃ। চক্রং ধার্রিয়ুক্রিতি। ধারিধাতোঃ ইফুচ্ ভাজিনিরালং কুঞ্জিত্যাদি তাচ্ছীলাদি কর্ত্তরি ইফুচ্ উদন্তত্বেন নিষ্ঠাদিন্বাৎ চক্রমিতি কর্মণি ন ষ্ঠা। গৃহয়ালুরিতি। শীঙ্দ্যিপতিস্পৃহিগৃহীত্যাদিনা অদন্তচুরাদেগৃহধাতোরিনন্তাদালুঃ স্পৃহিধাতোরালো স্পৃহয়ালুঃ। গড়য়ন্তইত্যাদি। গড় সেচনেজ্রাদিঃ ইনিউণাদিক্রিণ্ড অদন্তঃ অদন্তঃ। গৃহ স্তন মেঘশন্দে ইমাবদন্ত চুরাদী আয়াইৎজু উণাদিকো। বলাহকোমেঘঃ। ৩৮৬॥

গृष्धकाणिका।

ইলোপইতি। তথৈবোদাহৃতমিতি। ইজনামাদিবর্জ্জইলোপোযথাহভূতথৈবোদাহৃতমিত্যর্থঃ। কারিতইতি। ইনন্তর্কঞঃ ক্তপ্রতায়েরপম্। গময়িতেতি। ইনন্তগম্ধাতোঃ প্রয়োগঃ। ধারয়িফুরিতি। ধৃঙ্ অবস্থানে ভূবাদি মধ্যগত স্তদাদিরিনন্তস্তশাদিফুচ্। গৃহ্যাদেরিতি। অদন্তশ্চুরাদিঃ গৃহগ্রহণে গৃহধাতুঃ স্পৃহ ঈপ্লায়ামদন্তশচুরাদিঃ গড়ভূপ। অব্ভ্রঃ মেঘোবারি গহঃ স্তনয়িজু বিলাহকইত্যমরঃ। ৩৮৬॥

প্রভাপক শিকা।

ধেটা। ধেট্ ইত্যন্থাৎ পরস্থাৎ দিট্ স্যুগিট্। অধাসীদিত্যাদি। ইটা দিজ্লোপঈকারএবেতি দিজ্লোপোদীর্ঘাঃ পক্ষেচঙ্ চঙি দ্বিভাবাদি আকারলোপাঃ কর্ত্তব্যইত্যাদিনাআলোপাঃ পরগতিঃ স্বপ্রত্যয়াৎ ছস্তনীবপাঠাদি দ্বয়োবিকঙ্গপক্ষে স্থাদোশ্চেতীসিচোর্লোপাঃ সর্ব্বভাগামাঃ। ৩৮৭।

খেওঁশ্চঙ্বা। সিচিগুণঃ। অহারীৎ অশ্বৎ অশিশ্বিরৎ। ৩৮৮॥
স্তেস্যাদিচস্তস্যলোপশ্চসর্বস্বাদ্ধাবকর্মণোঃ। পদেঃ কর্ত্তরিদীপ্তায়ি প্যায়ি জন্
পূর্ব্বস্তবা। অবাদি অপাঠি সম্পাদি শশ্যেনঅভাবি অনায়ি অদাহি। পদেঃ
কর্ত্তরিউদপাদিতব প্রীতিঃ দীপাদের্বা অদীপিভাকঃ অদীপিফ অতায়ি অতায়ি

কর্ত্তরিউদপাদিতবপ্রীতিঃ দীপাদের্বা অদীপিভান্যঃ অদীপিষ্ট অতায়ি অতায়িষ্ট অপ্যায়ি অপ্যায়িষ্ট অজনি অজনিষ্ট অপূরি অপূরিষ্ট। নারদ ইত্যবোধিসঃ। অবুদ্ধ অবোধিষ্ট নারদং। শুইতিকিম্ অদাসাতাং। ৩৮৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ধেটইতি। ধেট্পানেভূপ। সযুক্তইট্সিট্শাকপার্থিবাদিস্বাদ্য্ক্তপদলোপঃ যদ্বাসচইট্চেতিদ্বন্ধঃ সর্বোদ্বন্দোবিভাষয়া একবদিত্যেকবচনং। ধেটঃ সিট্সঙ্স বা ধাসীদদধৎক্ষীপমপ্যধাদিতিচ্ছন্দঃ। ৩৮৭॥

প্রভাপকাশিকা।

শ্বের্টা । শ্বিধাতোঃ সিচিপরেডোবাচঙ্বাগুণঃ স্থাৎ। অশ্বরীদিত্যাদি। শ্বিসিচিইট্র্দ্ধিসরাগু-স্মেত্যাদিনাপ্রাপ্তাং রুদ্ধিং বাবিত্বাগুণঃ ইটঃ সিজ্লোপইতিসিচোলোপঃ পক্ষেডঃ অন্তাস্বরলোপঃ হস্তনীবংপ:ঠঃ পক্ষেচঙ্দিতাবে অনাদিহল্লোপঃ ধাত্তিকারস্তইরাদেশঃ ব্যতিক্রমেণোদাহরণং ছন্দোহনু-রোধাং। ১৮৮॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

শের্ড ইতি। টুওশিগতিরন্ধ্যোঃ। সিচিপরে শিধাতোঃ পরোডোনাচঙ্বা উভয়োর্বিকল্পক্ষে গুণঃ স্থাদিতার্থঃ। নচড্যঙ্পক্ষেহপিকথং নগুণইতিবাচ্যং ডে ডকুবন্ধেহন্তাম্বরলোপস্থাবলবত্তয়াগুণা ভাবাত্তংসাহচর্যাচ্চগুপিগুণাভাবইতি অভ্যথাডাগ্যকরণস্থাবৈয়র্থ্যাপতেঃ। গুণইতির্দ্ধিবাধেনগুণার্থঃ। স্ফের্ডাহারিচগুণোহশ্বয়াদশ্বদশিশ্বয়াদিতিচ্ছন্দঃ। ৩৮৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইচ্যাদন্তেভ্যোযুট্। অস্থায়িত্বয়া। অদায়িসিদ্ধান্তঃ অধায়িধনং।৩৯০॥ হ্রসোবামনুবন্ধানাং। ইচিপরে। অঘটি অঘাটি অজ্বরি অজ্বারি অগমি অগামি হেড়বেফনৈঅহিড়ি অহেড়ি।৩৯১॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

স্তইতি। ইচ্ইতিচকারামুবন্ধস্য অটীচীনিচর্দ্ধয়ইতিসূত্রেফলং। তুশব্দঃ পুনরর্থে তেন নবাশব্দঃ পূর্বব্রান্থেতি। কর্ত্তরীত্যস্তদাপ্তায়ীত্যত্রামুনদেশায়য়ঃ। অবাদীত্যাদি। বদ্কথনে পঠ্ব্যক্তায়াং বাচিভূপ এতদ্বয়ং কর্ম্মণুদাহরণং কর্মাউহ্যং সম্পূর্ববিপদ্গতৌদিআ উপসর্গবলাৎ সম্পন্ধার্থ কত্যাহকর্মকঃ ভূসতায়াম্এতদ্বয়ং ভাবোদাহরণং। নীঞ্প্রাপণেভূ হুহ্পপূরণে অপ এতদ্বয়মপিকর্মোদাহরণং। দীপীদিআ তায়ভূআ ওপায়ীর্দ্ধাভূআ জনীপ্রাছ্রভাবেদিআ পুরীদিচুআ বুধ্জ্ঞানেদিআ। নারদ ইতীতি। চয়স্বিমামিত্যবধারিতং পুরাততঃ শরীরীতিবিভাবিতাকৃতিং। বিভূর্বিভক্তাবয়বং পুমানিতি ক্রমাদমুং নারদইত্যবোধিসইতিমাঘঃ। অবুদ্ধেতি। দিবাদিবুধোহনিট্ছাৎ। অবোধিটেতি। বুধ্অবগমে। ভূবাদিপরস্মৈপদিবুধঃ সেটছাৎত্যোঃ প্রয়োগঃ। অদাসাতামিতি। ভূদাঞ্দানেজূ অয়মপিকর্মণি প্রয়োগঃ। সর্বত্রঅভ্রাম্বাদাবিত্যাদাবট্। অন্যংপ্রভাপ্রকাশিকায়াং জ্ঞাতব্যং। ৩৮৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইচ্যা। ইচিপরেআদন্তেভ্যোযুট্যুগিতিলেখকভ্রমঃ যদ্বা অযুগিতিপাঠঃ। ৩৯০ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইচ্যেতি ! ইচিপরেসতি আদন্তেভ্যো ধাতুভ্যোযুট্সাদিত্যর্থঃ । উটাবস্বরাগমসূচকো । যুগিতি লেখকভ্রমঃ করুবন্ধহল্প্রত্যাকৈতিহলীত্যাদিনা অস্থায়ীত্যাদে আকারস্থা ঈকারস্থাপতেঃ । অযুগিতি পাঠোহপিনসমাক্ আকারলোপঃ কর্ত্তবাঃ স্বরেকঙ্কুবন্ধিনীত্যনেনাস্থায়ীত্যাদাবাকারলোপাপতেঃ । যদিচাব্যবহিতককারাদিসন্ধন্ধিনিস্বরেআলোপোনান্যত্তেতি কগতেতথাপিযাগমেনবিসিদ্ধে অযুগাগমকরণে গোরবাপতেঃ । যতুবদাঅযুগিতিপাঠইতিপ্রভাশিকায়াং পকান্তরমূক্তং তত্রবাকারোহনাস্থায়াং তেন প্রকল্পএবপ্রেমানিতি । অস্থায়ীতি ৷ স্থাধাতোঃ স্তৈঅভাগমে ইচিযাগমেতস্থপরস্বরেণসন্থরেস্তলোপঃ এবমন্ত্রাপি ৷ তুশন্বলানাত্রবাপ্রবৃত্তিঃ ৷ ৩৯০ ॥ .

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রম্বো। অঘটীতি। ঘট্চেফীয়াং ঘটাদয়ঃ শ্বনুবন্ধাইত্যনেন জ্বাদয়স্তমনুবন্ধাঃ। অগমীতি। জ্বন্জীত্যাদিনামনুবন্ধিস্থং। ৩৯১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হ্রস্বইতি। ঘট্ভুআ জ্বরোগেভুপ হেডভুপ ঘটাদিঃ। ৩৯১ ॥

জনিবধ্যোঃ। নিত্যং হ্রস্বঃ। অজনি অবধিবৈরী। ৩৯২॥ হন্তের্ঘন্। ইচি। অঘানিকং সঃ ক্ষেন। ৩৯৩॥

ভন্জোনোবালভং যাতি। ইচিপরে। তথৈব অভঞ্জি অভাজি অলম্ভি স্বরান্তধাত্বিত্যাদিনা ইজ্দিড্বা অদায়িষাতাং। ন্যধায়িষাতামভিদেবকাস্কৃতং। অধিষাতাম্ অনায়িষাতাম্ অনেষাতাম্ অগ্রাহিষাতাম্ অগ্রহীষাতাম্ অঘানি যাতাম্ অহসাতাম্ অদর্শিবাতাম্ অদৃক্ষাতামিত্যাদি। ৩১৪॥

প্রভাগ্রকাশিকা।

্জনি। জন্ধাতোঃ পুর্বেণবৈকল্পিকহ্রস্বপ্রাপ্তাবনেননিত্যং বিধীয়তেইত্যত্রনিত্যমিতি। ৩৯২॥

গৃত্পকাশিকা।

জনীতি। জনীপ্রান্তর্গবেদিআ বধ্বন্ধনাদো ভূআ উভো ঘটাদী। ৩৯২॥

গূতপ্রকাশিকা।

হন্তেরিতি। হন্ধাতোঃ র্ঘনস্থাদিত্যর্থঃ। অঘানীতি। ইচিঘনিইকামসৈবেত্যাদিনার্দ্ধিঃ। ভট্টোচ অঘানিতাড়কাতেন লজ্জাভয়বিভূষণা। জ্রীজনেযদিতচ্ছ্রাঘ্যং ধিশ্লোকং ক্ষুদ্রমানসমিতি রাবণ-বাক্যং। ৩৯৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ভন্জা। নইত্যকারউচ্চারণার্থঃ। তথৈবেতি। যথাভন্জোধাতোরুপধাভূতোনঃ তথালভ্ধাতৃমপু্সপ্রাভূত এব্যাতীত্যর্থঃ নকারস্থ লভ্গমনেজকারস্থোপ্রাত্মাথরদ্ধিঃ অভাজিপক্ষে। লম্ভিধাতোরুপধ্যোপ্রায়র্দ্ধিঃ বিন্দাদি এবং লভ্রাতো নকারগতো অলম্ভিতদগমনে অলাভীতিরপং। অথপ্রযম্নেমিনি
তানমং কণ্যে তেকথিঞ্চকণিনাং গণৈরধঃ। অধায়িষাতামভিদেবকীস্ততং স্ততেনধাতুশ্চরণোভূবস্তলেইতি
মাঘঃ। অবিযাতামিতি। আইন্থমান্ননে ইত্যাকারস্থেকারঃ। অনায়িষাতামিতি। ইজ্দিট্।
অপ্রাহিষাতামিতি। ইজ্দিট্। প্রত্রইট্ ইটোদীর্ঘোগ্রহেস্তথেতিদীর্ঘঃ। অহ্যাতামিতি। হ্বধাবাআনেপ্দইতিভাবঃ পক্ষেত্রবিষাতাং। অদৃক্ষাতামিতি। না্যাপান্তরাৎ কিতিগুণাভাবঃ ধুট্যন্তেচেত্যাদিনাশঃ
যবং যঢ়োঃ কঃ দ ইতিয় কঃ। আদিপ্রদাৎ অদৃক্ষত অদৃষ্ঠাইত্যাদয়ঃ। ৩৯৪॥

গ্তপ্ৰকাশিকা।

ভন্জবিতি। ভন্জোআমর্দনেইত্যক্ষউপধানঃ বাডুলভ্য্প্রাপ্তোইত্যেতং লভ্ধাতুমুপধাভূতোযাতীত্যর্থঃ। লাঘবার্থমুক্তিবৈচিত্র্যাদিদমুক্তং ভন্জোবানশূন্তঃ লভ্ বানযুক্তইত্যুক্তে গোরবাপন্তেঃ। নশূন্যপক্ষেউভয়ত্রউপধাদীর্যঃ। অন্তৎপ্রভাপ্রকাশিকায়ামনুসর্ত্ব্যং। ইচ্যাদন্তেভাইত্যাদি এতৎসূত্রান্তমুপগীতিচ্ছন্দঃ। ৩৯৪॥

ইচ্কার্য্য নাস্ত্যমন্তানাং সেটাং কম্বম্চমং বিনা। অতমিত দানিতরাং নিতমিনীভিঃ। অসমিভ্রমং ভ্রমকঃ। নঞােইনিত্যত্বাংগমীচ্কার্য্য হস্তিযথা। ভ্রামং প্রনন্তুতজাজানকীং নাধ্যগচ্ছং। সেটাং কিম্ অগামি গামুকঃ। চুরাদৌচমন্ত্রন্ধী যম্ধাত্বঃ তত্রোদ্যমইতি সিদ্ধং। কমাদেস্তর্নদ্ধিঃ অকামিকামঃ অবামিবামঃ অচামঃ। অমইত্যম্ধাতোর্বিকম্পেনস্ত্রস্ক্রপং। ৩৯৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইচ্কা। অম্অন্তোযেশং দেটামিট্দহিতানাং কম্বম্চমং বিনা এত দ্বিংনামিচ্কার্য্যং নাস্তিন-ভবতীত্যর্থপদ্ধঃ। অতমিইতিনর্দ্ধিঃ। মৃত্রিতিবনবিভ্রমাভিগঙ্গাদতমিতদানিতরাং নিতদ্বিনীভিঃ। মৃত্রেতনবোহলদাঃ প্রক্ত্যাদ্বয়মপিতাঃ কিমৃতপ্রয়াদভাজইতিমাঘঃ। ভ্রমইতি। ভ্রমণং ভ্রমোঘঞ্। শমকইতি। শাম্যতীতি অকণ্তৃচাবিত্যকণ্ উভয়ত্রইজ্ংকার্য্যং ঞাকুম্বনেক্রতীতি ইল্লেভিদেশাৎ র্দ্ধিপ্রাপ্রিনিদেশঃ। ভ্রামং ভ্রামমিতি। গম্চাভীক্ষ্যোণমির্দ্ধো আভীক্ষ্য বাপ্সয়েরিত্যাদিনাদিঃ। অগামীতি। গচ্ছতিযমিরমিনমোমান্তইত্যনিট্। চুরাদেতিতে। যন্পরিবেশনেইনির্দ্ধোমিতাং ক্রম্ব ইতি ক্রম্বঃ। উদ্পূর্ক্যমিধাতোরল্প্রত্যয়েবলবজ্বাংর্দ্ধে প্রাপেবইল্লোপেউদ্যুইতিকেচিৎ কামইতি ঘঞ্জ। ৩৯৫ ৮

গ্তপ্রকাশিকা।

ইচ্কার্য্যনিতি। অম্ অন্তোযেশং। কমুকান্তাভিলানরোঃ ভূআ টুবম্ উল্চারণেভূপ চনুজান ভূপ এতদ্ধাতুত্রাংবিনা। অত্মীতি। তমুআকাজ্জাগ্লানিকৃশীভাবেয়ুঅদ্যতন্তাঃ স্তবিভক্তোভাবেস্তোদি চ্ইত্যাদিনাইচিস্তলোপের্দ্ধিপ্রাপ্তো ইচ্কার্য্যনিবেশানরিদ্ধিঃ। অসমীত্যাদি। সম্ অবৈকলোভূপ অশ্মনিতিপাঠেশমুউপশ্মেদিপ অদ্যতন্তাঃ স্তবিভক্তোদ্ধি প্রশূলনান্ত্র মনুসরন্ প্রাম্যমারাম্যানাদিতিপূর্ব্বপাদ ব্রুম্ব স্তত্তাতিতি সমুদ্যোতিতং তত্তদক্ষৈঃ। স্থানান্ত্র মনুসরন্ প্রাম্যমারাম্যানাদিতিপূর্ব্বপাদ ব্রুম্ব মহানাটকে। তত্তদক্ষৈপ্তত্ত্ব্যবহারৈঃ। তথাচমেদিনী। অক্ষোজাভার্থশকট্ব্যবহারেয়ুপাশকইত্যাদি। নাধ্যগছ্লিতি। অধিপূর্ব্বগ্র্যানিতাহিন্ত্রনীদিবিভক্তোদিপ। অধিগ্যোজ্বানার্থঃ। নুস্বাছ্তিযমিরমিনমােমান্তেইত্যনেন যমােহনিট্রাদিচ্কার্য্যম্বাহকথমূদ্যমইতি প্রয়োগইত্যত্ত্বাহচুরাদেশ চিতি। তথাচপরিবেশনবেস্টনমোশ্চুরাদির্য্যেমনুবন্ধীযম্বাভূস্তভ্রের্হিনির্দ্ধোমিতাং ব্রুম্ইতিব্রুম্বের্বাভ্রেনাল্প্রত্রের্হালেপিউদ্যমইতিরূপং যমুউপরম্বন্ধনােরাস্ত্রুবাদিপরীয়েপদীযােয্ব্তস্তইচ্কার্যমন্তি তেনায়ামােদাামাদিরপমিতিভাবঃ। নন্ধমইতিকথং তন্সদেট্রেইপ্রমন্তর্যাভাবাদিচ্কার্যপ্রথাত্ত্রভ্রের্ত্রের্যান্ত্রাদিপরিভিন্তি। তথাচঅম্রোগেবিকল্পুর্বাদীনস্তোযােইন্ত্রস্থানির্পমিতিভ্রানং। ১৯৫॥
অম্বতিশব্যজ্বাদিপরীত্রপদী তন্ত্রমনুব্রাদীনস্থােদামইত্যাদিরপমিতিভ্রন্তর:। ৩৯৫॥

বিশ্রমেরা। ইচ্কার্য্যং নাস্তি। যথাপাত্তির্ব্য্রামি ব্যশ্রমিক্ষণং। বিশ্রমঃ। বিশ্রমকঃ। বাতিকিং পরিশ্রমঃ। ৩৯৬॥

যশিন্ধাতোর্য্যসালোপস্তত্তর্দ্ধিপ্ত ণশ্চন। অননিয়ঙোলোপঃ। অবৈভিদি যিন্যিঙোর্লোপেঅদৃশদিঅবিদ্যুতি পচাদ্যচিত্য্যলুগচি লোলুবঃ লোলুবকঃ নেন্যঃ নেন্যকঃ অগুণেউবাদি। যশিক্ষিতিকিং সর্বস্থাদ্ধাতোর্য্যঙ্লুক্ অনিম্বিকেতুননিষেঃ অবোভাবি অবেভেদি অসবিতারি অসবিতারকঃ। অত্তচ লাক্ষণিকত্বাদেবর্দ্ধিগুণাপ্রাপ্তৌ নিষেধাইয়মন্যকার্য্যস্প্রতিলাক্ষণিকং আহ্মতি তেনজেহিয়ঃ পোপুবইত্যাদাবিযুবৌ দাদায়ঃ পাপায়কঃ ইত্যাদাবাদস্তাদ্ধু ট্জংহানকইতিতুনঞোইনিত্যত্বাং। ইত্যাধ্যাতেলুঙ্প্রকরণং পঞ্চমবি ন্যামঃ। *। *॥ ৩৯৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিশ্র। বিপুর্বশ্রমিঃ শ্রমার্থকঃ। পরিশ্রমইতি। ঘঞিনিত্যং পূর্বেণইচ্কার্যাভাবঃ। ৩৯৬॥

গৃঢ় প্রকাশিকা।

বিশ্রমেরিতি। বিপুর্বঃ শ্রমুতপ্রসাংগদয়োঃ দিপ ধাতুনিদেশেইঃ। বিশ্রমের্বাইচ্কার্যাং নাস্তী ভ্যর্থঃ। যথেতি। পথমাগতাঃ পাস্থাঃ ততমাগতইতাণিরুদ্ধিঃ তদ্ধিতস্বরেইলোপঃ। ব্যশ্রামীতি। আদ্যতিয়াঃ স্তবিভক্তোমাদোমট্ইচ্রুদ্ধিঃ স্তলোপঃ। ব্যশ্রমীত্যক্রবিকল্পেনইচ্কার্যাডাবঃ। বিশ্রামইত্যাদিরয়েভাবেঘঞ্পক্ষেইচ্কার্যাং পক্ষেত্রদভাবঃ। বিশ্রামকইতি। বিশ্রাম্যতীতিবিশ্রামকঃ অকণ্ ত্চাবিত্যকণিপক্ষের্দ্ধিঃ পক্ষেবিশ্রমকইতি ইচ্কার্যাভাবঃ। বীতিকিমিতি। বীতিকিমর্থং গৃহীত মিত্রেথঃ। পরিশ্রমইতি। বীতিনগৃহীতং চেদ্ত্রাপিস্থাদিত্যর্থঃ। বিশ্রমের্বার্থাপাক্ষের্গ্রামির্শ্রমিক্রিত্রণভ্নঃ। ৩৯৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিলান্। যি বিলাপের বিলাগের বিলাগের বিলাগের বিলাগের তার প্রতারে পরে বিলাগের বিলিপ্তার দিন তার বিলাগের বিলাগির বিলাগের বিলাগির বিলাগের বিলাগির বিলাগের বিলাগির বিশিব্ধ বিলাগির বিশ্বার বিলাগির বিলাগির

নেনেতার্থঃ। অবোভাবীতি। বোস্থাতোরিচির্দ্ধাদি। অবেভেদীতি। অত্রপ্তণঃ। অসবিভারীতি। সবিতেবাচরতীতিযিঙি অক্যন্ত্র্যাবৃক্তমিত্যতিদেশাৎ ঋতইড্ ভবেদিতীট্ সবিত্রীয়ধাতোর্যিঙ্ লুক্চসর্বতইতি যিঙ্ লুকিলুগ্ লোপ্যইত্যাদিনা ইড্নির্ত্তোসবিত্ধাতোরিচিপরত্রাকণিচর্দ্ধিঃ। লাক্ষণিকত্বাদেবেতি। অন্তলোপেনান্তক্ত লাক্ষণিকত্বোক্তেরিত্যর্থঃ। অক্সৎকার্য্যং প্রতিবৃদ্ধিগুণাতিরিক্তকার্য্যংপ্রতি। জেব্রীয়ইত্যাদি জেব্রীয়পোপ্যধাত্বার্যিঙ্ লুকিজেব্রীপোপুস্থিতোধাত্ত্ত্যাং পচাদ্যচি অচীত্যাদিয়ঙ্ লুকিগুণনিষেধহিপি ইযুবোপুর্ববং। দাদায়ইত্যাদি। দেদীয়ধাতোরচীত্যাদিনায়ঙ্ লোপেলুগ্লোপ্যইত্যাদিনা দাদাবন্থিতোইত্যাদিভেভাযুডিতিয়ঃ এবং পেপীয়ধাতোরপি। জংহানকইতি। গতেজিং হন্যধাতোরকণিপুর্ববং যঙ্ লুকিনেতি নঞোহনিত্যত্বাং অক্সবোপধায়াইতিবৃদ্ধিরস্থাত্ব্য । ইতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং রত্ত্বমালাটীকায়াং লুঙ্ প্রকরণবিবরণং পঞ্চমোবিস্থাসঃ। * ॥ * ॥ ৩৯৭ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যশ্মিরিতি। অননীতি। অননিপ্রত্যয়েপরেব্যঞ্জনাদ্যঙোলোপইত্যর্থঃ। অবেভেদীতি। ভিদির্
বিদারণেপুনঃ পূর্নভিনত্তিভ্র্মাং ভিনত্তিবেতি ক্রিয়াদমভিহারে য়ঙ্ঙেকাচোব্যঞ্জনাদিকাদিতি য়ঙি চঙ্ দন্
য়ঙ্ পরোক্ষামিত্যাদিনাদ্বিভাবে অভ্যাদমগুলঃ চতুর্যম্ম তৃতীয়কইতিভম্মাভ্যাদম বকারেবেভিদ্যধাতোঃ
স্তেইচিয়ঙ্ লোপেতিম্মিন্ধগুলঃ। লোলুবইত্যাদি। লূঞ্ছেদনেনীঞ্ প্রাপণেইত্যনয়োঃ প্রয়োগাঃ।
উবাদিরিত্যাদিনাযোগ্ছতে। লাক্ষণিকয়াদেবেতি। ধাত্তম্ম লাক্ষণিকয়াদেবেত্যর্থঃ। য়দ্যপিমোনইতি
সূত্রবির্তে লিঙ্গান্তনিয়তকার্যম্প্রতিলিঙ্গান্তলোপেন লিঙ্গান্তম্ম পদান্তনিয়তকার্য্যং প্রতিপদান্ত লোপেন-পদান্তম্বং লাক্ষণিকমিত্যক্তং তথাপি সূত্রেবর্ণলুপান্তয়াদিয়েইতিদামান্তেনাভিধানাদ্বাম্বন্তলোপেনধাদ্বন্তম্বপাক্ষণিকংস্থাং প্রামিথিতস্ত্রউপস্থিতাভিপ্রয়ণেতিজ্ঞেয়ং। জেরিয়ইত্যাদি। ব্রীলজ্জায়াং
পূঞ্ পুতে ভূদাঞ্দানে পাপানে। জংহানকইতি। হন্হিংসাগত্যোঃ পূর্ববংমঙিদিভাবেগতেজিং
ছিন্নতিজংহন্নিপাতেমকণিয়ভ্রুকিনেতিনঞোহনিত্যয়াত্রপধায়াঅস্বদ্ধঃ। ইচ্কার্যমিত্যাদ্যেতদন্তং
গাথাচ্ছন্দঃ। ইতিশ্রীদিদ্ধনাথবিদ্যাবাগীশবিরচিতায়াং গুড়প্রকাশিকায়াং প্রয়োগরত্বমালাটীকায়ামাথ্যাতে
লুঙ্প্রকরণপঞ্চমবিত্যাসবিবরণম্। *। *। ৩৯৭॥

কর্মস্থাবধাতৃনাং কর্মকর্ত্তাতুকর্মবং। কার্য্যাতিদেশোইয়ং। সেকপাকছিদাভেদার্থকাঃ কর্মস্থভাবকাঃ কর্তৃস্থভাবাগমন ভোজনাবগমার্থকাঃ। আত্মনেপদ
যগিজিজ্বদ্ধাবাঃ কার্য্যাণি। সিচ্যতে হস্তীস্বয়মেব ষ্টিকাঃ ষ্টিরাত্তেণ পচ্যস্তে
লূয়তে কেদারঃ স্বয়মেব অভেদিকাষ্ঠং স্বয়মেব কারিষ্যতেকটঃ স্বয়মেব। ৩৯৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কর্ম। কর্মস্থঃ কর্মসঙ্গতোভাবোধাত্বর্থাযোগং তেচতেধাতবশ্চেতিতেষাং কর্মকর্ত্তা কর্মসময়ঃ কর্ত্তাকর্মবং কার্যভাগীত্যর্থঃ। কর্মকার্য্যাতিদেশোহয়ং। সেকেতি। জলং সিঞ্চতীত্যাদো সেচন-ক্রিয়াকর্মনিটে কর্ত্তু ভ্রদসম্বন্ধাভৎকলমপি কর্মনিষ্ঠযেব ওদনং পচতীত্যাদো চুল্ল্যধিপ্রয়ণজলতণ্ডুলপ্রয়ত্ব তুষ ব্য প্রক্ষেপাল্যব্যবক্রিয়াপচনরপপাকক্রিয়ায়ান্ডকর্মনিষ্ঠত্বাৎ কার্সং ছিনভি ভিনভীত্যাদো ছিধাকরণ-রপছেদনক্রিয়ায়াবিদারণরপভেদন ক্রিয়ায়ান্তংকলস্থচকর্মনিষ্ঠত্বাৎ কর্মস্থভাবত্তমেযাম্। এবমূছং। কর্তু স্থেতি। প্রামং গচ্ছতিত্যাদো আকৃঞ্চনপাদপ্রদরণাদিরপগমনক্রিয়ায়াঃ কর্ত্তনিষ্ঠত্বাৎ তৎফলস্থ ভূতরদেশদংযোগস্থোভয়রভিষাদেশাং কর্তু স্থভাবত্বং। আত্মতি। কার্য্যাণিএতলগণনয়াক্ত্যক্তথল্পানিং ব্যুদাসঃ। সিচ্যতইতি। স্বয়মেবাত্মানং সিঞ্চতীতি অস্থেবকর্মত্বং কর্তৃ স্থঞ্জতিহন্তী কর্ম্ম কর্ত্তা কর্মকর্তা কর্মান্ত্রক্রাস্থলাক্র জনয়ন্তিঅল্রাপ্যাত্মনেপদ্যক্রে। লূয়তইতি। ছিদার্থং কেদারোধান্যাত্মণেভি ক্রের ত্বেপদ্যাত্মতে সকেদারোদাল্রাদিব্যাপারং বিনাসয়ন্তর্মকর্মকর্মকর্তা কর্মামুংপাদয়তি আত্মনেবক্রা। অভেদীতি। কুঠারাদিব্যাপারং বিনাকান্টং স্বয়মেবস্বক্মকর্বিকরিদারণমুংপাদয়তি আত্মনেপদ্যিচ্চ। কারিয়তইতি। স্বয়মেবকটঃ স্বক্মক্রতিং জনয়িয়তি আ্রানেপদ্যিত্বিটিতকর্ম্মস্থলাবিরহেহপিকৃঞঃ। ৩৯৮ ম

গূঢ়প্রকাশিকা।

রমতেচিৎস্বরূপেণ্যআলারামমান্দে। অবিরাম্মহং রাম্মভিরামং ন্যামিতং। ১।

কর্মফেতি। কর্মনিতিষ্ঠতীতিকর্মন্থঃ অপ্রাদিনামপূর্ব্বাদাদন্তাৎস্থন্চ ডইতিডঃ ডমুবন্ধেইস্ত্যান্ধনাপান। কর্মকর্ত্তেত। বিশেষণবিশেয়ভাবস্থতাবদ্বিবক্ষাধীনত্বাৎ কর্মবিশেষ্যং কর্তাবিশেষণং তেন কর্মকর্ত্তিব কর্মকর্ত্তাব্যবছেদাধিকরণমেবার্থয়ুখিশেষণৈরিত্যবধারণােভরপদঃ কর্মধারয়ঃ অত্র কর্মনিকর্তৃত্বা যোগােব্যবছিদ্যতে কর্মসময়ঃ কর্ত্তেতিফলিতার্থঃ। কর্মনীবকর্মবৎ কর্মনিষহকার্যঃ তৎকার্য্যভাগীত্যর্থঃ। যদ্যপিকন্মিন্বাচ্যে ইতিনাক্তঃ তথাপিকর্মনিবাচ্যকর্মকার্য্যভাগিত্বসদদ্ধকে কর্ত্তরিবাচ্যেইতিজ্ঞাতব্যঃ। কর্মকর্ত্তেতি উভয়োপাদানমেকস্থৈবকর্মম্বকর্ম্পরকর্ম্বরক্র্যান্ধর্মক্রপাদানেদিচ্যতেইন্তিনং হন্তিপকইতি প্রয়োগাপত্রিরতি। কর্মবদিত্যনেনপ্রাপ্তঃ বির্ণোতিকার্য্যতি। কর্মস্থভাবধাভূন্দর্শয়তিসেকেভ্যাদি। ক্রেদনামুক্লজলসংযোগবিশেষঃ দেকঃ বিক্৯ত্যমুক্লব্যাপারঃ পাকঃ ব্যাপারশ্চাধঃ সন্ত্রাপনাদিঃ। আরম্ভকসংযোগ্স্বংস্কাব্যববিভাগনিভ্রা। সংযোগনাশফলকাব্যববিভাগবিশেষোভিদা।

রজিকুষ্যোঃ পর স্মৈষণ্। রজ্যতিবস্ত্র স্বয়মেব কুষ্যতিপাদঃ স্বয়ং। ৩৯৯॥

কর্মস্বভাবধাভূনাং গোণং সকর্মকত্বং। কতৃ স্থভাবধাভূন্দর্শয়তিগমনেতি। উত্তরসংযোগাতুকূলঃ স্পান্দোগমনং মুথকুহরপ্রবেশপূর্ব্বকগলাধঃ সংযোগানুকূলব্যাপারোভোজনম্ অবপূর্ব্বগম্ধাভুক্তানার্থকঃ। পূর্ববিত্রচতুষ্টয়ং পরত্রতিতয়ং প্রদর্শনমাত্রং বহুবচনাদন্যেপিকর্মস্থভাবাঃ কর্তৃস্বভাবাঃ সন্তীতিসূচিতং। কর্মকর্ত্তাকিং কার্য্যভাগ্ভবতীতিজিজ্ঞাসায়ামাহাত্মনেপদেতি। এতৎকার্য্যচতুক্টয়ভাগ্ভবতীতিভাবঃ। সিচ্যতইতি। অত্রেদনফলাশ্রয়ত্বাৎ কর্মদেচনক্রিয়াশ্রয়ত্বাৎ কর্ত্তাচ হস্তীত্যর্থঃ। ষষ্টিকাইতি। ষষ্টিকাঃ শরৎ পক ধান্যানি অত্রাপি স্বয়মেবেত্যনুষঙ্গোন্বয়ঃ রূপাদিপরাবৃত্তিরূপাবিক্৯তিঃ ফলং। লুয়তইতি। লৃঞ্ছেদনেক্র্যাদিঃ ক্র্মণিযকিরূপম্ অত্রারম্ভকসংযোগধ্বংসঃ ফলং। অভেদীতি। ভিদিরবিদারণে রুধাত্যুভয়পদী স্তেবিভক্তো স্তেম্যাদিচ্ ইত্যাদিনাইচ্ স্তলোপশ্চগুণঃ প্রাগতাগমশ্চ অত্রসংযোগনাশঃ ফলং। কারিয্যতইতি। কুঞঃ স্মতেবিভক্তো স্বরান্তধাতুগ্রহিহন্দৃশিভ্যইত্যাদিনাইজ্দিট্র্দ্ধিঃ যত্তঞ্চ। অত্র কুধাতৃপস্থাপ্যক্তেঃ কর্তৃস্ভাবত্বেহপিতৃশব্দাৎ কচিৎ কর্তৃস্ভাবস্থাপি কর্মস্থভাবতয়া স্বীকারাদীদৃক্ প্রয়োগইতিমন্তব্যম্। অত্রকারিকা। ক্রিয়মাণস্তয়ৎকর্মস্বয়মেবপ্রদিদ্ধ্যতি। স্থকরৈঃ স্বৈগু গৈর্যুক্তং কর্মকর্ত্তেতিত্বিছঃ। ক্রিয়ায়াঃ স্থানিষ্পত্রেগ্যত্রকর্মাণিকতৃতা। আত্মীয়ারোপ্যতেকর্ত্রাকর্মকর্ত্তাদ উচ্যতে। পূর্ব্বকারিকার্থস্ত। স্থকরৈঃ স্থব্যক্তিঃ স্বৈগু গৈঃ নিজৈর্ব্যাপারেযু্যক্তং যৎকশ্মস্বয়ং ক্রিয়মাণং সিদ্ধ্যতি তৎকর্মকর্ত্তেতি বিহুর্জ্জানন্তীতি। কর্মস্থভাবানাং লক্ষণমিদং। যত্রকর্মণি স্থানিষ্পত্তেরনায়াসনিষ্পন্নায়াঃ ক্রিয়ায়া আত্মীয়া স্বকীয়া কতৃতা কর্ত্রণ আরোপ্যতেসকর্মকর্ত্ত্রা-উচ্যতে শিষ্টেরিতিশেষইতি। কর্তৃস্থভাবানাং কর্মস্থভাবতয়া স্বীকৃতানাং লক্ষণমিদং। ৩৯৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রজি। রন্জকুষ্এতয়োঃ পরিগণিতদেকপাকাদিভিন্নত্বেইপিকর্মস্থভাবত্বাৎকর্মকর্ত্ত্বঃ কর্মাতা দেশঃ পরিপণনায়াউপলক্ষণত্বাৎ। কর্মাকর্ত্তরিপরস্মৈপদং যণ্চস্থাৎ। রজ্যতিস্বয়মেবরক্তীভবতীতি কুষ্যতিস্বয়মেবনির্গতোভবতীত্যর্থঃ। ৩৯৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

রজীতি। রজীতিনুপ্তনকারপাঠঃ। রন্জরাগেদিউ কৃষ্নিকর্ষেদিপ। এতাবপিকর্মস্থাবোঁ। রজ্যতীতি। রন্জধাত্বর্থরাগশ্চ বর্ণান্তরামুকূলরাগদ্রব্যসংযোগঃ তেন বর্ণান্তরফলস্থাতদমুকূলরাগদ্রব্যসংযোগগাচকর্মার্তিত্বাৎ কর্মস্থাবত্বং। কৃষ্যতীতি। কৃষ্ধাত্বর্থনিকর্ষশ্চ বহিঃ সংযোগামুকূলব্যাপারঃ সচগমনরপঃ। অত্রাপিফলস্থাতদমুকূলব্যাপারস্থাপিকর্মার্তিত্বাৎ কর্মস্থাবত্বং। যদিকর্স্প্রভাব-ত্বমভিমতং তদাসূত্রবলাৎকর্মস্থাবত্বমভ্যুপগন্তব্যং। যগিত্যকৃত্বাকথং যণ্কৃতইতি নাশঙ্কনীয়ং তস্থাত্তণত্বেভিব্যাৎ যথৎ যণোহপিস্থাব্যবিশেষাৎ অন্তণাত্মতন্মনিকিণঙ্মুব্দাইত্যাত্যক্তেঃ। ৩৯৯॥

শ্বাদীনামাত্মনেপদং। শ্বু ব্রেঞ্ছহামিনস্তানাং প্রান্থিছিনমামপি। কিরত্যাদেঃ সনস্তস্যচাত্মনেইকর্মকস্যচ। আত্মনেপদমেবস্যাৎকর্মকর্ত্তরি। প্রশ্ব তেগৌঃ স্বয়মেব প্রান্থোষ্টগৌঃ স্বয়মেব ব্রুতেবাক্স্বয়মেব অবোচতবাক্স্বয়মেব হ্রেমেগৌঃ ক্ষীরং স্বয়মেব অহ্প্রগৌঃ স্বয়মেবভূষয়তে কন্যাস্বয়মেব কার্য়তেকটঃ স্বয়মেবস্টী করতকটঃ প্রন্থতেমালা অগ্রন্থিষ্টমালা শ্রন্থতেমেখলা স্বয়মেব অশ্রন্থিষ্ট নমতেদণ্ডঃ অনংস্ত অবকিরতেইন্তী অবাকীষ্ট ইন্তী চিকীর্যতেকটঃ অচিকীর্যিকটঃ বিকুক্তেপয়ঃ স্বয়ং ব্যক্তপ্রঃ স্বয়মেব। ৪০০॥

প্রভাপকাশিকা।

শ্বাদী। সুক্রত্থ্যামিনন্তধাত্নাঞ্চ গ্রন্থ্ অন্থ্ নমএধামপিকিরত্যাদেঃ কুপুপ্রভৃতেঃ সনন্তধাতোশ্চ আত্মনেপদেহকর্ম্মকন্সচেতার্থঃ। প্রস্নুত্ইতি। দোহনমন্তরেণতুগ্ধঃ স্রবতি। প্রাম্যেতিতি। অদ্যতন্যাং। ক্রতইতি। পুরুষপ্রযন্ত্রং বিনাবাঙ্নিঃসরতি। অবোচতেতি। লুঙিক্রবোবচ্বচেরঙ্বশ্চবোভবেৎ হস্তনীবৎপাঠঃ। তুগ্ধইতি। আকর্ষণং বিনানিস্পারয়তি। কারয়তইত্যাদি। স্বয়মাত্মানং কটোর চয়তইত্যর্থঃ। অচীকরতেতি। ইনন্তাৎকর্ত্র্যাত্মনেপদেলুঙিচঙাদি। শ্রন্থমেবরচিতা ভবতিপরত্রাদ্যতনী। ক্রমতইতি স্বর্মেব নম্রোভবতিপরত্রান্যতনী। গ্রন্থতইত্যাদি। স্বয়মেবরচিতা ভবতিপরত্রাদ্যতনী। নমতইতি স্বর্মেব নম্রোভবতিপরত্রলুঙ্। অবেত্যাদি। যন্ত্রপ্রযুগ্ধ বিনাম্বয়মেবাত্মানং বিক্ষিপতি পরম্মিন্নুঙ্। সনন্তস্তকর্মাকর্ত্র্যাত্মনেপদমুদাহরতি চিকীর্ষতইতি। স্বয়মেবাত্মানং কর্ত্ত্মিছতি। অচীতি। লুঙিইডাগমঃ। আত্মনেহকর্মাকস্তোদাহরণং বিকুক্রতইতি। বিপ্র্বাক্ত্র্ক্রেবিকারার্থোহকর্ম্মকঃ পয়ঃ স্বয়মেববিকৃতং ভবতিপরত্রাদ্যতন্ত্রামাত্মনেপদমেব। নমু বিকারহেতোস্তিবিক্রিয়ন্তেবেষাং নচেতাংসিতএবদীরাইতি কুমারসম্ভবপ্রয়োগঃ কথমুপপদ্যতাং সত্যম্ আত্মনেহকর্ম্মকস্পচেতিচকারাৎ কচিমাত্মনেপদমাত্রং কিন্তু প্র্বসূত্রণাত্মনেপদযগাদীতি। ৪০০॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

স্নাদীতি। সুক্ষরণেঅপ তচ্চবিভাগানুক্লবহিনিঃ দরণং কর্মস্থভাবকোহয়ংধাতুঃ। ক্রছ্ইনস্তাঃ কর্মস্থভাবাঃ কর্মস্থভাবতয়াধীকার্যাঃ। প্রস্থানদেওক্র্যাপ দচরচনা দাচ বিলক্ষণসূত্রমন্তাদিদংযোগানুক্লব্যাপারঃ এন্ধ্ দলভেক্র্যাপঅয়ঞ্চেৎপ্রস্থবং গম্প্রহরনমন্তরণশব্দেষ্ভূপ প্রহায় নমন্তারঃ স্বাপক্ষীবোধানুক্লব্যাপারঃ ক্বিক্ষেপেভূপ। আদিনাপুপালনপ্রণয়োঃ জুক্র্যাপইত্যাদের্মহণং। এতেকর্মস্থভাবাঃ। নম্প্রহ্মস্থলার্থদেচদকর্মকঃ। আয়নেহকর্মকণ্চবিপ্রবঃ কৃঞ্বিকারর্থোহকর্মকঃ শব্দান্তাকর্মণস্তবেরিত্যনেনাল্মনেপদং। এতেষাং কন্তচিৎকর্মস্থভাবয়ং কেনাঞ্জিৎকর্মস্থভাবয়ং ক্রাকিংকর্মকঃ শব্দান্তাকর্মগ্রহাবয়্মীকারঃ কর্মকর্মেতি তিব্যাপদেশন্ত। ভূময়তইতি। ভূম্ভূমণেভূচুপ ভূবাদিপক্ষেইভূকেনন্তঃ। অবাকীফেডি। ক্র্যাতোন্মাত্রনা প্রবিভক্তি প্রবিভাবি। ভূময়তইতি। ভূম্ভূমণেভূচুপ ভূবাদিপক্ষেইভূকেনন্তঃ। অবাকীফেডি। ক্র্যাতোন্মাত্রালা প্রবিভক্তি প্রবিভাবি। ক্রাত্রাণান্তানাম্বালাক্রিভানিক্তিটিভিলুঙঃ কিন্তাং প্রদন্তব্যেরগ্রেশেলগুরুপেল্যান্তানাম্বালার্মান্তানান্তিরোপান্তোনির্যাণ

ইজাছহিম্বরাস্তেভাঃ। অদোহিগৌঃ স্বয়মেব বা অন্নগ্ধগৌঃ স্বয়মেব অবাচায়িপুষ্পং স্বয়ম্ ইজ দিট্ অবাচায়িষ্ট বা অহারিভারঃ স্বর্মেব অহারিষ্ট অহাতবা। ৪০১॥

नक्धः। इत्। अक्षाणीः अग्रः। ८०२ ॥

তপস্তপঃ কর্মকস্ম। কর্জাকর্মবং। তপ্যতেতাপসস্তপঃ। তপঃ কর্মকস্য-কিম্ উত্তপতিস্থবর্ণং স্বর্ণকারঃ। ৪০০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইন্ধা। কর্ম্মকর্ত্তরি। অদোহীতি। ইচ্বাতদভাবঃ। অবাচায়ীতি। ইচ্বৃদ্ধিঃ স্বয়মেবা-বাচিতংজাতমিত্যর্থঃ। ইচোহভাবপক্ষেম্বরাস্তধাত্বিত্যাদিনা ইত্বদিট্। অত্রযদ্যপি অশিতিস্তাদন্যত্রস্থাদধিকং যক্তদাচক্ষেইত্যভিধায়ম্বরাস্তেত্যাদিতাশীঃস্থাদ্যতনীম্বিত্বদিড্ বাসইট্পরং প্রতীত্যনেন স্তবিভক্তেরন্যত্র ভাবকর্মণোর্ব্বাচ্যয়োরিজ্বিড্বিধানং তথাপ্যত্রকর্মকর্ত্তরি আত্মনেপদমাত্রেতিদ্বিধানম্ অয়মেববিশেষঃ কর্ম্মকর্ত্তরি এবং পরত্রোদাহরণদ্বয়ে। ইজ্বিটোবৈকল্পিকতয়া তদভাবপক্ষেত্বস্থত। ৪০১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইজেতি। কর্স্থলবিধাত্নামপিকর্মস্থলবিজ্য সূত্রবলাৎ। স্তেইচ্ নাল্মনেপদমাত্রেইতিকশ্চিৎ তম্মকর্মস্থ ভাবধাত্নামিত্যস্থ বিবরণেকারিব্যতেকটঃ স্বয়মেবেতিউদাহরণ স্থাসস্থত্যাপত্তেঃ। ইজ্দিডিতি। যদ্যপিস্তাদ্যত্ত্বেজ্বিড্ বিধানং কৃতং তথাপি কর্মকর্ত্তাত্ব কর্মবিদিত্যনেনাল্মনেপদ যগিজিজ্বনিজ্লাব কার্য্যাতিদেশকরণাৎ কর্মকর্ত্তরি আল্মনেপদমাত্রে ইজ্বনিড্বিধানমিতিবিশেষঃ। ইজ্বনিজত্যনেন তদেবক্ষ্টীকৃতং। অবাচায়িক্টবেত্যাদি। চিঞ্চয়নেস্বাদিঃ সঞ্হেরণেভুবাদিঃ। অহ্বতেত্যত্তর্ধুড্ হ্রস্বতোধুটীতিসিজ্লোপঃ । ৪০২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নরু। রুধ্ইত্যস্ত কশ্মকর্ত্র্যাত্মনেপদেনইচ্। অরুদ্ধেতি। স্বয়মেব স্বমার্তবানিত্যর্থঃ। ৪০১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নরুধইতি। রুধির্ আবরণেরুউ। নাত্রবাপ্রবৃতিঃ নগ্রহণস্থ বৈয়র্থ্যাপতেঃ রুধইভ্যুক্তাবেব চরিতার্থস্থাৎ। ৪০২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তপ। তপ্ ধূপ্ সস্তাপেক্ষতপঃ কর্মকষ্টেত কর্মস্থভাববিরহেংপি কর্তাকর্মবৎক্ষাদিত্যর্ধঃ। কর্মবৎ কার্মাতি দেশাদাত্মনেপদাদি। উদিতি। স্থবর্ণ বর্ণং কর্ত্যাত্মনেপদাদিমাসূৎ। ৪০৩ ম মুচেঃ সণিগুণোনদিঃ। বৎসোইয়ং মোক্ষ্যতেম্বয়ং। উক্তঃ কর্মকর্ত্র-ধিকারঃ। ৪০৪॥

চঙ্ সন্ যঙপরোক্ষা স্থাতোর দিঃ ক্রতস্যতু। আদ্যাক্ষরং দিঃ। ভবতি এতা স্ক্রতা স্থ তেন সন্ যঙোরপি দ্বির্চনং। আদ্যম প্রথমান্তিরং স্বরসংখ্যায়-মক্ষরং। ৪০৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

তপইতি। তপ্ভ্বাদিপরশৈপদীষষ্ঠেকেবচনান্তঃ। তপস্তপস্থাকর্ম্মযন্ত নদ্যন্যস্থাদিতি বাকপ্নোহস্ততেনলোপঃ। অত্রকর্মস্থভাববিরহেহপি প্রদঙ্গাৎ কর্ত্তবিবাচ্যেআত্মনেপদাদ্যর্থং সূত্রং কৃতং। অত্যমতেতপ্ধাতৃভূবিদিরভয়পদী। তপ্ত্রশ্ব্যিউপতাপতপঃকরণেষু দিবাদিরাত্মনেপদ্যপ্যস্তি। যথা কবিরহস্থেতপত্যাদিত্যবদ্ধান্তাত্যঃ পরস্তপঃ। তপতেরিপুরাষ্ট্রশ্বতাপয়ত্যহিতং সতামিতি।৪০৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

মুচে। মুচ্ইত্যস্থ কর্মকর্ত্তরিসন্তশ্মিন্গুণঃ স্থাৎ দ্বিভাবোনস্থাদিত্যর্থঃ। বৎসোহয়মিতি। স্বয়মেবমুক্তোভবতিসন্গুণঃ নদ্বিঃ। কর্মকর্ত্ত্রিধকারউক্তঃ কথিতঃ। ৪০৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

মুচেরিতি। মুচ্৯মোক্ষণেমুউবিভাগানুক্লম্পন্য মোচনম্ অয়মপিকর্থ স্থাবা দূত্বলাৎ কর্মস্থাবতরাস্বীর্তঃ। কর্মকর্ত্তরিগমো দন্স্থাৎ দনিগুণঃ স্থাৎদ্বিভাবোনস্থাদিতিবাক্যযোজনা। গোপালকাদিব্যাপারমনপেক্ষ্যায়ং বৎসঃ মোক্ষ্যতেস্বয়ং বন্ধনান্মক্তোভবতি। অত্র কর্মবিদিত্যনেনা-দিন্ধীত্মনেপদাদিকমপি। মুচেঃ দইত্যুক্তে এতৎকার্য্যাতিদেশদামর্থ্যাৎ যথাধাপত্তেঃ মুচেঃ দেগুণইত্যুক্তে দেবিভক্তোগুণপ্রসক্তেঃ মুচেঃ দঃ দেগুণইত্যুক্তে দেবিভক্তোদঃ স্থাদ্গুণশ্চস্থাদিত্যাপত্তেরীদ্ক্দূত্রং কৃতং। কর্মেতি। কর্মকর্ত্র্রধিকারঃ কর্মকর্ত্রপিকারঃ কর্মকর্ত্ররীত্যস্থানুবর্ত্তনমিত্যুর্থঃ উক্তোময়েতিশেষঃ। ৪০৪ ।

প্রভাপ্রকাশিকা।

চঙ্। ইনন্ত শ্রীত্যাদিনাচঙ্ ধাতোঃ সন্বাইত্যাদিনাসন্ ক্রিয়াসমভিহারেযঙ্ইত্যাদিনাযঙ্ পরোক্ষালিট্ এতা স্কৃতা স্থণাতোরকৃত দ্বিভাবিতাদ্যাক্ষরং দিঃ স্থাৎ। এতা স্বিতি নতুনিমিত্তী স্থৃতা স্বিত্তার্থঃ। সন্যঙারপীতি। প্রতিষিষ্ঠি অরার্য্যতেইত্যাদে। ধাতোরাদ্যক্ষরমিত্যবয়বাবয়বিসম্বন্ধেষ্ঠী। বারেদ্বিত্রিচতুর্ভ্যঃ স্কৃতি দ্বিশকাৎ স্রচ্। ৪০৫॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

চঙিতি। যঙেতিস্বরাস্তপাঠ-ছল্দোহর্থঃ। দ্বোবারাবশুদ্ধি দ্বিঃ ক্রিয়তেশ্মাসাবিতিকর্মণিক্তঃ ততোনঞ্সমানেনঞকারঃ। আদ্যঞ্চলক্ষরঞ্চিত। এতাস্থচঙ্দন্যঙ্পরোক্ষাস্থধাতোঃ কৃতাস্থনত্বে তাস্থপরাস্থ তেন দন্ যঙোরপদ্বির্ভাবঃ এতচ্চতুশব্দগ্রহণাত্বক্তং। আদ্যমিতি। যদ্যপি আদ্যং

তংপূর্বং প্রাণ্ডভ্যাসশ্চকথ্যতে। তয়োর্দ্ধিকক্তয়োঃ পূর্বং। অপীপঠং পিপঠিষতি পাপঠ্যতে পপাঠ। অদিঃ ক্নত্ন্যকিং পোপোষ্যিতি অচক্রবং। ৪০৬। তত্রানাদিহলোলুস্পে। তত্রাভ্যাসে। অশিঞ্জিয়ৎ হুদ্রাব। ৪০৭॥

প্রথমমিত্যুক্তেরোচিত্যং তথাপ্যুক্তিবৈচিত্র্যার্থং ছন্দোবদ্ধতয়াউক্তং। অপ্রথমাদ্ভিমং প্রথমমিত্যর্থঃ। স্বরেতি। স্বরেণসখ্যায়তাং গণ্যতামেতদিতি সংপৃক্ষিখ্যাপ্রকথনেইত্যম্মাৎ কর্ম্মণিয়ঃ ডেট্চডকুবম্বেইস্ত্য-স্বরলোপঃ স্বরসহিত্মক্ষরং নতুব্যঞ্জনমাত্রমক্ষরং অন্যথাসনিক্ঞঃ কদ্বিভাবে ঋকারাস্থাভ্যাসম্বাভাবেনা কারেকারাপ্রদক্তে চুকীর্বতীতিপ্রয়োগাপতেঃ। অতএবাসইত্যাদৌনদ্বিতীয়াক্ষরং দিঃ স্বরসংখ্যে স্বাভাবাৎ। এবমন্যত্রাপি। ৪০৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা 1

তৎপু। অপীপঠদিত্যাদি। পঠইন্পাঠিলুঙিচঙিপাদিঃ অভ্যাদেহ্রস্বঃ সম্বচ্চসন্থবর্ণইঃ উপাগুরু লবোদীর্যঃ স্বপ্রত্য়াদি সনি ইট্ পঠ্ যঙ্ লিট্ রুদ্ধিঃ। পোপোষিষতীতি। পোপুষঃ যঙ্ লুগন্তাৎ সন্ পুনন্ন দিঃ গুণঃ। নন্তেক স্মিন্প্রত্য য়েসকু দ্বিভাবেচ রিতার্থ সাদ দিঃকৃত স্থেতিব্যর্থ মিত্যত দিতি। কুধাতোঃ কন্মকানাবিতি বন্মপুরোক্ষাতিদেশাৎদিঃ চকুবন্মশুদাদাচটে ইতীন্অন্তাসরা-দিলোপঃ চকুণাতোঃ লুঙি চঙি অডাগমঃ কৃন্স্প্পত্যয়েকুত্দির্বাচনস্থপুনম দিঃ ইন্লোপঃ স্বপ্রত্য-য়াদিতিদিঃ। ৪০৬॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা। তৎপূৰ্ব্বমিতি। তয়োঃ পূৰ্ব্বং তৎপূৰ্ব্বমিতিবিগ্ৰহঃ। প্ৰাঙিতি। প্ৰান্চশব্দস্তসোঁ অন্চি কুন্চিযুজাং নোঙঃ সংযোগান্তস্থলোপনং প্রাঙ্ অভ্যাসন্চকথ্যতেইত্যর্থঃ। প্রান্চকথনফলম্ একস্থ প্রাচিস্থব্নুক্চেত্যত্র অভ্যাসকথনফলং অভ্যাসেগ্রহিবচ্যাদ্যোরিত্যাদে। পোপোষিষতীতি। তুদিক্র্যাপ ভূশং পোষতীত্যাদিবাক্যেষ্ড্দ্বির্ভাবঃ অভ্যাসস্তপ্তণঃ যঙ্নুশ্বাসর্ব্বস্মাদ্ধাতোরিতি যঙ্নুকিপোপুষঃ সনিপুনম দ্বিঃ ইট্যত্বং। নমুদ্রতোক্তচঙাদিপ্রত্যয়ানামেকস্মিন্ প্রত্যয়েদকৃদ্বির্ভাবেচরিতার্থত্বাৎ পুনরগুস্মিন্ কুতোদ্বিভাবইত্যদ্বিঃকৃতস্মেতিব্যর্থমিত্যতআহ অচক্বদিতি। ৪০৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা ৷

তত্তা। অনাদয়োহলইতিবিগ্রহঃ অনাদিরপ্রথমঃ। অশিঞ্রিয়দিতি। গ্রিঞ্লুঙিচঙ্দিঃ অনাদি হলোরস্থলোপঃ ইযাদি। ছুদ্রাবেতি। লিটিদ্বিঃ অভ্যাদেরস্থলোপঃ। ৪০৭॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

তত্ত্তেতি। অনাদিহলইতিবহুবচনং যুগপদনেকহল্লোপার্থম্ অন্যথাহলমিত্যুক্তে একত্বস্থবিধেয় বিশেষণতয়াবিবক্ষিতত্বাদেকহল্ মাত্রলোপাপতেঃ তেন ঞিক্ষিদাঅব্যক্তশব্দাদে অটিক্ষিদ্বিভাবেষুগপৎ ষবকারয়োল্লোপেচিক্ষায়েতিপ্রয়োগঃ এবমন্যত্তাপি। হলাবিত্যুক্তেদ্বিহলোরেবলোপঃ স্থান্নত্বেকস্থাপী-

অযোগান্ধ স্থিতান্শিটঃ। লুম্পেৎ। তুষ্টাবচুম্ন্চ্যোতি ষতি অতিষ্ঠিপং। শিটঃ কিংপপ্সে) চিক্ষমিষতে। অযোষোদ্ধেতি কিংশগ্রামসুস্মূর্ষতে। অভ্যাসইত্যেবতম্থে। ৪০৮॥

হ্রসঃ। পপৌ। নিনীষতে। ৪০১॥

তিতথানকৃতং। নম্বধুনাপিহলইত্যুক্তোবহুবচনামহূনাং লোপঃ স্থান্ধত্বেকস্থম্যার্কেতিমৈবং চতুর্ব্বর্ণাদি ধাতোরসন্ত্রাং। লুম্পেদিতি। লুমছেদনেতৃত লিঙোযাতি অম্বিকরণেমুচাদিত্বান্ধু অকারাং পরস্তবাইঃ। অশিপ্রিয়দিত্যাদি। প্রিঞ্সেবাশ্রয়য়োঃ ভুউ ক্রগতিদ্রবীভাবপলায়নেযুভুপ পূর্ববিলুঙিচঙিমিঃ পরত্র লিটোহটিম্বিঃ উভয়ত্রানাদিহলোলোপঃ। ৪০৭।

প্রভাপকাশিকা।

অঘো। অঘোষস্থ উদ্ধিষ্টিতান্শিটঃ শিট্সংজ্ঞকান্। তৃষ্টাবেতি। স্তুষিঃ শলুক্র্দিঃ যত্বং। চুশ্চোতিবতীতি। শচুৎেনন্দ্যুদিঃ অঘোষোপরিশলোপঃ অনাদিহল্যলোপঃ যত্বাদি। অতিষ্ঠিপদিতিপুর্বং সাধিতং। পালাবিতি। পাভক্ষণেলিটিতত্রানাদীত্যাদিনাসলুক্র্মঃ আকারাদট উসদ্ধিঃ। চিক্ষমিষত ইতি। ক্ষমূদন্দিঃ অনাদিহল্লুক্ অভ্যাদেহবর্গ ইঃ কবর্গস্তচবর্গঃ ইডাগমাদি অনয়োরঘোষোর্দ্ধিটি নাস্তি। শালামেতি। প্রমুঅট্রেফলোপঃ অভ্যাদেহনাদিহল্ত্বাৎ ধাতোর্গদিঃ পূর্ববিৎ। স্থাপুর্বতইতি। অনয়োরঘোষোর্দ্বিভিনিলোপঃ। অভ্যাদেইত্যমুর্বততে অভ্যাদীয়তাদৃক্শিট্লোপইত্যর্থ ইত্যাহা-ভ্যাদইত্যেবেতি। তম্বাবিতি। অত্থাসুম্বিন্নুপ্যতইত্যর্থঃ। ৪০৮॥

গৃত্পকাশিকা।

প্রভাপ্রকাশিকা।

হ্রস্ব:। অভ্যাদেদীর্ঘস্তত্যর্থ:। পপাবিতি। পাত্ম ছিঃ অভ্যাদেহ্রস্ব: আকারাদট ও। নিনীযতীতি। নীসন্ একস্বরত্বাদনিট্ হ্রস্ব:। ৪০৯। - ঋবর্ণস্যাকারঃ। সসৃম। দদ্রে। ৪১০॥ হস্যজঃ। জহৌ জিহীর্যতি জুহোতি। ৪১১॥

প্রথমঃ স্যাদ্ধিতীয় স্যাচতুর্থ স্যত্তীয়কঃ। তিষ্ঠাসতি অপুস্ফুটৎ পফালডুটো-কে দেধীয়তে বভাগ। ৪১২॥

गृष्धकाणिका।

হ্রস্বইতি। পপাবিতি। পাপানেভূপ পারক্ষণে অপ। নিনীষতইতি। নীঞ্প্রাপণে অউ।৪০৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঋব। স্থাতি। স্থাতোঃ লিট উত্তমপুরুষীয়মবিভক্তো স্বন্ধিঃ অভ্যাদেঋতঃ আঃ। দদ্রেইজি। দৃদ্ধিট এদিঃ ঋআঃ ঋকারস্থাবস্থং। ৪১০॥

गृष्धकाणिका।

ঋবর্ণস্থেতি। সম্প্রেমত্যাদি। স্থাতৌভুপ দৃঙ্ আদরে তুআ। ৪১০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হস্ত। হস্তাভ্যাদেজঃ স্থাৎ। জহাবিতি। ওহাক্ অট্ বিঃ হ্রস্বঃ হস্তজঃ অটঔ। জিহীর্বতীতি। হুকেঃ সনিরূপং। জুহোতীতি। ত্বর্তুমানায়াস্তিহ্স্তজঃ। ৪১১॥

গুঢপ্রকাশিকা।

হস্যেতি। জহাবিত্যাদি। ওহাক্ ত্যাগেজুপ ক্ষঞ্ হরণে ভুউ অত্রাদাবনিট্দগ্যন্তদীর্ঘতা-পশ্চাদ্গুণোনাস্তিনামিমতামিত্যগুণে ৠদন্তস্থেরগুণে অগুণেহলীতিদীর্ঘঃ। হুদানেজুপ শিতিদ্বিঃ স্থাজু-হোত্যাদেরিতিদ্বিঃ অভ্যাদে হস্তজঃ ধাতোগুণিঃ। হ্রস্বঃ পপৌঋবর্ণস্থাকারঃ দস্ম হস্তজইতিচ্ছন্দঃ। ৪১১॥

প্রভাপ্রকাশিক। ।

প্রথমঃ। দ্বিতীয়স্থপ্রথমঃ চতুর্যস্তৃতীয়কঃ স্থাদভ্যাদেস্বার্থেকঃ। তিষ্ঠাদতীত্যাদি। সনিদ্বিদ্ধে প্রস্তঃ। স্ফুট্বিকসনে স্ফুট্তিকন্চিদিতীনিস্ফোটিধাতো চিঙিস্ফোদ্বিদ্ধে ব্রস্বেদলাপেফস্তপঃ ইন্চঙ্গুপান্ত ক্রস্বাদি। ফল্নিম্পত্তী ফস্তপঃ অটির্দ্ধিঃ। ঢ়োক ঢ়োদ্বিদ্বে ব্রস্বেদ্সভঃ। ডুধাঞ্ অত্যর্থন্দধাতীত্যাদ্যর্থে যঙিনাম্যাদেশস্বাৎপ্রাগীত্বেদ্বিভাবে ধক্ষদঃ অভ্যাসগুণাদি। ভণ্শকে ভক্ষবঃ। ৪১২॥

গুঢপ্রকাশিকা।

প্রথমইতি। তিষ্ঠাসতীত্যাদি। ষ্ঠাগতিনিরতৌ ভূপ স্ফুট্ তুপ ফল্ ভূপ। ভূঢ়োকইতি।
টোক গতোভূষা। তংবিপ্রদর্শং কৃত্যাত্যত্মাযান্তং বনেরাত্রিচরীভূঢ়োকে। জিঘাংস্বেদং ধৃতভাস্বাস্ত্রন্থাং তাড়কাথ্যাং নিজ্যানরামইতি ভটিঃ। দেধীং দীপ্তি দেবনয়োঃ অ ভণ্ ভূপ। ৪১২॥

কবর্গন্যচবর্গঃ স্যাৎ। চকমে জঘটে জগ্নৌ চথাদ ঙুঙ্গতোঞুঙুবে। ৪১৩॥ ইতিসাধারণোবিধিঃ। অসাধারণস্তুতত্ত্রতবৈবিজ্ঞেরঃ। ৪১৪॥

সুরাদীনাং দিতীয়স্ত্বক্ষরংদিঃ স্যাণ। যথা আপিপণ। ধাতুত্বাদিন্ সন্ যঙাং সনস্তঃ পাতাদিটোপি দির্বচনম্ ঈচিক্ষিষতে এষিষিষতি প্রতীষিষতি অরার্য্যতে অটাট্যতে। ৪১৫॥

প্ৰভাপৰাশিকা ৷

কব। অভ্যাসে। চকমইত্যাদি। চদ্যকঃ ঘট্ চতুর্থস্থ তৃতীয়কোগস্থজঃ গ্লৈ গ্লাদ্বিত্বে ললোপে ব্রুষ্বেগস্থজঃ খাদৃদ্বিত্বে হ্রুষেদ্বিতীয়স্তপ্রথমেকস্থচঃ ওস্থক্তিবাদি। ৪১৩॥

গুঢপ্রকাশিকা।

কবর্গস্থেতি। কস্থবর্গঃ কবর্গইতিবিগ্রহঃ। এবংচবর্গোঽপি। চকমেইত্যাদি। কমুকাস্ত্য-ভিলাষয়োঃ ভুআ ঘট্ চেম্টায়াং ভুআ গ্রেহর্ষক্ষয়ে ভুপ খাদৃভক্ষণেভুপ ঙুঙ্গতোশিক্ষেত ভুআ। ৪১৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইতীতি। ইয়ং সাধারণীদ্বিভাবপ্রক্রিয়াবিজ্ঞেয়া। ৪১৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইতীতি। ইতিশব্দোহত্রপূর্ব্বোক্তকার্য্যপরামর্শকঃ। ইতিহেতোপ্রকাশনে। নিদর্শনেপ্রকারেষ্ঠাৎ পরকৃত্যনুকর্ষয়োঃ। সমাপ্রেচপ্রকরণেহপীতি মেদিনী। তেনায়ং পূর্ব্বোক্তাভ্যাসবিধিঃ সাধারণঃ স্ব্বতাভ্যাদেবিজ্ঞেয়ঃ। অসাধারণস্ত অভ্যাসবিধিস্তত্রভত্তত্তিমিমিত্তেউক্তোবক্ষ্যমাণশ্চবিজ্ঞেয়ইত্যর্থঃ। তথাহি নিজ্ বিজ্বিবাং গুণঃ কার্য্যঃ পৃভৃঞ্ মাঙ্হাঙকারইরিত্যাত্যক্তঃ অভ্যাসম্প্রগুণঃ অকারাদট্স্ঠাদিত্যাদি বক্ষ্যমাণইতি। ৪১৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্বরা। স্বরাদীনাং ধাতূনাং তুদ্বিতীয়মক্ষরমনাদ্যমপিদ্ধিং স্থাৎ। আপ্তইন্চঙ্দ্বিতীয়াক্ষরদ্বিতা-বেরূপং। ধাতুত্বাদিতি। সনাদ্যন্তাশ্চধাতবইতি তদন্তানাং ধাতুত্যা ইন্ সন্ যঙামপিদ্বিক্চনং সনন্তঃ পাতাংসনন্তর্গতত্যা ইডাগমস্থাপিদ্বিক্চনং। ঈচিক্ষিষতইতি। ঈক্ আত্মনেভাষঃ ঈক্ষিত্মিচ্ছতীতি সনিইডাগমে ক্ষিদ্বিভাবং সলোপেকস্থাচঃ পূর্কবিদাত্মনেপদং। এধিধিষতীতি। ইযুএফুমিচ্ছতীতি সনীডাগমেগুণঃ বিদ্বিভাবেষত্বং। প্রতীধিষতীতি। প্রতিপূর্কইণ্সগতোবা এতুমিচ্ছতীতি সনি গুণো

পরং প্রতি দ্বিরীর্ষ্যোষিঃ সন্চ। ঈর্ষ্যিযিষতি স্ত্রিয়ম্। ঈর্ষ্যিষিতি। সন্চেতি তৃতীয়সুরার্থং। ৪১৬॥

নাস্তি নামিমতামিতি গুণাভাবং দনোদ্বিদ্বে দশ্যবর্ণ ইংষত্বং। অরার্য্যতেইত্যাদি। ঋ অট্দূত্রিমৃত্যু দূচীত্যাদিনা স্বরাদেরপি অত্যর্থমিয়র্তি অত্যর্থমিটতীত্যাদিবাক্যেয়ঙিয়ের্থৎ কার্য্যাতি দেশাৎ জাগর্তিইত্যাদিনাম্যাদেশানিত্যাত্যুক্তেশ্চপ্রাকৃগুণে অর্থ্য অট্যস্থিতে স্বরাদের্দ্বিতীয়াক্ষরস্থার্য্যট্যইত্যশুদ্বিদ্বে অভ্যাদে অনাদিহল্লোপে অকারাদ্যাগমং যঙোহত্তির্ভিবং। ৪১৫॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

স্বরেতি। স্বর্জাদির্যোষামিতি বিগ্রহঃ। তুশব্দোভেদে তেনানাদ্যমপিদ্বিতীয়মক্ষরং দ্বিভবিতি চঙাদিনিমিত্তেয়। আপিপদিত্যাদি। আপ্তব্যাপ্তে স্বাপ হৈতুকেন্ দীতি ইন্ চঙি পিদ্বিভাবঃ। স্ক্লুদশ্নেভুআ ইযুইচ্ছায়াং তুপ প্রতিপূর্বাইন্গতে ইগতে স্বগতা স্বগতীচ্ছাব্যাপ্তিক্ষেপণ ভোজনগর্ভ-গ্রহণেয়ু বা তত্রপূর্বাপরো অপ মধ্যো ভুপঅবিশোদেবাং দাধ্যং ঋগতিপ্রাপণয়োঃ ভুপ ঋগতে জুপ অট্ গতোভুপ। ৪১৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পরং। ঈর্ষ্ট্রার্থঃ অক্ষান্তিরীর্ষ্যা ঈর্ধাতোর্ষিত্ত পরংপ্রতিদ্বিঃসনোহপিদ্বিকচনং। স্ত্রিয়মীর্ষিত্ত মিচ্ছতীতি দনিইডাগমে পরং প্রতিয়িদ্বিভাবে ঈর্ষিয়িয়িয়িয়িত ঈর্ষিয়াতোঃ দন্দির্ভাবেপূর্ববিদ্ধিন্তাকে অস্তাইকেসির্যিয়িয়িয়িত। তৃতীয়স্বরার্থমিতি। তৃতীয়াক্ষরদ্বিভাবার্থমিত্যর্থঃ। কেচিত্তুত্তীয়াক্ষরস্থাভ্যাসত্বাত্তত্তত্ত্বিস্থানিতি বদন্তিত্মান্দম্ উল্জেরপ্রযোজকত্বাৎ। অন্তেতুবেদেউদত্তোহনুদতঃ স্বরিতইতি
তৃতীয়স্বরার্থমিত্যাত্তঃ তচ্চিন্তাম্। ৪১৬॥

গ্ তপ্ৰকাশিকা।

পরমিতি। ঈর্ষ্য ঈর্ষ্যাতোঃ যিঃ ইডন্তায়শব্দঃ সন্চ পরংপ্রতিদ্বিভবতীত্যর্থঃ। এতৎসূত্রাভাবে দিতীয়াক্ষরস্থাইত্যস্পূর্বাং প্রতিদ্বিভাবেঈরিষ্যিত্রতি প্রয়োগাপত্তিঃ স্থাৎ পরংপ্রতিইত্যক্তাভাবেপূর্বাং প্রতিবিদ্বিভাবেঈবিষ্যিত্রতীতি প্রয়োগাপতিঃ স্থাদিত্যবগন্তব্যং। ঈর্ষ্যিয়িষতীত্যাদি। ঈর্ষ্য ঈর্ষ্যায়াং সাচাক্ষান্তিঃ তুপইটিসনিবিদ্বিভাবঃ। সন্চেতি সন্চেত্যকুক্তেতৃতীয়াক্ষরিভিত্যবানস্থাদিতি তদর্থং সন্চেত্যক্তমিতিভাবঃ। তৃতীয়ম্বরার্থমিতি। তৃতীয়ম্বং তৃতীয়ান্মানং তৃতীয়ম্বরপমক্ষরং রাতিগৃহ্লাতি আশ্রয়তি প্রস্তৃত্বাং দ্বিভাবন্তদর্থমিত্যর্থঃ। যদ্যপিসনঃ পূর্বাং দ্বিভাবেইপিনক্ষতিস্তথাপিপরং প্রতীত্তি চকারসমুচ্চিতেনাম্ব্যোনবিক্লদ্ধঃ। অত্রপরং প্রতিদ্বিবিধানাদন্যত্রপূর্বাং প্রতিদ্বিবিতিলক্ষ্য। ৪১৬॥

নবদরসংযোগাস্তাক্ষর মেষামূর্জোয়ন্ডিচ। পরং প্রতিদ্বিঃ স্যাং। এষাং স্বরাদীনাং। উন্দিদিষত্যুক্তিজিষত্যুক্তিরাজ্বদভ্যাদ্দিদংপ্রায়াঃ। উন্দিদং উজ্জিবিষতি এবমর্চ্ অর্জ্জাদেঃ। উর্পুঞ্জঃ প্রোর্ণবিষতি প্রোর্ণাব যন্তিচ প্রোর্ণোর্গ্রত। অন্যেষাস্ত্রস্রাদীনাং নবদরসংযোগিনাং যন্তিপরং প্রতিনদ্বিং কিন্তুপূর্বসূত্রেণ পূর্বস্প্রত্যে। অরার্যতে ইনান্দ্যতে উনাদ্যতে। ৪১৭॥

প্রভাপকাশিকা।

নব। নবদরৈঃ সংযোগাঃ সংযুক্তাইত্যর্থঃ যেধাতবোনবদরস:যোগিনোভবন্তিতেবাং স্বরাদীনামস্থাক্ষরং পরং প্রতিদ্বিঃ। উন্দিদ্যতীত্যাদি। উন্দ্র্যন্ত্রতহিপি নতত্রানাদিহলেল্পুদেপদিত্যভ্যাদেহনাদিহল্লোপঃ নবদরসংযোগেতি ধাতুবিশেষণাদন্তাক্ষরদ্বিভাবেকতেহিপি নতত্রানাদিহলোলুদেপদিত্যভ্যাদেহনাদিহল্লোপঃ নবদরসংযোগদত্রা অপেক্ষিতত্বাৎ উক্ব উদ্বাবদসংযোগী উদ্বাইন্ চঙ্ আদৌর্দ্ধিঃ পরত্রাভ্যাদেচতুর্থভ্যত্তীয়ঃ তদেলচটবর্গেষিত্যাদিনাদভ্যকঃ ইল্লোপঃ দিঃ অভিপ্রবাজদিইন্দিঃ চঙিইল্লোপঃ
আদৌর্দ্ধিঃ উন্দ্রইন্টিলিঃ ইল্লোপাদি। এবমিতি। অর্ক্স্বায়ামর্চিচিষতি আজ্জিব। প্রোণ্ণুবিষতীতি। সন্পৃদ্ধি পরত্রইট্ঞারঃ দন্ধিনাদি। এবমিতি। অর্ক্প্রায়ামর্চিচিষতি আজ্জিব। প্রোণ্ণুবতইতি অভ্যাদেগুণঃ নামায্রিকার্যঃ। এভিদ্বানামর্থ্যান্ব্যঞ্জনাদেরপিষঙ্। যদ্যপিন্ধাদির্ভণ্ থেলায়েভিত্রিত অভ্যাদেগুণঃ নামায্রিকার্যঃ। এভিদ্বানামর্থ্যান্ব্যঞ্জনাদেরপিষঙ্। যদ্যপিন্ধাদির্ভণ্ থেলায়েভিত্রিতবিধানবলাৎ
স্বরাদের বিদর্বাদিনা যঙ্যপিপরং প্রতিদ্বিরিতিলভ্যতে তথাপিউর্গুঞায়ন্তিচ পরংপ্রতিদ্বিরিতিবিধানবলাৎ
স্বরাদের বিদর্বাদিনায়ন্ত্র্যাগ্যতেকিন্তন্ত্র্গুলুঞায়ন্তি সনাদোচপরং প্রত্যেবিলঃ অভ্যন্তর্বাদিনা
স্বাদ্যান্ত্রিলনাদেলিচপ্রবাং প্রত্যেবাগ্যতেকিন্তন্ত্রিলি আশ্রেনাহ্অভ্যেবাদ্বিতি। অরার্য্যতইতি। ঋত্যট্র্যান্য্যুত্র স্ত্রাক্রাদির্ভ প্রত্রানিন্তর্বেলিং। অভ্যন্তরাদিনামর্থ্যাৎ যন্তন্ত্রেরানাদিহল্লোপইতিযত্রশ্ব প্রতিদ্বিরাক্রেরান্ন্র প্রতিদ্বিরাক্রাদিনামর্থ্যাৎ যন্তন্ত্র্যবহ্নদ্বতইত্যাদি। ইন্দ্ উন্দ্র্যান্ত্রন্ত্রান্তর্বাননাদিহল্লের্ক্র অনাদিহল্ল্র্ক্ অকারাদিট্। উনাদ্যতইত্যেববহুদম্বতং পাঠঃ। ৪১৭॥

গৃতপ্रকাশিক।।

নবেতি। নশ্চ বশ্চ দশ্চ রশ্চেতিছন্দ্রঃ এষামকারশ্চন্দোহর্থঃ নবদরৈঃ দংযোগোযেষামিতি অদমানাধিকরণোবহুব্রাহিঃ অন্তঞ্চনক্ষরঞ্চেতি নবদরদংযোগানামন্তাক্ষরমিতিবিএহোঁ। অব্যবহিত-প্রাপ্ত কানাং প্রত্যক্ষবদভাপামাদেতংশব্দপ্রয়োগঃ কৃতঃ এষাং প্রাপ্তক্ষরাদীনাং নবদরদংযোগান্তা ক্ষরং চণ্ডাদিবুউর্ব এঃ যিওচ চণ্ডাদিবুচপরংপ্রতি অন্তক্ষরংদ্বিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। উন্দিদিবতীত্যাদি। উন্দাক্রেদনেরূপ উন্দিত্রমিচহুতীতি দনি ইটি ইটাসহঅন্তাক্ষর্বাদইত্যস্থপরং প্রতিদ্বিঃ তৎপূর্বংপ্রাণ্ডভ্যাসশ্চ কথাতেইত্যনেন নসংযোগিদকারস্থনলোপঃ তল্লোপস্থাবিবক্ষাধীনম্বাদিত্যক্তমঘোদোর্ছেতি সূত্রটীকায়াং সনঃ ষম্বং। এবমন্মত্র। উদ্ আর্জবৈতৃপ উদ্ঝত্যাগেতৃপ অর্দ্গ্রিযাচনপীড়নেযুভূপএতেপ্রায়াঃ সদৃশাযেষাং তেএতৎ তুল্যান্যতেহপিপ্রয়োগাইত্যর্থঃ। অর্জ ভূপ অর্জ অর্জনেভূপ আদিনাম্বর্থ হিংসাক্রয়পুজনের ভূপ অর্ব্গতিহিংসায়োঃ ভূপ অর্হপূজায়াং যোগ্যতায়াঞ্জুপইত্যাদেগ্রহণং। উর্ব এইতি। উর্ব অ্যাক্ষাদনেম্বর্ড।

নাম্যাদেশানরাত্বোদ্ধং পরবর্ণেন যোজনং। ইন্যায়াবৌকেবলাচঃ কৃত্বাদির্বিচনং কুরু। নামিশ্বরূপান্সাদেশাব্যঞ্জন বস্তোহপিগ্রান্থাঃ অধিকং তত্রান্ধুপ্রবিষ্ঠং নতুতদ্ধানিরিতিন্যায়াৎ যথামাদীনামীত্বং মেমীয়তে দেদীয়তে। সম্প্রসায়ণং জ্যাজেজীয়তে ব্যধ্বেবিষ্যতে স্বেঞ্জোহ্বয়তে। ইক্রৌতুতেতীর্য্যতে পুপোপ্র্যতে অর্ অরিরিষতি অরার্য্যতে আত্বং মীঞ্ মমৌ লীঞ্ ললো। উদ্বমিতি মতান্তরম্ এতদ্বিধানাদেবসন্ধ্যনন্তর্ং দিঃ ত্বদূষতি অন্যমতেদিদূষতি। ব্যঞ্জনং পরগামিস্যাৎ অটিটিষতি। ইন্যায়াবৌব্যঞ্জনাসং প্রক্রেরস্য ইমাখ্যৎ উমাখ্যদিতীনিরদ্ধাবায়াবোঃ সতোদ্বিতীয়াক্ষরং দিঃ আয়িষ্যৎ আবিবৎ অধ্যাপিপং। ইনিকিম্ ইয়ায় উরিবাচরতীতিষিঙ্ লুগন্তাদটি উবাবেতি কশ্চিং। কেবলাচঃ কিম্ অজূহবৎ অতুষ্টব দিতিব দূহনীয়ম্। ৪১৮॥

উর্পুঞাযিও চেত্যুক্তোতিছিয়ানাং নবদরসংযোগিনাং স্বরাদীনাং যভিপরং প্রতিনদ্ধি কিন্তুপূর্বং প্রত্যেবত্যাহান্ডেযান্তি। অরার্য্যতইতি। ঋগতিপ্রাপণয়োঃ ভুপ ঋগতো জুপ দ্বয়োর্য্য ঋগতোগ্র দেয়পেছি
দির্ভাবঅর্য্যাইতি স্থিতোঅভ্যাদেহনাদিহল্ যঙোলোপেঅকারাদট্ ওকুনদ্ধযওন্ত স্থালনেপদং। ইনান্দতইতি। ইদিপরমেশ্র্যেভুপধাতোরিদকুবন্ধস্থ স্বরামুন্ যঙিদ্বিভাবাদি। উনাদ্যতেইতি। উন্দীয়ঙিদির্ভাবাদি অগুণেহন্তাব্যঞ্জনাদীতি ধাতুনকারলোপঃ। যদিউনান্দ্যতেইতিপ্রয়োগঃ তদাউন্দিকেদনেইতি
হুম্বেকারাকুবন্ধোধাতুঃ স্বীকার্য্যঃ ইদকুবন্ধন্ধানু মৃ যঙিদ্বিভাবোয়ঙাসহত্তস্তত্রানাদিহলোলুম্পেদিতানেনানাদি
নকার্যকারেরালোপঅগুণেহন্তাব্যঞ্জনাদীত্যাদিনাধাতুস্থ্যধ্যনকারলোপঃ। এতৎপ্রয়োগোনবহুসন্মতইতি
প্রভাপ্রকাশিকাকার্যতং। নবদরেত্যাদিপ্রায়াইত্যন্ত মুপগীতিচ্ছন্দঃ। নবদরসংযোগান্তেতিপ্রথমঃ যঙিচেত্যন্তঃ দ্বিতীয়ঃ উন্দিদিযত্যুক্তিবইতিতৃতীয়ঃ প্রায়াইত্যন্ত শ্ভর্থঃ পাদঃ। ৪১৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নাম্যা। নাম্যাদেশান্ অর্ আত্ব উত্বং পরবর্ণেনযোজনং মেলনং কৃত্বাদ্বিক্তনং কুরুকেবলোহচ্
যক্তব্যধাতোঃ ইন্প্রত্যয়েআয়্ আব্চকুত্বাদ্বিঃ কার্য্যমিত্র্যর্থঃ। তত্তৎকার্য্যং পুনস্তত্তৎসূত্রেণইদং
পরিভাষা। নামিস্বরূপাইতি। অপিনাস্বরূপাশ্চ। ঈত্বমিতি কৃত্বাদ্বিরিতিশেষঃ। মেনীয়তইতি।
যিও কিতিহলীত্যাদিনাস্বৈদ্বিঃ অন্যথামানীয়তইতি আৎ এবমগ্রেহপি। জেজীয়তইতি। গ্রহিজ্যেভ্যাদিনামিত্বেনামীদীর্ঘঃ। বেবিধ্যতইতি। ব্যধ্ যঙ্ সম্প্রসারণেদ্বিঃ। অত্যর্থং হ্রয়তিইতি যঙ্
সম্প্রসারণেহুদ্বিভাবেগুণেহোজঃ নামীদীর্ঘঃ। ইরুরোনাম্যাদেশোউদাহ্রিয়েতে। তৃ অত্যর্থং তরতি
যিওঞ্জনন্তন্যেতি ইর্ দ্বিক্চনাদি। পু অত্যর্থং পুণাতি যিও উর্ন্যাদোষ্ঠ্যাৎ পরস্বন্যেতি উর্ পুদ্বিভাবেহগুণেদীর্ঘঃ। অর্ উদাহ্রিয়তে অ্ররিয়তীতি। ঋদনিইভাগমেগুণেরিদ্বিঃ। অরার্য্যতইতি। যঙি

জাগর্তিইত্যাদিনাপ্রাক্ অর্থ্যন্বির্ভাবে অনাদিহল্লোপে অকারাদট্। আত্মুদাহ্রিরতে মনাবিতি।
দীঙ্মীনাতীত্যাদিনাআত্ম। ললাবিতি। লিয়স্তবেত্যাত্ম আত্মানস্তরংলিঃ। উত্মতিতি। উত্থং
কৃষাদ্বিরতি মতান্তরং কেষাঞ্চিন্মতে। এতদিধানাদিতি। উত্থানস্তরং দির্ভাববিধানাদেব কিঞ্চনাম্যাদেশত্বেনোরপ্রাপ্তাবিপ পুনরবোপাদানাদেবসন্ধানস্তরংলিঃ নাথ্যেপ্রারতি নঞ্জোনিত্যত্বাৎ তুত্ত্যবতীতি
বেটোদরিদ্রোগ্লুভরেত্যাদিনা ইবর্ণান্তাবেটঃ বউরিতি বস্যোত্তেইকারস্থাত্বেদ্যুত্বিভাবেহ্নাদিহল্লোপহুষ্মেবত্বং। অত্যতুউত্থাৎ প্রাগেবদ্বিত্ততোবউঃ দিন্যবতীতি। পক্ষেইডাগমাদি দিদেবিষতীতি।
আটিইবতীতি। সন্ ইডাগমে পরবর্ণযোগেদ্বিঃ। ইত্যেতি। কেবলস্ব্যঞ্জনাসংপ্রক্রম্যইনি আয়াবের্বা
কৃষাদ্বিঃএতিকশ্চিদিত্যাদ্যর্থে ইনিস্বি। ইং কাম্ম উং মহাদেবমাখ্যদিতি তৎকরোতীত্যাদিনা ইনির্দ্ধা
একাবৈরকারয়োঃ ঔকারস্যেত্যাদিনাআয়াবোঃসতোঃকৃত্ব্যোঃ আযি আবিস্থিতে চঙিদ্বিতীয়াক্ষরংদ্বিরত্যর্থঃ
ততইল্লোপাদি। ইয়ায়েতি। বৃদ্ধ্যাদেঃ পূর্বেমেবইদ্বিভাবের্দ্ধা আয়ু অভ্যাসেহস্থস্বরইত্যাদিনাযাঃ।
যিঙ্লুগন্তাদিতি। উপমানাৎ কর্ত্ব্যিঙাচারইতি যিঙ্ যিঙ্লুক্চস্ব্রতইতি যিঙ্ লুক্ যিঙ্লুগন্তধাতোরটি
আবেঃ পূর্বেমেবদ্বিঃ অভ্যাসেবাগ্যমঃ। অজুহ্বদিতি। জুহোতি কশ্চিদিতীন্চঙি কেবলম্বরভাতাবাদায়াবোঃ
পূর্ব্যেবদিতিঃ তত্যাব্ উপান্তহ্বেঅভ্যাদেদার্যঃ ইল্লোপাদি। অত্নতবিদিতি। স্তোতিকশ্চিদিতীনিরুদ্ধে চঙিঃ আবঃ পূর্বমেবিরিঃ সলোপেন্থস্বন্দম্ব্রেজাবাদি ইত্যাদিত্ব্যপদমূহ্যমিত্যর্থঃ। ৪১৮॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

নাম্যেতি। নাম্যাদেশানিতি বহুবচনাদাধকং তত্তারুপ্রবিষ্টং নতুতদ্ধানিরিতিভায়স্বীকারঃ তেন ব্যঞ্জনবন্তোহপি নাম্যাদেশাগ্রাহ্যঃ ইতিস্বয়ং বক্ষ্যতি। মেমীয়তইত্যাদি। মামানেঅপদিআ মাঙ্ মানে জুআ উভয়োরূপং ডুদাঞ্দানে অপ জ্যাবয়োহানো ক্র্যাপ ব্যধ্ তাড়নেদিপ স্থেঞ্ আহ্বানে ভুউ ত প্লবনসম্ভরণয়োঃ ভুপ পু পালন পুরণয়োঃ ক্র্যাজুপ যঙি সর্ব্বতাভ্যাসস্ত্রণইতি অভ্যাসেগুণঃ। ঝগতিপ্রাপণরোঃ ভুপ ঝগতো জুপ উভরোঃ সনিরূপ । মীঞ্ গতোক্র্যাদিঃ লীঞ্ শ্লেষণেক্র্যাপ। মতান্তরমিতি। স্বমতানুবায়িমতান্তরমিত্যর্থঃ সূত্রকরণাং। ছুদুয়বতীতি। দিবুক্রীড়ায়াং দিপ ইডভাবপক্ষে এনপ্রয়োগঃ। ইট্পক্ষেতুদিদেবিদতীতি। বক্ষ্যতিচবেটোদরিদ্রোর্ণ,ভরভ্রজ্রুযুঞ্জিক্তাদয়ঃ। ঋদন্তেবন্ত কোদন্ভপতিজ্ঞ পুধিসন্তনইভিসূত্রবিষ্বতো দিদেবিষতিভূদূদেতীতি। ভট্টোচৈতৎপ্রয়োগদ্বয়ং দৃশ্যতে यथारिन १ বিভক্ষুরস্ত্রায়ৌরগঃ প্রাণৈদিনে বিষন্। জ্যাঘুষ্টকঠিনাঙ্গুষ্ঠং রামমায়ামুমূর্ঘয়া। অস্তার্থঃ। অস্ত্রায়োদেহং বিভ্রক্ষঃ ভ্রফুমিচ্ছঃ প্রাণৈদ্দিদেবিষন্ ক্রীড়িতুমিচ্ছন জ্যাঘ্যুষ্টকঠিনাঙ্গুষ্ঠং ধরুগুণঘর্ষণ কঠিনাঙ্গুষ্ঠং রামং মুমূর্যয়ামর্জুমিচ্ছয়া আয়াৎ আগতবানিতি। তেনাতুদ্যুষয় দ্রামং স্কুর্গেণস্কুগলোচনা। মৈথিলীবিপুলোরক্ষণ প্রাবৃবৃধ্র গাজিনমিতি। অস্তার্থঃ। মৃগলোচনামৈথিলী মৃগাজিনং প্রাবৃষ্ঠঃ পরী ধাতৃমিচ্ছুঃ তেন মুগেণবিপুলোরস্কং রামং অন্তুদ্যয়ৎ ক্রীড়িতুমিচ্ছামকারয়দিতি। দিদ্যবতীতিনবহুসমতঃ প্রয়োগঃ। অধ্যাপিপদিতি। ইঙ্ অধ্যয়নেইনিপাগমঃ। ইকারঃকথ্যতেকামইত্যেকাক্ষরকোষঃ। উবাবেতিকশ্চিদিতি। কশ্চিজ্জনঃ। উরিবাচরিতবানিতার্থঃ। উকারঃ শঙ্করঃ প্রোক্তইত্যেকাক্ষরকোষঃ। অজ্হবদিত্যাদি। হুদানেজুপ ফুঁঞ্স্ততোঅ। উহনীয়মিতি। অশুগ্রবদিত্যাদি।৫১৮॥

সম্প্রসারণমভ্যাসেবাথিছ্যভ্যোঃ। অবিব্যথং। বিব্যথেবিব্যথিষতে অদি-ছ্যতং দিহ্যুতে দিদ্যোতিষতে দেহ্যুত্যুতে। ৪১৯॥

নামধাতোর নিয় মাদ্ধিঃ। পুপুত্রীয়িষত্যসৌ। পুপুতিত্রীযিষিষিতা তিস্ত্রীকামিম্যিষাদয়ঃ। এবং শিশ্যেনিনাষিষিষিষম্ভইছপ্রবীরাইত্যাদয়ঃ। ৪২০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সম্প্র। অবিব্যথদিতিঘটাদি তেন .বিব্যথইতি পরোক্ষায়াং ব্যথিষ্টক শ্চিদিতীনির্দ্ধোমিতাং ব্রশ্বইতি ব্রশ্বেব্যদ্বিদ্বেশস্প্রশারণম্ অভাগমাদি। বিব্যথিষতইতি। ব্যথিতুমিচ্ছতীতিসনীট্। অদিত্যুত-দিতি। ত্যুৎ অদ্যোতিষ্টক শ্চিদিতীনিগুণঃ দ্যোদ্বিদ্বেশস্প্রশারণে উপান্তব্রশ্বদি অন্তৎপূর্ব্ববৎ। দিপ্তাতইতি পরোক্ষায়াং। দিদ্যোতিষ্টিইতি। দ্যোতিতুমিচ্ছতীতিসনি অভ্যাদেশস্প্রশারণম্ ইডাগমেগুণঃ। দিল্লাত্তইতি। অত্যর্থং দ্যোতত ইত্যাদ্যর্থেষ্ডি প্রাচিশস্প্রশারণেগুণঃ। ৪১৯।

গৃতপ্রকাশিকা।

দপ্রদারণমিতি। ব্যথ্ভয়চলনপীড়ায়ভুন্সা ত্যুৎদীপ্তৌভুন্সা ধাতুনির্দেশেইঃ। যত্রয়ত্তবির্ভাবস্তত্ত্ব তত্ত্ব চঙাদিয়ুপরতোব্যথিত্বাত্যোরভ্যাদেসম্প্রদারণং স্থাদিত্যম্বয়ঃ। অবিব্যথদিতি। ব্যথতেশ্মকশ্চিদিতীনির্দ্ধোঘটাদিকেনমিতাং ব্রম্বইতি ব্রম্ব্যথিধাতোঃ সীতি ইনন্ত শ্রীত্যাদিনাচঙিব্যদ্বিশ্বেহভ্যাদে সম্প্রদারণম্ আদৌ অভাগমঃ ইল্লোপঃ স্বপ্রতায়াদিতিদিঃ লোপ্যহনুবন্ধইতি দেরিলোপেলিঙ্গবৎ প্রথমোধুটামিতিদঃ স্থানেতঃ সনিঅভ্যাদেহবর্ণস্থেকারেতু অব্যিব্যথদিতিস্থাদতঃ সূত্রারম্ভঃ। বিব্যথইতি পরোক্ষায়াএবিভক্তো। অদিয়্যতদিতি। দ্যোতিষ্টকশ্চিত্মিতরঃ প্রযুঙ্জেশ্মেতীনিগুণঃ সীতি চঙিদ্যোদিক্রেউপাস্তহুস্বঃ অন্তৎ অবিব্যথদিতিবৎ। অন্তংপ্রভাপ্রকাশিয়ামবলোকনীয়ম্। ৪১৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নাম। পূর্ব্বশ্নামপশ্চাদ্ধাতৃঃ তস্থানিয়মাদ্বিক্চনং প্রায়েণ্যনিপরেঅনিয়মঃ আদ্যন্তমধ্যমিচ্ছয়াদ্বিঃ। পুপুত্রীতি। পুত্রমিবাচরতীতি আচারের্যিন্নিবার্থকাদিতি যিন্যাববর্ণস্থানীর পুত্রীয়িতুমিচ্ছতীতিসন্ আদ্যং দিঃ সনিইডাগমঃ। আদিমধ্যান্তদ্বির্ত্বশ্বত অনাদিহলুক্ শস্তমামিট্। তিন্ত্রীতি।
স্ত্রীকাম্যধাতােঃ সন্দ্রীদ্বিঃ হ্রমাদিট্মিয়দ্বিঃ দ্বয়োরনাদিহল্লুক্প্রত্রহ্বাঃ সিড্লোপশ্চগুরোঃ সেটোহলস্তাদিঃ সনাদীতিঅপ্রত্যয়ঃ আশ্চ। শিশুইতি। শুেনইবাচরতীতি যিঙ্গ্রেনায়ধাতােঃ সন্ইট্শ্রেদ্বিঃ
নাদ্বিঃ যদ্বিঃ স্ব্রিত্রমধ্যেচহ্বাঃ পূর্বত্রানাদিহল্লুক্মধ্যে অন্তেচসন্মবর্ণ ইরভ্যাদে অন্তেরপং।
আদিপদাৎ পুত্রীযিযিষতিপুতিক্রীযিষতি পুপুতিক্রীযতি ছিন্ত্রীচিকামিম্যিষতিশিশ্যেনিনাযিযিষতে
যংকভূঞাদেঃ কণ্ডু যিযিষতি মহীযিযিষতিহ্বণীয়িযিষতি। ৪২০॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

নামেতি। অত্যেনামপশ্চাদ্ধাতুরিতি প্রাক্কালৈকজরৎ সর্ব্বপুরাণনবকেবলাঃ। তুল্যাধি-করণৈরেবেত্যাদিনা সমাসঃ। পুপুত্রীযিষতীত্যত্রষত্বঞ্চ। পুপুতিক্রীযিযিষিতেত্যত্রাভ্যাসত্রীত্যশুহ্রস্বঃ আভিক্ষাবী, স্পার্যার্যাদেশদং দিস্ত্রিশ্বসম্ভ্রমে। আভীক্ষ্যং পৌনঃ পুন্যং।
পঠতি পঠতিপদ্যং লুনীহি লুনীহিশত্ত্র্ন রক্ষং রক্ষং প্রতিসিঞ্চতি আমেপ্রামেরমণীয়ঃ গৃহে গৃহেস্বামী অনুপূর্বেইপিবী, স্পান্তি মূলে মূলেস্ফূলাঃ অথ্যে অথ্যেসূক্ষ্মাঃ। ব্যাসেকিং প্রতিরক্ষং সিঞ্চতি গেহানুপ্রবেশমান্তে। সম্ভ্রমন্তারতম্যং
বদ বদতাবং বুদ্ধ্যেস্ব অহিরহিঃ ত্রিশ্চ অহিরহিঃ হিঃ। ৪২১॥

অনাদিহলোস্তরোলোঁপঃ সনঃষত্বং শ্বস্তনীতাবিভক্তাবিট্। আত্মনঃ প্রিয়মিচ্ছতীতিবাত্মেচ্ছায়াং নামঃ কাম্যই তিকাম্যেদনাদ্যন্তাশ্চধাতবইতিধাতুত্বেপ্রীকাম্যধাতোঃ স্ত্রীকাম্যিতুমিচ্ছতীতিসনিই ট্স্রীদ্ধিঃ ম্যিদ্ধি অভ্যাদস্ত্রীশব্দ শুব্রস্বঃ অঘোষোর্দ্ধদলোপঃ দরোরনাদিরযয়েলোপঃ সনঃ ষত্বং ভাবেঅঃ স্ত্র্যাধিকারাদা-প্রত্য়ম্চ। আদিনা পুত্রীযিয়িষতীত্যাদে প্রত্যাদে প্রত্যাদে তিতি। শ্রেমঃ পক্ষিবিশেষঃ তত্মাত্রপমানাৎ কর্ত্ব্যিঙাচারেইতিযিঙ্কার্য্যমবর্ণ শ্রাহং যিঙ্গিঞিচেতি অশ্বাহং শ্রেমানিত্রিচ্ছতীতিসন্ ইট্ আদিমধ্যা-স্তানাং সনশ্চরিত্বেহ্ অভ্যাদকার্য্যাণিসয়োঃ মত্বং যিঙ্গু শ্বাত্মবিদ্দাত্রির দিলার্মানেপদীয়ান্তেবিভক্তোরূপঃ। ইহ্যুদ্ধেপ্রকৃষ্টবীরাঃ শ্রেমপক্ষিবদাচরিত্বিচ্ছন্তীত্যর্থঃ। যুদ্ধেসমাক্রমিত্বমূনবলান্দর্পাঃ। ক্ষুদ্রাভটাজিগমি যন্তিসভীতিটিত্রাঃ কাপোত্রতিমবলন্থ্যবণাহিদ্রমিতি শেষপাদত্ত্রম্। ইত্যাদ্যইত্যাদিনা শ্রেমাযিযিব্যক্তিইত্যাদে প্রত্যাদে প্রহণং। ৪২০॥

প্রভাপকাশিকা।

আভীক্ষা। আভীক্ষ্যেবীপারাঞ্চপদং দ্বিং স্থাৎব্যাদেহসমাদে। অভীক্ষ্ম্যভাবইতিগুণবচনেত্যাদিনাযণ্ আদোর্দ্ধিঃ। পঠতীত। পূনং পুনং পঠতীত্যর্থং এবং দ্বির্বিচনাৎ পরং প্রকর্ষার্থপ্রত্যয়োহপি
পঠতি পঠতিতরাং। ভ্শাভীক্ষ্যাবিচ্ছেদেবিতিশভুং। প্রপঠতি প্রপঠতিতরাং ক্ষারপায়ীতিণিনোক্ত
স্থাৎ নদ্বিরিতিদারং। বীপ্যাক্রিয়াগুণদ্রবৈয়র্থপথ প্রযোক্ত্র্ব্যাপ্ত্রিফ্রাত্যাঙ্গম্যমানায়াংদিং। রক্ষ্
মিতি। ক্রিয়য়াব্যাপ্ত্রিচ্ছতীত্যর্থং। গ্রামইতি। রমণমত্রনক্রীড়া কিস্তুদোন্দর্যগুণাং। স্বামীতি
দ্বব্যং। গৃহেগ্রেপাঠইতিদারং। অনুপূর্ব্বেঅনুক্রমেগুলাদ্যনুপূর্বেণিষাং স্থোল্যমিত্যর্থং। দ্বিরন্ত্রক্রেমজ্যেষ্ঠং ক্রেষ্ঠং প্রবেশয়েতিদারং। ব্যামইতি। সাদ্শ্রেবাগ্যতাবীপ্রত্যাদিনা অব্যয়ভাবেমাভূৎদ্বিং।
নন্ত্র দ্বিং সমাদোক্রন্ত্রেবর্মীভাবং। ব্যামইত্যচ্যতেদত্যং প্রতীতিগোরবাদিপ্রমিতিভাবং। গেহানুপ্রবেশমিতি। পদার্থানতির্ত্রব্যয়ীভাবং। অহিরহিরহিরিতিত্ররায়াং। যাবদ্বোধং গচ্ছগচ্ছেতিসারঃ
প্রযোক্রম্বরণং যাবতাপদেনবাক্যেনবাবোধোগ্যমতেতাবিতবদ্বিং। ৪২১॥

गृष्धकाणिका।

অতীক্ষ্যেতি। মূহুঃ পুনঃ পুনঃ শশদভীক্ষমসকৃৎসমাইত্যমরঃ। অতীক্ষশভাবইত্যর্থেযণ্ভাবে কর্মণ্যপীত্যাদিনাযণ্। বীপেতি। বিপূর্বআপ৯ব্যাপ্তোস্বাউ ক্রিয়াগুণদ্রবৈয়র্থান্যুগপৎ প্রযোজুর্ব্যাপ্ত্ মিচ্ছাসন্ আপ্নোতেরীবিত্যনেনাকারশ্রস্ঠঃ দীর্ঘঃ বীপ্সধাতোর্ভাবেখঃ আপ্রত্যয়ঃ আভীক্ষ্যঞ্বীপ্সাচেতি একস্প্রাচিম্ব্লুক্চ। যথৈকৈকং ফলং দদৌ। ৪২২॥

শব্দান্তুক্তিডাচিদ্ধিঃ। পট পটাকুৰুতেপটঃ। পট পটায়তীতি উক্তং ঝন ঝনায়তে। ৪২৩॥

পুৰঁ দ্ভাব কপীড়ায়াং। স্থব্লুক্চ। প্রিয়বিযোগাদিপীড়িতবক্তুৰুক্তিঃ। গত গতঃ গত গতা নফ নফঃ নফ নফা। ৪২৪॥

দ্বন্ধঃ। বিপূর্ব্বাস্ক্ষেপণেভাবেঘঞ্রদ্ধিঃ গুণঃ। ব্যাসঃ সমাসবিগ্রহোহসমাসইতিয়াবৎ। বিস্তারোবিগ্রহোব্যাসইত্যমরঃ। সন্ত্রমস্ত্ররেত্যমরঃ। ব্যাসেহসমাসেসতি আভীক্ষ্যবীপ্সয়োর্গমানয়োঃ পদং দ্বিঃ স্থাৎসন্ত্রমেত্বরায়াং গম্যমানে পদং ত্রিশ্চচকারাৎ দ্বিশ্চেত্যন্বয়ঃ। সন্ত্রমইতিপশ্চান্নির্দ্দেশাৎ ত্রিশ্চেতিতত্রৈবসম্বন্ধঃ নম্বাভীক্ষ্যবীপ্সয়োঃ অভ্যথাআভীক্ষ্যবীপ্সামন্ত্রমেষিত্যুক্তংস্যাৎ। ব্যাসেইত্যুস্থ ফলং সাদৃশ্যযোগ্যতাবীপ্সেত্যব্যয়ীভাবসমাসটীকায়াং প্রাগুক্তং। আখ্যাতান্তপদস্তবন্তপদদ্বিভাবার্থং পদমিত্যুক্তং। পঠতীত্যাদি। পঠ্ব্যক্তায়াং বাচি লুঞ্ছেদনে বিচির্ক্ষরণে। অগ্রাদ্যমুক্তমেস্ক্ষাত্রং পরিমাণ বিশেষোগুণঃ। গেহেতি। প্রপূর্বাঃ বিশ্ প্রবেশস্বামুজ্বনিভ্রমইত্যব্যয়ীভাবঃ গেহেমুপ্রবেশ মিতিসপ্তমীসমাসঃ গেহপ্রবেশানতিক্রমেণাস্তেইত্যর্থঃ। আন্তইত্যাদি। আস্উপবেশনেবদ্ব্যক্তায়াং বাচি। সন্ত্রমস্থার্থমাহ সন্ত্রমইতি। তারতম্যং স্বরাশীঘ্রন্থমিতিয়াবৎ। বুধ্ অবগমে। ৪২১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

এক। একস্থদিঃ প্রাচিত্মভ্যাদেম্বপোলুক্চ। একমেকমেকৈকং বীপ্সায়াম্ একৈকস্মৈএকৈ কস্তাঃ একৈকশোবিনিম্নন্তি একমেকং প্রতীত্যসাধু প্রত্যেকমিতি সমাসোক্তত্বান্নদিঃ। ৪২২॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

একস্থেতি। চকারোদ্বিভাবসমুচ্চায়কঃ একৈকমিতি। অত্রদানক্রিয়াব্যাপনেচ্ছারূপবীপ্লায়াং দ্বিঃ স্থব্লুক্চ। ৪২২ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শব্দা। অব্যক্তশব্দাসুকারঃ ডাচিদ্বিঃ স্থাৎ। পটৎকরোতীতি ডাজব্যক্তাসুকরণাদিতি ডাচিদ্বিঃ ডিন্ত্রাদন্ত্যতভাগলোপঃ পৃষোদরাদিত্বাৎ পূর্বেতলোপঃ লোহিতাদিডাজন্তাদিযঞিতিযিঞ্। ঝনঝনায়তইতি। অত্র ঝনৎ ঝনৎকরোতীত্যুভয়পদং ঝনঝনায়তইতি মালতী। ঘটিতি ঘটদিতি গদ্ভীরমমুদৈর্ম দিতং ঘটৎ ঘটিতি ঘট ঘটদিতি ঘটৎ ঘটেতিসারঃ। ৪২৩॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

শব্দেতি। পট পটায়তীতি। অত্ত্রিঞ্। ইত্যুক্তং তদ্ধিতে ডাজব্যক্তানুকরণাদনিতোদ্বিবহুস্বরা দিতিসূত্রবিবরণেইতিশেষঃ। ৪২৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পুর্বা। পীড়ায়াং প্রাচিস্থব্লুক্চপুর্বাচ্চ। গত গতইতি স্থব্লুক্ গতগতেতি পুর্বাচ্চ। হাহতেতি হাশব্দেনোক্তত্বাম্বিঃ অহহ নগরিকা নগরিকেয়ং নপুর্বাচ্চকারাৎ। ৪২৪॥ সদৃশেগুণবাচিনঃ। দ্বিঃ স্থব্লুক্পুরঁচ্চ। পটু সদৃশঃ পটু পটুঃ পট্টীসদৃশী পটু পট্টী শুক্ল শুক্লা গুৰু গুর্নীত্যাদি। ৪২৫॥

অকৃন্দ্রে বা প্রিয়ম্বথে। দ্বির্ভবতঃ। কৃতং মুখ মুখেনতং। প্রিয় প্রিয়েণ-দদাতি প্রিয়েণস্থখেনবা। অকৃন্থমনায়াসঃ অন্যত্রপ্রিয়ঃ পুক্রঃ। ৪২৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

পুর্ব্দ দিতি। পীড়ায়াং গম্যায়াং সাচপ্রিয়বিযোগাদিপীড়িতবক্তুরুক্ত্যাগম্যমানেত্যাহপ্রিয়েতি। গত গতইত্যাদি। গম্ধাতোঃ ভূতেকর্ত্তরিক্তঃ। নই নইউইতি। নশ্ নাশাদর্শনয়োঃ গত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনা কর্ত্তরিক্তঃ ধুট্যন্তেচছশোঃ ষত্বং ষকারাত্তবর্গস্যটবর্গঃ স্থব্লুক্। নইউনইউত্যত্রপুর্ব্ব ৎ স্থপঃপ্রামোপাৎ 18২৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সদৃ। সাদৃশ্যেগম্যেগুণবাচিনোদিঃ। পটুপটুঁাতি। পূর্ব্বব্রেপুবর্ব চ। ভীত ভীতেতিসারঃ। এবং চকিতচকিতং মন্দ মন্দমুদিতঃ প্রথযোগং ভীতভীতইবশীত্র্থইতি ভারবিঃ। বিভাদ্বিভাৎ প্রবিশতি ততঃ পর্ণশালাঞ্চিক্ষুরিত্যনর্যে। শুক্রশন্দোগুণবাচকঃ। গুরুসদৃশোগুরুগুরুঃ। পটু পটুঃ আদিনাপটু পটুজাতীয়ঃ জাতীয়শ্চেষ্যতইতিসারঃ। ৪২৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সদৃশইতি। সদৃশেগম্যেগুণবাচিনোদিঃ প্রাচিত্বব্লুক্ পুক্ত । দ্বিরিত্যাদি পুক্ষস্থাদমুবর্ত্ততে। পটুপটুরিতি। দ্বিভাবেনসাদৃত্যার্থস্থোক্তথাৎ সদৃশইত্যস্থাপ্রয়োগঃ। পটুপট্বীত্যত্রদ্বিভাবঃ পুক্র চ হুপঃ পূর্ববলুপ্তথাৎ। আদিনামূত্যমূত্রিত্যাদিএ ছিঃ। ৪২৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অকৃ । অকৃচ্ছে ২কফেইংর্থ প্রিয়ন্ত্রখণন্দীবাদিং। অন্যত্রেতি। অকৃচ্ছাদন্যত্রকুচ্ছু ইত্যর্থং। কুচ্ছুং প্রয়াদঃ প্রাণিনাং ধর্মঃ তদ্বিপক্ষোহকুচ্ছুং সচপ্রাণিনাং ধর্ম্ম এবয়িমন্দতি প্রয়াদমন্তরেণবদান-করে বিতি তামিমকুচ্ছু প্রাণিধর্ম বৃত্রয়েঃ প্রিয়ন্ত্রথয়াক্ষাদিঃ পক্ষেপ্রিয়েণদদাতি স্লখনপশ্যতি বিনাপ্রয়াদেনত্যর্থং। প্রিয়ং পুত্রঃ স্লখোরথং নাত্রকুচ্ছু বিপর্যায়ে প্রাণিধর্মবিষয়ে প্রিয়ন্ত্রখণক্ষা কিন্তুদ্রব্যয়োঃ পুত্ররথয়োঃ পুত্রোহি প্রীণাতি ইতিপ্রিয়ঃ স্থাহেতুত্বাৎ স্থাবারথইতি। অপ্রাণিবিষয়এবেতি অপ্রাণি ইতানেনাদ্রব্যমূচ্যতে অদ্রব্যবিদ্রব্যএবেত্যর্থং। বাক্যঞ্চ্যাবিদ্রহ্মাধিক্যে স্লেহাদর্শনীয়া স্লহোদর্শনীয়ামহং রোচতে অত্রদর্শনীয়াদ্রয়ন্ত্রক্তর্বেরাধিক্যং দ্যোততইতি কেচিৎ। নমস্তব্যেনমস্তব্যেইতি চবাশব্যাধ্যং। ৪২৬ ॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অক্চছুইতি। অক্চছুমনায়াদঃ প্রাণিধর্মস্তাম্মিন্ প্রবৃত্তেপ্রিয়স্থেদ্বিঃ স্তঃ প্রাচিস্থব্ক্চ। অন্যত্তা-কৃচ্ছুরূপপ্রাণিধর্মাদন্যত্তেত্যর্থঃ। প্রিয়ঃ পুত্রইতি। অত্তপ্রিয়স্তপুত্ররূপধর্ম্মিপরত্য়া ধর্মার্স্ত্য-ভাবান্নদিঃ। ৪২৬ । সম্মত্যসূয়য়োঃ সম্বোধনবাক্যাদিসংস্থিতং। স্বার্থেদিঃ। অভিরূপকাভিরূপ-কইদানীং স্থবিনীতোসি। রামরামমহাবাহো। অবিনীতা বিনীতত্বং লপ্স্যসে-দম্ভক্তং ফলং। ৪২৭॥

উপর্য্যধ্যধসোঃ দিঃ স্থাঃসামীপ্যে। উপর্যুপরিবীক্ষন্তে অধ্যধিগ্রামং দ্রুমাঃ। নবানধোইধোরহতঃ পয়োধরান্। সামীপ্যেকিং গৃহাত্বপরিচক্রমাঃ। ৪২৮॥

প্রভাপ্রকাশিক। ।

সন্ম। সন্মতিশ্চাসূয়াচতয়োঃ সম্বোধনং বাক্যাদিস্থংদ্বিঃস্বার্থে। দ্বয়ং সন্মতৌ একমসূয়ায়াং বাক্যাদিসম্বোধনং। সন্মত্যসূয়াকোপকুৎসাভৎর্সনেষু প্রাচ্চ প্রাচ্চসাধুদানাসি রামরামতুভ্যমসূয়তিরাবণঃ দাসদাসতাড়য়ামিস্বাং ছফছফুসাপিষ্ঠোহসি পুত্রপুত্রাবিনীতোহসি। ৪২৭॥

गृष्धकाणिका।

সন্দোতি। সন্মতিঃ সন্মানম্। অস্যাতুদোষারোপোগুণেষপীত্যমরঃ। অস্যায়াঃ কোপপ্রভবত্বাৎ তয়াকোপকুৎসাভৎর্সনানিচগৃহত্তে। তেন সন্মত্যস্থাকোপকুৎসাভৎর্সনেষু গম্যেষু বাক্যস্থাদোসংস্থিতঃ সম্বোধনং সম্বোধনবাচকং পদংদ্বিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অভিরূপকাভিরূপক স্থাদরস্থানিতাহিসি স্থানিকিতাহিস। রামরামেতি। রামরামমহাবাহোকৃষ্ণত্র্ইনিবর্হণ। এমবৈবাধতে ক্ষুন্নস্তছান্তিং কর্ত্ব্যর্হথ। বাশকাষ্যাৎ কৃষ্ণেত্যত্রবিকল্পেননদ্বিঃ এতদ্বয়ং সন্মতৌ। অবিনীতেতি। দম্ভাদ্যভিত্তত্ব্রথঃ। অবিনীতঃ সমৃদ্ধতইত্যমরঃ। ইদমসূয়ায়াং দাসদাসতাড়য়ামিত্বামিতি কোপেত্রইত্রইপাপিষ্ঠোহসীতিকুৎসায়াং পুত্রপুত্রাবিনীতোহসীতিভৎর্সনে। ৪২৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উপ। উপরিঅধিশব্দাবৃপরিবচনাবিতি বজ্রধর:। উপরি অধি অধসোদিঃ স্থ্যুঃ দামীপ্যেহর্যে। নবেতি। প্রথমফিকা। দমূতকর্পুরপরাগপাশুরং। ক্ষণং ক্ষণোৎ ক্ষিপ্তগজেন্দ্রকৃতিনাক্ষুটোপমং ভূতি দিতেনশস্তুনেতিমাঘঃ। গৃহাত্নপরীতি। নাজদামীপ্যমিতি দূরামদিঃ। উপরিশিরদইতি শিরদঃ দামীপ্যমিবিক্তিত্ম উপর্যাধোভাগমাত্রবিক্ষণাৎ। পূর্বাং প্রথমঞ্চপূর্বাং পূর্বাংযোগতিপূর্বামিত্যর্থঃ এবং প্রথমং প্রথমমিতি তরতমোচেষ্যেতে পূর্বাতরং পূর্বাতমং। ৪২৮॥

गृष्यकाणिका।

উপেতি। অত্রদ্ধিরিতিগ্রহণং নিত্যার্থং পূর্ব্বপ্রথময়োদ্বিভাবার্থঞ্চ। উপযুপরীতি। দ্বিভাবেনসামী-প্রোক্তত্বান্ধপ্রয়োগঃ। সামীপ্রঞ্গত্রবক্তৃরিচ্ছাবিষয়ীভূতং। বীক্ষন্তইতি। বিপূর্বে ঈক্ষ্ সন্দর্শনেভূত্যা। গ্রামাদে অধ্যাদিযোগেদিতীয়া। ৪২৮॥

বর্জনেপরিঃ। দ্বিঃ স্যাৎ। পরিপরিত্রিগর্জ্তেভ্যোরফৌদেবঃ। বাস্মরণাৎ কচিম্নদ্বিঃ পরিত্রিগর্জেভ্যোরফৌদেবঃ। ৪২৯॥

উপপ্রসমুদাং পাদপূরণেদ্বিঃ পরেরপি। প্রপ্রণম্যমহাদেবং সংসংযম্যমনঃ সদা। উপোপহায়সংসর্গমুদ্ধ্যতি সতাপসঃ। পরিপরিগতঃ। ৪৩০॥ কেচিদ্দীর্ঘদ্ধিকক্তিভ্যাং সিদ্ধাঘনা ঘনাদয়ঃ। বদা বদঃ পতা পতঃ। ৪৩১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বর্জ। বাম্মরণাদিতি। অক্চচ্ছে বেতিবাম্মরণাৎ। বর্জনার্থপরিব্রাপরিত্রিগর্ত্তেভ্যোর্ফ্টঃ পরিপরিবা পরিত্রিগর্তমিতি সমাদেনোক্তত্বান্নদিরিতিসারঃ। পরিপরিশোগুাৎ। ৪২৯॥

গুঢপ্রকাশিকা।

বর্জনইতি। পরিরিত্যকুকৃতত্বেনানব্যয়ত্বাশ্ববিভক্তিলোপঃ। বর্জনার্থেপরিঃ দ্বিঃ স্থাশান্থার্থে। তথাচ মেদিনী। পরিস্থাৎ সর্ব্বতোভাবেবর্জনেব্যাধিশেষয়োঃ। ইত্থস্তুতাখ্যানভাগবীপ্লালিঙ্গনলক্ষণে। দোষাখ্যানেনিরসনেপূজাব্যাপ্ত্যোশ্চভ্যণেইতি। ত্রিগর্ত্তাদেশবিশেষাঃ। রুইইতি। রুষুদেচনেভূপ গত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনাকর্ত্তরিক্তঃ। বাস্মরণাদিতি। নতুসিংহাবলোকন্থায়েনবাশ্বয়াৎ তেন কচিমদিরিভিন্নদয়ঃ। ৪৩০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উপেতি। উপপ্রসমুদ্এষাংদিঃ পাদপুরণেহর্থেপরেরপিদিঃ। সংসর্গংসঙ্গমুপোপহায়ত্যক্ত্বা। ৪৩০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উপেতি। অপিশক্ষক্ত সমুচ্চয়ে। নিপাতাশ্চোপদর্গাশ্চধাতবশ্চেতিতে ত্রেঃ। অনেকার্থাঃ স্মৃতাঃ দর্কেপাঠন্ডেষাং নিদর্শনমিতি বচনাৎ পাদপুর্গার্থ রমপিপ্রাদীনাং। অত্রপুন্দির্গ্রহণং বিকল্পেন দ্বিভাবার্থং। প্রপ্রমাতি। গমপ্রহারেনতোচভূপ। সংযম্যেতি। যমুউপরমেভূপ। উপহায়েতি। ওহাক্ত্যাগে। উদ্ভাতীতি। ভাদীপ্রে উভয়মদাদি। দর্ক্ত ক্রুম্বোনেযপ্ উত্ত ভাতীতি ক্রিয়মাসহৈকক্ত ক্রুমেবাং। তাপসইতি। তপোহস্যান্তিতাপদঃ অণ্বাতপঃ সহস্রাভ্যামিত্যণ্মাদোর্দিঃ। তপস্বীতাপদঃ পারিকাঞ্জীত্যমরঃ। পরিপ্রীতি। অত্যাপিপাদপুরণেদ্বিভাবঃ। ৪০০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কেচিৎ। ঘনা ঘনাদয়ঃ কেচনশব্দাদীর্ঘদিরুক্তিভ্যামর্থবিশেষব্যবস্থয়াচনিপাতনাৎদিদ্ধাঃ হ্যঃ। হন্ধাতোর্ঘন্নিপাতঃ দিঃ পূর্ব্বপদান্তদীর্ঘঃ। বর্ষুকাব্দোঘনাঘনঃ। এবং বদ্ পত্ ধাত্বোরচি বদা বদঃ বক্তাপতা পতঃ জ্রুপত্নশীলঃ। চলাচল প্রোথতয়েতিনৈষধে। এবমুক্তং ক্৯িদিক্৯িশিচরিচলিপতি বিদহনি পটতীনাং চিক্৯দ্ চিক্৯শ্ চরাচর চলাচল পতাপত বদাবদ ঘনাঘন পটাপটা নিপাত্যাঃ। নানাবধারণামু-পূর্ব্যধিক্যেষ্ তত্ত্ব নানাবধারণং নানাভূতানাং পদার্থানাং ভেদেনইয়ত্তাপরিছেদঃ। তদ্যথা অস্মাৎ

রোলঃ কপিরিকাদের্বা। ব্যাডাদীনাস্তুডস্যলঃ। রঘুঃ লঘুঃ নারিকেলঃ। নালিকেলঃ নডঃ নলঃ পরায়তে পলায়তে। দ্বন্দ্বং যথাযথনিত্যাদি পৃষোদরাদৌ সিদ্ধংতত্তদর্থে। *। ইতিদ্বির্চনপ্রকরণম্। *॥ ৪৩২॥

কার্ষাপণাৎমাধং মাধংদেহিপ্রত্যেকং মাধমাত্রং দাতব্যংনাধিকমিত্যর্থঃ ইহকার্ষাপণসম্বন্ধিনোমাধাঃ শাকল্যে নদাতুমিচ্ছাইতি বীপ্সানাস্তিনানাগ্রহণাদিহনভবতি তম্মাৎকার্ষাপণাৎ ইহবসদ্ভ্যাং মাধংদেহি দ্বোত্তীন্ বাদেহীত্যর্থঃ। অনেকমবধারিতমনেকং অম্মাদ্রাশেশ্যাধং দেহিএকস্তুদ্বাভ্যামেকং মাধংদেহি ইতি সারঃ। ৪৩১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কেচিদিতি। দীর্ঘশ্চ দ্বিক্লজিশ্চেতিদ্বন্ধঃ। ঘনাঘনআদির্য্যোমিতি বহুব্রীহিঃ। দিদ্ধাইত্যনেনার্থবিশেষব্যবস্থয়েতিলভ্যতে তেন দীর্ঘদ্বিক্জিভ্যাং পূর্ব্বপদান্তদীর্ঘদ্বিক্চনাভ্যামর্থবিশেষব্যবস্থয়াচ
ঘনাঘনাদয়ঃ কেচিৎশব্দাঃ দিদ্ধাঃ স্থারিত্যম্বয়ঃ। আখ্যাতপ্রত্যয়নিমিত্রাভাবেহপি দ্বিভাবপ্রদাস্থাভুকং।
হস্তীতিহনঃ অচ্পুষোদরাদিত্বাৎ হস্তদঃ অনেনদ্বিঃ পূর্ব্বপদাস্তম্ভদীর্ঘঃ অর্থবিশেষব্যবস্থাচ। শক্রঘাভূকমত্তেভবর্ষুকাব্দাঘনাইত্যমরঃ। বদ্বক্ত্যায়াং বাচিবদতীত্যচ্দ্দিদীর্ঘশ্চ। বদোবদাবদোবক্তেত্যমরঃ।
শীদ্রপাভূকেতু পতাপতইতিকোষঃ। আদিনাপ্রভাপ্রকাশিকাশিকাক্তাগ্রাহ্যঃ। ৪৩১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রোলঃ। কপিরেকাদের্মানিচ। ব্যাডা। ব্যাডাদিশন্দানাং পুনর্ডস্থলঃস্থাৎ। কপিরিকা কপিলিকা আদিনারবুং নারিকেলইত্যাদি। ব্যাডঃ ব্যালঃ দর্পঃ নলইতিতৃণভেদঃ। পরায়েতি। পরাপুর্বঃ অয়্থাডুঃ। দ্বোদ্বোদন্দ দিশন্দেনিপাতঃ। যথাযথেত্যর্থে যথাযথমিত্যাদি। তত্রতত্রার্থে প্যোদরাদিত্বান্ধিপাতনাৎ দিদ্ধমিতি। যদ্বাযোযস্থাত্মা আত্মীয়শ্চইত্যর্থে যথাযথমিত্যর্থঃ। যথাস্বস্তুযথাযথং। স্বআত্মা আত্মীয়শ্চযথাস্থং চিন্তিতাঃ পদার্থাঃ। যথযথং তাঃ সহিতানভশ্চরৈরিতি কিরাতার্জ্জুনীয়ে। *। ইতি দ্বিক্চনপ্রকরণবিবরণম্। *। ৪৩২ ॥

• •

गृष्धकाणिका ।

রোলইতি। কপিরিকাদেঃ রোলঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ইদং নিপাতপ্রসঙ্গাছুক্তং। কপিরিকেতি। কপিং বানরং রাতিআদতেগৃত্বাতীতি রাআদানেইত্যুসাদপ্রাদিনামপূর্বাদিত্যাদিনাডঃ আপ্রত্যয়ঃ স্বার্থেকঃ অন্যত্রকুত্রচিতি আহ্রস্বঃ আপ্রত্যয়স্থইতিঅস্তইঃ কপিরিকাবানরী। কপিলবর্ণযুক্তাগবাদির্বা। ব্যাডাদীনামিতি। আদিনানডঃ নলঃ লড়িলাদেভুপ লডতি ললতীত্যাদেগ্রহণং। #। ইতিগৃতপ্রকাশিকায়াং দ্বিক্চনপ্রকরণবিবরণং। #॥ ৪৩৩॥

€90

কচাদের্ভন্মবন্ধাচ্চ স্যাৎ কর্ত্ত্ব্যাত্মনেপদং। কচ আদিঃ কর্চ্ আদির্য্যস্যেতি উভয়সমাসেনকচাদেরাক্ষতিগণাৎ ওন্মবন্ধাচ্চ ধাতোঃ কর্ত্ত্ব্যাত্মনেপদং স্যাৎ। রোচতে শোভতে এধতে স্পর্দ্ধতে। অত্রকচাদেঃ পরস্মৈপদমপি। বিদ্রুষাং নলভন্তিপদং। ওন্মবন্ধান্নিত্যমেবাত্মনেপদং জিহীতে মিমীতে ত্রায়তে। ত্রাহিমাং মধুসূদনেত্যার্যম্। ৪৩৩॥

ক্রিয়াবিনিময়েসর্বধাতুভ্যঃ। কর্ন্তর্য্যাত্মনেপদমিত্যধিকারঃ। বিনিময়ঃ পরিবর্ত্তঃ ব্যতিভবতে ব্যতিদত্তে। ৪৩৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রুচা। রুচ আদিরিতি তৎপুরুষঃ রুচ্ আদির্যান্ডেতি বহুব্রীহিঃ এতৎসমাসদ্বয়েনরুচেঃ পূর্বাপরধারুলাভাদাক্তিগণত্বমিত্যর্থঃ। শোভতইতি। শুভ্দিপ্তো। এধতইতি এধ্রদ্ধো। স্পর্কাতইতি স্পর্ক্
সংহর্ষেসংহর্ষোবিজিগীয়া। অত্রেতি। নলভন্তীত্যাদিদর্শনাদ্যণকৃতমনিত্যমিতিভায়েন পরস্মৈপদঞ্চিতি।
ডিক্তেনিত্যমাত্মনেপদমিতি দর্শয়নহঙ্কুবন্ধাদিতি। ওহাঙ্ মাঙ্ জুহোত্যাদিস্বাদ্ধিঃ অভ্যাসেত্রস্বঃ পৃভূঞ্
মাঙ্ হাঙকারইরিত্যস্পইঃ অভ্যস্তস্থাকারইত্যাদিনাঅকারস্কঃ। ত্রাহীতি। ডিক্তে২প্যাত্মনেপদব্যভিচারআর্ষ্রাদিত্যর্থঃ। ৪০০॥

গুঢপ্রকাশিকা।

ক্রচাদেরিতি। ক্রচ আদিরিতিষষ্ঠীদমাদেনএধাদেঃ ক্রচ্ আদির্য্যস্ভেতি বহুব্রীহিণাশুভাদের্থ হণং। রোচতইতি। ক্রচ্দীপ্ত্যভিপ্রীত্যোঃ ক্রচ্ শুভ্ এধ্ স্পর্দ্ধঃ ভুবাদ্যন্তর্গতারুচাদয়কোনিষ্করণঃ। অত্যেতি। ক্রচ্ছইত্যাদিপ্রকুবন্ধকরণেচরিতার্থতয়া ক্রচাদিগ্রহণস্থনিক্ষলত্বাৎ নঞাগমগণোদ্দিষ্ট সংজ্ঞাপুর্বাঅনিত্যগাইতিভায়াচ্চক্রচাদেঃ পরিস্মপদমপীত্যর্থঃ। তথাচক্রচাদিমধ্যপাতিনঃ ক্স্যচিৎপরিস্মপদত্বেনক্রচাদিগ্রহণং সকলমিতিভাবঃ। বিহুমামিতি। চলদলকং নিরীক্ষ্যতবদেবিমুখাস্কুক্তং গ্রাথিতবিশেষকং শ্রবণময়ুখচিতং। পৃথুললিতাস্থতারক্রমথণ্ডিতচন্দ্রকরেং শশিভ্তিলোচনানি বিহুমাং নলভন্তিপদং। ইতিকুমারসম্ভবে। গুকুবন্ধান্নিত্যমিতি। ক্রচাদেরাল্মনেপদস্থানিত্যত্বাৎ গুকুবন্ধান্নিত্যমেবাল্মনেপদমিতিভাবঃ। জিহীতইত্যাদি। গুহাঙ্গতৌ মাঙ্মানেত্রেগ্রক্ষণে। ত্রাহীতি। ক্রচাদিগুকুবন্ধাভ্যামিত্যকৃত্বাযক্রচাদের্ধকুবন্ধাচ্চতিকৃতং তেলচকারাৎ গুকুবন্ধস্থাপিকচিদাল্মনেপদত্বং নস্থাদিতিবোধ্যং। গুমিতিজ্ঞানমাত্রেণ রাগাজীর্ণেন জির্জ্জিতঃ। কালনিদ্রোং প্রপন্নোহিমাং মধুসূদনেতি শুক্রদেবকৃতস্থ মধুসূদনস্তোত্রস্থ প্রথমপদ্যম্ ঋষিপ্রোভক্তাদার্বিমত্যর্থঃ। ৪৩৩ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রিয়া। বিনিময়োব্যতীহারোব্যত্যাদঃ পরিবর্ত্তোবেতি নার্থান্তরং। বিনিময়ঃ সাহিত্যমিতি ভ্রমোনকার্য্য: একবচনপ্রয়োগাদকুপপত্তে:। নিস্গতোহঅসম্বন্ধিন্তাঃ ক্রিয়ায়াবিপর্যয়োহত্তবদর্শনং।

নছদাদিকাং। অন্ধঞ্ছিংসার্থগত্যর্থাং সান্যোইন্যাদিপদাদিপ। এভ্যআত্মনেপদংনদ্যাং। ব্যতিহসতি ব্যতিপঠতি ব্যতিজ্পতি ব্যতিহন্তি।
অন্ধঞ্কিং ব্যতিহরন্তেরাজানঃ শত্রুন্ ব্যতিগচ্ছতি অন্যোইন্যং ব্যতিপঠন্তি
এবমিতরেতরং পরম্পরং ব্যতিতরন্তি। আদিনাবিনিময়ার্থকশন্দ্র্রাহণাং।
সম্যাধিনিময়েনোভৌদধতুর্ভুবন দ্রমিতি। ৪৩৫॥

কর্মব্যতীহারইতিসজ্জিপ্রদারেকর্মজিয়া। ব্যতিভবতইতি। অন্যদীয়ভবনমন্যস্থেত্যর্থঃ ভবনং বিদ্যান্ত্র পট্টাদিভবনদ্বা। ব্যতিদত্তইতি। উভয়পদিত্বেইপি আত্মনেপদমাত্রম্। এবং ব্যতিলুনতেকৃষ-কাঅন্যচ্ছেদনমন্যঃ করোতি অপরস্থাপরইত্যর্থঃ। ক্রিয়াব্যতীহারইতিকিং বিপ্রস্থান্যং ব্যতিলুন্তিকৃষকাঃ অত্রহিবিপ্রসম্বন্ধ ধান্যস্ক্রমকৈঃ সহসম্বন্ধান্দুব্যস্থব্যতীহারঃ। ৪৩৪॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ক্রিয়েতি। ভুকৃঞ্করণেকরণং ক্রিয়াক্তেগ্যক্চেতি যক্থকারস্থারিতি ঋকারস্থারিঃ। বিনিপ্রবিঃ ভূমিঞ্প্রক্ষেপণেস্বাউ মীঞ্হিংদায়াং ক্রোউ মীঙ্হিদায়াং দিআ এষামন্যতম্যাদায়বিনিময়নং বিনিময়ঃ অল্ স্বরাস্তেত্যাদিনাঅল্গুণঃ ক্রিয়ায়াবিনিময়ইতিবিগ্রহঃ। বিনিময়পদার্থমাহপরিবর্ত্তইতি। পরিপ্রবিঃ রুত্বর্তনে কচিদন্যতইতিভাবেহল্ ঘঞ্প্রত্যয়েউপদর্যন্ত ঘঞ্জেইতিদীর্ঘাপতেঃ। পরিবর্ত্তোব্যতিক্রমো ব্যতীহা-রোব্যত্যাদোবিপর্যয়ইতিপর্য্যায়ঃ। বিনিময়োনিদর্গতোহন্তমমন্বিদ্ধিক্রয়ায়া অন্যত্তবনং লোকিকমতিক্রন্তনক্ষ। ব্যতিভবতইত্যাদোঅন্যমন্বিদ্ধিক্রয়ায়া অন্যত্তবনং ব্যতিভবতইত্যক্রপ্রয়োগে লোকিকমতিক্রম্যক্রিয়ায়াভবনং তেনব্যতিভাতেস্ক্তরাং ধরাপতেইতি নৈষধীয়প্রয়োগেইপিক্রিয়াবিনিময়েআল্পনেপদ্বিতি। ৪৩৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নহ। হসাদেঃ স্থাঞিতরহিংসার্থকগত্যর্থাভ্যাঞ্চ অন্যোন্যেতরেতরপরম্পরোপপদাদ্ধাতোশ্চ ক্রিয়াব্যতীহারে নাত্মনেপদমিত্যর্থ:। ব্যতিপঠতীতিদ্বয়ং হসাদি। ব্যতিহন্তীতিহিংসার্থ:। ব্যতিসংহরন্তইতি।
সংহারোহিংসাহিংসন্তীত্যর্থ:। সংক্ষিপ্রসারে সংপ্রস্কঞঃ প্রতিষেধঃ ব্যতিসংপ্রহরন্তেযোধাইত্যুক্তং।
অন্যত্রগত্যর্থাদসংবিহরঃ ব্যতিগচ্ছতি অসম্বিহরইতি. কিংসম্বিহরতেগর্গ ইত্যুক্তং। আদিনেতি। সান্যোন্যাদীত্যাদিনেত্যর্থ:। ছুদোহগাং স্যজ্ঞায়শস্থায়মঘ্বাদিবং। স্মাধিনিময়েনেতি পরার্দমিতি রুঘৌ
উভৌ ইন্দ্রঘূ। প্রিয়ামুখং কিম্পুরুষশ্চু চুম্বে কর্মব্যতীহারোহন্যোন্যচুম্বনমিতি অর্থন্থাসঃ। ৪৩৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নহদেতি। ব্যতিহদতীত্যাদি। ব্যতিপূর্বাং হদেহাস্থেত্বপ পঠ্ব্যয়ায়াং বাচিত্বপ জল্পভাষণেত্বপ। ক্রঞ্ছরণে ভুউ গম্৯গতোভুপ তৃপ্পবনসম্ভরণয়োঃ ভুপ। বিনিময়েতি। বিনিময়োহর্থোযক্ত নদ্যক্তব্যাদিতি কপ্ তাদৃশোষঃ শব্দস্তব্যগ্রহণাদিত্যর্থঃ। দধতুরিতি। ভুধাঞ্ধারণপোষণয়োঃ অউ। সম্যগিতি। সম্পদ্বিনময়েনেতিচপাঠঃ। ৪৩৫॥

প্রাদীনামিত্যধিকারঃ। ০। বিপরাভ্যাং জেঃ । বিজয়তে পরাজয়তে।
প্রাদানাং কিং বহুবিজয়তিবনং পরাজয়তিসেনা এবমগ্রেষ্টপ্রান্যেরং। ৪৩৬॥
বিপর্য্যবপরাং ক্রিয়ঃ। বিক্রীণীতে অন্যম্মাং প্রক্রীণাতি। ৪৩৭॥
স্বাঙ্গাবিকাশআঙ্দাঞঃ। বিদ্যামাদত্তে। স্বাঙ্গবিকাশেতুমুখং ব্যাদদাতি
নদীকুলং ব্যাদদাতি। স্বেতিকিং ব্যাদত্তে পিপীলিকা পতঙ্গস্যমুখং। কথং কিং
ব্যাদংসেবিছ্গবদনমিতি কর্ত্রভিপ্রায়েস্যাং। ৪৩৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিপরা। বহুবিইতি। বহুবোবয়ঃ পক্ষিণোযত্রতদ্বনং বহুবিঅপ্রাদিযোগেনাত্মনেপদং জয়তীত্যে-বস্থাৎ। সেনেতি ৷ পরাসেনাশ্রেষ্ঠেত্যর্থঃ। এবমিতিপ্রাদিযোগেআত্মনেপদং প্রাদিভিন্নযোগেনেতি বোধ্যমিত্যর্থঃ। ৪৩৬॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

প্রাদীনামিতি। অধিকারঃ পরত্রামুবর্ত্তনমিত্যর্থঃ। ০। বিপরেতি। বিপরাভ্যামুপদর্গাভ্যাং পরস্থাজিজয়েইত্যক্ত ভুবাদিপরিস্মপদিনআত্মনেপদং স্থাদিত্যর্থঃ। বহুবীতি। বহুপক্ষিবিশিষ্টং বনংজয়তি উৎকর্ষেণ বর্ত্ততেইত্যর্থঃ। খগেবিহঙ্গ বিহগ বিহঙ্গম বিহায়দঃ। শকুন্তিপক্ষি শকুনি শকুন্ত শকুনদিজাঃ। পতত্রি পতি পতগ পতৎ পত্ররথাগুজাঃ। নগোকোবাজিবিকির বিবিদ্ধির পতত্রয়ইত্যমরঃ। পরা-উত্তমাশ্রেষ্ঠিতিয়াবং। দূরানায়্মোত্তমাঃ পরাইত্যমরঃ। ৪৩৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিপ। এবং পরিক্রীণীতে অবক্রীণীতে। অন্যশ্মাদিতি। বিপরিঅবাদন্যস্মাৎ। এবং সংক্রীণাতি। ৪৩৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বিপর্যাবেতি। বিপরিঅবেভ্যঃ পরইতিপঞ্চমীসমাসঃ। ক্রিয়ইতি। ছুক্রীঞ্দ্রব্যবিনিময়েক্র্যা-উ যঠ্যেকবচনে ঈকারোকারয়োর্দ্ধাতোরসুকারস্থ বেযুবাবেতীযাদেশঃ। যদ্যপ্যয়ং ক্রন্থক্তয়াউভয়পদী তথাপি পরশ্বৈপদব্যাবৃত্ত্যর্থং সূত্রং। প্রাদীনাংকিং অব্রক্ষণে অবতীত্যচ্ হে অব ক্রীণাত্যয়ং মণিমিত্যা-দাবপিস্থাৎ। প্রাদীনাং বিপরাভ্যাং জেবিবপর্য্যবপরাৎ ক্রিয়ইত্যেবং ছলঃ। ৪৩৭ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্বাঙ্গা। কর্ত্ত্রক্ষশ্ত অবিকাশেবিকাশাভাবে আঙ্ পূর্ববাৎ দাঞ্জাত্মনেপদং স্থাদিত্যর্থঃ। এবং ধনমাদত্তেরাজার্থং নানয়োঃ স্বাঙ্গাবিকাশাবগমঃ। মুখমিতি ব্যাদদাতি বিকাশয়তীত্যর্থঃ। কুলস্থনদ্য-ক্ষত্বাৎ। এবং বিপাদিকাং ব্যাদদাতি। স্বাঙ্গাবিক্ষেপে স্বাঙ্গবিক্ষেপেভুমুখং ব্যাদদাতি পিশীলিকেতি রসবত্যাং। স্থপদকৃত্যমাহস্বৈতি কিমিতি। পরাঙ্গবিকাশাৎ স্বাঙ্গাবিকাশত্বাদাত্মনেপদং। কথমিতি।

আঙ্কুপ্রছোশ্চ। আপৃচ্ছস্বপ্রিয়সখমমুং। আনুতেশিশুঃ। ৪৩১॥

স্বাঙ্গবিকাশাদত্রাত্মনেপদং কথমিত্যর্থঃ। সমাধত্তেকত্র ভিপ্রায়েস্থাদিতি। কর্তৃগতক্রিয়াফলাভি প্রায়ইত্যর্থঃ। তথাচ দাধাতুরুভয়পদীতত্রপরগতক্রিয়াফলেপরস্মৈপদং কর্তৃগতক্রিয়াফলেসাত্মনেপদম্ ইহবিহগভক্ষণস্থকর্তৃগতন্ত্বাদিতিভাবঃ। নমুস্বাঙ্গাবিকাশআত্মনেপদবিধানাৎ তদভাবেস্বান্থর্থমনপেক্ষ্যেব পরস্মৈপদং ভবিতুমর্হতীতিচেম্ন স্বাঙ্গাবিকাশোআ্মনেপদমাত্রং নিয়মিতং নত্বেতদ্ব্যার্থ্যে পরস্মেপদমেবেতি নিয়মঃ কিন্তুশিষ্টপ্রয়োগাৎ প্রায়িকম্ অতএবব্যাদদাতীত্যেবব্যার্ত্তির্দ্দিতা। যদ্বামুখং ব্যাদদাতীত্যাদে স্বগতফলাভিদন্ধিসন্ত্বেস্থাদেব ব্যাদত্তইতি। কর্ত্তারমভিপ্রৈতি সম্বগ্গাতি ইতিতথাকর্তৃগতফলইত্যর্থঃ। পাণিনিস্তবর্ত্ত্বরিচ্ছাবিষয় কর্ত্রভিপ্রায়ঃ নচৈবং পিত্রাদিস্বর্ণোদ্দেশেনকৃতেদানাদৌনদদেইতি ইচ্ছাবিষয়ত্বন্দ্বাৎ পরকীয়ন্থলেত্বনিরূপাধীচ্ছাভাবাৎ। কেচিত্তুস্বপদং কক্তৃপরং তস্তৈব্যমুখ্যকর্তৃত্বাৎ তদভিপ্রায়েতস্থ স্বাঙ্গাবিকাশেদদেশ্বাধ্যবিহগস্থস্বপদেনাবিবক্ষণাদিতিবদন্তি। ৪৩৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

স্বাঙ্গেতি। স্বাঙ্গমত্রপারিভাষিকং তচ্চকৃতশ্চতুর্থবিভাসেক্তপ্রকরণেপ্যায়ঃপীঃ স্বাঙ্গকতৃত্বিইতি সূত্র্টীকায়াং কৃৎপ্রদীপিকায়ামবলোকনীয়ং। কথংকিমিতি। কিংব্যাদৎদেবিহ্গবদনং হাবুভুক্ষাযুত্তো-হিনত্ত্যুক্তোবানকদিহিকদাপ্যেষতেহহং দদামি। অন্ধং স্বাদূদকমনুপমং শীতলং বৈস্থ্যক্ষিব্যান্ধত্যেতি ক্রতত্রমদাদন্মস্তশ্চতাদৃক্। অত্রনস্বাঙ্গাবিকাশেআজ্মনেপদং কিন্তুকত্র্গতফলাভিসন্ধানেআজ্মনেপদং দাঞোঞ্জনুবন্ধত্বেনোভয়পদিতয়াকত্রপবক্তৃফলাভিপ্রায়েআজ্মনেপদস্থপ্রাপ্তেরিতিভাবঃ। ৪৩৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আঙ্কু। আঙিতিপুপ্তপ্রথমৈকবচনান্তম্ আঙঃ মুপ্রছোশ্চকর্ত্ত্যান্থনেপদমিত্যর্থঃ। আপৃচ্ছস্বেতি হেমেঘ! তুঙ্গং শৈলমালিঙ্গ্যাপৃচ্ছস্ব আমন্ত্রমেবত্যর্থঃ। আপৃচ্ছস্বপ্রিয়দখমমুংতুঙ্গমালিঙ্গ্যশৈলং বল্যেঃ পুংদাংরঘুপতি পদৈরক্ষিতং মেখলাস্থ। কালেকালেভবতি ভবতোযস্তদংযোগমেত্যমেহ্ব্যক্তিশ্চিরবিরহজংমুঞ্চতোবাষ্পমৃষ্ণং। ইতিমেঘে। আনুতইতি। উৎকন্তিভ্রানং করোতীত্যর্থঃ। নাম্রোভবতীত্যর্থইত্যক্তঃ। আনুতেশৃগালউৎকন্তিভশকং করোতীতির্ব্দবত্যাং। নৃপেক্ষণোৎক্ষিপ্তমনাবিলাদিনী যিযাস্থরাপৃচ্ছতনাপিবল্লভমিতিব্যোয়ঃ। ৪৩৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আঙ্নিতি। পুস্ততোঁ প্রচ্জাপ্দায়াং। অত্রাঙিতিপুনরুক্তং স্বাঙ্গাবিকাশইত্যর্থমাত্রনিরাসকম্ অন্যথাস্বাঙ্গাবিকাশেস্থাৎ স্বাঙ্গবিকাশেনস্থাদিতি পরিকল্প্যমুথমানোতীতি প্রয়োগাপত্তঃ। নচৈবমাঙ্ পূর্ববন্ধাতোর্ম বিকাশার্থসম্ভবইতি বাচ্যং ধাতুনামনেকার্থত্বেনাঙ্পূর্ববন্ধাতোস্তাদৃশার্থেবাধাভাবাৎ। চকারআত্মনেপদসমুচ্চায়কঃ। আপুচ্চস্বেতি। আঙ্ মাঙ্ স্বরাৎপরশ্ছেচুক্। ৪৩৯॥

নেৰ্বিশঃ। নিবিশতে। ৪৪০।

ক্রীড়তেরনুপর্য্যাঙ্ভ্যঃ। অনুক্রীড়তেইত্যাদি। ৪৪১॥ সমশ্চাকুজনার্থকাৎ। সংক্রীড়তেগৌঃ কুজনেভূসংক্রীড়ম্ভিরথাঃ। ৪৪২॥ সম্বিন্যুপাদ্স্বঃ। সংস্কায়তে বিহ্বয়তেইত্যাদি। ৪৪০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নির্বি। নিপ্রবিশআত্মনেপছং। নেরিতিকিং প্রবিশতিগৃহং। কথমক্ষেনিবিশতিভয়াদিতি ইহোপদর্গপ্রতিরূপকোনিশব্দঃ যদ্বাপ্রাক্বিশতীতি বৃৎপাদ্যপশ্চামিশব্দযোগঃ কার্য্যঃ। নেরূপর্গস্থগ্রহণাৎ মধুলিহোবিশন্তীতিনাত্মনেপদং। ৪৪০॥

গু ঢপুকাশিকা।

নেরিতি। নেরুপদার্গাৎ বিশ্প্রবেশেইত্যস্ত ভুবাদিপরস্মৈপদিন আত্মনেপদং স্তাৎ। ইনস্তশ্চে-দস্তাপ্যভয়পদং স্থাৎ। নিবেশয়ামাদমধুর্দ্বিরেফানিতিকুমারসম্ভবে। ৪৪০॥

প্রভাপকাশিকা।

ক্রীড়। ক্রীড়্বিহারে অনুপরিআঙ্ভ্যঃ পরস্থক্রীড়তেরাত্মনেপদং স্থাৎ। শল্লক্যামন্টমার্গঃসলবন সহিতঃ ক্রীড়তেনাগরাজইতি অপশব্দএবায়মিতিকশ্চিৎ। ক্রীড়তইত্যেবপাঠঃ। সমুচ্চয়ার্থচকারাদ্বেতি হুর্যটঃ। অস্মাতেসমশ্চেতিচকারাৎ। ৪৪১॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

ক্রীড়তেরিতি। ক্রীড়্ভুপ। আদিনাপরিক্রীড়তে আক্রীড়তে ইত্যনয়োর্গ্রহণং। ৪৪১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সম। কুজনং শব্য:। ৪৪২॥

গृष्धकाष्मिक।।

সমশ্চেতি। কুজ্অব্যক্তশব্দে কৃজিতিঃ কৃজনং ভাবেহনট্ কৃজনমর্থোয়স্ত নকৃজনার্থাহকৃজনার্থঃ নঞ্সমাসানন্তরং নঞকারঃ। অকৃজনার্থকাৎ ক্রীড়তেঃ সমশ্চপরস্তাত্মনেপদং স্তাৎ। চকারাৎ কেবল-ক্রীড়তেঃ কচিদাত্মনেপদঞ্চ তত্তক্তং প্রভাপ্রকাশিকায়াং। সংক্রীড়তেগোঃ সম্যাধিহরতীত্যর্থঃ। সংক্রীড়ভিরেথাঃ শব্দং কুর্বন্তীত্যর্থঃ। ৪৪২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সন্ধি। সম্বিনি হ্লেঞ্উভয়পদিন আত্মনেপদনিয়মঃ। আদিশব্দাৎ নিহ্নয়তে উপহ্লয়তেইতি পদ্বয়ং। ৪৪৩॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা

দর্ঘাতি। হেবঞ্ আহ্বানেভূউ। ৪৪৩॥

স্পাদ্ধায়ামাঙঃ। মলোমলমাহ্বয়তে। ৪৪৪॥

আশিষিনাথতেঃ। সর্পিষোনাথতে। অনাশিষিতু অনুনাথতিস্তনযুগং। ৪৪৫॥ সাদৃশ্যশীলনেশ্বঞঃ। মাতরং শ্বাইনুহরতেমাতরমনুকরোতীত্যর্থঃ। ৪৪৬॥ শিক্ষের্জিজ্ঞাসনার্থকাণ। শিক্ষতেগুৰুং শিষ্যঃ। ৪৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্পর্দ্ধা। আঙঃ পরস্থহ্বয়তেঃ স্পর্দ্ধায়ামর্থেআত্মনেপদং স্থাৎ। আহ্বয়তেবিজিগীষতে। ৪৪৪॥

গৃচপ্রকাশিকা ৷

স্পর্দ্ধিতি। পদ্ধাজেতুমিচ্ছা! মলইতি। মল্ধারণেভূপ মলতিবলং ধারয়তীতিঅচ্। ৪৪৪॥

প্রভাপকাশিক।।

আশি। শর্পিষইতি। সর্পির্মেভ্য়াদিত্যাশান্তেনাথতেরাশিষীতি কর্মণিষষ্ঠী 1 এতন্মন্দবিপক্তিন্দুক্ফল শ্রামোদরাপাণ্ডরপ্রান্তং হন্তপুলিন্দস্থলরকরম্পর্শক্ষমং লক্ষ্যতে। তৎপল্লীপতিপুত্রিকুঞ্জরকুলং কুম্ভাভয়াভ্যর্থনাদীনং দ্বামনুনাথতিস্তনযুগং পত্রাবৃতং মাকৃথাং। ইতিপ্রাচাং পদ্যং। অত্রকেচিদান্মনে-পদিগণপাঠাদেবান্মনেপদিদ্বিদিন্ধেঃ পুনস্তদ্বিধানং নিয়মায় নাথতেরাশীরর্থেআত্মনেপদমেব অর্থান্তরেদ্ধনিয়মঃ তেন্যাচনেইপ্যান্মনেপদমবিরুদ্ধমিত্যনুনাথতে কুচ্যুগমিত্যান্থং। ৪৪৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

আশিষীতি। নাথ্প্রার্থনাউপতাপৈশ্বর্যাশীর্কাদেয়ু ভু আ। এতস্থাশীর্কাদার্থেআত্মনেপদং। আশৌর্কাদশ্চইন্টার্থশংসনমৃতেন সর্পিষোনাথতইত্যত্রভূয়ান্মমসর্পিরিতীন্টার্থং শংসতেইত্যর্থঃ। অনাশিষি-যাচ্ঞাদ্যর্থেনাত্মনেপদং। অনুনাথতীতি। যাচতেইত্যর্থঃ। আশিষ্যেবাত্মনেপদনিয়মাদ্যত্রপরস্মৈপদং। এবমন্তার্থেহপিবোধ্যং। ৪৪৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সাদৃ। সাদৃশ্যস্তসদৃশত্বস্তশীলনে২নুকরণে২র্থেক্জঞআত্মনেপদং স্তাৎ। মাতরংশ্বেতি। অনুকরোতি সদৃশীকরোতীত্যর্থঃ। ৪৪৬॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা ৷

সাদৃশ্যেতি। সমানইবদৃশ্যতেহসৌ ইতিউপমানেহন্যত্যদাদেরিত্যাদিনা যক্ মানদৃদ্শদৃশ্দেষিত্যাদিনামানলোপঃ সদৃশস্থভাবঃ সাদৃশ্যং যণ্ভাবেকর্মণাপীত্যাদিনাযণ্ আদৌর্দ্ধিঃ অন্ত্যাকারলোপঃ।
শীল্সমাধো ধাতৃনামনেকার্থত্বাদকুকরণঞার্থঃ। শীলিতিঃ শীলনমনট্ সাদৃশ্যস্থশীলনমিতি বিগ্রহঃ।
শাকুকুরঃ। ৪৪৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শিক্ষে। শিক্ষবিদ্যোপাদানেজস্মাৎ। জ্ঞাতৃমিচ্ছাজিজ্ঞাসনমর্থোযস্থতাদৃশাদাত্মনেপদং স্থাদিত্যর্থঃ। শিক্ষতইতি। জিজ্ঞাসতেইত্যর্থঃ। ৪৪৭॥ সমোগমৃছিপ্রছর্ত্তিদৃশ্বিদিস্ববিজ্ঞাবঃ। অকর্মকাং। শ্রুভিঃ সঙ্গছতে। সংজ্ঞাতেতাবপায়ানপেক্ষো। সমৃচ্ছতে সম্পৃচ্ছতে সমৃষ্তে সংপশ্যতে সিহিত্তে সংস্থৃতে। অকর্মকাংকিং সংশৃগোতি বেদান্। ৪৪৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শিক্ষেরিতি। শিক্ষাতুঃ ভুউ ধাতুনামনেকার্থতয়াজিজ্ঞাসায়াঞ্চবর্ততে। তদর্থেবর্ত্তমানস্থাশিক্ষেরাত্মনেপদং স্থাদিতি নিয়মঃ। যদ্যপি প্রাদীনামিত্যুক্তং তথাপি নাথতেঃ হুঞঃ শিক্ষেরিতি ধাতুমাত্র- গ্রহণাম্প্রাদিযোগাপেক্ষাসমুদায়প্রাদিযোগেহুঞঃ সাদৃশ্যশীলনার্থাসম্ভবাচ্চেত্যবগন্তব্যং। ৪৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দমো। দমউপদর্গাৎ গম্ ঋছ্গতীন্দ্রিয়প্রলয়হিংদাদানেরু প্রছ্ ঋদৃশ্ বিদ্ স্থ শুঞ্ এত স্মাৎ দর্বস্মা দকর্মকাদার্মনেপদং স্থাৎ। দকর্মকধাত্নামপ্যুপদর্গযোগেনার্থান্তরবন্ধাদকর্মকন্ধন্ময়ং। শুভিরিতি। শুভির্বেদঃ দঙ্গতার্থাভবতি। সংজ্ঞাতেইভিপূর্ব্বপাদঃ। দেনাস্কোধী ধীরনাদোর্য়েণপক্ষচ্ছেদাৎ পূর্বমেবাত্রদেশে। বাস্থুত্তৌ বা দছবিন্ধ্যোবিনেত্মিতিমাঘঃ। দঙ্গতাবভূতাং। দয়্যৃতইতি। ঋধাতোঃ স্থাদিযভ্যাদে। দংশৃণুতেচ। সংশৃণোতি বেদানিতি বিবক্ষিতকর্মত্যাদকর্মকত্বং। কথং তচ্চক্যং দমগচ্ছতেতিচণ্ডী অকর্মকাদিত্যুক্তেঃ দত্যম্ ঐক্যমিতি চতুর্ব্বর্ণাদিত্বাৎ স্বার্থেযণ্ তচ্চএকং দমগচ্ছতএকং দমপদ্যতএকীভূয়ন্থিতমিত্যর্থঃ। কথং নসংপপৃচ্ছেগমনায়দত্তরাদ্বাদ্ধাজনং দন্দৃশ্নবাপরেতিব্যোষঃ তথারাক্ষদীতি পরাসংশৃণুমহেইতি মুরারিঃ দকর্মকন্ধাৎ উচ্যতে কর্মব্যতীহারেআত্মনেপদম্ অন্যোন্যসংপ্রশাদনদর্শনসংশ্রবণমূচ্যতে দৃন্ধৃত্যধ্যাহারাদ্ধা। দথীজনাদিত্যেবপাঠঃ দথীজনং প্রাপ্যল্যব্রোপেপঞ্চমীত্যন্তে। ৪৪৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সম। গম্ভগতৌভূপ প্রছ্জ্ঞীপায়াং ভূপ ঋগতৌ জুপ দৃশির্ প্রেক্ষণেভূপ বিদ্জ্ঞানেঅপ যুপ্রেরণে ভূপ শ্রু প্রবণে স্বাপ এতস্মাদকর্মকাদবিবক্ষিতকর্মকাদান্তানেপদং স্থাদিত্যর্থঃ। শ্রুতিঃ স্ত্রীবেদআল্লায়-ইত্যমরঃ। দঙ্গতুইত্যাদি। সম্পূর্ব্বগমঃ বর্ত্তমানায়ান্তেভুবাদিন্তাদনিগমীয়ামোহন্তশেছাহনিস্থাদিতি গমোমঃ স্থানেছঃ আঙ্আঙ্স্বরাদিতি চুগাগমঃ। পরোক্ষায়াআতেবিভক্তৌ জজ্ঞজ্যোতুজন্গমোরিতি গমোজগ্মাদেশঃ। সম্ ঋছ্ ধাতুঃ লটস্তেঅনিভূদাদেঃ পরস্থানোহগুণত্বাৎ গ্রহিজ্যেত্যাদিনাসম্প্রসারণং চুগাগমঃ। শিতিদ্বিঃস্থাজ্বহোত্যাদেরিত্যনেন ঋধাতোস্তেবিভক্তৌদ্বিভাবে অভ্যাদেইয়্। সম্দৃশস্তে অনিদৃশঃ পশ্যেতি পশ্যাদেশঃ। বিদন্তেলিঙ্কবৎ প্রথমোধুটামিতিদস্ততঃ সম্ স্থাতোস্তেঅগুণেহনি ইবর্ণোবর্ণযোদ্ধাতোরিত্যুকারস্থাব্। সংশৃণোতি বেদানিত্যত্রস্কর্মক্ষাল্লনেপদং। ৪৪৮॥

স্বকীয়াঙ্গকর্মকাচ্চবুদশুপঃ। পাদাবুত্তপতে পাণীবিতপতে। অকর্মকাচ্চ তল্পকত্তপতেত্যাঃ। অন্যত্র উত্তপতিস্থবর্ণং স্বর্ণকারঃ বিতপতিরবির্মাহীং ।৪৪৯॥ এবমাঙোযমহনঃ। এবং স্বাঙ্কৃকর্মকাদকর্মকাচ্চ। আযচ্ছতেপাণী আহতে শিরঃ। আযচ্ছতে মধুরজনী বিযোগিনীনাং। আহতেভিক্তৌ। অন্যত্র আযচ্ছতিকূপাদ্রজ্জুন্ যং আহন্তির্যলং। যংপুনরাজ্বেরবিষমবিলোচনস্থবক্ষইতি তংশঙ্করার্জ্জুনয়োর্বাস্তবাভেদএবেতি স্বাঙ্ককর্মকত্বানপায়াং। ব্যত্যয়েনযোজ্বয়-স্তান্যে। ৪৫০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্বকী। স্বকীয়ঞ্চ তদঙ্গঞ্জেতি কর্ম্মধারয়ঃ ততন্তাদৃশাঙ্গং কর্ম্মযস্মতাদৃশাদকর্মকাচ্চ বিউদ্ভ্যাং তপতেরাত্মনেপদং। তন্মিতি। উত্তপত্তে উৎকর্ষেণ তপ্যাভবতি। অন্যত্তেতি। স্বকীয়াঙ্গকর্মকাদ-কর্মকাদন্যত্ত্ব। অত্র স্তবর্ণকর্ম্মকত্মঞ্চ। ৪৪৯।

गृष्यकानिका।

স্বকীয়েতি। তপ্ সন্তাপেভূপ ইত্যস্থ। ত্রিতি। তনুরুত্তপতে তন্ত্যামন্দোমলয়মারুতঃ। বিরহিণ্যাঃ পুরাদীদেয়াহভ্যনভত্ত্যাঃ স্থপ্রদঃ। ব্যুদইতিসমাহারদ্বন্দ্বেদংহতিপ্রধানত্বাৎব্যতিক্রমোদাহরণং নতুকিং। ৪৪৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জানাতেঃ স্যাদপহ্নবে। শতমপজানীতে। ৪৫১॥ সম্প্রতিভামনুংকণ্ঠাম্মরণে। শাস্ত্রং সঞ্জানীতে শব্দান্প্রতিজানীতে। উৎকণ্ঠাম্মরণেতুমাতৃঃ সঞ্জানাতি। ৪৫২॥

সাবক্ষ আজন্মে অর্থাৎ সংবক্ষইতি তদসঙ্গতং মহাকাব্যভারবাবধ্যাহারস্থাযোগ্যন্থাৎ। ইদংহিযোজনান্তরং দ্মেশংগ্রামেবিষমবিলোচনস্থবক্ষ আজ অজ্গতি ক্ষেপণয়োরিত্যস্থানিটিরপং বীভাবস্তুতনস্তাবেতিবাশ্মরণান্ধ-ভবতি। অথবা বিষমবিলোচনস্থবাণনদাাঃ প্রতিমুখমেত্য উন্মক্ষর্মুদ্গচ্ছন্ গাণ্ডীবীবক্ষ আজন্মে এহিবাহ্ছ-যুদ্ধেনমাং যোধ্য়তি আক্ষোটিতবান্ স্বাঙ্গকর্মকাচ্চেত্যাত্মনেপদাৎ স্বমিত্যাক্ষিপ্যতে। পরং বহুত্বা-শ্লোক্তং। ৪৫০॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

এবমান্তইতি। যম্ উপরমেভূপ ছন্দোহর্থোহকারঃ হন্ হিংদাগত্যোঃ অপ। আদ্যবয়ং স্বাঙ্গকর্ম-কোনাহরণং। আয়চ্ছতইতি। আঙ্ যমঃ লটস্তেঅনিগমীয়ামোহন্তইত্যাদিনামঃ স্থানে ছঃ চুগাগমঃ। আয়চ্ছতেমধুরজনীবিযোগিনীনাং সূর্যায়তে মৃত্কিরণোহপিরাত্তিনাথঃ। ক্ষেড়ায়তে শিশিররসোহপি চন্দনানাং বজ্রায়তে মধুররবোহপিষ্ট্পদানামিতি। রুষলং শুদ্রং। স্বাঙ্গকর্মকত্বাভাবে কথমাত্মনেপদ্মিত্যালোচ্য্যংপুনরিত্যাশঙ্ক্যসমাধত্তে দিতি। শঙ্করস্তক্ষেণাভেদাকর্জন্সচ ক্ষেণাভেদাৎ শঙ্করার্জ্জন্যারপাভেদএবৈতি অর্জ্জন্স্থ স্বাঙ্গকর্মারপায়া দবিদ্যমানত্বাভাবাদিতি স্বমতং। অন্তৎপ্রভাপ্রকাশিক্ষাণ ক্ষেয়াণ ক্ষেয়াণ ক্ষেয়াণ ক্ষেয়া। ৪৫০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জানা। জানাতেরপহ্নবেমিথ্যাভাষণে আত্মনেপদংস্থাৎ। শতমিতি। অপজনীতে অপলপতিতিয়ে । ৪৫১॥

গূঢপ্রকাশিকা।

জানাতেরিতি। অপহ্নস্তপুল্লিঙ্গং স্মৃতঃ স্নেহাপলাপয়োরিতিমেদিনী। অত্রাপলাপার্থকস্থগ্রহণং। অপজানীতইতি। অপপূর্বাং জ্ঞাঅনবোধেক্র্যাষ্ট তে তদ্বৎ ক্র্যাদেশ্ল নীতিস্থাগমে জ্ঞোজা। ৪৫১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সম্প্র। শাস্ত্রমিতি। নেহোৎকণ্ঠান্মরণম্ এবং শতং সংজানীতে ব্যবহরতীত্যর্থঃ। মাতুরিতি। উৎকণ্ঠয়া স্মরতীত্যর্থঃ। সম্প্রতিভ্যাং স্মরণইত্যমূত্র। ৪৫২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

দম্প্রতি। প্রিয়াদ্যভিলাবে উন্মনস্কর্মুৎকণ্ঠা উৎকণ্ঠয়াম্মরণমিতি তৃতীয়াদমাদঃ ততোন উকণ্ঠাম্মরণমিতিনঞ্দমাদঃ অন্সরইতিনঞােহন্উৎকণ্ঠাম্মরণভিন্নেহর্থেদম্প্রতিভ্যাং পরস্থজানাতেরাজ্মনিপদংস্থাৎ। দঞ্জানীতেদম্যগ্জানাতি প্রতিজানীতে অঙ্গীকরোতীত্যর্থঃ। মাতুরিতি। মাতরমুৎ কণ্ঠয়াম্মরতীত্যর্থঃ। স্মৃত্যর্থানাং কর্মণিষ্ঠীস্থাদ্বৈতিষ্ঠী। ৪৫২॥

অকৰ্মকাদপি। সৰ্পিষোজানীতে। ৪৫৩॥

উদঃ স্থোইনৃদ্ধ চৈফীয়াং। দানায়োত্তিষ্ঠতেহস্তঃ। অনৃদ্ধ চেফীয়াং কিং। জবেনপীঠাত্ৰদতিষ্ঠদচ্যতঃ। ৪৫৪॥

স্থঃ স্থেয়াখ্যাপ্রকাশনে। বিবাদপদনির্ণেতাস্থেয়ঃ। গুরৌতিষ্ঠতে বিবদ মানঃ। সংশয্যকর্ণাদিযুতিষ্ঠতেয়ঃ। স্থেয়েকথয়তীত্যর্থঃ। স্বাভিপ্রায়াভি-ব্যঞ্জনং। তিষ্ঠতেতৰুণীযূনে। ৪৫৫॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

অক। সর্পিষইতি। জানাতেরপ্রমার্থেবৈতিকর্মণিষষ্ঠীতি সকর্মকত্বাভাবঃ। কথং সম্ভবিষ্যাম একস্থামভিজানাতিমাতরীতিভটিঃ। অভিজানাসিদেবদত্ত কাশ্মীরেবৎস্থাবইতিভাগর্তিঃ। অকর্মত্বেনাত্মনে পদপ্রসঙ্গাৎ বাক্যার্থে কর্মণোবিবক্ষিতত্বাদিতিরক্ষিতঃ। এবঞ্জানেকোপপরাস্থীপ্রিয়ত্মা স্বপ্নে২্দ্য-দৃষ্টাময়েত্যত্রাত্মনেপদং নস্থাৎ অপ্রাদেজ্ঞ ইতি কর্ত্রভিপ্রায়েআত্মনেপদং। ৪৫৩॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অকর্মেতি। অবিদ্যমান কর্ম্মযন্তেতিসমাসে শাকপার্থিবাদিছাদ্বিদ্যমানপদলোপঃ। অবিদ্যমান ভাবশ্চকর্ম্মণঃপ্রয়োগাভাবাদ্বিবক্ষিতত্বাচ্চতেনস্পিমোজানীতইত্যত্রাবিদ্যমানকর্মত্যাত্মনেপদং। অভিজানা তীত্যাদোবাক্যার্থে কর্মণোবিবক্ষিত্বাৎ সকর্মকত্বমতোনাত্মনেপদং। অথবা অপিশব্দাৎক্ষচিদ্বিদ্যমান কর্মকত্বেহপিনাত্মনেপদং। ৪৫৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উদঃ। উত্তপদর্গান্তিষ্ঠতেরাত্মনেপদমন্দ্ধিচেন্টায়ামর্থে। জবেনেতি। পতৎপতঙ্গপ্রতিমস্ত পোনিধিঃ পুরোহস্থাবন্ধভূবিব্যলীয়ত। গিরেস্তড়িত্বানিবতাবহুচ্চকৈরিতি পূর্ব্বপাদত্রয়ংমাঘে। কথমু-ভিষ্ঠতে বা স্থাকিনাপিদফইতিপ্রাণেশ্বরঃ নচাত্রোদ্ধাগমনং কিন্তহিপ্রবোধনমর্থঃ। উদোহনূদ্বিঘটনে কুটুম্বউভিষ্ঠতেতদর্থং ঘটতইত্যর্থঃ অনুর্দ্ধেতিকিম্ আদনাত্তিষ্ঠতি। ঘটনইতি কিংগ্রামাত্রভিষ্ঠতি উৎপদ্যত ইতিসজ্জিপ্রদারে। ৪৫৪॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

উদইতি। দানায়েতি। উত্তিষ্ঠতে উদ্যুক্তোভবতীতার্থঃ। উদতিষ্ঠদিতি। হস্তনীদিবিভক্তো সাধ্যং। ৪৫৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্থঃ স্থে। স্থেরেআখ্যাস্থ্যোখ্যাচ প্রকাশনঞেতিদ্বন্ধঃ স্থেরাখ্যারাং প্রকাশনেচার্থেস্থাধাতো-রাত্মনেপদংস্থাৎ। সংশ্যেতি। জহাতুনৈনং কথমর্থাসিদ্ধিঃ সংশ্যাকর্ণাদিষুতিষ্ঠতেয়ঃ। অসাধুযো-গাহিজয়ান্তরায়াঃ প্রমাথিনীনাং বিপদাম্পদানীতিকিরাতার্জ্জ্নীয়ে। ৪৫৫॥ সমবপ্রবিভ্যঃ। সম্ভিষ্ঠতে অবতিষ্ঠতে প্রতিষ্ঠতে। ৪৫৬॥ আঙঃ প্রতিজ্ঞানে। ঈশ্বরমাতিষ্ঠতে। ৪৫৭॥ উপাৎপথি। কর্ত্তরি। লিপ্সায়াম্বেতিযাবত্রপাদিত্যন্ত্র্বর্ত্ততে। অয়ৎ পদ্মাথুরামুপতিষ্ঠতে। ৪৫৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শ্বহৃতি। তিষ্ঠতেহশ্মিন্নিতিশ্বেয়ঃ ডেট্চাদন্তথনিভ্যামিতিয়ঃ ডেট্চডনুবন্ধেহক্তাম্বরলোপঃ স্থেয়োবিবাদপদনির্ণেতা। গুরাবিতি। বিবাদপদনির্ণায়কগুরোবিবাদং কথয়তীত্যর্থঃ। বিষয়াধারেসপ্তমী।
প্রকাশনপদস্যার্থমাহ স্বাভিপ্রায়ব্যঞ্জনমিতি তিষ্ঠতেতরুণীতি। যূনেস্বাভিপ্রায়ং প্রকাশয়তীত্যর্থঃ।
শ্লাঘহনুঙ্স্থাশপাং বিজ্ঞাপনেচ্ছাবিষয়স্তথেতি সম্প্রদানত্বেনচতুর্থীসম্প্রদানে। ৪৫৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সম। এভাস্তিষ্ঠতেরাত্মনেপদং। সন্তিষ্ঠতে ত্রিয়তে প্রতিষ্ঠতে গচ্ছতি। ৪৫৬ 🛭

गृष्धकाणिका।

সমেতি। সমৃস্থামরণম্ অবস্থাআধেয়ত্বং প্রস্থাগতিঃ। সংস্থানমাক্তেমিত্যোসিলিবেশেচতুম্পথে-ইতিদিনী। প্রস্থানং গমনং গমইত্যমরঃ। ক্ষণং ভদ্রাবতিষ্ঠস্বততঃ প্রস্থাস্থতেপুনঃ। নতৎসংস্থাস্থতে কার্যাং দক্ষিণোরীকৃতং ত্বয়েতি ভট্টপদ্যমুক্তার্থত্রয়েপ্রমাণং। নতৎসংস্থাস্থতে নতন্নাশং গমিষ্যতী-ত্যর্থঃ। ৪৫৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আঙঃ। আঙ্উপদর্গাৎ তিষ্ঠতেরত্মেনেপদং। ঈশ্বরমাতিষ্ঠতে প্রতিজানীতইত্যর্থঃ। ৪৫৭॥

গৃত্পকাশিকা।

আঙইতি। প্রতিজ্ঞানে২ঙ্গীকারে। তথাচামরঃ। সম্বিদাগৃঃ প্রতিজ্ঞানং নিয়মাশ্রবসংশ্রবাঃ। অঙ্গীকারাভ্যুপগম প্রতিশ্রবসমাধ্যুইতি। ঈশ্বরমাতিষ্ঠতে প্রতিজ্ঞানীতে অঙ্গীকরোতীতিয়াবৎ। ৪৫৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উপ। উপোপদর্গাত্তিষ্ঠতেরাত্মনেপদং পথিকর্ত্তরি। লিপ্সায়াম্বেতিসূত্রং যাবছপস্থানুর্ত্তিঃ। উপতিষ্ঠতইতি। মধুরামভিমুখেনযাতীত্যর্থঃ। কথং কর্তৃত্বমুপচর্য্যতেপথিকস্থ ঋজুগমনাদিতি। যদ্বামধুরাং প্রাপ্তইত্যর্থঃ। ৪৫৮ ।

গৃতপ্ৰকাশিকা ৷

উপাদিতি। পথিকর্ত্তরিদতীত্যর্থঃ। লিপ্পায়াম্বেতিযাবৎ লিপ্পায়ামিতি দূত্রং ব্যাপ্যেত্যর্থঃ। ৪৫৮॥

পূজাদৌমন্ত্রকরণে। পূজাসংক্ষতকরণিমত্রকরণেযু তিপ্ততেরাত্মনেপদং স্যাং। পূজায়াং বিষ্ণুমুপতিপ্ততে সক্ষতকরণে গঙ্গাযমুনামুপতিপ্ততে মিত্রকরণ-সাধুনুপতিপ্ততে মন্ত্রকরণে প্রভ্যাগার্হপত্যমুপতিপ্তত। ৪৫৯॥

লিপ্সায়ায়। ভিক্ষুদ্দাতারমুপতিষ্ঠতে উপতিষ্ঠতিবা। ৪৬০॥

সমঃ ক্লুবঃ। সংক্লুতে। সংক্লুবানঃ পৃষৎকান্। ৪৬১॥

প্রভাপকাশিকা।

পূজা। উপাৎস্থআত্মনেপদং স্থাৎ পূজাদাবর্থে। বিষ্ণুমিতি। উপতিষ্ঠতেপূজয়তি। গঙ্গেতি।
যমুনামুপশ্লিষ্যতীত্যর্থঃ তয়াসঙ্গতাভবতীতি তাৎপর্য্যং। সধূনিতি। তৈঃ সহমৈত্রীকৃকতে। মন্ত্রকরণেমন্ত্রএবকরণং যদামন্ত্রস্থকরণং তিম্লিজ্যর্থঃ। ঐন্দ্রোতি। ইন্দ্রদেবতয়া ঋচাগার্হপত্ত্যং বহ্নিমুপতিষ্ঠতেস্তোতীত্যর্থঃ। এবং রথিকোরথিকানুপভিষ্ঠতে উপশ্লিষ্যতে দূরস্থোহপীক্রমুপতিষ্ঠতে তেনসহমৈত্রীকরোতীত্যর্থঃ। বেসূর্য্যমুপতিষ্ঠত্তেমন্ত্রঃ সন্ধ্যাদ্বয়ং দ্বিজাইতিভট্টিঃ। মন্ত্রকরণইতিকিং ভর্তারমুপতিষ্ঠতি
যৌবনেন। ৪৫৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

পুজেতি। ধাতৃনামনেকার্থস্থাদেতেহর্থাধাতোরেবাল্সনেপদেনদ্যোত্যন্তে। ৪৫৯॥

প্রভাপকাশিকা।

লিপা। উপাৎতিষ্ঠতেরাল্মনেপদং স্থাৎ। লব্ধুমিচ্ছালিপালভ্ধাতোঃ দনিদ্ধি দন্থবর্ণ ইরভ্যা-দেইঃ শক্পৎ পদিরভলভামিতিধাস্বকারস্তইঃ অভ্যাদেনলোপশ্চভস্থপঃ লিপ্নাং লিপ্দাগুরোঃ দেটোহলন্তাদইত্যনেন্ত্রঃ ধাত্বন্তলোপঃ স্ত্রিয়ামাতস্থাং গম্যমানায়াং। অকর্মকাচ্চউপতিষ্ঠতে ভোজুমিতি রসবত্যাম্। ৪৬০॥

গ্ৰহপ্ৰকাশিকা।

লিপ্লেতি। দাতারং ধনং লিপ্লতি যাচতইতি যাবং। অয়মর্থ উপদর্গদ্যোত্যঃ। ৪৬০।

প্রভাপ্রকাশিকা।

সমঃ। সমুপদর্গাৎ ক্ষুধাতোরাজ্মনেপদং। সংক্ষুতেতীক্ষং করোতি। বক্ষঃ পীঠেঘনাস্ত্রণকি-পকচিনেসংক্ষুবানঃ পৃষৎকানিতি মুরারো। সংক্ষুবানঃ তেজয়িমত্যর্থঃ। ৪৬১॥

গৃত্পকাশিকা।

সমইতি। ক্ষুতীক্ষীকরণেজপ অসমমুপদর্গাদান্মনেপদং স্থাৎ। দংক্ষুবানইতি। শংক্ষুতইতি দংক্ষুবানঃ বর্ত্তমানেশস্ত শানাবিতি আনপ্রত্যয়েইবর্ণোবর্ণয়োরিত্যাদিনাউব্। আজন্মবক্ষচারী পৃথুলভুজ-শিলান্ত ভবিভাজমানজ্যাঘাতশ্রেণি সংজ্ঞান্তরিতবহুমতীচক্র জৈত্রপ্রশন্তিঃ। বক্ষঃ পীঠেঘনান্ত্রণকিণকচিনে সংক্ষুবানঃ পৃষৎকান্ প্রাপ্তোরাজন্মগোষ্ঠীবনগজন্বগন্নাকে ভুকাজামদগ্রাইতি মুরারিঃ। ৪৬১॥

নিয়ং সম্মাননাদৌ। সম্মাননোৎক্ষেপণাচার্য্যকরণজ্ঞানভৃতি বিগণনব্যয়েষু নিয়জাত্মনেপদং স্যাণ। নয়তেসদসিপণ্ডিতঃ পূজিতোভবতীত্যর্থঃ মাণবকমুপনয়তে জাচার্য্যভিবমুপদিশতীত্যর্থঃ নয়তে চার্ন্ধী লোকায়তে তত্র প্রমেয়ং নিশ্চিনোতীত্যর্থঃ কর্মকারান্তপনয়তে বেতনং প্রযাজ্ঞতীত্যর্থঃ মদ্রাঃ কারংবিনয়ন্তেশ্বণং নির্য্যাতয়ন্তীত্যর্থঃ ধর্মার্থং শতং বিনয়তে। ৪৬২॥

বেঃ কর্ত স্থেইদেহকর্মণি। মন্যুং বিনয়তে। কর্ত স্থেকিম্ অন্যস্যমন্যুং বিনয়তি। অদেহেকিং গডুং বিনয়তি। কর্মণিকিং বুদ্ধ্যাবিনয়তি। ৪৬৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নিয়ঃ। উপদর্গযোগেচ। উপদিশতীতি। গায়ন্ত্রীমিতিশেষঃ। চাব্বীতি। চাব্বীলোকায়তে বৌদ্ধশাস্ত্রেতত্রলোকায়তে শাস্ত্রেপ্রমেয়ং প্রমাবিষয়ং। কারমুণং নির্য্যাতনং শোধনং বিগণননিদং। ব্যুয়ে ধর্মার্থমিদং। ৪৬২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নিয়ইতি। নীঞ্প্রাপণেভুউ অনুকৃতত্বাৎ ষঠ্যেকবচনেঈকারোকারয়োর্দ্ধাতোরিত্যনেনইয়্। ধাতুনামনেকার্থনাৎ কুত্রচিৎ নাগাতোঃ কুত্রচিৎ উপদর্গযোগেদখাননাদিরর্থোহবদেয়ঃ। দদদিদভায়াং। দমজ্যাপরিষদ্যোষ্ঠিদভাদমিতি দংদদঃ। আস্থানীক্রীবমাস্থানং স্ত্রীনপুংদকয়োঃ দদইত্যমরঃ। ইদম্দাহরণং দন্মাননস্থ। মাণবকং বালং। বালস্তুস্থানাণবকইত্যমরঃ। উৎক্ষেপয়তি উর্দ্ধেক্ষেপয়তীত্যর্থঃ। নয়তইতি। চার্কীবৃদ্ধিঃ লোকায়তে বৌদ্ধশাস্তেনয়তে তত্রবৌদ্ধশাস্ত্রেপ্রময়ং নিশ্চিনোতীত্যর্থঃ। চার্কীত্বশোভনাবৃদ্ধোরিতি মেদিনা। লোকায়তং চার্কাকশাস্ত্রমিত্যময়টীকা। ইদংজ্ঞানস্থ। কর্মাকারিতি। ইদংভৃতে। মদ্রাইতি। মদ্রামদ্রদেশীয়াঃ কারং বন্ধং বিনয়ন্তেম্বর্থাদৃণং নির্যাতয়ন্তি শোধয়ন্তীত্যর্থঃ। কারাবদেন্থারাংশ্চিন্তিয়াংভূতি প্রদেবকে। তুয়ারশৈলেহপি পুমান্ বন্ধনাগারবন্ধয়োরিতি বিশ্বপ্রকাশঃ। নির্যাতনং বৈরশুদ্ধোদানেন্তাদার্পণ্ডেপিচেত্যমরঃ। অপিনাঝণাদিশুদ্ধাবপি। শতং বিনয়তে ব্য়য়তীত্যর্থঃ। ৪৬২॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

বেঃ। বেরুপদর্গানয়তেরায়্নেপদং কর্তৃ স্থেদেহান্যকর্মণিঅনঙ্গকর্মণীত্যর্থঃ। মন্যুমিতি।
মন্যোঃ ক্রোধস্থক র্গ্রুবেহপ্যনঙ্গরাৎ বিনয়তেবিগতং কুরুতে। অক্যস্তেতি। বিনয়নকর্ত্রপরস্থমস্যুক্তৃ ছিন তদর্ভিয়াদিত্যর্থঃ। গড়ুমিতি। দৃঢ়মাংসগড়ুকবিশেষস্থাদেহয়াদিত্যর্থঃ। অনঙ্গেতৃগড়ং বিনয়ভইতি তম্মতেগড়ুর্র ণবিশেষঃ। অনভিধানাদগ্রনয়নার্থস্থনস্থাৎ। বুদ্ধ্যতি। বুদ্ধেঃ কর্তৃ স্থম্থেই-দেহদ্বেপি কর্ময়াভাবাদিত্যর্থঃ। ৪৬৩ ।

পরোপাভ্যাঞ্চ রন্ত্যাদৌক্রমঃ। রন্তিনর্গতায়নে রন্তিরপ্রতিবন্ধঃ শাস্ত্রেয়-ক্রমতেবৃদ্ধিঃ। সর্গ উৎসাহঃ কবিতায়ৈক্রমতে। তায়নং ক্ষীততাব্যক্রচাত্রাঃক্রমন্তে। পরাক্রমতে উপক্রমতে। রন্ত্যাদেরন্যত্রউপক্রামতি। ৪৬৪॥ বানুপদর্গতঃ। ক্রমতে ক্রামতি। ইহনভবতি সংক্রামতি। ৪৬৫॥ উদ্ধানেক্যোতিষামাঙঃ। আক্রমতে খনিকুঃ। অজ্যোতিষি আক্রামতি ধূমোহর্ম্যং। ৪৬৬॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

বেরিতি। মরুামিতি। মরুাদৈন্যে ক্তেকুণীত্যমরঃ। গছমিতি। গছুঃ পৃষ্ঠগতেকুজইতি বিশ্বঃ। ৪৬৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পরো। উপদর্গপরোপাভ্যাঞ্চকারাদনুপদর্গাৎ ক্রমখাল্লনেপদং স্থাৎ। রুত্ত্যাদিমাহর্ত্তিদর্গেতি। রুত্তিপদস্থানেকার্থস্থাদাহস্প্রতীতি। শাস্ত্রেনুক্রমতে অপ্রতিবন্ধেনপ্রবর্ততে ক্যাম্যতেশ্চনোধ্যং। কবিতায়াইতি। ক্রমতেউৎদহতে। অত্রেতি। ক্রমন্তেক্ষাতাভবন্তি এবং পরোপ্যোগেহপ্যাহপরেতি।
অত্রান্তঃ অপ্রতিঘাতোৎ দাহক্ষীততাস্ক্রমঃ যুদ্ধেরু ক্রমতে নপ্রতিহন্ততে অধ্যয়নায়ক্রমতেবৃদ্ধিঃ উৎদহতে
দেবতত্তঃ ক্রমতেক্ষীতোভবতীত্যের্থিইত্যাহ। ৪৬৪॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

পরোপে। জমইতিসামাত্যেনোপাদানাৎ ভূদিপরস্মৈপদীগৃহতে চকারাদনুসর্গাচ্চ। রুতিবিব-রণাজাব কোশিক্যাদিপ্রবর্তনেইতি সর্গস্তনিশ্চয়াধ্যায়মোহোৎ সাহায়্রস্প্রীবিভিচমেদিনী। তায়সন্তান-পালনয়োঃ সন্তানোবিস্তারঃ স্ফীতভাচ ভাবেহনট্। পরাজ্যমতে এতয়োরপিপূর্ববদর্থঃ। উপজ্ঞামতীতি। নিকটং গচ্ছতীত্যর্থঃ। ৪৬৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বানুপ। অনুপদর্গত উপদর্গবোগাভাবে ক্রমোবাআল্পনেপদং। ইহেতি। সমউপদর্গাদিতার্থঃ কথং বারিপূর্ণমহীং কৃষাপশ্চাৎ সংক্রমতেগুরুঃ। অর্দ্ধরাত্রব্যতীতেতুবদা সংক্রমতেরবিরিতিসত্যং সম্-উপদর্গপ্রতিরূপ কত্বাদ্বাহনুপদর্গতইত্যাত্মনেপদং। ৪৬৫॥ •

গৃতপ্রকাশিকা।

বানুপেতি। পূর্বত্রবৃত্ত্যাদ্যর্থে অনুপদর্গাচ্চাত্মনেপদমুক্তম্ ইহতুপাদবিক্ষেপার্থকস্থ উপদর্গাযো-গেবাত্মনেপদং। ননুতর্হিউভয়পদীতি স্বীকারেএতৎসূত্রং নিপ্প্রয়োজনমিতি চেম্নউক্তোপদর্গার্থয়োরযোগে-উভয়পদিত্বাপত্তেঃ। এতদালোচ্যাহইহনেতি। এবংপ্রক্রামতীত্যাদি। ৪৬৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উদ্পা। জ্যোতিষামূদ্যমেহর্থে আঙ্উপদর্গাৎ ক্রমআত্মনেপদং। আক্রমতেইতি। উদ্পাছতীত্যর্থঃ। এবমিরাক্রমতে দিবম্ উত্থায়ব্যাপ্নোতীত্যর্থঃ। তথাচ দিবমাক্রমমাণেবকেছুতারাভয়প্রদেতিভট্টিঃ।

প্রোপাভ্যামাদিকর্মণি। প্রক্রমতে ভোক্তুম্ উপক্রমতেবক্তুম্। অন্যত্ত্র-প্রক্রামতি স্পূর্বেছ্যঃ। ৪৬৭॥

পদন্যাসবিশেষেবেঃ। যথাবিক্রেমতেহয়ঃ। ৪৬৮॥

ভাসনজ্ঞানবিমতিয়ত্বোপমন্ত্রণেবদঃ। সদসিবদতেধীয়ান্ দীপ্যমানোবদতী-ত্যর্থঃ। বদতেন্যায়ে। বিমতির্ন্ন নামতিঃ ক্ষেত্রেবিবদতে। যত্নউৎসাহঃ অধ্যয়নেবদতে। উপমন্ত্রণং প্রীণনং কর্মকারান্সপবদতেদারান্মপবদতে। ৪৬১॥

অজ্যোতিষীতি। আক্রমতি উলাচ্ছতি। অত্রাগ্যউলামেপ্রধানভূতে গুণভূতেচাত্মনেপদে জ্যোতিরুলাম-ইত্যস্তক্রামতিধূমো হর্মাতলমিতি প্রভ্যাদাহরণং। ভাষ্যেতু অত্রন্থ্যস্থিকায়াং ব্যাপ্তোক্রমের্মাদ্গনমাত্রেউদ্গমানমাত্রে আক্রামত্যাদিত্যঃ।উদ্গমনপূর্বিকায়াংব্যাপ্তোদিবমাক্রমমাণেবেতিভটিরিতি। ৪৬৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উদ্গমে। উদ্গমে উদ্গমনপূর্বকব্যাপ্তোচ। খমাকাশম্ ইন্দুশ্চন্দ্রঃ। হর্ম্যাং ধনিনাং বাসঃ। নভোহস্তরীক্ষং গগনমনন্তং স্থরবর্ম থমিতি হিমাংশু শচন্দ্রমাশ্চন্দ্রইন্দুঃ কুমুদবান্ধবইতি হর্ম্যাদিধনিনাংবাস-ইতিচামরঃ। ৪৬৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রোপা। উপদর্গপ্রোপাভ্যাং ক্রমআত্মনেপদম্ আদিকশ্মণিপ্রথমক্রিয়ায়াং গম্যেহর্থে। প্রক্রমত-ইত্যাদি। আরভতেইত্যর্থে। কথং তেতাং হস্তং প্রচক্রমুরিভিচগুীপ্রথমং ধাতুঃ দাধনেনযুজ্যতে পশ্চাত্ব-পদর্গেনেতি। জনোনৃপং প্রক্রমতে বিভূতয়েতথৈ বচোপক্রমতেহ্প্যমুমিভিমতভেদাৎ দেবায়ামপি। ৪৬৭॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

প্রোপাভামিতি। অন্যত্রাদিকর্মণোহ্যত প্রক্রামতিশ্ব আরভতেশ্ব পূর্ব্বেলিনে। নাত্রপ্রথমক্রিয়ারস্কঃ। পূর্ব্বদিনেহতাত্ত্বাৎ। প্রচক্রমুরিত্যাদে অনুপ্রসর্গপ্রাদিযোগে বাহ্নুপ্রসর্গতই-ত্যেস্বিষ্যোবা। ৪৬৭॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

পদ। পদস্যচরণস্থন্যাসবিশেষে বিক্ষেপণবিশোষেহর্থেবেঃ ক্রমআত্মনেপদং। বিক্রমতেহয়ঃ শীঘ্রংগচ্ছতীত্যর্থঃ। বিবিধংচেইতইতি বা। জলেবিক্রমমাণয়াইতিভট্টিঃ। ৪৬৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

পদেতি। হয়োঘোটক:। ঘোটকেণীতিতুরগতুরঙ্গাশ্বতুরঙ্গমাঃ। বাজিবাহার্ব্যক্ষর্ব্ব হয়দৈশ্ববসপ্তয়-ইত্যমরঃ। ৪৬৮॥

প্রভাপকাশিকা।

ভাস। এম্বর্থের্গম্যমানের্বদভেরাত্মনেপদং কর্ত্তরি। সদসীত্যাদি। এবং প্রকাশনাদৌবদঃ বদতেমসুস্মৃতো বিকাশনেহর্থং প্রতিপাদয়তীত্যর্থ ইতিরসবতী। বদতেক্সায়ইতি। তার্কিকোবদিতুং

সঙ্ঘোক্তোবাদিনাং। সম্প্রবদন্তেছাত্রাঃ। ব্যক্তবাচাং কিংবরতনুসম্প্র-বদস্তি কুকুটাঃ। ৪৭০॥

বিপ্রলাপেবা। বিপ্র বদন্তেসাম্বৎসরাঃ।

জানাতীত্যর্থঃ। বিমতিরিতি। বিপ্রতিপত্তিরিত্যর্থঃ। ক্ষেত্রেবিবদন্তেবিপ্রতিপদ্যমানাবিচিত্রং বদন্তীত্যর্থ-ইতিরসবতী। ক্ষেত্রেবিবদতেইতি। নানামত্যাবদতীত্যর্থোহস্মমতে। উপসর্গাৎপরস্মাদপি। অধ্যয়নইতি উৎসহমানোবদতীত্যর্থঃ। কর্ম্মকারানিত্যাদি। উপবদতেপ্রীণয়তীত্যর্থঃ। অন্যত্রভূশিয্যা-মুপবদতেউপসান্ত্রয়তীত্যর্থঃ। উপমন্ত্রণেরহস্থ্যপচ্ছন্দনে পরদারামুপবদতে প্রলোভয়তীত্যর্থঃ। ৪৬৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ভাদনেতি। ভাস্দীপ্তোভুষা ভাবেনহট্জ্ঞাখনবোধেক্যাউ ভাবেহনট্বিপূর্ব্বঃ মন্জ্ঞানেদিখা ভাবেক্তিঃ এনামতিগ্ধ ট্যগুণেলোপইতিনলোপঃ। যতীপ্রযক্তেত্ব ভাবেযাচিবিছিপ্রছিযজাং স্বপিরক্ষি-যতাঞ্চনঙ্ উপপূর্ব্বমত্রিগুপ্তভাষণেচুষ্মা গাতোরিদসুবন্ধস্যেতিসুন্ভাবেহনট্ গবাশ্বপ্রভৃতিস্বাৎসমাহারদ্বন্ধঃ। বদ্ব্যক্তায়াং বাচিভুপ যঠোকবচনান্তমিদং। ৪৬৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সঙ্গো। বাদিনাং ব্যক্তবাচাং সঞ্জোক্তাবর্থেবদতেরাল্মনেপদংস্থাং। ব্যক্তবাচোহিমনুষ্যাঃ প্রশস্তাঃ সঞ্জোক্তিঃ নহোক্তিঃ। সম্প্রবেতি। সম্প্রবদন্তেসহবদন্তাত্যর্থঃ। বরতন্বিতি। কুরুটা-ব্যক্তবাচোনত্বন্তীত্যর্থঃ। সঞ্জোক্তাবপিনাল্মনেপদং। ৪৭০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

সঙ্ঘোক্তাবিতি। সঞ্জ্যসমূহস্যোক্তিঃ সঙ্ঘোক্তিঃ সংহাক্তিরিত্যর্থঃ। বকুংশীলমেধামিতিবাদি-নোব্যক্তবাচইত্যর্থঃ। বরতন্বিতি। অয়িজহীহিদৃঢ়োপগৃহনং ত্যজনবসঙ্গমভীরুবল্লভে! রবিকরোদ্গাম-এষবর্ত্তবেরতকুসম্প্রবদন্তিকুরুটাইতিমাঘে। ৪৭০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিপ্র। বিপ্রলাপোবিরোধোক্তিঃ তস্মিন্বদতেরাত্মনেপদং। বিপ্রবদন্তইতি। পরম্পরবিরুদ্ধং বদন্তীত্যর্থঃ বিপ্রবদন্তিবা। ব্যক্তবাচামনুর্ত্তো বিপ্রবদন্তিশকুনয়ঃ নানারুতং কুর্বন্তীত্যর্থঃ। সঞ্জোক্তাবিত্যেব ক্রমেণমোহুর্তিকোমোহুর্তিকেন বিপ্রবদতি। অত্রবিবদন্তভূমিদেবাইতিক্রমোক্তো বিপ্রলাপেবেতিপরক্ষৈপদং। ৪৭১॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

বিপ্রেতি। বিপ্রপূর্বাঃ লপ্ভাষণেভূপ ভাবেঘঞ্রুদ্ধিঃ। বাদিনাং সঞ্জোক্তোবিপ্রলাপেসতিবদতে রাত্মনেপদং স্থাদিত্যর্থঃ। বিপ্রপূর্ববদ্ধাতোর্বিপ্রলাপার্থতয়া বিপ্রযোগেণপ্রয়োগঃ। সাম্বংসরাইতি। সম্বংসরপ্রতিপদকং গ্রন্থং বেত্তাধীতেবেতিবেদ্যাদণ্বেত্যধীতেবেত্যদি আদৌরদ্ধিঃ ইবর্ণাবর্ণয়োপ-ইত্যস্ত্যাকারলোপঃ। সাম্বংসরোজ্যোতিষিকোদৈবজ্ঞগণকাবপীত্যমরঃ। বাগ্রহণং পূর্ববগৃহীতবাপরবর্ত্তিনাং নিত্যার্থং তেন নবাসুর্তিঃ। ৪৭১॥

অনোরকর্মকাং। অনুবদতেকঠঃ কালাপস্য। ৪৭২॥

অবাৎপরস্মাদিনারতেঃ। যথাবিগরতেদি। অবাৎ কিং। বিপ্রৎ পুরাপত-গরাডিব নির্জ্জনার। ৪৭৩॥

সমোইস্থাপগমে। নিত্যং গিরং সংগিরতে। ৪৭৪॥

দাণশ্চতুর্থ্যর্থ তৃতীয়য়া। সমইত্যন্ত্রতে। দাস্যাপণং সংপ্রয়চ্ছন্তে-সিড্গাঃ। ৪৭৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনো। অনূপদর্গাদকর্মকাদদতেরাত্মনেপদং। অনুবদতইতি। যথাকালাপেনোক্তং তথা কঠোহসুবদতীত্যর্থঃ। অকর্মকাৎ কিংরুদিতমনুবদতি। ব্যক্তবাচামিত্যেবজনুবদতিবীণা। ৪৭২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অনোরিতি। অত্রাপিঅবিদ্যমানকর্মীকাদ্বদআত্মনেপদমন্পদর্গাৎ। অমুবদতইতি। উক্তো-দীরণমনুবাদঃ কঠঃ সামবেদীয় শাথাবিশেষঃ কালাপোহপিতথা। কালাপন্তেতি অমুবাদসম্বন্ধেষষ্ঠী সম্বন্ধঃস্বরূপএব। অকর্মকাৎকিম্ উক্তমনুবদতি। ৪৭২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

व्यत। কর্ত্তিগান্ত্রনেপদমিত্যর্থ:। অবগিরতে ভুঙ্ক্তেইত্যর্থ:। নির্জ্জগারেতি। নিরুপসর্গা-দান্ত্রনেপদ:। সার্দ্ধং কথঞ্চিত্রতিঃ পিচুমর্দ্দপত্রৈরাস্মস্তরালগতমাত্রদলং এদীয়:। দাসেরকঃ সপদি সম্বলিতং নিষাদৈর্বিপ্রপ্রাপতগরাডিবনির্জ্জগার। ইতিমাঘ:। ৪৭৩॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অবাদিতি। গিরতেরিতিগ্রহণাৎ গৃভক্ষণৈতুপ অস্তৈবগ্রহণং নতু গৃশব্দেইত্যস্তক্রাদিপরস্মৈপদিনঃ। ভট্টোচ ঐদ্বিপ্রবদমানৈস্তাং সংযুক্তাং ব্রহ্মরাক্ষসৈঃ। তথাবগিরমাণেশ্চপিশাচৈশ্মাংসশোণিতমিতি। নির্জাগারেতি। অটিরপং। নিপুর্বি গৃধাতোর্বিমনার্থঃ। ৪৭৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সমো। অভ্যুপগমোহঙ্গীকারস্তস্মিন্ সমুপদর্গাৎপিরতেরাজ্মনেপদং। সংগিরতে অভ্যুপগচ্ছতি।৪৭৪॥

गृष्यकाणिका।

সমইতি। সম্পূর্ব গ্রঙ্গীকারার্থঃ। তথাচ ভট্টিঃ যথাস্বংসঙ্গিরন্তেস্মগোষ্ঠীরু স্বামিনোগুণান্। পানশোণ্ডাঃ পথঃ ক্ষীবার্থিকরুদচরস্তচেতি। ৪৭৪॥

প্রভাপকাশিকা।

দাণঃ। চতুর্থ্যপৃত্তীয়য়াযুতাৎসমুপসর্গাদ্দাণ আত্মনেপদং। দাস্থেতি। অশিষ্টব্যবহারেম্বিত্যাদিনা তৃতীয়া। পণং সংপ্রযাহন্তেসিড্গাঃ কামুকাঃ। ৪৭৫॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

দাণইতি। দাণ্দানে ভূপবর্ত্তমানায়া অস্তেবিভক্তো অনিদাণঃ স্থাদযচ্ছইতি যচ্ছাদেশঃ। কামুকঃ কমিভাদিজাইতিকোষঃ। ৪৭৫॥ প্রাদিম্বরাদ্যুজোইযজ্ঞপাত্রেয় । দূতং সংপ্রযুক্তে ধনং বিনিযুক্তে । হলস্তাম্ন সংযুনক্তি । ইহু ন ভবতি যজ্ঞপাত্রাণি সংপ্রযুনক্তিধীরঃ । ৪৭৬॥

অনবনেভুক্তঃ। ভুতেত> সং স্থ্যুপভূতেত। অবনেতৃ ভূনক্তিমহীৎ রাজা। ৪৭৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রাদি। প্রাদিম্বরাৎ যুজ আত্মনেপদমেব অযজ্ঞপাত্রেরু যজ্ঞপাত্রভিদ্নেরু গম্যমানেরু। দূতমিতি। সংপ্রযুঙ্জেপ্রেরয়তীত্যর্থঃ। ধনমিতি। রিনিযুঙ্জে ক্রয়বিক্রয়াদাবর্পয়তীত্যর্থঃ। যজ্ঞেতি। প্রযুনজি ব্যবস্থাপয়তীত্যর্থঃ। কথমুদ্যুঙ্জে হলন্তাদিতিসত্যং যজ্ঞপাত্রাযোগে২সং নির্ভ্ রঃ প্রাদেযুজইত্যত্তদূত্রাৎ। এবং নির্যুনক্তীত্যাদি। যুজেরযজ্ঞপাত্রেরু প্রাদি স্বরাদিত্যভয়নয়মাৎ প্রজানুরুজিং যমযুঙ্জিবেদিতুমিতি ভারবোঁ কেবলাৎ কথমাত্মনেপদং কর্জ্রভিপ্রায়ে যজাদিত্বাদিতি। ৪৭৬॥

गृष्धकाणिका।

প্রাদীতি। যুজির্যোগে রুউ ইত্যস্থাত্মনেপদমেব নতু যুক্ত্ সমাধাবিত্যস্থগ্রহণং তস্ত্যদিবাদ্যাত্মনে-পদিস্থাৎ। প্রাদিস্বরাদিভিন্নাৎ কেবলাচ্চোভয়পদং যথা উদ্যুঙ্ক্তে উদ্যুনক্তিযুঙ্কে যুনক্তীত্যাদি। ৪৭৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অন। অবনং রক্ষণং ন অবনমনবনম্ অবনভিন্নেহর্থে ভুজ আত্মনেপদং প্রাদিযোগাযোগয়োঃ। প্রাদ্যধিকারেহিপি পূর্ব্বস্থান্ত প্রাদীভূক্ত্যোঅত্রসূত্রেহনিয়মঃ। ভুঙ্ক্ত ইতি। ভক্ষণার্থন্থাৎ স্থথমূপ-ভুঙ্ক্ত ইতি তোগার্থনাকাবনাভাবঃ। ভোগং স্থপত্র্যথসাক্ষাৎকারঃ। মহীমিতি। ভুনক্তিরক্ষতীত্যর্থঃ। ভুজোহপালনে শক্তুং ভুঙ্ক্তেস্থগমূপভুঙ্কে। বুভুজে পৃথিবীপালইতি উপভুক্তবানিত্যর্থঃ। অপালনইতি কিং ভুনক্তি পৃথিবীং রাজাপালয়তীত্যর্থঃ ইতিরদবত্যাং। হুর্ঘটেচ ভুজোহনবনইতিকথং দিবং মরুত্বানিব ভোক্যতেমহীং তথাবুভুজেধনণীপালঃ পৃথিবীমেবকেবলামিতি র্ঘোতথাবুভুজাতেচিরং মহীমিতিকামন্দ্রকী পালনেঅনবনইতি প্রতিষ্ধাৎ উচ্যতে ভুজোহরক্ষেইতি বক্তব্যে অনবনগ্রহণাত্বপভোগরভোচস্থাদিতি রক্ষিতঃ। পুরুষোত্তমশ্চউপভোগোহত্রার্থঃ আত্মদাক্ষাৎ করণদ্বাহনবনম্ এবঞ্চর্জোহশ্বনাহ্য্থশতানি ভুঙ্ক্তইত্যপি। চান্দ্রাপ্তভুজোভক্ষ্যইতি প্রাভ্স্তিভিন্তঃ তিন্তাবীজস্তুভক্ষ্যপদমনবনোপলক্ষণং তেনাকুভাবেহপিভবতীতি। ৪৭৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অনবনইতি। অব্রক্ষণগতি শোভাপ্রীতি তৃপ্তিঅবগমপ্রবেশশ্রবণ ঐশ্ব্য্যাচনকরণ অনুষ্ঠানইচ্ছা দীপ্তি প্রাপ্তি আলিঙ্গনহননআদানত্যাগর্দ্ধিযুত্বপ ভাবেহনট্ নঞ্সমাদেঅন্সরে। ভুজ্পালনাব্যবহারয়োঃ রূপ পালনং রক্ষণম্ অব্যবহারোভোজনং ভুজ এতদর্থবয়বাচকত্বাদনবনশব্দেনারক্ষণমূচ্যতে তত্রাপিভোজনে ইত্যমুক্তানবনেইত্যুক্তেঃ শিষ্টপ্রয়োগাচ্চতৃপ্ত্যমুভ্বার্থাবিপি ভুজোবাচ্যাবিতি জ্ঞেয়ং। তত্রভুঙ্কেই মমিত্যা-দৌ ভোজনে স্থমুপভুঙ্কেইত্যাদাবমুভবে ভোক্ষ্যতেমহীং বুভুজেপৃথিবীং বুভুজাতেচিরং মহীমিত্যাদি-রুঘুকামন্দকী প্রয়োগেতৃপ্তিরূপোপভোগেহর্থে আত্মনেপদমিতি সর্ব্যবদাতম্। ৪৭৭ ॥ করোতের্গন্ধনাদ্যথে। গন্ধনভংর্সনসেবাসাহসিক্যপ্রতি যত্নপ্রকথনোপযো-গেরুতং। গন্ধনমপকারসূচনং ধনিনমুপকুৰুতেখলঃ শ্যেনোবর্ত্তকান্তপকুৰুতে রাজানমুপকুৰুতে রণেবারান্তপকুৰুতে সহসাঅভিভবতীত্যর্থঃ। সতোগুণাস্ত-রাধানং প্রতিযত্ত্বঃ কাণ্ডস্যোপস্কুৰুতে ধর্মং প্রকুৰুতে কথয়তীত্যর্থঃ শতং প্রকুৰুতে ধর্মার্থং বিনিযুজ্জে। ৪৭৮॥

শব্দান্যাকর্মণস্তুবেঃ। ক্রোফাবিকৃক্তে স্বরান্ ওদনপরিপূর্ণাশ্ছাত্রাবি-কুর্বতে। শব্দান্যকর্মণিভূবিকরোতি দধিক্ষারং! বেঃ কিংকরোতি স্বরান্ ৪৭৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

করো। গন্ধনাদ্যর্থেইকত্রর্থক্রিয়াফলে কর্ত্তরিচক্তঞাবর্ত্তমানাই ততআত্মনেপদমিত্যর্থঃ। অপকারসূচনং হিংসাসূচনং। ধনিনমিতি সূচয়তীত্যর্থঃ। ভংশনেশ্যেনইতি। ভংশয়তীত্যর্থঃ। শ্যেনোবাজইতি প্রদিদ্ধঃ। বর্ত্তকোভাটীতিখ্যাতঃ পক্ষী। সেবায়াং রাজানমিতি। সেবতইত্যর্থঃ। এবং বৈদ্যান্ প্রকৃক্তে রোগীসেবতইত্যর্থঃ। সাহসেরণইতি। এবং পরদারান্ প্রকৃক্তে পরধনংপ্রকৃক্তে তত্রসাহসাপ্রবর্ততইত্যর্থঃ। গুণান্তরেতি। প্র্কোক্তম্বরণায়। এবং পট্রোপস্কৃক্তে তত্তগুণান্তরাধানং করোতীত্যর্থঃ। প্রকথনআহধর্মমিতি। এবং গাখাং প্রকৃক্তে প্রকর্ষেণ কথয়তীত্যর্থঃ। বিনিযোগআহশত্মিতি। ৪৭৮॥

গৃত্পকাশিকা।

করোতেরিতি। ডুকুঞ্করণেতউ। অস্থোভয়পদিত্বেপ্যুক্তার্থে আত্মনেপদনিয়মার্থং দূত্রং। ভংসনমপকারকরণং সাহসিক্যং সাহসং প্রকথনং প্রকর্ষেণকথনম্ উপযোগোবিনিয়োগোদানমিতিযাবং। ধনিনিতি উপকারং দর্শয়ন্নপকারং সূচয়তীত্যর্থঃ। শুেনইতি বর্ত্তকান্ পক্ষিবিশেষান্ শ্যেনঃ বলবান্ পক্ষিবিশেষাভংশয়তি অপকরোতি হিনস্তাতি যাবং। রণইতি। বারান্ সহসাসাহসেন অভিভবতি পরাজয়তে শক্রদোপতিঃ শক্ররাজাবেতি শেষঃ। শতমিতি। ধর্মার্থং শতং শতমুদ্রাবিনিযুঙ্কে দ্রাভীত্যর্থঃ। ৪৭৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শব্দা। শব্দান্তং ন কর্মান্তক্ষ শব্দকর্মণোহকর্মকাচ্চক্ঞোবেঃ পরস্মাদান্মনেপদং। ক্রোফেতি। বিকুরুতে স্বরান্ বিস্তান্ করোতীত্যর্থঃ অত্তশব্দকর্মান্তং। অকর্মকন্তাদাহওদনেতি। বিকুর্বনন্তে বিকারযুক্তাভবন্তি। শব্দান্তেতি। ক্ষারবিকারস্তদগ্নঃ শব্দান্তন্তাভংকর্মণিনান্মনেপদং ক্ষারং কর্তৃদধি-ত্বেনপরিণমতি। ৪৭৯॥

गृष्धकानिका।

অধেঃ প্রহাসে। প্রহাসোহভিভবঃ। তমধিচক্রেজিতবানিত্যর্থঃ।৪৮০॥ ম্রিয়তেরাশীরদ্যতনীশিতাং। ম্রিয়তে ম্রিয়ত ম্রিয়তাম্ অম্রিয়ত মুষীফ অমুত। এষাং কিংমরিষ্যতি মমার।৪৮১॥

উদশ্চরঃ সকর্মকাণ। গুৰুবচনমুচ্চরতে। সকর্মকাদিতি কিং গঙ্গায়াং ধ্বনিৰুচ্চরতি। ৪৮২॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

অধেঃ। উপদর্গাদধেঃ পরস্থাৎ কৃঞ্জাত্মনেপদং। প্রহাদোহত্তনপ্রকৃষ্টহাদঃ কিন্তুভিভবইত্যাহ প্রহাদোহভিভবইতি। অভিভবার্থবিবরণং জিতবানিতি। অধেঃ পরাভবইতি পরসূত্রং শতমধিকুরুতে অভিভবতীত্যর্থঃ। ইতিশব্দাত্মপেক্ষায়াঞ্চাবদেয়ংত্বামধিকুরুতে উপেক্ষতেইত্যর্থঃ। কথং ভবাদৃশাদেচদিধি কুর্ব্বতেরতিং নিরাশ্রয়াহন্তহতামনস্বিতেতিভারবিঃ প্রহদনমভিভবশ্চেতি বিবরণাৎ পূর্বাং ধাতুদাধনেন-যুজ্যতে পশ্চাত্মপদর্গেতি কত্রভিপ্রায়েবাত্মনেপদং। ৪৮০॥

গুঢপ্রকাশিকা।

অধেঃ। ধাতৃনামনেকার্থস্বাৎ প্রহাদৌহত্রাভিভবঃ অভিভব*চপরাভবউপেক্ষাচোচ্যতে যদা অধিকৃঞ্তদর্থেবর্ত্ততে তদাত্মনেপদমেব অত্রাত্মনেপদং নিয়ম্যতে তেনাস্মিমর্থেনপরস্মৈপদং। এতদন্তার্থে- তুউভয়পদং স্থাদেবকৃঞোঞ্জুবন্ধতয়োভয়পদিস্থাৎ। অধিচক্রেইভি। পরোক্ষায়াএদ্বিভাবাদি। ভট্টোচ যোহপচক্রেবনাৎ দীতামধিচক্রেনযংহরিঃ। বিকুর্বাণঃ স্বরানদ্যবলং তস্থানিহন্ম্যহমিতি। ৪৮০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্রিয়। মৃঙ্ধাতোরাশীরদ্যতনীশিতাম্ আশীরদ্যতন্যোঃ শিতাং বর্ত্তমানাদিচতস্থামাত্মনেপদং নান্যত্ত। বর্ত্তমানাদিক্রমেণোদাহরণং খ্রিয়তইত্যাদি। মৃধাতুরাত্মনেপদী অতোনিয়মঃ। অমৃতেত্যাদি। ঋবর্ণনাম্যুপোস্তানামিত্যাদিনাকিন্ত্রং। মরিষ্যতীতি। স্থকারেহন্দন্তাদিট্। লিটিমমার। মন্ত্রেপতঙ্গবদী রৈরিতিভট্টিঃ ভাবআত্মনেপদং। মমাররাজাবিধবাভবত্যইতিভট্টিঃ। ৪৮১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ব্রিয়তেরিতি। মৃঙ্প্রাণত্যাগেতুআ ধাতুনির্দেশেশতিপ্ অন্বিক্ণেরিয়কারস্থান্যগুণে ইত্যনেন সূত্রেণ ঋকারস্থরিয়। যঠ্যেকবচনেরূপং। কর্ত্তরিবাচ্যেব্রিয়তেঃ ক্রান্যতন্যাং শিতাং বর্তমানা লিঙ্লোট্ হস্তনীনামান্মনেপদং নাখ্রত্ব। মৃধাতোঙিত্বেনাত্মনেপদিত্মতোনিয়মং। তর্হিঙকুবন্ধেনালং পরস্থৈপদিত্বেক্ষত্যভাবাৎ মৈবং মুমূর্যতেইতি প্রয়োগানুপপত্তেঃ। অতএবইনন্তস্থাদ্যতন্থাম্ অমীমরৎ অমীমরতইতি রূপদ্যং মারিধাতুত্বেনমৃস্বরূপত্বাভাবাৎ ইনন্তাচ্চোভয়ং বিত্রিত্যনেন উভয়পদ-প্রতঃ। ৪৮১॥

পুভাপুকাশিকা।

উদঃ। উপদর্গান্থদঃ দকর্ম্মকাচ্চরতেরাত্মনেপদং। অস্তত্তরাজাজ্ঞামূচ্চরতে উল্লজ্ঞয়তীত্যর্থঃ। গঙ্গায়ামিতি। ধ্বনিরুচ্চরতি প্রাহুর্ভবতি অকর্মকত্বেহত্তনতস্থতত্ত্বমূদ্রবার্থস্বাদিতিভাবঃ। ৪৮২॥ সমস্ত্তীররাযুতাৎ। রথেন সঞ্রতে। অন্যত্রলোকান্ সঞ্রতি নারদঃ। ৪৮৩॥

উপাদ্যমঃ পরিপ্রস্থে। কন্যামুপযচ্ছতে বিবহতীত্যর্থঃ। ৪৮৪॥ ক্ষমার্থসাগ্যমিরিনঃ। সাগময়স্বতাবত্বপজীব্যং। ৪৮৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উদইতি। গুর্বিতি। গুরুবচনম্ উচ্চরতেকথয়তীত্যর্থঃ। রাজাজ্ঞামুচ্চরতে সাহসী উল্লজ্ঞায়তীত্যর্থঃ। ধাতুনামনেকার্থদ্বাহূৎপূর্ববস্থচর্গতি ভক্ষণাচরণেয়ু চর্ধাতোভূ বাদিপর স্মৈপদিনঃ কথনাদ্যর্থাবাচ্যাঃ। ৪৮২॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

সমঃ। চরতেরাত্মনেপদমিত্যর্থঃ। রথেনেতি। কর্মাণঃ সত্ত্বেহপ্যবিবক্ষা। ৪৮৩॥

গূচপ্রকাশিকা।

সমইতি। সমুপদর্গাৎ পরস্মাৎ তৃতীয়ান্তপদযুক্তাচ্চরতেরাত্মনেপদং স্থাদিত্যর্থঃ। রথেন সঞ্চরতে সম্যগ্গচ্ছতীত্যর্থঃ। অন্যত্তীয়ান্তপদযোগাদন্যত্ত। লোকান্ ভুবনানি। ত্রিষথোজগতী-লোকঃ পিষ্টপং ভুবনং জগদিত্যমরঃ। ৪৮৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উপা। উপাৎপরস্মাৎ যম্ধাতোরাত্মনেপদং পরিগ্রহেহর্থে। কন্সামিতি কর্মবিবাহক্রিয়াব্যাপ্যত্বাৎ। নমুবিবরণাৎ পরিগ্রহস্থ বিবাহার্থকত্বে কথমুপায়ং স্তমহাস্ত্রাণিউপায়ং সতনাশরং শস্ত্রাণুপায়ং সতজিত্বরাণি নোপায়ধ্বং ভয়ং সীতামিতিভট্টঃ উচ্যতেস্বীকরণমায়ত্তীকরণমিতি রক্ষিতোভাগর্ত্তিশ্চ। উপআঙ্ পুর্বোহত্রযমিঃ স্বীকারইতিজয়মঙ্গলঃ। উপাদ্যমঃ স্বীকরণেইত্যেষাং সূত্রং। অন্যেতুস্বীকরণং পরিগ্রহ-ইতিত্বভ্বিব্যাখ্যানাৎসমুদাঙ্ভ্যোযমঃ পরিগ্রহইতিতঙ্ শাস্ত্রমুপ্যচ্ছতেইতিভাষ্যং। ৪৮৪॥

গুতপ্রকাশিকা।

উপাদিতি। যম্উপরমেছুপ। পরিপূর্ব্বঃ গ্রহ্উপাদানেপরিগ্রহণং পরিগ্রহঃ অল্সরান্তগ্রহিগমি-রদৃভাইত্যল্। পরিগ্রহেশ্বীকার্ক্রির্বে উপাৎ পরস্থযম্গাতোরাত্মনেপদং স্থাদিত্যর্থঃ। উপযদ্ভতইতি। উপযমন্তেবিভক্তো অন্বিকরণেগমীয়ামোহস্তশেছাহনিস্থাদিতিমঃ স্থানেছঃ চুগাগমশ্চ। কন্থাকর্মক-শ্বীকারশ্চেদ্বিবাহ অত আহ বিবহতীত্যর্থঃ। অন্থকর্মকস্বীকারস্ত আয়ত্তীকরণাদিস্তেনভট্টপ্রয়োগাঃ সিদ্ধ্যন্ত্রীতিনাস্ত্যমুপপত্তিঃ। ৪৮৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্ষমা। ক্ষমার্থেকাঙ্পূর্বে গম্ ধাতোরিনস্তস্থাত্মনেপদং স্থাৎ। ইনস্তস্থোভয়পদিত্বেনিয়মঃ অস্মির্মর্থেপর স্মৈপদং নভবতি। ! আগময়স্বেতি। উপজীব্যং জীবিকাপ্রদমাগময়স্বেত্যর্থঃ। অন্তত্ত্ব আগময়তিশিন্যং সমাপং গুরুঃ আগময়তেচ। ৪৮৫॥ কিরতেজ্রীবিকাহর্যকুলায়করণেযুচ। অপক্ষিরতেবুকুটোভক্ষার্থী অপক্ষিরতে-র্যভঃ সেতৃং শৃষ্ণে অপক্ষিরতেশ্বানিবাদার্থী। এযুকিম্ অপকিরতিহন্তী। ৪৮৬॥ প্রলম্ভনেবন্চিগর্দ্ধ্যাঃ। মাণবকং বঞ্চয়তেশিশুংগর্দ্ধয়তে। প্রলম্ভনেকিং শ্বানং গর্দ্ধরতি। এবমাদিরবাদিক। হেতুভয়েস্মিতইনস্তাং। জটিলোবিস্মা প্রতইত্যাদি। ৪৮৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্ষমার্থ ইতি। ক্ষমাসহনং তদর্থে অয়মর্থন্চ ধাতূনামনেকার্থস্বাদোধ্যঃ। ইনইতিছন্দোহর্থমুক্তম্ ইনস্তাদিত্যর্থঃ। আগময়স্বেতি। তাবদাকালস্কারে উপজীব্যআগং স্মতেসহিষ্যতে তমাগময়স্ব মাত্তরিষ্ঠা ইত্যর্থঃ। অন্যত্রইনস্তাচ্চোভয়ং বিছুরিত্যনেনোভয়পদং। উদশ্চরইত্যাদিএতৎ সূত্রাস্তং প্রমাণিকাছন্দঃ প্রমাণিকাজরোলগাবিতি তল্লক্ষণাৎ। জোগুরুমধ্যো রোলযুমধ্যোগণঃ লএকলযুঃ গএকগুরুঃ। ৪৮৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কির। কিরতেরাত্মনেপদং জীবিকাদিষর্থেষু জীবিকায়াম্ অপাদ্ধর্যান্ধবাদেষিতি স্বট্ হর্ষেঅপস্কি-রতের্যভঃ কুলায়োনীড়মস্ত্রিয়াং তৎকরণে অন্নহর্ষবাদেষু পশুপক্ষিশ্বকর্ত্যুস্তাগমাৎ আত্মনেপদং। হস্তীতি। স্বভাবাদেবক্ষিপতীত্যর্থাদনবগমঃ। ৪৮৫॥

गृष्ध्रकाणिका।

কিরতেরিতি। কৃবিক্ষেপেতুপ ধাতুনির্দেশেশতিপ্ শিস্ত্রাদন্ বিরণেদন্শাদ্যন্তর্গত তুদাদেরমণ্ডণ ইত্যুক্তাৎ ঋদন্তস্ত্রেগুণইতি ঋকারস্ত ইর্। অপস্কিরতে কুকুটইতি। জীবিকাং করোতীত্যর্থঃ। অপস্কিরতে ব্যভইতি। ব্যতোহর্ষাৎ শৃঙ্গেণ্দেতুমপস্কিরতে ভনক্তীত্যর্থঃ। অপস্কিরতেশ্বেতি। শাক্কুরোনিবাদার্থীদন্ অপস্কিরতে বাদং করোতীত্যর্থঃ। এমুকিমিতি। জীবিকাহর্ষকুলায় করণেয়ু কিমিত্যর্থঃ। অপকিরিতি ইতশ্চেতশ্চক্ষিপতীর্থঃ। অত্র নতত্তদর্থাবিমগমইতি ন স্কট্ আত্মনেপদঞ্চ। ৪৮৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রল। প্রলম্ভনং বিদয়াদউপালম্ভইতিযাবৎ তিমিন্নর্যে। বৰ্দ্ধলম্ভনেইন্ গৃধুঅভিকাজ্জায়ামিন্ বন্দিশ্চগর্দ্ধিশ্চেতিদ্বন্ধঃ ইনন্তরোরেবাত্মনেপদংস্থাৎ। বঞ্চয়তইতি। প্রলম্ভতেবিদম্বদতে প্রতারয়তীত্যর্থঃ। গর্দ্ধয়তেপ্রতারয়তি। শ্বানমিতি। গর্দ্ধয়তি আকাজ্জয়তীত্যর্থঃ। এবমাদিদিক্অবাদিউক্তাতামেবাহহেজুভয়ইতি। হেজুকত্র্কতভয়ে আত্মনে ইনন্তাৎস্মিঙআত্মনেপদং। জটিলোবিস্মাপয়তইতি। স্মিঙ্
ঈষদ্ধসনইতি আস্বরস্থান্তিইত্যাদিনাআততঃ পঃ বিস্মাপয়তিভীয়য়তিজটিলঃ হেতুকত্ভয়েআত্মনেপদং
আদিনাসন্মানসক্করণয়োল্লিয়ইনস্তাদাত্মনেপদং গুরুমুলাপয়তেপ্জয়তীত্যর্থঃ শ্রেনাবর্ত্তকান্ বিলাপয়তে
স্তক্রেতি। লাপয়তইতি। লীধাতোরিনিপুজাভিভবয়োস্তলাপ্। মিথ্যাযুক্তাৎপোনঃ পুন্তের্জঞঃ
মিথ্যাং কারয়তে। লিয়োবিস্থাদেবিপ্রলাপয়তেশিশুমিতিদিগর্থশ্চ। কথম্ইখং নৃপঃ প্র্কিমবালুলোচেত-

সনস্তাৎপূর্ববৎ। সনঃ পূর্বোযোধাতুশুস্মাদিবপর স্মৈপদাত্মনেপদোভয়-পদানিযথাযথং ভবস্তি। জিগমিষতি বৃভ্ষতিৰুরোচিষতে মাঙ্মিৎসতেচিকী-র্যতি চিকীর্যতে যিযক্ষতি যিযক্ষতে। ৪৮৮॥

তোহমুযজেগমনং স্থৃতস্তেতিভট্টিঃ উচ্যতেন্পেণেতিবিভক্তিবিপরীণামাৎ কর্মাণ্যাত্মনেপদমিতিজয়মঙ্গলঃ। গুরুভ্যঃ পুর্বেভ্যোনানাবাক্যং প্রশাস্মহেইতিভবভূতিঃ শাসঃ পরস্মৈপদিদ্বাৎ উচ্যতে আঙ্শাস্থ ইচ্ছায়া মিত্যস্তরূরপম্আঙ্যোগঃ প্রায়েণমন্ততে। স্বংরাজং প্রাপ্সতেভবানিত্যার্যসাদাত্মনেপদং। কথঞ্চনমানাত্মনিলোহনলেশ্চেতিপরস্মৈপদিনোপানেঃ বয়স্তাচ্ছীল্যেত্যাদিনানশ্। কথং সজ্জতইতি প্রসজ্জ গতাবিত্যস্থ পরস্মৈপদিদ্বাৎ উচ্যতে প্রসজ্জতইতি ভাষ্যকারবচনাৎ। কথং কদাচিৎ কুপ্যতেমাতা নোদরস্থাহরীতকীতিউচ্যতে কর্ত্ কিবন্তাত্মপমানাৎ কর্ত্ত্রিতিযিঙ্কুপ্যতে কুদ্ধাভবতিতদ্বমহরীতকীন কুদ্ধেত্যর্থঃ। রজসাশুদ্ধাতেনারীতি শুদ্ধশবাৎক্রান্তাৎ তংকরোতীতীন্কর্মাণিতঙ্ কথং সলিলমন্বেষ্যমাণং মুহুরিতিকাদম্বরী তথা পোষেতক্ষকনামানমিতিচানক্যে উচ্যতে এষ্পোয়বেষ্গতাবিত্যস্তরূপ-মিত্যক্তব্র। ৪৮৭॥

गृष्यकाणिका।

প্রলম্ভনইতি। প্রতারণেহর্থে ইনন্তয়ার্বেন্চিগর্জ্যেরাত্মনেপদংস্থাৎ। বঞ্চয়তেইত্যাদিবন্চচুআ
গৃধ্দিপ উভয়ত্রহৈতুকেন্ ধাতূনামনেকার্থয়াৎ প্রলম্ভনেতোবর্ত্তে যদাতদাতয়ারাত্মনেপদমেবেত্যর্থঃ।
অবাদীতি। বদ্ব্যক্তায়াং বাচিভুপ কর্ম্মণিস্তবিভক্তো স্তেম্খাদিচ্স্তম্খলোপশ্চেত্যাদিনাইচি ইকামস্মৈবো
পধায়াইত্যাদিনাউপধা অকারস্যবৃদ্ধোস্তলোপশ্চ। অন্তৎপ্রভাশিকায়ামনুসর্ভব্যং। ৪৮৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সন্। পৃর্ববিদিত্যস্তার্থং বির্ণোতিসনত্যাদি। যথাযথমিতিপরস্থৈপদিত্বে উভয়পদিত্বে আত্মনেপদিবেচধাতোরিত্যর্থঃ। জিগমিষতীতি। ধাতোঃ সন্দিত্বেগস্তজঃ অবর্ণ ইং ইড়াগমঃ ষত্বং। বৃভূষতীত্যাদি। ভবিভূমিচ্ছতীতিধাতোঃ সন্দিঃ চহুর্থস্তত্তীয়ঃ গুহুবর্ণেতীট্ নিষেধঃ গুণোনাস্তিনামিমতামিতিগুণাভাবঃ যত্ত্বমৃত্তীত্ত সন্ধুটিজস্তৃকঃ যত্ত্বাদি বাজ্যদিত্বাভূত্বাত সন্ধুটিজস্তৃকঃ যজাদিত্বাভূত্বপদং। ৪৮৮॥

गृष्प्रकाणिका।

সনস্তাদিতি। যথাযথমিতি। যথা যথা যথাযথং সাদৃশ্যযোগ্যতাবীন্দেত্যাদিনাব্যয়ীভাবং তৃতীয়াস্তমিদং। জিগমিষতীত্যাদি। গম৯গতোভুপ ভূসতায়াং ভূপ রুচ্দীপ্ত্যভিপ্রীত্যোঃ ভূবাদ্যস্তর্গত রুচাদিরায়নেপাদী। মাঙ্মানেঅ মাতুমিচ্ছতীতি সনিদ্বিষেইৎস্থাৎস্বরস্থমীমাদামিত্যনেনাভ্যাদে স্বরস্থ ইৎমিৎসতে। ডুকুঞ্করণে তউ কর্তুমিচ্ছতীতি সনিদ্বিষেত্যভাদেঋবর্ণস্থাকারঃ কবর্গস্থ চবর্গ ইতিচম্পকঃ একস্বর্য়াদনিট্ অনিট্দগুস্তদীর্ঘতেতিঋদীর্যঃ গুনোনান্তিনামিমতমিতি অগুণে ৠদন্তমেরগুণে ইতীর্মগতণেত্যাদিনারস্থাপধাদীর্যঃ গুনুবন্ধরাত্ত্যপদং। যজ্দেবপূজাসঙ্গতকরণদানেমুভুত। ৪৮৮॥

জ্ঞাশ্রুদৃশামাত্মনেপদং। সমস্তানাং। ধর্মং জিজ্ঞাসতেগুৰুং শুশ্রা ষতে বিস্মৃতং স্থুসূর্যতেনৃপং দিদৃক্ষতে। ৪৮১॥

অনোঃ সকর্মকাৎ জ্ঞোন। পুত্রমন্থজিজ্ঞাসতি। অকর্মকাত্ত্ সর্পিষোইনু-জিজ্ঞাসতে। ৪৯০॥

প্রত্যাত্তরাংশ্রেবঃ। আত্মনেপদং নস্যাৎ। প্রতিশুশ্রেষতি আশু-শ্রেষতি। ৪৯১॥

যজাদিঞকুবন্ধাভ্যামিনস্তাচ্চোভয়ং বিদ্রঃ। স্বান্বর্থপূর্বং। তত্ত্রকর্ত্র ভিপ্রা-য়েক্রিয়াফলেআত্মনেপদং পরাভিপ্রায়েক্রিয়াফলেপরস্মৈপদং স্যাং। কর্ত্তরিয়জতে যাজ্ঞিকোযক্তিঃ যজস্তিযাজকাঃ রেজেররাজ। উভয়সমাসাদয়মপ্যাকৃতিগণঃ। ঞলুবন্ধাং করোতি কুরুতে ইনস্তাং কার্য়তি কার্য়তে। ৪১২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জ্ঞাঞা। চতুর্ণামেযামাদ্যয়োরভয়পদিত্বে>প্যান্থানেপদার্থমিদং সূত্রং জ্ঞাতুমিচ্ছতীতিশ্রোতুমিচ্ছ-তীতিস্মর্ত্ত্ মিচ্ছতীত্যাদ্যর্থে সন্ অনিট্ সন্মন্তদীর্ঘতাউর্স্থাদোষ্ঠ্যাদিত্যুর্ অগুণেহলীতিদীর্ঘঃ গুণোনাস্তীতি গুণাভাবইত্যাদি যথোদিতং বোধ্যং। ৪৮৯॥

গৃতপুকাশিকা।

জ্ঞেতি। জ্ঞাঅববোধেক্র্যাউ শ্রুত্রাবণেক্র্যাপ স্মৃচিন্তায়াং ভুপ দৃশির্প্রেক্ষণেভুপ সমন্তানামেযামাত্র-নেপদং স্থাৎ। কেবলজ্ঞাধাতোরুভয়পদিস্থেহয়েযাং পরস্মৈপদিত্বে আত্মনেপদবিধানার্থমিদং সূত্রং। ৪৮৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনোঃ। অনুপূর্ব্বজ্ঞাধাতোঃ সকর্মকাৎ সমস্তত্ত্বেহপিনাত্মনেপদং পূর্ব্বসূত্ত্রেণপ্রাপ্তেতিষেধঃ। রসবত্যাস্ত অনুজ্জইত্যেকে ইত্যেবোক্তং সকর্মকাদিতিন:স্ত্যেব অনুজিজ্ঞাদতে ইত্যুদাহরণঞ্চনাস্তি। ৪৯০॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অনোরিতি। সর্পিষ্টতি। অবিবক্ষিতকর্মান্ত্রন সম্বন্ধেষ্ঠী। ৪৯০॥

গুতপ্ৰকাশিকা ।

প্রত্যেতি। প্রতিশ্চআঙ্চেতিদ্বন্ধঃ। প্রত্যাঙ্ভ্যামুপসর্গাভ্যামুত্তরাৎ পরস্মাৎ শ্রুবআত্মনেপদং নস্থাদিত্যর্থঃ। সনস্তত্বেন পূর্বাসূত্রেণপ্রাপ্তো অনেনপ্রতিষেধঃ। ৪৯১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যজা। যজ্যাদির্য্যন্ত যজ্যাদির্য্য ইত্যুভয়সমাসোবোধ্যঃ তেনরাজ্দীপ্ত্যাদের্যজ্পভূতেশ্চধাতোর্ত্র হণং ঞ্জসুবন্ধোযেষাং তেঞ্জুবন্ধাঃপশ্চাদ্দশ্বঃ ইনস্তাযেধাতবস্তেভ্যউভয়পদং বিছঃ। উভয়পদিধাত্বভিপ্রায়েণ

অপ্রাদেক্তর্য। উভয়পদমিত্যধিকারঃ। সন্দর্ভশুদ্ধিং গিরাৎজানীতে-জয়দেবএব। জানাতি। অপ্রাদেঃ কিং ধর্মং নপ্রজানাসিমূচ। ৪১৩॥

ব্যবস্থামাহস্বান্থর্থিত। স্বংপরশ্বৈপদাত্মনেপদরূপমূভয়ম্ অন্বর্থোহয়য়গম্যার্থঃ পৃর্বঃ প্রধানং যত্র উভয়পদেক্রিয়াবিশেষণয়। আয়নেপদমিত্যস্থায়য়ার্থমাহাত্রেতি। কর্ত্র ভিপ্রায়েইতি। কর্ত্তারমাভিপ্রৈতি অভিসংবয়াতি অচ্কর্ত্র ভিপ্রায়েকর্তৃগতেইত্যর্থঃ। পরেতি। পরাভিপ্রায়েপরগতইত্যর্থঃ। যজন্তইতি স্বার্থমেব যজন্তইত্যর্থঃ। যজন্তীতি। পরার্থমিত্যর্থঃ। এবং স্বতঃ করিয়্যোপরতঃ করিয়্যামি এবং তুল্তামহ্মিদং দদেপিত্রাদিপ্রাতিনিধ্যেন তুল্তামহন্দদামিপিতৃগতফলোদেশেকৃতগয়াঞ্রাদ্ধাদেশিতৃকরিয়্যইত্যেবং বাচাঃ তৎফলস্থ কর্ত্র ভিপ্রেত্রত্বাৎ স্বাভিপ্রায়পদস্যেচ্ছার্থয়াৎ। প্রতিপূর্বক্সজ্যোনিত্যাত্মনেপদিছেন স্ব্রেত্রভিজানইতিভবতি প্রতিজানামীতি ভ্রমাত্রতে। রেজেররাজেতি। ইহাপিয়ার্থপরার্থকল্পনে। আদিপদস্থ যথাক্রতার্থপরহেহ্সম্ভবাদাকৃতিগণপরস্বমাহউভয়েতি। ক্রক্রেয়ভাত্রভয়পদেদাদাহরণং করোলীত্যাদি। এবং দদাতিদভেদধাতিধত্তইতি। ইনস্তাত্রভয়পদমুদাহরতিকারয়তীত্যাদি। এবং ভাবয়তীতি ভূপ্রাপ্রায়নেপদেহণীতিতস্থাপীদং রূপং সনিতুর্ভূয়তেকর্ত্রিভবতে এবং বাপয়তি বাপয়তইত্যাদি। ৪৯২॥

গ্তপ্রকাশিক।।

যজানীতি। নবলং যজাদিগ্রহণেন সর্ব্যঞ্জকরণেনৈবসিদ্ধশ্বাদিতিনৈবং যজাদিগণকথনাপেক্ষয়াউভয়পদিনাং ঞকুবন্ধকরণেলোপ্যোহকুবন্ধইতি ঞকুবন্ধলোপকরণেগোরবাপত্তেঃ। তকুওহিঁযজাদেরিত্যেবাস্ত্রঞকুবন্ধানাং তন্মধ্যপাতিশ্বেনোভয়পদসন্তবাদিতিচেন্ধ যজাদেভু বাদিগণমধ্যপাতিশ্বেন কুগুদা
প্রভতন্তন্মধ্যপাতিশ্বাসন্তবাং। অত্রচকার উক্তসমুক্তরে। স্বান্বর্থপূর্ব্ধমিতি। স্বেনপরস্মৈপদাত্মনে
পদরপোভয়েন অন্বর্থোহন্বয়গম্যাহর্থঃ পরগতক্রিয়াকলায়াত্মগতক্রিয়াকলয়েত্যন্বয়গম্যার্থঃ পূর্বেঃ প্রধানং
যত্রোভরপদে তাদৃশমুভয়পদং বিজঃ। মন্বান্বর্থপূর্বেং মথাতথাবিত্বরিতি ক্রিয়াবিশেসণং। এতচ্চোভরপদিশ্রভূবিদয়ে। যত্রভূ পরস্মৈপদমাত্রমান্ধনেপদমাত্রঞ্চ তত্রানায়ত্যা আত্মাভিপ্রায়ে ক্রিয়াকলেচপরস্মৈপদং
পরাভিপ্রায়ে ক্রিয়াকলেচ আত্মনেপদং। ঞকুবন্ধইতি। ঞর্পাকুবন্ধগ্রহণং তেনঞিফলাভেদে ইত্যাদোনোভরপদং কিন্তুপরস্মৈপদ্যেব। শুত্রজইতি। রাজ্দীপ্রোলিট্যুভয়পদেরপং। ৪৯২॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

অপ্রা। অপ্রাদিযোগেঅথবাজ্ঞইত্যস্তবিশেষণং নাস্তিপ্রাদির্যাস্তেতি বহুব্রীহিঃ তম্মাজ্জানাতেরিত্যর্থঃ। বাচঃ পল্লবয়ত্যুমাপতিধরঃ সন্দর্ভশুদ্ধিং গিরাং জানীতেজয়দেবএবশরণঃ শ্লাঘ্যোত্নরহক্রতে।
শূঙ্গারোত্তরসংপ্রমেয়বচনৈরাচার্য্যগোবর্দ্ধনঃ স্পদ্ধীকোহিপি নবিশ্রুতঃ শ্রুতিধরোধোয়ীকবিঃ ক্যাপতিঃ।
ইতিগীতগোবিন্দে। গিরাং সন্দর্ভশুদ্ধি জয়দেবএবজানীতইত্যময়ঃ। ধর্মমিতি। নপ্রজানাসীতিপরস্মৈপদনৃপদর্গনোগাং। ৪৯৩॥

অএস্থেনমুদাং যমঃ। ব্রীহীন্ সংযক্ষতে ভারমুদ্ঘচ্ছতে আযক্ষতে বস্ত্রম্ আযক্ষতিবা। অএস্থেকিং বৈদ্যশ্চিকিৎসামুদ্ঘচ্ছতি এস্থং বিচারয়-তীত্যর্থঃ। ৪১৪॥

প্রাদেরস্যত্যুহতিভ্যাং। নিরস্যতি নিরস্যতে অভ্যূহতি অভ্যূহতে। ৪৯৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অপ্রাদেরিত। গীতগোবিন্দপদ্যস্থব্যথ্যাতু উমাপতিধরস্তদাথ্য কবিঃ বাচোবাক্যানিপল্লবয়তি বিস্তারয়তি জয়দেবএবগিরাং বাচাং দন্দর্ভশুদ্ধিং বিশুদ্ধগ্রন্থনং জানীতে নম্ব্যুএবকারেণাস্থব্যবচ্ছেদাৎ শরণস্তর্মামাকবিঃ তুর্রহস্তর্ম্ভর্মস্থ দন্দর্ভস্যক্রতেঃ দ্রবকরণাৎ স্থথেনবাধনাৎ শ্লাঘ্যঃ প্রশংসনীয়ঃ তুর্বোধমপিগ্রন্থং স্থথেনবোধয়তীতিলোকৈঃ শ্লাঘ্যতইতি ফলিতার্থঃ শৃঙ্গারোভরাণি শৃঙ্গাররসপ্রধানানি দন্তিউৎকৃন্টানি যানি প্রমেয়াণি নিবন্ধাস্তেষাং রচনেঃ কোপিকবিঃ আচার্য্যস্থমদগুরোর্গোবর্দ্ধনস্থ স্পর্নী-দদ্শোনবিশ্রুতানবিখ্যাতঃ আচার্য্যগোবর্দ্ধনএব তাদৃশং প্রবন্ধং রচ্য়িতুমীফেইতিভাবঃ। তথাক্ষাপতিঃ ভূপতিঃ ধোয়ী ধোয়ীনামাকবিঃ শ্রুতিধরঃ শ্রবণমাত্রেণ নতুঅভ্যাসযোগেন ধরতি গৃহ্লাতীতি অচ্ইতি। প্রজানাদীতি। কেবলস্থোভয়পদিস্থবিধানাৎ প্রাদিবিশেযযোগেহর্থবিশেষেচাত্মনেপদবিধানাৎ বিশেষাতিরিক্তপ্রাদিযোগেপরশৈপদ্মেবেতি ফলিতং। ৪৯৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অগ্র। গ্রন্থং শাস্ত্রং তদম্যন্মির্র্যে সমৃ উদ্ আঙ্ পূর্ব্ব যম্ধাতোরুভয়পদং স্থাৎ। সংযচ্ছতেইতি। গৃহ্লাতীত্যর্থং। উদযচ্ছতে উর্দ্ধং করোতি আযচ্ছতে বস্ত্রমায়তং করোতীত্যর্থে। গ্রন্থমিতি। চিকিৎসাগ্রন্থং বিচারয়তি। সংযচ্ছতি মন্ত্রান্ উদযচ্ছতি চিকিৎসাম্বৈদ্যইতিরস্বত্যাম্। সমুদাঙ্ভ্যো-যমোহগ্রন্থইতি তঙ্শাস্ত্রমুদ্যচ্ছতীতিভাষ্যং। ৪৯৪॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অগ্রন্থইতি। বাসংযচ্ছতি মুদ্যচ্ছতি। চিকিৎসাং চিকিৎসাগ্রন্থমিত্যর্থঃ। ৪৯৪॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

প্রাদে। উপদর্গাৎ অদ্ উহ আভ্যামুভয়পদং। সমূহতি সমূহতে উদস্যতি উদস্যতে। অনয়োঃ সকশ্মকত্বেচতৎ যথাসন্ততং তিমিরমিন্দুরুদাসইতি ভারবিঃ। ৪৯৪॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

প্রাদেরিতি। অত্মক্ষপণেদিপ অস্তৈবগ্রহণম্ অস্ততীতিকথনাৎ উহবিতর্কেভুআ ধাতুনির্দ্দেশে-শতিপ্। নিরস্ততি অপদারয়তীত্যর্থঃ। অভ্যহতি অতিশয়ং চেষ্টতইত্যর্থঃ। ৪৯৫॥ বদতেরপ্যপাৎপরাৎ। ন্যায়মপবদতে অপবদতিবা। ৪৯৬॥ স্যাৎ পরস্মৈপদং কর্ত্ত্য্যাত্মনেপদিশেষতঃ। কর্ত্তরীতি পূর্বত্ত পরত্রচ সম্বদ্ধতে। ভবতি গচ্ছতি শুর্ত্তি। ৪৯৭॥

ব্যাঙ্পরিভ্যোরমঃ। বিরমতি আরমতি পরিরমতি। ৪১৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বদ। অপাৎপরাদ্বদতেরপ্যুভয়পদং। অপবদতইতি। স্থায়মপন্যতীত্যর্থঃ। বাধতেবা। রসবত্যাস্ত্রযজ্ঞমপবদতেইতিদৃশ্যতে। ৪৯৬॥ .

गृष्धकाणिका।

'বদতেরিতি। বদ্ব্যক্তায়াং বাচিভুপ। অপিনাউভয়পদং সমুচ্চীয়তে। ন্যায়মিতি। ন্যায়ং যুক্তিমপবদতে অপনয়তি নিন্দতি বাধতে বেত্যর্থঃ। ৪৯৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইদানীং পরশ্যৈপদবিধিমাহস্যাৎ পরেতি। আত্মনেপদীতি। উভয়পদস্থলব্যাব্বতেরফলত্বাৎ। পূর্বব্রেতি। রুচাদেরস্থতকত্রধিকারেকতৃ গ্রহণাৎ তশ্নিবৃত্তিশঙ্কামুদস্যতি কর্ত্তরীতি। কর্ত্তরিবাচ্যে-আত্মনেপদিশেষাদ্ধাতোঃ কর্ত্তরিপরশৈরপদং স্থাৎ। অদ্অতি। ৪৮৮॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

স্থাদিতি। কর্ত্র্যান্মনেপদিশেষতইতি কথনাক্রচাদি যজাদি ভিন্নাদিতিলভ্যতে প্র্যান্মনেপদিশেষতইতি কথনাক্রচাদি যজাদি ভিন্নাদিতিলভ্যতে প্র্যান্মনেপদিশেষতে। পরিশেষাৎ পরভোভয়পদিছেপ্যান্মনেপদিয়ান্মাছ। কর্ত্ত্যান্মনেপদিশেষতোধাতোঃ কর্ত্তরিবাচ্যেপর-স্থৈপদং স্থাদিত্যম্মঃ। ইদমধিকারসূত্রং। নম্বেতৎসূত্রেণালং পূর্বোক্তশেষাদ্ধাতোঃ পরিশোষাৎ পরশোপদপ্রাপ্তেরিতিচেৎ উচ্যতে এতৎসূত্রাভাবেপরশৈপদবিধানাভাবাদান্মনেপদব্যার্ভিম্থলেউভয়পদস্থ উভয়পদব্যার্ভিম্থলেআান্মনেপদস্থাপত্তিঃ স্থাৎ কিঞ্চশেষধাতৃনাং কর্ম্মাদিয়ুপরশ্রেপদাপতিঃ অপিচ ব্যাঙ্পরিভ্যোরমইত্যাদে কাগভিঃ যদিচ ব্যাঙ্পরিভ্যোরমঃ কর্ত্তরিপরশ্রেপদমিতি সূত্রং ক্রিয়তে পরত্রাপিকর্তরিপরশ্রেপদমিত্যমুবর্ত্তনং তদাতদভিরিক্তানাং কর্মাদিয়ুবাচ্যেমুপরশ্রেপদাপতিরিতি। এতেন স্থাৎ পরশ্রেশিক্যান্মনেপদিশেষতইত্যন্তঃ সূত্রমিতিদৃষণং নিরস্তং পূর্ব্বোক্তদোষভূতীয়াং স্থাৎ পরশ্রেপদং কর্ত্ররীতিমাত্রউক্তেইপি রমাদিব্যতিরিক্তানাং কর্মাদিয়ুপরশ্রেপদাপতের্দ্ধুক্তরাহ। নমস্ত্রস্থাৎ পরশ্রেপদমাল্মনেপদিশেষতইতি সূত্রং কর্ত্ররীতি কথং পূর্বন্মাদমুবর্ত্তনলাভাৎ সত্যং তথাসতি আত্মনেপদিশেষধাতোরসমন্তবাৎ কর্মণাল্মনেপদিশেষধাতোরর্থাদকর্ম্বনলাভাৎ কর্ত্ত্রিপর্বাম্পদং সকর্ম্মকাত্র্ক্র্মকত্রের্বিচ্যয়োঃ পরশ্রৈপদং স্থাদিতি বক্তুং শক্যতে ইত্যালোচ্যাহকর্ত্ররীতি। তথাচ পরত্রায়্রার্থং কর্ত্তরীতি। গৃহীতমিতিভাবঃ। ৪৮৮॥

প্ৰভাপকাশিকা।

ব্যাঙ্। বি আঙ পরি এভে গারম্ধাতোঃ পরি অপদং স্থাৎ। বিরামোহনাচরণং। ৪৮৯।

বোপাং। উপরমতি উপরমতে। ৪১১॥

প্রত্যভ্যতিপরাৎক্ষিপঃ। প্রতিক্ষিপতি অভিক্ষিপতি অতিক্ষিপতি। এভ্যঃ কিম্ আক্ষিপতি আক্ষিপতে। ৫০০॥

পরেমু যিঃ। পরিমুষ্যতি। অন্যশ্বাৎ আমুষ্যতে। ৫০১॥ প্রাদ্বহতে। প্রবহতি। অন্যশ্বাদাবহতে। ৫০২॥

গুঢপ্রকাশিকা।

ব্যাঙিতি। রমুক্রীডায়াং রুচাদিঃ। আরমতি আসক্তিং করোতি পরিরমতি সর্ব্বতোভাবেন-ক্রীড়তি। ৪৯৮॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা

বোপা। উপাদ্রমঃ পরস্মৈস্থাৎ। ৪৯৯॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

বোপাদিতি। উপাৎ পরস্মাদ্রমোবাপস্থৈপদং স্থাদিত্যন্বয়ঃ। উপরমতি খ্রিয়তেইত্যর্থঃ। ৪৯৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রত্য। প্রতি অভি অভিপরাৎ ক্ষিপ্ প্রেরণেইত্যস্মাৎ পরস্মৈ। অতিক্ষিপতিএভ্যোহ্যস্মা-দয়জাদিয়াতুভয়পদমেব। ৫০০॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

প্রত্যেতি। ক্ষিপ্ তুদাদার্গত্যযাদিঃ অতোহত্তনবাসুরতির্মিক্ষলস্বাৎ। তুদাদেরমগুণইতি ন শুণঃ। ৫০০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পরে। মৃষ্ তিতিক্ষায়ামিত্যস্থাৎ পরিস্মে । অন্স্যাদিতি। পরেরন্সস্থাদিত্যর্থঃ।৫০১ ॥

গুঢপ্ৰকাশিকা ৷

পরেরিতি। স্বৃদিউ। পরিস্ব্যতি অদ্যতীত্যর্থঃ। আম্ব্যতে ক্ষাম্যতি।৫০১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রাদ্ব। পরস্মৈপদং স্থাদিত্যর্থঃ। অন্যত্মাৎ আবহতিচ যজাদিত্বাৎ।৫০২

গুঢপ্রকাশিকা।

প্রাদিতি। বহুপ্রাপণেযজাদিঃ। আবহতে উৎপাদয়তীত্যর্থঃ। ৫০২॥

পরানুভ্যাং রুঞ্জ্ঞথা। পরাকরোতি অনুকরোতি। ৫০০॥

বৃধযুধনশজনিঙঃ প্রদেশ জ্বান্দনার্থকম্পার্থাৎ। চেতনকর্ত্রকর্মকর্মাকধাতো-শেচনস্ততঃ পরস্মৈস্যাৎ। বোধয়তি যোধয়তি নাশয়তি জনয়তি। যুধাদয়স্ত্রয়-শেচতনাচেনকর্ত্ কাঃ। অধ্যাপয়তি প্রাবয়তি দাবয়তি প্রাবয়তি অদর্জনা-দ্যোজনার্থাৎ ভোজয়তি আশয়তি ভক্ষয়তি অদস্ত আদয়তি আদয়তে কম্পার্থাৎ চলয়তি বেপয়তি কম্পয়তি অকর্মাকাং আশয়তি শায়য়তি স্থাপয়তি। চেতনকর্ত্রাং কিং শোষয়তে মহীমাতপঃ ভিক্ষাবাসয়তে। *। ইতিপ্রয়োগরত্বমালায়ামাখ্যাতে আত্মনেপদাদিপ্রকরণং যঠোবিন্যাসঃ। *। ৫০৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পর।। তথাপরস্মৈপদমেব অত্যসাত্তয়পদমেব। ৫০৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

পরেতি। পরাস্থভ্যামুপদর্গভ্যাং কৃঞঃ তথাপরস্থৈপদং স্থাৎ। অন্যোপদর্গাৎ পরস্থ কেবলস্থ চোভয়পদং ঞ্রুবন্ধহাৎ। তথেতি পরস্থৈপদপরামর্শকং নদূত্রং ছন্দোহনুরোধাদেকত্রলিখিতং। ৫০৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বুধ। বুধ্দিবাদিঃ যুধ্দাহচর্যাৎ যুধ্দপ্রেহারে নশ্ জন্ ইঙ্ ছুক্ত প্রুপ্নু গতে ক্রি নলদ্ অনন্ দচাদৌ অদনার্থ-চৈতি অদ্ভিন্নভক্ষণার্থ কম্পানার্থনাতোঃ চেতনকর্ত্তায়ত্ত তাদৃশাদকক্ষ্মকধাতোশ্চ ইনন্তাত্ত্যপদ্প্রকালবিপরবৈপ্রকাল। ভক্ষরতাতি। ভক্ ভক্ষণে নর্মিরুপধাপিধিয়াৎ। চলয়তাতি। চলিঃ কম্পেটুবেপুকম্পনে কপিচলনে। অক্ষ্মকাৎ চেতনকর্ত্ কাৎ আশায়তি স্থাপয়তি। সর্বাহ্মাকৈতুকইন্। শোষয়তইতি। আতপস্থাচেতনত্ম কর্ত্করাৎ শুন্শোনেইত্যস্থাপ্যভয়পদং। এবমকক্ষমকত্ম বসতেরচেতন ভিক্ষাকর্ত্তিরাজ্ভয়পদং। এবং গোতপাঙ্গংইরশশিরুচাপ্যায়য়েত্ত্বং মযুরং পশ্চাদদ্বিগ্রহণ গুরুভিগজিতিত্বরিয়াইতিমেনে। অত্রাপিমেবস্থাচেতনত্ম কর্ত্বং। ২। ইতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং রত্ত্রমালাটীকায়ান্যাগ্যতেষ্ঠিবিত্যাস্বিবরণম্। ২। ২ ৫০৪॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

বংগতি। বুধ্ অবগমেদিপ যুধ্দিপ নশ্ অদর্শনেদিপ জনী প্রান্থভাবেদিআ ইঙ্ অধ্যয়নে অ আ প্রুছ আ দি দুপ আদ্ ভক্ষণেঅপ অদ্তিমাদনার্থঃ কম্পার্থঃ চেতনকত্র কর্মাকধাতু চ ইন্ অস্তোয-ক্ষেত্রি এছঃ। বুগাদের ছেন্দোহর্থ উক্তঃ। বুধ যুধ ন শ জনিঙঃ প্রুছ ক্রুছ অনদনার্থঃ কম্পার্থাৎ চেতনকর্ত্র রকর্মাকধাতো চ্চ পরস্থৈপর স্থৈপদং স্থাৎ কীদৃশাদিনস্তুতই তিবাক্যযোজনা। ইনস্তুতই তিসর্বোধাং

বিশেষণং চেতনকর্ত্ত্রিতি জনিপ্রভৃতিসর্কোণ বিশেষণং যুধাদয়স্তর্যুশ্চতনাচেতনকর্ত্ কাইতিবক্ষ্যমাণস্থাং। ততুক্তিশ্চ প্রোগানুসারিস্থাং। অতএবজন্ধাতোর চেতনকর্ত্ কম্বেআল্লনেপদক্ষ লোভোজনয়তেত্থামিতি হিতোপদেশে। ভোজয়তীত্যাদি। ভূজ্পালনাভ্যবহারয়োঃ রুপ অণ্ ভোজনেক্র্যাপ ভক্ষ্ ভূউচুপ চল্ কম্পনেভূপ বেপ্ ভূআ কপিভূআ ইদমুবন্ধস্থায়ুম্ অস্ ভূবিবিদ্যমানে অপ ঠাগতিনিরতৌভূপ্ ধার্বাদেঃ মস্তদঃ ইনিআদন্তাৎপঃ। শুষ্ দিপ। প্রকাশোদ্যোত আতপইত্যমরঃ। বস্নিবাসেভূপ পরস্থৈস্থাদিতিনসূত্রংছন্দোহনুরোধাদেকত্রলিথিতং। পরস্থৈস্থাদিত্যন্তম্বদ্গীতিচ্ছন্দঃ। ৯। ৯ ইতিশ্রীদিদ্যনাথবিদ্যাবাগীশনিশ্মিতায়াং গুল্পকাশিকায়াং, প্রয়োগরত্বমামাটীকায়ামাথ্যাতে আল্লনেপদাদিপ্রকরণমন্তবিন্তাসবিবরণং। ৯। ৯। ৫০৪॥

ধাতোঃ সন্ বাকর্থিচ্ছত্যাদ্যথেশঙ্কনে ইপিচ। ইচ্ছায়াং শঙ্কায়াঞ্গম্য-মানায়াং ধাতোঃ পরঃ সন্বাস্যাং। সনিদ্বির্চনাদি। ৫০৫॥

সন্যবর্ণ ইরভ্যাসে। পঠিভুমিচ্ছতি পিপঠিষতি। নদ্যাঃ কুলং পতিভুমা-শঙ্কতেপিপতিষতি। ৫০৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ধাতোঃ। সর্বমাদ্ধাতোঃ পরঃ সন্প্রত্যোভবতি কর্ত্বিচ্ছেত্যাদ্যর্থে। প্রত্যাসন্তিন্যায়াৎ কৃঞ্প্রভূতেরেবসন্ ততুক্তং কাতন্ত্রেধাতোর্বাত্মন্তাদিছতি ন কর্তৃকাৎ সন্বিশোষোলক্ষ্যতে। আদিনাগল্পঃ ভোকুং স্থাত্মিছাইত্যাদ্যর্থেইপিতভদ্ধাতোরেবসন্ অভিন্নকর্তৃকইত্যাদিনাএককর্তৃ কাদ্ধাতাঃ তাস্ত্রম্ভবতি তুমকৃত্বাতিমিন্নর্থে। বজ্পরোইপি মতান্তরেধাতুমাত্রাৎ সন্বিধীয়তে সূত্রঞ্ধাতোঃ কর্মাণঃ সমানকর্তৃকাদিছায়াং বাতত্রশ্রুত্ত্বাদিছটেরবসমানকর্তৃকত্বমিত্যাহ। অত্রতুম্ বিষয়াদ্ধাতোঃ সন্নিতিকেচিৎ। তুর্গশ্চসনিচানটীতি জ্ঞাপকান্ত্র্ম্বিয়য়াৎসন্ইত্যাহ। যদিসাক্ষাভ্রমন্তাং সন্প্রত্য়য়ভাত্তাভূমিধাতোঃ প্রাণেবগুণোর্ভইতিকথং গুণপ্রতিষেধার্থং গুণোনান্তিনামিমতামিতি সূত্রং ঘটতইতি ত্রিলোচনঃ। সনাইছার্থস্থাদ্যাতি তত্বাদিছতেরপ্রয়োগঃ। পরাচার্য্যযেত্তুমন্তাদেবসন্সনোক্তার্থত্বাভ্রেরপ্রয়োগইতি বোধাং। শঙ্কনেশঙ্কায়াং। দ্বির্বচনাদিএবমভ্যাসেত্রস্বাদীতি। ৫০৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যংকৃপালেশতোহশেষদৈন্যশেষোভবত্যহো। স্থাঞীঃ শাশ্রীঃ শ্রিয়ং মহুং দদাতুশেষশপ্রিয়া। ধাতোরিতি। ধাতোরিতি ধাতুহোপাধিমাদায়ৈকবচনং কৃতং তেন সর্বস্মাদ্ধাতোরিত্যর্থঃ। বিবিচনাদীতি। আদিনাঅভ্যাদেহ্রস্বইত্যাদেগ্রহণং।৫০৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সন্ত । দন্প্রত্যরেমভ্যাদেহ্বর্ণ ইঃ স্থাৎ বর্ণগ্রহণাদ্দীর্ঘস্তাপিভবতি পিপাসতীতি । নম্বভ্যাসহ্রম্বরে সিদ্ধেরবর্ণগ্রহণং ব্যর্থং সভ্যং নির্দ্দেশ্যেথপ্রতিপত্যর্থং বর্ণগ্রহণং । পিপঠিষতীতি । পঠ্ধাতোঃ
সনিদ্ধির্দ্দেন্ত্রবর্ণগ্রেই ভাগমঃ ষত্রঞ্জ সনাদ্যস্তাশ্চেতি ভুবাদ্যন্তর্গতধাতুত্বেঅন্বিকরণেলোপআদস্যেত্যস্থালোপঃ । পিপতি বতীতি । আসন্নায়ামেবক্লপাতাদি ক্রিয়ায়ামনেনসন্বিধীয়তইতি প্রত্যেতব্যং ।
পত্থাতোঃ সনিপক্ষেবেট্দরিদ্রাইত্যাদিনাবেট্য়াদিট্ । ৫০৬॥

গুঢপ্রকাশিকা।

সন্মতি। নম্বভ্যাসহ্রস্থেঅস্থিতো সন্মইরভ্যাসেইত্যনেবসিদ্ধেরবর্ণগ্রহণং ব্যর্থমিতিচেৎ সত্যং পিপাসভীত্যাদো হ্রস্কেরতহ্রস্করণসামর্থ্যামইরিতি মন্দবৃদ্ধিশঙ্কাবারণার্থং স্থবোধার্থঞ্চবর্ণশন্ত্যহণং কৃতং কিঞ্ছন্দোর্থং সন্মকারইরভ্যাসেইতি করণস্থাবশ্যকতয়াকারস্থলেবর্ণগ্রহণেছন্দোভঙ্গদোষনির্তিঃ। পিপাসভীত্যাদো হ্রস্করণপ্রয়াসনির্তিশ্চ। তথাচ পিপাসভীত্যাদোনহ্রস্কইরেবেতিভাবঃ। ৫০৬॥

অনিট্দন্যম্ভদীর্ঘতা। ৫০৭॥

গুণোনান্তিনামিমতাং। অনিট্সনিপরে। ইর্দীর্ঘঃ কর্ত্ত্মিচ্ছতি চিকীর্ষতি উর্বুভূর্ষতি শুশ্রেষতে বিভিৎষতি দিদৃক্ষতে। অনিডিতি কিং শিশায়িষতে মুমোদিষতে। নামিমতাং কিং বিব্যংসতি। ইত্নপান্তাবকারান্তেত্যাদিনাসেট্ সমগুণোবা ৰুক্চিষতে লিলিথিযতি মুমুদিষতে। ৫০৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনি। নাস্তিইডাগমোযশ্বাদিতি বহুত্রীহিঃ। অনিট্ধাতোর্বিহিতেসনি। যদানাস্তিইট যশ্বিন্
তশ্বিন্ধাত্বস্তমদীর্ঘতাভবতি। ৫০৭॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

অনিডিতি। অনিট্ সনিপরেধাত্বন্ত দীর্ঘতাস্থাদিত্যর্থঃ। অন্ত গ্রহণমবর্ণনিরাসার্থং। ৫০৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গুণো। নামিমতাং ধাতৃনামনিট্ দনিগুণোনভবতি। ইর্ণার্যইতি। অন্তদীর্যবেশ্বদন্তভেতি ইর্
দীর্যঃ। চিকীর্যতীতি দাধিতং রাৎদইতিদূত্রে। ছুর্গমতে দাধ্যাতুমন্তাৎসন্ দনাদ্যোতিত ইচ্ছতেরর্থইতুক্তোর্থ্বাদিচ্ছতেরপ্রয়োগঃ তদপ্রয়োগেতিয়িমিভ্রুমন্তমিপ নিবর্ততেতিয়ির্হতেগুণস্থাপি তমিমিভস্থ
নির্ত্তির্নাতুষরপদ্বিতৌ দাধ্যমন্তং। বুভূর্বতীতি। ভর্তুমিচ্ছতীতি সন্ একস্বরম্বাদনিট্ গুণনিষেধে
উর্ স্থাদোষ্ঠাদিত্যাদিনাখাত উর্ ততোদ্বির্বচনাদি এবং মুমূর্যতে ইতিসন্ উরাদি দনন্তাং পূর্ববিদত্যাত্মনেপদর্ আদ্রায়ামের মরণাদি ক্রিয়ায়ামনেন দন্ বিণীয়তইতিক্রেয়ঃ। শুলামতইতি। ক্রেমাতোঃ
সনিদ্বিত্ব অনাদিহল লুক্ অন্তদীর্যরং জ্ঞাক্রাম্বাদনেশার্মনেপদং। বিভিৎসতীতি। সন্দিঃ চতুর্যস্থ তৃতীয়ঃ অনিভূদিইত্যাদিনাহনিট্ গুণনিষেধঃ। দিদৃক্ষতইতি। দুশঃ সন্ অভ্যাসে পাবর্ণস্থাকারঃ সন্তবর্ণইরভ্যাসে ক্রুশিরিশীত্যাদিনা অনিট্ ধুটান্তেইত্যাদিনাশঃ বহং পূর্ণবিদন্তং। শিশায়্যতইতি। শীঙঃ সন্
দ্বিরভ্যাসের্স্যঃ ইটিগুণঃ নাত্রগুণনিষেধঃ সনস্তাৎ পূর্ণবিদিতি আল্পনেপদং। বিব্যংসতীতি। ব্যধ্ সনিদ্বিঃ
তত্রানাদিইত্যাদিনাহভ্যাসেয়লুক্ অবর্ণ ইঃ লিঙ্গরদিতি পক্ত তত্বং গুণনিষেধসম্প্রসারণং স্থাং। ক্রচ্লিথমুদাং সেট্সনিবাঞ্গাভাবঃ ক্রচ্মুদোঃ প্রাধানাল্যনেপদং। ৫০৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গুণোনাস্তীতি। চিকীর্ঘতীতি। ছুকুঞ্করণে সনিএকস্বরত্বেনানিট্ অন্তদীর্ঘকে ৠদন্তস্ত্রেরগুণে অন্তণে হলীতিরোপান্ডোদীর্ঘঃ। বৃভূর্যতীত্যাদি। ছুভূঞ্ধারণপোষণয়োঃ আ্রুন্ব ভিদির্ বিদারণে দৃশির্প্রেক্ষণে শীঙ্ স্বপ্নে মুদির্হর্যেরুউ ব্যধ্তাড়নে দিপ। ইদূপান্তেতি। ইদূপান্তাবকারান্তহলাদেঃ সন্চ পাক্ষিক ইত্যনেন সেট্ সন্নগুণোবেত্যর্থঃ। রুচ্ দীপ্ত্যভিপ্রীত্যোঃ লিথ্ অক্ষরবিন্যাসে ভূপ। ৫০৮॥

1

অপিৰুদ্বিদ্যুষাম্। সনিগুণোনাস্তি। ৰুৰুদিষতি বিবিদিষতি মুমুদি-যতি। ৫০৯॥

বউঃ। স্যাৎ। অনিট্ সনিপরে। ইবস্তাবেটঃ যত্বাৎ প্রাক্দিত্বে দিদ্যুষতি যত্বেসতি দিত্বেত্বদূয়েতি স্বয়ুয়তি। ৫১০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অপি। রুদ্ বিদ্জানার্থঃ অদাদিরুদ্দাহচর্যাৎমুব্স্তেয়েরাদিত্বং বেদিত্বং মোরিতুমিচ্ছতীতি সন্। ধাতোঃ কিং প্রচিকার্যতে ধাতু গ্রহণং দোপদর্গবাদার্যথ্য যদিপুনঃ দোপদর্গমুদায়াৎ দন্ স্থাৎ তদাদনাদ্যন্তাশ্চেতি ধাতু সংজ্ঞাভবেৎ ততোধাতোরাদির ডাগমোভবন্ প্রশন্ধাৎপূর্ব্বমেব প্রাপ্রোতি। নমুধাতোস্তম্প্রতায়োবিধীয়তে নতু দোপদর্গদমুদায়াৎ অতোধাতোরুপদর্গরিহিত স্থাত্ ভবিত তুম্বিয়য়চ্চ দন্ ভবতিকথং দোপদর্গ সমুদায়াদ্রবিতুমইতীতি চেৎপত্যং তহিস্থার্থনেবধা হুগ্রহণম্ অন্যথাপ্রকর্ত্ব বিচ্ছার্থেদনোবিধানে দোপদর্গন্তথাতু স্বং মনদাঃ প্রতিপদ্যেরিয়তি। বজ্রধরস্ত প্রাচিকীর্ষদিতি প্রকর্ত্ব মিত্যত্র প্রকর্ত্ব শব্দাৎদনবিহিতঃ তেন যক্ষাৎ দন্ তক্ষাদেবেতি বচনেন প্রশন্ধং বিহায়ক্ষধাতুনাদহিত স্বামান্ত্রিত কাশিকায়াঞ্চ প্রকর্ত্ব মৈচছৎ প্রাচিকীর্ষদিত্যাহ। ধাতু সংজ্ঞান্মান্তির যদাদার্ব্বধাতুকং তন্মাদিভিতি বক্ষ্যতি অতোবদিধাতু গ্রহণমিহনস্থাভতোজ্গুপত ইত্যাদে ইডাগমোনভবতি তথাশিপ্রামিতী ত্যাদেচি নস্থাৎ অস্থাপি তুমন্ত্রমান্তিত্যভবতোগাতুদংজ্ঞান্তিত সাধুরেব পদ্যঃ। ৫০৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অপীতি। রুদির্ অশ্রুবিমোচনে অপ বিদ্ঞানে অপ মুষ্ জ্যাপ অপিনা সনিগুণোনাস্তীতি সমুচ্চীয়তে। রুরুদিযতীত্যাদি। সনি চঙ্ সন্ যঙ্ পরোক্ষাস্বিত্যাদিনা দিছে ইটিসনঃ সম্ভয়ত্বং সনস্তাৎ পূর্ববিদিতি পরস্থৈপদং। ৫০৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বউঃ। ধাতোকা উঃ স্থাৎ। ইরস্তাইতি। বেটোদরিদ্রোণুভরেত্যাদিনাইত্যর্থঃ। যত্বাৎ প্রাগিতি। দিঘিঃ ৰত্নেদতি দূদিঃ উকরণাৎ প্রাক্যত্নমিত্যর্থঃ। অনাদিহল্লোপঃ এবং স্ন্যুমতি।৫১০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বউরিতি। যথেসতীতি। ইবর্ণোযমিত্যনেনেত্যর্থঃ। ছুদ্যুষতীতি। অয়মেবপ্রয়োগোবহুদশ্যতঃ দিদ্যেতীতি অল্পদশ্যতঃ এতপ্পক্তং নাম্যাদেশানরাখোমিতিসূত্রব্যাখ্যায়াং। স্থযুষতীতি। বিবৃতস্তসস্তানে দিপ দেবিতু মিচ্ছতীতি সনি ইবস্তত্বেন বেট্রাদনিট্পক্ষে বউঃ সন্ধিজোয়ঃ স্থান্বিত্বেনাদি হল্যলোপে পরবর্তিসকারদ্বয়স্থ যত্বং। যদ্যপি দিদ্যুষতিবং সিম্যুষতীতি সম্ভবতি তথাপি তস্থাবহুসন্মতত্বাদ্ত্র নলিথিতং। ৫১০॥

অবোধনার্থস্যোগম্। সনিজিগমিষতি ইক্ অধিজিগমিষতি। বোধনেতু প্রতীষিষতি। ৫১১॥

দীঙোদাস্যাৎ। দিদাসতে।৫১২॥ অদস্তব্যৎ। জিঘৎসতি।৫১৩॥ হনোঘান্স্যাৎ। জিঘাৎসতি।৫১৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অবো। অবোধনমর্থোযস্ততাদৃশইণোগমাদেশঃ সনিপরইত্যর্থঃ। জিগমিষতীতি। সন্গমঃ সেনাত্মনেপদইতি ইট্। প্রতীষিষতীতি। প্রতিপূর্বইণ্ বোধনার্থঃ প্রত্যেতুমিচ্ছতীতি সন্ সনোধাতুত্বাৎ স্বরাদীনাং দ্বিতীয়মিত্যাদিনাদ্বিতীয়াক্ষরস্থসনোদিঃ অভ্যাসেঅবর্ণ ইঃ দীর্ঘঃ সন্ধিঃ যত্বং অধিজিগমিষতীতি। ইণঃ সধর্মত্বাদিকোগমাদেশঃ। ৫১১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অবোধনেতি। ইণ্গতোঅপ। ইগিতি। ইণ্বদিগিতি ইকইণঃ সমানস্বাভ্য্তাপিগমাদেশইত্যর্থঃ। ইকু স্মারণেঅপ অধিপূর্বিঃ প্রযোক্তব্যঃ। ৫১১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দীঙো। দীঙোদাদেশঃ সনিপরে। দীঙোদাবাউপদিদাসতেইতিসারঃ। উপদিদীয়তইতিভাষ্যে। উপদিদাসতইতি মৈত্রেয়ঃ। ৫১২॥

भूष अकारिका ।

দীঙইতি। দীঙ্ক্ষয়েদি। দীঙোদাবাউপদিদাসতে উপদিদীয়তেইতিসারঃ। দিদীয়তইতি ভাষ্যমতং তন্মতেএতরসূত্রং। উপদিদাসতইতিমৈত্রেয়ঃ এতন্মতেনিত্যমাদেশঃ অস্তবহুসম্মতত্বাদম্মাভি-রপিতদাশ্রিতমিতি। ৫১২॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

অদ। অদ্ধাতোর্যৎ স্থাৎ সনিঘদ্ধিঃ চতুর্থস্থত্তীয়কঃ কবর্গস্যচবর্গঃ সন্মবর্ণ ইরভ্যাসেতদাদেশ-স্থায়েননেট্। ৫১৩॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

অদস্ত্তি। অদ্ ভক্ষণে। তুগ্রহণং পূর্ব্বোক্তান্তেদবোধনায়তেনাত্রসর্ব্বমতের্যুনিত্যং ঘদাদেশঃ। জিঘৎসতীতি। পলাশকুস্থমভ্রান্ত্যাশুকতুণ্ডেমধুব্রতঃ। অপতৎসম্মুখেসোহপিজমূভ্রান্ত্যাজিঘৎসতীতি ভ্রমরাফকে। ৫১৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হনো। হন্তের্যান্ স্থাৎ সনিপরে। ঘাদিঃ ব্রস্থঃ অভ্যাসেহবর্ণ ইঃ চতুর্থস্থত্তীয়কঃ কবর্গস্থ চবর্গঃ। ৫১৪॥ ইডোগাম্ স্যাৎ। যথৈষো>ধি জিঘাংসতে। ৫১৫॥ প্রছেরিট্ স্যাৎ। ৫১৬॥

গ্রহিপ্রছিম্বপাংস্যাৎ সম্প্রসারণং। জিয়ক্ষতি পিপৃচ্ছিমতি সুমুপ্সতি।৫১৭॥ গুহুবর্ণগ্রহিভ্যোনেট্। সনি। জুমুক্ষতি বুভূমতি। চুক্ষ্মতি ৰুক্মতি সুন্মতি। ৫১৮॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

হনইতি। হন্ হিংসাগত্যোঃ ভুপ। ৪১৪॥

প্রভাপকাশিকা।

ইঙো। ইঙ্ধাতোর্গাম্ স্থাৎ সনি। ঙিত্তাদাত্মনেপদং। অধিজিগমিষিতা অধিজিগাং দিতাইতিসারঃ। ৫১৫॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

ইঙইতি। ইঙ্অধ্যয়নে। গাম্ইত্যাদেশঃ স্থাৎ সনিপরেইত্যর্থঃ। হনোঘান্ স্থাদিঙোগাম্স্থা-দ্যথিয়োহধিজিগাং সতেইত্যেবং ছন্দঃ। ৫১৫॥

প্রভাপকাশিকা।

প্রছে। একঃ প্রচ্ছিরিত্যনিট্ত্বাৎ সেট্বিধানং। ৫১৬।

গ্তপ্রকাশিকা।

প্রছেরিতি। প্রছ্জ্ঞীপায়াং ভূপ। সনিপ্রছেরিট্স্থাদিতার্থঃ। ৫১৬।

প্রভাপ্রকাশিকা।

গ্রহি। সন্প্রত্য়ক্ত গুণিকাল্য হিজ্যেত্যাদিনাসম্প্রদারণাভাবাৎ গ্রহিপ্রছোঃ কিন্তাভাবাদ্বিম্ববিত্যাদিনাসম্প্রদারণাপ্রাপ্তে স্বপশ্চসম্প্রদারণবিধানং। জিন্তৃক্ষতীতি। গ্রহীতুমিচ্ছতীত্যর্থেসন্প্রত্য়ঃ
নাম্যাদেশক্বাৎ সম্প্রদারণেরিভাবেঝবর্ণস্থাকারইত্যাদি কার্যাং হোটঃ সম্বকারয়োস্থতীয়াদ্যাশ্চতুর্থান্তাস্ত্রর্যাদ্যাইতি গস্তাহ গুহুবর্ণত্যাদিনা ইট্নিষেধঃ গুণোনাস্ত্রীত্যাদিনাগুণনিষেধঃ ঘঢ়োকঃ সইত্যাদি।
পিপ্চছিবতীতি। প্রচ্ প্রকুমিচ্ছাতীতি সন্ সম্প্রদারণম্ ইট্ যক্বং। স্বযুপ্রতীতি স্বপ্রুমিচ্ছতীতি সন্
আপি বণীতিনেট্। ৫১৭॥

পূতপ্রকাশিকা।

গ্রহীতি। গ্রহ্টপাদানে জ্যাউ প্রছ্ জ্ঞীপায়াং ভূপ ঞিষপ্শয়ে অপ। সনিপরেএয়াং সম্প্রসারণং স্থাদিত্যর্থঃ। স্তযুপ্রতীতি। দিয়েনামিকরেভাইত্যাদিনা পরস্থানেযত্মম্। ৫১৭॥

প্রভাপকাশিকা।

গুহু। গুহ্ উবর্ণান্ত গ্রহ্ এভ্যোনেট্ সনিপরে। জুবুক্ষতীতি। গোহিতু মিচ্ছতীমি সন্ উদিত্বা-দেট্ তেন পাক্ষিকেট্নিশেং গ্রহবৎসাধ্যং। বভূষতীতি। উদ্দন্তাইতীট্ প্রাপ্তোনিষেধঃ পূর্ববিদ্গুণা- ৠ কৃ গৃ দৃ ধ্ব পৃঙন্জৃস্মিঙ্ঙশৃভ্যঃ সনীড্ভবেং। অরিরিষতি চিকরিষতি জিগরিষতি দীর্ঘোবা চিকরীষতি দিদরিষতে দিধরীষতে পিপরিষতে অঞ্জি জিষতি দিস্ময়িষতে অশিশিষতে। ৫১৯॥

ভাব:। চুক্ষুণতীতি। অনেকাচইত্যাদিনা সেট্কু ক্ষবিতু মিচ্ছতীতি সন্দ্নি: অনাদিহল্ লুক্ ইট্নিষেধঃ অনিট সন্মন্ত বিতা। ৫১৮॥

গ্ঢপ্রকাশিকা।

গুহুবর্ণেতি। জুযুক্ষতীতি। গুহুসম্বরণেভূত সনিহোতঃ সধ্বকারয়োস্থতীয়াদ্যাস্তর্য্যাদ্যাঃ স্থারিতি গুস্থানে ঘুঃ ঘুদিরে অভ্যাদেকবর্গস্থ চবর্গঃ চতুর্থস্থ তৃতীয়ঃ যঢ়োঃ কদেইতিতঃ কঃ নামিকরেভ্যইতিসনঃ সম্প্রম্বং আবরীতুমিচ্ছতীত্যর্থঃ। বুভূষতীতি। ভূসভায়াং দিয়ে চতুর্থস্থত্তীয়ঃ ষত্বং ভবিতুমিচ্ছ-তীত্যর্থঃ। চুক্ষ্বতীতি। ক্ষুণন্দে অপ। শব্দং কর্দ্মিচ্ছতীত্যর্থঃ। ক্লর্ষতীত্যাদি। ক্লরাবেণুস্তরতী অপ ণাদ্যোনাদ্যঃ স্মৃতাঃ এতাবপি অনেকাচ ইত্যাদিনা দেটো ইট্ নিষেধঃ দ্বিষে অনিট্ সন্থভদীর্ঘতেতি অন্তয়োদ্বীর্যতাষত্বম্ শব্দং কর্তুমিচ্ছতিস্থাতুমিচ্ছতীত্যর্থো। ৫১৮ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্রুক্। শ্লক্ বিক্ষেপার্থঃ গৃনিগরণার্থঃ পরস্পরসাহচর্য্যাৎ দৃঙ্ আদরার্থঃ ধৃঙ্ অবস্থিতিবাচী পৃঙ্ ব্যাপারার্থঃ অন্জু স্মিঙ্ ঈসদ্ধাসার্থঃ অনৃঙ্ এভ্যইডাগমঃ স্থাৎসনিপরে। অরিরিসতীতি। শ্লণাতোঃ সনিইটিগুণোহপরবর্ণযোজনং স্বরাদিস্বাদ্দিতীয়াক্ষরং রিদ্ধিঃ। চিকরিষতীতি। কুথাতোঃ সনীট্দির্ব্বচনাদি। এবং জিগরিবতি। গৃণক্ষেজগরিষতইতি মৈত্রেয়ঃ। বক্ষ্যমাণসূত্রেণ বেট্রপ্রাপ্তোনিত্যার্থং ক্ গৃগ্রহণং। দীর্ঘোবেতি। ইড্ দীর্ঘোবেত্যাদিনা। দিদরিষতইত্যাদি। সনীট্দির্ব্বচনাদি। পৃঞ্জিত কন্চিৎ তত্র পৃঙ্ পবনে পবতেঃ পিপবিষতে পৃঙ্গ্ত পুপ্র্বতইতি। অঞ্জিজিবতীতি। অঙ্জুমিচ্ছতীতি সনি ইটি পরবর্ণেন্যুক্তো নবদরেত্যাদিনা পরং প্রতিদ্বিঃ এব্মশৃঙ্ধাতোঃ সনীট দ্বিতীয়াক্ষরং দিঃ উভয়ত্র উদসুবন্ধস্বাবেট্ প্রাপ্তোনিত্যমিট। ৫১৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শ্বাকিতি। কেষাঞ্চিদ্বেট্ ত্বাং কেষাঞ্চিদনিট্ ত্বান্ধিত্যমিট্ বিধানার্থং সূত্রং। শ্বগতো ক্র্যাপ অরিরিয়তি গস্তুমিচ্ছতীত্যর্থঃ। কৃত্বপ কৃঞ্ হিংদারাং ক্র্যান্ত কৃহিংদারাং ক্র্যাপ চিকরিয়তি হিংদিতু-মিচ্ছতীত্যর্থঃ। কৃত্বপ কৃঞ্ হিংদারাং ক্র্যান্ত ক্রান্ত আদর্ভুমিচ্ছতীত্যর্থঃ ধুঙ্ তুআ দিধরীয়তি অবস্থাতুমিচ্ছতীত্যর্থঃ। অত্রভুবাদি ধুদাহচর্য্যাৎ দৃধাতোর্গ্রহণং নতু দৃহনননে স্বাদেঃ দৃঙ্ সাহচর্য্যাচ্চ ধুঙ্ ইত্যস্ত তুলাদ্যাত্মনেপদিনোগ্রহণং নতু ধুঞ্ধারণে ইত্যস্ত ভুবাত্রভয়পদিনঃ নবা ধুঙ্ অবধ্বংদনে ইত্যস্তভুবাদ্যাত্মনেপদিনোগ্রহণং পরস্পরদাহচর্য্যাৎ। পৃঙ্ তুআ পিপরিয়তিব্যাপর্ভুমিচ্ছতীত্যর্থঃ। অন্জু ব্যক্তিমর্বণয়োঃ রুপ অঞ্জিজিষতি ব্যক্তুমিচ্ছতীত্যর্থঃ। শ্বিঙ্ ভুআ দিশ্বরিষতে ঈষদ্ধিস্থিচ্ছতীত্যর্থঃ। অশৃঙ্ ব্যাঞ্জে স্বাআ অশিশিষতে ব্যাপ্তুমিচ্ছতীত্যর্থঃ। সর্বত্ত দনি ইটিগুণে পরবর্ণযোজনেধিভাবাদি। ৫১৯॥

বেটোদরিদ্রোণ ভর ভজ্জ রযু শ্রিক্তাদয়ঃ। ৠদস্তেবস্তকৌ দন্ভপতিজ্ঞ পৃধি
সন্তনঃ। সনিশরে। দিদরিদ্রোসতি দিদরি দ্রিষতি প্রোণ্ণুষতি প্রোণণবিষতি
বিভরিষতি বুভূর্ষতি বিভক্ষতি বিভজ্জিষতি বিভর্জাত বিবরাষতি বুবূর্ষতি যুয়্-ষতি যুযবিষতি যিয়বিষতি শি শ্রীষতি শিশ্রায়িষতি চিক্লংসতি চিকর্জিষতি এবং
নৃত্ন দিছদাং তিতরীষতি দিদেবিষতি গ্রদ্যুষতি। ৫২০॥

প্রভাপ্রকাশিকা.।

বেটো। দরিদ্রাউণু ঞ্ভরভৃসূত্রধৃত্বেন ছন্দোহনুরোধাদ্বাভরনির্দেশঃ। ভ্রন্জরুমুপ্রিঞ্কৃতাদয়ঃ ঋদন্তইবন্ত্পংজ্ঞাপি ঋধ্ সন্ তন্ এতেসন্প্রত্যেবেটঃ স্তাঃ। দিদরিদ্রিতীতি ইট্যবর্ণস্তলোপঃ। প্রে: পুর্বতীতি। উপু্রোষ্ডিচেতিপরং প্রতিদ্বিং অনিট্সন্তভাগিতাইট্পক্ষেপ্তণঃ। এবং বুভূর্ষতীতি। ভূঞ্ভরণেডুভূঞ্ধারণাদৌৰয়োগুণিনিষেধেঅন্তদীর্ঘরেচ ওষ্ঠ্যাতুর্ অগুণেহলীত্যাদিনাদীর্ঘঃ ইট্পক্ষেপ্তণঃ। বিভ্রক্ষতীতি। সনিজাদিজোলুক্ ভ্রজ্জাদের্জপ্রয় ষঢ়োঃকঃ সেবাইট্পক্ষেবাসম্প্রসারণং ভ্রজ্জেঃ ততোগুণঃ বিবরীষতীতি। রঞইটগুণঃ পক্ষেসনিমন্তদীর্ঘত্বেউর্দীর্ঘো। রঙদম্ভক্তো বিবরিষ্ঠইতি মৈত্রেয়ঃ। যিয়বিষতীতি। দিঃ ইটিগুণঃ পক্ষেত্ৰন্তদীৰ্ঘঃ। শিশ্ৰীৰতীতি। শ্ৰিঞ্গুণাভাবঃ অন্তদীর্যত্বঞ্চপক্ষে-চিকর্ত্তিণতাতি। কৃতীপক্ষেইটিগুণঃ। এবমিতি। নিনুৎসতি নিনর্ত্তিসতি নিনৎস্তি নিনন্দিয়তি চিছ্ংসতি চিছ্নিয়তি। অন্তেতুরত্মৃদ্রদঃ পঠন্তিতমতে রুত্ বিবর্তিষতে বিরুৎসতে মৃদ্ মিমন্দিণতি মিমুংগতি চূল্ চিচার্দিগতি চিচুৎগতি। রুহুর্ বর্তনেবিবর্তিগতি বিরুৎসতীতি মৈত্রেয়ঃ। যদ্যপিকৃতীনৃং নদ্মীতি দূত্তেদেনবৈতি ইট্স্থাদ্ব:এবেতি কথ্মত্রকুতাদিগ্রহণং তথাপি ক**উ**পরীহারায়ইহ-তেবাং নির্কেশঃ অন্যথা অদিচিদ ইত্যত্রিদিচ্নিযেধা স্থিতি কলাবুদ্ধোরন। যনাক তাদীনাম নুবাদঃ। ৠদ নুমুদাহরতি তিতরীষতীতি। তৃ সন্ ইড্ দীর্ঘোবেতি পক্ষেতিতীর্ঘতীতি। দিবুদিদ্ধিঃ পক্ষেবটঃ দ্রিদ্রোণু ক্যোরনেকস্বরত্বাৎ সেটোভূএকস্বরঃ ভ্রজ্ঞাদরনিট্ রুযু্ প্রিএতে অনেকাচঃ খিশী ছ্টা শ্রী ত্যাদিন : নেটঃ ঋদ তাশ্চনেটঃ ইবতাশ্চদ্ভ্দন্ভপুরণেপৎজ্ঞপিশ্চুরাদিজ্ঞানার্থঃ ঋষ্ রুদ্ধ্যে मन हर्त्वारमरहें। ৫२०॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

বেটইতি। দরিদ্রাহ্র্গতো অপ উণু ঞ্ আচ্ছাদনে অউ ভৃঞ্ ভুউ জুউ ভ্রক্ত পাকে তুউ বৃঞ্ বরণে ভু সা ক্র্যাট বৃঞ্ আবরণে স্বাট বৃঙ্দম্ভক্তো ক্র্যাআযুমিশ্রণামিশ্রণয়োঃ অপ যুঞ্বন্ধনেক্র্যাট। শ্রিঞ্ দেবায়াং সাচাশ্রয়ঃ ভুউ কৃতীছেদনে তুপকৃতীবেউনেরুপ আদিগ্রাহ্যানাহ এবমিতি। নৃতী-গাত্রবিনামেদিপ নর্দ্দেভুপ ছর্দি্বমনে চুপ তৃ প্লবনসন্তরণয়োঃ ভুপ দিদেবিষতীতি। দিবুক্রীড়ায়া মিটিদিল্লিঃ গুণঃ গুণানন্তরং দ্বিজেতুঅভ্যাদেরস্কঃ। হুদ্যুষতীতি। বউরিত্যুত্বকরণাদাদোসন্ধিন্ততোদিঃ তহন্তরানাদিহলো লুম্পেদিতি যলোপঃ ষত্বঞ্চা ৫২০॥ দীর্ঘোইনিট্সনিভঙ্গন্যোঃ সনোতের্বানকারলুক্। তিতাৎসতি সিষাৎসতি সিষাসতি ইটিসিসনিষতি তিতনিষতি। ৫২১॥

প্রায়ুক্। অনিট্সনীতিচাধিক্রিয়তে। ৫২২॥
দন্ভস্তুধিপ্ধীপৌ। স্তঃ। ধিপ্সতি ধীপ্সতি। ইটিদিদম্ভিষতি। ৫২০॥
জ্ঞপের্জ্ঞীপ্। জ্ঞীপ্সতি জিজ্ঞপয়িষতি। জ্ঞপিরয়ং চুরাদির্মান্সবন্ধঃ। ৫২৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গৃঢ়প্রকাশিকা।

দীর্ঘইতি। তনু বিস্তারেতউ ধণুদানে তউধাত্বাদেঃ যস্তমঃ তদ্যুক্টঠণাং তথানাঃ ক্রমাদিতিণস্তনঃ একস্বরব্যবধানমব্যবহিত্বদিতিতায়াৎ। অনিট্ সনিপরেতন্ সত্যোদীর্ঘঃ স্তাদর্থাদকারস্ত সনোতের্মকার-লুক্চবাস্তাদিত্যর্থঃ। পুনঃ সনোতেরিতি গ্রহণাত্রমকারলোপেবায়য়ঃ নতুদীর্ঘইত্যত্র অতএব বাপরত্তাপি নাসুবর্ত্ততে। তনিতুং সনিতুমিচ্ছতীতি সনি অস্তদীর্ঘত্তোসাদ্বিভাবেদত্তবর্ণ ইরভ্যাদে নস্তবিদ্ধঃ পক্ষেদনোতের্মলোপঃ পক্ষেইট্। ৫২১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রাগ্লুক্। অভ্যাদলোপশ্চাধিক্রিয়তে অথিকারউত্রানুর্ত্তিশ্চ। ৫২২॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

প্রাণিতি। তৎপূর্নবং প্রাঙ্ভ্যাদশ্চ কথ্যতেইত্যুক্তরাৎ প্রান্চ্শন্দেনাভ্যাদ উচ্যতে তেন প্রাচোলুগিতিযক্তিদমাদে চজঝাং গইতিচস্থাগঃ। অনিট্দনিইতিচ চকারাৎ প্রাগ্নুক্চাধিক্রিয়তেস্বয়ং। কর্ম্মকর্ত্র ভিপ্রায়েণাধিক্রিয়তইতিপ্রয়োগঃ। যন্বাব্যাকরণচার্য্যেরধি ক্রিয়তইত্যর্থঃ। ৫২২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দন্ত। ধীপ্ৰতীতি। দন্ভ্ধাতোঃ সনিধীপাদেশঃ প্ৰায়োপশ্চপক্ষেইট্। ৫২৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা i

দন্ভইতি। তুশব্দোহনিট্ সনীত্যস্ত সমুচ্চায়কঃ। গ্রীপ্রতীতি। দম্ভিতুমিচ্ছতীতি সনিধীপাদেশে ধীদ্বিত্বেপ্রাগ্ধীলোপঃ। ইটীতি। বেটোদ্রিদ্রোণ্ভরেত্যাদিনাবৈকল্লিকেটীত্যর্থঃ। দিদ্ভিষতীতি। নস্তবিন্দুংবিন্দোর্মঃ। ৫২৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জ্ঞপে। জ্ঞপিধাতোজীপাদেশঃ প্রাগ্নুক্চ। জ্ঞাপ্সতীতি। সনিজ্ঞদিঃ প্রাগ্নুক্ পক্ষেইট্গুণঃ জ্ঞদিঃ নাভ্যাসলোপঃ অনাদিহল লোপঃ সন্মবর্ণ ইঃ। ৫২৪॥

ঋধইর্ভবেং। ইর্নতি অর্দ্ধিষবতি। ৫২৫॥

ইং স্থাৎ স্বরস্যমীমাদাং। মিংসতি মাঙ্মিৎসতে দাসংজ্ঞকস্য দিংসতি ধিৎসতি। ৫২৬॥

ইঃশক্ পংপদিরভ্লভাং। এষাং স্বর্ন্যইকারঃ ন্যাং। অধ্যেতৃং শিক্ষতি পিংসতিপদ্পিংসতে রভ্ আরিপ্সতে আলিপ্সতে। ৫২৭॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

জ্ঞপেরিতি। নমুজাধাতোরিনিপাগমে জ্ঞাপিরিত্যেশং ভাবিতুমইতিকথং জ্ঞপেরিত্যুক্তমিত্যতত্ত্বাহ জ্ঞাপিরয়মিতি। মমুবন্ধইতি। তথাচমিতাং হ্রস্বইত্যনেন হ্রস্বইতিভাবঃ। ৫২৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঋধ। ঋধ্বাতোঃ ইর্তাদেশঃ প্রাগ্লুক্ ইট্ বিকল্পক্ষে। অদিধিষতীতি। ইটিগুণেঅন্তাক্ষরং দ্বিশ্চতুর্থস্য তৃতীয়কঃ। ৫২৫॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

ঋধইতি। ঋধুর্দ্ধৌদিস্বাপ। বেটইত্যাদিনাস্থ বেটয়াদিট্ বিকল্পক্ষেইর্তাদেশঃপ্রায়ুক্চ। ৫২৫॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

ইৎস্যা। মেগ্রামাঙঃ দাসজ্ঞকস্যচস্বরস্থ ইৎ স্থাৎ প্রাগ্লুক্। ধা ধিৎসতি। একস্বরত্বাদেতে-অনিটঃ। মাঙ্ হিসায়াং মিৎসতেইতিমৈত্রয়ঃ সার*চ। ৫২৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইদিতি। ভূমীঞ্প্রকেপণেস্বাউ। মাইত্যনেনমেঙ্ বিনিময়প্রত্যপণিয়োঃ ভূসামামানেস্প মাঙ্ মানেস্ফাইত্যেষাং গ্রহণং। মৈত্রেয়াদিমতেমীঙ্ হিংদায়াং দিবাদিসাত্মনপদীইত্যস্তচ স্বরস্তইৎ। ৫২৬ ॥

পুভাপুকাশিকা।

ইঃ। ইঃ প্রাগ্লুক্চ। রভ্রাভস্তেরিপতি প্রারিপতি প্ররিপিতং। শক্অনিট্পৎ বেট্ পিপতি-হতীক্যুক্তং পদ্অনিট্রভ্লভাবনিটো। ৫২৭ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইরিতি। শক্ সামর্থ্যের পত্ ৯গতো ভুপ পদাতো দিআরভ্ রাভাম্যেভুমা তচ্চ উৎস্কীভাবঃ ইতিচুর্গঃ। নির্কিচারপ্রবৃত্তিরিতিগোবিন্দভট্টঃ। ভুলভ্ ষ্ প্রাপ্তোভুমা। অনিট্ সনিপরেপ্রাগ্লুক্চ। শিক্ষতীতি। সামর্থ্যমিচ্ছতীত্যর্থঃ। পিংসতি পতিতুমিচ্ছতি পিংসতে গন্তমিচ্ছতি আরিন্দতে আরব্ধু-মিচ্ছতি আলিন্দতে ঈ্যল্লব্ধুমিচ্ছতীত্যর্থাঃ। পংবেট্ অন্যেহনিটঃ। শক্মর্থণেদিউঅয়ং সেট্তেনশিশ্বিযতীতিপ্রয়োগঃ। ৫২৭॥

জাপোতেরীপ্। ঈপ্সতি আপ্ উপলম্ভনে ইত্যস্য আপিপ্সতে। ৫২৮॥ রাধতেরিৎ হিংসায়াং। রিৎসতি দ্বিং হিংসায়াং কিম্ আরিরাৎসতি-দেবং। ৫২১॥

জের্জিগীঃ। জিগীষতি। ৫৩০॥ চেশ্চিকী চিচ্যো। চিকীষতি চিচীষতি। ৫৩১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আপো। আপ ঈপাদেশঃ প্রাগ্লুক্চ। আপিপতইতি। পরবর্ণেন যোজনং কৃত্বা দ্বিতীয়াক্ষরং দ্বিঃ কৃতং অনিট্ পৎ বেট্ পিপতি্ষতীত্যুক্তং পদ্অনিট্ রভ্লভাবনিটো। ৫২৮॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

আপ্নোতেরিতি। আপ্৯ব্যাপ্তো স্বাপ। আপ্নোতেরিতি স্বাদিগ্রহণাৎ উপলম্ভনার্থকস্থ চুরাদি-পরস্মৈপদিন আপোনগ্রহণমিত্যাহ আপ্ উপলম্ভনে ইত্যস্থেতি। ৫২৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রাধ। হিংসায়ামর্থেরাধতেরিদ্ভবতি প্রাগ্লুক্ চ। আরিরাৎসতীতি। দ্বিঃ অবর্ণইঃ প্রথমমূ অনিডয়ং ধান্তে। ৫২৯॥

गृष्धकाणिका।

রাণতেরিতি। অত্রধাতূনামনেকার্থস্বাদ্রাধোহিসাংর্থোহপি তেন যদাহিসায়াং বর্ত্ততে তদা অনিট্ সনিপরেরাধোরিৎ প্রাগ্লুক্ চেতিসূত্রার্থঃ। আরিরাৎসতীতি। আঙ্ পূর্কোরাধ্ সংসিদ্ধোদিপ আরাদ্ধু মিচ্ছতীত্যর্থঃ। রিৎসতি দ্বিযমিত্যন্তং ছন্দঃ। ৫২৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জের্জি। জিধাতোর্জ্জিগীস্থাৎ প্রাগ্লুক্ চ। ৫৩০॥

গৃতপুকাশিকা।

জেরিতি। জিজয়েভূপ। অনিট্ সনিপরতোজেঃ স্থানেজিগীস্থাৎ প্রাগ্লুক্চেত্যন্বয়ঃ। এক স্বরম্বাদনিট্। ৫৩০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চেশ্চি। চিধাতোশ্চিকীচিচীচ স্থাৎ। চিচীযতীতি। হ্রস্বঃ সারে।৫৩১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

চেরিভি। চিঞ্ চয়নে স্বাউ চিঞ্চ্যঞ্চ ইতিমুগ্ধবোধে। দীর্ঘান্তাদেশফলং বক্ষ্যামঃ। ৫৩১॥

হের্জিয়ীঃ। দ্যাং জিঘীষতি। ৫৩২॥
স্বেঞ্জেব্ধাজুহ্ন্যাতাং। জিহ্বাসতি জুহ্নতি। ৫৩৩॥
অথেনন্তম্য। ০। হ্বায়ের্জুহাবয়িঃ। জুহাবয়িষতি। ইন্ব্যবধৌনজুহ্-ভাবঃ। জিহ্বায়কীয়য়িষতি। ৫৩৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হেজিঘী। হিগতি রুদ্ধোঃ অম্যজিঘীম্পাৎ প্রাগ্লুক্ চ। ৫৩২॥

गृष्ध्रकामिकां।

হেরিতি। হি স্বাপ। দ্যাংস্বর্গং জিঘীষতি গন্তুমিচ্ছতীত্যর্থঃ। দ্যাংজিঘীষতীত্যন্তং ছন্দঃ। ৫৩২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্বেঞা। স্বেঞঃ স্থানে সনিজিহ্বাজুহুস্তঃ অভ্যাসলুক্চ। ৫৩৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্ষেত্র ইতি। ক্ষেত্র আহ্লানে ভূউ। নমু জের্জিগীচেন্চিকীচিচ্চো হের্জিঘীইত্যাদো জের্গী চেঃ
কীচ্যো হের্ঘীতি তথা হ্লেঞাে হুবাইতি ক্তেনিদ্ধেঃ কথং জিগ্যাদ্যাদেশাইতি মৈবং প্রাগলুগিত্যপ্রাধিকারাং গীয়তি কাঁয়তি চীয়তি ঘাঁয়তি হ্লাসতি হুমতাতি প্রয়োগাপতেঃ। নম্ববাধনার্থস্রেণােগম্ এতং সূত্রানন্তরমেতেযাং করণেতদােযক্সামন্তবাং নচ তথা সতি ইট্মক্সপি তল্লাদেশাঃ স্ত্যারিতিবাচ্যম্ এয়ামেক স্বর্থনানিট্রাদিতিচেং উচ্যতে যদি প্রাগ্রুগিধিকারেততং সূত্রেস্তলােদেশানস্তস্তদান্যাসবর্ণসন্ত্রাং জিগামাদি ধাতুনাং যি অভ্যাসক্সপ্রত্যাদেশালালা স্ত্রেপজেগীয়তেইত্যাদি প্রয়োগাপতেঃ ইদানীস্ত অভ্যাসলােপেন জিগীয়তেইত্যাদি প্রয়োগাইতি। নমু জিপ্রভৃতেজিগাপ্রভৃত্যাদেশেকতে অনেকস্বর্থেনেট্পাপ্রের্থাক্থং নেভিতিচেংসত্যং জিপ্রভৃতেরেকস্বর্থেনানিট্রাভ্লাদেশানামপিতদাদেশেত্রদিতি ক্যায়েনানিট্রাভ্রাপগনাং অত এব জিঘংসতীত্যত্রাপিনেট্ প্রত্যায়ঃ। নমু তর্হিজেজিগিইত্যাদি হ্রস্বাস্তানেনরণে সূত্রলাঘন্ত স্থাংত্থানেইংপ্যনিট্ সক্তন্তনিক্সাদিতি। জিহ্লাসতীত্যাদি। এচাং পাঠস্থিতা-জ্যামিত্যাদিনাকারে হ্রাভ্রের আদেশ্বয়ং ততঃ প্রাগ্রুক্। ৫৩৩ ।

প্রভাপ্রকাশিকা।

ল্পায়ে। আয়িরিনন্তঃ তস্তজুহাবয়িঃ ইন্ দনিস্তাৎ জুহাবয়িষতীতি। জিহ্বায়কীয়য়িষতীতি। লয়তান্যকণ্ লায়কঃ লায়কিমিবাচরতাতি যিনিযাববর্ণস্থাঈকারঃ লায়কীয়তি কশ্চিত্রমন্তঃ প্রযুজ্জুইতীন্ লোয়কায়য়িত্বনিচ্ছতাতিদন্ ইন্ব্যবধানায়লেঞোজুহুদ্বিভাবঃ তত্তানাদিহলোলোপঃ ব্রস্বঃ হস্তজঃ অস্তইঃ দনিত্তইট্ খনেকস্বরস্বাৎ ইনঃ স্থানেগুণেঅয় ইট্যোজনং যত্বং বর্ত্তমানায়াস্তৌঅন্বিকরণাদি। ৫৩৪॥ খামেঃ শিশ্বায়য়ি শুশাবয়ি। শিশ্বায়য়িষতি শুশাবয়িষতি। ৫৩৫॥ স্বাপেঃ স্কুম্বাপয়িজেরঃ। স্কুম্বাপয়িষতি। ৫৩৬॥ ইনীঙোগাজিগাপয়ি। অধিজিগাপয়িষতি। ৫৩৭॥

গূ ঢপ্রকাশিকা।

অথেতি। অনিনন্ত সনিপ্রয়োগদর্শনানন্তরমিনন্ত সনিপ্রয়োগাঃ প্রদর্শন্ত ইতিশেষঃ। ০। হ্বায়েরিতি। প্রকরণনশাং সনীতিলভাতে। হ্বায়েরিনন্ত হ্বেপাতোঃ স্থানেসনিজু হাবয়িঃস্থাদিত্যর্থঃ। ইডন্তোহয়মাদেশঃ প্রায়ুক্চ। ইন্ব্যবধাবিতি। হ্বপাতোরকণিলিঙ্গন্বঃ ততোঘিনিধাভুন্বং ততইন্ততঃ সন্তাদৃশেসনিইন্ব্যবধো নজ্হুভাবঃ যিনাজুনব্যবধানং ঘিন্প্রত্যয়েনেব ধাভুন্বাদিতিভাবঃ। ইন্প্রত্যমাভাবেজিহ্বায়কীয়িমতীতি। ৫৩৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্বায়ে। শ্বায়েরিনন্তস্তাদেশদ্বয়ং সনিশিশ্বায়রিষতিশুবাবয়িষতীতি। ৫৩৫

গৃঢ়প্রকাশিকা।

শ্বারেরিত। টুওশিগতিরদ্ধোণ ভূপ ইনির্দ্ধোদকোন্তেগ্যক্রচনেরপং। শিশায়য়ি শুশাবয়ীতি-দমাহারকদ্বঃ। ইনন্তস্মাদ্যশিধাতোঃ স্থানে শিশায়য়ি শুশাবয়ীতি ইডন্তাদেশদ্বয়ং প্রাগ্লুক্চ। ৫৩৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্বাপে। স্বাপেরিনন্তস্থ অভ্যাদেসম্প্রদারণবলাৎ। এবং হ্রস্থাপিয়িঘতীত্যাদি। ৬৩৬॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

যাপেরিতি। ঞিষপ্ শয়েঅপ ইনন্তস্থাস্থস্থাপয়িজেরিইত্যর্থঃ ইডন্তাদেশোংয়ং তেনাভ্যাদেশসম্প্রসারণবাধইতি তাদৃশাদেশঃ প্রায়ুক্চ। এতৎপর্যন্তং প্রায়ুগিত্যধিকরোতিনপরত্রইঙোগাবিধানাৎ জিগাপয়ীতি প্রয়োগদর্শনাচ্চ। তত্রাপিতভদাদেশানাং প্রায়োপস্থচফলং যঙিবোদ্ধন্যং তত্নভং স্বেঞো-জিহ্বাজুহুস্থাতামিতি সূত্রটীকায়াং। ৫৩৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইনী। ইনিসন্থিয়ে ইঙোগা। ইঙ্দনিগাবাঅধ্যাপিপয়িষতি অধিজিগাপয়িষতীতিদারঃ। ৫৩৭॥

গ্ তপ্ৰকাশিকা।

ইনীতি। অত্রেনীতিকথনাভাবেইনন্তস্ম ইঙোগাদেশাপত্ত্যা অধিজিগাষতীতি প্রয়োগাগতেরিতী নীতিকথিতং। সন্বিয়য়েনিইঙোগাদেশেকিং রূপং স্থাতুদ্দর্শয়তি জিগাপয়ীতি। ছন্দোহর্থমেকত্রলিথিতং। তহুদাহরণমাহাধীতি। অধিপূর্ব্বঃ প্রযোক্তব্যইত্যুক্তস্থাদধিপূর্ব্বএব ইঙ্প্রযুজ্যতে ইঙ্মধ্যয়নে অ আ।৫৩৭॥ অন্তস্থজপবর্গস্থোবর্ণেন্ কার্য্যেদ্বিরন্ সনি। যিযাবয়িষতি রিরাবয়িষতি লিলাবয়িসতি জিজাবয়িষতি পিপাবয়িষতি বিভাবয়িষতি। অন্তস্থাদিনিয়মঃ অন্যেযামিন্ কার্য্যাৎ প্রাক্পূর্ষরবতামেব দ্বিচনার্থঃ দ্রদাবয়িষতি জুহাবয়িষতি কুনাবয়িষতি। ৫৩৮॥

শ্রু ব্যু দ্রু শ্রু প্রায়া। ইন্কার্য্যাৎ পূর্বং দিরিন্সনি। শিশ্রাবয়িষতি প্রিয়ং। শুশ্রাবয়িষতি বিব্যাবয়িষতি দিদ্রাবয়িষতীত্যাদি। ৫৩৯॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা i

অন্ত। অন্তস্থাবরলবা শচ জশ্চ প্রবর্গনিচ তৎস্বস্থোবর্ণ স্থাইন্কার্য্যেক্তেইন্সনিদ্বিভাবিঃ। যিযাবরিনতীতি। ইন্ সন্ রন্ধাবোক্ত্যাবিঃ অবর্ণ ইঃ সনীট্রুলুধাত্মেবেবং। জস্থোবর্ণোদাহরণং জুজাবরিনতীতি। জুঃ সৌত্রোধাত্র্বেগার্থ ইতিসারঃ। অন্তস্থাদিস্থোবর্ণান্তধাত্মামিন্ সনিইন্কার্যাৎ প্রং
দির্ভাবইতিবদমন্তধাতোরিন্কার্যাৎ পূর্বং দ্বিভাবং দর্শয়তি অন্তস্থাদীতি। পূর্বেস্বরঃ অকৃতর্দ্ধ্যাদিঃ।
দুলাবরিনতীতি। জ্পাতোরিন্ সনিদ্ধিঃ ততোর্দ্ধ্যাদি অন্তথাদিদাবরিষতীত্যাদিস্থাৎ। ত্রুধাত্মে
রেবং। ৫০৮॥

গৃতপ্রকাশিক।।

অন্ত হেতি। অন্ত শালপবর্গের্তিষ্ঠতীতি অপ্রাদিনামপূর্বাদাদন্তাং স্থশ্নতঃ ডমুবন্ধেঅন্তাম্বরলোপঃ তাদুশোর্টবর্গন্ত ক্রেন্বার্যমিতিবিগ্রহাঃ। তিথ্যন্কতেইতাগ্যাহার্যম্ ইন্কার্য্যেসতীত্যর্যাসম্ভবাৎ সতি-সপ্রয়াঃ সমানকালীন রার্থকত্বেন ইন্কার্য্যসমানকালে ছির্ভাবাসম্ভবাৎ। ইন্সনীতি অর্থাল্লব্ধং নসূত্রং ছন্দোহর্থমেকত্র লিখিতং। যুমিশ্রণামিশ্রণয়াঃ রুরারে অপ লুঞ্ছেদনে ক্র্যাপ জুবেগগতোভুপ পুঞ্ পূর্বে ক্র্যাই ভূসতায়াং তুগতো ভূপ টুর্ন্ন উপতাপেশ্বাপ ত্লানে গুন্ততো অপ। দীর্ঘোকার অনুভ্ উপতাপে-তুদাব্যিবতীত্যালি। ৫০৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্রুর। শ্রু ব্যুহ্মনেচুরাদিশ্চ জ্র প্রাগতি প্রাথাং। শিশ্রাব্য়িষ্তীতি। শ্রাবিসন্দিঃ অনাদিহল্লুপ্ অভ্যাদেহবর্ণ ইঃ। ইন্কার্য্যাৎ প্রাক্ষিত্তেঅনাদিহল্লুকিশুশ্রাব্য়িষ্তি। আদিপদাৎ বুব্যাব্য়িষ্তি ছিদ্রাব্য়িষ্তি সিম্রাব্য়িষ্তি গ্রন্থাব্য়িষ্তি প্রার্থাব্য়িষ্তি প্রার্থাব্য়িষ্তি প্রার্থাব্য়িষ্তি অনুব্যাব্য়িষ্তি অশিশ্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অনুব্যাব্য়িষ্টি অশিশ্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অনুব্যাব্য়িষ্টি অশিশ্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্যা অসিম্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাব্য়িষ্টি অসিম্রাক্ষিটি সিম্রাব্যা সিম্রাব্যা সিম্রাব্যা সিম্রাব্যা সিম্বাব্যা সিম্রাব্যা সিম্বাব্যা সিম্বাব্য সিম্বাব্যা সিম্বাব্য সিম্বাব্যা সিম্বাব্যা সিম

গৃড়প্রকাশিকা।

শ্রিত। শ্রুগতো ভুপ শ্রু শ্রবণে সাপ রুষ্ট্ ভুরু চুউ ক্রুগতি দ্রবীভাবপলায়নেষু ভুপ, স্রুগতো ভুপ প্রুগতো ভুমা প্রুগতো ভুমা। ইন্দনিপরে শ্রুগতা ক্রু শ্রুগরা পাতৃনামিন্ কার্যাৎ পূর্বং বাদিঃ স্থাদিতার্থঃ। ইন্কার্যাক্রতেদিতে শিশ্রাবিয়েষতি ইন্কার্যাৎ পূর্বং দিত্তেশ্রাবিয়িষতীতি এবমন্তর। প্রিয়মিত্যতংছনদঃ। ৫৩৯

গুপ্তিজ্ কিন্তাঃ সন্স্বার্থেইনিট্। জুগুপ্সতেন্যারিন্দারাং ক্ষমারাস্ত্রতিতি-ক্ষতে। চিকিৎসতি প্রতীকারেব্যাধীনাং সংশয়েইপিচ। বিচিকিৎসতি মেমনইতি বিশক্ষযোগাচ্চিকিৎসধাতোরেববাসংশয়ার্থত্বং। ৫৪০॥

প্রভাপকাশিকা।

গুপ্তি। তিজশ্চোরাদিকস্মব্রাদাসস্তথাঅনির্দেশাৎ। গুপ্কিতেশরচোরাদিকয়োঃ সাহচর্যান্তি জোহপ্যচৌরাদিকস্থগ্রহণমিতি বজ্রধরঃ। সংশ্যেহপিচেতি সন্নিতি সম্বপ্যতে। ভৌবাদিকাভ্যাং নিরস্বন্ধাভ্যাং সাহচর্যাৎ গুপ্গোপনকুৎসনয়োরিতি ভৌবাদিকোনিরসুবন্ধ এবগৃহতে নগুপ্পালনেইতি দৈবাদিকোনবাগুপুরক্ষণেইতি ভৌবাদিকঃ যদিপুনরয়ং গৃহীতঃ স্থাত্তদাসসাক্ষধাতুকে-বিভাষিতআযুপ্রত্যয়ত্বাৎ পক্ষেদন্স্থাৎ। এভাঃ সন্দার্থেবিশেষাপ্রাবণাদিতিভাবঃ ইট্নিষেধঃ। জুগুপতে নিন্দতীত্যর্থঃ। এবং জুগুপ্লাঞ্চক্রে। নিন্দায়াঅন্যত্রাপ্যর্থে নাম্মাৎ কেবলাদাত্মনেপদং সম্ভবত্যনভিধানাৎ তত্নুক্তং নৈতেভ্যঃ সনঃ প্রয়োগাদাল্যনেপদং পরস্থৈপদং বাপশ্যামইতি তত্ত্বাৎ কেবলাদাল্যনেপদার্থমস্থা-কুদাতত্বং ন ভবতিইতি সামর্থ্যাৎসনন্তাদাল্মনেপদং ভবতীতি মৈত্রেয়ঃ। ভট্টনারায়ণাদয়স্ত জুগুপ্দতইতি কথমাত্মনেপদং নতাবৎসনন্তাৎপূৰ্ববিদিতি সনং বিনাযত্ৰা ল্লনেপদং তত্ত্বৈপূৰ্ববিদ্ঘটনাৎ সন্পূৰ্ববইত্যাদিভি-রনভিধানাৎ নাপিরুচাদিঃ গণেজুগুপ্লাদেরপঠিতকাৎ তত্তত্ত্রসন্ভাবেষত্রপাণিনেঃ সমাধানং গুপ্ তিজ্ মান্ বধশ্চত্বারোগুপাদয় এতে অনুদাতানুবন্ধাইতি পরেণধাতুগণেসঙ্কেতঃ কৃতঃ অনুদাতভিত্তআলনেপদ-মিতি দুত্তং নির্মাতং কেবলানাং গুপাদীনাং দাতুবন্ধপাঠদামর্থ্যাৎ দনভেভ্যোহপ্যাত্মনেপদং স্থাদিতি পরব্যাখ্যানং। রাজশ্রীমতেতুকেবলানামেশ্যমিত্যাদিভিত্তভিধানমেব গোপতে তেজতে সঙ্কেততইতি কাতস্ত্রমতেরুচাদেরাকুতিগণত্বাদেবস্থাত্ত্রাল্লনেপদং বৃদ্ধাইচ্ছন্তি সূত্রবরুচাদিন্নিন্দায়াং গোপনেমান্থ**ে সন্ গোপ**য়তে গোপয়তি এবং নন্দান্তিকেগোপতইতি। মৈত্রেয়স্ত্রগোপিতাগোপঃ গোপনং গুপিতঃ গুপ্তইতি। তিজনিশানেক্ষমায়াঞ্জ্ক্ষমায়াং তিতিক্ষতেতপোচুম্থং তাপদঃ সহতইত্যৰ্থঃ ক্ষায়াঅন্তত্তজয়তি তেজনং তেজঃ। কিত্নিবাদেব্যাধিপ্রতাকারেপর সৈপদ।তি মৈত্রেয়ঃ। চিকিৎ-সতি আতুরং রোগাৎপ্রণয়তীত্যর্থঃ। সংশয়েউভয়ত্রদৃশ্যতে। বনিতামেতাং হস্কং মনোবিচিকিৎসতেইতি মুরারিঃ। নিগ্রহেংপিরিপুং বিচিকিৎসতি নিগৃহ্বাতীত্যর্থঃ। নাশেংপিচিকিৎসনীয়ানিতৃণানিক্ষেত্রে-বিনাশয়িতব্যানীত্যর্থঃ নিগ্রহোবিনাশোব্যাধিপ্রতীকারএবউপসানাদিতি ভট্টঃ। তুর্গশ্চকুৎসনেহর্থেগুপঃ সংশয়েনি গ্রহেনুশেপ্র তীকারেরুচঃ কিতইতি। সন্স্থাৎ ক্ষমায়ান্ততিজন্তথা। নিকেতনং। নিন্দাক্ষমাপ্রতীকারেষেবসন্নতুদংশয়েংশীতিমতেনাহ বিশক্তি। কেবলাৎকিত: সন পশ্চাত্বপদর্গযোগে দংশরপ্রতীতিরিতিভাবঃ। গুপোবধেট নিন্দারাং ক্ষমারাস্ততিজন্তথা। দংশয়েচ প্রতীকারেকিতঃ সম্মভিধীয়তইতি দুর্গঃ। ৫৪০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

গুপ্তিজিতি। গুপ্ গোপননিন্দয়োঃ ভুউ তিজ্ নিশানক্ষময়োঃ ভুআ কিৎ ব্যাধিপ্রতীকারনিগ্রন্থ অপনয়ননাশ সংশয়েষু ভুপ। কস্মিন্নর্থে সন্ স্থাদিতি দর্শয়তি জুগুপ্সতেস্থান্নিন্দায়ামিত্যাদি। তথাচ

বীভজ্ঞপ্সনে মীমান্ দীদান্ শীশান্ নিপাতনাৎ। স্বার্থে সন্ অনিট্ निष्ठिः। कठानिष्ठानाजात्नशनकः। वध् वीज्ञश्मर् यान् विठातरः योगारमर्ज नान् খণ্ডনে দীদাংসতে শত্ৰ শান্তেজনে শীশাংসতে শস্ত্ৰ । ৫৪১॥

নেচ্ছাসনঃ সন্ বিধেয়ঃ। যথেচ্ছত্যস্যাদিং সিতৃং। পুলং পিপঠিষিতু মিহ্ছতি। ইচ্ছতি কিং জুগুপ্সিষতে মামাংসিষতে। ইতিসন্প্রকরণম্। ৫৪২॥

নিন্দায়াং গুপঃ সন্ক্ষমায়াং তিজঃ সন্ ব্যাধিপ্রতীকারে সংশয়েহপি কিতঃ সন্ নান্তার্থেষিত্যর্থঃ। বিচি-কিৎসতি সংশেতে ইত্যর্থঃ। ননুসংশয়ার্থেকিতঃ সন্ বিহিতন্তেন কেবলস্থ তস্ত সংশয়ার্থঃকুতোবিযোগা-ভাবাদিত্যত আহ চিকিৎস্থাতোরেববেতি। স্ত্রীছন্দঃ গৌস্ত্রীতি তল্লক্ষণাৎ। ৫৪০॥

প্ৰভাপকাশিকা।

বীভ। বধ্বন্ধনে সনিনিপাতঃ জুগুপনং নিন্দাদীর্ঘোনিপাতঃ সংবকারয়োরিত্যাদি বস্তভঃ লিঙ্গ-বদিতি প্রথমশ্চ। বধঃ সনিকৃতেবীভংসতইতিসারঃ। মীমাংসতইতি। দীর্ঘোনিপাতঃ সর্বত্ত বধ মানয়োরাত্মনেপদং বধিষ্যতে। মাব্ধিষ্ঠাজ্ঞটায়ুমিতি ভট্টিঃ। মান্ বিচারশেষে মীমাংস্তইতিসারঃ! ঐধাদিকয়োদ্দান্শানোঃ সাহচর্যাৎ মান্বধোরপ্রৈধাদিকয়োগ্রহণং ন চৌরাদিকয়োঃ মান্ পূজায়াং বধ্ সংযমনইত্যনয়োঃ তথাচ শম্ভুঃ নাজিজ্ঞাসাবৈরূপ্যার্জবনিশানেষু জিজ্ঞাসাদি বর্জিতেম্বর্থেয়ু রুত্তেভ্যোমানা-দিভাঃ দন্নভবতি বধেঃ কুৎসায়াং হিংসা নচ কচিদিতাভাঃ। মীমাংসতে কিমার্য্যোহয়ং বিশ্বামিত্রে হকুশাসতি। বীভংসতে রাজ্যভোগায়রিপুং বীভৎসতে দীদাংসতে তস্ত ধনেন কৃষ্ণাং শীশাংসতে শাস্ত্রং। দান শানাবভয়পদিনো কিৎ পরস্মৈইতিছুর্গঃ। চৌরাদিকেন মানয়তি মানঃ মানিতঃ। ৫৪১॥

গৃঢ়পুকাশিকা। বীভদিতি। বীভদিত্যনস্তরং **জুগুপান ইত্যুক্ত স্বাত্তি**ব **জুগুপান ইত্যুসায়য়ঃ অ**ন্যত্ততু তত্তদাতু বাচ্যার্থেগম্যেইভিবোধ্যং। তেন জুগুপ্সনেহর্থেদনিপরে বীভদিতি বিচারণে মীমানিতি খণ্ডনার্থে দীদা-নিতি তীক্ষীকরণে শীশানীতি নিপাতনাৎ সিদ্ধেয়ুরিত্যর্থঃ। বীভৎসতইতি বধ্ বন্ধন চিত্তবিকার নিন্দাস্থ ভুত্মা স্বার্থেদনি বধ স্থানে বীভদাদেশঃ। নিপাতনাম্বিঃ। এবমন্তত্তাপি। মান্ পূজাবিচারণয়োঃ ভুষা বিচারণার্থে দন্। দান্শানভুউ যশ্চমীমাংদতে ধর্মং মানয়ত্যথিনোদ্বিজান্। মানতি স্বজনং দর্ববং শাস্ত্রং মানয়তে পরমিতি কবিরহস্তে। ৫৪১।

প্রভাপ্রকাশিকা।

নেছা। ইচ্ছেতি কিমিতি। স্বার্থিকসমস্তাৎ সন্ ভবত্যেব। সমস্তাৎ গুপাদে:। অবজুগুপিষত ইতিসার:। ইতিসন্প্রকরণবিবরণম্। #। ৫৪২॥

शृष्टश्रकाश्विका।

নেচ্ছেতি। ইচ্ছায়াং সন্ ইচ্ছাসন্ ইচ্ছার্থসনন্তাৎ সন্ নবিধেয়ইত্যর্থঃ। অস্তাদিৎ সিভুমিতি। বিবক্ষাতঃ কারকাণীতিব্যবস্থায়া বৃক্ষস্তপর্ণং পতীত্যাদিবৎ সম্বন্ধে ষ্ঠী। এবং নদ্যাঃ কূলং পিপতি ষিষতীত্যপিভবতি। ইতিগৃঢ়প্রকাশিকায়ামাখ্যাত**টাকায়াং সন্প্রকরণবিবরণম্। 🕸। ৫৪২ ॥**

চুরাদেরিন্। স্বার্থে। চোরয়তি চিন্তরতি ছদিঅসুরোধেছন্দয়তি মণ্ডয়তি। গণান্তরেইপি কটিং স্বার্থেইন্। রামোরাজ্যমকারয়দিতি। ৫৪৩॥

ক্ষেধীনধাত্বর্থেসর্বধাতৃতঃ। কর্ত প্রযোজকোহেতৃন্তং প্রেরণাধীনক্রিয়ায়াৎ ধাতোরিনস্যাং। করোতিকশ্চিত্তমন্যঃ প্রযুক্তেকুককুর্বীতীন্কারয়তি নাশন্ত বাচয়তি ভাবয়তীত্যাদি। ৫৪৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চুরা। চুর্ইত্যেবমাদিভাইন্ভবতি। স্বার্থ ইতি। অনির্দিষ্টার্থপ্রত্যঃ স্বার্থভবতি হেম্বধীনাদোবাচ্যমাদিভিভাবঃ। চুর্স্তেয়ে চোরয়তীতি ইন্ অনিগুণঃ চোরয়তেচ বুধ্যুধেত্যাদের্বিশোষাক্তং
বিহায়ইনস্তাত্ভয়পদং। মণ্ডয়তীতি। মডিভূষায়াম্ এবং রুজোপীড়ায়াং রোজয়তিকামঃ কামার্ত্বম্ অন্যত্তরুজাতি। শিজিঅব্যক্তেশব্দেশিঞ্জয়তি অন্যত্তশিঞ্জতিতানৈঃ। শিঞ্জম্বলয়্মভগৈর্মার্তিতঃ কাস্তয়ামেইতিমেঘঃ। কিতঃ সকর্মকম্বেদক্ষেত্রতিগৃহং। গণাস্তরেহপীতি। চুরাদীতরগণেহপীত্যর্থঃ
অকারয়ৎ অকরোদিত্যর্থঃ। এবং সকলভূবনরাজ্যং কারয়ামাসতেনইতিভটিঃ। কোকিনাবিষ্ণুরূপেণরাজকন্যামজীহরদিতি পঞ্চতন্ত্র। দৃর্ফেস্র্গ্রেপ্নরপি ভবান্বাহ্রেদধ্বশেষমিতি মেঘঃ। ৫৪৩॥

গৃচপ্রকাশিকা।

চুরাদেরিতি। স্বার্থ ইতি। বিশেষার্থাবিনির্দিউরাৎ হেত্বধীনধাত্বর্থইতিবক্তব্যত্বাচ্চ স্বার্থেইতি ভাবঃ। চিতি চিন্তারাং চুউ ছদিপ মডিপ। গণান্তরেহপীতি। চুরাদেরিত্যাদিশব্দব্যবস্থ্যাচুরাদিগণ-ভিন্নগণাদিপ কচিৎ স্বার্থেইনিত্যর্থঃ। রামইতি। জিত্বালঙ্কেশ্বরং বীরং ভ্রাতৃতিঃ সহধর্মতঃ। দশবর্ষসহস্রাণিরামোরাজ্যমকারয়দিতি। ৫৪৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চুরাদিষুপদাদীনামাগর্বাদাত্মনেপদং। অর্চ্চাদয়স্ত্রাধ্বাদাত্মদস্তাঃ স্থ্যাদয়ঃ। সংগ্রামেঃ সোপসর্গন্য ধাতৃত্বত্মতরস্যৃত্ব। সংগ্রাময়ুদ্ধেত্সসং গ্রাময়দিতি। ৫৪৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

হেত্বধীনেতি। হেতােঃ কর্তপ্রযোজকস্থাধীনস্তৎপ্রেরণাজন্যঃ সচাসাধাত্বশৈচতি বিগ্রহাঃ। সর্বধাত্তাঃ সর্বধাত্তাইতি আদ্যাদিয়াত্তস্ তদ্ধিতেয়্বিভিজ্নিক। অত্তহেত্থাহণাৎ লােকিকহেতােরিরাসঃ তদেবাহকজিতি। প্রেরণাচ যাহি কুবিত্যাদি শব্দপ্রযোগাদিঃ প্রতিবন্ধানাচরণপূর্বকভূষাাস্তাবশ্চ। তেন যাপয়তি প্রামং বিপ্রং চৈত্রঃ ভিক্ষাবাদয়তৈ বিজমিত্যাদি সিদ্ধ্যতি। যদিচেতননিষ্ঠব্যাপার্বিশেষঃ প্রেরণাতদাভিক্ষায়াভিক্ষাদাতুঃ কর্ত্বারোপাৎ প্রযোজকহেত্ত্বমিতি। কার্যভীত্যাদি।
ভূক্ত্রবনে নশ্ অদর্শনে বচ্পরিভাষণে ভূসভায়াম্। আদিনাযাপয়তি দাপয়তীত্যাদেপ্রহণম্। ৫৪৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চুরাদিয়। চুরাদিগণমধ্য এব গর্ববর্ষ্যন্তং পদাদীনামাত্মনপদং। পদগতীগৃহগ্রহণেপদয়তেপদ্যতে চ গৃহয়তে গৃহয়ালুঃ মৃগমন্বেশণে মৃগয়তে লৈঙ্গিকেনন্তস্মৃত্যুগয়তি কুছবিস্মাপনেকুছয়তে শূরবীরবিক্রান্তৌ শুরয়তে বীরয়তে সত্রয়তে সত্রংচিরকালীন যজ্ঞাদিসন্তানক্রিয়ায়ায় অর্থয়াফ্রায়ায় অর্থয়তে গর্কমানে গৰ্বলতে। আধুৰাৎ ধূৰ্পৰ্যন্ত মৰ্ফাদ্যোধাতৰ*চুৱাদিয়্ৰাহ্যঃ। অৰ্ফ্পুজায়াম্ অৰ্জয়তি অৰ্ফতেযজাদিঃ সহ্মর্ণে সহয়তি সহয়তে বাসহতে ঈর্প্রেরণে ঈর্ষতি ঈরতি। মাল্নিমেষে মালয়তাতিমৈত্রেয়ঃ। বুজাবজ্জনেবজ্জনতি বজতি বুঞ্বরণেবারয়তি বরতে জৃবয়োহানোজারয়তি রিচ্ বিযোজনসম্মুচ্ছনিয়োঃ রেচরতি রেচতি অহ্যত্ররণোতি জার্যাতি জ্গাতি বিনক্তি বিঙ্ক্তে শিষ্ **অপুর্বাযোগেশে**ষয়তি অহ্যত্র বিশিনস্তিতপ্দাহেতাপয়তিতপতে অহ্যত্র তপ্যতে তপঃ ইত্যাদয়োহয়েচ ধাতুপ্রদীপাদাবকুসদ্ধেয়াঃ। কথাদ্য়শ্চুরাদ্যন্তর্গতামদন্তা মকারান্তাঃ স্ত্যঃ কথবাক্প্রবন্ধেইনিধাত্বন্তস্থাস্তলোপঃঅস্তোপধোপধাত্বান্ধবৃদ্ধিঃ ধাতৃপার্টে উপ্রাভূত স্মৈনাত্মরিরিধানাৎ কথয়তি বর্দ্পায়াং বর্য়তিগণস্থ্যাবেণগণয়তি শঠ এঠ সম্যাগাভাষণে শঠরতি অঠরতি পট বট গ্রন্থেপটরতি বট্যতি রহত্যাগে রহয়তি। স্তন্যদদেবশব্দেদ্বপদং মেঘ্ৰচনমিত্যতো। অস্মাতে ন্তনগদমেঘণৰে স্তনয়তি গুদয়তি পতগতো পতয়তি। অনুপদৰ্গপথ যশগতো যশাসমুপদর্গাৎ যশারতি প্রাদেরপ্রয়াশারতীতিমৈত্রেয়ঃ। इंजिर्शामिहन्दः। স্বর্থাক্ষেপে স্বর্য়তি ইত্যাদয়োহত্যেচ ধাতৃপাঠালাবনুসন্ধেয়াঃ। দংপ্রামেঃ দোপদর্গস্থ উপদর্গদহিত্তৈর ধাতুত্বমৃ ইতরস্থ এত দ্বিষয় উপদর্গদহিত অ নধাতু হমিত্যেকে। অত্যেতু ইতর্ত্ত তুগ্রামেধাতু হং নেতিব্যাখ্যান্তি। অত্রসারঃ স্তথিতুষ্থিসং গ্রামিনামুপদর্গেণদহৈবপ্রকৃতিত্বমৃ অস্তৃত্বথয়ৎ অন্তর্তুষ্থয়ৎ অন্বদংগ্রাময়ৎ দিদং-আময়িষতি সংগ্রাময়িকা অন্যত্তস্থানায়ত ভূমানায়তইত্যাহ। অসংগ্রাময়দিতি। সোপদর্গ স্থৈবধাতুত্বে-নপূৰ্বতা ছাগমঃ। ৫৪৫॥

হনোঘাৎ স্যাদিনি। ঘাতয়তি। ৫৪৬॥

মিতাং হ্রস্কঃ। ইনিপরেমিতাং মন্ত্রকানাং। ঘটাদয়ঃ খানুবক্ষামনুবক্ষা-জ্বাদয়ঃ। ঘটয়তি ব্যথয়তি প্রথ প্রস্ অদ্ ক্ষন্জাদেরেবং। যন্ত্রকাত্বাৎ স্ত্রিয়ামঙ্ঘটাপ্রথাত্বরা জ্বয়তি চকয়তি হিডয়তি। ৫৪৭॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

চুরাদিয়িত। চুরাদিয়্মধ্যেত্রাগর্বাৎ গৃর্বপর্য্যন্তং পদাদীনামাল্মনেপদং স্থাৎ আধুনাৎ ধ্বন্পর্য্যন্তন্ত্রাদিয়ন্তরাদিয়্বাস্ত্র্যঃ অদন্তাঃ কথাদয়শ্চুরাদেয়িতঃ দোপসর্গস্ত সংগ্রামেরিতঃস্ত চুরাদিয়্বগাস্ত্রুয় ইতরস্তু তদ্ভিরস্ত্রুদেপসর্গস্তনধাতুর্বং। তত্ত্রেনস্তাচেভিয়ং বিতুরিতিসূত্রোক্তরাদর্জাদীনাং সংগ্রামান্তানাং বৃধ্রুধাদিভির্মানাম্ভয়পদং প্রাপ্তক্তর্বয়্বধেত্যাদি সূত্রধ্বতধাতুর্চুরাদীনামন্তেনস্তানাঞ্চপরিত্রপদমিতি। তথাপদগতিআদন্তঃ পদয়তে এবং গৃহ মৃগ কুহ শূর বীর সত্র অর্থগর্কাশ্চুরাদয়োহদন্তাআল্মেনপদার্থং পদাদীনাং পৃথিতুর্দেশইতি। ধ্বন্প্রস্কাদির্মানিং শক্তীকরণেয় আধুরাদর্জাদয়োবাভুরাদয়ঃ স্থাঃ। অর্কয়তি অর্লয়তে সহয়তি সহয়তে সহতে ঈরয়তে ঈরয়তে ঈরতি বর্লয়তে বর্লতি রাবয়তি রাবয়তে রবতি রবতে জারয়তি অয়মকর্ম্মকতয়াপরিস্থাপদী বাজয়তি রেচয়তি পরয়েত্রপদী শেয়য়তি শেয়তে শেষতিবা তাপয়তি তাপয়তে তপতেইত্যাদয়ঃ তথাকথয়তি কথয়তে বয়য়তি বয়য়তে বয়য়তি গণয়তে শঠয়তি শঠয়তে প্রচয়ত পদয়তে পটয়তে পটয়তে পটয়তে বয়য়তি রায়য়তি বয়য়তে বয়য়তি বয়য়তে ইত্যাদয় উভয়পদিনঃ বোধয়তি সেয়য়তি জনয়তি গণয়তি পথপ্রফেপে পথয়তি স্বয়য়তীয়াদয়ঃ পরয়্মপদিনোহ্বগন্তবাঃ। সংগ্রাময়তি সংগ্রাময়তি। গ্রাময়্বর্জে গ্রাম আমক্ত্রণইতিগণদর্পণে অয়মদন্তশ্বুরাদিরভয়পদী পদাদিয়্ বৢধাদিয়্ চাপতিত্রাদিতি। ৫৪৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হনো। ঘাতয়েচ অঘাতয়ৎ ঘাতয়িয়াতি ঘাতাতে। ৫৪৬॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

হনইতি। হন্হিংসাগত্যোঃ। ইনিহৈতু কেইনীত্যর্থঃ হনশ্চুরাদি রাভাবাং। ঘংকতেআদেশ-সামর্থ্যাদ্বদ্ধির স্থাদিতি সংশয়াপত্তেঘাদিতিকৃতং। এবং ঘাতয়তেইতিচ। ৫৪৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাদীর্ঘইচ্ণমোঃ। ইচ্ ণম্ বিষয়ে ইনিমনুবন্ধপাতৃনাং দীর্ঘোবাস্যাৎ।
স্বাটি অঘটি অতামি অতমি ণমিঘাটং ঘাটং ঘটং ঘটং জ্বং জ্বাং জ্বারং
জ্বারং ভূজেক্ত শামং শামং শমং শমং গামং গামং গামত। বেতি সিদ্ধেদীর্ঘগ্রহণং কৃতহ্রসম্যাপিকচিদ্দীর্ঘার্থং অহিডি অহাডি হিডং হিডং হীডং হীডং
নৃত্যতীতি। ৫৪৮॥

জুরন্জিজন্রু যোহমপ্তাঃ। মন্বরাঃ। জরয়তি মৃগাণে বণমর্থকে দিনি-রন্জের্ন কারলুক্। রজয়তি মৃগান্ব্যাধঃ তান্যত্র রাজাজনানুঞ্য়তি রু যয়তি গ্রাহত শ্রয়তি। ৫৪১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নিতামিতি। ইনিপরেইতি প্রকরণবশাং। মিতোদশ্রতি ঘটাদরইতি। ঘট্ ভুআ ব্যথ্ ভ্রচলনব্যথাক্তভুআ প্রথ্ ভুআ প্রদ্ ভুআ আদ্ ভুআ আদি গ্রাহ্যাং প্রভাপ্রকাশিকায়ামুক্তাং। ষকুবন্ধফলং দশ্রতি বনুবন্ধহাং স্ত্রিয়ামিঙ্ঙিতি। যকুবন্ধভিদাদেরঙ্ঙিতানেনেতার্থং। ত্বর্ ভুআ ত্বর্র ভুপ জ্বতিচ চক্ ভুউ চকতি চকতেচ হেড্ ভুপ হেডতিচানিনন্ত শ্রুরপং। ৫৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাদী। অঘাটীতি। অদ্যতন্তা সান্নতি বিভক্তে স্তেক্তা দিচ্ ইল্লোপঃ স্তম্পলাপণ্চ। ঘাটমিতি।
শন্ চাভীক্ষ্যে শন্ শ লোপঃ আভীক্ষ্যবীপ্যয়েরিত্যাদিনাদ্বিঃ বাঘটং ঘটং। এবং জ্বারং জ্বারমিত্যাদি।
বেতাতি। বাইচ্ণমাবিত্যুক্ত এবহ্রস্বঃ পক্ষেন্তাং হ্রস্বাভাবেইকামস্তৈবেত্যাদিনাদীর্ঘস্তিব প্রব্তুরিতিভাবঃ। হেছ্পাতে মিতাং হ্রস্বেত্সৈবদীর্ঘইত্যর্থঃ অন্তথা এত্যোদীর্ঘভাবেন অহীড়ি হীডমিতিপ্দর্যঃ নিস্ক্রেত। ৫৪৮॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

বানাৰ্হতি। ভূশং পুনঃপূন্ধাঘটতেইতি গম্ জারং জারং ভুঙ্কে অতিশয়ং জ্রিস্বাভুঙ্কেইত্যর্থঃ। শামং শামমিতি। শমু উপশমেদিপ ভূশং শাস্ত্রাগায়তাত্তানেনাময়ঃ। গামং গামমিতি। পুনঃ পুনর্গরা গায়তী-তার্থঃ। কৈ গৈ শব্দেতিবিভক্তো গায়তাতি। হাঁডং হাঁড়ং নৃত্যতা পুনঃ পুনর্কেটায়েস্বান্ত্রতাত্যর্থঃ।৫৪৮॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

জ্র। জ্রন্জজন্ কুণ্ ক্ষরণদীপ্রেণাঃ অম্ অস্তেবেষাং তে অমন্তাধাতবামসুবন্ধাঃ স্থারিত্যর্থঃ। জররতাতি। জীর্ঘতি কশ্চিত্তমতাঃ প্রবৃহ্জইতীনির্দ্ধোহ্রস্বঃ রন্জিসাহচর্ঘাৎ দিবাদি জ্ধাতোপ্রহিণং জ্ণাতেস্তজারয়তি জরয়তীতি। মুগান্ অন্নিয়তীত্যর্থঃ মুগান্বেদণার্থেনলোপের্দ্ধোহ্রস্বঃ। রঞ্জরতি অনুরক্তান্ করেতি। কুন্যুতীতি। ইনিগুণেহুস্বঃ। ক্রসইত্যপরেপঠন্তিত্তব্দ্ধোহ্রস্বঃ। ৫৪৯॥

গৃত शकामिका।

জুরন্জাতি। জুদ্বয়োহানো দিপ রন্জ্রাগবর্ণাক্তরোৎ পাদনয়োঃ দিউ জনী প্রাত্রভাবেদিআ কুদ্দিপ। মৃণালেষণমিতি। গাতুনামনেকার্থিয়াদিতিভাবঃ। অন্তৎ প্রভাপ্রকাশিকায়াং জ্ঞাতব্যং। ৫৪৯॥ কমিচম্যমিবর্জিতাঃ। কাময়তে আচাময়তি আময়তিব্যাধিঃ। ৫৫০॥ জ্বল হ্বল হ্মাল নমোংসুপদর্গাবিভাষয়া। মনুবন্ধাঃ। জ্বলয়তি হ্বলয়তি শ্বালয়তি নময়তীত্যাদি। অনুপদর্গাঃ কিং নিত্যং হ্রস্বঃ প্রজ্বলয়তি প্রণম-য়তি। ৫৫১॥

ছত্রৎসাহে। ছদয়তি সীমন্তিনীন্তৰুণঃ। অন্যত্রছাদয়ত্যঙ্গং। ৫৫২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কমি। কম্ অম্ এত ৰজ্জিতা এত দ্ৰিশা অমন্তামিতাঃস্তঃ। কাময়ত ইতি। কমেঙিন্মিত্বাভাবা-ছদ্ধেঙি মুবন্ধ সাদাল্যনে পদং। ৫৫০॥

গ্তপ্ৰকাশিকা ৷

কমীতি। কমিকান্ত্যভিলাযয়েঃ ভুআ চমুঅদনেভুপ অম্রোগেচুপ অম্গতিশব্দসন্তক্তিয়ু ভুপ অয়-ঞেৎ হৈতুকেনাপ্রয়োগঃ। ৫৫০॥

প্রভাপকাশিকা।

জল। জল্দীপ্তিকম্পয়োঃ হবল্ ক্ষল্ চলনেনম এতে উপদর্গরহিতাবামিতঃ। জলাদীনামকার*ছন্দোহর্থঃ। জলতি কশ্চিত্তমন্তঃ প্রযুঙ্কুইতীনির্দ্ধোপক্ষের্স্বঃ। আদিপদাৎ জ্বালয়তি
হবলতিকশ্চিত্তমন্তঃ প্রযুঙ্কে ইনিহ্বালয়তি এবং ক্ষালয়তি। নিত্যং ব্রস্বইতি। জ্ল্ হবল্ ক্ষলাং
জ্বাদিস্বান্ধযোহ্মন্তাদিত্যর্থঃ। গহং। কথম্ উন্নামিতাখিলমহীধরকন্দরস্থেতি উন্নম্শব্দানাম্বইন্ এবং
দংক্রাময়তি বিভ্রাময়তি। শন্তৃঙন্তাদিন্ সংক্রাময়তীতি হুর্গঃ। ৫৫১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

জলতি। জল্ সল্ ক্লল্ ভূপ এন্ প্রহারনমন্ধরণশব্দের ভূপণাদয়োনাদয়ঃ স্মৃতাইতি শত্তনঃ। এবং প্রহালয়তি প্রহালয়তি। প্রথময়তীতি। ভিন্নপদেহপি প্রাদেরতুরোরাদন্তরশ্চধাত্বাদেরিত্যনেন এং। ৫৫১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ছত্ন উৎসাহেছদ্ চুরাদিঃ ছদয়তীতি। ছদ্ঘট্দস্বরণে অন্যত্ত সম্বরণে ছাদদয়তি আর্ণোতীত্যর্থঃ। অন্যেতুছদ্ অপবারণেচুরাদ্যন্তর্গতে জ্বাদেপিঠ্যতে সবনেপ্রাণনেচ্ঘটাদিঃ সবনং শক্তিঃ প্রাণনং জীবনমিত্যাহাঃ। ৫৫২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ছত্বংসাহইতি। ধাতুনামনেকার্থস্বাদ্যদাছদ্ উৎসাহেবর্ত্ততে তদাচুরাদিশ্মপুবন্ধশ্চ। ছদয়তীতি। উৎসাহয়তীত্যর্থঃ। সীমন্তনীং স্ত্রিয়ং তরুণোযুবা। স্ত্রীযোঘিদবলাযোঘানারী সীমন্তিনীবধূরিতি তরুণোযুবেতি চামরঃ। অন্তর্ত উৎসাহাদন্যত্ত। ছাদয়তি আরুণোর্তি। অত্রার্থেপি ছদ্ চুরাদিঃ কিস্তুনমনুবন্ধইতি নহ্রয়ঃ। সংবরণার্থকশ্ছদোহদন্তোপ্যন্তিতম্ম ছাদয়তীতিপ্রয়োগঃ। ৫৫২॥

চলিঃ কম্পে। চলয়তি বস্থব্ধরাং সৈন্যং। অন্যত্রচালয়তি সেনাং সেনানীঃ। ৫৫৩॥

জিহ্বাব্যাকুলনেলডিঃ। লডয়তিজিহ্বাং। ইতস্ততোনয়নার্থেলাডয়তি-বাছু। ৫৫৪ ॥

মদীর্হর্যগ্রাপনেচ। মদয়তিচেতোধনাবাপ্তিঃ ধনহানিশ্চ। অন্যত্র উন্মা-দয়তি মদনঃ। ৫৫৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চলিঃ। মিং স্থাং। চলয়তি কম্পায়তীত্যর্থঃ। অন্যত্রেতি। কম্পানাদন্যত্রগমনইত্যর্থঃ। চালয়তিগময়তীত্যর্থঃ। এবং চলয়তি শাখাং দেশান্তরাপ্রাপ্রোভবতি কম্পানং দেশান্তরাপ্রাপ্রির্ত্রার্থঃ চালয়তিসূত্রং সঞ্চারণমত্রার্থঃ চালয়তিশাখাং দেশান্তরপ্রাপণমত্রার্থ ইতিগৌমিচন্দ্রঃ। ৫৫৩॥

गृष्यकाणिका।

চলিরিতি। চল্কম্পনগমনয়োঃ ভুপ। তত্তকম্পে২র্থেচলিশ্মিদিত্যর্থঃ। অত্রার্থে হৈতুকইন্। চল্পোষণেচুপ তত্তচালয়তি। ৫৫৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জিহ্বা। লিছিলাসেভুবাদিঃ জিহ্বামণ্ডনেঘটাদির্দ্মিৎ স্থাৎ। মণ্ডনমিতস্ততঃ ক্ষেপ্ণং তদেব-ব্যালনং লডয়তিমণ্ডয়তীত্যর্থঃ। বিলাসেত্বাহুলাডয়তি ইতস্ততোনয়তি। ৫৫৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

জিলেতি। লছ্ বিলাদে ভূপ বিলাদ ইতস্ততোনয়নং জিলামগুনেঘটাদিঃ। জিলায়ামগুনমিতস্তঃ পেক্ষণং তদেবব্যাকুলনং তত্তার্থে লছ্ মিং ইতস্ততোনয়নমর্থদেচভদানমিং। লাডয়তীত্যত্ত
হৈত্কইন্ মিল্লাভাবান্ন হ্রস্থা। লছ্ উপদেবাকল্পনয়োঃ চুপ অত্যার্থেনমিং। লালয়েং পঞ্চব্যাণীতিচানক্যঃ।
ব্যাডাদানান্ত ভস্তলইতি ভস্তলঃ। তথা উৎপূর্কোলছ্ ঘটাদিঃ যথানর্যে তথা পোরস্তোয়াং দিশিকুস্তমকেদারকলিকাকবাটন্নীমিন্দুং কিরণলহরীমূললয়তীতি। প্রদারয়তীত্যর্থঃ। তত্ত্বৈ পুরস্তাদন্তেযামপি শিথরি
গামুললয়তি চালয়তীত্যর্থঃ। মাঘেচ তাবংখরঃ প্রথরমূললয়াঞ্চকারেতি উৎপপাতেত্যর্থঃ। সর্বত্ত
ভস্তলঃ। মিতাং হ্রস্থঃ। লছ আক্ষেপে অদন্তঃ চুপতত্তোপধোপধাত্বান্নবৃদ্ধিঃ লড্য়তীতি। ৫৫৪ ॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

মদী। মদীহর্ষেদিবাদিঃ হর্ষেপ্রাপনেচ ঘটাদিঃ মিৎস্থাৎ। অন্তমতে গ্লেপ্র্টদন্তে অনট্ প্লেপনং দৈন্তং মদীপ্রেপনহর্ষণয়োঃ। ধনাবাপ্তিশ্চেতোমদয়তি হর্ষয়তি ধনহানিশ্চচেতোমদয়তি গ্লাপয়তীত্যথোঁ। অন্তত্ত্বতি। উন্মাদয়তি উন্মত্তং করোতীত্যর্থঃ। এবং মাদয়তি বিকলং করোতি প্রমাদয়তি অনবহিতং করোতি। ঈতিকরণং মদ্ভৃপ্তিযোগে ইত্যম্ভবারণার্থং। ৫৫৫॥ ফণ্গতৌ। ফণয়তিবনং। সজ্জীকরণেতৃ ফাণয়তি গোধুমচূর্ণং। ৫৫৬॥ শম্ দর্শনে। দর্শনং চাক্ষুষজ্ঞানং। তদন্যত্ত শময়তি রোগং নিশময়তি বিষ্ণুগাপাং। দর্শনেতু নিশাময়তি রূপং। ৫৫৭॥

যম্ স্যাদপরিবাদার্থে। রাজানিয়ময়েৎপ্রজাঃ। পরিবাদেভু নিয়াময়তি ছাত্রামধ্যস্থঃ। ৫৫৮॥

.গৃতপ্রকাশিকা।

মদীরিতি। হর্ষেপ্লাপনেচার্থেমদীর্ম্মদ্ধাতুর্ঘটাদিন্দ্রিৎ স্থাৎ। মদীহর্ষেমন্তীভাবেচ মন্তীভাবশ্চ প্লাপনং। অন্যত্রেতি। হর্ষপ্লাপনয়োরক্যত্রেত্যর্থঃ। মদীরিতি ঈদসুবন্ধগ্রহণং মদ্ তৃপ্তিযোগে ইত্যস্থ চুরাদ্যাত্মনেপদিনোক্রস্বং প্রতিবারণার্থং তেন মাদয়তে। ৫৫৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ফণ্। ফণ্গতি সজ্জীকরণয়োঃ। গতৌমিৎ ফণয়তি গচ্ছতীত্যর্থঃ। ফাণয়তি সজ্জীকরোতীত্যর্থঃ। ৫৫৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ফণ্। ফণ্ ভুপ। গতাবর্থেফণ্ মিৎস্থাদিত্যর্থঃ। ফণ্ নিম্নেহেচেতি ছুর্গঃ তত্রাপি ফাণয়-ভীতি। ৫৫৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শম্। অদর্শনে দর্শনভিন্নেহর্থে শম্ মিৎস্তাৎ। শাম্যতীতি ইনির্দ্ধোহ্রস্কঃ শময়তি দূরীকরোতি। বিষ্ণুগাথাং নিশময়তি শৃণোতি। দর্শনেত্বিতি। নিশাময়তিরূপং পশ্যতীত্যর্থঃ। স্বার্থেইন্। ৫৫৭ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শমিতি। শমু উপশমে দিপ। নিশময়তীতি। নিপূর্কাঃ শম্ প্রবণার্থন্চ। দর্শনার্থেনমিৎ। প্রবণদর্শনার্থয়োশ্চুরাদিঃ। কথং নিশাময়তত্ত্ৎপত্তিং বিস্তরাদানতোমমেতি সত্যং প্রবণার্থেব্রস্বেত্রস্বস্থা দীর্ঘতা কচিদিতিদীর্ঘশ্চন্দ্রি। যদ্বানিশাময়চক্ষুর্জ্জানবিষয়ামিব কুর্বিত্যর্থঃ। জ্ঞানেন চক্ষুযাপশ্যেতি চণ্ডীটীকা। ৫৫৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যন্। পরিবাদান্যশ্মির্মর্থে যন্ধাতুন্মিৎ। রাজেতি। প্রজানিয়ময়েৎ নিয়মবতীঃ কুর্য্যাৎ অত্র-হৈতুকইন্। পরিবাদেত্বিতি। মধ্যস্থঃছাত্রান্নিয়াময়তি পরীবাদবতঃ করোতীত্যর্থঃ। যমু অপরিবেশনে ইত্যেকে যমুপরিবেশনে চুরাদিঃ যমুউপরমেভুবাদিঃ এষপরিবেশনে ঘটাদিঃ পরিবেশনমামন্ত্রণম্ আযময়তে অবুধাদেরিত্যাত্মনেপদম্ আত্মনেপদিপ্রত্যুদাহরণপ্রদর্শনেন ভুবাদিগণপঠিতস্থাগ্রহণং দৃঢ়ীকৃতং। শ্রাপাকে। মনুবন্ধঃ। শ্রপয়তি চৰুং। প্রতিপাদনেতু শ্রাপয়তিশিষ্যং।৫৫৯॥ জ্ঞামারণতোষণ নিশানেষু। জ্ঞপয়তি পশূন্ যাজ্ঞিকঃ জ্ঞপয়তি গুৰুং জ্ঞপয়তি শাস্ত্রং তেজয়তি ইত্যর্থঃ। অন্যেষান্ত নিশামনেম্বিতিপাঠঃ নিশামনক্ষাক্ষ্ম-জ্ঞানং তত্রজ্ঞামিৎ সংজ্ঞকঃ জ্ঞপয়ত্যাদিত্যং দশ্য়তীত্যর্থঃ। অন্যত্র জ্ঞাপয়তিবার্ত্তাং। ৫৬০॥

পরিবেশনাতিরিক্তেকথং সংযময়তি ইতিনচোদ্যং নাম্মইন্করণাৎ। পরিবেশনইতি চন্দ্রস্থমতং সংযময়তি নিয়ময়তীত্যুদাহরণং তস্থ। ৫৫৮ ॥

গু ঢপ্রকাশিকা।

যমিতি। যমু উপরমেভুপ ধাতৃনামনেকার্থস্বাৎপরিবাদোহপ্যর্থঃ তদ্ভিন্নেহর্থে যম্ মিৎ স্যাৎ। যমুপরিবেশনপরিবেইনয়োঃ চুপ পরিবেশনমন্নাদেরর্পণ্য আমন্ত্রণঞ্চ তত্ত্রাপি হ্রস্বঃ তয়োঃ পরিবাদভিন্নত্বাৎ যথাযময়তি ত্রাহ্মণান্ যময়তি চন্দ্রমিতি অর্থন্বয়স্থা উদাহরণন্বয়ম্ যমু অপরিবেশনেইতিবোপদেবঃ। ৫৬৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্রাপা। শ্রাপাকে ঘটাদিঃ শ্রাতিকশ্চিদিতীনিচুরাদিস্বাদিনিচ দ্বয়োশ্চ শ্রপয়তি পচতীত্যর্থঃ। শ্রাপয়তীতি। প্রতিপাদয়তীত্যর্থঃ ধাতূনামনেকার্থস্বাৎ এবং শ্রাপয়তি ঘর্মঃ স্বেদয়তীত্যর্থঃ। ৫৫৯॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

শ্রেতি। শ্রাপাকে স্বেদেচ অপ চুউ। পাকের্থে ঘটাদিঃ। শ্রপয়তি পাচয়তি পচতিবাচরুং ছুগ্পকদেবারং। হব্যপাকেচরুঃ পুমানিত্যমরঃ। প্রতিপাদনেতু জ্ঞানেচেত্যর্থঃ তুঃ সমুচ্চয়েতেন স্বেদার্থেচ শ্রাপয়তি। ৫৫৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

জ্ঞান। জ্ঞানরেণাদ্যর্থেরিমংস্থাং। জ্ঞাপরতি মারয়তি তোষয়তি। নিশানং তেজনং নির্মালীকরণমিতিযাবং। অন্যেলমিতি নিশানেধিত্যত্রইতিশেষঃ। অন্যত্র মারণতোবণনিশানেভ্যঃ অন্যত্র জ্ঞাপয়তি অনবোধয়তীত্যর্থঃ। জ্ঞাপিতি বেদানিতিতু জ্ঞানইত্যস্থ চুরাদিমসুবন্ধস্থ। জ্ঞাপয়নইতিত্ব জ্ঞাপয়ত্র মিচ্ছমানোবোধয়তুমভিপ্রেতইতি। অত্র জ্ঞামারণতোষণাবলোকনেয় অবলোকনং চক্ষুঃসাধনং জ্ঞানং জ্ঞাপয়তি শাস্ত্রং তাঁক্ষ্ণং করোতীত্যর্থইতি গোমী। অবলোকনস্থানে তেজনেধিতিচন্দ্রঃ। ৫৬০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

জ্ঞেতি। জ্ঞাবোধে ক্র্যাপ। ধাতৃনামনেকার্থস্থারণাদ্যর্থেরু মিদিত্যর্থঃ। তেজয়তি তীক্ষ্ণী-করোতাত্যথঃ। অন্যেশং দুর্ঘটাদীনাং। জ্ঞানিযোগে চুপইতি জ্ঞাপয়তি ভৃত্যং স্বামীতিদুর্গঃ। অন্যমতে বুধযুধাদ্যন্তঃপতিতত্বাদ্বন্তরপদী। ৫৬০॥

বাতুবিজ্ঞপ্তো। বিজ্ঞাপয়তি বিজ্ঞপয়তি নৃপং মন্ত্রী। ৫৬১॥
গ্রাহ্মাবন্ধময়শ্চানুপদর্গাঃ। গ্লাপয়ত্যঙ্গং। বাগ্লপয়তি হ্মপয়তি হ্মাপয়তি
দেবং বনয়তি বময়তি। সোপদর্গাস্ত যথাযথং প্রগ্লাপয়তি প্রহাণয়তি প্রবানয়তি
উদ্ধয়তি। ৫৬২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাতু। জ্ঞানিং বিজ্ঞপ্তিরববোধনং। জ্ঞানে বা জ্ঞপয়তি জ্ঞাপয়তি জ্ঞানে অপ্রাপ্তোপক্ষেকথং জ্ঞপিন্দোবৃদ্ধিবাচী প্রযোজকার্থাভাবাং চুরাদিত্বাং স্বার্থিকইন্মেবকরণীয়ঃ তেন জ্ঞাপিধাতোঃ ক্ত্রো অনেনহ্রস্বেচেনোলোপঃ। চুরাদি জ্ঞপ্ ধাতোবাবিজ্ঞপ্তিশ্চ। ৫৬১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বান্ধিতি। বিজ্ঞপ্তোজ্ঞাপনে জ্ঞানপ্রযোজকেইতিযাবৎ। ক্র্যাদিজ্ঞাপাতুর্জ্ঞানার্থস্তশ্মাৎহৈতুক-ইন্নিতি তাৎপর্য্যং। যত্ত্ব বিজ্ঞপ্তিরববোধনমিতি প্রভাপ্রকাশিকোক্তং তত্রাপি অববোধনং জ্ঞাপনমিত্যর্থঃ। তুশব্দোজ্ঞানার্যচুরাদি পরস্থৈপদি জ্ঞাসমুচ্চায়কঃ তম্মাপি বা হ্রস্বঃ স্থাদিতি। ৫৬১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গ্লামা। গ্রৈহর্ষক্ষেয়াবন্ অয়ঞ্জিয়াসামাত্যপরত্বাৎ ক্রিয়াবিশেষণপরতয়ানোচ্যতে। টুবমু
এতেহনুপদর্গাবামিতঃ স্ত্যঃ। গ্লামাএতয়ারপ্রাপ্রেবিনাজ্রাদিপাচাৎ বমোহমন্তত্বানিত্যপ্রাপ্তে বিভাষা।
বম্ সাহচর্যাৎ বন্ধাতোর্ভোবাদি কন্তাত্রগ্রহণং নতনাদিবনুষাচনেইত্যন্ত। গ্লামতীতি। এচামান্ত্রপঃ
হ্রম্মেপয়তি। বামিতং লঙ্গ্রেং কামং লঙ্গ্রিতং নতু বাময়েদিতি বৈদ্যকে। স্বন্ধন্ফণাং ঘটাদিত্বং
কেচিম্মন্তেন ইত্যুভয়মতমাপ্রিত্য বিকল্পমাহ সূত্রক্লিতি গোমাচন্ত্রঃ। দল্ বিদারণেমিৎদলয়তি
দালয়তিবা খল্ খালয়তি। বচনানি খালয়ন্ পদেপদে ইতিক্সারঃ। ধ্বন্ ধ্বনয়তি অন্যত্র ধ্বানয়তি
স্মৃত্যাধ্বানে আধ্বানয়্তকণ্ঠা স্মৃতিঃ স্তরয়তি অন্যত্র স্থারয়তি দৃভয়েদয়য়তি অন্যত্র প্রদারয়তি
বিদারণমত্রার্থঃ নৃনয়ে নয়য়তি অন্যত্র নায়য়তি ব্বরণে বয়য়তিকন্যাম্ অন্যত্র বায়য়তি পর্যাপাঙ্গ খ্লঃ
পরিস্থাদয়তি অপস্থাদয়তি আস্থাদয়তি জ্বাদিজাৎ পক্ষেমিৎ অন্যত্র ব্লিরেব। ৫৬২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শ্বেতি। শৈত্বপ এচাং পাঠস্থিতান্তানামিত্যাদিনা অন্তস্থাকারঃ ফার্শোচেতুপ ধারাদেঃ ষস্তদঃ
বন্ধদন্তজিশব্দব্যার্ত্তি হিংদাস্থভুপ অয়ং ক্রিয়াদামান্তবাচাত্যন্তে। টুব্য্ উদ্গিরণেভূপ এতেচানুপদর্গাবা
মিতঃ স্থাঃ। চকারেণপ্রভাপ্রকাশিকোক্তাঅন্তেচবামিতঃ স্থারিতিযোজনীয়ং। ভুবাদিবম্দাহচর্যাৎ
ভুবাদিবনোগ্রহণং নতুবনুযাচনেইত্যস্ততনাদ্যাত্মনেপদিনঃ তেন তস্তবানয়তীত্যেব প্রয়োগোনতুবাহ্রস্মঃ।
সোপদর্গান্তিত। যথাযথং যথাপ্রাপ্তান্ত্মার্বাহনে। প্রশ্লাপয়তীত্যদিত্রয়ের্দ্ধিঃ উন্নময়তীত্যত্রামন্ততয়ানিত্যং
হ্রস্মঃ। শ্রাপাকেইত্যাদি গ্লাপয়ত্যঙ্গমিত্যন্তমার্য্যাছন্দঃ। ৫৬২॥

শাছাসাহ্বাব্যাবেপাং যঃ। এভ্যঃ সপ্তভ্যোষঃ স্যাদিনিপরে। শোশায়-য়তি ছোছায়য়তি অবনায়য়তি শত্র আহ্বায়য়তিমলং ব্যায়য়তিখনং বেঞ্বায়-য়তিপটং পাপানেপৈ বিশোষণেদ্যোশ্চ পায়য়তিপয়ঃ পোতং। ৫৬৩॥

কুরীক্সায্যোঃ ক্লোপক্ষাপো। ইনিপরে কুরীশক্দেনয়োঃ ক্লোপয়তিবস্ত্রং ক্ষায়ীবিধূননে ক্যাপয়তিপক্ষান্। ৫৬৪॥

অব্দ্রিরীর্যাদন্তাৎপঃ। ঋগতৌহীলজ্জায়াৎ রীগতিরেষণয়োঃ ব্লীবরণেএভ্য আদন্তেভ্যন্চ পপ্রত্যয়ঃ স্যাদিনিগুণঃ অর্পয়তি হ্রেপয়তি রেপয়তি রেপর রি দাঞাদিষয়াৎ দাপয়তি ধাপয়তি অধ্যাপয়তি ৫৬৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শাছা। ইনীতি। হৈতুকইনিসর্বত্রযোজ্যন্। এচামাত্রং ষট্স্থাগমশ্চইনি শায়িছায়ীত্যাদি-স্থিতো অনিগুণেশায়য়তীত্যাদয়ঃ। ব্যায়য়তিধনং সম্বরয়তীত্যর্থঃ। পায়য়তীতি। পয়ঃ ক্ষীরং পোতকং শিশুং।৫৬৩॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

শেতি। শোতনুকরণেদিপ ছোছেদনেদিপ সোহস্তকর্মণিদিপ স্বেঞ্ স্পর্কাশব্যাঃ তুউ ব্যেঞ্
আছাদনে ভুউ বেঞ্ তন্ত্রসন্তানেভুউ। বেইতাত্রঅন্তস্তাকারকরণেবা ইত্যস্তাপিগ্রহণং স্তাদিতি অন্তাকারং
নকুত্বাবেইত্যক্তং তেন বাগতিহিংসয়োরিত্যস্তবাপয়তীতি। নচবাকরণেহপি ভুবাদিসাহচর্যাৎ
ভুবাদিবেশতোরেবগ্রহণং স্তামতুবাইতাস্তেতিবাচ্যং বাইত্যস্তব্যদাসং প্রতিসাহচর্যয্তায়স্বীকারস্ত গোরবাৎ
তদপেক্রাবেইত্যেকারান্তপাঠস্তলাঘ্বাৎ। পাপৈভুপ। পোতং শিশুং। পোতঃ শিশোবহিত্তেচেতি
মেদিনা। ৫৬০।

প্রভাপ্রকাশিকা।

কুয়া। কুয়াক্ষাযোজিয়েঃ স্থানেকোপক্ষাপোক্রমেণস্থাতাং। উন্দনং স্তেমনং বস্ত্রং ক্লোপয়তি স্তেম্যতাত্যর্থং। ৫৬৪॥

· গু**ঢ়প্রকাশিকা**।

ক্ররতা। কুর্মাভুষা ক্যায়াভুষা। ক্যায়য়তিক স্পায়তীতার্থ:।৫৬৪।

প্রভাপ্রকাশিকা।

অর্ত্তি। রাতিসরেকঃ রেষণং হিংসাঋণার্ত্তঃ অর্পয়তি ঋচ্ছতি ইয়র্ত্তিঋণাতিবাকশ্চিদিতীনিপাগমেগুণঃ এবমন্যত্তাপি। অদন্তমাহ। ডুদাঞ্দানেদাণ্ দেঙ্ দোদাপ্ দৈপাং। ধাপয়তীতিভূধাঞ্ ধেট্ অনয়োঃ অধ্যাপয়তীতি। অধিইঙ্ আম্বরস্তেত্যাদিনাআ। ৫৬৫॥

পাতের্লঃ। ইনিস্যাৎ। পালয়তি। ৫৬৬॥

ধূঞ্ প্রীঞ্ভ্যাং নঃ স্থাং। ইনিপরে। ধূনয়তিকেশান্ প্রীণয়তিগুরুন্।৫৬৭॥

স্ফায়োযোবঃ। ইনিস্যাং। স্ফাবয়তি। ৫৬৮॥

শাদেক্সমাগতে । প্রাপ্রে:তিইনিপরে। ফলানিশাত্মতি। স্বাধ্তে

শদোদস্তমগতৌ। প্রাপ্নোতিইনিপরে। ফলানিশাতয়তি। অগতৌকিৎ গাং শাদয়তিগোপঃ। ৫৬৯॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অতীতি। অতীতিসামান্তনির্দেশাং খাগতিপ্রাপণয়োঃ ভুপ ঋগতো অক্র্যাপ এতংত্রয়াণাং গ্রহণং হ্রীজুপ রীক্র্যাপ এবং রীঙ্ প্রবণক্ষরণয়োঃ দিঅ অনয়োঃ ব্লীক্র্যাপ। দাঞাদিমধামিতি। দাঞ্জু দাণ্ দানেভুপ দাপ্ ছেদনেঅপ দেঙ্পালনেভুআ দৈপ্ শোধনেভুপ দোখগুনেদিপ ইতিমধামিত্যর্থঃ। ধাপয়তীতি। ডুধাঞ্ ধারণ পোষণয়োঃ জুউ ধেট্পানেভুপ উভয়োঃ ধাপয়তীতিপ্রয়োগঃ। ৫৬৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পাতে। পাতেরিতিনির্দেশাদদাদিগণস্থ রক্ষণার্থস্থ পাধাতোল:। ৫৬৬॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

পাতেরিতি। সূত্রাভাবে পায়য়তীতিস্থাদিতিসূত্রং। পাল্রক্ষণেভুপ অয়স্তবার্চাদিঃ অর্চাদয়স্থা-ধুনাদ্বেত্যুক্তস্বাৎ তেনপালয়তিপালতি। ৫৬৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ধূঞ্। ধূঞ্ প্ৰীঞ্ আভ্যাং নঃ স্থাৎ। ৫৬৭ ॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা ৷

ধূঞিতি। ধূঞ্কস্পনে স্বাক্র্যাউ প্রীঞ্ প্রাণনপ্রীতিবাসনাস্ক্র্যাউ। প্রীণয়তীতিনাগমেণত্বং। ছাশেত্যাদিএতৎ সূত্রান্তং বিহ্যুন্মালাছন্দঃ। মো মো গো গো বিহ্যুন্মালেতিতল্লক্ষণাৎ। ৫৬৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্থারো। স্থায়ী ওপ্যায়ীর্দ্ধো অশুয স্থানেবঃ স্থায়ের্বাদেশইতি কলাপসূত্রাদ্বকারপাঠঃ রেফপাঠস্তুপ্রামাদিকঃ। ৫৬৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা ৷

ক্ষায়ো। ক্ষায় ভূআ। ইনিপরেক্ষায়োয় স্থানেবকারঃস্থাদিত্যর্থঃ। রেফপাঠস্তপ্রামাদিকঃ। ক্ষায়ের্বাদেশইতিকলাপসূত্রাৎ পর্য্যপাশ্লীদ্দিবিষ্ঠাদোসংদর্শ্যভয়দং বপুঃ। অপিক্ষবচ্চবন্ধুনাং ননঙ্ক্ ক্ষুবিবক্রমং মুহুরিতিভট্টি লিখিতাচ্চ। ৫৬৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শদো। দইত্যকারউচ্চারণার্থঃ। অগতোগতিভিন্নেহর্থে। শাতয়তীতি। হীনস্তীত্যর্থঃ। গামিতি গাং গময়তীত্যর্থঃ। ৫৬৯॥ স্বেহনেলিয়োলীনলীল্লাপোবিজ্ঞেয়া:। ইনি। বিলীনয়তি বিলীলয়তি বিলাপয়তিয়তং। ৫৭০॥

পূজাভিভবয়োস্তুলাপ্। আত্মনেচ। স্যাৎ। জটাভিরালাপয়তেশিবং পূজয়তীত্যর্থঃ। শ্যেনঃ কপোতানুল্লাপয়তে অভিভবতীত্যর্থঃ। ৫৭১॥

ভিয়োভাপভীষৌহেতোর্ভয়ং যদি। ইনিস্যাতামাত্মনেপদঞ্চ। মুণ্ডোভাপ-য়তে কবন্ধোভীষয়তে। হেতৃভয়েকিং কুঞ্চিকয়ৈনং ভায়য়তিপ্পফীঃ করণাদত্রভী-র্মহেতৃকর্ত্ত্বঃ। ৫৭২

গৃতপ্রকাশিকা ৷

শদইতি। শদ্৯গতিশাতনবিশীর্ণতাম্ভুপ। প্রাপ্নোতীত্যধ্যাহারঃ। শাত্য়তি পাত্য়তীত্যর্থঃ। ৫৬৯ ॥

পুভাপুকাশিকা।

স্থেহ। লীধাতোঃ স্থানেলীন্ লীল্ লাপইত্যাদেশাবিজ্ঞেয়াঃ স্নেহ্নেহর্থে উপদর্গযোগেন্যথা-প্রয়োগনূহং। ৫৭০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সেহনইতি। লীনেত্যকার*ছন্দোর্থঃ। স্নেহনইতিকথনং লীঙ্ শ্লেষণেদিআ লীশ্লেষণেক্র্যাপ ইত্যুভয়গ্রহণার্থং লীদ্রবীকরণেচুপইত্যুস্তবারণার্থঞ। বীলীনয়তি দ্রবীকরোতীত্যর্থং এবমপরয়োরর্থঃ। চুর:দেস্তলায়য়তি , স্লবর্ণং দ্রবীকরোতীত্যর্থঃ নাত্রস্লেহদ্রব্যুদ্রবীকরণরপ্রস্লেহনমর্থঃ কিন্তু সামাভ্যবস্তু-দ্রবীকরণমেবেতি। ৫৭০ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পূজা। পূজাতিভবয়োঃ পুনঃ লিয়োলাপ্ভবতিআত্মনেপদঞ্চ্যাৎ। জটাভিরিতিতৃতীয়াবি-শেষণে। ৫৭১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

পুক্তে। তুশন্দোলিয়ইত্যস্ত্ৰসমুচ্চায়কঃ। আত্মনেচেতি। এতেনঅত্ৰাৰ্থ ইনন্তলিয়ঃ প্রস্থৈপদং নেতিপ্রতীয়তে। উপদর্গবলাদেতদর্থবিয়ং। ৫৭১॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

ভিয়ো। ভিয়োভীধাতোঃ স্থানেভাপ্ ভীষাবিনিস্থাতাং হেতোর্ছেতুকর্ত্ত্বঃ সকাশাৎ যদিভয়মিত্যর্থঃ আত্মনেপদঞ্চ্যাৎ। মুগুইতি। মুণ্ডোমুগুতোহেতুকর্ত্তাএবং কবন্ধোহপি। ধ্বফঃ প্রগল্ভঃ। ৫৭২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ভিয়ইতি। ঞিভীভয়েজুপ। ভাপেত্যকারশ্ছন্দোহর্থঃ। কুঞ্চিকয়েতি। কুঞ্চিকাকেচুয়াইতি খ্যাতা করণেত্তীয়া অত্র কুঞ্চিকায়াঃ করণাদ্ধয়ং নহেতুকর্ত্তুর্থ ক্রীং। ভীভয়েচুপ অস্থাপিভায়য়তি হেতুকর্তুর্ভয়াভাবাং। ৫৭২॥

বোজু থিধুননে। পক্ষৈৰুপবাজয়তি দ্ৰুমান্। অন্যত্ত উপবাপয়তি কেশান্ স্থান্ধীকরোতীত্যর্থঃ। ৫৭৩॥

বিয়োবাপ্রজনে। তচ্চপ্রথমং গর্ভধারণং। অজেরীতস্যবাদেশঃ স্যাদিনি-পরে। পুরোবাতোগাঃ প্রবাপয়তি। প্রজনেকিং কেশান্ প্রবায়য়তি। ৫৭৪॥ ছ্যেৰুকারদীর্ঘঃ স্যাং। ইনি। দৃষয়তি পরসিদ্ধান্তং বাদী। ৫৭৫॥ চিত্তাদিবিরতৌত্বা। চিত্তাদি বৈরাগ্যপ্রকাশেছ্যেৰুকারদীর্ঘোবাস্যাং। চিত্তং দৃষয়তি সনোদৃষয়তি প্রজাবুদ্ধ্যাদেরেবং বা চিত্তং দোষয়তীত্যাদি।৫৭৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বোজু। বাগতিবন্ধনয়োঃ অস্থাৎ জুক্সাদিনিবিধূননেকম্পনের্থে। উপেতি। ক্রনান্ বৃক্ষান্ বিধূনয়তীত্যর্থঃ। ৫৭৩॥

গ্ঢপ্রকাশিকা।

বইতি। বা অপ মষ্ঠ্যেকবচনে অঘুট্স্বরেষু ধাতৃনামালোপঃ। অন্যত্তেতি। বিধূননাদন্যত্তেত্যর্থঃ। প্রস্তাবাদ্ধৈতুকেনিজুগাগমবিধানাৎ বা স্লখাপ্তিগতি দেবাস্তচুপ অস্যাপি বাপয়তীতি। ৫৭৩॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

বিয়ো। প্রজনমেবাহতচ্চেতি। তস্থাবিয়ঃ স্থানে। পুরোবাতইতি। প্র্বাতঃ গাঃপ্রথমগর্ভং ধারয়তীত্যর্থঃ। প্রবায়য়তীতি। ইনির্দ্ধিঃ ক্ষেপয়তীত্যর্থঃ। ৫৭৪॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

বিয়ইতি। বিয়ইতিবিশেষয়তি অজেব্লীতি। অজেব্লীরননাদিষিত্যনেনবীআদেশে তস্তবিয়ঃ স্থানেবাদেশইত্যর্থঃ। বীগত্যাদে অপ তস্ততু বায়য়তীত্যেব প্রয়োগইতি। ঈদৃক্ কল্পনং ব্যবস্থাবাচকবা-শব্দবশাৎ। ৫৭৪॥

প্রভাপকাশিকা।

ছুষে। দূষয়তীতি। ছুষ্ বৈকৃত্যে দিবাদিঃ ছুষ্যতীতি ইনিউকারদীর্ঘঃ উত্বকরণারগুণঃ। ৫৭৫॥

গূতপ্রকাশিকা।

ছুষেরিতি। ছুষ্বৈকৃত্যে বৈকৃত্যমশুদ্ধীভাবঃ। দূষয়তি অশুদ্ধং কথয়তীত্যর্থঃ। ৫৭৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চিত্তা। আদিনামনঃ প্রজ্ঞাবুদ্ধ্যাদেগ্রহণমিত্যাহ্মনইত্যাদি। দোষয়তীতি দীর্ঘাভাবেগুণঃ।৫৭৬॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

চিত্তাদীতি। তুগ্রহণং পরত্রবাসুর্ত্তিবারণার্থং। বুদ্ধ্যাদেরিত্যাদিনামতি মনীষাদীনাং গ্রহণং।৫৭৬॥

আম্বরস্যাম্মিজিক্রীঙাং। এষাং স্বরস্যাকারইনিপরে। বিম্মাপয়তি বিজ্ঞা-পয়তি বিক্রাপয়তি অধ্যাপয়তি। ৫৭৭॥

চিম্ক্রোর্বা। ইনিম্বরস্যাকারঃ স্যাৎ। সঞ্চাপয়তি ক্ফারয়তি ক্ফোর-য়তি। ৫৭৮॥

ৰুহঃ পুনারোহরোপৌ। ইনিপরতঃ। রোহয়তি রোপয়তি ব্রীহীন্। ৫৭৯॥ গুণোজাগুঃ। স্বরং জাগরয়ত্যসৌ। ৫৮০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আসা । বিম্মাপয়তীত্যাদি। স্বয়তেকশ্চিদিতীনিইকারস্থাত্বেপাগমঃ ইনন্তত্বাৎপরস্মৈপদং। ভট্টনারায়ণস্ত বিম্মাপয়তেইত্যাহ। ৫৭৭॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

আস্বরেশ্যতি। স্মিঙ্ ঈষদ্ধয়ণেভুআ জিজয়েভুপ ডুক্রীঞ্দ্রব্যবিনিময়েক্র্যাউ ইঙ্ অধ্যয়নে অপ। ৫৭৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

চিক্ষ্। চিধাতোঃ ক্ষ্র্ বিকদনে ইত্যেতস্থচ ইনিইকারোকারয়োরাত্বে পুর্ব্বত্রপাগমঃ বাপ্র্বত রদ্ধে সঞ্চাবয়তি পরত্রাকারাভাবপক্ষেগুণঃ। ৫৭৮॥

গৃতপ্রকাশিক।।

চীতি। চিঞ্ সঞ্যে ভুউ চিঞ্চয়নে স্বাউ ক্ষুর্ ভুপ। ৫৭৮

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

রুহ:। স্থাতাং। গুণেরোহয়তীতি সিদ্ধাবপিরোপবিধানার্থং পৃথগুভয়গ্রহণং তেনবারোপাদেশঃ স্থাদিত্যর্থে পর্য্যবস্থাতিপুনঃ শব্দোপাদানস্বর্দাৎ। রোহয়তীতিহৈতুকইন্। ৫৭৯॥

गृष्धकाणिका।

রুহইতি। পুনঃ পদমাগমভ্রমবারণার্থং রোপোবাইতিক্ততেপরত্রবাসুবৃত্তিঃ স্থাৎরোপইতিক্তে ভুরোহাভাবাপত্তিঃ স্থাদিতিরোহরোপাবিতিগ্রহণং। রুহঃপুনরিতে পুর্ববসূত্রস্থ কারিকাছন্দোঘটকং তেন আম্বরস্থানিজ্ঞী গ্রাং চিস্ফুরোর্বাক্রহঃ পুনঃ। ইতিছন্দঃ। ৫৭৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গুণো। জাগৃধাতোগুণঃ স্থাদিনির্দ্ধেকাধকঃ। জাগরয়তীতি হৈতৃকইন্। ৫৮০॥

ইণোগমিরবোধনে। গময়তি। বোধনেতু প্রত্যায়য়তি ইক্ অধিগময়তি।৫৮১॥ তৎকরোতি তদাচফ ইত্যাদ্যর্থের্ নায়ইন্। রঋকারয়য় পৃথাদেরিনীপ্রেয়-ক্ষিত্র মঙ্গাদুর বিশ্বের কাল্বর লাজ্য লপ্যস্তেইস্তাল্বর দিয়ঃ। যথাপৃথ্য়রোত্যাচন্টেবা প্রথয়তি। পৃথুৎ মুদ্রং দৃঢ়ঞৈব রুশঞ্চ ভূশমেবচ। পরিপূর্বর চ্থেব ঋচয়ারবিধীশ্বরেং। ঋচমাচফে ঋচয়তি রচয়তি প্রতিষ্ঠঃ প্রথয়য়ান্ প্রথিনেত্র দাহার্যাং। যথাযশঃ করোত্যাচফেবা যশয়তি পটয়তি বীঀয়া উপগায়তি উপবীঀয়তি ইন্তিনমতিক্রামতি অতিহন্তরতি পাশং বিমোচয়তি বিপাশয়তি লোকেকপন্তোতি উপশ্লোকয়তি সেনয়া অভিযাতি অভিষেণয়তি বর্মাণাসয়হতে সংবর্ময়তি। ৫৮২॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

গুণইতি। জাগৃনিদ্রাক্ষয়ে অপ অস্তগ্রহনিস্থাৎ। তুলাকোটিকাণে কুস্থ্যবিশিখং জাগরয়তীতি কালিদাসকৃতং। ৫৮০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইণো। ইণ্ধাতোঃ স্থানেগমাদেশঃ স্থাদবোধনে বোধনভিন্নেহর্থে। গময়তীতি হৈতুকেনিগমা-দেশঃ বৃদ্ধো অমন্তবানিত্বে হ্রস্কঃ। প্রত্যায়য়তীতি। বৃদ্ধো আয়্। ইগিতি। ইণ্ বদিগিতিবচনাদগমা-দেশঃ। ৫৮১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইণইতি। ইণ্গতো অপ। বোধনেত্বিতি। সর্বেগত্যর্থাজ্ঞানার্থাঃ প্রাপ্তার্থাশেচতি বচনাদিতি ভাবঃ। ৫৮১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তৎক। তৎকরোতি তদাচন্টে ইত্যাদ্যর্থের নাম্মং পরইন্ভবতি যত্মাদিন্ তদেব করোতীত্যাদর্থে প্রত্যাদিন্তঃ স্থবন্তং নাম। তিওন্তাদিবৎ হুঁপ্ শৃত্যং নামেতিদারঃ। পৃথাদিশবদ্য ঋকারস্তরঃ স্থাদিনি ইন্ঠনি ঈয়ন্সো ইমনিচ পরভূতেরু। লিঙ্গস্তেতি। স্থরাণাং মধ্যে অন্তঃস্বর আদির্য্যেষামব্যুবানামিতিবিগ্রহ স্তদ্গুণদন্দিজ্ঞানঃ। ন ক্ষরতি ন চলতীতি প্রধানস্থাদক্ষরং স্বরউচ্যতে ইনীত্যাদে পরে অনেকাক্ষরত্য লিঙ্গস্থযোহ্বয়বোহস্তঃস্বরাদিস্তস্থলোপোভবতি। প্রথয়তীতি। ইনিউলোপঃ ঋকারস্থরঃ। নতু প্রথয়তীত্যুকারস্থান্ত্যমাত্রস্বাহ্বকথমস্তঃস্বরাদিরিতি চেছ্চ্যতে আদ্যন্তবিদ্তুগপচারাদ্প্রস্বরাদিক্সস্তি। অনেকাক্ষরস্থেতি নির্দেশাৎবাচং করোতি বাচয়তি এবং স্ক্রমাচন্টেত্রদয়তি ক্রেশয়তি ক্রশয়তি ক্রশয়তি পরিব্রঢ়য়তি পর্যান্তয়িত প্রতায়তি ঋচধাতোর্মপ্রতিপ্রধাপধাত্বাৎ। পৃথাদয়ঃ ষট্গুণবচনাঃ। প্রথিষ্ঠইত্যাদি।

ইঠেয়ক্সুপুনগুণাদিতি ইষ্ঠন্ ইকারস্তরঃ উলোপঃ প্রথীয়ান্ ঈয়ক্ষুঃ প্রথিমাইমন্নণ্চ পৃথাদেরিতীমন্ আদিনাদ্রতীয়ান্ ক্রশীয়ান্ ভ্রশিষ্ঠঃ পরিব্রতিমেত্যাদি। যশয়তি অস্লোপঃ। বীণয়েতি। ইনাগানার্থস্যোক্তরাৎ গৈধাতোরপ্রয়োগঃ ইনন্তস্তধাতুত্বাৎ তস্মাৎ পূর্ব্বউপশব্দঃ বীণায়া আলোপ আদ্যন্ত-বদ্ভাবাং। অতিহস্তয়তাতি। হস্তিন ইন্ভাগলোপঃ। পাশমিতি। পাশাংকর্মণোবিমোচনে ইন্নিডি বজ্রধরঃ। এতৎসর্ব্যমিত্যাদ্যর্থেদ্বিত্যাদিশব্দাৎ। এবং সূত্রং করোতি সূত্রয়তি গ্রন্থং মুগুং করোতি গ্রন্থয়তি মুগুণকোমুণ্ডিতবচনঃ। মিশয়তি তালব্যঃ সারে। মিষ্ মুণ্ডনেমিষয়তি মিদ্দস্ত্যো-যদামিস্ সম্পর্কেচুরাদিরিতি বজ্রধরঃ। শ্লক্ষয়তি চিক্কনং করোতীত্যর্থঃ লবণয়তি লবণযোগাল্লবণঃ লবণং করোতি সূপং ব্রতাদ্যোজনাভোজনয়োঃ পয়োব্রতয়তিপয়োমাত্রং ভুঙ্কুইত্যর্থঃ এবং রুষলান্নং ব্রতয়তি র্ষলানং ভুঙ্ক্টইত্যর্থঃ। বজ্রধরস্ত রুষলানং নিয়মরূপং ব্রতমিবময়ানভোক্তব্যমিতি তস্মান্নিবর্তিতো-ভবতীত্যর্থঃ এবং নিয়মরূপং পয়োভোক্তব্যমিতি ব্রতং গৃহ্ণাতি। স্বচয়তীতি। হলিকলিবর্ণকৃতস্বচাদিতঃ ছলিহলং গৃহ্লাতি হলয়তি কলয়তি বৰ্ণয়তি কৃতয়তি হল্ বচনোহলিশব্দঃ কলিং গৃহ্ণাতি কল্ সংজ্ঞানে-ইরিতি ইঃ হলি অজহলং কলি অচকলং হলিকল্যোরচ্চেতি বৃদ্ধিবাধনার্থমকারঃ কৃতঃ শম্ভুনা। লোমান্সসুমাষ্টি অকুলোময়তি চুর্ণেরবধ্বংদতে অবচুর্ণয়তি বিনাশয়তি গুণুয়তি বেত্যর্থঃ। রূপান্নিদর্শনেরূপং পশুতি রূপয়তি নিশ্চিতং রূপং নিজং বাপশ্যতি নিরূপয়তি গ্রন্থং মীমাংসতইতি বজ্রধরঃ। তৃস্তং পাপং তৃস্তং ধুলিরিতি ভাষারতৌ বিভূস্তয়তি অঙ্গেভূস্তয়তি ধূলিং করোতি করণাচ্চ বস্তাদিন্ সমাচ্ছাদনে বস্তাৎ করণাৎ কর্মাণন্চ বস্ত্রেণ বস্ত্রং বা সমাচ্ছাদয়তি সম্বস্ত্রয়তি বাসশিছ্নত্তি সম্বাসয়তি স্রুপ্তসাচষ্টে স্রুজয়তি বস্তুলোপঃ অধিন্যাচষ্টে বিনোলোপঃ অজয়তি ভবানীমাচষ্টে ভবয়তি ভবান্যাআনীলুক্ রুদ্রাণীমাচষ্টে-রুদ্রতি শ্রেনামাচক্টে শ্রেভরতি এবমেনীমাচক্টে এতয়তি লোহিনীং লোহিতয়তি হরিণীং হরয়তি পুকাঁ ভাবেশ্যেতে ত্যাদি স্থিতিরিত্যতাত্ত। তুলাদকুকর্ষণে তুলৈরকুকর্ষতি অনুতূলয়তি কর্মমলমপকর্ষয়-তীত্যর্থঃ। অবভূলয়তীতি ছুর্গঃ। তুলয়াপরিচ্ছিনত্তি তুলয়তিস্মবিলোচনতারকাইতিমাঘঃ। বাদিত-বন্তং প্রযোজিতবান অবীনদদিত্যন্ত্র। মাতরং বক্তিমাতয়তি ইতিসারঃ। গোলমাচক্টে গোলয়তি প্রাতরাচটে প্রাত্যতি মরুত্মাচটে মরয়তি আশিষং দদাতি আচটেবাআশিষয়তি। সমাক্ করোতি সম্যাচয়তি ইতিদারঃ। গ্রীবয়াউৎপশ্রতি উদ্গ্রীবয়তি। দিশিবিদিশিদশগ্রীবমুদ্গ্রীবয়স্তইতি মুরারিঃ। বছলং করোতি বংহয়তি। কর্করণাদ্ধাত্বর্থে কর্ত্রপাৎবনং করিভিরবব্ধাতি অবকরয়তি দাত্তেণলুনাতি দাত্রয়তি কর্পগ্রহণং চক্ষুরাদেশ্লিবেধার্থং তেনাতি ক্রামতি চক্ষুধা হস্তেনাতিক্রাময়তি অতি হস্তয়তীতি मिट्जियः। ८४२ ।

গ্তপ্রকাশিক। ।

তংকরোতীতি। অত্রনামপদং স্থবন্তং নতুএতাদৃশ্যুম্মদমচ্ছেনোনামেত্যুচ্যতইতি প্রাপ্তক্তং নাম-ইত্যুচ্যতে ইত্যনেন প্রথমপুরুষদম্বিনামস্তল্লকণং প্রকটিতং। তেন যুমান্ করোতি যুম্মতীত্যাদিপ্রয়োগঃ স্থাদেব। ঋচম্বেতি। বাশ্দ ঋচমিত্যত্তিবাদ্বেতি সন্নিহিত্যাদিতি বির্তৌ তথাক্ষ্টীকৃতং। ঋচ্মতীতি। ঋচ্গতো তুপঋচতীতি নাম্যুপধেত্যাদিনাকঃ তত্মাদদস্তাদিন্ তেনোপধোপধাত্মানগুণঃ। প্রটয়তীতি পটুমাচক্টে পট্যতি। উপগায়তীত্যাদয়আদিগ্রাহাঅন্তেচ প্রভাপ্রকাশিকোক্তাজ্যোঃ। ৫৮২। পুচ্ছচীবরভাণ্ডেভ্যোতিন্স্যাত্মদসনাদিয়। উদসনে পর্য্যসনে চ। উৎপু-চ্ছয়তে কপিঃ অর্জনে পরিধানেচ সঞ্চীবরয়তে ভিক্ষুঃ ভাগুণং সমানয়নেসম্ভাগুয়তে কুম্ভকারঃ। লিছ্ক্স্যকিং চকাসয়তি। অনেকাক্ষরস্যাকিং ত্বচং গৃহ্ণাতি ত্বচয়তি শ্রেয়ান্। ৫৮৩॥

সত্যার্থবেদাদাপক্ স্যাৎ। ইনিপরে। সত্যং করোতি সত্যাপয়তি অর্থাপয়তি পীনতাং বেদাপয়তি সর্গাদো। কলুবন্ধপ্রত্যয়ত্বাদ্ধাতোরপি লিখাপয়তিবণ্টাপয়তীত্যাদি। ৫৮৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

পুচ্ছ। উদসনমুংক্ষেপঃ আদিনাঅর্জ্জনাদি সমাচয়নেগৃহেতে যথাক্রমমন্বয়ঃ। পুচ্ছাৎ কর্ম্মণঃ
পুচ্ছমুৎক্ষেপয়তি উৎপুচ্ছয়তে। ক্ষণমুংপুচ্ছমানেহনুমতি লঙ্কাপুরোদ্দেশইতি মুরারিঃ। ক্ষেপণেকিং
পুচ্ছমাচন্টে পুচ্ছয়তি। পর্যাসনে সর্বতোদিক্করণে পরিপুচ্ছয়তে সর্বতঃ ক্ষিপতীত্যর্থঃ। চীবরকর্মণঃ
অর্জ্জনপরিধানয়োর্ভিন্ চীবরমর্জ্জয়তি পরিধত্তেবাসঞ্চীবরয়তে পরিচীবরয়তেচ। ভাণ্ডাদিতি। বিস্তীর্ণানামকক্রানয়নং সমাচয়নং ভাণ্ডং সমাচিনোতি সংভাণ্ডয়তে। অঙ্গাচ্চনিরসনেহস্তোনিরস্থতি হস্তয়তে
পাদয়তে অনিরসনেতৃহস্তয়তি। শ্রোমনিতি। প্রশস্ত্যস্তিয়াস্গোচস্তঃ প্রশস্তস্থেতি শ্রাদেশে
একস্বরত্বাদনয়োর্লান্ত্রস্বাদিলোপঃ। ৫৮৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

পুচ্ছেতি। পুচ্ছং লাঙ্গুলং। পুচ্ছোইস্ত্রীলূমলাঙ্গুলেইত্যমরঃ। চীবরং মুনিবস্ত্রং। বল্ধলেচী-রচীবরেইতিরত্নকোরঃ। ভাগুং পাত্রং। দর্বামাবপনং ভাগুং পাত্রামত্রঞ্চাজনমিত্যমরঃ। উদসনমাদিনাপর্য্যদনার্জ্জনপরিধানসমাচয়নানাং গ্রহণং তত্রউপসনেপর্য্যেসনেপুচ্ছাৎ অর্জনপরিধানয়োঃ চীবরাৎ
সমাচয়নেভাগুাৎ। ভাগুভাইতি বহুবচনাৎ অঙ্গাচ্চনিরসনেঙিন্ যথাপত্নীত্রহিতরশৈচবেতি যাজ্ঞবন্ধ্যবচনে
হহিতরইতিবহুবচনাদ্দোহিত্রোহপি গৃহতেতদ্বৎ। চকাসয়তীতি। চকাস্থদীপ্রোঅপ। স্বচয়তীতি।
স্বচ্মংবরণেভূপ স্বচতিসংর্ণোতীতিরিপ্ ততইন্ ঘটাদিঃ তেনমিতাং ব্রস্বঃ। ৫৮৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

সত্যা। শীনতামিতি। শীনোদেবদত্তোদিবানভুঙ্ক্তে দিবাঅভোজনত্বেসতি শীনত্বমনুপপশ্নমতোরাত্তিভোজনং কল্পয়তিরাত্রিভোজনমর্থং করোতীত্যর্থঃ। বেদাপয়তীতি। বেদমাচফেকরোতিবাসর্গাদৌ
স্ফ্যাদাবীশ্বরইতিশেষঃ। আপগিতি ক্রিকুবন্ধত্বেফলমাহধাতোরিতি লিখ্ধাতোঃ বটিবিভাজনেবণ্ট্ধাতোশ্চ হৈভুকেত্যাপক্ আদিনাঅঙ্গাপয়তীত্যাদি। ৫৮৫॥

গ ঢপ্ৰকাশিকা।

. সত্যেতি। পীনতাং স্থূলতাং। লিখ্অক্ষরবিন্যাদেতুপ বটিচুপ আদিনাঅকি অঙ্কনে ভূআঅঙ্কাপয়তি অগিগতোভুপঅঙ্গাপয়তীত্যাদি। ৫৮৪॥

অদন্তাচ্চ। নামএকস্বরাদাপক্স্যাদিনি। অমাচফেতাপয়তি ক্মাচফে কাপয়তি। ৫৮৫॥

ইনীপ্তবং। ইপ্তনিষৎপ্রিয়স্য প্রস্থিরস্যুস্থইত্যাদি মস্ত্রাদিলুক্কার্য্যুক্তং তৎসর্বমিনিকর্ত্তবং। যথাপ্রিয়মাচফেপ্রাপয়তি স্থিরমাচফেশ্রপায়তি বহুমাচফেব-হোভূ যিট্চ ইন্যন্তাম্বরলোপঃ ভূয়য়তি স্থিরমাচফেশ্রাপয়তি প্রশাস্যাচফে-শ্রাপয়তি রদ্ধমাচফেজ্যাপয়তি যুবানমংশঞ্চাচফেকনয়তি বাচমন্তিকঞ্চাচফে সাধ্যতি নেদয়তি তথাগোমন্তং শ্রেষক্ষাচফেগবয়তি শ্রজয়তীত্যাদিদিক্। ৫৮৬॥

প্রভাপকাশিকা

অদ। অং বিষ্ণুং কং প্রজাপতিং। ৫৮৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অদন্তেতি। পূর্ব্বোক্তসত্যাদীনামদন্তত্য়া অত্রাদন্তাদিতিসূত্রকরণং দ্বিস্বরাদন্তভিশ্বার্থম্ বৈয়র্প্যা-পত্তঃ তত্রাপি ত্রিস্বরাদ্যদন্তগ্রহণেহ্নধ্যবসায়াপত্তেরেকস্বরাদেবেত্যাশয়েনাহ নাম্মএকস্বরাদিতি। অকারোবাস্থদেবঃ স্থাদিতিকঃ প্রজাপতিরুদ্দিউইত্যেকাক্ষরকোয়ঃ। ৫৮৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইনী। ইপ্ঠবদিত্যতিদেশফলমাই ইপ্ঠনীত্যাদি। ইপ্ঠনীয়ং কার্য্যমুক্তমিত্যন্ত্রঃ। কার্য্যমাত্রং দর্শয়তি প্রিয়ম্বপ্রেত্যাদিনা। ইত্যাদিপদাং ক্ষিরম্বস্ফেউরোর্বরইত্যাদয়ঃ। যথেত্যাদি। প্রিয়ম্ব প্রস্থিরম্ব ক্ষততোহদন্তাচ্চআপক্ইতিদারঃ। বহোভূভাবয়তি ভ্য়য়তীত্যেকে ইতিদারঃ। জ্যাপয়তীত্যাদি। জ্যশ্রেচিন্তঃ প্রশাস্ত্রন্ত্রম্বর্ত্বরাদি। ব্বত্যাদি। কন্বায়্বায়য়েয়ায়িতিকনাদেশং। বাদস্বদায়ঃ অন্তিক্সনেদঃ। গবয়তীত্যাদি। ইপ্ঠেইক্সনোরপীতি। ইপ্ঠনিমন্তাদিলুক্ প্রকরণাদিমনিচ মন্তবিনোলুক্। দিগর্বস্বদীর্ঘক্ত দ্রাঘদ্রাঘরতি তৃপ্ ত্রপ্ ত্রাপয়তি মানিনমাচ ফেমানয়তীত্যাদি। ৫৮৬॥

গূঢপকাশিকা।

ইনীতি। ইষ্ঠনীব ইষ্ঠবং উপমানাত্রপমেয়েবতিরিক্টঃ। কার্যামিতিকার্য্য বাচ্ছিন্নত্বেনকবচনমুক্তং। স্থায়তীতি। বহোর্ভূ চেবর্ণলুক্ ষ্টেযিট্বেতি সূত্রেণবহোঃ স্থানেভাদেশাদি। সারমতে ভাবয়তীতি ভাদেশোনিযিট্ কিন্তু র্দ্ধিরিতি। কনয়তীতি। যদ্যপিকনাদেশেইনির্দ্ধিঃ প্রাপ্তোতিথাপি র্দ্ধাংজ্পূর্ব্ব-কন্থারম্বদিঃ। অথবা অল্লশব্দেশাপধেরামর্দ্ধিঃ তদাদেশেতদ্বদিতি ন্যায়াৎ তদাদিক্তিশাপি ন র্দ্ধিঃ। যথাঅদ্হনোর্নিট্রেনতদাদেশঘ্ ঘানয়োরপ্যনিট্রং জিঘ্ৎসতিজিঘাংস তীতিতদ্বং। আদিনাক্ষাপয়তি বর্ষয়তি বংহয়তি রুল্যুতীত্যাদি। দিক্দিয়্বাত্রং দশিত্মিত্যর্থঃ। ৫৮৬॥

স্বাদ্রযুবস্থা পরতঃ। স্বাদ্রের্তি। স্থাতি। স্বাদ্ররতি দবরতি। ইফবিচনাৎ দ্রয়তীত্যপি। যুবানমাচফে যবরতি। হুস্বরতি ক্ষেপ্রতি কোদরতি এবং স্বিষ্ঠঃ স্বীরান্ দবিষ্ঠঃ দবীয়ান্ হ্রিস্ঠঃ হুসীরান্ হ্রিস্না। হুস্বাদেরিমন্য-প্রাদ্র্যিং। ৫৮৭॥

শ্বেতাখাদেঃ পরাং শলুক্। শ্বেতাশ্ব অশ্বর গালোডিত আহ্বরকাণাং পরাংশাঅশ্বর ইত কালোপ্যাইনিপরে। শ্বেতাশ্বমাচফেশ্বেরতি অশ্য়তি গালোডয়তি আহ্বরয়তীত্যাদি। ৫৮৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

স্থুল। এবাং বর্ধামন্তস্থাদিল্লপাতে তথ্যিন্দতি গুণশ্চইন্টঃ স্থাদিত্যর্থঃ। স্থবয়তীত্যাদি।
স্থালস্বরললোপঃ ততোগুণঃ দ্রমাচন্টেদবয়তিরলুক্। দ্রয়ত্যবনাৎ বিবস্বতাতি কালিদাসঃ ইন্টবচনস্থ
প্রয়োগদাধনস্থাদিতিভাবঃ। যবয়তাতি। অত্রবলোপঃ। হ্রমাচন্টেবলোপঃ ক্ষিপ্রমাচন্টে ক্ষুদ্রমাচন্টে
মনয়োরলুক্। স্থবিন্টইতি। ইমেসুলাঅয়মেয়ামতিসুলঃ তদতুংৎকর্ষকথনেইত্যাদিনাইপ্ঠন্। অন্তেত্ত্বেস্থলবল্ডঃ অয়মেয়ামতি স্থলবামিতি ইপ্তানিবল্পকুল্ ততোহল্তম্বাদিলোপগুণো। স্থবীয়ানিতি।
অয়মনয়োরতি সূলঃ স্থবীয়ান্ গমোপদার্থ ইত্যাদিনাইয়ল্যঃ। দূরশকাদ্বীয়ান্দ্বিপ্ঠইতি। অত্যাপিদূরবন্তশক্ষলন্ত্বপূক্ইত্যাত্ত্ব। যুবশকাদ্যবিপ্ঠঃ যবায়ান্ ক্ষিপ্রশকাৎ ক্ষেপিপ্ঠঃ ক্ষেণীয়ান্ ক্ষুদ্রশকাৎ
ক্ষোদিন্তাভাবাদিতিভাবঃ তেন ক্ষেপিমা ক্ষেদিমা। ৫৮৭॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

স্থুলেতি। তৎকরোতীত্যাদিসূত্রে অন্ত্যস্বরাদিলোপং প্রতি ইনাদেশ্লিমিত্তয়াউক্তত্বাদ্রাপীনাদেরেবলোপেনিমিত্ত্বমিত্যাহ্ইনাষ্ঠেয়ন্স্বিমন্স্চেতি। ইন্টবচনস্থালনাহদূরয়ত্যপীতি। ইচ্ছায়াব্যনিয়তত্বাৎ কচিনান্তস্থাদিল্লোপইতিভাবিঃ। ব্রস্বাদেরিতি। ব্রস্বাক্ষিপ্রক্র্যাণামিত্যর্থঃ অন্তেভ্যইমনপৃধাদিস্বাভাবাদিতিভাবঃ। ৫৮৭ ॥

প্রভাপক'শিকা।

েখতা। খেতয়তীত্যাদি। অত্রাশ্বলোপঃ অশ্বতরমাচফেতরলুক্ গালোডিতমাচফে ইতলোপঃ আহ্বরকমাচফেকলুক্। গালোডিতআহ্বরকশ্চদেশবিশেষীে তত্ত্বস্তুমমাচফেইতিবজ্ঞধরঃ। শস্তুহুর্গম-তেহুপি শ্বেতয়তীত্যাদি। জুমরমতেতুগোলোহিতশব্দঃ গোলোহিতনামানমাচফেগোলহয়জে

আখ্যানাৎ কৃতইন্কল্লু ক্প্রকৃতেরিবকারকং। আখ্যায়তে যন্তদাখ্যানং ভাবকৃদন্তং ততইন্কল্লু কিধাতু স্বরূপমবতিষ্ঠতে কংসবর্ধমাচফেকংসং ঘাতয়তি সীতাহরণমাচফে দীতাং হারয়তি রাজানমাগনয়তি রাজানমজীগমদিতি। ৫৮১॥

গোলোহিতয়তি আহ্বরকমাচফেঁআহ্বয়তে আহ্বরকয়তিইতি। পাণিণীয়াশ্চশ্বেতয়তে অশ্বয়তে ইত্যাদাবাত্মনেপদমাহঃ। শেতয়তীত্যাদয়োজুমরমতে অশ্বাদেরলুক্। ৫৮৮॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা'৷

খেতেতি। খেতশ্চাসাবশ্বশ্চেতি স আদির্যাস্থেতি বিগ্রহো। পরশ্চাসাবংশশ্চেতি তম্বলুগিতি চবিগ্রহো। যদিইনাদিষুপরাং শানুক্স্থাৎ তদাপরাং শম্যেতি কৃতং স্থাৎ পুনলুগিতি গ্রহণং প্রকরণলব্ধ-ইন্সেবলোপার্থমিত্যাহইনিপরেইতি। খেতাশ্বঃ শুক্রঘোটকঃ অশ্বতরঃ খচরইতি যম্প্রপ্রাদিশ্বঃ গালোডিতাহ্বরকো দেশবিশেয়ো। আদিনাশ্বেতয়তে ইত্যাল্পনেপদীয়প্রয়োগগ্রহণং। ৫৮৮॥

পুভাপুকাশিকা।

আখ্যা। আখ্যানাংকৃত ইত্যন্তরঃ আখ্যারতে যদিতি কর্মণ্যনট্ ভাবকুদন্তং কং সবধাদিরপং হন্
বধঃ হন্তের্ব্বধইত্যালিহনোবধাদেশঃ কংসশুবধইতিতংপুরুষঃ কংসবধমাচফটইত্যাখ্যানাংকৃদন্তাদিন্ কুলুকীত্যাল্ প্রত্যয়লুকিস্বরূপাবস্থানমিতি হনোঘাংশ্যাদিতিঘাদাদেশঃ প্রকৃতেরিবকারকং ইনন্তবংকারকম্ ইনন্ত
বিভক্ত্যনুরূরেপেণ কারকবিভক্তিঃ তেন কংসং ঘাতয়তীত্যাদে যথা কর্মণিদ্বিতীয়া তথাকুলুক্যাপি কর্মদ্বিতীয়া। এবং কংসোঘাত্যতে কংসশুঘাতইতি প্রথমাদিঃ। আখ্যানং বিচিত্রার্থকমিতিবজ্রধরঃ।
ক্ষিপ্রামদিতি। লুঙি ইন্চঙিন্ধিঃ সমন্তাবাদভ্যাসশুইঃ উপাগুরুলঘোদ্যাহিং স্প্রত্যয়াদিত্যাদিনা
লঙ্। এবং কালব্যাপ্তে আঙ্গচ মর্য্যাদায়াং কৃতোমর্য্যাদায়াং রক্ত্যাঙ্গচ লুক্ আরাত্রিবিরামমাচটেবা
রাত্রিবিরাময়তিরাত্রিং ব্যাপ্যযাঃ প্রস্তান্তাঃ সাকল্যেন কথয়তীত্যর্থঃ। আরাত্রীতি মর্য্যাদাভিবিধ্যারব্যন্মীভাবঃ। বিল্ময়্বেপ্রাপ্তে উক্ষ্মন্তাং প্রস্থিতামাহিষ্যত্যাং সূর্য্যাদ্যমং প্রাপ্রেমাত সূর্যমুদ্যময়তি দূরত্বং
বিশ্ময়ত্বং বলিবন্ধমাচন্টেবলিং বন্ধয়তি। ৫৮৯।

গুঢপ্রকাশিকা।

আখ্যানাদিতি। আখ্যানাং ভাবকৃদন্তাং ইন্ ইনিক্লুক্ লগ্নোপ্য ইত্যাদিনাধাতুসরূপাবস্থানে প্রকৃতে: ইনন্তপ্রকৃতেরিবকরেম্ ইনন্তবিভক্তানুরূপেণকারকবিভক্তিং স্থাদিত্যর্থঃ। কংসবধমিতি। হননং বধ: ক্চিদন্তত ইত্যল্ হত্যেক্ধইতিহনোবধাদেশঃ কংসবধমাচন্টেইতিবাক্যে আখ্যানাৎ আখ্যানবিষয়াৎ কংসবধাৎভাবকৃদন্তাং ইনিক্লুক্ লুগ্নোপ্যইত্যাদিনা আদেশনির্ভৌ হনবস্থিতৌ হনোঘাৎস্থাদিনীতি ঘাদাদেশে পারগমিছে ইনন্তঘাতয়তীত্যনুসারেণ কর্মকারকং তেন কংসমিতি। ক্লুগিত্যুক্তেচ কৃতএব-ইমিতি লভ্যতে কৃতইতিপদং ভাবকৃদন্তগ্রহণার্থমিতিবোধ্যং। ৫৮৯ ॥

नक्षवरागाम्बानार्थ। भूताग रामग्रागः। भूतारागः कानाजीजार्थः। रेजीन् अक्रतम्। * । * । ८० ॥

পুভাপুকাশিকা।

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বাত্মেচ্ছায়াং নাম্বঃ কাম্যঃ। পুত্রমিচ্ছত্যাত্মনঃ পুত্রকাম্যতি পত্নীকাম্যতি। আত্মেচ্ছায়াং কিং ভ্রাত্যুঃ পুত্রমিচ্ছতি বা পত্নীমিচ্ছতি ইত্যাদিবাক্যমেব ৫৯:॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাজে। আজেচ্ছায়াং গম্যমানায়াং নাস্ত্রঃ কাম্যঃ প্রত্যয়ঃ স্থাদানিরপেক্ষত্বাৎ কর্মণএবেতিভাবঃ। পুত্রকাম্যতীতি। আত্মসম্বন্ধেনপুত্রাদেঃ কাম্যবিধানাৎ পুত্রকাম্যতীত্যক্তাবেব আত্মনইতি প্রকৃতি সম্ভবাদাত্মনইতি ন প্রযুজ্যতে। পুল্রমিচ্ছত্যাত্মনইতিকামঃ তদ্ধিতাখ্যাতয়ারপীতি দিতীয়ালোপঃ সনাদ্যন্তাশ্চেতি ধাতুরং ভুবাদ্যন্তর্গতর্ঞতো অন্ বিকরণাদি। ভাতুঃ পুত্রমিচ্ছতীতি। আত্মনইচ্ছেতি ষষ্ঠীসমাসআত্মশব্দস্থাত্মীয়বচনহাদশুসরব্বিবস্তুনীচ্ছায়াং নস্থাদিতিভাবঃ। নৰাত্মশব্দোহয়ং বিশেষগুণবংপরঃ কথমার্গ্রায়পরঃ স্থাৎ সত্যন্ ইচ্ছায়া আত্মগুণত য়ৈবানাত্মস্বব্যারতো আত্মেত্যস্ত বৈয়র্থনিদাত্মীয়ার্থত্বেনসার্থকনাদিতিভাবঃ তেনাত্মীয়ান্ত্রান্ত্র কর্মভূতাৎ কাম্যইতি ফলিতং। পুত্রমিছ্তি দন্তং পুত্রমিছ্তীতাাদো দাপেক্ষতারভবতি। যদ্যপি ভাতৃঃ পুত্রমিছ্তীত্যত্রাপি সাপেক্ষতান্তিতথাপিপুত্রপদস্থদর্কাদায়ক্ষিদাকাজ্জহেন নিরপেক্ষতৈব তৎপুত্রকাম্যতি ভাতৃপুত্রমিচ্ছতীতি সমস্তত্তাদিছোয়াং নামস্থন্ধাদিতি। দাত্রেণেচ্ছতীত্যকর্মণোনস্থাৎ। বস্তুতস্তুদুত্রমেবং ব্যাথ্যেয়ম্ আত্মশব্দোহয়ং পরভিন্নবাচকঃ আত্মেচ্ছায়াং ভবতি ন পরেচ্ছায়ামিত্যর্থঃ। অঅস্ত্রাশ্রভারাত্মনঃ সম্বন্ধাৰগমাৎ সত্যং স্থাৰ্থং গ্ৰহণম্ অভাগাঞাতভানামইচ্ছাসম্বন্ধাৎ কর্তৃ'যরপনাম্বএবকাম্যাদয়ঃ স্ত্যঃ আত্মেতি কৃতেতু আত্মনইতি কর্ষষ্ঠীকর্ত্বঞ্চ দালিধ্যাদিচৈছ্বতেনাত্মনাকত্রানাম্মইচ্ছমানাৎ কর্মণইত্যর্থঃ ভ্রাতুঃ পুত্রমিচ্ছতীত্যাদৌ সাপেক্ষরায়ভবতি পুত্রশব্দস্সাপেক্ষরমভিদ্যায় অঘমিচ্ছতি তুন্থমিচ্ছতীতি শস্তুনাপ্রত্যুদাহতম্ অত্রহি পরস্তেচ্ছতীতি ঝটিতিপ্রতীয়তে নহিকো২প্যাত্মনঃ পাপং ছুষ্থং চেচ্ছতীতি। আহ্নঃ পুত্রমিচ্ছতি দাপেক্ষহানভবতীতিহুর্গঃ। তর্হিপুত্রস্তকথমাত্মীয়হাবগমঃ উচাতে আত্মবিষ্টার-লোক স্মেচ্ছানপরবিষয়া সাহিত্বাচিশব্দ মন্তরেণৈব প্রতায়তইতি। সারেত্বকামোনা স্মইচ্ছায়ামিত্যেব-সূত্রং নাম্নঃ প্রবেশঃ আত্মনস্তদিচ্ছতীত্যর্থেনাম্নঃ কাম্যঃ স্থাৎ দিবমিচ্ছতি ত্যুকাম্যতি সৎপুত্রকাম্যতি নাসমস্তাপেকাং সন্তং পুত্রমিছতি নানেষিতৃক্রণঃ রাজ্ঞঃ পুত্রমিছতি নাকর্মণঃ দাত্রেণেছতীতি। ৫৯১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বেতি। অর্থতোনামইতি লাভারামইতিপদং কর্ম্মররপাৎ সাপেক্ষকনামোনিরাসার্থক। সাপেক্ষকর্মনামোহসমস্তাপরবিশেষণদম্বর হৈ তেন ভ্রাভুঃ পুভ্রমিছতি মহান্তং পুভ্রমিছতীত্যাদোনকাম্যঃ। অতোভ্রাভুঃ পুভ্রমিত্তব্রেদাপেক্ষকত্বেন কাম্যানিষেধাদাহ বাপত্রীমিতি নকুপুভ্রমিছত্যাত্মনইত্যত্রাপি নাম্মান্ননইত্যমস্তবিশেষণদম্বর কথং প্রত্যায়ঃ সত্যং তদর্থপ্রদর্শনিমাত্রং বাক্যন্তপুভ্রমিছতীতি। অথ সংপুভ্রকাম্যতীতি কথম্ উচ্যতে সংশব্দেনসমন্তপুভ্রমনামন্বাত্তস্তাসমন্তাপরবিশেষণদম্বর্ধাভাবাৎ প্রত্যায় । তর্হিভ্রত্পুভ্রকাম্যতীত্যপি স্থাদিতিমৈব্য আত্মেছায়ামিত্যক্তত্বাদাত্মীয়সম্বন্ধিন্তামের নতুপরস্বন্ধিন্তামিছায়ামিতি। অন্যথাইছায়াআত্মগুণ্রেনাত্মেতিপদবৈয়র্থ্যাৎ। স্ত্রাছন্দঃ। গৌস্ত্রীতি তল্পকণাৎ। ৫৯১॥

যিন্চানব্য়মাস্তাভ্যাং। আত্মেচ্ছায়াং নামোবাযিন্ স্যাং। পত্নীয়তি যশস্তি। অনব্য়মাস্তাভ্যাং কিম্ উচ্চৈঃ কাম্যতি স্বঃ কাম্যতি ইদং কাম্যতি কিং কাম্যতি। ৫১২॥

আচারে যিন্নিবার্থকাৎ। যাববর্ণস্য ঈকারঃ। পুল্রীয়তি স্থতীয়তি। ইন্দ্রমিবাচরতি ইন্দ্রীয়তি হরমিবাচরতি হরীয়তি। কর্জুরেব যিঙিতি প্রকৃতিনিয়মাৎ
যিন্নবাধ্যতে। আশ্চর্য্যোমুনিরেষ হস্তকুহরে যস্যৈষ্বারান্নিধির্গণ্ড্ষীয়তি পঙ্কজী
য়তি ফণীভৃষ্ণীয়তি ত্রীপতিঃ। ৫৯০ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যিন্চা। অব্যয়শ্চ মান্তশ্চতো ন অব্যয়মান্তাবিতি তথা অব্যয়মান্তভিশ্নাশ্বআছোয়াং যিন্
ইত্যর্থঃ। নঞ্সমাদেদিবচনং। পত্নীত্যাদি। পত্নীমিচ্ছত্যাত্মনঃ যশইচ্ছতীত্যুল্মইতি বাক্যম্ উচ্চৈঃ
পদং স্বঃ স্বর্গমিচ্ছত্যাত্মনইতি বাক্যেদ্বয়মব্যয়মতোন্যিন্ কাম্যস্তভবত্যেবেতি। উচ্চৈরিচ্ছত্যেবাশ্বত্তপ্রত্যুদাহতং। ইদ্মিত্যাদি। ইদ্ম্ কিম্মান্তো ইদং কিঞ্চেছতীতি ন বিন্। ৫৯২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

যিন্চেতি। চকারাৎ কাম্য ভালব্যয়মান্তাভ্যামিতি দ্বিচনং শকোনঞিব্যুগিতিভায়াৎ নামইত্যন্তবিশেষণং। ৫৯২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আচা। নাম্মইত্যন্ত্রতে। ইবস্থার্থোযত্ত্রতি ইবার্থকাত্রপমানাৎ তথাচাচারেগ্য্যোনাম্বউপমানাৎ যিন্ ৷ অত্রচাচারেদর্অকর্মণ্রকর্মণ্রবউপসানাদ্যথাকর্মণাবিনা আকাঞ্জায়াঅপুর্ত্তেঃ অকর্মকত্মবিবক্ষণে কর্তু রূপাদিতি বোধ্যং। পুত্রমিবাচরতীদমর্থকথনবাক্যং বিন্বাক্যন্তপুত্রমাচরতীতি পুলীয়তীতি। মাণ্বকং পূলীয়তীতি বাক্যাৎ সামান্যতএব উপমেয়কশ্মতান্উপমানকশ্মবিশেষভানায়মাণ বকমিতি নোক্তার্থং। ননূপমানাতুপমেয়কশ্মবিশেষাপেক্ষত্বেন যিন্ বিধিরস্তি পুত্রমিবাচরতি শৈষ্যাদিকমিতি সাপেক্ষত্বাৎকর্ত্ত্বন্ধনিন্ কর্ত্ত্ব্রেক্ত্রেন যিঙএববিধানাদতআহকর্ত্রেবেতি। কর্ত্রেব্যিঙ্নকশ্মণইতি প্রকৃতিনিয়মএবনকর্ত্ত্বিতি প্রত্যয়নিয়মইত্যর্থঃ। কিং ক্রমোহরিমশুবিশ্বমুদরে কিম্বাফনাস্ভোগিনঃ শেতেযত্রহরিঃ স্বয়ঞ্জলধেঃ সোহপ্যেকদেশেস্থিতইতি পূর্ব্বার্দ্ধং। হরিং কিং ক্রমঃ অস্তহরেরুদরেবিশ্বং জগদস্তাত্যর্থঃ ভোগিনঃ অনন্তস্থফণাং কিং ক্রমঃ যত্রফণায়াং হরিঃ শেতেসোহপি ভোগীজলধেঃ সমুদ্রস্থ একদেশেস্বয়ঞ্চ্ছিতঃ তথাপি এযমুনিরগস্ত্য আশ্চর্য্যঃ অভুতরূপঃ যস্ত্যসূত্রর এষবারালিধির্জলনিধিঃ গণ্ডুধীয়তি গণ্ডুযবদাচরতি ফণীঅনন্তঃ পক্ষজীয়তি পুগুরীকমিবাচরতি শ্রীপতিঃ ভূঙ্গীয়তি ভূঙ্গবদাচরতি প্রকাশে শ্লোকোহয়ং। পঙ্কজমিবাচরত্যাত্মনমিতি বিবক্ষয়েতিকশ্চিৎ। সর্বত্যাববর্ণস্তলঃ। তথাপৌরং স্থতীয়তিজনং সমরান্তরেহ্সাবন্তঃ পুরীয়তি বিচিত্রচরিত্রবন্ধুঃ। নারীয়তে সমরসীন্মিকুপাণপাণেরালোক্য-যশুললিভঞ্দপত্নদেনেতি দর্পণেইত্যত্রস্তমিবাচরতীতি কর্মণোযিন্ অন্তঃপুরেইবাচরতীতি আধারাচ্চ যিঙাচারেইত্যধিকরণাৎ যিঙ্ নারীয়ুতইতি কর্ত্ত্বিয়িঙইতি। ৫৯৩॥

ইকারোকারয়োদ্দীর্ঘোযোপরে ঋতঈড্ভবেৎ। অগ্নীয়তি পট্য়তি ঋকারাদী ডাগমঃ পিত্রীয়তি। ৫১৪॥

খাদোনৌদ্যোষৎ স্বরবৎ। যথা গব্যতিনাব্যতি। স্বরবদ্ধাবাভাবাৎ রৈয়তি। ৫৯৫॥

নমস্তপোবরিবসঃ ক্ত্যাদ্যথে যিনীরিতঃ। নমঃ করোতিনমস্যতি তপশ্চরতি তপস্যতি বরিবস্যতি গুরুন্পরিচরতীত্যর্থঃ। ৫৯৬॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

্ৰাচারইতি। আচারেহর্থে ইবার্থকাং উপমানাং কর্দ্মম্বর্রপাং যিন্ স্থাদিত্যর্থঃ। পরত্রউপমানাং কর্ত্ত্বিত্যভিধানাদত্রকর্মণএবকর্মণাবিনাআকাজ্যায়াঅপূর্ত্তেঃ কর্মম্বাবিবক্ষায়াং কর্তৃত্বাদেব পৌরং স্থতীয়তি জনমিত্যাদে বারামিধির্গণ্ড্যীয়তীত্যাদে চতথাপ্রাপ্তেঃ। ননূপমানাং কর্ত্ত্বিগ্রেছবিধানাং কথং বারামিধির্গণ্ড্যীয়তীত্যাদে কর্ত্ত্বিয়মিত্যতআহ কর্ত্ত্বেব্যিঙিতীতি। যিঙিতীত্যক্র অসমাদেহপি কুত্রচিদিতিনদ্বিঃ। কর্ত্ত্বেব্যিঙ্ নতুকর্মণইতি প্রকৃতিনিয়মাং উপমানাং কর্ত্ত্বিগ্রম্বাধতে যিন্ স্থাদিত্যর্থঃ। তথাচ উপমানকর্ত্বিগ্রন্প্রত্যাৎ গণ্ড্যীয়ত্যাদি প্রয়োগদিদ্ধিরিতিভাবঃ। ৫৯৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ইকা। ইকারউকরয়োদ্দীর্ঘ ঋত ঋকারাদীডাগমঃ স্থাৎ যৌপরে। অগ্নীত্যাদি। অগ্নীমিব পটুমিব পিতরমিবমাতরমিবাচরতীতি। ৫৯৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইকেতি। ঋত ঈট্ ঈডাগমোভবেদিত্যর্থঃ। ঈডিতিদীর্ঘপাঠঃ ব্রস্বপাঠেআগমসামর্থ্যাদীর্ঘোন স্থাং। ইডিতিব্রস্বপাঠঃ প্রামাদিকঃ। ৫৯৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

খাদো। গামিব নাবমিবাচরতি যস্তস্বরত্বেনদক্ষিঃ। রৈয়তীতি। রায়মিবাচরতি ঋদোদোতা-মন্তত্তাস্বরত্বাৎ। ৫৯৫॥

গূচপ্রকাশিকা।

প্রভাপ্রকাশিকা।

নমঃ। কৃতিঃ করণং নমস্বারঃ আদিনাতপদস্তচ্চরণেবরিবদঃ পরিচর্য্যায়াং যিন্সরিতঃ কথিতঃ। নমদঃ প্রণামেনমদ্যতীতিদারঃ। বরিবঃ শব্দঃ পরিচর্য্যার্থোহ্ব্যয়ঃ। ৫৯৬॥ আধারাচ্চিয়িনাচারে। প্রাসাদেইবাচরতি। প্রাসাদীয়তি যঃ কুট্যাৎ পর্য্য-স্কীয়তিমঞ্চকে ! ৫১৭॥

চিত্রাদ্ঙ্যিরজুতার্থকাৎ। ওন্সবন্ধসাত্মনেপদার্থঃ। চিত্রং করে।তিচিত্রীয়তে হেময়ুগঃ। ৫৯৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নমইতি। কৃতিঃ করণমাদির্য্য আদিনাচরণপরিচর্য্যয়োঃ পরিগ্রহঃ। যিনীরিতইতি অসমাদে
২পিকুত্রচিদিতিনদ্বিঃ। যিন্গ্রহণং কৃত্যাদ্যর্থেনমআদের্য্যৎ স্বরবদিত্যন্বয়বারণার্থং। ঈরিতইতিপূর্বোক্তরপেণ ঈরিতইত্যর্থাদ্বাযিনিতিলাভঃ। তত্মাৎগুরুং নমঃ করোতীতিপ্রয়োগঃ কারকপ্রকরণউক্তঃ
সঙ্গছতে। ৫৯৬ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

আধা। অধিকরণাচ্চযিন্ আচারেহর্থে। অত্রাচারেরকর্মাকত্বেনকর্মাভাবেহপ্রাপ্তেবিধিঃ। দারেহপ্যেবং। পর্যক্ষেইবাচবতি পর্যক্ষীয়তি। তস্ত্রসন্তোষশীলম্ম কুজিকাপ্যপ্ররায়তেইতিপরার্দ্ধং। দুর্গস্তুআধারাদপিনিরপেক্ষত্বাৎ কুট্যামিবাচরতি কুটীয়তিপ্রাদাদে ন খলুইহকর্মাধিকারোহস্তি কিন্তুদাপেক্ষ্বং ঘাৎ করণাদের্ম ভবতীত্যুক্তবান্ যত্রতুনিরপেক্ষতাতত্রাধারাদপ্যনিবার্য্যম্ অথবাধারস্থাপিকর্ম্মতং বিবক্ষতে কুটীমাচরতীতিকথং তর্হিপ্রাদাদইত্যমুপ্রয়োগাৎসপ্তমীসত্যম্ আধারস্থাপিবিবক্ষিতত্ত্বাদিতিতৎপঞ্জী। প্রাদাদইবাচরতীতি দাপেক্ষত্বেহপিপ্রাপণার্থঃ দকর্মকক্রিয়ায়াঃ কর্ম্মদাকাজ্জত্বাদ্যথাকথঞ্চিদ্দেবদন্তমাত্মানং বা কুট্যামেবস্থিতং প্রাদাদইবাচরতীত্যর্থঃ এতদ্ভট্টমতে। বজ্রধরস্ত্রপ্রাদাদীয়তীত্যাদে পুল্রাদীনামাচরণ ক্রিয়াব্যাপ্তবিবক্ষয়াপি ভবতিপুল্রেণইবাচরতি প্রবর্ত্তইতিনেত্যাহ। এবং রজন্থামিবাচরতিরক্ষনীয়তি। ৫৯৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আধারাচ্চেতি। আচরেরবিবক্ষিতকর্মীয়ে আধারাচ্চাপ্রাপ্তোবিধিং। বিবক্ষিতকর্মীয়েতু আচারে-যিনিবার্থকাদিত্যনেন যিনিতিচশব্দাৎ প্রত্যেতব্যং। যিন্গ্রহণং নিত্যার্থং প্রাদাদোদেবরাচ্ছাং গৃহং। প্রাদাদোদেব ভূভুজামিত্যমরঃ। কুটীগৃহং। বাসঃ কুটোদ্বয়োরিত্যমরঃ। স্ত্রিয়াং নদাদিরিতিভট্টীকা। পর্যাঙ্কং থট্টা। মঞ্চপর্যাঙ্কং পণ্যস্কাঃ থট্ট্রাদমাইত্যমরঃ। অত্রমঞ্চকঃ স্বার্থিককপ্রত্যয়ান্তোন্থট্টাপরো-হম্মবাধাৎ কিন্তুচ্চবেদিপরঃ। ৫৯৭॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

চিত্রা। অদ্ভূতমাশ্চার্য্যমর্থোযস্থতাদৃশাদিত্যর্থঃ। চিত্রীয়তীত্যাদি। আশ্চর্য্যং করোতিজনয়তীত্যর্থঃ অদ্ভূতেচিত্রাদাশ্চর্য্যকরণেইতিসারঃ। ৫৯৮॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

চিত্রাদিতি। অদ্তার্থকাৎকিং চিত্রং করোতিভিত্তাদোচিত্রকরঃ। আলেখাশ্চর্যযোশ্চিত্র-মিত্যমরঃ। ৫৯৮॥ উদন্যতিপিপাসায়াং ধনায়তিত্গৰ্দ্ধনে। অশনায়তি বুভুক্ষায়ামন্যএউ-দকীয়তী। রুষ্ট্যাদিজলমিচ্ছতীত্যর্থঃ। ধনীয়তি অশনীয়তি। ৫৯৯॥

গম্যায়াং মৈথুনেচ্ছায়াং র্ষাখ্যে র্ষদশ্বনা। যিনিস্যাতাং। র্ষস্যতিগোঃ। লক্ষাণং সার্ষস্তী। অশ্বস্তিবড়বা। জন্যত্র্বীয়তি অশীয়তি পুমান্।৬০০॥

প্রভাপকাশিকা।

উদ। উদকস্যোদন্ যিনিউদয়তিউদকং পাতুমিচ্ছতীত্যর্থঃ। গর্দ্ধনং তৃষ্ণা (পুনঃ প্রাপ্তীচ্ছা)
বুভুক্ষাভোজনেচ্ছাইতিশেষঃ ধনাদশনাচ্চ তৃষ্ণাবুভুক্ষয়োরিত্যর্থঃ। অন্যত্ত্তেতি। পিপাদাদেরয়ত্ত্ত্ত্ত্যর্থঃ।
ধনীয়তীত্যাদি। ধনমিচ্ছতিঅসনমিচ্ছতিতত্ত্তেচ্ছাম্ত্রিং নতৃষ্ণাবুভুক্ষাচ। ৫৯৯॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

উদন্যেতি। ধনায়তীত্যাদো অকারস্থাকারঃ। ধনীয়তীত্যাদি। সক্তমনমিচ্ছতি অবুভুক্ষিতোহিপি লোভাদশনমিচ্ছতীত্যর্থঃ। গাথাছনঃ। ৫৯৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গমা মৈপুনেজায়ামর্থে র্ষোর্যস্ অধোষণ্য । যিনিস্থাতাং । র্ষস্থতি গোরিতি । মৈপুন-মিচ্ছতীত্যর্থঃ । লক্ষাণং প্রতির্ষস্থতী মৈপুনমিচ্ছন্তীইত্যর্থঃ । র্ষাশাভাং মৈপুনের্ষোত্রশুক্রবচনঃ র্ষস্থানীবারিতিদারঃ । র্ষস্থানীকুকামুকী । অশ্বস্তীতি । অশ্বমিচ্ছতি । অশ্বশব্দোহত্র পুরুষজারবচন-ইতিকেচিং । অহাত্রতি । মৈপুনাদহাত্রেত্যর্থঃ । র্ষমশ্বকেচ্ছতীত্যর্থে । ৬০০॥

গুঢপ্রকাশিকা।

গম্যায়ামিতি। র্যদশ্দাবিতিবোধার্থং র্যদঃ দকারশুনদন্ধিঃ। র্ষশুতীতি র্যুদেচন হিংদাক্রেশগর্ভগ্রহণঐশর্যের ভূপবর্ষতিগর্ভং গৃহ্ণাতীত্যনেনেতি নাম্যুপধেত্যাদিনাকঃ র্যোমৈপুনং তমিচ্ছতীতিষিন্
র্যম্ম র্যদাদেশ-চ। কপিকচ্বাং র্যঃ পুংদিশৃঙ্গেবাদকম্বিকে। ধর্মশুক্তলব্যাঃ দোরভেয়পুংরাশি
ভেদয়োরিতিরভদঃ। শুক্রলং মৈপুনং। লক্ষ্ণামিতি। লক্ষ্ণাং দার্ষশ্বন্তীমহোক্ষং গোরিবাগমৎ।
মন্মণায়ুধ দম্পাত ব্যথ্যমানমতিঃ পুনরিতিভট্টঃ। অশ্বস্ততীতি। মৈপুনার্থমশ্বমিচ্ছতি বড়বাঘোটকী।
অশ্বত্রর্বীয়তীত্যাদি। বাহনায়র্যম্ আরোহণয়াশ্বমিচ্ছতীত্যপৌ। যিন্ চানব্যয়মাস্তাভ্যামিতি সর্ব্বদে
যিন্। ৬০০॥

অস্কুক্ সুক্ চাদনেচ্ছারাং। অদনীয়াৎ যিনিস্যাতাং। দধ্যস্যতি দধিস্যতি। এবং ভ্রশ্বাস্তিইত্যাদিজের রঃ। অন্যত্তদধীয়তি।৬০১।

উপনানাৎ কর্ত্বিঙ্জাচারেসম্যানোপশ্চ। উপগানাৎ কর্তুরেব্যিঙ্জাচারে-স্যাৎ। ৬০২॥

কার্য্যবর্ণস্যাত্বং যিঙি যিঞিচ। পরতঃ। শ্যেনইবাচরতি শ্যেনায়তে সারসায়তে হংসায়তে নালায়তে ওজাগ্রতে অপ্সরায়তে পয়ায়তে পরস্যতে। ওজোইপ্সরসোর্নিত্যং পরসাদেরিভাষয়। সলোপইপ্সরসোনান্যস্ত্যব্মপ-রেজগুঃ। ৬০৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অন্ত। দগ্যস্ত তাতাদি। দগ্যভ্যিচ্ছ তীতি বিনিমস্তক্ পক্ষেস্ক্ষরং। এবমিতি। দগ্ধাস্ত তি। তৃফায়ান্দ্রমন্ত্রিচ্ছতাতার্থঃ। তৃফ্যান্দ্রিমতি ক্ষারস্তাতি নান্যোরস্থাতিসারঃ। অন্তেতি। অদনাদ্যত্তিতার্থঃ। দ্বীয়তি দ্বীচ্ছতীতি। ৬০১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অন্তর্গতি। আদিনাতুরস্ততি ক্ষারস্তি ক্ষারস্তীত্যাদি। দ্ধীয়তীত্তি। মঙ্গলার্থং দ্ধীচ্ছ-তাত্যর্থঃ। ৬০১॥

প্রভাপকাশিকা।

উপ। অন্তপ্তসম্ভ লোপশ্চস্তাদ্যধাসন্তবং। কর্ত্তুরেবেতি। এবকারাৎ কর্ম্মাদিব্যবচ্ছেদঃ।৬০২॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

উপেতি। উপমানাদেব কর্ত্রিঙ্ ইতার্থসম্ভবেহপি মহাকবিপ্রয়োগবিরোধাৎ কর্ত্রবেত্য-ত্রৈবনিয়মঃ। নিয়মশ্চবিশেবসূত্রকরণাদেবপ্রাপ্তইতিভাবঃ। ৬০২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কার্যা। বিঞিইতিবক্ষাতে। শ্রেনায়তেকাকঃ। আচার্ত্রিয়ায়া অনুপপত্তেং কর্মান্বয়েনবং প্রয়োগঃ তেনবদাকশ্চিৎ শ্রেনাযারতিতদাশ্রেনায়তইতি নভবতাতিবজ্রধরঃ। সারসায়তইত্যাদি। সারসইবাচরতি হংসইবাচরতি মালেবাচরতীত্যপাঃ আদ্যয়োরস্থাস্থং পর্ত্রবাববর্ণস্থেতীত্বস্থবাধকত্বমিতি। ওল্পরীবাচরতি ওলায়তে ওল্পস্তবতীতি শস্তুল্রিলোচনশ্চ। অপ্ররাচরতি। ওল্পরাবাচরতি। ওল্পরাবাচরতি তিলায়তে ওল্পস্তবতীতি শস্তুল্রিলোচনশ্চ। অপ্রবাচরতি। পরায়তইত্যাদি। পরইবাচরতীতি যিঙিবাসলোপেআত্বং পক্ষেস্থিতিঃ। এবং স্থুমনায়তে স্থুমনস্থতে। চেত্রসঃ চেতায়তেনিত্যং সলোপইত্যেকে। ওল্পইতি। ওল্পোঅপ্রসোমিত্যং সলোপঃ প্রসাদেবিক্রায়্যাসলোপঃ চকারাদিতি বহুসন্মতং। অপরেত্ অপ্রসঃ সলোপঃ অক্সন্তবেহং বদস্থিয়। ৬০৩॥

শ্বন্ত যাবুক্তং। যথাশ্বশ্বীয়তে গুরুষতে গব্যতেগবয়ং নাব্যতেদোণীরৈয়তে পলালং। তরাদৌষিঙ্চেতি পুরঁ হুক্তং। তৰুণায়তে বালাকুমারীবাচরতি কুমারায়তে শ্বলাহিনী লোহিনী ভবতি লোহিতায়তে শ্বেতায়তে। ৬০৪॥

গল্ভক্লীববিহোডেভ্যোঙ্বি। অসংপৃক্তস্যবের্লোপঃ। প্রগল্ভায়তে প্রগল্ভতে ক্লীবায়তে ক্লীবতে বিহোডয়তে বিহোডতে ঙ্বিপ্রত্যয়াদাত্মনেপদামৌ প্রগল্ভাঞ্চকে ক্লীবাঞ্চকে বা প্রজগল্ভে। ৬০৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

কার্য্যমিতি। ক্রিয়তামেতদিতিকার্য্যম্ ঋবর্ণব্যঞ্জনান্তাৎঘ্যণ্ ইত্বৎ কার্য্যমিত্যাদিনাইন্ধ্যুবেইকাম স্থৈবোপধায়াইত্যাদিনা ক্র্ঞ্মকারস্তর্দ্ধঃ! যিঞীতিবক্ষ্যমাণ্যিঞ্প্রত্যয়ে। যদ্যপ্যাকারস্তাত্বকরণং নিক্ষলং তথাপি ঈকারবাধনায়েবতৎকরণং তথাহি মালায়তে ইত্যাদৌযদ্যাকারস্তাত্বং নস্তাত্তদাযাববর্ণস্ত ঈকার-ইত্যস্তপ্রব্রেমালায়তেইতিস্তাদিতীকারবাধনার্থমবর্ণস্তেতিগ্রহণং। সম্তলোপশ্চেতি চকারাদাহওজোহপ্রনার্মিক্যং প্রসাদেবিক্তায়য়েতি। অপরে অপ্রসঃ সলোপঃ নান্যস্তেত্বং জপ্তর্কদন্তিক্ম। ৬০৩॥

প্রভাপকাশিকা।

অন্য। যৌষিন্ প্রকরণেহন্যদযত্কং দীর্ঘাদিতদিহাপিমন্তব্যং তদাহযথেতি। অগ্নিরিবাচরতি গুরুরিবাচরতি গবয়োগৌরিবাচরতীতি। তরুণায়তইতি। তরুণীবাচরতীতি। শ্রেতায়তইতি। শ্রেনীবাচরতীতি সর্ব্বত্রপুবর্ষ দ্রাবে ঈপ্রত্যয়নির্ভোলোহিতম্ভেতিকৃতনম্যনির্ভিঃ নিমিভাপায়ইতি-ন্থায়াং। ৬০৪॥

गृष्धकाष्टिका।

অন্যদিতি। তুরবধারণেন। যন্প্রকরণেযদ্যন্যদীর্ঘান্ত্যক্তং তদিহাপিস্থাদেবেত্যর্থঃ। অগ্নীয়তে-ইত্যাদি। অগ্নীয়তে গুরুষতে ইত্যনয়োঃ ইকারকারয়োদ্দীর্ঘোপরে গব্যতে নাব্যতে ইত্যনয়ো-শ্বেদাদোদ্যোযংস্বরবং। রৈয়তইতিপ্রদঙ্গান্ধক্তং। এবং পিত্রীয়তে মাত্রীয়তে। তরাদাবিতি। তরাদো পুর্বে দ্রাববিধানম্ আদিনাযিঙ্ঞেতি পূর্ববমুক্তমিত্যর্থঃ। উপমানাদিত্যাদি এতংসূত্রাস্তমুপগীতি জাতিঃ। ১৯৪॥

প্ৰভাপকাশিক।।

গল্ভ। গল্ভ্যাধার্ফ্যে আধর্ম্য আসমন্তাৎ কারেণপ্রাগল্ভ্যং ক্লীবঅধার্ফ্যে অধার্ক্ত মপ্রগল্ভঃ অধ্রক্তশন্দান্তাবেষণ্ বিধানাং হেভূহোভূ অনাদরে অকারউচ্চারণার্থঃ এতেরুচাদয়ঃ এভ্যোঙ্বিবা। বের্লোপ-ইতি। বেঃ কেবলস্থানুবিত্যনেনেতার্থঃ। প্রগল্ভায়তে ক্লীবায়তেইতি। প্রপাল্ভক্লীবশন্দাভ্যাং যিঙ্
অস্তাবক্ষউদাহরণদয়ং প্রসঙ্গাভূকেং। ক্লীবতে বিহোডতেইতিঙ্বিলোপাৎ। প্রগল্ভাঞ্চক্রইতি। অয়াসদয়কাসিভ্য ইত্যাদিনাপ্রত্যয়ান্তাদাম্। ক্লীব্অধার্ফ্যেক্লীবতে চিক্লীয়তে ক্লীবঞ্চক্রেইতিমৈত্তেয়ঃ। ৬০৫॥

যিঙ্ লুক্ চ সর্বতঃ। যথা। গজতি গর্দ্দভঃ। অশ্বতি রুষঃ। সবিতা বিধবতি বিধুরপি সবিভরতি তথাদিনস্তিযামিন্যঃ। যামিন্য়স্তিদিনানি স্থভ্রষ্থ-বশীক্তমনসি। ৬০৬॥

যিঙ্ লুগন্তাঃ পরশ্বৈপদিনঃ। রাজীয়তি পুংস্যতি। ইত্যাদয়ঃ পূর্বং সাধিতাঃ। ৬০৭॥

গৃচপ্রকাশিকা।

গলেভেতি । ধাতুত্রয়েহকার*ছন্দোর্থঃ । এতেভ্যোধাতুভ্যাঙ্গির্বাস্থাদর্থাৎ স্বার্থেধাতোঃ পরপ্রত্যয়েআচারার্থস্থাসঙ্গতেঃ। যদ্যপিধাতুত্রয়ং রুচাদিগণপতিতং তথাপিঙ্গিরিতি ওসুবন্ধকরণাভাবেসনন্তস্থ পৃর্ববিদ্যুক্তত্বাদ্যপ্রত্যয়ান্তস্থ তাদৃশনিয়মাভাবে পরিস্থাপদস্থ প্রসক্তেঃ পরিস্থাপদং স্থাদিতিঙিৎকরণং । প্রগল্ভায়তেইত্যাত্যাদাহরণস্তপ্রস্পাদেবেতি । প্রভাপ্রকাশিকায়াঅপ্যেত্মতং । বস্তুতস্ত্রগ্রত্বপ্রব্যোধাহ ভিপ্রায়োলক্ষ্যতে অহাথাঙ্গিপ্রত্যয়ে প্রগল্ভাক্ষক্রেঙ্গিপ্রত্যয়াভাবে বাপ্রজগল্ভেইত্যাদাহরণস্থাসঙ্গত্যাপতেঃ। অতিগল্ভাদিনামভ্যোঙ্গিবিধানমিতি ভ্রমস্থানবকাশইতি । প্রগল্ভায়তে ক্রীবায়তে বিহোডায়তেইত্যত্র প্রগল্ভইবাচরতীত্যাদ্যর্থেশব্দভ্যএব যিঙ্ কর্ভৃস্তাত্বপ্রমানান্ধাম্মোযিঙ্বিধানাৎ । বা চিক্লীবেবিজুহোডেইতি । ৬০৫ ॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ষিঙ। গজতীত্যাদি। গজইবাচরতি অশ্বইবাচরতীতি যিঙ্ লুক্বিধীয়তে। বিধবতীত্যাদি। বিধুরিবাচরতি বিধবতি সবিতেবাচরতি। যিঙ্লোপে অনিগুণঃ। এবমন্তত্ত্ব। ৬০৬॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

যিঙিতি। দৰ্বতঃ দৰ্বেভ্যোধাতুভ্যোযিঙ্ লুক্ চ চকারাম্মস্যাচ্চ। আর্য্যাছন্দেন যিঙ্লোপ-প্রয়োগান্দর্শয়তি দবিতেত্যাদিনা। আর্য্যায়াঃ প্রথমেদ্বাদশ দ্বিতীয়েইফীদশ তৃতীয়েদ্বাদশচতুর্থেপাদে পঞ্চদশমাত্রাঃ। মাত্রাগণনয়াপাদাবিজ্ঞেয়াঃ। স্থ্যভূষ্থবশীক্তেমনিদি দূর্য্যাচন্দ্রমদোর্দ্দিনরাত্রোশ্চ স্তুল্যজ্ঞানমিতিভাবঃ। ৫০৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যিঙ্। রাজীয়তি পুংস্থতীত্যত্র লিঙ্গান্তলোপপুম্সাদেশোশব্দপ্রকরণেদর্শিতো। আদিনারাজা-য়তে দণ্ডীয়তইত্যাদি। ৬০৭॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

যিঙ্ লুগন্তাইতি। সনাদ্যন্তানাং ভুবাদিত্বেন বিশেষোক্তিং বিনাতল্লুগন্তানামপিতদাদিত্বং। পূর্ব্বং শব্দপ্রকরণে সাধিতাময়েতিশেষঃ। যিঙ্লুগন্তাঃ পরস্মৈপদিনোরাজীয়তি পুংস্থতীত্যেবং গাথাছন্দঃ।৬০৭। বাস্পোশকেন ধূমেভ্য উদ্বাস্তে। যিঙ্ বিধীয়তে। বাষ্পামুদ্দতি বাষ্পায়তে উষ্পায়তে কেনায়তে ধূমায়তে। ধূমায়স্তইবাল্লিফীঃ। ৬০৮॥

রোমস্থাদ্ধানুসঞ্চালে। সরোমস্থায়তের্যঃ। ভুক্তন্য পুনরাক্ষ্যচর্বণং রোমস্থঃ তত্রহনুসঞ্চালনে গ্যো। ৬০১॥

শব্দানেঃ করণে। যিঙ্ স্যাণ। শব্দং করোতি শব্দায়তে পটহঃ বৈরায়তে। শব্দবৈরশু ভ্রকলছমেঘকণ্ঠ বীরফুদিন জুদ্দিন জুদ্ধিন জুদ্ধিতি পুষ্ঠ গর্বাদিঃ। ৬১০॥

কর্তিদনারাং স্থাদিতঃ। যিঙ্ম্থাৎ। কর্তপ্রত্যক্ষানুভবে। আত্মনঃ স্থাং বেদয়তে স্থায়তে। স্থত্তয্থালীকরুষ্থপ্রতীককরুণাদয়ঃ।৬১১॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বাংশেতি। বাষ্ণামুমাশ্রুইতামরঃ। জিবারণার্থং যিঙিতিগ্রহণং। উদ্বারেতাবমনে। ধ্যারস্তইবা রিফাঃ প্রজন্তীবসংহতাঃ। উন্মুকানীবমেস্বাহিজ্ঞাতয়োভরতর্বত। স্বাঃ স্বকীয়াঃ। ৬০৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রোম। রোমস্থাদিয়ঙিতার্থঃ। হুনুচালনে রোমস্থাৎ রোমস্থায়তে গোঃ উদ্গীর্ঘ্য চর্কায়তীতার্থ-ইতিসারঃ। তত্ত্রতি। তত্ত্ররোমস্থে। হুনুচালনে কিং রোমস্থং বর্ত্তরতি কাঁটঃ মস্থাকরোতি। স্ক্ষাকরণমিতিকশ্চিৎ। ৬০৯

গৃতপ্ৰকাশিকা।

রোমস্থালিতি। তিরশ্চাং চর্বিতং বস্তুপুনরুদ্দীর্যাচর্বণং রোমস্থইত্যমরটীকা। হুরুর্গণ্ডাধোদেশঃ। গণ্ডকপে,লোভংপরাহুরুরিত্যমরঃ। রোমস্থবিদয়েহুরুদঞ্চালনে গম্যেসতি রোমস্থাং বিধীয়তেইত্যর্থঃ। রোমস্থাং কিং মাংসং চর্বয়তি। ৬০৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা ৷

শব্দ। শব্দক্রিয়ায়াং শব্দয়তীতি শব্দ। আদিপদাৎ নীহার শীকার পোটা প্লুফীবপাদয়ো-বোধ্যাঃ। ৬১০॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

শব্দাদেরিতি। করণেহর্গেগম্যেশব্দাদেঃপ্রোযিঙ্ স্থাদিত্যন্তরঃ। পটহঃ ঢোলইতিখ্যাতঃ। আনকঃ প.টহোহস্ত্রাস্থাদিত্যমরঃ। বৈরং বিরোধং করোতি বৈরায়তে এবং শুভ্রায়তে কলহায়তেইত্যাদি। ৬১০॥

গ্রভাগ্রকাশিকা।

কর্। কর্বিদনা কর্প্রত্যক্ষামূভবঃ। আত্মনঃশ্রথং বেদয়তীতি। প্রথমমূভবতীত্যর্থঃ। চির-কংলামূভতঃ শ্রথং সদাবেদরতি তদানভবতীতি বজ্রধরঃ। শ্রথেত্যাদি। তুমথায়তে অলীকায়তে কৃচ্ছায়তে প্রতীকায়তে করুণায়তে। আদিপদাৎ দৃপ্ত শৌচ অংশ অশ্রকুপণাদয়ঃ। ৬১১॥ কফ্টকু দত্রণহনার পাপায়ক্রমণে। কফায় ক্রামতি প্রবর্ত্ততে কফায়তে কুড্রায়তে সত্রায়তে কফং কর্তুং ক্রামতীত্যর্থঃ। চতুর্থী প্রহণাদিহনপুনঃ কফং ক্রামতি। ৬১২॥

যিঙ্গ্যাদভূততদ্ধাবে ভূশাদিভ্যোহলশ্চলুক্। ভূশায়তে শীদ্রায়তেহলো১ন্ত্রস্ত্রনায়তে বেহং বেহায়তে শখং শখায়তেদৃষং দৃষায়তে। ভূশশীঘ্রচপলোন্ত্রোংস্কোন্মন্ন্ স্মন্ন্ দ্র্মন্শ্রং বেহং দৃষং শুচিপণ্ডিতাঃ। আকৃতিগণোইয়ং। ৬১৩॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

কর্ত্রিত। বিদ্জানে বেদনং বেদনাঈষিশ্রস্থ্যাসিবিদ্বন্দ ইনস্তাদপ্যনঃ শৃতইত্যনঃ স্ত্রীলিঙ্গাধিকারাং স্থ্রীত্বেআপ্রত্যয়ঃ। কর্তুর্বেদনেতিবিগ্রহঃ তস্থাং। কর্তৃপ্রত্যক্ষামুভবে কর্তৃপ্রত্যক্ষজানেইত্যর্থঃ। অলীকত্ত্বপ্রিয়েহনৃতেইত্যমরঃ। কৃচ্ছু মাখ্যাতমাভীলে পাপদান্তপনাদিনোরিতি প্রতীকোহবয়বেহপিস্থাৎ প্রতিকূলবিলোময়োরিতি চ কুপায়াং করুণামতেতিচ মেদিনী। ৬১১॥

পুভাপুকাশিকা।

কট। কটাদিভাঃ পাপকর্মরপেভাঃ ক্রমণেহঅর্থে বিঙ্ স্থাৎ। কটায়ক্রামতীতি। কটায় পাপকর্মণেক্রামতীতে। কামতীত্যস্থার্থঃ প্রবর্তভইতি। অন্যেতু সত্রাৎপূর্ব্বং কক্ষেত্যপাত্য তত্রকক্ষ-সত্রশক্ষোবলবৎ পাপকপটবচনো কটাদিপদং পাপজনকর্ম্মপরং তদর্থং গমনং তেন তাদর্থ্যেচতুর্থী কক্ষায় বলবৎপাপকর্মণে সত্রায়কপটপাপকর্মণে ক্রামতীত্যর্থ ইতি। অপরেতু পাপোংপত্তিকলম্বরপক্রমণে কন্টাদিভ্যোঘিঙ্ তেন কক্ষায়েত্যাদিষ্ গত্যর্থ চতুর্থীত্যাহ্যঃ। কেচিভুক্টাদিক্রমুদ্দিশ্যপাপং যথাস্থাৎ তথাক্রমণেহর্থে বিঙ্ কন্টার্থং পাপং যথাস্থান্তথাক্রামতীতি বদন্তি। সত্রায়তে গহনায়তে কক্ষায়তে কৃচ্ছায়তেইতিসারঃ। পাপায়তে ইতিহুর্গঃ। কন্টমিতি। ক্র্যাতোস্থাত্যাক্রমাতি। চতুর্ববিগমনান্তঃ পাতায়কর্মণে ক্রামতীত্যর্থঃ। অপাপকর্মণেতু কন্টায়তপ্রসেক্রমতি। চতুর্থান্তগাহনায়েতি নির্দেশাৎ দ্বিতীয়ান্তারভবতি বিঙ্ কন্টং ক্রামতিকন্টং পাপং ক্রামতি। ক্রমং প্রয়োগএবেদং নেহকন্টায়কর্মণে ব্রজতীতি। ৬১২॥

গৃতপ্ৰকাশিকা i

কটেতি। পাপায় পাপকর্মরূপায় কউরুচ্ছু সত্রগহণায় ক্রমণেতাদৃশকষ্ট্যাদিকং কর্জুং ক্রমণেহর্থে যিঙ্ অর্থাৎ কন্টাদিভাইভার্থঃ। উক্ত ক্রিয়ার্থাপ্রযুক্তক্রিয়াকর্মণি সাশ্বতেতি চতুর্থী। সত্রং
যজ্ঞেসদাদানেছাদনারণ্যকৈতবেইতিরভসঃ। গহনং কাননেছর্গেইতিবিশ্বঃ ছুর্গং হুর্গম্যং তদেব পাপরূপং
কন্টদন্বাৎ। ইদমপ্যসুষ্টুপ্ছন্দোহন্তর্গতং।৬১২।

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

যিঙ্। চ্যুর্থেভূশাদিভ্যোষিঙ্ স্থাৎ হলশ্চ লুক্ যথাসম্ভবং। ভূশায়তইতি। অভূশং ভূশং ভবতি যিঙ্ অকারস্থাত্বং। শীদ্রায়তইতি। অশীদ্রং শীদ্রং ভবতীত্যর্থঃ। হুমনায়তইতি। অহ্মনাঃ স্থমনাভবতি।

লোহিতাদিগজন্তাদ্যিঞ্। অলোহিতো লোহিতো ভবতি লোহিতায়তি লোহিতায়তে মন্দায়তি মন্দায়তে এবং নালহরিত শ্বেতকৰুণাক্রপানিদ্রাফেন কেকাশব্দাঃ। কৰুণাদয়স্তদ্বতিবর্ণনীয়াঃ। ডাজব্যক্তান্ত্রকাণাদিতি ডাচ্ ডাচিদ্বিঃ অপটং পটৎ করোতি পটপটায়তে পট পটায়তি অভ্যাসেতলোপঃ দন্দনায়তি দন্দনায়নানঃ। ৭১৪॥

বেহৎ গর্ভপাতনশীলাগোঃ অবেহৎ বেহৎ অশব্ধ শব্ধ অদ্বৎ দ্বৎ ভবতীতিবাক্যং হল্লোপে আৰুং জুবুৰাহাদায়নেপদক্ষ। এভাোহতেপি সন্তাত্যাহাক্তীতি। ভূশশীঘ্রচপল উন্মন্ তুর্মান্ অসন্স্বাহৎ বক্তস্ উৎস্তক ওল্লস্ শুচিবেহৎ পণ্ডিতশব্ধ প্রতীপলোহিতবন্ধন্ কুপানিদ্রাকক্ষণানীল ফেনহ্রিৎ মন্দভ্রেত্যাদ্যাম্ব্রতী। অভ্ততদ্রাবইতি। অভ্তত্য শুক্রনীলাদেন্তেনপ্টাদ্যবস্থিতধর্মিস্থক্রপেণ ভাবোহভূতভদ্বাবঃ।৬১৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বিঙ্ঞাদিতি। বিঙ্গ্ৰহণং অথাৰ্থং ছন্দোহৰ্থং। যৰাচতুৰ্যন্তাংপ্ৰত্যয়বারণাৰ্থং। অভ্ততদ্বাবেইতিগ্ৰহণং চ্যুৰ্যাত্ৰবারণাৰ্থন্ অভ্যথা অলোহিতং লোহিতং কৃৎস্নং সম্পদ্যতে ইত্যাদেচ্যুৰ্যাৎ তেইপিবিঙ্জাং। ভূশেত্যাদি। ভূশনতিশয়ং শীত্ৰচপলেঅবিলম্বিতে উন্মন্তউন্মাদবান্ ইন্টাৰ্থোদ্যুক্ত-উৎস্তকঃ উন্মন্তিংকাগ্ৰান্ স্থানাঃ শোভনচিত্ৰবান্ স্থানাঃ চিন্তাদিয়ুক্তমানসঃ শশ্বংপুনঃ পুনঃ নিত্যংবা বেছং গর্ভে:প্যাতিনাগেটাং দৃষংশিলাশুচিঃ শুদ্ধং পণ্ডিতঃ। তর্কসাহিত্যসিদ্ধান্ত বেদবেদান্তগামিনী। বুদ্ধিঃ প্রস্থানাগাতাতদ্বোগাং পণ্ডিতঃ স্মৃতঃ। আকৃতিগণইতি। বৃহৎবর্চ্চস্ওদ্যাদয়োজ্যোঃ। উন্মনসাদীনাং ভূশাদিগণপাঠ দভ্ততদ্বাবেহর্থেবিঙ্প্রত্যেহ্তহল্যুক্ আচারাথেবিঙ্প্রত্যেসলোপইতিজ্বেঃ। ৬১৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

লোহি। লোহিতাদেঃ ডাজন্তাৎ ডাজপ্রতারান্তাৎচ্যুর্থিতি স্থাৎ। ভিত্রান্ত্রপদং। চ্যুর্থেক পূতাদেবপ্রতারইতিধ্যের । লোহিতারতিসহস্রমরীচাবিতিভারবে। লোহিতাদীন্ গণয়তি এবমিতি।
অন্তরাপি লোহিতখেত হরিতনি দাকে কামুণারূপাক রুণানীলমন্দর মাকেনাইতি। অফেনঃ ফেনোভবতি
ফেনায়তি ফেনায়তে অনি দাবান্ নি দাবান্ নি দায়তি নি দায়তে ক রুণায়তি ক রুণায়তে। ক রুণাদয়
ইত্যুপলক্ষণং সর্কা এবত ছতিবর্ণনীয়াঃ ক রুণাদয় স্তর্কাতি যায়তারিক তে লোহিতাদেও ণিপরস্থা স্ফুট্রাৎ।
ডাজিতিসূত্র তদ্মিতে স্থারয়তি ডাচিদ্রিরিতি। শক্ষানুক্তি ডাচিদ্রিরত্যনে নিছা। অস্তাসতলোপ
ইতি। পুরেনির দিয়াদিত্যর্থঃ। অব্যক্তশক্ষানুকরণে ডাচিদ্রিং পটপটায়তেইতিসারঃ তুর্গন্ত। দমদমায়তইতি
কল্পের্ভিঃ। অভ্যত্র ধ্রের ভবতের্ব্যোগাৎ তেন।ভূশং ভূশং করোতাতিক ক্মণোন ভবততি। ৬১৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

লোহিতেতি। লোহিত্যাদিয়েবাং লোহিতাদয়শ্চ ডাচ্ অন্তোষেষাং ডাজন্তাশ্চপবাশ্বপ্রভিত্তাৎ সমাহারঃ সর্বরন্দ্রেনিভাবৈকবদিতিবচনাদ্ব। একবচনং। অভ্ততদ্ঞাবেইত্যসুবর্ততে। লোহিতোরোহিতো রক্তইতি। মন্দায়তীতি।মূঢাল্লাপটুনিভাগ্যামন্দাইতিকৃষ্ণেনীলাসিতশ্যামকালশ্যামলমেচকাইতিপালাসোহরি কণাদিভ্যোষণ বিহঃ। স্বার্থে। কণ্ডু ঞ কণ্ডু য়তি। কণ্ডু য়মানেনকটং কদাদিং। কণ্ডু ঞ্ মহীঞ্ হ্রিণীঞ্ অসূঞ্ ক্লিশ্ য়গ স্থা ছব্যভবনমেধাতৃলা-বেলাখেলামগধলোট্ তিরস্ উরস্ মন্ত বল্পইতি। অনয়োদ্দীর্ঘপাঠাং। মহীয্যমানাভবতীতিমাত্রং হ্রিণীয়তে বীরবতীনভূমিঃ। ক্লিশ্যরপিহিমেধাবী। মুগ্যস্তঃ পদবীং সন্তঃ। ধান্বস্তুস্যাস্যলোপঃ স্যাং। স্থেগ্যুঃ প্রকৃত্যোন্পং। বল্পয়ন্তীং বিলোক্যত্বাং স্ত্রানমন্তর্গতীহকা। কণ্ডু াদয়োদ্বিধিধাধাতবোলিঙ্গানিচ অত্রধাতৃভ্যোষণ্। লিঙ্কস্যতু কণ্ডুঃ মন্তঃ বল্পরিতি। ৬১৫॥

তোহরিদিতি শুরু শুল্র শুচিষেত বিশ্বদেশ্যত পাণ্ডরাইতি কারুণাং করুণায়ণাইতি রূপাদরামুক্শাস্থাদনুক্লোশইতি স্থানিদ্রান্ধ স্বাপঃ স্বপ্রঃ সম্বেশইতাপীতি হিণ্ডীরোহ্ধিকেকঃ কেনইতিকেকাবাণীম্যুরস্থেতিচামরঃ। করুণাদয়ইতি। অভ্তন্তাবেইতিকথনাত্ত্বতের্যোগেক ইভুতাদেবপ্রত্য়প্রাপ্তেঃ করুণাদীনাং ক্রিয়াদিদ্বোষঃ স্বতন্ত্রঃসকর্ত্তেতিক ইলক্ষণস্থাকাপনাম্মুগ্যক ইলাভাবাং চুর্থোনয়য়াচ্চমুখ্যকর্তুরেবপ্রতায়ইতি করুণাদয়োয়িঃ প্রতিত্তহংপরতয়াবর্ণনীয়াইতার্থঃ। গুণেশুরুলয়পুংদিগুণিলিঙ্গাস্তত্বতীত্যাদিনাশুরুল লোহিতাদেগুণিপরস্থা ক্রুলিং করুণাদয়ইত্যুক্তং। নমুভূশাদেগুণাং কথং প্রতায়ইতি চেনভূশাদেরপি গুণিপরস্থা ত্রণাচামরঃ রাবেশীল্রাদ্যমন্ত্রেমালিবেলাং ভেদ্যগামিনদিতি। ম্বাকরুণাদিভ্যোমতুপ্ প্রতায়ঃ মন্ত্রাদেগুণি বাচিভ্যানুগিপ্রের্যালুনারগীত্যপিনামিঞিচলুক্। পটপটায়তীতিদাধ্যং প্রভাপ্রকাশিকায়ামবলাকনীয়ং। দমদমায়তীতি। অদমৎ দমন্ত্রতাতি। দমদমায়মানইতি। দমদমায়তইতি দমদমায়মানঃ বর্ত্রমানেশন্ত শানাবিতিশানঃ শিল্পেনশিং সংজ্ঞকতয়ামিভন্তপ্রচ ভুবাদান্তগততয়া অন্বিকরণে অকারামুত্তব্যানেইভিন্নভাগ্যঃ। ৬১৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কণ্ডা। কণ্ডাদিভ্যোধাতুভ্যোয়ণং স্বাথেবিচ্ঃ। কণ্ড্ ঞিভি ধাতুগণপাঠাংগুণেপ্রাপ্ত যণিতি
থকারোগুণনিষেধার। কণ্ডুমনিনেনকটং কদািচদ্বভাদিপেনােমথিতাহগভা। অথৈনমদ্রেনরাগুশােচ
কেনাভ্যমানাভ্যিবাজরা স্তৈরিভির্ঘো। মহাজ্ পুজারাং হিণীঞ্ লজ্লায়াম্ অসুঞ্ অনাদরে ক্লিশ্বিবাধারাং
মুগান্বেলণে মুগাতি দিবাদিরিতাভো। স্থ্রুম্গতংক্রিরারাং তৎক্রেয়ালগতুম্থক্রিরাভবনগতে) মেধা
আগুগ্রুণে তুলাবেলাকলাথেলাবিলাদে মগধপরিবেকনৈবেট্ লােট্ ওচিতে পুর্বভাবে স্বপ্নেচ ভিরস্
উরদ্ বিরস্ ঈর্ষাং মন্তরো বেবিমনভাচবল্পরাধুর্যেপুজায়াঞ্চর্তি বজ্রধরলেথনাদেবতে কণ্ডাদয়ােধাতবঃ
লঙ্গানিচ। মহীয়মানেতি। মহীয়ধাতাঃ শানপ্রতায়ে যকিষ্ট্ ভবতাহেতুনা মহীয়য়মানা পুজামানা
অতিমাত্রমন্ত্রি ভূমির্মাইণীয়তে ন লজ্জতে। ক্লিশ্বাতি। ক্লিশ্বাতোয়ণি শভ্ঃ। মগধাতাঃ শন্তরি
মুগান্তঃ অথিযান্তঃ। স্থেয়ের্রিতি। প্রকৃত্রোহ্মত্যানুপং স্থেযার্হ স্থানং ক্র্যুঃ স্থাধাতাযুদি।
তথাভবভাতি মেধায়তি তুলায়তি মগধ্যতি লােট্যতি তিরভাতি ইত্যাদি। লিঙ্গভাছিতি। কণ্ডঃ থর্জ্বঃ
মন্তরোশঃ বস্তুর্মনাহরঃ। ৬১৫॥

গুপুর্বিছিপণ্ পন্ত্য আষদ্যাং। এত্য আষদ্যাং স্বার্থে। গোপায়তি ধনং। ধুপায়তীবপটলৈর্মবনীরদানাং। চুরাদিন্বাং গোপয়তি ধূপয়তীত্যপি। বিচ্ছা-য়তি। তুদাদিন্বাং নভবত্যপি। গাং বিচ্ছতীতিন্যাসকতোক্তেং। অন্যেতু বিচ্ছয়তি বিচ্ছায়ন্তীতি বাশস্ত্রর্মলোপং তুদাদি ফলমাহঃ। পণ্স্তুতৌ পণায়তি দেবান্ পনায়তি গুরুন্। ৬১৬॥

বাপণোইস্তুতো। ব্যবহারার্থপণআযস্যাৎ। নচোপলেভেবনিজাৎ পণায়া-ইতিভট্টিঃ। মহামাং সস্যপণায়িতা। আপণয়ন্ত্যুম্মিন্নিতি আপণইতিন্যাসঃ। বাশতস্যপণতে। ৬১৭॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

কণ্ডেবি। ধারুষু চ্যর্থাঘটনাদাহস্বার্থ ইতি। কণ্ডাদয়ঃ স্বার্থবণান্ডাভুবাদয়ঃ সনাদ্যন্তাশ্চধাতবইত্যুক্তরাং। অনয়োঃ কণ্ড্রিরমোর্মহীব্রিণীধান্তোরিত্যর্থঃ। মহীয়্যমানাভবতাতিমাত্রং স্তরাপ্রকে
ঘশ্মরজিররেণ। দিবোহপি বজায়ুধভূষণায়া ব্রিণীয়তে বীরবতীনভূমিরিতি ভটিঃ। ক্রিশ্যয়হপি হিমেধাবীপ্রযাতিনহ্ধীরতাং। সৈংহিকেয়াননগতোধীর্যানইবারুণঃ। বল্লয়ন্তীমিতি। কাল্ডিরাভিমনায়েত
কোবাস্থাপুসমোহপিতে। ইতিপরার্জং। বল্লয়ন্তীং শোভমানাং মন্তরতি সর্ধায়্কাভবতি। ৬১৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গুপু। গুপুরক্ষণে তপ্ ধূপ্ সম্ভাপে বিছ্গতো পণ্স্ততোব্যবহারেচ পন্স্ততো বিছ্গাতুর চুরাদিঃ পনিঃ স্তত্যর্থ ইতি তৎসাহচর্য্যাৎপণিশ্চ স্তত্যর্থোগৃহতে। ৬১৬॥

গুডপ্রকাশিকা।

গুপিতি। গুপুত্প ধূপ্ তুপ বিছ্ তুপ পণ্ তুআ পন্ তুআ। এতেভ্যোধাতুভা আয়স্তাৎস্বার্থে অয়মাগমঃ শিতিনিত্যম্ অশিত্যাযাদয়স্তবৈতি বক্ষ্যমাণসূত্রাৎ। ধূপায়তীতি। আচ্ছাদ্যপূষ্পপটমেযমহান্তমন্তরাবর্ত্তিভাগৃহকপোতশিরোধরাতৈঃ। স্বাঙ্গানিধ্মরুচিমাগুরবান্দধানৈরিতি পূর্বপাদত্রয়ংমাঘে। তুদাদিয়াদিতি। তুদাদিগণপাঠস্থনিক্ষলত্বাদিতিতস্থাশয়ঃ। আয়স্তাদেব ভাদিতুদাদিস্তেভ্যোবেতি বিকল্পেনস্ত্রন্দোপফলস্বাদিত্যপর্মতং। স্বমতানু্যায়িদর্শয়তি অন্যেহিতি। তুশকঃ স্বমতানু্যায়িমত-সূচকঃ। ৬১৬॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

বাপণো। অস্ততোব্যবহারেবা বনিজাং পণায়াঃ ক্রেয়বিক্রয়ব্যবহারান্ নোপলধ্ববানিত্যর্থঃ। মহামাংসম্ভেতি। মহামাংসম্ভপণায়িতামাধ্বইতি মালতীমাধ্বেপ্রয়োগঃ ইডাগমঃ মহামাং সং নৃমাং সং পণায়িতাব্যবহুর্তা। শতন্তেতি। ক্রুণিবন্ধীব্যবহুরেঞ্ত্যাদিনা। ৬১৭॥

কমের্ডিন্স্যাৎ। ইনির্দ্ধিঃ। কাম্য়তেবিদ্যাং। ৭১৮॥ ঋতেরীয়ঙ্। ঋতেঃ সৌত্রাং ম্বণার্থকাং ঋতীয়তে। ৬১৯॥

অশিত্যাযাদয়স্ত্রবা। স্থ্যঃ। গোপায়িতা গোপ্তাগোপিতা ধূপায়িতা ধূপিতা কাময়িতা কমিতা ঋতীয়িতা অর্ত্তিতা। আযইত্যকারপাঠাৎ অজুগোপায়ৎ অপপণায়ৎ ইতিনহ্রসময়দ্ধাবৌ। ৬২০॥

গুতপ্ৰকাশিকা।

বাপণইতি। পণ্স্ততোব্যবহারেচেতিপণঃ স্তুতিব্যবহারার্থকত্বাৎ স্তুতিভিত্যেব্যবহারেহর্থেশ্বার্থেবা আয়স্তাদিত্যর্থঃ। নচেতি। সপ্রোষিবানেত্যপুরং প্রবেক্ষ্যন্ শুক্রাক্ষ্মঘোষং নজনোঘজন্তঃ। আকর্ণয়ান্মানবেদনাদানিতি পূর্ব্বপাদত্রয়ং। পণায়াইতি। পণায়নং পণায়াআযন্তাৎ সনাদিপ্রত্যয়াদপীতিভাবে আঃ স্ত্রীলিঙ্গত্বাদাপ্রত্যয়ঃ শসিসন্ধিঃ। পণায়তেতি। শ্বন্তব্যেকবচনেইটিরূপং। ৬১৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কমে। ওআত্মনেপদার্থঃ। স্বার্থেডিনির্দ্ধিঃ। ৬১৮॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

কমেরিতি। কমুকান্ত্যভিলাষয়োঃ তুমা। ইনির্দ্ধিরিতি। ঙিনিতিকরণেহপি ঙকারস্তা-সুবন্ধতয়াহনবস্থানাৎ বস্তুতইনোহ্বস্থানাদিকামস্যৈবোপধায়াইত্যাদিনার্দ্ধিরিত্যর্থঃ। কাময়তে অভি-লয়তীত্যর্থঃ। ৬১৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ঋতেঃ। স্বার্থে ঋৎগতোদ্বণায়াঞ্চ। ঋৎদ্বণায়াম্ ঋতীয়তে ঋতীয়েতে ঋতীয়িতা আর্ত্তিতা বেতিসারঃ। ৬১৯॥

গূচপ্রকাশিকা।

ঋতেরিতি। স্বার্থেক্সয়ঙ্স্থাৎ ঙকুবন্ধআত্মনেপদার্থঃ। ঋৎস্পদ্ধাক্রশ্ব্যদয়াগতি নিন্দান্ত্রসোত্রোধা-তুর্গণাপঠিতোহপি ভুবাদ্যন্তর্গতঃ পরস্মৈপদী। তত্রানেকার্থত্বেহপি ঘ্লার্থকাদিতি বক্তব্যত্বাৎ দয়ার্থকাদেব ক্সয়ঙিতিগ্রন্থকর্ত্ত্বঃ স্বরসোলক্ষ্যতে অন্থার্থেতু অর্ত্তীত্যাদিপ্রয়োগইতিমন্তব্যং। ৬১৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অশি। গুপুধ্বিছীত্যাদিনা বিহিতাআ্যাদয়োবাস্তঃ। গোপায়িতেতি। শস্তমাস্তাঅনেকাচ্ছাদিভাগমঃ বাগোপ্তা উদসুবন্ধছাদেট্ গোপিতাচ। কমের্ডিন্ বা কাময়িতেত্যাদিইভাগমঃ। ঋতেরীয়ঙ্ বা
ঋতীয়িতেত্যাদি। অজুগোপায়দিতি। গোপায়তিকশ্চিদিতীনিধাছস্তম্যাম্য লোপেলুঙিচঙ্ইতি লুপ্তসমানত্বাপ্রপান্তব্রস্বাভাবেসমন্তাবাভাবেচ অজুগোপায়ৎ এবং পণায়তিকশ্চিদিতীনি অলোপেপণায়িধাতোশ্চঙি

11

ক্রিয়াসমভিহারে যঙ্ডেকাচোব্যঞ্জনাদিকাং। ক্রিয়াসমভিহারোনামপৌনঃ পুন্যং ভূশার্থোবা অত্রার্থেধাতোর্য্যঙ্স্যাং। যঙিদ্বির্হনপ্রক্রিয়া। ৬২১॥

লুগুদমানত্বাৎ <u>র</u>স্বস্বস্থাবাভাবে অপপণায়দিতি। বজ্রধরস্তুআয্প্রত্যয়োহলন্তএবনস্বরান্তঃ তেনাজুগোপয়ৎ অসমানলোপাতুপান্ত<u>র</u>স্বইত্যাহ। ৬২০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অশীতি। অশিতিপরে আযাদয়আয়ঙিন্ ঈয়ঙ্বাস্থ্যরিত্যর্থঃ। নহ্রস্বসন্থভাবাবিতি। তয়োভাবে-অজুগোপয়ং অপীপণয়দিতিভাবঃ অয়ং ন সর্কাময়তঃ কিন্তু বজ্রধরসম্মতইতি। ৬২০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গুতপ্রকাশিক।।

ক্রিয়েতি। সমভিপূর্ব্বে: ক্রঞ্ হরণে ভাবেষ ঞ্রুদ্ধি:। ক্রিয়াসমভিহারপদস্থার্থমাহক্রিয়েতি।
ক্রিয়াণাং সমভিহারইতিবঞ্চীসমাস:। নামইতিপ্রাকাশ্যেসস্তাবনায়াংবা। নামপ্রাকাশ্যমস্তাব্যেত্যাদ্যমর:।
পৌনঃ পুর্যামতি। পুনঃ পুনর্ভাবইতিবাক্যেণ্ ভাবেকর্মণ্যপীত্যাদিনায়ণি আদৌর্দ্ধিঃ অব্যয়ানাং
শশ্বদাদিখিহায়াল্যম্বরাদিল্গিতি অর্লোপঃ পুনঃ পুনরার্ভিরিত্যর্থঃ। ভূশার্থোবেতি। ভূশমতিশয়ঞ্চ তদর্থকৈতি। অতিশয়ঞ্চ ক্রিয়াবয়বানাং কার্ম্বাঃ। তথাচ ক্রিয়াণাং পুনঃ পুনরার্ভিরপপৌনঃ পুরুং
কংমকলার্থং ক্রিয়াবয়বানাং কাংম্বর্রপভূশার্থোবা এতত্বভয়ার্থেপ্রত্তাদেকাচোবাঞ্জনাদিকাদ্ধাতোঃপরোষঙ্
ত্যাদিতি বাক্যব্যাজনা। ৬২১॥

যংকৃতং যকিতংকার্য্যমতনের্য্যঙি ঋস্তুরী। অভ্যাসস্যগুণঃ। ভূশমত্যর্থং নয়তিপুনঃ পুনর্বানয়তি নেনীয়তে বোভূয়তে যকঃ কার্য্যং দীর্ঘাদি জেজীয়তে লোল্য়তে দেদীয়তে জেহীয়তে তেন্তীয়তে। নষত্বমিত্যেকে। ইক্রোচেকীর্য্যতে পোপূর্য্যতে ঋস্তুরী চেক্রীয়তে জেহীয়তে। ৬২২॥

অকারাদট্ স্যাৎ। পাপঠ্যতে বাবচ্যতে। ৬২০॥ রীতৃঋবর্ণিনি। ঋবর্ণবভিবর্ণেইভ্যানস্যাকারাংরীস্যাৎ। জরীগৃহ্যতে পরী-পৃচ্ছতে এবং ব্রশ্চ্ ভ্রজ্জ্রধাদেঃ। ৬২৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যংকৃ। যকিযংকার্য্যং কৃতং নামায়কিদার্যইত্যাদি যধ্যপিতৎকার্য্যং কর্ত্ত্র্যম্ অতনেস্তন্ভিয়াদ্ধাতোরিতি। ঋদন্তধাতোঃঋপুনঃ রাস্থাং অভ্যাদস্থ ইপ্রভৃতেগুলঃ। ভূশমিত্যস্থার্থেমিতি। নেনায়তইতি।
নীগাতোর্যাঙি চঙ্ দন্ যঙিত্যাদিনাদ্বিঃ অভ্যাদের্থেগুলঃ। বোভ্রতইত্যাদি। দিগুলিচতুর্থস্থৃত্তীয়কঃ
জিগাতোর্মামায়কিদার্যঃ স্থাং। দেদীয়তইতি। দানাম্যাদেশক্বাং কিতিহলীত্যাদিনাসত্বেদিঃ গুলুক্চ।
কেহীয়তেইত্যাদি। হাকসবেদিঃ হ্লাজঃ গুলুক্চ স্থাপুর্ববদীত্বেদিঃ গুলঃ অঘোয়োর্দ্ধেত্যাদিনাসলোপঃ
প্রথমঃ স্থাদ্দিতীয়স্থেতি অভ্যাদেথস্থতঃ যক্বং ১৯৯। একইতি। ত্মতে তেস্থায়তইতি। ইরুরাবিতি।
ঝাদন্তেস্থাদিনা ইর্ উর্স্থাদোষ্ঠ্যাদিত্বর্ চেকার্যাতেইর্দ্বিঃ কস্থচঃ গুলঃ পোপুর্যাতে উর্দ্বিঃ গুলঃ। চেক্রীয়তইতি। কুঞ্ঝতুরাক্রীদিঃ অভ্যাদস্থাণঃ কন্চঃ এবং স্কঞঃ হোজঃ। ৬২২॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

যদিতি। নেনীয়তইত্যাদি। নীঞ্প্রাপণে ভূসভয়াং জিজয়েলুঞ্ ছেদনেওহাক্ত্যাগে ষ্ঠাগতি-নিরতৌ কৃবিক্ষেপে পূপালনপূরণয়োঃ ভুকুঞ্করণে ব্লালজ্জায়াং। অতনেরিতিকিং তন্তভাতে তনস্তাবা-ইতিনস্তাহ। ৬২২॥

প্রভাপ্রকাশিক।।

অকা। অভ্যাসাদকারাদট্ স্থাৎ। পাপঠ্যতইত্যাদি। পঠ্বচ্ভাষণে। ৬২৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অকারেতি। অভ্যাদস্যেত্যসুবর্ত্ততে তেনাভ্যাদস্যাকারাদট্ স্থাদিত্যর্থঃ। টসুবন্ধ আগমসূচকঃ। পাপঠ্যত ইত্যাদি। পঠ্ব্যক্তায়াং বাচি বচ্ ভূপ পুনঃ পুনরতিশয়ং বা পঠতি বক্তীতিবাক্যে যঙ্ ততো-দ্বিত্বাদি। ৬২৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রীতু। জরীগৃহতইতি। গ্রহের্ঘাঙি সম্প্রদারণম্ ঋবর্ণস্থাকারঃ কবর্গস্থ চবর্গঃ অভ্যাসাকারাৎরী এবং প্রছ্ পরীপৃচ্ছতে ত্রন্ড্বরীর্ন্চ্যতে ভ্রক্তব্রীভ্জ্যতে সম্প্রসারণং। ঋবর্ণবন্ধাৎ রুধ্ বরী-রুদ্ধাতে। ৬২৪॥

অনুস্বারঃ পঞ্চমান্তজপাদীনাং। অভ্যাদে স্যাং। জঙ্গম্ভ বস্তুণ্যতে জঞ্জন্যতে জাজায়তে চখন্যতে চাখায়তে। অতনেরিতি নিষেধাং জন্তন্যতে। জপাদীনাং জংজপ্যতে জংজভ্যতে দংদহুতে এবং দন্শ্ সন্জ ভন্জ পশাং। পশ্ইতি সৌত্রোধাতুর্বন্ধনার্থঃ। বাধাতোশ্চ॥ বন্ধায়মানহৃদয়ঃ কিমহং করোমি। ৬২৫॥

চলস্ত্রবা। চঞ্চল্যতে চাচল্যতে। ৬২৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

রীত্বিতি। তুকারেণ অভ্যাসস্থাকারাদিতি পরাস্ব্যতে। ঋবর্ণেইত্যুক্তে জরীগৃহতইত্যাদি নসিদ্ধান্তীতি ঋবর্ণিনীত্যক্তং। গ্রহ্ উপাদানে জ্যাউ প্রছ্ জ্ঞীপ্পায়াং তুপ ও ব্রশ্চ্ছেদনে তুপ ভ্রজ্পাকেতুপ রধু রদ্ধো ভুআ আদিনা স্বজ্শুদ্ধীভাবে অপ মরীস্ক্যতে কৃৎদংশন্দনেচুপ চরীকৃত্যতেইত্যাদি। ৬২৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনু। পঞ্চমান্তাশ্চজপাদয়শ্চতে তথাতেষামভ্যাদে অকারাদ্বিদুরাগমইত্যর্থঃ। জঙ্গমাত ইত্যাদি। গম্ভণ্জন্থন্ সন্থেতি বাথাজাদেশো অভ্যাদাকারাদিত্যসূত্রতঃ জাজয়তে চাথায়তে ইত্যত্তনবিন্দুঃ। অতনেরিত্যনেন তন্ধাতোর্যানিষেধারপাক্ষিকতাদেশইত্যর্থঃ। পঞ্চমান্তাএতে। জপাদিরুদান্ত্রিয়তে জপাদীনামিতি। জপ্ জল্ল্ ব্যক্তায়াং বাচি জপ্ মানদেচ জভ্ জভীগাত্রবিনামে দহ্ভস্মীকরণে। দন্শ্ সন্জ ভন্জ পশামিতি। দংদশ্যতে সংসজ্যতে বংভজ্যতে অগুণেহন্ত্যব্যঞ্জনাদিত্যাদীনা নলোপঃ পংপশ্যতে তালব্যঃ। অত্রৈব বাধাতোশ্চেতি। বদ্বায়মানং হৃদয়ং যস্থ যিও অভ্যাদে ব্রম্ববিন্দুঃ ব্যাকুলার্থঃ যদ্ধন্তাং শানঃ। কিংবামিবিক্রমপুরং কিমুকামরূপং কিন্দক্ষিণাপথ মহোমপুরাং ব্রজামি। আরাধ্যমি শিবনাথমনাথনাথং বন্ধায়েত্যাদি। অটন্থাধিত্বাবিন্দুঃ সর্বত্ত। ৬২৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অনুস্বারইতি। গন্তগতো ভণ্শব্দে ভুপ জনীপ্রাত্নভাবে দিআ থকুবিদারণে ভুউ তকুবিস্তারে তউ। জপ্ ভুপ জভ্ ভুমা দহ ভুপ্ দন্শ দংশনে ভুপ সন্জ্ পরিষঙ্গে ভুপ ভন্জোআমর্দনে রুপ পশ্ বন্ধনে ভুপ বা অপ। অত্রজং জপ্যতে ইত্যাদো বিন্দুস্থিতিঃ সংজ্ঞাপুর্বকত্বাৎ। এতত্বক্তং গ্রন্থকত্র্বা বর্গেত্বগ্রপঞ্চইতি সূত্রবৃত্তো। ৬২৫॥ •

প্রভাপ্রকাশিকা।

চল। অভভাবপক্ষেং অুস্সারাভাবপক্ষে অট্চল্ভোবাদিকঃ। তুশব্দাৎ ভামঃ বাভাম্যতে বংভাম্যতে দহ্দংদ্যুতে দাদ্যুতে মব্বন্ধনে মংবধ্যুতে মামব্যুতে এয়াং বাবিন্দুঃ। ৬২৬॥

गृष्यकानिका।

চলইতি। চল্কম্পনেগতেচি ভূপ। চলস্তবা অভ্যাদাকারাদ্বিন্দ্রিত্যর্থঃ। তুশব্দাদ্রুক্তসমুচ্চয়ঃ ভাম্ক্রোধে ভূআ ভাম অদন্তঃ চুপ দহ্ভাবগর্ষাং ভূপ মব্ ভূপ এতেধামপ্যভ্যাদাকারাদ্বিন্দুঃ বা অট্। ৬২৬॥

বন্চি স্থান্য কিস ধান্সি জান্সি পৎ ক্ষন্দি পদ্ধাং। নীঃ কর্ত্তব্যঃ। সভ্যাসেবনীবচ্যতে সনীস্থাতে চনীক্ষ্যতে দনীধ্বস্যতে বনীজ্ঞস্যতে পনীপভ্যতে চনীক্ষ্যতে পনীপদ্যতে বনীব্ছতে। ৬২৭॥

গিরোরোলঃ। যথা জেগিল্যতেফলং। গিরইত্যস্কারাৎ দীর্ঘাৎপ্রাক্-রোলঃ। ৬২৮॥

নসম্প্রসারণং বন্ধিবচ্যাদেঃ। যথা বাবশ্যতে বাবচ্যতে যাযজ্যতে বাবদ্যতে বাবপ্যতে। ৬২৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বন্চি। বন্চুগত্যর্থে স্রন্ধ্যু কেন্তাদিস্ত্যাস্তঃ তালব্যাস্তইতিকশ্চিৎ। ধ্বন্ধ স্থল্ প্রন্ধ্ পদ্ বহ্-এষামভ্যাসাকারান্নীঃকর্ত্তব্যইত্যন্বয়ঃ। বনীবহৃতইতি। বহের্বেতিভট্টঃ। নেতিকশ্চিৎ। বাবহুতেপ্রিয়মত্য-চিরাগতং বধূশ্চচনীকস্থতে বাসমন্দিরমিতিব্যোদে। ৬২৭॥

গৃত্পকাশিকা।

বন্চীতি। বন্চুভুপ স্রন্ধ্য অবস্থানে ভুআ কস্ ভুপ ক্রন্ধু অবজ্ঞানিভূতা। জন্শু অবজ্ঞাননিপ তালব্যান্তইতিকন্চিৎ। পত্তগতোভুপ স্কন্দির্গতি শোষণয়োঃ ভুপ পদ্গতোদিআ বহ্প্রাপণেভুউ। বনীবচ্যতেইত্যাদি। যথাসম্ভবম্ অগুণেহস্ত্যব্যঞ্জনাদীতিনলোপঃ অনাদিহল্লোপঃ ক্বর্গস্থচবর্গঃ চতুর্থস্থ তৃতীয়ঃ। ৬২৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গিরো। গৃ ইর্দ্ধি: রস্তলঃ হ্রম্বপাঠদামর্থ্যাৎ প্রাগস্তলকেরবুপান্তহাভাবান্নপশ্চাদীর্ঘঃ। ৬২৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গিরইতি। গৃভক্ষণেতুপ। জেগিল্যতইতি। যঙিৠদন্তস্থেরগুণেইতি ৠকারস্থাইর্ ততোবিশেযত্বাৎ রেফোপান্তদীর্যং বাধিত্বারস্থলঃ দিত্বেমভ্যাসস্থালঃ কর্গস্থাচবর্গঃ। ৬২৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

নস। বশ্ধাতুঃ বচিস্ববিতি বচ্যাদিঃ এষাং যঙিনসম্প্রসারণং। বশ্ বচ্ যজ্ বদ্ বপাং যথাক্রমমুদাহরণং। ৬২৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নসম্প্রেতি। বাবশ্যতইত্যাদি। বশ্কান্তো অপ বচ্ পরিভাষণেঅপ যজ্ দেবপূজাসঙ্গতকরণদানেষু ষউ বদ্ কথনেভূপ ভূবপ্ বীজপ্রক্ষেপণে গর্ভাধানছেদনয়োঃ ভূপ। ৬২৯॥ খয়তেন্ত্রবা। শোশূয়তে শেশীয়তে। ৬৩০॥

স্বাহতি স্বপ্ শ্যমিব্যেঞাং বিধেয়ং সম্প্রসারণং। যথা জোহুয়তে সোস্থপ্যতে শেশিম্যতে বেবীয়তে। ৬৩১॥

হের্জেঘীঃ কবতে কোকূর্হনো জেন্নীরিহিংসনে। গতৌ জং হন্ চরশ্চঞ্চুর্ ফলঃ পং ফুল্নিপাতনাং। এতে নিদ্ধান্তি। জেঘীয়তে কোকূয়তে জেন্নীয়তে জংহন্যতে পংফুল্যতে অত্রাদন্তাদেশঃ তেন যঙ্লুকিনগুণঃ। ৬৩২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

শ্বয়। সম্প্রদারণমিত্যর্থঃ। উত্তেদ্ধিঃ পক্ষেনামীদীর্যঃ। ৬৩০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শ্বরতেরিতি। টু ওশ্বিগতির্দ্ধাাঃ জুপ। পক্ষেসম্প্রদারণেদ্বিত্বে উভয়ত্রাভ্যাসপ্তগুণঃ নামীযকি-দীর্ঘঃ। ৬৩০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হরঃ। ক্রেম্বপ্ শ্যমুবে এবং। জোহুর তইতি। সম্প্রদারণে ছিঃ নামীদীর্ঘঃ। সোম্বপত ইতি। উত্তেজিঃ। শেশিমত ইতি। দন্তাদ্যোধ্যং সারদাদো। ৬৩১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হ্বরতীতি। ক্রেণ্ আহ্বানেছু ঞিষ্বপ্ শরনেষপ শ্রমুশকেভুপ তালব্যাদিরয়ং। স্থামু অদনেভুপ ইতিদন্ত্যাদিপ,ঠঃ সারদাদৌ। ব্যেঞ্ আচ্ছাদনেভুপ। বচ্যাদিক্বেনহ্বয়াদীনাং নিষেধেবিধিরয়ং। ৬৩১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

হেছি। হিগতিরক্ষােঃ ব্রয়াদিঃ যভিজেঘা আদেশঃ দ্বিভাসাদিং বাধিস্বাএবমগ্রেংপি। কবতেরিতি।
কুণাতােঃ স্থানেকাকৄঃস্থাৎ। অন্নিকরণনির্দেশাং কোতিকুনত্যােশ্মাভূৎ তেনতয়ােঃ চোকুয়তে টুকুরুকু
শক্দে অদাদােকাতি কুঙ্ শক্দেভুদাদে কুবতে কুঙ্ খুঙ্ শুঙ্ শুঙ্ শক্দেভুবাদে কোকুয়তে এয়াং শব্দার্থবেহুপি কোতিঃ শব্দমাতে কুবতিরার্ভ্রয়ের কবতিব্যক্তশক্দে ইতিবিশেষােদ্রম্ভব্যঃ। হন্ধাতােঃ হিংসার্থে
যিঙি কেন্না আদেশঃ গতাবর্থে জংহনাদেশঃ স্থাৎ চর্ধাতােশ্চপুরাদেশঃ এতচাগ্রিমস্ত্রোদাহরণং
ফল্সাতােঃ পাকুল্স্থাৎ অত্রনিপাতাকরণেজেইায়তে চোকুয়তে ইত্যাদিস্থাদিতি নিপাতঃ। অদন্তেতি।
ধাহতক্তেত্যলােপঃ অদন্তাদেশােমঙ্ লুকিগুণপ্রতিষেধ্যথিঃ তেন পংকুলাতি পাকুল্তি। ৬৩২ ॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

হের্জেরারিত। হিদাপ হন্ হিংসাগত্যোঃ অপ চর্গতো ভুপ ফল্নিমিতভেদগমনেষু ভুপ। অত্র নিপ্রাকরণে ক্রমেণ জেহায়তে চোকুয়তে জংহততে চাচ্যাতে পাফুল্যতে ইতিস্থাদিতি নিপাতঃ। ষ্রোজেদ্রীধ্বে দিখাঃ কার্য্যঃ। প্যায়ঃ পেপী*চায়ক্ষেকীঃ। এষাং জেদ্রায়তে দেখায়তে পেপীয়তে চেকায়তে। ৬৩৩॥

লুপাদেভাবগর্ষাং। লুপ্ সদ্ চর্ জপ্ জভ্ দন্শ্ অশূভ্যোযঙ্ স্যাৎ। গহি তং লুম্পতি লোলুপ্যতে সাসদ্তে চঞ্র্যতে অশাস্তে ইত্যাদি। ৬৩৪॥

নমু তর্হিগতোজংছনিতিকথং হনোদ্বিত্বে হোজইতিহস্তজত্বে অনুস্থারঃ পঞ্চমান্তজপাদীনামিতি অভ্যাসাৎ-পরেবিন্দৌ জংহস্ততে ইতিসিদ্ধেরিতিচেৎ অস্তরাদ্ধান্তউপান্তলোপমিতি বক্ষ্যমাণ সূত্রব্যাখ্যায়াম্বক্তব্যঃ। অত্রফল্ধাতো অদন্তাদেশঃ পংফুলইত্যদন্তাদেশইত্যর্থঃ। অত্রৈকাক্ষরাধিকপাদস্বাদ্যাথাছনঃ। ৬৩২॥

পুভাপুকাশিকা।

ত্মোজে। ত্রাধাতোর্জেত্রীগ্রাধাতোর্দেগ্রাঃ প্রৈধাতোঃ প্রায়শ্চ পেপীঃ চামৃপুজানিশামনয়োঃ অস্তাদেকীঃ কার্য্যঃ কর্ত্তবাঃ। ৬৩৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ত্রইতি। ত্রাগন্ধোপাদানে অপ ধ্যাশব্দাগ্নিসংযোগয়োঃ ভুপ পৈঙ্ র্দ্ধোওপ্যায়ী রৃদ্ধোভুআ চায্ ভুপ। এতেহপাদেশানিপাতনাৎসিদ্ধান্তি। নিপাতাভাবে ক্রমাৎ জাগ্রায়তে দাধায়তে পাপায়তে পাপ্যায়তে চাচায়তে ইতিস্থাদিতিনিপাতঃ। কন্যাছন্দঃম্গোচেৎকন্যেতি তল্লক্ষণাৎ। ৬৩৩॥

প্রভাপকাশিকা।

লুপা। লুপাদের্ধাতোঃ ভাবস্থধার্থন্ত গর্হায়াং গম্যমানায়াং যঙ্ ভাবগ্রহণমপি ক্রিয়াদ্মভিহারো-ভবতি। লুপ্ চর্ দন্ জপ্ জভ্ দন্শ্ অশূ এতে লুপাদয়ঃ। জপ্ জভৌ জপাদিঃ। দহধাতুলু পাদিরিতি-দারে। দন্শ্ জপাদিভাবগর্হায়ামিহোপন্তাদঃ অশূ এঃ স্বাদেগ্রহণং। হুর্গাদিমতে গৃহ্লাতিশ্চ লুপাদে পঠাতে নিষেধন্ত নশুভ্রুতারিতি দ্রোয়েব। ভাষারভৌতু গৃণাতেরপিনিষেধইতি তন্মত্মাশ্রিত্যগৃণাতিঃ পঠিতোহম্মদ্গ্রন্থকৃতা। চঞ্ব্যতইতি। চর চঞ্ব্যগুণেহলীত্যাদিনাদীর্ঘঃ। অশাশ্যতইতি। ভূশং গ্রহতমশ্বুতইতি যঙ্ পরবর্ণেন যোজনং স্বরাদীনাং দ্বিতীয়মিত্যাদিনাশ্রন্থিঃ তত্রানাদি হল্ লুক্ অকারাদট্ স্থাহ। ইত্যাদীত্যাদিনা জংজপ্যতে জংজভ্যতে দংদশ্যতে। ৬৩৪॥

গৃতপ্ৰকাশিকা ৷

লুপাদেরিতি। লুপিমোহনে দিপ লুপ্৯ছেদনে মুউ লুপ্ আদির্য্যস্তাবগর্হারাং ক্রিয়ানিন্দায়াং।
সদ্৯ভেদগমনাবসাদনেষু ভুপ অশৃঙ্ব্যাপ্তি সজ্যাতয়োঃ স্বাআ। এতৎসূত্রেণ যঙ্ উক্ত সূক্তেণজপ্জভ্দন্শামভ্যাসাকারাৎবিন্দুঃ চরশ্চঞ্রাদেশশ্চ। অন্তৎ প্রভাপ্রকাশিকায়ামনুসর্ত্ব্যং। ৬৩৪॥

কৌটিল্যে গমনার্থকাৎ। যঙ্ স্যাৎ। ভূশং কুটিলং ক্রামতি চঙ্ক্রম্যতে জঙ্গম্যতে সরীসৃপ্যতে। ৬৩৫॥

অট্ সূত্রিমূত্র্সূচ্যশ্ভাঃ। যঙ্স্যাং। অটাট্যতে অরার্য্যতে অশাশ্যতে।৬৩৬॥
গৃণাতি শুক্রচাং নযঙ্। রোচতে শোভতে ভৃশং। শোশুভ্যতইত্যেকে।
একাচঃ কিং ভৃশং জাগর্ত্তি অতএব সূত্র্যাদেঃ পৃথক্ যঙ্বিধানং। ব্যঞ্জনাদেঃ
কিং ভৃশমীক্ষ্যতে। কথমিনান্দ্যতে উনাদ্যতে উর্প্রোয়ঙিচেতিবিথানসামর্থ্যাং
যিউত্যক্তং। ভাবকর্মণোর্য্যক্ জঙ্গম্যতে।৬৩৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কোটি। কোটিল্যেগম্যমানে গমনার্থকাদ্যঙ্ দামান্যক্রিয়াদমভিহারস্থাপরিত্যাগাৎ। দরীস্প্যত ইতি স্প্গাতোর্যাঙ্ বিঃ ঋবর্ণস্থাকারঃ রীতু ঋবর্ণিনীতিরী। গত্যর্থকোটিল্যএব নক্রিয়াদমভিহারইতি কেচিং। ক্রিয়াদমভিহারস্থৈববিশেষণমিতি ছুর্গঃ। গত্যর্থাৎগতি কোটিল্যইতিদারঃ। অন্যত্তভূশং ক্রামতি পুনঃ পুনরটতি। ৬৩৫॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

কোটীতি। কোটিল্যক্রিয়াদমভিহারেগমনার্থকাদ্য ছ্ স্থাদিত্যর্থঃ। ভ্শমিতি। দামান্যস্থ ক্রিয়াদমভিহারস্থাপরিত্যাগাদিতিভাবঃ। ক্রমুপাদবিক্ষেপে ভুপ গম্ভ স্থপ্তগতৌভুপ। কোটিল্যেকিং ভূশং গছতি। ৬৩৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অট্। অট্ সূত্রবেউনে মৃত্রপ্রস্রাবে ঋ সূচপৈদৃত্যে অশ্ভোজনে এভ্যঃ অট্ ঋঅশ্ভ্যঃ স্বরাদি সাদ-প্রাপ্তে স্তিভ্রন্ত্র স্চিভ্যশ্চ্রাদীনন্তেভ্যোহনেকস্বরেভ্যোহপ্রাপ্তেবিধিরয়ন্। অশৃঙ্ লুপাদোপঠিতঃ সঞ্জিপ্রদারে। কেচিত্রলুপাদো অশৃঙ্ং নপঠিন্তিইহৈব অশ্লাভি অশুতে অশাশ্ভতইতি পঠিন্ত। অটাট্যত-ইতি। অত্যর্থং কুটিলমটিতি যিওপরবর্ণযোজনে স্বরাদি হাদ্বিতীয়াক্ষরটাদ্বিভাবে যলোপে অকারাদট্। অরার্য্যতইতি। ঋ জাগর্ত্তি সংযোগান্তঋতাং গুণইতিগুণঃ পরগতিঃ দিতীয়াক্ষরদ্বিভাবে যলোপাদি। অশাশ্ভইতি। ভূশমশ্লাভীতি যিওদিতীয়াক্ষরশ্লিভাবাদি। এবং সোস্ত্যতে সোস্চাতে ভূশং সূত্র্যতীত্যাদি বাক্যং। ১০১॥

গৃত্পকাশিকা।

অডিতি। অট্ গতোভুপদূত্রমূত্রদূচা অদস্তাশ্চুরাদয়ঃ ঋগতি প্রাপণয়োঃ ভুপ ঋগতোজুপ উভয়স্ত গ্রহণমবিশেষাং। অটাট্যতেইত্যাদি প্রদর্শনমাত্রং দূত্র্যাদেরপিবোধ্যং তত্ত্বন্ধ প্রভাপ্রকাশিকায়াং। ৬৩৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

গুণা। শব্দার্থঃ শুভূ গু রুচ্ এষাং যঙ্ নস্থাৎ। একইতি। কোষাঞ্চিমতে যঙ্ শোশুভামান-ইতিচদিদ্ধাতি। অস্মতেশোশুভামানইতি নঞোহনিতাত্বাৎ। ভূশমিতি। ক্রিয়াসমভিহারইতি ধাত্বস্তাস্যলোপঃ স্যাদননি। প্রত্যুমাত্রবিষয়ে। বোভূয্যতে চেক্রীয্যতে এবং সন্ বুভূষ্যতে নিনীষ্যতে আ্যাঃ গোপায্যতে যণ্ কণ্ডূয্যতে। ৬৩৮॥

ব্যঞ্জনাদ্দত্তঃ। লোপঃ স্যাদননিপ্রত্যয়েপরে। যকিজঙ্গম্যতে পাপঠ্যতে বিভিদ্যতে ইচিঅবেভেদি। প্রত্যয়যলোপনিমিত্তে নচরদ্ধিগুণৌ বেভিদাঞ্চক্রে দেঘ্যতাঞ্চকার। অননীতিকিং জঙ্গম্যতে। ব্যঞ্জনাৎকিং নেনীয্যতে। ৬০১॥

পৃথাকৃত্ৰস্বব্যাস্থিতি । অতএবেতি । অনেকস্বরন্ধাদেব সূত্রাদীনাং যণ্ডীল্লোপঃ । নিত্যমিন্ যোগে সূত্রিমৃত্রিসূচয়োহশাদয়ইতিসারঃ । কথমিতি । হলাদিয়াভাবাৎকথং যণ্ডিত্যর্থঃ । উর্পুঞ্চোযণ্ডিচেতি বিধানসামর্থ্যাদিতি । যণ্ডাপ্যর্পুঞ্ধাতোঃ পরং প্রতিদ্বিভাবউক্তঃ ব্যঞ্জনাদিয়াভাবেন যণ্ড চ নপ্রাপ্নোতী-ভূর্গুঞ্চায়গুরাতাইস্থবজ্ঞাপকতয়া যণ্ড কল্পনে নবদরসংযুক্তান্মস্বরাদেরপি যণ্ড কল্পনমিত্যন্ম স্বরাদে সংযুক্তান্ম পুনঃ যণ্ডিনপরং প্রতিদ্বিঃ কিন্তু পূর্বাং প্রত্যেবেতি বহুসূচিতং নবাদি সংযোগিনোহন্মস্বরাদের্ঘাণ্ডিনপরং প্রতিদ্বিরিতিনিষেধ্যমানবিধায়াঃ প্রতিপ্রস্বাৎ । অতএবযণ্ড প্রত্যয়ইতি ইনান্দ্যতে উনাদ্যত ইতিসিদ্ধং । ভঙ্গম্যতইতি ব্যঞ্জনাদ্যঙ্লোপঃ । ৬৩৭ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গৃণাতীতি। গৃশব্দক্র্যাপ ধাতুনির্দ্দেশৈ তিপ্ ব্রস্বঃ প্রাদেরিতি হুস্বঃ। শুভ্ দীপ্তোভুউ শুভ্
শুন্ভ ভাষণহিংসয়োঃভূপ রুচাদীপ্রোরুআ এষাং নযঙ্। ভূশার্থে ন পোনঃ পুরুস্তাদিতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।
কথমিতি। ব্যঞ্জনাদিস্বাভাবাৎ কথং যিউত্যর্থঃ। সমাধতে উর্গু ঞোষাজিচেতিবিধানসামর্থ্যাৎ যিউত্যুক্তং
নবদরসংযোগান্তাক্ষরমেশামূর্ ঞোষজিচেতি সূত্রস্ক্রাবিত্যর্থঃ। তথাচোর্গু ঞোষজিপরং প্রতিদ্বিধান
সামর্থ্যাদন্তস্বরাদীনামপি যঙ্ এবং পূর্বংপ্রতিদ্বিত্তি সূচিত্মিতিভাবঃ। উনান্দ্যতইতি কচিৎপাঠঃ। ৬৩৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

ধাত্ব। বোভুয্যতইতি। যকিধাত্বস্তাস্তলোপঃ। বুভূষ্যতইতি। ভূসনিদ্ধিঃ বুভূষ্ধাতোর্য্যকিধাত্বস্ত-লোপঃ। গোপায্যতইত্যাদি। গুপুধৃব্বিছীত্যাদিনাসাযঃ কণ্ড্বাদিভ্যোষণ্ যকিধাত্বস্তাকারলোপঃ। ৬৩৮॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

ধাত্বস্তু তে। অননীতি কথনাৎপ্রত্যয়মাত্রবিষয়ইতিলভ্যতে। চেক্রীয়তেইতি। ছুক্রীঞ্ দ্রব্যবিনিময়ে জ্যাউ যঙিদ্বিভাবাদোচেক্রীয়ধাতোঃ কশ্মণিয়কি অলোপঃ। নেনীয়তইতি। সনিনেনী-ষধাতোর্য্যকিষস্থাস্তাকারস্থানুক্। ৬৩৮॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

ব্যঞ্জ। পাপঠ্যতইতি। অভ্যাসাকারাদট্ যঙোলোপঃ। ইচীতি। স্তেম্পাদিচ্সুন্চ লোপন্চ অভাগনঃ যঙোলোপেঅবেভিদ্ স্থিতেতি গুণপ্রাপ্তে নিষেধমাহপ্রত্যয়েতি। নিমিতইতি র্দ্ধিগুণাশ্বয়ি। যিশ্বন্ধাতোর্যাস্থ্য লোপস্তত্রবৃদ্ধিগুণন্চ নেত্যনেন গুণর্দ্ধ্যোশ্বিষেধঃ। ভেদিদাঞ্চক্রইতি। প্রত্যয়ান্তত্বাদাম্। দেদ্ধতাঞ্চকারেতি। যঙ্ ছির্দ্ভাবেসম্প্রদারণে অভ্যাদেকারেগুণঃ। জঙ্গম্যতইতি। যঙ্ ছিনিলোপআদস্থ নাত্রযঙ্লোপঃ ছির্করণপরত্বাৎ। লোপপ্রসঙ্গাদাহ। ৬৩৯॥

যিন্ যিঙোর্বা। যথাবিদ্যাস্যিতা প্রানিতাদয়ঃ। সহস্রাক্ষৈরক্রের্মাসিতরি। তপসিতং তপস্যিতং প্রসিষ্যতি প্রসিষ্যতে প্রসিষ্যতে। ব্যঞ্জনাদিত্যেব পু্দ্রীয়তে শ্যেনায্যতে। অননীত্যেব দৃশদ্যতি বিদ্যুত্যতে। ৬৪০॥ যঙ্লুখাসর্বস্মাদ্ধাতোঃ। ৬৪১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ব্যঞ্জনাদি। অননিপ্রত্যয়েপরেবাঞ্জনাৎ পরস্থযঙোলোপঃ স্থাদিত্যম্বয়ঃ। যকীতি। তত্রতুশিতি যিগিতি সূত্রবিহিত্যকীত্যর্থঃ। জঙ্গম্যতইতি। গমৈাযঙিদ্বিশ্বেঅনুসারঃ পঞ্চমান্তজপাদীনামিতি অভ্যাসাকারাদনুস্বারঃ কবর্গস্থ চবর্গঃ যকিযঙ্লোপঃ। পাপঠ্যতইতি। পঠধাতোঃ। বেভিদ্যভইতি। ভিদির্ বিদারণেরুউ। দেত্যতাঞ্চকারেতি। তুৎদীপ্রো ভু আ প্রত্যয়ান্তাদামিকৃঞ্ প্রয়োগেঅটিরূপং। নেনীয্যতইতি। নীঞ্প্রাপণেযঙিদ্বিভাবাদি যকিযঙলোপঃ। ৬৩৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

যিন্যি। ব্যঞ্জনাদিত্যকুবর্ত্ততে। ব্যঞ্জনাদিয়ন্ যিঙোব্বালোপঃ অননিপ্রতায়ে। বিদ্বান্থিতেতি। বিদ্বান্ধানিবার্ত্বতি আচারেঘিন্নিবার্থকাদিতি যিন্নশূঅপ্রকৃত্যে শস্তব্যামিট্নেহলোপঃ পরস্থযিঙ্লোপঃ। নমস্বরোতীতি নমস্তপোবরিবসইত্যাদিনা যিন্ নমস্থধাতোস্থচ ইট্ যিন্ লোপেঙোরূপং। তপদিত্মিতি। ক্রেইট্যিনোলোপঃ। পয়ইবাচরতীতি উপমানাং কর্ত্ত্বরিত্যাদিনাযিঙ্ ভবিষ্যন্ত্যা আল্পনেপদেষ্যতে ইটিযিঙ্ লুক্ পক্ষেন্যিঙ্লোপঃ। পুত্রীয্যতইতি। পুত্রমিচ্ছত্যাল্থনইতি যিন্ চানব্যয়ন্যান্তামিতিযিন্ যাবর্ণস্তাক্ষকারঃ পুত্রীয়ধাতোর্যাক্। শ্যেনায্যতইতি। শেবনইবাচরতীতি যিঙ্ যক্ নেহিয়িন্ যিঙোল্লোপঃ। দৃশদ্যতীতি। দৃশদ্শব্দাদিয়নাচারে বিত্রাৎ শব্দাদিয়ঙ্ অনিনলোপঃ। ৬৪০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যিন্যিঙােরিতি। সহস্রাক্ষৈরিতি। স্প্রাক্ষেরকৈর্ম মিসিতরিনীলােৎপলময়ীমিবায়ানং মালামুপন্
য়তিপত্যােমথভুজাং। জির্ক্ষোচ জ্রীড়ারভ্সিনি কুমারেসহগণেইসন্ বােভদ্রাণিদ্রত্য় মুড়ানীপরির্তৃঃ
ইত্যনর্যে। দৃশদ্যতীতি। পাষাণপ্রস্তরগ্রাবােপলাশ্যানঃ শিলাদৃশদিত্যমরঃ। দৃষদ্শব্দােম্র্রিঅবানপি
যথা উপ্পভেদঃ ক্ষায়কুস্মাণ্ড মহিষদৃষ্দিতি। বিদ্যুত্যতইতি। তড়িৎসােদামিনীবিহ্যদিত্যমরঃ। ৬৪০॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

যঙ্ লুখেতি। দৰ্বন্যাদ্ধাতোর্য্যঙ্লুক্ বাস্থাদিত্যর্থঃ। অত্রব্যঞ্জনাদিতি নানুবর্ত্ততে দর্বন্মাদিত্যক্তঃ। তন্মিরত্যাঅননীত্যপি নানুবর্ত্ততে তেননির্মিত্যিকোহয়ং লোপইতিজ্ঞেয়ং। অতএব যঙ্ লুগস্তাশ্চর্করীতাঃ পরবৈশ্রপদ্যদাদয়ইতি বক্ষ্যমাণনিয়য়ঃ দঙ্গংস্থাতে। ইদং স্ত্রীনামচ্ছন্দঃ তল্লক্ষণমুক্তং প্রাক্। ৬৪১॥

যঙ্লুগন্তাশ্চক্র্রীতাঃ পরশ্বৈপদ্যদাদয়ঃ। যঙ্লুক্যভ্যাসকার্য্যাণিনিপাতঃ সম্প্রসারণং। ননিবর্ত্ত্যং যথাপ্রাপ্তমিতরং কার্য্যমিষ্যতে। ৬৪২॥

অশ্বাদীড়াইলিতনো । বোভোতি বোভবীতিচ। গুণিনিগুণঃ অগুণে অগুণঃ। বোভূতঃ উব্বোভুবতি বোভিষি বোভবিষীত্যাদি৷ রোরবীতি নেনয়ীতি নেনেতি নেনীতঃ নেন্যতি তোফোতি তোফবীতি জোহোতি জোহবীতি জুহতঃ জোহবতি অভ্যস্তাদন্ত নোলোপঃ জেব্রীয়ীতি জেব্রীতি জেব্রীতঃ ইয্জেব্রীয়তি পাপচীতি পাপক্তি যাযফিষাযজীতি নোপান্তনামিনোইচিতনাবিতিনগুণঃ বেভিদীতি বোভুজীতি বাবেভেত্তি বোভোক্তি। ৬৪০॥

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা।

যঙ্লু। চর্করীতাশ্চর্করীত সংজ্ঞকাইত্যর্থঃ। পরস্থৈপদিনশ্চতে অদাদয়শ্চেতি তেনবিকরণাভাবঃ। যঙ্লুকিসতি যঙ্লুশ্বিষয়ে অভ্যাসকার্য্যাণিগুণাদীনিনিপাতঃ হের্জিঘীত্যাদি সম্প্রসারণং ননিবর্ত্ত্যং লুগ্নোপ্য ইত্যাদিনাননিবর্ত্তনীয়ম্ রীতুঝবর্ণিনি অনুস্বারইত্যাদি ইতরৎ কার্য্যং যথাপ্রাপ্তমিষ্যতে। ৬৪২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যঙ্লুগন্তাইতি। নির্মিত্তকযঙ্ লুগন্তা দিক্রীতা শচর্করীত সংজ্ঞকাঃ সন্তঃ পরিশ্বেপদ্যদাদয়ঃ স্থাঃ। উক্তঞ্চাদাদি সাধ্যপ্রস্তাবে অত্রৈবজুহোত্যাদয়শ্চর্করীত সংজ্ঞকাশ্চানুপ্রবিশন্তীতি। চর্করীত সংজ্ঞাকরণস্থ বিশেষফলাভাবেহপি পাণিঅনুসারাত্বক্তং মন্তব্যং। যঙ্গুকীতি। যঙ্গুকিসতিঅভ্যাসকার্য্যাণি নিপাতঃ সম্প্রসারণং নিবর্ত্তাং। ননিবর্ত্তামিত্যত্র ক্লীবলিঙ্গমক্লীবেনৈকবচ্চবেতি ক্লীবলিঙ্গস্থাবশেষোবা একবচনঞ্চ। যথাপ্রাপ্তমিতরৎ কার্য্যংরীতুঝবর্ণিনি অনুস্বারইত্যাদিকার্য্যম্ ইষ্যতেইত্যর্থঃ। এতেনরীপ্রভৃতেব্যঙ্লুকি-নির্ত্তিঃ পুনরাগমইতিস্চিতং। ৬৪২॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অস্মা। অস্মাদযঙ্ লুগন্তাদীড্বাস্থাৎ তনোহলিপরে। গুণিনীতি। যশ্মিন্ধাতোরিত্যস্থাবিষয়ঃ প্রত্যয়স্থা নিমিত্ততামনপেক্ষয়ৈবাত্রযঙ্ লোপাদিতি। তস্অন্তিপ্রভৃতিষুনগুণঃ অগুণেস্বরেইবর্ণোবর্ণয়োর্দ্ধানতারিত্যুব্ অভ্যন্তাদন্তনোলোপঃ। বোভূথঃ বোভূথ বোভোমি বোভূবঃ বোভূমইত্যাদি। রুধাতোঃ বোর্ম্মান্থিতো যঙ্ লুকিইট্ বাঞ্ডণঃ। নেশুতীতি। নেনীধাতোঃ অনেকাচস্ত্রমংযোগস্থেবর্ণোযইত্যনেন স্বকারস্থায়। তোইতীতি। স্ত্রযঙ্লুকিগুণঃ। তোইবীতীতি। ইটিগুণেঅব্। হুযঙ্লুকিদীর্ঘনির্জাণঃ স্বড্বা। জেব্রয়ীতীতি। ব্রীইট্গুণোঁ। ইযিতি। ইবর্ণোবর্ণয়োর্দ্ধাতোরিত্যনেনেত্যর্থঃ নলোপঃ। পাপঠিতীতি। স্ট্পরত্রপুর্টিচঃ কঃ। যাযপ্তীতি। যিও যজ্ধাতোর্ম্সম্প্রসারণং বচ্যাদিত্বাৎ যঙ্লুকিজ্ঞাদিত্বাজ্জঃ কঃ পক্ষেপ্রট্ট নগুণইতি। স্ট্সরুনিমিত্তত্বেনত্রপুর্থাৎ। বেভিদীত্যাদি। ভিদোভ্জাদেশ্বগুণঃ। বেতি। অস্মাদীড্রত্যর্থঃ। ৬৪৩॥

বউত্বং স্থাদ্ধ টিপরে। দেদ্যোতি দেবিবীতি দেদ্যুতঃ সেষ্যোতি সেষিবীতি সেষ্যুতঃ। ধুটীতি কিং দেদিবতি সেষিবতি। ৬৪৪॥

মোনোধাতোৰ্বমোরপি। ধূটিচ। বংবস্তি বংবস্তঃ বংবস্বঃ এবং শম্তমাদেঃ জঙ্গমীতি জঙ্গন্তি জঙ্গন্তঃ ৷ ৬৪৫॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অস্মাদিতি। অস্মাংযঙ্ লুগস্তাৎ চর্করীতসংজ্ঞকাদ্বেত্যর্থঃ। ভূসন্তারাং রুরাবেঅপ নীঞ্পাপণে অ ফু ঞ্স্ততোঁ অ হুদানেজুপ ব্লীলজ্জায়ান্ অপ ডুপচঞ্ষ্ পাকেভুউ যজ্দেবপূজাসঙ্গতকরণেদানেষু যউ। নম্ববেভিদীত্যাদোকথং নগুণঃ ঈটোহগুণস্বাভাবাৎ অগুণাঅতমুর্নাদীত্যত্র ঈটোহপ্রাপ্তেরিত্যতআহনোপাজ্যোদি। নরীটঃ কথং তমুস্থং নচাতমুস্ববিরহেণ তমুস্থমিতিবাচ্যং শিতামস্তর্গতপ্রত্যারিশেষাণাং তমুস্থাৎ সত্যম্ অত্র তমুনিমিত্তয়া ঈটোহপি তমুস্থমীকারাৎ এতচ্চন্যবিশ্বতবাশন্দবলাৎ। তথাহি হলিতনোবা ঈট্ব্যবিশ্বত ঈড়িত্যর্থঃ। ব্যবস্থাচ বজুরিচ্ছাবিষয়ঃ সচাত্র নিমিত্তাদ্যব্যবত্বেসতিবিকল্পত্বং। এতদভিপ্রায়েণ তমুনিমিত্তয়ন তমুস্থাদিতি প্রভাপ্রকাশিকায়ামুক্তমিতি। ভিদির্ বিদারণেক্ষউ ভুজানক্রীকরণেত্বপ ভূজ্পালনাভ্যবহারয়োঃ রূপইতি যথাক্রমং ধাতবোজ্ঞেয়াঃ। অন্তৎপ্রভাপ্রকাশিকায়ামমুন্দমেরের। ৬৪৩॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বউ। ধৃটিপরে যঙ্ লুগন্তস্তবং স্থানে উত্বং স্তাৎ। দেদ্যোতীতি। দিব্ দেদিবিতিস্থিতো বস্ত উত্তব্য গুণঃ যত্ত্বপক্ষে ঈভ্গুণনিষেধো ধুটিউত্বং দেহ্যতঃ। সেষোতীতি। দিবু। দেদিবতি সেষিব-তীতিনোত্ব্য অন্তনোলোপশ্চ। ৬৪৪॥

গুঢপকাশিকা।

বউত্বমিতি। দেদ্যোতীত্যাদি। দিবুক্রীড়ায়াং দিবুতস্তুসন্তানেদিপ। দেদিবীতি সেযিবীতীতি। স্টিনোপাত্তনামিনোহচিত্তনাবিতিগুণনিষেধঃ যত্ত্বপ। ৬৪৪॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

মোনো। যঙ্লুগন্ত শ্রধাতোর্মোনঃ স্থাদ্ধুটিবমোশ্চপরতঃ। বংবন্তীত্যাদি। বমোমস্থনঃ পক্ষে-বংবনীতি। এবনিতি। শন্ শংশন্তি তম্ তন্তন্তিবাশংশমীতি তন্তমীতি। বমোঃ ধুটিচকিং বংবমতি ক্ষমতি। ৬৪৫॥

গৃঢ়প্রকাশিকা

মোনইতি। বশ্চমশ্চতয়োঃ। অপিনাধুর্টিচ। বংবস্তীত্যাদি। বম্ উদ্যারণেভূপ যঙ্ লুকি বব্য স্থিতো অনুস্বারঃ পঞ্চমান্তজ্পদীনামিতি অভ্যাসকারাদনুষ্বারঃ মকারস্ত নঃ তিপরেবকারস্তান্তস্থা-দ্বিন্দুস্থিতিঃ। শন্ তমাদেরিতি। শমুউপসমেতমুম্মাকাজ্মায়াং গ্লানোচ দিপ আদিনাগমাদেএ হণং। ৬৪৫॥ উপান্তলোপং কোইপ্যাহ্যমাদেরগুণেস্বরে। জঙ্গাতি আদিনা হন্ জন্ খন্ যসাদেরেবং। হনিতি নির্দ্দেশাংইস্য নযত্বং তেনজংহন্তি জংহতঃ জংহ্নতি। অন্যেতৃ জঙ্গমতি জংহনতীত্যুদাহরন্তি। লুগ্লোপ্য ন্যায়াৎ ঈত্মাদিধাতুকার্য্যানি-রন্তিঃ দাদাতি দাদেতি দাত্তঃ দাদতি দাধাতি দাধেতি দাদ্ধঃ দাধতি মামাতি মামেতি মামীতঃ মামতি তাস্থাতি তাস্থেতি তাস্থাতঃ তাস্থতি। ৬৪৬॥

পুভাপুকাশিকা।

উপা। যঙ্ লুগন্তগমাদের্গাতোরগুণেষরে উপান্তস্থ অস্তলোপং কোহপ্যাচার্য্যাহ্বদতি। জংহতইতি। হন্তেল্লেলিগিতি নলোপঃ। খন্চংখন্তি ঘদ্জাঘন্তি অন্তোচজা তি জাঘদতীত্যাদি। দৈদীয়াদিধাতোর্যাঙলুকিলুগ্নোপ্যেয়ংকৃতং কার্য্যং প্রকৃতেতিন্নিবর্ত্তিত ইতিসূত্রাৎ প্রকৃতিভাবে ঈয়াদিপ্রকৃতিকার্যানির্ভিঃ দাদাতি দাদেতীতিপক্ষেট্। দাভইতি। অভ্যস্তস্থাকারইতি ঈ দাধোরীলুক্ লিঙ্কবিদিতি
দস্ততঃ। দাদতীতি। স্বরেহগুণেইত্যাদিনা আলোপঃ অভ্যস্তাদন্তনোলোপঃ। এবং দাধাতীত্যাদি।
দাদ্দিইতি। ঈলুকিঘ্যুণ্ডইতি তস্থাঃ তুর্য্যেরুস্থারিতিধস্থদঃ। এবং মানীতঃ তাস্থীত ইত্যাদি
প্রব্বৎ দাধান্যন্তানিতিঠিত। ৬৪৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উপাত্তেতি। জঙ্গুতীতি। গম্ যঙ্লুকিজগম্ স্থিতো অত্তো অনুস্থারইত্যাদিনা অভ্যাসাকারা-দকুসারঃ গমউপাত্তস্থাকারস্তলোপঃ অভ্যস্তাদন্তনোলোপঃবর্গোবন্দোঃ ঙঃ ব্যঞ্জনং প্রগামি। হ্নিত্যাদি। হনহিংসাগত্যাদিয় অপ জনীপ্রাত্মভাবেদিআ খন্ অবদারণেভুট ঘস্ত অদনেভুপ আদিনামণুদানেইত্যাগ্রেগ্র-হ্নিতিনিদ্নোদিতি। যাজজংহকতইতি সিদ্ধাবপি জংহনিতি নিৰ্দেশাদাদেশাৎহস্তনঘত্বং ঘঃ স্তাদগুণিনিস্বরে ইতানেন হস্তন্যত্ব্ অভ্যথাহনাদেশনিক্ষলত্বাপত্তেরিতিভাবঃ। যদ্যপি ত্বঃ স্তাদগুণিনি দ্মাদেশোবিহিতোনহস্তামঃ তথাপি জংহ্নীতাত্র হস্তাদেশে ধাতোদ্মাদেশেবা জংল্পভীতিপ্রয়োগস্ম তুল্যতয়াবস্থিতি সম্ভবেন হস্মনঘত্বমিতি ফলিতমুক্তং। যথা স্থূলদূরেত্যাদিনাইষ্ঠাদিষু যুৱশব্দস্যান্তস্তাস্থাদিলোপে উবৰ্ণস্থোত্বেসন্ধোয়বিষ্ঠেত্যাদিসিদ্ধেঃ স্থুলেত্যাদিনা যুবাদেশইতি ফলিতমুক্তং তদ্ধিতপ্রকরণেতদ্বং। অন্যেষিতি। উপান্তলোপমনিচ্ছন্তোজঙ্গমতি জংহনতীত্যুদাহরন্তীত্যর্থঃ। ইদং নবহুদন্মতমিতাস্বরদবীজং। দাদাতীত্যাদি। ছুদাঞ্দানে ছুধাঞ্ধারণপোষণয়োঃ জুউ মামানে অপ পুনঃ পুনৰ্দদাতীতিবাক্যে যণ্ডিনাম্যাদেশানিত্যাদিনিয়মাদাদৌকিতি হলীত্যাদিনা ঈত্ত্বেদীদিভাবে অভ্যাসস্থ স্থ্যেন্ত দেদীয়াদিধাত্নাং যঙ্লুমেতি যঙ্লুকি ঈত্বস্থ প্রকৃতিকার্য্যসনির্ত্তে দাদাইতিস্থিতিঃ। নচা-ভ্যাসগুণাদিননিবর্ত্তনীয়মিতিবাচ্যং ঈনিরুত্তেরুক্তত্বেনগুণাদিনিরুত্ত্যনন্তরমীনিরুত্তেরভিপ্রেতহাৎ। নচ তর্হি অভ্যাসস্তাপিনির্ভিঃ কথং নস্তাদিতিবাচ্যং তস্তপ্রকৃতিত্বেনপ্রকৃতিকার্য্যস্বাভাবাৎ অতএবাদাদাদিত্যাদৌ ষ্ঠাগতিনির্ভোভূপ মাবৎ সাধ্যম্ অঘোমোদ্ধিন্থিতান্ অডধাত্বাদাবত্যনেশভ্যাসাদাবডাগমইতি । শিটইত্যনেন্সলোপইতিবিশেষঃ। ৬৪৬॥

রিরৌচরীবদভ্যাসাৎ। ঋবর্ণবতিবর্ণেরিরীরঃ স্থাঃ। চরিকরীতি চরীকরীতি চর্করীতি চরিকর্ত্তি চর্নাকর্ত্তি চর্ক্তি। এবমীট্ সম্ভবোষত্রতত্ত্রঋত্বপধবর্ণানাং ষডুদাহরণানি যত্রনেট্ তত্রত্রীণি চরিক্তঃ চরাক্তঃ চক্রতঃ চক্রতি তথাজরী-হরীতি সরীস্বরীতীত্যাদয়ঃ। সম্প্রসারণং হ্বয়তেঃ ক্রোহোতি জোহবীতি সোস্থ-পীতি। হেৰ্জ্জেঘীরিত্যাদিনানিপাতঃ জেঘয়ীতি কোকবীতি জেঘুয়ীতি গতৌজংছ-নীতি ঘত্বাভাবউক্তঃ। অগুণে হলীতি নঞােইনিত্যত্বাদীর্ঘঃ চঞ্জু তি চঞ্জীতি চঞ্ৰ্ত্তঃ পংফুলতি পংফুলীতি অদন্তনিপাতারগুণঃ। দৃশ্দরিদৃশীতি দরীদৃশীতি पर्ने नी जि प्रति प्रक्षि पर्ने कि पर्ने कि प्रतीप्रके हे जापि। मती मुक्षी जि मति अधि त्र स् বরীর্ষীতি বর্বাই রং বর্বার্ত্ত বরীর্তীতি প্রছ্ পরীপৃচ্ছীতি পরিপর্ফি পরীপৃষ্টঃ ভবন্তঃ পরীপৃচ্ছতি বরীভৃজ্জীতি বরীভটি বরীবটি বর্বটি বরিবটি বরীরশ্চীতি প্রহজরী গৃহীতি জরীগর্চি জগৃহতি নরীনৃতীতি। নর্নর্তিবনময়ুরোগজোইপিকর্ণ-বিক্ষেপৈর্নরিনর্ত্তি। দৃষ্ট্যানর্ত্রমনয়োস্তকরপি পল্লবৈর্নরীনর্ত্তি। বর্ণশব্দেগ্রেট-বিষয়প্রসাধকত্বাৎ তৃধাতোর্নরীরিরঃ তেনতাতর্ত্তি তাতীর্ত্ত। চাকর্তি ইত্যপিদ্রগঃ। কৃচরাকরীতি চর্কর্তিচর্কীর্ত্তঃ পুপরীপর্ত্তি। গিরতেরির্নির্ত্তিং নেচ্ছস্ত্যুন্যে নিজেগীর্ত্তি। ৬৪৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

রিরো। যঙ্ লুগন্তধাতোরভ্যাদাংরিরোচ চকারাংরীচরীবংরীতু ঋবণিনীতিবিছিতদৃষ্ঠরীবং তংপর্য্যদমমাই ঋবণিতি। ঋতুপধঋবণিয়াঋ বণিবাধ্যে। চরীকরীতীত্যাদি। কৃঞ্সট্গুণঃ রিরীরঃ রূপত্রম্ ঈডভাবপক্ষেইপি ধাতোগুণিরপত্ররমিত্যাইচরাকর্তীতিত্রয়ং। এবমিতি। ঈট্মস্তবোযত্ত ইলিতনোতত্রেত্যর্থঃ। তদাদাবীডভাবাত্রপত্রমেব। এবং চরীক্রতি চরিক্রতিচ। ইজরী ইরীতীত্যাদি শ্বেদরীশ্বরীতি আদিপদাংসরীশ্বরীত্যাদি। সম্প্রদারণমিতি। হরয়তি স্বপ্র্যামিত্যঞামিতি সম্প্রদারণং। ননিবর্ত্ত্যমিত্যুক্তেঃ জোহুন্থিতিঃ। এবং দোহুপীতি শেশিমাতি নশ্বীত্যাদিনা শ্বধাতোঃ শ্বমশ্চষত্বনিষ্ধেঃ। সম্প্রদারণমুকুনিপাতোননিবর্ত্ত্যইত্যাই জেঘয়ীতীত্যাদি। হের্ছেন্ন্রীঃ কবতেঃ কোকুঃ ইনোজেশ্বীর্বিইংসনে। উক্তইতি। ইনিতিনির্দেশাং ইশ্বনম্বর্দ্বাবিত্ত্বিশ্বাতার ধাত্ত্বেত্ত্বালাপঃ। ঋতুপধমুদাইরতি দরিদৃশীতীতি। রিরারঃ ঈটিনোপান্তনামিনোইচিতনাবিতিগুণাভাবঃ। এবং দরীদৃশীতি। দরীদ্র্পীত্যাদি। আদিনাদরীদৃশিতি

দরিদৃশতি দর্শতি দরিদ্রন্ধি দরীদৃশীষি দরীদৃষ্ঠঃ দরিদৃষ্ঠঃ দরীদ্রশ্বঃ দরীদৃশ্বঃ দরীদৃশ্বঃ দরীদৃশ্বঃ সরীঅষ্ঠীত্যাদি ভ্রজ্জাদিঃ পক্ষেপ্রত্তগাভাবোঁ। পরীপৃচ্ছীতি। সম্প্রদারণম্ ঋবর্ণহাৎ রীরিরঃ ঈডভাবপক্ষেগুণঃ ছঃ ষঃ ভ্রজ্জ্বরী ভষ্ঠীতি। ভ্রজ্জাদিয়াজ্জস্তমঃ ধুডন্তয়োরিত্যাদিনাজলুক্। বরীবর্ত্তীতি। ভ্রশ্চ্ ত্রশ্চেশ্চঃ ষঃ শলোপশ্চ। জরীগঢ়ীতি। গুণোহোটঃ ঘট্যভতইতিতস্তাধঃ চটবর্গাবিতিধস্তটঃ ধাতুটোটইতিলোপঃ পরগমনং যিও প্রছিক্জেত্যাদিনা যথাপ্রাপ্তিসম্প্রদারণং। তাতভীতি। অভ্যাদাকারাদট্ ধাতোগুণিক্তর্ভুতি গুণঃ। তাতীতিইত্যাদি। ঋদন্তস্ত ইর্দীর্ঘঃ পরত্রাগুণেহলীতিবচনাম্নদীর্ঘঃ। চাকর্ভীতি। ক্গাতৌ। চরীকরীত্যাদি পূর্ববৎ। এবং নিজেগীর্ভিচংচুর্ভীতিবদ্বীর্ঘঃ নলত্বং। ৬৩৭॥

গূতপ্রকাশিকা।

যঙ্ লুকিসতি অভ্যাসাৎ রাবৎঋবর্ণিনিবর্ণেপরেরিরোস্থাতাং চকারাৎরীচস্থাৎ। নমুশ্বর্ণনিবর্ণে অভ্যাসাৎরীরির আগমাঃ স্থ্যরিতিপ্রাপ্তোকথং কেবল ঋ ৠ পরে অরী অর্ত্তি অরি অর্ত্তি-অরক্তীতি প্রয়োগাঃ পরত্র ঋবর্ণবদ্ধর্ণাভাষাৎসত্যং। অত্যেদং কল্প্যতে রিরোচরীবদভ্যাসাদিতিসূত্রে যথা রী ঋবর্ণবতিবর্ণে অভ্যাদাৎপরস্তথারিরোচৈতি রীবদিত্যনেনপ্রাপ্তেহপিপুনরভ্যাদাদিতিগ্রহণং বিবক্ষিতাভ্যা-সাদাগমার্থং তেন ধাতোঋ বণিনিবৰ্ণে ঋবর্ণেচপরেহভ্যাসাৎপরে রীরিরঃ স্থ্যুরিত্যর্থকরণাৎ ঋগতিপ্রাপণয়ো-ভুবাদিপরশ্বৈপদী ঋগতাবদাদিপরশ্বৈপদী ঋগতোক্যাদিপরশ্বৈপদী এষামপ্যভ্যাসাৎপরারীরিরঃ স্ত্যুর্য্যঙ্ লুকাতি নপ্রদর্শিতপ্রয়োগদিদ্ধিব্যাঘাতলেশোহপীতি। চরিকরীতীত্যাদি। যডুদাহরণানি দত্তানি এবমীট্ সম্ভবোযত্তহলিতনো তত্ত ঋতুপধবর্ণানাং বহুবচনাৎ কেবল ঋবর্ণানাং প্লাদস্তানাঞ্চ যড়ুদাহরণানি দাতব্যানীত্যর্থঃ। যত্রাতনোনেট্ তত্রত্রীণি উদাহরণানীত্যসুষঙ্গেণাঘ্রঃ কার্য্যঃ। ভুকৃঞ্করণে হৃঞ্হরণে ভু স্মৃচিন্তায়াং ভুপ হেবঞ্ আহ্লানে ভু ঞি ম্বপশয়নে অপ। হিগতির্দ্ধোঃ স্বাপ কুঙ্ অব্যক্তশব্দেভু হন্ হিংদাগত্যোঃ অপ। গত্বাভাবউক্তইতি। জং হনতিনিৰ্দ্দেশাৎ হস্তনঘত্ৰমিতানেনেত্যৰ্থঃ। নঞোহনিত্যত্মাদিতি। গুণিহল্যপীতিভাবঃ। চর্গতিভক্ষণয়োঃ ভুপ ফল্নিম্পত্তিভেদয়োঃ ভুপ দৃশির্ প্রেক্ষণেভূপ স্ত্রিদর্গনিশ্মাণয়োঃ ভূপদিআ রুষুদেচন হিংদাক্রেশগর্ভগ্রহণ ঐশ্বর্যােরু ভূপ রুংবর্ত্তনেভূত্যা প্রছ জ্ঞাপায়াং ভুপ ভ্রন্জ্ পাকেতুউ ওব্রশ্চু ছেদনেতুপ গ্রহ্উপাদানে ক্র্যাউ। আর্য্যাজাক্যারারিরাগমযুক্ত-প্রয়োগান্দর্শয়তিনম্ ত্রীতি। নৃতী গাত্রবিনামেদিপ। নর্ম ত্রীত্যাদৌনভবতিনাথতি নন্দিন্নদিতি নৃতনাধ্নটি নকামিতি ণত্বনিশেষঃ। অস্থার্থঃ। বনময়ুরোনশ্ল ত্তিপুনঃ পুনর্ভ শংবানৃত্যতি কর্ণবিক্ষেপেঃ কর্ণদ্রচালনৈ-র্গজোহপিহস্তীচ নরি নর্ত্তি পুনঃ পুনর্ভ্ শংবানৃত্যতি অনয়োশ্ময়ূরগজয়োর্ম্ র্তনং দৃফ্টাতরুরপি রক্ষোহপি বর্ণশব্দস্থেতি। বর্ণশব্দঃ স্বযুগ্মদীর্ঘ-পল্লবৈশ্চলিত কিদলয়ৈন্ন রীনর্ত্তি পুনঃ পুনর্ভ শংবানৃত্যতীতি। কলাচিদনিত্যত্বস্বাকারেণকেবলাক্ষর বাচকতয়াবর্ণশব্দস্ত ইফবিষয়প্রসাধকত্বাদি-গ্রাহীতিপরিভাষায়াঃ চ্ছাবিষয়ীভূতপ্রয়োগদাধনহেভুত্বাৎ তৃধাতোম রীরিরইত্যর্থঃ। তৃপ্লবনদন্তরণয়োঃ ভুপ চাকর্তীতি। অম্মাদপি নরীরিরইতিহুর্গঃ। কৃবিক্ষেপে তুপঃ কৃঞ্ হিংসায়াং ক্র্যাংপৃপালনপূরণয়ো অক্র্যাপ গৃভভক্ষণেতুপ অস্তইর্নির্ত্তিম্ অর্থাৎ গিরোরোলইতিনত্বং যঙ্ লুকিনেচ্ছন্তান্তে। অম্মন্মতেজরীগরীত্যাদি প্রয়োগাইতিভাবঃ। ৬৫৭॥

দন্শিদন্ভোঃ পরং নলুক্। যঙ্লুকি। দংদশীতি দংদক্ষি দংদক্ষঃ দংদশতি দাদভীতি অদাধপ্ অদাদক্ষাং। নিয়মঃকিং বনীবঞ্চীতি বনীবজ্ঞি বনীবজ্ঞঃ বনাবঞ্চি সনীস্রংসীতি সনীস্রংস্তীত্যাদয়ঃ। ত্বহু দোত্বহীতি দোদোগ্ধি দোত্ত্বশ্ব দোত্রহতি দোত্রহীষি দোধোক্ষি লিঙিবোভূয়াৎ বোভূয়াতাং বোভূয়ঃ বনীব-ঞ্যাদিত্যাদি। লোটিবোভবীত্ বোভোতু বোভূতাং দোদোশ্ব দোত্ৰহীত্ দোহ্ত্বাং দোহ্ত্বিনগুণঃ দোহ্হানি দোহ্হাব দোহহাম ছন্তন্যাম্ অবোভবীৎ অবোভোৎ অবোভূতাম্ অবোভবুঃ। অবোভুবুরিত্যন্যে। বচ্ অবাবক্ ज्यानंती ज्यान कुः यक् ज्याय विज्यायकी ज्यायकी ज्यान विज्ञान विक्र অবনীবজ্ঞান্ অবনীবঞ্ঃ অজঙ্গাং অজঙ্গ অজঙ্গ অজঙ্গ অজঞ্জীৎ অজঞ্জাৎ দিহ্ অদেদিহীৎ দিস্লুপ্যপি অদেধেক্ অদেদিগ্ধাম্ गरिन कि जरित्र के जरिन कि जरिन कि जरिन कि जरिन कि जरिन कि অজোগূঢ়া বন্ধ অবাভন্তবাবন্ধাৎ অবাবন্ধাং ক্রশ্ অচোক্রোট্ দিষ্ অদে-দেট্ অবেবেট্ অদরীদৃশীৎ অদরীদট্ অদরীদৃষ্টাং প্রস্ত্রজরীয়ট্ অজরীগুঢ়াম্ অজরীগৃহঃ অজর্ট ্প্রছ্ অপরীপৃচ্ছাৎ অপরীপট্রি অপরীপৃষ্টাং ভ্রজ্ অবরী-च्ड्डी व्यती च हु व्यती च हु व्यती गाहि यक्त व्यती मा कि व्यती मा कि व्यती च च्यती च व्यती च च्यती च व्यती च च्यती च व्यती च च्यती च व्यती च च्यती च व्यती च च्यती च व्यती च च्यती च व्यती च च গৃধ্ অজরীগুণীৎ অজর্ঘর্ত অজগুদ্ধান্ অজগুদ্ধঃ দলোপেত্ন্য রোনবা অজর্ঘাঃ অজরীয়াঃ অজরিয়াবাচ্যতং পদং রম্বাভাবে অজর্ঘর্ত্রপ্ অবর্দ্ধাম অবর্ধুঃ অবর্ভাঃ নৃৎ অনর্ত্ অন্তাম্ অনর্তুঃ অনরাঃ নদ্ অনানর্ অনা নর্ত্তান্ অনানদঃ আনানাঃ পর্চ্তাপাপ্ত্তাপ্তান্ অপাপদ্ধঃ অপাপাঃ মর্ অমামৰ্ অমামান্তং কুৰ্ খুৰ্ গুণ্ ক্ৰীয়ায়ামেব দৌ অচোকুৰ্ত্ অচোখুৰ্ত্ অজো-ঘোৎ অচোকৃষ্ণ অচোপুঃ অজোঘোঃ বুধ্ অবোভোৎ অবোভোঃ অবোবুদ্ধাম্

প্ৰভাপ্ৰকাশিকা ৷

দন্শি। তয়েঃ কেবলং নলুক্ নাঅস্ত। দংদশীতাতি। জঙিজপাদিস্বাদ্বিন্ধুং যঙ্লুখিয়ে মেনলুক্ ঈট্ পক্ষেশঃ যঃ। দংদশতীতি। অভ্যস্তাদন্তনোলোপঃ। দাদভীতীতি। দন্ত্নলোপঃ পক্ষে ঘ ঢ ধ ভ ত ইতি ধঃ ভুর্ন্যের্জ্যবিভিভ্যাবঃ দাদ্ধি। অদাধ্বিতি। লঙিঅভাগ্যঃ দিশোলোপইতি দিদ্লোপঃ

অবে।বুধুঃ পৎ পথ্ অপাপৎ অপাপরঘকর্মভিঃ। এষামাট্ পক্ষঃ স্করঃ। ঋমতাং রিরারউদাহার্যাঃ ভাবকর্মণোর্য্যক্ বোভূয়তে জঙ্গমতেবনীবঞ্চতে যকিসম্প্রদারণে জরীগৃহ্ণতে পরীপৃচ্ছ্যতে জেজীয়তে দাদীয়তে দাধীয়তে পাপী-য়তে তান্থীয়তে অপাপীয়ত এনান্দ্যত ইত্যাদি। শ্বন্তন্যান্ বোভবিতা চাকরিতা দাদিতা। ৬৪৮॥

দিস্ লুপ্যপীতিদস্থাং লিঙ্গবৎপ্রথমঃ পক্ষে অদাদভীং। অদাদকামিতি। ভাততভাধত্বেভুর্য্যেতৃতীয়ং। নিয়মঃ কিমিতি। অশুত্র ন লুঙুাস্তিদন্শিদন্ভোরেবতশ্লিয়মাদিতর্থেঃ। বনীবঞ্চীত্যাদি। পক্ষেধুটি-চশুকঃ বনীবঙ্কুইত্যাদে। অগুণেহন্ত্যব্যঞ্জনাদিনলোপপ্রাপ্তোনিয়মান্মাভূনলুক্। অভ্যাসকাৰ্য্যস্থ যঙ্ লুকিনির্ত্যভাবাৎদোত্ত্ অবস্থিতো ঈটিনোপ:ন্তনামিনইত্যাদিনা ধাতুগুণাভাবঃ পক্ষেগুণেদাদে স্থাইতি হস্তাহঃ ঘটণভতইতিঘাত স্থাঃ তুর্য্যেষিতিগঃ সংবকার য়োরিতিধাতুদস্থাঃ ঘস্তকঃ। বোভূয়াদিতি। তকুসংজ্ঞানাস্তাতি নেট্ অদাদিস্বাদ্বিকরণাভাবঃ এবং চরীক্রিয়াৎ জঙ্গম্যাৎ দংদশ্যাৎ দংদন্ শ্যাদিতিবাননলুগিতিবোপদেবঃ। জরীগৃহাৎদোতুহাদিত্যাদি। বোভোত্বিতি ইডভাবাৎ। দোতুগ্ধীতি। ধুটোহেদ্ধিঃ হস্তথঃ তস্তৃতীয়ঃ। নগুণইতি। নোপান্তনামিন ইত্যাদিনা। এবং নরীনৃতীতু নরীনতু বরীরতাতু বর্ব্বর্ত্ত্র দাদাতু দাদেতু দাত্তাং চনীস্কন্দীত্বিত্যাদি। অবোভুবূর্ত্তি। বিদভ্যস্তাদিত্যনঃ স্থানেউস্ অভ্যস্তানাম্যন্তাগুণিনইতি গুণঃ। অহাইতি উবমিচ্ছন্তীত্যৰ্থঃ। অবাবগিতি। দিলোপে ধুট্যন্তেচেতিচঃ কঃ পক্ষেঈট্। অযায়ভিতি। যায়জ্যস্থিতো যঙ্লুকি অভ্যাস কার্য্যানিবৃত্তিঃ দিলোপে ভ্রজ্জাদিত্বাজ্জস্তায়ঃ অন্তেষ্টঃ বাঈট্ ঈটিকুতেনদিলোপঃ এবমযাযজুঃ। অবনীবঙ্ইতি। নবীবন্চস্থিতে দিলুপি অন্তেচঃ কঃ সন্ধিশ্চ। অজঞ্চবিতি। দিসলুপ্যপীতি জম্মঝঃ ভম্মপঃ। অদেধেগিতি। দেদিহ্ধাতোদিলোপে ঘত্ত্বেদস্থধঃ প্রথম-চ। অদেধেগিতি। সলোপে। এবং অদেদিগ্ধম্ অদেদিগ্ধনোপান্তেতিগুণাভাবঃ অদেদিহম্ অদেদিহ্ব অদেদিক্ষা এবং হূহধাতোরপি। অজোগুহীদিতি। ঈটিপূর্ববন্ধগুণঃ পরত্রহোচঃ তৃতীয়াদ্যাইতিঘঃ। অজোগৃঢ়মিতি। ঢত্বেঢাক্তস্থাঃ দক্ষিঃ ধাতুঢ়লোপঃ পূর্ব্বদীর্ঘঃ। অবাভন্তিতি। দিলোপেবস্তচতুর্থঃ। অবাবন্ধামিতি। তস্ত্রধঃ তুর্য্যেতৃতীয়ঃ ব্যঞ্জনপরেতি বাদলোপঃ। অচোক্রোডিতি। অন্তেষষ্টঃ। অবেবেডিতি। বিশঃ পূর্ব্ববং। অদরীদৃশীদিতি। দনশ্গুণঃ। রণং নবিবর্ত্ত্যং দিলোপেহস্রতঃ গস্তবঃ গুণঃ চষ্টঃ পক্ষে ঈট্গুণাভাবঃ অজরীগৃহীৎ। অজরীপটি তি। দিলোপে ধুট্যস্তেচেতিছঃ ষঃ অন্তেদফঃ। অপরীপৃষ্টামিতি। ষকারাচ্চেতি টঃ এবম্ অপরীপৃচ্ছঃ অপরীপৃষ্টম্ অপরীপৃষ্ট অপরীপৃচ্ছম্ অপরীপৃচ্ছু অপরীপৃচ্ছা। অপরীভটি তি। ধুডন্তয়োর্জ্ঞাদিজলুক্ভ্রজ্ঞাদের্জপ্রদাভবেৎ यर्छः। অমরীমার্টিতি। মররীমূজঃ ভ্রজ্জাদিস্বাজ্জপ্রয়ং যক্ষঃ মূজোগুণিনির্দ্ধিঃ পক্ষে ঈট্ অমরীমূজীৎ। অমামগিতি। দিলোপেজাদিজোলুক্ জন্মকঃ পক্ষেঈট্ অমামজীৎ অমামজুঃ অমামক্ অমামজ্জীরিত্যাদি। অন্তর্বর্তিতি। অন্তর্গৃস্থিতোদিস্ লুপ,পীপিঘঃ গুণঃ প্রথমশ্চ। অন্তর্গৃদ্ধামিতি। ধাত্তস্থঃ ধস্তদঃ।

অর্জাইতি। সন্ধোসাধিতং। অবর্জিতি। দিলোপঃ বস্তপঃ লিঙ্গবৎপ্রথমঃ। অবর্জামিতি। ধাতত প্রধানিতি। বর্ষ্ইতিছিতে গুণঃ দিস্নুপাশীতিব সভঃ লিঙ্গবৎপ্রথমঃ। অবর্জিতি। সলোপেত স্থানাবিতি। বর্ষ্ইতিছিতে গুণঃ দিস্নুপাশীতিব সভঃ লিঙ্গবৎপ্রথমঃ। অবর্জিতি। সলোপেত স্থানাবিতি তি স্বানাবিতি। সলুকিপ্রথমঃ ত স্থানঃ সন্ধাঃ অত্রে সাবাঃ নান্ধিতি লালাপেত স্থান্ধাঃ। অনানাবিতি। সলুকিপ্রথমঃ ত স্থান্ধাঃ সন্ধাঃ অত্রে সাবাঃ দাদিন্দুপ্রথমঃ। অকোনোবিতি। পদ্কুৎসিতে শব্দেপ্রবিব এবং মার্দ্ধাতোর পি। কুর্দিতি। তার মেনাবাং দাদিন্দুপ্রথমঃ। অজোনোবিতি। দিস্নুপাশীতি ধাতু গামারঃ গুণঃ প্রথমশ্চ। অচোকুর্মিতি। প্রথমতে স্থান্ধাঃ মানোবিতি। দিস্নুপাশীতি ধাতু গামারঃ গুণঃ প্রথমশ্চ। অচোকুর্মিতি। প্রথমতে স্থান্ধাঃ মানোবিতি। কার্পিত স্থান্ধাই আলোক্রিতি। মানোপেত স্থান্ধাই প্রথমতে কার্মানাবিতি। কার্মানাবিতি। মানাবিতি। মানাবিতি স্বানানাবিতি স্বানাবিতি। মানাবিতি। মানাবিতি। মানাবিতি। মানাবিতি স্বানাবিত স্বানাবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি। মানাবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি। মানাবিতি স্বানাবিতি প্রানাবিতি স্বানাবিতি প্রানাবিতি স্বানাবিতি স্বানিবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি স্বানাবিতি স

গৃতপ্রকাশিকা।

দন্শিদন্ভোরিতি। দন্শদংশনে ভুপদন্ভুদছেস্বাপ। যঙ্লুকিসতিসতিদন্শিদন্ভোঃ পরমেতয়োরেবনলুক্নাতেয়ানিতয়েঃ। পরমিতিয়হণমবধারণার্থকং। বনাবঞ্জিতীত্যাদি। বন্চুগতে ভুপ। প্রথম

য়য়য়ৢদায়রগপ্রদর্শনং শেষোদায়রগলয়নন্ত্। সনীস্রংসীতীতি। স্রুক্স্রাবস্থানাভ্র্মা আদিনা সনীস্রুক্তঃ সনীস্রংসতাত্যাদয়ঃ। প্রস্পাদ্যাত্যপুদায়রণানিদশয়তিদোয়্ছীত্যাদি। প্রথমতোলঞ্প্রয়োগদর্শনং। ছহ্প্রপুরণে অপ। লিঙাদির্ উদায়রণানিক্রমাদশয়তি লিঙিবোভ্রাদিত্যাদিনা। ভুসভায়াং।
বনীবঞ্জাদিত্যাদীত্যাদিনাবনীবঞ্জাতাং বনীবঞ্রিত্যাদি। বচ্ পরিভাষণে অপ যজ্ দেবপুর্জাসঙ্গতকরণ
দানের যভ গম্ভগতে ভুপ জভ্যরণে ভুপ দির্প্রত্যাদি। বচ্ পরিভাষণে অপ যজ্ দেবপুর্জাসঙ্গতকরণ
দানের যভ গম্ভগতে ভুপ জভ্যরণে ভুপ দির্প্রক্রাদি। বচ্ পরিভাষণে অপ বজ্ দেবপুর্জাসঙ্গতকরণ
দানের যভ গম্ভগতে ভুপ জভ্যরণে ভুপ দির্প্রক্রেণ ভুপ। অদরীদটিতি। স্বরাৎপরহরেকাভ্যামিত্যনেন্দিঃ
এবমত্যত্ত। গ্রহ্ উপদানে ক্র্যান্ত প্রক্রিপ্রালাং তুপ ভ্রুক্ত পাকে ভুপ য়ুজ্ শুদ্ধো অপ টুমজ্জোশুদ্ধো
ভুমা নৃত্যাত্রবিনামেদিপ মনর্বিত্যাদে নভ্রতি নাথতীত্যাদিনাগ্রনিষেধ্য নদ্শদেভুপ পদ্বিপানশকে
ভুমা কুর্ক্ খুর্দ্ ভুমা গুর্ দিপ রুধ্ অবগ্রে ভুপ বুধির্জ্ঞানে ভুত বুধ্জানেদিমা পত্তপথেচ গতে ভুপ
জিলয়েল্প ছুদাঞ্লাকেলি ভুমাঞ্বারণপোবণাবায়ে ছুউ পাপনে অপ ঠাগতির্তৌভুপ ইদিপরমেথ্যেভুপ
ইদকুবন্ধয়ার্ম্ব যত এবননলোপন্তত্য। আদিনা উদ্যাক্রেদনেরপ শুনাদ্যতে ইত্যাদেগ্রহিণং। চাকরিতেতি। ক্রিফেপে ভুপ নরারিরইতির্গ্যিতে ইদ্যুদাহরণম্। অস্ত্র্মতে চরীকরিতাচরিকরিতাচকরিতেতি। ক্রথংপ্রভাপ্রাপ্রাদ্বুস্র্বগ্র। ১৪৮ দ

রধাদিবতেবেটঃ স্ব্যরনিটোযেশকাদয়ঃ। শাশকিতা শাশক্তা পাপচিতা পাপক্ত। পাপচিষ্যতি পাপক্ষতি পরিপচ্ছি তা পরিপন্তা পরিপর্ক্ষ্যতি তোতোতা তোতোদিতা দোদোগা দোদোহিতা দোধোক্ষ্যতি দরীদর্শিতা দরীদ্রক্ষ্যতি অদরীদ্রক্ষ্যৎ অদরীদর্শিষ্যৎ আশিষি বোভ্রাণ্ড দাদেয়াৎ মেনীয়াৎ বাব্যাণ বোভোজিঘাট বোভ্ক্ষীট লিটি বোভবাঞ্চকার নেনয়ামাদ জঙ্গমান্ত্রত্ব জোহ-বাঞ্চক্রে লুঙি অচরাকারীৎ অচর্কারিষ্টাম্ অদরীদ্রাক্ষীৎ অদরীদর্শীৎ জিঅজে-জারীৎ অজঙ্গমীৎ অদংদাক্ষীৎ অদংদশীৎ অদোদোহীৎ অদোধুক্ষৎ ব্যত্যদোদ্রগ্ধ ব্যত্যদোদোহিষ্ট অতাস্থাৎ অবোভূৎ অবোভূতাম্ অবোভূবন্ ভাকর্মণোরিচ্ অবোভাবি অচরীকারি অবেভেদি অদরিদর্শি অদরীদর্শিষাতানিত্যাদয়ঃ ১৯৪৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বাস্ সূয়তীত্যাদিনাবেরধাদয়োবেটস্তৰংশক্জঃ কান্তেইত্যাদিনাবেশকাদয়ে ৷ হ্নিটস্তে যঙ্ লুকিনেটঃ স্তারিত্যর্থঃ। শাশকিতেত্যাদি। যঙ্ লুগত্তশাশক্ধাতোরিট্ পক্ষেনেট্ এবমতোলাং। পাপক্ষ্যতীতি ভবিষ্যন্ত্যাং পক্ষেনেট্। পরিপৃচ্ছিতেত্যাদি। একঃ প্রচ্ছিরত্যনিট্ যঙ্লুকিসম্প্রারণানি-রুত্তেঃ অভ্যাদাৎরিপক্ষেগুণঃ ধুট্যক্তেচেতিছঃ মঃ। পরিপর্ফ্যতীত্যাদি। ছস্মবস্থেদছোঃ কসইতিকঃ বহুংপক্ষে পরিপুচ্ছিব্যতি। তোতুদ্গুণংদোতুহ্দাদে স্তুঘঃ স্ততিপরে কৃতীরাদ্যস্তুর্ব্যাদ্য স্থং পক্ষেইটদোদোহিয়তীতি। দরিদশিতেতি। ইট্ওণঃ পক্ষেওণোহর্ব্যত্যাসঃ শব্সবহু । এবমেবভবিষ্ত্যাং ক্রিয়াতিপতে অভা-গমঃ। আশিষাতি। আশীক্ষিভক্তাবুদাহিয়তইতার্থঃ। যগদতি দেশামগুণঃ। বাৰচ্যাদিত্যঅবাৰণাদিতি ক্চিৎপাঠঃ তত্ত্ৰবধ্যাতুঃ। বোভোজিধাফেতি। ইটিগুণঃ যত্ত্বং পক্ষে এবম্ ঋবর্ণনাম্যপান্তানামনিভাশীলু রে কিতাবিতি কিন্তুং ধুটাতেতেতিজঃ কঃ বোভোক্ষাইগুণইতিক্ষতিং। লিটিপরোক্ষারামুদাহরতিবোভোবাঞ-কারেতি। লুপ্তপ্রত্য়োন্তাদনেক স্বরাদ।আমিগুণেকৃঞ্চ প্রয়োগঃ। নেনাধাতোরামি অসং প্রয়োগঃ। জঙ্গন্ধাতোরামোভূপ্রয়োগঃ। জোভ্ধাতোরামিজে।হবাঞ্জে । গুঙিঅদ্যত্তামুদাহরতি অচরাকারীদিতি। চরীকুধাতোরনেকস্বরত্বাদিভাগমের্দ্ধিঃ স্বরান্তস্তেত্যাদিনার্দ্ধোইটঃ সিজ্নোপঈকারএবেতি সিচোলোপঃ। আদরীদ্রাক্ষাদিতি। অনিটান্তহলন্তানামিত্যাদিনাবুদ্ধনাবার্বাত্যাসঃ ধুটান্তেচেতিশঃ মন্ত্রং মটোঃ কঃ সইতিকঃ পক্ষেইট্গুনঃ সিজ্লোপঃ দৃশঃ শান্তেংনিট্যাৎ যঙ্নুকিনেট্যং। অজেজায়াদিতি। জিধাতো-রনেকস্বরত্বাদিডাগমের্দ্ধিঃ স্বরান্তক্তেতি বুদ্ধাবিটঃ দিজ্লোপঃ। অজস্মীদিতি। গন্ধাতোম্বান্তেহনিট্ ত্বাৎ যঙ্লুকিবেট্রমিডাগমেসিজ্লোপঃ পক্ষেঅজঙ্গনাং। অদংদাকীদিতি। দন্শ্ যঙ্ লুকিদন্শিদন্ভোঃ পরং ন লুগিতি ন লোপেদংদশ্ধাতোঃ অনিটান্তিতি বুদ্ধোধুটান্তেচেতি শঃ যত্বং ধঢ়োঃ কঃ সইতি কঃ পক্ষেইডাগমেইটঃ সিজ্লোপঃ। অদোদোহীদিতি। দোত্ত্গাতোরিটিগুণসিজ্লোপো পক্ষেশ্নাম্য-পান্তাদিত্যাদিনাসণিণকুবন্ধস্বাদগুণাভাবঃ দাদেস্ত্ৰযঃ সধ্বকারয়োস্তীয়াদ্যাইত্যাদিনাদস্ৰধহে অংঘ:যেঘস্তকঃ যত্বং স্বপ্রত্যয়াদিত্যাদিনাছস্তনীবৎপ।ঠঃ। ব্যত্যদোহুদ্ধেতি। ক্রিয়াবিনিময়সাল্মনেপদং দাদেস্তবঃ ধুড্-

অন্যেভ্যোনিত্যমিট্ কার্য্যঃ। যথাশাশঙ্কিতাদয়ঃ। চোকোকিতা রারাজিতা রারাজিষ্যতি অরারাজিষ্যৎ চোকৃজিতা অবাবাদীৎ বাবদিতেত্যাদিদিক্। ৬৫০॥

হ্রস্বতোধুনিতি সিজ্লোপঃ ঋবর্ণনামাপান্তানামনিতাশীলু ছোকিতাবিতি অতোনগুণঃ ঘটধভতইত্যাদিপক্ষেইত্ গুণোধহেয়কারাচেতি তস্থটঃ। অতাস্থাদিতি। তাস্থাধাতোঃ স্থাদোশ্চতি ঈসিচোলুক্। অবাভূদিতি। বোভ্ধাতোঃ নেড্গুণোচভূবইতি ঈসিচোলুক্ ইড্গুণাভাবশ্চ। অবোভূবনিতি। সিজ্লোপে উসিবাগমোহপাটীতি বাগমেস্বপ্রতায়াদিতি উসঃ স্থানেহন্। ইজিতি। স্তেম্থাদিচ্স্তম্থালোপশ্চসর্বস্মান্তাবকশ্মণোরিত্যনেন ইচির্দ্ধিঃ উপাত্যভালঘোগ্ডণঃ। অদরীদাশিয়াতামিতি। স্বরান্তধাতুগ্রহিহ্ন্ দৃশিভাইত্যাদিনাইজ্দিট্ গুণঃ ষত্বং যন্নাবেট্রাৎ পক্ষেইট্। আদিনাঅদোদোহি অসরীসারি অজঙ্গমি অতাস্থারি বদ্অব্যবাদি রাজ্ অরারাজাদিত্যাদি। ৬৪৯॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

রধাদীতি। শকাদয়ঃ শক্৯ঃকান্তেইতাাদি বহয়োহান্তেনিইজিতা ইতান্তেন বিহিতা অনিটো
নেধাতবস্তেরধাদিবং বাস্ দূয়তি ধুঞ্ দূতিরধাদ্দেলুবন্ধতইতি দূত্রোক্তরধাদিবং যঙলুকিবেটঃ স্থারিত্যস্কঃ।
নধাদিবদিতালুকে যঙলুগন্তাঃ শকাদয়ঃ শিতাপিবেটঃ স্থারিত্যাপদ্যেত অশিতীভাকেতু্যনস্বর্গাবিপি বেট্
ইমিত্যাপদ্যেত যনস্বরাদিভিয়ানামশিতামিত্যুকেতুগোরবমেব। অনিটইতালুকে অনিট্শক্ সেট্
শকাদয়োহনিট্ দেট্ছান্তপর্যন্তোবেটঃ স্থারিত্যাপদ্যেত শকাদয়ইতালুকে অনিটঃ স্বরান্তাঅপিবেটঃ
স্থারিত্যপদ্যেতইতি দর্শ্বয়ুক্তঃ। শাশকিতেতি। শক্ষসামর্থেস্থাপ। তোতোত্তেতি। তুদ্ব্যথনেতুউ।
বোভোজিশীক্তেতি। ভুজাবক্রীকরণেতৃপ ভুজ্পালনাভ্যবহারয়োঃ রূপকর্মণি প্রয়োগোয়ম্ অন্তথা
আহ্রেপদাসন্তবাং। কে হবাঞ্চলজ্বামপিকর্মণপ্রয়োগঃ। অজেজায়ীদিতি। প্রসঙ্গাৎ স্বরান্তধাত্
প্রয়োগোহদর্শি। অন্তংপ্রভাপ্রকাশিকায়ঃমনুদর্ভবাং। ৬৪৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অতা । শকাদিভাহেতেভাযিঙ্লুগতেভানিতামিট্কার্যাঃ। যদ্যপিশকাদয়োহনিটঃ এববেটঃ
অত্যেতুদেট এবকথমেতং সতাং স্থার্থন্ অতথা যঙ্লুকি শকাদ্যন্তেইনিট এবস্তারিতি মন্দ্রিরাবুদ্ধেরন্ ।
পুর্বত্রেরাদিকীর্ভনং শিতিচইট্ স্থাদিতি সংশ্রবারণায় রপাদীনামশিতি বেট্রদর্শনাদিহাপিতথৈবেতিভাবঃ।
চোকোকিতেতি । কুক্ চোকুক্ইড্ওণঃ। চোকুজিতেতি । কুজ্ অব্যক্তেশন্দেচোকুজ্ইট্ উপান্তস্থ
গুরুহারগুণঃ। অবাবাদাদিতি । বাবদ্ধাতোরদাতভামিটি লঘোরকারস্থতথালান্তরেফান্তবদ্রজামিতি
রিক্ষিং ইটঃ দিজ্লোপঃ। বাবদিতেতি । ইট্নিত্যং। দিগিতি পাপথিতা নানন্দিতা বোভবিতা
শেশেরিতা শেশায়িয়তি অবোভবিয়দিত্যাদয়ঃ। ৬৫০ ॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অত্যেভাইতি। শক্দিভাহতেতাহলন্তেভাঃ স্বরান্তেভাশ্চ। স্থার্থমেতংসূত্রং। শকি
শঙ্কারাঃ ভুঅ।। আদিনঃশক্ মর্নেদিউ কদ্ গতেছিপইতাদি। কুক্ আদনেভুমা রাজ্দীপ্তৌ ভুউ
কুজ্ভুপ বল্ কথনেভুপ। ৬৫০॥

অনুবন্ধশতিব্গণোদিতে তরধাতৃ দিতকার্য্যনত্রচ। প্রকৃতি এইণেনযঙ্ লুকানপি যৎসংগ্রহমাই পাণিনিঃ। অনুবন্ধাদিনির্দ্দেশন যঙ্লুকি ধাতৃক্তকার্য্যনান্তি যথা শীঙঃ শিতিনগুণঃ শেশীতঃ। ইরনুবন্ধাদ্বেতিনঅঙ্ অবেভেদীৎ অবেতিংনীৎ। শতিপ্জুহোতের্মোব্ইতিনান্তি জোহুবতি। শ্বয়তেঃ শেশ্বনীতিশেশ্বিতঃ। নবস্টের্য্যুকিবা বস্যতে। নহন্তের্বধাশিষিজং হন্যাৎ। ন অর্জ্তিনর্জ্যারঙ্ আরারীৎ অসরীসারীৎ। শাভেঃ শিষ্চনঅশাশাসীৎ। অন্যেতৃতিপানির্দ্দিন্টাৎ প্রকৃতিকার্যানিরতিশ্বন্দিসভাষায়ান্ত তদেব তেন আরারৎ অসরীসরৎ অশাশিষদিত্যাহঃ। এবমন্যত্রাপি। যজাদিগণ্যা নসম্প্রসারণং যাযজ্যতে। নপুষাদিত্যাতাদিগণ্যানঙ্ অপোপোষীৎ অপোপৌক্ষীৎ অদেদ্যোতীৎ অদেদ্যোতিফাম্ অদেদ্যোতিষ্বৃত্তিত্যাদ্যোহন্তসন্ধ্রয়াঃ। যঙ্লুকপ্রয়োগং ভাষায়ামপীচ্ছন্তিদৃশ্যাতিষ্ঠ বিত্যাদ্যোহন্তসন্ধ্রয়াঃ। যঙ্লুকপ্রয়োগং ভাষায়ামপীচ্ছন্তিদৃশ্যাত্যাবোভবীতৃ যদব্রবীঃ। নজাঘটীতৃ যুক্তোতৎ দিংহির্বর্দয়োরিবেত্যাদ্যোক্ষান্ত জান্ববীহরণকাব্যে পাণিনিপ্রয়োগাঃ। ১৫১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অনু । অনুবন্ধনির্দেশেনতিপানির্দেশেনচগণোদিতং যাবদ্ধাতৃক্তং তদিতরধাতৃক্তমত্রযঙ্ লুকিকর্ত্রবাং। ধাতুকার্য্যং কথং যঙ্লুকিভবেদতআহপ্রকৃতীতি। প্রকৃত্রিগ্রহণেন যঙ্লুকামপিযৎসংগ্রহন্মাহপাণিনিরাহয়দ্দতঃ অতএবধাতুকার্য্যং সম্ভবতি। অত্রানুবন্ধাদিসম্বন্ধিগণোদিতঞ্চধাতুকার্য্যং পর্যুদ্দিতীত অনুবন্ধাদীতি ধাতুকার্য্যমিত্যম্বয়িষঙ্ লুকিতমাস্তাত্যম্বয়ং। শীঙং শিতীতি। শীঙোনিত্যং গুণঃ শিতীতিগুণোনাত্রিঙিতানির্দেশাৎনৌর্শাতঃ যঙ্লুকিতৃগুণিনিগুণএবেতি। অঙ্ স্থাদিরনুবন্ধান্ধেতি অনুবন্ধনির্দেশবিধানাদত্রনাঙ্ দান্তেইনিট্নেন বেট্বাহবাইট্ঞণঃ ইটং সিজ্লোপঃ অবেভেদীং পক্ষেইনিটান্থিতির্দ্ধিঃ অবেভিদীং। শতিবিতিতিপ্নির্দিন্টোদাহরণং জোহুবতীতিউব্অভ্যস্তাদিতিনলুক্। শেশ্বয়ীতীতি। শ্বত্যতেরবিতি পাক্ষিকসম্প্রসারণং নাস্তিশেশিধাতোরীট্ঞণঃ নবন্টের্যক্রিতি। ন সম্প্রসারণং বন্তিবচ্যাদেরিত্যনেননিম্বেধাং। যঙ্ লুকিপ্রাপ্তাবপিবস্তীতিতিপানির্দেশান্ধাত্রসম্প্রসারণমিতিকশ্চিং ভন্ধমনোহরং সূত্রেসম্প্রসারণাভাবস্থৈবতিপানির্দিন্ট্রান্দিভাবিত্যপারণিত্র । মংজ্ঞাপুর্বকত্বান্ধসম্প্রসারণমিত্রেকে। গণোদিতেঅত্রগণপদস্পসমূহার্থতাপি তেন সম্প্রসারণক্ত সমূহোদিতত্বাদভাবইত্যপরে। অত্যেতুগ্রহিজ্যেতি-স্ত্রেবিষ্ঠীতি পঠিতত্বাং নসম্প্রসারণং ধাতৌশতিপ্ নির্দিষ্ট্রাদিতিবদন্তি। হস্তের্বধাশিবীতিবধাদেশোনাস্ক্রিলাশিবিতিপানির্দেশাং। অরার্ধাতোরনেকস্বর্বাদিট্দিটঃ সিজ্লোপিঃ। অসরীসারীদিতি। সরী-

সর্ব ত্রৈবযঙ্পেবাহিস্বোস্তোবাচতথ্যমো। দিৰুক্ত্যনু প্রয়োগেচি স্বেচ্ছয়াশুঃ সমুচ্চয়ে। সর্বত্রবচনেকালেবিভক্তো যঙ্গেহিস্বোবাভবতঃ তথ্যমোচবাতদর্থক-

স্থাতোরিডাগমের্দ্ধিঃ। স্বরাস্তস্ত্যোদিনার্দ্ধিঃ। অশাশাসীদিতি। পূর্ব্ববিদ্যাপমাদি। অস্ট্রত। নির্দিষ্টং নির্দেশোভাবক্তান্তং যঙ্রুকিতিপানির্দেশেন প্রকৃতিকার্য্যস্থানির্ত্তিশ্বন্দোবিষয় এব ভাষায়ান্তন রতিরিতি আরারদিত্যাদে অঙ্স্থাতোগুণশ্চশাসঃ শিষ্ইতিচভবতীত্যাহ্যঃ। এবমিতি। জাহ্বতিজ্ঞংবধ্যাদিত্য । যজাদীতি। বিষ্পবিত্য অভ্বদিবপিশ্বিবেঞ্ ব্যেঞ্ইতি সূত্রেগণোদিতকার্য্যমার সম্প্রমারণমিত্যর্থঃ। যাযজ্যতইতি যঙ্রুকিয়কিরপং। পৃষাদের্গ্রতাদেরিতিগণোদিতত্বান্নঅঙ্। অপোপানীদিতি। পোপুষ্থাতোর্ভিইট্ঞণঃ সিজ্লোপঃ। অপোপান্দীদিতি। রধাদিব্দেই অনিটান্থিতির্দ্ধিঃ ষঃ কঃ-। সারেত্রস্থানোন্তি। অদেদ্যোতীদিতি। দেল্লাৎধাতোরিড়াগমে। যঙলুকাংছন্দোবিষয়বাদিনং প্রতিষ্থিতিয়ভুর্ণিতি। বরীবৃষ্টিতি। র্যুসেচনে। রোরবাতীতি। রোক্রধাতোরীট্। জাঘটীত্বিত। জাঘটীত্বিত। জাঘটীত্বিত। জাঘটীত্বিত।

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অনুবন্ধেতি। অনুবন্ধশ্চ শতিপ্চগণশ্চতৈস্ততন্ত্ৰিদ্দেশৈর্ক্দিতমনুবন্ধশতিব্গণোদিতং তত্মাদিতরংহচ্চতনাতৃদিতকার্য্যঞ্চিতিবগ্রহাঃ। অত্র যঙ্লুকি অনুবন্ধনিদ্দিষ্টণতিপ্নিদ্দিষ্টগণনিদ্দিষ্টাদিতেতরধাতৃদিতকার্য্যং স্থাং নতু অনুবন্ধনিদ্দিষ্টং শতিপ্ নিদ্দিষ্টং গণধাতৃনিদ্দিষ্টং ধাতৃকার্য্যমিত্যর্থঃ। ননু যঙ্লুকিবোভ্ইতাদিস্বরূপধাতৃবিরহাংকথং ধাতৃকার্য্যং যঙ্লুকিস্থাদিত্যতআহ প্রকৃতীতি। যঙ্লুকাং যঞ্জোনুগ্যেভাস্তেবাং প্রকৃতিগ্রহণেন তত্তন্ধাতৃ স্বরূপর্স্বীকারেণ্যদ্যমাৎ পাণিনিঃ সংগ্রহম্ অবাধিতধাতৃকার্য্যমূহমাহ তম্মাদিতিশেনঃ। যথেতি। শীঙ্ স্বপ্নেঅ ভিদির্বিদারণেক্র্যাউ ক্লানেজুপ টুত্রিগতির্দ্ধোঃ ভূপ বশ্কান্তে অপ হন্হিংসাগত্যোঃ ঋসগতে ভূপ শাল্লঅনুশিক্ষে অপ। এবমন্যত্রাপীতি। কুহোতের্নেব্ হন্তের্ন্বধাশিনীত্যাদ্যাদেশাঅন্তরাপিক্হনাদাবপি স্থারিতি। এতদপ্যন্থমতে। পুষাদীতি। পুস্পুর্ব্যে ক্র্যাপ ত্যংদীপ্রে ভূমা। ইত্যাদ্যইত্যাদিনা অপোপোষিষ্টাম্ অপোপোষিষ্ণঃ অপোপোষিষীঃ অদেদ্যোতিনীরিত্যাদয়ঃ। হরিণেতি। যংঅত্রবীঃ হরিণাকৃষ্ণেক্রণসহতেত্বস্বস্যং সথিত্বং বোভবীতু অতিশয়ং ভবিষ্যতি সিংহদ্বিরদ্যোরিবসিংহহস্তিনোর্যুক্রেণ্যাজনেইবতৎস্ব্যং নজাঘটীতু নাতিশয়ং ঘটিষ্যতে ন কদাপি ঘটিষ্যতইতি তাৎপর্য্যং। ইত্যাদ্যইত্যনেনান্যেপি যঙ্লুগস্তপ্রয়োগান্তৎকাব্যে সম্ভাতিস্থিতং। গীতিজাতিঃ। ৬৬১॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

দৰ্ব্ব। দৰ্ব্ববৈত্তৰ ক্ৰিয়াদমভিহার তত্ত্বস্তাদ্ধাতোঃ দৰ্ব্বত্ত ক্ৰিয়াকালেদৰ্ব্ববচনেদৰ্ব্ববিভক্তেচি পঞ্চন্যাহিস্ফোবাভবতঃতথ্বমাবপিপঞ্চম্যাএববাদ্ধিরুক্তিব্বচনংবেতিকণাপাদিমতে।অস্মাকস্তত্তীয়ায়াএবেতি। বিভক্ত্যনুপ্রয়োগশ্চ। অত্যর্থং লুলাতীত্যর্থেলুনীছি লুনীছিশত্র ন্ নৃপতিলু -নাতি এবং লুনীছি লুনীছিরাজানৌ শত্রন্ লুনীতঃ ছিন্দন্তিশালীন্ কেদারে ছিন্ধি ছিন্ধি ছজিষ্যকাঃ। যথাবা। ত্বং পুনীহি পুনীহীতি পুনন্ বা য়োজগতুয়ং। চরন্দেহেয় ভূতানাং বিদ্ধিবেবুদ্ধিবিপ্লবং। অধীতে অধীষাধীষ্দিষ্যঃ অধীধ্ব-মধীধ্বম্ অধীয়তে ব্রাহ্মণাঃ। গমিষ্যন্তি দিজশ্রেষ্ঠাগঙ্কাং গচ্ছত গচ্ছত। এবম্ অধ্যৈষ্ট অধ্যৈষাতাম্ অধ্যৈষত অধীষাধীষ্ব অধীধ্বমধীধ্বঞ্চ অধ্যৈষ্ঠাঃ অशिष्ठांशांभ्य यह अशिष्ठां यह अशिष्ठां यह अशिष्ठां विश्व अशिष्ठां यह अशिष्ठां विश्व अशिष्ठां विष নামুদাহার্য্যং। যত্রযম্মিন্নর্থেযমাদ্ধাতোর্হিস্বাদির্বিহিতঃ সএব তদর্থকবিভক্ত্য-স্তোহ্নু প্রযোক্তব্যঃ ফলং পুনৰুক্তি বৈচিত্র্যমেব। ক্রিয়াসমুচ্চয়ে দির্বচনান্ত্র-প্রয়োগয়োঃ কামাচারঃ। সচদ্বয়োর প্রয়োগোদ্বয়োঃ প্রয়োগএকৈক প্রয়োগোবেতি। যথাপুরীমবক্ষন্দলুনীহিনন্দনং মুষাণরত্নানিহরামরাঙ্গনাঃ। বিগৃহ্ছচক্রেন-মুচিদিযাবলীযইত্থমাস্বাস্থ্যমহদ্দিবং দিবইতিনামঃ। যাহি যাহিরণং যান্ত হন্যুর্জ্জহিজহিদ্বিং। অশুষাশুষসৎকীর্ত্তিমশুবীরন্মহৌজসঃ। আরাধয়ারা-ধয়বাস্থাদেবং বন্দস্ববন্দস্বতদজ্বিপাদা। সংপশ্যসংপশ্যমনস্যাহস্তমাসাদ্যা-সাদয়শুদ্ধসিদ্ধিং। অহমতীবারাধয়ামীত্যাদ্যর্থেলোটঃ প্রয়োগইতিদিক্। *। ইতীনাদিপ্রকরণমূ। * । ইতি প্রয়োগরত্বমালায়ামাধ্যাতে विनार्भागः। *। *। ७९२॥

দশ্যাদিবিশেনোনগম্যতেইতিদর্ব্বত্রক্রিয়াকালেবিধীয়মানস্থাদব্যক্তপদার্থকস্বমেবস্থাদতঃসখ্যাকালকারকাণাং নামযুদ্মদশ্মদামভিব্যক্তরেহ্নপুপ্রযোজব্যইত্যাহিদ্দিক্ত্যপুপ্রয়োগাবিতি। ক্রিয়াসমুচ্চয়েদির্ব্বচনানুপ্রয়োগো স্বেচ্ছয়েত্যর্থঃস্বমিত্যাদি। হেবায়োক্বমত্যর্থং জগত্রয়ং পুনং পুনন্পবিত্রীকুর্বন্ ভূতানাং প্রাণিনাং দেহেষু চরন্ মেমমবৃদ্ধিবিপ্লবং জানীহীতি যোজনা। এবমিতি। অধ্যেষ্যতে অধীষেত্যাদিহিতো। এতোপরস্থৈপদিনঃ স্বধ্বমোচাত্মনেপদিনইতি বোধ্যং। বজ্রধরস্ত্রক্রিয়া ক্রিয়াসমভিহাররপ্রক্রিয়াবাচকাদ্ধাতোরিত্যর্থঃ যদ্যপিলুঞ্প্রভৃতিভ্যোধাত্মভাশেছদনমাত্রমেবপ্রতীয়তে তথাপিসমভিহাররপ্রক্রিয়াবচনাদিতি ব্রত্তাবৃক্তং বিবক্ষাধীনস্বান্তাবিনিভূতবত্নপচারাৎ। অথবাসমভিহারক্রিয়াবচনাৎ সমভিহারেণোপলক্ষিত ক্রিয়াবচনাদিত্যর্থঃ তেন লৃঞ্প্রভৃত্যশেছদনাদ্যর্থস্থেববাচকাঃ সমভিহারক্রিয়াস্বরূপক্ষেত্যত্রপ্রতীয়তে যথাগুড়শব্দে মাধ্র্যাদি। সএবেতি। সএবধাতুরিত্যর্থঃ। ননুসএবধাতুঃ প্রযুজ্যতে ন তদর্থোহপ্রীতি কিমেতদিত্যত

আহকলং পুনরিতি। সমুচ্চয়পদং ক্রিয়াসমুচ্চয়পরমিতি দর্শয়য়য়হিক্রয়েতি। ক্রিয়াসমুচ্চয়ে বিবক্ষয়েতি ক্রিলাচনঃ। স্বেচ্ছয়েতাস্থার্থঃ কামাচারইতি। সচেতি। দ্বয়োদির্বিচনামুপ্রয়োগয়োরপ্রয়োগঃ তয়োরেবদ্রয়াঃ প্রয়োগঃ। একৈকেতি। দ্বয়্লজেরমুপ্রয়োগস্থবা। দ্বয়োরপ্রয়োগউদাহরতি পুরীতি। অবস্কলনুনীহিমুমাণইত্যাদে ক্রিয়াসমূচ্চয়ে ক্রিয়াসমিতিহারেহপি ন দ্বিয়্লজেরমুপ্রয়োগশেচতার্থঃ। নমুক্রিয়াম্বামান্তস্তৈক্তর্থাৎ কথং সমুচ্চয়ঃ সত্যং ব্যক্তিভেদমাপ্রতিসমুচ্ছয়সন্থাৎ। য ইন্দ্রেণমং বিগৃছবেরং বিধায়দিবঃ স্বর্গস্তামহাদিবং প্রতাহমিত্থমস্বাস্থ্যমস্বস্থতাং চক্রেকৃতবান্ তমেবপ্রকারমাহ পুরীমিতি। অবস্কলন্তর্থমবন্ধনিতবান্ অভিভূতাঞ্চনারন্দনং বনং লুনীহিঅত্যর্থং লুনবান্ রন্ত্রাণিমণীন্ প্রেষ্ঠবস্তুনিবামুয়াণঅত্যর্থং মুমোয় অমরাঙ্গনাঃ হরঅত্যর্থং জহারঅত্রহেতুর্বলীতি। অহর্দিবমিতি অহ্ন্তহ্নীতিয়ার্থেইৎপ্রত্যয়ান্তনিপাতঃ। পরেতুত্বস্কুপ্রয়োগস্তচক্রেইতি সমুচ্চয়ে সামান্তব্যন্তি ক্রের্জেইন্ত্রমাণবিধানাদিতি বদন্তি। যাহীতি। গমনহন্নাশনক্রিয়াণাং সমুচ্চয়ঃ উভয়োঃ প্রয়োগশ্চ। এককেতি উদাহরতি আরাধ্য়েতি। অহং বাস্থদেবমারাধ্যায়াধ্য অতীবারাধ্যামি এবং তদন্ত্রিপদ্মে ভচ্চরণপঙ্কক্রে অতীববন্দে মনদিচিত্তেতং বাস্থদেবমহমতীবদম্পশ্রামি গুদ্ধদিহিং মোক্ষমহমতীবাসাদ্যামীত্যর্থঃ। দিগিতি। এবমন্তেহপানুসর্ত্রব্যাইত্যর্থঃ। ৯। ইতিপ্রভাপ্রকাশিকায়াং রত্নমালাটীকায়ামাখ্যাতে সপ্রমবিস্থাদবিবরণং। ৯। ৯। ৬৫২॥

गृष्धकानिका।

র্ষ্বিক্রীড়াক্ষয়জীবন ভীলজ্জাজন্ম স্থিতিজাগরণে। দীপনকম্পনমোদনসিদ্বিশ্লানাদ্যথেপাতৃরকর্মা। যথাএপতে শ্রীঃ বর্দ্বতের্দ্ধিঃ ক্ষায়্প্যায়াদেরেবং।
ক্রীড়ভেইরিঃ রমতেবিহুরতি দীব্যতীত্যাদি। ক্ষিণোতি ক্ষীয়তে। শ্রিয়তে
নশ্যতীত্যাদি। জীবতি প্রাণিতি শ্বসিতি বিরহিণী। বিভেতি ব্যথতে এস্যতি
উদ্বিজনে পাপাং। লজ্জতে হ্রীচ্ছতি ক্রিহ্রেতি ব্রীড়তেত্রপতেব্র্পুঃ। জায়তে
প্ররোহতি উৎপদ্যতেহঙ্কুরঃ। শেতেশ্বপিতি নিদ্রাতিশিশুঃ স্ঠীবতি তিষ্ঠতি
বসতি আস্তে। জাগর্জি উদ্বিদ্রাতি চেততেব্রতী দীপ্যতে ভাসতে ভাতিরাজতে
ইদ্বেপ্রকাশতে রোচতে শোভতে বিদ্যোত্তে ক্ষ্টিতি পুস্প্যতি কমলং। কম্পতে
বেপতে চলতীত্যাদি। মোদতে প্রীয়তে মাদ্যতি নন্দতি নরপতিঃ। সিদ্ধ্যতি
রাধ্যতি কার্য্যং। শ্লায়তি শ্লায়তি গুম্বাতি পল্লবইত্যাদি। আদিনাগর্জ্জতি নদতি
পত্তি লুঠতি বলতে লডতীত্যাদয়ঃ। ৬৫০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অথধাতবােষিবিধাঅকর্মকাঃ সক্র্যকাশ্চবাহুল্যাৎসক্র্যকান্বক্তুনশক্ষােতিয়য়য়াদক্র্যকায়িদিশিতি রিদ্ধিয়াদিনা। রিদ্ধিরবিয়বােবাপ্চয়ঃ ক্রাড়াবেলা ক্ষয়ােয়াবােনাশশ্চ জাবনং অনামপ্রসিদ্ধং ভার্ভয়ং লজ্জাব্রীড়া জন্মউৎপত্তিঃ স্থিতিগতিনির্ভিঃ শাসনেউপবেশনে দণ্ডাবস্থানেচভবতি জাগরণং চেতনং নিদ্রাভাবইতিযাবৎ দাপনং দাপ্তিঃ প্রকাশঃ কম্পনং চলনং নােদন্য আনদ্ধঃ সিদ্ধির্মিম্পত্তিঃ প্রানং মানিঃ বৈরূপ্যম্ আদিনাতৃপ্রাদিপরিপ্রহঃ। পশ্চাদর্থেনসহক্র্যবারয়ঃ। ধাতুরিত্যক্রিজ্রমাবিক্ষিতং তেন এমর্থেয় রতাধাত্তবাহক্র্যকাইত্যর্থঃ নবিদ্যতেকর্মযেয়াংতেতথা। ক্রমেণােদাহরতি যথেতি। রুধুর্দ্ধা ম্ফায়্ তপ্যয়াবদ্ধা ক্রায়াত আপ্যায়তেচদ্রঃ ক্রায়নির্মাক্রমাত্যাদিয়রারি প্রয়োগদর্শনাৎপরস্থাপদঞ্চ। ক্রীড়বিহারে রমুক্রীড়ায়াং বিপ্রবিহ্নপ্ ক্রাড়ার্থঃ দিবুক্রড়াদে।। ক্রপ্রিল্পাণ্ডারিদার ক্রাম্বালার প্রয়োগদর্শনাং ক্রিক্রপ্রাদিঃ ক্রায়তেজন্মঃ মুঙ্পাণত্যাগে বিষ্কারস্যান্তগুনে নশ্ অদর্শনে জার্বলপ্রাণধারণয়ােঃ অন্যস্থাণনে রুদ্ স্বপ্ শ্বসনিব্রিক্রতাাদিনাইট্ ক্রিভীভয়েরব্যথ্ ভয়সকলনব্যথায় ক্রেমান্ত্রেণা ওবিজভয়মকলনয়াঃ ভীপ্রভতরোভয়াধ্বাল জামেদে।জন্মিদেশর্মতাবিতিজাদেশঃ ক্রভ্জমানিপ্রান্ত্রতাবে পদ্যতে উৎপূর্ব উৎপত্যর্থঃ। ক্রিক্রদাহিয়তে। শীঙ্মগেঞ্জিয়প্ শ্রেদ্রাকুৎসায়াং নিপুর্বোনিদ্রার্থঃ। জিরুনিরশনে প্রাণতিনির্জ্রের্বানিরাক্রের উনিপুর্বোদ্রাজাগরণার্থঃ। চিতী সংজানে দীপনােদাহরণং দিগিদাপ্তা ভাস্থাপ্তা ক্রিক্রান্তির কাশ্দীপ্রে রুচ্নীপাবিভিপ্রিভার্যঞ্চানে দিপ্রাক্রান্ধং দিগিদাপ্তা ভাস্কিরিপ্তা ভাস্কিরিপ্তা কাশ্দীপ্রে রুচ্নীপাবিভিপ্রিভার্যঞ্চানে দিপ্রাক্রিরাক্র

শুল্শোভায়াং ত্যুৎআদীপ্তো ক্ষুট্বিকসনে। কম্পনোদাহরণং। কপিচলনে টুবেপৃকম্পনে চল্ চলনে। মোদনোদাহরণং মুদ্হর্ষপ্রীতো মদীহর্ষে টুনদিসমৃদ্ধো। সিদ্ধাদাহরণং বিধুসংসিদ্ধো রাধ্ বাধ্ সংসিদ্ধো। মানোদাহরণং গৈগাত্রবিনামে বিনামো বৈরূপাং বৈরূষ্ক্ষয়ে শুল্শায়ে। পল্লবোহস্ত্রীকিসলয়ে বিটপেবিস্তরেবনেইতিমেদিনী। গর্জ গর্জনে নদ্ খলং কারেশক্ষেচ পত্ত পথে গতো লুঠ্ ল্লেযণে বল্ সম্ভক্তো নল্বিলাসেভলয়োরৈক্যং। বহ্পাপণেসকর্মকোহয়ং স্থাননেম্বকর্মকঃ নদীবহৃতি জীবতি প্রাণানবধারয়তি পটীয়তি পটমিচ্ছতি ধায়র্থেন কর্মাণউপসংহারাং আস্তেশেতে প্রভৃতেঃ প্রসিদ্ধতঃ সঙ্গছতে সম্পশ্যতইত্যাদিষু কর্মণোহবিবক্ষণাদকর্মকয়ঃ। যত্ত্তং। ধাতোর্থান্তরের্ত্রেধান্বর্থেনোপ সংহরাং। প্রসিদ্ধেরবিবক্ষায়াঃ কর্মণোহকর্মকাঃ ক্রিয়াইতিপ্রাঞ্চঃ। ৬৫৩॥

गृष्यकानिका।

ভবতুবোহতিভবায়ভবোহভবঃ কমলসম্ভবসম্ভবজাধবঃ। ভবপয়োধিভবাদ্যকবারকোজলভবপ্রভবাদি-বিভাবিতঃ।

ধাতবোদ্ধিবিবাঃ সক্ষা অক্ষাশ্চ তত্ত্ৰ ফলাবচ্ছিন্নব্যাপারবোধকাঃ সক্ষাকাঃ ফলাবচ্ছিন্নব্যাপার্-বোধকা অকন্মকাঃ সকন্মকাণাং প্রচুরত্বেন তরির্ব্বচনে২শক্তবাৎ স্কলানকন্মকান্নিদ্দিশতি রুদ্ধীত্যাদিন।। বৃদ্ধিহিতিসিদ্ধিশব্দাভাবক্তান্তঃ ক্রীড়ালজ্জাশব্দো অপ্রত্যয়াতো ক্ষয়শব্দোহনন্তঃ ভীশব্দঃ ক্রিবন্তঃ জন্ম শব্দোমনন্তঃ জীবন জাগরণদীপন কম্পন মোদন শ্লানশব্দা অন্তন্তঃ সর্ব্বব্রভাবেপ্রত্যয়ঃ। ধাতুরিতি। <u> धाङ्राञ्चालाधिमानाय्यकवरुनान्तः एजनरेनकाञ्चन्यविवकाः । अध्त्रभूकायो अलागात्रहानयः व्यानिना त्रहि-</u> রুদ্ধে ভুপরংহতিতৃপ্তৃপ্টোদিপত্পা তীত্যাদিগ্রহণং। জীড়্ভুপ হৃঞ্হরণে ভুট দিব্দিপ আদিনা কুর্দ্ খুদ্ গুদ্ ক্রীড়ায়াং রুচাকুদ্তে খুদ্তে ইত্যাদিগ্রহণং। কিণ্তউ কিছুপ মূঙ্ হুআ নশ্দিপ জীব্ভুপ অন্খস্ অপ ভীজুপ ব্যথ্ভূমা ত্ৰস্দিপ উদ্বিজ্ভুমা লজ্জুমা ব্ৰীছ্ ভুপ ব্ৰীজুপ ব্ৰীড্ প্ৰেরণলজ্জয়োঃ দিপ এপুষ্ ভুমা জন্ দিআ রুহ্ ভুপ উৎপদ্ দিআ শীঙ্ আ স্বপ্দ্রা অপ ষ্ঠার্গতিনিব্বতো বস্ নিবাসেভুপ আস্ অআ জাগু অপ চিৎ রুচা দীপ্দিআ ভাস্তুমা ভাদীপ্রেমপ রাজ্ ভুট ইন্ধু ভুমা কাশ্ভুমা শুভ্ভুমা ছাৎভুমা ফাট্ভুপ পুষ্প বিকসনেদিপ কপিবেপ্ ভুআ চল্ ভুপ আদিনা এ জৃকম্পানে ভূপ এজতীত্যাদি গ্রহণং। মুদ্ভুআ প্রীঙ্দি মদী দিপ নদি ভূপ দিধ্ রাধ্ দিপ গ্লামাভূপ শুষ্ দিপ আদিন। ক্লমুগ্লানো দিপ ক্লাম্যতাত্যাদিগ্রহণং। গর্জ নদ্ পং ভুপ লুঠ্ তুপ বল্ ভুষা নল্ লড্ ভুপ আদিনা অস্ ভুবিবিদ্যমানে অপ অস্তিভূমতায়াং ভুভবতি নৰ্দ্শব্দেভুপ নৰ্দ্দতীত্যাদয়ঃ। অত্ৰ পংধাতোৰ্য্যিদকৰ্মকত্বমুক্তং তৎপ্ৰাচাংনয়েতেযাময়মাশয়ঃ পতিধাতুর-কৰ্মকঃ কৰ্তৃ ভিন্নান্বয়িফলাবচ্ছিন্নব্যাপারবোধকস্থৈবধাতোঃ সকৰ্মকত্বাৎ যথাগ্রামং গচ্ছতীত্যাদোগম্যাদেঃ পতিস্তপর্ণাতমধঃ দংযোগমেব বোধয়তি নতু ভূতলগতং ভূতলস্থাধঃসংযোগাভাবাৎ অতএব ভূতলে পততাতি প্রয়োগোনহুভূতলং পততীতি। এবং নৈয়ায়িকমতমপি। নব্যমতেতু ফলাবচ্ছিলব্যাপারবোধক-কত্বেন ধাতূনাং দকর্মকত্বাৎপতিঃ দকর্মকঃ অতএবপ্রিতাদিভিস্তথেতি দূত্তেন পতিতশক্ষোগেহপি দ্বিতায়াসমাস্টক্ত নরকং পতিতো নরকপতিতইতি। তেন সর্ব্বমত্দিদ্ধাকশ্মকন্বাভাবাৎ পতিরাদিনা গৃহীতোনতু সূত্ত্রেপ্রধানতয়াধৃতইতি জ্ঞাতব্যং। পদ্মটিকাছন্দঃ তল্লকণমুক্তং যত্বপ্রকরণশেষেহ্সু-महनाः। ५৫०॥

প্রবাপসম্মবনির্ক্র ভিব্যধিস্দতিনিপ্রতিপর্য্যপয়ঃ। উপসাঙিতি ধাতৃপুরস্থিতভাগুপসর্গণণো

শ্বরিষ্টিভাগুপসর্গণণা

শ্বরিষ্টিভাগুপসর্গণনা

শ্বরিষ্টিভাগুপসর্গণনা

শ্বরিষ্টিভাগুপসর্গণনা

শ্বরিষ্টিভাগুপসর্গণনা

শ্বরিষ্টিভাগুপসর্গণনা

শ্বরিষ্টিভাগুপসর্গণনা

শ্বরিষ্টিভাগুপস্থি

শ্বরিষ্টিভাগুপস্থি

শ্বরিষ্টিভাগুপির্কা

শ্বরিষ্টিভাগুপিরকা

কচিদ্ধিনত্তিধাত্বর্থং। যথাপ্রতিষ্ঠতে গচ্ছতি অভিধত্তেবক্তি বিতরতি দানে বিদধাতিকরণে অবৈতিজ্ঞানে। ৬৫৫॥

প্রভাপকাশিকা।

প্রেতি। প্র পরা অপ সম্ অরু অব নি তুর্ অভি বি অধি নিপ্রতি স্থ উদ্ অতি পরি অপি এতে উপ আঙ্ ইতিচ অয়ং ধাতু পুরংস্থিতিভাক্ ধাতুপূর্ব্বস্থ উপসর্গাণঃ উপসর্গাহিধাতুযোগেতেচ ধাতোঃ প্রাঙ্ নিপতন্তিধাতুপূর্ব্বাস্থিতে তেয়ামুপসর্গন্ধং নান্তিকিং প্রকৃতের্দ্ধাতোরর্থপরঃ প্রকৃত্যর্থসেরঃ প্রকৃত্যর্থসেরঃ একৃত্যর্থসেরঃ । ধাতোরর্থতাৎপর্য্যবান্ধাতারর্থস্থ তাৎপর্য্যসূচকঃ তচ্চতাৎপর্য্যবন্ধ্বং শক্ত্যালক্ষণয়াবানাত্রবিশেষঃ। ধাতুনামনেকার্থন্বাদ্ধাতুনামেবার্থাউপসর্গেণদ্যোতন্তইত্যাহ্রাচার্য্যাঃ। ৬৫৪॥

গূতপ্রকাশিকা।

প্রপরেতি। প্রকৃতেরর্থপরইত্যস্তার্থমাহ ধাতোরর্থেতি। শক্তোতি যত্রার্থেভূরিপ্রয়োগস্তত্র শক্তিরিতি তত্রতাৎপর্যাং শক্তা যত্রনভূরিপ্রয়োগস্তত্রলক্ষণাইতি তত্রতাৎপর্যাং লক্ষণয়া। লক্ষণাচনিরূচা শক্তিত্রল্যানিরূচলাক্ষণিকস্থাপি অর্থত্য়া স্থাকারঃ অতোহনেকার্থাহিধাতবইতিবক্ষ্যমাণেন ন বিরোধঃ। তোটকচ্ছন্দঃ। বদতোটকমির্ক্রিকারযুত্মিতি তল্লক্ষণাৎ। অবিনিকারযুত্থ চতুঃসম্যান্তগুরুগণযুত্তির্থিঃ। ৬৫৪॥

পুভাপুকাশিকা।

কচিং। ধার্থং ভিন্নং রচয়তি যথাগতিনির্ত্তর্থেস্ত গমনার্থকত্বং ধারণপোষণার্থস্ত রচনার্থকত্বং প্লবনার্থস্য দানার্থবং ধাঞঃ করণার্থকত্বম্ ইণোজ্ঞানার্থকত্বং। ৬৫৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কচিন্তিনতীতি। কচিৎপ্রয়োগেধান্বর্থং ভিনতিশাতুনির্বাচনকালীন্প্রদর্শিতার্থান্তিয়ার্থং দ্যোতয়তি। ভিনির্বিদারণে রূপে স্বরতোনাস্বরনোস্তইতিনাগমঃ। প্রতিষ্ঠতইতি প্রপূর্ব্বঃ ষ্ঠাগতিনিরতৌ সমবপ্রবিভ্য-ইত্যাত্মনেপদং। অভিপূর্বরঃ ভুধাঞ্ধারণপোষণয়োঃ জু বিপূর্বরঃ তৃপ্লবনসন্তরণয়োঃ ভুপ বিপূর্বেরাধাঞ অবপূর্ববইণ্ গতৌ অপ। অত্র পদ্যমেকস্তি। ব্যাঙ্পূর্বরঃ কথনে হিমেনিপুরতোক্তঞ্ ক্রীড়নেব্যাদিক আঙ্ প্রাক্চেদশনেহভিঘাতবচনঃ প্রাদিঃ সমাদির্মৃতৌ। উৎপূর্বস্তরণে ভবাদভিপুরঃ সাদৃশ্যবাচীপ্রতিপূর্বেরানারপরোনিরাদিরপি শল্যোৎপাটনেবর্ত্তিত। ৬৫৫ ।

ক্ষতিত্তনন্ত্ৰতে। যথানিপাঠনিপঠোপাঠে অধীতে দীপ প্ৰদীপ-ইত্যাদি। ৬৫৬॥

বিশিনষ্টিতমেবার্থং। যথা প্রণমতি আয়াতি উদ্ভাতি বিজয়তে অবচিনোতীত্যাদয়ঃ। ৬৫৭॥ উপসর্গণতিস্ত্রিধা। ৬৫৮॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কচিং। তং ধাত্বর্থমনুবর্ত্তে তমেবপ্রবর্ত্তাতি তাৎপর্যাং। ৬৫৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

কচিদিতি। তং প্রসিদ্ধার্থং কচিৎ প্রয়োগেঅনুবর্ত্তে অনুবদতি তমেবপ্রবর্ত্তীতি যাবং। যথেতি। নিপূর্ব্বঃ পঠ্ ব্যক্তায়াং বাচিযথাক্রমং যঞলো পঠনার্থঃ নিস্বরূপোপসর্গোপানুদ্যতেনাধিকঃ। অধীতেইতি। ইঙ্মধ্যয়নে ইত্যধ্যয়নার্থোহধুপেসর্গোপানুদ্যতেনাপরঃ। দীপইতি। দীপী দীপ্রোদি-আদীপ্যতেহনেনেতি দীপঃ যঞ্ দীপস্থাযোহর্থঃ প্রদীপস্থাপিস এবার্থঃ নাপরঃ। আদিনানিকাণঃ নিকণঃ কাণঃ কণঃ কণনমিত্যাদীনাং গ্রহণং। ৬৫৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

বিশি। তমেবধাতৃপস্থিতমেবার্থং বিশিষ্টং করোতি যথা প্রণমতি প্রকর্ষেণ নমতি আয়াতি আগচ্ছতি উদ্যাতি উৎকর্ষেণভাতি বিজয়তে বিশেষেণজয়তি অবচিনোতি অবহেলয়াচিনোতি। ৬৫৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বিশিনস্টীতি। তং ধার্থং বিশিনস্টিবিশিষ্টং করোত্যুপদর্গইতিশেষঃ। যদ্যপিবিশেষার্থোইপি ধাতোরেবতথাপিতমর্থমূপদর্গোদ্যোত্যতাতি বিশিনস্টীত্যুক্তং। গম্প্রস্তারশব্দেষু ভুপ আঙ্ যাগতো উদ্পূর্ব্যোভাদাথো অপ অবপূর্বাঃ চিঞ্চয়নে স্বাউ। আদিনাপরিষিঞ্চতি দর্বতোভাবেনসিঞ্চ-তাত্যর্থঃ নির্গছতি পরিত্যজ্ঞাগছতীত্যর্থঃ। অনুগছতি পশ্চাদগছতীত্যর্থ ইত্যাদয়োগৃহন্তে। ৬৫৭॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

উপ। এনমুপদর্গগতিঃ উপদদর্গস্তদ্যোতকত্বং ত্রিধাত্রিপ্রকারা। ৬৫৮ ॥

গূচপ্রকাশিকা।

উপেতি। উপদর্গেতিঃ উক্তরূপেণোপদর্গস্থাদ্যোতকত্বং ত্রিধাত্রিপ্রকারাইত্যর্থঃ। উপদর্গেতি।
উপপূর্বরঃ সৃজ্ বিদর্গনিশ্মাণয়োঃ ভুপদিঝা। উপস্কাতে ধাতুপুর্ববর্তীক্রিয়তেহদোউপদর্গঃ ঘঞ্ গুণঃ
চজ্যেঃ কগাবিতি জন্মগঃ। ত্রিধেতি। ত্রয়ঃ প্রকারাজ্যাইতি বাক্যেবিধপ্প্রকারেদ্ধ্যার্থাদ্ধাচেতি
ধাপ্রত্যয়ঃ ধান্তন্মাব্যয়ত্বং। ৬৫৮॥

অবাপ্যোরস্যলোপোবা। বতং সঃ পীতয়ঃ প্যধুঃ। ৬৫১॥

কচিদর্থে প্রাদিযোগেছকর্মাণোইপিধাতবং। সংক্রমাণং প্রজায়ন্তে সতাং সঙ্গাজ্জনাইব। যথা অশ্বভি পরাপূর্বোভূঃ অনুভবতি স্থম্ অভিভবতি পরাভবতি শত্রন্ উৎপতত্যাকাশম্ অতিপততিমর্য্যাদাং শস্ত্রমুপজীবতি দোষমতিবর্ত্তে প্রতিষ্ঠতে গ্রামন্ ঐক্র্যাণার্হপত্যমুপতিষ্ঠতে ইত্যাদয়ং। ৬৬০॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

অবা। অব অপিএতয়োরূপদর্গয়োরস্যাকারস্থলোপোনাস্থাৎ। অবতং দঃ বংতং দঃ স্থাৎ। উক্তম্। অবতংসবতংসো দ্বোকর্ণপূরেহপিশেখরেইতি। অপীতয়ঃ পীতয়ঃ ঈতিরতির্ফ্যাদিঃ। যদ্বাঅপি পূর্বাদিণঃ ক্তিঃ অপ্যধুঃ প্যধুরিতি ধাধাতোলু ওউসিরূপং। অপিধানতিরোধানপিধানচ্ছদনানিচ। ৬৫৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অবাপোরিতি। অবাপ্যোরপদর্গয়োরস্থলোপঃ স্থাদ্বা। বতংদইতি। অবপূর্ব্বস্তমুবিস্তারে অবতনোতি কণোঁ শিরোবাভূষয়তাতি ঔদিণাকঃ অবোপদর্গাতনঃ দঃ আদি অলোপঃ। অবস্থালোপঃ প্রদিদ্ধপ্রায়াগে২পি দৃশ্যতে যথাকুমারদম্ভবে। অস্ত্যতরস্থাং দিশিদেবতাত্মাহিমালয়োনামনগাধিরাজঃ। পূর্ব্বাপরোতোয়নিধীবগাহৃদ্বিতঃ পৃথিব্যাইবমানদণ্ডইতি। ৬৫৯॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

কচিদর্থে। কুত্রচিদর্থেইকর্মাণোইপি অকশ্মকাঅপিধাতবঃ প্রাদিযোগাৎ প্রাদিযোগং প্রাপ্যসকশ্মণঃ সংকর্মকাঃ প্রজায়ন্তেভবন্তিসদিদ্যমানং কর্ম্মযেবাং তেতথা অত্রদৃষ্টান্তঃ সতাং সাধুনাং
সঙ্গান্দেলনাজ্জনাইব যথা অকশ্মাণোইপি বেদাদিক্রিয়ারহিতা অপিজনাঃ সাধুসঙ্গাৎ সৎকর্মাণোভবন্তি
সং প্রশস্তং কর্মোপবাসাদিরপং যেগামিতি বিগ্রহঃ। যথেতি। অরু অভি পরা পূর্কোভূঃ সকর্মকঃ।
উৎপূর্কোইতিপূর্কান্চপৎসকশ্মকঃ। উপপূর্কোজাব্ধাকুন্চসকশ্মকঃ। অতিপূর্কার্ৎপ্রপূর্কান্তথাকুন্চ
সকর্মকঃ। প্রতিষ্ঠিতইতি। সমবপ্রবিভাইত্যাত্মনেপদং। ঐন্ত্যেতি। ঐন্ত্যাপ্যচাগাইপত্যমগ্রিষ্ উপপূর্কান্তখাসকর্মকঃ পূজাদৌ মন্ত্রকরণইত্যাত্মনেপদ্য আদিপদাদীশ্বরমাতিষ্ঠতেইত্যাদি। ৬৬০॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

কচিদর্থে ইতি। কচিদর্থেপ্রিদিদ্ধার্থে। অনুভবতীত্যাদি। জানাতি অভিভবতিপরাভবতি পরাজয়তইত্যর্থঃ উৎপূর্বঃ পত্তগতোভুপ উৎপততি উদ্ধিং গচ্ছতি অতিপততিনাশয়তি। উপপূর্বঃ জাব্প্রাণধারণেভুপ উপজীবতি আশ্রয়তি। অতিপূর্বঃ রুহবর্ত্তনেভুআঅতিবর্ত্তে অতিক্রমতে। প্রপূর্বঃ প্রাগতিনির্ত্তো প্রতিপ্রতিগচ্ছতি। ইন্দোদেবতাঅস্যাঐন্ত্রী দেবাদণ্দাস্থাদেবতেত্যণ্ অণন্তত্বাদী ঐন্দ্রা ইন্দ্রদেবতয়াঋচাগার্হপত্যময়িং। গৃহপতিসংযুক্তোগার্হপত্যঃ গর্গাদেণ্যঃ স্মৃতোগোত্তইতিস্মৃতবচনাৎ দেবতেদমর্থেইপিসংযুক্তেহর্থেপিপত্যন্তাৎণ্যঃ। গৃহপতিসংযুক্তোগার্হপত্যাহ্রিরিত্যমর্বীকা। দক্ষিণামির্গার্হপত্যাহ্বনীয়োত্রয়োহ্য়য়ইত্যময়ঃ। উপতিষ্ঠতে পুজয়তীত্যর্থঃ। ৬৬০।

আপঞ্চভ্যঃ প্রযুজ্যন্তেপ্রাদয়োবাগ্বিশারদৈঃ। অতঃপরং নশোভস্তেনবার্থ-মনুব্দন্ধতে। আহরতি ব্যাহরতে অপব্যাহরতি সমভিব্যাহরতি অনুসমভিব্যা-হরতীত্যাদিদিক্। ৬৬১॥

ক্রিয়াবাচিত্বমাখ্যাভূমৈকৈকোহর্থঃ প্রদর্শিতঃ। প্রয়োগাদববন্তব্যা **অনেকা**-র্থাহিধাতবঃ। ৬৬২

প্রভাপ্রকাশিকা।

আপঞ্চ। পঞ্চপর্যন্তেং প্রাদয়োবাধিশারদৈঃ পণ্ডিতৈঃ প্রযুদ্ধান্ত প্রয়োগেদীয়ন্তে অন্তার্থারাদৃতেইত্যাদিনাপঞ্চমী। একৈকোপদর্গ স্থৈবধার্ব্যদ্যোতকত্বসম্ভবেহধিকস্তানতিপ্রয়োজনত্বেহপিপ্রাচীনৈঃ
পঞ্চপর্যন্তং তেপ্রযুদ্ধান্তে পঞ্চাধিকাস্তধার্থানুবোধকত্বাভাবেশোভাবিরহান্ধপ্রযুদ্ধান্তইত্যর্থঃ। ৬৬১॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

আপক্ষেতি। আপঞ্চন্তঃ পঞ্চপার্যন্তং প্রাদয়উপসর্গাবায়িশারদৈর্বক্যবিষয়ে পণ্ডিতৈঃ প্রযুজ্যন্তেপ্রয়ো গেলী অন্তে ইত্যর্থঃ। বিরৎ স্থপ্রগল্ভীবিশারদাবিত্যমরঃ। নম্বতঃ পরং কিমিতিন প্রযুজ্যন্তেইত্যতআহাতঃ পরমিতি। অতঃ পরং পঞ্চল্যঃ পরং নশোভন্তেশোভাং নধারয়ন্তীত্যর্থঃ। নমুশোভাবিরছেপ্যর্থবিশেষ্ট্যাতক রমন্ত্রবাৎ পঞ্চাধিকানাং প্রয়োগঃ স্থাদিত্যতআহনবার্থমিতি। অর্থং ধার্থবিশেষং নাবরুদ্ধতে নামুরুদ্ধতেনামুবদন্তিনদ্যোত্মন্তীতিয়াবং। তথাচশোভাবিরহাদর্থবিশেষদ্যোতক রাভ্যপঞ্চাধিকান প্রযুজ্যন্তে পঞ্চপর্যন্তান্তর্যাভাধারণাদ্ধার্থদ্যোতক রাচ্চপ্রযুজ্যন্তইতিভাবঃ। আহরতীত্যাদি। ক্রঞ্ হরণে আহরতিত্যাহরতে বক্তি অপব্যাহরতি কুৎসিতং বদতি সমভিব্যাহরতি সহিতোভবতি অনুসমভিব্যাহরতি পশ্চাৎ সহিতোভবতীত্যর্থাঃ। আদিনাসংহরতি উপসমাহরতীত্যাদয়ঃ। দিগিতি। ময়াদিণদর্শিতা অন্তেইপিএবিম্বধাজ্ঞাতব্যাইত্যর্থঃ। ৬৬১।

প্রভাপ্রকাশিকা।

ক্রিয়া। ধাতোরর্থঃ ক্রিয়াজ্যোভাবইত্যভিধীয়তইতি ক্রিয়াবাচিত্বং ক্রিয়াভাবকত্বং ধাতৃত্ব-মিতি প্রদর্শনায় ধাতৃনামেকৈকোহর্থঃ প্রদর্শিতঃ বস্তুগত্যাতৃধাতবঃ সর্বোহ্ নেকার্থাএবপ্রচাং প্রয়োগা-দবগন্তব্যাঃ হিনিশ্চিতং। ৬৬২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্রিয়েতি। ক্রিয়াবাচিত্বমাখ্যতুং কথয়িতুং ধাতূনামেকৈকোহর্থঃ প্রদর্শিতোময়েতিশেষঃ হিনিশ্চিতং ধাতবোহনেকার্থাঃ তেচপ্রাচাং প্রয়োগাদবগন্তব্যাজ্ঞাতব্যাইত্যর্থঃ। তত্তুক্তং ব্যাকরণাচার্ব্যঃ নিপাতাশ্চেপসর্গাশ্চধাতবশ্চেতিতেত্রয়ঃ। অনেকার্থাঃ স্মৃতাঃ সর্ব্বেপাঠন্তেযাং নিদর্শনমিতি ৬৬২ ।

অ আ কবর্গোহকারোবিদর্গশ্চেতি কণ্ঠজাঃ। ই ঈ চবর্গোযকারঃ শকার-শ্চেতি তালুজাঃ। ঋ ৠ টবর্গোরেফশ্চ যকারশ্চেতি মূর্দ্ধজাঃ। ৯ ৡ তবর্গো লকারঃ সকারশ্চেতি দম্ভজাঃ। উবর্ণশ্চ পবর্গদেচাপধ্যানীয়শ্চ ওপ্তজাঃ। এ এ চ কণ্ঠতালব্যা ও ঔ কণ্ঠোণ্ঠজৌম্মতো। বোদস্ভোষ্ঠ্যইতি স্থানান্যফৌবৰ্ণ-সমুদ্ধবে। ৬৬৩॥

যাবতাফলবত্যুক্তিস্তাবৎপর্য্যন্তকম্পনা। জ্ঞেয়সম্ফুটভাৎপর্য্যং ন্যায়াদ্বিবর-পাদিপি। ৬৬৪॥

প্রভাপকাশিকা।

অআ। কণ্ঠজাঃ কণ্ঠভবাঃ। ১। যকারঃ অন্তস্থঃ তালুজান্তালব্যাঃ। ২। যঃ মুর্দ্ধজামুদ্ধন্যাঃ। সঃ দন্তজাদন্ত্যাঃ। ৪। উ উ ওষ্ঠজাওষ্ঠ্যাঃ। ৫। কণ্ঠতালুভয়দন্ধিজৌ। ৬। কণ্ঠোষ্ঠজোকণ্ঠোষ্ঠ দন্ধি জাতো। ৭। দন্তেষ্ঠিজোহত্তম্বঃ।৮। ৬৬০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ইদানীং বর্ণোদ্ভবস্থানানিনির্দ্দিশতি অ আ ইতি। অ আ ক থ গ ঘ ঙা হকারোবিদর্গশ্চএতে কণ্ঠজাঃ। ১। ইঈ চছ জ ঝ ঞা যকারঃ শকারশ্চএতে তালুজাঃ। ২। ঋ ৠ ট ঠ ড ঢ ণা রেফঃ যকারাশ্চএতে মুর্দ্ধজাঃ। ৩। ৯ ৪ ত থ দ ধ না লকারঃ সকারাশ্চএতে দন্তজাঃ। ৪। উ ঊ প ফ ব ভ-মা উপধানীয় সংজ্ঞক চএতে ওঠজাঃ।৫। এ ঐ কণ্ঠতালব্যে কণ্ঠতালূভয়দিয়েজো।৬। ও ঔ কণ্ঠোষ্ঠজো কণ্ঠোষ্ঠদন্ধিজাতো। ৭। অন্তস্থবঃ দন্তেষ্ঠিয়ঃ দন্তভবওষ্ঠভবশ্চ। ৮। ইতিবর্ণ সমুন্তবে বর্ণোৎপত্তো অফস্থানানি। ৬৬৩॥

প্রভাপকাশিকা।

যাবতা। যাবৎপর্যান্তেন উক্তিঃ দফলাভবতিতাবৎপর্যান্তং যুক্ত্যাদিনাকল্পাতে। জেয়মিতি। অক্ষুটমব্যক্তং সূত্রাদিতাৎপর্য্যং ভায়াৎযুক্তেঃ বিবরণাদপিব্যাখ্যানাচ্চজ্ঞেয়ং। যথাগুণিভান্তস্ভসূত্রেএক-স্মিন্বর্ণবিধাবাদ্যন্তবৎ পরিকল্পনীয়মিতি স্থায়েনাদ্যন্তবদ্ধাবাৎএতিইত্যাদেখিণঃ সস্থানাকাবিত্যত্র ঋ ৯বর্ণয়োরপিদ্বো দবর্ণ ইতি ব্যাখ্যানাৎ দস্থানাকৃষয়মাত্রস্থ দবর্ণত্বং। এবমন্যত্রানুদক্ষেয়ং। ৬৬৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

যাবতেতি। যথা অতিজরদী কুলেইত্যাদৌএকদেশবিকৃতমনশ্যবদিতিশায়াৎ অতিজরশব্দস্থা-পিজরাস্বরূপত্বকল্পনয়াজরসাদেশঃ যথাবাশতাৎপূর্ববত্রসম্যায়াং পরস্থাংদ্যফনোহন্তআইত্যবদ্যফনইতি জ্ঞাপকত্মাদ্দশপূর্ব্বস্থ্যায়াংনেতিকল্পনা। যথা বা ইদস্তমুদন্তংলিঙ্গমিমিংজ্ঞংস্থাদিত্যত্র কেবলেকারো কার্য়োরপি অগ্নিসংজ্ঞাপ্রাপ্তয়ে ইদন্তমিতি কথনমুপস্থিতাভিপ্রায়েণেতি কল্পনা। জ্ঞেয়মিতি। এতদ্যা-খ্যানং প্রভাপ্রকাশিকায়ামুক্তমবগন্তব্যং। ৬৬৪॥

প্রাক্দপ্তম্যাবিনির্দ্ধিষ্টেপঞ্চম্যাপরতোবিধিঃ। প্রথমাষষ্ঠ্যুপাক্তস্ত স্থানে শুন্যোগ্য সাগমঃ। ৬৬৫॥

তদাদেশাস্তদ্বদিষ্টাবিভক্তির্য্যোগ্যতান্বিতে। অর্থেবিপরিণন্তব্যাগ্রাছো গোণোহপ্যবর্জ্জনে। প্রাথিশেষবিধিঃ পশ্চাৎপ্রাপ্তাবৌৎসর্গিকোবিধিঃ। *। ইতিপ্রয়োগরত্বমালায়ামাখ্যাতেইউমোবিন্যাসঃ।*। ইতিপদমঞ্জরীসমাপ্তা।*। ৬৬৬॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

প্রাক্। সপ্তম্যানির্দ্দেশস্থলেততোহ্ব্যবহিতপূর্ব্বত্রবিধিঃকার্য্যং যথা আবমোরিত্যব্রদানিহিতাকারস্থা-কারঃ ,এবমন্যত্র। পঞ্চম্যেতি। পঞ্চমানির্দ্দেশস্থলেততঃ পঞ্চমান্তাৎপরতোবিধিঃ কার্য্যং যথাগুণাশ্চাব-র্ণাদিত্যত্র অবর্ণাৎপর এবগুণঃ। এবমন্যত্র। প্রথমেতি। প্রথময়ায়ষ্ঠ্যাবাউপাত্তমনিদ্দিন্তস্থানেবি-ধিঃ কার্য্যং যথা ভ্রম্মনান্তঃ স্বরে উব্স্থাদিত্যত্রশব্দান্তস্থানে উব্ কার্য্যং যষ্ঠ্যানির্দ্দেশেযথাচজব্যাং গইত্যত্র চজব্যাং স্থানেগঃ কার্য্যং। এবমন্যত্র। শৃন্যইতি। আগমঃ শৃন্যোখঃ বর্ণানুপঘাতেন ভবতি যথা আম্যুর্ত্র্যাদিত্যত্র প্রকৃতিপ্রত্যয়য়েশ্রেষ্যে অনুট্নামিনঃ স্বরেইত্যাদোচানুসক্ষেম্য্। ৬৬৫ ॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

প্রাণিতি। সপ্তম্যাবিনিদিক্তেম্বলে বিশেষোক্তিরহিতেহ্ব্যবহিতপ্র্বিত্রবিধিঃ যথাভ্যাম্যকারশ্ব আইত্য ত্রহার হিত্তপ্র্বাকারশ্বাকার: নতুব্যবহিতাকারশ্ব তেন হরশক্ষ্মহরাভ্যামিতি নতুহারাভ্যামিতি বিশেষোক্তিসত্ত্বেত্রবহিত পূর্ব্বত্রাপিবিধিঃ যথা র্ম্বিরাদোণ নুবন্ধেত দ্বিতেইতি সূত্রেণব্যবহিতা-দোর্ক্রিঃ বাশিফইতি। পঞ্চম্যাইতি। পঞ্চম্যানিদিক্তেম্বলে পঞ্চমন্তাৎ পরতােবিশেষাক্তিরহিত্বিষিঃ বিশেষাক্তে ভুপ্র্বত্রাপি যথা অনিযোগে এবশক্ষাৎ প্রায়োপইতি। প্রথমাষ্ঠ্যুপাত্তেতি। বিশেষাক্তিসত্ত্বের্ছিগ্রানিদিক্তেইপিপরতােবিধিঃ যথা গুণাতিশুক্রতাং নযঙ্। নচাত্র এবাং স্থানে বঙ্ নস্যাদিতিক্রমঃ কার্য্যঃ ক্রিরাসমভিহারেরঙ্ঙিত্যদিনাযঙঃ পরত্রাগমবিধানাৎ তাদৃশ্যঙােনিবেধা থাও ৬৬৫॥

প্রভাপ্রকাশিকা।

তদা। যোগস্থাদেশঃ সত্ত্বদিত্যতিদিশ্যতে। আদিশ্যতেহ্সাবাদেশশ্চোপমর্দকঃ। যথাদধীঅস্তইত্যাদোএবং যপঃ জ্বাতিদেশাং করুবন্ধব্বেনাগুণিস্বং। এবমন্ত্র্ত্রাপ্যমুদনেরং। বিভক্তিরিতি। যোগ্যতান্বিতে যোগ্যহর্থেবিভক্তিঃ পরিণন্তব্যাতাংঅর্য্যমবধার্য্য বিপরীণামেনযোজ্যা যথানিষ্ঠেটিগুণিনঃ শীঙ্ পূঙ্ ধ্বিক্ষিদি-মিদিবিদইত্যত্র গুণিনইতিবহুবচনস্থ মৃষিঃ ক্ষান্তাবিত্যত্রবিপরীণামেনৈকবচনত্বং গুণীস্থাদিতি তথাসত্যে-বার্যস্থ যোগ্যহাং। এবমপরত্রাপিবোধ্যং। বিভক্তিরিত্যুপলক্ষণং লিঙ্গমপিবোধ্যং যথান্বিচনমীদূদে-স্থাদিত্যত্র সন্ধিবিরোধীতি ক্লাবৈকবচনান্তম্ ওদন্তান্ত্বিত্যত্র লিঙ্গবিভক্তিবিপরীণামঃ অতউক্তং সন্ধিবিরোধিইতি। হেসুত্রেলিঙ্গস্থৈববিপরীণামঃ। ইদমাহুঃ অর্থস্থাসম্ভবে লিঙ্গবিভক্তোরনুক্বইতিপ্রাঞ্চঃ।

এবমন্তর। প্রাফ্টিত। অবর্জনেসতি গোণোহপিকার্যার্থং গ্রাছঃ বথাদিবদ্যোঃ সাবিত্যক্র গোণস্থ বর্জনাভাবাৎ প্রিয়দিবাদেরপিগ্রহণং প্রিয়দ্যোঃ পুমান্ জ্রীচ। এবমন্তরাপ্যমুসরণীরং। প্রাণিতি। প্রাক্ প্রথমং বিশেববিধিবিদেশকার্য্যং পশ্চাদনন্তরং প্রাণ্ডে) প্রাপ্তানুসারেণ্টৎস্থিকঃ সামান্তোবিধিবিধেয়ঃ বথাসেনাতামিত্যক্র প্রথমং বিশেববিধিরাম্ পশ্চাৎ স্থবন্তাক্তইতিসূত্রেণোৎস্থিকবিধির্যঃ। এব মন্তর্জাপানুসদ্বেরঃ। ৯। সজ্জেপাৎ পূন্রুক্ত্যাচবালানাং স্থবস্থিদে। শ্রীমতাজয়কুফেনব্যাখ্যাতাপদ্মজরী ১। শ্রীপ্রীপ্রাণনরেক্তভূপতিমুনের।জ্ঞানুসারাদিয়ং ব্যাখ্যাতাপদমঞ্জরীমৃত্পদেঃ সজ্জেপিভির্যানয়া। নিন্দামক্রবিহারমৎ কৃতিনিমাং সংশীলরণেরং ক্রতং বৎসাঃ সাধুপরিশ্রম ক্রমবিদোযুগ্রান্তবন্ধোহজ্জিঃ। ২। ২। ইতিবিদ্যানন্দচক্রবর্তিত্ত্বল শ্রীজয়ক্রফশ্র্যাচার্য্যশেখরচক্রবিতিবির্চিতায়াং প্রভাপকাশিকায়াং পদ্মজ্জরীবিবরণপরিচ্ছেদঃ। ৯। ৯। ৬৬৬॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

তদাদেশইতি। তেবামাদেশান্তদাদেশাঃ পূর্ববর্ণ নাশেনাপরবর্ণ ফরপাঃ। আদেশশেচাপমর্দক ইত্যমরঃ। তরংপূর্ববর্ণবংইটাঃ শিক্টেরিতিশেনঃ। নগারিবচনমাদুদেশ্যাদিত্যক্র তদাদেশাস্ত্রদান্তিতি জ্যারাং উদুদেরিবচনরূপং। এবং দধী অস্ত্র্যোদেশ। এবং নপঃ ক্লাভুল্যরাদগুণিয়ং। এবমন্তরাপি। বিভক্তিরিতি। অনর্বাপত্তিতিয়াবিভিল্পিরাণামকরণে তুল্যযুক্ত্যালিস্ত্র্যাপি বিপরীণামঃ। গ্রাছইতি। নবর্জনং মেনতাদুশেস্কে অবর্জনেসতি বা গোণোহপি কার্যার্থণ গ্রাছঃ। প্রাগিতি। বিশেষবিধিঃ প্রাক্ত্রণ প্রাথান প্রাণাতি। বিশেষবিধিঃ প্রাক্ত্রণ প্রাথানে বা লাগেতি। বিশেষবিধিঃ প্রাথানে বা লাগানিত্রক প্রথানে বিশেষবিধিরি হিরাভির। ম্বেতি আমু পশ্চাৎ প্রাপ্তেরক্তি সমাসেনেত্যাদিনা যঃ যথা বা আমেরিভাত্রপ্রথাং গুণরপদ্রাদেশবিশেষবিধিঃ পশ্চাৎ প্রাপ্তের অবাদেরক্ত পুরিতি লোপক্রসালাভাবিধিঃ এবন্ উপক্স্তং কৃত্রিতান্ত প্রথম্ বিভক্তেরপঞ্জ্যাইতি বিশেষবিধিরম্ পশ্চাৎ টাইন ইত্যক্তাপ্রাধিনিদ্যাবাগীশনিশ্যিতারাসাখ্যাতিটীকারাণ গুণপ্রকাশিকারাণ পদমঞ্জরীবিবরণম্। * । ৬৬৬॥ ইতি শ্রীবিদ্যাবাগীশনিশ্যিতারাসাখ্যাতিটীকারাণ গুণপ্রকাশিকারাণ পদমঞ্জরীবিবরণম্। * । ৬৬৬॥

নন্দনন্দনপদারবিন্দয়োঃ স্যুন্দমানমকরন্দতুন্দিলঃ। ব্যাতনোতি পুরুষোত্তমঃ কৃতীসারবৎ প্রকরণং কৃতামিদম্। ১॥

क्र ९ अमी शिका।

শ্রীনন্দসূতস্থপদারবিন্দয়ন্দেশদানন্দগুণৈরনিন্দ্যং। নিঃস্থান্দিতানন্দরশৈরমন্দম্বনারকবুন্দবন্দ্যং। ১। বাগীশ্বরীপদংনত্বামহেন্দ্রেণদ্বিজন্মনা। ক্রিয়তে কৃতিনা স্তোকাদ্যত্রতঃ কৃৎপ্রদীপিকা। ২। কাতন্ত্রতন্ত্রাদিবিলোক্যতন্ত্রং যত্নচ্যতে মেবচনন্তসন্তঃ। তেনৈবতুষ্যন্তবিনীয়্বাচে
যতোমতালোকহিতাভবন্তঃ। ৩।

গ্রন্থমধ্যেহপি পরিচেছদাদৌ বিল্লসন্দেহধিয়াশিকীচারতয়াচ মঙ্গলমুৎপাদয়য়র্থমানিকরোতি পুরুষোত্রমইদং বুদ্ধ্যাপ্রত্যক্ষীকৃতং কৃতাং কুৎপ্রত্যয়ানাং প্রকরণং ব্যাতনোতীত্যনয়ঃ ধাতোরনেকার্থকাৎ বিশেষেণানলং বিদধাতীত্যর্থঃ। তথাচ নিপাতাশ্চোপদর্গাশ্চধাতবশ্চেতিতেত্রয়ঃ। অনেকার্থাঃ স্মৃতাঃ দর্বেপ।ঠস্তেষাং নিদর্শনমিতি। ভবিষ্যৎ সামীপ্যবর্ত্তমানেয়ং। স্বান্বর্থপুর্ববৃত্ত্বেইপি ব্যভিচারামাত্মনেপদং তথাচকচিৎ কর্ত্রভিপ্রায়ে২পি ন ভবতি য়েসপ্ততত্তু নমজনাহীপাইতি বররুচিব্বত্তিঃ। শব্দশাস্ত্রস্থপরার্থত্বাৎ বক্তি প্রবক্ষ্যামীতি বত্তত্ত্বমিতি ভট্টনারায়ণঃ। পুরুষশ্চাসো উত্তমশ্চেতি রুন্দারকাদিঃ পুরুষোত্তমোগ্রস্থ্যাম। কুতঃ প্রক্রিয়ন্তেখনোশ্রিষেতি প্রকরণং তদিহকুৎপ্রত্যয়বিধানশাস্ত্রখণ্ডং। তহুক্তং শাস্ত্রৈকদেশসম্বন্ধং শাস্ত্রকার্য্যান্তরস্থিতং। আহুঃ প্রকরণং নামশাস্ত্রভেদং বিপশ্চিতইতি। আশ্রয়াশ্রান্ত্রাবেকার্য্যকারণসম্বন্ধেবাষ্ঠী। কীদৃশন্তৎ সারবৎস্থিরাংশবৎ সাধ্যক্ষেন্ত্র্যোলোকব্যবহৃতাং শবদিত্যর্থঃ। লোকন্যবহৃতত্ত্বনশব্দার্থানাং স্থিরতাস্তপ্রসিদ্ধিঃ। লোকাস্ত্রসমানতান্ত্রিকা অসমানতান্ত্রিকাঃ শব্দশাস্ত্রপ্রপেতারোব্রক্ষক্ষত্রবিশঃ। সারবৎ স্থায্যবদ্বাউহনপ্রকাররূপ্যুক্তিমৎ উণাদয়ঃ স্থ্যরিত্যাদি-সূত্রবদিত্যর্থঃ। এতেনগ্রন্থস্থাসংষ্ঠুলতানিরস্তা। সারোবলেস্থিরাংশচ মড্রিপুংসিজলেঘনে। ভাষ্যেক্লীবং ত্রিয়্বরেইভিমেদিনী। কীদৃশঃ সক্তীপণ্ডিতঃ। ধীমান্ সূরিঃ কৃতীকৃষ্টিরিভ্যমরঃ। পণ্ডিতপ্রণীতব্বনগ্রন্থব্যোপাদেয়ত্বং দর্শিতং। পণ্ডিতবচনংহি অজ্ঞানপ্রজ্ঞানং করোতাতি। তথাচমাঘে-বিরোধিবচসোমূকান্ বাগীশানপিকুর্বতে। জড়ানপ্যসুলোমার্থান্ প্রবাচঃ কৃতিনাং গিরইতি। কিন্তুতঃ নন্দনন্দনপদারবিন্দয়োঃ স্থান্দমকরন্দতুন্দিলঃ নন্দস্থান্দব্যোপশুনন্দনঃ স্থতঃ নন্দোহরেদ্বরিপালেগোপরাজপ্রমোদয়োঃ। ' নন্দনন্তস্ত্রোদ্যানেপুমানাত্মজহর্ষয়োরিতিশব্দার্ণবঃ। তস্তপদেচরণে এবারবিন্দেইত্যবধারণপূর্ববপদঃ কর্ম্মারয়ঃ তে অরবিন্দেইবেত্যুপমানোত্তরপদোবাতয়োঃ স্তব্দমানঃ স্থেবন্ যোমকরন্দঃ সাধ্যাবিমানিকাখ্যলক্ষণয়াভক্তিরসঃ তয়োরিতি নামার্থাস্থায়িসামাপাদানত্বং তেন তুন্দিলঃ রসিকঃ তুন্দিলশব্দস্তলক্ষণয়ারসিকস্বাভিধায়িস্থেনাদ্রব্যবাচিস্থাৎ তৃতীয়াসমাসঃ তত্ততম্মাদ্বা-তুন্দিলঃ ভক্তাদ্রেকেণ রোগাভাবাৎ বৃহৎ কুক্ষিমান্। তুন্দিলস্তুন্দিভস্তুন্দী বৃহৎ কুক্ষিঃ পিচিণ্ডিলইত্যমরঃ। অত্যোহপি মকরন্দপানেনতুন্দিলোভবর্তাতি প্রাসিদ্ধিঃ অবিদ্যোবাসবিদ্যোবাস্থুলকায়ঃ প্রশস্তুতইতিচ উক্তঞ্চ ন বাহ্নদেবভক্তানামগুভং বিদ্যুতেকচিদিতি হরিভক্তিরসরসিকত্বেনবিম্বানভিভবত্বং ধ্বনিতং। পূর্ব্বার্দ্ধেনমঙ্গলাবিষ্কারঃ পরার্দ্ধেনার্থাবিষ্কারঃ। যদ্ধা যন্ত্রাৎ ক্ষরমতীতোহ্ছমক্ষরাদপীতি ভগবদগীতা-

দর্শনাৎ পুরুষেভ্যউত্তমঃ পুরুষোত্তমঃ কৃতামিদং প্রকরণং ব্যাতনোতি কীদৃশং তৎসারবৎ ধনবছুপাদেয়ং কীদৃশঃ সঃ কৃতীকার্য্যকুশলঃ। বৈজ্ঞানিকঃ কৃতমুখঃ কৃতীকুশলইত্যমরঃ। এতেনগ্রস্থাৎ কৃষ্টতাদর্শিতা পুনঃ কীদৃশঃ নন্দনন্দনপদারবিন্দয়োঃ স্থানমকরন্দতুন্দিলঃ নন্দেননিত্যানন্দেন নন্দয়তীতি নন্দনন্দনং পদং কৈলাশস্থানং তদেবাহলাদকত্বাদরবিন্দং তদযাতীতি সচাসাবুর্মহাদেবশ্চেতি তস্মস্তন্দঃ প্রচরিতো যোমানঃ পুজাজ্ঞানম্বাদএবোপাদেয়স্বান্মকরন্দঃ তেন তুন্দিলঃ নিভ্তঃ বিম্বানভিভূতইত্যর্থঃ। অত্যোহপি মকরন্দপানেনক্ষুত্ যাদিবিল্লানভিভূতোভবতীতি প্রদিদ্ধিঃ। যদ্বা পুরুষেষুউত্তমঃ পুরুষোত্তমঃ কৃতামিদং প্রকরণং ব্যাতনোতি কীদৃশং তৎদারবৎ দরএবদারোদধ্যগ্রভাগঃ তদ্বতুপাদেয়ং। তালব্যোহপ্রু শরোদভ্যেহণীয়ু দধ্য প্রভাগয়োরিত্যুমভেদঃ। কীদৃশঃ দঃ কৃতং স্থক্তমস্থান্তীতীন্ কৃতীপুণ্যবন্দ্রচিতত্ত্বেন ব্যাদাদিরচিত বদ্গ্রন্থ বিষাপাদিতং। পুনঃকিন্তুতঃ নন্দনন্দনপদারবিন্দয়োঃ শুন্দমানমকরন্দতুন্দিলঃ নন্দাদিভক্তান্ নন্দয়তীতি নন্দনন্দনোমাধবঃ তস্থপদমরমত্যর্থং বিঙক্তেলভতেইতি সাহিসাতিত্যাদিনাশঃ নন্দনন্দনপদারবিন্দেলক্যাসরস্বত্যোত্তয়েঃ স্থাননেইচ্ছাতঃ সংস্পর্শেন্যামাধনবাধিভূতিঃ তয়াস্থান্দময়াধন-বাধিভূত্যাঅশু বাস্তদেবস্থানমঃ নমনং ভদ্দং করতীতি অচ্ভোবাদিককুকরণইত্যস্তরপং। সংসারক্রেশং তুন্ ওজিহিংসায়াং তুনতীতি কিপ্ মুক্তইতার্থঃ। দং কলত্রং সমাখ্যাতং ক্লেশ্বেদান দাতরী-ত্যেকাক্ষরঃ কোনঃ। পুনঃ কাঁদৃশঃ দানং দাসাহস্যান্তীতিইলঃ দিলঃ দানশীলঃ এতৈর্বিস্নাভাবোদশিতঃ। যদ্বানন্দ মানন্দময়ং ব্ৰহ্মনন্দয়তীতি বিশ্বপ্ৰপঞ্চেব্যাপারয়তীতি নন্দনন্দনং প্ৰধানং শেষং পূৰ্ববিৎ। যদ্বান-ন্দেনানন্দ মৃত্তিব্ৰহ্মণা সহনন্দ তীতি নন্দনন্দনং বাগ্বহ্মশোষং পূৰ্ববিৎ। অলমতিবহুনা। রথোদ্ধতাচ্ছন্দঃ উপমৈবভিরে:ভূতভেদারূপকমুচ্যতেইভিদণ্ডা। তদ্রপকমভেদোয্উপমানোপমেয়-য়েরিতিকাব্যপ্রকাশক। ১॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

ব্রন্ধারের বিষয় কর্মত ক্রিনাই বর্তাশোমুক্রেকিং সংহরতে স্তরাস্তরগণানান্তং বিছঃ সর্বদা। যবাঙ্যানসয়োরগোচরমগী ক্ষতেহলায়োগিনস্তরন্দেইহমভীফীসিদ্ধয়ইহসাত্মাববোধং মহঃ। ১॥

বহুবিদ্বমাকলয় প্রন্থমণ্ডেপি পরিচ্ছেদাদৌমঙ্গলমাচরতিনন্দেতি। পুরুষোভমঃ কৃতামিদং প্রকরণং ব্যাতনোতিবিশেবণানল্প বিদ্বাতীত্যুর্থঃ। অত্রপরগতাধ্য়মব্যুৎপত্তিলাভাদিফলাভিপ্রায়েণপরশ্বৈপদং প্রযুক্তং। কাদৃশংকৃতীকুশলং এতেনোত্মরচিতরেন প্রস্থভাধ্য়ম যোগ্যন্থং সূচিতং। পুনঃ কাদৃশং নন্দনন্দন-পদারবিদয়েঃ অদমানমকরন্দভূন্দিলং নন্দত্ত গোপরাজ্য নন্দন আত্মন্ধঃ মদ্যপি শ্রীকৃষ্ণেঃ মদ্যপি শ্রীকৃষ্ণে। নন্দ্রভাবিদয়েঃ অদমানমকরন্দভূন্দিলং নন্দত্ত গোপরাজ্য নন্দন আত্মন আত্মন্ধঃ যাত্ত গুরুকৃতাশ্রীনন্দসূনোরিতি যত্ত গুরুক্তভাচার্যেণ অন্তব্দানন্দায়নন্দাত্মজইতি। তত্যপদেচরণে। পদং ব্যবসিতিত্মাবদানক্ষার্য়ঃ রপকালঙ্গানেহিয়ং যতীবিবচনেরপ্র আত্মানিতিবানরঃ। তেএবারবিন্দেপদেগুল্যনমিতি বদবধারণপ্র্বপদঃ কর্মানার্য়ঃ রপকালঙ্গানোহ্যং যতীবিবচনেরপ্র আত্মান্ত্রাহাতিবাবদ্যমেগতী। অন্ত্রবণ্ড আ অন্তইতি বর্ত্তমানেশন্ত শানাবিতিশানঃ শিত্তাৎভূবাদেঃ শিতিকর্ত্তগ্র্য অকারামুভ্ভবত্যানে সচাসেমকরন্দশেততি যদ্যপি মকরন্দঃ পুস্পারসন্তথাপ্যত্রানুপ্পতি বলাৎসাধ্যাবসানিকাথ্যলক্ষণ্যাভিক্তিরসপরঃ। সাধ্যস্থ শক্যস্থাবসানং শেষভাগোন্ত্র্বার্থিকঃ আপ্রভায়ঃ আপ্রভায়ত্বত্যাকে অন্তইং যত্ত লক্ষণারাং শক্যস্থ

কুতঃ কর্ত্তরি। ২॥

পূর্ববিংশত্যাগেনাপরাংশাবস্থিতিঃ সাসাধ্যাবসানিকা। সাধ্যাবমানিকেতি কচিৎপাঠঃ। ইয়মেব জহদজহৎস্বার্থলক্ষণাভাগলক্ষণাচোচ্যতে। তত্মাৎ তুদ্দিলঃ তুদ্দমুদরমস্যাস্তীতি ইলঃ পিচ্ছাদিভাইতীলঃ রৃহৎকুদ্দিমান্ এতেনবিম্বানভিভূতইতিসূচ্যতে। কীদৃশং প্রকরণংসারবৎস্থিরাংশবং। সারবিদিত্যনেন গ্রন্থতাৎকৃষ্টপ্রয়োজনাভিধেয়সম্বন্ধাঃ সূচিতাঃ প্রকরণমিত্যনেন লযুত্বং গ্রন্থত্যসূচিতম্। তথাচ প্রয়োজনাভিধেয়সম্বন্ধবভয়াম্বল্লায়াসসাধ্যতয়া উত্তমরচিততয়াচগ্রন্থেইধ্যেতৃপ্রবৃত্তিঃ স্থাদিতিভাবঃ। যম্বানন্দেন পরমানন্দেন নন্দতীতি নন্দ্যাদিয়াদনঃ নন্দনন্দনোমহাদেবঃ অত্যৎ পূর্ববং। অনুপ্রাসবৎ পদ্যমিদং। ততুক্তং কাব্যচন্দ্রকায়াং বর্ণার্তিরকুপ্রাসইতি। রথোদ্ধতাছন্দঃ। ততুক্তং ছন্দোমঞ্জর্যাং গঙ্গাদাসেন রাৎপরৈর্নরলগৈরথোদ্ধতাইতি। অস্থার্থঃ রাৎরগণাৎ পরিঃ উত্তরৈঃ নরলগৈঃ ন্গণ রগণ লগৈর্ফিশিফারথোদ্ধতাস্থাদিতি ইদং পাদস্তলক্ষণং। রগণোলঘুমধ্যবর্ণত্রয়ং নগণোলঘুবর্ণত্রয়ং লকারএকলযুঃ গকারএকগুক্তঃ তৈর্বিধিশিক্টঃ পাদশ্বেৎ রথোদ্ধতেতিফলিতার্থঃ। ১॥

क्र ९ अमी शिका।

অথ আখ্যাতমাখ্যায়কৃৎপ্রকরণমারভমাণঃ প্রাক্পরিভাষাধিকারসূত্রমারভতেকৃতইতি। কৃতাসিদ্ধত্ববো-নাদিত্যুক্তেঃ কুর্ব্বন্তিসিদ্ধতাবস্থাং বোধয়ন্তীতিকিপ্কুতঃ করোতিক্রিয়ামুৎপাদয়তীতি ভূচ্কর্ত্তাভুবাদ্যাদীতি বিধ্যধিকারেণধাতোঃ পরেবিহিতাঃ কুতঃ কুৎপ্রত্যয়াঃ কর্তুরিকারকেভবস্তীতি কুদ্ধিকারোবিধ্যঙ্গশেষ-ভূতাপরিভাষাচ অনিয়মেনিয়মকারিণীতিতল্লক্ষণাৎ। নৈকদেশস্থাসকলং শাস্ত্রংহ্বালয়তীতিলিঙ্গবতীতি প্রকৃতিপ্রত্যয়ার্থোপপদকালাঃ তেয়াম্মধ্যেশেয়েপরিশিক্টেভতা তথাহিবিধেরঙ্গানামুপকারকাঃ বিধ্যঙ্গশেষভূতা তথাচযদাতেযান্মধ্যে২র্থে।দেশোনাস্তিতদার্থঃ শেমোভবতীতি তত্রইয়মবতিষ্ঠতে অর্থ-সাকাজ্ঞত্বাৎ অনট্ভাবাধিকরণকরণেযুইত্যাদো তস্তার্থনির্দেশেননিরাকাজ্ঞত্বাৎ। যদিচলিঙ্গবভীয়ংস্তাৎ তদাস্থাবিধ্যনায়ত্ত্বাৎ স্বাতন্ত্র্যোণবিধানেনবিধিদ্বয়ংস্থাৎ ততশ্চভাবাদোকর্ত্তরিচান্ডাদয়স্থ্যঃ সিদ্ধান্তেতু বিধ্যধীনত্বাৎ নিরাকাজ্ফং বিধোনবিশতিতস্থস্বয়ং পরিসমাপ্তার্থত্বাৎ। নতুচকৃদিত্যেবলিঙ্গং চিহ্নং তবৈশ্ব বোধনাৎ কুতোনলিঙ্গবতীত্যুচ্যতে নহিকুদিতিসংজ্ঞাশব্দোলিঙ্গসংজ্ঞাপ্রতিপাদকঃশব্দস্তসর্ব্বত্রৈবসদ্ভাবাৎ সর্বেষামেবলিঙ্গবভীত্বংস্থাৎ তত্মাৎপ্রত্যয়াদেঃ প্রতিপাদকশ্বনাদভিত্তিক্তং লিঙ্গংবক্তব্যং। করোতীত্যস্বয়স্তল্লিঙ্গমিতি যতোনকুদিতি সাম্বয়াসংজ্ঞাতথাচকুৎপ্রত্যয়েকরোতীত্যসুগতার্থোনাস্ত্যেববুৎপত্তি স্তুযথাকথঞ্চিদেব তেনারয়স্থাপ্রাধান্তান্নতলিঙ্গমিতিবজ্রধরইতিপ্রাঞ্চ। নব্যাস্তভুবাদ্যাদীতিবিধিঃ এষাং নিয়মবিধিত্বাৎ সামান্তবিশেষন্তায়েনান্তোংক্তপ্রতেশইত্যাভ্স্তচ্চিন্ত্যম্ অচ্পচাদেরিত্যাদাবপি তথাত্বেনাস্ত প্রবেশপ্রাপ্তেঃ। অধিকারফলং বাসরূপো২পবাদঃ স্থাদিত্যাদো। নমুকৃত্যাদীনাং ভাবাদিভাষণেনৈত-দ্বিনাপ্যত্যেতিঙ্দহবিধানাৎ কর্ত্তয়েবস্থ্যরিতিমৈবং দূত্রাভাবেকুত্যাদ্যত্যেষাং দর্ককালবৎ ভাবাদ্যবাধা-পভেঃ কিঞ্চকুতশ্চান্যত্রেত্যসম্ভবোহপি। ২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

কৃৎপ্রকরণেবাচ্যে প্রথমতস্তাবৎপ্রত্যয়ানামর্থবিশেষব্যবস্থামাহকৃতইতি। কৃতইতি। ডুকুঞ্ করণেকর্ত্তরি কিপিত্রস্বাত্তুক্পসুবন্ধেস্থাদিতিভুগাগমঃ প্রথমাবহুবচনেরূপং। কৃতোবিশেষোক্তিরহিতাঃ কৃত্যক্তখলর্থাভাবকর্মণোঃ। ৩॥ ভাকেকর্ত্তরিচকাপিকার্য্যাঃ কুৎসংজ্ঞকাব্যয়াঃ। ৪॥ কুদ্বাচ্যলিঙ্গঃ। কুৎপ্রত্যয়াস্তব্যানীয়াদয়ঃ। ৫॥

কংপ্রত্যয়াঃ কর্ত্তরিস্থ্যরিত্যর্থঃ। অধিকারসূত্রমিদং কৃত্যানট্কৃতশ্চান্যত্রকুত্রচিদিত্যস্থাবিষয়ে সর্ব্বত্রাধিকার প্রবৃত্তিরিত্যাধিকারসংজ্ঞায়ং। ২॥

क्र ९ अमी शिका।

অত্রাপবাদমাহকুত্যেতি। ক্রিয়ন্তামমীতি যথাকথঞ্জিব্যুৎপত্যাবাক্যপ্কুষ্জীতিক্যপ্কৃত্যাঃ খল্ অর্থোযক্ষেতি মধ্যপদলোপী তদ্গুণসন্ধিজ্ঞানবহুত্রীহিঃ তেন খলর্থঃ খল্ হিম্বাদরিদ্রোমিত্যনশ্চ। কৃত্যাশ্চ ক্তশ্চখলর্থশেচতিদ্বন্ধঃ। নচপ্রত্যেক্মর্থপদসম্বন্ধঃ কৃত্যক্তার্থাভাবাং। নম্বলমর্থপদেনখল্ বিরোধকইতি বচনাদেব তত্তভ্রাভইতিনৈবং বিশেষনিয়মাসত্ত্বেসামান্তাবকাসাং একাঙ্গেনবিরোধকতাদর্শনাচ্চ তথাহি বিরোধকবচনেনভাবকর্মণোঃ সামান্তঃ কর্ত্র্যাপ্যনেনভূয়তাং যথাস্ববিরোধ্যবিধিসন্ত্রাস্ক্রেতি। যদ্বাখলর্থক্রেনান্ত্রাপি অনুমাত্রপরিগ্রহার্থমিদং তেন পুং সাং স্থান্তব্যেক্ত্র্যঃ স্থগোচুর্গোদেশইত্যাদৌ খলর্থসত্বেশিক তম্ভাতোননিষ্ঠাদিস্বিতি। খলোহ্নাদেশেস্বস্পতিং দশ্রিয্যামিহি স্বেতিসূত্রে। ৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অপবাদমাহকুত্যেতি। কুত্যাঃ তব্য অনীয় কেলিম য ক্যপ্ ঘ্যণ্ কেঞা ছকে তবৈ দশ ক্তঃ ক্তউক্তঃ কতুর্যাপিকশ্মারস্তেইত্যমাদ্রিয়ঃ ক্তপ্রত্যয়ঃ খলর্থঃ খল্ খল্ বিরোধকান চএতে ভাবকশ্মণাের্কাচ্যয়েঃ স্থাঃ। ৩॥

क्र ९ अमी शिका।

অপবাদান্তরমাহভাবইতি। কুদিতিসংজ্ঞানামযেগাং স্বার্থেকঃ তেচতেহব্যয়াশ্চেতি কুৎসংজ্ঞকাব্যয়াঃ ক্তামসদ্ধ্যক্ষরান্তাঃ কুতো ভাবেকাপিকর্ত্তরিচকারাৎ কর্ম্মণিচকার্য্যঃ। কুৎসংজ্ঞাখ্যানায়সংজ্ঞকাইতি। কর্ম্মণিযথা স্লভেনপিফীস্নতপেশং যবাঃ পিফীঃ খলুক্রানবাচ্যমিতিস্বয়ং বাচ্যং। কর্তৃকর্মণোঃ ক্রাচিৎ ক্যার্থমেবেদং বিধানং। কুত্যাব্যয়শঙ্ক্ষয়া কুৎসংজ্ঞকাইতি এবঞ্চতেতুভাবকর্মণোরেব। ৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ত্ত্বিক্তাপ্রতার । ৪॥

অপরাপবাদমাহভাবইতি। সন্ধিহিতত্বাৎ কাপীতি কর্ত্তরিচেত্যত্রান্বেতিচকারাৎ কর্ম্মণিচ। কাপি

क्र ९ श्रमी शिका।

লিঙ্গব্যবস্থামাহকৃদিতি। বাচ্যস্তশব্দস্ত লিঙ্গমিব লিঙ্গংযস্তেতি অন্তপদলোপীসমাসঃ। প্রত্যয়ানাং কেবলেনানবস্থানাং কুদন্তঃ শব্দোবাচ্যলিঙ্গঃ অভিধেয়লিঙ্গভাগ্ভবতি কারণেকার্য্যোপচারাল্লিঙ্গস্ত শব্দধর্ম-

যঞাদ্যাঃ পুংসি। যঞ্লোণ্যনঙ্ঙপুচ ! ৬॥ ক্ত্যাদয়ঃ স্ত্রিয়াং। ক্ত্যাদিণচ্পর্যান্তাঃ। ৭॥

ষষ্ঠ দেবদন্তাদিশকলিঙ্গং পাচকাদির্ভজতইত্যর্থঃ। কার্যাং শব্দঃ সামীপ্যাৎ। কুত্যানামব্যয়ানাঞ্চ বাচ্যলিঙ্গত্ব শঙ্কয়াকুদিতি। জহল্লিঙ্গত্যামুবাদকমিদং। কশ্চিতু বিশেষণেসমানার্থ ইতি নিয়মানুষাঙ্গিকত্বেন নীলমুৎপলমিতি বিদ্যোগদ্যাসন্তাবেতক্ত তল্লিঙ্গবিধায়কত্বম্ ইদন্তাভিপ্রায়িকং বাচ্যলিঙ্গবিধায়কিবিদারকত্বদিতিত কাতিত কাতি কাতিত কাতি বিশ্ব কিবানাকা বিধানীত্যাদাবজহদিন আতেত্ব শ্রুম পত্রপরশুঃ ছেদনঃ খড়গঃ খেয়ং পরিখাগোদোহঃ নীবারাবারিধানীত্যাদাবজহদ্পি তল্লিঙ্গার্থমিদমিত্যাত্বং তল্পমনোহরং কৃতশ্চাক্তব্রেতিবচনাৎ ধ্বনিঃ লুঙ্ নির্দাদেঃ পুং স্থমেবেতিক্রম্মুক্তত্বাৎ। কুদিতিবক্তব্যসূত্রং বক্ষমাণাস্তব্যানীয়াদয়ঃ প্রত্যয়াঃ কৃৎসংজ্ঞাভবন্তীতি সংজ্ঞাবিধানম্ আত্রাম্বাম্থাণ্ডঃ। তথাচ কুদিতি কাতন্ত্রবিবরণঞ্চ ইতউদ্ধিং যেবক্ষ্যন্তেতেকৃৎসংজ্ঞকাভবন্তীতি। স্ত্রন্থকৃৎ পদ্বিবরণমিতিকেচিৎ তল্লযুক্তং কাপ্যক্ষাক্রত্ব বিশ্ববাপত্রেঃ। সংজ্ঞাকলং কৃতঃ কর্ত্রিভিঙ্কংশাদ্যইত্যাদে।। ৫॥

গৃতপ্রকাশিকা ৷

কুদিতি। কুদিতিগ্রহণং কুংসামান্তলাভার্থং তেনসর্বোহপি কুৎপ্রত্যয়ঃ বাচ্যলিঙ্গঃ অভিধেয়লিঙ্গভাগ্ভবতি বিশেষাভাবেদতাতিশােঃ। কুংপদার্থনাহকুং প্রত্যয়াইতি। তব্যানীয়াদয়ইতি। আদিনাকেলিমাদেগ্রহণং। কম্মবিহিতানাং তব্যানীয়াদীনাং ব্যেস্তব্যোদীর্ঘণচকর্ত্তিরস্মৃতইতি কর্ত্বিহিত্স
তব্যস্তচবাচ্যলিঙ্গর্মবধ্য়েং। সূত্রেকুদিত্যেকবচনং কুত্ত্বাবচ্ছিলোপাদানাং রভৌতুকুংপ্রত্যয়াইতি ব্যক্ত্যভিপ্রায়েণবহুবচনং। যতুসূত্রস্কৃৎ পদবিবরণমিতিকেচিং তয়য়্ক্রং কাপ্যস্থাক্রত্স বিপ্লবাপত্তেরিতি
কুংপ্রদাপিকায়ামৃক্তং তচ্চিন্ত্যং কুংপ্রকরণোক্ততব্যাদীনাং কুত্ত্বানপায়াং ক্রথমপ্রত্ত্বং। বস্তুতস্ত্রগ্রস্কর্ত্ব্রপি দ্বংপদবিবরণাভিপ্রায়োলক্ষ্যতে। ৫॥

क्र ध्रमी शिका।

ঘঞ্। ঘঞাদ্যাভাবে বিহিতাহপি পুংসিবর্ত্তে। আত্যুৎপন্নাদ্য স্থাবাচিন্নাদাহ ঘঞলাবিতি। প্রকারেচব্যবস্থারাং সামাপ্যেহবর্ষেহপিচ। চতুর্বর্ধের মেধাবীআদিশন্দং প্রচক্ষতেইতি। ঘঞ্ভাবে-অল্মরাত্তেতি অল্ শশ্চনেঃ পরাদিতিশঃ স্বরাত্তেত্যইতিঘঃ যাচিবিচ্ছীতিনঙ্ টুকুবন্ধাদপুচ্ এতেয়ড্ ঘঞাদ্যাঃ নৈয়ামন্তর্কর্তিনঃ কত্রিমগনটঃ। ৬॥

গুঢপ্রকাশিকা।

ঘঞেতি। আদৌভবআদ্যঃ দিগাদিত্বাদয়ঃ ঘঞ্ আদ্যোযেষাং। বিশেষতয়াভাববিহিতাঅপি ঘঞাদ্যাঃ পু'সি। নাম্মকের্ত্তরিভাবেচ ঘঞলোনঙ্ ণঘাপুচেত্যমরঃ। ৬॥

क्र श्रमी शिका।

ক্ত্যা। ভাববিহিতাঅপি ক্ত্যাদয়ঃ স্ত্রিয়াং বর্ত্তত্তে। তেচক্তিঃ ব্রিয়ামিতিক্তিঃ ঋদস্তল্তাদিতোনিঃ প্লামাহাজ্যাং স্থনিঃ কুষ্যাদেঃ কিঃ অজাদিভ্যস্ত্রণিঃ সম্পদাদেঃ কিপ্ ক্তিরপি ভাবে ব্রজিযজিসমজাদিভ্যঃ

ক্লীবেভাব প্রত্যয়ান্তাবিশেষানু ক্তিগোচরাঃ। যথা গমনং গতং ভবিতব্যং। বিশেষোক্তত্বাংগতিঃ পাকইত্যাদয়ঃ। ৮॥

ক্যপ্ কৃঞোযক্চ সর্ত্তেস্ত্রযোহপিচ অপীচ্ছামুগয়েত্যঙ্ গুরোঃ সেটোহলন্তাদঃ যনুবন্ধভিদাদেরঙ্ ঈষিশ্রস্থা-সীত্যনঃ অকণ্ভবতি সংজ্ঞায়াম অকণ্ পর্য্যায়ার্হঋণেইত্যকণ্ ইঞ্পিপ্রশ্নোভরয়োঃ নঞ্পূর্ব্বাদাকোশেনিঃ পচ্স্থাৎ ক্রিয়াবিনিময়ে এতেউনবিংশতিপ্রত্য়াঃ ক্র্যাদয়ঃ। ক্রিঃ স্ত্রিয়ামিত্যস্থানুবাদকমিদং চান্দ্রাদাবে-কস্ত্রদর্শনাৎ। উক্তস্থসপ্রয়োজনকথনমনুবাদঃ তচ্চণজন্তব্যাপকত্বং ণচ্পর্যান্তাইত্যুক্তেঃ এতদনুসারেণ গজন্তেস্ত্রিয়ামিতি নির্ত্তিমত্যুক্তং। ৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্ত্যাদয়ইতি। ক্ত্যানিণচপর্য্যন্তাইতি। ক্তিঃ স্ত্রিয়ামিত্যধিকৃত্যতৎপরোতোবক্ষ্যমাণ ণচ্পর্য্যন্তাঃ প্রত্যয়াইত্যর্থঃ। তেচ কৃৎপ্রদীপিকায়ামুক্তাঃ। গাথাছন্দঃ। ৭॥

क्र थिमी शिका।

ক্লীবে। ঘঞাদ্যাং পুংসিক্ত্যাদয়ঃ স্ত্রিয়ামিতি বিশেষাত্মক্তির্গোচরোযেয়াং তেবিশেষাক্তরবিষয়াভাবপ্রতায়াল্ডাঃ ক্লীবেবর্ত্তরে। সামান্ডোপক্রমাৎ ক্লীবং স্থাদিতীদং নোচ্চারণীয়ং সিদ্ধতয়াদ্রব্যবেদ সামান্ডোপক্রমবিরহাং। তত্মকং ক্রিয়ায়াঃ সাধ্যতাবস্থাসিদ্ধতাচ প্রকীর্ত্তিতা। সিদ্ধতাং দ্রব্যমিচ্ছন্তিত-ত্রৈবেচ্ছন্তিঘ্যপৃধিমিতি। ঘ্যণিত্যুপলক্ষণং তব্যাদিভিঃ সিদ্ধতাধর্মউচ্যতে তস্থাশ্চদ্রব্যবেদস্বীকারঃ দ্রব্যস্থানেকলিঙ্গযোগোহস্তাবেতি পুংসাগতং স্থিয়াগন্তব্যমিতি প্রক্ত্যাভিরপকবৎ পুল্লিঙ্গাদিঃ স্থাদিতিনপুংসক্তেত্বার্যাবিধীয়তে ইতিবজ্রধরঃ। যথেতিনির্দ্দেশনে গমনমিত্যাদিয়ু ভাবেহনট্কতব্যাঃ বিশেষোক্ত-ত্বাদিতি। ক্র্যাদয়ঃ স্থ্রিয়াং ঘঞাদ্যাঃ পুংসীতিবিশেষোক্তত্বাদিত্যর্থঃ। ৮॥

शृष्धकाणिका।

র্ন্নবিইতি। ভাবেধার্থেবাচ্যেপ্রত্যয়াভাবপ্রত্যয়ান্ত্রেইন্তাবেদাং তেবিশেষস্থাকুলির্বিশেষাকুলিঃ
সাগোচরোবিনয়োনেনাং তেপদরমং বিশেন্যবিশেনগভাবাপন্নং তেনবিশেনাকুলি গোচরাবিশেয়োল্য বিষয়াভাবপ্রত্যয়ান্তাঃ র্নাবেস্থ্যরিতিয়োজনা। ভাবপ্রত্যয়ান্তাইত্যকুলেকরণাদিবাচ্যকৃতাং প্রাগকুল্বাৎ ক্লীবেস্থাৎ বিশেনাকুলিগোচরাইত্যকুলে অকর্ত্তরিকারকেঘঞাাদ্যাঃ পুংদি কর্মাদোবাচ্যেল্যাদয়শচন্ত্রিয়াং ভাববাচ্যপ্রত্যয়ান্তান্ত্র দর্শের্ক্রানিকর্মনামন্ত্রাহ্নভ্রম্মলাং। ভবিতব্যমিত্যাদি। ভূসন্তায়াং ভবনং ভবিতব্যং ভাবেতব্যঃ ইট্ওগশ্চ গমনং গতিঃ ক্লিঃ ব্রিয়াম্ এনামিতি গ্র্ট্যগুণেলোপইতিমলোপঃ পচনং পাকঃ ঘঞ্চত্তংকার্য্যং ঞুনুনদেক্তি ইকামস্থৈবোপধায়া অটিচীনিচর্দ্ধ্যইতির্দ্ধিঃ চজাঃ কর্গোঘুরবন্ধের্ম্বিটিচেতি চম্বকঃ। আদিনাকীর্ণি লুনিজয়্লেয়াদের্গ্রহণং। ৮॥

ইজ্বার্থিং ঞুনুবন্ধেকৃতি হস্তেস্ত্র্যাৎস্মৃতঃ। র্দ্ধিগুণিং কুটাদেরপ্যাকারাস্তাদ্ধ আগমঃ। হ্রস্বোজ্বরিত্বরি বধিজনামিজ্বংকলং বিদ্বং। ঘঞ্পাঠঃ অবণ্ প্রপাঠকঃ কারঃ কারকঃ হন্যাত যাতকো লেখোভেদকঃ উৎকোটঃ উৎকোটকঃ দারঃ প্রদারকঃ পারঃ পায়কঃ জ্বঃ দ্বিন্ সংজ্বরীবধকঃ বধঃ বাধইতি বাধ্বাতোঃ জনঃ জনকঃ। অন্যমনুবন্ধানাং নহ্রস্বঃ। প্রণামোহয়মভিরামকঃ গমকইতীনস্তাস্য। ইচ্কার্যারাস্ত্যমন্তানামিতি বিশেষোক্তত্ত্বাংভ্রমঃ ভ্রমকঃ নেন্তঃ বেভিদকইত্যাদরঃ। ১॥

क्र ९ प्रमिशिका।

ইত্বং। ইচীবইত্বং দপ্তম্যস্তাদ্বতিরিতিভট্টনারায়ণঃ। অর্হার্থেবতিরিতিচন্দ্রঃ। উভয়থাকার্য্যবিশেষণং। ঞশ্চ ণশ্চ তাবনুবন্ধোযস্থ তিমান্কতি পরেধাতূনামিত্বৎ কার্য্যন্তবিত হন্তেম্ভবাৎস্মৃতঃ নাখ্যাতোক্তং হনোঘন্নিতি তথাহি বিশেষতঃ দামান্যতোবাইতি যৎবৃদ্ধিগুণাদিকাৰ্য্যং কুতং দিশ্যতে यथां हेर्नाष्ठेव । প্রিয়স্থ প্রইত্যাদিকার্য্যাতিদেশঃ। কানিচকার্য্যাণীত্যাহরুদ্ধিরিত্যাদি। যথাপ্রাপ্তির্দ্ধিগুণ । কুটাদিতোহনিচিনভিতিবচনাৎ কুটাদেরপিগুণঃ। এতেনণমুবদ্ধেকৃতি অন্নপ-ধধাতোরিচ্ কার্য্যমস্ত নাম্যন্ত নাম্যুপ ধধাতোস্ত গুণিরাদ্যুণর্দ্ধানস্থাতামিতি কার্য্যন্তনোচ্যতে যেন-কার্য্যবিশেষণমিতি নাশঙ্কনায়ন উপমিতোবতিবিধানাৎ ভচ্চান্যোন্যসাপেক্ষত্বেন উপমেয়েবতিরিতি সিদ্ধা-বপুপেমানগ্রহণাত্রপমিতোণতি বিধানাদ্বাযথা দ্যোজ্যোরপি গোবদ্বিধিমিতি। কুতাতশ্র বিশেষণমিত্যপরে। যদ্যপিঞ্চকারস্থ যথাঞ্চতস্থাভাবাৎ ণকারোহপি তথাবিধাবুদ্ধ্যেত তথাপি তুরবগমপরীহারায়াতুবন্ধইতি। নাপিচতত্রতত্ত্রৈবৈকতরঃ পঠাতাং ক্বতিমহদ্বয়ো এ হণেনেতি। তুস্ হ্রস্ শব্দেহ্রসভীতিহ্রস্বঃ সর্ত্তিপুরিহ্রসি-ভ্যোবঃ ঘোষেনেট্। জুকুবন্ধেকৃতিচতুর্ণামেষাং ব্রস্বঃ স্থাদিতিনিত্যনিয়মবিধিঃ তথাহিব্রস্বোবামকুন্ধানামিতি জ্বর ত্বর য়োর্শ্মসুবন্ধত্বে বিকল্পেনপ্রাপ্তোনিত্যতাজনিবধ্যোর্মিত্যপ্রাপ্তোনিয়মার্থতা তেনাভ্যমসুবন্ধানাং নহ্রস্থ-উক্তঞ্চ পূর্ব্বসিদ্ধন্তবংকার্য্যং পুনরারভ্যতে বিধো। পূর্ব্বকার্য্যবুদোসায়বিশেষার্থং ইত্যুক্তদঙ্গতিঃ। হিতদ্তবেদিতি। প্রাঞ্জযুডাদয়ঃ সর্ব্বাঙ্গেনেচ্কার্য্যাণি এবমিচ্শব্দেনাকুক্তত্বাল্যুণোনেচ্ কার্য্যমপিসোহপ্য-তিদিশ্যতে কুটাদিতোহনিচিনভিত্যগুণস্প্রতি ইচঃ পর্যুদাদাং কুটাদিতোগুণইচ্কার্য্যং ব্রস্বস্তুনদর্বাঙ্গেনেচ কার্য্যং বিকল্পডোক্তরাৎ অতোহমীনামুপদেশঃ অভ্যমনুবন্ধানামপ্রাপ্তত্বাশ্বহুস্বইতি ব্যাখ্যান্তি। উপসংহরতি ইজ্ৎফলং বিহুরিতি। এতাবদিজ্ৎফলং বিহুঃ প্রাঞ্চোবদন্তীত্যর্থঃ। উদাহ্রিয়তে ঘঞিতি। ভুকুঞ্করণে কৃপাদবিক্ষেপেবাকারইতিভট্টঃ। লিথ্ অক্ষরবিন্তাদেতুলাদিঃ কুটাদয়শ্চ কুট্ কোটিল্যে ঘুট্ পরিবর্ত্তনে পুট্ সংশ্লেষণে স্ফুট্ বিকশনেইত্যাদয়ঃ। ভুদাঞ্দানেদেঙাদয় চ পাপানেরক্ষণেবা পৈ বৈ শোষণেবাপায়ঃ জ্বর অমৃ রোগেযঞিজ্বঃ ভুজাদেশ্চেতি ন্নিনিগজ্বী এবং ডিম্বরাসম্ভ্রমে সংস্থরীযঞ্কণোবধঃ বধকঃ। বধঃ কিম্বাধইত্যত্ত্বাহ্বাধ্ ধাতোরিতি। রাধ্বাধ্ সংদিদ্ধো ঘঞ্ জনীপ্রান্নভাবে জনঃ আত্মাবৈজায়তেইতি জনকঃ পিতা। অন্মেতি। জ্বাদিচতুর্ভ্যোহযামনুবন্ধানামিত্যর্থঃ। প্রণামইত্যাদি। ণম্ প্রহাষেশব্দেচ

শন্ত কিন্বর্জিতেজাগুগু ণএব। ন রিদ্ধি। শন্ত কিন্বর্জনাদগুণে পিরুতিপরে যঞ্প্রজাগরঃ। জাগর্জিঃ জাগরিতঃ জাগরিতবান্ জাগরানিত্যৎ জাগরীণিন্। শন্ত কিন্বর্জিতেকিং। নাস্তিজাগরতোভয়মিত্যার্যং। কু গু জাগৃভ্যঃ কিন্জাগ্বির্গিঃ। ১০॥

ঘঞি গমোহকণিগামকঃ যম্ উপরমেঘঞ্ আযামঃ রমুক্রীড়ারাং ঘঞ্ বাজ্লেতি ণোবারামঃ। জ্রন্জীতি মসুবদ্ধানামপ্যেয়াং ব্রুঘোবামসুবদ্ধানামিতি ন ব্রস্কঃ তর্হিকথং গমকইত্যত আহইনস্তস্তেতি। হৈতুকেনিমিতাং ব্রুঘোবামসুবদ্ধানামিতি লৈ ক্রমঃ তর্হিকথং গমকইত্যত আহইচ্ কার্যামিতি। ইত্যাদি আখ্যাতেবিশেবাক্তন্বাদেশং বৃদ্ধিরেবনাস্তিকোনামব্রস্কইতি। নাঞ্প্রাপণে যঙন্তাদ্বঞ্জি অচি যঙ্লুকি যিন্মিন্বারিতি বিশেনোক্তন্বান্ধন্ধিতি। কর্মেন্বাতি বিশেনোক্তন্বান্ধন্ধিত কিন্তুনেকাচন্ত্রিতিয় এবং দী ধা বীব্যারিতি বিশ্বমের্বেতি বিশেবোক্তন্বাহ ঘঞ্চকণো বা দীধ্যঃ আদীধ্যকঃ আবেব্যঃ বিশ্রমইতি। ভঙ্গোনোবালভং ঘাতীতিচ বিশেনোক্তমপীহনাবতরতি প্রাদ্যুক্তেতি বিশেবেতরেণলভিনাতস্থবাধিতন্বাহ তেন ভঙ্গঃ ভঞ্জকঃ ন ভাগইত্যনুসন্ধায়ং। জুনুবন্ধেইতি কিং পচইত্যক্রনুদ্ধিঃ গোদঃ কন্ধলদইত্যক্রাপি যুজন্তাম্বরাণাশে পর্যাব্যে স্থাতাং। কৃতিকিং ক্রম্ভাত্যাধানিত্বনোপ্যাদীর্যঃ। নসুণিত্রাদগুণেগুণস্থানীয়বৃদ্ধান ন ভবিতব্যং কথমিয়ং ব্যার্ভিরিতি নৈবং শুচতীত্যাদোতস্ক্রনিত্তারির। আকারোপধেগুণনিব্যেধস্থাকলম্বাদিচ্ প্রবর্তিইতি। বস্তুতন্ত্র কুদধিকারেহপি প্রাপ্তক্তভাব্যাত্রনিরাশার্কতীতি। ৯॥

গৃত্পকাশিকা।

ইন্থলিত। ননুইচ্কার্যং স্থাদিত্যুক্তেসিদ্ধেং কথমিজ্বিতি তত্রাহ হস্তেম্বাদিত্যাদি। বংকরণাং ইচ্ কার্যান্থান্যমন্তাতি ইচিহন্তের্বন্ ইতিনস্থাং তুশন্দোহপিভেদবােধকঃ বথাপ্রাপ্তির্দ্ধিঃ গুণশ্চ কুটালিভাহনিচিনভিত্যনেন কুটালেরিচ্ ইন্থং অট্ ভিয়ানামগুণত্বেহপিগুণঃ আদন্তাদ্যঃ জ্বরপ্রভৃতেঃ ব্রুমঃ অন্তমনুবন্ধনােং ন ব্রুমঃ ইজ্ংকলমিজ্বভিদেশস্থৈতংকলং বিদ্ধানতাত্র্যঃ। বিদ্জ্ঞানেবিদেস্ত্যাদ্যাঃ পঞ্চাদ্যাইত্যন্তিস্থানেউদ্। উদাহ্রতি ঘঞিতি। পঠ্ব্যক্তায়াং বাচিপঠনং পাঠঃ ঘঞ্ভাবেস্থাদেশ জ্জায়ামত্যাদিনা ঘঞ্ বৃদ্ধিঃ পঠতাতি পাঠকঃ অকণ্ ভ্চাবিত্যকণ্ ভিদির্ বিদারণে অকণিগুণঃ। বধ্ বন্ধনে বধঃ বধকঃ ব্রুমঃ। গমকইতি। গছুক্তি কশ্চিভ্নিতরপ্রমুভ্কেইতানিমিতাং ব্রুম্বেজ্বণ হিল্লোপেলাক্ষণিকরাং ব্রুম্বরণবৈক্ল্যাচ্চাকণিনর্দ্ধিঃ। ভ্রুম্বনবস্থানেভ্রমঃ। অন্তং কৃৎ প্রদীপিকায়াং জ্ঞোং। ৯॥

क्र ९ अमी शिका।

শন্ত্ । বৃজী বর্জনে চুরাদিঃ শন্ত্ কিন্ভ্যাং বজিতেক্তিজাগুগুণএবেতি কার্য্যনিয়মঃ তেন ন বৃদ্ধিরিতি অত্যগাহতার্যব্যমের । শন্ত্ কিন্ বর্জনাদিতি। শনুবন্ধকনুবন্ধত্বেনানয়োরগুণেহপি নিমেধোহরং শুণস্প্রত্যগুণং গ্রাহয়তীতিভাবঃ অপিনাগুণিত্যপি । জাগ্নিদ্রাক্ষয়েঘঞিজাগরঃ ক্তৌ ঘোষে-তৌচেত্যনিট জাগর্তিঃ ক্রেজাগরিতঃ। অপীচ্ছেত্যগুপ্রত্যয়েজাগরানিত্যং। জাগরীতি ণিন্ত্যাদাবশ্যকে। অকাং হ্রস্থো ২নব্যয়ানাং খনুবন্ধান্তধাতু যু। নোমত্বঞ্চ । যথাজ্ঞানিম্ম-ন্যো ২ কোনা সিকন্ধমঃ। নাড়িন্ধমঃ বধুম্মন্যাদানী। অকাং কিং পৃথুনোমন্যা দ্রোণী। অনব্যয়ানাং কিং দিবামন্যারাত্রিঃ দোষামন্যমহঃ। ১১॥

ঘোষেনেট্ জাগৃবিঃ। নাস্তীতি। অপ্রমন্তস্থসন্ধরপরচ্ছিদ্রাসুসারিণঃ। দিশোনিরীক্ষমাণস্থ নাস্তিজাগরতো ভয়ং। ১০॥

গৃত্পকাশিকা।

শন্ত্রিতি। নিয়মাভাবের্দ্ধ্যপ্রাপ্তোগুণঃ র্দ্ধিপ্রাপ্তোত্র্বৃদ্ধিরিতিকল্পনং স্থাদিদানীস্তুদর্বত্রগুণএবন-র্দ্ধিরিতি। জাগরিতইত্যাদোক্তক্তবভূইট্চ। জাগরীতি অবশ্যং নিত্যং জাগরীতিণিন্স্থাদাবশ্যকেনিত্যং জাগরণং শীলমস্থেতিবাক্যে নামগুজাতোতাচ্ছীল্যেণিন্বা। জাগ্রিদিতি। জাগর্তীতিজাগ্রং বর্ত্তমানে শস্তুশানাবিতি শস্তুঃ নগুণঃ সন্ধিজোরঃ অভ্যস্তাদন্তোনোলোপঃ। নাস্তীতি। পঠতোনাস্তিমূর্যত্বং জপতোনাস্তিপাতকং। মৌনিনঃ কলহোনাস্তি নাস্তিজাগরতোভয়মিত্যার্যপদ্যং। কৃবিক্ষেপে গ্নেগরণেজাগর্তীতিজাগৃবিঃ কিনোবিঃ কিন্বর্জনান্নগুণঃ ঘোনেতোচাগ্রহাদীনামিতিনেট্। শস্ত্ কিন্বর্জিতেজাগুণ্এবপ্রজাগরইত্যেবংছন্দঃ। ১০॥

क्र ९ अमे शिका।

অকাং। থকুবন্ধকৃতঃ অন্তাবেষাং তাদৃগ্ধাতুরুপরেষনব্যয়ানাং সোপপদধাতোঃ থকুবন্ধবিধানাৎ সমাসপ্রবিদ্যানামূপপদানাং বর্ণান্তক্সবিধিরিতিভায়াদন্তানামকাং হ্রস্বঃ স্থাৎ যথাপ্রাপ্তিনামত্বঞ্ধ লাক্ষণিকত্বামুডাগমাপ্রাপ্তাবিদম্এতেন কুলটাকুমারিদ্যভোতি সম্বন্ধমাত্রেকুলটায়ানহ্রস্বঃ আত্মানং বাচমিবমন্ততইতি
বাঙ্মভাইতিচ। ধাত্রকুক্তোথকুবন্ধনাশেদতি অনব্যয়ানাং পরেষাং ধাতৃনামকাং হুস্বইতিসন্দিহেত থকুবন্ধানামন্তোনাশোযেভ্যইতিভূতপূর্ব্বকপরিগ্রহাদন্তপদস্ক্রন্তিঃ নোচেৎজ্ঞন্মাইত্যদোস্যাসাৎ প্রাক্ত্রমাপ্তিঃ
সমাসপ্তথকুবন্ধলোপেনমন্যইতিস্থিতোকদামাগমঃ স্থাদিতিগ্রধ্বীভিভাব্যং। জ্ঞানিদ্যন্যইতি। মন্যতেরিতিথশ্নোমত্বং। নাসিকন্ধমইতি। নাড়ীমুষ্ঠীতি থশ্ব্রস্বেমুট্মকারস্থেতিসন্ধিঃ। দিবাদোযাশব্দাবব্যয়ো দিবাক্ছীত্যথদোষাচনক্তঞ্বরজনাবিত্যমরাব্যয়বর্ণোক্তিঃ। ১১॥

शृंधकाशिका।

অকামিতি। অনব্যয়ানামুপপদানাং দম্বন্ধ্যকাং থকুবন্ধপ্রত্যয়ান্তধাতুমুহৃশ্বঃ স্থাৎতেম্বেব্যথাপ্রাপ্তি নামত্বক্ষপ্রভাদিতি যোজনা। জ্ঞানিনমিবাত্মানং মন্যতইতি মন্যতেনিন্ধশাবাত্মমানে শকুবন্ধত্বনশিতি দিবাদের্ঘ্যণ্নস্থমত্বং। নাদিকক্ষমঃ নাড়িক্ষমইত্যত্রখশিগ্যাশকাগ্নিসং যোগয়োরিতিথাধাতোঃ স্থায়োন্তিষ্ঠ-ধ্যোস্তইতি ধ্যাদেশেআকারঈকারয়োর্হ্র স্বত্বেস্থান্মুট্। নাড়ীতুধ্যনিঃ শিরাইত্যমরঃ। পৃথিতি। পৃথীং নাব্যবিবাত্মানং মন্যতইতি থশিঅনব্যয়দ্যাপিনেশিকস্থ অনকঔকারস্থনহ্রমঃ পৃথীকারস্থ পুর্বিভাবঃ। দ্যোগিকান্তামুবাহিনীত্যমরঃ। রাত্রিঃ নির্মালচন্দ্রফ্রাপ্রনিষ্বাত্রিঃ অহঃ কুঞ্জাটিকাযুক্তং দিনং। ১১॥

স্বীয়ং স্বীয়মমোরপং নাম্যন্তিকস্বরস্যৃত্। খনুবস্তান্তধাতুরপরেষু। গ্রিয়ম্মন্যান্ত্রিয়ম্মন্যঃ স্ত্রীম্মন্যোনাবমেজয়ঃ । গাম্মন্যঃ। নাম্যন্তেতিকিং জ্ঞান্যাস্ত্রীজ্ঞাহিতিস্যাণ। একস্বরস্যকিং সেনানিম্মন্যঃ। ১২॥

হ্রসামুট্ স্যাৎ। থনুবন্ধান্তধাতুষু পরেষু। লগ্নস্থবিষ্ণুঃ উদরস্তরিঃ। অন্ব্যয়ানামিত্যেব স্ক্রঃ শ্লোকঃ। ১৩॥

क्र ९ अमी शिका।

ষীয়ং। নাম্যন্তঞ্চলেকস্বরঞ্চে এবমাদিয়াৎসমাসঃ থকুবদ্ধান্তধাতুষুপরেষুনাম্যন্তৈকস্বরানব্যরোপপদস্থ একানেকরূপবতোহিপিদীয়ং স্বীয়ং যাদলাক্যকালীনমন্বিভক্তের্মিপ্সমং রূপং তত্তদাকারবৎপদং
স্থাংন কুস্মুদ্র গামাবিভিভেদঃ। যদাঅমইজুচ্চোরণায়াকারং দত্বাপঠিতঃ তেন স্বীয়রপবানমঃ স্থাদিতি।
তথাচ নামিনোহস্প্রত্য়বকৈ কস্বরস্থেতিকাত স্ত্রং। স্বরুসম্বন্ধেন তত্ত ক্রপশব্দেনবানিথিলস্বীয়ব্যাপনাদ্বীপ্লা।
নকুবীপ্লাং বিনৈবভক্ত ক্রপং দিদ্ধাতীভিচেত্ব চাতে নহম্মাত্রোক্ত্যাত ক্রপলাভঃ যথাবিভক্ত্যন্ত্বর্তনং বিনাশসিহুক্তেন তল্লাভঃ বাঁপেয়াতু বৈভক্তিকরপমানীত্মিতি পরস্বত্রপ্রত্যাতিদেশেনেতি। যদানেয়ং বীপ্লা
উপপদব্দেনাম্বিভক্তেঃ স্বীয়ং রূপং নাম্যন্তিকস্বরস্ত্রস্বীয়ং ভবতীভিযোজনা। তদন্তন্যায়দোর্বিল্যেন
নামিমদ্যীর্থুরাদিবারণায়ান্তেতি তেন গীর্মনাঃ ধূর্মনাইভিব্তিঃ। আলুনং শ্রিয়মিবমন্যতইভিথশি
শ্রিয়োমন্যেতি সমাদেইয়াদেশবদ্মাবৃত্যাশ্রিয়ং মন্যা এবং স্তিয়ংমন্যঃ স্ত্রীম্মনাইভিদ্বাবিধ্বাম্শদ্যোরিতি
বৈরপ্রাং। একস্বরস্তিকিমিতি। দেনানাশক্ষপ্রীপুংসোর্হ্ স্বাভাবেষত্বং ক্লীবের্ম্লোপাং স্থাৎ। ১২॥

गृष्धकाणिका।

স্বীয়মিতি! স্বায়ং স্বীয়মিতিবীপনা অন্ বিভক্তিনিম্পন্নরূপপ্রাপ্তার্থা অন্তথা অমঃ সম্বন্ধিরূপমিত্যবিদ্যা প্রীশক্ষ্যইযাদেশঃ স্ত্রীশক্ষ্য প্রিয়াদেশঃ স্ত্রীচ তেন প্রিয়ম্যা স্ত্রিয়ম্যা স্ত্রীমন্যইতি স্তান্ধভূপ্রিয়ম্যেতি তাদিনিতাশিক্ষেত। তুশকঃ থকুবন্ধগাতুসমুক্তায়কঃ। নাবমিতি। নাবং নোকামেজয়তি কম্পয়তীতি এভ্কম্পনে ইত্যন্ত্রীকৈত্বকনন্তাৎ এজতেঃ থশ্ভবেদিনন্ততঃ থকুবন্ধে একস্বরন্ত্রনাশক্ষ্য নাবমিত্যম্রূপং। গামিবালানং মন্যতেগালান্যঃ জ্ঞাত্মবিদ্যানিতিক্তাঃ আদন্তান্থি জ্ঞাংবিজ্ঞমিবালানং মন্যতে থশিহন্থে ব্রন্থামুট্ নাস্যন্তেত্যকুক্তেরু জ্ঞামিতিস্থাৎ ইদানাং নস্তাৎ। সেনানিম্য ইত্যত্রসেনান্ত্রান্ত ক্রাহিতিস্থাৎ। ১২॥

क्रथ्यमीलिका।

হ্বাং। অনব্যয়ানামুপপদানাং বর্ণান্ততায়।দন্তাংহ্বাং। লগেতি। লগান্ধপলিতেতিথিফুঃ মুট। অকাং হ্বইতানুবর্ত্নাদাহানব্যায়ানামিতি।১০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ব্রসাদিতি। মুডিতি টকার আগমসূচকঃ। অলগোলগঃ সকোলজ্জিতোবাভবতি লগান্ধপলিতেত্যাদিনা ভূব-চ্যুর্থেথিফুঃ। লগং রাশ্তাদেয়েক্লীবং সকুলজ্জিতয়োন্ত্রিম্বিতিমেদিনা। উদরভরণশীলউদরন্তরিঃ আয়কুক্ষুদরপূর্বকান্ত্ ঞঃ থিঃ। স্থকরইতি। হুসোকার্যোণ ক্রিয়তেহ্সো ঈষৎস্থপ্রবাৎ
সোকার্যাইতি থল্ অব্যয়োপপদক্রসামমূট্। ১৩॥

অস্ত্রগদসত্যাৎকারে। মুট্স্যাৎ। অস্ত্রস্কারঃ অগদক্ষারঃ সত্যক্ষারঃ। ১৪॥ অগিলাদ্যালে। মুট্। গিরতেঃ কঃ রিপুঙ্গিলোবাণঃ তিমিঙ্গিলঃ। অগিলাৎ কিং তিমিঙ্গিলগিলো২প্যস্তি। ১৫॥

রাত্রের্স্ ট্ কৃতিবা। রাত্রিঙ্করোরাত্রিকরোযথা। রাত্রিক্সারাত্রিমটনং। ১৬॥

क्र थमीशिका।

অস্ত্র। অস্তুতিষ্ঠতু ইত্যর্থকতিঙক্তপ্রতিরূপক্ষব্যয়মিতিবক্রঃ। অস্ত্যর্থমিতিচন্দ্রঃ। অস্তুস্থাদ-ভাসুজ্ঞানেহপ্যসূয়াপীড়য়োরপীতিমেদিনী। অস্তুকরোতি কর্ম্মণ্যণ্ অস্তুক্ষারঃ পীড়াকরঃ এবমগদক্ষারো-বৈদ্যঃ সত্যং করোতি উচ্চারয়তীতি সত্যক্ষারঃ অণিআর্ইতিবক্রঃ। অত্রাস্ত্রগদসত্যাত্রপপদাদিতিবররুচিঃ। সামান্যতইতিবহবঃ। তথাচামরঃ ক্লাবেসত্যাপনং সত্যক্ষারঃ সত্যাকৃতিঃ স্ত্রিয়ামিতি। ঘঞ্জ্যোহপি-কারইতি তুর্গোহপি। ১৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অস্থিতি। অগদশ্চ সত্যঞ্চেতি গবাশ্বপ্রভৃতিত্বাৎ সমাহারঃ অস্তুসহিত্মগদসত্যমিতি ময়ূরব্যংসকাদিত্বাৎ মধ্যপদলোপীসমাসঃ। কারেপরে অস্থ্যদসত্যাৎপরোমুট্স্থাৎ। অসূয়োপগমেহস্তুচেত্যমরঃ।
অসুয়াকারকঃ অস্পীকরণশীলঃ পীড়াকরোবা । অগদমব্যাধিং করোতাতি কর্মাণ্যণ্ উপপদসমাসঃ। রোগব্যাধিগদাময়াইতি রোগহার্যাগদস্কারোভিষক্ বৈদ্যোচিকিৎসকেইতিচামরঃ। সত্যস্করোতীতি সত্যস্কারঃ
কর্মাণ্যণ্ উপপদসমাসঃ। যদাকরণংকারোঘঞ্ সত্যস্থকারইতি ইষ্ঠীসমাসঃ। তেননোপপদাদিতিনিয়মইতিবহবঃ। ১৪॥

क्र्थमीिशका।

অগিলাং। গিলভিমাদ্ধুস্বামুট্ স্থাং। কইতি। নাম্যুপধেতিকঃ স্থামূলেতিবা। তিমির্ম্মংস্থ-বিশেষঃ। অস্তিমংস্থাস্তিমির্মামশতযোজনবিস্ততঃ। তিমিঙ্গিলগিলোহপ্যস্তিতি দিগলোপ্যস্তিরাঘবঃ। ইতিকবিপ্রবর্ষ্য বাল্মাকেরামংপ্রতি বচনমিদং। ব্রস্বাস্তানুবর্ত্তনাংতিদিগলঃ প্রোষ্ঠীগিলইতি। ১৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অগিলাদিতি। গিলশব্দেপরেগিলভিন্নাদ্ধুস্বান্মুট্ স্থাদিত্যর্থঃ। গৃনিগরণেইততেঃ কঃ ৠদন্তস্থের-শুণেগিরোহ্চিবেতিরোলঃ। রিপুঙ্গিলতীতি কেরুদন্তসমাদে স্থব্লোপেমুট্ এবমন্মত্র। ১৫॥

क्र ९ अमी शिका।

রাত্রে। রাত্রেরনুপপদাৎ কৃতিবামুট্ উপপদাত্ত্ব পূর্ব্বেণনিত্যং তশ্ববলীয়স্ত্রাৎ তেনরাত্রিশ্বস্থ ইতি ভট্টঃ। উপপদানুপপদাদিত্যন্তে। গিলমাত্রনিরাসায়ক্বতীতি। রাত্রোকরোতীতি হেতুভচ্ছীলেতি আদ্যাদি পূর্ব্বকৈতিবাটঃ। গমোডঃ রাত্রিশ্বঃ রাত্রিমটনমিত্যনট্। ১৬ ॥

गृज्यकाणिका।

রাত্রেরিতি। উপপদাদমুপপদাদারাত্রিশকাৎ কৃৎ প্রত্যয়াস্তেপরে মুট্। রাত্রেরাত্রিদ্বাগচ্ছতীতি গাম্মের্ডঃ অট্ পট্গতোভাবেহনট্ রাত্রাবটনরাত্রিমটনং সর্ব্বত্রউপপদসমাসেবিভক্তিলোপেমুট্। ১৬।

মধ্যন্দিনং লোকংপ্রীণোভদ্ররগমীদৃশং। উষ্ণঙ্করণং ভাষ্ট্রমিন্ধোইগ্নি মিন্ধশ্চ প্রকীর্ত্তিতাঃ। ১৭॥

সপ্তয়্যক্তং বিধিসূত্রাদাবর্থপদেনাযুক্তং চেত্তং। পূর্বপরাত্যঞ্চোপপদং স্যাং। করণপরাদ্যজতের্ণিন্। ভূপালোইস্কুচরোইম্মুজ্যায়ী। সূত্রাদৌকিং যঞ্ভাবেকারঃ। অর্থপদেনাযুক্তং কিং হেতুতচ্ছীলানুকুলার্থেমিতিকৃঞ্ফীঃ যশক্ষরীবিদ্যা। ১৮॥

क्र॰ अमी शिका।

প্রদেশতে কাংশির ক্রে মুড়াগমপ্রয়োগানাহমধ্যন্দিনমিতি। অতিঅর্থাদন্ধকারমিতিবাহুলকাদদক্ষিভামিনঃ অলোপশ্রুদিনং দোঅবথগুনেদ্যতি অন্ধকারমিতি ক্রেদ্যতিস্থতীতিতানঃ দিনং বাতস্থমধ্যমিতি রাজদন্তাদিঃ প্রীঞ্তর্পণেহে দ্বিনিধ্ঞ্প্রীঞ্ভ্যাং নঃ লোকং প্রীণয়তীতি কর্ম্মণ্যণ্ মুট্ভদ্রস্করণমিত্যনট্ ঈদৃশ্যক্ষরণদিং প্রাঞ্জরাং বাঢ়ঙ্করণাদিশব্দর্শং। ঈদৃশমুফক্ষরণমিতিকশ্রিত। অনট্ উফস্থকরণ্রিতিবিগ্রহঃ। জি ইন্ধী দীপ্রো ভ্রাষ্ট্রেইন্স্তাৎ প্রদান্ত্র এবস্থিমিন্ধঃ। ইন্ধের্হেরিনন্তাৎ কর্মণ্যণ্ ইতিবজ্রঃ। ভদ্রবাঢ়োফেভ্যঃ করণে ভ্রাষ্ট্রাগ্নিভ্যামিন্ধেইতি পরসূত্রং। এতেশব্দাঃ কৃতমুড়াগমাঃ প্রকীর্তিতাঃ। ১৭ ।

গৃতপ্রকাশিকা।

মধ্যন্দিনমিতি। দিনস্থমধ্যং মধ্যন্দিনং ভদ্রস্থকরণং ভদ্রস্করণং। ভদ্রঃ শিবেখঞ্জরীটের্যভেচ কদম্বকে। করিজাতিবিশেষে নাক্লীবং মঙ্গলমুস্তয়োরিতিমেদিনী। ঈদৃশং নিপাতকৃতমুডাগমং। উষ্ণস্থকরণমুক্ষস্করণং। ভ্রাষ্ট্রেত। ঞি ইন্ধিদীপ্তো রুআ। ভ্রাষ্ট্রং ভর্জনপাত্রং। ক্লীবেহম্বরীষং ভ্রামেইত্যমরঃ। কৃদস্তসমাদেস্ত্রোপঃ দর্বত্রমুট্ প্রকীর্ত্তিতাএতেশব্দানিপাতমুট্দিদ্ধাঃ কথিতাইত্যর্থঃ। গাথাছন্দঃ। ১৭॥

क्र ९ अमी शिका।

দপ্তমৃক্তং। উপপদশংজ্ঞায়াঃ সমাসার্থস্থাৎ তন্তাপিকৃদন্তেন সহবিধানাৎ ক্ৎপ্রত্যয়াধিকারঃ। বিধিসূত্রং ক্ৎপ্রত্যয়বিধায়কসূত্রং নতুসমাসাদিবিধায়কং। বিধিসূত্রাদোসপ্তম্যানির্দিষ্টং চেদ্যদিঅর্থপদেনাযুক্তং যৎপদং যচ্চপূর্বপরাত্যঃ পূর্বপরযুক্তং ততুপপদমূপপদশংজ্ঞং স্থাৎ। 'পূর্বপরাত্যেবিধিসূত্রাদিস্থাদিনি-য়মোনান্তি যথাবেটোমুঞ্জশুনীকূলপুপ্পাস্তসন্পূর্বকাৎ। দৃশঃকনিপ্কর্মপরাদিত্যাদোতথার্শনাৎ। উপসম্বদ্ধাকাঞ্জাদিযুক্তং পদমূপপদং তথাচপদ্মিত্যকৃত্বাউপপদ্মিতি গুরুসংজ্ঞাকরণমূপসম্বদ্ধং যুক্তার্থতামাপন্ধং পদমূপপদ্মিত্যয়য়ার্থেসতিসংজ্ঞাবিধানার্থং তেনপশ্রকৃত্তং করোতিকট্মিত্যয়ুক্তার্থে সংজ্ঞানিরক্তা নকর্মণ্যণ্ দৃশিনাকৃত্বস্থ করোতিন। কটস্থ যুক্তার্থহাদিতিবরক্ষচিপ্রত্যয়ঃ। এতদমুস্ত্য বক্ষ্যতিচ স্বয়ং মহান্তং ঘটং করোত্যিত্যস্থাপিক্ষককর্মণিনাণিতি। আকাঞ্জানির্ত্তিরত্রান্তসাপেক্ষকত্বাৎ। উক্তঞ্চ যৎপদেনবিনা-যস্থ নামুভাবকতাভবেদিতি। উক্তপদ্মধিকারসপ্তমীলুগন্তয়োর্থাহ্কম্ অন্তথা মন্ততেণিন্ থশাবিত্যাদো

তিৰ্য্যক্ কৃঞঃ ভূফীস্তবইত্যাদোচতত্ত্বং নস্থাৎ। নাথদৃত্যোঃ পশাবর্থেধাতোক্রট্ কর্মদাবর্থে ইত্যাদাবর্থ-পদোপাদানং কচিম্মধ্যেহপি ততুপপদমিতি জ্ঞাপয়তি যথাথার্য্যামপি ঘটঘট্যোশ্চ দণ্ডসূত্রাদৃতে শস্ত্রেয়ু অভিন্নকর্ত্রেইত্যাদিয়। সংজ্ঞায়াং তৃর্ইতি কর্মাকর্মোপদইতি বিবরণান্নোপপদস্বং। অপ্রাদে যম্ গদি-মদামিত্যাদো নোপপদত্বং পরতোনাস্মীতি বৈয়র্থ্যাৎ। যুক্ত্যাধিকারাৎ কুংপ্রত্যয়বিধিগ্রহণাৎ অশিক্ষায়া-মদঃ ঘোষেতো চেত্যাদো নতত্ত্বং। নাপ্যাখ্যাতে বর্ত্তমানেবর্ত্তমানাইত্যাদো। অরোদ্বিষন্ ভূশপ্রতি-জ্ঞয়োর্ব্বাঢ়মিত্যাদৌ স্বস্বদিদ্ধপদজ্ঞাপনাল্নোপপদত্বং। উপমানেহত্যত্যদাদি কর্মণ্যুপপদেত্বণ্চ উপমান-কর্মকত্রে বিত্যাদার্পপদগ্রহণমন্তত্তত্তানিত্যতাজ্ঞাপনার্থং তথাচদিদ্ধেসূত্রারস্ভোনিত্যায়নিয়মায় জ্ঞাপনা-য়েতি তেন ভূতমাত্রে সদবসঞ্চবঃ প্রাদ্যযোগেশ্রিনীভূভ্যঃ অপ্রাদৌমদ্যধিজপাম্ আক্রোশেমাঙ্ যুতাদেতা-বিত্যাদোনোপপদত্বম্ অতএব কুমারশীর্ষোপপদাদিত্যুপপদোপাদানম্ অত্যথা কুমারশীর্ষয়োরেতাবতেষ্ট-দিদ্ধিঃ ষষ্ঠীশঙ্কাচেদেকত্বমুপাদীয়তামিতি। অন্বয়বলাদেবনিরর্থকনিরাদেহপি শব্দযোগপ্রতিষেধার্থং তেন ক্রিয়ার্থকশক্তীচ্ছান্তিদহার্থকেইত্যাদোতথাত্বং। অত্র তত্রসপ্তম্যক্তেকতে পূর্ববিপরাত্যং ব্যর্থমিতিমৈবম্ অন্যথৈবং কথমিত্বং পূর্ববাৎ প্রত্যুত্তরস্থাক্ষময়াদানে যথাতথাপরাদিত্যাদাবব্য-য়ত্বেন হুপ্ লুপাতথাস্থানবগমাৎ অনুকারেহপি ছুর্কোধাপতেঃ বৈচিত্র্যার্থন্বা যথাতত্তত্ত্ববাশকাৎদিদ্ধাবপ্য-অতরস্থাং বিকল্পেনেতিপ্রযুজ্যতে। বিধীতি কিং ভাবেকর্ত্তরিচ ক্লীবেভাবেত্যাদে নতথা। সূত্রেতি কিং স্তম্বেরমঃ সপাটলায়াং গবিতস্থিবাং সমিতিনতথা। সংজ্ঞাফলং প্রাদ্যুর্য্যাদীত্যাদৌ। সূত্রার্থং বিরুণোতি কর্মণ্যণিত্যাদি। বিধিসূত্রাদৌসপ্তম্যানিদ্দিউমর্থপদেনাযুক্তং কর্মবাচকভূপদমুপপদমেবমন্যত্রাপি। করণ-পরাদিত্যত্ত পূর্ব্বাঢ্যং স্থবন্তমন্ত্রপরাঢ্যং করণমন্ত্রজাপেপদং। ভূপালইতি। পারক্ষণেঅর্চ্চাদিত্বাদ্বেন্ চর্গতিগভক্ষণয়োঃ অম্বুনিঅম্বুবাচরতীতিটচ্ অমুজেনইয়াজ অমুজযাযীত্যেয়ু ভুবাহ্যপপদেঃ প্রাছ্যর্য্যাদীতি-সমাসঃ। সূত্রাদৌকিমিতি। ঘঞ্ভাবেম্যাদিতিসূত্রেভাবইত্যস্থ তথাত্বেহপি সূত্রাদাবনুক্তবান্নোপপদত্বং কিন্তু ভাবেবাচ্যেইত্যর্থঃ। তেনকারইতিনভাবশব্দোপপদাপেক্ষাতথাত্বেনিত্যসমাসেদপ্তম্যলুখাস্থাৎ। অর্থেতি। হেতৃতচ্ছীলানুকূলাশ্চতেহর্থাশ্চেতি হেত্বাদেস্তথাত্বেহপি মুখ্যার্থপদযুক্তত্বাশ্নতত্ত্বমিতি ন বিদ্যাদেঃ পূর্ব্বনিপাতঃ। প্রথমাষ্ঠীতৎস্থানেপঞ্চমাস্তত্তভরে। সপ্তম্যান্তপরেতশ্মিন্ বাচ্যেতৃপপদেক্ষচিৎ। কচিৎ কৃতি প্রথমাদিভির্নির্দিষ্টেইত্যন্তে। ১৮॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

দপ্তমুক্তমিতি প্রত্যাবিধায়কস্ত্রাদেশিপ্তম্যক্তং সপ্তম্যানির্দিন্টং যত্তচেৎ অর্থপদেনাযুক্তং পূর্বপরযুক্তঞ্চযৎপদং ততুপপদমুপপদসংজ্ঞং স্থাদিত্যর্থঃ। উপপদ সংজ্ঞাফলং প্রাদূর্য্যাদীত্যাদিসমাসবিধানং।
উপপদসংজ্ঞাদর্শনায়াহ কর্মাণ্যণিত্যাদি। উপপদ সমাসংদর্শয়তি ভূপালইত্যাদি। পারক্ষণেপাতি
কল্চিদিতীনিপাতের্ল্লঃ ভূবং পালয়তীতি পালিধাতোঃ কর্মাণুপেপদেঅণ্ বিধিসূত্রাদেশ সপ্তম্যক্তত্বাদর্থপদেনাযুক্তত্বাচ্চকর্মাণুপেপদে উপপ্রসমাসঃ। এবমন্যত্রাপি। পদ্মিটিকাছলঃ ততুক্তং যত্বপ্রকরণশেষেতত্ত্রসপ্তম্যুক্তং বিধিসূত্রাদাবিতিপ্রথমঃ অর্থপদেনাযুক্তং চেত্তদিতিদ্বিতীয়ঃ পূর্বপরাচ্যঞোপপদং স্থাদিতিত্তীয়ঃ
ভূপালোহস্কুচরোহস্কু যাযীতিচভূর্বঃ পাদঃ। অন্তৎকৃৎ প্রদীপিকায়ামনুসর্তব্যং। ১৮॥

বাসরপোহপবাদঃ স্যাত্ত্বগর্বাধকোইস্ক্রিয়াং। স্ত্রাধিকারোক্তং হিত্তা অসমানরপোহপবাদবিধিঃ সামান্যবিধিবাধকোবাস্যাং। স্বরাস্ত্রাদ্মইত্যপবাদঃ তব্যানীয়াবিভূ্যুৎসর্গঃ চেয়ং চেতব্যং নাম্যুপধাৎকঃ ভূচ্বুধঃ বোদ্ধাত্রব মূহ্যং। স্থিতাবসরূপঃ কিং ডেনঅণোয্যগাযপ্রত্যরস্যানিভ্যং বাধঃ গোদঃ কার্যঃ। স্ব্রিয়াং কিং সনাদ্যন্তাদঃ ক্রেরিভ্যং বাধকঃ চিকীর্যাপুল্রীয়েভ্যাদয়ঃ। ১৯॥

क्र थर्मा शिका।

শ্রুতত্বাতুপদর্গস্থ নদমানং রূপমাকারোযস্থ দোহদরূপঃ ধর্মপক্ষাদিস্বান্মানলোপঃ। সমানঞ্চত্রনপঞ্চেত নান্তিসরূপং যন্মেত্যসরূপইতিভট্টঃ। অপোদ্যতে অনেনেতি ঘঞ্ অপবদতীতিজ্বলা-দিহাধোৰা অপবাদোবিশেষোক্তবিধিঃ উৎস্জ্যতেইসাবিতিক্সাণিঘণ্ উৎসৰ্গঃ সামাত্যোক্তবিধিঃ। উৎসৰ্গঃ পুংদিদামান্তে ভারেচত্যাগদানয়োরিতিমেদিনী। অস্ত্রিয়ামন্ত্রীলিঙ্গাধিকারে উক্তঃ অসরূপোভিন্নাকারোহপ-বাদোবিশেষোবিধিঃ কুদধিকারাৎ কুৎপ্রত্যয়ঃ অস্ত্রিয়ামুৎসর্গমাত্রবাধকঃ সামান্তোক্তপ্রত্যয় বাধকোবা স্থাৎ সামান্যস্তপক্ষেভবতীতি শক্তিশক্তিমতোরভেদবাদিনঃ। উৎসর্গবাধকঃ বাধকদ্বেন বাধকশব্দ-প্রবৃত্তিনিমিত্তন শক্তিপদার্থেন সহিতোবাস্থাৎ যথাদণ্ডাভবতীত্যুক্তেদণ্ডবিশিক্টোভবতাতি প্রতীয়তে শক্তিহানস্থ পরিসরেউৎসর্গাণাং প্রস্তৃতির্যুক্ত। বাধকশক্তেকিভাষণাৎ অন্যথাশক্তিমতি বিভাষিতে শক্তি-সত্ত্বেদামান্তাপ্রবেশনাৎ প্রকৃতিমাত্রমবস্থংস্থাদিতি সতিবাধকত্বেতৎ কার্য্যস্বাধইতি চেদেভচ্চাশক্যমাধনং ৰহিবাধকত্বেদতি তৎকাৰ্য্যস্থ বাণয়িত্বসভিযুক্তেনাপি শক্ততে নদৃশ্যতে হিনিদানস্থানুচ্ছেদে নিদানিন**উ**-চ্ছেদ্টতি যথাপ্রদীপানুচ্ছিন্নেএভোচ্ছিত্তিরিত। শক্তিঃ কারণং শক্তিমৎকার্য্যং মণিমন্ত্রাদিনাশক্তিহীনস্ত করতলানলম্ম দাহাদর্শনাং তম্মাদতীন্দ্রিয়া কাচিদনলেদাহশক্তিরস্থীতি শক্তিবাদিনঃ প্রাঞ্চঃ। বাদরূপোহ্পবাদোহস্ত্রিয়ামিহ্যক্তেঃ ক,পিতংদরূপদ্য দকুরিরহেণাদারূপ্যাৎ বদেস্তব্যইত্যপরেতি। বাসরপোহপবাদঃ স্থাদদ্রিয়ামিত্যেতাবতৈবসিদ্ধিঃ হন্তকিমিদমুৎসর্গবাধকইতি সত্যম্ উদ্পত্তে উৎসর্গবাধক-ইত্যনেনাপবাদোৎদর্গয়োরেকতরতা স্ত্রাধিকারোক্তাবপরতাস্ত্রাধিকারোক্তাবপোবং নিয়মঃ স্বীক্রিয়তে উভয়তক্র্যধিকারোক্তোনায়ং নিয়মইতি তেনচিন্তনাচিন্ত্যমিতি পদ্বয়সাধনার্থমুৎসর্গগ্রহণং। তম্মাচ্চত-ব্যানীয়াদাবেবায়ং বিধিরবতিষ্ঠতাং ন্যাদিয়ু তদ্রপঘ্যণাদেশবলাৎ ইদানীস্তশ্রুতত্ত্বাতুৎসর্গাপেক্ষয়াইসরূপ-তাগ্রাহেতি। যন্ত্রদেশত্বে অপনাদোহস্ত্রিয়াং বাস্থাদিত্যন্বয়েকৃতে ইঙাদন্তাদ্যঞ্ অল্মনান্তেত্যলপবাদেন স্ত্র্যাধিকারোংসর্গোক্তের্ব্বাধেঅধীতিগীতিনীত্যাদয়োনসিদ্ধেরন্ আদন্তাচ্চেত্যঙ্ ভবত্যেবতুল্যবলত্বাৎ। নানেনবাধশ্চকারাৎ প্রমতিরিত্যুক্তত্বাং ইদঞ্দতিসম্ভবে তেনভূর্বভূরিত্যাদোতিপাদেঃ পাক্ষিকতাশব্দাসু-করণেইতি দূত্রবলাদ্বাতথাইতি। কচিদপবাদবিষয়ে উৎদর্গস্ত দমাবেশইত্যস্ত পরিভাষাত্বাৎ বাহুল্যেন-প্রবৃত্তিদর্শনাচ্চ। সূত্রামদ কৃত্যানট্ কৃত্তেত্যভাচ কাচিৎকত্বেন বাহুল্যেনাপবাদানাং বিষয়ে উৎসর্গাণাং প্রবৃত্ত্যুপগমেনচ সূত্রাক্ষেপোনযুজ্যতইতি। সূত্রার্থং বিরুণোতি স্বরান্তাদ্যইতি। যঃ স্থাৎ স্বরইতি-তাবন্মাত্রবিধানাদপবাদঃ সামান্তবিধানাত্রব্যানীয়াবুৎসর্গো এবমন্তর্তাপি। নাকুবন্ধকৃতমসারূপ্যমিতি

প্রাদূর্য্যাচ্টিডাজম্ভানামান্ত্রপপদানিচ। রুদম্ভেন সমস্যন্তেতানি প্রাঙ্ নিপতন্তিচ। প্রাদিঃ সুধীঃ প্রগত্য। ২০॥

স্থায়াশ্রয়াদাহস্থিতাবিতি। 'স্ত্র্যধিকারমিতি জ্ঞেয়মক্ষুট্তাৎপর্য্যং স্থায়াদ্বিরণাদপীতিজ্ঞেয়ং নতু স্ত্র্যাভিধেয়প্রত্যয়বর্জনং তেন লব্যালবিতব্যালবনীয়েতি। যদ্যপিবা সরূপইতি নঞ্ শ্রুতির্নান্তি তথাপ্য-সরূপএব বাহ্বামশ্চেত্যারস্তাৎ অন্যথা আদন্তাচ্চেত্যস্ত বৈভাগিকত্বাদেবাণ্ স মাবিশেদিতি। ১৯॥

गृज्यकानिका।

বেতি। অল্পবিষয়কত্বমপবাদত্বং বিশেষভ্রমিতিয়াবৎ বহুবিষয়কত্বমুৎসর্গত্বং সামান্তত্বমিতিয়াবৎ। অপপূর্বরঃ বদ্ব্যক্তায়াং বাচি উপদর্গবলাদ্বিশেষার্থতা। জ্ঞেয়মক্ষু টতাৎপর্য্যং আয়াদ্বির ণাদপীতিবচনা-দস্ত্রিয়ামিত্যস্থতাৎপর্য্যং বিরুণোতিস্ত্র্যধিকারোক্তং হিত্তেতি। যথাশ্রুতার্থত্বেতু গন্তব্যাগমনীয়ানগরীতি নস্তাৎ। স্বরাস্তাদ্যইতি। যপ্রত্যয়স্ত স্বরাস্ত্রমাত্রাদ্বিহিততয়াল্লবিষয়কত্বেন বিশেষত্বং তব্যানীয়য়েশর্যাত্র-মাত্রাদ্বিহিততয়াবহুবিষয়কত্বেন দামাত্তবং। চেয়মিতি। চিঞ্চয়নে যঃ স্থাৎস্বরেতি যঃ চেতব্যমিত্যত্ত তব্যঃ। বুণইতি। বুণ্ অবগমে। এবমূছমিতি। জপ্যং জপ্তব্যমিত্যাপ্ত্যহনীয়মিত্যর্থঃ। স্থিতাবিতি। উচ্চারণাদাবসমানরপত্মস্থাবিবক্ষিত্জাদিতিভাবঃ। স্থিতেতি। অন্তথাড অণ্ প্রত্যয়য়োরুচ্চারণকালেহ্স-মানরপত্বেন বিকল্পেন বাধঃ স্থাৎ। চিকীর্ষেত্যাদি। কর্ত্ত্রিচ্ছাচিকীর্ষেতি সনি অনিট্ সন্মন্তদীর্ঘতেতি ঋদীর্ঘরে ৠদন্তস্থেতীর্ অগুণেহলীতি দীর্ঘঃ সমন্তাদঃ নতুক্তিঃ পুত্রমিচ্ছত্যাত্মনইতি যিন্ চানব্যয়মান্তা-ভামিতি যিনিয়াবর্ণস্থ ঈকারঃ পু্লীয়ধাতোশ্চক্তিং বাধিত্বাঅপ্রত্যয়: উভয়ত্র স্ত্রীলিঙ্গে আ। আদিনা পুত্রকাম্যেত্যাদে গ্রহণং। ১৯॥

কৃৎপ্রদীপিকা। প্রাদ্য এাদয় ভর্মাদয় চ্বিভাজন্তা কেতি দ্বন্দ্বপরোহন্তঃ দ্বয়মন্বেতি তেন প্রাদিউর্যাদিচ্যুক্তডা-জন্তানামনি স্থবন্তানুপেপদানিচকারাৎশব্দানুকারাঅন্যেচরুঢ়াঃ কুদন্তেন ধাতুনাসমস্তন্তে সমস্তানি তানি প্রাদূর্য্যাদীনি প্রাঙ্নিপতন্তিপূর্বাং যান্তীত্যর্থঃ। তথাচ শন্তুঃ উপদর্গোর্য্যাদ্যকুকরণচ্চিডাচামিতি। নিত্যার্থোহ্যমারন্তঃ অন্যথাস্থবীঃ উরীকৃত্য কুম্ভকারইত্যাদয়োযথা তথাদ্বিতীয়াদিসমাসেঃ সিদ্ধান্তীতি। অথ সমাদপ্রব্যুত্রভিধানায়ত্ত্বাৎ তত্রতত্রনিত্যসমাদন্মভামহেইতিচেম্ক্ৎপ্রয়োগভ ভূয়স্তাৎ প্রাদ্যিধ্যা-দীনা° বিশেনতঃ সমাদেনত্ন্ত্রহস্বাচ্চ। সমাসকাণ্ডেপ্রথমানিদ্দিফমিতি নিয়মস্তব্যভিচারাৎতানিপ্রাঙ্ নিপতন্তীত্যুক্তং নামোপপদস্মাস্বিধানেনএধানাহারকোব্রজতীতি ব্রজতিনানস্মাসঃ তস্থনোপপদস্কং তত্ত্র স্বয়মুক্তং বাক্যং সমাদোহতিঙন্তমিতি সমাসমাত্রলক্ষণাৎ সান্বয়িকোপপদসাহচর্ঘাচ্চদর্বতাকাঞ্জাদি-কুদধিকারেহপি খাডিতিকুত্বেতিযোগ্যতোপলক্ষকত্বেন স্বয়মুক্তং। ব্যবধানেনস্থাৎ। ভূতপূর্বাকগ্রহণার্থঞ। কুদন্তেনেতিপদমনন্তরোক্তাসরূপাপবাদমাত্রনিরাসার্থং ব্ৰহ্মহাজন্মন্যইতি প্রাদির্বাক্ষ্যতে উপদর্গ ইতিদূত্তে। স্বস্টুব্যায়তীতি কিপ্ ধ্যাপ্যোধীপীচ। প্রগত্যেতি। কর্ত্তুরৈক্যইতিক্তা সমাদেভ্যোযপ্ বস্তনাদীতিমস্ততঃ ঐকপদ্যং সমাসফলং। স্বতোনিত্যসমাসপ্রাপ্তাবপি পেদ্রুস্তশ্রুক-ইত্যাদ্যুপপদবিধানমুপপদাদন্যত্রানিত্যার্থং চকারগৃহীতশব্দানুকরণান্তর্গতত্বেহপি ডাজন্তগ্রহণং তেষামনি-ত্যাৰ্থঞ্চ প্ৰকৃত্বানমস্কৃত্বাঝনাৎ কুত্বেতি। ২০॥

\$. }. উদর্গরীচেবিস্তারেইঙ্গীরুতাবপি। রুঞ্ভৃন্তিনারুদন্তেন প্রায়েণ সম-স্যন্তেউদর্য্যাদ্যব্যয়াঃ। উরীরুত্যোররীরুতম্ উদয়ীভূয়োরীসন্। ২১॥ শ্রোষট্ বৌষট্ ব্যট্ স্বাহাবিঃ প্রাষ্কুঃ শ্রুৎস্বধাপিচ। স্বাহারুত্যাবিভূতিঃ। ধাঞাইভিধানাৎ শ্রদ্ধায়। ২২॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

প্রেতি। অপৃর্ব্বচকারঃ শব্দামুকারাদীনাং সমুচ্চায়কঃ পরচকারস্ত্ববধারণার্থকঃ। নিত্যসমাসার্থোইয়মারস্ত্রস্তেন নবানুর্ত্তিঃ। প্রাদিরিতি। সমাসেপ্রাদিরুদাঙ্থিয়তইতিশেষঃ। প্রাদিরুপসর্গপর্যায়ঃ
আখ্যাতাইন্যবিন্যাসেউক্তঃ। স্থারিতি স্পৃর্ব্বঃ ধ্যৈচিন্তায়াং কিপিধ্যাস্থানেধীঃ। প্রগত্যেতি। প্রপৃর্বাঃ
গম্ ক্রা সমাসেক্রোযপ্ বন্তনাদি নিধিদ্ধেটাং নণাঃ স্তোযপিমস্তবেতিমস্থতঃ।২০॥

क्थ्थ्रमीशिका।

উর্যাদীত্যাদের্ব্যস্থাবাচিত্থাদাহ উদ্যুবরীতি। উদ্যুবরীচেবিররীচবিস্তারেহঙ্গীকৃতোঁ ত্রয়মিত্যমরঃ। প্রায়েণক্ এ ভৃত্তিনা কৃদন্তেনোর্যাদয়ঃ সমস্তান্তেকচিৎ প্রজ্ঞায়েত্যত্রধাঞাপি। কেচিত্রপ্রায়েণসমস্তন্তেকচিৎ প্রজ্ঞাদিনাপি নসমাসইতি ব্যাখ্যান্তি। এতচ্চাভিধানাৎ অভিধানলক্ষণাহি কৃৎতদ্ধিতসমাসাইতি। ক্রমাদিকরীশব্দোযথা। ক্রীড়য়াপি নবৈযেন বিতথাবাগুরীকৃতা। হন্তক্ষারিষ্ণান্ বাণপদ্ধতির্বাগুরাকৃতা। বাগুরাষ্ণাবন্ধিনীত্যমরঃ। দীর্ঘাদেপ্রিমাণং। উরীকৃতমুবরীকৃতমঙ্গীকৃতমিত্যমরঃ। উরীভূয়েতি অঙ্গীকারবান্ অঙ্গীকৃতো বাভূম্বেত্যর্থঃ। উভয়্রোপ্যঙ্গীকারঃ প্রতীয়তেএবমপ্রত্ত। ২১॥

গূতপ্রকাশিকা।

উর্যাদীনাহউদম্যরীচেতি। কৃঞ্ভৃন্তিনেতি। অভিধানানুসারাত্তকং। প্রায়েণেতিপদাদন্থেনাপি তেন ধাঞাচেতিবক্ষ্যতি। উরীকৃষা উরীকৃত্যসমাদেত্বোযপি হ্রস্বাভূক্। উরীদল্লিত। অস্ ভূবিবিমানেবর্ত্তমানেশন্তৃশানো অস্তলোপোহতনাবস্তেঃ। ২১॥

क्रथमीलिका।

শ্রোষড়িত। এতেচোর্য্যাদয়ঃ স্বসার্থেদমস্তত্তে। স্বাহাদেবহবিদ্যানেশ্রোষট্ বেষিট্ ব্যট্ স্বধা। প্রাকাশ্যেপ্রান্থরাবিঃ স্থাদিত্যমরঃ। শ্রংশ্রদ্ধায়ামব্যয়ং। ধাঞেতি। ধাঞাশ্রংশমস্থতেহভিধানাং। শ্রদ্ধায়শ্রদ্ধাবান্সূত্বেত্যর্থঃ। ২২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অপরান্ধ্যাদীনাহশ্রোষড়িতি। সমাসফলমত্রৈকলিঙ্গন্ধ:। ধাঞেতি। অদিত্যবয়শব্দস্থধাঞা কুদন্তেনসমাসস্থ্যাচীনৈ এ স্থকুন্তিরভিধানাৎ। অংহিত্বাশ্রদ্ধায় সমাসে যপিক্ত্বানির্ত্তোধাঞোহেরপ্যপায়ঃ নিমিত্রাপায়েনৈমিত্তিকস্থাপ্যপায়ইতি ন্যায়াৎ। ২২॥ সজৃঃ সহার্থে হিংসার্থেতাল্যাতালীচ সংস্কলা। ধ্বংস্কলাজ্র্ধলাধূলীসেবালী সকলাতথা। কেবল্যালীচ বেতালী সম্ সমাসমস্য্রপি। সজৃভূ য়ারয়ন্তালী-কৃত্যচ ভ্রুংস্কলাক্তাঃ। সম্ সমাকৃত্য অপিনাবার্দলাকৃত্যগুল্পাকৃত্য। ২৩॥

শাক্লীবিক্লীহল্লহলীবিস্তারার্থে। হলীক্তং। হল্লক্ত্য । চুবিশুক্লীক্ত্যা-দিতীভূতঃ। ড়াজন্তঃ পটপটাক্তং দমদ্যাভূয়। শব্দানুকারাঃ খাট্ ভূয় ঝণংক্ত্য রণংক্তং। ব্যবধানে নদ্যাং খাডিতি কৃত্বানিষ্ঠীবতি। ২৪॥

क्र ९ अमी शिका।

সজু:। সহার্থেসজু: হিংসার্থেতালী আতালীসংস্কলাধ্বংস্কলাব্রংস্কলাধুলী সেবালী সকলা কেবলী আলী বেতালীসম্সমাসমসরীএতেসমস্তন্তে। সমসরীত্যত্রসসময়ীতি কচিৎপাঠঃ। তথেত্যভিধানসূচনাৎ। তালীকৃত্যহিংসিত্বেত্যর্থঃ। অপিনেতি। অপিরনুক্তসমুচ্চায়কঃ হিংসার্থেবার্দ্ধলাগুল্গুধাচসমস্ততে ইত্যর্থঃ। বার্দ্ধলীতি সম্ভূসমস্থায়াং পাঠঃ। পীড়ার্থেগুল্গুধেতিবরক্তির্ভিঃ। ২৩॥

গুঢপ্রকাশিকা।

উর্যাদিমধ্যগতানপরানাহসজুরিতি। সজুরাদয়োহব্যয়শব্দাঃ কৃঞ্ভুস্তিনাকৃদন্তেনসমস্তত্তে ইত্যর্থঃ। সমসরীত্যত্তমস্থাকারশ্চন্দোহর্থঃ। বার্দ্ধলেত্যত্তবার্দ্দলেতি কচিৎপাঠঃ। ২৩॥

क्र श्रमीशिका।

আরী। আরীত্যাদয়শ্চয়ারোবিস্তারাঝেদমশুতে। হল্লক্তাবিস্তারং ক্রেভ্রর্থঃ। উর্বাদীমুকুণ
চুয়ন্তইদাব্রিয়তেচাবিতি। চ্যুন্তেদমাদোবথাইত্যভিপ্রায়েণদপ্তমাক্তিঃ। অশুরুং শুরুং করোতীতিচ্বিঃ
কর্তুরেকোইতিকুণ। ডাজন্তইতি। উদাব্রিয়তইতিশেষঃ। অপটৎ পটং ক্রিয়তেম্মেতিচ্বিঃ ডাজব্যক্তর্বাৎ শব্দামুক্তিচাচিদ্বিঃ পূর্বেতলাপঃ দমাদঃ অদমদমন্ত্রতীতিক্তৃণডাচ্দমাদেযপ্। নামোপ-পদানাং তত্রতিব্রোদাহার্য্যরাৎ তালুমুদাহত্যতদন্তচকারঃ দমুচ্চিত শব্দামুকারানাহ শব্দামুকারাইতি।
শব্দোহব্যক্তথ্বনিরম্ক্রিয়তে এভিরিতি ঘঞ্ শব্দামুকারাঃ যত্র ধ্বনাবকারাদয়োবর্ণবিশেষণ
নব্যজ্যকে তত্থাব্যক্তশব্দামুকরণানিথাড়িত্যাদীনি। নম্বত্রবিশেষেণবর্ণাব্যজ্যক্তেএবতৎ কথমব্যক্তামুকরণত্বমমুক্রর্বায়মুরপর্যামুরপ্রদান্ত্রকরণত্বিস্তাং তথাপিধ্বনেঃ সমানত্রাতন্মাত্রদাদ্গাদনেনাদাবমুক্রিয়তইতি তত্থামুকরণত্বমুক্রপত্তিকর্বাণ্যণ্শব্দামুকারাঃ প্রদিদ্ধাথাট্প্রভূতয়ঃ নশিঞ্জিতাদয়ইত্যাহঃ। থাডিতি।
নিষ্ঠীবনশব্দামুকারঃ কাংস্থাদিসংযোগজশব্দামুকারোঝাণ্ড। ব্যবধানইতি। আকাজ্জাযোগ্যতোপলক্ষণত্বেনাব্যরিক্রামান্যক্রমারক্রিদং। তথাচামুকরণঞ্চাসভিপরমিতি সমাদকাণ্ডেউপপদগ্রহণেনাব্যবহিতানামের সকল-সমাসপ্রতিপাদনাদিতি। নাব্যবহিতামুকরণস্যসমাদোনাধিকরোত্যের কিন্তুম্মারক্রিদমুপলক্ষণঞ্চসর্বত্রব্রধানেসমাদ্যোনভবতীতিবজ্ঞঃ। ২৪॥

সদাদরে ২নাদেরে ২সদলমলক্ষরণেতথা। সংভূয়াসংক্ত্যভ্র**ন্টানলক্ষ্**ত্যচ কন্যকাং। ২৫॥

ধাঞ্যোগেচপুরঃ। শাক্তংপুরোধায়পুরস্কৃতং। ২৬॥

গৃত্পকাশিকা।

আক্লীত। আক্লীত্যাদিচ্ছ্ট্যং বিস্তারার্থেক্ ঞভ্নতিনাক্দন্তেনসমস্ততেইত্যথঃ। হলীক্তমিত্যশুং ছন্দন্তেনাদে শোষোক্তপোদাহরণেহপিনদোষঃ। অনসিতোহসিতোভবভিম্নেতিট্বিঃ অবর্ণব্রম্বয়োন্দ্বাবীন্দীর্ঘাবিত্যকারস্তক্ষঃ চিনুলোপেভ্প্রয়োগঃ গত্যথাকর্মকেত্যাদিনাভূতেকর্ত্তরিক্তঃ। পটপটাক্তমিত্যাদি। ডাচিদ্বিভাবেডকুবন্ধেইত্যন্তাম্বরাদিলোপঃ প্যোদরাদিশ্বাৎ পূর্বেতলোপঃ সমাসঃ পরত্রজ্বাক্ত্বোমপ্চ। তপ্তলোহোপরিলোহাঘাতজশব্দাকুকারঃ ঠণং। ব্যবধানেনস্তাদিতি। বাক্যং সমাসোহতিওন্তমিতি সমাসমাত্রস্ত লক্ষণাদাকাঞ্জাবোগ্যতাসভিযুক্তপদসমূহস্ত বাক্যশ্বাদিতিভাবঃ। ২৪॥

क्र ९ अमी शिका।

অনুক্রানাং সমাসমাহদদেতি তথাপ্রারেণকৃঞ্ ভৃত্তিনাসমস্ততে এরমব্যরং। আদরানাদরয়োঃ সদসদীইত্যব্যরত্বেহপি যথাক্রমপ্রতিপত্তার্থং বিভক্তেঃ স্থিতিঃ। অনব্যরম্পীতিবজ্ঞঃ। সত্যেসাধোবিদ্যমানেপ্রশস্তেভাহিতেচ স্দিতিতান্তেহ্নব্যর্জক্তিরাং। অলং ভূষণপর্য্যাপ্তিশক্তিবারণবাচক্মিত্যমরঃ। সংকৃত্যর্থেং। অলক্ষরণেকিম্ অলক্ষরান্ধং গতঃ নিবার্য্যেত্যর্থঃ। ২৫॥

गृष् अकामिका।

চকারেণাকুক্রসমুচ্চয়াৎ সমাসমাহদদেতি। যদ্যপিসদসং শব্দাবনব্যয়াবপি স্তস্তথাপ্যব্যয়প্রস্তাবে-হব্যয়াবেবৈত্যে প্রাফো অলমব্যয়সাহচর্যাচ্চ। সংভ্রাসংভ্রআদৃতোভূত্বেত্যর্থঃ। সংভূয়েত্যত্ত্বী-য়োহর্ণেবিত্যনেন নতন্ত্রদঃ অথক্রবেহলন্তানাং সাধ্যং লিঙ্গত্রয়াপ্রিতমিত্যুক্তরাৎ সদাদরেইতি সূত্তেত্বু প্রথমানাং পদান্তানামিত্যনেনদঃ। সদ্ব্রেতিপাঠঃ প্রামাদিকঃ। অসৎকৃত্যত্ব্র্তাননাদৃত্য অলঙ্কত্যচক্ত্রকাং কল্যকাং ভ্রেয়িস্বেত্যথোঁ। ২৫॥

क्र९ अमी शिका।

পাঞ্। ধাঞ্ যোগেধাঞ্ সম্বন্ধেসতি তেনসহেত্যর্থঃ। চকারাৎ ক্রঞাদিনাচ। তদ্ধিতাস্প্রত্যাম্ত পুরোধার অগ্রতঃ ক্রেডার্থঃ। পুর অগ্রসমনেইত্যস্মাদেশিশাদিকঃ কিদম্রন্নিত্যনব্যয়েপুরঃ ক্রেডিবজ্ঞঃ। ২৬॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

ধাঞিতি। পুরোহব্যয়ং ধাঞ্বোগেচ সমস্থতেচকারাৎকৃঞ্ ভৃস্তিনাকৃদন্তেনচেত্যময়ঃ। পুরোধায়েতি।
পুর্বোদেশঃ পুরঃ অন্চ পূর্ববিরাবরাদিতি অন্তয়োঃ পুরধরশ্চেষামিতি পূর্ববিস্পুরাদেশঃ। অব্যয়ং কিং
পুরঃ কৃষাবহুন্থানেম্বিতিনসমাসঃ। পুঃ স্ত্রাপুরীনগর্য্যোবেত্যময়ঃ। পুরশক্ষপ্রাবিত্যর। ২৬॥

অন্তঙ্গত্যর্থেনচ। অশুং কৃত্য। অশুংগত্যভানুমান্। উদেতি। ২৭॥ বিদনাচাচ্ছ। অচ্ছোদ্য অচ্ছগত্যপ্রভাবভৌ। অচ্ছকৃত্য অচ্ছাভীক্ষ্যে ইব্যুরং। অনব্যুয়স্যন জলমচ্ছং কৃষ্ণাপিবতি। ২৮॥

অশিক্ষায়ামদঃ। কাণ্ডমদঃ কৃত্যজগামসঃ। শিক্ষায়ান্তকাণ্ডমদঃ কৃত্বা ক্ষিপতি। ২১॥

क्र॰ श्रमीिशका।

অন্তং। চকারাৎ কৃঞাদিনাচ। অন্তম্শব্দোহ্ব্যয়মকুপলব্দোবর্ত্তভেচাদর্শনং। তথাচান্তমদশনইত্যমরঃ। ভাকুমান্দূর্য্যোহস্তং গত্যাদর্শনং গছাউদেতীত্যর্থঃ। ভানূরশ্মিদিবাকরাবিত্যমরঃ। অনব্যয়েতুকাগুমস্তং কৃত্বাগতঃ ক্ষিপ্তং কৃত্বেত্যর্থঃ। ২৭॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

অস্তমিতি। গতিরর্থোযক্ত তেনসহঅস্তমব্যরং সমক্ততেচকারাৎ কুঞ্ ভৃস্তিনাক্দন্তেনচইত্যম্বরঃ। অস্তমিত্যাদি। অস্তং কৃত্বাঅস্তং গত্তাসমাসেল্পোযপ্। ভানূরশ্মিরস্ত্যক্তেতি ভানুমান্ তদস্বাস্তীতি-মস্তঃ সৌঅস্তস্ত্ দুনুবন্ধক্তেতি নোপধাদীর্ঘঃ। উৎপূর্বইণ্গতোতি বিভক্তোগুণেউদেতি। উদয়তীতি প্রয়ো-গস্তঅয়্গতাবিত্যক্ত তত্ত্রকচাদিত্বাদাত্মনেপদপ্রাপ্তাবপিরুচাদেঃ কচিৎপরক্ষৈপদমপিলভন্তীতিবৎ। ২৭॥

क्र थमी शिका।

বদি। চকারাদগত্যর্থেন কৃঞাদিনাচ। আভীক্ষ্ণাং পোনঃপুন্থং। অব্যয়মিতিজ্ঞাপকং। তথাহিউর্য্যাদাবত্রচাব্যয়কথনেনান্তত্রকচিদনবয়স্থাপিগ্রহণমিতি তথাচেহাব্যয়বচনাদতঃ পূর্বত্রপরত্রচানব্যয়স্থাপিগ্রহণং
তত্রাপিয়বস্তেনোদান্ততং সৎকৃত্যেত্যাদিঃ এবং জাবিকাং কৃত্যউপনিষ্থ কৃত্যেতিবজ্ঞঃ। অচ্ছং ক্ষাটিকভল্লুকনির্মালেম্বন্থমব্যয়ং। আভিমুখ্যেচেতিমেদিনী। আভিমুখ্যমাভীক্ষ্যং। অচ্ছং কৃষ্ণানির্মালং
কৃত্বেত্যর্থঃ। ২৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বদীতি। বদ্বক্তয়াং বাচিবদ্ধাতুনাসহাচ্ছাব্যয়ং সমস্ততে। অচ্ছোদ্যেতি বচিম্ববিত্যাদিনা-সম্প্রসারণং। বভাবিতি। ভাদীপ্রে অর্টিদ্বিত্বে অর্বনিদট উঃ। অন্তম্পত্যর্থেনচাস্তং কৃত্যাস্তং গত্য ভামুমান্ উদেতি। বদিনাচাচ্ছঅচ্ছোদ্যঅচ্ছগত্যপ্রভাব ভাবিতিছন্দঃ ছন্দোহনুধান্নসন্ধিঃ। ২৮॥

क्र ९ अमी शिका।

অশি। অশিক্ষায়ামনুপদেশেহর্থে অদোহব্যয়ং কুঞাদিনাসমন্ততে বিশেষাতিদিই রাদভিধানাদ্বা গত্যর্থাদের্মানুর্ভিঃ। তথাচ অদোহনুপদেশেঅদঃ শব্দস্তাদাদৌপঠ্যতে অনুপদেশে কৃদন্তেন সমন্ততে উপদেশঃ পরার্থঃ স্বয়মেবতুষদাবুদ্ধ্যা পরাম্য্যতেতদানাস্ত্যপদেশঃ সোহস্থবিষয়ইতি বরক্ষচির্ভিঃ। প্রত্তিক্রঃ ত্যদাদৌপঠ্যতইতি অনব্যয়ংত্যাদিমদঃশব্দমুপলভ্যাব্যয়েহদঃশব্দেসএবায়মিতি প্রত্যভিজ্ঞা- তিরোইস্তর্জোর ঞানবা। তিরোভূয়তিরস্কৃত্যতিরস্কৃত্যা ধাঞাচ তিরো-ধায়। ৩০॥

সাক্ষাৎপ্রভৃতয়োইপিচ। সমস্যস্তের ঞানবা। সাক্ষান্ত্রসাক্ষাৎকৃত্যসাক্ষাৎ কৃত্বালবণং কৃত্যলবণং রুত্বাশস্ত্রাণীতিতানিরুত্বেত্যর্থঃ। বশেরুত্যদশ্রীবং। মিথ্যা ভদ্রা প্রভাচিন্তা মাত্রাপ্রস্তাবলোচনা। প্রজয়া প্রাক্ষকহাচৈতে ভদ্রাদ্যাঃ শংসনার্থকাঃ। উপাজেইশ্বাকেইবলেবলাধানার্থকৌমতৌ। উপাজেরুত্য। ৩১॥

নাদিত্বমুক্তংবুদ্ধোতি কেনচিদু দ্ব্যাপরাম্ব্যমাণং তথাবিধং প্রমেয়মাশ্রিত্যাদঃ কৃত্যেত্যাদিকচিৎ প্রযুনক্তি ইপমেববাক্যন্বা কেনচিদু দ্বিস্থীকৃতমন্তোহনুবদতি অতএব এতদ্বাক্যং লোকবিদিতং ভবতিকাণ্ডমিতি কশ্চিৎকাণ্ডোহয়মিতি পরাম্ব্যগতঃ ইপ্থমর্থং কেন চিৎপ্রমাণেনকশ্চিদনুবদতিকাণ্ডমদঃ কৃত্যজগামসইতি শিক্ষায়ামুপদেশেতুনসমাসঃ কাণ্ডমদঃ কৃত্যইতি কাণ্ডোহয়মিতি পরস্থকথয়িত্বাগতইত্যর্থ ইত্যাহ। অদঃ পরিস্মিন্নত্রস্থাদিতিমেদিনিঃ। ২৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অশীতি। অত্রবিশেষানভিধানাৎ প্রধানাধিকারাচ্চকুঞাদেরসুর্ত্তির্ম তুমাক্ল্যাদীনামিতিজ্ঞাতব্যং। কাণ্ডং শরমদঃ কুত্যকাণ্ডোহ্য়মিতি পরাস্ব্যুগতইত্যর্থঃ। অদঃ কুত্বেতি। কাণ্ডক্ষেপণেউপায়ং প্রাপ্যকাণ্ডং ক্ষিপতীত্যর্থঃ। ক্ষিপ্প্রেরণেভুপ। কাণ্ডোহস্ত্রীদণ্ডবাণার্ক্বর্গাবসরবারিষিত্যমরঃ।২৯॥

क्लप्रमोशिका।

তিরো। অন্তর্দ্ধিরপবারণং স্ববিষয়ক্সাক্ষাৎকার প্রতিরোধীব্যাপারঃ। তিরোহন্তর্দ্ধোতির্য্যগর্থে ইত্যমরঃ। তিরোভূয় অন্তর্হিতোভূত্বেত্যর্থঃ। অন্তর্দ্ধোকিং তিরোভূত্বাস্থিতঃ তির্য্যকৃভূত্বেত্যর্থঃ। ধাঞা। তিরোগ্রহণং পরত্রান্তর্দ্ধিবারণার্থং চান্তং বাসূত্রং। তিরোধায়অন্তর্হিতোভূত্বেত্যর্থঃ। ৩০॥

গুঢপ্রকাশিকা।

তিরইতি। অন্তরুপপদাংধাঞঃ ক্যাদিয়াংকিঃ আকারলোপঃ কর্ত্ব্যইত্যাদিনাআলোপঃ। কুঞানবেতি। অন্তর্নানিত্যং। তিরস্কৃত্যেতি। অন্যয়স্থকদাচিৎস্যাদিতি বিদর্গস্থদঃ। তিরস্কৃত্বেতি। অন্যয়স্থকদাচিৎস্যাদিতি বিদর্গস্থদঃ। তিরস্কৃত্বেতি। অন্যাদেংপিকুত্রিচিদিতি বিদর্গস্থদঃ। ধাঞাচেতি। কুঞ্ভুস্তিনাপ্রায়েণেত্যক্তম্বাৎ ধাঞাচতিরঃ সমস্যতেইত্যথঃ। ধাঞাচতিরইতিকৃৎপ্রদীপিকাপাঠঃ সচকুত্রাপ্যদর্শনাদযুক্তঃ। চান্তং বাসূত্রমিতি যত্ত্রেলিখিতং তদপিনযুক্তং সূত্রমেছন্দস্থাবশ্যকয়াৎ। অচ্ছন্দঃ সূত্রমিত্যুক্তিরপিনযুক্তাতথাসাতি তিরোহ নিক্ঞানবেত্যস্থ সাক্ষাৎ প্রভৃত্যোহপিচেত্যস্থাচ ছন্দোরহিত্তাপত্তঃ। তম্মাৎতিরোহন্তর্মেকিঞানবাসাক্ষাৎপ্রভৃত্যোহপিচেতি অনুকুপ্ছন্দোবদ্ধং সূত্রং ধাঞাচেতিন সূত্রমিত্যবলোকনীয়ং। ৩০.॥

क्९श्रमीशिका।

সাক্ষাৎ। সাক্ষাদাদয়োযথাভিধানমর্থেরুসমম্যন্তেকৃঞানবা। সাক্ষাদ্মিথ্যাশব্দী প্রসিদ্ধার্থো অনয়োরচ্যন্তয়োঃ চার্থেসতিসমাসঃ তেন সাক্ষাৎ কৃত্যাদৌ অসাক্ষাৎসাক্ষাৎকৃত্যেত্য- মধ্যেপদৈনিবচনেচানুপধানে। মধ্যেভূয় মধ্যেকৃত্য মধ্যেকৃত্বাপদে কৃত্যো-পকারান্সঃ। পদেকৃত্বানিবচনেকৃত্য নিবচনেকৃত্বা অভাবার্থোনিশবঃ। অনুপধানেকিং ছন্তিনঃ পদেকৃত্বাশিরঃ শেতে। ৩২॥

র্থোবোদ্ধব্যঃ তথাচশস্তুঃ সাক্ষাদাদেচ্যুস্তস্থপর্যুদাসোহত্তনঞ্ তেন চুর্থ সৈবগ্রহণং চ্যুর্থাভাবেনসাক্ষাৎ কৃষ্ণেতিসাক্ষাৎ স্বরূপং কেনচিৎপ্রকারেণবিশিন্তং কত্বেতিবজ্ঞঃ। লবণবশেশব্দাবব্যয়ে প্রভৃতিগ্রাহ্মে তীক্ষাধীনাথোঁ। মিথ্যেত্যাদি। এতেসাক্ষাৎপ্রভৃতয়ঃ অত্রভদ্রাদ্যাঃ প্রজেকহান্তাঃ শংসনার্থকাঃ শংসনজিন্যাবাচিত্বাৎ অচ্যুর্থোঘটতইতিভাবঃ। উপেতি। উপাজেঅম্বাজেশব্দাবেকারান্তাবব্যয়ে অবলেবলাধানার্থকোসমন্যেতেইতিপ্রাক্ষঃ। সাক্ষাৎ প্রভৃতী এতাবিতিস্বীকৃতং। উপাজেক্ত্যঅবলেবল্যাধায়েত্যুর্থঃ। ৩১॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

সাক্ষাদিতি। সাক্ষাংশব্দোহ্ব্যয়ঃ প্রত্যক্ষার্থকঃ সপ্রভৃতিরাদির্য্যেসামিতিবিগ্রহঃ। অপিঃ কুঞা নবেতিসমুচ্চায়কঃ অস্ভৃত্যাং নিত্যং। অবোগ্যস্থাৎধাঞাচেতিনাস্বীয়তে। বশেকৃত্যেতি। অধীনং কুত্বেত্যর্থঃ। প্রভৃতিগ্রাহানপরানাহমিথ্যেত্যাদি। মিথ্যাশব্দঃ সত্যভিন্নম্যার্থকঃ। এতেশব্দঃ সাক্ষাৎপ্রভৃত্যঃ তত্রভদ্রাদ্যাঃ শব্দাঃ শংসনার্থকাঃ কথনার্থকাঃ সাক্ষাদাদয়োহত্যেতুসপ্রসিদ্ধার্থকাই-ত্যর্থঃ। উপাজেঅস্বান্তে এতাবিপি সাক্ষাৎপ্রভৃতীইতি স্বমতেজ্ঞাতব্যং। প্রাচীনমতেসূত্রান্তরং। ৩১।

क्र९ अमी शिका।

মধ্যে। মধ্যেপদেনিবচনেইতি দপ্তমান্তপ্রতিরূপকমব্যয়মিতি বররুচিঃ। দপ্তমান্তাকুকরণমব্যয়মিত্যপরে। মধ্যেমধ্যবাচীপদেপদবাচীবচনেবচনার্থঃ নেরভাবার্থস্তেন নিবচনেবচনাভাবার্থঃ। পরেতু
নিবচনে বচনাভাবার্থ ইত্যুক্তবন্তঃ। অনুপেতি। উপাধানমুপশ্লেমঃ দচ দ্রব্যন্বয়দংযোগঃ। অনুপধানে
দ্রব্যন্বয়াদংযোগেহর্থেগন্যে এতে দমস্তন্তে। মধ্যেভূয়েতি। গণনাদেশ্বধ্যেভূত্বেত্যর্থঃ। মধ্যেকৃত্বা
মধ্যেকৃত্য। পদেকৃত্যোপকারানিতি। উপকারাণামদ্রব্যন্বাদনুপধানতা। নিবচনেকৃত্যবাচং নিয়ম্যেত্যর্থঃ বাগান্মস্কোচে বাচোহদ্রব্যন্বাভন্ত্রং। হস্তিনইতি। পদশিরদোর্দ্রব্যন্তপধানন্থমিতি প্রাঞ্চঃ।
অনুপধানে অগেণ্ডুকার্থে উপধানভূপবর্গইতিনব্যাঃ তর্মাধুনিবচনেমনদোস্তদদঙ্গতেঃ। ৩২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

মধ্যইতি। মধ্যেপদে নিবচনে একারান্তাব্যয়পদত্রয়ং কুঞানবা অস্ভূল্যাং নিত্যং সমস্ততেইকুপধানার্থে উপধানং বালিশইতিখ্যাতং তদ্ভিনেইর্থে। মধ্যেপদেইত্যনয়োরূপধানম্বসম্ভবেইপি
কদাপ্যসুধানম্বং নিবচনেইত্যস্তসদানুপধানম্বস্তাতি নানুপধানেইত্যনুপপলং। কুৎপ্রদীপিকায়াং যহক্ষ্
অনুপধানে অগেণ্ডুকার্থে উপধানন্ত প্রবর্হীতি নব্যাস্তর্মসাধুনিবচনেমনসোস্তদসঙ্গতেরিতি তল্পসাধুস্বোক্তানুপধানস্তাপি তত্রাসঙ্গতেঃ। যদিদ্রব্যদয়সংযোগাভাবাদেবানুপধানম্বং তত্রিসিদ্ধং তর্হিমন্তক্ত উপধানম্বাভাবাদেবানুপধানম্বং তত্রিসিদ্ধমিতিভুল্যমেতং। যদ্ধপরসূত্রেউক্তং দ্রব্যেণসহ্মনসঃ সংযোগাভাবাদিতি

তথামনস্থারসি। মনসিকৃত্য উরসিকৃত্য মনসিকৃত্বা উরসিকৃত্ব।। উপধানেতু উরসিকৃত্বাপাণিং শেতে। ৩৩॥

উদ্বাহার্থেনিত্যং হস্তেপাণোচ। সীতাং হস্তেকৃত্যপাণো কৃত্যচৰুক্মিনীং। ৩৪॥ বন্ধনে প্রাধ্বং। প্রাধ্বং কৃত্যারিমগাং। ৩৫॥

তদপিন সমীচীনং তথাহি চাক্ষ্বাদিপ্রত্যক্ষেচ চক্ষুরাদিনাসহমনঃসংযোগসাহেতুত্বাদিতি ভাষাপরিচ্ছেদটীকায়াং সিদ্ধান্তমুক্তাবল্যাং মনসঃ সংযোগস্বীকারাং মনসোদ্রব্যত্বেন দ্রব্যান্তরেণসহতাবেবাযুত্সিদ্ধোদ্বাবিত্যযুত্তসিদ্ধত্ববিরহেণ যুত্তসিদ্ধত্বাংশংযোগেবাধাভাবাং অন্যথাতিলেরু তৈলমিত্যাদাবপিসংযোগোনস্থাং।
হস্তিনইতি। অত্র উপধানার্থতয়া ন সমাসঃ। ৩২॥

क्र॰ श्रमीशिका।

তথা। মনস্তারসীত্যসুকারায়াগ্রিকার্য্য:। তথাসুপধানে মনিদ উরিদ ইত্যেতো দপ্তম্যন্তপ্রতিরূপকাব্যায়াবিতি বররুচিঃ। অনব্যয়াবিত্যপরে। মনিদিক্ত্যেতি। কিমপিবাক্য: হৃদয়েক্ত্রেত্র্য:।

যদিকিমপিদ্রব্য: মনিদক্রাবৃদ্ধিস্থ: চিন্তয়ন্ গতইত্যুচ্যতে তথাপি নাস্ত্যপধান: দ্রব্যেণসহমনসঃ সংযোগাভাবাৎ সহিয়ত্তিদদ্ধবস্তনোঃ সম্বন্ধ: তচ্চপৃথক্দিদ্ধরং মনদোহমূর্ত্ত্রায়তথারমিতি। উরঃ পাণ্যোর্দ্রব্যমাত্রপধানতা। নব্যাস্তিদ্বিতীয়গেণ্ডুকস্থানীয়েহন্যস্ত উরিদিপাণিং ক্রাশেতইত্যুপধানস্থমিতি ব্যাথ্যান্তি। ৩০॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

তথেতি। তথাঅনুপধানে মনসি উরসি অব্যয়পদন্বয়ং কুঞানবাসমন্ততে ইত্যর্থঃ। উরসিকৃষা পাণিমিত্যত্র ভিপধানেহর্থে নসমাসঃ পাণিমুপধায়েত্যর্থঃ। মনসিপক্ষেহ্নুপধানং স্বরূপাখ্যাতং। নঞ্-সঙ্গতিস্তম্যুকোনবক্তাতি বদবগন্তব্যা। ৩৩॥

क्रथ्यमोशिका।

উদ্বা। উদ্বাহার্থে বিবাহার্থে হস্তেপাণাবিত্যেতো সপ্তম্যন্তামুকরণশব্দোলাকোপচারাৎ ক্ঞর্থং
নিত্যগ্রহণাচ্চ কুঞা সমস্যতে। অব্যয়াবিতিকশ্চিৎ। অর্থপদাভাবেহিপ সমাসমূত্রে উপপদশঙ্কানান্তি
তথাপি সপ্তম্যন্তামুকরণসাহচর্য্যাত্মদাহেচ সমস্যতেইতি শঙ্কয়ার্থইতি। সীতাং হস্তেকৃত্যেতি।
সীতায়াহস্তং হস্তেকৃত্বেত্যর্থঃ। তেনবিবাহং কৃত্বেত্যর্থোভবত্যেব। সূত্রেহমুকারপাঠান্ধবিভক্তেন্নুক্।
উদ্বাহার্থে কিং হস্তেকৃত্বাকাণ্ডং গতঃ। ৩৪॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

উদ্বাহেতি। হস্তেপাণোশব্দাব্দাহার্থাবব্যয়ে। নিত্যং কৃঞা সমস্থেতে ইত্যম্মাদস্ ভূভ্যাং নসমাস্ইত্যর্থাল্লভাতে। ৩৪॥

क्रथमोिका।

বন্ধন্দ। বন্ধনার্থেপ্রাধ্বং সমস্ততে কৃঞা। প্রাধ্বমব্যয়মামুক্ল্যবর্ত্ততে **আমুক্ল্যার্থকং** প্রাধ্বমিত্যমরঃ। তচ্চামুক্ল্যং বন্ধনবিষয়ঞ্চেবতি তদাসমাসইতিভাবঃ। প্রাধ্বং কৃত্যেতি। উপমায়ামুপনিষজ্জীবিকাচসমদ্যতে। লক্ষ্মীমুপনিষৎ কৃত্যজীবিকাকৃত্য-পার্বতীং। ররাজদ্রোপদীমধ্যেসভমর্জ্জুনমিচ্ছতী। উপমায়াং কিং জীবিকাং কৃত্বাগতঃ। ৩৬॥

অগ্রহেক্ত্র জ্বামাংসংশ্যেনোগতঃ। ৩৭॥

বন্ধনবিষয়েহরিমনুকূলয়ি স্বাগতইত্যর্থঃ। বন্ধনে কিং প্রাধ্বং কৃত্বা শকটং গতইত্যত্রাবন্ধনহেতুমানুকূল্যং কৃষ্বেত্যর্থঃ। ৩৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বন্ধনইতি। অব্যয়ানামনেকার্থস্বাৎপ্রাধ্বমব্যয়ং বন্ধনার্থকং। রুচিনাথভট্টাচার্য্যোইপি প্রাধ্বং কৃত্যবধ্বেতি ব্যাখ্যাতবান্। বন্ধনেকিং প্রাধ্বং কৃত্বাগতঃ আমুকুল্যং কৃত্বাগতইত্যর্থঃ। মধ্যেইত্যাদি এতৎসূত্রপর্য্যন্তং গীতিচ্ছন্দঃ। ৩৫॥

क्ट्थिमीशिका।

উপ। উপমানং প্রাদিদ্ধর্শ্বাশ্রয়ং আরোপিতধর্শ্বাশ্রয়উপমেয়ম্ এতত্ত্তয়নিষ্ঠোধর্শ্বউপমিতিরূপমা উপমায়ামুপমিতো গম্যায়ামুপনিষজ্জীবিকাশন্দোরুঞাসমন্তেতে। উপনিষদহস্যোধর্মঃ আত্মপ্রকাশকো-বেদভাগন্দ। ধর্মেরহস্ত্যুপনিষদিত্যমরঃ। জীবয়ত্যনয়েতি জীবিকাজীবনোপায়ঃ অনব্যয়াবেতো তথাচ শস্তুঃ উপনিষদমিব জীবিকামিব রুম্বেতি। জীবিকাং কুম্বেতি স্বয়মপুর্ক্তং। লক্ষ্মীমিত্যাদি। উপনিষদমিবরুম্বাজীবিকামিবরুম্বেতিবাক্যং তথাচোপনিষজ্জীবিকে যথাক্রচিরম্বেনলোকেষীরুতে তথাকান্তাং লক্ষ্মীং পার্ববিশিশ্বরুত্ত অনুরুত্যেতি তাৎপর্য্যার্থঃ। ররাজেতি। সভায়ামধ্যং মধ্যেসভ্যিতি ষষ্ঠ্যবৈত্যেরয়ভাবেঅস্তব্যৈত্বং। ইচ্ছতীতি তুদাদিয়াৎ শস্তুনোবালোপঃ জীবিকাং রুম্বেতি। জীবনোপায়ং রুম্বেত্যর্থঃ। ৩৬॥

গৃ ঢপ্ৰকাশিকা।

উপেতি। উপনিষজ্জীবিকাশব্দাবনব্যয়ে) উপমায়ামর্থেক্কঞাসমস্ত্রেত। উপনিষৎ কৃত্যসদৃশীক্ত্যত্যর্থঃ। এবমপরস্থার্থঃ। ভবেত্নপনিষদ্ধশ্ববেদান্তবিজনেস্ত্রিয়ামিতি মেদিনী। ধর্মঃ সাদৃশ্যধর্মঃ। ৩৬॥

গু ঢপ্ৰকাশিকা।

অগ্রহইতি। অগ্রহেংগ্রহণেংর্থেঅন্তর্জ ত্যেতি সিদ্ধাতি অর্থাৎ ক্ষঞাসহান্তঃ পদং সমস্ততে। অন্তর্জ ত্যেতি। ক্ষঞ্হরণস্বীকারন্তেয়নাশনেষু অন্তর্মাশিয়িত্বেত্যর্থঃ। অন্তর্জ ত্বেতি। পাদাভ্যন্তরে-গৃহীত্বেত্যর্থঃ। শ্যেনঃ পক্ষিবিশেষঃ। ৩৭॥ তৃপ্তে হিস্তে র্য্যোগেকণেমনঃ। কণেহত্যপয়ঃ পীতং মনোহত্যাদদেধনং। ৩৮॥ অনমস্ভাব্যয়েনোপপদং নহিসমস্যতে। বেলাত্ত্ং সময়োদাতুং গস্তুং শক্ত ইমাদিশঃ। অনমস্তেতি কিম্ উদরপূরং ভুডেক্ত। ৩৯॥

क्ट्थनी शिका।

তৃপ্তো। তৃপ্তাবভিলাধনিবর্ত্তনেগম্যেকণেমনঃশব্দোহন্তিনাসমস্যেতে হন্তের্য্যোগেইতি বৈচিত্ত্যার্থং। কণেশব্দোহব্যয়মভিলাধার্থঃ তৎসাহচর্যান্মনোহব্যয়মিতিপ্রাঞ্চঃ। অনব্যয়কণেসপ্তম্যন্তানুকরণমতোন স্থনু গিত্যুপরে। কণেহত্যেতি। তাবৎপীতং যাবদভিলাধোননিবর্ত্তইত্যর্থঃ। তৃপ্তোকিং কণেহত্বাগতঃ সূক্ষোধান্তাং শেহত্বেত্যর্থঃ। কণোহতিসূক্ষোধান্তাংশে লবলেশকণাণবইত্যমরঃ। ৩৮॥

গূতপ্রকাশিক।।

তৃপ্তাবিতি। তৃপ্তিরভিলাষনির্ত্তিঃ তস্তাং গম্যমানায়াং হন্তের্য্যোগেহন্ধাতুনাসহকণেমনঃ
সমস্তেতে ইত্যর্থঃ। কণেহত্বাকণেহত্যনলোপেক্রোযপ্ অভিলাষনির্ত্তিপর্যন্তং পয়োভ্রয়ং জলম্বাপীতমিত্যর্থঃ। পয়ঃ ক্ষীরং পয়োহমুচেত্যমরঃ। মনোহত্যেতি। মনস্থিনির্ত্তিপর্যাত্তং ধনমাদদে
গৃহীতবানিত্যর্থঃ। আদদইতি। আঙ্পূর্বরঃ ডুদাঞ্দানেদাধাতাঃ পরোক্ষায়াএবিভক্তো চঙ্ সন্ য়ঙ্পরোক্ষাম্বিত্যাদিনাদ্বিত্বেঅভ্যাদেরস্বঃ আকারলোপঃ কর্ত্ব্যইত্যাদিনাআলোপেপরগমনং। ৩৮॥

क्ल्भूमी शिका।

উপপদসমাসশুতত্ত্ত্ত্ত্ত্বাচ্যৱেপ্ৰসঙ্গাৎ তিন্নিষেধমাই অনমেতি। অম্ভাগোইন্ডোযশুতদমন্তং। ন অমন্তমনমন্তঞ্চলব্য়ঞেতিবিগ্ৰহঃ। অমন্তভিন্নাব্যয়েনভুমাদিনানোপপদং সমস্তত্ত অমন্তেনভুসমশুত্ত্ব । বেলেতি। বিভক্তিবিরহেণ তদভাবাপরিচয়াদাহসময়োদাভূমিতি। ইহায়ঃ শব্দাল্লুক্ সমাসভান্তেরাহণগন্তং শক্তইতি। সমাসেহত্রশক্তঃ পূর্বেপতেদিতি। দিশউহনানি ময়াদর্শিতাইতিশেষঃ তেন স্বাহং কৃষ্বালবণং কৃষ্বাইত্যাদ্যাউহাঃ। উদরপ্রমিতি। চর্মোদরপরাৎ পূরেরিতিণম্। অব্যয়েনেতি কিং কৃষ্বকারইতি। ৩৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অনমন্তেতি। অমন্তভিনাব্যয়েনকৃদন্তেন উপপদং ন সমস্তেইত্যর্থঃ। বেলাসময়ঃ। অদ্ ভক্ষণেঅদনমত্নিতি অভিন্নকর্তক্তাগ্রাশক্তাচ্ছান্তিসহার্থকে। ঘটরভ্ লভ্ ধ্বার্ছার্থেকালবেলাদিকেচ-তুমিতি তুন্ প্রত্য়াঃ। তুন্প্রত্য়ান্তভামন্তভিনাব্য়াত্বেন তেন বেলাইত্যুপপদস্থ ন সমাসঃ। পূর্ব-প্রয়োগরয়েসমাসদন্দেহাদাহগন্তং শক্তইতি। শক্তসামর্থ্যেশক্ষোতিস্মেতিশক্তঃ গত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনা-ভূতকালেকর্ত্তরিক্তঃ। উদরপ্রমিতি। উদরংপ্রগ্রিহাউদরপ্রমিতিণম্। ভূঙক্তইতি। ভূজ্ পালনা-ভ্যবহারয়োঃ তে বিভক্তো স্বরতোনাস্বরনোস্তোক্ষণাদীনামিত্যস্বরনঃ অনবনেভুক্তইত্যাল্যনেপদং। ৩৯॥ তৃতীয়াদেরমন্তৈর্বা। তৃতীয়ান্তেমৃপদংশেরিত্যাদিবিহিতামন্তৈরুপপদং বাসমস্যতে। মাংসোপদংশমতিসঃ। মাংসেনোপদংশমতিভাক্তাপকর্ষং ভাক্তাদপদকর্ষং ধানাভুতেক্ত। ৪০॥

জ্বান্তেন্চবা। উপপদং সমস্তেইমর্থে। উচ্চৈঃ কৃত্বা উচ্চৈঃ কৃত্যগায়তি। চিরপ্রবাসিন্ পুল্রস্তেজাতইতি। তৃতীয়াদেরিত্যেবধলুকৃত্বা। ৪১॥

क्र थ्रमी शिका।

অমন্তেবিশেষমাহত্তীয়েতি। প্রাপ্তেবিকল্পঃ। কুন্তোপলক্ষিতঃ কুন্তইতিবৎগোণ্যান্বত্তাতৃতীয়োপলক্ষিতং তৃতীয়ান্তেযুপদংশেরিতি সূত্রমাদির্য্যন্ত সূত্রচয়ন্ত যদাতৃতীয়েতিপদমাদির্য্যন্তওতৃতীয়ান্তেযুপদংশেরিতিসূত্রমাদির্য্যন্তত্বিধাপদলাপীদমাদঃ উভয়পাকার্য্যকারণদন্তম্বনী যদাতৃতীয়াআদির্যন্তত্বতীয়াদি তৃতীয়ান্তেদিত্তি প্রকারভাবিহিতামন্তৈরিতি তত্রস্বয়মুক্তত্বাদত্রাপেপঞ্চমী। সংশ্রমপাকুর্বন্ বির্ণোতি তৃতীয়ান্তেদিতি। তানিচ যথাতৃতীয়ান্তেযুপদংশেঃ ক্রিয়ােকেকর্ত্রে সপ্তম্যন্তে তৃতীয়ান্তে উপপীড়েতি অপাদানইতি দ্বিতীয়ান্তেচ অক্রহেঙ্গে অঙ্গেপরীতি বীপ্লাবিষয়ে আভীক্ষ্যার্থে কালবাচীতি নামশব্দেইতিণ্য অব্যয়ের্ক্ঞঃ তির্য্যক্রগুইতি তসন্তাঙ্গেতি তৃফ্যাংভুবইতিক্ত্বাণমো বাড়েশেতানি আদি-আহ্বানি। নমুতৃতীয়াদেরব্যব্যব্বৈতিকৃতে পরসূত্রমপ্যলগিতমিতি নবাচ্যং মাংসেনাপদংশমিত্যাদাব্যুপদং শংযন্তেত্যনব্যয়েনাত্যুপদং শমাদিনাঅমন্তত্বেন তেনৈবোপপদসমাসাৎ তেন মাংসেনাত্যুপদংশং মাংসোপদং শমিতিচবাস্থাৎ বদ্যন্তক্রান্তেনাপিবা তেন বণৎক্ত্যাপতভুবীতি। ৪০॥

গূতপ্রকাশিকা।

তৃতীয়েতি। তৃতীয়াদেরিতি সম্বন্ধেষ্ঠীসম্বন্ধশ্চবার্যকারণভাবঃ তেন তৃতীয়ান্তেযুপদংশেরিত্যাদিনা তৃতীয়াদেঃ সম্বন্ধেনবিহিতৈরমন্তৈঃ রুদক্তৈর্বাউপপদংসমস্ততে অথবা তৃতীয়াদির্যক্ত তৃতীয়াদি
তৃতীয়ন্তেযুপদংশেরিতিসূত্রম্ এতদারভ্য বিহিতামন্তৈর্ণকারান্ত্রকামনৈত্তরুপপদং বা সমস্ততেল্যব্লোপেপঞ্চমী। বক্ষ্যতিচ এতদারভ্যবিহিতণমন্তৈস্ততীয়াদেরমন্তৈর্বেতি বিকল্পসমাসইতি। মাংসোপদংশমিতি। জ্বার্থেণমোবিধানাৎ মাংসেনোপদশ্যইত্যর্থে তৃতীয়াত্তেযুপদংশেরিতি ণমন্তেনমাংসেনেতি
তৃতীয়ান্ত সমাসঃ। ভক্ষপাকে ভৃক্ষন্তিধান্তাদিকমত্রেতি ধাতোপ্রত্কর্মাদাবর্থেধুভন্তয়োর্জাদিজোলুক্
ভক্জাদের্জ্বস্থাভবেৎ ক্রিদেকপদেহপিস্থাদিতিদীর্যঃ ভ্রাপ্তৌভর্জনকপালঃ। ক্রীবেহম্বরীয়ংভ্রাপ্তৌনেত্যমরঃ। ধানাভ্র্ট্যবচূর্ণং। ধানাভ্র্ট্যবেপ্তিয়ইত্যমরঃ। ৪০॥

क्र ९ श्रिमी शिका।

জ্বা। তৃতীয়াদৈর্বিহিতেনজ্বান্তেন। বাগ্রহণংস্থিত্যর্থং। পূর্ববসূত্রোক্তমন্ত্যং চতুন্টয়ংজ্বাবিধায়কং। উচ্চৈঃ কুত্যেতি। অব্যয়েষিতিজ্বা কিং গায়তীত্যাকাজ্জায়ামাহ চিরপ্রবাদিনিতি। থলুকুত্বেতি। তৃতীয়াদিপ্রাক্তনেননিষেধ বাচ্যলংখলোরিত্যনেন জ্বা। ৪১॥

অনঞ্ সমাসেক্ত্বোষপ্। প্রাপ্যাগত্যপ্রগত্যত। নঞ্সমাসে ন অক্তব্বা অহত্বা। নঞ্ সমাসাভাবইতিসম্বন্ধাদসমাসেপি কচিৎসন্ধ্যাংবধূং গৃহুকরেণগাঢ়ং। কৃত্তদ্বিতসমাসাদিরভিধানান্সসারতইতিবচনাৎ পরিধাপয়িত্বেতিকচিং। অব্যয়-সমাস্ঞাইণাৎ পরমক্ত্বতিন্যপ্। ৪২॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

ক্তেতি। অত্রবাগ্রহণং পরতানির্ভ্রর্থং। তৃতীয়ান্তেষ্পদংশেরিত্যাদিনাবিধেয়জ্বান্তে নচ ক্ঞা বাসমস্থতইত্যর্থঃ। ত্রতচ্চকারেণজ্ঞেয়ং। জুল্ডেনচবাউচ্চৈঃ ক্রোচ্চিঃ ক্ত্যগায়তীত্যেবং ছন্দঃ। ৪১॥

क्र९थमीशिका।

সমাদফলমাহ্অনঞিতি। নন্ঞ্ অন্ঞ্ নঞঃ দাদৃশ্যবাচিত্বেন্যজ্ঞাতীয়েতিস্থায়েন বান্ঞ্ভিন্না-ব্যয়ং লভ্যতে তেন সমাসইতিবিগ্রহঃ নঞ্জিল্লসমাসেনঞ্সমাসাভাবেইতিচ। নচ্যপান্তরঙ্গাণাং বাধনস্থ বাচ্যস্বাৎকথং প্রকৃত্যাশ্রিতত্বেনান্তরঙ্গস্তাসমাসইতি বাচ্যং সমাসাৎ প্রাক্যপোহপ্রাপ্তেঃ তথাহি সমাস এব তজ্জনকঃ নহিজনিষ্যমানোজাতম্বাধতইতি। যপঃ প কুবন্ধশ্বাভূক্। প্রাপ্যেতি। আপ৯ব্যাপ্তো। বস্তনাদীতি মশুতঃ। অকৃত্বেতি। নঞ্মুখ্যঃ অভাবেচেতিবানঞ্ সমাসে নজুে যপ্। বাখ্যানতোহর্থবিশেষপ্রতিপত্তিরিতিন্যায়মবতারয়শ্লাহনঞ্সমাসাভাবইতীতি। উক্তঞ্চবাশবৈদ্বেবশবৈদ-ৰ্ব্বাদূত্ৰাণাং চলনৈস্তথা। এভিৰ্য্যত্ৰনদিদ্ধ্যন্তিতেসাধ্যালোকসম্মতাইতি। তথাচ অম্বা তৃতীয়াসপ্তম্যো-রিত্যস্তাববৈকল্পোনমুখ্যামুখ্যাবিনিগমাদভাবেচেতি অব্যয়ীভাবেহপি তথারূপাপত্তেরসমাদেহপি যবুপপন্ন। ইত্যর্থঃ। পক্ষপাতিনিরাদায়কচিদিতি। সমাদানুর্ত্তেরিদমদাধ্যমপি ব্যাখ্যনসহনাৎ দাধিত্যতঃ কাচিৎ-তেনগৃহ্লাতীতিক্ত্রোযপ্। অসোরবিঃ কুঙ্কুমচর্চ্চিতাঙ্গোরক্তাংশুকেনৈবক্নতোত্তরীয়ঃ। সন্ধ্যাং বধুং গৃহ্তকরেণগাঢ়ং যামাত্ববদ্বাসগৃহং প্রবিষ্টইতি। অসৌরবিঃ সূর্য্যঃ বধুং যামাত্বৎসন্ধ্যাং করেণগাতং দৃতং গৃহ্বাদগৃহং প্রবিষ্টইত্যম্বয়ঃ। তত্রবামাতৃপক্ষেত্রগমঃ রবিপক্ষেকুস্কুমেন চর্চিতমিবা-রক্তাংশুকেনরক্তরশ্মিনাকরেণ কিরণেনতথাচরবেরশ্মিযুক্তকালএবসন্ধ্যারবেরভাবেহ্নন্তরমেব সাপিগচ্ছতীতি তেনতয়ৈবসহপ্রবি**ফইত্যুৎপ্রেক্ষাবাসগৃহং বসতিগৃহং কাব্যেহিআদিত্যঃ পশ্চিমসাগরে** নিমগ্রোভবতীহ্যুচ্যতইতি। নোক্ষমত্মাহকুত্রদ্ধিতৈতি। পরিধাপয়িত্বেতি। ক্রাদে দক্ষু ধেতি গুণঃ। অব্যয়েতি। উক্ত যুক্তি ভাষ ব্যয় সমাসগ্রহণাৎ পরমক্ক ছেতি মযুরব্যং সকেতান-ব্যয়েন পরমেণ সমাসাল্লযবিত্যর্থঃ। ৪২॥

গृ ।

অনঞিতি। ননজ্ অনজ্তেনসমাদইতিবিগ্রহং। জুইতি। ওদিঅসম্ভচ কচিদিত্যালোপং। নঞ্সমাদভিন্নসমাদেজুঃ স্থানেযপ্সাদিত্যর্থং। প্রাপ্যেত্যদি। প্রকর্ষেণাপ্ত্বাপ্রপ্রাদিসমাদেযপ্ আসমস্তাদার আপাত্যপ্রাদিসমাদেযপ্ততঃ বন্তনাদিনিষেদ্ধেটাং নণোঃ স্তোযপিমস্তবেতিমম্ভতঃ পক্ষেআগম্যেতি। এবং প্রগত্যপ্রগম্যেতিচ। নঞ্সমাদাভাবইতি। নঞাসমাসঃ নঞ্সমাসঃ ননঞ্সমাসঃ অনঞ্সমাসইতি

হস্বাত্ত্ পনুচন্ধেস্যাৎ। স্থাসংস্কৃত্যসোমস্থ। ৪৩॥

लघूপূর্বেনোইয্যপিদ্যাৎ। লঘুপূর্বস্যইনঃ অয্ন্যান্থপিপরে। আগময্যা-চিচতোদিজং। পরিণম্য্য বিগণ্য্য। লঘুপূর্বেতিকিং প্রদাপ্যগতঃ। ৪৪॥ আপোবা। ইনোইয্স্যান্থপি। প্রাপ্যপ্রাপ্য্য অধ্যাপ্যেত্যত্তনাপইন্। ৪৫॥

বিত্রহে নঞ্সমাসাভাবইতিচ সম্বন্ধাদিত্যর্থঃ। গৃহেতি। অসমাসেহপি ক্লোযপ্। ক্তুদ্ধিতেতি। আদিনাযপোহপি গ্রহণমিতিভাবঃ তেনপরিধাপয়িত্বেত্যত্র প্রাদিসমাসেহপি ন যপ্সেডকুধরুধাদিতইতি সেট্জুাগুণীতেনগুণঃ। অব্যয়সমাসেতি। অব্যয়প্রকরণসমাসগ্রহণাদিত্যর্থঃ। যতু কুৎপ্রদীপিকায়ামব্যয় নসমাসইত্যুক্তং তদযুক্তম্ উপনিধৎ ক্তোত্যাদাবনব্যয়সমাসেহপি যপোবিধানাৎ। পর্মক্ত্বতি। পরমং শ্রেষ্ঠং ক্রাপরমক্রাময়ূরব্যংসকাদিত্বাত্তৎপুরুষে অব্যয়সমাসাভবাম্যপ্। কেচিত্বপরং নক্রাপরমক্রেতি ময়ুরব্যং সকাদিত্বাত্ত ওৎপুরুষেপ্রথমতোনঞ্ সমাসেচ ন্যবিত্যাত্তঃ। ৪২॥

क्र ९ अमो शिका।

হ্রস্বাৎ। পরুবদ্ধেকৃতি হ্রস্বান্তান্ত্রুক্টিং কিদন্তোপলক্ষণাহ্যাগমার্থকা কিং তেনস্থনোবাহ্রুনোবরীত্যাগমস্থানিত্যন্ত্রাশ্রতুগিতিস্বয়মুক্তং। হ্রুহ্বিত। স্থযজিত্যাং ঙ্নিপ্ তুকিনগুণঃ। হ্রস্বাৎকিং সেনানীঃ
যবলুঃ। কথং সেনানিব্রাহ্মণকূলমিতিসত্যম্ অসিদ্ধং বহিরঙ্গমন্তরঙ্গইতিবচনাৎ হ্রস্বস্থবহিরঙ্গহং পদান্তরস্থ ব্রাহ্মণকূলস্থাপেক্ষকত্বাং। ধাত্বধিকারাং মাং সংপিপগিতি নোপপদান্যাং সাংপিপক্ষধাতোস্তর্দ্ধিম্বেক্লিপি
পূর্ব্বমেবাননিবিষয়গ্রহণাদলোপেনভবতীতি। ৪৩॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

হ্রস্বাদিতি। স্থ্রেত্যাদি। যুক্অভিদ্বস্থপনপীড়ন স্থরাসন্ধানযোগেয় স্থনোতীতি স্বত্বাস্থ্যজিভ্যাং জ্বিপ্তুগাগমঃ সংকৃঞ্দম্পরিভ্যাং কৃঞঃ প্রাক্স্ট্ সংস্করোতাতি সংস্কৃত্বাক্তি ভ্রাট্নিনাজ্বলাদিনমা-দেযপ্তুগাগমঃ সোমং স্থনোতীতিকিপিতুক্ সমাসঃ। ৪৩॥

क्र॰ अमी शिका।

লঘু। লঘুক্ষরং পূর্বাং যস্ততস্থান স্থানেঅগ্সান্তলোপঃ। লঘোরিন্ইতিপঞ্চ্যাপরার্থলাভেইপি পূর্বাগ্রহণং ব্যবধানেহপ্যাদেশার্থম্ আগময্য প্রিণময্যইতি অন্তথাবিগণয্যইতি লুপ্তাদ্ভপূর্বাকাদেবলঘোঃ স্থাদিতি। গণসঞ্জানেহদন্তচুরাদিঃ। অকারাদেরিনিবিশেষত্বাৎপাগমাদি। ৪৪॥

गृज्यकानिका।

লিখিতি। ইনঃ ইন্প্রত্যয়স্ত। অর্চিতইতি। অর্চপ্রায়াং ঞ্যুসুবন্ধাদ্বুদ্ধীচ্ছাপূজার্থাদিতি বর্ত্ত-মানেকর্ত্তরিক্তঃ ইট্। ৪৪॥

क्र अमोगिका।

আপো। আপ্৯ব্যাপ্তো। আপ্৯লস্ভনেইতিবজ্রঃ। হেত্বিনোবায্স্তাৎ অধ্যাপ্যেতি। ইঙ্ অধ্যয়নেহেত্বিনি আস্বরস্তেত্যাত্বেঅর্তিহ্রীতি পাগমেলাক্ষণিকত্বাদাপইনোনায্। তথাচাধ্যাপ্যেতি লাক্ষণি-কত্বান্ধেতিকাতন্ত্রস্তিঃ। ৪৫॥ নসম্প্রসারণংবেঞ্জ্যোঃ। যপিপরে। সংব্যায়াজ্যায়ত্বঃস্থিতঃ। ৪৬॥ ব্যেঞ্জে। যপিসম্প্রসারণংনাস্তি। আব্যায়। ৪৭॥

পরিসম্ভ্যাম্বা। যথাসম্বীয়কংগতঃ। সংব্যায়পরিব্যায়ত্রিরতামূপং পরি-বীয়। ৪৮॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

আপইতি। অধ্যাপ্যেতি। অধিইঙইনিঅধ্যাপ্যেতৃ রূপনিষ্পতিঃ অত্রাপ্সরূপসত্ত্বেহপি বাশব্দ-ব্যবস্থয়া আপ্রাতু গ্রহণাদাতিদেশিকাপ্গাতোঃ পরইন্নাস্তীতিন ইনোহ্যিতিভাবার্থঃ। ৪৫॥

क्र थ्रमी शिका।

নসম্প্র। বেঞ্তন্তসন্তানেজ্যাবয়েহানো। যপিএহাদিছাৎ প্রাপ্তস্তস্তবাধকং। নমুজ্বো দিদ্ধইতি যপান্তরঙ্গবাধনিয়মাৎতদাদেশন্তায়েন যপিচসকুদ্বাধিতন্তায়াদপ্রাপ্তস্তবাধোনযুক্তইতিনৈবং ক্লোবস্থায়াদ্বাধেযপিতৎকার্য্যপ্রতি সকুদ্বাধিতন্তায়াসম্ভবাৎ সম্ভবত্বেহপ্যনিত্যভাৎ জন্ধাবিত্যস্তাপি বিধানাদোলক্ষবিষয়ত্বাচ্চেতি। জপীত্যেব জীনঃ পুমান্বীতঃ পটঃ। ৪৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নসম্প্রদারণমিতি। সম্বাহাসংব্যায়এচাং পাঠস্থিতান্তানামিত্যেকারস্থান্বং। আজ্যায়বয়োহানিং প্রাপ্যক্ত্যন্ত্র তুষ্খেণস্থিতইত্যর্থঃ। নমু সমাদেবিভক্তিলুকিপ্রকৃতিকার্য্যনির্ত্তোবিশেষত্বাৎ প্রাক্ যপিকৃতঃ সম্প্রদারণপ্রদঙ্গইতি কৃতংসূত্রেনেতিমৈবং তদাদেশন্তায়াদ্যপোহপিকিত্তমীকারাৎ অন্তথাসং গৃহ্যেত্যাদিনস্থাৎ। নঞ্গ্রহণামাত্রবাপ্রবৃত্তিঃ ৪৬॥

क्र ९ अमी शिका।

ব্যেঞ। ব্যেঞ্দম্বরণেবচ্যাদিচ। পৃথক্করণং পরত্রাস্থলাভার্যং। ৪৭॥

গূতপ্রকাশিকা।

ব্যেঞ্তি। চকারোযপিনসম্প্রারণমিতস্তসমুচ্চায়কঃ। আঙ্পূর্বোব্যেঞ্এচআত্বং। আবী ত্বাআব্যায়েতিবচিম্বপ্ যজবদিবপীত্যাদিনাসম্প্রদারণপ্রাপ্রোনিমেধঃ। সম্ব্তেত্যর্থঃ। ৪৭॥

क्९ श्रमीशिका।

পরি। কংশিরঃ সম্বীয়াচ্ছাদ্যেত্যর্থঃ। ত্রিবৃতাঋখিশেষেণ। ত্রিগুণীকৃতসূত্রেণপরিবীয়বেষ্টায়ি স্বেতিবজ্ঞঃ। আভ্যাং কিম্উপব্যায়। ৪৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

পরীতি। আভ্যাং ব্যেকোযপিবাসম্প্রদারণমিত্যর্থঃ। সম্বীয়েতি। সম্বীম্বাসমীয়সমাসেবিভক্তিলুকি প্রকৃতি কৃতকার্য্যনিরভৌত্তোযপিসম্প্রদারণং সম্প্রদারণমন্ত্যঞ্চেদীর্ঘমিতিদীর্ঘঞ্চ। কৃংশিরো়েহ্মুনোরিত্যমরঃ। কংস্থীয়সমূ স্থাগতইত্যর্থঃ। ৪৮॥

মাদিদীঙাদ্যম্ভ আন্যাৎ। যপি। অনুমায়বিহায়চ। অবদায়প্রগায় প্রপায়পীঙ্পানেইত্যন্য নিপীয় দীঙ্প্রদায়পরিমায়। ৪১॥

সম্প্রারণমন্ত্যকেদীর্ঘং স্যাৎ। আহ্য়দ্ধীনবান্। সংবীতঃ শূনঃ। ৫০॥ বেঞঃ কৌস্যাৎ। কাবেবসম্প্রসারণং দীর্ঘং স্যাৎ। উঃ উবৌশাট্যাঃ। নিয়মঃ কিম্ উতঃ পটঃ উত্বান্। ৫১॥

. क्थ्यमीलका।

মাদি। মাহাক্সতিগৈপাস্থাদাইতিমাদীনাং দাঙ্মীনাতিমিনোতীনামিতিদাঙাদীনাঞ্চান্তঃ আস্থাদ্যপিপরে। মাচদাঙাদিশ্চেতিভ্রমভয়াদাদিয়য়ং। মাদেরাত্বেহপ্যাস্থবিধানং তদাদেশস্থাৎ কিতিযপি
মাহাগিত্যাদিলক্ষণেনেস্থনিরাসার্থং। যোগবিভাগাৎ কচিয়স্থাৎ উদ্দীয়েতিপঞ্জিকা। অন্যেতুমধ্যেহপবাদোবিধিরিতিন্থায়াৎ জঝোসিদ্ধইতিন্থায়েনযপাপৃর্বাং কিতিহলীয়ং নবাধ্যতে তেন জ্পীয়েযপ্যাস্থমবদন্।
নব্যাস্ত্রযপাথ্যাতাবাধনাৎ কিতিহলীতীয়ে আস্থমাহঃ। অনুমায়েতি। আস্বাস্থকরণাৎ কিতিহলীতিনেয়ং
মামাঙ্মেঙ্মীনাতিমিনোতীনামুদাহরণমেতৎ পরিমায়েতিচ। দাঞ্দীঙ্দাণ্দেঙাং প্রদায়েবিনাত্রবানুস্বতিঃ
বিশেষাতিদিকীয়াৎ। ৪৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

মাদীতি। তর্হিকথং নিপীয়েতিপদ্মিত্যত আহপীঙ্পানেইত্যস্তেতি। নিপীয়যক্ষকিতিরক্ষিণঃ কথাং তথাদ্রিয়ন্তেনবুধাঃ স্থামপি। নলঃ দিতচ্ছত্রিতকীর্ত্তিমণ্ডলঃ সরাশিরাদীমহদাং মহোজ্লইতি নৈয়ধে। ৪৯॥

क्रथमीशिका।

সম্প্র। অন্তেভবমন্তাং দিগাদিস্বাদ্যঃ অধিকারাৎ কৃতিসম্প্রদারণমন্ত্যঞ্চেদীর্যংস্থাদিতি। যপীতিনানুবর্ত্তে পরত্রকাবেবেতিনিয়মাসম্ভবাৎ। আহুয়েতি। হ্বেঞ্আহ্বানেযপ্। জীনবানিতিক্তবন্তঃ
ল্বাদিস্বাক্তোনঃ। সন্বাতইতি। ব্যেঞঃ ক্তঃ। শূনইতি। টুত্রিগতির্দ্যোরিত্যস্মাৎতোনঃ। সম্প্রদারণং
কিংচিঞ্চিত্বান্। অন্তামিতিকিংবিদ্ধঃ বিদ্ধবান্। ৫০॥

গ্ৰহাশিক।।

সম্প্রতি। দীর্ঘমিতি। দৃ বিদারণে দৃণাতি ক্রমং বিদারয়তি নাশয়তাতি দীর্ঘঃ দৃতেরোণাদিকোষক্ ৠদন্তেরগুণে অগুণে হলাত্যাদিনাদীর্ঘঃ। চেদ্যদাত্যর্থে হ্বায়ং। পক্ষান্তরেচেদ্যদিচেত্যমরঃ।
চেদ্যদি অন্তঃমন্তেভবং সম্প্রসারণং তদাদীর্ঘং স্থাদিত্যর্থঃ। চেদিত্যনেনসামান্তনিমিত্তক সম্প্রসারণং তদাদীর্ঘমিতি
তেন নযপ্মাত্রেসম্প্রসারণে হয়ং বিধিঃ। তথাচনিমিত্তমাত্রেযদি অন্তঃং সম্প্রসারণং তদাদীর্ঘমিতি
পর্যাবস্থাত। আহু স্বাআহু য়যপি অন্তঃসম্প্রসারণং দীর্ঘং। জীনবানিতি। জ্যাজিনাতি স্মেতি জীনবান্
ভূতেকর্ত্তরিক্তবন্তঃ ক্তন্তনঃ সৌঅন্তন্তু দুনুবন্ধস্রনাপধাদীর্ঘমাপ্র য়াদিতি নোপধাদীর্ঘঃ ব্যঞ্জনান্তাৎ সিলোপঃ
সংযোগান্তলোপঃ লাক্ষণিক স্বামনলোপঃ। সন্থাতঃ শূনইত্যনয়োঃ বচিস্ববিত্যাদিনা সম্প্রসারণং পরত্রেওদ মুন্বন্ধাৎ ক্রোনঃ। ৫০॥

আঙোলভের্যোলাৎ পশ্চান্ম ট্ স্যাত্নপাৎ প্রশংসনে। আলম্ভ্যাগৌস্থয়া-যজ্ঞে আঙ্পূর্বোলভির্যাতার্থঃ। উপলম্ভ্যন্ধনম্ভব প্রশাস্মি চ্যর্থঃ। লভের্য্যে-কিম্ আলভ্য নায়ং লভের্বর্ণোক্ত্যায়কারঃ। ৫২॥

क्९%मीशिका।

বেঞঃ। সামান্যতঃ পূর্বেণিসিদ্ধে সিদ্ধেসূত্রারস্তোনিত্যায়নিয়মায়। নিত্যার্থতা শঙ্কয়াকাবেবেতি নিয়মার্থতা। এবৌপম্যেহ্বধারণে অবধারণং নিয়মঃ সচাভিধানাৎ প্রকৃতেরেব তেন মিত্রং হ্বয়তীতি মিত্রহুরিতি কিপ্ প্রত্যয়নিয়মঃ। ৫১॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বেঞইতি। কাবিতি। কিপঃ পন্নবন্ধং হিত্বাকাবিত্যুক্তং। তেন বেঞঃ কাবেবসম্প্রসারণং দীর্ঘংনাক্যন্মিন্কিতি অন্তেষাং কিপিতদক্তকিত্যপি তদীর্ঘমিতি ফলিতার্থঃ। বেঞ্তস্তসন্তানেবয়নমূঃ সম্পদাদিত্বাৎ কিপিবচ্যাদিত্বাৎসম্প্রসারণেদীর্ঘঃ শাট্যাস্তস্ত সন্তানমিত্যর্থঃ। যদ্বাবয়তীতি ধাতোঃ কিপ্ স্থাদনিয়মাদিতি কিপিসম্প্রসারণাদি উভয়থাকুদন্তকর্মাণিষ্ঠী। নিয়মঃ কিমিতি। নিয়মাভাবেক্তাদাবপি দীর্ঘং স্থাদিত্যর্থঃ। বেঞঃ কৌ স্থাদিতি শ্রীছন্দঃ। ৫১॥

क्र श्रदीशिका।

আঙা। ডুলভ্সম্প্রাপ্তাবিত্যন্ত। আলম্ভোতি। যা স্থাৎ স্বরেতি যা লামাটু। ঘাতার্থ ইতি। যথা খেতচ্ছগলমালভ্যবজনানঃ কৃতীভবেদিতি। আলম্ভপিঞ্জবিশরঘাতোমস্থবধাঅপীত্যমরঃ। কচিদ্যার্থেহিপি যথা পাত্রমালভ্যবজতীত্যাদি। আলভ্যেতি। জ্যেপ্। মুডভাবহেতুমাহনায়মিতি। তথাচকার্য্যং কার্য্যনিমিভ্রুবিধিরেষক্রমঃ স্মৃতইতিনিয়মাদাঙোলভেল্লামুট্ যেইতিবক্তব্যে ব্যতিক্রমেণ লভের্যেইতি সামীপ্যনির্দেশাৎ বর্ণোক্ত্যাযকারোগৃহীতঃ অয়ং ন তথাইতিভাবঃ। লভের্বর্ণঃ সংজ্ঞাসংজ্ঞিনোরভেদাৎ প্রর্গঃ বর্গোক্ত্যেতি পাঠোভদ্রেএব। ৫২।

গৃতপ্রকাশিকা।

আঙইতি। লভের্যোলভঃ সম্বন্ধিযেসম্বন্ধ-চসামীপাং তেন লভ্দম্বন্ধিযকারেপরেআঙঃ পরস্থলভেলাং পশ্চাৎ প্রদিন্ধার্থেমূট্ স্থাৎ প্রশংসনেহর্থে উপাৎ পরস্থলভেস্তাদৃশে যেতস্মান্মুট্ স্থাদিতি বাক্যায়া করা লভির্যাঃ তামিন্ লামুট্ আলস্ভ্যাহন্তব্যেতার্থঃ। আঙ্ পুর্বোলভিরিতি। অত্রেতি আভিপ্রায়িকং তেন পাত্রমালভারজভাত্যত্রস্পৃষ্ট্ত্যুর্থেইপিনক্ষতিঃ। প্রশাসমিত্যর্থইতি। ধাতুনামনেকার্থম্বাত্রপ্রপ্রেলভিঃ প্রশাসামাঞ্চর্ততে। প্রশাসনেকিম্ উপলভ্যং গৃহন্তবজ্ঞাতব্যমিত্যর্থঃ। প্রেক্ষোপলব্ধিশ্চিৎ সন্থিং প্রতিপক্ষপ্রতিটেতনেত্যমরঃ। আলভ্যেতি। আলক্ষ্মালভ্যপ্রাদিসমাসে জ্বোমপ্ অত্তনমূট্ তংকারণমাহনায়মিতি। সামান্থেন্যপোবিধানাদয়ং যকারোলভের্বর্ণোক্ত্যানেত্যর্থঃ যঃ স্থাৎ স্বরেতি যম্বপর্ব্যান্তাংশিতি লভের্বর্ণোক্ত্যাদইতিভাবঃ। ৫২॥

প্রাদাযুক্তস্মন্তর্জপ্রাদিযোগেছিখল্যকোঃ। লভের্নাঝু ট্ স্যাং। ছিরবধারণে। ঈষৎ প্রলম্ভ অপলম্ভ উপলম্ভ ইমাদিশঃ। সূত্র্বর্জনাং স্থলভঃ দ্র্র্লিভঃ। প্রাদাযুক্তেতি কিম্ অতিস্থলভঃ অতিন্তর্লিভঃ। নিয়মঃ কিম্ ঈষল্লভঃ লাভোইন্ডি অতিস্থলভঃ অতিন্তর্লভইতি পশ্চাদতি নাযোগাৎ। । ইতি ব্যবস্থাপ্রকরণম্। । ৫০॥

क् अमीशिका।

প্রাদ্য। প্রাদিনাম্মুক্তেচি তে স্তুরোচেতিতো বর্জয়তীতি কর্মণ্যণ্সচাসোপ্রাদিশ্চেতি তস্তবোগেইতি বিগ্রহাঃ। তথাচ কেবলস্তুর্ভিন্নপ্রাদেঃ প্রাদিযুক্তস্তুর্রোশ্চযোগেহি ধর্মস্তহানোপাদা-নাযোগ্যতয়া তিমানুপপদেদত্যেবথল্ঘঞোঃ পরয়োর্লাভের্লান্মুট্ স্থাৎ থল্ ঘঞোঃ পরয়োস্তাদৃক্ প্রাদেরেব পরস্থলভেল্লাম্মুট্ ভবতীতি প্রাদিযোগোপাধিনাপ্রত্যয়নিয়মোহয়ং তথাহি খল্ ঘঞোমুডাগমং প্রতি তাদৃক্ প্রাদি পরং লভিং নব্যভিচরতএব তাদৃক্ প্রাদি পরো২পি লভিস্তমুডাগমং প্রতিথল্ ঘঞোব্যভিচরতীতি প্রলম্ভনালম্ভনাপেলম্ভনাদোনাখ্যাতসূত্রবাধইতি। প্রাদিযোগোপাধিবিরহেতুঈষল্লভাদাবন্-পরোক্ষেত্যস্থবাধঃ অগ্যথারস্তবৈফল্যমিতি। यिन श्रेनतीमृक्थािनश्रतश्रमण्डली थन्य व्याप्तर्वपूर् প্রকৃতিনিয়মএবোচ্যতে তদাপ্রাদিযোগোপাধিপরস্থান্যস্মিন্ প্রাদিযোগোপাধিনা **ৰা**ন্যস্মিরিতি প্রলম্ভনাদাবাখ্যাতসূত্রেণাপিনস্থাদিতি পঞ্জিকা। নব্যাস্ত প্রাছ্যপপদেনিয়মঃ প্রাদিহি খল্ ঘঞোশুট্ নাপ্রাদৌ অনডাদৌ ন বাধ ইত্যাহঃ। ঈষৎ প্রলম্ভইতি। ঈষৎ সূপুর্বাদিতি খল। আলম্ভইতি ঘঞ্। স্বত্নবৰ্জনাদিতি। প্ৰাদ্যযুক্তস্থ্ববৰ্জনাদিত্যৰ্থঃ। প্ৰাদ্যযুক্ততি কিমিতি। প্ৰাদ্যযুক্তস্থহ্ব-র্জেতি কিমিত্যর্থঃ। অতিস্থলস্ভোহতি তুর্লস্ভইতি। প্রাদ্যতিনাযুক্তস্বত্বর্য্যোগেহপিমুট্। নিয়মঃ প্রাদিযোগোপাধিকপ্রত্যয়নিয়মঃ কিমিত্যর্থঃ। ঈযল্লভইতি। थल जेयम श्रीमिः। লাভোহস্তীতি। অস্তিবৰ্দ্ধতে। প্ৰাদিযুক্তস্ত্ৰতুরোর্য্যোগেকথং নেত্যতআহপশ্চাদিতি। তুর্লভইতি প্রদাধ্যকন্যাপ্রদাদিবৎ পশ্চাদেযাগাদিত্যর্থঃ। যোগানস্তরস্তুসকুদাধিতোবাধিতএবেতি। *। ইতিব্যবস্থাপ্রকরণবিবরণম্। 🕸। ৫৩॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

প্রাদ্যযুক্তেতি। তথাচ প্রাদ্যযুক্তয়র্বর্জেত্যনেন কেবলয়ত্বর্ভিয়প্রাদিযোগেপ্রাদিযুক্তয়ত্বঃ স্বরূপপ্রাদিযোগএবথলঘঞোঃ পরয়োঃ লভেল্লাৎ পরোয়ট্ স্থাদিত্যর্থঃ। ঈষৎ প্রলম্ভইত্যাদো কেবল-প্রাদিযোগে যথাযথং থল্ ঘঞোমুট্চ। ইমাদিশইতি। পরালম্ভঃ অপলম্ভঃ সংলম্ভইত্যাদয়ঃ। স্থলভঃ ছল্লভইত্যত্রপ্রাদ্যযুক্তয়ত্বরোর্য্যোগেনমুট্। অতিয়্লম্ভঃ অতিয়্লম্ভইত্যত্র প্রাদিযুক্তয়ত্বরোর্য্যোগেনমুট্ ক্রমলভঃ লাভোহস্তীত্যত্র প্রাদিযোগাভাবায়মুট্। নমুমুডভাবেহপি অন্পরোক্ষেবর্জয়িম্বাবিন্দুরভিলভোস্থেত্যনেনবিন্দুঃ স্থাদিতি চেমতথাসত্যেতদারম্ভস্থনিক্ষলম্বাৎ। নমু অতিয়্লভঃ অতিয়্লভইতি কথং মুট্ প্রাপ্তিরিত্যত আহপশ্চাদতিনেতি। অতিযোগাৎপরং কথং নমুডিতি সত্যং সক্ষাধিতবিধির্বাধিত-এবেতি স্থায়ায়মুট্। *। ইতিগুঢ়প্রকাশিকায়াং কৃদ্ ব্যবস্থাপ্রকরণবিবরণম্। *। ৫০॥

তব্যানীয়ো। ধাতোঃ পরৌস্যাতাং ভাবকর্মণোঃ। ক্ত্যাবিধ্যাদ্যর্থেষু। স্থাতব্যং তয়া স্থানীয়ং কর্ত্তব্যোযজ্ঞঃ করণীয়ঃ। ৫৪॥

বসেন্তব্যোদীর্ঘশ্চ কর্ত্তরিস্মৃতঃ। নানাদিগন্তবান্তব্যাজনামিলিতাঃ বাস্তব্যো-দেশইতি বাস্ত্রনৈহিতইতি তদ্ধিতযঃ। ৫৫॥

अटच्छा३नीट सत्र अम्यार । श्रष्टानीट्सा छकः । ८७॥

क्लप्रमोशिका।

তব্যা। যদ্যনীয়েহকারঃ স্পর্ফং নশ্রায়তেতথ্যপি প্রচ্ছোহনীয়ইতিজ্ঞাপকাদকারাদিরেব ননাদির্মা-শাদিরিতি। ভূবাদ্যাদীত্যধিকারাদ্ধাতোরিতি। কৃত্যক্তেতি পরিভাষণাদ্ভাবকর্শ্মণোরিতি। কৃত্যালিsৰ্পাইতি বাচ্যত্বাদিধ্যাদ্যর্থেম্বিত্যুক্তং। ৫৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

তব্যেতি। ভাবকর্মণোরিতি প্রাপ্তক্ত হাদিতিভাবঃ। বিধ্যাদ্যর্থেষিতি। এতেনভবিষ্যৎকালে কৃত্যাইতিলব্ধ:। স্থাতব্যমিত্যাদি। ক্লীবেভাবপ্রত্যয়ান্তাইত্যাদিনাক্লীবে। কর্ত্তব্যইতিকর্মণিবিধ্যর্থে কুদাচ্যলিঙ্গইত্যুক্তহাদাচ্য যজ্ঞলিঙ্গহং। ৫৪॥

क्र ९ श्रमी शिका।

বদে:। তব্যণিতি কৃত্বাপরং নোচ্চার্য্যং তব্যানীয়ক্যপ্ঘ্যণাং পৃথগ্গহণাৎ কৃত্যসংজ্ঞাংপ্রতিতথা বিধানাম্মুবন্ধকৃত বিরূপাণাং তব্যাদীনামগ্রহণাং। মাস্তগ্রহণম্ অমুবাস্তব্যোমপুরায়াইতি দামাত্ত্তা ষষ্ঠীসিদ্ধেরিত্যপিনোহং বসন্তবাস্তব্যাইত্যাদো কৃত্যৈরিযোগইতি সমাসাদিবাধাপত্তেঃ। বাস্তব্যাইতি। বদন্তীতি ভূতদামীপ্যেবর্ত্তমানামিলিতাইত্যর্থকথনাৎ বিধ্যাদ্যর্থবাধস্তকৃত্যান্ডিতিবচনাৎ। মিলিতাস্তত্ত সঙ্গতাঃ কৃতবাদাইত্যর্থঃ। বাস্তব্যোহয়মধিবাস্তব্যাবিত্যনর্যে। কথং বাস্তব্যোদেশইতি। বাসকর্ত্তাভবিতুমইতাত্যত আহবাস্তনেহিতইতি। বেশ্যভূর্কাস্তরস্ত্রিয়াং ততোহিতেগবাত্যুবর্ণান্তাদিতিযঃ। বাস্তব্যেবদতিস্থানইতিক্রটিঃ। ৫৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

বস্নিবাদেধাতুনির্দেশেইঃ। কর্ত্তরিবাচ্যেবদেস্তব্যঃ অকারস্থ দীর্ঘশ্চ ইত্যর্থঃ। নানাদিগন্তেবদন্তীতিতব্যঃ দীর্ঘশ্চ নানাদিগন্তবাস্তর্যাজনামিলিতাঃ সঙ্গতাইত্যর্থঃ। বদেস্ত্রণাস্তবেশ্মভঃ। বাস্তনেহিতইতি যেউবর্ণওত্বমাপ্নুয়াৎ ঋদোদোদ্যোয়ৎ স্বরবৎ ও অব্। ৫৫॥

क्र९श्रमीशिका।

প্রচ্ছো। অত্রাপ্যনীয়গিতিকৃত্বাপরং নোচ্চার্য্যং পূর্ব্বোক্তদোষাৎ। প্রছ্ঞীপ্লায়াং বাচিপুচ্ছনীয়ঃ প্রফিব্যইতার্থঃ। ৫৬॥

গৃ**ঢপ্রকাশিকা।** প্রছ্ভুবাদ্যন্তর্গতভুদাদিপরশৈপদী। রস্থঋস্থাদিতিছন্দোহর্থং বিলম্বিতোচ্চারণে ত্বিতিবানসন্ধিঃ স্থবোধার্থনা। পৃচ্ছনীয়ইতি। পৃচ্ছাতামদো পৃচ্ছনীয়ং কর্মণিঅনীয়ঃ রস্তথা। ৫৬॥

কেলিমঃ কর্মকর্ত্তরি। পচেলিমামাষাঃ ভিদেলিমানি দারূণি। ৫৭॥
যঃ স্যাৎ স্বরূপবর্গান্ত শক্সছানিয়তাদিকাৎ। চেয়ঃ নেয়ং দিৎস্যং ধনংজপ্যং
লভ্যাগোঃ নম্যোদেবঃ শক্যংস্থাং নির্স্যোদোষঃ যত্যম্ আদিনাতকিচতিশসাং
তক্যং চত্যং বিশস্যোবৈরী। ৫৮॥

ডেট্চাদন্তথনিভ্যাৎ স্থাৎ। স্থাভ্যাৎ যঃ স্যাৎ ডেট্চাগনঃ। দেয়াগো পেয়মস্মুত্ৎ। খন্খেয়ং পরিখা। ৫১॥

क्९थ्रमोशिका।

কেলি। কর্মকর্ত্তরীতি বিশেষোক্তের্মাত্রভাব কর্মবাচনা। নম্বেবং কৃত্যসংজ্ঞায়াবিফলমিতিনোছং প্রবিৎকৃত্যৈর্মিযোগেইতি সমাসাদিবাধাপত্তেঃ। স্বয়ং পচ্যস্তইতি পচেলিমাঃ স্বকর্ত্বপাকক্রিয়াফলাশ্রমামাষাইত্যর্থঃ। ভিদেলিমানীতি। কিন্তাদগুণঃ দার্রণি কাষ্ঠানি। ৫৭॥

गृष्धकाणिका।

কেলিমইতি। কর্ম্মকর্ত্তরীত্যনেন কর্মস্থভাবধাতোঃ পরঃ কেলিমঃ স্থাদিতিসূচিতং। ভিদেলি-মানীতি। ভিদর্বিদারণেস্বয়ং ভিদ্যন্তইতিকেলিমঃ কিন্তানগুণঃ স্বকর্তৃকভেদনক্রিয়াফলভাঞ্জিদারুণীতি শাব্দবোধঃ। ৫৭॥

क्र ९ अमी शिका।

যঃ। উভয়ত্রান্তদম্বনাংশ্বরান্তশ্চ পবর্গান্তশ্চ শক্চসহিশ্চ অসিশ্চ যতাদিকশ্চেতিদ্বন্দ্বিত্বং অন্তগ্রহণাদূতপূর্ব্বকাদপি ভবতিতেনদিংশুমিতি ভাবিশুশু লোপেপিতত্ত্বাদ্যঃ অশুথাব্যঞ্জনান্তাদেয়ানশ্বাং । ঘ্যণাপি
তদ্রপমিতি চেন্নলাক্ষণিকস্বেনতদপ্রাপ্তঃ। শক্তসামর্থ্যে যহ্মর্যণে অন্তক্ষেপণে যতীপ্রযন্ত্রে। দিংশুমিতি।
দাঞঃ সনিদ্বিঃ ইংশ্বাদিতীং প্রাকৃ লুক্ ধাত্বস্থাস্থালোপঃ। অন্তগ্রহণাদ্ভূতপূর্ব্বস্বরাদ্যঃ বিষয়াবিবক্ষণাং ধাত্বত্তলোপাং প্রাক্যইতিকেচিং। জপ্মানদেজপ্যং। জজাপপরমং জাপ্যমিত্যার্থং। ভ্রাম্যারামমারাদিতি কৃত্যব্যভিচারাং। তকাকৃচ্ছুজীবনেচতে চদেশ্রচনে শন্ত্হিংসানাম্ এনামাদিনাগ্রহণম্। ৫৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যইতি। স্বরান্তপবর্গান্তশক্ সহ্ অস্ যং তক্ চং শস্ এভ্যোভাবক মণোর্গঃ স্থাদিত্যর্থঃ। চেয়ইত্যাদি। চিঞ্ চয়নেক মণিযেগুণঃ নীঞ্ঞাপণেপূর্ববং ছুদাঞ্দানে দাভুমিচহতীতিধাতোঃ সম্বৃতি সন্ধান্তস্তাম্পলোপঃ স্থাদননীতি অননিবিধয়ে অলোপেহপি অন্তগ্রহণাং কচিদ্যপ্তনান্তাদিপি বদাঅন্ত-গ্রহণাং পূর্বাং নাকারলোপঃ কিন্তযেভূতএব ছুলভ্ব্প্রাপ্তো ণম্ প্রহ্মেরনমক্ষারেচ ণাদয়ো নাদয়ঃ স্মৃতাঃ। নিরস্থাক্ষেপণীয়ইত্যর্থঃ। বিশস্যোহিংসিতব্যইত্যর্থঃ। ৫৮॥

क्र श्रमीशिका।

ডেট্চ। টিত্ত্বেনাগমলক্ষণাৎ চকারোহত্রতুল্যযোগসমুচ্চায়কঃ তেনযঃ স্থাৎ যেডেট্চ যসমুচ্চয়স্ত খনের্য্যাপ্রাপ্তেঃ এবমাদন্তেহতুবাদএব পূর্ব্বপ্রাপ্তত্বাৎ ডকুবন্ধেহস্ত্যস্বরাদিলোপঃ। থেয়নিতি। থেয়স্ত-পরিখেতি নামলিঙ্গানুশাসনাৎ ক্লীবত্বং। ৫৯॥

অপ্রাদৌষম্ গদিমদাং যঃ। যন্যং গদ্যং মদ্যং। অপ্রাদৌকিং যমেঃ প্রগান্তত্ত্বহুপিন্যঃ প্রযান্যং প্রগাদ্যং প্রমাদ্যং। ৬০॥

আঙ * চাগুরো চরেঃ। অপ্রাদে চিরের্য্যঃ স্যাৎ। আঙঃ পরাচ্চরতেরগুরাবর্থে। চর্য্যং বনম্ আচর্য্যোধর্মঃ। অপ্রাদে কিম্ অভিচার্য্যোবৈরী। অগুরোকিং গুরুরাচার্য্যঃ। ৬১॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

ভেট্চেতি। টকারামুবন্ধ আগমসূচকঃ। নচাদন্তথনিভ্যামিতি পঞ্চম্যন্তগ্রহণাদেবআভ্যাং ডেচেতিদিদ্ধেকথং টকারামুবন্ধগ্রহণমিতিবাচ্যং তথাসতি আদন্তথনিভ্যাং ডেচবাযশ্চেত্যাপত্তিসম্ভবাৎ কৃতেতুটমুবন্ধগ্রহণেবঃ স্থাৎ যেডেট্চেত্যন্বয়ঃ তথাচ যেপরেডেইত্যন্তাগমার্থং টকারামুবন্ধগ্রহণমিতিভাবঃ।
দেয়েতি। কর্মাণিয়ং এবং পেয়মিত্যত্রেচ। পাপানেপারক্ষণেইত্যনয়োর্ধমিদং। খনিতি। খন্ত্রবদারণে
অত্যান্ত্যস্বরাদিলোপঃ। ৫৯॥

क्र श्रमी शिका।

অবা। প্রাদেশ ভাবোহপ্রাদিঃ নবিদ্যতেপ্রাদির্যান্ত্রির পুপদে ইত্যুভয়সমাসেহপি প্রাদ্যভাবোহ-প্রাদিরুচ্যতে। পরতোনাম্নতিগ্রহণাৎ অতঃ পূর্ব্বপক্ষেহপি নানদন্তাদ্বিভক্তিলোপঃ। তেনপ্রাদ্যভা-বেসতিএবাং যঃ স্থাৎ নতুবিধিস্ত্রাদে সপ্রম্যুক্তরেহপ্যুপপদইতি তথাস্বেপরতোনাম্নীতি বৈয়র্থ্যাৎ। অত্রাবরপক্ষে সামানাধিকরণ্যেনান্তরোলক্ষণয়া অর্থবশাদ্বা। পূর্ব্বিমিন্ যমের্মিয়মার্থমিহগ্রহণাৎ প্রাদেশিত্ব পূর্ব্বেনাপিনয়ঃ কিন্তুব্যণেব পূর্ব্বিদিক্ত্রিতিবচনাৎ। যগ্রহণমিহডেট্নির্ভ্রর্থং। ৬০॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অপ্রাদেরিতি। প্রাদ্যভাবে প্রাদিভিন্নোপপদেচ। যমুউপরমে গদ্যক্তায়াং বাচি মদীহর্ষেএষাং যঃ। যমঃপবর্গান্তর্গত্বেন পূর্বেণপ্রাপ্তাবিপি প্রাদ্যেনিষেধার্থং তেনপ্রযাম্যমিত্যত্তব্যঞ্জনান্তাৎ ঘ্যণ্নযঃ। প্রগাদ্যং প্রমাদ্যমিতি গদ্মদোরপ্রাদাবেববিধানার্থমুপাদানং। ৬০॥

क्र ९ थरी शिका।

আঙইতি। চর্গতিভক্ষণয়োঃ ঘ্যণ্বাধকোয়ঃ। চর্যাং গম্যমিত্যর্থঃ। আচর্য্যআচরণীয়ইত্যর্থঃ। আশ্চর্য্যমিত্যভূতেহর্থেগুরাবাচার্য্যউচ্যতে। গুরুরিতি। মন্ত্র্ব্যাথ্যাকুদাচার্য্যইত্যর্থঃ।৬১॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

আঙকেতি। অগুরাবর্থে আঙকচকারাদপ্রাদেশি চরেঃ পরোষঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ঘ্যণ্বাধার্থং সূত্রমিদং। চর্য্যমিতি! চর্যাং গম্যমিত্যর্থঃ। অভিচার্য্যইতি। প্রদার্পপদেঘ্যণ্ইত্বংবৃদ্ধিঃ। বৈরীশক্তঃ অভিচার্য্যঃ মারণীয়ঃ অভিপূর্বকিচর্মারণোচ্চাটনাদোবর্ত্তে। তথাচামরঃ হিংদাকর্মাভিচারঃ স্থাদিতি। গুরুরিতি। গুরুরত্বেদমন্ত্র্ব্যাথ্যাতা। এতচাশ্চর্য্যমিত্যভূতেহর্থ ইতি সূত্র্ব্যাথ্যায়ামূক্তং দেষ্টব্যং। ৬১॥

নামিবদঃ ক্যপ্ত। স্থবস্তং নামনামু যুপপদেক্যপ্স্যাৎ যশ্চ। ব্রহ্মণোবদনং ব্রহ্মোদ্যং ব্রহ্মবদ্যং স্থবেনাদ্যতে স্থখোদ্যোবর্ণঃ স্থখবদ্যঃ। চোহ্বধারণেচ। তেন মুষোদ্যমিতিক্যবেব। নামীতি কিং বাদ্যং। অপ্রাদাবিত্যেব ব্রহ্ম-প্রবাদ্যং। নঞোহনিত্যত্বাং নিয়ম্যং যত্বোপচর্য্যোনৃপঃ অনুদ্যাবাক্ অপোদ্যো-নিয়মঃ। ৬২॥

হনোভাবেক্যপ্ নশ্চতঃ। নামুগুপপদেস্ত্রিয়াং রুটিস্বাৎ। ব্রহ্মণোহননং ব্রহ্মহত্যা। ভাবেকিংশ্বযাত্যোমৃগঃ। নামীতি কিং যাতঃ। প্রাদৌতু উপঘাতঃ। হনোভাবেষ্যণ্ ন দৃশ্যতে। ৬৩॥

क्र ९ प्रमिशिका।

নামি। প্রাদিভিম্নস্থবস্তোপপদে বদঃ ক্যপ্ যশ্চ। নামপদস্তনানার্থব্বেপ্যপ্রাদাবিত্যন্ত্বর্ত্তনাদাহ স্বব্দ্তমিতি। প্রথমাদিবিভক্তান্তমব্যয়মনব্যয়ম্বাইহনামোপাদেরং। ততুক্তং প্রথমাদিবিভক্তান্তং নামেতি মমসম্মতিঃ। বস্ত্ববাচিপদং নামকেচিদাহুর্মনীষিণইতি। পন্তবন্ধঃ কৃত্যসংজ্ঞার্থঃ। বদ্ব্যক্তায়াংবাচি ব্রহ্মণোবেদাদেঃ। বেদস্তব্বং তপোব্রহ্ম ব্রহ্মাবিপ্রঃ প্রজাপতিরিত্যমরঃ। ক্যপিবচীতি সম্প্রসারণং। চোহ্বধারণইতি। ম্যাপুর্ব্ববদঃ ক্যবেবাভিধানাৎ অক্যব্র্যম্বেচিত সমুচ্চয়উক্তঃ। চান্বাচয়সমাহারেহপ্যক্রোহ্যস্থাসমুচ্চয়ে। পক্ষান্তরেত্থাপাদপুরণেহপ্যবধারণইতি মেদিনী। নঞইতি। নঞাগমগণোদিষ্ট-সংজ্ঞাপুর্ব্বাজনিত্যগাইতি। ৬২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নান্নীতি। ত্রন্ধোদ্যং বেদস্য তত্ত্বস্থাকথনং ত্রন্ধাণোবাকথনং। স্থাপাদ্যঃ স্থাকথনবিষয়ইত্যর্থঃ। মুষোদ্যং মিথ্যাকথনমিত্যর্থঃ। বাদ্যং ডমরুপ্রভৃত্যাহতশব্দঃ। নিয়ম্যং নিয়মঃ যক্লোপচর্য্যোযক্লেনস্ব্যে-ইত্যর্থঃ। অনুদ্যেতি। পশ্চাদ্বাচ্যেত্যর্থঃ। অপোদ্যঃ অপবদনীয়ঃ নিন্দনীয়তয়াকথনীয়ইতি যাবং। ৬২॥

क्र श्रमी शिका।

ছনো। ক্যপিনশ্চতঃ। ক্যবিতি যনির্ত্ত্যর্থমূত্রার্থঞ্ট্হযেনিদিছেঃ অতোবক্ষ্যতি পুনঃ ক্যপ্
গ্রহণাদিতি। স্থ্রিয়ামিতি। ভাবপ্রত্যয়ান্তত্বেংপি যাদ্ধেতিবক্রটিয়াৎ স্ত্রিয়ামিত্যর্থঃ। ব্রহ্মণোহননং
ব্রহ্মইত্যাব্রহ্মবধঃ। অত্রবিশিক্টহিংসাপ্রাণহরণমেবহনোহর্থঃ নভূপদ্রবমাত্রং ব্রহ্মহত্যাদীনাং তথৈবপ্রদিদ্ধেঃ। যদপিঘাতইভূপেদ্রবমাত্রেব্যার্ত্তিরুক্তাসাপ্যত্ত্তিব যতঃ সূত্রেবিশিক্টহিংসান্ত্র্নয়ত কিন্তু
প্রসিদ্ধোবায়াতীতি। সাচক্যবন্তাএবেতি বজ্ঞঃ। এবমশ্বহত্যা গোহত্যা ইত্যাদি। যত্ত্পাদং পাদস্ত্রহত্যায়াইতি তদেযাগবিভাগাৎ সংক্রৈকদেশাদার্ষয়ায়া। ঘাতইতি। ঘঞ্। যদ্যপিবাধকাভাবেবাধ্যেন
দ্যাবৈবাদাহর্ত্র্মুচিতং তথাপি ন্যাণিত্যাহ হণোভাবইতি। ঘ্যণ্নদৃশ্যতেহ্নভিধানাদিত্যর্থঃ। ৬৩॥

ভূবঃ। ভাবেক্যপ্স্যাং। ব্রহ্মভূয়ং ব্রহ্মত্মিত্যর্থঃ। অপ্রাদিনামীত্যেব-ভব্যং প্রভব্যং। ৬৪॥

রঞ্দৃস্তশাস্থজুষিণাং ক্যপ্স্যাৎ। রত্যাস্থকন্যকা। রঙ্গন্ত ক্রাবিত্যম্য বার্য্যাঋত্বিজঃ আদৃত্যঃ স্তুত্যঃ শিষ্যঃ জুষ্যঃ ইণ্ইত্যঃ ঈগতাবিত্যম্য উপেয়ং স্তুত্যইত্যর্থেষঃ। পুনঃ ক্যপ্গ্রহণাৎ অবশ্যস্তুত্যইতি ঘ্যণ্বাধঃ ভাবেনামীতিচ নিরতং। বার্য্যোগজইতীনন্তর্ধাতোঃ। ৬৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

হনইতি। যদ্যপ্যত্ত্বযপ্রতায়েনাপিদিদ্ধিস্তথাপ্যত্ত্বক্যপ্ত্রহণং পরার্থং। স্ত্রিয়াং রূঢ়িত্বাদিতি। প্রদিদ্ধিবশাদিত্যর্থং। ব্রহ্মহত্যাম্বরাপানং স্তেয়ং গুর্বঙ্গণাগমঃ। মহান্তিপাতকান্তাহুঃ সংসর্গঞ্চাপিতেঃ সহেতি মনুবচনে ব্রহ্মহত্যেতি স্ত্রীলিঙ্গশ্রবণাদিতিভাবঃ। হত্যাশব্দেনবধউচ্যতে তত্ত্বিমুনিবচনম্বরসাৎ। শ্বঘাত্যইতি। শুনাকুকুরেণঘাত্যইত্যর্থং অত্রঘ্যণ্। ঘাতইতি। হননং ঘাতঃ ঘঞ্ ইজ্জাবঃ হন্তের্ঘাৎ এবমুপঘাতইত্যত্রাপি। ঘাণ্নদৃশ্যতেইতি। শিক্ষানামনভিধানাম্মঘ্যণ্ কিন্তুঘঞ্বেত্যর্থঃ। ৬৩॥

क्र ९ अमी शिका।

ভুবঃ। ভাবইত্যধিকারাৎ ভূপ্রাপ্তাবিত্যস্ত সকর্মকন্বাদ্যাবিকারঃ সচভাবেনান্নীতিচনির্ভমিতি বাচ্যন্নাৎ। যদ্যপি সোপদর্গস্ত ভূদত্তায়ামিত্যস্তসকর্মকন্বং তদাপ্রাদ্যধিকারেণব্যাবর্ত্তিং। ভূপ্রাপ্তাবিপি সোপদর্গত্র কৃত্যৈরভি ধীয়তইতি পঞ্জিকা। ব্রহ্মন্বমিত্যর্থইতি। ব্রহ্মণোবেদস্থপিতামহস্ত্যবাদত্তেতি যাবং। অথৈকার্থশন্দেনবিবরণং ক্রিয়তে কথমনয়োরেকার্থতা তথাহিক্যপ্প্রত্যয়েন দ্রাবিধীয়তে স্প্রত্যয়েণ ব্রহ্মশন্দপ্রতিনিমিত্তং বৃংহণং জাতির্ব্বাভিধীয়তইতি দত্যম্ উচ্যতে তৎস্বরূপাভবন্তি চেত্তেন তে ব্রহ্মতি দেবইত্যাদয়শ্চোচ্যন্তইতি অতস্তৎস্বরূপেণভবনং বিদ্যমানতাপি ব্রহ্মশন্দপ্রতিনিমিত্তং স্বশন্দবাচ্যক্ষতদিত্যবধেয়ং তেন স্থাদ্বহ্মভূয়ং ব্রহ্মন্বং ব্রহ্মাদয়্যামিত্যপি। দেবভূয়াদিকং তদ্বদিতিপর্যায়ঃ এবং দাশর্থভূয়ং দাশর্থত্বমিতি অথবাব্রহ্মন্বাদিযোগাদ্দেবব্রহ্মাদয়োভবন্তীতি লক্ষণয়া ব্রহ্মাদিশব্রহ্মিনিমিত্তেলাত্যাদে ব্রহ্মাদয়ঃ প্রবৃত্তীহিতি ক্যপ্প্রত্যয়াম্ভ স্থত্যয়ান্তর্যোঃ পর্য্যায়্রমবিরুদ্ধমিতি বন্ধরঃ। ৬৪॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

ভূবইতি। অপ্রাদোনান্ধ্যপপদে ভাবেবাচ্যেভূবং ক্যপ্। ভূসতায়াং ভূপ্রাপ্তাবিভূতেয়ভূগ্রহণং। ব্রহ্মভূয়মিতি। ব্রহ্মণঃ সত্তাতাদ্রপাং ব্রহ্মণঃ প্রাপণদাব্রহ্মভূয়ং। তদর্থমাহব্রহ্মত্বমিত্বর্থইতি। প্রাদৌ-ভূযং। ৬৪॥

क्ल्थनीशिका।

র্ঞ্। রঞ্ সম্বরণেদৃঙাদরণে দৃভয়েফু ঞ্স্ততো শাস্ত্রঅনুশিক্ষৌজুদীপ্রীতিদেবনয়োঃ ইণ্গতোএষাং ভাবকর্মণোঃক্যপ্। রঙিতি, রঞিতিঞ্জুবন্ধনির্দেশেনাত্যাগ্রহণাৎ ঘ্যধিত্যর্থঃ। জুমিণামিতিণ্সুবন্ধপাঠাদিণো-

ঋত্পান্তাং রূপিচৃতিবর্জাং। ক্যপ্। রদ্ধানোজনা। রত্যং নৃত্যং সৃজ্যং কৃত্যঃ শত্রুঃ। রূপিচৃতিত্যাগাং কম্প্যেং বিচর্ত্যং। ৬৬॥

অসংজ্ঞারে ক্রে ক্রের্নার যথাভূত্যামহীপতেঃ। ভরণং ভূত্যং । সংজ্ঞায়ামর্থেভার্যাজায়া ভার্য্যানামক্ষল্রিয়াচ। ৬৭॥

গ্রহণাদীরিত্যতোযইত্যর্থঃ। পুনরিতি। হনোভাবইত্যতোহনুবর্ত্তমানেহপি ক্যপিতি পুনর্গ্রহণাৎ ভাবইতি। তদ্বয়মিহপরত্রাপিনির্ত্তং পূর্ব্বসিদ্ধন্ত্বিতি ন্যায়াদিতিভাবঃ। ৬৫॥

গৃতপুকালিকা।

র্ঞিতি। দৃঙাদরেত্থা দৃহননে স্বাক্র্যাপ দৃভয়েচুপ এতজ্রয়াণাং গ্রহণং সামান্সনির্দেশাৎ। ভাবকর্মণোর্বাচায়োরেষাং ক্যপ্সাৎ। রতেতি। বিয়তামসোরত্যাক্যপি হস্বাভুক্। রঙ্মস্কক্রাবি-ত্যস্তেতি। সম্বক্তিং দেবা। বার্ষ্যেতি। কর্মণিঘ্যণ্ র্দ্ধিঃ। শিষ্যইতি। ক্যপিশাসঃ শিষ্প্তণেহলীতি শিষাদেশঃ। উপেয়মিতি। উপঈয়ঃ গুণঃ ধাতুনামেদোতোরিতি উপাকারলোপঃ। স্তব্যইতি। অর্হতার্যের্গাদের্য্যঃ উবর্ণপ্রমাপ্রয়াৎ ঋদোদোন্ত্যোয়ৎ স্বরবৎ ওঅব্। নকুক্যপঃ পূর্বতোহসুবর্তনলাভ-সম্ভবাৎ কথমত্রপুন গ্রহণমিত্যতথাহপুনরিতি। অবশ্যস্তত্যইতি। অবশ্যস্ত্র য়তাময়মবশ্যস্তত্যঃ আবশ্যকে-হর্পের্বাদিতি ঘ্যণ্প্রাপ্রাপেক্যপ্ এবং ভাবেনান্সতিচনিরত্তং তেনাত্রভাবকর্মণোরভাবেহপি। ইনস্তম্ম রঞাবরণেইত্যম্য চুরাদীনন্তম্য র্বাতোরিত্যর্থঃ। যদ্যপিরঙ্ সম্ভক্তাবিত্যম্যবার্যইতি সম্ভবতি তথাপ্যাবরণীয়ইত্যর্থেতাৎপর্যাত্রথাক্রং। ৬৫॥

क्र ९ अमी शिका।

শহ। পূর্বতোংমুর্তঃ ক্যপ্। কুপি চৃতী বর্জয়তীতিকর্মণ্যণ্ এতদ্ভিমাদৃহপান্তাৎ ক্যপ্। কুপুষ্ দামার্থ্যে চৃতীহিংদায়াং কাতন্ত্রচন্দ্রধাতুমরীচিকানোতথাদর্শনাৎ। কেচিৎ রতীহিদায়ামিতি পঠন্তি-তিমিরাকরণং। র্ধ্ রুদ্ধো রুতুপ্রবর্তনেরত্যং হেদ্বিনন্তস্তাস্ত নির্বর্ত্তা নিনবর্ত্তামিতি। নৃতীগাত্রবিনামেনৃত্যং স্থজির্ বিদর্গানে স্ক্রাং কৃতীছেদনেকৃত্যঃ কল্লামিতিরোলঃ বিচর্ত্তাং হিংস্তমিত্যর্থঃ। ৬৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঋতুপান্তাদিতি। ঋদৃকারউপান্তোযস্ত। ক্যবিতিনসূত্রং পূর্ব্বতোহনুর্তোহয়ং। ওজসাদীপ্ত্যা-বলেনবা। ওজোদীপ্তা ববউদ্ধেপ্রকাশবলয়োরপীতি মেদিনী। কুত্যশ্ছেদ্যইত্যর্থঃ। কপ্ল্যমিতি। ঘ্যাণিউপধাশুণেকুপেরোলঃ বিচর্ত্ত্যমিত্যত্রাপিঘ্যণাদি। ৬৬॥

क्ष्भूमीशिका।

অসং। সংজ্ঞান্তাচ্চতনানাম নদংজ্ঞার্থোইসংজ্ঞার্থঃ তন্মিন্গম্যেঅর্থপদযুক্তত্বান্নোপপদে তথাচ সমুদায়েন যদিকস্তাপি সংজ্ঞানগম্যতে তদাক্যবিত্যর্থঃ। তথেতিনিদর্শনে। ভুভৃঞ্ ধারণপোষণয়োঃ ভ্রিয়ন্তামমীইতিভৃত্যাঃ পোষ্যাঃ ভৃত্যাইত্যন্ত্রয়মাত্রং নেয়ং ক্স্থাপিসংজ্ঞাএবং ভরণং ভৃত্যমিতি। ভৃত্যো- বাক্যপ্রমৃজিশব্দিক্রন্থিছিত্বর্ষিসম্ভূঞাং। এষাং ক্যপ্ স্যাৎ বাষ্যণ্। ক্তাং কার্য্যং মৃজ্যং মার্গ্যং প্রশাস্যং ক্রেন্সং গুলুং ত্বন্ধং রষ্যংবা প্রশংস্যমিত্যাদি সম্ভূত্যঃ সম্ভার্য্যঃ। ৬৮॥

দাদে ভ্রে ভ্রাইতিমেদিনী। যতু দহায়েদাদেচ ভ্রাইতি তপ্পঞাহনিত্যত্বাৎ ভ্তিমহ্তীত্যম্মাদ্বেতিবক্তঃ। ভার্য্যান্তারেতি। ভ্রিয়তামদেগ ভার্য্যাইত্যম্মমপেক্ষ্যচতুর্ব্বর্ণজায়োচ্যতে। ভার্য্যাকায়েত্যমরোক্তেঃ। ভার্য্যানামক্ষজ্রিয়াচেতি সমুদায়েনসংজ্ঞাবগমানক্যপ্। নম্বেবং ভার্য্যানামক্ষজ্রিয়ায়ঃ ভার্য্যানাম্পিজ্রিয়া বা প্রক্ত্যাদিস্বান্তার্যানামেতি বাবক্তব্যে কর্থমিথমিতিনোছুং নামশব্দস্পপ্রকাশার্যত্বাদি। দামের্যিই আধ্যাক্ষে অভিধানক্ষনামধেয়ক্ষনামচেত্যনব্যয়ে তন্মিন্নিতি বক্তঃ। নব্যাস্তবর্ণাইতি বদভেদ-বিক্ষর্যাপ্রথমানাত্রসংজ্ঞাবদাচকনামশব্দে প্রক্ত্যাদিস্বাত্তীয়া তত্নক্তং সংজ্ঞায়াঃ সংজ্ঞিনকৈব বাচ্যাচক্ষেয়াপ্রথা। ভেদঃ স্বভাবদিদ্ধঃ স্থাদভেদোহপি প্রক্ষ্যাতইত্যাহ্য। অথপ্রিয়াং ভ্রজ্যাদিকপ্রাম্থেরিক্যা ত্যুক্তং গ্রুষ্ট্যাত্মিনিত পুংস্থাচ্যতামিতি মৈবং স্ত্রিয়াং ভাবএবক্যপ্রিধানাৎ। অত্রার্থে বররুচিপদ্যং সংজ্ঞায়াং পুংদিদৃক্তীয়াতভার্য্যাপ্রদিদ্ধতি। স্ত্রিয়ান্তাবিদ্যাহিত্য তেন ভার্য্যাপ্রদিদ্ধতি। ব্রিয়ান্তাবিদ্যাহিত্য তেন ভার্য্যাপ্রদিদ্ধতি। ত্রিরান্তাবিদ্যাহিত্য তেন ভার্য্যাপ্রদিদ্ধতি। ত্রিরান্তাবিদ্যাহিত্য ভার্য্যেতি স্থিয়াং ন প্রদিদ্ধতি কর্যপ্তিভাবঃ অনুপপত্তিং পরিহরতি পরার্দ্ধেন ন কেবলং স্ত্রিয়াং সংজ্ঞায়াং ব্রজ্যাদিনাক্যপ্ কিন্ত তত্রভাবাধিকারোহন্তি তেন ভারাধিকারেণ হেতুনাভার্য্যাপ্রদিদ্ধতি কর্মণিব্যণ্ ন বাধইতি বজুঃ। ৬৭॥

गृष्यकानिका।

অসংজ্ঞেতি। অসংজ্ঞার্থেভাবকর্মণোর্ব্বাচ্যয়োঃ ভূঞঃ ক্যপ্ স্থাৎ। ক্যপ্সাদিতি ন সূত্রং ভূত্যাভরণীয়াঃ। ভরণং ভূত্যমিতি নাত্রসংজ্ঞা। সংজ্ঞায়ান্তভাবে ব্রজিযুজীত্যাদিনাস্ত্রিয়াং ক্যবেবত-দ্বাচ্যং। সংজ্ঞায়ামিতি। কর্মণিভূঞঃ ঘ্যণ্ তেন ভার্য্যেতি। ভার্য্যাজায়াথপুংভূদ্মিদারাইত্যমরঃ। ক্ষত্রিয়াপি ভার্য্যেতিসংজ্ঞা। ৬৭॥

क्ट थमी शिका।

বাক্যপ্ পৃথগারন্তাদেব সংজ্ঞাসংজ্ঞার্থলাতে পুনঃ ক্যপ্ গ্রহণং পরত্রবানির্ত্তার্থং। ভূঞঃ সংজ্ঞাসংজ্ঞারপ্রাপ্রপ্রাপ্রেরারপ্রাপ্রিপ্রাপ্রেরারপ্রাপ্রিপ্রাপ্রেরারপ্রাপ্রিপ্রাপ্রেরারপ্রাপ্রিরার্থিপ্রাপ্রেরারপ্রাপ্রিরার্থিপরির বিধীয়তে। শক্ষেঃ ক্যপিঅগুণেস্ত্যেতি ন লোপঃ। প্রশংস্যামিতি। ঘ্যণিননলোপঃ। ৬৮॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

বেতি। কৃঞ্করণে ভুউ কৃঞ্ হিংসায়াং স্বাউ ডুকুঞ্করণে তউ এতত্রয়াণাং গ্রহণং সামান্ত-নির্দ্দেশাং। মৃজ্শুদ্ধৌ শন্সুকথনে ত্রুজ্জিঘাংসায়াং গুরুসম্বরণেত্র্প্রপুরণে ব্যুসেচনে সম্পূর্ব্বভুজ্ঞ্ধারণে। ভাবকর্মণোরেনাং বাক্যপ্রাঘ্যণ্। আদিনাজোহং গোহুং দোহুং বর্যামত্যেষাং গ্রহণং। ৬৮॥ পদপক্ষাস্বতন্ত্রার্থে বাছায়াঞ্চগ্রহঃ স্মৃতঃ। ক্যপ্। প্রগৃহ্খং পদং যংস্বরেণ ন সন্ধীয়তে অবগৃহ্খং পদং যদ্যাখ্যানায়বিভজ্যতে পক্ষআপ্রিতঃ। নহীন্দুগ্যভেষ্যুর্ত্তবেং। অধীনার্থে গৃহ্ফকাদাদাঃ বাহ্যায়াং গ্রামগৃহ্যাস্ত্রী। এমর্থেষু কিং গ্রাহ্থ ধনং। ৬৯॥

क्रथिमीशिका।

পদ। পদঞ্চ পক্ষশ্চ অস্বতন্ত্রশ্চেতি দ্বন্দ্বৈক্তাবেতচ্চাসাবর্থশ্চেতি বহির্ভাবোবাহাবহিষোযণি অব্যয়ান্ত্যস্বরাদিলোপঃ। স্ত্রীত্বলাভায়পৃথগুক্তিঃ। পদং স্থপ্তিওন্তং তচ্চাত্রসংজ্ঞাবিশিষ্টং কৃতামভিধানলক্ষণাৎ। পদংশব্দেচ বাক্যেচ ব্যবসায়োপদেশয়োঃ। পাদতচ্চিহ্নয়োঃ স্থানত্রাণয়োরঙ্গবস্তুনোঃ। শ্লোকপাদে২পিচ ক্লীবং পুল্লিঙ্গঃ কিরণেপুনরিতি মেদিনী। পক্ষঃ সাধ্যঃ। পক্ষোমাদার্দ্ধকে পার্ষিও গ্রহেসাধ্যবিরোধয়াঃ। কেশাদেঃ পরতোর্দেবনেস্থিসহায়য়োঃ। চুল্লীরক্সেপতত্রেচ বাজে কুঞ্জরপার্শ্বয়োরিতি স্বতন্ত্রোহপার্তঃ স্বৈরীস্ক্রন্দোনিরবগ্রহঃ এতদ্ভিন্নোহস্বতন্ত্রঃ প্রাধীনঃ বাছাবহির্ভবাএম্বর্থেয়ু বাচ্যেয়ু গ্রহোঘ্যণ্বাধঃ ক্যপ্ স্মৃতঃ। এতেনভাবকর্মণোর্ব্যাহতিঃ তেমুতদসম্ভবাৎ নাপ্যপদেযু অর্থপদযুক্তত্বাৎ। প্রগৃহমিতি। প্রকর্ষেণার্থোগৃহতে২ শ্মিশ্ননেনবেতি বাক্যং যত্রবিদন্ধিক্রিয়তে তৎপদমূচ্যতে যথা অগ্নীএতা-বিত্যাদি। আপ্রগৃহঃ স্মৃতোবাক্যেইত্যমরঃ। প্রগৃহ্খোনসন্ধেয়ইত্যর্থঃ। প্রগৃহ্পদবৎ দাধ্বীতি ভট্টিঃ। অবগৃহ্মিতি। অবধানেনার্থোগৃহতেঽশ্মিশ্ননেনবৈতি ব্যাখ্যানায় যদ্বিভজ্যতে বিশ্লিষ্যতে তত্নচ্যতে যথা বাসরপঃ তব্যশ্চানীয়শ্চেতি। পদচ্ছেদঃ পদার্থে।ক্তির্বিগ্রহোবাক্যয়ে।জনা। ব্যাখ্যাসূত্রস্থপথা। পক্ষমাশ্রিতইতি। প্রাচাং নয়েপক্ষঃ সাধ্যঃ তত্রভবঃ স্থিতোহপি পক্ষঃ মঞঃ ক্রোশতিবৎ অতঃ পক্ষআশ্রিতইত্যুক্তং। আশ্রয়তি তৎসাধ্যং সাধয়তীতিক্তঃ। লোকেহপি যোযস্ত-সাধ্যং সাধ্য়তি সপক্ষ আশ্রেতশ্চোচ্যতইতি। তথাচ বররুচির্ভিঃ পক্ষেত্বঃ পক্ষঃ বাহুদেবোহজুনগৃহঃ তৎপক্ষাপ্রিতইতি। অস্তার্থঃপক্ষইত্যাকারাবহিতে২প্যদোষঃ তাৎস্ফোপচারাৎ তৎপক্ষাপ্রিতইতিপক্ষঃ সাধ্যঃ তস্ত্রসাধ্যময়মপি সাধয়তীত্যর্থ ইতিবজ্রঃ। পক্ষেত্রতঃ পক্ষাইতিচন্দ্রকেপাঠঃ। নব্যাস্ত্রপক্ষ আশ্রিতইতি আশ্রীয়তে২সা বিত্যাশ্রিতঃ সহায়ইতি ব্যাখ্যান্তি। নহীন্দ্বিতি। কুমুদা্যপিদাহায়কিমঙ্গ কমলাকরইতি পূর্বার্দ্ধংদণ্ডিনি। অস্থার্থঃ যুক্তাযুক্তয়োঃ পদার্থয়োব্বিপর্য্যাদঃ পরীবর্ত্তইতিযাবৎ অর্থযুক্তোহ্যুক্তোভবতীতি তাৎপর্য্যং কুমুদানিচেত্তাপায়কিমঙ্গ কমলাকরইতি অঙ্গদশ্বোধনে। অত্যইতি ক্রচিৎপাঠঃ। পদ্মসমু-হস্তমতরামেবতাপায়েতিভাবঃ তাদৃগর্থান্তরমাহনহীতি ইন্দুনাগৃহন্তেস্বসাধ্যসাধনায় ঐায়ন্তে এতেইন্দুং গুহুন্তিতৎসাধ্যসাধনেনাকুগুহুন্তীতি বা এবমন্তং ইন্দুপক্ষাশ্রিতেয়ু ইন্দুসাধ্যশৈত্যাদিসাধ্বেয়ু জলাদিম্বিত্যর্থঃ। ইন্দুনাশ্রিতেম্বিতিনব্যাঃ। সূর্য্যগৃহ্খোবহু্যাদিঃ ইন্দোরেকান্তশীতলত্বাৎ তৎপক্ষাণাং জলাদীনাং তাপকারিস্বমযুক্তং সূর্য্যস্তউষ্ণস্থাৎ তৎপক্ষস্তবহ্ন্যাদেযু্যক্তমিত্যর্থযুক্তাযুক্তয়োর্ব্বিপর্যায়োনামা-র্থান্তরাখ্যালঙ্কারোহয়ং। অস্বতন্ত্রার্থেগৃহন্তেবশীক্রিয়ন্তেইতি গৃহকাঅধীনান্তেচদাসাইত্যর্থঃ অনুকম্পায়াংকঃ গৃহকাশ্চাস্বতন্ত্রবাচকত্বান্তবন্ত্রেবানুকম্প্যাঃ। অধীনোনিম্নআয়ত্তোহস্বচ্ছন্দোগৃহকোহপ্যসো। গৃহাসক্তাপক্ষি

খাবর্ণব্যঞ্জনান্তাদ্যাণ্। কার্যাং তার্য্যানদীত্বয়া। পাঠ্যং পাক্যন্তদনঃ হ্রন্থেবধ্যঃ ভোগ্যাস্থ্য ৭০॥

আবশ্যকেইর্থেভূবর্ণাং। য্যণ্স্যাং। আপ্লাব্যং নাব্যস্থরঃ। নাব্য-মবশ্যম্অবশ্যভ্যাব্যং। আবশ্যকেইর্থেকিংছব্যাস্মিধঃ। ৭১॥

মুগাশ্ছেকাস্তেগৃহ্থকাশ্চতেইত্যমরঃ। গৃহং গুদেগ্রন্থভেদেক্রীবং শাখাপুরেস্ত্রিয়াং। গৃহাসক্তম্বগাদে নাত্রিমুচাধ্বৈরিপক্ষয়োরিতিমেদিনী। গুদাদাবপ্যস্বাতন্ত্র্যাক্ষতেঃ পৃথণ্ডোক্তং। নপুংসকে ন নগরগ্রাহ্থং দৈশ্যমিতি। বাহেতি। গ্রামাদ্বহির্ভূতাঝটিত্যদোগৃহ্বতইতি। গ্রামগৃহাগ্রামাদ্বহির্ভূতেত্যর্থং স্ত্রী-লিঙ্গনির্দেশাদর্থগ্রাহ্মিতি নক্যবিতিবজ্রধরঃ। ৬৯॥

गृष्धकाणिका।

পদেতি। পদেস্থিওত্তেকিঞ্চিং সংজ্ঞাবিশিষ্টে পক্ষে আঞ্জিতে অস্বতন্ত্রে অধীনেহর্থেবাছায়াংবছি।
ছিতায়াঞ্চার্থে এই উপাদানে অস্মাংক্যপ্। প্রগৃহ্মিতি। ক্যপিএহিজ্যেত্যাদিনাসম্প্রদারণং। নহীতি।
অঙ্কঃ! ভোঃ সথি! কুমুদান্তপিদাহায়ভবন্তীতিশেষঃ কমলাকরঃ পদ্মসমূহঃ কিং দাহায়ভরিষ্যতীতি
কিম্বক্তব্যং হিষতঃ ইন্দৃগৃহেষ্ ইন্দৃপক্ষেষ্ উত্রেষ্ সংস্থ সূর্য্যগৃহঃ সূর্য্যাঞ্জিতঃ পদ্মাদিষ্ঠ ছর্ম ভবেদিতি।
কম্যান্চিরিরহিণ্যাবাক্যমিদং। অধীনন্চগৃহঃ। গ্রামগৃহেতি। গ্রামবাহান্ত্রীগ্রহণযোগ্যেত্যর্থঃ।
গ্রাহ্মিতি। নক্যপ্ত্যণেব। ৬৯॥

क्र थमीशिका।

ঋবর্ণ। ঋর্বর্ণঃ সজাতীয়োযস্তেতিতদ্গুণসম্বিজ্ঞানোবহুত্রীহিঃ। ঋশ্চাদৌবর্ণশ্চৈতি পঞ্চাত্রবন্ধির-ঢকর্মধারয়োবা ঋবর্ণব্যঞ্জনেঅন্তেযস্ততস্মাৎ নতুপদপক্ষাদিষু একযোগনিদ্দিষ্টত্বাৎ। কার্য্যমিতি। করোতেঃ কৃকরণেকরতেঃ কীর্ণাতের্ববা প্রয়োগইতিভট্টঃ। ণসুবন্ধান্থদিঃ ঘসুবন্ধাৎচজাঃ কর্গো। ৭০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঋবর্ণেতি। ঋশ্চবর্ণঃ স্বয়্যাদীর্ঘশ্চেতিরন্দোবা সর্বোদ্ধনিভ্যয়াএকবং। ভাবকর্মণোব্বাচ্য-য়োর্য্যণ্। কার্যমিতি। ভুক্তঞ্করণেত জক্ত করণেভূপ কৃঞ্হিং সায়াং স্বাউ কৃষ্ণেপণেভূপ কৃঞ্হিং সায়াং জ্যাউ এভ্যোঘ্যণ্রদ্ধিত। ভার্যেতি। ভূপবনসন্তরণ্যোঃ। পাঠ্যং পঠ্যক্তায়াং বাচিপাক্যঃ ভূপঞ্ষ্ পাকেঘনুবন্ধেচস্থকঃ। বধ্যইতি। হস্বোজ্বির্বিবধিজনা মিতির্স্তঃ বধ্বন্ধনেহয়ংধাতুঃ। ভোগ্যাভূজ্পালনাভ্যবহারয়োঃ ঘ্যণিগুণঃ চল্যোঃ কগাবিত্যনেন জম্পাঃ। অক্মস্তক্মালা। মাল্যংমালাম্রজোম্দ্র্মিত্যমরঃ। ৭০॥

क्र थमी शिका।

আব। অবশ্যস্তাবআবশ্যকঃ মনোজ্ঞাদিস্থাদকণ্ তচ্চাসাবর্থশ্চৈতিতিন্মন্গম্যে। অথাবশ্যমিতি ধর্মমাত্রং কথং তস্মভাবইতিচেৎ সত্যম্অবশ্যং শব্দোধর্মিণ্যেবপ্রস্কৃতন্তেনাস্মভাবোঘটত এবপৌনঃ পুনিক-বিদিতিবজ্ঞঃ। আপ্লাব্যমিতি ঘ্যাণির্দ্ধিঃ খনোনোন্ড্যোবৎস্বরবৎ। ৭১॥

আসুঞোয় ত্রপি বিপি দভিরপ্লপি কম্চমাং। যং বাধিত্যাঘ্যণ্স্যাৎ। আসাব্যং যাব্যম্ অপত্রাপ্যং বাপ্যং দভীতিপাঠান্নলোপেদন্ভের্ঘ্যণ্ অবদাভ্যং রাপ্যং লাপ্যং কাম্যম্ আচাম্যং। ৭২॥

সৃক্তেঃ সমবপাণিভ্যং। পাণিসর্গ্যাবটীয়থা। সমবসর্গ্যারজ্জুঃ। ৭০॥ যক্যপ্যাণস্তানিপাত্যার ঢ়িতো ২ন্যান্যবাধনাং। অর্য্যঃ স্বামিনিবৈশ্যেত। অর্ত্তের্যঃ সাধুরার্য্যঃ য্যণ্গুহের্ঘণো ২পবাদঃ ক্যপ্ গুছুং ধনং। পণ্যং বিক্রেয়-বস্তুনি। স্তুতে পাণোদেবঃ। ৪৪॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

আবশ্যকইতি। উবর্ণাৎহ্রস্থদীর্ঘোকারীন্তাং তুরবধারণে তেনাবশ্যকের্থএবএতেন পূর্ববসূত্রেণা-বশ্যকেহনাবশ্যকেচঘ্যণিতিপ্রাপ্তং। আপ্লাব্যমিত্যাদিআঙ্গ্লুগতোঅবশ্যং প্লবনীয়মাপ্লব্যং গুস্ততোণাদি-ম্নাদিঃ। অবশ্যভাব্যমিতি। ভূসতায়াং ভূচিন্তায়াং ভূপ্রাপ্তোবাঅবশ্যমোবাক্তের্ঘিতিমলোপঃ। হব্যা ইতি। ভূদানেয়ং স্থাৎস্বরেতিয়ং গুণঃ হবনীয়াইত্যর্থঃ। ঘ্যণিসতিহাব্যাইতিস্থাং। ৭১॥

क्९ श्रमोशिका।

আন্ত । আঙ্ নিয়মায়পৃথক্পদং । যুঞ্ অভিষবে যুমিশ্রণামিশ্রণয়োঃ ত্রপৃষ্ লজ্জায়াং টুবপ্বীজ-তন্ত্রসন্তানে দন্ত্ প্রপ্রণে জপ্ লপ্ ভাষণে কমুকান্তো চমুম্মদনে । যং বাধিষ্বতি । স্বযুভ্যাং স্বরান্তবাদিতরেভাঃ প্রগান্তবাৎপ্রাপ্তিমিত্যর্থঃ । ৬২ ॥

গৃতপ্রকাশিক।।

আন্তর্জাইতি। আসাব্যমিতি। আসূয়তামিদম্ আসবনদ্বেতি বাক্যম্ এবমন্তত্ত্ব। অপপূর্ববিত্রপূষ্। দভীতিপাঠাদিতি। দভীতিনশূন্যপাঠবলাদ্দন্ভের লোপে ঘ্যণ্তেনর্দ্ধিঃ অন্তথা অবদম্ভ্যমিতিস্থাৎ। ৭২॥

क्र< श्रमिशिका।

সজে:। সজির্ বিদরণগত্যোঃ ঋতুপান্তত্বেনক্যপ্ প্রাপ্তোঘ্যণ্বিধিঃ। পাণিদর্গাত্তীয়াদমাদঃ। বটীরজ্জুঃ। ৭৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্ত্রেরিতি। স্তর্গবিদর্গনির্মাণয়োঃ ধার্নুনির্দ্দেশেইঃ তস্ত । সম্চ অবশ্চেতি সমবশ্চ পাণিশ্চেতি দ্বন্ধঃ অত্রেদ্বিচনাৎ সমববোগে পাণিবোগেচ ঘ্যঞ্জিজ্ঞাপিতং। পাণিসর্গোতি। পাণিনাস্জ্যতামদৌ-পাণিসর্গাঘ্যণ্গুণঃ চজোঃ কর্গোঘ্রুবস্ধে ধুটিচেতিজম্বগঃ। রজ্জ্স্ত্রিষুবটীগুণঃইত্যমরঃ। যথেত্যন্তং ছন্দ-স্তেন ব্যতিক্রমোদাহরণেনদোষঃ। সমবর্গোতি পূর্ববংঘ্যাণাদি। ৭৩॥

क्र ९ अभी शिका।

প্রচুরং পরসূত্রং সংগৃহুশাহ্যক্যবিতি। রুটিতো রুটাস্বার্থতো ব্যভিচারাদ্বা অন্যোত্থাবাধনাদ্ধে-তোর্য্যক্যপ্ ঘ্যণন্তাঃ কেচনশব্দানিপাত্যাঃ। যদ্বাঅন্যোত্যবাধনমাদাদ্য রুটিতো রুটোপ্রদিদ্ধ্যর্থে নিপা- বর্য্যাবদ্যেতুবরণপ্রাপ্তস্বাচ্ছন্দ্যগর্হ্যয়ে। পতিম্বরাবর্য্য। স্থ্রীবোরামব-র্যোহসৌপণ্যভ্রাত্বধঃ কপিরিভিভট্টিঃ। রত্যোহন্যঃ নঞ্পূর্ববদের্য্যঃ। অবদ্যং নিন্দ্যেক্যপিঅনুদ্যং নবাচ্যমিত্যর্থঃ। ৭৫॥

তনীয়াইতি। নিপাতনাং পায্যক্পাসূর্য্যেত্যাদো পকুরাদেশাদিঃ। নশ্বপ্রাপ্তপ্রাপণং প্রাপ্তবাধনং নিপাতনমিতি কৃতমন্ত্যোত্যবাধনাদিতিনৈবং গতোজংহন্নিত্যাদাবর্ধব্যবস্থামাত্রেনিপাতনপ্রয়োগান্ধহীদং তল্লক্ষণমিতি। তদেবাহঅর্যাইতি। ঋগতো অর্যতে গম্যতে সেবার্থং ক্রিয়ার্থন্নাঅসোমর্য্যঃ স্বামিবৈশ্য-য়োরিতিরুঢ়িঃ ঘ্যণ্প্রাপ্তোযইত্যন্তোত্যবাধনং। এবং শুহুং শুহুসম্বরণে বাক্যপ্ কৃসজীতিপাক্ষিকঘ্যণ্বাধঃ ক্যপ্। শুহুং ধনমিতিরুঢ়িঃ। শুহুং রহস্যপক্ষেচগুহুঃ কম্চদন্তয়োরিতি। উপচারাদ্যভিচারাদা এবমন্ত্রাপি। পণ্যমিতি। ব্যবহারার্থাৎ পণোঘ্যণ্বাধঃ ক্যপ্বিক্রেয়বস্তুনি বিক্রয়নীয়পদার্থে। বিক্রেয়ং পণিতব্যঞ্চণ্যমিত্যমরঃ। ৭৪॥

गृष्धकाषिका।

যেতি। রূতিঃ প্রসিদ্ধার্থবশাদ্ধেতোঃ। নিপাতনঞ্চার্থবিশেষব্যবস্থাবর্ণবিকারশ্চ বর্ণবিকারঃ
পশ্চাদ্দর্শয়িষ্যতে। অর্যাইতি। স্থাদর্য্য স্বামিবৈশ্যয়ারিত্যমরঃ। আর্যাইতিঘাণ্রদ্ধিঃ। মহাকুলকুলীনার্য্যসভ্যসক্ষন সাধবইত্যমরঃ। গুহেরিতি। যদাগোপ্যধনং গুহুশন্দেনাভিধীয়তেতদাঘাণ্বাধঃ।
যদাধনাতিরিক্তমভিধীয়তে তদাবাক্যপ্ কৃষ্দ্ধিশন্দিক্রহুগুহিছুহ্র্ষিসম্ভ্ ঞামিত্যনেনবাঘাণ্চ। পণ্যমিতি।
পণ্সতোব্যবহারেচ। যদাব্যবহারার্থক পণ্বিক্রেয়বস্তুবাচকঃ তদাঘাণ্বাধঃ ক্যপ্ স্তুত্র্থেভুঘ্যণ্ পাণ্যোদেবইতি। ৭৪॥

क्रथमी शिका।

বর্যা। বরণায়প্রাপ্তং স্বাচ্ছন্দ্যং স্বতন্ত্রত্বং যেনযন্ত্রণাসচ গর্ছ নিন্দায়াং গর্হোনিন্দ্যন্দ এতয়েরর্থ-রোর্যার্যক্রমং বর্যাবদ্যেনিপাত্যেতে। ক্রীবেপ্রধানেপ্রমুথপ্রবেকামুন্তমোন্তমাঃ। মুখ্যবর্ষ্যবরেণ্যান্দেজ্যনরঃ। স্বমতের্ছ্র্ক্রের্ক্রের্যা রুক্তইতিব্যার্ত্তোপতিং রুণীতইতি বর্যাপর্যায় পতিম্বরাম্বয়েচ ম্বয়ের্দ্মনিং। ভট্টনারায়ণস্ত রুঙ্গন্তকো সম্ভক্তিং মৈত্রীকরণ মত্রবর্যাইত্যাহ। স্ত্রীলিঙ্গেনির্দ্দেশঃ কিং বার্য্যাঞ্জিইতি বরক্রচিচন্দ্রো। রুণীতেপতিং বরিত্বং প্রাপ্তস্থাচ্ছন্যাবর্যা যদ্চ্ছয়াব্রয়তইতি কর্ত্ররিষইতিচন্দ্রঃ। স্থ্রীবিত্ত। ব্রয়্তামসোবর্যাঃ ভবতাযদ্চ্ছয়াবরণীয়ঃ প্রার্থনীয়ইতিযাবং। ঋয়মূকেইনবদ্যোইস্তি পণ্যাভ্রম্বরণ কপিঃ। স্থ্রীবোরাম! বর্যোহসোভবতাচাক্রবিক্রমইতি রামম্প্রতিবালিবাক্যং স্থামং। প্রচাং মতেইস্রিয়াং ব্যভিচারাং তদ্ধিতযোবেতি। ব্রত্যোহন্তইতি। বৃঞ্দৃস্তিতিক্যপ্। অবদাঞ্রোহবদ্যং ক্যণীতি শঙ্কয়াহনঞ্পূর্কেতি। কুপুয়কুৎদিতাবদ্যথেটগর্ছানকাঃ সমাইত্যমরঃ। গর্ছ্যাদম্বন্ধন্বিক্রপ্। ৭৫॥

বহুং স্যাৎ করণেবাছে। বছত্যনেনেতি বহুং শকটং। অন্যত্র বাহ্যোভারঃ। ৭৬॥

অজ্য্যং সঙ্গতকর্মণি। নজীয্যত্যজ্য্যং সাধুভিঃ সংখাং। তেনসঙ্গৃতমাযে গ্র রামাজ্য যং কুৰুদ্রুতং। ৭৭॥

প্রজনেপ্রাপ্তকালাগৌরুপসয্যে তি কীর্ত্ত্যতে। ঋতুমতীত্যর্থঃ। প্রজনং প্রথমগর্ভধারণং উপসায্য নিয়া। ৭৮॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

বর্ষ্যেতি। পতিং র্ণীতে পতিশ্বরা সংজ্ঞারাং তৄ র ভূঞ্ ধারীত্যাদিনা খে ব্রশ্বাস্ট্র র্ঞ্ বরণে রঙ্ সম্ভক্তোচ বর্ষ্যা পূর্বধাতুপক্ষের্ঞ্ দৃস্তশাস্বিত্যাদিনাক্যপ্প্রাপ্তে পরধাতুপক্ষেশ্বর্ণব্যঞ্জনান্তাদ্ব্যাদিনাক্যপ্প্রাপ্তে পরধাতুপক্ষেশ্বর্ণব্যঞ্জনান্তাদ্ব্যাদিত ঘ্যণ্প্রাপ্তে তোবাধিত্বায়ঃ। পতিশ্বরাচবর্ষ্যাচেত্যমরঃ। বর্ষ্যাপতিশ্বরায়াং জ্রীবরেণ্যেত্রিস্থ্নাশ্বরেইতি মেদিনী। নিন্দ্যাদন্তত্রার্থেনাশ্বিবদঃ ক্যপ্চেতি ক্যপিসম্প্রদারণে অন্স্বরেঅসুদ্যং তম্মার্থমাহ ন বাচ্যমিত্যর্থ ইতি। ৭৫॥

क्र श्रमीशिका।

বহং। বাহেবহির্ভবেকরণেবাচ্যেঘ্যণ্বাধোয়। র্ষবহনীয়শকটেতু গন্ত্রীকম্বলিবাছকমিতি কর্মবিবক্ষণাৎ ব্যভিচারাদ্বাঘ্যণ্সার্থেকঃ। অন্তব্রেতি। করণাদন্যত্রকর্মণীত্যর্থঃ। বাহাদন্যত্রবাহনমনঃ একপদে২পীতি দীর্ঘইতিবজ্ঞঃ। ৭৬ ।

गृष्धकाणिका।

বহুমিতি। বাহ্যেবহনসমর্থে করণেকারকেহর্থে যেবহ্প্রাপণেবহ্ধাতোর্ক্সহং। স্বস্থত্তেতি করণাদন্যত্রকর্মাণি বাহ্যাদন্যত্রচ বাহ্যইতি। উহ্যতামসাবিতি কর্মাণঘ্যণ্ ভারইতি বিশেষ্যং। ৭৬ ॥

क्रध्यमीलका।

অজ। সঙ্গতিঃ সঙ্গতং। মৈত্রীতিয়াবং। সঙ্গতিঃ সঙ্গমেজ্ঞানেইত্যজয়ঃ। তচ্চতৎকর্মাক্রিয়াচেতি তিম্মিন্বাচ্যেয়ঃ। জৃষ্বয়োহানো নজীর্ঘাতি সাধুভিঃ সহননশুতি কেনাপ্যনাহতমিত্যর্থঃ। তথাচ সরলয়োঃ থলুস্থ্যমনাহতমিতি। তেনেতি। লঙ্কাং প্রাপ্যততঃ পাপং দশগ্রীবং হনিষ্যমীতি পরার্দ্ধম্। ইদঞ্চরামপ্রতি বালিবাক্যং। সঙ্গতং স্থ্যমেতদ্বিশেষণমজর্য্যুং নতুপর্যায়ঃ মহাকবিপ্রয়োগেতদ্বিশেষণ-ত্বেনোক্তত্বাং। ৭৭॥

গূতপ্রকাশিকা।

অজ্য্যমিতি। সঙ্গতং স্থাং। সাধুভিঃ সহস্থ্যমজ্য্যমনাহতমিত্যর্থঃ। তেনেতি। হেরাম! তেনস্থগীবেণ আর্য্যেণসাধুনাসহক্রতং সঙ্গতং স্থামজ্য্যমনাহতং কুর্ব্বিত্যর্থঃ। ৭৭॥

क्रथ्यमीणका।

প্রজ। প্রজনঃ স্থাত্পসরইত্যমরঃ। স্ত্রীগবাদিয়ুপুঙ্গবাদীনাং প্রথমগর্ভধারণমিছ্যুক্তলিঙ্গং জহত্যপীতি ন্থায়াৎ ক্লীবত্বং প্রজনইতি পাঠোভদ্রএব। প্রথমগর্ভোধার্য্যতেহনেনমৈথুনাভিগমনেনেত্যর্ধঃ।

তিলাদিকক্ষোবিনীয়ো বিপূয়োমুঞ্জউচ্যতে। বিনেয়োইন্যঃ তৃণাদন্যৎ বিপব্যং বস্ত্রাদি। ৭৯॥

অব্যথ্যোযোনব্যথতে। সতুত্বৰ্জনঃ।৮০॥

গ্রহণপাঠেহপ্যয়মেবার্থঃ। নিমিত্তসপ্তমীয়ং তেন প্রজনার্থং মৈধুনাভিগমনার্থং লব্ধকালাগোর্ব্বাচ্যা চেতুপসর্য্যাকীর্ত্তাতে। স্থগতো রুষানুপসরতি রুষৈরুপস্মিয়তেহসোবেতি বাক্যং। কল্যোপসর্য্যেত্যমরঃ। গোরিতি পশুবাচি উপসর্য্যাবড়বেতি বররুচিঃ। ঋতুমতীতি। ঋতুমত্যাএবপ্রজনপ্রাপ্তকালত্বাৎ। ঋতুমত্যাপসর্য্যেতি চাক্রঃ। উপসার্য্যান্থেতি। প্রস্বাদে প্রাপ্তকালাপ্যপ্রসার্য্যা উপগম্যানঋতুমতীতি ঋতুমত্যাএবপ্রজনব্যার্ত্তিরিয়ং। গোঃ কিম্ উপসার্য্যানারী। ৭৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

প্রজনইতি। প্রকৃষ্টোজনোহপত্যং যেনপ্রজনং প্রথমগর্ভধারণং যথা কথঞ্চিদ্ব্যৎপত্তিঃ। প্রাপ্তঃ কালোযয়াসাতথা। প্রজনেপ্রথমগর্ভধারণেপ্রাপ্তকালাঋতুমতীগোঃ উপসর্য্যেতি কীর্ত্ত্যতে কথ্যতেইত্যর্থঃ। উপসার্য্যতি। উপসার্য্যা উপগম্যানঋতুমতীতিনয়ঃ কিন্তুঘ্যণ্। ৭৮॥

क्रथमी शिका।

তিলা। আদিনাসর্থপাদিপরি গ্রহং থ ইলাইতি যস্তর্রাটিং। সবক্ষলইতিবজ্ঞং। স্থতাদিপাকার্থং শিলাপিন্টং বস্তু চ্যতইতি ভট্টং। কক্ষোহস্ত্রীয়ত তৈলাদিশেষেদ স্কেবিভীতকে। বিট্কিট্র যোশ্চ পাপেচ ত্রিষুপাপাশয়ে পুনরিতি মেদিনী। বিনীয়তাম সোবিনীয়ং। পূঞ্ পবনে বিপ্যতামসাবনেনবাবিপ্য়ং। স্থর্ণ মুক্ত সম্পত্তির বজ্ঞা। বিনেয়োবিনেতব্যঃ বিপব্যং পবিত্রীকরণীয়মিত্যর্থং। ৭৯॥

गृष्यकामिका।

তিলেতি। আদিনাসর্বপাদিগ্রহণং। স্বরান্তাদ্যপ্রাপ্তোতং বাধিস্বাক্যপ্রথনিপাতশ্চ বিপূর্ইত্য-ত্রাপিতথা মুঞ্জস্থণবিশেনঃ। অন্তইতি। কল্পভিন্নঃ শিলোবিনেয়ঃ শিক্ষণীয়ঃ। তৃণাৎ মুঞ্জাদন্তৎ বস্ত্রাদি বিপব্যং পবিত্রং করণীয়মিত্যর্থঃ। ৭৯॥

क्रथमिका।

অব্য। ব্যথ্পী ছায়াংক্যপ্। সূর্য্যাব্যথ্যরুচ্যাং কর্ত্তরিক্যপীতিকাতন্ত্রং। এষাং কর্ত্তব্যেব্যাণ্বাধঃ ক্যুপ্ছাবকর্মণোস্ত্রঘ্যণেব যথা অব্যাথ্যোযজ্ঞান্ধিঃসার্য্যং রোচ্যমিতিস্বয়ংবাচ্যং। ছুর্জনইতি। লঙ্জা-ভাবান্ধব্যথনমিতিভাবঃ।৮০॥

গृष्ध्रकाष्ट्रिका।

অব্যেতি। যোনব্যথতইত্যনেনকর্ত্তরি অব্যথশব্দাৎক্যপ্যোবা। ছুর্জ্জনইতি। লজ্জাভাবাদয়া-ভাবাদ্বানব্যথতইত্যাশয়ঃ।৮০॥ সূর্য্যঃ সবিতরিশ্বতঃ। সরতিস্থবতিবেত্যর্থঃ।৮১॥
রোচতেযস্থসৌৰুচ্যঃ। ৰুচিজনকোদীপ্তিমাংশ্চ।৮২॥
ভিদ্যোজ্ঝ্যৌনদকর্ত্তরি। ভিনত্তিকূলমুজ্ঝত্যুদকমিতীমৌনদবিশেষৌ।৮৩॥
পুষ্যঃ সিদ্ধ্যশ্চনক্ষত্রেকার্য্যপোষণসাধনাং। পুষ্ণাতি সাধ্য়তিবা কার্য্যগ্রাবাবশিষ্বেত্যর্থঃ।৮৪॥

क्रथ्यमीशिका।

সূর্যাঃ। সূপ্রেরণেশ্ববিশ্রোতস্মার্ত্তকর্মার্থং ধিয়ঃ প্রচোদয়তীতিভূচসবিতরিআদিত্যে। সরতি স্ববিতবিত্ত। স্থাতিসূপ্রেরণে। তথাচ লোকান্ধাবতি সরতীতিক্যপিনিপাতনাত্ররিভিভট্টঃ। ধাবতীতি সর্ত্তেরপং। কৈশ্চিৎস্বরতীতিপঠিস্বা স্থাকাগ্রিতাপনয়োরিত্যত্রসাধ্যতে। সূর্য্যোহ্র্কপর্ণেতপনে স্ত্রীত-দ্রামিধীভিদোরিতিমেদিনী।৮১॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

সূর্যাইতি। সরতিনোকান্ধাবতিস্তবতিধিয়ং প্রচোদয়তি মূপ্রসবেইত্যস্থবাস্তবতিঅন্নাদিকং প্রসূতে আদিত্যাস্তায়তের্ষ্টির্কাষ্টেরন্নংততঃ প্রজেতিবচনাৎ। তপনঃ স্বিতারবিরিত্যমরঃ। ৮১॥

क्र ९ अमी शिका।

রোচ। রুচ্দী প্রাবভিপ্রীত্যাঞ্চেত্রর্থবয় গ্রহণাক্রচিজনকোদীপ্তিমাংশ্চেত্যক্তং। রুচিজনকোমোদ-কাদিঃ দীপ্তিমান্সূর্য্যাদিশ্চরুচ্যইত্যর্থঃ। ৮২॥

গূতপ্রকাশিকা।

রোচতইতি। অত্রাপিরোচতইতি কথনাক্রতঃ কর্ত্তরিক্যবিতিদর্শিতং। ঘাণ্বাধঃ। কান্তং মনোরমং রুচ্যং মনোজ্ঞঃ সাধুশোভন্মিত্যমরঃ। ৮২॥

क्र< अमी शिका।

ভিদ্যো। ভিদির্বিদারণে উদ্ঝত্যগে নদকর্ত্তরিক্যবন্তোনিপাত্যতে। ইমাবিতি যথা বীচিলোলভুজয়োর্বিনির্গতং শৈশবাচ্চপলমপ্যশোভত। তোয়দাগমইবোঝ্যাভিদ্যয়োশ্যমির্বার্দার্শং বিচেষ্টিতমিতি
রঘৌ। নদকর্ত্তরিকিং কর্মণিতুভেদ্যওখ্যাইতি। সাহচর্য্যাৎক্যপ্কর্ত্তরীতিমাত্রবিধানং ঘ্যণাপিতক্রপোপপত্তেঃ।৮৩॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

ভিদ্যইতি। নদএবকর্তা নদকর্তাতি স্মিন্। অত্রাপিঘাণ্ বাধঃ ক্যপ্ অত্রার্থনিপ।তঃ। ৮০॥

क् अमोशिका।

পুষ্যঃ। নক্ষত্রেবাচ্যেকার্য্য পোষণসাধনাদেয়াগাৎ পুষ্যসিদ্ধ্যোক্যবন্তোনিপাত্যো। অনুবর্ত্তমান-কর্ত্তরীতিবারণায়কার্য্যপোষণসাধনাদিতি। পুষ্পুফৌসিধুশাস্ত্রেমঙ্গল্যেচ। সাধয়তীতি। সিদ্ধ্যতিপার-লোকিকে ঐহিকেক্রিয়ায়াং সিদ্ধ্যতি বা এচামাত্বমননীতি কলাপসূত্রাপেক্ষয়াব্যাকৃতং। একার্থেন যুগ্যংগ্যদ্বাহনে। যুজ্যতেইনেনাগোবাযুগ্যঃ অধ্বঃ যোগ্যেইন্যঃ। ৮৫॥ কৃষ্টপচ্যঃ কুপ্যঞ্চনামনি। কৃষ্টেপচ্যস্তেময়মিতিকৃষ্টপচ্যাত্ৰীহয়ঃ গুপ্যতইতি কুপ্যং স্বৰ্ণরূপ্যাভ্যামন্যদ্ধনং তান্ত্ৰাদি। ৮৬॥

পুংসাকৃতং পুংসাংবৃদ্ধং পৌরষে মিতিবং দিধাহর্থবিবরণমিত্যন্তে। কেচিতু দাধেং দিদ্ধাইতিতন্ধপোষণং দেধনমিতিকাতন্ত্রং। দিদ্ধাত্যদাবিশ্ববেতিচন্দ্রকেরায়াদোচিদিধের্দ্দর্শনাং। অসাবিশ্বনিতিরুটাকত্র ধিকরণার্থদর্শনং। পুষ্যেতু দিদ্ধাতিষ্যাবিত্যমরঃ। কলিযুগেতু তিষ্যনিত ইত্যর্থান্তরেতিষ্যইতি। ৮৪॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

পুষ্যইতি। নক্ষত্রেহর্থেকার্য্যপোষণসাধনাদ্ধেতোঃ পুষ্যঃ সিদ্ধ্যশ্চনিপাত্যেতে। অসাবস্মিষেতি কর্ত্র ধিকরণয়াের্কাচ্যয়েরিতিসূচিতং। এতদর্থং কার্য্যপোষণসাধনাদিত্যুক্তং। অন্তৎকুৎপ্রদীপিকায়াং জ্ঞাতব্যং।৮৪॥

क्रथ्यमीलिका।

যুগাং। যুজির্যোগের্ট্যাকর্মকরণরপেবাহনেবাচ্যে। যুজ্যতইতি। যুজ্যতেরথাদিকমনেন রথাদিভিব্বাযুজ্যতেএতদ্যুগ্যং। ক্যপিনিপাতনাদগন্ধমিতিবজ্ঞঃ। সর্ব্বংস্থাদাহনং যুগ্যমিত্যমরঃ। যুগংবহতীতিযুগাদের্ঘঃ যুগ্যমিত্যর্থান্তরং। বহতীত্যনেনেতিবাহনম্ একপদেহপীতিদীর্ঘঃ। যোগ্যোহ্ম-ইতি। অন্যোমনুষ্যাদিঃ। কর্মান্তরংযুজ্যতেহনেনকর্মান্তরেণবা যুজ্যতেহসাবিত্যর্থঃ।৮৫॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

যুগ্যমিতি। যুজঃ ক্যপিজস্তগত্বং নিপাতনাৎ। নচঘ্যণিনিপাতনাদ্গুণাভাবইত্যেবকথং নস্তাদিতি বাচ্যং যোগ্যাহ্নতিয়া ক্ষান্ত প্ৰত্যয়ান্তপ্ৰয়োগদৰ্শনাৎ। অন্তোবাহনতিয়া যোগ্যঃ ঘ্যণিগুণঃ জস্তগত্বঞ্চ। ৮৫॥

क्र ९ अमी शिका।

কৃষ্ট। নামনিদংজ্ঞায়াংঘাণ্বাধঃ ক্যপ্। কৃষ্টেলাঙ্গলেনভূমেঃ কর্কণেসতি। পচ্যন্তইতিকর্মকর্ত্রধানিধান। স্বয়মিতি। কালেনাদিত্যরশ্মিনাস্বয়ং পচ্যন্তেপকাভবন্তীতর্থঃ। কৃষ্টইতিরোপণাদেরপ্যু-পলক্ষণংক্ষ্যাঘোর্ত্রীহরুৎ পদ্যতেতস্থেয়ংসংজ্ঞেতিবজ্ঞঃ। অতোর্ত্রীহয়ন্তথাবিধারীহয়ইত্যর্থঃ। সংজ্ঞাশব্দবার্ত্রং সপ্তমাদমাদঃ বিভক্তিলুক্চ। গুপ্যতইতি। গুপ্রক্ষণেকর্মাণিক্যপ্নিপাতনাৎগস্তকঃ। আদিনামাণিক্যাদিপরিগ্রহঃ। আভ্যাং যদগ্যৎ তৎকুপ্যমিত্যমরঃ।৮৬॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

কুষ্টেতি। কৃষ্ আকর্ষণেকর্ষণং কৃষ্টং ক্তঃ ব্যঞ্জনং পরগামিষকারাচ্চ টবর্গঃ স্থাদিতিতস্থটঃ। কৃষ্ট-পচ্ছতি কুপ্যমিতিচনামনিনিপাত্যতে। কুন্টেকর্ষণেদতি কুষ্টেক্ষেত্রেবা স্বয়ম্পচ্যস্তেকশ্মকর্প্স্থাতো র্ঘণি বিশ্বায়ঃ ব্রীহ্যঃ শরৎপক্ষাম্থানি। ৮৬॥

খাক্সামিধেনীধায্যাস্যাৎ। বহ্নিজ্বালনায়সমিধাধানমন্ত্র:।৮৭॥ পায্যং মানেতৃবস্তুন:। ধাঞ্মাঙোর্ঘ্যণ্। ধেয় নেয়মন্যত্র।৮৮॥ প্রাণায্যোইপ্রিয়ে। চৌরাদিঃ।৮৯॥

क्र श्रमी शिका।

ঋক্। সামিধেনীঋক্বাচ্যাচেৎ ঘ্যণস্তধায্যেতিসিদ্ধংস্থাৎ। সমিদাধীয়তেইনয়েতিপুষোদরাদিঃ
সামিধেনী। বহুনীতি। মৃদ্যাসিধেন্তঃ সপ্তদশ্লচন্তথাপিসামিধেনীত্যেকত্বনির্দ্দেশাৎ যজ্ঞকালে
আহিতাগ্লিব্রাক্ষাণৈদ্দেবহোমেবহ্নিজ্ঞালনায়সমিধাধানমন্ত্রঃ ধাষ্যোচ্যতে নতুসর্কাইতিবজ্ঞঃ। ঋক্সামিধেনীধায়াচ যাস্থাদীগ্লিসমিদ্ধনইত্যমরঃ। ঋথিশেধেইপ্যুপচারাৎ যথাধায়াঃ শংসস্তীতিচক্রঃ। ধীয়তে
বহ্নিজ্ঞালনায়সমিধাধানং ক্রিয়তেইনয়েত্যময়ঃ।৮৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঋণিতি। সামিধেনীঋক্সমিধাগ্নিং তুবস্ততেত্যাদি সমিধাধানমন্ত্রঃ ধায্যাস্থাৎ। ছুধাঞ্ধারণপোষণয়োরিত্যস্মাদ্ধারণার্থেযংবাধিস্বাঘ্যণ্ আকারান্তাদ্য আগমইতিযাগমঃ। অমিতং মধুতৎকথামমশ্রবণপ্রাঘৃণিকীকৃতাজনৈঃ। মদনানলবোধনেহভবৎ খ গ ধায্যাধিগধৈর্যধারিণইতিনৈষধে। শ্রবণপ্রাঘৃণিকী
প্রবণাতিথিরিত্যর্থঃ। ৮৭॥

क्ल्थमीशिका।

পায্যং। মাঙ্মানেমীয়তেহনেতি মানেপরিমাণেপাত্রেবাচ্যেপায্যং নিপাত্যতে মীয়তেকস্তচন্দ্রস্তুনঃ পরিমাণংক্রিয়তেহনেতিঘ্যণ্পায্যং নিপাতনাৎপাদেশঃ ব্যবহারিকাণাং পরিমাণপাত্রবিশেষস্ত সংজ্ঞেয়ং। যৌতবং দ্রবয়ং পায়্মিতিমানার্থকং পৃথগিত্যমরঃ। ধাঞ্ মাঙোরিতিধাঞোধায়ামাঙঃ পা্যুমিত্যর্থঃ। পাধামানসামিধেন্যোরিতি কলাপেপাপানেপারক্ষণে বা পায়ং চক্রকেহপ্যেবং। ৮৮।

গৃচপ্রকাশিকা।

পাষ্যমিতি। মাঙ্মানেদিমীয়তেপরিমীয়তেহনেনেতিপাষ্যং ঘাণ্তেনমানেপরিমাণেপাত্তেবাচ্যে পাষ্যমিতিনিপাত্যতে। ধাষ্যাপাষ্যয়োঃ দাধনং দর্শরতিধাঞ্মাঙোর্ঘ্যণিতি। ধেয়ং মেয়মন্যত্তেতি। ডেট্চাদন্তেতিয়ঃ ডেট্চডকুবন্ধেহন্ত্যস্বরলোপঃ অন্যত্ত্বসামিধেন্যাঝচোমানার্থাদন্যত্তেত্যর্থঃ। ৮৮॥

क्र ९ अमी शिका।

প্রাণা। অপ্রিয়েসতামসন্মতে। প্রাণায্যোহসন্মতেহিপ স্থাদভিলাষবিবজিতইতিমেদিনী।
প্রকর্ষেণসতাং সঙ্গানীয়তেহসোপ্রাণায়ঃ যবাধেঘ্যণির্দ্ধাবায়াদেশোনিপাতনাৎ। চৌরাদিরিতি সচসতামসন্মতঃ নিঃ সারণীয়ইত্যর্থঃ। কথং তহিজ্যেষ্ঠায় পুত্রায় পিতাব্রন্ধাব্রায়া প্রাণায্যায়ান্তবাসিনেশ্যস্মৈনচেতিসত্যং প্রীতিরভিলাযোহপ্যুচ্যতে তেনপ্রাণায্যায় অপ্রিয়ায়ানভিলাধায়নিস্কামায়বেত্যর্থেসিদ্ধমিতি
ভট্টঃ।৮৯।

স্থানায্যোদক্ষিণাগ্নে প্রকীর্ত্তিতঃ। যোগার্হপত্যাদানীয় দক্ষিণাগ্নিঃ প্রণীয়তে। পরিণেত্রিপারিণায্যইত্যপি। ১০॥

রাজসূয়ঃ কুগুপায্যঃ সঞ্চায্যশচক্রতৌশ্বতাঃ। রাজ্ঞাসোতব্যা রাজাসূয়তে-বেতিস্থঞঃ ব্যপ্কুণ্ডৈঃ পীয়তে সঞ্চীয়তে অমিন্নিতিয্যণ্ ক্রভুবিশেষাএতে। ১১ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

প্রাণায্যইতি। অপ্রিয়েসতামসম্মতে অভিলাধবিবর্জিতেচ প্রাণায্যইতিনিপাত্যতে। অত্তবং বাধিস্বাঘণ্ আয্নিপাতনাৎ। প্রাণায্যইত্যস্থার্থমাহটোরাদিরিতি। আদিনাদস্মুখলাদিপরিগ্রহঃ। নঞোহনিত্যস্বাং প্রিয়েহপি প্রাণায্যো চৌরাদিঃ প্রিয়েশ্চতি রুচিনাথভট্টাচার্যঃ। ৮৯॥

क्र थमी शिका।

অনা। দক্ষিণায়াবিতি রুচিমূক্ত্বাযোগমাহযোগাহেতি। দক্ষিণায়িগার্হপত্যাহবনীয়াস্ত্রয়য়য়য়য়য়য়য় ।
পূর্ব্বেণাহবনীয়েইয়ির্দক্ষিণায়স্তরদক্ষিণে। উত্তরেগার্হপত্যস্তব্রেতায়িরিতিকথ্যতে। তথাচগার্হপত্যাদানীয়প্রশীয়তে আরোপ্যতেষঃ সআনায্যইতি। পরীতি। পরিণেতরিবিবাহকর্ত্তরিবরইতিযাবৎ। তথাপরিণয়োদ্বাহোপযামাঃ পাণিপীড়নমিত্যমরঃ। পরিস্বিতোভাবেন পিতৃগোত্রগেহাৎ স্বগোত্রগেহং নয়তি
পরিবৃত্যনীয়তেবা সৌপারিণায়ঃ। পরিণেতোভাহকশ্চ পারিণায়েগাবরোমতইতিশব্দরত্বং।৯০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আনায্যইতি। দক্ষিণাগ্নাবর্থেআনায়ঃ প্রকীর্ত্তিঃ শিষ্টেরিতিশেষঃ। আঙ্পূর্বঃ নীঞ্প্রাপণে আনীয়তে গার্হপত্যাদানীয়হবনায় সংক্ষ্যিতেহসোদক্ষিণাগ্নিরাণায়ঃ। যোগার্হপত্যাদানীয়দক্ষিণাগ্নিঃ প্রণীয়তে। তালি নায্যইত্যারঃ। প্রকীর্ত্তিইতি পদাদভোহিপ প্রকীর্ত্তিইত্যাহ পরিণেত্রীতি। পরিপুর্বোগ্নাঞোঘ্যাণ্রদ্ধিঃ ঈকারস্থানে আর্থনিপাতনাৎ। ৯০॥

क्९श्रमीर्थिका।

রাজ। উক্তলিঙ্গং জহত্যপীতি পুং স্থং। রাজসূয়বাজ পেরমিতি ক্লীবলিঙ্গ সংগ্রহেইমরোক্তেঃ। যুক্ত্বভিদবে। রাজেতি। রজ্ঞানোত্যাঃ কর্ত্তব্যাহনীরাজাসূয়তে স্বয়মুৎ পদ্যতেইস্মিষেতি কর্মাধিকরণয়োঃ ক্যপিনহুক্ দার্ঘোরাজসূয়ইতি। হৃঞোবাসূয়ওইতি। কুণ্ডৈরিতি। অনভিহিতেকর্ত্তিরা।। অমতেজারজঃ কুণ্ডইত্যারঃ। ক্তেটিনোমপানভাঞতিরাৎ পীয়তইতি ক্রিয়ায়াঃ সোমলতাকর্ম। নানা-দ্ব্যাণিস্কীয়ন্তেইত্তিতিসক্ষায়াঃ ঘ্যাণিনিপাত্যাবেতে।। স্বস্থনামগ্যাতাঃ ক্রুবিশেষাএতে। ১১॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

রাজসূমইতি। এতেজতোহর্থেশ্বতানিপাতিতাইত্যর্থঃ। সদোমকোহিবাগঃ জতুঃ। যদ্যপি-রাজসূমবাজপেয়মিত্যমর কোনেক্লাবলিঙ্গ সংগ্রহেরাজসূমযুক্তং তথাপি সূত্রেলিঙ্গবচনকালাশ্চাশ্বতন্ত্রাণীতি-ন্তায়াৎ পুং স্তঃ। রাজসূমাদের্য্যেগার্থমাহরাজেতি। যুক্ত্রভিষবাদে অভিষবঃ স্নানং রাজ্ঞাদোতব্যঃ হবির্দ্তানিসামায্যং নিকাষ্য আলামেশ্বতঃ। সম্মেমন্যং নিচেয়ং পুষ্পং। ১২॥
চিত্যাইগ্লিচিত্যাপরিচায্যো পচায্যৌতুপ্যবকে। চীয়তইতিক্যপ্ অগ্নেশ্চয়নমগ্লিচিত্যাপর্যপাভ্যাং চের্ঘণ্। ১৩॥

স্নাতব্যঃ অস্মিন্ রাজাসূয়তে স্নাপ্যতে পুরোহিতেনাস্মিনিতি বার্থেয়ুঞঃ ক্যপ্ নিপাতনামতুক্দীর্ঘশ্চ। কুত্যৈ ভর্ত্তরিজাবতিজারকৈঃ পীয়তেদোমরদোহস্মিনিতি পাপানেইত্যসাজ্যাণ্। সংপূর্বাঃ চিঞ্চয়নে-সঞ্চীয়তে নানাসম্ভারোহস্মিনিতি সঞ্চায়ঃ ঘাণ্ ক্রতুবিশেষাএতেইতি। এতেরাজসূয়াদয়ঃ ক্রতুবিশেষাঃ দেশমলতাযুক্তবাগবিশেষাইত্যথঃ। যজ্ঞঃ স্বোইপ্ররোযাগঃ সপ্ততন্ত্রপ্রথঃ ক্রতুরিত্যমরঃ। ১১॥

क्र ९ अमी शिका।

হবি। হবিব্যসাত্রেপুরোডাশাদিবস্তুনি। হবিহেঁতিব্যসাত্রেস্থাৎস্পিয়পিনপুংসকমিতি-মেদিনী। সনীয়তেইগ্লেছিয়তএতদিতি ঘ্যণির্দ্ধোনিপাতনাদায়াদেশঃ সমোদীর্ঘন্চ। সান্নায্যং হবির-গ্লেছিত্তং ত্রিযুব্যট্কুত্মিত্যমরঃ। ত্তময়মুপলীচে সাযুদানায্যমগ্রিরিত্যনর্ঘঃ। নিকায্যইতি। নিচীয়-ভেদ্রব্যান্যেকত্রীক্রিয়ন্তেইত্রেতি ঘ্যণিনিপাতঃ। নিকায্যনিল্যাল্যাইত্যমরঃ। ১২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হবিরিতি। ত্লানে হুয়তামেতদিতিহবিঃ জ্হোতেরোণাদিকইস্গুণঃ হবিশ্চতদস্তপদার্থশৈচতি-বিগ্রহোঁ। উভয়ত্রযং বাধিস্বাঘাণ্ অত্রার্থনিপাতশ্চ। অভাংহবিয়োভিন্নং সয়েয়ং যঃ গুণঃ নিচেয়মিত্যত্রাপি যঃ গুণশ্চ। পুস্পমিতি। পুস্প্বিকসনেদিপ পুস্পাতাতি নাম্যুপধন্বাংকঃ করুবদ্ধেনগুণঃ অভিধানাং ক্লাবস্থা। স্থিয়ঃ স্থমনসঃ পুস্পমিত্যমরঃ। ১২॥

क्र्यमोशिका।

চিত্যা। চিত্যাগ্রিচিত্যেতিস্ক্রিয়াং প্রত্যেকং প্রথমান্তং! পাবকে পাবক বিষয়ধান্তর্যে। পাবকে হিতিধেয়ইতি বরক্রচিঃ। অভিধানমগ্রিচিত্যেতাত্রগোণভয়া অভ্যত্রমুখ্যভয়ান্তর্ভবিত। চায়তেইতিকম্মণি চিত্যাক্রকুবিশেষাগ্রিঃ স্ত্রিয়াং ক্রচিত্রাং। যবাচীয়তেইগ্রিরত্রেত্যধিকরণেনিপাতঃ চিত্যাম্তচিতিঃ। চিত্যা দূতকচৈত্যেস্থাচিত্যাম্বত চিতোস্ত্রিয়ামিতি মেদিনাপ্রয়োগাং। অগ্রিচিত্যেতিভাবেস্ত্রিয়াং কর্তিয়ারা। পর্যুপোভ্যাং চেরিতি। পরিচায্যো পচায্যো সাধ্যো। কর্ত্রিকম্মণিবাঘাণ্। সমূহপরিচায্যোপচায্যাব্রেগিকইত্যমরঃ। ৯৩॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

চিত্যেতি। চিঞ্চয়নেস্বাউ চীয়তে২সোচিত্যাক্যপ্ হ্রস্বান্ত্রক্ পন্থবন্ধেস্থাৎ স্ত্রিয়াং। অগ্নেশ্চয়নমগ্নি-চিত্যাভাবেক্যপ্ রূঢ়িস্বাৎ স্ত্রিয়াং। পরিপূর্ব্বচেঃ উপপূর্ব্বচেঃ কর্ত্তরিকশ্বণিবাঘ্যণ্ অগ্নিচিত্যাদিত্রয়ে গোণত্যা বহ্যাভিধানং চিত্যেত্যত্তমুখ্যতয়া। ৯৩॥

স্যাতাং শক্যে ক্ষয় জয়ে। ক্রয়ং ক্রয়প্রসারিতে। ক্রেডুং শক্যোজয়ঃ ক্রয্যাগেঃ স্থন্যর ক্ষেয়ং জেয়ঃ ক্রেয়ং। ১৪॥

কেন্যত্তকত্তি। এতেসর্ধাতৃভ্যঃ স্থ্যঃ। রূপং দিদৃক্ষেণ্যং হরের্ময়া १ শ্রুবেণ্যাবেদাঃ ভাবেৰুচেন্যং প্রতাপেন বন্দিত্বাদেবাঃ কেসমুদ্রোইবগাহেত্বয়া নবিলিখে সিদ্ধ্যভিবিত বৈতৰ পরিধাতবৈৰাদঃ ছান্দদাএতেইত্যন্যে। ৯৫॥

কৃৎ প্রদীপিকা। স্থাতাং। শকনং শক্যম্ অহার্থেগঃ। শক্যেহর্থেগম্যে ক্ষয্যজয্যে ক্রয়প্রসারিতেবস্তুনিক্রয্যংস্থাৎ। ক্ষিক্ষয়েক্ষিণোতি ক্ষয়ায়শক্যঃ ক্ষয়াঃ জয়তিজেতুং শক্যোজযাঃ ডুক্রীঞ্ দ্রব্যবিনিময়েক্রীয়তে ক্রয়ণায়-প্রদার্য্যতে এতৎক্রয়ং যেনিপাতঃ অন্যোশ্যবাধনাদিত্যস্থাত্রবনবৎ প্রবৃত্তেঃ। ক্যবিতিকেচিৎ। জয্যোয়ঃ শক্যতেজেহুং জেয়োজেতব্যমাত্রকে। ক্রয়েপ্রসারিতং ক্রয়াং ক্রেয়াত্রকেইত্যমরঃ। মূল্যদান-পূর্ব্বিকপরদ্রব্যস্থাকারোহিক্রয়ঃ। অর্হার্থেভদ্ধিতযেনদিদ্ধেহপি শক্যাদগুত্রভদ্ধিতযনির্ভ্যর্থমিদং। ১৪॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

স্থাতামিতি। শক্যেহর্ষেক্ষয়জয়োস্থাতাং নিপাতনাদিতিশেয়ঃ । ক্রয়েপ্রসারিতেক্রয়ার্থং বিস্তৃতেবস্তুনিক্রয়াং নিপাত্যতেইত্যময়ঃ। ক্ষ্যাইতিক্যপিতুগাগমাভাবঃ অয্নিপাতনাৎ। জেতুং শক্যোজয়ঃ পূর্ব্বৎ ক্রয়মিতিচপূর্ব্ববং। সর্ব্তব্যপ্রত্যয়ইতিকৃৎ প্রদীপিকোক্তং নমনোরমম্ অন্যোন্যবাধনাদিতিস্বয়ং গ্রন্থকুকুকুঞ্জোপ্যপ্রত্যয়ং বাধিত্বাব্যপ্রত্যয়ইত্যেবং রূপেণান্যোন্যবাধনাদিতি-তদর্থাং। আত্রবনবং প্রবৃত্তেরিতি প্রায়িকাভিধানং নদঙ্গতং গত্যন্তরসম্ভবেতৎকল্পনায়ামন্যায্যস্থাৎ। অক্ষয্যজ্ব্যাবিতি পাঠস্থ্নাদেয়ঃ অধিকস্তনঞোগ্রহণেনিফলস্থাৎ অক্ষয্যপ্রয়োগস্তান্তিত্বনঞ্যোগেনসিদ্ধি-সম্ভবাৎ। ক্রয়েতি। ক্রয়েপ্রসারিতেত্যর্থঃ। এবং ক্ষেতুং শক্যঃ ক্ষয়ঃ। অন্তত্ত্তি। শক্যাৎ ক্রয়প্রসারিতাদন্যত্রেত্যর্থঃ। ক্ষেয়ইত্যাদি। সর্বত্রবঃস্থাৎ স্বরপবর্গান্তেত্যাদিনাযেগুণঃ। নচক্ষয়মহতিক্ষয্যঃ ক্রয়ামত্যর্হার্থেতদ্ধিতবপ্রতয়েহপি তত্তৎপদসিদ্ধেরিদং জ্যুমইতিজ্যাঃ জ্যুমইতি তথাসতিক্ষয়যোগ্যঃ জয়যোগ্যঃ ক্রয়যোগ্য মিত্যর্থপ্রতীতিঃ নতুক্ষেতুং শক্যঃ জেতুং শক্যঃ ক্রয়েপ্রসারিত মিত্যর্থাবগতিরিতি। তথাচশক্য প্রদারিতার্থ প্রতীত্যর্থমিদং সূত্রমিতিভাবঃ। যক্যপ্ ঘ্যণস্তানিপাত্যা রুতিতোখ্যোক্যবাধনাদিতি যত্নজ্যু এতৎপর্য্যন্তানিতজ্জ্ঞাপক সূত্রাণি। তেন কেযাঞ্চিছ**ন্দো**যুক্তত্বেকস্ম চিচ্ছন্দঃ শৃত্যবেহপিনক্ষতিঃ। ৯৪॥

কৃৎপ্রদীপিকা। কেন্স। কেন্সচহচতবৈচেতিদ্বন্দ্বেনুগুজসন্তং। দিদৃক্ষেণ্যমিতি। দৃশেঃ সমস্তাদেন্সঃ দ্রমূত্ম-ফব্যমিতার্থঃ। প্রাবেণ্যাবেদাইতি। কিত্তাগুৰ্ত্বেইডাগমঃ বন্দিস্বাবন্দনীয়াইতার্থঃ। অবগাহেহবগাহঃ ভবনং ভবিতবৈই দাগমঃ জ্বামসন্ধাক্ষরান্তাঃ কুতোহ্ব্যয়াঃ। এতেকেন্তাদিপ্রত্যয়াইত্যর্থঃ। ৯৫॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

কেন্ডেতি। কেতাত্বকেতবৈপ্রতায়াঃ ফুঃ। দিদৃকেণ্যমিতি। দ্রফুমিচ্ছেতিসন্দৃদ্বিত্বে ঋবর্ণস্থা-কারঃ স্থাবর্ণ ইরভ্যাদেশা হত্তপাস্থালোপঃ স্থাদননীতিসনোহন্তলোপঃ ততঃ কর্মাণিকেন্তঃ। व्यव्यवगा- তব্যানীয়েকৈলিমযৌক্যপ্যগ্কেন্যত্বকৈতবৈ। ক্ত্যালিঙৰ্থাঃ। ক্ত্যসংজ্ঞা ফলং ক্ত্যক্তথলৰ্থাইত্যাদো। ১৬॥

কৃত্যান ট্কৃতশ্চান্য ত্রুত্র চিৎ। এতেযত্রার্থে বিহিতান্ত তোহন্য ত্রা পিলক্ষ্যান্ত্র-সারাদ্ধবন্তি। স্নায়তেহনেনেতিস্নানীয়ং চূর্ণং সম্প্রদানেদানীয়োদ্বিজবর্ষ্যঃ অপাদানে সমাবর্ত্তনীয়োগুৰুঃ তিপ্ততিঅম্মিন্স্থানীয়ং নগরং। অমাসহবসতোহ-স্যাং চন্দ্রার্কাবিতিয়ঘ্যণো অমাবস্যাত্রমাবাস্যাতিথিঃ। ১৭॥

ইতি। শ্রুশ্রবণে শ্রেষ্ট্রামমীইতিকেন্যঃ ইবর্ণোবর্ণয়োর্দ্রাতোরিত্যুব্। শ্রোতব্যাইত্যর্থঃ। ভাবেকেন্যঃ রোচনং রুচেন্যং প্রতাপেনেত্যনভিহিত্রকর্ত্তা বন্দি হাঃ বন্দনীয়াঃ অবগাহেঅবগাহঃ নবিলিখেনলে,খনীয়ং। দিদ্ধ্যাকর্জ্র্যাভবিতবৈভবিত্রয়ং পরিপূর্ব্বধাধাতোস্তবৈ পরিধেয়মিত্যর্থাঃ। এতেপ্রত্যয়াইত্যর্থঃ। অন্তব্যুস্বর্বায় লোকিকপ্রয়োগেহপিবাধাভাবাদিতিভাবঃ। ৯৫॥

क्र थमी शिका।

তব্যা। কৃত্যাঃ কৃত্যসংজ্ঞকালিঙর্থাবিধ্যাদয়োহর্থাযেবাং তেলিঙর্থাঃ। যদ্যপিলিঙর্থাইতি সামাভোনোক্তং তথাপ্যভিধানাৎ প্রায়েণানূর্দ্ধমৌহূর্ত্তিকপ্রৈয়াতিসর্গপ্রাপ্তকালাইরূপাঃ। তথাচ প্রৈয়াতিসর্গপ্রাপ্তকালেযুক্ত্যা অর্থার্থেচেতিকলাপচন্দ্রো। বিশেববিহিত তয়াপঞ্চম্যাবাধ্যেরশ্বতঃ প্রৈয়াদিযুক্ত্যাবিধারত্তেইতিবজ্রধরঃ। কালাপেঃ লোট্পঞ্চম্যাচ্যতেঅতঃ কৃত্যানাং ক্রিয়তামিত্যাদ্যর্থকথনবাক্যং
নত্ত্বিয়েতএতৎ কার্য্যমিত্যুচ্যতেসদ্ভিরিতি। এবঞ্চেৎ লোডর্থাইতি বক্তব্যেলিঙর্থাইতি ব্যাকরণান্তরাভিপ্রায়েণাক্তং। যক্যপ্র্যাং প্রত্যেকং গ্রহণং যবাদ্যগ্রহণার্থং। ১৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

তব্যেতি। এতেদশপ্রত্যয়াঃ কৃত্যাঃ লিঙর্থাবিধ্যাদ্যর্থেয়্প্রযুক্তান্তে। কৃত্যক্তথলর্থাভাবকর্মণো রিত্যাদাবিত্যাদিনা অবশ্যমোবাকৃতেয়ু। কৃত্যানিষ্ঠাদয়োদ্বয়োঃ প্রাপ্তাবিত্যাদোচফলং জ্ঞেয়ং। ৯৬॥

क्र श्रमीशिका।

অভিধানলক্ষণাহিক্তদ্ধিতসমাদাইতি স্যায়স্ত্ৰ্বিলয়াঘাত্ল্যনক্ষ্যভিচারমবতারয়নাহক্ত্যাইতি। কৃত্যাইতিজ্পন্তং দৈষরাজেতিবৎদন্ধিঃ দৰ্বমেকপদ্মা কৃত্যাশ্চানট্চেতি ঘল্পেকবন্তাবে দৌরপম্ আভ্যামন্তেইকণাদয়ঃ কৃত্ৰশ্চ। কৃত্যানড্গ্রহণং প্রয়োগবাত্ল্যার্থং। যত্রার্থইতি অভেদোপচারেণ উপলক্ষণেনবার্থবতোধাতোরপিপরিগ্রহঃ তেন লিঙর্থপুংস্কুল্রীত্বভাবকর্মাদ্যর্থে বিহিতন্ততোহ্মত্রাপি অন্যার্থেইপীত্যর্থঃ অতঃ রাজভোজনামাবাস্মেত্যাদোপুংস্কুল্রীত্বে। তথাচ কৃত্যক্ত থল্থাভাবকর্মণোঃ কৃত্যালিঙর্থাইতিভাবাদিয়ু কৃত্যাদয়োবিহিতান্ততোহ্মত্রকরণাদো লডাদ্যর্থেপি অনড্ভাবাদো বিহিত্বন্ততোহ্মত্রকর্মাদবিপ কৃতঃ কর্ত্রীতিবিহিতান্ততোহ্মত্র কর্মাদাবিপি ক্ত্যাদয়ঃ স্থিয়াং বিহিতান্ততোহ্মত্র ক্ষাদাবিপ ক্ত্যাদয়ঃ স্থিয়াং বিহিতান্ততোহ্মত্রপ্রাপাবপি স্বরপবর্গান্তাদেয়াবিহিতন্ততোহন্ত্রাপিভবতীত্যর্থঃ। কেচিদন্তোন্ত্রবাদমুব্রিদ্বন্তান্তঃ দেশং সাধুএকার্থেইন্যোন্যবাধস্যকাপিবিকল্পাদর্শনাৎ। স্নানীয়মিতিকরণেহনীয়ঃ চুর্ণং কর্পুরাদিচুর্ণং।

ভব্যোপস্থানীয়গেয়জন্যাপ্লাব্যাশ্চকর্ত্তরি। ভবত্যসৌভব্যঃ। আঙ্পতের্ঘ্যণ্। আপাত্যসৈনিকনিরাকরণাকুলেনেতিমাযে। প্রোক্তবন্তইতি প্রবচনীয়াঃ
করণাধিকরণভাবাদন্যত্রকর্মাদোচ অনট্ দীয়তইতিদানং স্থবর্ণং রাজ্ঞাভুজ্যন্তইতি রাজভোজনাঃ শালয়ঃ করোতীতি কারণং দীর্ঘোনৈকক্ষঃ। অপাদানং
প্রপতনং। কৃতঃ কর্ত্তরিততোইন্যত্রচ ক্রিয়তইতিকর্ম। পদ্যাং হিয়তইতি
পাদহারকোঘটঃ দাস্দানেদাসন্তেয়সৈসদাসঃ গাংহন্তিয়সৈসগোম্নোইতিথিরিতি
কঃ। অপ্রাপ্তে অধ্বারান্নায়সংহারানায়োদ্যাবাদয়ঃ স্মৃতাঃ। *। ইতি
প্রয়োগরভ্নালায়াং কৃৎস্থপ্রথ্যোবিন্যাসঃ। *। *। ১৮॥

বিজবর্যাঃ সম্প্রদানং। সমাবর্ত্তি বেদপাঠানন্তরং গৃহাশ্রমমাবিশতি অস্ত্রাদগুরোরিত্রপাদানেহনীয়ঃ সমাবর্ত্রনীয়ঃ। স্থানীয়ং নিগমোহনাত্ত্বমূলনগরাং পুরমিত্যধিকরণেহনীয়ঃ। অমেতি। অস্তার্থঃ অমাসহ সমাপেচেত্যমরঃ। সমসূত্রন্যায়েনইর্ন্ধাধাভাবেন একরাশোচন্দ্রাক্রা বসতোযস্তাং দা অমাবাস্তাতি ি শুলাবাস্তায়াংহিচন্দ্রাক্রাবেকত্রবসতঃ প্রতিপদাদৌকিদিবিরিটোভবতঃ। ততুক্তমকাদিনিঃস্তইতি। বরা অমাবাস্তায়াং চন্দ্রাকে প্রদেশতঃ অমাশেষেচ চন্দ্রপ্রেশইতি। অমাবাস্তাহ্রমাবস্তাদর্শঃ সূর্যোন্দ্রপ্রমইত্যমরঃ। প্রতিমাসমদৌনিশাকরঃ খগদঙ্গছতি যদিনাধিপং। ইতিক্রত্যমরনৈসগপ্রয়োগাং। ক্সচিন্নতে অমানামরবেরনির্নিশেষঃ তত্ত্রসহ্বসতোহস্তামিত্যধান্তরং। ততুক্তং স্তভূতিনা অমানামরবেরনির্নিশেষঃ তত্ত্রসহ্বসতোহস্তামিত্যধান্তরং। ততুক্তং স্তভূতিনা অমানামরবেরনির্নিশিকানিত্য- ম্বোদান্দ্রভিত্রা। তত্ত্যোরাধ্যাস্থান্দ্রমান্ত্রাভাত স্থাতেতি। অমাবাস্তাং নদীল্লানিত্য- ম্বোদান্দ্রভিত্রা আমাবাস্ক্রমাবস্থাতির মাবদীতির। অমাবাসিচদর্শঃ স্তাদমাস্থ্যিন্দ্রস্বম ইতিশব্দবির। যলোপেহমাবদীতি তুর্গঃ। যন্ত্রাণিবিত। অপ্রাপ্তাবিপি যঃ। ৯৭॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

কৃত্তিভিন্ন ক্রাভিচারার্থিং সূত্রমাহ ক্ত্যেতি। ক্রাভিচারার্থি। যদ্পি কৃত্তিভানেন ক্রাভিচারার্থিং সূত্রমাহ ক্ত্যেতি। ক্রাভিংপ্রাদিরপ্রাণে। যদ্পি কৃত্তিভানেন ক্রানটোঃ প্রাপ্তিথাপি সামান্ত কৃদপেকরাত্রার্ক্র(ভ্ল্যার্থ) পৃথপ্রপাদানং। কৃত্যানিড্তি দক্ষেক্রং চকারউক্তসমুচ্চয়ে। যদিক্ত্যান্ট্ কৃত্তি ইত্রেতরকক্ষপেদাচকারোহ্মুক্তসমুচ্চয়েতেনাখ্যাতাদ্য় চ। যথাত্রোটিক্রটদ্বন্ধনইত্যত্রকম্মানি বিহিতেশন্তরিপরে ভ্রাদেঃ শিতাত্যাদিনাকক্ষণ্যপ্যন্প্রত্যাঃ। এবং সমাস্ত্র্কিভাপ্রভারাদ্য চ। অন্তর্তে শক্ষপ্র্যাহ যত্রার্থ ইতি। অন্তর্গ্রিপনার্ক্রাবিলিঙ্গাদিবিহ্তিন্ত দ্র্রালিঙ্গাদে একগাতোঃ প্রত্যোহ্পর্বাচে। অন্তরিপ্রিয়ং দশ্রিতি স্লায়তেহনেনেত্যাদি। অমাবস্থেত্যত্রেয়ং অমাবান্তাইত্যত্র্যগ্ন। ১৭॥

কৃংপ্রদীপিকা।

ভব্যেতি। এতেকর্ত্তরিক্ত্যান্তাং দিদ্ধান্তীত্যর্থং। ভব্যং শুভেচ সত্যেচবোগ্যেভাবিনিচত্তিয়। কর্মারম্বরো পুংসি স্ত্রিরাং করিকণোস্যোং। উপস্থানীয়োহপ্রাদে সমীপস্থেসদৃশেচ। গেয়ন্তগীতেণেয়ং স্থাদগাতব্যেগায়নেহপিচ। জন্যং হট্টেপরীবাদে সংগ্রামেচ নপুংসকং। জন্যামাতৃবয়স্থায়াঞ্জন্যঃ স্থাচ্জনকে পুমানিতিমেদিনী। আবশ্যকার্থেঘ্যণ্। আপ্লাব্যস্তস্করেহয়ইতিকোষঃ। চকারাদাহ আঙ্পতেরিতি। আপতন্তী-ত্যাপত্যানি। অত্রেগতেন বদতিং পরিগৃহরম্যামাপাত্যদৈনিকনিরাকরণাকুলেন। যান্তোহ্ন্যতঃ প্লুত-কৃতস্বরমাশুদূরাত্মবাজ্বাজুত্বিরেমুত্রাত্মবর্গাইতি। প্রোক্তবন্তইতি। অর্থাৎ কর্মপ্রোক্তবন্তইতিপ্রবচনীয়াঃ। এবং স্থেরোবিবাদপক্ষস্থনির্ণেতরি পুরোহিতে। গোপ্যোদাদীস্ত্তে পুংসিগোপনীয়েতু বাচ্যবদিত্যাদি। অন্তন্তমুদাহরতি দায়তইতি। স্বর্ণকর্ম। রাজভোজনাইতি। কর্মণ্যন্ট্ পুত্রঞ। করোতাতিকারণং দার্ঘোনৈরুক্তঃ একপদে২পীতিদীর্ঘোবাপুনোদরাদিত্বালিপাতোবা। অপাদানং প্রপতনমপাদানে২নট্। সামাত্ত কৃত্তদাহরতি কৃত্ইতি। ক্রিয়তইতি মন্ কনিবিতি কর্মাণিমনিকর্মা। রতাদেশ্মন্ ভূতএব। অপ্রাপ্তে কর্মণ্যণিপাদহারঃ পাদহারকইতি পাঠেহকণ্। 'দাফদন্ত্যান্তঃ মতান্তরে তালব্যান্তোহপি তেন পুরোদাশ-ইতি। দাসন্তিনিদেশং মংস্থাদি মূল্যস্বায়প্তৈ ইতাচ্ দাসোভ্ত্যঃ কৈবর্তোবা। দাশঋশ্বিজিতা্লব্যো-ভূত্যেদন্ত্যোহ্থধীবরইতিশিহ্ভেদঃ। গোণং সম্প্রাদানত্বং। দংশতি মহস্রানিতি দংশোর্যানিস্থাত্বং। দাস-ইত্যর্থান্তরমাহ্সভূতিঃ। এবং দাস্থাস্থপত্যং দাস্ইতি। গোল্পইতি। মূলবিভুজাদিস্বাৎকঃ ক্রিয়াযোগ-ইতিসম্প্রদানং। হতেরর্থেদাঞোর্থফাপি সমাবেশান্ধানেহন্তেরের সম্প্রদান্মিতি কলাপটীকা। অতি-থিরিতিরটঃ অতিথিসামান্যতশ্চণ্ডালোহপি তভাতজাতীয়াতিথিপ্রাপ্তৌগোহননাদিতিপতিলা। অপ্রাপ্তা-বিতি। এবু পুণিসজ্ঞায়াং করণাধিকরণয়োর্ঘাঞ্তার্থঃ। ধুছ অবস্থানে আগ্রিয়ন্তেইবতিষ্ঠান্তেপদার্থা অন্মিরিতি স্বরাত্তেভাইতিদপ্রাত্তান্ত্। আধার*চানিকরণে২প্যালবালামুধারণে। এবসুন্নায়ঃ সন্মার্গঃ সংখারঃ প্রালয়ঃ নিঅিপুর্বেরণোন্যায়ে এক্তিঃ অধ্যায়ে মহানিশাস্ত্রপরিচ্ছেদঃ। উৎপ্রকায়েট্ডঃ উদ্যাবো-২লক্ষেদ্রমান্যোয় এ দিরিভিবজঃ। আদিনা অবস্থানী হারাদ্যঃ। তথাত আধারে ন্যোয়্যাবসংহারা-ধারাবশ্যায়ানিজ এটেতি কলাপঃ বিবরণঞ্জ অধ্যারাদয়ঃ শব্দাঃ পুর্ণাস সংজ্ঞাত করণাধিকরণয়োর্যপ্রাপ্তো ঘঞ্জানিপাতাাইতি। অবশ্যায়স্ত্রাহারঃ। ঘবিধাবাঞ্জেগ্রণ তদ্বাধনার্থমিংগ্রেপন্যসং। *। ইতি শ্রীমহেন্দ্রশন্মবিরচিতায়াং কুৎপ্রদাপিকায়াং প্রথমবিন্যাসবিষরণং। । । । । ১৮॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

বাচ্যপ্রতায় বিপর্যায়ং দশরিতি ভবেতি। উপতিষ্ঠিন্তার্গুপ্রানায়াঃ সম্প্রাসিনঃ কর্ত্র্যায়ায়ঃ গায়তাতিগায়ঃ গৈশন্দে অন্তানামেচামায়ে ডেট্টাদন্তাদিতি য়ঃ ডেট্ট জনাপ্রাজ্ ভাবেজায়তইতিজনাঃ য়ঃ আঙ্
পূর্বেঙ্গতো আপ্লবতইতি আপ্লাব্যু সরান্তাদিপি মাণ্ রুদ্ধেন্যং করবং আণ্। চকারঞাকুক্রমন্চয়াদাহ
আঙ্পতেরিতি। আঙ্পতেঃ কর্ত্রিয়াণ্ পত্রগথে আপততাতি আপত্রাগ্রমনশীলং মংগৈনিকং ত্র্যা
নিরাকরণায়াক্লেনেত্যর্থঃ। প্রবচনায়াইতি। কর্ত্রানায়ঃ। দান্মিতিকশ্বণানট্। রাজভোজনাইতি কর্ম্বাগ্রন্ট পুংস্বঞ্গ। কারণানিতি কর্ত্র্যানট্। দার্ঘোনিকরক্তইতি। নিরিভরামুক্তং নিরুক্তং সূত্রেং নিরুক্তেনানম্পায়ঃ
নৈরুক্তঃ চকারামিম্পায়ার্থস্যাপি গ্রহণাং অণ্ ত্রেজাত্বিত্যাদিনা অণিবৃদ্ধিঃ তেন ক্রচিদেকপ্রেপ্রসাদিত্যনেনদীর্যইত্যর্থঃ। অপআঙ্ দাঞ্ অপাদীয়তে অন্মাৎপ্রপত্রাম্মাদিত্রভয়ত্রাপাদানেহন্ট্। কন্মইতি।
কন্মণি মন্কনিবিত্যাদিনামন্ত্রণঃ। পাদহারইতি। কন্মণাণ্। পাদহারকইতি পাঠে অকণ্ কন্মণিনাচ্যে।
দাসইতি সম্প্রদানেঅচ্। দাশইতিপাঠে দাশ্দানে অত্রাপি সম্প্রদানেহ্ন দাশগ্রিক্। গোম্বইতি।

অনাম্যপথাদপিকঃ। অতিথিরিতি। ননান্তিচিরং স্থিতির্যান্ত অতিথিঃ প্ষোদরাদিছাৎ বর্ণনাশবিপর্যয়ে। চিরং নান্তিস্থিতির্যুস্মাদতিথিস্তেনকথ্যতে ইত্যমরটীকা। কলীতরিস্মিন্ গোমাংসভোজনেহদোষাদতিথি-মুদ্দিশুগোহননং। যদ্বাধাতুনামনেকার্থছাৎ হন্দানার্থঃ। অথবা চণ্ডালাতিথিমুদ্দিশ্যাপরশ্চণ্ডালোগাংহন্তীত্যর্থান্ধদোষঃ। আঙ্ ধৃঙ্ অধিকরণার্থেঘঞ্ উৎপূর্বনীঞ্প্রাপণেভাবেঘঞ্ সংপূর্বক্ষঞ্হরণেভাবে
ঘঞ্ আঙ্নী আনীরতে মংখ্যাদিকমনেন ঘঞ্। আনায়ঃ পুংসিজালং স্থাদিত্যমরঃ। ভায়ইতিকচিৎ
পাঠন্তত্র নিপূর্বইণোভাবেঘঞ্ রুদ্ধ্যাদিকং। উৎযুমিশ্রণামিশ্রণয়োঃ করণে ঘঞ্ উদ্যাবোলাক্ষা।
লাক্ষারাক্ষাজভুরীবেযাবোহলক্রোক্রমাময়ইত্যমরঃ। অধ্যায়ইতি পাঠেছু অধিইণোভাবেঘঞ্। আদিনা
অবশ্যায়নীহারযাবাদেগ্রহণং। * । ইতিশ্রীসিদ্ধনাথ বিদ্যাবাগীশবিরচিতায়াং গুড়প্রকাশিকায়াং
প্রযোগরত্বমালাটীকায়াং কুৎপ্রথমবিন্যাসবিবরণম্। * । * ১৮॥

অকণ্ত্চৌ। ধাতৃভ্যঃ স্থাতাং বাধকাভাবেদর্বত্রক্তিরি। কারকোইয়ং ক্ত্রাপাচকএষিতা। দায়কোনায়কোভোক্তা। ১১॥

অত্পচাদেঃ। ধাতুমাত্রাদচ্। পচঃ স্পর্দ্ধঃ। পচাদিগ্রহণাৎ কচিদ্বাধ-কানাম্বাধকোইয়ং। দেবঃ সর্পোজগদ্ধরঃ। পয়োধরঃ শ্বপচঃ গেষঃ। দহ্ছেইহং মধুনোলেহৈঃ। অণ্কৌনস্তঃ। ১০০॥

क्र थमी शिका।

অকণ্। ধাতুভাইতি। ভুবাদ্যধিকারঃ। বাধকাভাবইতি। অভিধানাদাসরূপন্যায়ানবসরে নামুপেধপ্রীকৃগ্জাভ্য ইত্যাদিনামোক্ত্যাবাধকাভাবে। যদাবাসরূপন্যায়াদ্যাটনমেতং। তেনাকঃ স্থাদাশিষিক্রিয়ার্থকেত্যকণ্ স্থান্তাচ্ছীল্যেইত্যাদি সরূপত্বেন বাধকভাবেনস্থাতাং বিরূপবাধকেতুস্থাতামেব। সর্বাকাইতি। বিশেষানভিধানাদিতিভাবঃ। কর্ত্রনীতি। কৃতঃ কর্ত্রনীতিপরিভাষণাৎ করোতি করিয়তি অকরোদ্যাকারকঃ এবং কর্ত্ত্ত্যাদি। ১১॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

দায়কঃ সর্ববিদ্ধীনাং নেতাব্রক্ষাদিনাকিনাং। যস্তমহং সদাবন্দেবন্দিতং সিদ্ধযোগিনাং।
অকণিতি। কারকইত্যাদি। ভুকুঞ্করণে করোতি করিম্যতি অকরোদাকারকঃ অকণিণসুবন্ধত্বেন
ইল্বন্তাবের্দ্ধিঃ তৃচ্প্রত্যয়েগুণেকর্ত্তা পঠ্ব্যক্তায়াং বাচিকালত্রয়েবাচ্যে অকণ্রৃদ্ধিঃ ইযুইচ্ছায়াং তৃত্ইটিগুণঃ
সিবিভক্তো ঋকারআসিসহিতঃ। দাঞ্ দায়কঃ অকণিইচ্যাদন্তেভ্যোযুট্ নীঞ্প্রাপণেঅকণির্দ্ধিঃ
ভুজিপালনাভ্যবহারয়াঃ তৃচিগুণঃ ধুট্যন্তেচেতিজস্তকঃ। ১১॥

क्ट्थिमीशिका।

অচ। পচ্ আদিঃ পচআদির্যান্তের্যুভয়সমাসগ্রহঃ এতচ্চশিন্টপ্রয়োগদ্ন্ত্যান্ত্র সর্বত্রেক্ষয়া।
চনুবন্ধোমিম্যোশ্ন থলচোরিত্যাদাব অব্যবচ্ছেদার্থঃ থলচোর্যেচেতি ঘথলোগ্র হণজ্ঞাপনামাপ্যচ্ সংজ্ঞাগ্রহঃ।
স্পর্কসংহর্ষেম্পর্কিঃ। নম্বজিত্যেতাবতৈব সর্ব্বধাতুলাভেকতং পচাদিগ্রহণমিতি সমর্থয়তি। উক্তার্থোগ্রন্থঃ
স্বয়মধিকং সাধয়তীতি আয়াঘাধক বাধনার্থঃ। প্রাঞ্জ্জঅজিতিপূর্বাং পচাদেশ্চেতি পরং সূত্রং কৃত্বাপূর্বেণ
সিদ্ধোপচাদিগ্রহণং বাধকবাধানার্থমিত্রভয়সম্বন্ধিনাপিবর্ণয়ন্তি। ধাত্রন্তরং বিহায়পচ্ধাতোরেবাদ্যত্বেন
গ্রহণাদয়মচ্প্রতায়ঃ কচিৎ বাধকানাং প্রতয়ামামপি বাধকইত্যপব্যাখ্যানং কেয়াঞ্চিৎ। দেবঃ সর্পঃ
মেয়ইতি। কবাধকোইচ্ জগদ্ভরইতান্দি কর্মণ্যণ্বাধঃ সত্যণিমধুনোলেইহরিতিনিত্যসমাসঃ স্থাৎ।
দহেহং মধুনোলেইহর্দাবৈক্র গ্রৈর্যথাগিরিঃ। নায় কোএষ্যেনস্থাং বতাহং বিগ্রুজ্বইতিভটিঃ। ১০০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অজিতি। পচাদিসর্বধাতৃতঃ পরঃকর্ত্তরিঅচ্স্থাদিত্যর্থঃ। অজিতিচনুবন্ধগ্রহণং মিম্যোশ্ন খলচোরিত্যত্ত ফলং জ্যেম্অগৃহীতেতশ্মিন্ মিম্যোশ্ন খলয়োরিতিক্তেহকারেসন্দেহাপত্তেঃ। ডুপচ্ঞ্ধপাকেপচতীতিপচঃ। নন্দ্যাদেরনকার্য্যঃ। নন্দন রমণ প্রসাধনালবণঃ। গণপাঠাপ্পত্বং। ১০১॥ ক্রেধিমণ্ডনকম্পার্থাচ্ছকার্থেভ্যস্তবর্মরিছিতেভ্যঃ। তৃণ্বাধোইনঃ। ক্রোধ-নমণ্ডনচলনাঃ। প্রভাষণোরবণঃ।১০২॥

পচাদিগ্রহণাদিতি। অজিহ্যুক্তেইপি সমান্তধাতৃতঃ প্রত্যয়লাভাদিতিভাবঃ। দেবইত্যাদি। দিবুক্রীড়ায়াং দিব্রতীতিদেবঃ নামুপেধন্বাৎ কপ্রাপ্তোতং বাধিন্নাইচ্ স্প্তগতো অচিগুণঃ জগদিভত্তীতি জগদ্ধঃ ছুভুঞ্ ধারণ পোষণয়োঃ কন্মণাণ্ ইত্যণ্ প্রাপ্তোতং বাধিন্নাইচ্ পয়োজলং হ্রম্বাধরতীতি ধুঞ্ধারণেইত্যস্মাদনং বাধিন্নাইচ্। স্ত্রান্তনাকে পয়োধরাবিত্যমরঃ। শানং কুরুরং পচতীতিঅণং বাধিন্নাইচ্। নিবাদশ্পতাবত্যবাদিতাপাল পুরুদাইত্যমরঃ। মিন্স্পার্কায়াং কং বাধিন্নাইচ্ দহ্ভস্মীকরণে বর্ত্তমানায়াএবিভ্তোত্ত্রভূশিতিবক্ লিহ্লাসাদনেলেটাতিলেহঃ কং বাধিন্নাইচ্ কন্মণাণিতু নিত্যমমাদঃ স্থাৎ।
অন্কাবিতি। অণ্চকতি এতোবোপ্পভারেশিস্তইতার্থঃ। অচপটাদেঃ পচঃ স্পর্কোদেবঃ মপোজগদ্ধরইত্তবেং ছন্দঃ। ১০০॥

কৃৎপ্রদীপিকা।

নন্দা। নন্দির্দির্যান্তভন্নাং। যদ্পোনইত্যদন্তাক্রতিস্থাপিতৃণ্ বাধোহনইতিবাচাদ্বাত্থাদঃ। টুন্দিস্ঘৃ কৌহৈতৃকেনন্তইতিভট্ট কৌ। অনিনন্তইত্যপরে। লুনাতীতিলবণঃ। গণেতি। প্রাতিপদিকগণণে লুনাতীতিলবণঃ। গণেতি। প্রাতিপদিকগণণে লুনাতীতিলবণঃ। তথাচনন্দাদয়োনামণাভুসনিক্ষীনগ্রুন্তে কিং তহিনন্দন রমণইত্যাদি প্রাতিপদিকগণেরপুক্তের প্রয়োগানিনিন্টান্তভ্রলবণপাঠাধর্মিতিব্রক্টিং। নামগণারন্দাদের্গিরতিচন্তঃ। ১০১॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

নন্দ্যালেরিত। নদ্ধাতোরিদসুবন্ধান্তেম্ব্যু আনইত্যদন্তং ছন্দোহসুবোধাৎসিলোপঃ। নন্দ্রিলোদি। নন্দ্রিতি নন্দ্রতীতিবানন্দনং রয়ুক্রাড়ায়াং রমণঃ সাধ্দংসিদ্ধোপ্রপূর্বিঃ প্রসাধনঃ লুঞ্জেন্দ্রেলার। ননুলবণইত্যত্রকর্যণ গ্রমিত্যত্তআহ্ব্যপ্রাচাদিতি। তথাচনন্দ্যাদিগণে লবণইতি গ্রপ্যেঠারেরিলিত গ্রপ্রবিশেবসু এন্ডাবেহ্সি গ্রপাঠানেরেরাদিরিত্যক্রৈব সূত্রেরকল্পনমিতিভাবঃ। ব্রুলাদিরিত্যাদিনগ্রাদিঃ। ১০১॥

क्ल्भूमीशिका।

কুলি। কৃন্যালিয়াৎকিঃ কুলিম ওনকম্পামথানস্তালাৎ অকশ্মকেভ্যোহবিবক্ষিতকর্মাভ্যঃ শব্দার্থে ভাশ্চতৃণ্যাধাহনঃ স্থাৎ। তৃণবাধইতি। নন্দ্যাদেরাকৃতি গণক্ষেনিদিছে২প্যারম্ভবলাদিত্যর্থঃ। ইহারম্ভ-তৃণপ্রপ্রের্থাতিবেদার্থ ইতিকলাপঃ। কিঞ্চাল্মিন্তৃণর্থদর্শনমপিজ্ঞেয়ং পুর্কেস্তাচ্ছাল্যাধিকারেইদংসূত্রমুক্ত-মন্মাভিরব্দরদঙ্গতাতিবোক্তং। কুর্কোপেকোধনঃ মিভভ্যায়াং মণ্ডনঃ চুরাদিঃ চল্দঞ্জনে ইনিচলিঃ কম্পেইতিমিন্তাৎ ক্রমেচলনঃ ভাষণরবণোশব্দাথো। কর্মারহিতেভ্যঃ কিং পঠিতাবিদ্যাং। ১০২॥

প্রাপ্ত হলাদি ৰুচাদেঃ। রোচনবিদ্যোতনপ্রমুখাঃ। চংক্রমণোদংদ্রমণো-ক্রবনোজ্বনো২থগর্জনোবরণঃ। এভ্যঃকিং যাস্তাৎ ভূণেব ক্লুয়িতাক্ষ্মায়িতা দীক্ষিতা। নক্ষ্যাদিরাকৃতিগণঃ।১০৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কুধীতি। ধাতুনির্দ্দেশেইঃ কুধিশ্চমণ্ডনঞ্চনপিচলনে ইদমুবদ্ধস্বান্ধুম্ঘঞ্কম্পশ্চ এতেহর্থায়স্ত তত্মাৎকর্ম্মরইতেভাঃ শব্দার্থভাশ্চঅনঃ স্থাদিত্যর্থঃ। তুভেদে তেন পূর্বেবাক্তত্রয়াং সকর্মকাদকর্মনকাচ। তৃণ্বাধইতি। তৃণ্সাংতাচ্ছীল্যেইতি তৃণ্বাধোহনইতার্থঃ। তেন তাচ্ছীল্যার্থে অনইতি জ্ঞাপিতং। যদ্যপিততৈবৈতৎ সূত্রকরণমুচিতং তথাপিপ্রসঙ্গাদত্রৈবক্তমিত্যবলোকনীয়ং। ক্রোধনইত্যাদি। কেবলকুধঃ ইনন্ত কুধোবাক্রোধনশীলঃ ক্রোধনঃ মডিশ্চুরাদিঃ চলঃ কেবলইন্তোবা। এবং কোপনঃ ভূষণঃ কম্পনইত্যাদয়োহপিস্তাঃ প্রপূর্বরঃ ভাষ্কথনেকরাবে। নন্দ্যাদেরিত্যাদি এতৎস্ত্রান্তম্বদাীতিচ্ছন্দঃ। ১০২॥

क्र ९ अमो शिका।

অপি। হলাদিশ্চাসোর চাদিশ্চেতি। অকর্মকব্যঞ্জনাদির চাদের পিতৃণ্বাধোহনঃ স্থাৎ। বিঃ স্বভাবোহির চাদিঃ একোর চ্প্রকারঃ সূত্রগণঃ অপরোর চ্যাদিবৎ অত্রনদ্যাদিসাহ চ্যাছে পূর্বর ক্ল্যুএ-বহাভিমতঃ পরেগৃহমাণে ভূত্বন্ধাঅপিগৃতীতাঃ স্থানিত তেন শয়িতামাতাহাতেতিনানঃ। রুচ্দীপ্তে প্রভালিপ্তো তাচ্ছীল্যে রোচনোবিদ্যাতনঃ এতদ্বয়ং প্রমুখমাদ্যং বেষাং তেবোধ্যাঃ। মুখমাদ্যেপ্রধানে চেত্যমরঃ। তেচশোভনকর্ত্তনবর্দ্ধনাদয়ঃ। হলাদাতিকি স্কৃহিতাউহিতা। চংক্রমণইতি। অপিনেতে পূর্ণাধকানপ্রত্যয়ান্তাঃ দিল্লান্তার্থঃ। ক্রমুপাদবিক্ষেপে কোটিল্যেগমনার্থকাদ্যহে ক্ল্র্দাপিলান্ত ক্রমণাদ্যকাদ্যহে ক্রমণাদীল করুনাণ ব্যক্তনাপার এবং দ্রম্বাটিলোদ দ্রমণঃ ছুআশুগতোপোত্রঃ জ্ল্দাপ্রাস্থাতিকালারাং বৃঞ্বরণে। এতাঃ কিমিতি। ব্যবস্থাবাচিনানন্দ্যাদের ত্যাদিনাগৃহীত্যান্তাদ্যত্যনন্দাদিন্তাঃ কিমিতার্থঃ। সাচ্যথা ন্যান্ত্রমূদ্দীপক্ষামিতিপ্রাঞ্চঃ অত্রচমধূল্দাদিদর্শনাদিনিত্যাহয়ং সূদাদেঃপ্রতিষেধইতি তৈরেবাক্তং। অত্যেহমুদ্রপ্রস্থাস্ত্র নক্তং আদিনৈত হ্যাধিত নিতিভাবঃ। যান্তেনিত্যনিষেধইতাহায় আত্তেশবেতি। অভিধানলক্ষণাহি কুত্তিভিত্যর্থঃ। এযাং নন্যাদ্যন্তর্গতিম্বননেদীক্ষ্ণিক্রার্থান্তর ক্লাপ্রাক্রিত। আক্ত্রাআকারেণনন্দ্যাদির্গণনাম্র তদন্তপ্রাতিপদিকগণোদ্ধারাদিতিভাবঃ। এতেননধাতুণ্যতিদ্বাদ্যক্র নন্দ্যাদিরিত্যর্থঃ। ১০৩॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অপিচেতি। অপিনাসাধূনিপদান্যাহ চংক্রমণইত্যাদি। অত্যর্থং ক্রামতীতি যঙিদ্বিদ্ধে অনাদিহল্ লোপেকস্মচন্তে অনুস্বারঃপঞ্চমান্তজপাদীনামিতিবিন্দ্বাগমঃ সংজ্ঞাপূর্ব্বকত্বাদ্বিন্দুস্থিতিঃ অনপ্রতারেযঙ্লোপঃ এবং দংদ্রমণইতি। দীক্ষিতেতি। দীক্ষ্মণ্ডন যজন উপনয়ন নিয়মগ্রহণব্রতাদিফ বিধ্যমুষ্ঠানাভিষেকেষু ভূআ তৃচি ইট্ নন্দ্যাদেরিত্যাদের্ব্যব্যাবাচিত্বাৎ কচিন্নিত্যং নানঃ কচিদ্বানানইতি জ্ঞেয়ং তেন দীক্ষণ-ইত্যপিস্থাৎ। অপিচেত্যাদিবরণইত্যন্তমুদ্গীতিচ্ছনঃ। ১০৩॥ প্রহাদের্ণিন্। যথা প্রাহীস্থায়াযাচ্য পরাধ্যপি। অয়মপ্যাকৃতিগণঃ।১০৪॥
নাম্যুপধ প্রীকৃগুজ্ঞাভ্যঃ কঃ স্যাৎ। বিবুধোষথা। বিলিখঃ ক্ষিপঃ প্রিয়ো
২য়ং কিরউদ্গিরঃ আজগামজ্ঞঃ।১০৫॥

অপ্রাদিনামপুর্রাদাদন্তাৎস্থশ্চতঃ। ক্ষিতিপঃ। গাংদদাতীতিগোদঃ দ্বাভ্যাং পিবতীতিদিপঃ বুদ্ধোতিপ্রতীতিবুদ্ধিস্থঃ। অপ্রাদৌকিং গোসন্দায়ঃ শুন প্রধয়ঃ। স্থাগ্রহণঃ প্রাদ্যর্থং গ্রামসংস্থঃ শুণসমুত্থং যশঃ। ১০৬॥

क्र श्रमीणका।

গ্রহা। কর্ত্তরিসর্ব্বকালেণিন্। আঘাচীতি অঘাচীতিচপাঠঃ তত্ত্রনঞ্পূর্ব্বঘাচিঃ। অয়মপীতি। নকেবলং নন্দ্যাদিঃ প্রাতিপদিকগণাতুদ্ধতাাকৃতিগণোনির্দিষ্টঃ অয়ং গ্রহাদিরপিতথেত্যর্থঃ। ১০৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গ্রহাদেরিতি। গ্রহ্ উপাদানে। কৃতঃ কর্ত্তরীতিপ্রাপ্তক্তেঃ কর্ত্তরিবাচ্যে সর্বাকালেণিনিতিপ্রাপ্তং । তিষ্ঠতীতি স্থায়াণিনি আদন্তাদ্যাগমঃ আঙ্পূর্বাঃ যাচ্ ভিক্ষায়াং ণিন্ অপপূর্বাঃ রাধ্সংসিদ্ধোঁ। অয়মপি গ্রহাদিরপীত্যর্থঃ। ১০৪॥

क्रथ्यमोशिका।

নাম্য। প্রীঞ্প্রীতৌক্র্যাদিঃ। অণ্কৌনস্তইতিবচনাৎককুবন্ধঃ। কৃবিক্ষেপেগৃনিগরণেতুদাদিঃ। প্রীণাতিকিরতিউদ্গিরতীতিগ্রহাৎ নপ্রীয়তেকীণাতিগৃণাতীতি এতচ্চরুদ্ধোপচার গ্রহণাদিতিভট্টঃ। ১০৫॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

নামাতিপধায়ত সচপ্রতিক্তি অববোধেজাশেচতিদ্দঃ তেভাঃ ককারাসুবন্ধঅপ্রত্যাঃ তাৎ। বিপূর্বঃ বুধ্অবগমেবিশেষেণ বুধ্যতীতিবিবুধঃ কনুবন্ধত্বান্ধতাঃ। বিপূর্বঃ লিখ্
অক্ষরবিভাসেবিলিগতীতি বিলিখঃ ক্ষিপ্প্রেরণে ক্ষিপতীতিক্ষিপঃ প্রীতেপ্রিণাতীতিপ্রিয়ঃ অগুণে
ইষ্কিরতীতিকিরঃ উল্গিরতীতিউল্গিরঃ উভয়ত্র ৠদন্তত্তেরগুণে আঙ্গম৯পরোক্ষায়াঅটিদ্বিভাবঃ ইকামতৈবেত্যাদিনা উপধার্দিঃ অভ্যাদে কবর্গতা চবর্গহিতি গতাজঃ জানাতাতিজ্ঞঃ কেআকারলোপঃ কর্তব্যঃ স্বরে
কঙ্কুবন্ধিনীত্যালোপঃ। বিবুধোযথাইত্যন্তঃ ছলঃ। ১০৫॥

क्र थमी शिका।

অপ্রা। নপ্রাদির্যুম্বাংপরং তদপ্রাদিতানৃশং নামপূর্বাং যম্মতাদৃশাৎ প্রাদ্যবৃহতিনাম পূর্বাদাদস্তাদিত্যর্থঃ প্রাদিপূর্বাদাদস্তাভু অন্যতোহপিচেতিড়োভবত্যেব। নম্বেনপ্রাদিপূর্বাদিতিজিয়তামিতিনৈবং গোসন্দায়ইত্যাদাবন্যতোহপিচেত্যম্যবাধনাপত্তঃ। হস্তসূত্রদ্যবিষয়বিভাগেন প্রাদিভিন্নশুদ্ধাদয়ং শুদ্ধপ্রাদি পূর্বাৎসইতি নাম প্রাদেরপরেণাতোহনুপদর্গাদেতাবহুক্তমিতিকৃতং
নামপদেনেতিনোদ্যং তদসত্ত্ব অপ্রাদেরয়ং শুদ্ধাংসইতি বিষয়বিভাগাসস্তবাৎ। পরেণতুনোপদর্গোম্মাদিতি নামাভিপ্রেতমিতি তথাপি প্রতীতিগোরবমিতি। পরেণকুতোনকৃত্মিত্যপিনপ্রেক্তাবয়ং পরচিত্তম্ব

গৈধাতোফক্। শ্রুতিগঃ ছন্দোগঃ মধুরগীকন্যা। ডাপবাদঃ টিস্থাদী. প্রাদৌতুসামসঙ্গায়ঃ। ১০৭।

ত্বশিষ্য । নপ্রাদিরপ্রাদিঃ তয়ামপূর্বাং যন্তব্যাৎ বিষয়বিভাগেনমিশ্রবর্জনমিতিবৃদ্ধাঃ। তেনৈবিদিদ্ধে তবিধানং ব্যজ্যোঃ দম্প্রদারণপ্রতিষেধার্থং যথারোগেণজিনাতীতিরোগজ্যঃ গোষ্ঠব্যইতি। পারক্ষণেক্ষিতিপঃ দাঞ্গোদঃ দ্বাভ্যাং শুণ্ডাতুণ্ডাভ্যামিত্যর্থঃ। অপ্রাদেশিকিমিতি। অর্থদারাব্যাবৃত্তিরিয়ং দূত্রেএবস্পদাভাবাৎ কিন্ত প্রাদ্যব্যবহিতনামপূর্ববাৎকিমিত্যর্থঃ। গোদন্দায়ইতিকশ্মণ্যণ্নতঃ এতদ্বর্জনাদেব প্রাদিব্যবহিতহামপূর্ববাংকিমিত্যর্থঃ। গোদন্দায়ইতিকশ্মণ্যণ্নতঃ এতদ্বর্জনাদেব প্রাদিব্যবহিতহামপূর্বাংকিমিত্যর্থঃ। গোদন্দায়াদিতি। স্তনপ্রের্ময়ইত্যুপসর্গেধেডিতিশঃ। আদন্তগণনায়াংতিষ্ঠতেঃ প্রবিদ্ধার্থিতি। ব্যাদেশিব্যর্থইত্যাহ স্থাগ্রহণমিতি। উক্রঞ্ধ পূর্বেদিদ্ধান্থিতি। প্রাদিব্যবহিতনামপূর্বার্থমিত্যর্থঃ। গ্রামেসন্তিষ্ঠতীতিতঃ গুণাৎসমৃতিষ্ঠতীতিতঃ উদঃ স্থিঃ। ১০৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অপ্রাদীতি। অপ্রাদীতামুক্তেপ্রাদিরপনামপূর্বাৎস্থাৎ নামেত্যমুক্তেনপ্রাদিঃ পূর্বোয়স্থাইতি সমাসাশ্রয়ণাৎ কেবলাদন্তাদিপিস্থাদিতিদ্বয়মূক্তং। দিপোহস্তী। দন্তীদন্তাবলোহস্তীদ্বিদােহনেকপো দিপইত্যমরঃ। গোসন্দায়ইতি। গাংসন্দাতীতিকর্মাণ্ড্ইত্বং আকারাদ্যআগমঃ। এতংপ্রয়োগদানাং প্রাদিব্যবহিতস্থাপিকর্মণ্ডপপদত্বং স্বীকৃত্মিতি। নত্ববাহ্যতাহিপিচেতিতপ্রাপ্তিঃ প্রাদাবাদন্তাদিত্যস্থ সন্তাৎ সত্যম্পতদ্বাহ্যতিবলাৎ প্রাদাবাদন্তাদিত্যক্ত কেবল প্রাদানিত্যমানপূর্বপ্রাদাবিত্যস্থাবিক্ষাহ্ত্বামাত্র পরেণতঃ অন্যথাব্যবিত্ত ভিক্ষত্বাপত্তেঃ। স্তনপ্রয়ইতি। বেট্পানেশে অন্নিকরণেএকারস্থায় লোপ আদস্যেত্যলোপঃ স্তনশন্দেনতাৎস্থোপচারাং স্তনস্ত্রম্মুচ্যতেস্তনয়োঃ পানাযোগ্যত্বাং। নত্বাদ্সত্বেনস্থাবিতার্থিং প্রয়াজনং যস্ত্র ক্রেন্ত্রাবিশেষণ্মিদং। ডপ্রত্যয়ং প্রতিপ্রাদ্যর্থং স্থাগ্রহণ্মিত্যক্ত আহ্মাগ্রহণ্মিত্যক্রউদঃ স্থান্তন্তানির্ব্যারিত্যনেনস্কৃ। এবং প্রস্থিত্যাদ্যোহপি। ১০৬॥

क्र ९ अमी शिका।

গৈ। অপ্রাদিনামপূর্ববাং। গইতিকৃতেগাঙ্গতাবিতিগায়ইতি কৃতেগাচযাচেতি সন্দিছেতেতি। বৈধাতোরিতি। কৈ গৈ শব্দেশ্রুতিং বেদং গায়তীতিশ্রুতিগঃ ছন্দঃ পদ্যং। টিব্রাদীতি। ডাপবাদ-ফলং ক্করপ্রটমুবন্ধিনোনদাদিব্রাদিত্যর্থঃ। কিব্রাদাকারলোপঃ এবমুত্রত্রাপি। সামবেদং সাত্তং বা সমাব্যবহিতত্বান্নটক্। ১০৭॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

গৈধাতোরিতি। শ্রুতিগইত্যাদি। শ্রুত্রবণে শ্রুর্তইয়মিতিশ্রুতিঃ ক্রিয়াসিতিক্রিং শ্রুতিগঃ এচামাত্বেটকি আকারলোপঃ কর্ত্তব্যইত্যাদিনা আলোপঃ। শ্রুতিঃ স্ত্রীবেদআস্নায়ইত্যসরঃ। ছন্দোবেদং গায়তীতি ছন্দোগঃ পূর্ববং। ছন্দোবেদেচপদ্যেচেত্যসরঃ। মধুরং গায়তীতি টক্ স্ত্রীলিঙ্গেটিত্বাংটকু-বন্ধুত্বাদীকন্মেতিবিশেষ্যং। শতিজপ্রত্যয়েমধুরগাইতিস্থাদিতিতং বাধিত্বাটক্প্রত্যয়ঃ কৃতঃ। প্রাদে

শীধুস্থরাপরপিবতেঃ। টক্। শীধুপজাগাৎ স্থরাপীচ। জন্যত্ত মধ্-পাপিকী স্থরাং পাতীতি স্থরাপাশূদ্রী।১০৮॥

অন্যতোহপিচডঃ। প্রাদাবাদন্তাদপ্রাদাবপ্যনাদন্তাৎডঃ স্যাৎ। প্রাক্তঃ পরিশ্লোগিরিশঃ প্রদঃ।১০৯॥

ছিতি। পূর্বেশ্মাদপ্রাদিনামপুর্বাদিত্যমুবর্ত্তনাদিতিভাবঃ। সামসঙ্গায়ইতি। সামবেদং সংগায়তীতি নটক্ডোহপি কিন্তুকশ্মণ্যণ্ প্রাদিসমাসঃ ইজ্বিতি আকারান্তাদ্যআগমঃ। ১০৭॥

क्९ अमो शिका।

• শীধু। শীধুস্থরাভ্যাং পরাংশীধুস্তরাপরাদিত্যর্থঃ। মৈরেয়মাসবং শীধু স্থরাহলিপ্রিয়াহালাইত্যমরঃ। পাপানেপিবতের্বিতি নির্দ্দেশাং। অহাত্র শীধুস্থরাভ্যামহাত্র উপপদেপিবতের্বান্যত্রইত্যর্থঃ। মধুপুষ্পরসং পিবতীতি। স্থরাং পাতীতি পারক্ষণেডঃ টকাপ্রত্যয়ংস্থাং। মাব্রাহ্মণীস্থরাপীয়ানৈনাং দেবাঃপতি-লোকং নয়ন্তীতিছান্দমং। অপ্রাদিনামপূর্ববাদিত্যেবস্থরাপ্রপায়ঃ। ১০৮॥

গুতপুকাশিকা।

শীধূসরেতি। শীধূপিবতীতিটক্ ককারাসুবন্ধে আকারলোপঃ কর্ত্তন্যইত্যালোপঃ। আঙ্ ইণ্গতৌ অদাতনাঃ দাঁতি ইণোণেতিগাদেশেপুর্বজ্ঞাগাসঃ ইণশ্চেতি ঈদিচোলুক্। স্তরাং পিবতীতি
টক্ টিব্রাদা। মধুপুপ্রেসেট্ডেইত্যমরঃ। তৎপিবতাতিডঃ অত্রাপ্রতায়ঃ। পিকস্ত কোকিলস্ত্রাপিকী
পুরিস্ভাস্ত তৎদ্রিমানিতীপ্রতায়ঃ। স্রাপাশ্দ্রীস্থ্রারক্ষাক্রী শুদ্রভার্যেতার্থঃ। অপ্রাদীত্যাদি স্থরাপীচেতাত্তমার্যাছনঃ। ১০৮।

क्र श्रिमी शिका।

অন্তবিতি। পূর্বেল ক্রাজিনামপূর্বলাদ ভাৎ অন্ততঃ প্রাদিনামপূর্বাদনাদ ভাদপীত্যর্যঃ। পূর্বে-পদাধিকারাৎ পূর্ব্ববিত্তরেনাপপদ্বমত্রনোচেৎগিরিশাদাবনিত্যসমাসঃ স্থাৎ। যদাদশৈতেরাজমাতঙ্গান্ত-স্থৈবামাত্রসমাঃ চটবগোর্বিন্দর্তাতিবৎসমাসচ্ছনাপ্রাদিনামান্যত্বং তেনাদন্তসম্বন্ধোপাধিকাপ্রাদিনাম্মো-২ন্যান্মিন্ আদত্তসম্বন্ধোপাধিকপ্রাদে অনাদন্তসম্বন্ধোপাধিকাপ্রাদিনামনিচোপপদেধাতোর্ড ইত্যুপপদত্বমত-আহপ্র:দাবাদন্তাদিতাদি। নতুপূর্বব্যাখ্যানে অন্যশব্দশ্য পরিশিষ্ট।র্থবাচিত্ত্বন কেবলাদন্তাদিপি প্রসক্তি-ছু নিবারেত্যত আহ প্রাদাবিতি। প্রাদাবাদন্তাদিতি অপ্রাদিনামান্যত্বম্ অপ্রাদাবপীতি আদন্তান্যত্বং কেবলাদন্তপ্রাদিপুর্কানাদন্তয়োরন্যত্বেহপি ন গ্রহণমিতিভাবঃ তথাচ নতুসন্নিহিত বুদ্ধিরন্তরঙ্গেতি ন্যায়াদা-সন্বন্ধেনাপ্র:দিনামপূর্ব্ধানাদন্তত্ত্বেন কেবলাদন্তপ্রাদিপুর্ববানাদন্তম'ত্রগ্রহণমিতি। সহান্তঃ গ্লৈধাতোরেচাং পাঠস্থিতান্তানামিতিবিষয়গ্রহণাদ্ভাবিনিডেআত্ব-প্রজানাতীতিপ্রজঃ। পরিগ্রইতি। আদন্তঃৎডঃ। গিরিশইতিগিরোশেতইতিবাক্যে থগোহস্তকইতিবন্নিপাতনাৎক্ষ্যভিচারাদ্বাডঃ অন্যথাধি-করণে২ট্প্রান্তিরপরিহার্যা। যদাকালভাবেতিকর্মণ্যুপপদেডঃ। টকৈবসিদ্ধেডবিধানমীপ্রত্যয়সম্প্রসারণ-নির্ভার্থং যথাপ্রজ্যাপ্রস্থইতি। ১০৯॥

খগোইস্তকোবরাইশ্চময়ুরশ্বরকুঞ্জরাঃ। বরানাইন্তিমছাং রৌতিরমতেবা
শ্বয়ং রাজস্তেকুঞ্জেরমতেইতি বরাহাদি শব্দব্যুৎপত্তিঃ। পদ্যাং নগচ্ছতীতিপন্নগঃ
ভাষাপালাপগাচনদী। কর্মাণ্যপি স্থান্তব্যোহর্গঃ পরিখন্যতইতি পরিখা। তথাইন্তেরাশীর্গত্যোশ্চ শত্রুং বধ্যাংশক্রহঃ পাপহঃ গতৌ অধ্বহঃ ক্লেশাপহঃ
তমোইপহঃ জ্বাপহঃ বাতপিত্তকফাপহং তৈলং। প্রদাদ্যোঃ কর্মসম্বন্ধান্ত ক্রেন্টিনিত্যাপবা। কন্যাপ্রদঃ পথিপ্রজ্ঞঃ গোসখ্যইতি সিদ্ধ্যতি। ১১০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

অন্যতইতি। অন্যাদন্তঃ পঞ্চ্যান্তান্ত্ৰস্ পূৰ্ব্বোক্তাদন্যমাদিত্যু । অন্যতইত্যমাৰ্থমাহ প্রাদাবিতি। প্রাদাব্পপদে আদন্তাৎ অপ্রাদাবিপ প্রাদিভিন্নেইপ্যুপপদেইনাদন্তাদাদন্তভিন্নাৎডঃ ম্বাৎ। প্রাক্তিত্বি। প্রপ্রকঃ জ্ঞাঅববাধে প্রাদাবাদন্তাৎডঃ ডকুবন্ধেইন্ত্যাকারলোপঃ। পরিষ্টিত। পরিপ্রকঃ গ্রেইক্ময়েএচাং পাঠস্থিতান্তানামাকারোবিষয়েইননইত্যত্রবিষয়গ্রহণাৎ অননোবিষয়মাত্রেভাবিন্যপি ডে অন্তএচামাকারন্তেন প্রাদাবাদন্তাৎডঃ। গিরিশইতি। গিরো পর্বতেশেতইতি শীঙ্মপ্রেইত্যমাৎ অপ্রদাব্পপদেইনাদন্তাৎডঃ অন্ত্যম্বলোপঃ। যদ্যপি অধিকরণেশেতে রচ্ ইত্যনেনাচ্প্রাপ্তিম্বণাপি রুদ্দাব্দন্তেন শিন্টানাং ডপ্রত্যয়ম্বাভিধানাৎ ডএব। তথাচামরঃ। ভূতেশঃ খণ্ডপরশুর্গিরীশোগিরিশোম্বউতি। প্রপূর্বঃ ডুদাঞ্দানে প্রদদাতীপ্রদঃ প্রাদাবাদন্তাৎড আলোপঃ। অত্রানাদন্তপ্রয়োগান ন্তরং পুনরাদন্তপ্রয়োগশ্ছন্দোইকুরোধাৎ তথাহি অন্যতো ইপিচডঃ প্রাক্তঃ পরিগ্লঃ গিরিশঃ প্রদইত্যেবং ছন্দঃ। ১০৯॥

क्रथमिका।

অপি শব্দাদাহ থগইত্যাদি। তথাচাপি শব্দাৎকচিত্নপদর্গস্থনিপাতঃ যথামহাং রোতীতি ময়ুরইত্যাদীতি বররুচিঃ। উপদর্গস্থোপপদস্থেতিবজ্ঞঃ। থেআকাশে গচ্ছতীতি থগঃ পক্ষীগমোডঃ থোহণীতি থবাধোনিপাতঃ। অন্তং নাশং করোতীতি অন্তকোষমঃ কর্মন্যণ্বাধঃ। বরাহইতি। প্রাদিব্যবহিত-নামপুর্বাদনাদন্তাৎডঃ বরান্ শ্রেষ্ঠান্ পরোক্তচকারেণ প্রদিদ্ধার্থগ্রহণাদত্রোক্তমর্থনিপাতোবা। ময়ুরইতি হীস্থানেযুঃ।সয়ং ব্যঞ্জনানপেক্ষং যথাস্থাৎরাজ্লীপ্রের্থ যম্লোপঃ সয়মিত্যর্থকথনমেবন্ধেন রাজতইতিবাস্বরোডঃ কুপ্তেলতাদিপিহিতস্থানেরমুক্রীড়ায়ামর্থনিপাতঃ। কুপ্তোহমুর্দন্তোবাবিদ্যতেহস্থেতি প্রশংসায়াং মন্থ্যীয়ে কুপ্তরইতি ব্যুৎপত্যন্তরং যথাকথঞ্চিদ্ব্যুৎপত্তিঃ সংজ্ঞাশকত্বাৎ নিত্যসমাসঃ পদ্যাং ন গচ্ছতীতিপদ্নগঃ দর্পঃ ধগবদ্ধিপাতঃ সপ্র্বেপদ নঞ্চোহগ্রহণাদাত্বং। অপগচ্ছতীতি অপগাপক্ষেদীর্যঃ আপগাপ্রাদাবাদন্তাৎডঃ। কর্ম্মণ্যপীতিচকারাৎ। তথাচ চকারাৎ কর্মণ্যপি কেবলোপদর্গাদপীতিকালাপঃ। লিঙর্থেডঃ হুগঃ হুর্গঃ পরিথন্যতইতি পরিথা। তথেতি তথাঅপ্রাদিনামপ্রবাৎ হিংসায়ামাশিষিশক্রহঃ পাপহঃগতৌত্যধহঃ এবং যোজনহঃ ক্রোশহইত্যাদি। আশীর্যত্যোঃ কিং শক্রং হন্তীতি শক্রঘাতঃ। চকারাদনাশিষিপ্রাদি-পূর্বাচ্চ ক্রেশপহন্তীতি ক্রেশাপহইত্যাদি। অপাৎক্রেশতমোদ্ধরকদেঘিতিকাতক্রং। অপাদিতি কিং

স্যান্মূলবিভুজাদেঃ কঃ। কুধ্রোনখলুচং ধনুঃ। অর্ক্ত্র্রেশেম্বকুমুদনদীফা-স্থোকহাদয়ঃ। পুত্রস্তুন্দপরিমুজোইলসঃ স্থিয়ামাকৃতন্ন। ১১১॥

ক্রেশোপঘাতঃ। প্রাদিব্যবহিতনাম্নিডইত্যাহ প্রদাদ্যেরিতি। অন্যতোপীতিডেন প্রদইতি নিম্পাদ্যপ্রদ-আদ্যোযেগামিতিবিগ্রহে তৈঃ সহকর্মণঃ কন্যাদেঃ সম্বন্ধাদেযাগাৎ অপ্রাদীতি নঞোহনিত্যতয়াবা অপিনাকুদ্যভিচারাদ্বাইত্যাদি সিদ্ধাতীত্যর্থঃ। ১১০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অপিশব্দাদাহথগইত্যাদি। এতেশব্দাগপ্রতারান্তানিপাতনাৎ দিদ্ধান্তীতি পরেণবিভক্তিপরীণামেনাদ্বরঃ। থগং পক্ষী। থগেবিহঙ্গবিহগবিহায়য়ঃ। শক্তিপিক্ষিশক্নিশক্ত্শক্নিদ্ধাইত্যমরঃ। অন্তকোষমঃ। কালোদণ্ডধরঃ আদ্ধাদেবোবৈবস্ততোহন্তকইত্যমরঃ। বরাহঃ শৃকরোদ্বস্তিরিত্যমরঃ। ময়ুরঃ স্বনামপ্রদিদ্ধপিক্ষভেদঃ। ময়ুরোবহিণোবহীনীলকঠোভুলপ্রভাগরঃ। স্বরঃ স্বরশংজ্ঞকোহকারাদ্যোকারান্তঃ। কুঞ্জরোহন্তী। দন্তীদন্তাবলোহন্তীদিরদোহনকপোদিপঃ। মতঙ্গলোগজোনাগঃ কুঞ্জরোবারণঃ করীত্যমরঃ। থগান্তকরোব্রহিণেতঃ স্থবোধত্বাহ ত্রবিধিবরাহাদিপদব্যৎপত্তিং দর্শয়তিবরানাহন্তীত্যাদিনা। চকারাদপরিদদ্ধশনাহপদ্ধগইত্যাদি। উরগঃ পরগোতোগীন্ধিক্ষণ পবনাশনইত্যমরঃ। অপগেতি। বিপুলপুলিনাবেতস্বত্যোহপগাঃ কতিশীলিতাইতিযোগেশ্বরঃ। আপগেতি নিত্যসমাদে কচিদেকপদেহণীতিদীর্ঘঃ ঘরাঅপাং সমূহআপঃ অণ সমূহেম্হিত্যঃ তেন গচ্ছতীতিছঃ ঘরাঅপাং নিবাসআপঃ অণ্তজ্যেদ বিকারাদীত্যাদিনাহণ্ণমুদ্রস্তংগছ্তিতি আপগা। বেগারমানং পতিমাপগানামিতিমাত্বঃ। বধ্যাদিতি। আশীর্যাদ্বিভক্তেইন্তর্কধানিনীলোগঃ স্ত্রিগ্রহিত্যেদিনী। খেরন্তপরিথেত্যমরঃ। বধ্যাদিতি। আশীর্যাদ্বিভক্তেইন্তর্কধানিবাতিবধাদেশঃ। অপ্রানং হন্তিগচ্ছতীতি অপ্রহঃ। গোসেখ্যইতি। গাংসংখ্যায়তীতিখ্যাপ্রকথনেইত্যম্বাৎ তঃ। গোপেগোপাল গোদস্যগোধ্গাভীরবল্লবাইত্যমরঃ। ১১০॥

क्९ % मी शिका।

স্থামূল। মূলবিভূজাদেঃ দিন্ধরেকঃ স্থাৎ। দিন্ধবিদাপতাদানিত্যং তত্তৎসমাদঃ। যদ্বামূলাদিপুর্বেরিভূজইতি পূর্বাদিপদলোপীদমাদঃ মূলং তৃণাদিমূলং দনিহিতংবা। মূলং শিফাদ্বয়োশুলবিত্তেহন্তিকে প্রকার্তিতমিতিমেদিনা। মূলবিভূজাহর্থইতিবজ্ঞঃ। কীটবিশেষইত্যর্থঃ। কুং পৃথীংধরতিকোঞ্জিয়তেবা কুর্প্রোণিরিঃ লুন্চ্ অপনয়নে নথং লুঞ্জীতি নথলুচং কেনলোপঃ অপোবিভর্তীতি অন্তঃ মেঘংকেশিনং হয়াকৃতিমন্তরং হন্তাতিকেশিন্তঃ কৃষ্ণা কেনিয়া কৃষ্ণঃ কেনিমাদত ইতিক্মদং নদ্যাং স্নাভূং কুশলোনদীফঃ নিম্নিটিয়ামিতিষত্বং। অকোশলভূজঃ নদীস্নঃ অন্তানিরেহতীত্যন্তোক্রহাদয়ইত্যন্তাকারিকা। অত্যাদিগ্রাহ্যানাহ্মুদ্থণ্ডনে শোক্ষপ্রদূরীতি তুন্দপরিমূজঃ এবং কৃত্ত্মভূকহাদয়শ্চ। ১১১॥

উপসর্গেধেট্দৃশিপাদ্রাধাভ্যঃ শঃ। স্তনপ্রধয়ঃ। উৎপশ্যঃ প্রাপিবোইসা-বুজ্জিত্রঃ সন্ধমশ্চায়ং। শিত্ত্বাদতনাবন্ধিকরণে পিবাদেশাদিকার্য্যং। ১১২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

স্থাদিতি। মূলং শিকাং বিশেষেণভুঙ্ক্তইতিকঃ সিদ্ধশব্দোপন্থাসাং নিত্যসমাসঃ মূলবিভুজআদির্যান্ত মূলবিভুজাদেঃ সিদ্ধয়েকঃ স্থাদিত্যর্থঃ। আদি গ্রাহ্থানাহ কুপ্রইত্যাদি। প্রঞ্ধারণেকেসন্ধিজারঃ
নিত্যসমাসঃ। অন্ত্রং মেঘোবারিবাহস্তনয়িজুর্বলাহকইত্যমরঃ। কেশিম্বইতি কপ্রত্যয়েম্ম স্থাদগুণিনি
স্বরইতিহনোম্মঃ। কুমুদং শুক্লোৎপলং। দিতেকুদকৈরবেইত্যমরঃ। কোপৃথিব্যাং মোদতইতি মূদ্
হর্ষেকঃ। নদীফইতিফাশোচেধাস্বাদেঃ যস্ত্র্যাং ততঃ কুশলার্থেকঃ ষত্রং। অস্ত্রোরুহমিতি। রুহ্জনী
প্রান্ত্রভাবে। বিসপ্রস্নরাজাব পুকরান্ত্রোরুহাণিচেত্যমরঃ। শোকমপন্থদতীতিনুদ্ প্রেরণে উপ্সর্গব্যাগানাশার্থকঃ। মূজুশুদ্ধো ভুল্মুদরং পরিমান্ত্রীতিকঃ অস্তবিশেষ্যমলসইতি। কৃত্রেতি।
কৃত্যমুপকারাদিকং হন্তীতিকৃত্মান্ত্রিয়ামাপ্রত্যয়ঃ। ১১১॥

क्र ९ अमी शिका।

উপ। উপদর্গে উপপদে তাপবাদঃ। যদ্যপুর্যেপদর্গদংজ্ঞাগ্রন্থকু তাকাপি নপ্রণীতাযতোব্যবহারদিদ্ধিরিতি তথাপির্দ্ধপারস্পর্যোপদেশান্মন্তব্যং যথাচতেবাং শ্লোকঃ। প্রপরাপদমন্ববিদ্র্রিভিব্যধিদ্দতিনিপ্রতিপর্যাপয়ঃ। উপআড়িতি বিংশতিরেবদথে উপদর্গবিধিঃ কথিতঃ কবিনা। তেচভাষায়াং দর্বধাতোঃ
প্রাণ্ভবন্তিছন্দিদাতোঃ পূর্বেপরেদূরেচেতি যথোক্তমিতি। নন্ধেবং প্রাদিরুপদর্গঃ প্রাদিন্ধেন নিত্যদমাদদিদ্ধাবিপি তস্তোপপদবিধানমন্তেয়ামনিত্যদমদার্থমিত্যক্তং দমাদদূত্রে। স্তনং প্রধয়তীতি স্তনপ্রধয়ঃ।
শিত্তাদিতি। শিত্তাদ্বিকরণেপাপানেইত্যাদেঃ পিবাদেশাদিকার্য্যমিত্যর্থঃ। ১১২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উপেতি। উপদর্গেপ্রাদাবুপপদে ধেট্পানেদৃশির্প্রেক্ষণে পাপানে প্রাগন্ধোপাদানেশ্বাশব্দাশিদংযোগয়েঃ এভ্যঃ শঃ শনুবন্ধোহকারঃ স্থাদিত্যর্থঃ। উপদর্গশব্দেনাত্রপ্রাদিগণউচ্যতেত হুক্তং গ্রন্থক্তা-আখ্যাতান্টম বিন্যাদে প্রপরাপদমন্বব নির্ন্তরভিব্যধিদ্দতিনিপ্রতিপর্য্যপয়ঃ। উপআঙিতিধাতুপুরঃ স্থিতিভাগুপদর্গগণোহর্থঃ পরপ্রকৃতেরিতি। উপদর্গদংজ্ঞানগ্রন্থকারপ্রণীতেতি কৃৎপ্রদীপিকামতং তচ্চিন্ত্যম্ আখ্যাতন্টমবিন্যাদে গ্রন্থকৃতাত হুক্তরাৎ তহুক্তিগ্রন্থকারস্থ নেতিবক্তুং নশক্যতে তৎপশ্চাদাখাতবিন্যাদ-ইতিপদমঞ্জরীদমাপ্রেতিচলিথিতত্বাৎ তদ্বিন্যাদাদ্ধতং গ্রন্থকারোক্তং স্বীকৃত্যমহামাহোপাধ্যায় জয়কৃষ্ণভট্টাচার্য্যব্যাত্তবাচ্চ। উৎপশ্যইত্যাদি। শপ্রত্যমেশিত্বাৎ ভুবাদেঃ শিতিকর্ত্বর্যন্নিত্যনিদৃশঃ পশ্যইতি পশ্যাদেশঃ এবং প্রপিবইত্যাদে পাস্থানেপিবাদেশঃ আস্থানেজিআদেশঃ শ্বাদ্বান্ধমাদেশইতি। প্রতদেবাহশিত্বাদিতি। পিবাদেশাদীতি। পিবাদেশস্থাদিঃ পিবাদেশ আদির্যস্তেত্যুভয়সমাদাৎ পশ্যপিবজিঅধ্যাদেশগ্রহণং। উপদর্গ ইত্যাদিদক্ষমশ্চায়মিত্যন্তমুপগীতিচ্ছন্দঃ। ১১২॥

কচিদপ্রাদৌ। জিন্তঃ সপশ্যঃ। ১১৩॥ নস্যান্তুনামনি। ব্যান্তঃ ব্যাজিন্তভীতিডঃ। ১১৪॥

সাহিশাতিধারি পারি বেদ্রাদেজ্যাদিকাদপি। অপ্রাদৌশঃ স্যাৎ। সাহয়তীতি সাহয়োহপরাধস্য ফলশাতয়ঃ ভারধারয়ঃ বেদপারয়ঃ বেদয়োগুণানাম্ ইব্দুদ্বিয়ামুদেজয়ঃ। আদিনাচেতয়োলিম্পবিন্দারবিন্দসাধয়াঃ। সাধের্মেছস্তব্যে। নিলিম্পাদেবারাক্ষসীচ। দদ্দধোরচ্দদঃ দধইতি। ১১৫॥

क्र ९ अमी शिका।

কচি। অপ্রাদাবিত্যব্যয়ীভাবেহপি সূত্রানুরোধাদিমিকার্য্যং প্রাদিসম্বন্ধাভাবেকচিদেভ্যঃ শ:। ১১৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

কচিদিতি। প্রাদেশ্বভাবঃ অপ্রাদিঅভাবেচেত্যব্যয়ীভাবঃ তেনপ্রাদ্যভাবেসতিকচিৎশঃ স্থাদি-ত্যর্থঃ। যদ্যপিহ্ব্যয়ীভাবে অনদস্তাদ্বিভক্তিলুক্ ভবিত্নমর্হতিতথাপি সূত্রেলিঙ্গবচনকালাশ্চাস্বতস্ত্রাণীতি-ন্যায়াৎ চকারাদ্বিভক্তিলোপোহপ্যস্বতস্ত্রইতি তেননবিভক্তিলুক্ নাপিক্লীবলিঙ্গত্বমিতিবোদ্ধব্যঃ। ১১৩॥

क्र ९ अमी शिका।

নস্থাৎ। যদ্যপিডপ্রত্যয়েদত্যের সংজ্ঞাগম্যতে নকেবলংপ্রক্কতো তথাপিভাবিনিভূতত্বোপচারান্নিষে-ধোডইত্যস্থাসন্যতোহপি চেত্যনেনত্যর্থঃ। ব্যাস্ত্রঃ স্থাৎপুংসিশাদূ লেরক্তৈ রণ্ডকরঞ্জয়োরিতিমেদিনী। ১১৪॥

गृष्यकाणिका।

নস্তান্ত্রিত। নামনিগম্যমানেশোনস্থাই। তুশব্দঃ শকারসমূচ্চায়কঃ। ব্যান্তইতি। বিআঙ্ দ্র্যাগন্ধোপাদানেব্যাজিঘ্রতীতি অন্যতোহপিচেতিডঃ ডেহস্ত্যস্বরলোপঃ। কচিদপ্রাদৌজিঘ্রঃ সপশ্যোন-স্থান্ত্রনামনীত্যেবং ছন্দঃ। ১১৪॥

क्र श्रमी शिका।

সাহি। বিধ্যভাবেন নিষেধানুপপত্যাঅপ্রাদেশিঃ স্থাদিতি। সন্থাদয়ঃ য়ডিনন্তাঃ হেম্বিনিসাহয়ঃ।
অপরাধস্থেতি কর্মাণিয়চীএবমন্তং! শত্তশাতনেদন্ত্যপাঠেদং হিদায়াং সোঁএইতিচন্দ্রঃ। সদ্ভবিসরণগত্যোরিতি সদোদস্তইতিকেচিং। য়ঙ্অবস্থানে পার্তীরসমাপ্রোচুরাদিঃ প্পালনপূরণয়োরিতি
কেচিং বিদ্জানে উদ্পূর্ব্বএজ্কম্পনে। আদিনেতি। চিতীসংজ্ঞানেহেম্বিনিচেতয়ঃ লিপ্উপদাহেলিম্পভীতি শেমুচাদের্ম্ ম্ এবং বিদ্তলাভেবিন্দঃ অরং চক্রবাকং বিন্দতীতি। অরং শিস্তেচ চক্রাঙ্গেশীপ্রগেপুনরন্যবদিতিমেদিনী। অরং চক্রপ্রান্তং বিন্দতীত্যরবিন্দইতিকস্থাচিং সংজ্ঞেতিবজ্ঞঃ। সাধ্সংসিদ্ধোহেম্বিন্

অন্যেচন্দ্রাদয়ঃ তথাচনির্ম্মূলম্বাৎ সাধিরুপেক্ষিতইতিচন্দ্রঃ। আদেব্যবস্থয়া নিলিম্পাইতি। নৌলিম্পো
দেবযক্ষয়োরিতিচন্দ্রঃ। গবাদিষ্বিন্দেঃ সংজ্ঞায়ামিতি বররুচিঃ। দদ্দধোরিতি। দদ্দানে দধ্ধারণেপচাদ্যচিদদঃ দধঃ সিদ্ধাতি। পরেণভুদাঞ্ধাঞোর্বেতিসূত্রং কুম্বাসাধ্যতেত্তমুপক্ষিপ্রমিতিভাবঃ। অপ্রাদাবিত্যবপ্রসাহেইপরাধস্থেত্যচ্। ১১৫ য়

আদন্তব্যধ্ শ্বনিণ্ শ্যাদেশঃস্যাৎ। দায়োগবাং ধনী। ধায়ঃ ব্যাধঃ শ্বাসঃ প্রশাসঃ সপ্রাদ্যপ্রাদিনাশ্বিধ্যাদিশেচ প্রত্যায়ঃ আয়ঃ। সোপদর্গার্থ গৃহীতশ্যায়-তের্ডবাধকোণঃ অবশ্যায়ঃ। আদিনা আশ্রাবঃ অবহারঃ অবতারঃ। ১১৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সাহীতি। ষহ্মর্যণেভূআহৈতুকেনন্তঃ ষহ্মর্যণেচুরাদিঃ স্বার্থেনন্তশ্চ অপরেপঞ্চহতুকেনন্তাঃ এতেআদয়োযস্যেতি বহুত্রীহোঁ নদ্যন্যমাদিতিকপ্। অপিনাহপ্রাদোশইতি সমুচ্চীয়তে। সাহয়ইতি। স্বয়ং সহতেঅন্যং সাহয়তে বা ফলানিশাতয়তি পাতয়তি ভারং ধারয়তি বেদং পারয়তি সমাপয়তি বেদয়তি জ্ঞাপয়তি উদেজয়তি অতিশয়ং কম্পয়তীতিশঃ সর্বত্রকর্মণিষ্ঠী। দদ্দধোরজিতি। দাঞ্ধাঞোরাদস্তেত্যাদি বক্ষামাণ সূত্রেণণপ্রত্যয়স্থা বিধেয়য়াৎ দদ্দধোর্মিক্ষলস্বায়শপ্রত্যয়ইতিভাবঃ। ১১৫॥

क्र< थ्रमी शिका।

আদ। অনুবর্ত্তমানাদপ্রাদৌ ডাপবাধকবচনাৎ ণনুবন্ধঃ। ব্যধ্তাড়নে অন্ শ্বস্ প্রাণনেইণ্গতৌশ্যাদিঃ প্রশাসইত্যপপাঠঃ চেদন্তিকন্যাপ্রদবৎসাধ্যং পশ্চাৎপ্রয়োগাৎসিদ্ধঃ। আদন্তাদেব সিদ্ধেশ্যায়তের্ত্বহণং স্থা গ্রহণং প্রাদ্যর্থানিতিবৎ প্রাদ্যর্থংতেনশ্যায়তিঃ সপ্রাদিঃ আদন্তব্যধ্বসোহপ্রাদয়ঃ প্রাদিরহিতান্তত্ত্ত্ত্রসানিধ্যান্তদন্তঃ পাতাদিণোহপি সপ্রাদ্যপ্রাদের্গ্রহণমিত্যর্থঃ। সোপসর্গেতি। উপসর্গশ্চাসাবর্থং প্রয়োজনক্ষেতি তেন সহবর্ত্ততেইতিসোপসর্গার্থমুপসর্গপ্রয়োজনবদ্য হাতং গ্রহণং বহুসসচাসোশ্যায়তিশ্চেতিব্যৱাজিপমর্গেল সহবর্ত্ততেবং তৎসোপসর্গার্থংশ্যায়তি গ্রহণাত্মকবার্থরূপঃ তেনসোপসর্গার্থং ব্যাম্থাৎ গৃহীতশ্চাসোশ্যায়তিশ্চেতি অথবাদন্তব্রহপি শ্যাগ্রহণং প্রাদ্যর্থমিত্যর্থেনার্থগন্ত্যাসোপসর্গঃ গৃহীতশ্চাসোশ্যায়তিশ্চেতি তদহজ্জাতগোবৎসপুচ্ছাকর্ষণতৎপরোম্বতার্থতদহন্দানমিতিবদ্বত্পদতংপুরুষেরাজদন্তাদিঃ বদা উপসর্গোহন্তি ব্যাহ্রব্যং সকাদিঃ। অন্যতাহিপি চেতিভ্রবাধকোণইত্যর্থঃ। অবশ্যায়োগর্বস্তুহিনঞ্চ। আদিনেতি। ব্যবস্থাবাচ্যাদিনেত্যর্থঃ। সমার্যেঃ প্রচাহ প্রকরঃ অবেক্সভ্স্ত্রতীনামিতি পরোক্তস্ত্রং। ১১৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

আদন্তেতি। আদাকারোহন্তোয়স্ত্রসচ ব্যষ্চ শ্বন্চ ইণ্চ শ্রেড্ গতোভুআএচাং পাঠেত্যাদিনাএআশ্রাআদির্যস্ত্রসচ তত্মাৎ ণঃ স্ত্রাদিত্যর্থঃ! . দদাতীতিদায়ঃ ণঃ ইজ্দ্রাবঃ আকারান্তাদ্যঃ কর্ত্তরিঘঞ্
নস্তাদিতি ণবিধানং। ডুধাঞ্ ধারণপোষণয়োঃ দধাতীতিধায়ঃ পূর্ববৎ। বিধাতীতিব্যাধঃ শ্বনিতীতিশ্বাসঃ।
প্রশাসইতি। প্রাদাবপি বিশেষভাবাদিতি ক্রচিনাথভট্টাচার্য্য স্তন্নসপ্রাদ্যপ্রাদিতি গ্রন্থক্ত্রিথিতবিরাধাৎ তেনাত্রাস্থ্রবর্তমানাপ্রাদাবেব। প্রশাসইতিতুণান্তশ্বাসেনসহ প্রকৃষ্টশ্চামো শ্বাসশ্চেতি
সমাসাশ্রেয়ণেনসিন্ধইতি। সপ্রাদীতি সপ্রাদিঃ শ্ব্যাদিঃ অপ্রাদিঃ শ্বন্তয়োঃ সান্নিধ্যাদিশন্চ
সপ্রাদ্যপ্রাদেণইত্যর্থঃ। আদন্তশ্বাং সিদ্ধেন্তদ্গ্রহণফলমাহ্নোপদর্গতি ণেআদন্তাদ্যঃ।
অবশ্যায়স্ত্রনীহারইত্যমরঃ। আদিনেতিআদের্ব্রন্থ্যানোপদর্গাণাং গ্রহণং তেনআঙ্পৃর্বক্রন্ধরণেঅবপ্রবঃ
ক্রঞ্রনেঅবপ্রবৃত্পাবনসন্তরণয়োরেভ্যোণঃ বৃদ্ধিন্চ। ১১৬॥

বাজ্বাদি দূনীভূভাঃ। ৭ঃ স্যাং। জ্বালশ্চালশ্চলোজ্বাঃ। রমঃ রামঃ কষ্পর্য্যন্তগ্রহণং। দবং দাবঃ নয়ঃ নায়ঃ ভবঃ ভাবঃ। প্রাদৌতু প্রজ্বলঃ প্রণয়ঃ। ১১৭॥

প্রহশ্চণোবা। মকরোপ্রাহঃ সূর্য্যাদয়োপ্রহাঃ। ১১৮॥
গেহে২র্থেতৃপ্রহঃ কঃ স্যাৎ। গৃহ্বাতীতি গৃহং গৃহাঃ পৃংসিচভূমিত-স্থাদারাশ্চগৃহাঃ। ১১৯॥

क्ट थानी शिका।

বান্ধ। জ্ব্দীপ্রে চল্দীপ্রে চল্দঞ্লনে। কষ্পর্যান্তেতি আদের্ব্যবস্থা বাচিত্বাৎ কয়ুহিংসায়াৎ কিষগতি শাতনয়োরিতি কেচিৎ। টুদূঙ্ উপতাপেসাদিদ্বিদির। দিঃ অবিশেষাদ্দয়োগ্রহণং দবোদাবোবনারণ্যবস্থা। ১১৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বান্ধলেতি। ত্বল্ আদির্যোধাং জ্লাদয়ন্চ দূনীভুবন্চেতি দ্বন্ধঃ তেভাঃ বাণঃ স্থাৎ। রমইতি। রমুক্রীড়ায়াং। কদ্ পর্যান্ততি বা শব্দস্থারস্থাবাচিত্বাৎ কষ্ পর্যান্তগ্রহণমিত্যর্থঃ তেন জ্লাদিত্যাদিনা স্থান্দ ক্ষ্ এতচ্চতুর্ণাং গ্রহণং। নয়ইতি নীঞ্ প্রাপণে। ভবইতি ভূদতায়াং সর্বত্রপক্ষেণঃ পক্ষে অচ। ১১৭॥

क्र ९ अमी शिका।

গ্রহ। বাগ্রহণং স্থিত্যর্থন্ এতদেবাহ্মকরইতি। মংস্ঠাদীন্ গৃহ্লাতীতি গ্রাহঃ। কন্সচিন্মতে সামান্যজলজন্তরপি গ্রাহইতি বক্তঃ। সূর্য্যাদয়ইতি। শুভাশুভং গৃহুন্তীত্যচ্। গ্রহোহনুর্বিকিন্ধে-গ্রহণেদ্যমে। সূর্য্যাদে পৃতনাদেচ দৈংহিকেয়োপরাগয়োঃ। গ্রাহোগ্রহেহবহারেচেতি মেদিনা। ১১৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গ্রহশ্চেতি। গ্রহশ্চেত্যন্তং দূত্রং ণোবাইতি পুর্বতোহনুবর্ত্তমানং ছন্দোহর্থ মেকত্রলিখিতং। যদ্বাণগ্রহণমর্থবিশেষলাভার্যং বা গ্রহণমনুবৃত্তি বা রণার্থং তেন মকরোগ্রাহঃ নতুমনুষ্যাদিঃ। অত্যবাহ-পদেন জলজন্তুবিশেষউচ্যতে। চকারাদবহারনামাজলজন্তুক গ্রাহঃ। তথাচামরঃ গ্রাহোহবহারইতি হাঙ্গপ্রসিদ্ধিঃ। দূর্য্যাদিপক্ষেগৃহ্বন্তিরাশ্যাদিকমিতি গ্রহাঃ অচ্ গ্রহ্ উপাদানেধাতৃঃ। নির্বাদ্ধোরাগার্কাদয়োগ্রহা ইত্যমরঃ। ১১৮॥

क्र ९ अमी शिका।

গেহে। একবোগনির্দিন্টত্বেননির্ত্তের্গ হইতি। বর্ষাতপাদি দ্রব্যাণিগৃহ্লাতীতি গৃহং কে সম্প্রসারণং তম্মাইতি। তাম্বোপচারাদা হাঃ যথামঞ্চইতি। উক্তঞ্চ যন্নামাযত্র চৈত্যাদিস্তন্ধামাবিষয়োমতঃ।

রজিনৃত্যাদেঃ শিশ্পিনিষকউক্তঃ। নর্ত্তকী তথা রজকী। যিত্তাদী। রজীতি পাঠামোলুক্থনকঃ কুলালঃ। ১২০॥

গৈধাতোস্থকণনটো। গাথকঞ্ৰৎ গায়নীচ। শিম্পিনীত্যেবগাতা। ১২১॥

যশামাবিষয় শৈচব তলামাবিষয়ীমতইতি। বিষয়আশ্রয়ে পিচেত্যমরঃ। গৃহং গৃহাশ্চ পুংভূল্লিকলত্তেই-পিচ সদ্মনীতি মেদিনী। প্রায়িকস্বালাক্ষণিকস্বাচ্চগেহদারয়োরিতি ন কৃতং। ১১৯॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

গেছইতি। গেছেআগারেহর্থে। তুশক্দানারার্থেহপি। গ্রহইতি গ্রহণং গৃহগর্হণগ্রহণয়োরিত্যস্থ গ্রহণবারণার্থং। অত্যথাগেহেহুর্থে গৃহএবকঃ স্থান্নগ্রহইতি ইফাপত্তোতুগেহেহর্থেকবিধানাৎ নাম্যুপ্রম্বেদ্ধ প্রাপ্তস্থাসামান্যকস্থাবাধঃ স্থাৎ তথাসতি গৃহোনিন্দকঃ গৃহোগ্রাহকইতি প্রয়োগোনস্থাৎ। তস্থাইত্যত্ত-স্বর্ণেধুটীতি বিকল্পেন প্রাশ্ব,টোলোপঃ। তস্থাগৃহস্থাদারাভার্যাইত্যর্থে । ১১৯॥

क्ट्यमोशिका।

রজি। রজিশ্চ নৃত্যাদিশ্চ আদের্ব্যস্থা খনেগ্রহণং। যথানৃতিঃ খনিং রজিশ্চ শিল্পিনীতি বিবরণঞ্চাভিধানানট কুস্তুকাররজকেষেভ্যোব্যযিতি কালাপাঃ। শীল্ সমাধে বাস্পাদয়ইত্যোণাদিকঃ পঃ নিপাতনাদ্ধ্র শিল্পমাভ্যাসিকক্রিয়া প্রকর্ষোপপাদকং জ্ঞানমিতিজ্ঞানকোশলমিতি যাবৎ তদস্যাস্তীতীন্। শিল্পীতুবাচ্যবৎ কারাবিতি মেদিনী। কারবোরজকাদয়ঃ। নৃতীগাত্রবিনামেরন্জরাগে। গুণিস্পিষ্টি রজীতি লুপুনকারপাঠাৎ নোলুক্ কুলালঃ কুস্তুকারঃ। ১২০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

রজীতি। শিল্পিনিবাচ্যে রজিনৃত্যাদেঃ পরোহদন্তবকউক্তঃ। আদিনা খন্ অবদারণে ইত্যস্থগ্রহণং। নৃত্যতীতি নর্ত্তকী যকেগুণঃ রন্জরাগবর্ণান্তরোৎ পাদনয়োঃ রজতি রজ্যতীতিবা রজকী ষটসুবন্ধিনইত্যক্তবাৎ যনুবন্ধস্থনদাদিবাং দ্রিয়ামীপ্রত্যয়ঃ। নর্ত্তকীলাদিকেদমেইতি রজকোবস্ত্রধাবকইতিচামরঃ।
খনতীতি খনকঃ। খনকোনোন্দুরোসন্ধিচোরে ব্রিম্ববদারকেইতি মেদিনী। কুন্তকারঃ কুলালঃ
স্থাদিত্যমরঃ। ১২০॥

क्र९%मीशिका।

গৈ। অপ্রাদৌশিল্পিনিকর্ত্তরিবাচ্যে গৈধাতোস্থক্ণনটাবিত্যর্থঃ। উক্তধাতুগ্রহণহেতুরিহাপিবোধ্যঃ। গায়তীতি গাথকঃ। ঐদিতি। ইণাদৌরপং। থকইতি সম্বরনির্দেশাল্লাকারানুবন্ধতা। থকস্থনদাদিস্থং কেচিদিচ্ছস্তি তেন গাথকাগাথকীত্যপীতিভট্টঃ। ১২১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গৈধাতোরিতি। গৈশব্দে। গায়তীতি গাথকঃ এচামিত্যৈকারস্তাত্বং। ইণ্গতো ঈগতোবা দিবিভক্তো অচাং বৃদ্ধিঃ অমুবদ্ধেকারলোপেলিঙ্গবৎ প্রথমোধুটাম্ প্রৎ। গায়তীতি। ৭ নটি ইম্বন্ধাবে আকারাস্তাদ্যঃ টিস্থাদী। গাতেতি। গায়তীতি তৃচ্ ঐ আ সিবিভক্তো ঋকারআসিসহিতঃ। ১২১॥

হস্তুণনড্বৎসরব্রীহ্যোঃ। হায়নোবৎসরঃ হায়নাব্রীহয়ঃ। ১২২॥

প্রস্থাং সাধুকারিণ্যকঃ স্যাৎ। প্রবকশ্চরঃ। সাধুস্রবতি স্রবকঃ সরকঃ লবকঃ। ১২৩॥

অকঃ স্যানাশিষি। চির্থ জীবকোনন্দকঃ স্থা। নন্দকাকন্যা। *। ইতি বুণ্ত্চাদিপ্রকরণং। *। ১২৪॥

क्९ श्रमीशिका।

হস্ত। তহাক্ত্যাগে তহাঙ্গতাবিতিদ্বয়োরপি গ্রহণমবিশেষাং। পক্ষমাসাদীন্ জহাতিহায়নো-বংসরঃ কালেদ্বয়োরপি ত্যাগ এবার্থঃ। উদকং জহতে শুষ্যন্তি জিহতে গচ্ছন্তি উদকেন বিনানভবন্তীতি বাহায়নাব্রীহয়ঃ। হায়নোনস্ত্রিয়াং বর্ষেপুংস্মর্কিব্রীহিভেদয়োরিতিমেদিনী। ১২২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হস্তি। বৎসরব্রীফোর্নবাচ্যয়োঃ হস্তহাধাতোঃ পুনর্ণনট্ স্থাৎ। হায়নইতি। ণনটি ইজ্জাবে আকারাস্তাদ্যআগমঃ। টকুবন্ধাং স্ত্রিয়ামী। তথাচামরঃ দ্বিহায়নীদ্বির্ঘাগোরেকান্দাত্ত্বেকহায়নী। চতু-রন্দাচতুর্হায়ণোবং ত্রান্দাত্রিহায়ণীতি! তুশব্দ ছেন্দোহর্থঃ। রজীত্যাদি এতৎসূত্রাস্তমার্য্যাজাতিঃ।১২২॥

क्र॰ श्रमी शिका।

প্রক্রন সাধুশোভনং কর্ত্তুং শীলমন্তেতিণিন্সাধুকারিণিকর্ত্তরিবাচ্যে। স্থলরং সাধুশোভনমিত্যনরঃ। নসুসাধুকরণং শিল্পমাত্যাসিকক্রিয়াপ্রকর্ষোপ্রপাদকত্বাৎততশ্চশিল্পিনিত্যাদিপঠিতত্বেনযকেণের বকাদয়োভবন্তিতদলমারস্তেনেতি নাপিস্ত্রাপ্রত্যেবিশেগার্থমারত্যতে প্রবকাদের্ম দাদাবদর্শনেনৈর স্ত্রিয়ামা প্রত্যয়ক্ত লব্ধহান্দৈরং বকপ্রত্যয়েহিনিন্দায়ামপিদৃষ্টঃ তদিহাপিস্তাৎ অভিধানাদিহাপিভবিষ্যতীতিচেৎ তদপিন অনেককল্পনাগোরবাৎ তথাহি অনদাদিহক্পত্যেকাকল্পনানিন্দাহনীপিতার্থং প্রত্যপরেতি। বস্তুতস্ত্র সাধুকারিণঃ কলনিরপেক্ষ্যপ্রত্তিহাৎ শিল্পনাসহাত্যন্তভেদইতিবজ্ঞঃ। তুক্তপ্রতাতী সাধুযথাস্থাৎপ্রবত্ত ইতিপ্রবকঃ এবমন্যং। ক্রক্ষরণেত্গতে ল্ঞছেদনে। সাধুকারিণিকিং প্রোতাগন্তেত্যর্থঃ। ১২৩॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

প্রতি। সাধুকারিণ্যর্থে এযামকঃ স্থাদিত্যর্থঃ। যদ্যপি প্রথমাষষ্ঠ্যপাত্সস্থানেইত্যুক্তত্বাৎ ষষ্ঠীস্থানাদেশেলভাতে তথাপি দিক্কালদেশযোগেত্ব পঞ্চমাষষ্ঠ্যপীয়তে ইতিসূত্রবিহিত্যষ্ঠীপ্রয়োগস্থ নির্কিষয়াপত্তেরাগমপ্রসঙ্গাদত্রপরদেশযোগেন্টীতি মন্তব্যং। সাধুকরণ শিল্পয়োরেকার্থতাস্বীকারেহপি নষকপ্রভায়েণসিদ্ধিঃ নদাদিত্বসন্তবাদধুনাত্বজাদিত্বেন দ্রিয়ামাপ্রভায়ত্রব প্রবকাইত্যাদীতি জ্ঞাতব্যং। প্রকইত্যাদৌ অকিস্কৃত্রগুণঃ। ১২৩॥

क्र९प्रमीशिका।

অক:। আশিষিগম্যনানায়াং। ধাতুমাত্রাদিতি। পুনরকগ্রহণাদিতিভাবঃ। অস্তেদং সম্পদ্যতামিতি যাবিষয়ইফাশংসনমাশীঃ। জীব্বলপ্রাণধারণয়োঃ চিরং জীব্যাৎজীবকঃ অমুষ্যাঃ ক্রিয়ামাশ্চিরং কর্তা- কর্মণ্যণ্ স্যাৎ। হ্বাবামন্ট। কর্মণ্যপপদেধাতোরণ্ স্যাৎ কর্ত্তরি। ত্রিস্থবনকারো বেদাধ্যায়ঃ কুন্তকারঃ কুন্তং করোতীত্যাদ্যর্থকথনবাক্যং। স্ত্রিয়ামী
কুন্তকারী চ্যুর্থেঘটাকারঃ মহান্তং ঘটং করোতীত্যন্যসাপেক্ষককর্মণিনাণ্। গ্রামং
গচ্ছতি অর্বং পশ্যতি হিমবন্তং শৃণোতি চেত্যণ্ ন ভবত্যনভিধানাং। হ্বেঞ্
বেঞ্ মামান্ত মেঙাং ডাপবাদোহণ্ মল্লহ্বায়ঃ শাটীবায়ঃ মৌক্তিকমায়ঃ তণ্ডুলয়ীস্ত্রী। অথকর্মোপপদাধিকারেইণ্ বাধকপ্রত্যয়াঃ। ১২৫॥

ভবত্বিত্যর্থঃ। টুনদিনন্দকঃ নন্দকেত্যাপ্রত্যয়েনাশিধীতিনাস্তেত্বং। বুণিতি। তৃজুক্ত্যাকণৈবর্ণিতি
শাস্ত্রান্তরেব্যপদিউইতি জ্ঞাপনায়উক্তং। *। ইতিবৃণ্তৃচাদিপ্রকরণবিবরণং। *। ১২৪॥ •

গুঢপ্ৰকাশিকা।

অকইতি। টুনদিসমুদ্ধোধাতোরিদসুবন্ধাৎসরান্ধ্য স্থাং **নন্দ্যাৎনন্দকঃ** এবং নন্দকাকন্তেতি। ইতীতি। বুণিতি অকণঃ সংজ্ঞাপাণিন্যাদাবুক্তাতদসুসারেণাশ্<mark>যাভিরপি সা</mark>স্বীকৃতেতিভাবেনাহ বুণিতি। তেনাকণ্ তৃচাদিপ্রকরণমিতি সম্পূর্ণমিত্যর্থঃ। ইতিগৃ**ঢ়প্রকাশিকা**য়াং কৃৎস্ববুণ্তৃচাদিপ্রকরণবিবরণম্। *। ১২৪॥

कृष्थ्रमीशिका।

কর্ম। কর্মেহলারকং ন স্বরূপং শব্দাসংজ্ঞায়ামিতি পরিভাষণাৎ। নাপিচ কর্মান্ত্রীব্যাপ্যক্রিয়েমারিতি লৌকিকক্রিয়াবচনং যৎকর্ত্ত্ই ক্রিয়রাব্যাপ্যমিতি শান্ত্রীয়সংজ্ঞায়ান্ততোহপিবলীয়স্থাৎ।
তচ্চাবিশেষানির্ব্বর্ত্ত্যাদি ত্রিবিধমপিগ্রাহ্ম। নমুপ্রত্যয়বিহিত্বর্ত্ত্ই ক্রেয়রাবাপ্যেকুস্তাদেনিকর্মসংজ্ঞাভবতি
তচ্চাং সত্যাং বিভক্তের্ভবনং বিভক্তে বিহিতায়ামেবপদস্বাৎ তিম্মিমুপ্পদেপ্রত্যয়বিধানমিত্যভ্যোহ্যাশ্রমদোষপরাহতমিদমিতি চেৎ সত্যং পদনিষ্পত্তিহেতুষ্বাৎ ভবিষ্যৎপদাবয়বন্ধান্ত্রপিদিকমাত্রস্থাপি
পদন্ত্রান্ত্রপদ্মন্ত্রপদ্মিতি কেই সত্যং পদনিষ্পত্তিহেতুষ্বাৎ ভবিষ্যৎপদাবয়বন্ধান্ত্রপদিকমাত্রস্থাপি
পদন্ত্রান্ত্রপদ্মনিত্যর্থোঘটতএব তথাহি কুস্তাদিশক্ষাত্রকর্ত্ত্ই ক্রিয়াব্যাপ্যরূপকৃস্তাদিশ্ররূপত্তাবিনিকর্ম্মন্ত্রাকর্মানি তেব দিত্রীয়াবিধানাৎ প্রাগপি কর্ম্মন্ত্রপদাহতি ঘটতইতি প্রাঞ্চঃ।
কৃতিভাবিনিকর্মমন্ত্রাকর্মণিবিতীয়াদীয়তে তেনেশুপদন্তমনন্তরং প্রত্যয়ন্ত্রতোহপি বিশেষত্বাহ কর্মণিসন্তঃ
স্বরন্তিব্রুক্তি যদাপ্রাক্ষেমির্টামির্মানির্বার্টামির

শীলিকামিচরিভক্ষিভ্যোণঃ। পূজনশীলাবিভ্রমকামাওদনভক্ষাইনস্তাএতে। ধর্মমাচরতি ধর্মাচারারদ্ধাণান্তাদা। ১২৬॥

কারইতি ষষ্ঠ্যাবিগ্রহ এবসমাসসংজ্ঞামমুভবতীতি। নিত্যার্থো হয়মারম্ভঃ যৎপূনঃ কুম্ভং করোতীতি তদর্থকথনবাক্যমিতিভট্টঃ অয়মারস্তঃ প্রাদূর্য্যাদীত্যারস্তঃ। স্ত্রিয়ামিতি। অণ্ণ্যেক্ষিত্যনেননদান্যস্তর্গত-ম্বাদিত্যর্থঃ। চুর্থ ইতি। সামান্যতোভবন্চুর্থেহপি ভবতীত্যর্থঃ। পরেণভুচ্যুর্থেচেতিসূত্রং। অঘটং ঘটং করোতীত্যণ্চ্বিশ্চ ঘটীকারঃ নিত্যসমাসঃ সামান্ততোহণাদেক্রিধানাৎ চেুদ্ধোক্তার্থতা উপস্কুরুতইত্যাদৌ-স্থাত্মনে পদবহুক্তার্থানামিত্যস্থানবতারাদ্বা। চ্যুন্তইতি কচিৎপাঠঃ চ্যুন্তেঘটীকারঃ বহিরঙ্গানপেক্ষ-নাদিতিচন্দ্রঃ। সপ্তম্যক্তত্বেহপুপেসম্বদ্ধমাকাজ্যাদিযুক্তং পদমুপপদমিত্যম্বয়ে সত্যেবোপপদসংজ্ঞাভবতীতি দর্শয়য়াহমহান্তমিতি। অন্যাস্মিন্ মহৎপদেসাপেক্ষত্বেনাকাজ্কাবিরহাদ্যটকন্মণোনোপপদস্বমতোনাণিত্যর্থঃ। আদিভামিত্যনঅসাপেক্ষককর্মোপপদত্ত্বেহপ্যভিধানান্নাণ্ তথাচাদিত্যাদিষু দৃশ্যাদের্নাণিত্যভিধানং। ব্ৰেঞ্ইতি। ব্ৰেঞ্স্পৰ্দ্ধায়াং বেঞ্তন্তুসস্তানে নতুবাগতিবন্ধনয়োঃ অবিবক্ষিতকৰ্মত্বেনাস্ত প্ৰয়োগদৰ্শনে কর্মপদস্বাসঙ্গতেঃ। মামাঙ্ মেঙামিতি মামানেমীঞ্ ডুমিঞ্চ দীঙ্মীনাতীত্যাত্বেসারূপ্যাদিতিভট্টঃ। মামাগ্রানে মেঙ্প্রণিদানে। ডাপবাদইতি। এষামেচামাত্বেনচাদস্তব্বাৎ ডপ্রাপ্তোতদ্বাধকোহণ্ বিধীয়তে। মৌক্তিকং তণ্ডুলঞ্চমাতি মীনাতি মিনোতি মিমীতেময়তইতিবাক্যং। অথেতি। ইতঃ পরং কর্ম্বাণুপপ-দইত্যধিক্রিরতেইত্যথশব্দোহধিকারার্থঃ। অথাথোসংশয়েস্ঠাতামধিকারেচমঙ্গলে। কার্য্যারস্ত্রসমুচ্চয়েইতিমেদিনী। অণ্কথনানস্তরং তদ্বাধকাআরভ্যস্তইত্যারস্তার্থোবা। অগ্রেপ্রাপ্তিভা-গিষমধিকারঃ দচাত্রমণ্ডুকল্প ত্যাত্মকঃ বিশেষোক্ত্যনন্তরমপি প্রবর্ত্তনাৎ প্রবর্ত্তনঞ্চপমানেহন্যত্যদাদীতিসূত্রং যথোক্তং গোয়থঃ দিংহদৃষ্টি চ মণ্ডুকল্পুতিরেবচ। নদীত্রোতোহধিকার চাপ্যধিকার চতু योवए। বিৰধইতি। ১২৫॥

গৃতৃপ্রকাশিকা। কর্মাণ্যণিতি। কর্মাণ্টপপদেধাতোঃ হ্বামশ্চ অণ্স্থাদিত্যর্থঃ। বেদমধীতইতিঅণিরুদ্ধিঃ আস্বরস্থেতি ইঙআহেআকারান্তাদ্যঃ। নুকুস্তুং করোতাতিবাক্যেঅণিকথং বিভক্তিলোপঃ সূত্রাভাবাদিত্যতআহকুস্তং তথাচভবিষ্যৎ পদাবয়বত্বাৎ প্রাতিপদিকমাত্রস্থ পদত্বাদাকুস্ভোপপদেকুধাতোরণ্প্রত্যয়-ইতিভাবঃ। চ্যুর্থ ইতি। সামায়তঃ কর্ত্তরিবিধানাৎ চ্যুর্থেহপি ভবতীতিভাবঃ। নমুচ্যুর্থেহণ্প্রত্যয়েক-থমবর্ণস্য ঈচ্চেবিধানাৎ দত্যম্মবর্ণক্রম্বয়োরীদীর্ঘাবিত্যুক্তেইপি দিদ্ধেচ্বাবিতিগ্রহণং চুর্থেইপিতৎ প্রাপ্তার্থং। আকাঞ্জাদিযুক্তপদমেবোপপদমিতি মহান্তং ঘটং করোতীত্যাদোনাণ্ উপপদত্বাভাবাৎ। শৃণোতীতি। শাব্দবোধবিষয়ং করোতীত্যর্থঃ। অনভিধানাৎ শিক্টানামকথনাদিত্যর্থঃ। স্ত্রীনামছন্দঃ। ১২৫॥

क्ट श्रिनीशिका।

কর্ম্মণুপেপদেএভ্যোষ্ণুবাধকোণঃ স্থাব। শীল্সমাধোকমুকাস্থোপুজনং শীলয়তীতিণঃ ইল্লোপঃ এবং কমিভিক্ষোঃ। ইনস্তাইতি। শীলিভক্ষীচুরাদীনন্তো কমের্ডিন্ চরেরাঙ্পুর্বাদিধানাৎ অণৈবদিদ্ধেণবিধানমাপ্রত্যয়ার্থম্ অণিসতিনদাদিত্বাদীপ্রত্যয়ঃ স্থাৎ অতএবস্ত্রিয়াং ধর্মমাচরতীতি দর্শিতাক্মদাহরণানিচ। ১২৬॥

হরতেরজনুৎক্ষেপণবয়সোঃ। অনৃদ্ধ নয়নক্রিয়াকালকৃতশরীরাবস্থাবিশে-বোবয়ঃ তৎসম্ভাবনায়াৎ হ্বঞোহচ্। যথা বাতহরং তৈলং তথা শ্লেম্বছরং মধু। অংশহরোদায়াদঃ। বয়সিকবচহরঃ ক্ষল্রিয়কুমারঃ অস্থিহরঃ খা অন্য-ত্রভারহারঃ। ১২৭॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

শীলীতি। পৃজ্পূজায়াং চুরাদিয়াৎসার্থে ইন্পূজিতিঃ পূজনং ভাবেহনট্পূজনং শীলয়তি সমাধত্তেক-রোতীতিযাবৎ ণপ্রতায়েস্রিয়ামজাদিয়াদা কমের্ডিনসার্থে ইনির্দ্ধিঃ বিভ্রমঃ কাময়তইতিওদনং ভক্তং ভক্ষ্ অদনেভক্ষয়তীতিণঃ এতেশীলিকমিভক্ষাইনস্তাইতার্থঃ তিনন্তয়েপীনস্তয়াদিতিভাবঃ। চরিস্তমইনস্তঃ। ১২৬॥

क्र ९ अमी शिका।

হর। কর্মণুপেপদেঅকুৎক্ষেপণবয়সোর্গাসানয়োঃ। সূতার্থং বিরুণোতিঅনুর্দ্ধেতি। উৎক্ষে-পণমূদ্ধীকরণং তদভাদসুৎক্ষেপণঞ্চাদোক্রিয়াচেতি সাক্রিয়েতিউদ্ধীকরণভিন্নযাবৎক্রিয়াগ্রহণং নভূৎ-ক্ষেপণান্যস্থাবক্ষেপণাত্মকস্ম তেনহি ভূমিস্থো২স্কুশেনপুষ্পং হরতীত্যাদাবেবস্থাদিতি। তদ্যথাউৎক্ষে-পণং ততোহ্বক্ষেপ্রণমাকুঞ্চনন্তথা। প্রদারণঞ্গমনং কর্মাণ্যেতানিপঞ্চেতি। বয়োহর্থং ব্যাচফেকা-কালেনকুত*চামেশরীরাবস্থাবিশেষ*চতি বিশেষপদেনবয়ঃসন্ধিরপ্যভিমতঃ যদ্বা অবস্থাচ বিশেষশ্চেতিছাল্ফেকবদ্তাবেদমাদান্তবিধেরনিত্যত্বাৎ পুংস্ত্রং যুক্তপদলোপীদমাদোবা তৎসন্তাবনায়াং তয়োরসুৎক্ষেপণবয়দোঃ কল্পনায়াং কালেনকৃতইত্যুভয়থাকালস্থকারণত্বং তথাহি যন্মতেএববিশ্বং স্জতিস্থাপয়তিসংহরতিতত্রমুখ্যত্বং যেষাং মতেদ্রব্যগুণকর্মাদয়ঃ কারণং তেষাং সামগ্রীপ্রবিষ্টত্বাৎ কালোগোণঃ। যথাচোক্তং কপিলঃ প্রধানপুরুষৌদ্রব্যাদীন্ কণভূগস্থকালঃ কারণমেকেপ্রধানমপরেজ-গুরিতি। দ্রব্যাদিষট্পদার্থান্ কণান্ ভুক্তবানিতিকণভূক্কাশ্যপঃ। তথাচকাপোতীং বৃত্তিমাঞ্রিত্যকণানাং ভক্ষণাদয়ং। কাশ্যপাথ্যোমুনিশ্রেষ্ঠঃকণাদো২প্যভিধীয়তইতি। অবস্থাচপঞ্চযথা সম্পুর্ণপঞ্চবর্ষপর্য্যন্তং বাল্যং তছুপরিপঞ্চশবর্ষপর্যন্তং কৌমারং তছুপরিসগুতিবর্ষপর্য্যন্তং বোবনং সপ্তভূুদ্ধং বাদ্ধক্যং নব-আসামন্তরালোবয়ঃসন্ধিরিতি। অনাদিনিধনঃ কালোরুদ্রঃ সঙ্কর্ষণাত্মকঃ। ত্যুদ্ধং দশম্যবস্থাইতি। কলনাৎ দৰ্ব্যভূতানাং কালইত্যভিধীয়তে। প্রাণাদ্যধিষ্ঠানং শরীরমিহগ্রাহুং নপ্রাণিগাত্রং তত্ততত্ত্ব্য-ভিচারাৎ। শরীরং তাবদিষ্টার্থব্যবচ্ছিন্নাপদাবলীত্যোপচারিকং। অবস্থাআকৃতিবিশেষঃ। কালকুতে-ত্যনেনভূষণহারাদিরোগশোকাদিকৃতশরীরাবস্থাব্যবচ্ছিদ্যতে শরীরইত্যনেন কালকৃতগৃহাদ্যবস্থাব্যবচ্ছি-দ্যতেঅবস্থেত্যনেনছত্রহারাদিব্যবচ্ছেদঃ। কালকৃতশরীরাবস্থাবাল্যাদিরেবভবতি কবচহ্রাস্থিহরাদয়োব-য়োবাচিশব্দাএববয়ঃ প্রতিপাদনপরস্বাৎ এতচ্চোৎক্ষেপনার্থমুপন্যস্তমন্যথা বয়োগ্রহণবৈফল্যাৎ। তথাহিঅমুৎ-ক্ষেপণেগম্যমানেচভবতীতি তত্ত্ৰৈবযদিবয়োগম্যতেতদাপিভবতীৰ্ত্তিবয়ঃপ্ৰতিপত্তিস্তুক্ৰিয়মাণেনসম্ভাব্যমানেন বোৎক্ষেপণেনৈবকবচং হরতীতি ক্বচহরঃ যথা এতাবদস্থক জিয়কু মারস্থবয়ো ২ ছুৎ কবচং যাবছুৎক্ষিপ্যতীতি এবমস্থিহরইত্যস্থাপ্যর্থঃ ক**ল্ল**নীয়ঃ। তর্হিভারহারইত্যত্তকুতোবয়োহপ্রতি-

তাচ্ছীল্যার্থেত্বাস্থঞঃ স্যাৎ। পুশাহরঃ ফলাহরা। উদর্কফলনিরপেক্ষা রতিস্তাচ্ছাল্যং। অন্যত্তভারাস্থারঃ। ১২৮॥

পাদকত্বং দৃতত্তরবলাভ্যাসত্বেভারোৎক্ষেপবহনেকারণেতেচবয়সিযোবনএবভবতইতি চেতুচ্যতে ভারবহ্ ইত্যুক্তেদৃতত্তরবলাভ্যাসত্বে এব প্রতীয়েতেতাভ্যামেবয়োবনং লক্ষ্যতেইতি পরম্পরয়াবয়ঃ প্রতীতেশ্বা ত্রাবিধিঃ কবচহরণাস্থিহরণেপূনস্তথাবিধবয়ঃপ্রতীত্যৈবভবতইতি তত্রবিধির্ভবত্যেবতি। কশ্চিদেবং যোজয়তিদৃতত্রস্থায়ুনোভারহরণে যথা তথা ক্ষত্রিয়কুমারস্থাকবচহরণেবয়োজিজ্ঞাসাস্ত্যেবনহি কিন্তু যথা-কথঞ্চিন্তারহরোব্যার্ভৌদর্শিতইতি। অধীত্যবেদং নৃবিবেদযোহর্থমিতিবাক্যে বেদহরণস্থাবয়োহপ্রতি-পাদনাদণেবেতিবজ্ঞঃ। বয়োবচনগ্রহণমুশ্বয়ার্থমিতি চল্রোহপি। যথেত্যুদাহরতিবাতং হরতিউপশময়-তিপ্রেম্বানং হরতিনাশয়তি। অভিধানাৎ বাক্যহরঃ স্থাৎসন্দেশহরোদ্তইতি। অন্যত্রবার্তাহারো বাক্যহারোনিয়মইতিপ্রাঞ্চঃ। ১২৭॥

गृष्प्रकाणिका।

হরতেরিতি। অনুৎক্ষেপণবয়সোর্গম্যয়োঃ হ্রঞ্হরণেইত্যস্থাৎ। অনুৎক্ষেপণমন্ধ্নিয়নিক্রিন্দার্ককল কালক্তশরীরাবস্থাবিশেষোরঃ তৎসম্ভাবনায়াং তয়োঃ কল্পনায়াং। বাতোরোগবিশেষঃ শ্লেম্পক্ষঃ অংশোভাগঃ। দায়াদৌহতরান্ধবাবিত্যময়ঃ। এয়নুৎক্ষেপণেইচ্। কবচং শরীরাচ্ছাদকং যুদ্ধকালীনমঙ্গরুং বর্ম শাকুক্রঃ যৌবনকালেকবচধারণ অন্থিহরণাৎ বয়োগম্যতে। অন্যত্তানুৎক্ষেপণবয়সোর্লতত্ত্বান্তানি বিত্তান্ত্রান্ত্রপাপিবয়সঃ প্রতীতিস্তথাপিপরম্পরয়ানসাক্ষাদিতি নাত্রণংকিস্তর্ত্রণেব। শীলীত্যাদিএতৎস্ত্রান্তপাদাকুলকং ছল্কঃ। তত্তুক্তং রন্তরত্বাকরে। যদতীতক্রতবিবিধল ক্ষায়তির্স্মাত্রাসমাদিপদৈঃ কলিতং। অনিয়তর্ত্রপরিমাণসহিতং প্রথিতং জগৎস্পাদাকুলকমিতি। অতীতানাং মাত্রাসমাদীনাং ক্রতানি বিবিধানি যানি লক্ষাণি লক্ষণানি তৈর্যুত্তিঃ মাত্রাসমাদিপাদৈঃ কলিতং গণিতং যৎ অনিয়তং বৃত্তং রতলক্ষণং যত্রতচ্চতৎপরিমাণসহিতং যোড়শমাত্রাপরিমাণসহিতক্ষেতি তত্ত্বন্থ পাদাকুলকংনামজগৎস্থ্রপ্রতিং থাতমিত্যর্থঃ। অত্র এতইত্যন্তপ্রতীয়ঃ পাদঃ। ১২৭॥

क्र श्रमी शिका।

তাচ্ছী। সধান্বর্থঃ শীলং স্বভাবোযস্থতস্থভাবস্তাচ্ছীল্যং তিমান্গম্যমানে আঙ্কঞোহচ্সাৎকর্ম্বগৃপপ্রদান । নচানুৎক্ষেপণবয়ঃ প্রতীতিঃ সামান্সেনবিধানাৎ অতিপূর্ব্বেতাচ্ছীল্যেইপিপূর্ব্বেণসিদ্ধাবারস্তবৈক্ষাবা। পুশাদীনিআহরতি কেবলমুপচিনোতিনতৃত্রফলাপেক্ষেত্যথোঁ। তাচ্ছীল্যার্থমাইউদর্কেতি। উদর্কঃ ফলমুত্রমিত্যমরঃ। ফলং হেভুক্তেশস্থেইতিমেদিনী। উদর্কফলেউদ্দেশ্যেফলইতিযাবং। ননুদ্দেশ্যফলানপেক্ষণেকথমর্থকথনবাক্যে আহরতীতিবর্ত্তমানাতদনুকূলব্যাপারাবচ্ছিন্নস্থ বর্ত্তমানন্থাৎ সত্যং তত্রহিফলপদেনধাত্বর্থতাবচ্ছেদকক্ষলমিতিশ্বীকৃতং হরতোভূপচয়ীকরণরপং তদস্যান্তীতিবর্ত্তমানাইহোদর্কক্ষমুপচয়ীকরণাৎ পরমীশ্বরার্পণাদ্যভিপ্রেতং নাস্তীতিবিধিঃ। ভারহারইতি। অত্যোদর্কফলং বহনমূল্যং তৎপ্রাপ্তীতিনাচ। ১২৮॥

অহতেশ্চ। অচ্। যথা সাধুমানাহাব্রাহ্মণস্তিয়ঃ। ১২৯॥

দশুসূত্রাদৃতেশস্ত্রেষ্বশস্ত্রেষ্ক চিদ্ধ এঞা। অচ্। ধৃঞ্ধরণে অর্চাদিত্বাদ্ধেন্বজ্রং ধরতীতিবজ্রধরঃ ধারয়তীতিবাবাক্যে অন্যত্রচক চিদিতি হ্রস্কঃ শক্তিধরঃ দশুসূত্রত্যাগ্যাৎদশুধারঃ সূত্রধারী। অশস্ত্রোপপদাৎ গঙ্গাধরঃ ভূধরঃ কচিদণ্ভূলাধারঃ কর্ণধারঃ ক্ষেমধারঃ। ১৩০॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

তাচ্ছীল্যার্থ ইতি। অভিপূর্বক্ষঞস্ত্রপুনঃ তাচ্ছীল্যার্থেহ্চ্ম্যাদিত্যর্থঃ। পুষ্পাণ্যাহরতি উপচি-নোতীতি নাত্রউত্তরকালীনফলাপেক্ষয়াপ্রবৃত্তিরিত্যচ্। তাচ্ছীল্যার্থমাহউদর্কেতি। উদর্কমুত্তরঞ্চত্ত্ব ফলঞ্চেতিতত্রনিরপেক্ষার্রতিঃ প্রবৃত্তিরিত্যর্থঃ। অহ্যত্রতাচ্ছীল্যার্থাদহ্যত্রভারহারইতি। অত্রবহ্নমূল্য-প্রাপ্তিরপোত্তরফলেহপেক্ষাস্তীতিনাচ্মণেব। তুশকঃ পরত্রতাচ্ছীল্যার্থানুর্ত্তিবারকঃ। ২২৮॥

क् श्रमीशिका।

আর্ছ। আর্থ্য পূজায়াং সাধূনাং মানমর্ন্তীত্যচিআপ্রত্যয়ঃ ভূতেইপ্যণিউপধোপধারাদীর্ঘোনভবি-ষ্যতীত্যচ্প্রতায়ার্থোইয়মারস্তঃ। তাচ্ছীল্যহ্নঞোর্মানুবর্তনং বিশেষাদিকীরাৎ অবধারণার্থচকারাদ্বা। ১২৯ 🛭

गृष् अकामिका।

অহঁতেশ্চেতি। চকারেণঅচ্মযুদ্ধীয়তে। অহঁতেশ্চপরঃ কর্ত্তরিঅচ্ম্যাদিত্যর্থঃ। মাধুমানাহাঁইতি। অত্তপুণ্যপ্রতিষ্ঠাপ্রাপ্তিরূপোদর্কফলে২পেক্ষাস্তাতিনতাচ্ছীল্যার্থঘটনং। ১২৯॥

क्ल्थामीशिका।

দণ্ড। দণ্ডশ্চসূত্রঞেতিদ্বন্দঃ দণ্ডসূত্রভিন্নেযুশস্ত্রেয়ু কচিদশস্ত্রেয়ুপপদেযুমধ্যেইপ্যনয়ে কপপদত্বযুক্তং যদ্যপিদূত্রপ্রতিষেধেনাশস্ত্রেম্বিতিলভ্যতে তথাপি জ্ঞাপকবিধেরনিত্যস্বাস্থ্যক্তং। বজ্ধরইন্দ্রঃ। ইন্পক্ষেইল্লোপঃ ধূঞইত্যক্তহপ্যেকদেশবিক্ততিভিন্যায়াদিনন্তগ্রহণমিত্যাহধারয়তীতি। অন্যত্রচক্চিদিত্য নেনহ্রস্কঃ। নর্ব্যত্রাসমাসেইতিতত্রবিবরণাৎ আঈপ্রত্যয়য়ে স্থিবিধানাচ্চকথং তেনাত্রস্ত্রতিনাশক্ত-নীয়ম্ অন্তশব্দশ্ত পুনরিকীর্থকাৎ অন্তত্তালিঙ্গেহ্সমাদেহনাঈপ্রত্যয়য়োরিত্যর্থঃ। যতুক্তং তত্রাসমাসে ইতিতৎপ্রকৃতাভিপ্রায়েণযথাসিদ্ধশব্দোপন্যাসাৎ পূর্ব্বপদান্তলোপইত্যুক্তাতিতবঃ তিতবেইমোশকক্ষাদী ইভ্যুক্তম্ অন্যথাস্বোক্তবিরোধএব। দণ্ডধারইতি। কর্ম্মগ্রণকালোদণ্ডধরইতি পচাদ্যচ্বাধকবাধকত্বাৎ শাসনার্থদণ্ডশব্দাঘাযদ্বাধারণকর্ম্মসম্বন্ধাৎ অন্মত্রচেতিহ্রস্বাদাসিদ্ধং। দণ্ডধারঃ পুমান্পৃথীনাথেপ্রেভাধি পেপিচেতিমেদিনী। গঙ্গাধরোমহেশঃ ভূধরঃ পর্বতঃ তুলাধারোবণিক্। তুলাধারস্তলারাশোপুংদিবাণিজ কেষুচেতিমেদিনী। কর্ণধারস্তনাবিকইত্যমরঃ। ক্ষেমধারোহরিঃ। ১৩০॥

দণ্ডাঙ্কু শধনুর্য্যন্তিংসকতোমরলাঙ্কুলে। ঘটঘট্যোশ্চপ্রহের্যা। অচ্ দণ্ডাদিনবকোপপদে। দণ্ডগ্রাহোইঙ্কু শগ্রহঃ। ধনুর্গু হইত্যাদি। ঘটগ্রহঃ ঘটাগ্রাহঃ সূত্রগ্রহইতি পচাদ্যচ্ তংপ্রপঞ্চত্তাদ্যা। স্তম্বেরমোহস্তিনিদ্যাৎকর্বেজ্ঞপস্তু সূচকইতিচ সপ্তম্যলুক্। শঙ্করঃ। শঙ্করাপরিব্রাজিকেতিসংজ্ঞায়াং। ১৩১।

গৃতপ্রকাশিকা।

দণ্ডেতি। দণ্ডসূত্রভিয়েষ্শস্ত্রবাচকেষ্উপপদেষুক্ষ চিদশস্ত্রেষ্পপদেষুধ্যঞোষ্চ্কর্তরি। অর্চাদয়স্থাধ্বাদেতিবেন্ তেন বজং ধরতিধারয়তীতিবাঅচ্ইনন্তবাক্যেঅক্সত্রচকচিদিতিব্রস্থা। ইল্লোপঃ। বজ্রধরইল্রঃ, শক্তিধরঃ কার্ত্তিকেয়ঃ দণ্ডধারোযমঃ রাজাবা। সূত্রধারীতি। সূত্রং ধরতীতিকশ্মণ্যণ্স্রিয়ামী
প্রত্যয়ঃ। গঙ্গাধরোহন্ধকরিপুঃ ক্রত্থ্বংসীর্ষধ্বজইত্যমরঃ। তুলামাপনপাত্রং তাং ধরতীতিঅণ্ইজ্বর্দ্ধিঃ।
কর্ণঃ নৌকায়াঃ কাণ্ডারইতিখ্যাতঃ। ক্ষেমং কল্যাণং ধরতিধারয়তীতিবাক্ষেমধারঃ। ১৩০॥

क्ल्भूमीिशका।

দণ্ড। দণ্ডাদীনাং কাপিসংহতি শঙ্কয়াহ্ নবকেতি। এতেন ঘটঘট্যার্বিধিসূত্রাদাবসুক্তত্বেহপুপেপদন্তমিত্যুক্তং সংজ্ঞাস্ত্রে। বস্তুতঃ কর্মোপপদাধিকারান্তথাক্তং। লিঙ্গগ্রহণেন লিঙ্গবিশিষ্টপানিত্যক্তাহ দণ্ডাদ্যগ্রহণাদ্বাঘটাগ্রহঃ। অল্লোঘটোঘটা। দণ্ডং গৃহ্লাতীতি দণ্ডগ্রাহঃ। যষ্টির্দিণ্ডাস্ত্রয়োঃ ৎসকঃ খড়গাদিয়ুষ্টিঃ তোমরোহস্ত্রভেদঃ। সূত্রগ্রহইতি। কর্মোপপদেহপি নাণ্ কিন্তু পচাদ্যচ্ বাধকবাধকত্ত্বাদিতিভাবঃ নিত্যসমাসস্থভিধানাহ। নম্বেং দণ্ডগ্রহাদিসিদ্ধাবলং সূত্রেণেত্যক্রচেরাহ তহপ্রপঞ্চাদিতি। স্ত্রপ্রাক্তহেপঞ্চামতেশিবঃ। তথাচ অথস্ত্রমিদং কিমর্থং ধনুপ্রহাদিম্বণ্বাধকং তচ্চপচাদিয়াকতি হৈহে বিদ্ধেন্ত্রমান হইতিবিগ্রহেধনুপ্রহাদিসিদ্ধাবিতিনৈবম্ আদাবুপপদসম্বদ্ধবিকক্ষমাপ্যচ্ স্থাদিত্যভদর্থণ প্রপঞ্চার্থদ্বিতপঞ্জিকা। প্রপঞ্চার্থমূহনক্রেশনিরাসার্থমিতিবক্তঃ। এবং পরত্রাপি। স্থান্তর্ভালি চকারাহস্তম্বভাদি গুচ্ছেস্চকঃ খলঃ অনয়োর্জ্লাদিয়াধ্বাধঃ অচ্ সিদ্ধানানান্দিত্যং তহপুরুষঃ উপপদসমাদোবাকর্মপদাধিকারেমপ্তম্যন্তলাভন্তরমেরকর্মকন্থাহ কর্ণপ্রচজ্ঞপকর্মাযোগাহ সপ্তম্যন্ত্র্লিতি। সপ্তম্যনুক্রদন্তেম্বিতিশেষঃ। শঙ্করইতি। শংকল্যাণং করোতীতি জাণ্যধাহ্ব শঙ্করোরুক্তঃ। শঙ্করেতি। হেতুতাচ্ছীদ্যানুকুলেম্বিতিটবাধকোহ্ব পরিব্রাজিকাসন্ধ্যানিনী এবং সম্ববঃ সম্বদঃ। সমিকুভুবদামিতিকাতন্ত্র। ১৩১॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

দণ্ডাঙ্গুশেতি। লাঙ্গলোহলং। অস্নোঘটোঘটীঅল্লাখ্যায়াং মৃণাল্যাদেঃ কচিদিতীপ্রত্যয়ঃ। দণ্ডাদিনবকোপপদেগ্রহ উপাদানে ইত্যমাদ্বাহচ্ স্থাদিত্যর্থঃ। দণ্ডগ্রাহইত্যাদি। দণ্ডং গৃহ্লাতীতি কর্মণ্যণ্ অচোবিকল্পক্ষে। অঙ্কশগ্রহইতিবা অচ্। অঙ্কুশোহস্ত্রীশৃণিদ্ধ্যোরিত্যমরঃ। এবমন্থতা। আদিনাযন্তি গ্রহঃ ৎসক্রগ্রহঃ তোমরগ্রহঃ লাঙ্গলগ্রহইত্যেষাং গ্রহণং। সূত্রগ্রহইতি সূত্রোপপদেপচাদ্যচ্যুপপদস্মাসঃ রুতপদ্বাৎ। নমুক্তঃ পচাদিত্বনাচ্ ইত্যতআহ তৎপ্রপঞ্জাৎ পচাদিবিস্তর্মাদস্থ

অধিকরণেশেতেরচ্। খশয়ঃ সিন্ধুশায়োবিলেশয়শ্চ। ১৩২॥ প্রথমান্তোত্তানাদাবিপি পার্শ্বাদোভূত্তীয়ান্তে। উত্তানং শেতে উত্তানশয়ঃ উদ্ধাশাস্ত্রীপাশ্বেনশেতে পার্শয়ঃ চন্দনাদিনাদিশ্বেন সহশেতেদিশ্ব সহ-শয়ঃ। ১৩৩॥

সূত্রস্থেত্যর্থঃ। নদ্বেবং সূত্রমিদং ব্যর্থং পচাদিস্বেনাচ্সিদ্ধেরিতি ন তথাসতি নিত্যমণ্বাধাপত্তঃ পচাদ্য-চোবাধকবাধকত্বাৎ তথাচ বিকল্পাচ্ প্রত্যয়ার্থং সূত্রমিদমিতিজ্ঞেয়ং। অপরানপি পচাদ্যজন্তপ্রয়োগানাহ-স্তম্বেরমইত্যাদি। শংকল্যাণার্থমব্যয়ং। শঙ্করাইত্যস্থপরিব্রাজিকেতিবিশেয়ঃ। সংজ্ঞায়াং পরিব্রাজি-কানামনীত্যর্থঃ। ১৩১॥

क् थमीशिका।

অধি। কর্মোপপদাধিকারাদধিপূর্বশীঙোগ্রহণং স্থাদিত্যধিকরণইত্যুক্তং। নিত্যসমাসার্থোহয়-মারস্তঃ অন্তথাপচাদ্যচাসিদ্ধিঃ। থেআকাশেশেতইতি খশয়োবায়ুঃ স্থিতিবাচীশীঙত্র সিন্ধুশয়োবিষ্ণুঃ বিলেগর্ত্তেশেতইতিবিলেশয়ঃ সর্পঃ সপ্তম্যলুগ্নেতি সপ্তম্যলুক্। ১৩২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অধীতি। অধিকরণে উপপদে শীঙ্ স্বপ্নেইত্যম্মাদচ্। সিন্ধোসমুদ্রেশেতইতি সিন্ধুশয়ঃ। বিলে-শয়স্ত পুল্লিঙ্গোম্বিকেচ ভুজঙ্গমেইতিমেদিনী। ১৩২॥

क्र ९ अमी शिका।

প্রথ। পার্শাদেরতথাত্বেপুণেপদতাত্বীজমুক্তং তৎসংজ্ঞাসূত্রে। সুক্রমধোমুখং স্থান্তু উত্তানং তদ্বিপর্য্যয়ে। উত্তানউদ্ধ মুখঃ শেতইতিতথা। সাহিত্যার্থভানতয়া সহোহপিতৃতীয়ান্তঃ দিশ্ধপূর্ব্বসহ্পার্শ্বাদিঃ যদিসহশব্দঃ সহিত্যর্থঃ দিশ্ধসহিতোহিকর্ত্তেতি প্রথমান্ত উচ্যতে তথাপি শব্দাৎসিদ্ধিঃ। দিশ্ধসহপূর্ব্বাচেতিকালাপঃ। দিশ্ধশয়ইত্যপপাঠঃ. যদিবহুতরপুস্তকেইস্তিত্বাপ্রাদিশ্বাদিশ্বাদ সহলোপঃ অর্থকথনার্থস্থা। দিশ্ধোবিরক্তেবিশিথেলোপস্নেহপ্রবন্ধয়োরিত্যজয়ঃ। ১৩৩॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

প্রথমান্তবিতি। অপিনাহচ্ সমুক্ষীয়তে। প্রথমান্তোতানাদাবৃপপদেতৃতীয়ান্তপার্শাদেভিপ-পদে শেতেরচ্। উদ্ধাসতীশেতে উদ্ধাশয়া চন্দনাদিনা দিগ্নেনাকুলিপ্তেন সহসহিতেন শেতইতি অচ্। যদিপ্রথমান্তঃ সহতদেযাগাতৃতীয়াতদাতুশব্দাৎসহশব্দব্যবধানেহিপ তৃতীয়ান্তে উপপদেশেতেরচ্। অধিকরণেইত্যাদি এতৎসূত্রান্তমার্গাতিঃ। বিলেশয়শ্চেত্যন্তোদ্বিতীয়ঃ পাদঃ। ১৩৩ ॥

নামপূর্বাচ্চরফীঃ স্যাৎ। থেচর্যাস্মুচরাদয়ঃ। বনেচরঃ ভিক্ষাংচরতি ভিক্ষা-চরীআদায়েন চরতীতি আদায়চরঃ। ১৩৪॥

পুরো>এতোত্রেয়্ সর্ত্তেঃ। টিঃস্যাৎ পুরঃসরো>এতঃ সরী। অত্রেসরঃ অএসরঃ। ১৩৫॥

কর্ল্ প্র্র্ব্তাচ্চ। সর্ভেষ্টঃ স্যাৎ। অধাৎপূর্বসরীয়গী। কর্লু প্রেতিকিং পূর্বং সরতি পূর্বসারঃ। ১৩৬॥

क्रथमीशिका।

'নাম। স্থবন্তংনাম। টগ্রহণমীপ্রত্যয়ার্থং। থেচরীতি সপ্তম্যলুক্। আদানমাদায়ঃ আদায়েন গ্রহণেনচরতীত্যর্থঃ যবা স্থবন্তমাদায়েত্যকুকারঃ আদায়গৃহীয়াচরতীত্যর্থঃ। ১৩৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নামেতি। স্বস্তংনাম নামোপদেকর্ত্তরি। চর্গতিভক্ষণয়োঃ থে আকাশেচরতি গচ্ছতীতি টঃ টিব্রাদী অন্থুনি অন্থুনাচরতীতি অন্থুচরঃ। বনেচরইতি। নান্ধিচেতি সপ্তম্যলুক্। শ্রিয়ঃ কুরূণামধিপস্ত পালনীং প্রজাস্তর্ত্তিং যমযুঙ্কুবেদিছুং। স্বর্ণশিঙ্গীবিদিতঃ স্মায্যো যুধিষ্ঠিরং দৈতবনেবনেচরঃ। ইতিভারবিঃ। ১৩৪॥

क्र ध्यमी शिका।

পুরো। পুরোহগ্রইত্যব্যাং। স্থাৎপুরং পুরতোহগ্রইত্যমরং। পূর্বাপরয়োং কর্মপ্রত্তং পুরোহগ্রেক্টাত পুরংদরং। পুরাদরশক্ষেপদেষু দর্ভেঃ টঃ। পুরোহগ্রেদরতীতি পুরংদরং। পুরংদরশক্ষেপপদেষু দর্ভেঃ টঃ। পুরোহগ্রেদরতীতি পুরংদরং। পুরংদরশক্ষেপপানমুচ্যতেইতিবক্রং। অথতইত্যাদ্যাদিস্বাত্ত্ব। অথ্যেদরইতি। অথ্যোহগ্রদাদরতীতিবাক্যেনিপাতনাদেস্বং দপ্তম্বুধা। ১০৫॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

পুরইতি। সংগতে পাতুনির্দেশে শতিপ্ছন্দোহনুরোধান্নান্বিকরণঃ। উণাদিকস্তির্বা। অগ্রেসর-ইতি। সপ্তমালুথাকুদন্তেবিত্যাদিনারা সপ্তমালুক্ বা সপ্তমালুক্ অগ্রসরঃ। পুরোগাগ্রেসরপ্রপ্তাত্ত-সরঃপুরঃ সরাইত্যমরঃ। ১৩৫॥

क्र ९ अमी शिका।

কত্র। কর্ত্তা অর্থোয়স্থ সচাসোপুর্বশেচতি তেন যুক্তইতিবিগ্রহাঃ। কর্ত্রবাচকপুর্বশব্দযুক্তাচচ সর্বেট্ট টঃস্থাদিত্যর্থঃ। পুর্ববাঢ্যমুপপদং কিমুম্বরং পুর্বমিতি কৈমুতিকন্যায়াতুপপদত্বং যদ্বা সূত্রস্থানুকরণ-পূর্বেশব্দনাত্য দ্বাদ্যুকার্য্যকত্র র্থপর্ত্তিপূর্বশব্দন্ততত্ত্বং। কেচিত্রবিকল্পসমাসমত্রাহ্ণঃ। পূর্ব্বাদিশব্দন্তিত্বন্দ্রনাত্র বিকল্পসমাসমত্রাহ্ণঃ। পূর্বাদিশব্দন্তিত্বনামর্বাদ্যবিহতিঃ। অশ্বাৎপূর্বাপ্রবিশ্বাদরতীতিটঃ উপপদসমাসেমর্ব্বনাম-তৈরইতি পুরব্ধে। পূর্বশব্দনাত্ত পূর্ববৃদ্ধিত ভণ্যতে। ১৩৬॥

আদ্যাদিপূর্বকাৎ কঞ্চীঃস্যাৎ। আদিকরাদয়ঃ। অন্তকরঃ অন্তকরী।
আদ্যন্তানন্তকিং কর্মবহুবাহুলিপির্লিবিঃ। দিবানিশাপ্রভার্থান্চ চিত্রনান্দী
ধনুর্বলিঃ। সঙ্খ্যাশকাস্ত্যদাদ্যাশ্চভক্তিক্ষেত্রায়ুধাদয়ঃ। দিবাদ্যর্থাৎ অহস্করঃ
যামিনীকরঃ সংখ্যাকরঃ এককরঃ দিকরঃ তৎকরঃ ইদঙ্করী আদিনা অক্ষরঃ
কারকরঃ প্রীতিকরীত্যাদয়ঃ। কিংযত্তত্বপ্রপাদাৎ স্ক্রিয়ামাত্বং তেন কিন্ধবৈত্যাদ্যপ্যাহুঃ। ১৩৭॥

গृष्धंकाणिका।

কত্র্বিতি। কর্ত্বাচকপূর্ব্ব উপপদযুক্তাচ্চসর্ত্তেফী: ভালিত্যর্থঃ। চকারঃসর্ত্তেইত্যস্তসমুচ্চায়কঃ। অশ্বাৎপূর্ব্বাসতীসরতীতি তথা অত্র কর্ত্বাচকপূর্ব্বশব্দশ্য উপপদতয়াযোগাৎ টেনিত্যসমাসঃ। পূর্ব্ব-মিতি। পূর্বাং যথাস্থাত্তথা মুরতি যদ্বা পূর্বাং দেশং সরতীতিনটঃ। কিন্তুণ্ ইজ্বৎ রৃদ্ধিন্দ। ১৩৬॥

क्र ९ अमी शिका।

আদ্যা। আদিরাদির্যোষাং তেপুর্বেষয় তম্মাৎ। আদ্যাদিকর্মাকর্মপুর্বেকাদিতিপ্রাঞ্চঃ। অবি-শেষেণকর্মাধিকারাৎপুনন্ট গ্রহণাদাদ্যাদিকর্ম পূর্ব্বকাদিতিনব্যাঃ। আদিংকরোতীত্যাদিকরঃ অন্তকরী। কেচাদ্যাদয়ইত্যাহ আদ্যন্তেতি। ন অন্তোঅনন্তঃ। যদ্যপিনঅন্তকরোহনন্তকরইতি তদন্তস্থেতি ন্যায়াদাদিদ্ধতি কিমনেনেতিনোচার্য্য অনন্তেকর্মণি অণোডুর্মিবারাৎ আদ্যাদিয় তদন্তগ্রহণা কিম্শব্দ ঈষদর্থঃ যথা কিঙ্করঃ প্রেষ্যঃ জিজ্ঞাসার্থস্মত্যদাদিত্বেনগ্রহণং। কর্ম্মেতিশব্দপরং নক্রিয়াব্যাপ্যপরং কর্মোপপদাধিকারেত্যাদ্যাদীনামানর্থক্যায়াপি ক্রিয়াবাচীশব্দঃ পরসাহচর্য্যাৎ আদেব্যব-স্থাবাচিরাদ্বাতস্মিন্ন পুপদেবেতনার্থকএবটঃ। ভৃতেকির্মাশব্দেচেতিকাতন্ত্রং। ভরণ্যভুক্কর্মকরঃ কর্মকারোঽ-ব্যুৎপত্তার্থস্থিহায় শূদ্রজাতিবিশেষঃ কর্মকারইতিবজ্ঞঃ। বহুবিবপুলবাচীসংখ্যাবাচিনঃ ম্বইতিপঞ্জিকা। সম্বোপাদানেনপ্রাপ্তত্বাৎ বাহুঃ প্রতিমাবাহুঃ প্রাণিবাহোঃ করণাযোগাৎলিপিল্লিথিতাক্ষরপঙ্কিঃ। লিথি তাক্ষরদংস্থানে লিপিল্লিবিরুভেস্ত্রিয়াবিত্যমরঃ। দিবেতি ছন্দ্রপরত্বাৎ প্রত্যেকং বার্থসম্বন্ধঃ দিবেত্রবায়ং দিনাধিকরণার্থং তেন দিবাদিনবিষয়ে প্রাণিনাং চেষ্টাং করোতীতি দিবাকরইতিবজ্ঞঃ। করোতীতিনব্যাঃ প্রভারুক্চিত্রং চিত্রকর্ম। নান্দীতি। নন্দিঃশিবগণেস্ত্রীতুদূতোঙ্গে হর্ষভাগুয়োরিতিভূরি প্রয়োগঃযদানান্দীবাদ্যভাগুবিশেষঃ তদাকরোতির্দানার্থে যদাতুনান্দীশব্দবিশেষঃ তদাকরোতিরুচ্চারণার্থ ইতি বক্স:। সাচ যথা আশীর্বাচনসংযুক্তাস্ততির্যাম্মাৎপ্রবর্ততে। দেবদ্বিজনুপানাঞ্চ তম্মান্নান্টি কীর্তিতেতি। ধকু-চাপঃ বলিঃ পুজোপহারঃ স্ত্রিরেথাবা। সম্ঞানশব্দাএকাদয়ঃ সামান্তসম্থানবাচিত্বাৎ সম্থানশব্দোহপীতি স্থাতি স্থাপ্ততেওংশতোভেদবতামিত্যেকশেষাৎশন্দগ্রহণান্তেতিকচিৎ। প্রসিদ্ধাঃ অয়মেব মমারাধ্যইতি বিশুদ্ধাভিসন্ধানং সমৃভজনং বাভক্তিঃ ক্ষেত্রমায়ুধজ্ঞানং ক্ষেত্রম্বা আয়ুধং শস্ত্রহলয়োঃ। দিবাদ্যর্থাদিতি। দিবার্থকনিশার্থক প্রভার্থকাদিত্যর্থঃ। যাং কাঞ্চিৎসম্যাঙ্গরোতীতি সুখ্যাকরঃ সর্বেষাং সর্বনান্নাং বুদ্ধিস্থরতিত্বাৎ তমিষিদ্ধং করোতীতিতক্ষরঃ তৎকরপাঠোইচোরে। আদি- হেতৃতচ্ছীলানুকূলার্থের শব্দাদ্য কর্মকাৎ। রূঞ্ফী: স্যাৎ। ফলসাধনোপ-যোগ্যেহেতৌ। বিদ্যায়শঙ্করীকন্যাশোককরী প্রাদ্ধকরণশীলঃ প্রাদ্ধকরঃ আত্ম-কূল্যেবচনকরঃ আজ্ঞাকরী। শব্দাদিবর্জনাৎ শব্দকারঃ পদকারঃ। শ্লোকঃ কলহোবৈরং গাথাচাটুঃ সূত্রমন্ত্রপদেচ। কুন্তকরণশীলাঃ কুন্তকারাদয়োইপ্যা-দিনাবর্জ্যস্কে। ১৩৮॥

নেতি। আদ্যাদীত্যাদিনেতার্থঃ অরুস্করইতিপ্রাঞ্চঃ। যত্তং পঠন্তিনব্যাঃ। ত্রণোহস্তিয়ামীর্ম্মরুঃ। অরুস্করোত্রণকৃতিত্রিষভল্লাতকেপুমানিতিমেদিনী। কারকরইত্যাদি। কারোবধেনিশ্চয়েচ বলেযত্বেযতাবপি।
ভূষারশৈলেপিপুমান্ স্থিয়াং দৃত্যাং প্রদেবকে। স্থবর্ণকারিকায়াঞ্চবন্ধনাগারবন্ধয়োরিতিমেদিনী।
আদিনা আয়ুধাদয়ইত্যাদিনেত্যর্থঃ। অজাদিত্রাদিতি। অজাদের্বাধকত্বাৎ টিত্রাদাবাধকত্বা আহুঃ কেচিৎ
আহ্বিদন্তীতাস্বরসপ্রকাশনং। ২৩৭॥

गृष्धकाणिका।

আদ্যেতি। আদিপ্রভৃতি পূর্ব্বকাং ডুকুঞ্করণে অসাংটঃ স্থাদিতার্থঃ। পুনন্টগ্রহণং কত্রপিনির্ত্তার্থং তেন কর্মারপাদ্যাদিপূর্ব্বকাদিতি। নান্দীতি। নাটকাদে আশীর্বাদাদিঃ। দ্বাদশাক্ষরকৈঃ পাদেরধিকৈর্বান্ত্থপ্রবা। আশীর্মঃ ক্রিয়াব্স্তর্ত্তির্মান্ত্রকাতিতা। সূত্রধারঃ পাঠেরান্দীং মধ্যমস্বর-মাপ্রিতঃ। সূত্রধারঃনাটকায়কথাসূত্রসূচকোনটপ্রধানভূতঃ পুমান্। উক্তঞ্চ নাটকায়কথাসূত্রং প্রথমং যেন সূচ্যতে। রঙ্গভূমিং সমাক্রমাস্ত্রধারঃ সউচ্যত্ইতি। মধ্যমস্বরশ্চকোঞ্জ্বরবহুচ্চস্বরঃ। তত্ত্তং নারদেন। মধ্যমং রোতি ক্রোকোহ্দোধিবতং রোতিচাশ্বকইতি। আদিনা রুচিকরইত্যাদয়ঃ। ১৩৭॥

क्र थमिशका।

হেতু। শব্দদিন কর্ম যক্ত তথাৎ সূত্রনির্দেশাৎ সপ্র্বপদক্ত মঞোহকারঃ পশ্চাদ্বন্ত্রীহিব্বান্ত্রে বিবাহনার । হিনোতিফলসাধনতাং গছতীতি সীতনিগমীতাাদিনাতুঃ হেতুশ্চসধান্ত শিলং মভাবোযক্তেতি তছনিশ্চক্লামুক্লনে চুরাদিঃ অমুক্লয়তীত্যমুক্লশ্চেতিদ্বন্ধঃ তেচতেহর্থাশ্চেতিতের বাচ্যের শব্দাদ্যভাকর্মোপপদাৎ কৃঞ্জীঃ স্থাৎ। হেতুশব্দা ভূয়োর্ত্রেরাহফলেতি। হেতুর্দ্বিধঃ শাস্ত্রীয়োলোকিকশ্চ তত্ত্রশাস্ত্রীয়হেতুর্গৃহমাণশ্চেৎ কিয়া ধাত্বপ্র্যঃ কর্ত্তাতস্প্রযোজকোগ্রহীতব্যঃ ক্রোন্তান্ত্রেরকর্ত্তাগ্রাহ্ণ নতাবদাদ্যঃ তদ্যাপারে ইনঃ সন্তবাদনৈবং রূপদিক্ষেঃ। নচান্তর্ভাবিতেনর্থপ্রয়োজনং কেবলধাত্বনের্থোক্তির বৃদ্দুর্য়া কিন্তু প্রযোগামুদারাৎ কচিদেব। নাপিদ্বিতীয়ঃ হেতুর্মাকারণমিতিক্তঃ কর্ত্তরীতিসামান্যতঃ প্রধানকারণে ক্রিরিবিধানেন লোকিকতোহপাবিশেষৎ নাপিতচ্ছীলামুক্লার্থয়োবিশেষঃ দ্বন্দ্বসাদ্বেন প্রত্যেকং পৃধ্যম্বাহ। এতেন বিশিন্তলোকিকহেতোর্গ্রহণাৎ ফলসাধনযোগ্যইত্যুক্তং। যোজনং যোগন্তমহ্তীতি দণ্ডাদিরাদ্বঃ কর্মণ্যহ্তায়াং ঘণ্ বা ফলসাধনে ফলনিম্পাদনে উপযোগ্যোযোগ্যতাবান্হেতুরিত্যর্থঃ তথাচ লোকেহিকলাধনযোগ্যেহেতুর্লচ্যতে অনিম্পাদ্যম্পিক্লং যোগ্যতামাত্রেণ্ডের্ভ্বতি যথাবিদ্যাকাপ্য-

শরুৎশুশ্বপরাংক্তএইঃ স্যাৎ। বংসঃ শরুংকরিঃ। ব্রীছিঃ শুশ্বকরিঃ শুদ্ধ-কারোইন্যঃ। ১৩১॥

ক্র্ত্র্তাপিযশন্তৎকরণযোগ্যতামাত্রেণহেত্ব্যপদেশমাসাদয়তি অন্যত্র পরিদ্র্ত্বসামর্থ্যাদিতিভাবঃ স্ত্যাম্পিবিদ্যায়াং কচিদ্যশোহভাবাদসত্যাং তন্ত্রাং কচিদ্যশাং সন্ত্রাদয়য়য়য়তিরেকব্যভিচারাদ্রেত্র্যভিচারীতি কালাপাঃ। ইহপ্রতীতশক্তিকোহেত্র্রিতিচন্দ্রঃ। প্রতীতশক্তিকঃ পরিদৃষ্টসামর্থ্যঃ। যশঃ করোত্যনয়েতিটে যশস্করী উপপদসমাসঃ। বিদ্যাধনদাচ ভবতি যথোক্তং। একাবিদ্যাম্পশিক্ষিতাধনদাচ যশস্করীতি। শাস্ত্রীয়হেত্ত্রহণেয়শন্তাদীন্ কুর্ব্বতামেববিদ্যাদীনাঃ গ্রহণং স্তায়াকুর্ব্বতাং লোকিকহেত্ত্রহণেতু নকেবলং যশস্তাদীন কুর্ব্বতাম কুর্ব্বতাকহেত্ত্রমবিহতং পরিদৃষ্টসামর্থ্যাৎ বিদ্যাদীনাং হিষশস্তাদিসম্পাদনে প্রায়েণ লব্ধসামর্থ্যমন্ত্যেবেতিভাবঃ। এবংকস্থাশোককরীতি। অশোচ্যাপি পিতৃঃ কন্তাসম্ভর্ত্ প্রতিপদিতেতিকুমারে। আদ্ধকরইতি তচ্ছীলোদাহরগং তাচ্ছীলাং তৎশীলতা উদর্ক্বলনিরপেক্ষাপ্রতিরিতিযাবৎ। অমিতি। আমুকুল্যং তন্ধতা আরাধ্যচিন্তানুর্বতিরিতিযাবৎ অনুকূলয়মিত্যসুকূলার্থস্থ কতৃ ত্বস্তব্ধনিদিং। বচনমাজ্ঞাং করোতীতিবচনকরঃ এবমাজ্ঞাকরীত্যাদি। শব্দকারইত্যাদিয় যথাভিধানং হেত্বাদ্যর্থঃ কল্পনীয়ঃ। বৈরং বিরোধোবিদ্বেষইত্যমরঃ। গাথাশ্লোকে সংস্কৃতান্যভাষায়াং গেয়র্ত্রেরোরিতিমেদিনী। চটুশ্চাট্রং প্রিয়োক্তিঃ স্থাৎ। কুন্তকরণশীলাইতি। এবন্ধিবক্ষায়াং টপ্রাপ্তে শব্দাদীত্যাদিনাবর্জ্যন্তেতচ্ছীলাদ্যবিক্ষয়াত্ত্বের। ১৩৮॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

হেমিতি। হেয়াদিয়্গম্যমানেয়ুক্ঞঃটঃ স্থাদিতিঅমুবর্ত্তনাল্লবাং। হেতুপদার্থং নির্বাক্তিফলেতি। ফলসাধনে ফলনিম্পত্রেউপযোগ্যঃ স্বরূপযোগ্যঃ পরিদৃষ্টসামর্থ্যঃ হেতুঃ তিয়ন্। শ্রাদ্ধকরণশীলইতি। শ্রাদ্ধকরণশিলইতি। শ্রাদ্ধকরণশৈলইতি। শ্রাদ্ধকরণশৈলইতি। শ্রাদ্ধকরণশৈলইতি। শ্রাদ্ধকরণভালইত্যাদি নির্পেক্ষপ্রের্ভইত্যর্থঃ। যদ্যপিশ্রাদ্ধেপিতৃস্থপ্তিরূপ ফলমস্তিতথাপি স্বকীয়োত্তরফলনির-পেক্ষপ্রের্ভিভাবঃ। এবং তাচ্ছীল্যেমস্করঃ কথিতোবেণো তথা বেণুমস্করভেজনাইত্যমরোক্তনিদ্ধিঃ। শব্দকারইত্যাদি। কর্মণ্যণিত্যণ্ এবং পদকারঃ পদরচকইত্যর্থঃ। শব্দাদীন্গণয়তি শ্লোকইত্যাদি। পদ্যেশসিচল্লোকইতি রণাঃ ফলহবিগ্রাহাবিতিচামরঃ। সূত্রং তস্তব্যবস্থয়োরিতি মন্ত্রোবেদবিশেষে স্থাদেবাদীনাঞ্চনাধনে। গুহুবাদেহপি চপুমানিতি পদং শব্দেচ বাক্যেচ ব্যবদায়প্রদেশয়োরিতিচমেদিনী। ক্ষুক্তকারাদয়ইত্যাদিনাত্রিভূবনকারঃ ঘটীকারইত্যাদেগ্রহণং। ১৩৮॥

क्र अमी शिका।

শক্ৎ। কর্মাধিকারাত্তৎ কর্মপরাৎকৃঞ্ফীঃ। অর্থাসুবর্ত্তন শঙ্কয়াষষ্ঠীশঙ্কয়াবাসকৃৎ স্তম্বয়োরিতিনকৃতং। পূনঃ কৃঞ্গ্রহণাদ্ধেম্বাদ্যনবতারঃ। তালব্যাদিঃ শক্তংশব্দঃ শক্তং পুরীষং মুখশব্দবিশেষম্বাকরোতীতিশক্তৎ কারঃ স্তম্মং গুচ্ছং করোতীতিস্তম্বকরিঃ বৎসত্রীহোরিত্যভিধানং। অন্তইতি। বৎসত্রীহিভ্যামন্তইত্যর্থঃ।১৩৯॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

শক্বদিতি। শক্তং পুরীষং করোতীতিইঃ। স্তম্বোগুচ্ছস্থণাদিনইতি শক্বংকরিস্তবৎসঃ স্থাদিতি-ধান্যং ব্রীহিঃ স্তম্বকরিরিতিচামরঃ। স্তম্বং ব্রীহিভিমস্তম্বং করোতীতিকর্মণ্যণ্। অত্রক্ত্গ্রহণমর্থবিশেষ-জ্ঞাপনার্থং। তনবৎসত্রীহোরর্থয়োরেব। নাধেতরে র্মারর্থয়োরিতি। ১৩৯॥ নাথদৃত্যোঃ পশাবর্থেজ্ঞঃ। ইঃ স্যাৎ। নাথছরিঃ পশুঃ। দৃতিছরিঃ শ্বা। পশোকিং দৃতিহারঃ কুমারঃ। ১৪০॥

রজঃ ফলেমলপরাদ্ধাহে:। ইঃ স্যাৎ। পদ্মং রজোগ্রহি। ফলং গৃহ্ণাতি ফলেগ্রহির্ক্ ফলেপাঠাদেত্বং মলগ্রহির্দেহঃ। ১৪১॥

বাতদেৰপরাদাপেঃ। ইঃস্যাৎ বাতাপিরস্থরোইভবং। দেবাপিঃ শান্তসুভ্রাতা। বহুবলিছবির্মথ্যাদয়শ্ছান্দসাঃ। ১৪২॥ .

क्९ अमो शिका।

়নাথদৃত্যোঃ। নাথদৃত্যোঃ কর্মণোরুপপদয়োঃ পশাবর্থেকর্ত্তরিবাচ্যে অন্তেহর্থপদপ্রয়োগেবীজমুক্তমুপপদসূত্রে। গবাদ্যাঃ পশুজাতয়ঃ। দৃতিং চর্মপ্রপুটিকাং নাথং স্বামিনং হরতীতিতথা। দৃতিহারইত্যুৎক্ষেপণার্থস্বাদ্বয়োহনভিগমাচ্চনাচ্। ১৪০॥

গূঢ় প্রকাশিকা।

নাথেতি। হৃঞ্হরণে। নাথং হরতিনাশয়তীত্যর্থঃ। দৃতিহ্রিশ্চশ্মহর্তাশাকুকুরঃ! দৃতিহার-ইত্যত্রাণ্। ১৪০॥

क्रथमी शिका।

রজঃ। পাংশুর্মানদ্বয়োরজঃ। ফলেপাঠাদিতি। সূত্রেতথাপাঠাদিত্যর্থঃ। ফলেগ্রহীন্হং সিবনম্পতীনামিতিভট্টিঃ। যদাগ্রহিঃ স্বীকারার্থস্তদান্যোপিফলেগ্রহিঃ রজোগ্রহির্বাতশ্চেতিবজ্ঞঃ। ১৪১॥

गृष्यकाणिका।

রজইতি। মলোহস্ত্রীপাপবিট্ কিট্রেক্পণেস্বভিধেয়বদিতিমেদিনী। গ্রহ্উপাদানেইত্যশ্বাদিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। রজোগ্রহিরিত্যাদি। রজোগৃহ্লাতীতিবং সর্বত্রিবাক্যং। ফলেপাঠাদিতি। এত্বং পৃষোদ-রাদিস্বেনেত্যর্থঃ। ১৪১॥

क्र श्रमीशिका।

বাত। আপ্ ন্যাপ্টো বাতমাপ্নোতি বাতবদেগী ভ্বতীতি বাতাপিরিল্ল লাতা হস্তরঃ। এবং দেবাপিঃ দোমবংশক্রোরাজা। দেবাপিঃ শান্তনোর্জাতামক্লণ্ডেক্ষুণ কুবংশজঃ। কলাপ গ্রামমাসাতে মহাযোগবলাদ্বিতাবিতি ভাগবতে। বহুবলিরিত্যাদি। বল্ মল্ সন্তক্তোবল্ যাচনইতি দ্বোরপি বহুনিবলতইতি বহুবলিঃ মন্থবিলো চনে হবির্ম্মপাতীতি হবির্ম্মিথঃ আদিনাক্ষ জ্রিয়বলিঃ গোষলিঃ গোরক্ষিঃ গোমথিরিত্যাদেপ্র্যান্থ ভ্রাচ্ছন্দিবল্ বল্রক্ষিমথামিতিকালাপঃ ইত্যাদয়শ্চান্দ গাস্ত ও এবাং সূত্রংনক্তমিতিভাবঃ। ১৪২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বাতেতি। দেবমাপ্নোতি দেবাপিঃ। ছন্দসিবেদেভবাশ্ছান্দ্দাত্মণ্ তত্ত্ৰজাতমিত্যাদিনাণ্ ছান্দ্-সানলোকিকাত্মতত্ত্ৰপদ্ধাৰ্থং নসূত্ৰান্তরাপেক্ষেতিভাবঃ। ১৪২॥ আত্মকুদ্দরপূর্ধকান্ত্ঞঃ। থির্ধিয়েঃ। উদরম্ভরির্ভবান্। কুক্ষিম্ভরিঃ আত্মমরিঃ নোমত্বঞ্চ। ১৪০॥

এজতেঃ খশভবেদিনন্ততঃ। শত্রুমেজয়ইবেন্দ্রমেজয়ঃ। শিত্যশ্বিকর-ণাদি। ১৪৪॥

क्रथमीलका।

আত্ম। আত্মকুকুদেরকর্মপূর্ব্বকাৎ। বিচিত্রার্থমিদং নদপ্তম্যক্তিঃ। উদরম্বিভর্ত্তি উদরম্ভরি: খোমুট্ এবং কৃক্ষিম্ভরিঃ আত্মন্তরিরিতিনোমত্বং। আত্মন্তরিস্ত্বং পিশিতৈর্মরাণামিতিভট্টিঃ। আত্মন্তরিঃ
কুক্ষিম্ভরিভবেৎস্বোদরপূরকেইতিশব্দার্পবঃ। ১৪৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আছোতি। আত্মাযত্নাধৃতিবি দিঃ সভাবোত্রহ্মবর্ম চৈতি পিচিওকৃক্ষিজঠরোদরং তুল্দমিতি চামর:। যদ্যপি আত্মকুদ্দেরেষুইত্যুক্তেলাঘবং আতথাপিছলোহর্থং 'পূর্বেশন্ত্রহণংকৃতং। ভৃঞ্ভরণ-পোষণয়োঃ আত্মানং শরীরং বিভর্তিপুফাতীতিথিঃ। উভাবাত্মস্তরিঃ কৃক্ষিস্তরিঃ স্বোদর প্রকেইত্যমর:। নোমস্বমিতি। অকাংক্রসোহনব্যয়ানাং থকুবন্ধান্তধাতুষুনোমস্বঞ্চেতি প্রাপ্তক্তসূত্রেণেত্যর্থঃ।
আত্মস্তরিস্তং পিশিতৈর্মরাণাং ফলেগ্রহীন্হংসিবনস্পতীনাং। শৌবস্তিকত্বং বিভবান্যেষাং ব্রজন্তিতেষাং
দয়সেনকস্মাদিতিভটিঃ। ১৪৩॥

क्र १ अमी शिका।

এল্ল। কর্মণুপেপদেইনস্তাদেজতেঃ থশ্ভবেৎ। এজতেরনিনন্তস্থাকর্মকত্বাদিনস্ততইত্যুক্তং।

बচেজ্গতিকুৎসয়োরিত্যস্পপ্রয়োগঃ অপ্রসিদ্ধত্বাৎ। নতুকর্মপদাধিকারাদেবইনস্তলাভাৎকৃতমিনস্ততইত্তি
নোদ্ভাবনীয়ং সোপদর্গান্তভূতিনর্থয়োঃ সকর্মকত্বাৎ। এজ্কম্পনেহেত্বিনি শক্রমেজয়তীতি থশিশিত্বাদ্বিকরণাদি ইভানামিন্দ্রোগজশ্রেষ্ঠঃ ইবপাঠে শক্রমেজয়ইবেন্দ্রমেজয়ঃ সাধনীয়ইত্যর্থঃ অবিকরণাদীত্যাদিনাইল্লোপাভাবঃ পরত্রধমাদেশাদিপ্রভিঃ। ১৪৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

এজতেরিতি। খশইতিছন্দোহর্থমকারঃ সিলোপশ্চ খশসুবন্ধোহকারপ্রত্যয়ইতি। শত্রুমেজয়তি কম্পায়তীতিখশিশিত্বাদিরিকরণে ব্রস্বান্মট্তদ্বৎ ইন্দ্রমেজয়ইতিখশ্। শিতীতি। অসুবন্ধইদিতিপর্যাদ্মন্থাৎ। আদিনাইল্লোপাভাবাদিগ্রহণং। আত্মেত্যাদিইবেন্দ্রমেজয়ইত্যন্তং রথোদ্ধতাছন্দঃ। তলক্ষণস্ত ছন্দোমপ্র্যাং যথা। রাৎ পরেম্রলগৈরথোদ্ধতেতি। রোলঘুমধ্যগণঃ তন্মাৎপরের্নরলগৈন্ত্রিলঘূলঘূন্মধ্যগণ একলঘুএকগুরুভির্বিশিষ্টারথোদ্ধতেত্যর্থঃ। ইদংপাদলক্ষণং। ১৪৪॥

ধেটো মুঞ্জনীকূলপুষ্পাস্যন্ত নপূর্বকাং। মুঞ্গাদিষট্কোপপদেধেটঃ খশ্ স্যাৎ। মুঞ্জন্ধয় কীটঃ শুনিদ্ধয়ঃ কূলন্ধয় আবর্ত্তঃ অঙ্গনাস্ত্রন্ধয়ঃ কামীশুন-ন্ধয়াকন্যেত্যেকে। ধেটঃ টন্থবন্ধস্যানদাদিত্বাদীশুনন্ধয়ীত্যন্যে। ১৪৫॥

নাড়ীমুর্ফিঘটীবাতনাদিকাকরপাণিয়। খার্য্যামপিগাণ্চ। ধেটণ্চ খশ্ স্থাৎ। নাড্যাদ্যফকোপপদে। নাড়িন্ধন নাড়িন্ধরাদয়ঃ মুফিন্ধয়ঃ শিশুঃ খারিন্ধয়ঃ শুনিন্ধমইত্যপি কশ্চিৎ! ১৪৬॥

क्र श्रमी शिका।

েধেটো। মুঞ্জাদিষু। সজ্যাতশঙ্কয়াষট্কেতি। মুঞ্জবনং ধয়তিভক্ষয়তীতিমুঞ্জয়য়ঃ কাঁটবিশেষঃ শুনিয়য়ইত্যকাং ব্রুকেমুট্ কূলং নদ্যাদিতীরং। স্থাদাবর্ত্তোহস্তমাংরয়ঃ। স্তনম্মেত্যজাদিম্বাদা। স্তনপাচ স্তনয়য়ীত্যমরঃ। উদেজ্যাদিম্বাৎ সফলানিধুমাস্থয়ানীতি শ্রীহর্ষঃ। যাবতাং সামুবয়ধাভূনাং সপ্রয়েজনয়াংধেটঃ প্রয়োজনমুদ্দিশতিধেটইতি। করপ্রটমুবয়িনইত্যনেন প্রত্যয়ান্তমীকারেইপি টমুবয়সামর্থ্যাং প্রকৃতেরপিনদাদ্যয়ং। নচাস্থয়ঙ্লুগন্তব্যবচ্ছেদঃ ফলং তম্ম কবর্গ প্রথমোপন্যাদেনাপিদিয়য়াং কিমেতাব্রচনক্রমেণেত্যাশ্রেনান্যেকালাপাদ্যইত্যর্থঃ। ১৪৫॥

গৃতপুকাশিকা।

ধেটইতি। মুজ্ঞস্ণবিশেষঃ শুনীকুর্না কূলং নদ্যাদিতীরং পুষ্পম্ আশ্রুং মুখং স্তনশ্চএতেষপপদের্ধেট্পানেইত্যন্ত্রাৎ থশ্যাদিত্যর্থঃ। মুজ্জয়য়তাতিথশিঅনবিকরণেএ অয়য়য়ামুট্ শুনিয়য়ঃ য়েছেবিশেষঃ কূলয়য়তিভনক্রীতিকুলয়য়আবর্ত্তঃ জলবেগঃ পুষ্পশব্দেনাত্রতজ্ঞ্যমধুভণ্যতেকার্য্যকারণয়োবৈক্যাৎ পুষ্পদ্ধেরাভ্রমরঃ অঙ্গনায়াঃ স্ত্রিয়াআস্তরয়েত্রীতি অঙ্গনাস্তরয়ঃ স্ত্রীমুগপানকারীকামুকঃ স্তনয়য়ত্যত্রাপিস্তনেদ্রবং ক্রয়মুচ্যতে তেন স্তর্যপানকারিণীত্যর্থঃ। অজাদিগণপাঠাদাইত্যেকেবদন্তীতিশেষঃ।
ধেটইতি। ধেটঃ টনুবয়ম্পপ্রয়োজনান্তরাভাবাৎ টনুবয়প্রত্যয়ান্তম্ম নদাদ্যন্তর্গত্তেহপি অন্যগত্যা
ধাতোঃ টনুবয় ত্রানদাদিরং নদান্তর্গতকরং কল্লাতে তত্মাদী স্তনয়য়ীত্যেবদন্তীতিশেষঃ। ইদমেব
স্বমতং যুক্তিসভততয়াবভ্সনাত্রাৎ। স্তনপাচ স্তনয়য়ীত্যমরঃ। ১৪৫॥

क्र श्रमी भिका।

নাড়া। নাড়াদিকশ্বন্তপূর্বসূত্রোক্তযুক্ত্যাখার্যাং বিধিসূত্রানাদি ছেহপ্যপেপদবিধানায়বা অন্তকেতি। খার্ন্যানিতি পৃথক্করণং ছন্দোহসুরোধায় অতথাছেহপ্যস্থোপপদস্ববীজান্তরমুক্তমুপপদসূত্রে। খাশব্দাফিতাপনয়েং। নাড়ী ভূধমনী শিরাই ত্যমরং। অল্লোঘটোঘটী দ্রোণচতুক্টয়েন মানী সৈব চতুপ্ত ণাখারী তি
বহুসন্মতং। তত্তকং। নিকুজং তাবদাখ্যাতং খার্ম্যাঃ পাদাবশেষতঃ। মানী দ্রোণাচক প্রস্কুরবেষু যথা
ভবেদিতি। দ্রোণবোড়শমানী সৈব চতুপ্ত ণাখারী তি কেচিৎ। অল্রিয়ামাচকদ্রোণো খারী বাহোনিকুজকঃ
কুরবং প্রস্কুইত্যাদ্যাঃ পরিমাণার্থকাঃ পৃথগিত্যমরঃ। শুনিশ্বমইতি। কশ্চিদাহেতিশেষঃ অপিনা খনিশ্বয়ঃ
খনিশ্বমং বাতশ্বরইতিবরক্রিঃ। ১৪৬॥

বাতপূৰ্বাদজঃ খশ্ স্যাৎ। অমীবাতমজামুগাঃ। ১৪৭॥

শর্ধ পূর্বজহাতেশ্চ। খশ্ স্যাৎ। মাষাঃ শর্ধপ্রহাযথা। শৃধুশক কুৎ-সায়াৎ শর্কোইপানশকঃ। ১৪৮॥

বহবিধুতিলাৎ পরস্বান্ত দতেঃ খশ্ স্যাৎ। বহন্তদঃ কাকঃ। বিধুন্তদো-রাহুঃ তিলন্তদঃ শুকঃ। ১৪৯॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

নাড়ীতি। নাড়ীচ মুষ্টিশ্চ ঘটাচ বাতশ্চ নাদিকাচকরশ্চ পাণিশ্চেতিদ্বন্ধঃ তেয়ু। শ্বশ্চ চকারা-দ্বেটশ্চ। নাড়ীন্ধমতীতি নাড়িন্ধমঃ খশিশিস্ত্বাদিন্ধিকরণেস্থাগ্যোন্তিষ্ঠধমোস্তইতি শ্বাস্থানেধমাদেশঃ অকাং হ্রস্বঃ হ্রস্বান্মুট্ খনুবন্ধান্তধাতুয়ু এবং নাড়ীন্ধয়তীতি নাড়িন্ধয়ঃ ধেটঃ খশ্ অন্নিকরণেএঅয় অভৎ পূর্ববৎ। আদিনা ঘটিস্কমাদয়ঃ। খারিদ্ধয়ইতি। পাণির্নিক্জকোমুষ্টিঃ কুরবস্তচ্চতুষ্টয়ং। চত্বারঃ কুরবাঃ প্রস্থান্তরং। অফীচকোভবেদ্দ্রোণোদ্বিদ্রোণঃ শূর্প উচ্যতে। সার্দ্ধশূর্পাভবেৎ খারীতিবিশ্বঃ। শুনিশ্বমইত্যপীতি। খার্যামপীত্যপি শব্দাৎ কশ্চিদাহেতিশেষঃ। কিন্তুপিশব্দাৎখনিশ্বয়াদয়ঃ। ১৪৬॥

क्र ९ अमी शिका।

বাত। অজইত্যন্তং সূত্রং। অজ্গতিক্ষেপণয়োঃ খশ্যন্থিকরণে নাজেব্বীরননাদিম্বিতি। বাতমজাঃ বাতমজন্তি ক্ষেপয়ন্তি বাততুল্যাবেগিনোভবন্তীতি তাৎপর্য্যং। ১৪৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বাতেতি। বাতেইতি বক্তব্যে পূর্ব্বপদগ্রহণং ছন্দোহর্যং। খশ্ স্থাদিতি পূর্ব্বতোহসুবর্ত্তমানং ছন্দোহসুরোধাদেকত্রলিখিতং। ১৪৭॥

क्र ९ अमी शिका।

শর্জ। জহাতেরিতিপাঠাৎ ওহাক্ ত্যাগে নওহাঙ্গতাবিতি। শর্কং জহাতীতি থশিশিতি দিরগুণে স্বরে আলোপঃ। মাধােমূর্ক্সান্তঃ। মাধােমানেমূর্ক্সান্তোবীহন্তরেচ নির্দিষ্ট ইত্যুম্মভেদঃ। শৃধুতালব্যাদিঃ। ১৪৮॥

গূতপ্রকাশিকা।

শর্কেতি। শর্কমপানশব্দং জহতিত্যজন্তীতি শর্কঞ্জহাঃ মাধাব্রীহিভেদাঃ। ১৪৮॥

क्र ९ अमो शिका।

বহ। তুদ্ব্যথনে। ক্ষমপ্রদেশস্তবহঃ। বহস্তদইতি। থশিঅনিতুদাদেরমগুণঃ লোপ আদস্যেতি অলোপঃ হ্রস্বামূট্। তমস্তরাহঃ স্বর্ভানুঃ সৈংহিকেয়োবিধুস্তদইত্যমরঃ। ১৪৯॥

মিতনথপরিমাণার্খাংপরপচতেঃ খশ্। মিতম্পতঃ রূপণঃ। নখম্পচাযবাগৃঃ জোণম্পচঃ মাপনপাত্রং দ্রোণাদিপরিমাণং তেনমিতান্তণ্ডুলাদয়োইপি জোণাদিভি-ৰুচ্যন্তে। ১৫০॥

ললাটপুৰাক্তপতেঃ। খশ্ভবতি। ললাটস্তপঃ। ১৫১।

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বহেতি। বহ্প্রাপণে বহতীতিবহং পচাদিম্বাদচ্ বিধূশ্চন্দ্র:। বিধূং স্থধাংশুঃ শুল্লাশুরিত্যমরঃ। তিলোত্রীহিভেদঃ। অত্রাপি ছন্দোহসুরোধাৎপ্রশ্মাদিতিপদং থশ্ স্থাদিত্যসুবর্ত্তমানঞ্ একত্র-লিথিতঃ। বহং ক্ষমপ্রদেশং ভুদতিব্যথয়তীতি থশ্ হ্রমামুট। এবমন্যত্রাপিদাধনং জ্ঞেয়ং। ১৪৯॥

क्रथमिनिका।

মিত। মিতঞ্চনথঞ্চপরিমাণমর্থোযস্তুতে ছিল্ফ্ব্যাং। মিতং পরিমিতং পচতীতি। কদর্য্যেক্ষপণ ক্ষুদ্রকিম্পানমিতম্পানাঃ। যবাগ্রুফিফার্ফযবচূর্ণং পচতীতি পচতিরক্তক্ষরার্থকঃ পরিমাণার্থাৎ দ্রোণম্পাচইতি। পরিমাণার্থমাহ মাপনেতি। মাপ্যতেহনেনেতি মাপনপাত্রং দ্রোণাদিপরিমাণমূচ্যক্তেইতার্থঃ। তথাচ অস্ত্রিয়ামাঢ়কদ্রোণাবিত্যাদি তদ্বাচকঃ পরিমাণার্থঃ। অর্থস্ত দ্রোণাদিপরিমাণমূ। উতোপপদত্বং সম্বন্ধত্বমবাধিতার্থকত্বং তচ্চাত্র ন সম্ভবতি দ্রোণাদেঃ পাকাসম্ভবাদিত্যক্রচেরাহতেনেতি। তেন দ্রোণাদিনামিতাঃ পরিমিতাস্তর্তুলাদয়োহপি গৌণ্যার্ত্তাাদ্রোণাদিভিক্রচ্যক্তে অতোনাসম্ভাবনীয়ং তদিত্যর্থঃ। তথাহি দ্রোণম্পাচ ইত্যাদির পরিমাণং দার্কাদ্রিরচনাবিশেষবতি দ্রোণাদে। পদার্থেপ্রিদিন্ধং তেন পরিমিতে তণ্ডুলাদাবপি গৌণ্যার্ত্তাবর্ততে ততোদ্রোণমিতং তণ্ডুলাদিকং পচতীত্যর্থে উপপদত্বং নামুপপ্রমিতিভাবঃ। ইথং মিতপরমাপনং পরিমাণার্থমাত্রং অতোমিতশব্দক্ত পৃথগুপাদানং নোমুতং। তেনেতি। গুণাপেক্ষকং দ্রোণাদিভিরিতি গুণ্যপেক্ষয়াবহুত্বং। ১৫০।

গূতপ্ৰকাশিকা।

মিতেতি। দ্রোণপরিমিতং পচতি দ্রোণস্পচঃ। দ্রোণাত্মকমাপনপাত্রস্থ পাকাযোগ্যদ্বাদাহতেনেতি। বহেত্যাদি কৃপণইত্যন্তং গীতিজাতিঃ। অতএব পূর্ব্বসূত্রাৎ এতৎসূত্রেখনিত্যসূবর্ত্তমানমপি ছন্দোহসুরোধাদেকত্রলিখিতং। ১৫০॥

क्र श्रे दी शिका।

ললা। তপ্ ধূপ্ সম্ভাপে। ললাটমলিকং গোধিরিত্যমরঃ। ললাটম্ভপতীতি ললাটম্ভপঃ ভাপকারীভণ্যতে। লিপিং উলাটম্ভ পনিষ্ঠুরাক্ষরামিতি নৈষধে। ১৫১॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ললাটেতি। অত্রাপি ললাটিইতি বক্তব্যেপুর্ব্বপদগ্রহণং ছন্দোহর্থং। তপতেরিতিগ্রহণাৎ তপ্স-দ্বাপেইতি ভুবাদেরেবগ্রহণং তেনতপ্ ঐশ্বর্যাউপতাপতপঃ করণেম্বিতি দিবাদ্যাত্মনেপদিনোলগাটতাপ-ইতিঅণেব। ১৫১। উগ্রাস্থ্যপরাদ্দ্শঃ। খণ্ভবতি। উগ্রম্পশ্যাং ক্রুরাং সূর্য্যপিনপশ্যন্তী-ত্যথে অসূর্য্যম্পশ্যারাজদারাং গুপ্তিপরবাক্য তাৎপর্য্যপর্যালোচনয়া দর্শনান্বিত-নঞাসূর্য্যস্য সনাসং অসূর্য্যেত্যসৈয়বগমকত্বাৎ। ১৫২॥

क्ट्थमोशिका।

উগ্রা। উগ্রশ্চ অদুর্য্যশ্চতাভ্যাং কর্মভ্যাংপরাৎ।উগ্রং রেজিং।রেজিভুগ্রমমীত্রিম্বিত্যমরঃ। দুর্য্যমিপি নপশুন্তীতি তাৎপর্যবাক্যং নপ্রভারবাক্যং দুশেরসূর্য্যপরস্থাভাবাৎ তদ্বাক্যন্ত্রসূর্য্যম্পশুন্তীত্যসূর্য্যম্পশুন্তীত্যসূর্য্যম্পশুন্তীত্যসূর্য্যম্পশুন্তীত্যবর্ষণ ক্রেলিত্যত আহন্তপ্তিপরেতি।গুপ্তির্গোপণং পরাপ্রধানং যন্ত্রত্বাক্যয় অদূর্য্যম্পশুনাজদারা অদ্য্যম্পশুন্তীতিবাবাক্যং পদকদম্বক্ষেতিত্যতাৎপর্য্যং নহিদ্য্টাদ্টকরম্ম ভগবতঃ শ্রীদূর্য্যম্পদ্নিকোহপিদোয়ং মন্ত্রায়তেকি ব্রেবং নামস্থপ্তথারাজদারায়দহার্য্যদর্শনমপিনপশুন্তীতি তৎপ্রতীত্যুচ্চারিতোহর্থেহিতি গোপনমিতি যাবৎত্যস্পর্যালোচনয়া সমন্ততোভাবনয়া দর্শনাম্বিতনঞাসূর্য্যম্পশেশুতিপদং বিবক্ষিতার্থপ্রতিপাদকমেবেতিভাবঃ। নম্বেমাকাক্ষাবিরহেকথং সমাসইত্যত্থাহ অদূর্য্যম্পশেশুতিপদং বিবক্ষিতার্থপ্রতিপাদকমেবেতিভাবঃ। নম্বেমাকাক্ষাবিরহেকথং সমাসইত্যত্থাহ অদূর্য্যেতি। অনাদিদিদ্ধমাহেশ্বরসূত্রে অদূর্য্যতিপদস্থ গমকত্বাং জ্ঞাপকরাৎ যথাজগ্ধভাবজ্ঞাপকমন্ত্রপদং তথাত্রসূত্রেসমন্ত্রমসূর্য্যপদমাকাক্ষাবিরহেহপি কচিৎসন্মাসংজ্ঞাপরতীতি। যদাগুপ্তিপরং সূর্যামপিনপশ্রতীতিবাক্যং যন্ত্রত্থিপরবাক্যমসূর্য্যম্পনে পশ্রতীতিবাক্যং তথাক্যং ত্রাক্যং পরং প্রধানং যন্ত্রসমন্ত্রপদন্ত তন্ত্রভাবস্তাৎ পর্যামস্থাতি পদসন্ধন্ধিসূর্য্যম্পনপশ্রতীতিবাক্যং তন্ত্রপর্যালোচনয়া দর্শনান্বিতনঞাসহ প্রলোকেহিসূর্য্যম্পিন পশ্রতীতিবাক্যং তন্ত্রপর্বানের্য দর্শনান্বিতনঞাসহ প্রলোকহিত্বিয়াপিন পশ্রতীতিবাক্যে তন্ত্রপর্যা দর্শনান্ত্রিতন্ত্রা দর্শনান্ত্রত্থানিকার দর্শনান্বিতনঞাসহ প্রত্তানিকার দর্শনান্তিনিকার দর্শনান্তিন প্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রার বিরহিত্ব প্রান্ত্রার দর্শনান্ত্রতন্ত্রার দর্শনান্ত্রতন্ত্রা দর্শনান্তিন ক্রান্তর্যান্ত্রান্ত্রার স্থানিভাব্যং। ১৫২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উত্তেতি। উগ্রঅস্থ্যাভ্যাং পরইতি পঞ্চমাদমাদস্তাদৃশাদ্শং দৃশির্প্রেক্ষণেইত্যস্তাৎ খশ্ভবতীত্যর্থঃ। উগ্রং ভরঙ্করং পশ্যন্তাতি থশিশিতি অন্নিকরণেদৃশং পশ্যেতিপশ্যাদেশঃ। উগ্রম্পশ্যাকুলেহ্রণ্যেশালীনত্ববির্জিতা। কামুকপ্রার্থনাপট্টাপতিবত্বাকথং নবেতিভট্টো। নন্বসূর্য্যম্পশ্যাইত্যত্র অসুর্য্যম্পশ্যন্তীতি বাক্যেসূর্য্যেতরদর্শিত্বার্থে সমাদেকাক্ষতি রিত্যতআহগুপ্তিপরেতি। গুপ্তির্গোপনং পরায়স্থতচ্চতন্বাক্যং মস্থ্যম্পশ্যন্তীতিভস্যতাৎপর্য্যং গোপনং দাগুপ্তিঃ পরায়স্থ তম্ম ভাবস্তাৎ পর্যাং গোপনমিতি
ব্যুৎপত্ত্যাতথালাভাৎ যন্বাতম্মিন্ তাৎপর্যাং বক্ত্রিচ্ছাগোপনবিষয়েচ্ছাতম্ম পর্য্যালাচনয়া সর্বতোভাবেন
ভাবনয়া দর্শনান্বিতনঞাসূর্য্যম্মসমাসঃ তচ্চাত্রসূর্য্যমপিনপশ্যন্তীত্যর্থেনিত্বসূর্য্যতরং পশ্যন্তীত্যর্থইতিভাবঃ।
নব্বেমাকাক্ষাবিরহেনঞ্মুখ্যত্বেচকথং সমাসইত্যতআহ্অস্থ্যত্যুইস্থবেতি। সূত্রেঅসূর্য্যতিপদস্থামকত্বাৎ
ক্রাপনাদিত্যর্থঃ। তথাচসূত্রবলাদাকাক্ষাবিরহেহপি মুখ্যনঞাসহসূর্য্যম্ম সমাসইতিভাবঃ। অত্রনঞ্জিস্থাকারম্যনিম্বোর্থকমিতিকশ্চিৎ। নঞ্জিতিরিক্তস্থাকারস্থাসন্ত্রাৎ অমানোনাইত্যম্ম সমাসাসমাসভেদেন
হৈবিধ্যকথনপরহাদিত্যন্তে। তমুবাচসগোষ্ঠীনেবনেন্দ্রীপুংসভীষণে। অসূর্য্যম্পশ্যরূপাত্বিকার্যমিদং। ১৫২॥
ইতিভট্টিঃ। অরার্য্যস্বত্যর্থং ভ্রমসিঞ্খগতাবিত্যম্ম যিঙ্কেপং শূর্পনথান্তাতি লক্ষাণবাক্যমিদং। ১৫২॥

কুলপূৰ্বা ছক্ৰজ তেৰু দহেরপি খশ্ভবেং। কুলমুক্ৰজানদীকুলমুদ্ধঃ সিন্ধুঃ। ১৫৩॥

বাচং যমদিষম্ভপ পুরন্দর পরন্তপাঃ অরুম্ভানোবহু লিহাব্ত, লিহেরশ্বদা অপি। অপিনা ভগন্দরোব্যাধিঃ। অসংজ্ঞারাঞ্চ সর্বং সহঃ অমীখশস্তানি পাত্যন্তে। বাচঃ যচ্ছতি দিষস্তাপয়তি পুরন্দারয়তি ইরয়াজলেনমাদ্যতীতি-বদাক্যং। ১৫৪॥

क् थ्रमोशिका।

কূল। একাশ্বয়শঙ্কয়ারুজ্বহিভ্যামিতিনকৃতং। রুজোপীড়ায়াং তুদাদিঃ ভঙ্গএববর্ততেকূলং তীরমুদ্রজতিভনক্রীতি কূলমুদ্রজা। উহুচ্ছেদবাচীতেন কূলমুচ্ছিদ্য বহতীতি কূলমুদ্রহং সমুদ্রঃ। ১৫৩॥

গৃত্পকাশিকা

কুলেতি। উংপুর্বরুজোভগার্থঃ। কুলমুক্তজাতীরভঙ্গকারিণী নদীত্যর্থঃ। উদয়ানুদ্ধিঃ শিষ্কুঃ
সরস্বান্ সাগরোহর্ণবইত্যমরঃ। অত্রাপি থশ্ ভবেদিত্যসুবর্ত্তমানং ছন্দোর্থমেকত্রলিথিতং। ১৫৩॥

क्र थ्रमी शिका।

বাচং। যম্উপরমেখশুদ্বিকরণে নিপাতনাংগমিষ্যমইতিনছঃ অমোরপমকারাগমেষুট্বা। বাচং যমেষুনিরিত্যমরঃ। তপ্ ধৃপদন্তাপেছেন্বিনন্তঃ হ্রম্বঃ পূর্ববিন্নপাতঃ দ্বিষন্তপোবীরঃ এবং দ্বিদারণে পুরন্দর ইন্দ্রঃ পরন্তপঃ শূরঃ। অরুন্তদন্তমর্মশ্বস্পৃ গ বাধন্তনির্গলং। নিপাতনাং দলোপেষুট্। ত্রণোহস্তিয়ামীশ্মকঃ। লিহু আমাদনেবহং ক্ষমপ্রদেশং লেট়াতিবহং লিহঃ কাকঃ অন্তঃ মেঘং লেট়াত্যন্তঃ লিহঃ। অনুং লিহাহৈরিবঅন্দনানামিতিনৈষ্ধে। অনয়োরর্থনিপাতঃ মদির্হর্ষেয়্রাপনেচ। ইরাভ্বাক্ স্থরাপ্রুসাদিত্যমরঃ। ইরশ্যদোমেঘঃ অগ্নিক যণভাবোনিপাত্যঃ। ভগন্দারয়তীতি ভগন্দরোনিপাতোহস্বাদিঃ ব্যাধিতদাঃ। অসংজ্ঞারামপীতি। সংজ্ঞান্তপূর্বমুক্তাসম্প্রত্যসংজ্ঞারামিত্যর্থঃ। যদ্বাসহেঃ সংজ্ঞায়াং তু বুভ্ঞিতিসাধিতমিদানীয়সংজ্ঞায়ামপীতি। সর্বাং সহইতি। এবং ধুরন্ধরঃ কাদম্বইতি। তথাচ সংগ্রামেশ্বস্থানাং কৌরবাণাং ধুরন্ধরে। হতেভীম্প্রেপ্রভ্রাব্যেনাভিশ্বাভিরক্ষিতা। ধুর্দ্রেরাহ্পীতি বজ্রধরঃ। ১৫৪॥

গৃত্পকাশিকা।

বাচমিতি। বাচং যমইত্যাদয়ঃ শব্দানিপাতনাৎ সিদ্ধান্তীতিশেষঃ। দ্বিষপ্তপ ইত্যত্রাকারাগমঃ ব্রুশ্চ পুরন্দরইত্যত্রহয়ঃ পরং শত্রুং তাপয়তীতি থশিব্রয়ঃ অরুন্তদইত্যত্রসলোপঃ বহং লিহেতিদ্বয়োঃ ক্রম্মপার্শীত্যেথা। ইরম্মদ ইত্যত্র যণভাবঃ ভগন্দরইত্যত্রহয়য়ঃ। অসংজ্ঞায়াঞ্চেতি। যথাসর্বাং সহাবয়মতীতি সংজ্ঞায়াং তথা সর্বাং সহোজনইতি অসংজ্ঞায়াঞ্চনিপাতিত ইত্যর্থঃ। সহ্সমসার্থ্যেস্কাংসহইতি নিপাতং বিনাপি সিদ্ধাতি কিন্তত্বর্ধং সূত্রকরণমাবশ্যক্ষিতিনিপাতসূত্রয়ভাপিনৈব নিপাতিতং লাঘবাদিতিভাবঃ। ১৫৪॥

বদেঃ খঃ স্যাৎ প্রিয়বশপূর্বাৎ। দাতাপ্রিয়ম্বদঃ। বশম্বদোভূত্যঃ। ১৫৫॥ কূলসর্বকরীষাব্ত্রেক্ষঃ। এযুপদেযু ক্ষতেঃ খঃ স্যাৎ। কূলক্ষ্যানদী। সর্বক্ষয় কলিঃ করীষ্ক্ষ্যাবাত্যা স্মব্ভক্ষ্যোগিরিঃ। ১৫৬॥

ঋতিভয়মেঘেষুক্রঞঃ। খঃ স্যাৎ। ঋতিং ঘ্নণাং করোতি ঋতিঙ্করঃ ভয়ঙ্করঃ তদস্কেচ অভয়ঙ্করঃ মেঘঙ্করোবাতঃ। ১৫৭॥

क् श्विमी शिका।

বদেঃ। বিদর্গান্তোহয়ং খঃ পরত্রেহচ শাঁকুবন্ধবৈফল্যাৎ! বশম্বদতীতি বশম্বদঃ। আয়ত্ততায়া-মায়ত্তে প্রভূত্বেচ বশম্বিত্রিতিবিশ্বঃ। প্রিয়ম্বদঃ খেচরেনাপ্রিয়বাচীচবাচ্যবদিতিমেদিনী। ১৫৫॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

বদেরিতি। বদ্ব্যক্তায়াং বাচি নতুবদ্দৈর্ঘ্যেইত্যস্থগ্রহণমকর্মকত্বাৎ। বদধাতোঃ খঃ প্রত্যয়ঃ স্থাৎ অদন্তোহয়ঃ প্রত্যয়ঃ শনুবন্ধস্থকলাভাবাৎ। বশমায়ভতাং বদতীতি বশম্বদঃ খেমুট্ এবং প্রিয়ম্বদাবশম্বদাস্ত্রী। ১৫৫॥

क् ९ अमि शिका।

কূল। ক্যুহিংসায়াং মূর্দ্ধিন্যান্তইতিনব্যাঃ তালব্যান্তইতিকালাপাঃ দন্ত্যান্তইতিপাণিনিশ্চ। সর্ব্ব-মায়ুর্য্যশঃ শ্রীধর্মাদিকং ক্যতীতি সর্ব্বশ্বং কলিঃ কলিযুগং কলহোবা। কলিঃ শ্রীক্ন্যকায়াং নাস্ত্রা-জ্ঞিকলহেযুগেইতিমেদিনী। ক্রীয়ং শুষ্কগোময়ং। তদ্বিষ্কং ক্রীয়োহস্ত্রীত্যমরঃ। বাত্যাবাতসমূহঃ। ১৫৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কূলেতি। কূলঞ্চ দর্বশ্চকরাশশ্চ অব্ভুক্ষেভিদ্বন্দ্বকরং। কূলদর্ববিধারে উপপদেকষঃ খঃ স্থাদিত্যর্থঃ। কূলস্কাতীরং হিংদকাইত্যর্থঃ। কষ্ইতি মূর্দ্ধনান্তপাঠোবহুষু দৃশ্যতে। তালব্যান্তপাঠেককশ্শব্দে হিংদায়াঞ্চ দন্ত্যান্তপাঠেকদিগতিশাতনয়োঃ শাতনং পাতনং। বাত্যেতি। বাতানাং দমুহোবাত্যান্ত্রিয়ান্তপাশাদেরিতি দমূহার্থেয়ঃ অজাদিস্থাদা। অব্রুস্কষ্ইতি। অপোজলং বিভ্রতীতি ভূঞ্ধারণপোষণয়োরিত্যস্থাং স্থান্মুলবিভুজাদেকঃ ঋ ৯ বণোরলোস্বরে। অব্রুং মেঘোবারিবাহঃ স্তন্মিরু বিলাহকইত্যমরঃ। অব্রুস্কযোমেঘথগুকঃ গিরিঃ পর্বতঃ। অদিগোত্রগিরীত্যমরঃ। ১৫৬॥

क्र ९ अमी शिका।

ঋতি। ঋতিয়্ণায়াং ক্ষ্যাদিয়াৎ কিঃ ঋতিঃ। জ্গুপ্লাকরুণেয়্লেইত্যমরঃ। তদন্তেচেতিবক্তব্যং তদ্তরমন্তোযস্থ ভয়এবতদন্তগ্রহণং নাম্বত্র তেনাভয়য়রঃ শরণাঃ। যদিভয়য়রে নিম্পাদ্যনঞাসাধ্যতে তদানীমভয়োপপদাৎ করোতেরণাছয়িবারঃ স্থাৎ কিঞ্চপ্রত্যয়ানন্তরং নঞ্সম্বন্ধেহর্থভেদোহপি তথাহিভয়য়রোতীতি বৃৎপত্ত্যাযোহভয়ন্দদাতিসউচ্যতে নভয়য়রইতি পক্ষেত্ভয়য়রইতিপক্ষেভয়দাত্রস্থোহভি
ধীয়তেইতিবজ্ঞঃ। ভীমোভীয়োভয়য়য়য়ইত্যমরঃ। ঞ্কুবয়নির্দেশেন ক্য়্সেচনেইত্যম্থনিরাসঃ। ১৫৭॥

ক্ষেমপ্রিয়ভদ্রপূর্বকাদণপি। এষুপপদেয়ু কৃঞঃ অণ্থৌ স্যাতাং ক্ষেমক্ষরঃ ক্ষেমক্ষারঃ ক্ষেমক্ষরীতি সংজ্ঞায়ামী প্রিয়ক্ষরাভদ্রকরঃ মদ্রক্ষরঞ্চাহুরেকে। ১৫৮॥ আশিতপরাদ্ভূবঃ খঃ করণেভাবেচকর্ত্তব্যঃ। আশনং ভাবেক্তঃ আশিতম্ভ-বত্যনয়েতি আশিতম্ভবাশং ক্ষুলী আশিতস্য ভবনমাসিতম্ভবমভূং। বামনাদয়-স্তুপুংস্কমাহঃ। ভট্টিশ্চফলৈর্য্যেম্বাশিতম্ভবইত্যাহ। ১৫৯॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

খতীতি। ঘূণাত্রজুগুপাতাং করোতীতিখঃ মুটচ্। খতিঃ কল্যাণবর্জুনোঃ। জুগুপাম্পর্জুরোঃ স্ত্রীস্থাদিতিমেদিনী। তদন্তেচেতিবক্তব্যং সূত্রং তেনতদন্তে ভয়ান্তে অন্যথাসর্ববৈত্রবতদন্তোপপদেচখঃ স্থাদিতি। ১৫৭॥

क्रथ्यमीर्भिका।

ক্ষেম। বেতিদিদ্ধেশ্গ্রহণং হেক্বাদিবিবক্ষায়ামপি টপ্রতিষেধার্থ মন্যথাযথাপ্রাপ্তিষ্ঠাৎ। ক্ষেমক্ষরীতিদজ্ঞায়াং নিত্যং থমাপ্রতায়প্রাপ্তারপীপ্রতায়শ্চ। কুঙ্কুমারুণদর্বনিক্ষিকুন্দেন্দ্ধবলাননে। ভক্ষ্যভেজ্যপ্রদেদেবিক্ষেমক্ষরিনমোহস্ততেইতি। ক্ষেমপ্রিয়ভদ্রমদ্রেষধিত্যন্তেকালাপাঃ। মদ্রশন্ধেন্সঙ্গলবাচী। ১৫৮॥

গৃত্পকাশিকা।

ক্ষেমতি। তাবুকং তবিকং তব্যং কুশলং ক্ষেমমন্ত্রিয়ামিত্যমরঃ। ক্ষেমং স্থাল্লব্রক্ষণে। চণ্ডায়াং
নাশুভনন্ত্রীকাত্যায়্যাঞ্চমোদিতীতিমেদিনী। প্রিয়োক্ষদ্যেইতবং পুংসির্দ্ধিনামৌদধেধবেইতিমেদিনী।
খঃ শ্রেমণ শিবং তদ্রং কন্যাণংমঙ্গলং শুভমিত্যমরঃ। তদ্রং শিবেধঞ্জরীটের্গভেচকদম্বকে। করিজাতিবিশেদেনাক্লীবং মঙ্গলমুস্তরোঃ! কাঞ্চনেচন্ত্রিয়াং রাম্লাক্ষ্ণাব্যোমনদীষ্ট। তিথিতেদেপ্রসারিণ্যাং
কট্ফলানন্তয়োরপি। তিষুশ্রেষ্ঠেচ সাধৌস্যামপুংসিকরণান্তরেইতিমেদিনী। এমৃপপদেষিতি।
প্রবাপরাত্যমুপপদমিত্যুক্তরাং। অণপীতি। অসমাসেইপিকুত্রচিদিতিনদ্বিঃ অপিনাখন্চ। ক্ষেমস্করইতি।
থেরস্বাম্ট্গুণন্চ। ক্ষেমকারইত। অণির্দ্ধিঃ। ক্ষেমস্করীতি। সংজ্ঞায়াং নদাদিসংজ্ঞায়ামিত্যর্থঃ
নদাদ্যন্তর্গত বিবক্ষায়ামিতি তাৎপর্যার্থঃ। তথাচথপ্রত্যান্তক্ষেমস্করশব্দাৎ ক্রিয়ামীপ্রত্যয়্যএবনন্ত্রাপ্রত্যবাহার। অণন্তানুত্রিয়াং ক্ষেমকারীতিঈপ্রত্যয়ঃ অণন্তস্থনদাদিত্বাং। মদ্রস্করমিতি। একেকালাপাঃ
নবত্সম্মতমিতিহ্নদরং। ১৫৮॥

क्ष्प्रमोशिका।

আশি। ভবতেরকর্মক স্থাদাশিতক ত্পিরাং। যদ্যপ্যস্থাদ্যন্তিতোভূপ্রাপ্তাবিতিচ সকর্মকন্তথা-প্যভিধানানানয়োর্ত্রহণং। থগ্রহণং বেতিনির্ত্ত্যর্থং। অশুকৃপ্রোঅশুভোজনে বা আশমন্তাদাশনমাশিতং তৃপ্তিঃ সমস্তান্তোজনে তৃপ্রিরাবশ্যকীতিতথোক্তং। শংক্ষুলীপিষ্টকজাতিবিশেষঃ। আশিতস্থভবনমাশি- সংজ্ঞারাং তৃরভৃঞ্ ধারিজিদম্তপি সহাস্তথা। প্রনিদ্ধিবশাৎ কর্মাকর্মো-পপদেপিএষাং খোভবতি। রথেনতরতি রথস্তরং সাম পতিং রণীতেপতিশ্বরা-কন্যাবিশ্বস্তরঃ যুগন্ধরঃ বস্কুরাধনঞ্জয়ঃ অ.রন্দমঃ শত্রুন্তপঃ সর্বং সহাভূঃ।১৬০॥

তম্ভবমিতি ভাবেক্লাবেভাবপ্রত্যরান্তাইতিক্লাবন্ধং। ভাবপ্রত্যয়ান্তত্বেংপি বামনাদয়আচার্য্যাঃ আশিতম্ভব-শব্দস্য পুংস্কমান্তঃ। ভট্টশ্চাহ্যথা। হিস্নাসিতঙ্গবীনানিফলৈর্য্যেম্বাশিতম্ভবঃ। তেম্বদৌদ্দ্রশ্বাবিব্বনে-ম্বানভনিভরইতি। অসোরামঃ। ১৫৮॥

গৃতপ্ৰকাশকা।

আশিতেতি। আঙ্পূর্ব অশ্ধাতোভাবেক্টেইট্ আশিতাৎপরাদিতিপঞ্চনীসমাসঃ আশিতে উপপদেভুবঃ খঃ স্থাৎ। খগ্রহণমণ্নির্ত্তার্থং। ফলৈরিতি। যেষুবনেষু ফলৈরাশিতস্তবঃ ভোজনভবনিষতর্থঃ।
ঋতীত্যাদি এতংশূত্রপর্যান্তমার্য্যাজাতিঃ তত্রঅণপীতি পাদান্তস্থলঘোর্বিকল্পেনগুরুত্বং তেনান্টাদশমাত্রাঅব্যাহতাঃ। ১৫৮॥

क्रथमीशिका।

দংজ্ঞা। সংজ্ঞায়ামিত্যন্ত তথাত্বেনোপপদশঙ্কয়াতথা কর্মাকর্মোপপদইতিএতেনসংজ্ঞায়াং গম্যমানামতি রগন্তরং সামইত্যন্তগীতং বেনভেদঃ। অবিশোণ রঙর্ঞোগ্রহণং রুণোতীত্যপিবোধ্যং পতিশ্বরাতবর্মাচেতি একপর্যায়বরাবর্মাশব্দদ্বয়োগ্রহণাৎ। বিশ্বস্তরোইচ্যুতে শক্তেপুংশিবিশ্বস্তরাভূবিইতিবিশ্বঃ। দৃঙ্অবস্থানেহেত্বিনতঃ যুগং যুগকাষ্ঠং ধারয়তীতি অন্তত্তেচিত্রস্বঃ। ক্বরস্তযুগদ্ধরঃ। পর্বতইতি বরক্ষিঃ। বন্তরত্বং ধনঞ্চধারয়তীতি বন্তক্ষরাপৃথী দিখিজয়েরাজ্ঞোজিয়াধনানিজয়ত্যাত্মশাৎ করোতীতিধনজ্বোহর্জ্বঃ। ব্যুৎপত্যন্তরেগ বায়ুরগ্রিত। ধনজ্বেজজ্বোহর্জ্বনি ব্যুক্ষরাপ্রিত। ধনজ্বেজজ্বনিক্তিনাগভিদ্দেহ্মাক্তেইতিমেদিনা। দ্মুতিপরমেহন্তরিনর্গঃ ইনতোবাত্মরিক্সমোবলবানিতি শক্তন্তপঃ শূরঃ সর্বাং সহাভূঃ। ১৫৯॥

গূঢপ্রকাশিকা।

সংজ্ঞায়ামিতি। তৃপ্লবনসন্তরণয়োঃ ভৃঞ্ ভরণপোষণয়োঃ জিজয়েতপ্দস্তাপেভূপ তপ্ঐশর্য্যাপতাপতপঃ করণের উভয়োর্ম হণমবিশেষাৎ। সহ্দামর্থো। তথাপ্রদিদ্ধিবশাৎ কর্মাকর্মোপপদেশীতার্থঃ।
য়থেনেতি। রথেনাবয়বেনতরতিপবিত্রয়তীতি রখন্তরং খেরস্বাম্মুট্। রথঃ পুমানবয়বেক্তন্দনেবেতদেহিপি
চেতিমেদিনী। বিশ্বমথিলং বিভতীতিবিশ্বস্তরঃ। বস্তর্মাদেবভেদায়িভাযোক্ত্বকরাজয়া। ক্লীবং
য়্বেদ্ধায়বিধেশ্যামরৈরয়েয়মধুরেত্রিদিতিমেদিনী। সর্বাংসহাবস্তমতী বস্থধাব্র্বীবস্তমরেতামরঃ। ধনঞ্জয়ইতি।
আর্জ্রনপক্ষেধনং বিত্তং জয়ত্যাত্মসাংকরোতি অয়িপক্ষেধনং জয়তি দদাতি ধনমিচ্ছেদ্ধ্ তাশনাদিতিবচনাৎ
নাগভেদপ্রাণবায়ুপক্ষেরচঃ। ১৫৯॥

গনোডঃ খোইপি। কর্মাকর্মোপপদেইপিদ্যাৎ। সংজ্ঞায়াৎ প্লবগোভুজ-গোইয় ভুজন্মঃ কৃটিলঃ সন্গচ্ছতি প্লবন্ধ্যাঃ হৃদয়ন্দ্মাবানী। ১৬১॥

ব্রোরদোক্তরোরো ভত্রোরিহায়নোবিহঃ। তরোঃ খডয়োঃ পরতঃ সংজ্ঞায়াং। ত্বরয়াউরসাগচ্ছতি ত্রঙ্গমঃ তুরগঃ উরঙ্গমঃ উরগঃ বিহঙ্গমঃ বিহগঃ। ১৬২॥

क्रथ्यमोलका।

গমো। খোবেতিক্তেহন্ততোহপিচেতি ডোভবত্ত্যবৈতিনৈবং কর্মোপপদাদগমেঃ সংজ্ঞামণ্প্রাপ্তেঃ তহিহ্নদয়গাবাণীতিনস্তাং। ভুজকোটিল্যেনামুপেধাং কঃ ভুজঃ কুটিলঃ ভুজগঃ সর্পঃ প্রবেনবেগেনগচ্ছতীতি প্রবঙ্গমঃ। প্রবঙ্গমস্ত্রমণ্ডুকেতথাশাখাসুগেহপিচেতিমেদিনা। হৃদয়ঙ্গমাবাণীতিরুচং। ১৬০॥

গুচপ্রকাশিকা।

গমবিতি। গমোডঃ থোহপিস্থাদিতার্থঃ। গমোডোহপীতি ক্তেইপিনাথবৎ কর্ম্মোপপদাদামঃ
সংজ্ঞায়ামণ্প্রাপ্তেঃ। থোহপীকৃতেতদেবদূরণমিতি। অপিকক্তদমুচ্চয়ে। মর্কটস্তকপিঃকীশঃ প্লবঙ্গমঃ।
প্লবঙ্গঃ প্লবগঃ শাখাম্গোহরির্কলীমুখঃ। বনৌকাবানরোহ্থাসোগোলাঙ্গলোহসিতাননইত্যভিধানচিন্তানিঃ। সর্পঃ পুদাক্তু জগোডুজঙ্গোহহিতু জঙ্গমইত্যমরং। ১৬০॥

क्रथ्यमीलका।

ত্বরো। ত্বাউরদোরুপপদয়োর্গমে,ডঃ খোহপিভবতঃ তয়োঃ খডয়োঃ দাক্ষাতয়োরসম্ভবাৎ খান্তডান্তগমোঃ প্রতন্তমোস্তরোরদোস্তরোরোক্সাতাং বিহায়দোবিহইতিবামাগমলাভায়বিধিঃ। তেনবিহঙ্গইতি। ত্বর্লবেগেনগছতীতিত্বুলগঃ ডঃ খেতুরঙ্গমঃ উরদাগছতীতিডেউরগঃ খেউরঙ্গমঃ। বিহায়দাআকাশমার্গেণ গছতীতিবিহগঃ পক্ষী। ১৬১॥

গূতপ্রকাশিক।

ত্বরহিতি। ত্রোরিতি পূর্বেমরামর্শকং তেনথডরোরর্থাৎ থান্তডান্তগমোঃ পরতইত্যর্থঃ। অত্রাপিন্ত্রামিত্যকুবর্ত্তে। বিহারদোবিহইতি পৃথক্করণং বামাগমলাভার তেনবিহঙ্গইতি। ঘোটকেপীতি তুরগ তুরঙ্গান্ম তুরঙ্গমাইত্যমরঃ। উরঙ্গমঃ স্থাত্রগইতিকামঃ। খগেবিহঙ্গবিহঙ্গমিবিহায়সইত্যমরঃ। স্ব্রেডেহন্তাবরাদিলোপঃ থেরস্থামুট্থকুবদ্ধান্তধাকুর্। সংজ্ঞায়ং কিং। ভ্রমরৈর্দ্রগন্তানিপ্রশিল্পীয়চ মধ্নিসানুরগেস্তানি। দত্তনিরাগন্তানিপ্রাপত্রমঞ্জনস্বরাগন্তানিতি নলোদয়ে। অস্তার্থঃ। সামুরাগঃ এবং ত্রাগঃ শীত্রগোজ্ঞনং তানিমধ্নিপ্রাপীয়শয়নং পর্যাঙ্কং প্রাপদশিশ্রেরৎ কীদৃশানিদত্তনিরাগন্তানি দত্তানিরাগন্তা নিরপরাধতাবৈঃ মত্তভাজনকতয়া অপরাধ্যত্তকানীত্যথঃ পুনংকীদৃশানিভ্রমরৈশ্চমকোপরিস্থিতৈঃ দ্রাক্ষ্টিতি অস্তানি ক্রিভির্তিলাতিয়বিহশয়নং কীদৃশং তানিতানোবিতানোহস্তান্তেতিইন্। অএত্রাগইত্যক্র মহরায়ান্তরঃ অন্যতোহপিচেত্যনেনভঃ। ১৬১॥

পতঙ্গং প্লবন্ধে ভুজঙ্গন্ত । বিহঙ্গত ডপ্রতারান্ত নিপ্রতার । ৬৩॥
মন্তেরিন্ থশাবাত্মমানে। স্বসম্বি প্রত তি কর্ত্তরিব চের কর্মোপদেমন্ধাতোরিন্ থশোস্তঃ। শোভনমানিনী দর্শনীয়মিব তানং মন্তইতি দর্শনীয়ম্বন্যঃ জ্ঞান্যা। ১৬৪॥

क्ल्थिकी ।

পত। পতন্ গচ্ছতীতি ডেনিপাতনাত্তস্থবিন্দুং। পতক্ষোপিক্ষিদুর্য্যোচ। সূর্য্যঃ পত্তেববাহনেন পক্ষীতু পত্তেব পক্ষেণ গচ্ছতীতি কালাপাঃ। যথাযথমেতেনিপাত্যাঃ। ১৬২॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা ৷

পতঙ্গইতি। পততীতি পতন্ বর্ত্তমানে শন্তু শানাবিতি শন্তঃ পতন্ গছতীতি অন্যতোপিচেতিডে নিত্যসমাদে তক্ষমঃ! ক্ষতিনাথভট্টাচার্যস্তিনোময়ং নিপাতইত্যাহ তন্ত্রমনোরমং সমাদে অন্তার্যপ্তনেতি নলোপে তক্ষাবন্থিতেঃ অনেনগমোডপ্রতায়স্তেন পতন্গইতি ভিন্নপদমেবেতিনোময়ং সম্ভবতীতিমৈবং তথাসতি পতঙ্গস্তাপত্যং পাতঙ্গিরিতিপ্রয়োগানুপপতেঃ। যদপি কংপ্রদীপিকায়াং তক্ষবিন্দ্রিত্যক্তং তদপি ন সম্যক্ মেক্তেপতঙ্গাদিসিদ্ধা বিন্দ্ররণাৎ পরং বর্গেত্রগপঞ্চইত্যন্তাপ্রথগোরবাপতেঃ। নিপাত্যাইতি। নিপত্তগতে হৈতৃকেনন্তঃ তন্ত্রাৎ কর্মণিয়্যণ্। সোমরাজীছন্দঃ দিয়াদামরাজীতি তল্লক্ষণাৎ যকারআদি লঘুর্গণঃ পুনরাদিলঘুর্যইতিছন্দোমঞ্জর্যাং পরিভাষিত্রাৎ। ১৬২॥

कृ श्रमीशिका।

মন্ত্রানেদিবাদিঃ আজানং দেহং দেহিন্দ্রা স্থ্যতুষ্থাদিগুণবিশিষ্ঠং মন্যতইতি কৃষ্যভিচারাৎ কর্মণণ্ আজ্মনানঃ নচেৎ থশ্প্রাপ্রোতি তাদৃক্মন্কর্ত্রিবাচ্যে যবাভাবেঘঞ্ তল্মিন্ গম্যে। মানশ্চিত্ত-সমুন্নতিরিত্যমরঃ। যথাব্যাদশ্চ। মোহোধর্মবিমূচ্যং মানস্থাজাভিমানিতেতি। পরাজ্মানপ্রদক্ষভঙ্গায় দৃত্রং ব্যাথাতিস্বতি। স্বস্তাজ্মন কর্মজ্ভস্ত দম্বন্ধিনীযান্ত্রগৃহ্যুণাদি গুণপ্রতীতিজ্ঞানং তস্তাঃ কর্ত্তরি জ্ঞানাধারে অস্তরাজ্মনিবাচ্যে এতেনসামান্তেহিত্বত্বমানেহপি কর্মণিমুগ্যতোগেণিতশ্চাত্মকর্মলাভস্তেনাজ্মনি আজ্মবিশেষজ্ঞানাদেচি কর্ম্মণুপেদেতিঘ্রেয়ক্মানে অথত্য্যাদিবৈশিষ্ট্যবিশিষ্টকর্ত্তরিবাচ্যেমন্ধাতোনির্যান্ত্রিভিন্তি । তেনাজ্মানীশোভনমানীজ্ম্মন্ইত্যাদিসিদ্ধাতি। নচৈত্রস্তদশ্নীয়ম্বাত্যামৈত্রইতি। আজ্মনমাজ্মনবেৎসীতিবৎজ্ঞম্মত ইত্যাদে স্বিদ্ধিক্ত্রিরাক্ত্যান্ত্রিভিন্তির্বশেষিক্মতেহপ্যেয়এবন্যায়ইতি। প্রাক্তন্ত্রমননং মানোজ্ঞানন্ আজ্মনাবহিরাজ্মন কর্মভৃতস্তমানঃ অস্তরাজ্মকর্ত্বং জ্ঞানং তিম্মন্ত্রিমানাম্মনতেঃ কর্মণুপেপদেশ্বসম্বন্ধিপ্রতীতিকর্ত্তরিবাচ্যেণিন্ থশাবিভি সংযোজ্যজ্ঞানস্থাজ্তণকেন প্রত্যাসভ্যাচাজ্যানমন্তরেগাজ্যোপলস্কাদাত্মপদং বাহীভৃত্তাজ্মপরং তথাচ বাব্যাহ্রসমবেতঃ সম্ভত্তরাসন্ধ যথাঘটন্ত প্রত্যাসন্ধানিকপালানি তথাজ্ঞানোৎপত্তাবাজ্মন সমবায়িকারণ্ডেন শরীরাদীনি প্রত্যাসন্ধানিভবন্তিত্থাপান্ত্রগ্রহণং বাহীভৃতাজ্মার্থমিতিভাবঃ। তেনস্বন্ধিন্বাহীভূতে শরীরেবহিরাজ্মনিসমন্ধং সবিদ্যতে অস্তাইতি স্বসম্বন্ধিনীযাপ্রতীতিজ্ঞানং তস্তাঃ কর্ত্তাজ্যানাধারঃ। আজ্মান

নগ্নান্ধপলিতস্থ্ল প্রিয়াত্যস্থলগংপরাং। তুবশ্বার্থেখুকঞ্থিষ্ট্। কর্ত্তরি-স্যাতাং। নগ্নস্থাবুকআগতঃ। নগ্নস্থিবিষ্ণুঃ অনক্ষোঅন্ধোভবতীত্যন্ধন্তাবুকঃ অন্ধন্তবিষ্ণুঃ অর্থগ্রহণাংচ্যুম্ভেনাভূং আঢ়ৌভবিতা। ১৬৫॥

অহমিতিপ্রতায়োয়েনাবলন্যতে সজ্ঞানাধারোহন্তরাত্মেতিযাবৎ তিমান্ বাচ্যে তথাচ যদাপ্রতায়ার্থঃ কর্ত্তান্দর্শনার বিশিষ্টমাত্মানং শরারং মন্ততে তদায়ং বিধিঃ তেনাত্মনাত্মনং মন্ততে জানাতি যদা তদাবিশেয়রপেণ মুখ্যতয়া আত্মন্মন্ত ভবতি। উপলক্ষণমেতৎ যদাস্থপত্র্থাদিবিশেবণবিশিষ্টং কৃষ্তাল্মনং মন্ততে তদাস্থপত্র্থাদাবপুপেপদেভবিষ্যতোব্ স্থথিমান্তোদশনীয়দ্মন্তইতি। অথযদিশরীরসৈব গ্রহণং কথংজ্ঞান্তইতিমতামুচ্যতেজ্ঞানস্থাত্মীয়ত্মেন জ্ঞানাধারস্থাপ্যাত্মীয়ত্মোপচারাম্বহিরাত্মমানম্বাদহমিতি। বস্তুতপ্ত অনুভণস্বাদাল্লাভেইপি তত্পন্তাদেনমুখ্যস্থ গৌণস্থাপাত্মনাগ্রহণম্বত্দশ্মতং তেন মুখ্যস্থাহণে জ্ঞান্তইত্যাদি গৌণস্তবাহ্যীভ্তশরারস্থাহণে দীর্ঘন্তইত্যাত্যপপদ্যতে শরীরেহপ্যহং স্কুলঃ কৃশোহ্যক্রমন্ত্রাত্মপদ্যত গ্রহণ ক্ষানাতীতি কল্পনীয়ম্ আত্মনং পরমমহংপ্রত্ত্যারপত্মপ্রমাণাসম্ভবাৎ এতেন যন্মাত্রপপদাৎ প্রত্রোবিধাতব্যামানইতাপি তত্তিবিতি ব্যাখ্যাত্ম। ১৬৩॥

गृष् अकाशिका।

মহাতেরিতি। আল্মানে বাচ্যে কল্মাকর্ণোপপদে দিবাদি মন্ধাতোঃ ণিন্ থশে স্থিইতিযোজনা। আল্মানং বাচেন্টেমেতি। স্বস্তকর্মভ্তস্থালনং শরারস্ত জীবস্তচ সম্বন্ধিনীবিধনিনীযাপ্রতীতিজ্ঞানং তস্তাঃ কর্ত্তাশ্রেষ্তাদৃশজ্ঞানাধারইতিয়াবং ত্তিমন্বাচোতেন শোভনমানিনীজ্ঞান্তইত্যাদিসিদ্ধাতি শোভনজ্ঞান্ত্রের্যোথ্যখনস্থাং। শোভনমানিনীত্যাদি। আল্লনং শরারং শোভনং মহাতেপশনীয়ং মহাতেআল্লনং জীবং জ্ঞানবিশিন্তং মন্তাইতি শিন্ধশৌণিনিপ্রুবন্ধত্বেনর্দ্ধিং থাশিশিতি দিবাদিশাদ্যণ্মুট্চ। বিস্তরঃ কৃৎপ্রদীপিকারামবলোকনীয়েঃ। ১৬০॥

कृष्पुमीशिका।

ন্মা। চৃংথেগিম্মানে। ন্মাহ্বাদাদিগন্তঃ। ল্যোল্যকইভি কেচিৎপঠিন্ত নৈতৎপূষ্পং যদস্কত্বনং চিরায়ক্ষিপ্রজন্মস্করণং রিপুণাং। কান্তং যদাচ্যক্ষরণং জনানাং বন্দেভদেকং তবদেবরূপমিতিভট্টবর্থন্দ্রতঃ। অক্ষাদৃষ্টিহীনঃ। পলিতং জরদাশোক্ষ্যমিত্যমরঃ। যদ্যপি পলিতশব্দেনকেশাদেঃ শৌক্ষামূচ্যতে তথাপিশ্মীবক্তব্যঃ অভ্যথাচুর্থাদন্তবাহ। স্থুলোমাংদলং প্রিয়েছিতঃ আদমন্তাদ্ব্যায়-তাত্যন্তাহপিচেতিভাত্রেনিপাত্যঃ আঢ্যোগুণাদিদম্পন্নঃ। ইভ্যআঢ্যোধনীস্বামী স্থভগোভাগ্যবান্প্রাইতি। অর্থগ্রহণাদ্ব্যব্দেশভাহ আঢ্যাভিবিতেতিদামান্যতোবিধানাত্ত্। নম্থিদ্বাপি চ্যুন্তভা ব্যাহ্রস্বন্তাগ্যাপ্রাপ্রে থকুবন্ধদামর্গ্যাদ্ব্যক্ষিত্র তিবিদ্যালিত্বির্ভত কিঞ্চাণ্যকরে।তি তৈলেনেতিপরত্রথনট্প্রতিবিদ্যাতে। ১৬৪ ।

কঞঃ খনট্স্যাৎকরণেতথা। চ্যুর্থেনগ্নান্ত্যপপদে। অন্ধন্ধরণীক্ষ অনগ্নং নগ্নং করোত্যনেনেতিনগ্নন্ধরণং দ্যুতং পলিতন্ধরণীজরাস্থূলরূরণং মাংসং প্রিয়ন্ধরণোগুণঃ আঢ়ান্ধরণং বিত্তং স্থভগন্ধরণং রূপং তদন্ত প্রাকৃণিং অপ্রিয়ন্ধরণ-মিত্যাদি। চ্যুর্থেকিম্ আঢ়ান্ধরোতিতৈলেন অভ্যঞ্জয়তী অর্থঃ। আঢ়্যীকরণং রসায়নং স্থলীকরণমৌষধ্যমিতি চ্যুন্তেইপ্যুদাজহারভাষ্যকং। *। ইতিখনুবন্ধ-প্রকরণং। *। ১৬৬॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

নয়েতি। নয়াদিসপ্তকোপপদাৎ। নয়স্তাবুকইত্যাদি। অনয়োনয়োভবতীতিখুকঞিঞজুবন্ধ-বেনইজদ্বাবেরদ্ধৌ থকুবন্ধতয়ায়ৢট্ নয়ং ভবিফুরিত্যত্রগুণঃ এবমন্যত্র। অর্থগ্রহণাদিতি। চ্বাবিত্যকুলুচ্বুর্থ-ইত্যর্থগ্রহণাদিত্যর্থঃ। চ্বান্তেচিপ্রতায়ান্তেউপপদেখুকঞ্থিফুশ্চমাভূৎনস্থাদিত্যর্থঃ। আচ্যীভবিতেতিচ্বে-অবর্ণব্রস্বয়োরিত্যকারস্কঃ। ১৬৫॥

क् थमीशिका।

কুঞ:। ন্মাদিকর্মপূর্ববিশংকুঞঃ করণেবাচ্যেখনট্স্মাং। টিল্বাদী। ব্যঞ্জনাংকচিদান্ত্রীরুগ্রুজা। পলিতক্ষরণীতি। অপলিতবন্তং পলিতবন্তং করোত্যনয়েত্যুর্থ:। তদন্তেতি। অভিধানঞ্চপ্রিয়াদীনামেব। আঢ়ক্ষরণমিতিঅনাঢ্যং গুণাদ্যসম্পন্নং করোত্যনেনেত্যুর্থ:। অভ্যঞ্জয়তীত্যুর্থ ইতি। ধাতুনামনেকার্থস্থাৎ করোতিরিহাভাঞ্জনার্থেত্ইতিভাবঃ। অথানভাক্তস্থাভাঞ্জনেব্যক্তএবচ্যুর্থঃ কথং তম্মাবিবক্ষাকর্ত্তুং শক্যতইতিচেত্চ্যতে অভ্যঙ্গধাত্মর্থেত্স্যবর্জনীয়রাংব্যক্তং নাত্রাভূততদ্ভাবোবিবক্ষিতোহপিত্বভূতপ্রাপ্তর্ভাব-এবইয়মন্য্রোভিদা। যথাহভট্টঃ বিবক্ষিতাবস্থিতধর্ম্মিসমান্ত্রয়োহজ্বার অবিবক্ষিতধর্ম্মিসমাশ্রয়ে কনীয়ানিতি। অস্থার্থঃ বিবক্ষিতোবস্থিতোধর্ম্মীন্সমান্ত্রোয়ম্ম স দ্যেষ্ঠঃ অভ্ততদ্ভাবঃ অবিবক্ষিতোধর্ম্মীন্সমান্ত্রয়োযস্ত্রসকনীয়ানবরোহভূতপ্রান্তর্ভাবঃ ইহয়াত্যশক্ষেব্যুৎপত্ত্যুর্থং পরিত্যজ্ঞাভ্যঞ্জনক্রিয়ামাত্রবাচী অতোনসইতিভাবঃ। আত্যীকরণ্মিতি। অপিনাচ্যুর্থেইপিতেনৈকত্রখনুবন্ধস্থ সফলত্বনচ্যুত্তেহকলত্বেহপুদাজহারভাগ্যক্রৎপাণিনির্ভিকারঃ পর্য্যত্তবংশক্রপ্রত্তিভাবঃ। ৯। ইতিখনুবন্ধপ্রকরণবিবরণং। ৯। ১৬৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

কুঞাইতি। তথাশক্ষ্যার্থঃ ন্যাত্মপদিটেতি। ন্যক্ষরণং দ্যুত্মিতি। দ্যুত্মক্ষক্রীড়াদ্যুত্নে পরিধানবস্ত্রমপিনতিষ্ঠতীতিফলিতার্থঃ। পলিতঙ্করণীতি। অস্থাক্তয়ৈবপরিপালয়তঃ প্রজাং মেকর্ণোপ-কণ্ঠপলিতঙ্করণীজরেয়ং। যদগর্ভরপমিবমামমুশাস্তিসর্কমদ্যাপিতন্ময়িগুরুগুরুপক্ষপাতইত্যনর্যে। বালকেতরুণেহপিস্থাদগর্ভরপইতিবিশ্বঃ। স্নেহদ্রব্যোপাদশিশাম্রক্ষণমভ্যঙ্গঃ। রসায়নং বিষেহপিস্থাজ্জরাব্যাধিজিদৌব্রেইতিমেদিনী। জরাব্যাধিনাশকোব্রধনাপিআচ্যীভবতি প্রচুরধনপ্রাপ্তেঃ। ঔষধং প্রোমক্রেমাব্রধমিত্যর্থঃ। *। ইতিগৃত্পকাশিকায়াং থকুবন্ধপ্রকরণবিবরণম্। *। ১৬৬॥

কুমারশীর্ষোপপদাদ্ধন্তের্নি। শীর্ষং ছন্তি। শীর্ষণাত্রদৌ। কুমার-যাতী। ১৬৭॥

নরান্যকর্ত্কাদ্ধন্তেষ্টক্। বাতং হস্তাতি বাতন্নং স্বতং পিব। পতিন্নীপাণি-রেখা দ্বঃ স্যাদগুণিনিম্বরইতিন্নঃ। নরান্যেতি কিম্ আখুযাতঃ শূদ্রঃ চৌর্ঘাতো গজইতি কৃদ্যভিচারাং। ১৬৮॥

কপাটহন্তিনোঃ শক্তো। হস্তেইক্ স্যাৎ। কপাট্যোইয়মর্ভকঃ। হন্তিঘ্রী-বাললীলাস্য। ১৬১॥

क्र ९ अमी शिका।

কুমার। কর্মাধিকারাৎকুমারশীর্ষেকর্মণী উপপদেয়স্থ তম্মাদ্ধন্তের্ণিন্ স্থাৎ। সপ্তম্যন্তমকুম্বোপ-পদাদিতি সপ্তম্যন্তোপপদত্বানিত্যার্থমিত্যুক্তমুপপদসূত্রে। কুমারঃ স্থাচ্ছুকে স্কন্দেযুবরাজেইশ্বচারকে। বালকেবরুণাদ্রোনানবয়োর্জাণ্ড্যকাঞ্চনেইতিমেদিনা। নিন্দায়ামভিধানাৎ কুমারং বালকং হন্তীতি কুমারঘাতা। উত্তমাস্থং শিরঃ শীর্ষমিত্যমরঃ। শীর্ষং হন্তীতি তথা। ১৬৭॥

গৃত্পকাশিকা।

কুমারেতি। কুমারশীর্ষোপদাৎ হন্হিংসাগত্যোরিত্যস্থাৎ কর্ত্তরিণিন্। শীর্ষং হন্তাতি শীর্ষাতী-ণিনি ণসুবন্ধতয়া ইজ্ভাবেহত্তেস্ত্রঘাৎউপপদস্মাসঃ। শীর্ষাত্যসাবিত্যতং ছন্দঃ তেনব্যতিক্রমোদাহরণং ন দোষাবহং। এবং কুমার্ঘাতী। ১৬৭॥

क्ल्थमीशिका।

নরা। হত্তে প্রহণং সামান্তকর্মোপপদার্থমন্তথাকুমারশীর্ব রোরন্তুর্ভিঃ স্থাং। নরান্তঃ কর্ত্তাযম্ত নদ্যদন্তাদিতি কপ্। বাতমনিতি টকিল্লঃ স্থাং। আখুয়াতইতি কর্মাণ্ণ। ,উন্দুরুর্ম্বাবিকোহপ্যখঃ। গজইতিনরান্তকর্ত্কত্বেহপিনটক্। শন্তুনাস্বগজইতিসূত্রং কৃতং। ইতেরাদ্যর্থস্বাৎগোদ্যোদন্তারিত্যাদি। দৃশ্যতেচপ্রয়োগঃ। ব্রহ্মান্তে প্রবাপেচ চৌরেভগ্নতেতথা। নিক্কৃতির্বিহিতাসন্তিঃ কৃতম্বেনাস্তিনিক্কৃতি-রিতি। ১৮৮॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

নরান্তেতি। বাতম্মতি। টকিকসুবন্ধরেম্নঃ স্থাদগুণিনিম্বরে ইতিহন্তেম্ব । পতিম্নতি টিবাদা। পাণিরেখেতি। সামূদ্রিকপ্রসিদ্ধা। যথা অঙ্কুঠনূলান্নিগত্যরেখাযাতিকনিষ্ঠিকাং। যদিস্থাৎ পতিহল্লাদা দূরতস্তাংত্যকেৎস্থণীরিতি। গজইতি। হস্তাত্যর্থঃ। গজোমানে মাতঙ্গজেইতিমেদিনী। নরান্তেতিমন্দ্রত্যাশব্য নঞর্থতয়া নঞোহনিত্যস্থাচ নঞ্গ্রানিত্যমাদিত্যর্থতয়া শক্রম্মে গোম্মেদ্যুরিত্যাদি দিরাতি। ১৬৮

क्ट्यमीशिका।

কপা। কপাটহস্তিনোঃ কর্মণোরুপপদরোঃ শক্তোগম্যমানায়াং। মনুষ্যকত্রর্থং বচনমিদম্ মন্যথা সামান্যতঃ পূর্বেণিসিন্ধেঃ। কপাটমররং ভূল্যে। হস্তীপ্রসিদ্ধঃ তয়োর্হননাৎশক্তির্গম্যতে ।১৬৯॥ নগরযুস্তহন্তিনি। হস্তিনিত্ব নগরযাতঃ বহুঘুইত্যপি কশ্চিৎ। ১৭০॥ জারাপত্যোর্লক্ষণবৃতি টক্। হস্তেঃ স্যাৎ। লক্ষণং চিহ্নং। জারায়োইরং ব্রাহ্মণবালঃ। পৃতিদ্বার্ষলাতাদৃক্ চিহ্নবতীত্যুর্থঃ। ১৭১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কপাটেতি। শক্তোসামর্থ্যেগম্যে। কপাটং হন্তীতিকপাটন্নঃ। অর্ভকোবালকঃ। অর্ভকঃ কথিতোবালেমূর্থেইপিচ কুশেইপিচেতি মেদিনী। হস্তিনং হন্তীতি হস্তিদ্ধী অস্তর্ভীমদেনস্থ। ১৬৯॥

कृ अमिनिका।

নগর। অহন্তিনিকর্ত্তরিনগরন্ধ টগন্তঃ সিদ্ধ্যতি। বহুদ্ধঃ ইত্যহন্তিনিক শিচদাহ। ১৭০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নগরেতি। নগরং হন্তীতি নগরত্বঃ টকিহন্তের্রঃ উপপদসমাসঃ। নহস্তীঅহস্তী অহস্তিনিহস্তিভিনে কর্ত্তিরিদোদাহরণং সূত্রমিদং। নগর্ঘাতইত্যহস্তিকর্তৃকে অণ্ ইত্বং হন্তের্যাৎ। বহুত্বইত্যপীতি। তুশব্দাত্বহুত্বস্থিত। তথাচ নগরত্বস্তুহস্তিনীতিসূত্রং তন্মতানুসারিচেতিভাবঃ। হস্তিত্রী বাললীলাস্থনগরত্বস্তুহস্তিনীতিচ্ছন্দঃ। ১৭০॥

क्ः अमी शिका।

জায়া। জায়াপত্যোঃ কর্মণোরুপপদয়োঃ লক্ষণবতি উপপদয়েন তদ্ধননচিহ্নবতিদেব মনুষ্যে কর্ত্তরিবাচ্যে। অত্রলক্ষণবতীতুপোদানাল্লক্ষণবতঃ কর্তৃত্বমোপচারিকমন্যথাজনান্তরীয়কর্মোপলক্ষণবশাৎ ভাবিনিব্যালব্যাস্থাদিকর্তৃকেতদ্ধননেকাপ্যকর্তৃত্বমিতি অতস্তাদৃক্ব লক্ষণবতীতি স্বয়মুক্তং। যদাতু প্রাক্তন-কর্মণালক্ষণবান্ স্বয়ং হন্তিতদামুখামেব কর্তৃত্বমিতি। গবাদোতাদৃশলক্ষণাভাবাদহস্তিনীতিনাত্রসম্বধ্যতে। তৎকস্থাঞ্চিৎপতিঘাতিন্যাং দৃষ্টিমিবেতি তাদ্গিতি। ১৭১॥

গুটপ্রকাশিকা।

জমেতি। জায়াচ পতিশ্চেতিদ্বন্ধঃ তয়োরুপপদয়োঃ লক্ষণবিতঅর্থেইন্তেইক্ স্থাদিত্যর্থঃ। লক্ষণং
চিহ্নমিতি। জায়াপতিহননচিহ্নং। চিহ্নং লক্ষচলক্ষণমিত্যমরঃ। তচ্চ শরীরগতং কোষ্ঠীগতঞ্চ। যথা
সময়প্রদীপে। চতুর্থেচাই্টমেবাপি শুক্রাৎপাপগ্রহোযদি। সোহপি জায়াবধোবাচ্যোবহ্নিযোগসমুদ্ভবইতি।
জায়াং ভার্যাং হন্তীতি তাদৃক্চিহ্নবান্ জায়াদ্ধঃ এবং পতিদ্বী পতিহননচিহ্নবতীত্যর্থঃ। যথাসময়প্রদীপে।
কন্যায়া অইনেচান্তেলগ্রাচ্চন্দ্রাচ্ছ্মিজঃ। তদাপতিবধং কুর্যাৎ শক্রতুল্যোভবেদ্যদীতি। রুষলস্থভার্যাঃ
রুষলী পুলিঙ্গেভ্যস্ততৎস্ত্রিয়ামিতীপ্রত্যয়ঃ। শুদ্রাশ্চাবরবর্ণাশ্চ ক্র্যলাশ্চ জ্বয়জাইত্যমরঃ। ১৭১॥

পাণিয তাড়যশকৌ শিম্পিনি। ত্যড্যতে২দৌতাড়োয়দঙ্গাদিশুত্র পাণিং তাড়ং হন্তীত্যর্থেচ টগন্তনিপাতঃ মার্দ্দঙ্গিকাদিঃ শিম্পী। ১৭২॥

রাজ্ঞাং জেতরিরাজ্যইক্টঃ। ১৭০॥

দার্বাঘাটশ্চার্বাঘাটঃ পদসংঘাটোইক্ষরসংঘাটোবর্গ ঘাটশ্চ রাচাএতে। অন্যত্র পুনর্বস্থাঃ দার্বাঘাতোইক্ষরসংঘাতঃ কর্মাণ্যণ্। ১৭৪॥

क्ः अमी शिका।

পাণি। শিল্পিনিকর্ত্তিরিটগন্তো নিপাতোতে। তডআঘাতে চুরাদিঃ ঘঞিতাড়োয়দঙ্গাদিশিল্পভাণ্ডং। তাড়স্ততারণে ঘোষেমুস্টিমেয়তৃণাদিষিতিমেদিনী। পাণিং হন্তীত্যন্তরন শিল্পিনোহবগমাতত্তিতি অর্থান্ম্ দঙ্গাদে পাণিং হন্তিক্ষিপতীতি পাণিঘোমুরজবাদকঃ। পাণিবাদাস্ত পাণিঘাইত্যমরঃ। তাড়ং হন্তীতি তাড়ঘোমুদঙ্গাদিবাদকঃ। ১৭২॥

গৃতপ্রকাশিকা ৷

পাণিঘেতি। আভ্যাসিকজিয়াপ্রকর্ষোপেপাদকং জ্ঞানং শিল্পং তদস্যাস্তীতীন্। শিল্পিনিকর্তরি পাণিঘতাড়ঘশকে নিপাতোতেইতার্থঃ। মান্দিঙ্গকাদিরিতি। মুদঙ্গবাদনং শিল্পমস্থেতিবাক্যে শিল্পালকণ্ শিল্পমিতাকণিবৃদ্ধিঃ আদিনামাজ্যুকিকাদে এইণং। শিল্পীতি। অত্তাদৃশমান্দিঙ্গকাদিঃ শিল্পীতার্থঃ। ১৭২॥

क्थमीिका।

র:জ্ঞা । বহুর্নির্দেশাৎ বহুরাজজেতরিরাজ্য টকিনিপাততে। ররাজনীরাজনয়াসরাজ্য-ইতি শ্রীহর্ষঃ । রাজ্যেহন্তীতি রাজ্যইতি তটীকা । সিদ্ধপদোপাদানাৎকর্মাধিকারাচ্চনিত্যসমাসঃ ।১৭৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

রাজ্ঞানিতি। জিজয়েত্চিগুণঃ তাজিন্। ইন্টেইতি। ইবুইচ্ছায়াং কর্মণিক্তঃ। অনল্লদগ্ধারিপু-রানলােজ্জলৈরিজপ্রতাপৈর্বলয়ং জ্লদ্রঃ। প্রদক্ষিণীকৃত্যজয়ায়স্ন্ট্যাররাজনীরাজনয়াসরাজ্যঃ। জায়া-পত্যােরিতাাদি এতংসূত্রপর্যতঃ পদ্মটিকাছন্দস্তত্রজায়ামোধ্য়ং ব্রাহ্মণবালইতি দ্বিতীয়পাদঃ। ১৭৩॥

क्ट्रमिशिका।

দার্কা। দারুকার্ডমাহন্তীতি টকিনিপাতোঘাটাদেশঃ। দার্কাঘাটঃ কার্চকুটোদার্কীঘাটঃ শত-চছদ ইতিশব্দার্থা। চারুফুন্দরমাহন্তীতি চার্কাঘাটোযুণইতি সম্প্রাদায়ঃ। পদসংঘাটোকহিঃ। অক্ষর-সংঘাটোর্গ্যাটোর্গাটোর্গাটিবিশ্যো। অক্যক্রার্কের্যাণ্ড্। ১৭৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

দার্কেতি। এতেদার্কাঘাটাদয়ঃ পঞ্জয়াঃ প্রাসিদ্ধাঃ টগন্তহন্ ধাত্বনাবিশাতনাৎ সিদ্ধান্তীত্যর্থঃ।
চকারউক্তসমূচ্চয়েপুর্কসূত্রমেতংসূত্রঞ্পদোদাহরণং। শব্দার্গবৈশক্তদার্কীঘাটইতি প্রোদরাদিত্বেন আ ঈঃ।
অন্যত্র রূত্রদেশ্যবিদ্ধানিক। বিসয়ে নম্মক্তরূপাঃ প্রয়োগানিপাত্যানম্মঃ তেনদার্কাঘাতোহক্ষরসংঘাত
ইত্যত্রকর্মণ্যণ্। দার্কেত্যাদি অক্ষরসংঘাতইত্যন্তং পক্ষাটিকাছনাঃ। ১৭৪॥

দ্বহুং কোহশ্চয়ঃ। কর্মোপপদে। সর্বত্বয়া কামত্ব্যাচন্যোঃ।১৭৫॥ প্রাদৌচ ভজতের্বিণ্ স্যাং। কর্মোপপদে। অর্থভাক্ স্কৃতীপ্রভাক্।১৭৬॥ সহস্কৃত্বসং সংজ্ঞায়াং বিণ্। লোকেইপি প্রযুজ্যতে। কর্মোপপদেস্যাং। পৃতনাষাট্ সেনানীঃ তুরং পরমদাবলেপং ন সহতইতি তুরাষাট্। তুরাসাহুং পুরোধায়েতি কুমারে। বিরামাণ্যোঃ স্ক্রামাদিত্বাংষত্বং।১৭৭॥

কৃৎপ্ৰদীপিকা।

ছহঃ। স্বদূরত্বেন পরিদৃষ্টশঙ্করাস্মারয়নাহ কর্মাইতি। কপ্রতায়োঘাদেশঃ ন বিপর্যায়োঘসুবন্ধবৈফল্যাৎচকারেণ গোণীকৃতত্বাচ্চনহিগোণীভূতঃ প্রতায়ঃ। সর্ব্বমভীষ্টং দোগ্ধীতি সর্বব্রুঘাকামং কাঁম্যং
গোগ্ধীতি তথা। বাসরপন্থায়াৎ কিপিকামত্নহোধেনবইতি। অণিভ্ত্যার্তিহং প্রণতপালমভীষ্টদোহমিতিকৃত্ব্যভিচারাদভীষ্টশ্র পশ্চাদেযাগাদ্দিবা সিদ্ধিঃ। ১৭৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ছুহ হৈতি। ছুহ্ প্রপুরণেকঃ হশ্চঘাদেশঃ। সর্বাহ্যেতি। কিন্তাদ্গুণাভাবঃ। কামছুঘেতি। গোগোঁঃ কামছুঘাসম্যক্প্রযুক্তান্মর্যতেরুধৈঃ। ছুপ্রযুক্তাপুনর্গোত্বং প্রযোক্ত্যু সৈবশংসতীতিকাব্যা-দর্শে। ১৭৫॥

क्रभूमोिशका।

প্রাদৌ। প্রাদাবুপপদেচকারাৎ কর্মণিচ। অর্থং ভজতে লভতে ইত্যর্থভাক্ স্বকৃতী প্রাদৌ প্রভাক্। ১৭৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

প্রাদোচিত। চকারাদপ্রাদিকর্ম্মোপপদেচ। ভজ্মেবায়াং। অর্থং ভজতেলভতইত্যর্থভাক্ বিণিণসুবন্ধেইত্বৎ রুদ্ধিঃ বেঃ কেবলস্থালুবিতি বিলুপ্ প্রভজতইতি প্রভাক্ পূর্ববিদ্বিণাদি নিত্যসমাসঃ। ১৭৬॥

क्र ९ अही शिका।

সহ। ছন্দি বেদসংজ্ঞায়াং লোকেহপি সমাসকৃষ্টান্বয়াৎ সংজ্ঞায়াং গম্যমানায়াং। পুনর্বিণ্
গ্রহণাৎ কর্মাণুপেপদে সহোবিণ্ প্রযুজ্ঞাতে। ব্যাকরণস্থবেদাঙ্গত্বাৎ ছন্দঃ সংজ্ঞোক্তিঃ। অঙ্গং
হ্যপকারকং। পৃতনাং সেনাং সহতইতি বিণির্দ্ধ্যাদিঃ স্থধামাদিত্বাৎ ষত্বং পৃতনাষাট্ সেনানীঃ ছন্দিদি
সেনাপতিসংজ্ঞেয়ং। এবং ভুরাষাডপি। সংজ্ঞাশব্দত্বাৎ সপ্র্পেপদস্থাপি নঞোহত্বং। অবলেপোহর্থাদিদপ ইত্যমরঃ। ভুরং চতুর্বিধং বাদ্যং মদগর্বেপ্রকীর্তিতং। মদেনমত্ত্রাহ্বলেপোহর্থাদিদর্পঃ।
মদস্থাবলেপোলেপনমিতি কেচিৎ। এবং জলাষাডিতি। ভুরাসাহ্মিতি। তত্মিদ্ বিপ্রকৃতাঃ
কালেতারকেণদিবোকসঃ। ভুরাসাহং পুরোধায়ধামস্বায়ন্তুবং যয়ঃ। ভুরাসাহ্মিক্রং। ভুরাষাঝেঘবাহনইত্যমরঃ। লোকেসংজ্ঞেয়ং। বিরামার্ণয়োরিতি। স্থামাদেরিত্যাদি শব্দব্যবন্ধয়া। ১৭৭॥

বহশ্চ বাহ্ম নঃ সোডঃ। নামোপপদেবছোবিণ্ স্যাং। বাছিপরেইনসঃ
সস্যতত্ত্বই অনত্যন্ প্রষ্ঠবাডিপি। বাহস্তাদী অনুডুহী প্রষ্ঠোহী। লোকেন-ভবত্যপি। সার্থবাহুঃ নন্দ্যাদিত্বাং হব্যবাহনঃ একপদেইপি দীর্ঘঃ ন রোবাহনোইস্যেতি নরবাহনঃ। ১৭৮॥

गृष्यकाणिका।

সহস্থিতি। ছন্দোবেদেচপদ্যে চেত্যমরঃ। তবন ছন্দদোবেদস্তমংজ্ঞারাং সহ্ধাতোর্বিণ্ স্থাদিত্যর্থঃ। বিণ্ এহণং প্রাদ্য সূত্র তিবারণার্থং। তুশন্দাদাহলোকে হ্পীতি। ধ্বজিনী বাহিনীদেনা প্রনানিকিনী চম্রিত্যমরঃ। তাং সহত ইতি সহ্ সামর্থ্যেইত্য স্মাদিণ্ রৃদ্ধিঃ বিলুপ্ ষত্বং সৌষশ্ছহাঞ্চেতিডঃ অন্তেত্তীয়প্রথমো ধুটামিতি ডস্টিঃ। দেনানী ব্বাহিনীপতিরিত্যমরঃ। তুরা সাহমিক্রং পুরোধায় অত্যেক্রেত্যর্থঃ। ১৭৭॥

क्र थर्मा शिका।

বহ। ছল্কঃ সংজ্ঞায়াং লোকেহপি বহোবিণ্ বিণন্তেবাহিপরেঅনসঃ সোডশ্চস্থাৎ। নামোপপদইতি সাজ্ঞাশকার্ত্তং। পূর্বতঃ পৃথক্ করণমনসঃ সোডরার্থং। ক্লাবেহনঃ শকটোহন্ত্রীস্থাদিত্যমরঃ। আনোবহতীত্যনজান্ রুবজঃ প্রচোভ্রাবহতীতি প্রচার্ত্বান্ত্র পদব্যাং যোবহতিতন্তেয়ং সংজ্ঞা। লোকইতি। লোকেহপীত্যপি শক্ষাদেত্রেগাগুঃ। সার্থং বণিক্সমূহং বহতি দেশান্তরং প্রাপয়তীতি সার্থবাহঃ কর্মাণ্ প্রধানভূতোবণিগুচ্যতে। সার্থেবিস্কর্মটিঃ। সার্থেবিণিক্সমূহেস্থাদিপ সজ্ঞাতমাত্রকেইতি মেদিনা। নল্যাদিরাদিতি। নল্যাদেরাকৃতিগণরাদেরণ্বাধকোহনঃ। হব্যকব্যেদৈবপিত্রোহয়েহব্যং বহতি দেবান্ প্রাপয়তীতি হব্যবাহনঃ কচিদেকপদেহপীতি দার্ঘঃ এতত্পলক্ষণং কব্যবাহনোবায়ুরিতিচ। নরং বহতীত্যম্বয়াবোগ্যয়াৎ কথং কুবেরোনরবাহনইত্যত্ত্বাহনরইতি। বহত্যনেনেত্যনট্ ক্ব্যভিচারাৎ লোকাশ্রম্বারাপুংস্থঃ। অনাহিতপরস্বায়ণস্বমিতি কেচিৎ। কুবেরসংজ্ঞায়ান্তত্ত্বপ্রচারাত্বত্ত্বিরাধ্যতি

গূঢ়প্রকাশিকা।

বহদেতি। নামোপপদে বহ প্রাপণে ইত্যন্তাৎ বিণ্স্তাৎ বাহিবিণস্তের্দ্ধিমন্বাহ্শব্দেপরেজনসঃ সঃ স্থানেডঃ স্থানিত্যর্থঃ। নামোপপদেইতি। কর্মাকর্মোপপদেইত্যর্থঃ। সংজ্ঞাশব্দসাধনতাৎপর্যান্তক্তং। জনজ্বানিতি। জনজ্বাহ্শব্দস্থানিতি সোহোনঃ। প্রষ্ঠবাডিতি। প্রষ্ঠোহগ্রগামিনি। বাহস্তাদীতি। জনত্বসন্তব্যহস্তেত্যক্তরাৎ। জনজুহীতি। জনজুত্বস্থেহোবস্থা। প্রষ্ঠোহীতি। অযুট্ররজিজ্যেবাহোবাশব্দঔভবেৎ। বৈদেহকঃ সার্থবাহোনিগমোবাণিজোবণিগিত্যমরঃ। হব্যবাহনোহিঃ। দহনোহব্যবাহনইত্যমরঃ। নরবাহনবৎ হরিবাহনোহিপ। হরিবাহনস্তেপুংসিশচীপতিবিবস্বতোরিতি মেদিনী। ১৭৮॥

পুরোডাশাবযজ্যক্ষণকাঃ শ্বেতবহল্চবিণ্। এষাং বিণোডসর্বেদিনির্গরি। হেশ্বেতবাঃ শৃণ্। সাবিতিসমুদ্ধ্যর্থং। দাশৃদানেপ্রোদাশত্যেনং পুরোডাঃ দস্যজত্বং নিপাত্যতে এদস্তোহপ্যয়ং পুরোডাশাকাঃ। অবযজ্যতে এবখাঃ উক্থো-বেদভাগবিশেষঃ। উক্থান্যুক্থৈর্বাশংসতি উক্থানাঃ যদ্ধা থেতিকছাতে শ্বেতবাহাঃ বা ইন্দ্রঃ। এবং পুরোডোভ্যাং পুরোডঃস্থ অবযোভ্যাম্ অবযঃস্থ উক্থালাভিঃ শ্বেতবাভিঃ তথাগ্বেতবস্ত্বং। অর্ণেকিং পুরোডালো অবযাজাে উক্থালাভিঃ শেতবাভিঃ তথাগ্বেতবস্ত্বং। অর্ণেকিং পুরোডালো অবযাজাে উক্থালােসিক্থাণংসঃ উক্থানাসইতিমন্ত্রবাহাণ্ডেবাহাণে তবাহায়িমিতি সংজ্ঞা শব্দেন্দিক্থপ্যতে প্রযোজ্যাঃ। ১৭৯।

क्र्थमीिशका।

পুরো। ছল্টা সংজ্ঞায়াংলাকেইপি যথোক্তাপপদেনতুপূর্বের জনামাপপদেপুরংপুর্বেকদাশঃ অবয় উক্থশলঃ ধেতবহণ্চবিণ্ডাইততোহর্ণেপরে এনাং পরজ্ঞবিণাড দ্তাইদেদিলাই সংজ্ঞাছাই কর্ত্তরিকর্মণিচ। থেতিরক্তিঃ প্রাণিচি রুছতেই দাবিতি বিণির্দ্ধৌ ছিদি ছকুবন্ধেই ভাষরাদিলোপে দাবই বিষ্কালি । এবমন্তর। সন্ধুর্মেণিচি। অসমুদ্ধৌ ছদ্শনাই। দাশু ভালব্যান্তঃ পুরোই হতাঃ। নিপাতাতইতি সূত্রেনিপাতপাচাদিতার্থঃ। পুরোডাঃ। অবন্তইতি। অদন্তেইরং তালবোপনঃ কাশীকানাশকীশাঃ পশুকলশিপুরোড। শপেশীপলাশাইতিশিছভেদঃ। পুরোডাশোইবির্ভেদেচমন্তাং পিউকল্পচ। রাদ্দোমলতায়াঞ্চিত্রেলিগেই লিগেলিকা। অন্তমতেদানাদন্তালিভঃ। পুরোদাশবিত্রামতি কর্ম্মণিয়েও অত্রাপিপুর্বেরিপাতঃ। পঞ্চরপালঃ পুরোডাইতিপুরোডাইপান্তাভিরজ্ঞ। বিদ্ভালঃ দামবেদভাগঃ যজ্ঞাপেরেরিলিগিতঃ। সঞ্চরপালিভ পুরাত্তির অব্যাধারিও চাতে। উক্থইতি। উচ্যতেতিদিতির চেম্বর্ক। পুরপুংসকয়োক্রক্থঃ। বেদভাগঃ সামবেদভাগঃ যজ্ঞাংপরোধাণীয়তে দইত্যর্থঃ। এবমিতি। সবর্ণে বিধাড স্ত্রাভালিরিক ক্রিলিভানি হিছি অর্পদানাধির অভ্যাবশীতার্থঃ। থেতৌহোভাবই তিরেপ্রকৃতিভাবেনিগঃপুনরার্ভিঃ বিণোডদার্ণ ইতি অর্পদামর্থাই অভ্যাবনাত্রিরিক তংক্তাাদিতিভাবঃ। মন্ত্রেরেতি। উক্থশানোহাদক্তাম্বর্গার্থঃ। বিণিতথা ছাভাবান্যন্তেবেদ এবেতিকেটিই। শেতবাহীয়মিত্যপপাঠঃ স্প্রভারেরা অনুট্ররেইভান্তিপ্রাত্তা বহুতরপুত্তকেই জিচেই যাহ্চর্য্যাদিত্যনাদরাই নাধ্যং। লোকে শীতি। এতেপুরোডাশাদ্রঃ। ১৭৯॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

পুরোডাশেতি। পুনর্বিণ্গ্রহণং কর্তৃ কর্মণোর্ব্বাচ্যয়োঃ প্রত্যয়ার্থং। হেশ্বেতবাঃ শৃন্ধিত্যন্তং ছন্দন্তেনবিপরীতোদাহরণেনদোষঃ। নমুঅর্ণে ইত্যনেন সাবিতিপ্রাপ্তে কথং সাবিতিগ্রহণমিত্যতত্বাহ সাবিতিসমুদ্ধ্যর্থমিতি। তথাচার্ণেসমুদ্ধিসিভিন্নে অধাত্বসন্তোপধায়াইত্যনেন দীর্ঘস্ত সিদ্ধরাৎ সাবিতিক্তে-সমুদ্ধিসাবেবদীর্ঘস্ত ফলমিতিভাবঃ। শ্বেতবাহীয়মিতি। শ্বেতবাহিত্যমিতি হিতার্থে ঈয়ঃ শেষেচেতীয়ঃ

নামপূর্বাৎখনিজনিসনঃ ক্রমিগমন্চবিট্। নমণাং বিদ্বারাস্যাৎ। বিস-খাঃ সিম্কুজামণিঃ। স্বজ্ঞাঃ গোষাঃ সনোতেরিতিষত্বং বিদূরক্রা অগ্রেগাবিট্যনী বনিপিয়নালখাবা অগ্রেগাবাওনোহ্বাবা অবাবরীনাস্তাদীবনোনোরঃ। যুণঘূর্ণ ভ্রমণেকনিপ্যাবাঘাবরীঘূরাবা ঘূরাবরীস্ত্রী। ১৮০॥

ধাতোঃ কিপ্স্যাদনিয়মাৎ। উপপদোপসর্গয়োরসত্ত্বে সত্ত্বেচ। কংসজিৎ জিৎ প্রণীর্বিরাট্। বিৎসভাসং মাংসপিপৃক্ প্রসূঃ কটচিকীঃ প্রক্রং। ১৮১॥

অথবাঈপ্রত্যয়ান্তোহয়ং শ্বেতবাহীইয়মিতিসন্ধিঃ উভয়থাপি অঘুট্সবেতদ্ধিতযইত্যনেন বাশব্দঔভবিভূহইতি কিন্তুবাহিবাশব্দইতি শব্দগ্রহণাৎ কচিন্নএবং শ্বেতবাহ্যমিত্যত্তাপি ঔনস্থাদিত্যবধেয়ং। ইত্যাদাবনর্ণেন্ড্য। ১৭৯॥

क्रश्यमीलका।

নাম। বিদ্বনাঃ পরয়োর্মনানাস্থাৎ। বহুশ্চেতিনামানুর্ভাবপিনামগ্রহণং কর্ম্মণংজ্য়োনির্ত্তর্থং। টিরাদীস্থাং। বিসংম্ণালেদন্ত্যান্তং বিসং খনতীতি বিট্ নস্থাত্বেরেলাঁপেবিস্থাঃ জন্
জননে জনীপ্রাহুর্ভাবেদ্বয়োঃ সিন্ধুজা অজাইতি। ষণুদানেগোষাস্থামাদিশ্বাৎ ষত্বং। অগ্রেগাইতি।
সপ্তম্যানুষাক্দন্তেমু। বিট্যমীইতি। অমীবিস্থাদয়োবিটিদর্শিতাঃ। বনিপিদর্শয়তি বনিপীতি। মৃণালং
খনতীতি মন্ কনিকানিপইতিবনিপ্ঘোষেনেট্ বিশেষস্থাদাত্বেবানেট্ মৃণালখাবাওন্ অপনয়নেবনিপিনস্যান্তেসন্ধিঃ অবাবা নান্তাদীবনোনোরঃ অবাবরীঘোনভীতিঘাবাঘূর্গ্রাবা। ১৮০॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

নামেতি। নামপূর্বাং যন্ততস্থাৎ। ছলেনাহর্থং পূর্ববিগ্রহণং। খন্তবদারণেক্রম্পাদবিক্ষেপে গমনগতো। নামপূর্বাদিতিগ্রহণং কর্মাকর্মোপপদার্থং বিজ্গ্রহণং স্ত্রিয়ামীপ্রত্যয়ার্থম্। সিন্ধোজায়তে অপ্যুজায়তেগাং সনোতিদদাতিবিদূরং ক্রামতিগচ্ছতীতিবাক্যানি। বিট্যমীইতি। অমীবিস্থাদয়ো বিটিউদায়তাঃ বনিপিউদাহ্রয়ন্তইতিশেষঃ। অবাবাইতি। গুণঃ বনিপ্নস্থাত্বে ও অবস্থাদিতিসন্ধো অবাবন্শক্সপ্রেমানিন্তানামিতি দার্ঘেনাহন্তস্থাবৈচিতিনলোপঃ। ঘোনতীতি। ঘূনইতিদীর্ঘপাঠেঘূনতীতি ঘাবা ঘাবর্রা ঘূরাবা এবং ঘূরাবরীস্ত্রা। ১৮০॥

क्रथमीलिका।

ধাতোঃ। খন্যাদিমাত্রনিরাসায়ধাতোরিতি। অনিয়মান্নিয়মমকৃত্বেত্যর্থঃ। বাচ্যাদ্যনিয়মশক্ষায়ান্মাহ উপপদেতি। প্রাদেটিত্যতোহসুর্ত্রয়োঃ যদ্বা তেন নামপুর্বাদিত্যনেন চামুর্ত্রয়োরসত্বেত্যর্থঃ। কংসং জয়তীতি কিপি কিন্তান্নগুলঃ তুক্ কংসজিৎকৃষ্ণঃ। প্রণীরিতি। ভিন্নপদেহপীতিণত্বং। বিরাজ-তইতিবিরাট্ যজ্ আজিতিডঃ বিদ্চতুর্ণাং বিং সভাসং কিপিবিষয়ে ধাত্বস্তুস্তাস্তলোপেন তুক্ চজ্বাং নকইতিভলোপাভাবে সংযোগান্তলোপঃ মাংসপিপক্ সূপ্রসবে প্রস্থঃ এবং চিকীর্ষধাতোঃ কিপিরাৎসইতি সলোপেরত্ব বিসর্গঃ কটচিকীঃ প্রাদৌপ্রকৃৎ। ১৮১॥

পরেবিজঃ স্যাদ্দীর্ঘশ্চ। পরিব্রাড্গুণভূষণঃ। অন্যত্র প্রক্লক্ষানুসারাৎ ক্ছধাতোঃ বীকট্ বীকং। ১৮২॥

মন্ কনিৱনিপশুদ্ধ । উপসর্গাদ্যনিয়মাণ । ধাতুভ্যোলক্ষানুসারাণ স্থ্যঃ । ১৮৩ ॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ধাতোরিতি। কর্ত্তরিবাচ্যেহনিয়মাদ্ধেতোঃ ধাতুমাত্রাৎ কিপ্ দ্যাদিত্যর্থঃ। অনিয়্মাদিত্যস্থার্থমাহ উপপদইত্যাদি। জিজয়েকং সংতন্ধামাস্তরং জয়তীতি কিপিত্রস্বান্ত ক্পন্তুবদ্ধেদ্যাৎ বেঃ কেবলস্থানুপ্ এবং জিৎ প্রপূর্ববীঞ্ প্রাপণেণাদয়োনাদয়ঃ স্মৃতাঃ প্রণয়তীতিপ্রণীঃ বিপূর্ববাজ্দীপ্রে বিদ্জানে বিদ্বিচারণে বিদ্ দত্তায়াং বিদ্জলাভে বেত্তিবিনত্তি বিদ্যতে বিন্দতীতি বাক্যে কিপ্ বিৎ দদ্জবিদরণগত্যোঃ দভায়াং দীদতিদীপ্যতীতি দভাসৎ পক্তুমিচ্ছতীতি দনিপচ্ধাতোঃ পদ্বিভাবে দন্মবর্ণ ইরভ্যাদে ধুটান্তেচ চজাকঃ দ্যাৎ দনঃ য়য়েয়াংসংপিপক্ষতীতি কিপিধান্তন্তপ্রাস্থালাপঃ দ্যাদননি সৌচজঝাং নকইতি সংযোগাদিকলোপাভাবেদংযোগান্তবলাপঃ। প্রপূর্ববৃপ্রদ্বেপ্রস্তইতি প্রসূঃ। জনয়িত্রপ্রপূর্মাতেত্যমরঃ। কৃঞঃ কর্ত্তুমিচ্ছতীতি দনিকৃদ্বিত্বেখবর্ণস্থাকারঃ কবর্গস্তিচবর্গঃ অনিট্দন্যন্তদীর্ঘতেতি অন্তদীর্ঘন্তে য়দন্তস্বের-শুণে অন্তণেহলীতিরোপধাদীর্ঘেদনঃ য়ত্বে কটং চিকীর্ঘতীতি কিপি কিপ্লোপে সৌদংযোগান্তলোপে রেফস্তেতিরস্থবিদর্গঃ প্রকরোতীতিপ্রকৃৎ। ১৮১॥

क्ल्थ्रमोशिका।

পরো। পর্যুপেপদে। অজ্ ব্রজ্ গতৌপরিদর্বতোভাবেন ব্রজতীতি পরিব্রাট্ গুণাএব ভূষণানি যক্ত গুণভূদণঃ সন্ন্যাদী। ভিক্ষুং পরিব্রাট্ কর্মন্দীত্যমরঃ। অক্তইতি। পরিসহিতাদ্ব্রজেরক্তইত্যর্থঃ। অক্তব্রেতিপাঠে পরেরক্ত্রোপপদেপ্রব্রক্ কিপিনদার্ঘঃ। লক্ষানুসারাদিতি। প্রদিদ্যানুসারাৎদ্বয়োধরেকার্থেইত্যর্থঃ যথাবিরোহতীতিবীক্রট্ কিবন্তেষিতিদীর্ঘঃ বিরুণদ্বীতিবীক্রৎ। পরেণতুরুহেরস্তোধোধতিক্রহেদ্বর্থঃ সাধিতমিতি। ১৮২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

পরাবিতি। দীর্ঘশ্চচকারাৎ কিপ্চেত্যর্থঃ। পরিব্রাডিতি। কিবন্তপরিব্রাজ্শব্দশ্রদিলাপে যজ্ ভ্রাজ্ পরিব্রাজিত্যাদিনাজঃ স্থানেডঃ অন্তেত্তীয়প্রথমাবিতিডস্সটঃ। গুণভূষণইতিবিশেষণং। প্রজ্জতীতি প্রক্ দিলোপেচজঝাং গইতিজঃ স্থানেগঃ গঃ স্থানেকশ্চ। লক্ষামুসারাদিতি। অর্থবিশেষে উপপদবিশেষেচ লক্ষামুসারাৎ প্রাপ্তক্তসূত্রামুসারাৎ দীর্ঘইতিশেষঃ। বীরুট্রক্ষঃ বীরুৎলতা। লতা-প্রতালিনীবীরুদিত্যমরঃ। এতচ্চদীর্ঘপ্রসঙ্গান্তক্তং। ১৮২॥

क् ९ अमी शिका।

মন্। তদ্বৎ কিবাং। তাৎপর্য্যার্থমাই উপদর্গাদ্যেতি! দর্বধাতুভাইতি। ব্রজেবিশোষাতি দিফীত্বাদপ্রবৃত্তে:। লক্ষেতি। লক্ষমভিধানং তচ্চসম্প্রদারণাধিকারিণোবেঞ্ প্রভৃতের্ম স্থ্যম্ভে এবং প্রায়েণাদস্ভাদিডেবেত্যাদি রূপমিতি বজ্ঞঃ। বিটোহপি নিয়মাখ্যাপনায়পরত্রোদাহরিষ্যস্ভেদর্বে। ১৮৩॥

আদস্তাদিট্চ। সোমপাঃ। গোদাঃ মন্স্নদদাতি স্থদামাস্থপ্রিয়তইতি স্থর্মাকর্ম কনিপ্ প্রাতরিদ্বাধীবাপীবাধীবরীবনোনোরঃ বনিপ্ধাবরী ভূরিদাবা- স্থনোতীতিস্থনোবা স্থনোবরী আগমস্যানিত্যন্তান্ত্রক্। বনিপ্ ণুস্তুতৌ স্থতঃ কুটাদিত্বাদগুণস্যস্ত্রন্থা। ১৮৪॥

গুঢপ্রকাশিকা।

মনিতি। মন্চ কনিপ্চ বনিপ্চেতিছন্তঃ।. সইবতদ্বৎ উপমানাত্বপ্রেরেবিতরিষ্টঃ সমাসে স্থাবিভক্তের্ক্ তদ্ধিতাখ্যাতয়ারপীতি বিভক্তিবুকিবুয়োপ্যইত্যাদিনা প্রকৃতিকৃতকার্য্যনিব্বত্তী তদ্বৎবিত-প্রতায়ান্ত স্থাব্যয়তয়া সর্বাবয়য়াদিভিত্তের্গিতি জন্লোপঃ। তদ্বদিত্য স্থার্থমাহ উপসর্গাদ্যনিয়মাদিতি। ধাতুভ্যঃ সর্বাবছুভ্যঃ লক্ষানুসারাদভিধানানুসারাৎপ্রয়োগামুসারাদ্বত্যর্থঃ। লক্ষ্ সন্দর্শনে অভিধানপক্ষেলক্ষাতেহনেনেতিপ্রয়োগপক্ষে লক্ষ্যতে যদিতি ঘঞ্ লক্ষঃ তদ্যামুসারাদিতি ব্যুৎপত্তিঃ। ১৮৩॥

क्रथ्यमीशका।

আদ। আদন্তাদনিয়মান্বিট্ লক্ষানুসারাম্মনাদয়্য । সোমং সোমলতারসংপিবতীতি সোমপাঃ
সামান্তলক্ষণেকিপি।কৈতি হলীয়মুৎপদ্যতেইতিবিড্বিধানং। স্থদামাগোপবিশেষসংজ্ঞেতিকচিৎ। ধৃঙ্
স্থর্মাদেব সভাডাজ্বামন্প্রতায়াদিতি ডাচিস্থধ্মায়ামিতিচ। করোতীতিকর্ম যৌগিকমিদং। বুতাদিনাভূতেকর্মাণিমনিকর্মান্ত্রীব্যাপ্যক্রিয়য়োরিতি। ইণ্প্রাতরিয়াকনিপ্ কিতিহলীতীয়ং ধীবানাস্তম্বাৎ স্ত্রিয়ামীবনোনোরঃ ধীবরী। পুস্ততাবদাদিক্টাদ্যোঃ বনিপিগুণেস্থনোবাস্তিয়াং স্থনোবরী। নয়াগমবিধের্ম্বলীয়ম্বা
দ্বিষ্যতীত্যাদোদীর্ঘাপবাদস্থগাগমবদত্রাপিগুণাপবাদস্থগাগমোহধিকরোতীত্যক্রচেরাহ আগমস্তেতি।
যথানঞাগমবিনির্দিষ্ট সংজ্ঞাপ্র্রোঅনিত্যগাইতি। তহিকথং স্বসুম্বাইত্যতআহ্নুবতেরিতি। ক্টাদিতোহনিচনিডিতি অগুণেবনিপিতুক্ নাগমাদেশয়োস্তল্যবলত্বং শঙ্কনীয়মিত্যর্থঃ বনিপঃ পনুবন্ধফলমিদং। ১৮৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আদন্তাদিতি। চকারাম্মনাদয়ৼচ। সোমপাইতি। পাপানেপারক্ষণেবা সোমস্থপানকর্তারক্ষ-কোবেতার্থ:। গোদাইতি। ডুদাঞ্দানেইত্যস্মাদ্বি স্থপ্র্বদাঞ্জোমনিস্থদামা স্থপ্রধ্যঞ্অবস্থানেমনিগুণঃ কুঞ্করোতীকর্মমনিগুণঃ প্রাতরেতীতিপ্রাতরিয়া ডুধাঞ্ধারণপোষণয়োঃ ক্ষনিপ্কিতিহলীত্যাদিনা আকারস্থেকারঃ। ভূরিপ্রচুরং দদাতীতিভূরিদাবা। স্থপ্রবিণুস্ততো আদাদি কুটাদ্যোঃ আদাদের্ব্ব-নিপিগুণে স্থনোবান্ত্রিয়ামীপ্রত্যেবনোনোরইতি নম্মরম্বেস্থনোবরী। নম্বত্রভূগাগমঃ কথং নম্মাদিত্যত-আহাগমস্থেতি। নম্বেবং স্থামুর্বিতকথমিত্যতআহমুবতেঃ কুটাদিম্বাদিতি। তথাচকুটাদিমুধাতোঃ কুটাদিতো অনিচিনিডিত্যনেন ইচ্ ইন্ অট্ ভিন্নস্থাগুণছেন তম্মাদ্বিপোহগুণছাদ্গুণাভাবেক্রম্বান্ত্রক্ নাত্রাগমস্থানিত্যহমিতিভাবঃ। ১৮৪॥

উন্দের্মনিগুণোনোলুক্। উনত্তীত্যোদ্মত্তদ্মনী। ১৮৫॥

অন্ত্রেদঃ কিপ্। কদলাৎ ক্রব্যাৎ। বাসরপন্যায়াৎ ক্রব্যাদঃ কদলাদঃ। অনুষ্ঠেম্ অমাদঃ। ১৮৬॥

অনুদকেস্পৃশঃ। কিপ্মর্মস্পৃগেষঃ। উদকেতু উদকস্পশ আগতঃ। ১৮৭॥

क्र ९ अमी शिका।

উদ্দে। উন্দীউৎক্লেদনে উপান্তলোপেনোপান্তত্বেহপি বর্ণলুপান্তত্বপ্রাক্ষণিকত্বাদ্গুণাপ্রাপ্তো-গুর্ণইতিবিধিঃ অতএবস্থদোজবইত্যাদিনিপাতঃ ভন্তাভিক্তাত্যাত্য্যক্ত্যাজলোপাদিতি। যদাঈদৃক্লাক্ষণি-কস্থকাপ্যস্ক্রত্বাৎ পরেনাত্রসামান্যতোগুণবিধানাচ্চ গুণপ্রাপ্তাবপীদং কৃতিঈদৃক্লাক্ষণিকং নাখ্যাত্ইতি-নিয়মার্থং তেনস্থদোজবইতিকৃতিনিপাতোনাখ্যাতইতি। ওদ্মেতি। ক্লীবেস্থমোলুক্ উরীকারইভিওদ্মনী অপান্নীতিবদীপ্রতায়োবা। ১৮৫॥

গু ঢপ্রকাশিকা।

উন্দেরিতি। উনত্তীতিওদ্মন্ প্রত্যয়েগুণোনলোপশ্চ। নলোপের্গলুপান্তত্বাদিত্বেইত্যনেন নিমিত্তাদিলোপে আদিকার্য্যস্ত লাক্ষণিকত্বাদ্গুণবিধানং। ওদ্মেতিস্তমোল্লেপিনোন্ডস্তেতি নলোপঃ। ১৮৫॥

क्र ९ अमी शिका।

অন। অমপদেতরকর্মগ্রপপদে। অদ্ভক্ষণে কদলমন্তীতি কদলাৎ। ক্রব্যমামিষং। ১৮৬॥
গৃতপ্রকাশিকা।

অনইতি। অদ্ভক্ষণেঅদ্যতে সৈতদন্ধং ক্তঃ দাদশ্চনইতি দতয়োদ্ধঃ নঅন্নমনন্ধং তিস্মিন্ন প্ৰপদেঅদঃ
কিপ্সাদিত্যর্থঃ। অণ্বাধনার্থমিদং সূত্রমন্তথাকর্মণ্যণ্সাৎ। পললং ক্রব্যমামিষমিত্যমরঃ। নমুক্রব্যাদোত্রপআসরইত্যমরোক্তস্তকথং সিদ্ধিরিত্যত আহ্বাসরূপেতি। তথাচ বাসরূপোহপবাদঃ স্তাদিতিস্তায়াৎ
রাক্ষসসংজ্ঞায়াং ক্রব্যাদোহপিসিদ্ধাতি অসংজ্ঞায়াং যৌগিকক্রব্যাদিত্যেবনাণ্। এবং কদলাদঃ
ক্সাচিন্নামমাত্রং। অনুরেকিতি। অনুরাপপদেতু অণেবেত্যুর্থঃ। ১৮৬॥

क्र अमीरिका।

অমু। উদকপদভিন্নেকর্মণি। করণইতিবক্তঃ। স্পৃশ্সশনেমর্ম্মহানং স্পৃশতীতিমর্মস্পৃক্দৃগাদিঃ
কিবন্তেম্বিতিদীর্ঘেমস্মাস্পৃগপি। মন্ত্রেণস্পৃশতীতি মন্ত্রস্পৃগিতিবররুচিঃ। উদকস্পর্শ ইত্যণ্ প্রাচাং
ময়েহচ্। ১৮৭॥

गृष्धकाणिका।

অন্বিতি। উদকভিন্নেউপপদেম্পূশঃ কিপ্সাদিত্যর্থঃ। মর্শ্মম্পৃগিতি। দৃগাদিত্বাৎ শস্তাঃ অন্তেত্তীয়প্রথমাবিতিগস্তকঃ। উদকস্পর্শ ইতি কর্মণ্যণ্। পচাদেব্বাধকবাধকত্বাদচ্প্রত্যয়োবাউভয়থা তুল্যরূপত্বাৎ। আঙ্পূর্ববিগম্ভ গত্যর্থেত্যাদিনা কর্ত্তরিভূতেক্তঃ মলোপঃ। ১৮৭॥ খ্যত্ব প্রাপ্ত ক্রিপিনিপাতনাং। দৃগাদৌব্যুৎপাদিতা-এতে। ১৮৮॥

উপমানেইন্ত্যুদাদিকর্মণ্যুপপদেদৃশঃ। টক্ সক্ কিপঃ কর্মণিস্যুদ্ শো
দৃক্ষেইথদৃশ্যপি। অদোইযুইদমীকিম্ কীসর্বনামান্ত আভবেং। অন্যাদৃশোইন্যাদ্ক্ষোইয়মন্যাদৃক্তাদৃশাদয়ঃ। অন্যইবসইবদৃশ্যতেইতিবাক্যং। তাদৃক্ষঃ
তাদৃশঃ ভবাদৃক্ টগন্তাদী যুম্মাদৃশী ভবাদৃক্ষা। সমানস্যমানলোপাত্ত্তপপদেইপিটগাদিঃ শদৃশঃ সদৃক্ষঃ ঈদৃক্ তথা অযুদৃক্ অযুদৃশঃ অযুদৃক্ষঃ অযুকাদৃগিত্যাদ্যপ্যাহঃ। ঈদৃশঃ ঈদৃক্ঃ ঈদৃক্ কীদৃশঃ। অথেতিকর্ত্ত্তিবন্তদৃশ্যপি কচিদীর্ঘার্থং
সর্বাদৃক্ উভয়াদৃক্ আদৃক্। উপমানাদ্যন্যোপদেমাত্বন্ সদৃশ্যতে বৃক্ষইবদৃশ্যতে
তেনেবদৃশ্যতইতি। ১৮৯॥

क्र थ्रमी शिका।

ঋষিক্। দৃগাদাবিতি। দৃগিতিপদমাদিযত ইত্যারস্তাপেক্ষয়া পুংস্থং দৃগাদীনামিতি সূত্ত্বের্ৎ-পাদিতাক্ত্রনব্যুৎ পাদ্যন্তইতিভাবঃ। তত্রযথাঋতৌযজতীতিগাতোঃকিপ্সাদিতি কিপিদপ্রামারণম্ ঋষিক্রতঃ। বৌ মাঘাদিমাদোস্যাদৃতুঃ। তথাচঋতুপদার্থেনসহক্ষাযথা কথিকি যুৎপত্ত্যাপরস্থ কার্যার্থং যজ্ঞং যোযাজ্ঞিকোনিম্পাদয়তি সঋষিগোযার চির্মিপাতঃ লধ্বাত্মিকেতি বচনামাত্রযোগাবতারঃ। এবমন্তং। ঞিধুমাপ্রাগল্ভ্যেধ্ফাতীতি দধুক্প্রগল্ভঃ বিরত্ত্রনিপাতঃ হজির্বিসর্গে হজাতেই সাবিত্তি ক্র্বিসর্গে সজাতেই সাবিত্তি ক্র্বিস্থিতি কর্মাণিকিপ্রকারাগ্যঃ দিশ্ অতিসর্জনে দিশ্যতেই সাবিতি কর্মাণিকিপিদিক্ প্রাচ্যাদিঃ উৎপ্রবিষ্ঠ্ প্রীতে উৎস্থিতীতি কিপিতলোপেন্ডেই ফিক্ সপ্তাক্ষরচ্ছন্ট তিনিপাতঃ। ১৮৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঋত্বিগিতি। প্রত্যেকং লিঙ্গার্থেপ্রথমান্তং দিদ্ধান্তীতি ক্রিয়াধ্যাহারেণাম্বয়ঃ তেনদোপস্কারং সূত্রমিদং। ১৮৮॥

क्र<प्रमीशिका।

উপ। তথাত্বেংপুলেপদইত্যুক্তং স্থাবোধায়। উপমীয়তেংনেনেত্যুপমানং প্রদিদ্ধর্শ্বাশ্রয়ঃ উপমানরূপে অন্যত্যদাদিকর্মাণুপেপদেকর্মণুপেমেয়েবাচ্যেদৃশঃ টক্ সক্ কিপঃ স্থারিতি। দৃশিশ্চক্ষুঃসাধনজ্ঞানমাত্রবচনশ্চতেনকচিৎ চক্ষুযাতত্তং সমানরূপবত্তয়াযেদৃশ্যক্তেকচিদকুমানেন বা ষেতথাদৃশ্যক্তেতেতাদৃগাদিশন্দবাচ্যাঃ। এতাদৃশযুম্মদম্মদ এতাদৃশব্যাপারেত্যাদে রামরাবনয়োযুদ্ধং রামরাবণয়ারিবেতি
বদত্তোক্তরোপাধিমত্ত্যোপমানোপমেয়ন্ত্র্য্ এর্র্ট্যাম্বরূপেবাপ্রত্যয়ঃ। অন্যইবেত্যাদ্যর্থকথনবাক্যং।
নম্বন্যাদ্যন্য কর্মণিকথং টগাদিরিত্যত আহ্সমানস্থ মানদৃগ্শৃদ্ক্ষেত্বিত্যনেন মানলোপাৎ মানলোপজ্ঞাপনা-

দেববিশ্বক্সর্বনামোডিডিঃ স্যাদন্চতৌক্ধি। দেবানঞ্ভিদেবদ্যঙ্বিশ্বদ্যঙ্ বিশ্বগঞ্জি। সর্বজীচীকীর্ত্তিঃ যুষ্মদ্যঙ্চাতুর্য্যং। ১৯০॥

দকুপমানদমানোপপদেহপি টগাদিরিত্যর্থঃ নোচেন্নির্বিষয়াপত্তিরিতি। সমানোদৃশ্যতেইসাবিতি সদৃগিতিকালাপাঃ। সমানইবৈতিকেচিৎ। তথেতিসূত্রোক্তানুবাদে অদাবিবদৃশ্যতেইতি টগাদাবদােহমুকেতি। নিপাত্যতেইদদােহকন্তস্থেত্যমুকং নিপাত্যামুকইবদৃশ্যতেইসাবমুকাদৃগিত্যাদা বিকৃত্যাপ্রকৃতিরিতি আয়াদমুকস্থানেইপ্যদেশপ্রাপ্তাবপ্যবিষয়েইদদােহমাদেশমনিচ্ছন্তোইমুকাদৃগিত্যাহঃ কেচিৎ শন্তু-প্রভ্তয়ঃ। তথাচ নাকীতিশন্তঃ অধিগয়েইদদােহমাদেশোনভবতীত্যর্থঃ। এতম্মতমাদায়ানয়াঃ প্রকৃতিষাদমুকাদৃগিত্যুক্তং নিপাতসূত্রে। আহুরিত্যম্বর্গঃ স্বমতেভবত্যেব। যদানিপাতসামর্থ্যাৎ সর্কৃত্রশক্তব দাধ্যমিত্যুক্তর চিতত্যাদর্কনামত্বনাহুরিত্যক্তং। অথশব্দাধিক্যাদাহঅথেতি। অঅথাদৃশদৃক্ষসাহচর্য্যাৎ প্রকৃতত্বাচ্চদৃশ্যপি প্রকৃতেন্ধিপএবগ্রহণং স্থাৎ। সর্কংপশ্যতীতিধাতাঃ ক্রিপ্তাৎ সর্কাদৃগিত্যাদি। মাত্বুবিতি। মাযোগেসার্ক্রকালিকীসুঙ্। দৃশঃ টগাদয়োনভবন্তীত্যর্থঃ। সদৃশ্যতইত্যুপমানাত্যন্থ বৃক্ষইবেত্যত্যত্যদাদ্যন্যন্তং তেনেবেতি কর্ম্মাত্ত্রম্ এবংসইবগম্যতইতি দৃশোহত্যত্বঞ্ছ। অত্রকর্মনিকিং ত্রমিবপশ্যতীতি ব্যার্তির্মান্তিসামাত্যতঃ ক্রিপ্সন্ত্রাৎ। ১৮৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উপমানইতি। উপমানরপে অন্তর্যাদিকর্মণুপেদেসতি কর্মণিবাচ্যেদৃশঃ টক্ সক্ কিপঃ স্থাঃ দৃশেটগন্তদৃশ্যাতো দৃক্ষেসগন্তদৃশ্যাতো অথদৃশিকিবন্তদৃশ্যাতোপরেজদঃ অমুস্থাৎ ইদম্ ঈস্থাৎ কিম্কীস্থাৎসর্কনামান্তলাভবৈদিত্যর্থঃ। ত্যদাদীত্যাদিনাভবন্ত্পর্যন্তগ্রহণমবিশেষাৎ। সর্কনামান্তইতি-সর্কনামগ্রহণঃ সদৃশইত্যাদৌর্কাধারণার্থম্বন্তলাভবেদিত্যুক্তেত্ত্রাপ্যাম্থাদিতি। নর্ব্ত্তাদাদিকর্মোপ-পদাভাবাৎ কথং সদৃশইত্যাদৌর্কাদিরিত্যালোচ্যাহসমানস্থেতি। তথাচদৃক্দৃশদৃক্ষেষুমানলোপবিধানাত্ত্বপপদেহপিটগাদিরিতভাবঃ। অমুকাদৃগিত্যাদ্যপ্যাত্রিতি। আদিনাঅস্থকাদৃগিত্যপ্যাত্থঃ। অমুকাস্থকায়োঃ প্রকৃতিত্বেনত্যদাদিমধ্যপাতিজদঃ শক্তির্ব্তনামুকাদৃগিত্যাদিনসর্কস্থতমিত্যস্বর্সবীজং। অথ-ইতিগ্রহণম্থ সার্থকতামাহ্র্থেতীতি। অন্তংক্তপ্রদীপিকায়াং জ্রেয়ং। ১৮৯॥

क्र ९ अमी शिका।

দেব। কিপিকিবন্তেহন্চতোপরেউপপদাদেবাদেঃ পরোডদ্রিঃ আৎডনুবন্ধেহন্ত্যস্বরাদিলোপঃ। বিশ্বগঞ্জীতিবিশ্বদ্রাঙ্দর্বতোগামী। সমন্ততন্ত্বপরিতঃ দর্বতোবিশ্বগিত্যপীত্যমরঃ। তালব্যমধ্যোহ-পীতিরায়ঃ। দর্শকাশ্বকভূপালোবিশ্বগারন্তরোধিতো। যোদ্ধুং নির্বিবিশাতেতাবিশ্বগারন্তরোধিতাবিভিবিশ্বকৃশব্দেন্যমকাশ্বর্দ্ধন্ত্যবিশ্বগিতিস্কৃতিঃ। দেবদ্রাঙ্দেবপূজ্কঃ। দেবানঞ্চি দেবদ্রাঙ্বিশ্বদ্রাঙ্বিশ্বদ্রাঙ্বিশ্বদ্রাঙ্বিশ্বক্ষিণ্ডি। যঃ সহাঞ্চিস্পপ্রভ্বিগ্রেষ্ঠ্বিত্তরোঞ্চীত্যমরঃ। ১৯০।

সম্ন্যাৎদমিনছঃ স্থিতিরন্তির্য্যন্চতৌক্কিপি। সম্যঙ্সধ্যুঙঙসৌতির্যুঙ্ সাস্থীচীসমীচ্যপি। ১৯১॥

করণপরাদ্যজতের্নিভূতেস্যাৎ। সোম্যাজিনে বি প্রাঃ। জ্যোতিষ্টোম্যাজী-ফল্যাজিনী জ্যোতিষ্টোম্যাগেনস্বর্গাদিফলং ভাবিত্বানিত্যর্থঃ। ভূতেকিম্ সোমেন্যজতে। ১৯২॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

দেবেতি। অন্ চুগতিপূজনয়োঃ কিপিকিবন্তে অন্চতে অন্চ্ধাতে পিরেদেবাদেঃ ডিন্দ্রিং স্থাদিত্যর্থঃ। দেবদ্রাঙিতি। দেবানঞ্চীতিকিপিডিদ্রিঃ ডনুবন্ধেইন্তাস্বরলোপেদেবদ্রান্চশব্দাৎ সিলোপে অন্চিকুন্চিযুজাং নোঙইতিনস্তঙঃ সংযোগান্ত সলোপনং। এবমন্যত্ত। বিশ্বগ্বিষক্ষ্মৃতং বিহৈত্তর্বিশুবং বিষুবন্তথেতি দিরপকোষাদ্বিষক্ সাল্ধাবিষক্ মূর্দ্রন্থ মধ্যোহিপি। যোগার্থস্ত শব্দঃ পূজার্থঃ শীঘ্রার্থোবাবিশেষেণশু শীঘ্রং পূজিতং বা অঞ্চতীতি কিপনলোপশ্চবিশ্বক্। বিষুবহুপদার্থবিস্তারেহব্যয়ং বিষু অঞ্চতি গছতীতি বিষক্ কিপ্নলোপেশ্চতি। মূর্দ্রন্থ মাণান্তরং। দশকাশ্বক ভূপালোবিষগারস্তরোষিতো। যোদ্বুং নির্বিবিশাতে তাবিষগারস্তরোষিতাবিতি। বিষক্ সর্বত্র আরম্ভ উদ্যমোবাতেন হেতুনারোষিতোক্ ফৌন্দর্শক ভূপালোভ বেণাতিশয়েনোযিতো সোমাণে অসহতেজ সোযোদ্ধু মৃইম্বগারংবাণগৃহং নির্বিবিশাতে প্রবিফ্টাতোপ্রসিদ্ধাবিত্যর্থঃ। ১৯০॥

क्र थमिशका।

সম। বিশেষাতিদিউতয়াঽপ্রবৃত্তিশঙ্কয়াহঅন্চতৌকিপি। সাকং সাদ্ধং সমং সহ তির্য্যগর্থে সাচিতিরস্ইত্যব্যয়ং। ১৯১॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

সমিতি। সহইতিঅনুকারত্বাদনব্যয়ং। সম্ভ্রশোভনার্থসমার্থয়োরিতিমেদিনী। অন্চত্রোঞ্চপীতি পূর্ববৈতাহনুবর্ত্তমানং ছন্দোহনুরোধাদেকত্রলিখিতং। সম্যঙিত্যাদি। সমঞ্চতি সহাঞ্চতিতি রোঞ্চতীতি বাক্যানি। স্থাচীত্যাদি। স্ত্রিয়ামন্চন্তাদীপ্রত্যয়েঅন্চেরপুক্প্রদীর্ঘন্তদ্বিত্যেহপ্যযুট্স্বরে অন্ত্যাঞ্জনেতি নোলোপঃ। ১৯১॥

क्ल्थानीशिका।

করণ। করণাৎপরইতিবিগ্রহঃ করণং দাধকতমং নস্বরূপং সংজ্ঞাসদ্ভাবাৎ। ভূতেভূতমাত্তেবি-শেষানভিধানাং। দোমেত্যাদি। দোমশন্দোহত্তসোমযাগবাচীতেন দোমেনদোমযাগেনইউবস্তইতি দোমযাজিনঃ ণিনিবৃদ্ধিঃ জ্যোতিটোমেনেয়াজ জ্যোতিটোমযাজীফলেনাযজৎফলযাজিনানাস্তাদী। নম্বভূতস্থসাধ্যস্থসাধকত্বাং ভূতস্থকরণত্বং দৃষ্টং যাগস্থতুসাধ্যত্বাহূতত্বানুপপত্তোকরণত্বমসঙ্গচ্ছতইত্যুপপাদ্দ মতি জ্যোতিটোমেনেতি। ভাব্যমানেন জ্যোতিটোমেনস্বর্গাদিফলং ভাবিতবান্ত্বনেনস্বর্গাদিকমুৎপাদয়ানীতি উৎপাদিতবানিত্যর্থে অভূতেহপিবৃদ্ধোভূতত্বাৎকরণমিত্যর্থঃ। তথাহিবরণাদানমাদায়াবভূথস্থানপর্য্য-

কর্মপরাদ্ধস্ত্রের্নিন্ কুৎসায়াং। মাতৃঘাতীসঃ। পিতৃঘাতী। ভূতইত্যেব পিতরং হস্তিপিতৃঘাতঃ। কুৎসায়াং কিং চৌরং হতবান্। ১৯৩॥

স্তোহিযোগঃ সচোৎপাদ্যত্বেনানুষ্ঠানকালে২ভূতঃ সিদ্ধএব নিষ্পত্যনন্তরন্ত ক্ষণমাশুবিনাশিদ্বাৎ স্বয়মেব নাস্তীত্যতোঅকারণং তথাপি বিশেষতোবৃদ্ধিষ্টাকৃতত্বেন সিদ্ধন্থাৎ সাধ্যস্থ সিদ্ধন্থমবিকৃদ্ধং সামান্যভাবেন কর্ম্মন্থ জ্যোতিষ্টোমং যজতে করোতীতিদৃশ্যতেচৈকস্থ সামান্যবিশেষতয়া সাধ্যত্বং সাধনস্থ যথারত্বর্ষং বর্ষজ্ঞ জ্যোতিষ্টোমং যজতে করোতীতিদৃশ্যতেচকন্ত সামান্যবিশেষতয়া সাধ্যত্বং সাধনস্থ যথারত্বর্ষং বর্ষজ্ঞ থোমেক্রগিরেঃ শৃঙ্গং তোয়বর্ষেণ তোয়দং বর্ষশরবর্ষণেতোগদে যথাবাপুক্ষরিণ্যাদেঃ সাধ্যস্থসাধনত্বং যথাবানিশীয়মানেনমধুনাপ্রমত্তইতি ভবিষ্যৎসামীপ্যবর্ত্তমানতয়া ভবিষ্যৎপানক্রিয়ায়াঃ প্রমাদকরণত্বং দৃশ্যতেচ লোকে অনেন স্বর্গাদিকমুৎপাদয়ামীতি কৃত্বাযন্ত্রতইতি। নম্বেবং স্বর্গাদিকলভাবনায়ামেবাস্থকরণত্বং কথমিয়াজেত্যত্রকরণত্বমিতিসত্যং স্বভাবাদ্যজ্বাত্বর্থএব ভবিষ্যত্বপাদনমস্তর্ভবতীতি যথারক্ষার্থেবারণমিতি তেনোৎপাদনমপিতস্তৈবার্থঃ এতেন জ্যোতিষ্টোমেন ইয়াজ ইত্যস্থ জ্যোতিষ্টোমেন স্বর্গাদিকমুৎপাদয়িত্বং যাগং কৃতবানিত্যর্থঃ। অগ্রিষ্টোমেন যজেতস্বর্গকামইতি শ্রুতেঃ জ্যোতিষ্টোমাদেঃ স্বর্গকলং। যদ্যপি যজ্বাতোর্দেবপূজাসঙ্গতকরণেমুখ্যার্থো তথাপি তত্র ন ভবতি ণিন্ পুম্পেণেষ্টবান্দেবমিতি কর্ম্মণোহ্বেশক্ষণাৎ যদিবা পুম্পেণেষ্টবানিত্যচ্যতে তথাপ্যনভিধানান্ধ-ণিন এবং সঙ্গতকরণেহপীতি বজ্বরঃ। ১৯২ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

করণেতি। করণাৎসাধকতমাৎপরইতিপঞ্চমীসমাসঃ। যজ্দেবপূজাসঙ্গতকরণদানের অস্মাৎ
নিন্ ভূতকালেগম্যেইত্যর্থঃ। সোমেত্যাদি। সোমেন যাগবিশেষেণ ইফবন্তঃসোমযাজিনঃ জ্যোতিষামমীনাং স্তোমঃ সমূহোয়ত্র সজ্যোতিষ্টোমোযাগবিশেষঃ জ্যোতিরায়ুষঃ স্তোমস্থেতিষত্ব জ্যোতিষ্টোমেন
যজতিস্মজ্যোতিষ্টোমযাজীফলশব্দেনাত্রফলজনকোযাগউচ্যতে ফলনামকোবা ফলেন যাগবিশেষণাযজ্বদিতি ফলযাজিনী ঋত্বিক্ শ্রোণিরিত্যর্থঃ নতুফলযাজিনী স্ত্রীতস্থাযাগানধিকারাৎ যদিস্ত্রীতি তাৎপর্য্যং তদা
ঋত্বিগৃষারেতিকল্পনীয়ং। নমুকরণত্বং সাধকতমত্বং ভচ্চকারণত্বং কারণত্বঞ্চনিয়ত্তপূর্ববর্ত্তিত্বমিতিকথং
সোমযাগাদেঃ যাগস্য করণত্বমিত্যক্তআহ জ্যোতিষ্টোমযাগেনেতি। যাগজন্যস্বর্গাদিফলং ভাবিতবামুৎপাদিতবানিত্যর্থঃ তর্থাচ জ্যোতিষ্টোমেন যজ্যতিস্ম অর্থাৎ তক্জন্য স্বর্গাদিফলংভাবিতবামুৎপাদিতবানিত্যর্থেতাদৃকফলং প্রতি জ্যোতিষ্টোমাদেঃ করণত্বাব্যাহতিরিতিভাবঃ। করণপরাৎ কিং জ্যোতিষ্টোমং
যজ্যতিশ্বেতি জ্যোতিষ্টোমযাজঃ অণ্প্রত্যয়ঃ। যজতেঃ কিং রথেনাগচ্ছদিতিরপ্রঃ। ১৯২ ॥

क्९ श्रमी शिका।

কর্ম। কুৎসায়াং গম্যমানায়াং হন্ হিংসাগত্যোঃ। যদ্যপি পিতৃঘাতীত্যাদে রুট্যাপি হিংসাপরং নদ্যোততে তথাপি হিংসায়ামেবাভিধানাৎ প্রাণবিয়োগফলকোব্যাপারোহিংসাতেন রুষলীং হতবান্ গভিশীং হতবান্ দ্বিজইতি ন ণিন্। কর্মেতি কিং দণ্ডেন পিতরং হতবানিতিবজ্ঞঃ। ১৯৩॥

বিপূর্বাৎ ক্রীঞ্ছন্। কর্মোপপদে ভূতকালেস্যাৎ। যজ্ঞান্ধিঃসার্য্যঃ দোমবিক্রয়ী। মাং সংবিক্রয়ী মাংসংবিক্রীতবানিতিবাক্যঃ। ১৯৪॥

দৃশঃ ক্রনিপ্ কর্মপরাং। ভূতকালেন্যাং। ধর্মদৃশ্বেষ্ট দৃখরী। ভূতেবন্-কিবাদিবাধকং বচনং। ১৯৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

কর্মেতি। অত্রণিন্ গ্রহণাদ্যদিহিংসায়াং কুৎসাগম্যতেতদাপ্রত্যয়ঃ নতুগমনেন কুৎসাপ্রতীতে তিন ব্যলীং হতবান্দিজঃ ইত্যত্র ব্যলীগমনে কুৎসাপ্রতীতাবিপ ন ণিন্ কিন্তু কর্মণ্যন্ ব্যলীঘাতইতি। মাতৃঘাতীত্যাদো ণিনি ইজ্ছাবেহন্তেস্ত্রঘাৎস্মৃতঃ। পিতৃঘাতইত্যত্রাণ্। চৌরহননেকুৎসাভাবামণেন্ অণ্স্যাদেব। করণপ্রাদিত্যাদি মাতৃঘাতীসইত্যত্তমার্যাজাতিঃ তত্রভূতেস্তাৎসাম্যাজিনোবিপ্রাইতি দিতীয়ঃ পাদঃ। ১৯৩॥

कृश्रमीशिका।

বিপূ। পূর্বেবোহনুর্ত্তে কর্মপরাদ্বিপূর্বাৎক্রীঞঃ কুৎসায়ামিন্ স্থাৎ। তথাচ বিক্রয় ইন্
কুৎসায়ামিতি কুৎসায়াং কিং ধানাবিক্রয়ংশুদ্রইতি কালাপাঃ। সোমং সোমলতারসং বিক্রীতবানিতি
তথানিঃ সার্যোবহিকার্যাঃ। সোমবিক্রয়ীত্যাদয়ঃ শূদ্রাদন্যেব্রাহ্মণাদয়ঃ অতএব কুৎসাতেয়ং সোমাদিবিক্রয়স্থ প্রতিনিধিদ্বস্থাচরণাৎ। অণ্ বাধকার্থমিদং সূত্রম্ অন্যথাভাবান্তান্মত্বর্থীয়েনি অভিধানামিত্যসমাসেচ সোমবিক্রয়ীত্যাদিস্থাদেব। অতীতপ্রাপ্তিরপি গোমানাসাদিতিবৎ সামান্যতোহল্ বিধানাৎ
কুৎসাপীতি কিন্তু সোমাদি কন্মকাদ্রিক্রীণাতেরণোত্রিবারতাজায়েতেতি কুৎসায়ামণিসোমবিক্রয়ঃ মত্বর্থীয়েনি সোমবিক্রয়াচেতিরূপয়য়ং নিরস্ততে। অকুৎসায়ান্ত্রণান্যবিক্রয়ঃ ধান্যবিক্রয়ীশৃদ্রইতিস্থাদেবেতি
ভট্টঃ। ১৯৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বিপূর্কেতি বিঃপূর্কে। কর্মোপপদইতি কর্মোপপদাধিকারাত্বক্তং। নিঃসার্য্যইতি। নিস্ইনন্ত স্থাতে কর্মণিঅগ্। সোমবিক্রয়ীতি। ভুক্রীঞ্জব্যবিনিময়েইনিগুণঃ ইণোহ গ্রহণেণিন্প্রবর্তনে সোমবিক্রায়ীতিআং দূত্রাভাবেচ অণ্প্রত্যয়ত্ম দ্বর্বার্থাং সোমবিক্রায়ইতিআং। অত্র্যদ্যপিকর্মোপপ-দেভ্তকালেআদিভ্যুক্তং তথাপিক্ৎসায়ামিতিপ্রবর্ত্তকে বাধকাভাবাৎ তেনাক্ৎসায়াং নেন্ধাঅবিক্রায়-ইত্যাবে। ১৯৪॥

क्९ अमोशिका।

দৃশঃ। পরুবন্ধ উত্তরার্থঃ। পুনঃকর্মপরাদিতি কুৎসানিব্বত্যর্থং। যদ্যপিমন্কনিকানিপইতি সর্কাধাত্ত্তাভবন্ দৃশেরপি কুনিপি দৃখাদিসিদ্ধিঃ স্থাদেবতথাপিসূত্রমিদং নিয়মার্থমিত্যাহভূতইতি। দৃশেকান্ কিপ্ মনাদানাং বাধকমিদং সূত্রং নিষ্ঠাতুমধ্যেহপবাদোবিধিরিতি ভাষাদ্ভবত্যেবতেনমেকাং দৃইবানিতি এবমূত্রত্রাপীতিভট্টঃ। সারপ্যাদন্ বাধনমাদিনামনাদে প্রহণম্ এবমূত্রত্রাপি। কনিবেবনাণ্ ইত্যণোবাধনং যথাপ্রাপ্তিনিষ্ঠাদয়ঃ স্থারিতিকেচিৎ। ১৯৫ ।

সহরাজপরাৎ ক্রেণাযুধশ্চান্তরিনর্থকাং। কনিপ্বিজয়ং সহক্তবান্ বিজ-য়সহক্ত্বারাজ ক্ত্বাপিতানতে। রাজানং যোধিতবান্ রাজযুদ্ধা অন্যেনসহযুদ্ধা পুমান্স্রীচ। ১৯৬ ।

স্থাজিভ্যাং ধ্বনিপ্। সোমস্থাযজাপভিষুত্বরী। ভূতইত্যেব্যক্ষা।১৯৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

দৃশইতি। কর্মণঃ পরইতিপঞ্চমীসমাসঃ ক্রমপরাদ্দৃশঃ কুনিপ্ কুনিবেবস্থাদিতি নিয়মার্থংসূত্রমিদং। পুনঃ কর্মপরাদিতিগ্রহণং ব্যুপসর্গকুৎসানির্ভ্যর্থং। ভূতইত্যস্তত্ত্বনির্ভ্তিঃ প্রধানাধিকারাভ্তস্থ। ধর্মেভ্যদি। ধর্মেং দৃষ্টবান্ ধর্মদৃশ্বাকসুবন্ধত্বাদগুণঃ সিলোপেনান্তানামিত্যাদিনাদীর্ঘঃ সিলোপঃ ইউদৃশ্বরীতি নাশ্তরাৎ দ্রিয়ামীবনোনোরঃ। নিয়মফলমাহভূতইতি। আদিনাকর্মোপপদপ্রভ্যয়মনাদেগ্রহঃ। ১৯৫॥

क्र अमोशिका।

সহ। কর্মানুবর্ত্তনাৎ কর্মরূপাভ্যাং দহরাজশব্দাভ্যাং পরাৎকৃঞ্ঃ অন্তরিনর্থকাদযুধন্চ কৃনিপ্সাৎ চকারাদনন্তরিনর্থকাদপিদহপরাদিত্যভিধানং। যুধেরকর্মকত্বেহপ্যন্তরিনর্থকেন দকর্মকত্বং। নচক-র্দ্যোপপদাধিকারাদেবান্তরিনর্থলাভঃ কিমনেনেতি তদধিকারেণইন্লাভাপত্তেঃ যুধ্পাঠোহপি তনিরাদার্থেকারণং কৃতিদ্ধ এইতিধারি গ্রহণাৎ। দহদহিতার্থোবিশেন্যগাম্যব্যয়ঃ নিত্যদাপেক্ষকত্বেন তন্ত্যোপপদত্বমক্তবং কর্মাবিবক্ষণাৎ কর্মত্বং বিজয়ং দহকৃতবান্ বিজয়দহকৃত্বাবিজয়েনানুপপদত্বাং ইষ্ঠীদমাদঃ। দিতাংক্রবির্থিতি প্রত্যুত্ত বিশ্বহাদিবেন্ধঃ দহকৃত্ববাব্তং। দিগঙ্গনাঙ্গাভরণং রণাঙ্গণেয়শঃ পটন্তত্ত ট্যাতুরীতুরীতি শ্রিহাত পৃংদিবেমাবাপদগুইত্যমরঃ। রাজানং কৃতবানিতিরাজকৃত্বা। বুদ্ধিপূর্ব্বং প্রবং কুত্বারাজকৃত্বাপিতানতে। দহমুদ্ধানমত্যেন্যোহহিনোমামনাগ্সমিতিভট্টিঃ। অত্যেনেতি অন্তরিনর্থ।বিবক্ষণেনাকর্মকৃত্বাৎ দহার্থেত্তীয়া। এবংভ্গুপতিদহমুদ্ধেতি। পুমান্ত্রীচেতি। ব্রিয়ামপি ঘোষাতুনইতীপ্রত্যেনিয়েধাৎ দারূপ্যঃ। ১৯৬॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

সহেতি। কর্মস্বরূপসহরাজপরাৎকৃঞঃ অন্তরিনর্থকাদ্যুধন্চ যুধ্সম্প্রহারেইত্যস্মাচ্চকৃনিপ্স্থাদি-ভার্থঃ। চকারউক্তসমুচ্চয়ে। অন্তরিনর্থকাৎকিং রাজ্ঞাযুদ্ধ্যতীতি রাজযোদ্ধাবনিপ্নাত্রান্তরিনর্থবিবক্ষা অন্যেনেতিসহার্থেতৃতীয়া এবং ভৃগুপতিসহযুদ্ধেতি। ১৯৬॥

क् अमोिशका।

স্থ। কনিপিযজঃ সম্প্রসারণং স্থাদিতি ঙুনিবিবধানং। অভিধানাৎ কর্মপরাভ্যাং ঙুনিপ্সাদূতে।
মুক্অভিসবেদামং স্থনোতিম্মতি সোমস্থাঙিত্বামগুণঃ ব্রমাতুক্উপপদসমাসঃ। যজতিম্মতি যজ্বামন্থাতুবিধিনেউবানিত্যমরঃ। অভিস্থরীতি। নান্তাদীপ্রত্যয়েবনোনোরঃ। অভীতিপাঠেঅভিস্থরীতি
মহাভাষ্যমিত্যক্তং বনোনোরশ্চেতিসূত্রে। যফেতি। যজতীতিত্চ্। ১৯৭॥

বন্ধ জাণয়ত্রপরাদ্ধনে ইভাতে কিবিষ্তে। চতুর্মিয়য়য়ুক্। পাপীব্রশ্বজ্ঞালগহাযথা। রত্তং হতবানিভি রত্তহা। অত্তবন্ধান্তব্যক্তি হলএব অতীতএব
কিবেবনাণিতি চতুর্মিয়মাৎ শত্রুং হতবান্ ব্রহ্মাণ,তব্যন্ ব্রহ্মাণং হস্তীতি ন কিপ্
ব্রহ্মাণং হতবানিভিনাণ্। ১৯৮।

গৃঢ়প্ৰকাশিকা

হ্রযজীতি। যফেতি। যজতীতি বর্ত্তমানেনঙ্নিপ কিন্তুত্চ্ ভ্রজ্জাদের্জস্ত ষোভবেদিতিজস্তামঃ। ১৯৭॥

क्र थ्रमी शिका।

ব্দা বিশাধিকরাং কর্মরপব্দাদিপরাং অতএবহতবানিতি র্তিদঙ্গতিঃ জ্রণসৈতঃ। অথকিমিনমারভাতে গাতোঃ কিপ্সাদিতি দর্বকালেদর্বগাত্তাঃ কিবিবহিতএব তথাপি ব্রদ্ধাদিহন্তেরারস্কুত্রাপান্দ্যমানেহতাতে অতীতারস্কোবিশিকীনিয়মার্থ ইত্যাহ চতুর্মিয়মযুগিতি। দচোপপদগাতুকাল-প্রত্যায়কঃ এতদেবক্ষুট্রতি অত্রেতি। অত্রদূত্রে। নাণিতি। স্ব দদৃশন্তায়েননিয়মস্পর্যাবর্তনাং তেন মধুহাব্রদ্ধাণং হন্তঃ ব্রদ্ধাণং হতবানিত্যাদাবদাদৃশ্যাদিশ্যতইতানিত্যসূচনাদ্বেতি নব্যাঃ। প্রাঞ্জনান্তঃ প্রত্যায়মাত্রং নিষিধ্যনিয়মস্প্রায়িকহাৎ ব্রদ্ধাণং হতবানিতি মধ্যেহপবাদোবিধিরিতি স্থায়াৎ সাধ্যন্তীতি। ব্রদ্ধাণং বিপ্রং হতবানিতি ব্রদ্ধাহাব্দ্ধাণ পাণীতি বচনাৎ জ্ঞাহাপিতথা নতুব্দ্ধাণং হন্তাতি। ব্রহ্রেইন্ডঃ। ১৯৮॥

गृष्प्रकाणिका।

ব্রেক্ষতি। অথকথময়মারন্তঃ ধাতোঃ কিপ্সাদনিয়মাদিত্যনেন সর্বকালেসব্ববাত্তঃ কিবিবধানাং সত্যং তথাপি ব্রুদ্দিবহুল্ডেং পুনরতীতইত্যতীতস্য ইয়তে ইতীচ্ছায়াঃ কথনং বিশিষ্ট্রন্মার্থিনিত্যাহচতুর্নিয়মর্গিতি। চতুর্নিয়মান্ যুনজীতি সম্বরাতীতি যুজির্যোগেইত্যমাৎ কিপ্। চতুর্নিয়মযুক্কিবিত্যর্থঃ। ব্রুদ্ধাণ হতবানিতি ভ্রূণং গর্ভং হতবানিতি ব্রুদ্ধান ভ্রুদ্ধানিত্য হাইত ভ্রুদ্ধানিত হার্থা। ব্রুদ্ধাণিতেইতিচামরঃ। ব্রুদ্ধানিত ভ্রুদ্ধানান দর্শরতি অত্রেতি। অত্রুদ্রেব্রেক্ষাত্যপপদেব্রক্ষভাগর্রোপপদএবেতি নান্যোপপদইতি উপপদনিয়মঃ হনএবনান্যবাতোরিতি ধাতুনিয়মঃ অতীতএবনান্যকালেইতি কালনিয়মঃ কিবেব নাণিতি প্রত্যায়নয়মঃ ইতিচতুর্নিয়মাদ্ধেতোঃ শক্রং হতবানিতি অতীতেঅন্যোপপদে ব্রুদ্ধবর্তমানকালেনিতি ব্রেক্ষাপপদেহতীতেইপি অন্যধাতোঃ ব্রুদ্ধাণং হন্তীতি ব্রক্ষোপপদেহপি অতীতভিন্নবর্ত্তমানকালেনিকিপ্ ব্রুদ্ধাণং হন্তানিতি ব্রুদ্ধাণিত ব্রক্ষাণ্য ক্রিবেত্ত কেবন্যোণ্প্রত্যানেন্তর্থঃ। নিয়মাভাবেক্ষ্ণ্যানিত্য প্রস্থাকে হ্রুদ্ধারাং নিয়মেনাণ্যাবর্ত্তাতে তেন মধুং হন্তাতি মধুহাকৃষ্ণঃ ইংকামং হন্তীতি ইহাশিবইত্যাদেবির্থমানে কিপ্ প্রত্যয় স্থাদেব। ১৯৮॥

সোমস্থৎ স্যাদগ্লিচিচ্চতথা শ্যেনচিদাদিত। শ্যেনইবর্থচক্রইবচীরতে স্বোতি কর্মাণিকিপ্ শ্যেনচিৎ রথচক্রচিৎ অগ্ন্যর্থিমিন্টকানাং রচনাবিশেষাবিমো। তথাচতুর্ন্নিয়নাৎ সোমং স্থানাতীত্যাদৌ ন কিপ্ অতীতেনাণ্। ১৯৯॥

পুণ্যকর্মমন্ত্রসূত্রস্থাদেয় কঞঃ। কিপ্। স্বরুং। পুণ্যং কতবানিতি পুণ্য-কং। পুণ্যাদিয় কঞএব ভূতএব কিবেবতিবিধনিয়মাং শাস্ত্রকং যজ্ঞক্দিত্যাদয়ঃ। ভূতইতিনিয়ক্তং।২০০।

क्र थ्रे पिका।

সোম। তথেতি চতুর্মিয়মযুক্ কৃপ্ পরাম্ব্যতে তেন চতুর্মিয়মযুক্ কিবন্তা এতে সিদ্ধান্তীত্যর্থঃ। সোমং সোম্বাগং স্বতবানিতি সোমস্থৎ সোম্বাগকারী অগ্নিচিদাহিতাগ্নিঃ শ্রেনাদিকর্মপুর্ব্বকাচ্চিনোতেঃ কৃদ্ধভিচারাৎ কর্মণিকিপ্তাৎ শ্রেনাবেনমন্ত্রেণ্যথানুষ্ঠানেনচায়তে ব্লিয়তে অগ্নর্থমিউকারচনাবিশেষস্থা-পিত্রদেবচয়নাৎ শ্রেনইবেত্যুক্তং। এবং রথচক্রচিদিত্যাদি তথাকস্কচিদপি। সোমং স্থনোতীত্যাদাবাদিনা সোমং সোম্যতি মৃগং স্বতবান্ সোমং পীতবানিত্যেষাং পূর্ববদ্যুহণং। সেমং স্বতবানিত্যতীতে নাণিত্যর্থঃ। ১৯৯॥

গুড়প্রকাশিকা।

সোমেতি। যুঞ্ অভিসবেধাতুনামনেকার্থবাদত্রকরণেবর্ততে তেন সোমং সোমযাগং স্থতবান্ কৃতবানিতি সোমস্থংকিপিরস্বান্ত কৃত্র আহিং চিনোতি স্থেতি, চিঞ্ চয়নেইত্য স্থাং কিবাদি অগ্নিচিদাহিতাগিঃ শ্রেনচিদাদিচেত্যাদিনারথচক্রচিং কক্ষচিদিত্যনয়েঃ পরি গ্রহঃ কিন্তু কৃত্রভিচারাং কর্মণিবাচ্যেকিপ্ চকারান্ত থৈববিবরণাং। তথেত্য স্থার্থমাহচতুর্মিয়মাদিতি। সোমাত্যপপদ এবচেরেব অভীত এবকিবেবেতি চতুর্মিয়মাদিতার্থঃ। সোমং স্থনোতীত্যাদোবর্ত্তমানেনকিপ্ তথাপুষ্পাং চিনোতিস্থা সোমং করোতি স্থেতি ন কৃপ্। অগ্নিচিং সোমস্থাজা রথচক্রচিদাদিয়। অনলেম্বিস্থবান্ কন্মান্ত্রয়াপেক্ষিতঃ পিতেতি ভট্টিঃ। কন্মান্ত্র্যাপিতানাপেক্ষিতোনান্ত্রন্তঃ যেনৈবং কৃত্যমিতি কীদৃশঃ অগ্নিচিদাহিতাগ্নিঃ এবং সোমস্থং সোমযাজী তথারথচক্রাদিয় আদিনাশ্যেনচিং কন্ষচিতো প্রতিং তেচাগ্নার্থং রথচক্রাদ্যাকারই ফ্রকারচনাবিশেষাস্তদ্ধারেণাগ্নিরপি রথচক্রাদিত্যাব্যপদিশ্যতে তেন তাদৃশেধনলেরুই ফ্রবান্ যজ্ঞং কৃতবানিত্যর্থঃ। রামং প্রতিবালিবচনমিদং। ১৯৯॥

क्ल्भूमीशिका।

পুণ্য। পুণ্যঞ্চ কর্মাচ মন্ত্রশ্ব হলে হলে । পুণ্যাদিষু কর্মাস্পপদেষু ক্ঞাহতীতে কিপ্
ভাবে। হলোভনার্থেইব্যাং কর্মানুরত্তেঃ কর্মান্তরপারং। অথপ্রবিৎসামান্ততঃ সিদ্ধাবপুপেপদোপাদানেন
সহিতোহয়মারজ্ঞঃ প্রবিলক্ষণনিয়মার্থ ইত্যাহ পুণ্যাদিষু ক্ঞ এবেতি। সচধাতুকালপ্রত্যয়াত্মক স্ত্রিবিধঃ।
হার্মিতিক্তেদিকেইপুপেপন গ্রহণানোপেপননিয়মইতি তেনান্তামিন্ন পপদেইপিতবতি শাস্ত্রক্লিত্যাদিষিতিভাবঃ। হাপদেষিতিপাঠেইনভিমতঃ কাতস্তাদাবদর্শনাৎ বহুরস্তিচেদভিধানাজ্রিবিধনিয়মে প্রত্যুদাহর্মন
ণানি। কৃঞঃ কিং মন্ত্রমধীতবান্। অতীতে কিং কর্মাকরোতি। কিবিতি কিং কর্মাক্তবানিতিনাণ্।২০০৪

উপমানকর্তৃপ্রাদ্ধাতোর্নির্ স্থাং। মুগেব্রুগামী সং। হংসীবগচ্ছতি কামিনী হংসগামিনী পুরঁ দ্ভাবং। উট্রোক্রাশীণিনর্থ উপমেয়কর্ত্তা। ২০১॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

পুণ্যেতি। পুণ্যঞ্চ কর্মাচ মন্ত্রণ্ট সূত্রঞ্চ স্থান্টে স্থান্টের কর্মান নব্যয়ন্তেন নচাব্য হৈরিত্যস্থ নিবিষয়া। উক্তঞ্চাপেঃ পঞ্চবিপর্যয়াদিত্যপেরনব্যয়ন্ত্রমিতি। তেচতে পদানিচেতি কর্মাণারয়ন্তেরু। অত্রপুণ্য কর্মমন্ত্রস্থিষিত্যকৃত্বা পদেম্বিতি গ্রহণাত্বপপদেননিয়মঃ কিন্তুধান্ত্রাদিম্বিত্যাহ্ব পুণ্যাদিয়ু কুঞ্জন্ত্রের ধাত্ত্রনিয়মভ্তএবৈতিকালনিয়মঃ কিবেবেতি প্রত্যানিয়মইতিত্রিবিধনিয়মাৎশাস্ত্রং কৃতবানিতিশাস্ত্র-কৃৎযুক্তং কৃতবানিতি যজ্ঞকৃৎ আদিনাকটং কৃতবান্ কটকৃৎপটং কৃতবান্ পটকৃদিত্যাদয়ঃ সিদ্ধ্যন্তীতিশেষঃ উপপদনিয়মেতুন সিদ্ধান্তীতিভাবঃ। সূপপদেম্বিতিপাঠোহনাদেয়ঃ স্তথাসতি অনুযুপ্তন্দোভঙ্গাপতেঃ। স্ক্রিত্যক্তঃ ছন্দঃ অতোবিপরীতোদাহরণেহপি নদোষঃ। অনুবর্ত্তনাৎ কিন্তু প্রাপ্তাবপি কিন্সউপাদানং ভূতইতিনিবৃত্যর্থমিত্যালোচ্যাহভূতইতি নিবৃত্বমিতি।২০০॥

क् अमीशिका।

উপ। উপমানং প্রসিদ্ধর্মাশ্রয়ঃ কর্ত্রপ্রের্বিষম্ম তম্মাদ্ধাতোর্ণিন্সাৎকর্ত্রিরাচ্যে। উপমান-কর্মাদিনিরাসায় কর্ত্রিতিপদং। তথাণিনর্থ উপমেয়কর্ত্ত্রতি বাচ্যত্বাৎ তত্রপমানমপিকর্ত্ত্বে ভবতীতি কর্ত্রেতি নবাধাতে তথাপি তত্রপাদানং ধার্থে প্রমানেশিপমেয়ন্থনিরাসার্থং তথারে মুগেল্রগমনাদাবুপপদে মুগেল্রপ্রের গচ্ছতীতি বাক্যেচ প্রত্যয় স্থাৎ ইদানীস্ত গমনাদি ক্রিয়াকর্ত্রমূপেমানরূপে মুগেল্রাদাবিতি বিশেষঃ। বস্তুত্ত্বক্রিয়য়েয়োরেবাপমানোপমেয়ন্থং তদেযাগাদেবতদ্বতোরগীতিপ্রাঞ্চঃ। নামগ্রজাতাবিতি সামান্তঃ নিদ্ধের্থি জাতাবতাচ্ছীল্যার্থেইয়মারস্তঃ। এবমুত্রক্রাপি। অতোহত্রপশুপক্ষিজাত্যাদাবুদাহতং। মুগেল্রশক্ষোগর্মাকরঃ গল্পপ্রের্গাজজাতিমপি ন পরিহরতীতি তম্মজাতিশকত্বং। মুগেল্রইব গচ্ছতীতি মুগেল্রগামা। পুরুষ্ট্রাইতি। পুরুষ্ট্রাধিত পুংক্ষাইত্যনেন। নন্পমানোপনেয়র্যাঃ কর্ত্বাৎ কর্ম্মণিকর্ত্রিবাচ্যেচ প্রত্যয়ইত্যত আহ ণিনর্থইতি। উপমেয়কর্ত্রাণিনর্থঃ তিম্মন্বাচ্যিরিত্যর্থঃ। যদ্বাউপপদোপমানকর্ত্ব উপমেয়ইত্যাহ ণিনর্থ উপমেয়কর্ত্রাইত্যর্থঃ। উপমানে কিম্বাচ্যেণিরিত্যর্থঃ। কর্ত্রেতি কিং মনুন্যমিবক্রোশত্যিতি মণির্নিতি।২০১॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

উপেতি। উপমানেতি পদং সামাত্তকর্ত্রপপদবারণার্থং কর্ত্রিতি পদমুপমানকর্ম্মোপপদবারণার্থং ধাতোরিতিপদং ক্রেণাবারণার্থং। মুগেল্রঃ দিংছইব গচ্ছতীতি গন্ধাতোর্ণিনিইজ্ব্রাবের্দ্ধিঃ দোইনছ ন প্ষেত্যাদিনাদীর্ঘেদিলোপেনোহস্তত্যযোচেতি নলোপঃ। সিংহোমুগেল্রঃ পঞ্চাত্তহত্যমরঃ। উষ্ট্র-ক্রোশীতি। উষ্ট্রইবক্রোশতীতি কুশ্ আহ্বানেরোদনেচেত্যত্মাধিন্। ণিনর্থ উপমেয়কর্ত্তেতি। এতেন কর্ত্রিবাচ্যেণিন্নিতিজ্ঞাপিতং। পুণ্যেত্যাদি মৃগেন্দ্রগামীসইত্যন্তমুদ্গীতিচ্ছন্দঃ।২০১॥

ধাত্বর্থ সাধুকারিণ্যর্থেণিন্। সাধুকারীচ। সাধুত্রঙ্গন্দদাতি সাধুতুরঙ্গদায়ী। ২০২॥

উদাঙ্ প্রত্যাঙ্ পরাৎসর্ত্তেরি ন্স্যাদ্ ব্রহ্মবদেরপি। উদাসরতি উদাসারি-নীসেনা প্রত্যাসারীপাঞ্চি গ্রাহঃ ব্রহ্মবাদিনোবিপ্রাঃ। ২০০॥

क्र थ्रमी शिका।

ধাত্বর্থ। ধাত্বর্থং সাধুকরোতীত্যনেন নিন্ সোদাহরণং। ধাত্বর্থ সাধুকারিণ্যর্থে কর্ত্তরিবাচ্যে নিন্
স্থাৎ। বিশেষাভিধানেন উপমান কর্তৃপ্রান্নির্তিঃ। অতাচ্ছীল্যার্থোহয়মারস্কইতি প্রত্তিতাক্তং।
স্থানরং রুচিরং চারুল্লসমং সাধুশোভনমিত্যমরঃ। সাধুম্থাস্থাত্তথাকরোতীতি সাধুকারীদ্বিতীয়াসমাসঃ।
তুরঙ্গদায়ীতি। জাত্যুদাহরণং। ধাত্বর্থেতি কিং সাধুং করোতি।২০২॥

गृष्यकाणिका।

ধাত্বর্থতি। ধাত্বর্থতা সাধুকারিণ্যর্থে ণিন্ স্থাদিত্যর্থঃ। অত্রণিন্ গ্রহণাৎ উপমানকক্রপপদনিবৃত্তিঃ অত্যথাস্থান্দেইব সাধুগচ্ছতীত্যাদিবাক্যেন্তাৎ নাত্যত্রইদানীস্ত সামাত্যপদোপপদেণিন্ স্থাৎ। সাধুবথা
তথাত্বঙ্গং ঘোটকং দদাতীতিণিনিইজ্বভাবে ইচ্যাদন্তভ্যোযুট্। উপমানেত্যাদি সাধুকারীচেত্যন্তমার্থ্যাজাতিঃ। তত্রসইত্যন্তোদিতীয়ঃ পাদঃ। ২০২॥

क्ल्थमीशिका।

উদাঙ্। উদাঙ্পত্যাঙোঃ প্রাদিষেননিত্যসমাদপ্রাপ্তাবপিতদ্বিধানবীজমুক্তমুপপদসূত্রে যদাব্রহ্মণউপপদত্বর্থং পরাদিতিসমন্তপাঠাদ্বাতস্থতত্ত্বং। ব্রহ্মণিবদইতিকাতন্ত্রং। উৎকর্যরূপেণা-সমন্তাৎ সরতীভূগোসারিণীসেনাঃ প্রতিপশ্চাদাসরতীতি প্রত্যাসারীবৃহপাঞ্চিষ্ণঃ ব্রহ্মবেদম্বদন্তীতি ব্রহ্মবাদিনোবেদজ্ঞাঃ জাতাবতাচ্ছীল্যেবিধিরয়ং।২০৩॥

গু ঢপ্তকাশিক।।

উদাঙিতি। উদাঙিতিপ্রত্যাঙিতিচমিলিতাৎপরাৎদর্ত্তঃ স্থাতাবিত্যস্মাৎ। যদ্যপিদর্ত্তেরিতি দামান্যোক্তিস্তথাপিউদাদরতীতিবিবরণাৎ ভুবাদেরেবগ্রহণং নতুস্আস্তরণগত্যোরিতি চুরাদিপরস্মৈপ-দিনস্তত্য বোপদেবমাত্রাভিমতত্বাচ্চ। দর্ত্তেরিতিভুছন্দোহর্থং নাম্বিকরণগুণাদি ঔণাদিকত্যন্তোবাদঃ। ব্রহ্মণোবদিরিতি পঞ্চমীদমাদঃ কর্ম্মোপপদদামর্থ্যাদ্বন্যক্তায়াং বাচিইত্যস্থগ্রহণং নতুবদ্দৈর্য্যইত্যস্থাকর্ম-কন্থা। ণিন্গ্রহণং ধাত্বর্থদাধ্কারিত্বমাত্রনিরাদার্থং। অকর্ত্রিকারকেভুঘঞ্চপি। প্রত্যাদারোব্যহপাঞ্চি-কিত্যমরঃ। প্রতিপশ্চাদ্ভাগ্যাদরতিঅ্যাদিতিঘঞ্ অব্যরত্বনপ্রতিশব্দস্থ পশ্চাদ্ভাগোহর্থঃ। ২০৩॥

নাম ন্যঙ্গাতীতাচ্ছীল্যেণিন্স্যাৎ। তে রদ্ধদেবিনঃ। উফভোজী শীঘ্রগামী। অজাতৌ কিং ব্রাহ্মণানামন্ত্র্য়িতা। ২০৪॥

क्रथमी शिका।

নাম। নামন্যজাতোজাতিবাচকভিয়েনামন্যুপপদেতাচ্ছীল্যেহর্থেগম্যেকর্ত্তরিসর্ব্বধাতুভ্যোণিন্স্থাৎ। ভিঙব্যয়োপদর্গরহিতং নামেহরুঢ়িতোগ্রাহং। রুদ্ধেতি। রুধুরুদ্ধৌকর্ত্তরিক্তঃ রুদ্ধশব্দোবয়োজ্ঞানোপ-চয়ক্রিয়াবচনঞ্চ উষ্ণং শীঘ্রমিতিগুণবাচিনী এবংদ্রব্যেরাজসেবী। নব্যনয়েএতেম্বজাতয়োব্রাহ্মণাদ্যাজাতয়-ইতি। প্রাচাং নয়েএম্বপিক্রিয়াদিজাতিসত্ত্বেহপ্যজাতাবিতি দ্রব্যজাতিনিষেধইতি। বাচী মত্রিগুপ্তভাষণেচুরাদিঃ ব্রাহ্মণানামস্ত্রয়তীতি তাচ্ছীল্যার্থেতৃণ্বাহ্মণানামিতিপাঠেতুমখস্তকুর্বন্দিতিবৎ-ষষ্ঠা। তৃজিতিকেচিৎতন্মযুক্তং ভাচ্ছীল্যতৃনাত্স্যবাধনাৎ। অথকেয়ংজাতিরিত্যুচ্যতে শ্বেতলোহিতা-দ্যনেকবর্ণান্বিতেষু বালবৃদ্ধযুবাদিভেদভিন্নেষু বহুশোগবাদিপিণ্ডেযুপ্রত্যেকমিয়ং গৌরিয়ং গৌরিতিপ্রত্যয়স্ত কারণং যৎসাজাতিঃ সামান্যমিত্যর্থান্তরং সাচনিত্যাসর্বাস্থব্যক্তিযু সমবেতাতস্থাশ্চসামাদিবিশেষণকুতায়া-মভিব্যক্তেতিপলিরঃ স্থাৎক্ষজ্রিয়াদ্যাকারসাদৃশ্যেত্রাক্ষণাদিপিণ্ডেজাতিপ্রতীতিস্তবৃদ্ধপারম্পর্য্যোপদেশাৎ উপদেশ-চাবিপ্লুতায়াং ব্রাহ্মণ্যামবিপ্লুতেন ব্রাহ্মণেনাদৌজাতোহস্তমাতাপিত্রোস্তৎ পূর্ব্বপঞ্চানাং বিশুদ্ধি-শুক্লাদিগুণেযুজাতিপ্রতীতিস্তগুণোয়মিতিসঙ্কেতগ্রহণাৎ। ক্রিয়াস্বপিজাতিপ্রতীতিস্তচলনাদি-স্বরূপাৎ এবংদ্রব্যগুণকর্মস্কজাতিঃ সমবেতেতিভট্টঃ। শ্বেতেত্যনেনগুণকৃত্বিশেষস্থবালরদ্বেত্যনেনাবস্থা-কুতবিশেষস্থ অয়মিত্যনেনলিঙ্গকৃতবিশেষস্থচনিরাদস্তেনাং নানাত্বাং। অর্থান্তরমিত্যেকপর্য্যায়ঃ তথাচ জাতিঃ সামান্যজন্মনোরিতি। নিত্যেতি। একৈবজাতিরনেকব্যক্তিসমবেতাতত্ত্রব্যক্তের্বিনাশেসতি-যদ্যপ্যাশ্রয়বিনাশাদ্রপাদিবজ্জাতেরপিবিনাশস্তথাপিব্যক্ত্যস্তরেদৈবোপলভাতেইতি সর্ব্বাস্ত ব্যক্তিবুদমবেতেতি। তথাচনৈয়ায়িকানাং জাতিলক্ষণং নিত্যত্ত্বেসত্য নেকসমবেতত্বং সামান্যমিতি। সাম্লাদীতি। গলকম্বলবিশিষ্টায়াং। অবিপ্লুতায়ামিতি। পাতিত্যদোষরহিতায়াং। সঙ্কেতগ্রহণাদিতি। গুণসম্খ্যানগ্ৰহণাৰ। চলনাত্মতাস্বৰূপাদিতি। ক্ৰিয়ালক্ষণাবগমাৰ লক্ষণস্তচলনাত্মকং কৰ্মেতিতাৰ্কিকাইতি বজ্রধরঃ। ২০৪॥

গ্ড়প্রকাশিকা।

নামেতি। জাতিবাচকভিয়েনামনিতিঙব্যয়োপদর্গরিছতে উপপদেতাচ্ছীল্যেতংক্রিয়াপ্রতিপাদ্যং দেবনাদিকং শীলংস্বভাবোযস্থ তস্থভাবস্তাচ্ছীল্যং ভাবেষণ্তৎস্বভাবেহর্থেগম্যেদর্ব্ধগভূভ্যোণিন্ স্থাদিত্যর্থঃ। অত্রণিন্ গ্রহণাৎদর্ত্তিবদিমাত্রনিরাদেনদর্ব্ধগভূলাভঃ। তের্দ্ধদেবিনইতি। রৃদ্ধং দেবন্তি অর্থাৎরৃদ্ধং দেবিতুং শীলং যেবাং তের্দ্ধদেবিনঃ ষের্দেবায়ামিত্যস্মাধিন্। রৃদ্ধত্বং নজাতিঃ দাস্কর্যাৎ তথাহির্দ্ধত্বং বিহায়নরত্বং যুনিনরত্বং বিহায়র্দ্ধরং ব্রহার্থাভায় বিহায়র্দ্ধরং ক্রাপ্তণবিশেষঃ। উষ্ণউষ্ণগুণবিশিষ্টঃ উষ্ণমোদনং ভূঙ্ক্তেঅর্থান্তাদৃশভোজনং শীলমস্থ উষ্ণভোজীউষ্ণক্ষং শুণঃ।

ব্রতাভীক্ষ্যার্থয়োর্ণিন্ স্যাং। যথাস্থণ্ডিলশাষ্যসৌ। অপ্রাদ্ধভোজীশাস্ত্রীয় নিয়মোব্রতং সতিভোজনে অপ্রাদ্ধথেব ভুঙ্ক্তে। আভীক্ষ্যং পৌনঃ পুন্যং ক্ষীরপায়িন উশীনরাঃ পেয়াভাবেমুহুর্মু হুন্তদেবপিবস্তীত্যর্থঃ। ২০৫॥

শীত্রং গচ্ছতি অর্থাচ্ছীত্রগমনং শীলমস্ত শীত্রগামী অত্রশীত্রত্বং গুণঃ। ক্লীবেশীত্রাদ্যসত্ত্বেশাত্রিধান্যে ভেদ্যু-গামিযদিত্যমরঃ। ব্রাহ্মণানিতি। ব্রাহ্মণত্বস্তু জাতিরেবাতোনিন্ কিন্তু তত্ত্পপদেমত্রিধাতোন্ত্ন্ স্থাতাচ্ছী-ল্যেইতিভূনেব। জাতিপদার্থোবহুধাবিচারিতস্তদ্ধিত্তেত্বোভাবইতি সূত্রটীকায়াং। নচৈবং ব্রাহ্মণত্বমপি নজাতিঃ সাক্ষর্যাৎ তথাহিরাক্ষমত্বং বিহায়্রাহ্মণত্বং সামান্যব্রাহ্মণেব্রাহ্মণত্বং বিহায়রাক্ষমত্বং সামান্যবাহ্মণেব্রাহ্মণত্বং বিহায়রাক্ষমত্বং সামান্যবাহ্মণেব্রাহ্মণত্ব বিদ্যুনাক্ষ্মত্ব ব্রাহ্মণত্বস্তু রাহ্মণাত্রস্তু রাহ্মণাত্র রাহ্মনাত্র বিদ্যুনাক্ষ্ম। তথাচরাক্ষ্মত্ব বিদ্যুনাক্ষ্ম। আর্ক্রাহ্মণাত্রস্তু নিক্ষাত্মজ্বত্বাক্তরাহ তথাচরাক্ষ্মঃ কোণপঃ ক্রেয়াৎক্রব্যাদোহ্রপ আসরঃ। রাত্রিশ্বেরারাত্রিচরঃ কর্ব্ব্রোনিক্ষাত্মজ্বইতি। উক্তঞ্চ অ্যিহোত্রাশ্চ বেদাশ্চরাক্ষ্মানাং গৃহে গৃহেইতি। ২০৪॥

क्रथभीशिका।

ব্রতেফলনিরপেক্ষাপ্রবৃত্তেঃ শাস্ত্রীয়নিয়মমাত্রাপেক্ষণাচ্চাতাচ্ছীল্য জাত্যর্থোহ্য়মারম্ভস্তেন ব্রতাভীক্ষ্যার্থয়োঃ সমুদায়েনতাৎপর্য্যতোগম্যমানয়োর্দ্ধাতোর্ণিন্ <u> নামস্যুপপদে</u> পুনর্ণিন্ গ্রহণাৎতয়োরপ্রবৃত্তিরিতিনব্যাঃ। বেদিঃ পরিস্কৃতাভূমিঃ সমেস্থ ভিলচত্বরে। স্থভিলএবশেত-যঃ স্থণ্ডিলেব্রতবশাৎশেতেস্থণ্ডিলশায্যসাবিত্যমরঃ। অনেকস্থণ্ডিলেএকাকারপ্রত্যয়োপ-ইতিণিনির্দ্ধিঃ। পত্তেঃ স্থপ্তিলম্ম জাতিবাচিত্বম্ এবং প্রাদ্ধক্ষীরয়োরপি। শাস্ত্রীয়নিয়মইতি। মন্বাদিশাস্ত্রবিহিত ইদমত্র কর্ত্তব্যমিতি নিশ্চয়োত্রতমিত্যর্থঃ। সচকামাচার প্রাপ্তের্ব্বাধাবাধাভ্যাং দ্বিবিধঃ তথাচ কুত্রচিৎকামাচার-প্রাপ্ত্যবাধবাধান্নিয়মোহস্তি যথাঋতে ভার্য্যামুপেয়াদিতি ঋতাবগমনেদোষঃ কুত্রচিৎকামাচার প্রাপ্তিবাধা-বাধেনেতি যথাপঞ্চপঞ্চনথাভোক্ষ্যাইত্যভোজনেনাস্তিদোষঃ ইহতুপরপক্ষোব্যাথ্যেয়ঃ অন্যথাশ্রাদ্ধভোজীত্য-শ্রাদ্ধং ভুঙক্তএবনান্যৎকর্মান্তরং করোতীত্যর্থে অশ্রাদ্ধভোজনাকরণব্রতং বিলুপ্তং স্থাদিতি। শ্রেয়াংসংস্থিরয়িতুং ব্যাহরতি সতীত্যাদিনা। ভা্জনকালে উপস্থিতেই আদ্ধমেব ভুঙ্ক্তে ন আদ্ধীয়ং দ্রব্যমিতি অন্তদাংন্যদিপি পূজাদিকং করোতীত্যর্থঃ। এবং সতিশরনেস্থগুল এবশেতে নান্যত্র অন্যদা-হন্যদিপি করোতি নহিস্থণ্ডিলেশয়িতব্যং যাদৃচ্ছিকত্রতং তত্রশয়নাকরণেত্রতবিলোপাপত্তেঃ। মিষদকুল্ডোজীঋতো স্থদারাভিগামীনিত্যস্নায়ীত্যাদি। কলঞ্জং নপিবেদিত্যাদি নিষেধবাক্যং নেদং কর্ত্তব্য-তাবিধায়কমিতি। সর্ব্বাশী আমিষাশীত্যাদে তাচ্ছীল্যেণিনিতি। আভীক্ষ্যং পোনঃ পুন্যং পুনঃ পুনরকু-ষ্ঠানমিতিযাবং। ক্ষীরং পিবস্তীতি ক্ষীরপায়িনঃ আভীক্ষ্যং ণিনর্থঃ অত্রণিনস্তধাতোর্দ্বিভাবপ্রাবাভীক্ষ্যার্থে ণিনস্তোপপদসমদেনোক্তার্থতামদিঃ যথাবক্ষ্যতিগেহানুপ্রবেশমিতি। ণিনোক্ততামদিরিতিদারঃ। অন্যেত্ দ্যোকত্ত্বেনদ্বিকাচকত্ত্বেভূদিঃ যথাভ্ৰামং ভ্ৰামমিত্যাহঃ। ৩০৫॥

সপ্তনী পঞ্চনী পূর্বাজ্জনের্ডে হিন্য ব্রেচ কিছিং। লক্ষ্যান্ত্র সারাং। অন্তঃ স্থজাত মন্ত্রো সমজ্ঞং সর সিজন্তথা। বুদ্ধের্জ্জাতোবুদ্ধিজোইয়ং জয়ঃ সংস্কারজাস্মতিঃ। ব্রাহ্মণজোধর্মঃ। জাতিপঞ্চম্যন্তাং প্রায়ণনেষ্যতে অস্থাজ্জাতোইন্ডিনোজাত-ইতিনডঃ। অন্যত্রচ নজাতইত্যজঃ অনুজঃ পরিজঃ দির্জ্জাতোদিজঃ। *। ইতি প্রয়োগ্র তুমালায়াং কুংস্কৃদ্বিতীয়োবিন্যাসঃ। *। *। ২০৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

নরাসঃ তেনাত্র জাতাবপুগপদেক র্ত্তরিণিন্ স্থাৎ। অত্রপুনর্ণিন্ গ্রহণাৎভাচ্ছীল্যার্থস্যাজাত্যপপদস্থ চ নিরাসঃ তেনাত্র জাতাবপুগপদেক র্ত্তরিণিন্ স্থাদিতি পর্য্যবন্ধতি। স্থিতলশায়ীতি। শীঙ্মপ্রেপিন্ বৃদ্ধিঃ। অশ্রাদ্ধতোজীতি। ভূজপালনাভ্যবহারয়োর্ণনিগুণঃ এবমলবণভোজীতি। অত্রাশ্রাদ্ধালবণো-পপদাভুজেঃ ব্রতাভীক্ষ্ণার্থয়োরিতি বিহিতেন ণিন্ প্রত্যেরন শ্রাদ্ধং লবণঞ্চ ন ভূঙ্কুইতি প্রাদ্ধলবণভোজনাভাবব্রতাভিধানাং প্রাদ্ধালবণতেরভোজনস্থরগপ্রাপ্তরেন তদ্বতস্থ প্রাদ্ধলবণভোজননিষেধপর্য্যসানাদভাবপ্রাধান্যেইপি বিশেষাভিধানাংভোজনাদ্বিত নঞাশ্রাদ্ধলবণয়োঃ সমাসঃ। যহাশ্রাদ্ধেতরং লবণেরভূঙ্কুইতি নঞঃ পর্যুদ্ধাপার্থয়ং। কিন্তু শ্রাদ্ধলবণতেরভোজনস্থ রাগপ্রাপ্তরেন বিধিছাসম্ভবেইপি নিয়মবিধিসম্ভবাং এতদেবাহশাস্ত্রীয়েতি। তথাচোক্তং বিধিরত্যন্তমপ্রাপ্তেনিয়মইত্যর্থঃ। নম্বত্র কাদ্শোনিয়মঃ শ্রাদ্ধেতরংভূজ্কএব প্রাদ্ধেতরদেব ভূঙ্কুইত্যুলাদক্ষ্পাশ্রমে কিঞ্চিদভোজনেব্রতলোপঃ স্থাদিত্যাশঙ্ক্ষাহ্মত্রতি। তথাচ সতিভোজনে প্রাদ্ধেতরদেবভূঙ্কে নভূশাদ্ধম্ অসতিভোজনেত্র প্রাদ্ধেতরদেবভূঙ্কে নভূশাদ্ধম্ অসতিভোজনেত্র প্রাদ্ধেতরমাতাহিল। তথাচ সতিভোজনে প্রাদ্ধেতরদেবভূঙ্কে নভূশাদ্ধম্ অসতিভোজনেত্র প্রাদ্ধেতরমাত্রাহিল। উশীনরাখ্যনির্জ্তলদেশন্তত্রজাভাউশীনরাঃ অণ্ তত্রজাতং দৃশ্যঞ্চতবং ক্র্রেং সম্বৃত্তি সির্বাদিঃ ততোজাভার্যাণশিল ক্রেরিপ্রাপ্যান্যায়াহেপ্রকৃতিকার্য্যনির্জ্তিঃ তেহন্যপ্রেম্বাদ্যভাবাশ্বর্য হিছে ফ্রার্টারাহাং। ২০৫॥

क्ट श्रामी श्रका।

দপ্ত। দপ্তম্যন্ত পৃশ্বাজ্জনের্জ: আৎ দশৈতেরাজমাতঙ্গান্ত জৈবামীতুরঙ্গমাইতি বংসমাদবিভাগাদাভ্যামন্যত্রোপদেহপি কৃচিংডঃ আং অন্যত্রেত্যভোপপদত্বং পৃথক্দূত্রহাং যদ্বাপুর্বোক্তা-জ্জনেরন্যত্রান্য পূর্বেজনিবিষয়েডইতি পূর্বাচ্যত্বেনতত্বং লিঙ্গার্থেইভিহিতেইতি বংসপ্তমী। লক্ষ্যামুসারাং প্রদিদ্ধানুসারাং তদ্বথাঅন্তঃ প্রজাতমিত্যতীতেভণতি। সংস্কারজেতি। অনুভবজঃ সংস্কারস্তজ্জাম্মৃতিঃ। তথাত। প্রথমেহনুভবঃ আতু সংস্কারঃ আততঃ পরং। তদমুআং মৃতিশৈচব নৈয়ায়িকমতেন
ভূইতি। জাতিপঞ্চয়ন্তাদিতি। দ্ব্যজাতেরের গুণজাতৌতুভূতোবৃদ্ধিজইত্যাদি। জাতাবপীয়তেদেবজ্ব

প্রসাদউপদর্গাৎ দংজ্ঞায়াং যথাপ্রজাসন্ততিঃ অনুজঃ কনিষ্ঠইত্যাদি। অসংজ্ঞায়ামপিঅভিজঃ। পরিজ-ইতিসংজ্ঞা। দ্বিরিতিস্থজন্তং শোত্র্যং সাবিত্র্যং জন্মদ্বয়ং যথাস্থাদিত্যর্থঃ পৃযোদরাদিত্বাদ্রলোপঃ। দাভ্যাং জাতোদ্বিজইতিবররুচিঃ। দন্তবিপ্রাণ্ডজাদ্বিজাঃ। দন্তাদৌস্তব্যক্তং জন্মদ্বয়ং। *॥ ইতিশ্রীমহেন্দ্রোপাধ্যায়-বিরচিতায়াং রুৎপ্রদীপিকায়াং দ্বিতীয়বিস্থাসবিবরণম্। *। *। ২০৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

সপ্তমীতি। সপ্তম্যন্ত পঞ্চমন্তেপূর্ব্বেষস্থতাদৃশাৎ জনীপ্রাহুর্ভাবেইত্যস্থাৎ কর্ত্তরিবাচ্যেডঃ অন্যত্ত্র সপ্তমী পূর্ববাদ্যত্ত্বান্যপূর্বাজ্জনেঃ কৃচিৎপ্রসিদ্ধপ্রয়োগেডঃ স্থাদিত্যর্থঃ। অপ্যুজাতমজং সরসিজাতং সরসিজং সপ্তম্যলুখাকৃদন্তেম্বিত্যাদিনা বা সপ্তম্যলুক্। লক্ষ্যানুসারাদিত্যুক্তেঃ কৃজঃ অগুজঃ অঙ্গজঃ অঙ্গজঃ অস্বজঃ করজং গিরিজাবাহুজঃ ক্ষীরাধ্বিজং সিফুজইত্যাদি। অজইতি। অজাবিফুহরচ্ছাগাইত্যমরঃ। অজ*হাগেহরিত্রহ্বাধাতৃস্মরহরেনৃপেইতিমেদিনী। অজোহরোহরেকামেবিধোছাগেরঘোঃ স্থভইতিবিশ্বঃ। বিফ্বাদি পক্ষেনজায়তইত্যজাঃ জনের্ডঃ। তত্রছাগপক্ষে অজ্গতোজ্মজতীত্যচ্ নৃপরযুস্থতাদিপক্ষে অজতিজয়ার্থং গচ্ছতীত্যচ্। অনুপশ্চাজ্জাতোহ্মুজঃ পরিজাতঃ পরিজঃ দ্বিবারং জাতোদ্বিজঃ। দন্তবিপ্রাণ্ডজাদ্বিজা-ইত্যমরঃ। বিপ্রেত্যুপলক্ষণং। দ্বিজঃ স্থাদ্বোক্ষাণক্ষত্রবৈশ্যদন্তাগুজেষুচেতিমেদিনী। ৼ। ইতিশ্রীসিদ্ধনাথ বিদ্যাবাগীশনির্দ্মিতায়াং গুঢ়প্রকাশিকায়াং প্রয়োগরত্বমালাটীকায়াং কৃদ্দ্বিতীয়বিন্থাসবিবরণম্।

। ১৬০॥

গম্যাদয়ং সাধবঃ স্থ্যরিন্ণিনস্তাভবিষ্যতি। কালে। গম্যাগামীস্থায্যাস্থা-য়ীভব্যাভাবীবোধীত্যাদি। শ্বোত্মাত্মং গমীত্যপ্যাহঃ। ২০৭॥

ক্রিয়ার্থকক্রিয়াযোগেধাতৃভ্যস্তমকণ্ণপি। ভবিষ্যংকালেদ্যাং। অন্নং ভোক্তুং ব্রজত্যন্নং প্রাপকোযাতিদত্বরং। ভোজনার্থং গমনমিত্যর্থঃ। পাকায় ব্রজতীত্যাদৌ ক্রিয়ার্থাক্রিয়াচতুর্থ্যাবগম্যতে। ২০৮॥

क्ट्थमोशिका।

গম্যা। দিদ্ধপদোপতাসাদাদেব্যবস্থাবাচিত্বাচ্চগমেরিন্ ণিনোগমীগামী কেবলাদাঙ্পুর্বাচ্চতিষ্ঠ-তেণিনস্থায়াস্থায়ীভবতেদ্বেভিব্যাভাবীবুধশ্চ বোধ্যাবোধীত্যাদয়ঃ। অশ্বস্তনেভবিষ্যতীতি বররুচিপ্রভৃতয়ঃ। মতান্তরমাহশ্যোমাং গমীতি। নিষ্ঠাদিত্বাশ্বষ্ঠী।২০৭॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

হৃদয়মমারাধ্যতং ভক্তজনেইমারাধ্যতং। অমরচয়ারাধিতমং যস্তপদং ময়ারাধিতমং।

গমীতি। অত্র সিদ্ধপদোপাদানাদাদেব্যবস্থাবাচিত্বাচ্চাশ্বস্তনেভবিষ্যতিকালে কেবলাদাঙ্পূর্ববাচ্চ গমাদেরিন্ ণিন্প্রত্যয়েরোঃ গমাদেরঃ সাধবঃ স্থারিত্যস্বয়ঃ। আগামীতি। ণিনির্দ্ধিঃ স্থায়ীত্যাদে ণিনি ইক্ব্রাবেইল্যাদন্তেভ্যোযুট্ আভাবিত্যত্রাপিণিনির্দ্ধিঃ বোধীত্যত্রবুধঅবগমে ইনিণিনিচগুণঃ। আদিনা আবোধীত্যাদের্গ্রহণঃ। বাক্যস্তগমিষ্যতি স্থাস্থতিভবিষ্যতি বোধিষ্যতীত্যাদিকং। শ্বইতি। অনাগতেহিন্দ্বঃ সদ্যআদ্যানিপাত্যন্তইত্যাদিনানিপাতঃ। এতস্তম্ভাপনাৎ অশ্বস্তনেভবিষ্যতিপ্রত্যয়োগ্নে। ২০৭॥

क्ट्रिमीशिका।

ক্রি। ক্রিয়ায়র্থঃ কারণং যন্তাঃ সাচসাক্রিয়াচেতি তন্তাযোগেসম্বন্ধেলক্ষণয়াকর্ ঘঞাব্যধিকরণবহুব্রীহিণাবাচকোপপদেধাতৃভ্যস্ত্রম্ অকপ্পত্যাহ। আরং ভোক্তুং ব্রজতীতি। ভোজনক্রিয়ানিমিত্তকং
ব্রজনমতোভোজনক্রিয়ার্থিকা ব্রজনক্রিয়েতিলভ্যতে। নকুপূর্ববর্ত্তিয়ং কারণয়মপূর্ববর্ত্তিয়ং সাধ্যস্থাহ ভোজনস্থুত্রজনসাধ্যম্বেনাপূর্ববর্ত্তিয়াহকথং কারণয়নিতি নাশস্কনীয়ং বৃদ্ধিস্থীকৃতত্বেন পূর্ববর্ত্তিয়াহসাধনয়মবিক্রন্ধং। যথোক্তঞ্চনিপীয়মানেন মধুনাপ্রমন্তইতিভবিষ্যহসামীপ্যেবর্ত্তমানেয়ং। দৃষ্ঠতেচ লোকেহমুকস্ত
গৃহেভোক্ষ্যইতি কৃষাভোক্তাব্রজতীতি। যলাঅসম্পাদয়তঃ কিঞ্চিদর্থং জাতিক্রিয়াগুলৈঃ সর্ববং সার্থং সমীহতেইতিমাঘপ্রয়োগেহর্থদর্শনাহভোজনাদিক্রিয়ায়র্থাই কার্যায়পোদেশ্যরপোযস্তাইতি যলাভোজনাদিক্রিয়ায়া
মর্থ্যপ্রয়েজনং কারণরপাযাব্রজনাদিক্রিয়াতস্তাযোগেইতিস্বার্থেকঃ। অত্রকার্যকারণক্রিয়াযোগমাত্রাপেক
কণাহপরত্রাভিন্নকর্ত্তক্রিজ্বাদানাচ্চভিন্নকর্ত্তক্রপিতে যথার্ষ্বিজ্যং কর্মকর্তুং স্বামহং রণেগ্রান্ধং কর্ত্তমহং
রণেইতিপশুপতিপ্রয়োগঃ। অব্যয়ন্তানেকাপি কর্ত্তরিচতুম্ কর্ত্র্যকণ্ নিষ্ঠাদিস্বাদনয়োঃ কর্ত্ কর্মণোন্ন
বর্তী। ব্রজতীত্যনেন ক্রিয়ালক্ষিতাক্রিয়য়াউপপদয়াহ তন্তাচকস্বত্রজতীত্যস্থাপ্যপ্রপদম্বং। যদ্যপিবর্ত্তমানায়াঃ কর্ত্রিবিহিত্রহাহকর্ত্বাচকত্বং তথাপ্যাখ্যাতস্ত ক্রিয়াপ্রধানয়াহাক্রেয়ায়াঃ প্রাধান্যং। উক্তঞ্চাখ্যাতস্ত

যভর্থাঃ ক্রিয়াকালোপগ্রহুসাধনস্খ্যাপুরুষাইতি। উপগ্রহঃ স্বাম্বর্থপূর্বতাসাধনং কর্মাদিতত্র স্থ্যাপুরুষেশ্ত-গ্স্তাস্চকালে স্তুপগ্রহে সচসাধনেতত্ত্ব ক্রিয়ায়াং অগ্স্তমিতি ক্রিয়াপ্রাধান্তং। অতএববৈয়াকরণাশ্চান্তঃ ক্রিয়াপ্রধানমাখ্যাতমিতি। যথাহদণ্ডীকর্ত্তাযন্ত্যপমানং স্থান্ম্যগৃভূতোহসৌক্রিয়াপদইতি। কৃদন্তেভূগোণং ক্রিয়োপপদত্বং দিদ্ধ্যতাং দ্রব্যমিচ্ছস্তীতিবচনাৎ। অথভোক্তুং ব্রজতীতিবাক্যেয়েনভোক্তব্যং সব্রজতি-কেনচিৎ প্রয়োজনেনেত্যপি প্রতীয়তেততশ্চ ক্রিয়ানঘটতেব্রজনার্থস্থ ভোজনার্থাভাবাদিত্যত আহভোজ-নার্থমিতি। ভুজিরত্রমুখ্যং প্রয়োজনমস্তিচেদশ্যত্ত্গোণং তদিতিভাবঃ। নম্বেবং সামাশ্যবিহিতঘঞাদিনা-কথংক্রিয়ার্থকক্রিয়াবগতিস্তত্তাপিদূত্রাস্তরং ক্রিয়তামিত্যত আহপাকায়েতি। তথাচতাদর্থ্যেচেতিবিহিতত্বাৎ চতুর্থ্যাসাবগম্যতেহলং তদর্থেতত্তৎ সূত্রারস্তেনেতিভাবঃ। পরেণতুতুমর্থভাববাচিনশ্চেতিসূত্রং কৃত্বাভাব-বাচিনাং ঘঞাদীনাং তদর্থতাং প্রসাধ্যচতুর্থীদ্যোতিকামতেত্যুপক্ষিপ্তমিত্যাশয়ঃ। বিধীয়তে যাবতাহকণ্ডচাবিতি দামান্তেনাকণ্ বিহিতএবদোহস্মিমপিভবিষ্যতি নিষ্ঠাদিশ্চাদিশক্ব্যবস্থয়া-ক্রিয়ার্থক ক্রিয়োপপদেবিশেষ বচনেন ভুমাবাধ্যতেইত্যপিনবাসরপ্রায়েন ভবিষ্যতিএবং তর্হিজ্ঞাপক্ষকণ্ গ্রহণং ক্রিয়ার্থকক্রিয়াযোগেভবিষ্যতি কালেবাসরূপন্যায়েন তৃজাদয়োনভবন্তি তেনভোক্তুং ব্রজতী-ত্যর্থে ভোক্তাব্রজতি ভিক্ষিতাব্রজতীত্যেবমাদয়োনভবস্ত্যেব অতোহণ্চ কর্মণীতিপরতোহণ্ বিধানং সার্থকং। ক্রিয়ার্থেতি কিং ধাবতস্তেপতিষ্যতিদন্তঃ ভবতি ধাবনং পতনক্রিয়ায়া উপপদং কিন্তু ন তদর্থং নহিদন্তপতনায় কশ্চিদ্ধাবতি অপিস্বন্তৎ কার্য্যান্তরমুদ্দিশ্যেতি নাস্তিতদর্থতা। ক্রিয়াযোগইতি কিং ভিক্ষিয়তে তপখিনোজটাইতি অস্ত্যর্থক্রিয়ার্থাজটাতস্থাং সত্যামাদরেণভিক্ষাপ্রাপ্তেঃ কিন্তুসানক্রিয়াহপিতু দ্রবামিতি ভট্ট:। ২০৮।

গৃঢ়প্রকাশিকা।

ক্রিয়েতি। ক্রিয়াঅপ্রধানীভূতভোজনাদিক্রিয়াসাহর্থঃ প্রয়োজনং যস্তাঃ নদ্যস্তমাদিতিকপ্ আপ্রত্যয়ঃ আপ্রয়েছইত্যাদিনা অস্তইঃ সাচসাক্রিয়াপ্রধানীভূতাবাক্যসমাপিকাগমনাদিক্রিয়াচেতিতস্তাযোগেক্রিয়া বাচকধাতুভ্যা ভবিষ্যতিকালেগম্যেভাবেবাচ্যেতুম্ কর্ত্তরিবাচ্যেইকর্মপি স্থাৎভাবেকর্ত্তরিচ কাপিকার্যাঃ কৃৎসংজ্ঞকাব্যয়াঃ কৃতঃ কর্ত্তরীতিপ্রাপ্তক্রহাৎ। অন্ধং ভোক্ত্বুং ব্রজ্বতি। অন্ধং ভোজনং ভোক্তুং ব্রজগতে ব্রজ্বতি অন্তর্ভ্যু প্রত্যয়েন প্রয়োজনং দ্যোত্যতেতেনান্ন ভোজনার্থং ব্রজতীত্যর্থঃ। এবং প্রপূর্ব আপ্র্কার্যাপ্রে প্রাপ্তে প্রাপ্রতাতিপ্রাপকঃ অকণ্ অন্রাপি অকণাপ্রয়োজনং দ্যোত্যতে তেনভবিষ্যৎকালেঅন্ন প্রাপণার্যাক্তির্যার্থং অন্ধপ্রণপ্রয়োজনকগমনানুকূলব্যাপারবানিতিবােয়ঃ। উভয়োর্নিচ্চাদিরান্নকর্মণি ষষ্ঠী। অর্থং দর্শ্যতিভোজনার্থমিতি। নন্মপাকায়ব্রজতীত্যাদে পাকং কর্ত্তুং ব্রজতীত্যাদিবােধাত্ত্র ক্রিয়ার্থা-ক্রিয়াক্রিয়াক্রিয়াত্বতিত্ব সূত্রবিহিত চতুর্থ্যা ক্রিয়ার্থকক্রিয়াঅবগম্যতে স্তারবিহিত চতুর্থ্যা ক্রিয়ার্থকিক্রিয়াঅবগম্যতে স্তায়তইত্যর্থঃ। যত্রভূপক্তুং ব্রজতীত্যর্থেপাকায় ব্রজতীত্যাদি প্রয়োগস্তত্ত্র তাদর্থ্য চতুর্থ্যাক্রিয়ার্থক্রিয়ার্গাক্যয়ার্থক্রিয়ার্গাক্যর্যর্থক্রিয়ার্গাক্যয়ার্থক্রিয়ার্গাক্যার্থক্রিয়ার্গাক্যযার্গাক্যযার্থক্রিয়ার্গাক্যার্থক্রিয়ার্গাক্যর্থক্রিয়ার্গাক্যর্থক্রিয়ার্গাক্যযার্থক্রিয়ার্গাক্রয়ার্থক্রিয়ার্গাক্যযার্থকের ইতিক্রেয়ং। ২০৮।

কর্মণ্যপপদেত্বণ্চ। অবণ্ তুমোচ ক্রিয়ার্থকক্রিয়াযোগেস্থ্যঃ। ধেনুদায়ো
শুসুপায়কঃ স্নাতি পয়াং দিপাতুং নীতানিকাগুলাবোদাত্রং ক্রীণাতি সামগায়োইভাস্যতি। ২০১॥

স্যুক্ শস্ত্স্মানীন্তঃ ক্রিয়ানুপপদেইপিচ। ভবিষ্যুৎকালে। প্রদাস্যু-ন্নাগতোইধ্যেষ্যুমাণ আচামতিদিজঃ। মথং করিষ্যন্নর্জয়তি। ক্রিয়ানুপপদে-ইপি হেকরিষ্যন্ হেকরিষ্যুমাণ যাস্যন্তং প্রশ্যেতি। ২১০॥

क्र अमोशिका।

কর্মণি। কর্মণুপপদেষণ্চেতি কচিৎপাঠঃ। অত্রোপপদং ক্রিয়ার্থকক্রিয়োপপদানুবর্ত্তনাৎ কর্মণিবাচ্যেইতি শঙ্কানিরাদার্থং। সামান্তবিহিতাণদ্বাধিত্বাবিশেষবিহিতো তুমকণোস্থাতামিতিবচনমিদং। তর্হিকথং গোদায়োব্রজতি সামগায়োহভাস্ততীত্যুদাব্রিয়তে অপ্রাদিনামপূর্ব্বাৎ গৈধাতোঃ স্থগিত্যনয়ো-বিশেষতাৎসত্যং পরোক্তত্বাদণ্ ভবতিনদাদিরিতি পূর্ব্বসূত্রোক্তমাত্রবাদরূপবিধিম্বাস্তাতি। ধেনুদায়-ইতি। ধেনুং দাতুং স্নাতীত্যর্থঃ। ২০৯॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

কর্মণীতি। তুশব্দঃ ক্রিয়ার্থকক্রিয়াযোগেইত্যন্ত চকারস্তমকণোঃ সমুচ্চায়কঃ। উপপদইতি স্থথার্থং ছন্দোহর্থং বাগৃহীতং। নচোপপদাভাবেকর্মাণিবাচ্যেইতি শঙ্কান্তাদিতি তন্মিরাসার্থং তদিতিবাচ্যং সপ্তম্যুক্তং বিধিসূত্রাদাবিত্যুক্তস্বাত্তাদৃশশঙ্কান্ত্রদয়াৎ। ধেনুদায়ইত্যাদি। ভুদাঞ্দানেইত্যস্মাদি ইক্ষদ্রাবেইচ্যাদন্তেভ্যোয়ুট্ ধেনুদায়ঃ অস্থুপাস্যতীতি অম্পুপায়কঃ পাপানেইত্যস্মাদকণ্ফাশোচে স্নাতি উভয়ত্রস্নাতীত্যস্তযোগঃ। পয়াং সিক্ষীরাণি জলানিবাপাত্যুং নীতানিণীঞ্ প্রাপণেইত্যস্মাৎকর্মাণিক্তঃ কাগুং দগুং লবিষ্যতীতি অণ্রদ্ধিঃ উপপদসমাসঃ ক্রীণাতি ভুক্রীঞ্জব্রুবিনিময়েক্য়াদিঃ সামবেদং গাস্ত-তীতি অণিয়ুট্ অভি অস্ক্রেপণেদিপ। ২০৯॥

क्र श्रदीशिका।

স্থাব্দ । সুংযুন্জীতিস্থ যুক্ শন্ত্ শন্ত শন্ত শন্ত শন্ত নিয়াৰ্থক ক্রিয়ার্থক ক্রিয়ার্থক ক্রিয়ার্থক ক্রিয়ান্থক ক্রিয়ান্থকি ন্ম্যান্থক ক্রিয়ান্থকি ন্ম্যান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি ক্রিয়ান্থকি । ক্রিয়ান্থকি ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি ক্রিয়ান্থকি । ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি । ক্রিয়ান্থকি । ক্রিয়ান্থকি ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি । ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ নিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি । ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি । ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ ক্রিয়ান্থকি লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ

অভিন্ন কর্ত্ কৈজ্ঞাগ্লাশক্তীচ্ছান্তিসহার্থকে। ঘটর ভ্লভ্ধৃষাহার্থেকাল বেলা-দিকেচতুম্। এতদর্থকধাতৃপপদেতুম্ন্যাং। জানাতিবজ্বুং বেত্তিস্থাতুং গ্লায় তিভোক্ত্রং জ্ঞাতুমলতিএবং পর্য্যাপ্পোতি পারয়তি প্রভূসমর্থালং পর্য্যাপ্তাদেঃ। ইচ্ছতিপঠিতৃৎ স্থাতৃং মনঃ। গন্তুংনিশ্চিতচেতদিপ্রিয়তমে। দাতুকামঃ অস্ত্যত্তং বিদ্যুতে বর্ত্ততে ভবতিচ সহতেবক্তুং ঘটতে যততে আরভতে লভতে ধৃষ্ণাতিচ দাতুমিত্যাদয়ঃ গন্তুং কালঃ ভোক্তুং বেলা গাতুং সময়ঃ বব্জুমবসরঃ শুভিন্নকত্ কৈকিং ভ্রাতুর্ভোজনমিচ্ছতি। দেষ্ট্রং চক্ষ্ণঃ শ্রোকুং শ্রোক্রং। ক্রিয়ার্থকক্রিয়োপপদত্ত্ব্বপ্যকণ্বাধার্থং বচনমিদং। ২১১॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

স্থযুগিতি। ক্রিয়ার্থকক্রিয়াযোগে ক্রিয়ানুপপদেঽপিচধাতুভ্যঃ স্থযুক্শন্ত স্থমানোস্তইত্যর্থঃ। অপীতিগ্রহণাৎ তাদৃশক্রিয়োপপদাভাবেপ্রত্যয়য়োঃ অপ্রায়িকত্বং প্রতিপাদিতং ক্রিয়ার্থকক্রিয়াযোগে প্রায়ি-অবধারণার্থচকারগ্রহণাৎ কর্ম্মণ্যুপপদেইতিনিরস্তং। নমুস্তান্ত্রিতিকতেচরিতার্থক্বাৎকুতঃ স্থযুক্শন্ত্রিতি কৃত্মিতিমৈবং তথাসতি নিষ্ঠাসংজ্ঞানস্থাৎ অনকারাদেব স্থাদীকারেশস্তুনোলোপইতি নলোপশ্চ নস্থাদিতিতথানকৃতং। অধ্যেয়মাণইতি। অধিইঙ্ অধ্যয়নে। আচামতীতি আঙ্ চমুঅদনে তো অন্বিকরণেদীর্ঘঃ স্থাদাচামরুমোরিতিদীর্ঘঃ। যাস্তন্তমিতি যাপ্রাপণে।২১০॥

কৃংপ্র**দীপিকা।** প্রকৃত স্বান্ত ক্রিয়াপেক্ষয়া অভিন্নএকঃ কর্ত্তাযস্ততদভিন্নকত্র্কং জ্ঞা গ্লাদিবিশেষণং নকালবেলাদীনাং তেযামবাচিত্বাৎ ক্রিয়োৎপাদকোহিকর্তা। জ্ঞানং জ্ঞা মানং মা শকনং শক্তিঃ এষণমিচ্ছা অস্তাতি তিপালক্ষিতলক্ষণয়া দিরেফশব্দবং মত্বর্থো হবসেয়ঃ ভাবেপুর্ব্বসূত্রামুরোধারভূভাবঃ महनः महः किन्यु छ हे जान (विकास विकास किन्यु किन्य কূলবিকারয়োঃ। অক্লিউমরণেরাগঈশ্বরস্তচলোচনইতিমেদিনী। কালার্থস্ত কালত্বেন গ্রহণাৎ সীমা-দ্যর্থাবেলাগ্রাছা। ধাত্বিতি প্রাচুর্ফাত্তু তেনাধাতুকালাত্ব্যপদেহপি ধাতোস্তম্ভাৎ উপপদাপেক্ষয়া ভবিষ্যতিকালেতেনবক্তুং জানাতীতি জ্ঞানাপেক্ষয়াবচনক্ৰিয়া ভবিষ্যক্ৰপাভবত্যেব অতএবাকণ্ বাধাৰ্থমিতি নাপ্যকণ্ ভবিষ্যতিকালেভোক্তুমিক্টঃ ভোক্তুমিক্টবানিত্যাদেশ্চ পরিগ্রহঃ অতএবভবিষ্যতীতিযোজনায়াং জानाञ्चिरळ्यू मिञ्जानि । প্রায়েণভাবএবভূম্। यनः সামর্থ্যে। ইচ্ছার্থমেতশ্মনোঽপি প্রস্থানং বলয়ৈঃ কৃতং প্রিয়স্থৈরত্রৈরজ্ঞং গতং ধৃত্যালক্ষণমাস্থিতং ব্যবসিতং চিত্তেনগন্তং পুরঃ। গন্তুং নিশ্চিতচেত্দিপ্রিয়ত্মেদক্রিঃ দমং প্রস্থিতং গন্তব্যেদতিজীবিতপ্রিয়স্থস্থং দিমুত্যক্ষাতে। ইজীমরুশতকং। সময়ইতিকালঃ। এবং প্রযাভুমস্মাকমিয়ং কিয়ৎপদাভোক্তুং ব্রজ্ঞতিদধীত্যাদি। অভিধানামভবত্যপিইচ্ছন্করোতি বাসরপন্যায়াদনডপিকালোভোজনন্তেতি। ক্রিয়ার্থকইতি জ্ঞাগ্রাদি-क्रियार्शकर्याकः कानर्यनामियहमञ्जू वर्षात । २>>॥

বর্ত্তমানেশন্তুশানৌ। ধাতুভ্যঃ স্যাতাং। ২১২॥

আনঃ ক্লাত্মনেপদং। ক্লিতি কানশানয়োপ্ত্রণার্থং। যজন্পশ্যন্। তম্মন্বদন্ ঘূর্ণন্ ভবন্দদং দ্বং জাগ্রং। বসন্দদর্শ। হসন্ হরিজ্য়তি . হেপঠন্ হেপঠমান। ২১৩॥

गृष्यकानिका।

অভিন্নতি। অত্রসহার্থকেইতি কপ্প্রত্যয়ান্ত প্রয়োগেএতদর্থকধাতৃপপদে তৎসাহচর্যাৎ অর্হার্থেইত্যত্রাপি তদর্থকধাতৃপপদেইতিলক্ষং। অর্ধ্ মর্ছ্ পূলায়াং ভূপ। সূত্রার্থং বির্ণোতি এতদর্থকেতি। জানাতীত্যাদি। উপপদন্তং পূর্ব্বন্থন্ত পরস্থাপি ভবতীতিজ্ঞাপিতং। জ্ঞাঅববোধেক্র্যাপবিদ্জ্ঞানে মৈ মুর্বন্ধয়া দৌ অল্ অলঙ্করণ নিবারণ পর্য্যাপ্তিমুভূপ পরিপূর্ব্ব আপ্ত্র্যাপ্তের্গ পারতারসমাপ্তের্গ পর্য্যাপ্রাদেরিভ্যাদিনভোক্ত্ং স্লায়তি জ্ঞাভুং শকোতীত্যাদের্থহণং। মনোনিশ্চিতইচ্ছার্থে। সমাসেতৃম্ সমোর্ম্মন্তলাপঃ কামেমনন্ত্রপি। অত্রানমন্ত্রাব্যয়নোপপদং নহিসমন্ত্রতি। নিষেধান্নোপপদসমাসঃ গস্তুনিশ্চিতচেতিদিনাতুকামইত্যাদেরি বহুরীহিনোপপদসমাসইতি। কামোহপীচ্ছার্থঃ। অস্ ভূবিদ্যমানে বিদ্সভায়াং রতির্বর্তায়ামেতেঅস্তর্যাঃ সহ্মর্যণে ঘট্ চেক্টায়াং যতীপ্রয়ন্ত্রেঘটার্থঃ আঙ্পূর্ব্বরভরাভাস্তে ভূলভর্প্রাপ্রেঞ্জিধ্বমাপ্রাণল্ভার ইত্যাদেনা স্লায়তিভোক্তুং প্রনার্থঃ ক্ষমূদহনে ক্ষমতেবক্তুং সহার্থঃ চেক্টতেঘটার্থঃ উপক্রামতি আরম্ভার্যঃ প্রাপ্রোজিলাভার্যঃ গল্ভে ধ্বমার্থঃ মহিতি অর্হার্থঃ ইত্যাদে এর্হণঃ। বেলাদিকেইত্যাদিগ্রাহানিসময়াবসরচক্ষুঃ প্রোত্রালি। উপপদেঃ সহত্মস্তর্থাতোরেককর্তৃক্রেরতভাজনন্ত ভাতৃকর্ত্করেনইচ্ছায়াঃ স্বকর্ত্কক্রেমনৈকর্ত্কস্থমিতি নতুম্ এতৎপ্রয়োগদানাৎভাবেবাচ্যত্র্য প্রত্যয়ইতিদর্শিতং। এতৎপূত্রাভাবেকর্ত্রিবাচ্যে অকয়পিস্তাদিতিতত্বাধার্থং সূত্রমিদমিত্যাই ক্রিয়ার্থকেতি। ২১১॥

क्र श्रमी शिका।

বর্ত্ত। বর্ত্তমানেকালেগম্যে অশুতথাত্বেপিনোপপদত্বমিত্যুক্তমুপপদসূত্ত্ত। অবিশেযাল্লক্ষণহৈত্বা-দ্যর্থেচ ধাতুভ্যঃ স্থাতাং। পরেণতু লক্ষণহৈত্বোরপ্রথমৈকাধিকরণামন্ত্রণয়োরিতি কৃত্বাব্যভিচারোদর্শিত ইতিতথানেন নক্তংসামান্যতোবিধানেন সর্ব্বসিদ্ধেরিতিভাবঃ। ২১২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বর্ত্তমানইতি। বর্ত্তমানেকালেবাচ্যেধাতুভ্যঃ শস্তৃশানেস্তিঃ ইত্যর্থঃ। বর্ত্তমানে উপপদেইতিন বাচ্যং তৎকারণমূপপদসংজ্ঞাসূত্রেহবলোকনীয়ং। শানস্থাপি নিষ্ঠাদিস্বং তত্ত্রশস্ত্রানাবিতি আনস্থানিষ্ঠাদি-স্থোক্তেরিতি। ২১২॥

क्९ अमी शिका।

আনঃ। আনইতি বিদর্গান্তঃ তদন্ততায়াদানভাগান্তঃ সতুল্যশানঃ আত্মনেপদসংজ্ঞকঃ স্থাৎ। আত্মনেপদসংজ্ঞকত্বেন তিঙ্ তুল্যতাদাদেধ্যথা বিধানাদিনিয়মন্তথানান্তস্থাপীতিদর্শিতং তেনাত্মনেপদিভ্য

व्यक्तिं अञ्चलकाः मार। विमन् विदान्। २১८॥

উভয়পদিভ্যশ্চ কর্ত্তরিকর্ম্মণিভাবেপরিস্মেপদিভ্যোভাবকর্মণোর্ভবতীতি তাৎপর্য্যার্থঃ। অধিকারলব্ধসাহ্ মৃত্তং কুদিতিপদং সমর্থয়তি কুদিতীতি। শানকানয়োরতদন্তবেনানপদেনাগ্রহণাদাত্মনেপদসংজ্ঞকত্বেন কৃৎপদেনগ্রহণং তেনৈতাবপ্যানান্তবং কর্ম্রাদাবাত্মনেপদাদিভ্যঃ স্থাতামিত্যর্থঃ। বাচ্যানস্ত্র শানএব পৃথক্বাচ্যেনশানুবন্ধত্বেনযুক্ত আনইত্যম্বয়াৎসোপিশানইতিকালগ্রহণার্থ ইতিপাঠেতু আনপদেনযেনবিধিসন্ধিহিত স্থায়াভ্যাংশানস্থমানয়োর্গ্রহণং কালস্থাপ্রকৃতত্বাৎকৃতাগ্রহণমিতি অর্থাদিতরেতু পরস্মৈপদসংজ্ঞকাইতি জ্যোংতেনাত্মনেপদিভ্য ইতিবক্তঃ। অত্রব্যাখ্যানান্তরমূৎক্ষিপ্রাইথং ব্যাখ্যাতমন্তথাশানাদীনাতথানবগমইতি স্থাভির্ভাব্যং। যজনিত্যাদি। শিত্মাদন্ধিকরণাদি। যন্নিতি। ইণঃ শিতীতি যাদেশঃ এতেপ্রথমার্থে বসন্দদর্শতি হেতোশন্ত্বস্বদাহ বসনং দর্শনহেতুঃ হসন্নিতিলক্ষণেহাসোজয়লক্ষণংহেপঠনিত্যামন্ত্রণে অপ্রথমার্থে যথাদদর্শবিতরন্তং পচতাকৃত্মিত্যাদি। ২১৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আনইতি। আনঃ কৃৎ আত্মনেপদং আদাত্মনেপদিধাতুত্যঃ কর্ত্তরি কর্মণিভাবে শভ্স্ত কর্ত্তরি। কৃত্যানট্ কৃতশ্চান্তত্রকুত্রচিদিতি বচনাৎ কৃচিৎকর্মণাপি তেন নথত্রোটিক্রটছন্ধনইত্যনর্থপদ্যেকর্মণি শভ্ঃ। এতহুক্তং তত্রৈব আদিতিতাৎপর্য্যং। কৃদিতিপদং শান্ত কল্পু কানোপরোক্ষাবদিতি বক্ষ্যমাণ কাল্যচ গ্রহণার্থমিত্যর্থঃ। নমুকৃদিতিব্যর্থমান ইত্যুক্তেহপি তয়োগ্রহণসম্ভাবাৎ যথোক্তং শন্ত্রানাবিত্যত্র আনেতি শানকানয়োগ্রহণমিত্যিং তত্রোভয়োরসিমিহিতত্বাদানপদেনোভয়গ্রহণসম্ভবঃ ইহতু শান্ত্য সমিহিতত্বাৎসমিহিতবৃদ্ধিন্তরঙ্গাইতিআয়াৎকালেগৃহীতেহপি অনুবন্ধং ত্যকু আনেগৃহীতইতি প্রতীতি ছর্কারাৎকৃদিতিগৃহীতং তত্মতু উন্ধ্রত্তরা তৎপদেন উভয়োগ্রহণমিতিভাবঃ। যজমিত্যাদি। যজ্দেব-পুজাসঙ্গতকরণদানেমু শিল্তাদন্বিকরণঃ দৃশির্প্রেক্ষণেদৃশঃ পশ্যেতি পশ্যাদেশঃ ভবমিত্যত্তপ্তণঃ তমুবিস্তারে উবিকরণঃ বদ্ ব্যক্তায়াং বাচি অন্ বিকরণঃ ঘূণঘূর্ণভ্রমণে হন্ হিংসাগত্যোঃ অনিম্নঃ আদগুণিনিম্বরে ইণ্ গতেই ইনঃ শিতিযাদেশঃ দদৎদধদিতিদাধাইত্যেতয়োঃ শিতিদ্বিক্রনাদি অভ্যন্তাদন্তোনোলোপঃ। বসন্নিবাসে বসন্। প্রিয়ঃ পতিঃ শ্রীমতিশাসিতুং জগজ্জগিরবাসোবস্থদেস্থানি। বসন্দদশ্বিতরন্তমন্থরা-দিরবাত্তিসমূবং মূনিং হরিরিতিমাঘে। হস্ত্রাপ্রেহ্মন্ পঠব্যক্তায়াং বাচিপঠন্ ভুপচঞ্যপাকেঞিজ্বাহ্নভ্রপদীয়ত্বেনাজনেপদেশানঃ। ২১৩॥

क्र थिमी शिका।

বেতে। তদাদেশতায়ামিষ্ঠান্থিতো প্রাপ্তকন্সু সাম্যাৎপ্রাপ্তংদিরপি। পণ্ডিতপর্য্যায়এববন্সু রভিধানামক্রিয়াবচনইতি কেচিৎতমমহিল্পঃ পারস্তেপরমবিছ্যঃ যতত্ত্বং বিছ্যামিতি তত্তাপিদর্শনাৎ। ২১৪॥

গূতপ্রকাশিকা।

বেত্তেরিতি। বিদ্নেইত্যস্তস্থানে তদর্থে বাবন্ধুঃ স্থাদিত্যর্থঃ। বেত্তীতিবিদ্বন্ বিদ্বান্ নযুক্ত-সাম্ভেতি উপান্তদীর্ঘঃ অন্তলোপঃ। ২১৪॥ অরৌদ্বিন্। অন্যত্রভার্যাং দেফিসিদ্ধপদনির্দ্ধেশার্রাটিলাভায়। ২১৫॥ জরন্রদ্ধে। যণভাবোনিপাত্যঃ জরতী। ২১৬॥ প্রশংস্যের্ছন্। ২১৭॥ স্বন্যজ্ঞেন্যোগিনি। ২১৮॥

क्र ९ अमी शिका।

অরো। তথাত্বে২প্যস্তনোপপদত্বমিত্যুক্তমুপপদসূত্রে। অরাবিতিরুঢ়িঃ। দ্বিষ্অপ্রীতৌ দ্বিষ্-দ্বেষণতুর্জ্বস্থানঃ। এবমন্যত্র। ২১৫॥ •

গৃতপ্রকাশিকা।

অরাবিতি। দ্বিষন্ শন্ত প্রত্যয়ান্তঃ সিদ্ধাতীত্যর্থঃ। যিযক্ষুণাসমান্তুতঃ পার্থেনাথদ্বিক্ষুরং। অভি-চৈদ্যং প্রতিষ্ঠান্তরাদীৎকার্যাদ্বরাকুলইতিমাঘে। ভার্য্যাং দ্বেষ্টীতি নপ্রীণাতীত্যর্থঃ। রুঢ়িলাভায়েতি। অপ্রীত্যর্থ পরিত্যাগেন শক্ররপার্থেরটিলাভায়েত্যর্থঃ। ২১৫॥

क्रथमिशिका।

জরন্। জৃষ্বয়োহানোদিবাদি প্রাপ্তযণভাবেশংসতীতিবদ্ধুবাদিত্বনাশ্বিকরণে জরন্। বৃদ্ধো-জীনোজীর্ণোজরমুপীত্যমরঃ। জরতীলিঙ্গগ্রহণেনেতি স্থায়াৎ। অন্যোজীর্যাতিরুজা। ২১৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

জরিয়তি। বৃদ্ধেবাচ্যেজরিয়িতিসিদ্ধাতীত্যময়ঃ। সোদাহরণং সূত্রং। যণভাবইতি। ইদমুপলক্ষণং জ্বয়োহানোক্র্যাদিপরস্মৈপদিনঃ নীবিকরণভাবঃ জ্বয়োহানো চুরাদ্বি পরস্মৈপদিনাহপি জরিয়তি
সিদ্ধশব্দোপত্যাসাদিতি। ২১৬॥

क्र ९ अमी शिका।

প্রশং। পূর্বব্রারাবিতিবমোপপদরমস্থ বাক্যপ্রুম্বজীতি ঘ্যণ্ প্রশংস্তেম্ভত্যে। অহ্পুজায়াং প্রশংস্থে কিম্ অর্হতি চৌরোধনং ধাতোরনেকার্থত্বাচ্চোরয়তীত্যর্থঃ। ২১৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

প্রেতি। প্রশান্সুকথনে প্রশান্তামেতদিতি বাক্যপ্রুয়জিশন্সীত্যাদিনাঘ্যণ্ অত্রার্থনিপাতঃ।২১৭॥

क्र ९ अमी शिका।

স্থন্। যজ্ঞেনসহযোগঃ সম্বন্ধোবিদ্যতে অস্যেতি প্রশংসায়ামিন্ বিধানং প্রধানভূত কর্ত্মাভার্যং ন দক্ষিণার্থিনাম্বিজামিতি। স্থান্ যজ্ঞযোগইতিব্যদধাৎযজ্ঞেন যোগিনি কিং স্থনোতিস্থামিতিবজ্ঞঃ। যজ্ঞফলেনযোগবিষয়েবর্ত্তমানাদিতি চল্ডোহপি। ২১৮॥

ইঙ্ধারিভ্যাং স্থেশস্তঃ। স্থায়ন্ ধারয়ন্ শ্রুতিং। সুখেশানবাধকো ইয়ং যোগং। ২১৯॥

অকারামুড্ভবত্যানে। পরতঃ। রোচমানেষ্যমাণবং। অকারাং কিং কুর্বাণাধীয়ানগানসম্বিদানাঃ শয়ানবং। ২২০॥

আসঅগ্নস্য ঈনঃ স্যাৎ। আসীনঃ কাঞ্চনাস্নে। ২২১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্বন্ধিতি । যুঙ্ অভিযবেশন্ত প্রত্যায়ে সুবিকরণে স্বন্ধ প্রশংস্থ যজ্ঞযোগিনিগম্যে সচ যজমানঃ ন ঋত্বিক্। ইদমপি সোদাহরণং সূত্রং।২১৮॥

कृश्थमीिका।

ইঙ্ধা। স্থাথে অর্শআদিস্থাদিচিধাস্বর্থস্থপাধকেকর্ত্তরিবাচ্যে। ধ্রঙ্হেন্থিনস্তঃ। অত্রনিয়মইঙি বিধিঃ নিয়মমাহ স্থাইতি। অয়ং যোগঃ সূত্রমিদং। আরস্তোবচনং যোগঃ সূত্রং রচনলক্ষণমিতিপর্য্যায়ঃ। স্থাথে কিং ক্বচ্ছেণাধীতে ব্যাকরণমিতি।২১৯॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

ইঙিতি। ইঙ্ অধ্যয়নে ধৃঙ্'অবস্থানে হৈতুকেনন্তঃ। স্থাবিশিফেকর্ত্তরিবাচ্যে ইঙ্গারিভ্যাং শস্তৃঃ
স্যাৎ। শানবাধকোহয়ং যোগইতি। ইঙ্আত্মনেপদিত্বেন স্থথেশস্তৃ বিধানাৎশানবাধকোহয়ং যোগইত্যর্থঃ। ২১৯॥

क्ट्थमीशिका।

অকা। টিব্রাদাগমঃ। আনান্তেহকারাৎপরস্বাভাবাদানইতি শানকানয়োগ্রহিণং। রোচমান-ইতি। কর্ত্ত্রগানেমুট্। আগমন্ত্রন প্রকৃতিবদ্গ্রহণাদাবমোরিতিনাস্বং। তথাচ অকারাৎপরে সত্যানে অকারস্থান্ত্যাবয়বোভূত্বামাগমঃ স্থাৎ অবয়বস্বাশ্বাস্থাবমোদীর্ঘইতিচন্দ্রঃ। বসাহচর্য্যোবিভক্তিমন্ত্রস্থ গ্রহণাদাগমেনাবমোরিত্যন্তে। ইযুইগ্রমাণবদিতিকারিকা। ইতিবদন্থে উদাহার্য্যাঃ। তত্রাহকাংশিচৎ ক্রশ্ ঐশ্বর্য্যেরুচাদিঃ ক্রশানঃ। সম্বিদানইতি। সমোগস্কুচ্ছীত্যাত্মনেপদং।২২০॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অকারাদিতি। আনইতি শানকানয়োর্গ্রণং শানস্থাসন্নিহিতত্বেন তন্মাত্রেইতি প্রতীত্যভাবাৎ পরসূত্রবাচ্যকারণাচ্চ। রোচমানইত্যাদি। রুচ্দীপ্রে আত্মনেপদীয়ত্বেন শানে মুট্ ইযুইচ্ছায়াং কর্মাণি বাচ্যে শানে মুট্ ইতিবদন্তেপি। কৃঞ্ কুর্বাণঃ ইঙ্ স্থভিন্নেশানেইয়াদেশঃ গাঙ্গতোগানঃ সম্ বিদ্ জ্ঞানে সন্ধিদানঃ শীঙ্সপ্রেশেতের্মিত্যমিতিগুণেশয়ানঃ বদিত্যনেন ঈশানঃ ব্রুবাণইত্যাদয়োজ্যোঃ। ২২০॥

कृश्लामी ।

আস। অবিশেষাৎশানকানয়োরীনঃ কানেহপ্যাসীনঃ বিশেষস্বাদীনাদেশেতদাদেশানাদরাম্বিঃ পুথগীনেকৃতেমাতুরঙ্কস্রাধ্যাসীনইতিষষ্ঠী। আসানইত্যপর্নপাপত্তিঃ স্থাদিত্যাদেশঃ। ২২১॥ আক্রোশেমাঙ্ যুতাদেতো। শন্তুশানো। মাপচন্নুদরম্ভরিঃ। মাপচমানঃ
নিন্দ্যং পচতীত্যর্থঃ। মাজীবন্যঃ পরাবজ্ঞাত্ত্যুথদক্ষোইপি জীবতীতিমাযঃ।২২২॥
পরক্ষেপদিনোইপ্যানশ্ বয়স্তাচ্ছীল্য শক্তিয়ু। গম্যমানাস্থ। যথাকৃষ্ণঃ
শিখণ্ডং বিভ্রাণোরক্ষমাণঃ শক্ৎকরীন্। দনুজানদ্রিসঙ্কাশান্ বিনিন্নানঃ
পুনাতুবঃ।২২০॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

আসইতি। আ ঈঃ স্থাদিত্যক্ত্বাসমুদায়স্থ ঈনাদেশকরণাত্তস্থবলবত্তং তেনানশব্দেনকানস্থাপিগ্রহণং পূর্ব্বাপরয়োঃ শানকানয়োর্গ্রহণাদকারাশ্মুড্ভবত্যানে ইত্যত্রাপি আনশব্দেন উভয়োর্গ্রহণং মন্তব্যং। আসীনইতি। আস্ উপবেশনে আন্তইতিশানঃ আসাঞ্চকইতি কন্দুকানোপরোক্ষাবদিতিকানঃ বলবত্ত্বাত্তন্ত ঈনাদেশেপরোক্ষাবদিত্যাতিদেশিকস্থ তদাদেশেতদ্বদিতি স্থায়েনপুনরাতিদেশিকত্বাস্বীকারাশ্মদ্বিভাবঃ। ২২১॥

कृ श्रमी शिका।

আক্রো। আক্রোশোহনিষ্টভাষণম্ আক্রোশেনিন্দায়াং গম্যমানে মাঙ্যুতাদ্ধাতোরেতো শস্তৃশা-নৌস্যাতাং। তথাত্বেহপ্যস্থানোপপদত্বমিত্যুক্তমুপপদসূত্রে। বর্ত্তমানে শস্তৃশানাবিতি সামান্যতোভবস্তা-বাক্রোশেহপি ভবিষ্যস্তাবাক্রোশেনিয়ম্যেতেতো মাঙ্যুতান্ধানাক্রোশে। মাজীবন্ধিতি। তম্যাজননিরে-বাস্ত জননীক্রেশকারিণইতিপরার্দ্ধং। যস্তথাজীবনিন্দ্যং জীবতি তম্যাজন্মাস্ত মরণমেববর্মিত্যাক্রোশঃ। মাশ্রমালঞ্চবারণইত্যমরঃ। ২২২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আক্রোশইতি। আঙ্পূর্বঃ কুশ্ আহ্বানে আক্রোশনমাক্রোশোঘঞ্ গুণঃ নিয়মার্থমেতৎসূত্রমনা-ক্রোশেন। ডুপচঞ্ষপাকে মাঙ্যোগেশন্তঃ উদরং বিভরীতি ডুভৃঞ্ধারণইত্যস্মাৎ আত্মকুস্কুদরপূর্বকা-দ্ভুঞঃ থিবিধেয়ঃ গুণঃ হ্রস্বামুট্। মাপচমানইতি। ঞ্চুক্বদ্ধত্বেনোভয়পদিস্বাদাত্মনেপদেশানঃ। মাজীবন্নিতি। পরস্তশত্রোরবজ্ঞয়াত্রম্থং তেনদশ্ধইতিবিগ্রহঃ। যঃ পরাবজ্ঞাত্রম্থদশ্ধোহপি জীবতি সমাজীবন্ নিন্দাং জীবতি জননীক্রেশকারিণস্তস্তাজনিরেব জন্মাভাব এবাস্থিতি নিন্দা। ২২২॥

क्र थरोशिका।

পরিশ্র। বয়স্তাচ্ছীল্যশক্তিয়ু গম্যমানায়ু অপিনা আত্মনেপত্যুভয়পদিভ্যাঞ্চকর্ত্তরিস্থাৎ অপ্যসত্ত্বেভাবকর্দ্মণোর্ক্ষয়আদোপরশৈমপদিনিয়মোহভিমতঃ স্থাৎ। শানএবানশিতি বুনকণ্বৎপরেণাক্তং পৃথক্তেপরশৈমপদিনোহণীতিব্যর্থং স্থাৎ। বিজ্ঞাণইতি। গোপানাং বাল্যএব শিথগুধারণাম্বয়োহবগমঃ। তথাচ অবাপবাল্যোচিতনীলকণ্ঠপিচ্ছাবচূড়াকলনামিবোরইতিমাঘঃ। রক্ষ্পালনে পরশৈমপদীরক্ষমাণো-রক্ষণশীলইতি তাচ্ছীল্যং শক্তক্রীন্বৎ সান্ বিনিহস্তাতি বিনিহস্তং শক্তোবিনিম্নানঃ শক্তাবেতৎ। ২২৩॥

যজমানো যফীরিদ্যাৎ প্রমানঃ সমীরণে। ২২৪॥

আরিপ্ ভচ্ছালভদ্ধর্যভৎসাধুকারিণিশ্বভাঃ। তৎক্রিয়াশীলং স্বভাবঃ ধর্মঃ কুলধর্মঃ তৎক্রিয়াসাধুকারিত্বং যস্তাদৃশেকর্ত্তরিবাচ্যেরিপং যাবৎ ভ্নাদি-প্রভায়াবাচ্যাঃ। ২২৫॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

পরস্মাযিতি। যদ্যপত্রেছন্দোহনুরোধাদানশিত্যক্তং তথাপি শানস্থানুবন্ধবেনাস্থাপি শনুবন্ধবিশেষাত্বভাবেরক্যং বোদ্ধব্যং। শিথগুং নয়ুরপিচ্ছং। শিথগুস্তপিচ্ছবর্হেনপুংসকেইত্যমরঃ। বিপুর্বঃ ভুহুঞ্ধারণে আনশিশিস্তাৎ শিতিদ্বিঃ স্থাজুহোত্যাদেঃ ঋবর্ণস্থারঃ পৃহুঞ্মাঙ্ হাঙ্কারইঃ ধাতোঋাকারস্থ সন্ধিজারঃ ণত্বং। রক্ষমাণইতি। আনশি অন্বিকরণে অকারাশ্বুড্ ভবত্যানেণত্বং। শকুৎ করোতীতি শকুৎকরি শকুৎস্তম্বপরাৎকৃঞ্জইঃ স্থাৎ। অন্তর্ম্মলং শকুৎ। শকুৎকরিস্তব্যক্ষ স্থাদিত্যমরঃ।
দনোর্জায়তইতি দকুজঃ পঞ্চমীসপ্রমীপূর্ব্বাজ্জনের্ডঃ দকুজান্ দানবান্। অন্তরাদৈত্যদৈতেয়দকুজেন্দ্রারিদানবাইত্যমরঃ। অদ্রিসঙ্কাশান্ পর্ববিত্রল্যানিত্যর্থঃ। অদ্রিগোত্রগিরিগ্রাবাচলশৈলশিলোচ্চয়াইতি নিভ্সস্কাশনীকাশপ্রতীকাশোপমাদরইতি চামরঃ। পুনান্বিতি। পৃঞ্পবনেলোটস্ত বিভক্তোনাবিকরণে হ্রমঃ পাদেরিতি হ্রমঃ। বোযুমান্। ২২৩॥

क्ल्थमोिशका।

যজ। যফরিপ্রধানভূতে স্বর্গার্থিনিকর্ত্তরিবাচ্যেশন্তঃ। আদেকীত্বধ্বরেব্রতীযকীচযজমানশ্চেত্য-মরঃ। তথাসমীরণে বায়োপবমানইতি। যদ্যপি শানেযজমানইতিসিদ্ধ্যতি তথাপ্যানশন্তোনিপাতঃ পরার্থেদক্ষিণার্থিনি ঋত্বিজিতাচ্ছল্যে কর্মাণ্যপি যজমানপ্রয়োগার্থঃ প্ঞস্তুপবার্থেইপি প্রমানঃ বায়োঃ পরার্থস্বাদিতিবজ্ঞঃ। ক্র্যাদিস্থেইপ্যন্ বিকরণোনিপাতঃ অনিপাতঃ পুনন্ধিতিচ। ২২৪ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

যজেতি। যজ্ দেবপূজাদঙ্গতকরণদানেষু যজতইতি যজমানঃ আনশিশিত্যন্বিকরণে অকারামুট্ অন্যত্র যজনিতি। যজতীতি যক্ষী অকণ্তৃচাবিতিত্চ্ ভ্রজ্জাদের্জস্থাভবেৎ ধকারাচ্চ তবর্গ ইতি জম্মটঃ। পুনীতইতিপবমানঃ আনবিকরণাভাবোনিপাত্যঃ। নভম্বন্বতপবনপবমানপ্রভঞ্জনাইত্যমরঃ। অন্যত্ত পুনাতীতি পুনন্শস্তঃ। ২২৪॥

क्र ९ अमी शिका।

আকিপ্। কিপ্ আ অভিব্যাপ্যআকিপ্ পঞ্চমান্তৈর্বহিরিত্যব্যয়ীভাবেজসন্তং। অভিবিধাবাঙ্ তেন বর্ত্তমানকালেতচ্ছীলাদিকর্ত্তরিবাচ্যেতৃন্স্থাদিতি। তৃনাদয়োধ্যাপ্যোদ্ধীপীচভবতঃ কাবিতি কিপ্ পর্য্যন্তাঅফীবিংশতিপ্রত্যয়াঃ স্মৃতাইত্যর্থঃ। সূত্রার্থং বির্ণোতি তদিত্যাদিনা। তদিতি সামান্যোপ-ক্রমাৎ ক্লীবত্বং সমস্তংবা তৎক্রিয়াইতি ত্রিম্বপি অম্বেতি যস্তেত্যন্তং তাৎপর্য্যার্থক্থনবাক্যং তৎসাধুকারি-শীত্যত্রবহুত্রীহেরভাবাৎ। বাক্যস্ততৎক্রিয়াশীলং যস্তসচ তৎক্রিয়াধর্মোযস্তসচ তৎক্রিয়াং সাধুকরোতীতি তৃন্। স্যাৎ। তচ্ছীলাদিকর্ত্রিধান্তোন্ত্র্ন্স্যাৎ। তচ্ছীলেমখং কর্ত্তা-ফ্রর্বাদান্ বদিতাখলঃ। তদ্ধর্মেবধুমূঢ়াং মুগুয়িতারঃ শ্রাবিষ্ঠাঙ্কনাঃ তৎসাধু-কারিণি গন্তাসখেলং। প্রাদৌনেচ্ছন্তি সামামুদ্যাতাত্জেব। ২২৬॥

ধাত্বর্থনাধুকারিণ্যর্থ ইতি ণিন্ ফলমনপেক্ষ্যধাত্বর্থং সাধুকরোতি সতচ্ছীলঃ তৎসাধুকারীত্যতোভিম্নোহয়ং। তৎসাধুকারীচেতি দ্বন্ধঃ। যদ্যপ্যধিকারাত্তৎপদেনধাতোরেবপরামশোযুক্তস্তথাপিবাচ্যবাচকয়োরভে-দোপচারাত্তদর্থপরামশাঃ। তত্ত্তং সংজ্ঞাসংজ্ঞিকয়োশৈচব বাচ্যবাচকয়োস্তথেতি। অনিয়মেনিয়মকারিত্বাৎ পরিভাষেয়ং। ২২৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

আকিবিতি। তচ্ছীলশ্চতদ্বৰ্মশ্চতৎসাধুকারীচেতি দ্বন্ধঃ। স্মৃথ্যিচিন্তায়াং কর্মণিক্তঃ। সূত্রার্থং বির্ণোতি তদিত্যাদিনা। তৎপদেনক্রিয়োচ্যতে শীলপদেনস্বভাবউচ্যতে তেন তৎক্রিয়াশীলং স্বভাবোযস্তভৎক্রিয়াধর্ম্মঃ কুলধর্মোযস্তভৎক্রিয়াসাধুকারিত্বং যস্ততাদৃশেকর্ত্তরিবাচ্যেবক্ষ্যমাণক্রিপং যাবৎ তৃনাদি-প্রত্যায় স্মৃতাইত্যর্থঃ। পরিভাবাসূত্রামদং। ২২৫॥

क्र९ अमी शिका।

তৃন্। তৃনোনিষ্ঠান্বং। আবিষ্ঠানাং জনানাং কুলাচারোযদূচাং বধুং মুগুয়ন্তীতি। এবং আদ্ধেদিদ্বেহন্নমাহর্ত্তারআহ্বরকাইতি বরক্ষচিবৃত্তিঃ। গন্তাদখেলমিতি। সখেলং দবিলাদং দাধুগচ্ছতীতি সাধুকারিস্বোদাহরণং সখেলং সাধুন্বদ্যোতকং ক্রিয়াবিশেষণং। প্রাদোনচ্ছন্তীত্যভিধানাৎ।
যথোক্তং শন্তুনাতচ্ছালাদ্যাঃ প্রায়েণরুচিপ্রকারাঃ প্রয়োগানুসারেণপ্রযুজ্যন্তেউপদর্গাধিক্যেনভবন্তীতি।
তৃত্বেবেতি। তৃচোবাধকমিদমিতি জ্ঞাপ্যতে। তৃচ্ তৃনোর্ভেদিকাষ্ঠী। ২২৬॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

ত্নিতি। তচ্ছীলেউদামথং কর্ত্তি। মথং যক্তং করোতি অর্থাৎ মথকরণক্রিয়াশীলং যস্ত সমথং কর্ত্তাত্বনানিষ্ঠাত্বেন ন কর্মাণিয়ন্তী। তুর্বাদানিতি। থলস্তৈয়স্থভাবোত্ব্বাদান্ বদতীতি বদ্ ব্যক্তায়াং বাচিত্নিইট। তদ্ধর্মেউদা। মুডিথগুনেইদকুবদ্ধরামুম্ মুগুতি কাচিতামিতরঃ মুগুমুগুতি প্রযুদ্ধেকেহেদ্বিন্ ততন্ত্বনিইটিগুণঃ মুগুয়িতারঃ শ্রবিষ্ঠেদেশেজাতাঃ শ্রাবিষ্ঠান্মণ্তত্রজাতমিত্যাদিনাণ্র্দ্ধিঃ তেষামেসকুলধর্মঃ যদূঢাং বধৃং মুগুয়ন্তীতি। গচ্ছতীতি গন্তাসখেলং সাধ্যথাস্থাৎ। প্রাদাবিতি। অকুবদ্ধকরণমনুপদর্গধাত্তরপ্রত্যয়জ্ঞাপকং তেন প্রাদোনচছন্তীত্যর্থঃ। উদ্ পূর্বঃ কৈ গৈ শব্দে উদ্গায়তীতি তৃচ্ এচাং পাঠন্থিতান্তানামিত্যৈকার্তা। অধ্বযুদ্গাত্হোতারোযজুঃ সাম্বিদঃ ক্রমাদিত্যনরঃ। তৃন্ তচ্ছীলেমথং কর্ত্তান্ত্র্বাদান্ বদিতাথলইত্যেবংছনঃ। ২২৬॥

ইফুজ্ভাজি নিরালং রুঞ্ কচিচর্র্ধিরংসহাং। প্রজনাপত্রপেনস্তোম-ছং পত্যংপচামপি। এতেভাজিফুরোচিফুর্দ্ধিফুসঞ্চরিফবঃ। নিরাকরিফুঃ অলঙ্করিফুঃ কন্যাং। অলং ভূষণপর্য্যাপ্তিবারণেয়। ইনন্তাশ্ছান্দসাইত্যেকে। দৃষদং ধার্যিফুঃ উন্ধাদিফুঃ উৎপতিফুঃ উৎপচিফুঃ। ২২৭॥

জেঃ ফুক্। জিফুঃ । ২২৮॥ ভুবস্তুদো। ইফুফুকো। ভবিফুর্ভূফুরাদ্যতঃ । ২২৯॥

क्र ९ अमी शिका।

ইয় । প্রত্যেকমৃদ্ গ্রহণমেকৈকমুত্বপদর্গদম্বদার্থং । ভাজ্দীপ্তো । নিরালং কৃঞ্ ত্রপৃষ্ শজ্জায়াং ভাজনশীলোভাজিফুরিত্যাদি । দঞ্চারীচবক্ষ্যতি স্বয়ং নিরাকরণশীলোনিরাকরিয়ুঃ । প্রত্যাক্ষাণোনিরাকৃতিঃ । অলং ভূষণইত্যভিধানানুদারেণদর্বত্যার্থেহলং গ্রাহং । আহুরিতি চান্দ্রামইতি শেষঃ । একেইতি পাঠোহপিকচিৎ । তথাচেনন্তাচ্ছন্দদীতি কলাপচন্দ্রো । ছান্দদইতি পাঠেইয়ুচ্ বিশেষ্যঃ । ২২৭ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ইফুজিতি। ইফুরিতি ক্তেউকারানুবন্ধভ্রমঃ স্থাদিতি চনুবন্ধগ্রহণং। নিদ্ আঙ্ অলং পূর্বঃকৃঞ্ রুচ্নীপ্রে চর্গতিভক্ষণয়োঃ রধুরন্ধে রতির্বর্তনে সহ্ মর্ঘণেপ্রপ্রজনীপ্রাহ্রভাবে অপপ্রবিত্রপূর্দজ্জায়াম্ ইন্ অন্তোযেগামিনন্তথাতবন্দ উদ্পূর্বঃ মনীহর্ষে উদ্পূর্বঃ পত্৯ গতো থাতুনির্দেশেইঃ উদ্পূর্বঃ ডুপচঞ্ষ্ পাকে এযামপীফুচ্ এতেইফুচ্প্রতায়ান্তাঃ শব্দাউচ্যন্তইতিশেনঃ। রোচিফুঃ ইফুচিগুণঃ। সঞ্চরিষ্ণবিত্রাকারিকাতেনাক্রমোদাহরণেহপি নক্ষতিঃ। এবং বর্তিফুঃ সহিষ্ণুঃ প্রজনিফুঃ অপত্রপিফুঃ। বিভ্রাড্ ভাজিফু রোচিফুইতি স্থান্বর্জিক্সন্তর্গ্রনিইতি নিরাকরিষ্ণুঃ ক্ষিপুঃ স্থাদিতি বর্তিফুর্বর্তনঃ সমাবিতি সহিষ্ণুঃ সহনঃ ক্ষন্তেতি লজ্জাশীলেহপত্রপিফুরিতি চামরঃ। একইতি। অস্বরস্বীজং যুক্তিবিরহ্রব। ইনস্তানামাহ দৃবদ্মিতি। দৃনদংশিলাং ধুঙ্ অবস্থিতো হৈতুকেনন্তঃ। উন্মদস্ত শ্বাদিফুঃ স্থাদিতি উৎপতি-ফুস্ত ৎপতিতাহলঙ্করিষণু স্ক্রমণ্ডনইতি চামরঃ। ২২৭॥

क्ल्थां शिका।

জেঃ। বাসরূপন্যায়াৎ স্জীতিবাচ্যত্বাৎ। জেতাজিফুশ্চ জিত্বরইতি। ২২৮॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

জেরিতি। জিজয়েইত্যস্মাৎ। জিফুরিতি। জয়তি অর্থাজ্জয়শীলঃ ইফুকিকসুবদ্ধেগুণা-ভাবঃ। ২২৮॥

कृ श्रमोशिका।

ভূব। ভূফুরিতি। ৠদন্তর্জ্রিঞ্ বর্ণাদিতি নেট্ পূর্ববং। ভূফুর্ভবিফুর্ভবিতা। ২২৯॥

গ্লামান্ধিস্থাপিচিমূজাং স্কুঃ। গ্লাম্বুকেফুপক্ষবঃ। স্থাস্কুঃ। আগমস্যানিত্যত্বায়েট্।২৩০॥

গৃধিত্রস্কিপ্ধ্যাংকুঃ। স্যাৎ। গৃধু স্ত্রমু শ্চধ্যফুতৎ শরংক্ষিপুঃ।২৩১॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ভূবইতি। ভূসত্তায়ামিত্যস্মাৎ। ভবিফুরিতি। ইফুচিগুণঃ ভূঞ্বুরিতি ইঞ্কিগুণাভাবঃ। আঙ্ পূর্বঃ দৃঙ্ আদরে অদ্রিয়তেস্মাসো আদৃতঃ ক্তঃ। অত্রভূশব্দোভেদসূচকঃ দ্বাবিতিছন্দোহর্থং। ২২৯॥

क्श्भूमोभिका।

প্লামা। সুরিতি যথাস্বরূপপ্রত্যয়ঃ সনুবন্ধশু নিশ্বলত্বাৎ নাপিচম্বনুবন্ধঃ সইত্যকরণাৎ। পূর্ববিৎ প্লান্থঃ প্লান্থাসাঃ স্থাতা স্থায়কঃ স্থায়ীচেতি মুজ উদনুবন্ধত্বেনবেট্ প্রাপ্তাবা- গমানিত্যহান্দঃ গুণিনির্দ্ধিঃ। ২৩০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শেষাদেঃ ষস্থান ডুপচঞ্যপাকে মৃজ্শুদ্ধে এষাং পরঃমুপ্রত্যয়ঃ। নচৈতেষাং স্থানেইতিভ্রমঃ কার্যঃ প্রত্যয়প্রসাবাং নচ সন্ত্রমঃ তম্মনিফলস্বাৎনাপি নন্ত্রমঃ স্থারত্যকরণাৎনাপি উদন্ত্রমঃ উকারান্তপ্রত্যয় প্রতারপ্রতাপ্রাধাং নচ সন্ত্রমঃ তম্মনিফলস্বাৎনাপি নন্ত্রমঃ স্থারত্যকরণাৎনাপি উদন্ত্রমঃ উকারান্তপ্রতায় প্রতাবে উকারান্ততাপ্রাপ্তেঃ তম্মাৎ মুরেবপ্রতায়ঃ। পক্ষবইত্যন্তং ছন্দন্তেনক্রমরহিতোদাহরণানিদত্তানি ক্রেফ্রইত্যত্তগণঃ। পক্ষুইত্যত্রপূট্যন্তেচ চজাঃ কঃ স্থাৎষত্বং পরিমাক্ষ্রিক্যত্রম্জাগুণিনির্দ্ধিঃ স্থাৎষ্মগুৎ প্রবিশ্ব। নন্তু মৃদ্ধ উদন্ত্রম্বদ্বা বাস্থ্যুতি থূঞ স্তিরধাদ্যদন্ত্রমতইত্যনেনবিকল্পেনেট্ প্রাপ্তিক্থং ন নচ পক্ষেস্থান্দেবেতি বাচ্যং পরিমার্জয়িক্যুরিতি প্রয়োগাদৃক্টস্বাদিত্যত্ত্বাহাগমন্থেতি। নঞাগমগণো-দিক্টসংজ্ঞাপ্র্বাঅনিত্যগাইতি বচনাদিতিভাবঃ। ২৩০॥

क्र ९ अमी शिका।

গৃধি। গৃধু অভিকাঞ্জায়াং ত্রদী উদ্বেগেক্ষিপ্শ্রেরণে ঞিধ্বাপ্রাগল্ভ্যে। ক্লুরিতি ন নমুবদ্ধো নিফলত্বাৎকনুবন্ধঃনাদিত্বেনাগুণত্বেহপি কনুবন্ধকরণং কচিদ্গুণার্থং তেনগর্দ্ধুরিতিবক্তঃ। পূর্ববৎ গৃধুস্ত গর্দ্ধনইত্যাদি। ২৩১॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

গৃধীতি। গৃগ্ধরিত্যাদি। গৃধ্যতীতি গৃধুঃ আকাজ্জাযুতঃ। ত্রশোভীরুভীরুকভীলুকাইতি ধৃষ্ঠে ধৃষ্ণবিষাতশ্চেতিচামরঃ। ধৃষইত্যত্ত্রমত্বঞ্চ তদিত্যস্তং ছন্দস্তেনক্ষিপু,রিতি পশ্চাৎ প্রয়োগে নদোয়:।২০১॥

শমাদেরফকস্যিন্। শনিভ্রমি প্রমাদিনো। ২৩২॥

ভূজাদেশ্চসমঃ পশ্চাৎসূজ্ পৃচিজ্বর্রামপি। ভোগী যোগী রোগী ভাগী ত্যাগী দ্রোহী আযামী আক্রীড়ী আযামী প্রদাবী দ্বেমী দোষী অভ্যাঘাতী সঞ্চারী সংস্কর্মী সংস্কর্মী সংস্কর্মী সংস্কর্মী সংস্কর্মী সংস্কর্মী প্রাদাপী প্রবাদী প্রজ্বী প্রস্কর্মী আদরীচ প্রত্যামী ক্রমী আর্থীত্যাদেশুন্বাধকইনিষ্যতে অভ্যানতদ্ধিতেনাসি দ্বিরিত্যান্তঃ। ২০০॥

क्९ अमी शिका।

শ্মা। অফীববয়বাঅস্তেতি তিশদন্তাগ্যইতিকন্। শমি ভ্রমি শ্রমি তমি দমি মদি ক্ষমামিত্যফ-কাত্মকং সোত্রোহয়ং গণঃ বচ্যাদিত্বেনবসোগ্রহণবৎ ক্রমোহপিগ্রহণং স্থাদিত্যফকস্তেত্যক্তং তেন রিপূনাক্র মিতেতিনিঘুন্। শমীতি। ঘুনি ইচ্কার্য্যং নাস্ত্যমন্তানাং। প্রমাদীতি। মদীহর্ষে গ্লাপনেচইতিমিদ-প্রানিস্তম্বাশ্রহ্রয়ঃ। সকর্মকস্তনেয়তেতেনসংপ্রশমিতেতি পঞ্জিকা। ঘকুবদ্ধউত্তরার্থঃ। ২৩২॥

ग् ष्यकाणिका।

শমাদেরিতি। শমুউপশমেশম্আদিহ্যস্ত। অফকস্তেতি। অফীববয়বাঅস্তেতিবাক্যেজীতাদ্যর্থ-ইত্যাদিনাবয়বার্থস্থাপিগৃহীতত্বাৎতিশদন্তান্তসন্থায়াঃ করিত্যনেনকন্। অফকস্তেতিগ্রহণং শমিভ্রমি-শ্রমিতমিদমিক্রমিমদিক্ষমাং। ক্রমশ্চযণিদীর্ঘঃ স্থাদিতিসূত্রপ্পতক্রম্থাতোর্নিরাদার্থং। শমীতি। শাম্য-তিঅর্থাৎ শমশীলঃ শমীঘ্নিইচ্কার্য্যং নাস্ত্যমন্তানাং দেটাং কম্বম্চমন্থিনেতিইট্কার্যানিষেধা-নাত্রণকুবন্ধের্দ্ধিঃ। এবং ভ্রমীত্যত্রাপি। প্রমাদিনাবিত্যন্তং ছন্দস্তেনপ্রমথধাতুত্যাগেনপরধাতুদাহরণে দোধাভাবঃ। প্রপৃক্ষঃ মদীহর্ষেপৃক্রবৎ কিন্তুস্থামন্তত্বাভাবাদিচ্কার্য্যং জ্রাদিল্বাভাবারপ্রস্কত। ২৩২ ॥

क्टलिमी शिका।

ভূজা। সমঃ পশ্চাৎপরেষাং সঞ্চারিপর্য্যন্তোগণোক্তোভুজাদিঃ ভূজিরত্রোপভোগার্থঃ ভোগশীলোভোগীভোগঃ ফণাস্তীত্যম্ব্যাৎভোগীদর্পঃ। মুজির্যোগেযুজ্ সমাধোষাগী আঙ্পূর্ব্যমেরাযামী
তথাক্রীড় বিহারে আক্রীড়ীযস্থমোক্ষণেআয়াসী। পূর্ববিদ্যায়াদভ্যাঘাতুকইভ্যাদিচক্তজঃ সংস্গীবিকরণিসাহচর্য্যাক্রধাদেঃ পূচীসম্পর্কেইত্যস্তপাপসম্পর্কীনাদাদেরিতিবজ্ঞঃ। আদের্ব্যবস্থ্যাপিনাচ্। প্রসিদ্ধান্তবিবেচনেবাবিবেকীকল্যশ্লাঘায়াং বিকল্যীরুচাদিঃ কথনেহপিকস্গতোদস্ত্যান্তঃ এবং লস্দীপ্রোবিলাসী। বিকাদীভূবিকস্বরইত্যমরঃ। লষ্গ্লেষণক্রীড়য়োঃ কষ্হিংসায়াং লষ্কান্তো বা মূর্দ্ধনান্তাবিতি তুর্গাদিস্তদ্দিস্ত্যমিতিবজ্ঞঃ। পূর্ববিদ্যায়াদ্বিলাস্থকোহপিপরক্ত্মপদিসাহ আর্য্যাদ্বদনিবাদেপ্রবাদীনাত্মনেপদীবস আচ্ছাদনেমস্থ্ বিলোডনে প্রমাণী অন্ বিকরণিসাহচর্যাৎ
বদ্ব্যক্তায়াং বাচিপ্রবাদীলপ্ভাষণেপ্রলাপীপ্রলাবীপাঠেলুঞ্। এতেহন্টেপপ্রানী প্রসাবীপ্রভৃতয়ে

শৃক্ষণমন্থ্যভূলষপদপৎস্থামুকজ্কার্য্যঃ। শাৰুককামুকআগামুকঘাতুক-বর্কপ্রভৃতিঃ ভাবুকঃ অভিনাযুকঃ প্রপাতৃকঃ সূর্য্যমুপস্থাযুকঃ। ২৩৪॥

যথোক্তোপদর্গাঃ সাধনীয়াঃ এতেন ভুজাদিরাকৃতিগণঃ। বিচকপঞ্বনস্তনমাং প্রেমদবদবদলদাং দর্ত্তেশ্বেরান। প্রজবীত্যাদি। ইত্যাদেঃ দিদ্ধয়েত্ন্বাধকইনিষ্যতেইত্যময়ঃ অতস্তন্ বাধার্থং দূত্রস্তলগিত্বান্নতিবৈত্রপদিদ্ধিঃ। যদ্যপিমন্বর্থীয়েনদাক্ষাদ্রপণতাচ্ছীল্যার্থোনোচ্যতে তথাপঃভিধানাৎ প্রজবাদিভাঃ প্রকৃতিভাস্তদর্থ এবত স্থবিধানাদিতি দত্যমূচ্যতে বাদরূপস্থায়েনৈতেভ্যোধ্যেত্বান্তনিক স্তত্নাত্রি বারত্যাত্নস্তাপরূপনিজায়েরি জিনাবাধ্যতে অতোনতদ্ধিতেনাদিদ্ধিরিতিকালাপাআত্য তেবাং দূত্রং যথা প্রেজুস্থবোর্জিদ্কিবিশ্রিপরিভ্বলব্যথাক্ষেতি। স্বমতেতুকৃতামভিধানলকণ হাদেবং দিদ্ধিরিত্যক্তং। ২৩৩॥

গृष्धकाणिका।

ভূজেতি। ভূজাদেঃ সমঃ পশ্চাৎপরেবাং হজ্ পৃচিজ্বর্বনামপিপরোঘন্ স্থাদিত্যর্থঃ। ঘনুবন্ধকরণং চজাঃ কগকরণার্থং ণনুবন্ধাব্দিকলকঃ ইনিতিপ্রত্যয়ঃ। ভোগীত্যাদি। ভূজ্পালনাভ্যবহারয়োয়্মিল অস্থোপরাব্যভাবারবৃদ্ধিঃ কিন্তুগুণঃ চজাঃ কগোঘনুবন্ধের্টিচেতিজস্তগঃ সৌইনহনপ্যার্যস্থামিত্যাদিনাদিনাদিরঃ। ক্রজোপাড়ারাং পৃর্ববং ভজ্সেবায়মত্রাস্থাস্তপরায়বৃদ্ধিঃ ভাজ্স্থানোবৃদ্ধিঃ ক্রছ্ জিঘাং সায়াং গুণঃ আঙ্প্রবিঃ যন্উপরমেবৃদ্ধিঃ প্রপূর্বক্রগতাে বিশ্বক্রতাগুণঃ আভ আঙ্প্রবিঃ হন্হিংসাগতাে ইছদ্ধাবেহন্তেস্থাৎ স্মৃতঃ সম্পূর্বাঃ চর্গতিভক্ষণয়ােঃ বৃদ্ধিঃ সংপ্রবিঃ সজিব্বিসর্গেগুণঃ জন্তাঃ আঙ্গম্পূর্বাঃ প্রতীয়সমাসােনা। সম্পূর্বাঃ জ্ব্রোগের্দ্ধােরস্থাের বিলির্গুণঃ চন্সকঃ পাপেনাদম্পর্কাভিত্তীয়াসমাসা নদম্পর্কা অসম্পর্কাগিতন এল্সমাসানন্তরং ভূতীয়াসমাসােনা। সম্পূর্বাঃ জ্ব্রোগের্দ্ধােরস্থােরস্থাের বিদির্গুণঃ চন্সকঃ প্রপূর্বাঃ মথেবিলাড়নেবৃদ্ধিঃ প্রপূর্বাঃ দুংআদরে প্রতিপ্রবিইন্গতাে ক্ষিক্ষয়েএষাং বৃদ্ধিঃ মিতাং ক্রমঃ কুহ প্রপূরণেগুণঃ বন্মুলাড়ায়ামমন্তর্মাইচ্কার্যাং নাস্তিব্যত্ত্মসঞ্চলন ব্যথাস্থ্রদ্ধামিতাং ক্রমঃ। প্রস্থাংকলাপমত্নাহাছ্বিত্যন্তং অস্তমতেভচ্ছালাদ্যর্পপ্রতীত্যর্থং ঘুন্মতোনভদ্ধিতেনািদিদিঃ বাসর্বাব্যার্দ্ধানিস্ক্রব্যব্যান্দেতেত্যাদি। তথাচামরঃ। জেতাজিঞ্স্চিক্র্রইতি। ২০০॥

क्रथमीशिका।

শৃকম। শৃহিংসায়াং কমেরিনন্তস্তাপিবাসরপত্তায়াচ্চকাময়িত্রীযুবতী। কত্রঃ কাময়িতেত্যমরঃ। পরতয়ালোতুপাতুকঃ। উপপূর্বস্থাপুজার্থত্বাৎসকর্মকঃ নিষ্ঠাদিত্বাদস্তসূর্য্যমিতিনয়্ষ্ঠী।২৩৪॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

শ্কমেতি। কম্বান্তোর্যুদেচনেলষ্কান্তো পদ্গতো পত্৯গতো প্ঠাগতিনির্তো। কমাদেরকার-চন্দোহর্থঃ শৃন্চকমন্চ গমন্চ হনন্চ ব্যন্চ ভূন্চ নয়ন্চ পদন্চ পদ্দেশাত্তিদ্বন্ধঃ আমিঅঘুট্
স্বরেযুধাভূনামালোপঃ। ক্রিয়ভামদোকার্যঃ ঋবর্ণব্যঞ্জনান্তাদ্যাণ্ ইজ্বংবৃদ্ধিঃ ব্যঞ্জনং পরগামি স্বরাৎপরহরেফ।ভ্যাং পরস্থং দিন্তদেববৈভিয়ন্তাদিভাবের দিঃ।
বর্ষ্কইত্যত্রগুণঃ। প্রভৃতিনা প্রশাক্ষকাভিঘাতুকইত্যাদি। উপস্থাযুকইত্যত্রইচ্যাদন্তেভ্যোযুট্। ২৩৪॥

রঙ্ভিক্ষিক্সম্পিলুণ্টতি কুটাং ষাকঃ। বরাকভিক্ষাকো। জম্পাকঃ লুণ্টা-কীষিত্তাদা। ২০৫॥

শীঙ্দয়িপতিস্পৃহিশ্বদানিদ্রাতন্দ্রাভাজালুঃ স্যাৎ। সংশ্যালুঃ দয়য়ালুঃ পত্রালুঃ স্পৃহয়ালুঃ গৃহগ্রহণে। গৃহয়ালুঃ করলীলয়াশ্রিয়ঃ। দয়াদিরদস্ত-চুরাদিঃ নিতংপূর্বদ্রাতেঃ নিদ্রালুঃ তন্দ্রালুঃ তস্যুনত্বঞ্চ।২৩৬॥

क्रश्यमीशका।

রঙ্। র্ণীতেভজতেকমপ্যদৌবরাকঃ কুপাবিষয়ক বাপুইতিযক্তরটিরিতিবজ্ঞঃ। মূঢাবরাকাবয়-মিতিশান্তিশতকং। বরাকাঃ। শোচ্যাইতিতটীকা। বরাকঃ শঙ্করেপুংদিশোচনীয়েইভিধেয়বদিতিমেদিনীঃ। রঞ্জবরিতালুণ্টস্তেয়ে কুট্ছেদনে কুট্ পুট্ হিংসায়াং চুরাদির্ব্বাএযাং সূত্রান্ত্রসারেণ যথোক্তাঃ প্রত্যাশ্চজ্ঞেয়াঃ। শারঙ্কসঙ্করবিধাবরিকুন্তকুটকুট্টাকপাণিকুলিশস্তহরেঃপ্রসাদইতিমালত্যাং। ২৩৫॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

রঙিতি। রঙ্গম্ভক্তোভিক্যাদ্রায়াং জল্প ব্যক্তায়াং বাচিল্টিন্তেয়েইদসুবন্ধরামুম্কৃট্ এষাংপরঃ যাকঃ স্থাৎ। নচৈষাং স্থানেইতিভ্রমঃ কার্য্যঃ আদেশপ্রস্তাবেআদেশপ্রাপ্তেঃ। এবং কুটাকঃ। স্থাক্জল্লাকস্তাবাচালইত্যমরঃ। লুণ্টাকীন্তেয়শীলা। যনুবন্ধকলমাহ্যিত্ত্বাদীতি। করপ্যটনুবন্ধিনইত্যক্ত-স্থাদিভিক্ষাকাবিত্যস্তমুদ্গীতিচ্ছন্দঃ।২৩৫॥

क् थमी शिका।

শীঙ্। দয়গতিহিংসাদানেপৎ ঐশ্ব্যগতিহাং। বজ্ঞস্তপত৯পথেচগতো অস্থানদস্তম্বেপিইনিনদীর্ঘঃ
সূত্রেপতিপাঠাদিত্যাহ। স্পৃহইতিঈপ্নায়াং গৃহগ্রহণেশ্রদ্প্র্বাঞ্অভ্যুপগমেসম্প্রতায়েচবর্ততে তৎপ্রক্রাকুৎসায়াং নিপ্রবিঃ সত্রব। আলাবিল্লোপাভাবেগুণাদিঃ। সদৃশীতবশূর সাপরং জলত্বগ্রন্থালজিছুজা! অপিমিত্রযুমাং সরোক্রহাং গৃহয়ালুঃ করলীলয়াশ্রিয়ইতিনৈষধে। দয়াদিরিতি। গৃহিপর্যস্তঃ।
তক্তনত্বঞ্পুযোদরাদিছেনেতিশেষঃ। অত্র অস্তোগডিমিডভাগং লোলুক্চ। গডিবদনৈকদেশেমিডভূষায়ামাভ্যামিনস্তাভ্যামন্তঃ স্থাৎ কুমোলোলুক্চগডয়ন্তঃ মডয়ন্তঃ। ইত্রুস্তনিক্রিগদিঘ্যিমদিভাইনস্ততঃ
স্তনগদদেঘশব্দেহদন্তচুরাদিস্তনয়িজুর্বলাহকঃ। ক্রম্বালোক্রহর্ষয়িজুঃ গদয়িজুঃ বুষির্বিশব্দেঘায়য়িজুঃ
কোকিলঃ মদীহর্ষেমদয়জুঃ কামুকইতিসূত্রদ্বং কচিৎপুস্তকেলিখিতমস্তি। ২০৬॥

গৃতপ্রকাশিক।।

শীঙিতি। শীঙ্ষপ্নে। সংপৃক্ শীঙঃ সংশ্যালঃ। দ্য়াদিরিতি। দ্য়াদিগৃহিপর্যান্তোহদন্ত-চুরাদিন্তেনদ্য়ালঃ পত্যালুরিত্যনয়োরিনিনর্দ্ধিঃ ম্পূহ্যালুঃ গৃহ্যালুরিত্যনয়োর্মগুণ উপধোপধাত্বাৎ। আলুপ্রত্যায়েইল্লোপইডনামাদিবর্জ্জেইত্যাদিনা আলোগ্রহণাৎ ইল্লোপাভাবেসক্বিত্তগণঃ। এবং নিদ্রালুঃ তন্ত্রালুঃ। ২৩৬॥ শদিসদিধেড্দাসিভ্যোক্তঃ স্যাৎ। শদ্রুঃ শুনস্কাক্তঃ। শত্রুং সদ্রুঃ বিঞ্ বন্ধনে সেকঃ দদাতি দয়তে দ্যতি দাকঃ। ২৩৭॥

সৃঘস্যদাং মরক্স্যান্ত্র। সৃমরোভবিষম্মরোইন্মরোইন্মস্য। ২০৮॥ ছিদিভিদিবিদাঙ্কুরঃ স্যাৎ। ছিত্ররোভিত্ররোগিরাং বিত্রঃ। অকর্মকর্ত্রযাপি। মোহান্ধকারভিত্রঃ দৃপ্তারিপক্ষচ্ছিত্রইত্যাদি। ২০১॥

क्ट श्रिमीशिका।

শদি। শদ্৯শাতনেতচ্চবিশীর্ণতাসদ্৯বিসরণগত্যোঃ অদিতুদীতিনেট্। শদ্রুঃ সক্রুচ। ধেড্-গ্রহণাদাসংজ্ঞকস্থাগ্রহণং কিন্তু দামাত্রস্থদারুঃ। অত্রাকর্ম্মকর্ত্তরীতিবররুচিঃ। ২৩৭॥

গৃতপুকাশিকা।

শদীতি। দদ্ভ বিদরণগত্যবদাদনেষ্ধেট্পানে ডুদাঞ্জদানেদেঙ্প্রণিদানেদোঅবথগুনে অস্তে চামা দা দিএভ্যাক্রঃ স্থাদিত্যর্থঃ। শীয়তইতি অর্থাৎ শদনশীলঃ শদ্রুঃ পতনশীলঃ দদ্রুঃ গমনশীলঃ স্তর্বাং ধয়তীতি ধারুঃ। শীঙ্জিত্যাদিস্তনন্ধারুরিত্যন্তমার্য্যাছন্দস্তেনব্যতিক্রমোদাহরণং নদোষাবহং। খলর্থকোদন্তাইত্যনেন উদন্তপ্রত্যয়শুনিষ্ঠাদিস্বান্ধকর্মণিষ্ঠী। ২৩৭॥

क्र थमी शिका।

স্ঘ। স্থাতো ভোবাদিকস্তাজোহোত্যাদিকস্তাচ গ্রহণমিতিবজ্রঃ। স্থমরোশ্বগভেদঃ। ভক্ষ-কোঘস্মরোহ্মারইত্যমরঃ। স্মরঘস্মরশঙ্কামেইতিকল্পলতা।২৩৮॥

গৃত্পকাশিকা।

স্ঘন্তেতি। স্গতো ঘদ্ত অদনে অদ্ ভক্ষণে এবাং মরক্স্তাৎ। তুঃ পরার্থঃ। সরতিসসতীতি স্মরঃ গমনশীলঃ গমনস্তাবিশেষাৎ ভুবাদি জুহোত্যাদি স্থাতোগ্রহণং। এবং ঘদতীতিঘম্মরঃ অতীতি অদারঃ। ২৩৮॥

क्र ९ अमी शिका।

ছিদি। ছিদ্ভিদোঃ কর্ম্মকর্ত্ত্য্যভিধানাৎ। তথাচতাসাং জলাস্ফালনতৎপরাণাং মুক্তাফলস্পদ্ধিষু-শীকরেষু। প্রোধরস্পর্শিষ্ব শীর্যমানঃ সংলক্ষ্যতেনোভিছ্নোহিহারইতিপদ্যং। অকর্মেতি। ছিদিভিদো-রিত্যর্থঃ। পক্ষঃ সহায়ঃ। করীন্দ্রদর্শভিত্নং মুগেন্দ্রমিতিজামুবতীহরণং। ২৩৯॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

ছিদীতি। ছিদির্দ্বিধাকরণেভিদির্বিদারণে রুধাদী। ছিদিভিদোং কর্ম্মস্থভাবধাতুত্বন কর্মকর্ত্তরি কুরং। স্বয়ং ছিনভিভিনতীত ছিহুরোভিহুরং বেত্তীতি বিহুরং কন্মবন্ধবাদগুণঃ। জ্ঞাতাতুবিহুরোরিন্দু-রিত্যমরং। তুশক্সাম্বয়াৎ কচিৎকর্মকর্ভিমেংপি ছিদিভিদোরিতিশেষং। দৃপ্তেতি। দীপ্তিবিশিক্টারি-সমূহচ্ছেদনশীলইত্যর্থঃ। আদিগ্রাহং কুৎপ্রদীপিকায়াং ধৃতং। স্থেত্যাদি বিহুরইত্যন্তমার্যাছন্দন্তত্ত স্মরোভুবিঘ্মরোহ্বরাহ্মস্থেতিদ্বিতীয়ঃ পাদঃ। ২০৯॥

মিদিভন্জো দুরিঃ কার্য্যঃ। মেদ্রোভঙ্গুরস্তকঃ। ভন্জেঃ কর্মকর্ত্য্যভি-ধানাদন্যত্রত্বেব। ২৪০॥

ভাসেৰুরবরৌস্যাতাং। ভাস্করোভাস্বরোরবিঃ। ৩৪১॥

জাগর্ত্তেরকঃ দ্যাৎ। জাগরিতাযঃ সজাগরকোইপি।২৪২॥

উকঃ কাৰ্য্যোযজিজপিদন্শিবদিভ্যোযঙ স্তেভ্যঃ। যথা যাযজুকোদ্বিজঃ জৎজ পূকঃ সতাং দন্দশূকঃ খলোবাবদূকঃ। ২৪৩॥

क्९श्रमीशिका।

মিদি। ঞিমিদামেহনেভূবাদিঃ। মেদতিমিগ্নোভবতীতি সং। সান্তঃ মিগ্নস্তমেত্রঃ। ভনজো আমর্দনে স্বয়ং ভজ্যতইতিভঙ্গুরঃ। অকশ্মকর্ত্তরিতুকাষ্ঠং ভঙ্ক্তেতিত্নেব। ২৪০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

মিদীতি। ঘুনুবন্ধউরঃ স্থাৎ অভিধানাৎশিকীনামিতিশেয়। তরুঃ স্বয়ং ভঙ্গুরঃ অন্তক্ত্রেতু ত্নেব। ঘনুবন্ধফলং জম্মগত্বং। ২৪০॥

क्र९%मीशिका।

ভাদে। ভাস্দীপ্তো। বরেঘোষেনেট্ ভাস্বরঃ। হলাদিরুচাদিয়াদ্রাসনঃ পৃথ্ববীতি কিপি-ज्रा २८३ ॥

গুঢপ্রকাশিকা।

ভাদেরিতি। ভাদইতি। ভাস্থরোভাদরক দীপ্তিশীলইত্যর্থঃ। ২৪১॥

क्ल्थमीशिका।

জাগ। জাগরণশীলোজাগরকঃ। জাগরিতেতিবা সরপন্যায়াতুন্। ২৪২॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

জাগর্ত্তেরিতি। জাগৃনিদ্রাক্ষয়ে জাগত্তীতি জাগরকঃ উকেগুণঃ। জাগরকোজাগরিতেত্যমরঃ।২৪২॥

কৃৎপুদীপিকা। উকঃ। যঙক্তেভ্য এভ্য উকঃ কার্য্যঃ। যজেঃ ক্রিয়াসমভিহারে যঙিনসম্প্রসারণং বস্তিবচ্যাদেঃ যাযজ্যতইতি উকেব্যঞ্জনাদ্যঙোলোপেযাযজ্কঃ। এবং বাবদূকঃ প্রবক্তরি। জপিজপোস্তলুপাদের্ভাব-গহায়ামিতি যন্ত জংজপুকঃ। দন্দশূকোবিলেশয়ঃ। হিংস্ৰমাত্ৰেহপি। দন্দশূকান্ জিঘাংসাবিতিভটিঃ।২৪৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

উকইতি। যজ্দেব পূজাসঙ্গতকরণদানেষু জপ্ ভাষণেমানদেচদন্শদংশনে বদ্ব্যক্তায়াং বাচি। যঙ্ অন্তোযেষাং নদ্যক্তপাদিভাষয়াকপ্। পুনরকগ্রহণং নিয়মার্থং তেননতৃন্। অত্যর্থং যজতীতি যঙি দ্বিভাবে অকারাদট্ স্থাৎ এবং বাবদুকঃ। ইজ্যাশীলোযাযজুকইত্যমরঃ। জংজপুকইতি। অনুস্বারঃ পঞ্মান্ত জপদীনাং সংজ্ঞাপূৰ্ব্বকত্বাদ্বিন্দুন্থিতিঃ। দন্দশূকইতি যভিদন্শিদন্ভোঃ পরং নলুক্ অভ্যাসাদ্সু-দন্দশুকস্ত পুলিঙ্গোরাক্ষদেচ সরীস্থপেইতিমেদিনী। জাগর্ত্তেরিত্যাদি এতদস্তমার্য্যা। ২৪৩॥

অচিযঙ্লুগ্ভূরিশঃ স্যাৎ। নেন্যনেন্যকলোলুবাঃ। ছলস্তাত্বক্তএব। ভূরিশোগ্রহণাৎ কচিন্নলোলুয়াপোপুয়া। ২৪৪॥

যাতের্বরশ্চ। যঙ্লুক্চ। যাযানশীলোযাযাবরোমুনিঃ। ২৪৫॥ কদীশস্থাপিস্প্রমদাং বরঃ। কম্বরঃ ঈশ্বরঃ স্থাবরঃ পেম্বরঃ প্রমদ্বরঃ প্রমদ্বরা। ২৪৬॥

क्र श्रमी शिका।

অচি। অচিপরেভূরিপ্রয়োগেষু স্বরান্তাদ্ধাতোর্য্যঙ্লুক্স্থাৎ। নেন্সইতি। যঙ্লুকিযশ্বিদ্ধাতোরিতি গুণবাধেঅনেকাচ স্থানংযোগইতিয়ং পরত্রেবর্ণোবর্ণয়োরিত্যুব্। হলন্তাদিতি। ব্যঞ্জনাদ্যঙইত্যাখ্যাতে তুম্মাদ্যঙ্ লুগুক্তএবাতোহত্রস্বরান্তাল্লভ্যতইত্যর্থং। লোল্য়েতি। গুরোঃ সেটইত্যঃ। ২৪৪॥

गृष्यकानिका।

অচীতি। ভূরিযু ভূরিশঃ ইন্টানিন্টো প্রবৃত্তে শস্বছব্লার্থককারকাদিতিশস্। ভূরিশোভূরি-প্রয়োগেয়ুইতার্থঃ। নেঅইত্যাদি। নীঞ্প্রাপণেঅত্যর্থং নয়তীত্যাদ্যর্থে যিঙনেনায়ধাতোঃ পচাদ্যচি যঙ্লোপেঈকারস্তয়ঃ। পরত্রাকণিয়লোপঃ লুঞ্ছেদনেয়ি লোলুয়ধাতোঃ ভাবেকচিদ্যুতইত্যালিয়ঙ্ লুক্ সর্ব্বত্তগাভাবঃ। নেঅশ্চনেত্তকণ্চ লোলুবশ্চেতিদ্বন্ধঃ প্রথমাবহুবচনেরপং। পোপুয়েতি। পূঞ্পবনেইত্যত্রাপিভাবে অঃ স্ত্রিয়ামাপ্রত্যয়ঃ। ২৪৪॥

क्रप्रमी शिका।

যাতে। তচ্ছীলাদিকর্ত্তরিবর্ত্তমানে যণ্ডস্তাদযাধাতোর্ব্বরস্তম্মিন্ যণ্ড্লুক্চস্থাৎ। বিষয়গ্রহণাদ্ধাত্বস্ত স্থেতি লোপেপরনিমিত্তাভাবাৎ স্বরাদেশস্ত স্থানীয়বদ্ধাবনিব্বত্তো যবৌচব্যঞ্জনেত্বযইতিযলোপেহনুবাদ-এবায়ং ন্যায়াবলম্বনগোরবাৎ লুখিধানম্বাঘোষেনেট্ যাযাবরঃ। ২৪৫॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

যাতেরিতি। যাপ্রাপণে। যাতের্যাওন্তাদ্বরঃ চকারাৎ যঙ্লুক্চম্রাদিত্যর্থঃ। যাযানেতি। অত্যন্ত-প্রাপণশীলোযাযাবরঃ। যাধাতোর্যাঙ যাদ্বিভাবে অভ্যাদেহ্রম্বে অভ্যাদাদকারাদট্ বরেযঙ্লোপেযাযাবরঃ নাত্রযঙ্ লুকিঅভ্যাদকার্যাদিনির্ভিঃ যঙ্লুক্যভ্যাদকার্যাণিনিপাতঃ সম্প্রদারণং। ননিবর্ত্ত্যমিত্তুক্তেঃ। ২৪৫॥

क्९ अमी शिका।

কদী। কৃষ্ণতে দিন্ত্যান্ত ইত্যুক্তং ভুজাদিসূত্রে। ঈশ্ ঐশ্বর্যাপিষ্ক সংহননে। বরগ্রহণং যঙন্তনিবৃত্যর্থং। কম্বরইতিনেট্ বিকাশীতু বিকশ্বরঃ ঈশ্বরঃ পতিরীশিতেতিচামরঃ। নদাদ্যজাদিস্বাদীস্থা। ঈশ্বরীচেশ্বরোমায়ামিতি মেদিনী। স্থাবরোজঙ্গমেতরঃ। পেষণশীলঃ পেম্বরঃ পেইটাচ। প্রমাদীচ প্রমন্বরিদ্রিয়ামা। ২৪৬॥

সূজীণ্নশাং করপ্স্যাৎ। সূত্ত্রজিত্তর ইত্তরাঃ। জিত্ত্রীনশ্বরঃ নশ্বরী-তনুঃ। ২৪৭॥

গমঃ করপ্ মদ্যতশ্চ। গত্তরোগত্তরীৰুচিঃ। ২৪৮॥

দীপিকম্পিম্বিনম্ছিন্সিকম্যজস্ভ্যোর ঈরিতঃ। দীপ্রঃ কম্প্রঃ নম্রঃ হিং অঃ কম্রঃ নঞ্পূর্বজস্থুমোক্ষণেঅজঅং। বা সর্রপন্যায়াংদীপনঃ কম্প-নোনস্তানমনঃ। ২৪১॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

ক্সীতি। ষ্ঠাগতিনির্ত্তো পিস্পেস্গতো মুর্দ্ধন্যন্তেপিষ্চ সংচূর্ণনেপ্রপূর্বঃ মদীহর্ষে। ক্সার-ইত্যাদি। ক্সতীতি ঈউইতি তিষ্ঠতীতি পেসতীতি প্রমাদ্যতীতি বাক্যেয়ুবরঃ গমনশীলঃ ঐশ্বর্যাশীলঃ ছিতিশীলঃ গমনশীলঃ প্রকৃষ্টহর্ষশীলইতিক্রমেণার্থাঃ। স্ত্রিয়ামাপ্রমন্বরা। ২৪৬॥

क्र ९ अमी शिका।

স্জী। করপ্। কপন্তবন্ধাবগুণভুগাগম নদাদিস্বার্থো। স্তম্বরোম্গভেদঃ। অতদ্বয়ীজিত্বর-স্থান্দরান্তরেইতিনৈয়ধে। নশ্অদর্শনে ঘোষেনেট্। নশ্বরীবিনাশশীলেত্যর্থঃ।২৪৬॥

गृष्धकामिका।

স্জীতি। স্গতোভুবাদিরদাদিশ্চ গমনার্থস্থাবিশেষাৎ জিজয়েইণ্গতোনশ্অদর্শনে। স্থরেত্যাদি। গমনশীল জয়শীল গমনশীলাঃ। জিম্বরীতি। কসুবন্ধস্থাদ্গুণাভাবঃ পনুবন্ধস্থাৎ হ্রস্বাতুক্ পনুবন্ধস্থাৎ ক্বরপ্যটনুবন্ধিনঃ। এতদন্তানদাদ্যাঃ স্থ্যরিতিনদাদিম্বোক্তেঃ স্ত্রিয়ামীপ্রত্য়ঃ। তনুঃ কায়ঃ। ২৪৬॥

क्र श्रद्रीशिका।

গমঃ। গমোমাধাতোশ্চ তপ্রত্যয়ঃ স্থাদিত্যাশস্কাভঙ্গায়করবৃক্তঃ। মস্থপাঠেইপি মসীপরিমাণেধাড়্ভ্রমঃ। অতঃ প্রত্যয়োনদাদ্যর্থকঃ। গত্বরইত্যত্রউদূঠোঃ করণং তত্রযোবঃ প্রত্যয়সন্ধিজঃ। অন্তম্থং
তং বিজ্ঞানীয়াত্তদন্থোবর্গ উচ্যতেইতি বস্থাধুট্য়াদঃ পঞ্মোপধানদীর্ঘঃ। যদ্বাগতইতিবদ্বিশেষবিধিয়াৎ
প্রাক্মলোপঃ তেন নদীর্ঘঃ এবঞ্চমলোপেলাক্ষণিকৃত্বাত্রুক্ নস্থাদিতিতদ্বিধানং। কায়োবয়োগত্বরমিতি
শান্তিশতকং। ২৪৭॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

গমইতি। গছরোগমনশীল:। গছরীতি নদাদিছাদী। স্থাঃ প্রভারুগুচিস্বিড্ ভাভাশছবিছ্যতিদী-প্রয়ইত্যমর:। ২৪৭॥

कृ श्रमाणिका।

দীপি। দীপীদীপ্তে কপিকিঞ্চিলনেশ্মিঙ্ ঈষদ্ধদনেশপ্তাহ্বত্বেশব্দেচ তৃদিহিদিহিংসায়াংকমুকান্তো।
নঞ্পুর্বেতি। ধাতোরনেকার্থস্থাৎ জন্তপ্রযুক্তেইত্যয়ং মোক্ষণার্থেবর্ত্ততেসোহপিগ্রাহ্য। তথাচ উভয়ত্ত

সনন্ত ভিক্ষাশংসামুঃ। চিকীর্য্বাশংস্থৃভিক্ষবঃ।২৫০॥ ইচ্ছু বিন্দূ নিপাত্যেতে। জ্ঞাতাতু বিহুরোবিন্দুঃ। বিদিন্দবয়বেই হ্যাস্য বিন্দুরৌণাদিকঃ স্তোকার্থঃ।২৫১॥

ক্রিয়াদাতত্যেরপ্রত্যয়োভবতিনজদনং নমোক্ষণমিত্যম্বয়েনাজস্রশব্দোহনবরতপর্য্যায়ঃ ধাত্বর্থোহত্তকর্তাতেন ক্রিয়াবিশেষণমজস্রংপঠতি অজস্রমাক্ষালিতবল্লকীগুণইতিবক্তঃ। অজস্রইতি পাঠেতুতদেযাগাৎক্রিয়াবিশেষণং ঘোষেনেট্। দীপনইতি। অপিচহলাদীতি ক্রুধিমণ্ডনেত্যনঃ। এবং কমিতাকামুকইত্যাদিবিহিতত্বাৎ। ২৪৯॥

गृष्धकाणिका।

দীপীতি। দীপ্যতীতিদীপ্রঃ দীপ্তিশীলঃ কম্পতেকম্প্রঃ কম্প্রনশীলঃ স্ময়তেশ্মেরঃ ঈযদ্ধসনশীলঃ নমতিনত্রঃ নমমশীলঃ হিনস্তীতিহিংশ্রঃ কমেঙিন্স্বার্থেকত্রঃ কান্তিশীলঃ নজস্ততিঅজস্রং নিত্যানবরতাজস্রমি ত্যমরঃ। অজস্রইতিপাঠেতুতদেয়াগাৎ। তথাচামরঃ। ক্লীবেশীঘ্রাদ্যসন্ত্বেস্থাৎত্রিষেষাং ভেদ্যগামিযদিতি। দীপনকম্পননমনেযুনন্দ্যাদিস্থাদনঃ নন্তেত্যত্রত্ব্। ২৪৯॥

क्रथमीशका।

সন। অন্তগ্রহণং ষণ্সম্ভক্তেষিণুদানেধাত্বাদিয়স্ত সত্বেসনোহপিনিরাসার্থং। ধাত্বস্তস্তান্তলোপঃ
চিকীর্ম্বঃ করণেচ্ছাশীলঃ আঙ্পূর্ববশন্স কথনেধাতোরনেকার্থত্বাদাকাজ্জায়াং বর্ত্ততে। আশং স্বরাকাজ্জাশীলইতিভট্টঃ। আসংস্বরাশংসিতরিভিক্ষুঃ পরিব্রাট্কর্মন্দীত্যমরঃ। ভিক্ষাশীলোভিক্ষাধর্ম্মোয়স্ত বা
ভিক্ষ্রিত্যর্থঃ।২৫০॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

সনস্তেতি। সনস্ত ভিক্ষাশংসাংপর উঃ স্থাদিত্যর্থঃ। চিকীর্ষিত্যাদি। কর্ত্ত্র্মিচ্ছতীতিসন্কৃষিত্বে অভ্যাসেধার্ন প্রাক্তরাকারঃকবর্গস্ত চবর্গঃ সন্থবর্ণ ইরভ্যাসেধাতো অনিট্সগ্রস্তদীর্ঘতাৠদস্ত স্থেত্রগুণেহ লিরবুপাস্ত ইতি দীর্ঘঃ উপ্রভ্যায়েধারন্ত স্থাস্থালাপঃ স্থাদননীতিসনোহস্তলোপঃ ষত্বং। ভিক্ষবইত্যস্তংছলঃ ছন্দোহসুরোধাৎ শক্ষুপ্রযোগানস্তরং ভিক্ষধাতুপ্রয়োগঃ। ভিক্ষ্বাদ্ধায়াং। ২৫০ ।

क्रथमिका।

ইচ্ছু। নিপাতস্থ প্রসিদ্ধুপেসংগ্রহপরত্বাদিধুইচ্ছায়াং বিদ্জানেঅনয়োঃ কুপ্রত্যয়াস্তোনিপাতো-বর্ত্তমানেতক্ষীলাদিকর্ত্তরিতেন ইচ্ছতি ইচ্ছাশীলঃ ইচ্ছুল্লোভিষ্ঠঃ ষস্থছঃ। বেতীতিবেদনশীলঃ। জ্ঞাতাতু-বিছুরোবিন্দুরিত্যমরঃ। অত্তনাগমঔণাদিকঃ। উণাদিপ্রত্যয়েসিদ্ধ ঔণাদিকঃ স্তোকার্থোহলার্থঃ। প্রায়িকত্বাদিদমুক্তমন্তার্থোহপিযথা। বিন্দুর্দস্তক্ষতাস্তরে। ক্রবোর্দ্মধ্যেরপকার্থ প্রকৃত্তোপৃষতেপুমানিতি মেদিনী।২৫১॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

ইচ্ছিবত। ইচ্ছুশ্চবিন্দুশ্চপ্রথমাদ্বিচনান্তং। নিপূর্বাঃ পত্৯গতোহেদ্বিনি আতেবিভক্তোকর্মণি যক্ইল্লোপঃ। অত্রয়কারস্ভকারঃ নাগমশ্চনিপাতনাৎ। অন্তৎক্রংপ্রদীপিকারাং জ্ঞাতব্যং।২৫১॥ তৃষি স্বাণ ধৃষাং নজিঙ্। তৃষ্ণক্লোভীশয়ালুজ্বপ্রক্ ধ্যুষ্ঠক্চ ধাষ্ঠ্য-বান্। ২৫২॥

শূবন্দোরাকঃ। বন্দাকঃ শরাক্যুর্যিশাত্রবান্। সৃগতাবিত্যস্যাপীচ্ছস্ত্রেকে তেনবিসরাক তেজইতি। ২৫৩॥

ভিয়োৰুক্ লুক্চ। তেভীৰু ভীলুভীক্ষ কভালুকাঃ। স্বার্থেকঃ। ২৫৪॥

क्रथमी शिका।

ত্বি। তৃষ্পিপাসায়াং ঘোষেনেট্। তৃষ্ণক্লোভিষ্ঠঃ শয়ালুঃ নিদ্রাশীলঃ ঞিধ্বাপাল্ভ্যে**ধ্ষে** ধৃষ্ণগ্রাক্তি বিজ্ঞাতশ্চপ্রকাল্ভঃপ্রতিভাষিতে। ণজিঙ্টবর্গপঞ্চমাদিরিতিপ্রাঞ্চঃ। তর্গপঞ্চমাদিরিতিনব্যাঃ এত্সতে ওকুবন্ধেচান্তব্যবচ্ছেদঃ রয়বর্ণাদিতিষকারাচ্চেতিবাণত্বং। ২৫২॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

তৃষীতি। নজিঙিতি। ইদনুবন্ধোব্যঞ্জনান্তজ্ঞাপকোঙনুবন্ধোগুণনিরাদকোনজ্প্রত্যয়ইতি।
তৃষ্ণাতি তৃষ্ণক্ধুটিজস্তকঃ ঞিশ্বপ্শয়েস্বপিতি স্বপ্রক্ধৃষ্ণাতিধৃষ্ণক্। লুন্ধোহভিলাযুকস্থ্যক্ সমোলোলুপলোলুভাবিতিস্বপ্রক্শয়ালুর্মিদ্রালুরিতিচামরঃ। ২৫২॥

क्र ध्यमी शिका।

শ্ব। শৃহিংসায়াং বদিবাদনস্তত্যোঃ। শরারুর্যাভূকেহিংত্রেবন্দারুরভি বাদকেইত্যমরঃ।২৫৩॥

গূতপ্রকাশিকা।

শৃবন্দেতি। বন্দতেবন্দারুঃ শৃণাতিশরারুঃ। শাত্রবানিত্যন্তং ছন্দন্তেন বিপরীতোদাহরণদ্বয়ং। বিসরতীতি বিসরারু। ২৫৩॥

क्र ९ अमी शिका।

ভিয়ে। রুক্ লুক্ লুপ্যতইতিনাশঙ্কনীয়ং সামান্ততঃ কিপাতদ্রপদিদ্ধাবারস্ভবৈষল্যাৎ। কিন্তামগুণঃ অধীরেকাতরত্রস্থ ভীরু ভীরুক্ভীলুকাইত্যমরঃ। কলাপেতৃভিয়োরুকলুকোভিয়োরুক্ লুক্ ইতিকৃত্বাসাধিতং। অন্তেতুরুগেব কপিরিকাদিত্বাৎ লুক্ বা স্বার্থিককশ্চ কচিদিতিসাধিতং তন্ধকৃতং বৈয়র্থ্যাদেগারবাচ্চেত্যর্থঃ। ২৫৪॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

ভিয়ইতি। ঞিভীভয়ে। ষষ্ঠ্যেকবচনে ঈকারোকারয়োর্দ্ধাতোরসুকারস্থ বেযুবাবিতীয়। চকারউক্তসমুচ্চয়ে। কপিরিকাদিছেনরস্থ লাদেশস্থকাচিৎ কতয়াইহলুগাদেশঃ কৃতস্তেনোভয়োস্ত লাছমিতি। ২৫৪ ॥

ক্ষুজন্ধাঞ্মদিনমাৎ কিঃ পরোক্ষাবদিষ্যতে। তেনদ্বিচনাদিঃ। চক্রি-সম্রিজজ্ঞিমেদিনেময়ঃ কুশলন্দধির্জ্জনোজজ্ঞাদেশঃ। ২৫৫॥

হলাদ্যবর্ণাদস্তেভ্যশ্ছন্দস্যেবং। কিঃ পরোক্ষাবং। পিপিঃ সুধাং দদির্গাৎ জন্মির ত্রং যস্যক্ষিঃ জন্মিঃ চথ্যিঃ দুদন্তিঃ রবব্রিঃ ক্চুকুরিঃ গৃজুগুরিরিত্যা-দিনিপাতনাৎ। ২৫৬॥

क्र ९ अमी शिका।

কৃষ। পরক্ষেব পরোক্ষাবদিতি প্রথমান্তাদ্বতিনাসংজ্ঞাতিদিশ্যতে। ভূয়স্তাভিপ্রায়েণশব্দপ্রয়োগাৎ কিৎপরোক্ষাসংজ্ঞাতিদেশন কার্য্যার্থমতঃ কার্য্যাতিদেশএব পর্য্যবসন্ধইতিকালাপাঃ। সপ্তম্যন্তাদ্বতিঃ তদ্বং কার্য্যমিষ্যতেইতিকেচিং। তদতিদেশেইপিকিত্তাং দদ্রিরত্যাদোবৈকল্লিকগুণেইপি নিষেধার্থং। কার্য্যাণ্যাইদ্বির্বাচনাদিরিতি। নকালাতিদেশইতিপ্রাঞ্চঃ। ভূকুঞ্করণে করোতীতিচক্রিঃ করণশীলঃ স্বসম্রিঃ জনাজননেযজ্ঞিঃ মদী মেদি নম্ নেমি এয়ুদ্বিরুক্তি যজ্ঞাদেশৈত্বাভ্যাসলোপাঃ পরোক্ষাতি দেশঃ প্রয়োজনং। ২৫৫॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

ক্রিতি। সামান্তেনাভিধানাৎ কৃঞ্করণেভু কৃঞ্হিংসায়াংস্বা ভুক্ঞ্করণেত কৃসেচনেভূপ সগতৌ ভুপজুপ স্থান্তরণেচুপএষাং গ্রহণং। ভুধাঞ্ধারণয়োঃ মদীহর্ষে ণম্ প্রহ্রেণন্দেণাদিঃ নাদিঃ এষাং কিঃ কর্বন্ধঃ। দ্বির্বাচনাদিরিত্যাদিনা ঋবর্ণস্থাকারইত্যাদেগ্রহণং। চক্রিরিত্যাদি। করতি কৃণোতি করোতি করতীতিবাচক্রিঃ কিপ্রত্যয়ে কৃদ্বিশ্বে ঋবর্ণাস্থাকারঃ কবর্গস্থ চবর্গঃ পরত্রসন্ধিঃ। জজ্জাগৌভূজন্ গমোরিতি যজ্ঞাদেশেযজ্ঞিঃ মদ্বিশ্বে অস্থানাদেশ্যেকহলোধর্মধ্যএত্বমনট্ স্বরেঅভ্যাসলোপশ্চএবং নেমিঃ দধাতীভিদধিঃ ধাদ্বিশ্বেভ্যাসের্স্বঃ চতুর্থস্থ ভৃতীয়কঃ পরাকারলোপঃ। ২৫৫॥

क्र थमिशिका।

বেদাঙ্গতামন্ত দশ্য়ন্নাহহলেতি। হলাদিশ্চ ঋবর্ণশ্চ আদস্তশ্চেতিদ্বন্ধঃ এভ্যন্তৎ শীলাদে এবং পরোক্ষাবৎ কিরতিদিশ্যতে। পাপানেপানশীলঃ পপিঃ কের্নিষ্ঠাদিদ্বাৎ স্থধামিতিন্যন্তী। দাঞ্দদিঃ বৃত্তং জন্মিরন্দ্রঃ খনশ্চক্ষ ঘদোযক্ষঃ যক্ষিরিতি দুবিদারণে স্দৃপৃণস্তবাইতি বৈকল্পিকগুণাভাবে অবধারণার্থ- ভূশব্দাৎ ঋদন্তন্তেত্যন্ত গ্রহণাদ্বাইনির্ভৌসন্ধিনাদদ্রিঃ বৃত্তর্ঞোর্কাব্রিঃ কৃপাদ্বিক্ষেপেগৃনিগরণে অনয়োর-নোষ্ঠ্যাদপিতস্থোন্নিপাতঃ। আদিনাসাসহিঃ বাবহিরিত্যাদয়শ্চ বোদ্ধব্যাঃ। তথাচসহিবহিপতিশ্চৈকীমিতান্তেভাইতি কালাপঃ। ২৫৬॥

গুঢপ্রকাশিকা।

প্রদান্তন্দঃ প্রয়োগসাধনায়াহহলেতি। জন্মিরিতি। মঃ স্থাদগুণিনিম্বরইতিহনোমঃ বিছাদিঃ ঘস্৯অদনেযক্ষিঃ গমোজগাদেশেজগ্নিঃ থকুবিদারণেচিথ্যুঃ রুঙ্ সম্ভক্তোর্ঞ্ বরণেবব্রিঃ। ছন্দঃপদসিদ্ধয়ে নিপাতনাদিতি। যদ্যপিছন্দঃ প্রয়োগসিদ্ধ্যর্থং সূত্রকরণমনাবশ্যকং তথাপিলোকেহপিপ্রয়োগোহস্তীতিসূত্রং কৃতমিত্যবধ্যেং। উক্তঞ্চকারকেষ্ঠীনিষেধপ্রস্তাবেসোমং পপিরিতি। ২৫৬॥

পৃধুর্বিভাজিভানাং কিপ্। পৃধু ভ্রাড্ভাঃ পুরৌ ধুরৌ। ২৫৭॥
গমিত্যাজ্ঞাদিত্যাং। ইমৌকিপিদিকক্তৌনিপাত্যেতে। পুংসিজগংক্রুগতৌ নকারপ্রশ্লেষাং শন্ত্তবংজগন্ জগন্তাবিভাকে। ক্লীবেজগংজগতী
ক্রুগাং জগতী। ২৫৮॥

क्र १ अमी शिका।

পৃধুর্বি । সামাত কিপন্থনাদিনানিরাকৃতত্বাদিদং যদ্বানতাচ্ছীল্যাদে এভ্যং কিবিভি । পৃপালনপ্রণয়োঃ প্রণরী । উন্বীভুকীধুন্বীহিংসার্থাঃ কিপিরেফাৎপরোছবে লোপের্নগুলারথাদেরএভাগশ্চ ।
ধৃঃ স্ত্রীক্লীবেযানমুখমিত্যমরঃ । টুভাজ্দীপ্তো যজাদিত্বাৎডঃ ভাড্ট । বিভাত্ ভাজিঞ্রোচিঞ্ইত্যমরঃ ।
ভাসনশীলোভাঃ । ২৫৭ ॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

পৃধুকীতি। টুল্রাজ্দীপ্তো। প্রিত্যাদি। পিপর্ত্তি পৃণাতিবা সর্ব্বকোতৃকং পরচক্রাৎপালয়তি রক্ষতিবাপৃঃ কিপি উর্স্থাদোষ্ঠাৎ পরস্থস্থইতি ৠকারস্থোর্ কিপিদীর্ঘাভাবেদিলোপেধাত্বিরুরাবীরুরে। ধ্র্বতি হিনস্তিবাহকানিতিধৃঃ বক্ষিপোর্লোপে পূর্ববিৎ। ধৃঃ স্থাদ্যানমুখেভারেইতি যাদবঃ। ভাসত-ইতিভাঃ। পুরাবিত্যাদি। অর্ণবিরাময়োরভাবে ন ধাত্বিরুরারীরুরো। ২৫৭॥

क्ट्रिमीशिका।

গমি। আভ্যাং তংশীলাদৌ কিপ্ স্থাৎ কিপীমৌদ্বিক্ত নিপাত্যেতে। গচ্ছতীতি গমনধর্মকং জগংস্থাবরজন্মং কিপিযমিমনিতিতঃ। জগংশব্দেন যদাজস্বমমুচ্যতে তদাগমনং ঘটতএব যদাস্থাবর-মুচ্যতে তদাপিপ্রলয়কালেগচ্ছত্যেবেত্যম্বয়াৎদিদ্ধিঃ। নকারেতি। প্রশ্লেষোগুপ্তিভাবেনাবস্থিতিঃ তথাচ জগঞ্চিত্যুচ্চেতি দ্বন্দ্বে নলোপপ্রকৃতে তথারূপাপতিরিতি গুপ্তাবস্থিতিঃ। ক্লীবইতি। নকার-প্রশ্লেষা প্রশ্লেষ্যরোর্জগং। ত্বাৎ আদীপ্রোদ্যোতনশীলোদিত্যুৎ সম্প্রসারণমভ্যাদেব্যথিত্যুত্যোঃ।২৫৮॥

गृष्यकानिका।

গমীতি। গমিত্যুতোং কিবন্তুয়োং স্থানেক্রমাৎ জগৎদিত্যুৎস্থাৎ। জগদিত্যুদিতি প্রথমাদিবচনে বিভক্তীনাঞ্চ লোপনমিতি ছন্দোহর্থমোলোপং প্রথমৈকবচনান্তদ্বয়ং বা। অর্থমাহ ইমাবিতি। ইমোজগৎদিত্যুৎশন্দো। নকারপ্রশ্লেয়াদিতি। জগদিত্যুদিত্যত্রদ্ধদ্ধ জগৎপদং শন্তুপ্রত্যুয়বিশিষ্টং তথাত্বেহপি জগদিত্যুদিতি সম্ভবান্নকার প্রশ্লেয়াদিতিভাবং। জগতীতি। নদাদিত্বাদী। জগতীলোকং পিষ্টপং ভ্রমং জগদিত্যুমরং। জগৎস্থাৎ পিষ্টপেক্লীবং বায়োনাজঙ্গমেত্রিয়ু। জগতীভুবনেক্ষায়াং ছন্দোভেদে-জনেহপিচেতি মেদিনী। ২৫৮॥

দৃজুছোত্যোদদৃ জ্জুছ্। দৃণাতে ভ্য়ার্থে ছ্য়তেইনয়েত্যথে কিপি পূর্ববিদমৌ-নিপাত্যেতে। ২৫৯॥

ধ্যাপ্যোর্ষীপীচ ভবতঃ কৌ। ধারাপীঃ স্থবীঃ প্রপীঃ। ভচ্ছীলাদি-নিরতং। ২৬০॥

কিবচ্ প্রছি প্রফ শ্রে জ্বাং দীর্ঘোনসম্প্রদারণং। বচনং বাক্শব্দ প্রাট্ কটপ্রাঃ শুণ্ডাদণ্ডঃ শ্রেঃ শ্রমন্তিতামিতিশ্রীঃ জবতীতিজূঃ। ২৬১॥

कः अमी शिका।

' দৃজু। দৃভয়েদ্বির্বিচনং ব্রস্বেত্রস্বান্ত্ ভয়নশীলোদদৃৎজুহোতেদ্বিবিচনং দীর্ঘশ্চকরণার্থত্বঞ্চ তেন ছুয়তেহনয়েতি জুহুরুত্তরাপ্রাক্ত্। তথাচ প্রুক্তরাজুহুঃ সন্তিরাধারাচোপভৃশ্মতেতি স্মৃতিবিদঃ। প্রুক্তরাপ্রুহুর্মাত্বিতামরঃ। ২৫৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

দৃত্বিতি। হুদানে জুহোতি। দৃজুহোত্যোঃ স্থানেকিপিদদৃৎজুহুইত্যাদেশোস্তইত্যর্থঃ। দৃণাতি
দদৃৎ। পূর্ববিদিতি। দ্বিরুক্তৌ ইত্যর্থঃ। নিপাতনাৎ ব্রস্বাদিশ্চ।২৫৯॥

क्ट्थमीशिका।

ধ্যাপ্যো। ধ্যৈচিন্তায়াং পৈাঙ্রদ্ধো আঙ্পূর্বাঃ অনয়োন্তৎশীলাদো কিপ্ স্থাৎ কোধীপ্যাদেশো-স্থাতাং। কাবিতি সামান্থার্থং তেন সম্পদাদিত্বাৎ কিপিধ্যানং ধীরিতি। ধ্যায়তীতি আপ্যায়তইতি তৎশীলোধীরাপীঃ। তচ্ছালাদীতি। তচ্ছাল তদ্ধ্য তৎসাধুকারিনির্ভমিতোরহিতমাকিবিত্যুক্তঃ পরতন্ত্বদ্গ্রহণাচ্চেত্যর্থঃ। ২৬০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ধ্যাপ্যোরিতি। কিপ্ দামান্যপ্রাপ্তার্থং কাবিতি এতৎ কিপ্মাত্তেতক্ত বৈয়র্থ্যাৎ। তচ্ছীলাদীতি। ইতঃপরং তাচ্ছীলাদ্যসুবর্ত্তনং নির্তুঃ রহিতমাকিবিত্যুক্তেঃ পরসূত্তে কিব্গ্রহণাচ্চেত্যর্থঃ। ২৬০॥

क्र ९ प्रमिशिका।

কুর্। কিপ্ আভ্যাং কিপ্সার্ত্তমানে কিপিদীর্যশ্চস্থাৎ যথাপ্রাপ্তিসম্প্রসারণং নস্থাৎ। কর্ত্তরিদামান্যতঃ কিবস্তিভাবাদাবিদং দমর্থয়তিবচনং বাগিতি। কিপিবচিম্ববিতি নসম্প্রদারণং দীর্ঘশ্চ। শব্দং পৃচ্ছতীতি শব্দপ্রাট্ নিত্যসম্বন্ধঃ যতীদমাদঃ গ্রন্থিজ্যতিনসম্প্রদারণং ক্রুগতোদক্ষেণ অবতি মৃতাদিকমন্মাদিতিক্রবঃ যজ্ঞপাত্রবিশেষঃ ক্রিঞ্ আশ্রয়ণেকর্মাণিকিপ্দীর্ঘঃ জ্রীঃ প্রুপ্পাত্রবিশেষঃ প্রিঞ্ আশ্রয়ণেকর্মাণিকিপ্দীর্ঘঃ জ্রীঃ প্রুপ্পাত্রবিশেষঃ প্রবিত্তীতিকটপ্রঃ শুণ্ডএব দণ্ডইতি হ্রম্ম্রদীর্ঘতাক্রচিৎ। কটপ্রঃকৌণপেপুংদিহস্তিহস্তেক্ষমেরমেইতিশব্দার্পরঃ। জবতেরকণ্বাধক্রিপ্। ২৬১॥

বিসম্প্রেয় ভূবোডুঃ স্যাৎ। বিভঃ সভুঃ প্রভুত্তবান্। ২৬২॥
মিত্রড়াদেশ্চডুঃ কার্য্যঃ। শতদ্রুঃ কদ্রুশস্তবান্। হ্রস্বান্ত্র্ন্যাৎ তদ্বাধকোডুঃ। ২৬০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কিব্দজিতি। বচ্পরিভাষণেবচ্ চ প্রচ্ছাপ্সায়াং প্রছিশ্চ প্রশ্ব শুগ্রবণগত্যেঃ শুশ্চ শ্রিশ্চ শ্রুদ্র বেগগতো দুশ্চ এষাং কিপ্দীর্ঘঃ যথাপ্রাপ্তিসম্প্রদারণং নস্থাদিত্যর্ঘঃ। বাগিত্যাদি কিপিদীর্ঘে কিরোপে দিলোপেচজঘাং গঃ অন্তেত্তীয় প্রথমাবিতিগস্তকঃ শব্দপ্রাছ্শব্দ। দিলোপেদশ্চহাঞ্চেতিছস্তডঃ ডস্টাঃ। গণ্ডঃ কটইত্যমরঃ। গণ্ডঃ স্থাৎ পুংদিখড়িগনি। গ্রন্থযোগপ্রভেদেচ বীথ্যঙ্গেপিটকেহপিচ। চিহ্নবীরকপোলের হয়ভূষণবুদ্বু দেইতিমেদিনী। শুণ্ডাদণ্ডইতি। শুণ্ডাশব্দঃ স্ত্রীলিঙ্কঃ। তথাচমেদিনী। শুণ্ডাপান্গ্রেমতা। অপ্যস্কুর্ম্ভিনী বেশ্যাহন্তিহস্তস্তরাস্তচেতি। বিশ্বশ্চ। শুণ্ডাহপি জলহন্তিস্থাং মদিরাকরিহ্মিয়োরিতি। অতঃ শুণ্ডএবদণ্ডইতি হ্রন্থস্থদীর্যতাকচিদিতি কুৎপ্রদীপিকোক্তমসং। স্রুণতিপ্রবাহয়োরিতি দন্ত্যাদেস্ত্রনামুপেধহাৎকঃ উব্স্রুবঃ। শ্রীর্কেশরচনাশোভাভারতীসরলক্রমে। লক্ষ্যাং ত্রিবর্গসম্পত্তিবিশাস্করণেয়ু চেতিমেদিনী। জুঃ বেগগতিবিশিষ্টঃ। অত্রকিপ্গ্রহণাৎ ভচ্ছীলাদিনির্ভং কিন্তপ্রয়োগ্রাহিত্য কর্ত্বর্গভাবের্স্থাদিতি। ২৬১॥

क्ट श्रिमीशिका।

বিসম্। বর্ত্তমানেকর্ত্তরিস্থাৎ প্রাদিত্বেইপ্যেষামুপপদফলমুক্তং সমাসসূত্রে। বিভুঃ সর্ব্বগতঃ পরমমহৎপরিমাণসম্বন্ধিকালেদিগাদিরুচ্যতেইতিবজ্ঞঃ। বিভুঃ প্রভোসর্ব্বগতে শঙ্করব্রহ্মণোস্তনেতিমেদিনী।
সন্তুর্কংপত্তিমানং যত্ত্বপদ্যতেতস্থেয়ং সংজ্ঞেত্যর্থঃ। মহেশ্বরবাচকস্ততালব্যাদিরেব। প্রকর্ষেণভবত্তৈশ্বর্যান্দাপদ্যতেইতিপ্রভুঃ স্বামীএতেপ্রায়েণ সংজ্ঞায়াং রুচিয়্বাৎ তেনেহনবিভুর্মরঃ। ২৬২॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বিসম্প্রেষিতি। বিশ্চসম্চপ্রশ্চতে মুভূষাতোঃ ডুং স্থাৎ অত্রডকারো হনুবন্ধঃ। বিশেষেণ ভবতি সর্বত্তবর্ত্তইতি বিভুঃ সম্যগ্ভবতীতিসভুঃ। ইভ্যত্মাট্যোধনী স্বামী শ্বীশ্বরঃ পতিরীশিতা। অধিভূর্মায়-কোনেতাপ্রভুঃ পরিব্রটো হধিপইত্যমরঃ। ২৬২॥

क्र ९ अमी शिका।

মিত্র। বিদ্ধপদোপতাদাদ্দশুভত্বং রলোপঃ নিত্যদমাদশ্চ। কুচিৎড্রুপাঠস্তদাদশুভত্বং পৃষোদরাদিত্বাৎ। ক্রগতোমিত্রং দ্রবতীতিমিত্রভুঃ কুটুমাশক্তঃ। শতং শতভাগং দ্রবতীতিশতক্রঃ নদীবিশেষঃ কং জলং
দ্রবতীতি কক্রন্নাগমাতা শং কল্যাণং ভবত্যস্মাদিতি শস্তুশ্মহেশঃ। ক্রিপিনিদ্ধ্যন্তীত্যাহহ্রমাত্রুগিতি।২৬৩॥

গূতপ্রকাশিকা।

মিত্রেতি। মিত্রভুরাদির্যাস্থা। চাল্ডং সূত্রং ডুং কার্যাইতিচকারসমূচ্চিতং ছন্দোহর্থমেকত্রলিথিতং।
মিত্রভাবেং দিদ্ধয়েডুং কার্যাইত্যময়ঃ। মিত্রভূইতি পাঠেহদিদ্ধশন্দতয়াদস্থভঃ। মিত্রভাবেরিতি রুচিনাথ
ভট্টাচার্য্যসম্মতঃ পাঠঃ কৃচিদ্ শাতে তত্রমিত্রং ভবত্যম্মাদিতিবাক্যং। কং স্থথং দদাতীতিকক্রঃ রাগমশ্চ
নিপাতনাদিত্যপি ব্যুৎপাদ্যতেই শ্রেঃ। নকুশতক্র কক্রশন্দরোঃ কথমাদিনাগ্রহণং কিপ্প্রত্যয়েনিদদ্দেরিত্যত্তাহ হ্রমান্ত্রক্সাদিতি। তথাচতয়োরগ্রহণেক্বিপিশতক্রৎ কক্রদিতি স্থাদিতিভূরিতিভাবঃ। ২৬০॥

ধাতোম্রট্ কর্মাদাবর্থে। লক্ষ্যান্ত্রসারাং। ধেট্ধীয়তেইসাবিতিধাত্রীনীয়তে বিষয়োইনেনেতিনেত্রং দাপ্দায়তেইনেনেতিদাত্রং গাঙ্ গাত্রং। অন্ত্রং শস্ত্রং শাস্ত্রং যোত্রং তোত্রং স্ত্যোত্রং বল্তুং ছত্রং সিঞ্ সেত্রং নিচ্ সেক্ত্রং মেদুং পদ্ পৎ পত্রং পাত্রং পোত্রং নদ্ধী দংস্তা অজাদিত্বাদা। ২৬৪॥

क्ट्थमोशिका।

ধাতো:। কর্মাদাবর্থেবাচ্যে অস্তেহর্থপদোপাদানবীজমুক্তমুপপদসূত্তে। ধাতুগ্রহণং প্রসিদ্ধ্যপাত্ত-ধাতু গ্রহণার্থং জ্বাদিমাত্রনিরাদার্থঞ। আদেব্যবস্থা প্রায়েণকর্মকরণয়োঃ পরিগ্রহঃ তত্তাপি কেষুচিৎ কর্মনিকেয়ু চিংকরণেসংজ্ঞায়াং ন্যুগপদিতিপ্রসিদ্ধিঃ। তথাচকাতন্ত্রং কর্মনিধেটন্ত্রণ্ নীদাপপুযুষুজস্ত ছদ্ দিদিচ্ মিহপৎ পদ্ দন্শনহাং করণে। নহ্শৃকরাবয়েবে। সংজ্ঞাশকত্বাদ্যথাকথঞ্চিদ্বুংৎপত্তিঃ। ধীয়তে পীয়তে শস্তার্থং স্বাক্রিয়তে ঔনধার্থং রক্ষ্যতেবাহদোধাত্রীস্তনমাতাধাইইতিযম্মরুটিঃ ক্ষিতিরামলক্যপি-চোচ্যতে। ধাত্রীস্থাত্রপমাতাপি ক্ষিতিরপ্যামলক্যপীত্যমরঃ। নীঞ্প্রাপণেনয়তিবিষয়ং ধনম্বা প্রাপ্নোত্য-নেনে তিনেত্রং চক্ষুঃ বস্ত্রবিশেরশ্চ নেত্রমিতি রাটিঃ। নেত্রং বস্ত্রেবরট্যাঞ্চ রক্ষমূলেচ লোচনেইতি বিশ্বঃ। দাপলবনেনাত্রং লবিত্রমিত্যমরঃ। গাঙ্গতৌ গাত্রং বপুঃ। অস্তক্ষেপণে। অস্ত্রমায়ুগলোহয়োঃ। শাস্ অনুশিক্টো শাস্ত্রশন্তাদিকেভিনেট্ শাস্ত্রং গ্রন্থঃ। যুযুজিরোঃ যোত্রং যোক্ত্রং। যোতইভিযম্মরুটিঃ যোত্রমিত্যাগমানিত্যস্থাৎ শাস্ত্রাদিস্বাদ্বাদেট্। তুদ্ প্রাজনং তোদনং তোত্তং উূঞ্ স্তোত্তং । ছদ্ খট্টসম্বরণে অর্কাদিস্বাদ্বেন্ ছত্রমাতপত্রং শাস্ত্রাদি। বিঞ্ বন্ধনেকর্মণি সেত্রং বিচির্ সেক্তুং জলসেচনপাত্রং মিহ্ সেচনে মেহতি শুক্রাদিকমনেনিতি মেচুম্ উক্তলিশং জহতাপীতি ক্লীবন্ধং। মেটোমেহন-দেফদীত্যমরঃ। পংপদোঃ পত্রং বাহনপক্ষয়োঃ। আগমবিধেরনিত্যত্বাৎ পতেল্লে ট্পায়তেপীয়তেবানেনেতি। যোগ্যভাজনয়োঃ পাত্রং। পুঙ্ পৃঞ্যেঃ পূর্কবন্দেট্। পোত্রং বস্তেমুখাত্রেচ শূকরস্ত হলস্তচইতিমেদিনী দন্তেচেতি বজ্রঃ। পবতে পুনাতিবানেনেতার্থঃ। যতোযজ্ঞভূমাকৃষ্টির্হলেন ক্রিয়তে বরাহদন্তব্ছিত-মৃত্তিকাযভে গৃহতইতি। নহ্বন্ধনে। নদ্ধী বদ্ধীবরতেত্যমরঃ। দন্শ দংশনে দংষ্ট্রীবরাহাদিদন্তঃ শব্দবাভবোদনয়েঃ স্ত্রীলিঙ্গতা। ২৬৪।

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

ধাতোরিত। কর্মাদাবিত্যাদিনাকরণকর্ত্র ধিকরণাদিগ্রহণং। ধেট্পানে। অস্তাঃ স্তত্যপানাদ-স্তাএব পানমিত্যাশয়েনাহ ধায়তেহ্সাবিতি। মাতোপমাতাচ। ধীয়তেহ্স্তামিতি ধাত্রীক্ষিতিঃ আম-লক্যারদপানাং ধীয়তেহ্সাবিতি ব্যুৎপত্ত্যাধাত্রী আমলক্যপি। ধাত্রীজনন্তামলকীবস্থমত্যুপমাতৃধিতি দোদিনী। তত্ত্বর্থানুসারেণ সর্ব্বত্রবৃৎপত্তিরনুসরণীয়া। লোচনং নয়নং নেত্রমিতি স্তাজ্জ্জ্তীংশুক্রো-র্ম্বেমিতিচামরঃ। নেত্রং মথিগুণেবস্ত্রভেদেমুলেক্রুমস্তা। রথেচক্ষুধিনদ্যাঞ্চেতি মেদিনী। কালে গায়তে গম্যতে নাশোহনেনেতিগাত্রং। গাত্রং গজাগ্রজ্জ্যাদিভাগেহপ্যক্ষেকলেবরেইতি মেদিনী। অস্তত্তে ইদমস্রং। অস্ত্রং প্রহরণে চাপেকরবালে নপুংসক্মিতি মেদিনী। শস্ত্রহংসায়াং শস্ততেহ্নেনেতি শস্ত্রং। শস্ত্রং লোহাস্ত্রয়াঃ ক্লীবং ছুরিকায়াস্ত্রযোধিতীতি মেদিনী। শস্ত্রমায়ুধলোহুয়োরিত্যমরঃ।

অর্ত্তিলৃধুসূখনিসহিচরইত্তন্স্যাৎ। পুবস্তুসংজ্ঞায়াং। অরিত্রং লবিত্রং ধবিত্রং সবিত্রং খনিত্রং সহিত্রং পবিত্রং দর্ভোমেধ্যঞ্চ। ২৬৫॥

শিষ্যতে হনেনেতিশাস্ত্রং। নিদেশগ্রন্থয়োঃ শাস্ত্রমিত্যমরঃ। শাস্ত্রং নহয়োরাগমাজ্ঞয়োরিতিমেদিনী। তুদ্ব্যথনে তুদ্যতেহনেনেতি তোক্রং। তোক্রস্ত প্রাজনেবৈণুকেইপিচেতিমেদিনী। যুমিশ্রণে যুম্বতেহনেন যুজির্যোগে যুজ্যতেহনেনেতি যোক্রং যোক্ত্রং পরত্রধুট্যস্তেচেতিচস্তরুঃ। আবদ্ধাযোক্রং যোক্ত্র মথোকলমিত্যমরঃ। যুগবন্ধনোপযোগিনীরক্ষুরিতিতদর্থঃ। ফুঞ্স্তরতো স্ত্র্যতে হনেনেতি স্তোক্রং। স্তবঃ স্তোক্রং মুক্তিঃ স্তুতিরিত্যমরঃ। ছদ্যতেহনেনেতিছক্রং। যদ্যপি ছল্রমিত্যেব ভবিত্ মর্হতি তথাপি বহুরু একতকারদর্শনাৎ পুষোদরাদিম্বান্তলোপঃ। কচিচ্ছল্রমিতি পাঠোহপি। ছল্রামিযাবতিচ্ছক্রে কুস্তম্মুরুশিলীম্ব্রয়াঃ। নপুংসকঞ্চাতপত্রেইতি মেদিনী। সীয়তে এতৎসেত্রং সিচ্যতেহনেনসেক্রং চম্তকঃ। পদ্গতো পত্গতো পদ্যতে পততিচানেনপল্রং অল্রাপ্যেকতকারোদ্শুতে প্যোদরাদিম্বান্তলোপঃ। পত্তিরাহ্বান্তনেপর্নে স্থাৎ পক্ষেশরপক্ষিণোরিতি পাত্রং ক্রেবাদেগি পর্ণেচ ভাজনে রাজমন্ত্রিণি। তীরদ্বয়ান্তরে যোগ্যইতিচ মেদিনী। পুঙ্ পূঞ্পবনে। নদ্ধীতি। নহতেহনেননদ্ধী। নহের্ধোঢাপবাদকইতিহস্তধঃ। দশ্যতেহনেন দংশ্রী টমুবন্ধত্বেনপ্রত্যয়প্রাপ্তাবপি তহাধক আ। স্ত্রীছন্দঃ। ২৬৪॥

क्र ९ अमी शिका।

অর্ত্তি। রুঢ্যাকরণেএভ্যইত্রন্সংজ্ঞায়াং ভূশ্চার্থে পুবস্তুসংজ্ঞায়ামিত্যপরে। নমুবন্ধঃ সাম্প্রদায়িকঃ। ইয়র্ত্তানেনেতি। অরিত্রং কেনিপাতকঃ। লুঞোদাত্রং লবিত্রং ধূঞ্ বিধূননে। ধবিত্রং ব্যজনং যতদ্রচিতং মুগচর্মণা। কুটাদিত্বেইপ্যস্থাগক্তমিতি বচনাদা গং ধবিত্রমিত্যপিভবতীতি বজ্রঃ। সূপ্রেষণেস্থবত্যনেনেতি সবিত্রং সূর্য্যাবাহনমন্ত্রইতি বজ্রঃ। খনিত্রমবদারণং। সহিত্রং সহনগুণঃ। চরিত্রং স্বভাবঃ এতেচসংজ্ঞায়াং দৃশ্যন্তে। পৃত্ব পুঞোঃ দর্ভহবিষোঃ পবিত্রং। দর্ভোহবিঃ ঋষিশ্চকুদ্বাভিচারাৎ কর্ত্তরিপবিত্রোই্মিঃ সোমশ্চপবিত্রানামকাচিম্নদীতিভট্টঃ। ইত্যেবং নানার্থত্বেইপি দর্ভহবিষোঃ পর্যায়শক্ষঃ পবিত্রমিতি সংজ্ঞেতি বজ্রঃ। ২৬৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অত্তীতি। ঋগতোঁ লূঞ্ ছেদনে ধূঞ্সূ প্রেরণে থকু অবদারণে ষহ্ মর্ঘণে চর্গতোঁ। পূঙ্ পবনে পূঞ্ পবনেচ। সংজ্ঞায়ামর্ত্ত্যাদিভাইত্রন্স্তাৎ রচশন্দত্বাৎকরণে। ইত্রইত্যক্ত্বাইত্রনিতি নকুবন্ধকরণং তদন্তানাং ক্লীবলিঙ্গত্বার্থনিতি সম্প্রদায়ঃ। পুরস্তুসংজ্ঞায়াং করণেক্লীবলিঙ্গত্বং তুশন্দাৎ অসংজ্ঞায়াঞ্চ করণাদোচ বাচ্যালিঙ্গত্বঞ্চেতি। অরিত্রং কেনিপাতকইত্যমরঃ। লৃয়তেহনেন লবিত্রং ধুনাতি বীজয়ত্যনেন ধবিত্রং কূটাদিশ্চেৎ তদাধুবত্যনেন ধুবিত্রং কূটাদিতোহনিচিনিউত্যক্তত্বাৎ ইত্রনোহগুণত্বাৎ তন্মিন্ উব্। খন্ততেহনেন থনিত্রং সহতেহনেনসহিত্রং চরত্যনেন চরিত্রং পুয়তেহনেনপবিত্রং দর্ভঃ কুশঃ পুয়তেএতৎ পবিত্রং পুনাতীতি পবিত্রশ্বন । অস্ত্রীকুশং কুথোদর্ভঃ পবিত্রমিতি পূতং পবিত্রং মেধ্যঞ্চেতি পবিত্রঃ প্রত্তিচামরঃ। পবিত্রং বর্ষণেকুণে। তাত্রেপয়সিচক্লীবং মেধ্যেস্তাদভিধেয়বদিতি মেদিনী। ২৬৫॥

উণাদয়ঃ স্থ্য ৰ্বহুলং। যথা যোগ্যকালে। ক্রাদেৰুণ্। কাৰুদাৰুচারবঃ বাযুঃ। ২৬৬॥

ছিলাদেরক্। ছিদ্রং চক্রং শক্রঃ। ২৬৭॥ অজিচিরীস্থাভ্যোশ্বিত্যেবমাদয়ঃ। অজের্বীবেণুঃ চেন্সুঃ রেণুঃ স্থাণুঃ। ২৬৮॥

क्थमीलका।

উণা। বহুনর্থান্ লাত্যাদত্তইতি ডঃ বহুলং যথাস্থাত্তথোণাদয়ঃ প্রত্যাধাতোঃ স্থারিত্যর্থঃ। প্রাক্ কালবাহুল্যমাহ যথা যোগ্যেতি। অনুবর্ত্তমান্ত্রিরস্থযথোচিতকালইত্যর্থঃ। তানেবকাংশিচদাহ কাদেরিতি। করোতীতি কারুঃ। কারুর্বিশ্বকর্মাণিনাত্রিযুকারকশিল্পিনোরিতি মেদিনী। যৌগিকোর্থি। রাঘবস্থততঃ কার্য্যং কারুর্ব্বানরপুঙ্গবইতিভট্টিঃ। দৃ বিদারণে দীর্ণাতীতি দারু। দারুস্থাৎ পিত্তলেকার্চেদেবদারোনপুংসকং। চারুর্ব্ হস্পতৌ পুংদিশোভনেশ্বভিধেয়বদিতি মেদিনী। রঢ়োবায়ুর্মরুৎ। এবং পাতীতি পায়ুর্গুর্দম্ আশুর্ত্রীহিঃ শীঘ্রগামীচ জবতীতি জাবুরোষধমিত্যাদি যোগরুতং। ২৬৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উণেতি। উণ্ আদির্য্যেষাং তে প্রত্যয়াঃ। যথেতি প্রয়োগামুসারেণ যথোচিতকালেইত্যর্থঃ। তানেবকাংশ্চিদাহক্রাদেরিতি। কু আদির্য্যস্থা। চরতীতি চাকুঃ। বাগতো বাতীতি বায়ুঃ উণিণনুবন্ধস্য ইন্ধন্তাবেআকারান্তাদ্যাগমঃ। অভীত্যাদিক্রাদেক্রণিত্যন্তমার্য্যাতত্রযথাযোগ্যকালেক্রাদেক্রণিতি চতুর্থঃ পাদঃ। ২৬৬॥

क्र थ्रमी शिका।

ছিদা। ভূতেকর্মাণি। ছিন্নং তদিতি ছিদ্রং দূষণরস্কুরোঃ ঘোষেনেট্। চক্ ভূপ্তো চকতীতি চক্রং। চক্রং দৈন্দেরথাঙ্গেচরাষ্ট্রেদস্তাস্তরেচয়ে। আয়ুধে দলিলাবর্তেচক্রোরথাঙ্গনামনীত্যজয়ঃ। শক্ত শক্রোতীতি। শক্রঃ পুমান্দেবরাজেকুটজার্জুনভূক হোরিতি মেদিনী। এবং শুক্রাদয়ঃ। ২৬৭॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ছিদেতি। ছিদির্ দ্বিধাকরণে । কর্ম্বিদ্ধভাণঃ। চক্তৃপ্তিপ্রতিঘাতয়োঃ ভু আ চক্যতে প্রতি হন্যতে এতং প্রতিহস্তীতিবা চক্রং দৈন্যম্ প্রতিহন্যতে ভূমিরনেনেতি চক্রং রথাঙ্গং ভূপ্যত্যমিন্ধনেন বা চক্রং রাষ্ট্রম্ প্রতিহন্যতেহনেনেতি দন্তভেদঃ প্রতিহন্যতে রটাদ্যর্থং ভ্রাম্যতেএতংকুম্বকার্যন্ত্রম্ প্রতিহন্যতে আনেনেতি অস্ত্রং জলাবর্ত্তন্চ চক্যতে বিচ্ছেদেনপ্রতিহন্যতেহদোচক্রঃ কোকঃ। চক্রঃ কোকেপুমান্ ক্লীবং ব্রজে দৈন্যরথাঙ্গয়োঃ। রাষ্ট্রেদন্তান্তরেকুম্বকারোপকরণান্ত্রয়োঃ। জলাবর্ত্তহশীতি মেদিনী। এবং শুক্গতো শোকতি গছতে অর্থাৎ প্রবতীতি শুক্রং তেজইত্যাদয়োহপি। গাথাচ্ছন্দঃ। ২৬৭ ।

क्र अमी शिका।

অজি। অজ্গতিকেপণয়োঃ। বেণুর্বংশীকীচকশ্চনোগুণঃ চিনোতীতিচেমুঃ রোগবিশেষঃ রীগতি-রেষণয়োঃ। রেণুর্ব য়োঃ স্ত্রিয়াং ধূলিঃ স্থাণুকীলেহরেপুমান্। ইত্যেবমাদয়ঃ ইত্যেবশব্দেন পূর্ব্বোক্ত-প্রত্যাস্তদন্তাশ্চ পরাম্ব্যন্তেএতেনধাত্পক্তীনামূণাদিপ্রত্যয়ানামনন্ততাজ্ঞাতব্যা অনেনাসিদ্ধং সর্বাংসাধ্যমিতিভাষঃ। ২৬৮॥

রতাদের্যন্। রক্তম্ভদিতি বত্ম চিরিতৎ চর্মার্কতং কর্ম। ২৬৯॥ ভীমাদয়োইপাদানেস্ফ্রঃ। ভীমোভীস্বস্তব্ধঃ শ্রেক্তঃ শঙ্কুঃ সমুদ্রশ্চ। অত্রবিভেতি তরম্ভি শ্রবস্তি শঙ্কতে সমুন্দত্যম্মাদিতিবাক্যং। ২৭০॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

অজিতি। সুইত্যেবমাদয়ঃ প্রত্যয়াউণাদয়ইত্যর্থঃ। অজেবনীরনণাদিয়ু অজতিপ্রাপ্রোতি শোভাদিকমিতিনোগুণঃ ণত্বঞ্চগণপঠাৎ। ণত্বঞ্চবেণুরিতিস্তৃতিঃ। বেণুয়ু পান্তরে। ত্বক্সারেইপিচ পুং সিস্তাদিতি মেদিনী। চেনুরোগবিশেষেচ তথাচয়নকর্ত্তরীতিকোয়ঃ। রীঙ্গ্রবণরক্ষণয়োঃ দিআ গতৌ ক্র্যাপউভয়োর্ত্রহণং তেনরীয়তেক্ষরতি রিণাতি গচ্ছতীতিবারেণুঃ গুণোণত্বঞ্চরেফাৎ। রেণুঃ স্ত্রীপুংসয়োর্ধূলোপুল্লিঙ্গঃ পর্প্টেপ্রিরিতিমেদিনী। সংজ্ঞাশব্দছাৎ ণত্বমিত্যয়রটীকা। স্থাণুঃকীলেহরেপুমানিতি মুর্দ্ধন্তান্তেমেদিনী। এষকর্ত্তরি বাচ্যে। আদিনান্তনমেঘশব্দেচুরাদিঃ স্তণয়তীতি স্তনয়িজুর্দ্মেঘঃ ইত্যাদয়ঃ সিদ্ধপ্রয়োগসাধকা অনন্তপ্রত্যাম্কেয়াঃ। অস্তবাহুল্যন রুণ্শব্দাধকত্বেন যোগিকাদিশব্দসাধকানামন্যসূত্রাণাং ব্যর্থতাপরিহরনীয়া। ২৬৮॥

क्ट्थनीशिका।

র্তা। ভূতেমন্স্রাৎস্বরং নিষ্ঠায়াবাকোন্তে:। যথাকথঞ্চিদ্বুৎপত্তিঃ রুঢত্বাৎ। রৃত্মিতি। প্রার্থকিত্রর্থাং। চরিতং চলিতং ঘোষেনেট্চর্মাকৃতিঃ ফলকঞ্চ। কৃতং কর্মাকর্মাণিমন্। অথমন্ কনিবিতি সামান্ততোবিধানাদ্র্তেহপি কৃদ্বভিচারাৎ কর্মাণ্যপি সিদ্ধএবিকমনেনেভ্যুচ্যতে বর্মাদিযুভূতএব ভবতিরুচার্থে নান্তত্রকুত্রাপীতিনিয়ম্যতে।২৬৯॥

गृष्प्रकामिका।

র্তেতি। উণাদিগ্রাহ্থানপরান্কাংশ্চিদাহপিত্রাদয়ইতিসূত্রং যাবৎ। সর্ব্বত্রভূতেকর্মণিবাচ্যে প্রত্যয়ঃ। বৃত্তমিতি। রৃতুবর্ত্তনেভূআ। অয়নং বর্জুমার্গাধ্বপন্থানঃ পদবীস্থতিরিত্যমরঃ। চর্মাকৃত্রোচফলকেইতি কর্মাস্ত্রীব্যাপ্যক্রিয়য়োরিতিচমেদিনী। শ্রীছন্দঃ। গঃ শ্রীরিতিতল্লক্ষণাৎ। একগুরুঃ পাদেচেদিতিতদর্বঃ। যদ্যপি রুইত্যত্রগুরুত্বং নদৃশ্যতেতথাপিপাদান্তগোহপি বেত্যনেনতস্থবাগুরুত্বং। ২৬৯॥

क्रथमीशिका।

ভীমা। অপাদানেউণাদ্যন্তর্গত প্রত্যয়াস্তাভীমাদয়ঃ সিদ্ধাঃ স্থাঃ। উণাদিপ্রত্যয়ানামানস্ত্যেন প্রতিব্যক্তিবকুমশক্যয়াৎ প্রত্যয়াঃ প্রকৃতিতঃ প্রত্যয়কার্য্যেণামুবদ্ধাদীনমুস্ত্যসাধনীয়াইত্যর্থঃ। তথাহিভীমভীম্মইতিভীধাড়ঃ মন্মপ্রত্যয়োগুণাদর্শনাৎ কমুদ্ধোভিয়োমক্ স্মকাবিতিলভাতে ইত্যেবমূহনীয়ং তরতেরুক্তরুক্ষঃ কেউবিস্ক্রবোযজ্ঞপাত্রং তম্ব্ব্যোতঃ প্রবাহঃ শকেরুঃ শক্ষঃ। শক্ষঃ সংখ্যাস্ত্রযাদোভিৎ কীলেশকলুষেমুনেতিমেদিনী। উন্দেরক্ঘোষেনেট্ সমুদ্রোহ্বিঃ। অস্মাদিতি। যতোহপায়েত্য-পাদানং কৃতঃ কর্ত্বিপ্রসক্তাবপাদানত্বং বাহুলকাৎ। ২৭০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ভীমেতি। ঞিভীভয়েভীমোভীমোভীয়ানকঃ। তৃপ্লবনসন্তরণয়োক্তরুঃ। ত্রুগতি প্রবাহয়োঃ ভূপ ত্রুবঃ ত্রোতঃ শকিশঙ্কায়াং ভূজা শঙ্কুঃ সম্পূর্ব উন্দী ক্লেদনে রূপসমুদ্রঃ। অপাদানবাক্যং দর্শয়তি অত্তেতি। সংজ্ঞাশকত্বাদ্যথাকথঞ্চিদ্বুংপত্তিঃ।২৭০॥

পিত্রাদয়েনিপাতনাং। পাতীতি পিতামাতাত্বযুখং দদাতিদােশ্বি বা ত্বছিতা রাজতইতিভাতাএষাং বর্ণবিকারনাশেডাগমভাদেশাঃ নপততীবংশোইনেনেতি নপ্তানয়তীতি নেপ্তাঋত্বিক্ তক্ষোতীতি তফাত্বক্ষতীতি ত্বফাক্ষতেঃ সৌত্রস্য ক্ষতয়তি স্বেন্থাগতিং হস্তীতি ক্ষত্তাহ্বয়তী জ্যাদেবতাইতিহোতা পুনাত্যুদ্গানেন পোতাইমৌঋত্বিধিশেষৌ প্রশাস্তীতি প্রশাস্তা এষামিডভাবনস্থিতি পাগমসম্প্র-সারণাদিয়পায়পং নিপাত্যন্তে। ২৭১॥

কচিৎপ্ররতিঃ কচিদপ্ররতিঃ কচিদিভাষা কচিদন্যদেব। অর্থেযু লিঞ্চেমপি क्रिंगिगाफ्रकुर्विभः वाङ्लकः वमस्ति। २१२॥

क्रथहोशिका।

পিত্রা। শব্দৃষ্ট্যাতৃজন্তানিপাতনাৎ সিদ্ধ্যন্তীত্যর্থ:। আই: পিতাপাস্থানেমামাতা। মান্পূজায়াং মাতেতি কেচিৎ। দুষ্থকশ্মোপপদাদাঞোদ্ধহোবাত্চি দুষ্থপদলোপোদাঞোহিঃ দুহ্পক্ষেদুষ্থলোপইডা-গমগুণাভাবে ছহিতা। ভ্রাজতইতি। ভ্রাজ্বদীপ্তো রাজতইতি কচিৎপাঠঃ ভ্রাদেশেনৈকস্বরত্বামেট্ভ্রাতা। পিতামাতেতি বর্ণবিকারঃ ছুহিতেতি বর্ণনাশেডাগমৌভ্রাতেতি ভ্রাদেশঃ। নপ্তেতি। এধামিতি। ক্ষতেরিতি ক্ষৎ হিংদায়াং। ক্ষত্তাস্থাৎ দার্থোদাঃ স্থে। रेज्यादिन वर्गियक्य दिन वर्णाः । করণে হুচ্। অধ্বযু দিলাভূহোতারোযজুঃ সামধিদঃ ক্রমাদিত্যমরঃ। এবামিতি। নপ্তাদীনাং নপ্তেতি ইডভাবোনস্থিতিঃ ননঞ্কারঃ অং ভাগলোপশ্চনেপ্তেতি পাগমঃ তন্তীক্ষত্তেতি ইডভাবঃ জুহোতীতি সম্প্রসারণং জুহোতেঃ मिक्वावित्र ट्वर्टकाश्र त्रत्रत्रामार्थिमनः यथायथः यथामिरक्रमाधामिजार्थः। २१०॥

भाष्यकामिका।

পিত্রেতি। পারক্ষণে পিতামাতা হুষ্থাপপদাৎ ছুদাঞ্দানে হুহ্ প্রপুরণে বা হুহিতা রাজ্দীপ্রো ভ্রাতা ভ্রাজতইত্যপপ্রাঠঃ ভ্রাদেশকথনস্থাপলাপাপতেঃ। ভ্রাদেশঃ অর্থাজ্জলোপেনভ্রাম্থিতিরিতি ব্যাখ্যান-মনাদরণীয়ং ক্৯ফকল্পনাপতেঃ। নাঞ্প্রাপণেনয়তিয়তাদিকম্মিমিতিনেপ্তা ঋত্বিক্ তক্ষু ত্বস্কু তন্করণে তকী ত্বকীক্ষতিঃ সৌত্রোধাতুরদন্ত চুরাদিঃ ক্ষতা। ক্ষতাস্থাৎ সারথো দাঃ স্থেকজিয়ায়াঞ্ শুদ্রজে-ইত্যমরঃ। স্বেঞ্ আহ্বানে হোতা পূঞ্ পবনেপোতা প্রপূর্বাঃ শাহ্ব অনুশিষ্টো প্রশান্তা এতেতৃজন্তানি-পাত্যন্তে। ভীমাদয়ইত্যন্তমাসুফুপ্ছন্দঃ। ২৭১॥

কৃৎপুদীপিকা। অথোণাদীনাং স্তোকোদাহরণেন যৎকিঞ্চিরাগ্রয়ং লোকেসার্থকং প্রতিপদ্যতে। সর্বাং ধাতুভিরা-ব্যাপ্তং শরীরমিবধাতুভিরিত্যনুপপমত্বেন গ্রন্থাপূর্ণতাং পরিহরমাহ কচিদিতি। রুঢ়িযোগাদিতি ছল্ছৈক্যং তত্তপ্রকৃতি প্রত্যয়ার্থানপেক্ষাশক্তীরটিঃ তদপেক্ষনংযোগঃ তত্তকচিৎ প্রয়োগাদেযযাং লক্ষণাত্বপপন্নানাং নামামর্থের প্রকৃতিপ্রত্যয়ার্থের বাচ্যলিঙ্গেম্বপি প্রবৃত্তিঃ কচিদেয়েষাং রুঢ়ে স্তেম্বপ্রবৃত্তিঃ কচিদেয়েষাং বিভাষা-রুঢ়িযোগোভয়নিষ্ঠতা কচিদেয্ধামন্যদেতেভ্যোভিন্নং নিপাতাদিমাত্রমেব ইত্যেবং চতুর্বিধং বাহুলকং বহুলভাবং পূর্ব্বাচার্য্যাবদন্তি এতদাদানং যথাস্থাচুণাদয়ঃ স্থ্যবিতি সূত্রার্থঃ। তথাচ কৃতামানস্ভ্যেন

প্রতিব্যক্তিবক্তু মশক্যত্বাদনয়াদিশাযেনাত্রপপন্নাঃ কারুভীমাদিবৎ জনুষাগন্তকাদ্যাযোগিকাঃ শব্দাঃ যেচ **ছिद्धठळानिवरन्यारगाश्रकातिरण यूक्रमन्त्रमान**ातिक्राः त्यठ वायूत्व्यानिवरेष्ठ्वाधिकरयाशक्राकृतिकातिकः त्यवा এভ্যোহতোনিপাতাদি ভাজস্তেদর্কেদাধনীয়াইতি তাৎপর্য্যার্থঃ। যথাজনিধনায়বপিভ্য উদ্ জনুর্জ্জননং। দিকমি তনি গমি মদি ধাঞ্ ক্রুশিভ্যস্তব্ স্বার্থেকঃ আগন্তুক আগন্তেতিযোগঃ যুদ্যদিভ্যাংমদিক্ যুশ্মদশ্মদিতি রূঢ়িঃ গচ্ছতীতি গোঃ ডঃস্থাত্মদামজিনাতিভ্যঃ দ্যোগোজ্যোইতি যোগরুঢ়াঃ বধুকচ্ছু াদ্যানিপাতাঃ। यचार्काजृतिस्त्रीकथितिष्ठिः योरगारविष्ययागः वर्ष्यकाम् অর্থেষু লিঙ্গেষিতি শব্দাকুক্তীতিবৎ ষষ্ঠার্থে সপ্তমী তেন যেষামনর্থবতামপি লিঙ্গানাং লোকিক বৈদিকপ্রয়োগাৎ কুচিল্লোকবেদশাস্ত্রয়োরেকত্রপ্রবৃত্তিঃ কুচিদশু-ত্রাপ্রবৃত্তিঃ কৃচিদ্বিভাষোভয়ত্রপ্রবৃত্তিঃ কৃচিদনয়োঃ প্রবৃত্তাদক্যদার্ঘাদিকমেবেতি। উণাদয়ঃ হ্যুভূতিহুপীত্যপিকারণং বাহুলকার্থং বাহুলকং প্রকৃতেস্তন্তুদুষ্টেঃ প্রায়সমুচ্চয়নাদপি তেযাং কার্য্য-সশেষবিধেশ্চ ততুক্তং নৈগমরুটিভাবং হিন্নুসাধু নামচধত্তে যদাহনিরুক্তেব্যাকরণে শক্টস্ত চত্তোকং। যন্ন পদার্থবিশেষ সমুত্থং প্রত্যয়তঃ প্রকৃতেশ্চতদূছং সংজ্ঞাত্ম ধাতুরূপাণি প্রত্যয়াশ্চ ততঃ পরে কার্য্যেণ বিদ্যাদকুবন্ধমেতৎ শাস্ত্রমুণাদিষিতিবৃত্তিঃ। অস্থার্থঃ বাহুলকমিতি বহুনর্থাল্লাতীত্যতোহকুপদর্গাৎ ডঃ বহুলস্ভাবে।মনোজ্ঞাদিত্বাদকণ্ বহুলব্যাখ্যানেহেতুং কথয়তি প্রকৃতেস্তমুদৃষ্টেরিতি প্রকৃতেদ্ধাতুপ্রকৃতেঃ স্কল্পনাৎ ইদমুক্তং ভবতি অপিনাংনুক্তা অপি সন্নিধীয়ন্তইতি অপরমপিবাহুলকেহেছুং কথয়তি তেষামুণাদিপ্রত্যয়ানাং বহুত্বস্বীকারাৎ অয়মর্থঃ উণাদিপ্রত্যয়াঃ সূত্রেপ্রতিব্যক্তিস্তোকমুদাস্ততাঃ অপরে বহবঃ স্বয়মূহনীয়াইতি তহিপ্রতীতি গোরবমপনেতুং তত্তদ্যক্ত্যা সূত্রকৃতা কিং নোপন্য স্তমিতি বক্তিকার্য্যে-সশেষ*চাসো বিধিশেচতি তথাকাৰ্য্যস্থ সশেষ বিধানম্বিধিঃ বিধিরিতি সাধ্যস্থানিঃশেষকরণীয়ত্বস্থাশক্যকরণীয়ত্বাৎ শব্দরূপাণামতি ভূযিষ্ঠত্বাৎ তত্তস্মাৎকারণাদ্বাত্লকমুক্তম্ এতেনকিংস্ঠাদিতি বদস্তিনৈগমেত্যাদি নিগমএবনৈগমঃ স্বার্থেহণ্এবমাদিত্বাৎ নৈগমশ্চরুটিশ্চতাভ্যাং ভবমিতিবিগ্রহঃ তথাচলৌকিক বৈদিকশব্দরূপং স্থসাধুস্থাৎ ইদমুক্তং নিরুক্তকারস্থ্য . শাক্টায়নভামতেন সম্বাদয়তি নামচেত্যাদিনা চকারোহ্বধারণেধাতুজাৎ পরোবোধ্যব্যঃ নিরুক্তেবেদাঙ্গে তদাচার্য্যোধাতুজ্ঞমেব নামলিঙ্গমাহশক্টপ্ত চতোক্ষপত্যং শাক্টায়নঃ স্বকীয়ব্যাকরণেত্থেত্যাহ পদমর্থো-২স্তেতিপদার্থঃ প্রকৃতিপ্রত্যয়াগমাদেশাদিঃ পদার্থ-চাদোবিশেষ-চেতিতস্মাৎ সমুখমিতিবিগ্রহঃ ভচ্চশব্দ-রূপং পদার্থবিশেষসমুত্থং নস্তাৎ তদূহ্য কল্পনীয়ং কত্মাদিত্যাহপ্রত্যয়তঃ প্রকৃতেশ্চেতি শব্দং দৃষ্টৃপ্রত্যয়ঃ প্রকৃতিশ্চোহনীয়াবিত্যর্থঃ চকারাদাগমাদেশাদিশ্চ উহনপ্রকারমুদ্দিশতি সংজ্ঞাশব্দেষু অর্থকুষ্ঠক্রোফুপ্রভৃতিষু ধাতুরূপাণি ঋকুযক্তুশাদীনিপ্রত্যায়াশ্চ থন্থক্তুনাদয়ঃ কার্য্যেণগুণাদিনাহকুবন্ধাদিকং বিজানীয়াৎ উপসংহা-রমাহএতদিত্যাদি শিষ্যতেব্যুৎপাদ্যতেহনেনেতিশাস্ত্রমুপদেশকম্বচনমিতি ভট্টনারায়ণঃ। কুচিৎ তেষু আগ-স্তকাদীনাংপ্রবৃত্তিঃ কচিত্তেষুবেণু চেম্বাদীনামপ্রবৃতিঃ কৃচিত্তেষুকার্ব্বাদীনাংবিভাষাকৃচিছ্ক্তাদ্ভান্নিপাতাদিক-মেবেতি চতুর্বিধমিত্যাত্তঃ ন ঈদৃশবাহুলকম্বিনাপি দেবসর্পাদাবেতচ্চতুর্বিধদর্শনেন বচনানুচিতত্বাৎ। ২৭২॥

शृष्यकानिका।

কচিদিতি। রুটিশ্চযোগশ্চদ্বদ্দৈকত্বং তেনরুটো যোগাৎ রুটিযোগাচ্চেতিতদর্থঃ। কুচিদেযাগা-দ্বোভাঃ অর্থেযুপ্রকৃতি প্রত্যয়ার্থেয় লিঙ্গেষপি বাচ্যলিঙ্গেষপিপ্রবৃত্তিঃ প্রত্যয়ানামিতিশেয়ং কুচিদ্রটেহেতাঃ কন্সকানো পরোক্ষাবং। ধাতোঃ পরো স্থাতাং। বংকরণা লিঙ্কত্বং। অতিদেশ প্রোজনং দিকক্তো ত্বাভ্যাসলোপাদেশানামাদিত দিখিঃ। তুই বান্ চক্বান্যজ্ঞং চক্রাণঃ পেঠিবান্ শ্রেতিং। কান আত্মনেপদং। জিগীবান্ ব্যতিজ্ঞানেশবভ্বান্ জিগ্যানোবভ্বান্ জগ্মিবানয়ং। আনুচ্ছান্ ব্যানশানন্তংচিকির্যাঞ্চ ক্বানপি। সপাটলায়াং গবিত্তি বাসমিতির্ঘৌ;২৭০॥

প্রত্যয়ানাং তেষপ্রবৃত্তিং কৃচিক্রতিযোগাদ্ধেতাঃ বিভাষাপ্রত্যয়ার্থা বাচ্যলিস্ব প্রত্যপ্রবৃত্তী কৃচিদ্যদেবএতে-ভ্যোভিয়ং নিপাতাদিমাত্রমেব তথাহিকৃচিৎ প্রকৃতিপ্রত্যয়ার্থি বাচ্যলিস্ব প্রত প্রকাশকাঃ থতায়াঃ যথা আগন্তকঃ আগন্তকা আগন্তকমিত্যাদিয়ু কৃচিৎ প্রকৃতিপ্রত্যয়ার্থিয় বাচ্যলিস্ব প্রাণ্ডিকালকাঃ যথাযুম্মদম্মদাদিয়ুক্তিং প্রকৃতিপ্রত্যয়ার্থিয় প্রকাশকা অপ্রকাশকাশ্চ বাচ্যলিস্ব প্রাণিতথা। যথাগোপ্রভৃত্তিয়ু তত্ত্র-হিপ্রকৃত্যর্থ গমনপ্রত্যয়ার্থ কর্তৃপ্রকাশকাঃ গমনকর্ত্রপরাবোধকতয়া ভদর্থাপ্রকাশকাশ্চ এবং পশুগোপক্ষেবাচ্যন্ত্রালিঙ্গ পুল্লিস্প্রকাশকাঃ জলাদিপক্ষেক্রীবলিস্ব্যাপ্রকাশকাশ্চ কৃচিমিপাত্রমাত্রপ্রকাশকাঃ যথাবধ্বভূক্তি ক্রুয়ার্থিয় বাচ্যলিস্ব্য প্রকাশকাঃ অপিত্রবর্ণান্তরাদিনিপাত্রকাত্রইত্যবং চতুর্বিধং বাহুলকমুণাদিপ্রত্যয়ানামর্থ বাহুল্যং বদন্তিপ্রাঞ্জইতিশেষঃ। বদন্তীত্যস্বর্গোহ্রমেব পাচকমণ্ডপ্রক্ষপ্রত্তিশৃণাদিভিন্নপ্রত্যয়েষপি চতুর্বিধবাছলকস্বদৃষ্টত্বন উণাদিযুবচনানোচিত্যাৎ। উপজাতিছন্দঃ। ২৭২॥

क्९भ्रमोशिका।

কৃন্সু। পরোক্ষেব পরোক্ষাবদিতি প্রথমান্তাদ্বতিঃ কৃন্সুকানবিশেষণং সংজ্ঞাতিদেশোহয়ং পরোক্ষাতীতে কর্ত্তরিপরোক্ষাসংজ্ঞাতিদিফৌতোস্থাতাং। এতেনপরোক্ষভূতম।ত্রেবিধানেন চ আত্মনেপদিয়াদ্রবেকর্মণোরপিকানঃ তথাচ পরোক্ষাতীতেধাতোঃ কৃন্সুকানৌস্থাতাং তৌচপরোক্ষেব-ব্যপ্রিক্টাবিতিচন্দ্রঃ। নুকু পরোক্ষাবিভাক্তিত্বেন প্রসিদ্ধোত্বিধানাদনয়ারপিতত্ত্বে বিভক্তিধাতুবর্জিত-ইত্যলিস্বর্গান্ততঃ স্থাদির্মাভূদিতি মন্দধিয়াং শঙ্কামপকুদন্নাহ্বৎকরণাদিতি। লিঙ্গত্বং লিঙ্গসংজ্ঞাচেত্যর্থঃ বতেরর্থ ইতিবচনাৎ । অন্যথা প্রবৃত্তাসংজ্ঞানিস্তানভবতীতি ন্যায়ান্বিভক্তি-কিঞ্জিয় নং স্থাদিতি ভাবঃ। বস্তুতস্ত পরোক্ষাসংজ্ঞকোস্থাতামিত্যশ্বয়বোধেনান-সংজ্ঞাপ্রব্রতাবলিঙ্গত্বং য়োর্নিব ভক্তিত্বমলিঙ্গ হংস্থপ্তিঙোরেবতত্ত্বনপ্রসিদ্ধেঃ তেন শঙ্কামাত্রং নিরস্তমিতি গ্রন্থকংশ্বরসঃ। ভট্টনারায়ণস্তকার্য্যাতিদেশোহয়ং কার্য্যাণিদ্বিক্তত্যেত্যস্বভ্যাসলোপাদীনি নতুকথমে-তানিপরোক্ষাকার্য্যাণি সর্বেষাং ধাতুকার্যুত্বাদিতিনৈবং পরোক্ষায়ামিবেতি সপ্তম্যন্তাদ্বতের্বিধানাৎ সহিদোষঃ প্রথমান্তান্বতো তথাচ বদিতি সপ্তম্যন্তান্বতো ধাতুকার্য্যন্তুতং তদতিদেশাৎ অতএব লিঙ্গত্বং নবিরুদ্ধাত ইত্যাহ। তটীকাকারস্তকার্য্যাতিদেশইতি তাৎপর্য্যতঃ তথাহি কার্য্যাতিদেশইত্যুক্তেঃ কায্যিণোহপেক্ষা অত্রচ নির্দ্ধিষ্টাপরোক্ষাতস্থাং যানিচাতিদেশ্যানি তেয়ু পরোক্ষায়ানকায্যিত্বং কিন্তু

নিমিত্তত্বং প্রধানতয়া কার্য্যবাচকঞ্পদমত্র ন শ্রায়তে পরোক্ষাবৎপদং বিশেষণতয়াকার্য্যবাচকং যথামপুরা-য়ামিব মপুরাবৎপ।টলীপুত্ত্রপ্রাসাদইতিঅতএববক্তব্যং কার্য্যবিশেষণংপরোক্ষাবৎপদংবিশেষণত্বাদেগাণভূত-মেব অতোনিমিত্তাদেশইতি বজুমুচিতং কথং কার্য্যাতিদেশোহয়মিতিনাশঙ্কনীয়মৃ অতোনিমিত্তাদেশঃ কার্য্যাম্প্রত্যেব ভবতীত্যাই। বজ্রধরস্ত বস্তুতস্ত প্রথমান্তাদ্বতির্মিদোশাবহঃ সংজ্ঞাতিদেশোয়ৎস্বরবৎ বাঙৰৎস্থনদীতিবৎ সংজ্ঞাতিদেশোহত্র কার্য্যার্থমেবাতোনলিঙ্গত্বক্ষতিরিত্যাহ। অতিদেশপ্রয়োজনমিতি। দ্বিক্সক্তিশ্চ অস্থানাদেশীতি এত্বঞ্চ অভ্যাদস্থলোপশ্চাদেশশ্চ আন্চ আম্চেতি দ্বন্দ্বিত্যম্ আদিনা আমঃ কুঞাদ্যমুপ্রয়োগাদি পরিগ্রহঃ। তস্থাং পরোক্ষায়াং বিধিঃ কার্য্যং তত্তদাদিশ্চাসো তদ্বিধিশ্চেতি সং এতৎসর্কমিহাপি কর্ত্তব্যমিতিসংজ্ঞাতিদেশফলমিত্যর্থঃ। তয়োঃ কন্সুকানয়োরাদিরাদিতৎরাজদন্তাদিঃ তয়োরাদৌ বিরুক্ত্যেত্বাভ্যাদলোপাদেশানাম্ বিধিঃ এতত্বপলক্ষণতয়া কুঞাদ্যকুপ্রয়োগাদিশ্চাতিদেশ-প্রয়োজনমিতিকেচিৎ। ভুষ্টুবানিতি। বিরুক্ত্যাদি। কানআল্লনেপদমিতি। আনঃ কুদাল্লনেপদমিতি-সূত্রাৎ। জিগীবানিতি। কৃতিদিব্বিচনস্থ জেগ্যাদেশঃ। ব্যতিজিগ্যানইতি। ক্রিয়াবিনিময়েইত্যাত্মনে পদিস্বাৎকানেহনেকাচ ইতি যঃ। জগ্মিবানিতি। গম্বিদ্ হনিতি ইট্। আনুছানিতি। ঋছ গতীন্দ্রিয়-প্রলয়হিংসাদানেষু অস্তাভ্যাসস্থান্। ব্যানশানমিতি। অশূব্যাপ্তাবুভয়পদী অশ্লোতেচিত্যান্। চিকীর্ঘাঞ্চ-ক্বানিতি। অয়াদেত্যামন্তাৎকৃঞ্পুপ্রয়োগঃ। তস্থিবাংসমিতি। কন্দোদেট ইভীট্। সপাটলায়াং গবিতস্থিবাংসংধনুর্দ্ধরঃ কেশরিণং দদর্শ। অধিত্যকায়ামিব ধাতুম্য্যাং লোধ্রক্রমং সানুমতঃ প্রফুল্ল-মিতি। ২৭৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।
কল্মুকানাবিতি দিতীয়াপ্রথমান্ততয়াতদিশেণপরোক্ষাবদিত্যশু পরোক্ষেবপ-রোক্ষাবদিতি প্রথমান্তান্বতোপরোক্ষাসংজ্ঞাতি দেশোহয়মিতি লভ্যতেসংজ্ঞাতিদেশেপরোক্ষাকার্য্যং তয়োঃ স্থাদিত্যর্থতোলাভঃ। নুর্যদিতয়োঃ পরোক্ষেতিসংজ্ঞাতর্হিকথং তদন্তয়োল্লিঙ্গত্ব বিভক্তি ধাতুবর্জিত-বৈশ্যবলিঙ্গত্বাদিত্যত আহ বৎকরণাদিতি। তথাচ উপমেয়ে বাচ্যেবৎ প্রত্যয়বিধানাৎ উপমেয়ক্ষচ সদৃশার্থ-ত্বাৎ তদ্ভিন্নত্বেদতি তদ্গাতভূয়োধর্ম্মবত্ত্বং দাদৃশ্যমিতি দাদৃশ্যলক্ষণাৎতয়োঃ পরোক্ষাভিন্নত্বেদতি পরোক্ষা-ধর্মকার্য্যভাগিত্বাম্মলিঙ্গত্ব ব্যবহতিরিতিভাবঃ। তুর্ফুবানিত্যাদি। ফুঞ্ স্ততো তুফাবেতি তুর্ফুবান্ কুন্সো দ্বিরুক্তিঃ অঘোষোদ্ধস্থিতান্ শিটইতিদলোপঃ দৌনযুক্তদান্তমহতোরিতি প্রাণ্দীর্ঘে দিলোপে সংযোগান্ত-লোপঃ। চকুবানিতি। কুঞোদ্বিত্বেঋবর্ণস্থাকারঃ কবর্গস্থ চবর্গোহভ্যাদে। পঠ্ব্যক্তায়াং বাচিদ্বিত্বে অস্থানাদেশ্যেকেতি এম্ব প্রাগ্লুক্চ্ইটিপেঠিবান্। জিগীবানিতি। জিজয়ে কুন্সো জেগীতিগ্যাদেশঃ। ভূসতায়াং কৃত্তিত্বস্তু ভূর্বভূইতি বভাদেশঃ বভূবান্। জ্মিবানিতি। গ্রমইটিবক্ষ্যমাণ্যুক্তেরিটঃ কিন্তুয়া জগ্মাদেশঃ। অস্থাভ্যাদস্থানৃকারে আনৃচ্ছান্। তস্থিবাংসমিতি। স্থাদিত্বেঅভ্যাদহ্রস্থাদি আদন্তাদিটিইট্য বর্ণস্তলোপনমিত্যালোপঃ। সপাটলায়ামিতি। সধ্যুর্দ্ধরোরাজাদিলীপঃ পাটলায়াং শ্বেতরক্তমিশ্রবর্ণায়াং। শ্বেতরক্তস্ত পাটলইত্যমরঃ।বক্তবর্ণায়ামিতি মল্লিনাথঃ গবিতস্থিবাং সংস্থিতং কেশরিণং সিংহং দদশদৃষ্টবান্ কমিবদানুমতঃ পর্বতম্ম ধাতুময্যাং গৈরিকধাতুবিকারভূতায়াং অধিত্যকায়ামূদ্ধভূমো। উপত্যকাদ্রেরা-সন্নাভূমির্ব্ধমধিত্যকেত্যমর:। প্রফুল্লং বিকসিতং লোক্রমমিবেত্যর্থঃ। ২৭৩॥

কিন্তাদিনা নগুণঃ সম্মবান্ তৃ তিতীর্বান্ তিতীরুষী দু দিদীর্বান্ কৃ চিকীর্বান্ চিকীরাণঃ। অত্র জজাগুবান্ব্যতি জজাগ্রাণইত্যুদাজন্তঃ। অন্যেতু শন্তু কিন্বজিতে জাগুগুণিনিচ্ছন্তি জজাগ্রান ব্যতি জজাগ্রাণঃ বাজাগরাঞ্চ কবান্! নাত্রনোলুগিতিনান্তি ভন্জ বভজান্ রন্জ ররজান্ ররজানঃ মন্থ্যম্বান্ বৈকিপিক নলুক্র্যাদেব শুন্ত্ ব্রেথিবান্ শশুন্তান্ সম্প্রানঃ তথা ব্যুব্যঞ্জনেলোপঃ দিদিবান্ চুকুবান্ চুকুবান্টিন্তান্ত বিশ্বান্ত বিশ্বান চুকুবান্টিনিন্তান বিশ্বান বিশ

क्र थमी शिका।

বিরুদ্ধধর্মসমবায়েভূয়দাং স্থাৎ সধর্মকস্থাতিন্তায়েন ছত্রিণোযান্তিভট্যামোহয়মিতি বন্তুয়োহভিপ্রায়েণচ পরেক্ষাতিদেশাদগুনিস্থেত্রয়োঃ দিদ্ধেহপি করুবদ্ধোবিশেষগুনিনাং গুণপ্রতিষেধার্থ ইত্যাহ কিন্ত্রানিনা। ইহাতিদেশাদগুরস্থেনকিৎপরোক্ষানুর্বপে কৃনুহ্বনানে ঋকারস্থাগুঃ কার্যাইত্যাদিবিশেষগুণোনান্তি অগুণেস্ত্যেতি নলোপঃ নাত্রনোরুগিতিবিশেষণ ননিষিধ্যতে নলোপোভবতীই। হেতুমাই কিন্ত্রাদিতি। তথাতিদেশাদেবতথাস্থেপকরুবন্ধকরণাদিত্যর্থঃ। তথাচবৎকরণং লিঙ্গার্থীভবৎস্বাশ্রার্থমপিভবতীতিস্থিতঃ। যথাত্রাহ্মণবদ্মমিত্যস্থার্থাহ্মণবাহ্মনিত্যপ্রাহ্মণরাহ্মপরোক্ষাপিতাবিভিভাবঃ। তেন নলোপোন নিষিধ্যতে তথানৈরপ্রাম্পোবাশিবীতিবতের্বাস্তবোহর্থঃ। সন্মুবানিতি। ঋকারস্থেতি গুণ প্রাপ্তিঃ। তিতীর্বানিতি। ঋদস্ত প্রস্রাহ্মপর্যান্তর্বান্তি গুণভাবে ইর্। দিদার্বানিতি। শু দৃ পুণস্তবেতিতথা। অত্রেতি। অত্রবিশেষগুণনিষেধস্থানে জাগুরপিশন্ত কিন্তুালিভইতি বিশেষগুণিস্থাদগুণনিষেধনে জজাগুবান্ ক্রিয়াবিনিময়ে জজাগ্রান্তিয়ালজহুঃ কালাপাইতিশেয়। স্ব্যাত্রাত্রবিশ্বান্তি। অন্তর্শান্তর্পানিক্রার্থিক স্বাম্বামিতিশেষঃ। শস্ত্রকিন্ বর্জিতইত্যগুণেহপ্য পরোক্তাত্রবান্তবিশেষ গুণিস্থাদ্গুণমিচ্ছন্তীতিভাবঃ তেনজজাগর্বানিত্যাদি। জাগরাঞ্চরণানিতি। উষজাগুবিদামান্তা। নলোপোনিষেধ্যতইত্যস্থার্থমাহনাত্রেতি। নলো-পোভবতীত্যর্থঃ। বৈকল্পিকেহপিতন্ধিত্যবিধিবাধনেন তস্ত্রসার্থারাপে স্বন্ধপ্রতিস্থাচ্চ স্বান্ত্রয়াপ্রিত বানলুক্যেগ্রপ্রায়োপে স্বন্ধপ্রিরম্বেজিভয়রপদী। তথেতি। লোপমাত্রং পরাম্ব্যতে দিবুক্রাড়াদে) কুরীজনযোর্য্যবৈণ্টিতি যোল্লাপঃ। ২৭৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কিন্তাদিতি। ইহকিৎ পরোক্ষায়ামর্থাৎ কন্সুকানেবিষয়েগুণোবিশেষসূত্রপ্রাপ্তগণোনান্তিন ভবতি। নলোপঃ অগুণেহন্তাব্যঞ্জনাদীত্যাদিনাবিহিতোনলোপঃ পরোক্ষায়াং নাত্রনোলুগিত্যনেন নিষিদ্ধ ইহকন্সুকানে ন নিষিষ্যতে ইহনলোপঃ স্থাদেব অত্তহেতুমাহকিন্তাদিতি। পরোক্ষাব-দিত্যভিদেশেনৈব কিন্তপ্রাপ্রেনঃ কৃন্সুকানাবিতি কৃত্বকরণাদিত্যর্থঃ। নলোপঃ স্থাদিত্যমুক্ত্বান-নিষিধ্যতইতি কথনামলোপে লোপোনামাদর্শনিমিতি স্থায়ামকারস্থ বিদ্যমানত্বাভ্যুপগমামেত্বপ্রামোপা-

ভূতমাত্রেসদবসশ্রুবঃ কনস্থঃ। প্রসেদিবান্। অম্বসৎ অম্বাৎ সীৎ অনুবাস অনুষিবান্ অশ্রোষীৎ শুশ্রুবান্। ২৭৫।

অনাখানীযিবান্ কর্ত্যানুচানস্ত যক্ষিবান্। আরিবান্ চখিবান্ দাখান্ সাহ্বান্ মিদ্বারিপাত্যতে। নঞ্পূর্বাদশ্বাতেরে ট্ ইণ ইট্ অনুবাচঃ কর্ত্যাব-কানঃ অর্ত্তেণঃ দাশতের্বাদ্রে ট্চ সহতেদ্বিশ্চমেহতের্হোট্ন্চ। ২৭৬॥

বপীতি অতএবররজানইত্যত্তনৈত্বপ্রায়োপো। স্মৃচিন্তায়াং সম্মৃতান্ ককোগুণাভাবে বিত্তহ্ত্যাসকার্য্যাণ। তৃপ্লবনসন্তরণয়োতিতীর্বান্ ইরাদেশাদিঃদ্বিদারণেদিদীর্বান্ক্বিক্ষেপেচিকীর্বান্ জাগ্নিদ্রাক্ষেইত্যস্যাপি গুণনিষেধাৎ জজাগ্বান্ ব্যতিজজাগ্রাণইত্যুদাজহু ঃকেচিৎ। শন্ত কিন্ বিজ্ঞিতেকসুবন্ধমাত্রেত্স গুণবিধানা-দিহাপিগুণমিচ্ছন্তান্যে সমতমপ্যতৎ। ভন্জোআমর্দনে বভজান্ মস্থ্বিলোডনেমমথান্। বৈকল্পিকেতি। শ্রেছি দন্তি গ্রন্থিস্কান্তবাহনটীত্যনেন বৈকল্পিকনলোপঃ স্থাদেব নিত্যনলোপনিষেধবাধেনত্স সার্থকত্বাদিতিভাবঃ। শ্রন্থ সম্পর্কেরাদিত্যাদ্যবয়বেটিনলোপেইপি ফলিশ্রথিভজ্গ্রথিতৃত্ব পামিত্যেলপ্রাপো কেবলকানেনিষেধাদিতি। তথাব্যোরিতি। যবৌচ ব্যঞ্জনেত্বইতিসামান্যাকিতি যোলোপবিধানাদিতিভাবঃ। চুকু মুণীইতি। স্ত্রীলিঙ্গে অক্সন্তর্থাদীপ্রত্যে স্বরাদেশস্থ বলবত্বাৎ তদ্ধিত্যাঘুট্স্বরয়োরিতিবস্থ উত্তেহ্ব্যঞ্জনেয়লোপাভাবঃ। ২৭৪॥

क्<थ्रमोशिका।

ভূত। ভূতমাত্রেংদ্যতন্তাদিকালেএভাঃ রুন্দুঃকানস্ত্রযথাপ্রাপ্তিরোক্ষাকালএব। মাত্রপদং কৃন্দুকানয়েগং পরোক্ষাকালজ্ঞাপনার্থম্ অন্তথাকিব্বাৎ সমান্তভ্যোন্তামিতি। লাভিঅন্ববদং লুভিঅন্ববাৎসীৎ পরোক্ষায়ামমুবাদেতি অনুষিবান্ কুন্দৌ সেটইতিদেট্। এবমন্তৎ।২৭৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ভূতেতি। ভূতমাত্রেংদাতনীহস্তনীপরোক্ষাসামাশুভূতকালে সদ্৯বিসরণগত্যোঃ বস্নিবাসে শ্রু শ্রুবণেএভ্যঃ কুন্দাঃ স্থাৎ। কুন্দাুগুংগং কাননির্ভ্যর্থং। প্রসেদিবানিতি। প্রাসাদৎ প্রাসদৎ প্রসাদ দেতি বাক্যেপ্রসেদিবান্ কুন্দোছিত্বাদি কুন্দোসেটাবিতিইট্। অনুধিবানিতি। অনুপূর্ববিসঃ কুন্দোছিত্বে গ্রহিন্ধ্যেতিধাতো অভ্যাসেগ্রহিবচ্যাদ্যোরিতি অভ্যাসেচসম্প্রসারণং। অপ্রোগীদিতাদ্যুত্নাং। ২৭৫॥

क्र ९ अमी शिका।

অনা। ভূতমাত্রে এতেক্সুকানান্তানিপাতনাৎ সিদ্ধান্তীত্যয়য়ঃ। তথাচইণ্ আচ্ সদ্ বপ্ নঞ্পূর্বাশ্বাতীনামতীতমাত্রেকৃস্যু নঞ্পূর্বাদ্ব্রঞঃ কর্ত্তরিকানশ্চেতিকালাপাঃ। নিপাতমাহনঞ্ পূর্বেত্যাদিনা। অশ্ভোজনেক্র্যাদিঃ কৃন্সোদ্বিরুক্ত্যেকস্বরাদিট্ প্রাপ্তোনেট্। কৃচিৎসূত্রে আনশান্রভৌচাঙ্পূর্বাদশ্বোতেরিত্যপপাঠঃ অশ্বোত্রানাদেশেহনেকস্বর্থেনেডপ্রাপ্তেঃ অশ্বোতোত্তথারূপাসিদ্ধাঃ। যদিবহুতরপুস্তকেহস্তিতদাশ্বোতে পরোক্ষাতিদিক্টেহপি কৃচিদানাভাবেএকস্বর্থেহপিনেট্। অশ্বতেশ্বেভিত্যপ-

কন্সে দেটোদিকক্ত্যেকস্বরাদন্তানচাপরে। আশিবান্ পেঠিবান্ দদিবান্ বভিবান্। অনেকস্বরা অনিটঃ বভস্বান্ বিভিদ্বান্ পপৃচ্ছান্ নিনাবান্। ২৭৭॥

লক্ষণমনাদেশাংশীতিসমৃতিঃ। ইণঃ কৃষ্ণোভাবিনাম্যাদে শত্বাদিয়াদেশে দ্বিষ্ণেম্কাচস্বতঃ সিদ্ধমশীণোগ্রহণং নিত্যার্থং। তথাচলিবচনৈকস্বরত্বেংপার্থাদিণউপস্থাদোনিত্যার্থঃ এবস্প্রায়েষুপুনরন্থেষে কম্বরেষিট্
পাক্ষিকঃ তেনাদিবানদান্ আটিবানট্বানিতিভট্টঃ। অনুবচেরিতি। ক্রবোবচ্ বচ্ পরিভাষণেইত্যস্থাশিতি
প্রয়োগোনাস্তীতিপ্রাক্ষঃ। অন্ধিতি। রুচ্ত্রাহ্ত্তং। কলাপাদোনঞ্পূর্ব্বাহ্ততং ত্ত্রাপিসিদ্ধিঃ। অনুচানঃ
প্রবচনেদাঙ্গোতীগুরোস্ত যইতামরঃ। যক্ষিবানিতি। ঘদোযক্ষাদেশেস্বরান্তত্বেনদিক্তত্তেকস্বরহাভাবাদিতিনিপাতঃ এবমারিবানিতি কন্সোদেট্ ইতীট্গুণোনিপাতঃ। চথিবানিতি। খনশ্চখুনিপাতঃ
দাশ্যতান্তরেতালব্যান্ত্রাহিপি একস্বরত্বেহপিনেট্ নিপাতঃ সহতেদীর্ঘশ্চেতি। চকারাম্বর্মে ট্রু
আত্মনেপদিত্বং কানোবাধোহিপি মিহ্দেচনে হোঢ়শ্চেতিপ্রতায়বস্থাধুট্রাৎ চকারাম্বিমে ট্নীর্ঘশ্চ।২৭৬॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

অনেতি। নঞ্পূর্বেঅশ্ভোজনেক্র্যাপ কন্সৌঅদ্বিপ্রপ্রাদিসমাসে অন্সরে অবয়স্থদীর্গত্বেঅনাশান্
আইডভাবোনিপাত্যতে। ঈযিবানিতত্র ইট্ ইট্ স্বতঃসিদ্ধোহপিনিত্যার্থঃ। অনূচানইতি। কর্ত্রের্বে পরশ্মৈপদিনোহপানঃ। যক্ষিবানিতি। ঘস্ত অদনেঘসোযক্ষইতি যক্ষাদেশস্থাদন্তত্বেন দ্বিস্বরস্বহাদিডপ্রা-প্রাবপীট্ ইট্রের্ণস্থলোপনং। আরিবানিতি ঋগতৌ কুন্সোগুণনিপাতঃ ততোদ্বিভাবেসম্বা একস্বরহাদিট্। চথিবানিতি। খনু অবদারণেখনশ্চখুইতি চথাদেশেহদন্তত্বেন দ্বিস্বর্বেহ্পীট্ ইট্যকারলোপঃ। দাশানিত্যাদিত্রয়েন্বিভাবাদ্যভাবেন্দ্রনিপাতনাৎ। তত্তদাশুদানে সহ্মর্বণে মিহ্সেচনে ধাতুত্রিং। ২৭৬॥

क्ट्थमीशिका।

কুলোঁ। বিরুক্ত্যাপ্যেকঃ স্বরোঘেষাং সেটোবিরুক্ত্যেত্যকারানকারাবিনিগমাৎবিরুক্ত্যবিরুক্তিভানিক্ষরাইতার্থঃ তেনদাশতেরে ডিতিসঙ্গতং। বিরুক্ত্যেকস্বরত্বং কৃচিদ্রাবিনিভূতবদ্ধপচরাৎ অন্য আগমত্বেনে দাগমেসত্যেবিরু সম্ভবাৎ পেঠিবানিত্যাদাবিটঃ প্রাগেবস্বরত্বাভাবইতি তেচাদন্তাশেচতিবন্ধঃ। নচাপ-রেইতিনিয়মার্থং তথাচকুল্যোঃ পরোক্ষাবদ্ভাবে ঘোষেতোচেতি সামান্যানবকাশে অশুট্ক্রাদিনিয়মাদেভাইট্ সিদ্দেপূত্র মূরতমতোনিরমার্থতা তেনাস্থট্ক্রাদিনিয়মাংপ্রাপ্তোহণীডনেকস্বরেভ্যোবিহ্মতে অতআহনচাপরইতি। অমুখা নিত্যানিত্যকল্পনাস্থাৎ নিয়মণ্চ প্রত্যেয়স্থৈব তথাহিকৃন্যু রিডাগমং প্রতিপ্রকৃতীনাং মধ্যেবিরুক্ত্যক্ষরাদ্রোনব্যভিচরতি তেলাবিদ্যামংপ্রতিপরোক্ষাস্বরূপাণাংমধ্যেকৃন্যুং ব্যভিচরতইতি তেলাশিবান্ পেচিবানিত্যাদাতিভট্টঃ। অশ্ভোজনে আশিবান্ বিরুক্ত্যেকস্বরত্বং স্বর্ণত্বাৎ পেঠিবানিত্যান্যাসলোপাত্বং গদিবিনিত্যাল্যঃ। অনেকস্বরাইতি। স্বতোবিরুক্ত্যাবানেকস্বরা অপ্যম্মানিয়মাদনিটইত্যর্থঃ। ২৭৭॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

কৃন্সাবিতি। সেটোদ্বিরুক্ত্যেকস্বরেত্যতাকারপ্রশ্লেযাদ্বিরুক্ত্যদিরুক্তিভ্যামেকস্বরাইত্যর্থঃ তেন দাশতেরে ডিতি গ্রন্থক্তোক্তং সঙ্গতং। আশিবানিতি নঞ্পুর্বাশ্লাতে রনিট্যনিপাতেইপ্যত্ততদভাবাৎ গম্বিদুহন্ দৃষিশায়া। ইট্। জগমান্ জগ্মিবানপি। বিবিদিবান্ বিবিদ্ধান্ জন্মিবান্ জম্মান্ দৃদৃশিবান্ দদৃশান্ বিবিশিবান্ বিবিশান,। ইতি প্রোগরত্বমালায়াং কংস্তৃতীয়োবিন্যানঃ। ২৭৮॥ *॥

সেট্যং। পঠ্ব্যক্তায়াং বাচিপেঠিবান্ ভূদাঞ্দানে দদিবান্ ভাদীপ্তোবভিবান্। বভণানিত্যাদি। ভণ্ শব্দেভিদির্ বিদারণেপ্রছম্ভীপ্পায়াং নীঞ্প্রাপণেপপৃচ্ছ্বানিত্যত্ত গ্রহিজ্যেতাদিনাসম্প্রসারণং চুগাগমঃ। ২৭৭॥

क्रथ्यमीशिका।

গম্। কৃষ্ণাবেষামিজ্ভবভিবাত্মপ্রাপ্তে বিকল্পবিধিঃ। জগন্ধানিভি। মোনত্বং স্থাৎ। *। ইতি শ্রীমহেন্দ্রভট্টাচার্য্যবিরচিভায়াং কুৎপ্রদীপিকায়াং তৃতীয়বিন্যাসবিবরণং। *। *। ২৭৮॥

गृष्प्रकाणिका।

গমিতি। গজন্বানিত্যাদি। গম্৯ গতে পরোক্ষাচিবিষয়েজজ্ঞজথোপু জন্গমোবিতি বিধানাদিতি জ্ঞাদেশঃ। বিবিদিবানিতি। বিদ্লাভে। জল্লিবানিতি। ইহ কৃন্দু কানেবিষয়েকিত্বাদ্গুণোনাস্তীত্যম্মাভিষয়কইটোপিকিত্রাস্বীকারাদগুণেটিল্লঃ স্থাদগুণিনিষরেইতি ল্লাদেশঃ স্থাদিতিজ্ঞাতব্যং। জ্বদ্বানিত্যাদি। হস্তের্ঘন্সাৎ দৃশির্প্রেক্ষণে বিশ্ প্রবেশনে। *। ইতিশ্রীসিদ্ধনাথবিদ্যাবাগীশবিরচিতায়াং গুঢ়প্রকাশিকায়াং প্রয়োগরত্বমালাটীকায়াং কুৎভৃতীয়বিন্যাসবিবরণং। *। *। ২৭৮॥

ক্তবস্তুনিষ্ঠাসংজ্ঞেভিতে। যথাকৃতঃ কৃতবান্। ভাবকর্মণোঃ ক্তঃ ক্তবস্তুঃ কর্তুরি। এধিতং মুনাযাতোগ্রামস্বরা যাতবান্ প্রামং। ২৭৯॥

ক্তেউক্তঃ কর্ত্তর্যাপি কর্মারস্তে। স্ত্রতিং দিজঃ প্রকৃতঃ। স্তুতিরারদ্ধেত্যর্থঃ। কর্মাক্রিয়া তৎপ্রাথম্যমারস্তঃ। মাসপ্রমিতঃ প্রতিপচ্চক্রমাঃ। ভাবকর্মণোশ্চ প্রস্থাং দ্বয়াস্ত্রতিঃ প্রকৃতাভবতা। প্রশক্ষ আদিক্রিয়াদ্যোতকঃ।২৮০॥

क्र॰ अमी शिका।

ক্তক্ত। নিষ্ঠেতি সংজ্ঞানামযয়েন্তি। ভূতকালে ধাতোঃ পরোনিষ্ঠাসংজ্ঞা ক্তক্তবভূস্তঃ। নমু যাবং ক্তক্তবভূনবিধীয়েতে তাবনিষ্ঠাসংজ্ঞানস্থাৎ অজাতপুত্রস্থ নামকরণবং তাবচ্চতয়াের্ম বিধানং যাবন্ধ-সংজ্ঞেতান্যোন্থাগ্রনােবাংসংজ্ঞাবিধানং নিদিদ্ধেতেতি নাশঙ্কনীয়ং ভাবিনি ভূতোপচারাৎ যথা অনিত্যেয়ং প্রজেতি। এবমন্যত্রাপি যত্রৈষবিরােধ উপতিষ্ঠতে তত্রায়মেব ন্যায়ঃ দিদ্ধান্ততয়া প্রতিপত্তব্যঃ। যদামু-বাদকত্বং তথাহি নহায়ং গ্রন্থকৃৎসংজ্ঞামিমাংপ্রণীতবান্ কিন্তু পূর্কাচার্য্যপ্রণীত প্রতীতাবিত্যবিরােধঃ। ভাবকর্মণােরিতি। কৃত্যক্তেতি কৃতঃ কর্ত্ররীতি পরিভাষণাদিত্যর্থঃ। ২৭৯॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

যাদর্গন্থিতি সংস্কৃতি প্রজনিকাভক্তাপবর্গপ্রদাস্বর্গোকোমুনিবর্গ দর্গকনতোমার্গন্থ বর্গান্তদা। ছুর্গাতিনাশিনীমহমনুৎদর্গোপদর্গচ্ছিদেতাং বন্দেশিরদানিদর্গরুচিরামুৎদর্গ বিত্বার্গলাং।

ক্তেতি। ভূতেকালে ক্তক্তবন্তৃনিষ্ঠাসংক্ষোসভোসাতামিত্যর্থঃ। নিষ্ঠাসংজ্ঞাফলং কর্তৃকর্মণোঃ ষষ্ঠী নিরাকরণং। কমুবন্ধফলং গুণনিবারণং। ক্রিয়তেম্মাসো কৃতঃ কর্মণিক্রঃ করেরিতিম্রেতি কৃতবান্। ভাবকর্মণোরিতি। কৃত্যক্ত খলর্থাভাবকর্মণোরিতি প্রাপ্তক্তেরিত্যাশয়ঃ। ক্তবন্তঃ কর্ত্ররিতি। কৃতঃ কর্তরীতি প্রাপ্তক্তরাদিতিভাবঃ। যদ্যপিক্তবন্তঃ কর্ত্ররি তথাপিক্ত্যানট্ কৃতশ্চান্তক কুত্রচিদিতি বচনাৎ কচিৎকর্মণ্যপিতেন। সিংহনাদেন শুল্পখ্যাপ্তং লোকত্রয়ান্তরং। নির্যাতনিম্বনোঘোরেজিতবানবনীপতে ইতিসপ্তশতিকাসক্চহতে। এধিতমিত্যাদি। এধ্ রুদ্ধো এধনমেধিতংভাবেক্রঃ ক্লীবেভাবপ্রত্যয়ন্তাবিশেয়াকু-ক্রিগাতারাইত্যক্তরাৎ ক্লীবন্ধং। মুদাহর্ষেণানভিহিত কর্ত্রিকৃতীয়া। যাপ্রাপণে কর্মণিক্রঃ ক্লাভিহিততয়া প্রামইতি কর্মণিপ্রথমা। ২৭৯॥

क्र९%मीशिका।

ক্ত উক্তঃ। কণ্মারম্ভে ক্রিয়াপ্রাথম্যারম্ভেগম্যে এতেন বর্ত্তমানে ভাবকর্মণােঃ কর্ত্তব্যপিক্ত উক্তঃ। প্রাঞ্জ সামান্যভাবিধানাং পূর্ব্বসূত্রেণ কণ্মারম্ভেয়ঃ ক্রউক্তঃ সকর্ত্তব্যপি ভবতীত্যসুবাদকােহয়ং তথাহি প্রকরোতি শ্রেতি প্রকৃতঃ স্ততিরারক্রেতি তাৎপর্য্যার্থঃ কর্ত্তরিক্রবিধানেন কণ্মণােহনভিধানাং স্ততিমারকাং করোতীতি প্রত্যয়ার্থঃ এবং স্ততি ক্রিয়াবর্ত্তমানৈব তত্রৈব ক্রিয়াসন্তানস্থাদ্য ভাগস্থাতীতত্বে কর্ত্তরিক্ত বিধানমিতি ব্যাখ্যান্তি। কণ্মারম্ভার্থমাহ কণ্মক্রিয়েতি। কণ্মব্যাপ্যে ক্রিয়ায়াঞ্চেত্যমরঃ। তম্পাঃ প্রাথমাহ কণ্মক্রিয়েতি। কণ্মব্যাপ্যে ক্রিয়ায়াঞ্চেত্যমরঃ। তম্পাঃ প্রথমক্ষণসম্বন্ধং যথাভবত্যেবং ক্রিয়ারম্ভঃ তথাচস্তবাদীনামুৎপাদনে বহুনাং ক্রিয়াক্ষণানাং সম্ভবায়ঃ

গত্যথাকর্মককহিশীঙ্ স্থাজ্জন্ বিসিপ্লিষাসাদেঃ। কর্ত্র্যভাবেষুভূতেক্তঃ
স্যাৎ। গতোগ্রামং ভবান্গতোগ্রামস্বরাপ্রাপ্তস্তঃ গ্রামং গতমনেন স্থিতস্তং
স্থিতমনেন শরিতোরং। কহাদরঃ সোপসর্গাঃ সকর্মকাঃ গজমারতঃ খট্টামধিশরিতঃ গুরুমুপস্থিতঃ অনুজীর্ণোর্যলীং কামীচিরং সেবিতবানিত্যর্থঃ। অনুজাতোমাণবকোমাণবিকাং তাংপুরস্কৃত্যজাতবানিত্যর্থঃ অনুষিতোগুরুং ভবান্
উপাসিতশ্চনাপ্লিফঃ কাস্তাং। সাদিনাকফং শ্রেতঃ স্থাপন্নঃ কর্মণ্যদাহার্য্যং।২৮১॥

প্রথমক্ষণস্ততারস্কঃ কর্মারস্কশব্দেনোচ্যতে। আরস্কোবরণং যজ্ঞইত্যাদাবাদ্যারস্কশব্দপ্রয়োগাৎ।, নমু যদ্যাদি ক্ষণস্থাতীত স্বেস্ত্রতিং প্রকৃত ইত্যুদান্ত্রিয়তে তদানীং স্নানোপবেশনাসনপরিগ্রহাদীনামেব বিদ্যানাম্বাদিতিমৈবং তাদর্থ্যোপচারাৎ তথাহি যাস্তবার্থাপ্রাথমিকীক্রিয়াতস্থাস্তদর্থাত্তদ্যপদেশইতি। কর্মান্ত দেশরথস্থতোরামোজাতঃ প্রথমামতি কর্তৃপ্রথমমাত্রবারণায়। মাসপ্রমিতইতি। মাঙ্মানে মাপরিমাণেবাক্তেদ্যতিস্থতীর্বং মাদেন দ্বিতীয়ান্তেন সমাসঃ মাসং প্রের্য়িত্রমারক্ষইতি তাৎপর্য্যার্থঃ। মাদেতি। শুক্রপ্রতিপদাদি দর্শান্তোমুখ্যশ্চান্তোমাসঃ। প্রশক্ষইতি। দ্যোতকোব্যঞ্জকস্তেন তম্বিনানাদি-ক্রিয়াবগ্মইতি। ২৮০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্তিউক্তি। কর্ত্ব্যুপীত্যপিনাভাবকর্মণোরপীতি জ্ঞাপিতং। কর্মারম্ভইত্যনেন বর্ত্তমানে কালে ইত্যায়াতি। স্তুতিরারক্তে তাৎপর্য্যকথনং নতু বিবরণমিতি। মাসপ্রমিতঃ প্রতিপদ্দন্দমাইতি। উপর্যুধোভাবাপন্নসমসূত্রপাতন্যায়েনরাশ্যেকাংশাবচ্ছেদেন সূর্য্যাচন্দ্রমদোঃ সহাবস্থানরূপোহ্যাবাস্থা অমাবাস্থাঘটক তাদৃশসহাবস্থানযুক্তার্কমণ্ডলাচ্চন্দ্রোদাশভির্ভাগৈঃ প্রাচীং প্রতিযদ্যাতি তদ্যানং শুরুপদীয়েকাতিথিং তত্র প্রথমক্রিয়াকলারূপাপ্রতিপং তাদৃশপ্রতিপচন্দ্রমামাসপ্রমিতঃ শুরুপ্রতিপাদাদিদ্রমান্তর্বস্থাচান্দ্রমানং প্রমাত্রমার্কইত্যর্থঃ। ক্রিম্বপ্র্যায় প্রস্থাং। ক্রক্তবন্তুইত্যাদি প্রকৃতইত্যস্তব্যুক্তিভিদ্নঃ। ২৮০॥

क्र श्रमी शिका।

গতা। গতার্থাশ্চাকশ্মকাশ্চ রুছিশ্চ শীঙ্চ স্থাশ্চ জ্শ্চ জন্চ বিদশ্চ শ্লিষ্চ আসাদিশ্চেতি দ্বন্ধিক কন্তাবেসমাসান্তবিধের নিতাত্বাৎ পুং স্থং। গৌণগতার্থ গ্রহণায়ার্থপদং কল্লিতিজনুবর্ত্তে ন কর্মারম্ভইতি আরম্ভবৈফল্যাং। রুহাদেরকর্মাকত্বাদেব স্থাদিতি নিরস্থতে রুহাদয়ইতি। শ্লিষিরনুপসর্গোহিপি যথা শ্লিষ্যতি কামপীতি জয়দেবঃ। খট্টামিতি। অধেঃ পরেষামিত্যধিকরণং কর্মায়ধিশয়িতইতি। নিষ্ঠেটিগুণঃ। গুরুম্পগম্যস্থিতঃ সেবিতবানিত্যনুষস্থোবাজন্সাহচর্য্যাদৈবাদিকস্থ জ্বয়োহানাবিত্যস্থগ্রহণং নক্র্যাদেঃ সেবার্থত্বেনাস্থ সকর্মাকত্বং। রুষলীং শৃদ্রীং। অনুজাতইতি। অনুজনেঃ পুরস্কারপ্র্বকজ্মার্থত্বেন সকর্মাকত্বং। অনুষ্ঠিত্ত্যাদি। অনুপ্রবিবদেঃ উপপ্রবিস্তেশ্চোপাসনার্থত্বাত্ত্বং। ২৮১॥

ভোজনগমনাকর্মকধাতুভ্যঃ ক্রোইধিকরণেচ। যথা প্রাপ্তঞ্চ। আস্যতেইন্মিনিতি ইদমেষামাসিতং স্থানম্ ইদমেষামুষিতম্ উষিতদেভিঃ উষিতস্তম্ ইদমেষাং
যাতং তৈর্য্যাতোপ্রামঃ প্রামন্তেয়াতাঃ ইদমেষাং ভুক্তং পাত্রং তৈর্ভুক্তপ্রদনঃ।
ভোজনার্থাৎ কর্ত্তরিক্রোনবিহিতঃ কথমন্নং ভুক্তাবিপ্রাঃ পীতাগাবোজলং ক্রদ্ব্যভিচারাৎ অর্শ আদিস্থাদ্চিবা। ১৮২॥

গুঢপ্রকাশিকা।

গত্যর্থেতি। গতিরর্থোযেষাং গত্যর্থাঃ নকর্মযেষাং নঞকারঃ নদ্যন্তস্মাদিতি কপ্তেচ রুহজন্ম-নিপ্রাত্মভাবেরুহিশ্চ শীঙ্ম্বপ্লেশীঙ্ চষ্ঠাগতিনিরত্তোধা ছাদেঃ যস্তাসঃ স্থাশ্চজৃষ্ বয়োহানোদিপ অত্রানুবন্ধাগ্র-হণাৎ জৃবয়োহানোক্র্যাপ অস্তচ গ্রহণমর্থতোল্যাচ্চ অন্তথানিঃসন্দেহার্থং জৃষিত্যেবগৃহীতং স্থাৎজৃশ্চ জনীপ্রান্থভাবেজন্চ বস্নিবাসেভুপ বিকরণিসাহচর্য্যদক্তৈবগ্রহণং নতুবস্থাচ্ছাদনে ইত্যস্থাদাদ্যাত্মনেপদিনঃ তস্থাসকর্মাক হাৎ রুহাদয়ঃ সোপদর্গাঃ দকর্মাকাইতি বক্ষ্যমাণবিবরণেতস্থ গ্রহণেহনভিপ্রেততাচ্চবিদ্রুত প্লিষ্ আলিঙ্গনে প্লিষ্চ আস্ উপবেশনে আস্ আদির্য্যোগ তেচছাল্ভৈকত্বং। কর্মারম্ভইতিনানুবর্ত্ততে সূত্র-বৈয়র্থ্যাৎ। প্রাপ্তইতি। প্রপূর্বে আপ্৯ব্যাপ্তো। নুকুরুহাদীনামকশ্মকতয়াকথং পুনগ্রহণমিত্যত্তআহ রুহাদয়ইতি। প্লিমং বিনাআসন্তারুহাদয়ইত্যর্থঃ। শ্লিমঃ সকন্মত্বাদাদিনানগ্রহণং। রুহঃ কর্ত্তরিক্তেহোটঃ ঘটধইতিত শুধঃ চটবর্গাবিতিধস্মটঃ টেধাতুটলোপঃ পূর্ব্বদীর্ঘশ্চ। অধিশয়িতইতি। ইটিগুণঃ। উপস্থিতইতি। ক্তেদ্যতি স্থতি স্থেতি আইঃ। অনুজীর্ণ ইতি। ৠদন্তস্থ ইর্রস্থোপধাদীর্ঘঃ রানিষ্ঠাতোনঃ অনূপদর্গাৎ দেবার্থতা । অনুজাতইতি । খাজাদাঃ খন্জনিদনাং । অনুষিতইতি । বদইট ইট্। শ্লিফআলিঙ্গিতইত্যর্থঃ। গ্রহিজ্যেত্যাদিনাসম্প্রদারণঞ্চ। উপাদিতইতি। শ্রিঞ্ আশ্রয়ণে। আপমইতি। আঙ্পদ্গতোদাদ্দেচতি তদয়োরঃ। কর্মণীতি। গজআরচোখনেন খটুাধিশয়িতানেন গুরুরুপস্থিতঃ শিষ্যেণ ইত্যাদিক্রমেণ উদাহার্য্যমিত্যর্থঃ। ২৮১॥

क्र ९ अमी शिका।

ভোজ। ভোজনার্থগমনার্থাকর্মকধাতুভ্যে ভূতেহধিকরণেচক্তঃ স্থাৎযথাপ্রাপ্তং প্রাপ্তান্তুসারেণ ভাবাদিকর্মকর্ত্ কর্মস্লচেত্যর্থঃ। ধাতুপদং প্রকৃতরুহাদিনিরাসর্থং। এষামিত্যধিকরণবার্ত্তমানিকেতিষষ্ঠী। উযিতমেভিরিতি। ভাবে। উষিতইতি কর্ত্তরিজনয়োরকর্মকত্বাৎ কর্মাণক্তোনাস্তি। ইদমেষাং যাত্তিদিমেষাং ভুক্তং পাত্রমিত্যধিকরণে। ভোজনার্থাদিতি। নামতোর্দিশ্যকেনাপিস্ত্রেণনবিহিতঃ ক্তঃ কর্মানরম্ভেদামান্তঃ স্থাদেব।২৮২॥

গূতপ্রকাশিকা।

ভোজনেতি। ভোজনেত্যাদের্ভাবপ্রত্যয়ান্তস্থার্থপরতানতুশব্দপরতা ক্তগ্রহণং ব্যবস্থার্থম্। অধিকরণেচেতি চকারাদাহ যথা প্রাপ্তঞ্চেতি। প্রাপ্তয়ুসারেণ কর্ত্তৃকর্মভাবেষু। আস্তইতি। আস্ উপবেশনে আদিতমিতি অধিকরণেক্তঃ অকর্মকাৎক্তপ্রত্যয়েনাভিহিতাদধিকরণাদিদমিতি প্রথমা। যদ্যপি ঞাস্বন্ধাদুদ্ধীচ্ছা পূজার্থাদর্জমানেত। ক্তঃ স্যাৎ কর্তৃকর্মভাবেষু। যথা-প্রাপ্তি। ঞিমিদা মেদ্যতীতি মিন্ধঃ ঞিস্বিদাস্বিন্ধঃ ঞিভীভীতোইয়ং ভাতমনেন। বৃদ্ধার্থাৎ রাজ্ঞাং বৃদ্ধঃ পটুঃ বিহুষাং জ্ঞাতঃ ইচ্ছার্থাৎ রাজ্ঞামিফোমতো-ইচ্চিতঃ। ২৮৩॥

অন্যেভ্যাইপিচ। তৃপ্তাশিতস্প্রস্থিসিগ্ধ লিপ্তাদ্যাঃ। শীলিতঃ শায়িতো যুক্ত আক্রুফক্ষান্তরক্ষিতাঃ। ৰুক্তশ্চৰুষিত্তশেচাভাবভিব্যাহ্বতইত্যপি। হৃক্তত্তী-তথাকান্তস্তুথোভৌ সংযতোদ্যতাবিত্যাদ্যঃ। বর্ত্তমানক্রিয়ামতীতত্ববিক্ষা-গরীয়সীতি বচনং। ২৮৪॥

ভোজনাদীনাং প্রথমোদাহরণং দাতুমুচিতং তথাপি সমাসী রৈকপদক্ষেনাকর্মকধাতুপ্রয়োগেহপি নদোষঃ।
বস্ নিবাদে বস্ধাতোরধিকরণেক্তঃ এভিরিতিভাবেক্তঃ যাপ্রাপণে যায়তেহিল্যিনিতি যাতমধিকরণেক্তঃ
অন্তৎ পূর্ববৎ তৈর্য্যাতইতি কর্মণিক্তঃ যাতাইতিকর্ত্তরিক্তঃ ভুজ্ পালনাভ্যবহারয়োঃ ভুজাতেহিল্যিনিতি
ভুক্তং পাত্রং ভাজনমধিকরণেক্তঃ ভুক্তইতি কর্মণিক্তঃ এবং ভুক্তমনেনভাবেক্তঃ। ব্যবস্থামাহভোজনার্থাদিতি। নবিহিতঃ শিকৈরিতিশেয়ঃ ব্যবস্থায়তিভাবঃ। প্রথমময়ং ভুক্তাইত্যাদে ভাজনার্থাৎকর্ত্তরিক্তইতি
দূষণংদত্ত্বাসমাধতে কৃদ্যভিচারাদিতি। কৃত্যানট্ কৃতশ্চান্যত কৃত্তিতিবচনাদিত্যর্থঃ। ননুকৃদ্যভিচারাৎ
কর্ত্তরিক্ত প্রত্যায়বিহিতে নবিহিতইতি কথনমলগ্রক্ষিত্যতখাহ অর্শ আদিলাদিতি। ভুক্তবিশিক্টাবিপ্রাঃ
পানবত্যোগাবইত্যর্থঃ তেন নতদলগ্রক্ষিতি। গত্যর্থেত্যাদেত দন্তমার্য্যাছন্দঃ। ১৮২॥

क्र ९ अमी शिका।

ঞ্যনু। যথাপ্রাপ্তিভাবাদিযু ভূতেচ। মিশ্নইতি। এবমাদনুবন্ধাদিতি বেটোনেট্। ভীতমনেনেতি ভাবেক্তযোগেবেতি ন্যষ্ঠীভাব প্রত্যয়স্থ ত্রৈকালিকস্বাদধিকরণবার্ত্তমানিকেত্যস্থাপ্রিঃ। মতোহচ্চিত-ইতিপূজার্থঃ। ১৮৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্রানুবন্ধাদিতি। ক্রিরুবন্ধোয়স্ত দ্বন্ধসমাসীয়পদত্রয়েহর্থপদসম্বন্ধাৰু দ্বার্থ ইচ্ছার্থ পূজার্থাৎ বর্ত্তনানেচ চকারাদ্রুতেচ ক্রঃ স্থাদিত্যর্থঃ। কর্ত্তকর্মভাবেদ্বিতি। পূর্বব্যাদকুবর্ত্তমনেনলব্ধং। যথাপ্রাপ্তীতি। প্রাপ্তের্যায়থাপ্রাপ্তি সাদৃশ্যযোগ্যতেত্যাদিনাব্যয়ীভাবঃ তৃত্তীয়েকবচনান্তমিদং। প্রাপ্তানুসারেণেত্যর্থঃ। ক্রিমিলাম্মেহনেমিয়ঃ ক্রিমিলামেহনমোচনমোহনের ভূআ ক্রিমিলাগাত্রপ্রক্ষরণে দিপ অনয়োঃ ক্রিমিলামেহনেমিয়ঃ। ক্রিভীভয়ে ভয়নং ভীতমিতিভাবেক্তঃ। বুদ্বইতি। বুদ্ অবগমে বৃদ্ধ্যতিত্ব বৃদ্ধঃ ক্রেমিলভইতিস্থাঃ তুর্যায়্ স্থারিতি পূর্ববিস্তালঃ বার্ত্তমানিকক্রযোগেষ্ঠী জ্ঞাত্রবাধে জ্ঞানাতীতিজ্ঞাতঃ। ইষু ইচ্ছায়ামিক্টঃ যকারাচ্চেতি তস্তটঃ। মন্ পূজায়াং মনতীতিমতঃ এষামতিগিতি মলোপঃ। অর্চ্চ পূজায়াম্ অর্চতীতি অর্চিতঃ ক্রেইট্। ২৮০॥

क्र ९ अमी शिका।

অন্যে। উক্তাদন্যেভ্যোহপি প্রসিদ্ধানুসারাদর্ভমানেক্তঃ স্থাদ্যথাপ্রাপ্তান্তত্তাপি। তৃপ্ তৃপির্ বা তৃপ্যতি তৃপ্নোতি বা তৃপ্তঃ রধাদিত্বেন বেট্ছান্নেট্ অশ্ভোজনে অশিতঃ দন্ত্যপাঠে আস্উপবেশনে স্নিহ্ রানিষ্ঠাতোনঃ স্যাৎ পৃখ্যাধ্যাধূরিযুদ্ধি মদিবর্জাং। কীর্ণঃ কীর্ণবান্ জীর্ণঃ জীর্ণবান্। পৃখ্যাদিবজ্জনাৎ পূর্ত্তঃ পূর্ত্তবান্খ্যাতঃ ধ্যাতঃ ধ্রুরিধূর্ত্তঃ মূর্কায়্ত্তঃ অনয়োস্ত্যা গাৎ কৃচ্ছ ক্রিণঃ উর্বাউনঃ। ২৮৫॥

প্রীতে সুহাদিষাদ্ধস্থাঃ লিপ্ অনিট্ শীল্ উপরমে সমাধোবাচুরাদিঃ রুষ্ কোপে আস্বান্তঃ সংঘুষ্টোরুষ্ট-ইতিবেট্ উভৌশন্দাবিত্যর্থঃ। হুষু অলীকে স্কষ্তোষেবা স্কন্টং স্ক্ষিতমিতিবেট্ ভূষ্ ভূফাবনিট্ কৃষ্ট্-পাঠে কৃষ্কর্ষণে বিলেখনেবাহনিট্। তথাবার্তমানিকক্রান্তাবিত্যর্থঃ। নকু পূর্ব্বক্রিয়াংশস্থাতীতত্বাৎ পূর্ব্বেণিসিদ্ধোব্যর্থমিদমিতি নিরাকরোতি। বর্ত্তমানেহসুষ্ঠীয়মানক্রিয়ায়ামেকস্তাং ভাগবিভাগেনাতীতত্ব-বিক্ষাভূতত্বকল্পনয়াক্তইতিযাবৎ গরীয়সী ক্ষবোধ্যোগ্যেতিহেতোঃ পরেণকৃত্মপীদং সূত্রং কৃত্বি-ভার্থঃ। ২৮৪॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

অত্যভাইতি। উক্তাদত্যেভ্যাহিপি ধাতুভাঃ প্রিসিদ্ধানুসারাদ্বর্ভমানেক্তঃ স্থাদ্যথাপ্রাপ্তত্তাপি।
পূর্বসূত্রং সর্বাত্র ইদন্ত প্রিসিদ্ধান্তিন পূর্বস্থা ব্যর্থতাশস্কা। অশ্ব্যাপ্তি সজ্যাতয়াঃ স্বাত্ম। আশ্
ভোজনে ক্র্যাপঞ্জিপশ্যে স্বপিতীতি স্পপ্তঃ বচি স্ববিতি সম্প্রসারণং বর্ত্তমান এবেতি নিয়মার্থং। সিহ্
দিপ লিপ্ উপদাহে মুট আদিনা আদ্ উপবেশন আদিতমিত্যাদি। শীঙ্ স্বপ্নে অআ নিষ্ঠেটিগুণিনঃ।
শীঙ্ পূঙ্ ধ্যিক্ষিদিমিদি স্বিদ ইত্যানেন গুণঃ। মুষ্থগুনে ক্র্যাপ আঙ্পূর্বঃ ক্রুশ্ আহ্বানে রোদনেচ
ভূপ ক্ষম্মহনে দিপ অঃ পঞ্চমাপধাদীর্যঃ কোচ মোনরং রক্ষ্পালনে ভূপ রুষ্ ভূপদিপবেট্
অভিবিআঙ্পূর্বঃ ক্রঞ্হরণেভূবাদিঃ ক্রমুঅলীকেভূপ ক্রমুকাস্তোদিপ ক্ষান্তবহদীর্ঘাদি সম্ উৎপূর্বঃ যুমুউপরমেসংযচ্ছতি উদ্যান্ছতীতি সংযতোদ্যতো। আদিনাকৃষ্টক্রাস্তাদের্গ্রহণং। ঞ্যুনুবন্ধাদিত্যাদি লিপ্তাদ্যাইত্যন্তমূপ্গীতিচ্ছন্দঃ। ২৮৪॥

क्र ९ श्रिमी शिका।

রারি। রাৎপরোনিষ্ঠাতোনঃ স্থাৎপৃথ্যাধুর্বিমূচ্ছিমদিবর্জ্জম্ এতান্বর্জয়িষ্বা দিতীয়াস্তেচেতি গমিরপং। অমিক্রিয়াবিশেবণয়া। নিষেপ্ত প্রাপ্তিমাত্রপূর্বেকতানিয়মাৎ থ্যালাবভাবাৎ শেষেনির্দ্দেশাচ্চ যথাপ্রাপ্তিনিষিধ্যতে। নম্বস্ত কেবলরাদিতি নিমিত্তাপেক্ষাসদিশাদিস্বদীতিবন্ধিয়ং সূত্রম্ এভোনস্থাদিত্যর্থঃ অলিব্যভিচারাৎ ক্লাবন্ধং বর্জাং বিদ্যাদ্বা। কীর্ণ ইত্যাদৌ ৠদস্তর্ক্তীতিনেট্। খ্যাতধ্যাতইত্যাকারাদস্ত- ক্ষেতি নম্বনিশেং। উন্বী তুন্বী খুর্বী হিংসার্থামদীহর্ষেএয়্নেট্ স্থাড্ডীদনুবদ্ধতি নেট্রেফাৎছর্বো লোপো মূচ্ছামোহনকুৎসনয়োঃ এবমাদনুবন্ধাদিতি নেট্যুর্ত্তঃ অনয়োরন্তম্বানিয়মায়ম্বপ্রাপ্তিঃ যদ্বালাক্ষণিক্রাদেবা প্রাপ্তাবপ্যনয়োন্ত্র্যাগোহ্যত্ত লাক্ষণিকাদপিনম্বার্থঃ তেনকুর্জাকেটিল্যেকুর্ণইতি। ২৮৫॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

রামিষ্ঠাতইতি। পূপালনপূরণয়োঃ খ্যাপ্রকথনেধ্যৈচিন্তায়াং ধুকীহিংদার্থঃ মৃচ্ছামোহোচ্ছায়য়োঃ এতদ্বর্জ্জং যথাস্থাত্তথারাৎ নিষ্ঠাতোনঃ স্থাদ্যথাপ্রাপ্তিখ্যাধ্যাবর্জ্জং যথাস্থাত্তথানিষ্ঠাতোনঃ স্থাদিতি- আকারাদস্তস্থসং যুক্তাৎ। নিষ্ঠাতোনঃ। শ্লানবান্ শ্লানঃ। নিদ্রাণঃ। আকা রাৎকিং ব্যুতঃ। ধাতোঃ সংযোগাৎ কিং নির্যাতঃ। ২৮৬॥

দাদ্দ্ধ । নিষ্ঠাতোনঃ স্যাৎ দশ্চনঃ ভিন্নবান ভিন্নঃ । অদিভুদাদেরেবং । ২৮৭ । বশ্চোরক্চ । অস্যনিষ্ঠাতোনোরকাদেশ্চ । সরক্রবান । রক্ষঃ । ২৮৮॥

যোজনীয়ং তয়োরভাবাৎ। কীর্ণ ইত্যাদি। কৃবিক্ষেপাচ্ছাদনব্যাপনেষুক্তে ৠদস্তস্থেরগুণে অগুণেহলীতি-দীর্ঘঃ তম্মনঃ ণত্বং। এবং ক্তবস্তপ্রত্যয়েহপি। জৃষ্ব্য়োহানোজীর্ণোজীর্ণবান্ শীর্ণ ইতিপ্রয়োগেশৃহিংসায়াং পূর্ববং। ২৮৫॥

क्र ९ अमी शिका।

আকা। অন্তস্থসংযুক্তাদাদন্তাদ্ধাতোঃ সংযুক্তান্তস্থবর্ণাৎ পরাদাকারাদ্বাপরোনিষ্ঠাতোনস্থাৎ দ্রাকুৎসায়াং ব্যুঙ্গতোনির্য্যাতইতিস্বরাৎ পরেতিয়কারদ্বিত্বেইপিনভবতি উপসর্গরেফোৎপন্নস্থাৎ। ২৮৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আকারাদিতি। অন্তম্বনংযুক্তাৎ যরলবিঃ সংযুক্তাদাতোঃ পরাদাদন্তাৎ পরোনিষ্ঠাতোনঃ স্থাদিতার্থঃ। সৈহর্ষক্ষয়েএচাং পাঠস্থিতেতি ঐকারস্থাকারঃ স্লায়তিস্মেতিস্লানবান্ স্লায়তেশ্বেতিস্লানঃ কর্মণিভূতেক্তঃ নিষ্ঠাতোনশ্চ নিপ্র্বাঃ দ্রাকুৎসায়াং নিদ্রাভীতিনিদ্রাণঃ অন্যেভ্যোহপিচেতি বর্ত্তমানেকর্ত্তনিক্রেত্রস্থনঃ গত্বপ্ধ। ব্যুতইতি। ব্যুবতেশ্বেতিব্যুতঃ গত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনা কর্ত্তরিভূতেক্তঃ। চ্যুতইতি পাঠে চ্যুঙ্গতৌ ভূআ নির্যাতইত্যত্রাপিতথা। রামিষ্ঠাতইত্যাদিস্লান ইত্যন্তমার্যাছন্দঃ। ২৮৬॥

क्रथमिका।

দাৎ। অদিতুদীতিনেটভিন্নঃ। নিমিত্তি ত্রাদীনিতু সংজ্ঞাশক স্বাচ্চকারাদ্বা বিত্তপ্তবক্ষ্যতি। ২৮৭॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

দেতি। দাৎপরোনিষ্ঠাতোনঃ দশ্চনইত্যর্থঃ। ভিন্নবানিত্যাদি। ভিদির্বিদারণেভিনত্তিশ্বেতি ভিন্নবান্ভিদ্যতেশ্বেতিভিন্নঃ। অদ্ভক্ষণেঅন্নং তুদব্যথনেতুন্নং। আদিনাখিদাদৈন্তেখিনং ছিদির্দ্বিধা-করণেছিন্নমিত্যাদিগ্রহণং। ২৮৭॥

क्ट्षिमीशिका।

ত্রশ্চে। ওত্রশ্চ চ্ছেদনে যজাদেপিঠিতঃ। অত্রগ্রহিজ্যেতিচজোঃ কগাবিতি ঋত্বেকত্বেওদসুবন্ধদ্বান্ধবেচ দিদ্ধেপশিলোপার্থং করণীয়বেন লাঘবাৎ দর্কং কৃত্মিতিনব্যাঃ। ধূট্যন্তেচেতিকঃ স্থাৎসম্প্রদারণঞ্চ সংজ্ঞাপূর্বকদ্বাদনিত্যং স্থাৎতদ্বাধনার্থং দূত্রমিদং নম্বস্থতুস্মারকত্বমেব ওদসুবন্ধবেনদিদ্বাৎ কিঞ্চগলেছোদসুবন্ধেইকৃতেইনেনদ্বয়মপি বিধাতব্যম্ ওত্রছ্ছেদনে ত্রছ্ছেদনেচ দ্বিতীয়ছান্তইতিপ্রাঞ্চঃ। বাস্থদূয়তীতিবেট্বাদনিট্। ২৮৮॥

वारितरामस्वकाक। निष्ठारणानगाः। नृत्नारेवतीविन्नवान्। धूनः জ্যাজীনঃ ওলজীলগ্নঃ ওবিজাবিগ্নঃ ওহাক্হীনঃ ওদন্বন্ধাশ্চ স্বাদয়ঃ সূঙ্ সূনঃ সূনবান্ ডীনঃ লীনঃ দীনঃ। ২৮১॥

প্যায়ঃ পীঃ স্বাঙ্ককর্ত্ত্ব। পীনোদোঃ পানবন্মুখং। পানবস্ভৌবাহ। স্বাঙ্কেতি কিং প্যানাবৃদ্ধিঃ প্যানং মুখং শালায়াঃ পীনাঙ্কযোগাৎ পীনঃ পটুঃ পীনোবাযুরিত্যুপচারাৎ। ২৯০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ত্রশ্চো। ধাতুরয়ং প্রথমচকারান্তঃ। ত্রশ্চঃ শলোপইতিসূত্রকরণেপুনঃ সম্প্রসারণার্থং তস্থানত্বার্থম্ পরাপরসূত্রানুশরণাবশ্যকতয়া গৌরবাপত্তঃ লাঘবাৎ বৃক্চেতি কৃতমিতিজ্ঞেয়ং। চকারানিষ্ঠাতোনশ্চ। দাদ্দশ্চভিন্নবান্ ভিল্লোব্রশ্চে স্বরূবানিত্যেবংছন্দঃ। ২৮৮॥

क्र॰ अमीर्शिका।

ল্বাদে:। ৠদন্তর্ শ্রীঞ্তিনেট্ লুনং লগ্নইতি নম্বাং প্রাগ্জস্থাগোবাচ্যঃ। ওবিজ্ঞাভয়সঞ্জনয়োঃ অনয়োমে ট্ স্থাদিতি নেট্। স্বাদয়ওদনুবন্ধাবিজ্ঞেয়াইত্যোদনুবন্ধশাসনং। সূপ্রাণিপ্রসবে সূঙ্ প্রসবেতু-সূতঃ সূতবানিতি বক্তঃ ডীঙ্গতোঁ। ২৮৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ল্বাদেরিতি। লু আদির্যাস্থ তম্মাং ওদোকারোহনুবন্ধোয়স্থতস্মাচ্চনিষ্ঠাতোনঃ স্থাং। লুন-ইত্যাদি। লুঞ্ছেদনে কর্মাণিক্তঃ ধূঞ্ কম্পনেধূনঃ জ্যাবয়োহানৌক্তেগ্রহিজ্যেত্যাদিনাসম্প্রসারণং সম্প্রসারণমন্ত্যকেনীর্যমিতি দীর্ঘঞ্চ ওলজীলজ্জায়াং লগ্নঃ অত্তনস্থাং প্রাক্জস্থাণঃ কার্য্যঃ তৎকারণং বাচাং। ওহাক্ত্যাগেহীনঃ কিতি হলি মাহাগিত্যাদিনামাকারস্ককারঃ। পারিভাষিকওদনুবন্ধানাহওদনুবন্ধাম্চেতি। চকারোহ্বধারণে স্বাদয়োগাত্ব ওদনুবন্ধাএবেত্যর্থঃ অত্তাযোগন্যবচ্ছেদশ্চার্থঃ। সূঙ্ প্রসবে ডীঙ্গতে। লীঙ্ শ্লেনণে দীঙ্ক্ষয়েএতেই পিল্বাদয়ঃ। ২৮৯॥

क्ल्भूमीशिका।

প্যায়ঃ। সাঙ্গকর্ত্রেগম্যে স্ব স্থাঙ্গং স্বাঙ্গং কর্ যস্তভাবেরঃ ভচ্চাত্রপারিভাবিকং যথা। অদ্রবমূর্ত্তি মংস্বাঙ্গং প্রাণিস্থমবিকারজং। অতস্থং তত্রদৃষ্টঞ্চ তেন চেত্তত্তথাযুত্মিতি। শুক্রণোণিতাদিদ্রবিভন্নং মূর্ত্তিমদাকৃতি যুতং প্রাণিস্থমবিকারজং বস্তুস্বাঙ্গমূহ্যতে অতস্থং সাম্প্রতং প্রাণিস্থান্থিতং তত্রপ্রাণিনি পূর্বাং দৃষ্টমদ্রবন্ধাদিবিশিষ্টঞ্চ স্বাঙ্গং যথা প্রাণিদৃষ্টমূর্থনিধানাৎ পীনমূর্থীপ্রতোলীতি চেদ্যদি তেন তাদৃশেন প্রাণিস্থেন্যুতং সদৃশং তদপিতথাস্বাঙ্গং যথা পীনমূর্থীপ্রতিমেতি। অদ্রবদিতি শুক্রশোণিতাদেঃ মূর্ত্তিমদিতি বুদ্ধ্যাদেঃ প্রাণিস্থমিতি মূণালাদেঃ অবিকারজমিতি ত্রণাদেব্যাবর্ত্তকং। ওপ্যায়ীরুদ্ধো নিষ্ঠায়াং পীনংল্বাদেরোদসুবন্ধাচ্চেতি নঃ দোর্ম্বানি সাঙ্গানি। প্যানেতি উদনুবন্ধত্বানেট্ যবোচেতি যলোপঃ তোনঃ বুদ্ধেরমূর্ত্ত্বাদ্যাঙ্গতা। শালায়াগৃহস্থমূথং মার্গঃ। অস্তোনিঃ সরণেমার্গ্রোর্ম্বাণার্য্যাশ্ব্যমিতি

আওস্ত ক্র্বনোঃ। আওঃ প্যায়তেঃ পীঃ ন্যাৎ। আপীনে ইক্ষুং আপি ন-মূধঃ। অনয়োঃ কিম্ আপ্যানশ্চন্দঃ। ২৯১॥

इर्था कीर्यम्हिम्हिम् । विवृत्वान् । वृतः भृतः भृतवान् । २५२॥

শেদিনা। শালায়া অপ্রাণিস্বাদতস্থং। কথমঙ্গিকতৃ ত্বেহপীত্যত আহপীনাঙ্গেতি। যথা কাণাঙ্গযোগাং কাণোহয়মিত্যঙ্গীব্যপদিশ্যতে। অস্তেবং কথমনঙ্গিনি পীনোবাযুরিতি সমাধতে উপচারাদিতি। অক্যতান্তাবোপোত্যপচারঃ তথাহি যথা কাশেগন্ধর্কনগর্মিত্যাকাশপদমাকাশোপলক্ষিত্মেরুবিমাণাদিপরং তথাবায়ুনাদোধ্য়মানঃ কেশকর্ণাদির্কাযুরিতি অন্তথাবায়োরমূর্ত্তত্বেনানঙ্গিস্থাৎ ক স্বাঙ্ক্ষকতৃ ত্বিতি বজ্ঞঃ। গোণ্যান্বত্যেতিচক্রঃ। ২৯০॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

প্যায়ইতি। স্বাঙ্গং কৃৎপ্রদীপিকোক্তং পারিভাষিকং। তম্সকর্ত্রইত্যর্থঃ স্বাঙ্গকর্ত্রইত্যনেন কর্ত্তরিবাচ্যায়াং নিষ্ঠায়াং পরস্থাং প্যায়ঃপারিতি জ্ঞাপিতং। তেন প্যানং দোঘাইতিনপীঃ। প্যায়তেম্ব্রেতি পীনঃ। ভুজবাহুপ্রবেকৌদোরিত্যমরঃ। পীনবন্মুখমিত্যত্রক্তবন্তঃ। শালাগ্রকন্ধশাখায়াং গৃহগেইক-দেশয়োরিতি মেদিনী। শালায়াগৃহস্তমুখং নিক্রমণপ্রবেশবন্ত্র্রিপং নিঃসরণং। মুখং নিঃসরণেবক্ত্রেপারস্তোপায়য়োরপি। সন্ধ্যন্তরেনাটকাদেঃ শব্দেহপিচনপুংসক্ষিতি মেদিনী। অন্তং কৃৎপ্রদীপিকায়ান্যবিদাকনীয়ং।২৯০॥

क्ट श्रमी शिका।

আঙঃ। নিয়মবিধিরয়ং তথাহি অন্ধাবপ্রান্তবিধিঃ উধি স্বাঙ্গরাৎপ্রাপ্তে নিয়মঃ আঙঃ পরস্থোধস্থেবনান্তস্মিন্ তেনাপ্যানো কুচাবিভূপেদর্গনিয়মঃ এতেনোধিদ কেবলস্থাপি পুর্বেবণম্থোধঃ পানমিতি। অন্ধঃ কৃপঃ উধস্তুর্কীবমাপীনম্। এতেনপীনশব্দোহ্য্মৃধ্যোঃ পর্যায়ঃ এবমূরপতহো পীনাবপিভবতইতি বজঃ। ২৯১॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

আঙস্থিতি। তুরবধারণার্থে তেনাক্সুধনোরেববাচ্যয়োরিতিপ্রকৃতিনিয়মঃ কেবলস্থ অন্যোপদর্গ-পরস্থাপিস্বাঙ্গকর্তৃত্বেস্থাদেবপীনমূধঃ প্রপীনমূধইতি। অন্ধ্যু কূপঃ। পুংস্থেবান্ধ্যু প্রহিকৃপইত্যমরঃ। উধোগোস্তনং। উধস্তক্রীবমাপীনমিত্যমরঃ। আপীনঃ পুংদিকৃপেস্থালোস্তনেতু নপুংদকেইতি কোষান্তরং।১৯১॥

क्र ९ अमे शिका।

ছুয়ো। টুছুউপতাপেগুপুরীগোৎসর্গেকুটাদিঃ। ২৯২॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ছুখোরিতি। ছুধাতুঃ স্বাদিপরস্মৈপদী গুপরস্মৈপদী। চকারান্নিষ্ঠাতোনশ্চ। বিছুনোতিস্ম গুব্তিস্মেতিক্তবস্তুবাক্যং দূয়তেস্মগ্য়তেস্মেতিক্তপ্রত্যয়বাক্যং ভাবেপিক্তঃ স্থাৎতদাদূনংগূনমিতি-স্থাৎ। ২৯২॥ পূঞোনাশে। যবাঃ পূনাঃ। পূতমন্ত্র। ২৯৭॥
দিনোতেঃ কর্মকর্ত্ররি। স্বদগুণেরু দিনঞ্চেতঃ ক্ষামেববরাননে। ২৯৪॥
ক্ষেঃ ক্ষাশ্চস্যাৎ। নিষ্ঠাতোনশ্চস্যাৎ। ক্ষাণশ্চন্দ্রঃ ক্ষাণবান্। ২৯৫॥
ভাবদৈন্যক্রোশার্থেরুত্বাক্ষিকঃ। নিষ্ঠাতোনঃ স্যাৎ। ভাবেআয়ুঃ ক্ষিতং
ক্ষীণায়ুঃ ক্ষাণঃ ক্ষাণবান্ ক্ষিতঃ ক্ষিতবান্ ভিক্ষুর্জ্জাল্শ্চ। ২৯৬॥

क्ल्थमोिशका।

পুঞো। নাশার্থেরতালোণভয়াবাচ্যেবাসচধাতোরনেকার্থকাৎ। অন্যত্রপবিত্রার্থে। ২৯৩॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

পৃঞহতি। পৃঞ্পবনেক্র্যাউ। পুনানষ্টাইত্যর্থঃ। ধাতুনামনেকার্থস্থাদিতিবোধ্যং গত্যর্থাকর্মকে-ত্যাদিনাক্তঃ। পৃত্যিত্যত্তক ক্রবন্তুইত্যনেনক্তঃ। ২৯৩॥

क्ल्थिमीशिका।

দিনো। কর্মাকর্ত্তরিবিহিতোনিষ্ঠাতোনঃ স্থাৎ। ষিঞ্বন্ধনেদীয়তেস্মস্বয়ং দিনং স্বয়মেববদ্ধ মিতার্থঃ। কিমুবাসৎক্রিয়ালাপৈর্ভবত্যাঃ প্রদিতোৎস্কমিতিপরার্দ্ধং। ২৯৪॥

शृष्धकाणिका।

সিনোতেরিতি। কর্মাকর্ত্তরীতি। সিনোতের্বন্ধনার্থতয়াবন্ধনস্থ স্বেচ্ছাগতিনিরোধাবচ্ছিনব্যাপার-তয়াতস্থকর্মস্থভাবধাতৃত্বাদিতিভাবঃ। কর্মাকর্ত্তরীতি কিং সিতোজনঋণেননাত্রক্তস্থনত্বং। ২৯৪ ॥

क्रथमिका।

ক্ষে। ক্ষিক্ষয়েনিষ্ঠাতোনঃ স্থাৎক্ষেক্ষীরাদেশশ্চস্থাৎ। অমাং সোতুর্বলঃ ক্ষীণঃ। কর্তুরি-নিষ্ঠা।২৯৫॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

ক্ষেরিতি। ক্ষিধাতুঃ ভুপঅকশ্মকঃ তেন কর্ত্তরিভূতেক্তঃ ক্ষেদীর্ঘশ্চেতিক্তেস্ত্রগৌরবং
স্থাৎ। ২৯৫॥

क्९ अमी शिका।

ভাব। ভাবোধাত্বর্থঃ দৈন্তং তুষ্থমাক্রোশোহনিষ্ঠভাষণম্ এম্বর্থের্বিহিতঃ ক্ষেঃ পরোনিষ্ঠাতোবানঃ
ন্তাৎ নেদতিক্ষীশ্চ। ক্ষরণং ক্ষিত্মাযুয়ঃ ক্ষিত্মাযু ক্ষিত্মিতিক্তান্তাদিপদৈরিতি নঞোহনিত্যত্বাৎ
সম্বন্ধবিবক্ষরায়ন্তাবিধানাৎবাসমাসঃ। ক্ষীণায়ুরিতিরাজদন্তাদিঃ। দৈন্তেক্ষীণোভিক্ষুদ্ধীনইত্যর্থঃ।
আক্রোশেকীণোজান্মোহসমীক্ষ্যকারীত্যমরঃ। ২৯৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ভাবেতি। তুশব্দঃ পরত্রপাক্ষিকইত্যস্তাসুর্ত্তিবারকঃ। ক্ষেরিত্যাদিপুর্ব্বস্মাদসুর্ব্ততে। ২৯৬॥

অন্চতেরনপাদানে। নিষ্ঠাতোনঃ স্যাং। সসমক্লঃ সমক্রবান্। সংযুক্ত-ইত্যর্থঃ। অপাদানসম্বনাভাবেকিম্ উদক্তমুদকং কূপাং ব্যক্তমিত্যন্জে-রূপং। ২১৭॥

দিবস্ত্রবিজিগীষার্থাৎ। নিষ্ঠাতোনঃস্যাৎ। আদূ্যনঃ দূ্যনবানপি। বিজি-গীষার্থেতু দূ্যতং বর্ত্ততে। ২৯৮॥

হ্রীদ্রান্দ্রিন্দ্রিন্দ্রা । নিষ্ঠাতোনঃ স্যাৎ। হ্রীণো হ্রীণবানয়ং। হ্রীতো হ্রীতবান্ স্রাণঃ নুন্নঃ ত্রাণঃ উন্দীসমুন্নঃ উন্দীসাহচর্য্যাদ্রুখাদিবিনত্তেঃ বিন্নঃ বিস্তঃ এবং দ্রাতঃ দ্রাতবানিত্যাদয়ঃ। বাশব্যবস্থয়া দেবত্রাতইতিননঃ। ২৯৯॥

क्रथमीशिका।

অন্চ। অনপাদানেঅপাদানসম্বন্ধাভাবেসতি। অন্চুগতিপুজনয়োঃ উদকুবন্ধত্বেনজ্বিবটন্থাদনিট্। সমঞ্চিত্যেতিসমকঃ ধাতোরনেকার্থন্থাৎ সংযুক্তইত্যর্থঃ। উদক্তমুদ্ধতমুৎক্ষিপ্তদাকৃপাদিত্যপায়েহপাদানক্ষঃ। কথমনপাদানেহপিব্যক্তমিত্যতআহঅন্জেরিতি। অন্জুগতিত্রক্ষণকান্তিয়ু। ২৯৭ ॥

গৃ छ পुका निका।

অন্চতেরিতি। অত্যান্চতেরিতি দামান্যতোহভিধানাৎ কেবলাৎ সোপদর্গাদ্বেতিনকশ্চিদ্বিশেষঃ। বিঅন্জবাস্থ দূয়তি ধৃঞদূতিরধাদ্যদন্ত্বন্ধতইতি বেট্ডাদত্রানিট্। ধুটিজস্থকত্বং। ২৯৭॥

क्र थ्रमी शिका।

দিব। দিবুক্রীড়াবিজয়েচ্ছাব্যবহারদীপ্তি স্তুতিহর্ষমদস্বপ্লগতিকান্তিয়। বিজেতুমিচ্ছাবিজিগীধা তদ্ভিনার্থাৎ। ড্নোঃ শূচাবিভূঠে। আদূনিঃ স্থাদেদিরিকোবিজীগীধাবিবর্জিত ইত্যমরঃ। দূতিমিতি। দূতেবিজিগীধাপুর্ববিজ্ঞাদতথাস্থং। ২৯৮॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

দিবইতি। তুশব্দোনিষ্ঠাতোনঃ স্থাদিত্যস্থ সমুচ্চায়কঃ। আঙ্পূর্ব্বোদিব্ উদরপ্রসক্তরূপাবিজিগীষার্থকঃ উপসর্গবলাৎ অন্যত্রতুক্রীড়াদ্যর্থ ইতি। আদীব্যতিস্মউদরপ্রসক্ত রূপবিজিগীষারহিতোভবতিস্মেতিআদ্যূনঃ গত্যর্থাকশ্মকেত্যাদিনাক্তেবস্থোঠাদেশেক্তস্থনত্বং। দ্যুতমিতি। দেবনমক্ষক্রীড়নমিতিভাবেক্তঃ
নাত্রক্তস্থনঃ জিগীষাপূর্ব্বকত্বাৎ ধুটিবস্থোঠাদেশঃ। ২৯৮॥

क्र ९ अमे शिका।

হ্রীন্তা। প্রাপ্ত্যার্বিকল্প: তথাহিন্ত্রীলজ্জায়ামত্রাপ্রাপ্তিরগুত্রপ্রাপ্তি: প্রাপ্তেবিকল্পবিধিঃ তেনবিশ্বইত্যাদে পূর্বেণসিদ্ধিঃ। উন্দীসাহচর্য্যাদিতি। রোধাদিকস্থোন্দেঃ সাহচর্য্যাক্রধাদিবিচারণার্থবি-দের্শ্বহণং। বাশব্দইতি। দেবপূর্বত্রায়তের্মিষ্ঠাতোননইত্যর্থঃ। ২৯৯॥

ভোগ্যাদন্যত্র লাভার্থাৎ সক্তার্থাচ্চ বিদেঃ সদা। তোনোবিচারণার্থাদ্বাজ্ঞা-নার্থান্নিত্যামট্ ননঃ। ৩০০॥

শ্যঃ শীঃ স্পার্শে দ্রবঘনার্থে কোনক। স্পার্শার্থস্য শ্যায়তেঃ শীঃ স্যাৎনিষ্ঠায়াৎ পরতঃ দ্রবঘনার্থস্যতু শীর্ষ্ণিতোনক্চ স্যাৎ। জলস্য শীতং শীতোবায়ুঃ শীতবান্ ঘনেশীনং মৃতং শীনবৎ। দ্রবঘনস্পর্শয়োঃ কিং সংশ্যানঃ কারগুবঃ সঙ্কু চিতইত্যর্থঃ। ৩০১

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ক্রীত্রেতি। ব্রীশ্চন্ত্রাগদ্ধোপাদানেত্রাশ্চ মুদ্প্রেরণেমুদিশ্চ ত্রৈঙ্রক্ষণেএচাং পাঠস্থিতেত্যাদিনাঐ আত্বেত্রাশ্চ উন্দা উৎ ক্লেনেউন্দ্ চ বিদ্বিচারণে বিদ্চএযাং বানিষ্ঠাতোনঃ স্থাৎ। ব্রীণইত্যাদি। জিব্রেতিয়েতিব্রীণঃ গতার্থাকর্মাকরাদিনাক্তঃ। ব্রীণব্রীতোতুলক্ষিতেইত্যমরঃ। আণইত্যাদিযুক্র্মণিক্তঃ। আণং ক্লাবং নাদিকায়াং আতেস্থাদাচ্যলিঙ্গক্মিতিমেদিনী। আণআতেদিগ্ধালপ্তে সমুদক্তোদ্ধতেসমেইতি। ত্রাণং ত্রাতং রক্ষিতমবিতং গোপায়িতঞ্জপ্তঞ্চেতি আর্দ্রং দাক্রং ক্লিন্নং তিমিতং সমুন্নমুত্ত্গেতি বিন্নবিত্তীবিচারিতেইতিচামরঃ। আদিনাআতমুত্র্রোত উত্তবিত্তাদের্থ্যহণং। ২৯৯॥

कृ श्रमीशिका।

বিদউপক্রমাচ্চতুর্ণাং বিদাং নিষ্ঠায়াং রূপমাহভোগ্যাদিতি। ভোগ্যং ভক্ষ্যান্সবস্তুনীত্যমরঃ। ভোগ্যাহ্পভোগ্যাদেগাহিরণ্যাদেরতা ভক্ষ্যেহ্রাদোলাভার্থাং বিদ্ফলাভেইত্যম্মান্নিষ্ঠাতোনঃ তত্রবিত্তং ধনেস্মৃতমিতিবাচ্যসূত্রেণনিরাক্তত্বান্নেত্যর্থঃ। বিদ্সত্তায়ামিতি। সন্তার্থবিদেদাদদেচতিনিত্যং তোনঃ তয়োর্য্যাক্রমং বিন্নাদেবদন্তস্ততঃ লব্ধংভূতইত্যথোঁ। ভোগ্যেধনেভূবিত্তং গোহিরণ্যাদিধনমিত্যর্থঃ। বিচারণার্থাদনেনবাতোনঃ বিদজ্ঞানে ইতিজ্ঞানার্থৎসেট্ ত্বেননিত্যমিট্তোননইত্যর্থঃ। পরেণভূসাহচর্যানাদরেণ বিদ্মাত্রাদাশদাদ্ব্যবস্থাকৃতা অতোহত্রাপি বহুবচনানন্তরমুক্তং যথাবেত্তেবিদিতোনিষ্ঠায়াং বিদ্যতেবিন্নইব্যতে। বিনত্তেবিদ্রোবিত্তশ্চ ভোগ্যেবিত্তম্ভবিদ্দতেঃ। বেত্তিরূপং বিদজ্ঞানে বিনত্তিবিদ্ বিচারণে। বিদ্যতেবিদ্সতায়াং বিদ্ঠলাভেচবিন্দতীতি। ৩০০॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

বিদঃ প্রদানত্বর্ণাং বিদাং রূপং নিরূপরতি ভোগ্যাদ্যত্ত্তি। ভোগ্যাদ্যোভ্হরণ্যাদিধনাদ্যত্ত্র লাভার্যাদিদঃ সত্তার্থান্দবিদঃ নিত্যং তোনঃ স্থাৎ বিচারণার্থাদিদোবাতোনঃ জ্ঞানার্থাদিদোনিত্যমিট্ তোনোনস্থাদিত্যর্থঃ। ধনেতুলাভার্থাদিদস্তোনোনস্থাদিট্চ নস্থাদিতিভাবঃ। লব্ধং প্রাপ্তং বিদ্নং ভাবিত মাদাদিতকভূতকেত্যমরঃ। বিন্নং লাভেচসত্তায়ামিত্যম্বত্ত। বৃদ্ধং বৃধিতং মনিতং বিদিতং প্রতিপন্নমব-দিতাবগতেইত্যমরঃ। ৩০০॥

क्र श्रमीशिका।

খাঃ। স্পর্শস্থিগিন্দ্রিয় গ্রাহোগুণঃ। পূর্বেং দ্রবং পশ্চাদ্যনমিতি প্রাক্কালৈকেতি সমাসঃ। দ্রবদনং দ্বিয়তাদিকমুচ্যতে। খৈঙ্গতো শীতলগুণঃ। যদ্যপি স্পর্শস্থগিন্দ্রিয় গ্রাহতয়া উফোইপি ভবতি

প্রতিকজি। প্রতিপূর্বশ্যায়তেঃ শীঃ নিষ্ঠাতোনশ্চস্যাৎ রোগার্থে। প্রতি শীনঃ প্রতিশীনবান্ ৰুগ্নঃ। ৩০২॥

অভাবাভ্যাং তুশীর্ষাস্যাং। নস্তানতাং। অভিশীনোংভিশীনবান্। অভিশ্যানঃ অবশীনঃ অবশ্যানবান্। ৩০০॥

ভথাপ্যত্রপ্রদিদ্ধ্যাশীতলগুণস্থৈব গ্রহণং শীতশব্দেন হিনোফোবিধীয়তে। শীতোবায়ুরিতি সংযুক্তসমবায় স্বরূপেণ বায়ুঃ শীতস্থগিন্দ্রিয় গ্রাহ্ণগুণবিশেষবানিত্যর্থঃ গুণ্ডেদেনপ্রয়োগঃ ভেদেনতু বায়োঃ শীতমিতি। ঘনইতি। দ্রবঘনইত্যর্থঃ। দ্রবাস্থানন্তরং কাঠিন্যং গতমিত্যর্থঃ। দ্রবীভূয় কঠিনমিতিচন্দ্রঃ। কার-শুবইতি। তেষাং বিশেষাহারীতোমদ্গুঃ কারগুবঃ প্লবইত্যমরঃ। ঢেকরইতিরায়ঃ। কোঁরাইত্যপরে। ৩০১॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

শুইতি। অনুকৃতত্বেন গোণতয়াশ্যাইত্যস্যাঘূট্ স্বরেষু ধাতূনামালোপইতিঙদি আলোপঃ। শুঃ শৈঙ্ ধাতোরিত্যর্থঃ। স্পর্শেহর্থেনিষ্ঠায়াং পরতঃ শুঃ শীঃ স্থাৎ দ্রবঘনার্থেশ্যঃ শীর্মিষ্ঠাতোনশ্চ স্থাদিত্যর্থঃ। শানং শরীরাদোগমনমিতি ভাবেক্তঃ সংজ্ঞাশকতয়া যথাকথঞ্চিদ্বাৎপতিঃ। শীতমস্ত্যাদিত্যর্থঃ। শানং শরীরাদোগমনমিতি ভাবেক্তঃ সংজ্ঞাশকতয়া যথাকথঞ্চিদ্বাৎপতিঃ। শীতমস্ত্যাদিত্যক স্থালিতঃ স্পর্শস্ত পবনেমতইতি ভাষাপরিচ্ছেদ বচনেন বায়োক্ষ শীতস্পর্শোনাস্থাতি প্রতিপাদিতং তথাপিদল্লিহিতদ্রব্যগুণাশ্রয়তয়া উষ্ণগুণবান্ শীতবাংশ্চ ভবতীতি জ্বেয়ং। শীতং গুণেতদ্বদর্থাঃ স্থামঃ শিশিরোজড়ঃ। তুষারঃ শীতলঃ শীতোহিমঃ সপ্তান্থলিঙ্গকা-ইত্যমরঃ। চকারাৎ মূর্থেহজগরেচ শীনস্থোনশ্চ। শীনোমূর্থেচাজগরে ইতিমেদিনী। ৩০১॥

क्र ९ अमी शिका।

প্রতে। রুজিরোগবিশেশেহর্থেগম্যেরোগবতি কর্তুরিবাচ্যে। প্রতেরিতি সম্বন্ধেষ্ঠী তেন প্রতি সংশীনইতি দূরেহণীতি ভট্টঃ। প্রতিশ্যায়তে শ্মেতি প্রতিশীনোরুগ্নঃ পীনশরোগবান্। প্রতিশ্যায়স্ত পীনসইত্যমরঃ। ধর্মিবচনে ধর্মোহপি গম্যতইতি তথা। ৩০২॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

প্রতেরিতি। রুজিনাসিকারোগবিশেষে। প্রতিশীনইতি। প্রতিক্ষণং নাসিকাচ্ছাদকরোগযুক্ত-ইত্যর্থঃ। ৩০২॥

क्ल्थमोिशका।

অভ্য। অভ্যবাভ্যামিতি তৃতীয়ায়াবৈশিষ্ট্যার্থত্বাদসন্নিকৃষ্টেইপি যথাভিসংশীনইতি ভট্ট:। ৩০৩॥

गृष्यकाणिका।

অভ্যেতি। তুশব্দঃ পরত্রবাসুর্তিবারকঃ। অভিশায়তেম্মর্বর্ধতেম্মেতি অভিশীনঃ অভিশীনবান্ অভিবর্ধিতইত্যর্থঃ। অবশীনঃ নীহারযুক্তইত্যর্থঃ। অবশ্যায়স্ত নীহারইত্যমরঃ। ৩০৩॥ ৰকবাঃ ক্ষৈশুষিপচাং। এষাং নিষ্ঠাতকারস্য মকবাদেশাভবস্তি। ক্ষামঃ শুকোনিপকবান্। পকং ফলং ধুটিচঃ কঃ। ৩০৪॥

প্রসম্ভাগ স্থায়তেঃ স্ত্রীঃ স্যান্নিষ্ঠাতস্যতুমোনবা। প্রসংস্ত্রীসএষ প্রস্তীতবানপি। সংস্তীমবান্। ৩০৫॥

বাতানাশ্রিভধাত্বর্থেনির্বাণঃ। ইতিনিপাত্যতে। নির্বাণোইগ্নিভিক্ষুশ্চ উপশান্তইত্যর্থঃ বাতেন দীপোনির্বাণোনফইত্যর্থঃ। বাতাকর্ভৃত্বকর্মত্বেকিং নির্বাতং বাতেন কুড্যেনবাতোনির্বাতোনিরুদ্ধইত্যর্থঃ। ৩০৬॥

क्थमीशिका।

মক। কৈ জৈ বৈ ক্ষয়ে শুষ্ শোষে। সমানবিভক্তিকত্বাদ্যথাক্রমমাদেশাঃ। এচামাত্বেক্ষামঃ কৃশঃ। ধূটীতি। তয়োঃ প্রাথিধানার্থং ধূড্গ্রহণমিতিবাচ্যত্বাৎ ধূড্বস্থায়াং চঃ কইত্যর্থঃ।৩০৪॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

মকবাইতি। কৈইতি স্বরূপগ্রহণমনুকৃতত্বান্ধ এচামান্থং। সমানানামনুক্রমাদিতি ভারাৎ যথাক্রমমাদেশাঃ স্ত্যঃ। ডুপচ্ঞ্জ্ব পাকে পচতি স্মেতি পকবান্ ক্তবন্তঃ চজাঃ কগোঁ ঘনুবন্ধেধুটিচেতি চঃ কঃ তত্তস্ত স্থানেবঃ পরিণামবানিত্যর্থঃ। ধুটিচঃকইতি। প্রথমং বাদেশে ধুট্ত্বাভাবাচ্চঃ কোন স্থাদিতি ধুডবস্থারাং চঃ স্থানেক ইত্যর্থঃ। পকং পরিণতে ইতিস্থাদ্বিনাশোমুখং পক্ষমিতি চামরঃ।৩০৪॥

क्ल्थनीिका।

প্রসম্। স্তৈক্তিশব্দস্থাতয়োঃ। অত্রপ্রসমইতি পঠিত্বাপ্রেণবিশিষ্টইতিবিগ্রহাদ্যবহিতেঽপি প্রসংস্তীতইতিকালাপচান্দ্রাঃ ব্যবধানেনস্থাৎ প্রসংস্থানইতিকাত্যায়নাদয়ঃ ইতিনানামতমবলম্ব্যপ্রসংস্তীম-ইতিনোদাঙ্কতং প্রসংস্তীমইতিমতাস্তরেভবতীতিবক্তঃ। অম্মাতেপ্রশচসম্চপ্রাৎসমিতিস্থাতবিগৃহীত-য়োগ্রহণং। সংস্তীমবানিতিকচিৎপুস্তকেহস্তি। ৩০৫॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

প্রদন্তামিতি। অত্তবিচনং সঞ্চাতবিগৃহীতগ্রহণার্থং সঞ্চাতমাত্রগ্রহণভূপ্রসমইত্যুক্তংস্থাৎ। ভূশব্দোভেদে তেননবাইত্যুন্তনপূর্বতাশ্বয়ঃ তথাচস্ত্যায়তের্ন্নিত্যং স্তীঃ নিফাতস্থভূনবামঃ স্থাদিতিপর্য্যবিদ্যা ৩০৫॥

क्र थमी शिका।

বাতা। নির্বাণোহ্বাতেইত্যকৃষাগুরুকরণং মুখ্যযোগার্থং ততশ্চকর্তৃত্বেনকর্দ্মত্বেনচবাতমনা-শ্রিতোহবিষ্য়ীকৃতশ্চাদোধাত্বর্থশ্চেতিবিগ্রহঃ বা তেন কর্তৃকর্মণানাশ্রিতইতি বাকরণযোগনিরাদোগ্রন্থ কৃদ্বিবরণাৎতিমান্সতিক্তান্তোনির্বাণইতিসিদ্ধ্যতি অস্থাসুপপদত্বমিত্যুক্তমুপপদসূত্রে। বাগতিশোষণয়োঃ।

भिट्टबम्बर । ७०१॥

বানিষ্ঠায়াং ক্ষায়তেঃ ক্ষীঃ। ক্ষীতাঞ্জীঃ ক্ষীতবান্ধঃ। ক্ষাতঃ ক্ষাতবান্ যলোপঃ। ৩০৮ 🎚

উপশাস্তইতি। অ্যিঃ প্রভাহীনঃ ভিক্ষুরাগদ্বেষাদিরহিতইত্যর্থঃ। বাতেনেতিকরণং দীপবিষয়এবধাত্বর্থ স্তস্থ্য কর্তৃত্বেনমুখ্যত্বাৎবাতস্থতুগোণং করণত্বং কর্ত্রধীনব্যাপারত্বাৎ। মুখ্যযোগমেবাহবাতেতি। নির্ব্বাতমিতিভাবেনিশ্চিতেন গতমিত্যর্থঃ। বাতোনির্ব্বাতইত্যুভয়ত্রবাতস্থ কর্তৃকর্মত্বেনমুখ্যত্বাম্বত্বধা ৩০৬।

গূঢপ্ৰকাশিকা।

ব্যতেতি। বাতশ্চেদ্ধান্বর্থস্থ কর্ত্তাকর্মচনভবতিতদানির্ব্বাণইতিনিপাত্যতেইত্যর্থঃ। নির্ব্বাণেমূনি-বহ্যাদোনির্ব্বাতস্ত্রগতেহনিলেইত্যমরঃ। নির্ব্বাতমিতি। বাতকর্ত্বকন্বান্নতস্থনঃ অন্যত্র তুস্থাদেবতথাচ মেদিনী। নির্ব্বাণমস্তঙ্গমনেনির্বৃত্তোগজমজ্জনে। সঙ্গমেবাপবর্গেচেতি। কুড্যেনেতি। ভিত্তিঃ স্ত্রী কুড্যমেডুকমিত্যমরঃ। ৩০৬॥

क्श्रमिशिका।

পচ। দিদ্ধপদস্য প্রদিদ্ধি পরিগ্রাহকত্বাৎস্বার্থিকেনস্তানিনস্তম্য প্রাপাকেইত্যস্তক্ষীরহবিষারর্থ-রোর্দ্মিপাতঃ। যদাহুর্ভাষ্যকারাঃ প্রাঞ্রাপ্যোঃ শৃতমন্যত্রহেতােরিনিনিপাত্যমিতি হৈতুকেনিপ্রপিতঃ ক্ষীরং। পাকেকিং প্রাণং ভারতং প্রুতমিত্যর্থঃ। নচৈবং ক্ষীরহবিষােরভাবাদ্যঙ্গবিকলেয়ং ব্যার্তিরিতিযত্রব্যার্ত্যেব নিষেঃ প্রাপ্যতেতত্রালং প্রদিদ্ধ্যপগ্রেনতি ক্ষীরহবিষােঃ কিম্ আপ্রাণােযবাগ্রিতি কালাপাঃ। প্রাতি-প্রয়ত্যােরিতি স্বার্থিকেনস্তশ্রপেশ্চনিপাত্যতে পাকেক্ষীরাজ্যহবিষাং শৃতং ক্ষীরং হবির্জ্জলঞ্চেতিচান্দাঃ। পাকেক্ষীরাজ্যহবিষাং শৃতমিত্যমরঃ। ৩০৭॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

পচনইতি। প্রাপাকেম্বেদেবা অদাদিশ্চুরাদিশ্চ বা পচনেহর্থেশৃতং। হৈতুকেনস্কস্থ তুপচন প্রযোজকার্যকত্বান্ধশৃতং কিস্তুপ্রপিতং। পাকেঘটাদিরম্যত্রপ্রাপয়তীতিগণদর্পণমতং। পাকাদম্যত্রক্তে প্রাপিতং নঘটাদিঃ। ৩০৭॥

क्थमीणिका।

বানি। ওক্ষায়ীপ্যায়ীরন্ধো। ঈদসুবদ্ধত্বানিষ্ঠায়ামনিট্। যবোচেতিযলোপেক্ষাতঃ ক্ষীতক্ষ। নিষ্ঠায়াং কিং ক্ষায়িতা। ৩০৮॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

বেতি। আদৌবাগ্রহণাশামুর্তিঃ। স্ফীতাকাজ্ফামক্ষিরোলম্বমালামিতি নীতিরত্বে। ৩০৮॥

स्नांटिनाङ्क । निष्ठां রাং। প্রস্থানাইরং। ৩০৯॥ ক্রেটি। আফ্লিভিরৈন্দবী। ৩১০॥

নেট্স্যাড্ডীদলুবন্ধখিবেটামপতিনিষ্কুষোঃ। এষাং নিষ্ঠায়ামিট্ নাস্তি।
উড্ডীনঃ ঈন্তুবন্ধাৎ দীপী দীপ্তঃ দীপ্তবান্ ইন্ধী ইন্ধঃ মদী পূচী ব্বজ্যাদেবেবং।
টু প্রশ্বি শূনঃ শূনবান্ যত্র কচিদ্বিকপ্পেটাং গৃহু গৃঢ়ঃ গৃঢ়বান্ গাছু বিগাঢ়ঃ
ক্তিবেটাং বতঃ বত্তবান্ শমুশাস্তঃ ভ্রমুভ্রাস্তঃ ভাবাদিকর্মণোর্বেটঃ ঞিমিদা
ভবামিন্নঃ ঞিত্বরাভূর্ণঃ এষাং সাহচর্য্যাদেকস্বরবেটাং এহণাৎ দরিদ্রিতং দরিদ্রিভ্রান্ অপতিনিষ্কুষোঃ কিংপতিতঃ নিষ্কৃষিতঃ। এতদ্বর্জনাদেবান্যত্রায়ং
বেট্ নিষ্কোষ্টা নিষ্কোষিতা। ৩১১॥

कः श्रमी शिका।

হলাদো। হলাদী স্থপেপুর্ববদনিট্রুম্বেদাদ্দশ্চেতিনঃ। ৩০৯॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

স্লাদইতি। প্রস্লানাংয়মিতি। কটেমতত্ত্তঃ প্রস্লান্নঃ প্রমুদিতঃ প্রীতইত্যমরঃ। ৩০৯॥

क्र॰ श्रमीशिका।

ক্রে। আহলভিরিভি। করণেক্তিঃ ঘোষেতোচেত্যনিট্ ঐন্দবীকান্তিঃ। ৩১০॥

गृष्प्रकाशिका।

ক্রেচিতি। ক্তিপ্রতায়েচ স্থাদোত্রস্বইত্যর্থঃ। ইন্দোরিয়মৈন্দবী অণ্তত্যেদমিত্যণি আদৌ-বৃদ্ধিঃ উবর্ণগুরুমাপ্লুয়াদিত্যোত্ত্বসন্ধিঃ চন্দ্রসম্বন্ধিনীকান্তিরাস্লাদকারিণীত্যর্থঃ। ৩১০॥

क्टलिमी शिका।

নেট্। ডীচ ঈদসুবন্ধশ্চষিশ্চবেট্চেতিদ্বন্ধঃ। পতিজুষ্ভিন্নানামেবাং নিষ্ঠায়ামিট্ নস্থাৎ।
শব্দোনঞিবযুগিতিন্যায়াৎ স্বীয়সন্থ্যাবেট্ছেনপ্রাপ্তিসম্ভবাদনয়োর্নিষেধঃ। টুপ্রিগতি রুদ্ধ্যোরিতি
শ্বয়তেরোদনুবন্ধিনঃ সাহচর্যাৎ স্বাদিছেনোদনুবন্ধাতি দিউন্থ ডীঙ্গতাবিত্যস্থগ্রহণং ডীঙ্ বিহায়সাঙ্গতাবিত্যনোদনুবন্ধস্য ডিয়িতইতিভট্টঃ। অথডীশিগ্রহণমনর্থকমনয়োর্হিনস্বার্থপ্রদনুবন্ধঃ তচ্চেটাব্যপেতস্থানপ্রাপ্যতে অতস্তদ্ধাদেবনেড্লভ্যতইতিনৈবং তদ্ধলাদ্যবহিতেহপিরুধ্যেত কিঞ্জ্ঞাপকবিধেরনিত্যস্থাৎ
কচিদিডপিস্থাদিতি। নম্বজন্তান্ত্রিতি থলিবেটহাদেবৈতাবনিটোস্থাতামিতি ন বাচ্যম্ একস্বরবেড্গ্রহণস্থ
বাচ্যস্থাৎ তৌতুতত্ত্রবহুস্বরো বেটাবিত্যুপাদানমিতিবক্তঃ। কেচিদনয়্যাঃ পাঠাদজন্তান্ত্রিতি অনুপান্তাইতি
থল্যন্থেবাং বেটামগ্রহণমিত্যাহ্যঃ। নমুডীদসুবন্ধেত্যত্তপ্রশ্লেষাৎ দ্বয়োরপিগ্রহণং প্রসজ্যেতেতি নৈবং

ব্যাঙ্ভ্যাং শ্বনোবমিজপোঃ পৃঙ্ ক্লিশোশ্চ বিভাষয়া। ইট্ স্যাৎ। বিশ্ন্তঃ আশ্বন্তঃ বিশ্বনিতঃ আশ্বনিতবান্। আভ্যাং কিং শ্বনিতঃ বান্তঃ বান্তবান্ বিমিতঃ জপিতঃ জপ্তঃ পৃতঃ পবিতঃ ক্লিফীঃ ক্লিশিতঃ ব্যাতবান্। ৩১২॥

কুমান্তবেদ কুবন্ধ তা সার্থক ছেনত দ্ গ্রহণামে চিত্যাৎ দীর্ঘেদ কুবন্ধ তান এই গং তত্ত্ব দির্ঘে কিছা । মদীহর্ষে পৃচীসম্পর্কের কা বর্জনে আদিনাজনী নৃতীবিজীত্যাদীনাং গ্রহণং। কুদধিকারে হিপি পতিবর্জনেন সামাত পর্জ্বাদাহযত্ত্ব কুলাপীতি। যত্ত্ব কিমিতেতে নার্থবিশেষে মনিমিতে হিপিবেটঃ সামাত্য নিষ্ঠা মিট্ডা দিত্য ক্ত্যা
বৈভিহ্বিশেষ স্বান্থাহঃ। গুহু গাহু বাস্থ সূয়্তীতি বেটো রু ভাদয়ো জুপুঙ ক্লিষামিতি ক্তিবেটঃ
ক্রিমিদা ক্রিয়রা এবমাদ কুবন্ধাদিতি বেটো লিব্যেবীতি উঃভূর্ণঃ। এবামিতি। তীদ কুবন্ধ শীনামেকস্বরাণাং সহপাঠাদিত্যর্থঃ। বেটোদরি দের্গিতি সনিবেডপি দরি দ্রাবহ্ম রন্ধান নানিট্পতিরপ্যনেন বেট্।
বেত্র জ্বাদিতি। নিঃ পূর্ব কুষ্ নিক্রের্যাপনিবেট্ তথাপি বেট্ছেন ভাবাদিক শ্ববিহিত নিষ্ঠারাং যথা
ভাবাহ্যপাধিনাভিন্নত্বং তথা ব্যাঙ্ভ্যাং শ্ব সোনভিন্নত্বমতোযত্ত্ব কু তি দিত্য নেননিষে ধানঘটতে অভঃশ্ব সিতইত্যত্র বেট্ছেন ন নেট্ডাদিতীট্ নিষেধইতি শ্বসিত ইত্যাদাবিট্ ইদমাবেদয়তি অন্যত্ত স্বস্ত্তাদাবিয়ং
বেডিতি। অন্যত্ত শ্চত আদি অভ্যাবর্জন মযুক্তং। নিক্রেষিতেতি। শ্বস্ত আং ত্রিবার কং। ৩১১॥

গৃঢপ্রকাশিকা।

নেডিতি। ডীঈদকুবন্ধ খি বেটাং পতিনিক ুষ্ভিন্নানামিট্ নস্তানিষ্ঠায়ামিতার্থঃ। উৎপৃক্ষঃ ডীঙ্ বিহায়দাঙ্গতৌ উড্ডীয়তেস্মেতি কর্ত্তরিক্তঃ উড্ডীনঃপক্ষী। প্রভীনোড্ডীন সংডীনান্সেতাঃ খগগতিক্রিয়া-ইত্যমরঃ। ঈদসুবন্ধাতুদাব্রিয়তইতি শেষঃ। দী পী দীপোঞিইন্ধীদীপ্তো মদীহর্ষেমতঃ এতেরুগত্যর্থা-কর্মকেতি কর্ত্তরিক্তঃ পূচী পূক্তঃ রূজী রূক্তঃ বর্জিতইতি তু রূজীবর্জনেচুরাদিপরসৈমপদিনঃ। শূনইতিক্তে বচিস্ববিত্যাদিনাসম্প্রসারণং সম্প্রসারণমন্ত্যঞেদীর্ঘমিতি দীর্ঘঞ্চ। বেটামিতি বিশেষয়তি যত্তেতি। যত্রকচিদ্বিশেষনির্দ্দিউনিমিত্তেবেটামিত্যর্থঃ। গৃহুদম্বরণে গাহু বিলোডনে বাস্ফ্রতি ধৃঞ্সৃতিরধাদ্য-দ্মুবন্ধত ইত্যনেন যনস্বরাদিভিন্নাশিতিবেটো। জ্বি বেটামিতি। জ্বপুঙ্ ক্লিষামুকারাসুবন্ধানাঞ্বিভাষ-য়েত্যনেবেটামিত্যর্থঃ। বুতু বর্ত্তনে বৃত্তঃ শমুশান্তো শান্তঃ ক্তে অঃ পঞ্চমোপধাদীর্ঘঃমোনত্বঞ্চ্যোদিনা-মোনত্বঞ্চ এবং ভ্রমুঅনবস্থানে। ভাবাদীতি। এবমাদকুবন্ধাদিড়েত্যনেন ভাবাদিকশ্মবিহিতনিষ্ঠায়াং বেটইত্যর্থঃ। ঞিমিদামেহনেঞিত্বরাদন্ত্রমে ক্তে গ্রিব্যবিজ্জারিমবাংদোপধস্থাপিবস্থ উঠিতি বস্তঊঃ রাশ্নিষ্ঠাতোনঃ। এযামিতি। ডীঈদকুবন্ধখীনামেকস্বরাণামিত্যর্থঃ। দরিদ্রিতমিতি। বেটোদরিদ্রো-পুভরভ্রজ্বযুঞ্জিকৃতাদয়ঃ। ঋদত্তেবন্তকোদন্ভপতিজ্ঞপৃধিসন্তনোরিত্যনেন দরিদ্রঃ সনিবেট্ছেইপি বহুস্বরত্বাদত্রনানিট্। পতিতইতি। পত্৯গতোইত্যস্ত সনিবেট্তেইপি অত্রনানিট্ বর্জনসামর্থ্যাৎ। নিকুষিতইতি। নকুনিকুষঃ কুত্রাপিবেট্ভয়ানপ্রাপ্তিস্তৎ কুতোত্রতস্থানিটং প্রতিবর্জনমিত্যতআহএতম্ব-ৰ্জনাদিতি। অত্ৰএতস্থানিজুযোবর্জনাদেবাম্যত্তশ্বস্তম্যাদে। অয়ং বেট্ অম্থাতস্থবর্জনমসঙ্গতং . স্থাদিতিভাবঃ। ১০১১॥

क्रथमोशिका।

ব্যাঙ্। বিআঙ্ পূর্ব্ব অন্ শ্বস্ প্রাণনেদেট্ পৃথক্করণাদ্বমাদেনি ব্যাঙ্ সম্বন্ধঃ ব্যুপ্ড্ ক্লিশশ্চ জু

নিষ্ঠেটি গুণিনঃ শীঙ্ পৃঙ্ ধ্ববি ক্ষিদিমিদি স্বিদঃ। শরিতঃ শরিতবান্ পবিতঃ ধর্বিতঃ ক্ষেদিতং মেদিতং স্বেদিতং প্রক্ষেদিতঃ প্রমেদিতঃ। নিষ্ঠেটীতি কিং পূতঃ ধ্বফঃ। ৩১৩॥

মুখিঃ ক্ষান্তো। নিষ্ঠেটিগুণীস্যাৎ। মর্ষিতঃ মর্ষিতবান। ক্ষমায়াং কিম্ অপমুষিতং বাক্যমাহ অসহ্মিত্যর্থঃ। ৩১৪।

পূঙ্ ক্লিষামুকারানুবন্ধানাঞ্চেতি চকারাৎ জপিশ্চক্ত্বিবঁট্ ঋদন্তেতি পূঙ্নিট্ ইত্থঞ্চনিষ্ঠায়াং দেডনিটোঃ বেডিবিং। ক্লিশ্ উপতাপে। ক্লিষ্বিবাধায়াং মূর্দ্ধন্যান্তইতি কালাপাঃ। তালব্যান্তইতি স্বনতং তথাচ এতে কিং নিষ্ঠায়াং ক্লিশিতেতি। ক্লেশোতুষ্থেহপি শোকেহপি ব্যবশানেবলোকনেইতি মেদিনী। স্থাদেশকেশাগিরিশভ্শক্শাবালিশক্লেশনিশান্তকাইতি শিঙ্ভেদঃ। ক্লিইন্ত ক্লিশিতইত্যমরোহপি।৩১২॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ব্যাঙিতি। বমুউদিগরণে জপ্ ব্যক্তায়াং বাচিমানসেচ পৃঙ্ পবনে ভুদিআ ক্লিশ্নীড়নে ক্লিশ্ উপতাপেইতি ক্র্যাদিবিদ্যাক্রভয়োর্ত্রহণং পীড়োপতাপয়ারর্থয়োরবিশেষাৎ তত্মাদিবাদিপৃঙ্ সাহচর্যায় ক্লিশ্ উপতাপেইতি দিবাদিমাত্রভ গ্রহণমিতি। শ্বসিতইতি। শ্বসঃ সেট্ ত্বাদিহইট্। নচ ব্যাঙোঃ পরস্থাসোবেট্ত্বামিষ্ঠায়াং কথমনিট্ নস্থাদিতিবাচ্যং যত্রকচিমিমিত্তেবেটামেব নিষ্ঠায়ামনিট্ ত্বাংশসন্ত ব্যাঙোর্মিত্রভাভাবাৎ। বাস্তইতি অঃ পঞ্চমোপধাদীর্ঘোমোনত্ব। ক্লিউইতি ধুট্যস্তেচ ছশোঃ ষত্বং স্ক্রত্রগত্যপাক্র্মকেত্যাদিনা কর্ত্তরিক্তঃ। নিষ্ঠেটিগুণিনইতি পরস্ত্রনিয়মাৎ ক্লিশিত ইত্যক্রমণ্ডা। ৩১২॥

क्ट श्रिशीशका।

নিষ্ঠে। নিষ্ঠায়ামিট্ পৃঙ্ পূর্বেণ ধ্বাদয় আদমুবন্ধত্বেন বেটঃ ! ধর্ষিতং ক্ষেদিতং মেদিতং স্বেদিত-মিতি ভাবেক্তঃ প্রক্ষেদিত ইত্যাদাবাদিকর্মণিক্তঃ। ৩১৩ ॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নিষ্ঠেটিতি। নিষ্ঠায়ামিট্ নিষ্ঠেট্ তশ্মিন্ গুণোহস্ত্যেধামিতি অকারাস্তাদপীত্যাদিনা ইন্ ইবর্ণাবর্ণয়োল্লোপইত্যাদিনা অলোপঃ। শীঙ্ স্বপ্নে পূঙ্ ঞিশ্বষা প্রাগল্ভ্যে ঞিক্ষিদা অব্যক্তশব্দে ঞিমিদাস্কেহনে ঞিস্বিদাগাত্রক্ষরণে। নিষ্ঠেটিকিমিতি। নিষ্ঠেটি গুণিনইত্যসূক্ত্বানিষ্ঠায়াং গুণিনইত্যুক্তে
অত্রাপি গুণঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ৩১৩॥

क्रथमीरिका।

স্বি। স্ব্ তিতিকায়াং দেট্ কান্তিন্তিতিকাম্বিতঃ কান্তইত্যর্থঃ। অসহ্মিক্তি। ধাতুনামনে-কার্যসাং। ৩১৪॥ উত্নপধান্তবা ভাবাদিকর্মণোঃ। নিষ্ঠেটি গুণিনঃ। দ্যোতিতমনেন দ্রাতিতমনেন প্রদ্যোতিতঃ প্রদ্যাতিতঃ। বাশকবাবস্থয়া গুধোনগুণঃ গুধিতং। ৩১৫॥

এবমাদন্তবন্ধাদিড়া। এবং ভাবাদিকর্মণোর্মিষ্ঠায়া মিড্বান্যাং। মিন্নং
মেদিতং ত্রা। প্রমিন্নঃ প্রমিন্নবান্ ঞিষিদাস্থিনং স্বেদিতং প্রস্বেদিতবান্।
ভাবাদিকর্মণোঃ কিং মিন্নঃ মিন্নবান্। ৩১৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্বিরিতি। ক্ষান্তাবর্থে স্বুধির্মিষ্ঠেটি গুণীস্থাদিতি পূর্ব্বোক্ত গুণিন ইত্যন্থবিভক্তি পরীণামেনামু-বর্ত্তনং। অসহমিতি। অপোপদর্গেণ অসহনার্থোদ্যোতিতঃ বাচ্যস্তধাতোরেব অনেকার্থাহি ধাতব-ইত্যুক্তত্বাৎ। অপম্বিতং বাক্যমবিস্পর্ফমিতি সিদ্ধান্তকোমুদ্যামিতি গণদর্পণঃ। ৩১৪॥

क्र श्रमी शिका।

উত্ন। উত্নপধাযেষাং তে। ত্যুৎদীপ্তোভাবেদ্যোতিতম্ আদিকর্ম্মণি প্রদ্যোতিতঃ। ভাবাদি-কর্ম্মণোঃ কিং রুচিতোমোদকঃ। উত্নপধাঃ কিং ঞিমিদাম্নেছনে। গুধ্ ক্রীড়ায়াম্ উত্নপধত্বেপ্যস্থ ভাববিহিতক্তেন গুণঃ। ৩১৫॥

गृष्धकाणिका।

উত্নপধাস্থিতি। উত্নকার উপধায়েযাং তুশব্দোনিষ্ঠেটি গুণিন ইত্যস্ত সমুচ্চায়কঃ। গুণোনগুণইতি সামান্যতোহভিগানাং প্রগুণিতইত্যাদি কর্মণিক্তেইপিন গুণইতিকেচিং। বস্তুতস্ত ব্যবস্থায়া প্রসিদ্ধপ্রয়োগদাধনাং ভাববাচ্যক্তেন গুণঃ গুণিতমিতি অন্যথা প্রগুণিত ইত্যপ্যুদাঙ্কতং স্থাদিতি। উত্নপ্রাঃ কিং মিল্ সংশ্লেষণেমিলিতঃ। নিষ্ঠেটিকিং মুচ্৯মোক্ষণে মুক্তঃ। ৩১৫॥

क्र श्रमी शिका।

এব। বাগ্রহণাদগুণোনামুবর্ত্তে। প্রপ্ত্যপ্রাপ্ত্যোর্বিকল্পঃ। জিমিদাস্নেহনেঅন্তত্তে সেট্ভাবেক্তঃ
মিশ্বম্ আদিকর্মণি প্রমিশ্ববানিতি ক্তবন্তরপি তত্ত্রদামান্ততোবিধানাৎ জিমিদাগাত্রবিনামে অদিতুদীত্যনিট। ৩১৬॥
•

গৃচপ্রকাশিকা।

এবমিতি। অত্রবাগ্রহণং ব্যবস্থানিবৃত্ত্যর্থং। ইড্গ্রহণাদ্গুণোনানুবর্ত্ততে তেনখিদাদৈন্তেইত্যুসাদনেন ইড্বানগুণঃ থিন্নঃ থিদিতমিতি। অন্তমতেনায়মাদনুবন্ধঃ অত্রভাবাদিকর্মবিহিতনিষ্ঠায়াং বেট্স্থবিধানাৎ সামান্তনিষ্ঠায়ামনিট্। প্রমিন্নবানিতি। ক্তক্তবন্তনিষ্ঠাসংজ্ঞেইত্যনেন সামন্ততঃ ক্তবন্তবিবানাদাদিকর্মণ্যপিক্তবন্তঃ স্থাৎ। মিন্নইতি। গত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনাকর্ত্তরিক্তঃ ভাবাদিকর্মাবিহিতক্তেনেট্
স্থাডভীদনুবন্ধেত্যাদিনানেট্। ৩১৬॥

নিষ্ঠাক্ত্বস্কুধিভ্যাং। উবিতঃ উবিতবান্ ক্ষুধিতঃ কুধিতবান্ উবিত্বা কুধিত্বা। ৩১৭॥

লুভঞার্মোইনার্চরো:। লুভিতঃ গ্রিয়ালুভিতবান্ লুভিত্বা। গার্ধ্যেতু-ব্যারস্ত্র্যাতাদাবিট্ পান্ধিকোবাধ্যতে মাং সৈলু ক্লো লুক্লবান্ অঞ্চিতাগুরুবঃ অঞ্চিত্বা। ৩১৮॥

इ॰ अमीलिका i

নিষ্ঠা। ইড্গ্রহণং নিত্যার্থম্। অন্যত্রানিটাবেতো। ৩১৭ ॥

गृष्ट्रकानिका।

নিষ্ঠেতি। নিষ্ঠাচ ক্ত্ৰাচ নিষ্ঠাক্ত্ৰোঃ সপ্তমীদ্বিবচনে অক্সস্থ চ কচিদিত্যালোপঃ। নিষ্ঠাক্তোঃ প্রয়োরিত্যর্থঃ। ক্ত্রিচেতি সিদ্ধেনিষ্ঠাগ্রহণং সামাক্তনিষ্ঠার্থং। ইড্গ্রহণং নিত্যার্থং উষিতইতি। বস্নিবাসে অক্সানিট্যাদিত্বিধানং বচিস্ববিত্যাদিনাসম্প্রসারণং। বস্আচ্ছাদনে অক্সতুসেট্যাৎ বসিতমিতি।
ক্ষুধিতইতিক্ষৃধ্ বুভূক্ষায়াং ক্ষ্ধাতিক্মতি ক্ষুধিতঃ। উভয়ত্রগত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনাকর্ত্তরিক্তঃ। নিষ্ঠেটিক্তিণিনঃ শীঙ্ পুঙ্ ধ্যিক্ষিদিমিদিস্বিদইতিনিয়মাদক্ত্রনিষ্ঠেটিনগুণঃ তথাসে ডক্ষ্ধক্ষদাদিতইতিনিয়মাৎ ক্ষ্ধাদেঃ
সেট্ ক্রোহগুণইতি। ৩১৮॥

कृष्श्रदीशिका।

পূভ। পূভ্গার্ধ্যেঅন্চুগতিপুজনয়ো: অনয়োয়্যথাক্রমং মোহনার্চয়োর্মিষ্ঠাক্ত্রোরিটস্থাৎ। পূডেস্তকারাদাবিতিতাদিকেন বিশেষত্বাৎ পাক্ষিকেট্প্রপ্তো অন্চস্ত উদসুবন্ধক্রেন ক্রিবেট্প্রাপ্তোনিত্যার্থং
নিয়ম:। প্রাপ্তেইর্থেইত্যস্তাসক্রিক্মোহঃ প্রিয়াসম্পত্ত্যাপ্রাপ্তায়া আসক্রীকৃতইত্যর্থঃ। নিয়মমাহগার্ধ্যেত্বিতি।
গৃধুঅভিকাক্রায়াং সাচাপ্রাপ্তেইভিলামঃ লোভইতিযাবৎ তেনগার্ধ্যেত্বলোভেতুতকারাদাবিতিতাদিজেন
নেট্স্যাদিতোবিশেষোহপি পাক্ষিকত্বেন সন্থানোহপীট্। মোহনেকিং লোভেতুনেত্যেব ব্যার্ক্ত্যাবাধ্যতে যথা
স্বচীয়ায়িতিস্থলসন্ত্বেইপানেকাক্ষরব্যার্ক্ত্যাপ্রেয়ানিতিবৎ ব্যার্ক্রের্থইতী শক্তিরিতিভাবঃ। যন্ধাতাদাবিট্
পাক্ষিকইতিক্রাভিপ্রার্থাকেং নিষ্ঠায়াস্তব্যার্ক্ত্যাহেত্নানেট্ স্থাদিতিস্ত্রেনেভা্ধইতি। মাংসৈর্ক্রইতি।
অপ্রাথৈক্তৈরাকাজ্যিতইত্যর্থঃ। অঞ্চিতাং পূজিতাইত্যর্থঃ পূজার্থেহন্টোরিভিননলোপঃ। ৩১৮॥

भृष्यकाष्ट्रिका।

পুভেতি। পুভিতইতি পুভগার্ধ্যমোহনয়োঃ কর্ত্তরিক্তঃ প্রিয়েতিকরণেতৃতীয়াপ্রাপ্তসম্পত্যাকরণেনাগক্তইত্যর্থঃ। গার্ধ্যেত্বিত। অভিকাক্ষার্থেতু ব্যার্ত্ত্যামোহনার্থেকিমিতি ব্যার্ত্ত্যাবাদাবিট্পাক্ষিকঃ ভকারাদোপাক্ষিকেটঃ সহীর্রিয়ুপুভ্রুষইত্যনেন তাদিছেন নিষ্ঠাক্ত্বোরপিপ্রাপ্তঃ পাক্ষিকইট্বাধ্যভেতয়োনিত্যর্থঃ। এবং পুরেতি। গত্যর্থেতু অন্চধাতোর্মিষ্ঠায়াং নেট্সক্তঃ জ্বিভূউদসুবদ্ধছেনপাক্ষিকইট্
অঞ্চিত্বাস্থ্যসমুক্ততয়া জ্বিবিকয়েটোবাধানবভারাদিতি। ৩১৮ য়

' ব্র'ন্টেরিট্ন্যাং জ্বিংকিন্চ। ব্রন্টিত্বাতক্ষমাগতঃ। হিত্তান্ত্রাপবাদ ঈট্। হাকঃ কিম্ ওহাঙ্হাত্বা। ৩১৯॥

জূপূঙ্ ক্লিশামুকারানুবন্ধানাঞ্চবিভাষয়। ইট্ক্তিস্ভাং। জরিত্বা জরীত্বা জীত্বাপবিত্বা পূত্বা ক্লীশিত্বা ক্লিফ্বাশমুশমিত্বা ভ্রমিত্বা ভ্রান্তব্য ক্লিয়াদেরেবং। চকারাং জপিত্বাজপ্ত্বা। ৩২০॥

স্কন্দস্নেগর্ণীজ্বাতঃ। অনয়োঃ জ্বাতকারোগুণীস্যাৎ। স্কন্ত্বা স্তন্ত্বা । তঃকিং প্রস্কদ্য প্রস্যাদ্য । ৩২১॥

इष्थ्रमीनिका।

ব্রশ্চে। ওব্রশ্চ্ছেদনেউদসুবদ্ধিত্বেন বেট্প্রাপ্তোহাকোহপ্রাপ্তোবিধিঃ। ঈদ্বেতি। কিতিহলীতি হাকঈত্ববাধকইট্যালোপঃ। ৩১৯॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

ব্রশ্চেরিতি। জ্বিপরেব্রশ্চোহাকশ্চইট্সাদিত্যর্থঃ। ব্রশ্চিম্বাছিম্বেত্যর্থঃ। ইট্যবর্ণ-স্থালোপনমিত্যালোপঃ। ৩১৯॥

क्रथिशिका।

জুপুঙ্। জু জ্যোর্ত্রহণমবিশেষাৎ পুঙ্ পবনে ৠদন্তেত্যনিটো রো ক্লিশ্ উপতাপেসেট্ ক্লিশ্বি-বাধায়াং ভূদসুবস্ধত্বাদ্বেট্ শিড্ভেদোব্যাঙভ্যাং সূত্রউক্তঃ। জরিত্বেতি। সেডক্ষ্ণেতি ক্লিগুণঃ পক্ষেইড দীর্ঘোবেতীড্দীর্ঘঃ পক্ষেৠদন্তস্থেরগুণে। চকারাদিতি। চকারস্থাসুক্তসমৃচ্চয়ার্থত্বাদিত্যর্থঃ। ৩২০॥

गृष्प्रकाणिका।

জ্পৃত্তিত। জ্বয়োহানোক্র্যাদিঃ জ্য্বয়োহানোদিবাদিঃ অর্থাবিশেষাত্রভয়োর্প্রহাপ্ত । ক্লিশ্ উপভাপেদি ক্লিশ্পীড়নেক্র্যাউভয়োর্প্রহণম্ উপভাপপীড়নয়োরর্থয়োরেক্যাৎ। শম্শান্তো শমিদ্বা
শান্ত্বেত্যক্র অঃ পঞ্মোধাদীর্ঘোমোনত্ব। ভ্রমুজনবস্থানেভ্রমিদ্বাদিঃ তমুজাকাজ্কাগ্রান্তোঃ ক্লমুগানো
জাদিনাচমুজদনে গ্রন্ত্গভাবিত্যাদের্প্রহণং। জপ্ব্যক্তায়াং বাচিমানসেচ জপিদ্বাদিঃ। ৩২০॥

क्र श्रमीशिका।

ক্ষন। ক্ষন্দির্গতিশোষণয়োঃ অদিভূদীত্যনিট্ শুন্দু স্লবণে উদসুবন্ধদ্বাছেট্ গুণিশ্বাদ্বান্ত্যব্যঞ্জনপূর্ব্বনলোপঃ। তইতীতি। অন্তথাযপান্তরঙ্গবাধেনতদাদেশন্তায়াগ্রহণে ন লোপোনস্তাৎ কমুবদ্ধেভূভন্ন্যায়াগ্রহণমন্তি। ৩২১॥

সেডক্ষ্কদাদিতঃ। ক্ষুষ্ কুষ্ ক্লিশ্ গুষ্ মুদ্ বদ্ বস্ প্ৰাস্থ্য বৰ্জিতাদ্ধাতোঃ সেট্ ক্ত্বাগুণীস্যাৎ। শয়িত্বা নৰ্জিত্বাভ্ৰংসিত্বা ব্ৰশ্চিত্বা দেবিত্বা। এষাং বৰ্জ্জনাৎ ক্ষুধিত্বা, গুধিত্বা বদাদেঃ উষিত্বা গৃহীত্বা কদিত্বা। সেডিতিকিং প্ৰনৃত্য। ৩২২॥

गृष्यकाणिका।

স্বন্দেতি। স্বন্দেত্যকার ছেলোহর্থঃ। গুণোহস্তাম্মিনিতিগুণী। যদ্যপি তদস্যাস্তীত্যুক্ত ছাৎ ষষ্ঠ্যস্তাদেবম স্থাদিপ্রত্যয়াঃ প্রাপ্তাপ্রধাপিক্রাতকার স্প্তগোভাবাৎ সূত্রবলাৎ সপ্তম্যস্তবাচ্যেহপি প্রথমাস্তামাস্থাদয়ইতি। প্রস্কদ্যেত্যাদি। প্রস্কত্বাপ্রস্থানদ্যাইতি প্রাদিসমাসেত্রন্দ্রমাসেত্র্বাস্থ্যপ্রপ্রাপ্তাপ্রদানীত্যাদিনা ন লোপঃ করুবদ্ধেতদাদেশ স্থায়া প্রয়ণমস্তীতি সূচিতং। ৩২১॥

क्र ९ अमी भिका।

সেওকু। উভয়ত্রাদ্যময়ন্তেন ক্ষুধাদিরুদাদিভিন্নাদ্ধাতোঃ সেট্জুগগুণীস্থাৎ। ক্ষুধ্ বুভুক্ষায়াং কৃষ্
নিক্ষোদেয়্র্দ্রভান্তঃ তালব্যান্তইতি কেচিৎ। ব্যাঙ্ভ্যাং সূত্রেক্লিশাবুক্তো। গুধ্ পরিবেই্টনে ক্রীড়ায়াম্বামৃত্থগুনে মৃদ্ ক্লোদেবদ্ব্যক্ত্যায়াম্বাচি বস্ নিবাসেগ্রহ্উপাদানেএতেক্ষুধাদয়ঃ। রুদাদীনাহরুদির্
আঞ্চ বিমোচনে বিদ্ জ্ঞানে মুষ্ খণ্ডনে মুষ্ন্তেয়েএতেরুদাদয়ঃ। অংসিছেতি। গুণিম্বাননোলোপঃ।
ব্রেশ্চিছেতি। ন সম্প্রসারণঃ। এযামিতি। এভ্যানগুণীত্যর্থঃ। ক্ষুধিছেতি। নিষ্ঠাক্ত্বোরিতীট্
ন গুণঃ। বদাদেরগুণিত্বাৎ সম্প্রসারণমিত্যর্থঃ। প্রন্ত্তাতি। জন্ধাবিতিন্তায়াৎ প্রাগ্যপি যাদিম্বাদিডাগমনিষেধেসেট্রাভাবেনগুণঃ। ৩২২॥

गृष्प्रकाणिका।

সেডিতি। ইটাসহবর্ততেয় স সেট্ তৃতীয়ালৈঃ সহেতি প্রথমার্থবছ্ত্রীহিঃ সহস্পৃক্রিপাতে তত্ত্রকর্ত্রব্যাবাসহস্থসইতি সহস্থসঃ। ক্ষুধশ্চরুদ্চতাবাদীয়স্ক্ষুধরুদাদিঃ উভয়ত্রাদিশব্দায়য়ঃ ন ক্ষুধরুদাদিঃ অক্ষুধরুদাদিস্তাদিলাদিয়াত্রস্ ক্ষুধাদিরুদাদিভিয়াদ্ধাতোরিত্যর্থঃ। ক্ষুধইত্যকারশ্ভন্দোহর্থঃ। ক্ষুধাদিমুদ্পর্যান্তাঃ সেটঃ তত্ত্রক্ষ্ধবসোঃ নিষ্ঠাক্লোরিড বস্ ক্ষ্ধিভ্যামিত্যনেন ক্লিশঃ জৃপুঙ্রিশামুকারামুনবন্ধাঞ্বিভাবয়েত্যনেন অন্যভ্যোয়নস্বরাদিভিয়ানামিত্যনেনইট্ প্রাপ্তিঃ। শয়িষ্বেত্যাদি। শীঙ্ ব্যেন্ত্রীগাত্রবিনামেক্রক্ষুব্রামিত্যাদিনাক্লিবেট্ ব্রশ্চ্বাম্প্রতিধৃঞ্ স্তীত্যাদিনিয়মাৎ শীঙ্ সেট্ নৃতীসেট্ ক্রম্মুজ্পুঙ্রিশামিত্যাদিনাক্লিবেট্ ব্রশ্চ্বাস্ম্যতিধৃঞ্ স্তীত্যাদিনিয়মাৎ বেট্ দিব্ সেট্ এ্যামিতি। ক্ষ্ণাদিরুদাদিনামিত্যর্থঃ। অগুণিয়াৎ ক্ষ্পিয়াগুধিয়ারুদিয়াএবাং ন গুণঃ বদ্ বস্ এহাং বচিস্ববিত্যাদিনা গ্রহিক্যেত্যাদিনা যথাপ্রাপ্তি সম্প্রারণম্ ইটোদীর্যোগ্রহেন্তথেতি গ্রহেরিড্দীর্ঘশ্চ। সেভিতি কিমিতি। ক্রাগুণীভ্যক্তেম্ব্রাপিগুণঃ স্থাৎ। ৩২২॥

ইদৃপাস্তাবকারাস্তহলাদেঃ সন্চ পাক্ষিকঃ। সেট্জ্বা সন্চ গুণী স্যাৎ। ছম্বেকারসাহচর্য্যাক্তকারোইপি হ্রম্মঃ। দ্যোতিত্বা ক্যাতিত্বা লেখিত্বা দিদ্যোতিষতে দিল্লাতিষতে লিলেখিষতি লিলিখিষতি। ব্যঞ্জনাদেরিতি কিম্ এমিত্বা ওমিত্বা। অবকারাস্তস্যেতি কিং সেবিত্বা। ১২০॥

ত্যোয়যঃ রুশোবন্চি লুন্চো শৈচবয়তেরপি। সেট্ জুনগুণী বাদ্যাৎ। ত্যিত্বা তর্যিত্বা মৃষিত্বা মর্যিত্বা রুশ তন্করণে রুশিত্বা কশি ত্বা বচিত্বা ব্ঞিত্বা লুচিত্বা লুঞ্চিত্বা খাতিত্বা অর্ত্বিত্বা ১২৪॥

क्र थमी शिका।

ইদ্। ইচ্চ উশ্চতাবুপার্ক্তো যক্ত সচাসাববকারান্তশ্চাসোহলাদিশ্চেতি বিগ্রহঃ ইকারোকারো-পধাৎবকারান্তভিন্নান্ব্যঞ্জনাদিধাতোরক্ষুধরুদাদেঃ পরঃ সেট্ ক্তৃগগুণীস্তাৎ। কৃৎসনোহভাবাদ্ধাতোঃ সম্বেতি সন্চ বা গুণীস্তাৎ। অক্ষুধরুদাদেঃ সেটঃ ক্তৃঃ সনোহপি গুণিত্বাদ্বিকল্পবিধানার্থং। হ্রম্বেতি। অক্তথা প্রশ্লেষাদ্বয়োরপি প্রসক্তিঃ স্তাদিতিভাবঃ। ৩২৩॥

গুঢপ্রকাশিকা।

ইদূপান্তেতি। দ্যোতিত্বেত্যাদি। ছ্যুৎদীপ্তো গুণেদ্যোতিত্বাপক্ষে গুণভাবে ছ্যুতিত্বালিখ্ অক্ষর-বিক্যাদে দ্যোতিতু মিচ্ছতি দিদ্যোতিষতে সনিদ্বিত্বে সম্প্রদারণমভ্যাদেব্যথিছ্যুত্যোঃ ইট্ সনস্তে অন্-বিক্রণে লোপ আদস্য যত্ক। ইযু ইচ্ছায়াম্ জ্ পৃঙ্ ক্লিশামিত্যাদিনা বেট্ ত্বাদিট্ সেড ক্ষুধিরুদাদিত ইত্যনেন সেট্ক্রোগুণিত্বাদ্গুণঃ উষ্দাহে ওধিত্বা। ধিবু তস্তু সন্তানে সেবিত্বা। ৩২৩ ॥

क्र थ्रमी शिका।

তৃষো। ঋতীমূণায়াং নতদন্তগ্রহণং তৃষাদীনাং সাহচর্য্যাৎ এমাং পরঃ সেট্জ্রাগুণীস্থাৎ চামুৎ-কুফস্বাৎ সনোনামুর্তিঃ। ৩২৪॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

তৃষইতি। ঞিতৃষ্ পিপাদায়াং সৃষ্ তিতিক্ষায়াং কৃশ্ তন্করণে বন্চুগতো লুন্চ অপনয়নে।

এবং দেট্ ক্তৃণগুণীস্তাৎ নতু দন্চ এবং শব্দস্ত প্রদিদ্ধার্থকিয়াৎ অত্যথাহনুবর্তনেন লাভে এবং শব্দস্ত বৈয়
ধ্যাৎ। ঋতেরপি দেট্ক্রণগুণীস্তায়তু দন্চ এতদভিপ্রেত্যবির্ণোতি সেট্ ক্রে তি। ৩২৪॥

থফান্তানাং নোপধানাং। সেট্ব্ৰুগগুণীবাস্যাং। প্ৰথিত্বাঞ্চিত্বা শুভিত্বা শুন্তিত্বা গুফিত্বাগুন্দিত্বা। নোপধানামিতি কিং কোথিত্বা রেফিত্বা ইদূপধবিক-ম্পোপি নস্যাং। ৩২৫॥

অনিজ্জান্তনশান্তথা। নোপধানামেষামনিট্জ্জাবাগুণীস্যাৎ। ভজ্জ্বা ভজ্জ্বারক্ত্বারজ্জ্বানফ্টানংফ্বাধুটিস্বরামজ্জিনশোর্ন্ন্লোপঃ। অনিট্ কিম্ অঞ্জিত্বা। ৩২৬॥

क्र ९ अमी शिका।

থকা। অক্ষুধ রুদাদীনাং থকান্তানাং মধ্যেনোপধানামেযাং দেট্ ক্তৃাবাগুণীস্থাৎ অন্যেষাং পূর্বেবিণনিত্যমিত্যর্থঃ। শ্রন্থ গ্রন্থ সন্দর্ভে পক্ষেনলোপঃ শুভ শুন্ভ শোভার্থে গুফ্ গুন্ফ সন্দর্ভে কুথ্প্রীতি ভাবে দিবাদিঃ রিফ্কথন যুদ্ধ নিন্দাহিংসাদানেষু অনয়োঃ সেডক্ষুধেতি নিত্যং গুণঃ। ইদুপধেতি। অন্যত্ত্ব ব্যাব্তেরভাবাদিহ তৎসত্ত্বে বিফলাসাস্থাদিতি নেদূপধ্বিকল্পঃ। তৃফ্ দুফোব্যাব্রতিম্থলমন্ত্রীতি চেমেবং তয়োঃ সেড ক্ষুধেতি গুণিত্বেত্ন্ক দৃন্ফোর্কেকল্লিকগুণিত্বেচ বিকল্পম্বাদিছেঃ। ৩২৫॥

গুতপ্রকাশিকা।

থফেতি। থশ্চ ফশ্চ থফাবস্তোযেয়াই ন উপধা যেয়ামিতিবিগ্রহোঁ। উভয়োর্ধাতুবিশেষণভাবেনারয়ঃ। থফান্তানাং নোপধানাং ধাতুনাং সেট্ ক্র্বাবাগুণীস্থাং। গ্রথিছেতি। অগুণপক্ষে অগুণেহস্ত্যব্দ্ধনালিলাপঃ স্থান্ন মং বিনেতিনোলোপঃ। গ্রন্থিছেতি। গুণিপক্ষে নোলোপাভাবঃ উপধোপধ্রান্নগুণঃ। নোপধানামিতি কিমিতি। থফান্তানামিত্যুক্তে কুথ্রিফোঃ থফান্তয়োঃ পক্ষেগুণাভাবে কুথিয়ারিফিয়াইত্যপি প্রয়োগাপত্তেরিভিভাবঃ। এতদ্ব্যার্ত্তিবলা দিদুপান্তেত্যাদিনাবিকল্লোহপি ন স্থাং অন্থা ব্যার্ত্তিবিকলাস্থাদিত্যর্থঃ। নচ তৃফ্ তৃন্ফ তৃপ্তো দৃফ্ দৃন্ফ সন্দর্ভে ইতি তৃফ্দৃফোরিত্রপান্তত্বাভাবেন তত্ত্বি ব্যার্ত্রিইতইতিবাচ্যং নোপধানামিত্যক্তেহপি তৃফ্ দৃফোঃ সেড ক্ষুধক্রদাদিত ইত্যনেন গুণিয়াৎ তিফিয়াদ্ফিয়াত্ন্ত দৃন্ফোরনেন বৈকল্লিক গুণিয়ে গুণাভাবপক্ষে তৃফিয়াদ্ফিয়েতি প্রয়োগনিপ্রতেঃ নোপধানামিত্যকুক্তেহপি অনেন দ্বিধপ্রয়োগনিপ্সতেরবিশেষাৎ নোপধানামিতি কিমিতি ব্যার্তেরিক্ফলয়াহ। ৩২৫॥

क्र श्रमी शिका।

অনিছ্। তথানোপধানাং। ধূটিম্বরামজ্জিনশোরিতি মুটানশোনোপধাত্বং। ভন্জোআমদিনে রন্জরাগেযজিরজজীত্যনিটো নশ্ অদর্শনে অন্জুগতি অক্ষণয়োঃ বেটো। ৩২৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

অনিডিতি। অনিটে: যেজান্তান্তেচ নশ্চতেবাং। তথাশব্দার্থমাহনোপধানামিতি। ভক্তেতাাদি। ভন্জোআমর্দনেঅরং জান্তেহনিট্ জুনলোপঃ পক্ষেগুণিত্বেনলোপাভাবেভঙ্জ্বা। এবংরজ্বা রঙ্ক্তানশং জিব কুডগেমেহগুণপক্ষেলোপঃ গুণিপক্ষে ন ন লোপঃ রধির শিস্ত্পি দৃপৌ দ্রুছি কুছি মুহি স্লিছ-

ৠদস্তরশ্রিজ্বর্ণাৎ কলুবন্ধেষু নেড্ ভবেং। তীর্ণঃ তীর্ণবান্ তীর্জাকীর্ণঃ চু বিধানেক্র্যাদিঃ চীর্ণঃ চীর্জা রক্তঃ রজা শ্রিক্তঃ শ্রিজা যুক্তঃ যুক্তা ৰুক্তঃ ৰুক্তা সূনঃ সূত্বা প্রোর্জঃ প্রোর্জিবান্ একুবন্ধনির্দ্দেশাং তংসাহচর্য্যাচ্চযঙ্লুকামিট্ শেশিয়িতঃ লোলুবিতইতি। ৩২৭॥

যোবেতোচাগ্রহাদীনাং। নেড্ ভবেং। ঈশ্বরঃ শর্মা দীপ্রঃ ভাস্বরঃ ক্রোদীপ্রিঃ রদ্ধিঃ জাগর্ত্তিঃ শাস্তিঃ তিকিতন্যাদ্ভবানিতি তন্তিঃ বীরভূতিঃ। অগ্রহাদীনাং কিং নিগৃহীতিঃ ভণিতিঃ আলোচিতিঃ পঠিতিঃ উপশ্বিহিতিঃ দীধিতিঃ। ৩২৮॥

ইত্যনেন নশোরধাদিত্বেন বেট্ছং পক্ষেনশিত্বা। অঞ্জিত্বেতি। উদনুবন্ধত্বাৎ ক্তিব বেট্অনিট্পক্ষে অক্তা অঙ্ক্তা। ৩২৬॥

क्थ्अमीशिका।

ৠদন্ত। অনেকাচইতি সেটোংপ্যেতেংনিটোবিধীয়ন্তে। ঞুসুবদ্ধেতি। গ্রিঞিতি ঞুসুবন্ধ-পাঠাদন্যেবামস্থানাহচর্ঘ্যাদসুবন্ধশতিবিতিনিয়মেন যঙ্লুকামেবাং নেডিতি নাস্তি তেন শেগ্রিয়িতঃ লোলুবিতইতীট্। ৩২৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ৠদন্তেতি। ৠদ্দীর্ঘৠকারোহন্তোযস্থাদন্তশ্চ বৃঞ্ বরণে বৃঞ্ আবরণে বৃঙ্ সম্ভক্তো বৃশ্চ প্রিঞ্
দেবায়াং প্রিঞ্চউবর্ণশ্চেতি ঘল্দকত্বং। কর্বদ্বেষ্ পরেষ্ ৠবর্ণাদিতইট্ ন ভবেদিত্যর্থঃ। তীর্ণ ইত্যাদি।
ত প্রবন্দন্তরণয়োঃ নিষ্ঠায়াং ইর্রোপান্তদীর্যঃ রামিষ্ঠাতোনঃ তীর্বেত্যক্রইর্রোপান্তদীর্যঃ। কৃ
বিক্ষেপেকীর্ণঃ যুমিশ্রণামিশ্রণয়োঃ করাবেসূঙ্ প্রসবেপ্রপ্রেউর্ব্ প্র্ অপনয়নে এতেভ্যঃ অনেকাচইত্যাদিনাইট্ প্রাপ্তো নিষেধঃ। জন্মবন্ধেতি। প্রিঞ্জিতি জন্মবন্ধনির্দেশাদন্যেষান্তংসাহচর্য্যাচ্চঅন্মবন্ধশতিব্গণোদিতেতর্থাতুদিতকার্য্যমত্রচ প্রকৃতিগ্রহণে ন যঙ্লুকার্মাপ যংসংগ্রহমাহপাণিনিরিতি নিয়মেনান্মবন্ধনির্দেশেন যঙ্লুকিধাতৃক্তমিডভাবেকার্য্যং নাস্তিতেনইডিত্যর্থঃ। শেশ্রিয়িতইত্যাদি অত্যর্থং প্রয়তি
লুনাতিচ যঙিদিক্তে অভ্যাসকার্য্যে যঙ্লুথাসর্বস্মাদ্ধাতোরিতি যঙ্লোপেক্তেইটি ইবর্ণোবর্ণয়োর্দ্ধাতোরিত্যাদিনাইযুরো। এতদ্বয়প্রদর্শনিমাত্রমন্থেযামপি যঙলুকামিট্। ৩২৭॥

क्ल्थमी शिका।

ঘোষে। কুদধিকারাদেয়াযেতেচিকৃতি পরেগ্রহাদিভিশ্নানামিট্ন ভবতি। নঞঃ সাদৃশ্যগ্রাহক-তয়াগণোক্তানামেবনেট্তেন জবতেঃ সোত্রশুজুতিনিপাতোহপ্যবিরুদ্ধইতি প্রাঞ্চঃ। আদেব্যবস্থয়েতি নব্যাঃ। কশীশ্স্থেতিবরঃ ঈশ্বরঃ শৃ হিংসায়াং মনিশর্মা ভাসেরুরবরোভাস্বরঃ দীপিকস্পীতিরঃ দীপ্রঃ বৃদ্ধিঃ ক্রে ঘঢ়ধভতইত্যাদিকার্য্যঃ। বীরভ্য়াদীরভূতিঃ তিক্স্থাদিতি তিক্। আলোচিতি রিতি। লোচ্লোক্সন্দর্শনেচ্রাদিঃ ইট্যবর্ণস্থেতি বর্ণগ্রহণাদিটীনোহপিলোপঃ। সিহ্ উপস্লিহিতিঃ। ৩২৮॥

শাস্ত্রশস্ত্রাদিকস্যচ। নেট্পল্রং পোল্রং। ৩২৯॥ ভূশপ্রতিজ্ঞারোর্বাচ়ং বাহেঃ। এতেষামিট্ক্তেনান্তীত্যগ্রেণাম্বয়ং। বাস্থৃ-প্রয়ত্ত্বে। বাহিতমন্যত্র। ৩৩০॥

মস্থেক্ষুভেঃ ক্ষুব্ধং। দ্রবদ্রব্যালোডিতং ঘনং বস্তুমথ্যতে তদিত্যনেন বামস্থানদণ্ডঃ ক্ষুব্ধঃ। ক্ষুব্ধঃ সমুদ্রইত্যুপচারাৎক্ষুভিতোহন্যত্র। ৩৩১॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

যেষইতি। ঈশ্ এশ্বর্যে ঈফেইতি ঈশ্বরঃ দীপীদীপ্তো দীপ্যতইতি দীপ্রঃ ভাস্দীপ্তো ক্রেদিপ্তিঃ বধুর্দ্ধোক্তি ধাত্তস্থাঃ ধেধস্তদঃ জাগৃনিদ্রাক্ষয়ে শস্ত্ কিন্বর্জিতেজাগুর্ত্ত নএব শম্উপশমে উপধাঅকারোদীর্ঘঃ মোনস্বং তত্মবিস্তারেআশীয়র্থেতন্তিঃ বীরোভ্য়াদিতি ভ্সত্তায়ামস্মাৎ তিক্ গ্রহ্ উপাদানেইটোদীর্ঘোগ্রহেত্থেতি ইড্দীর্ঘঃ ভণ্শব্দেভণনং ভণিতিঃ আঙ্লোচ্রুচাদিঃ লোচ্দীপ্তিকথনয়োঃ চুরাদিঃ প অস্মাদিট্ চেত্তদানিষ্ঠেটিচস্মৃতইতিচকারাৎ স্মৃতবচনাদ্বাক্তিনিমিত্তকেটাপি ইল্লোপঃ। ইট্যবর্ণসার্থকত্বেইন্যকল্পনানইন্নাচ্চ। পঠ্ ব্যক্তায়াং বাচিপঠিতিঃ স্নিষ্ প্রীতো উপস্লিহিতিঃ দীধীঙ্ দীপ্তো যেবর্ণয়োস্তয়োরীলুক্
দীধিতিঃ। ৩২৮॥

कृ श्रिनी शिका।

শাস্ত্রশস্ত্রা। শাস্ত্রশস্ত্রাদিকস্ত চিদ্ধিয়েনেট্ভবেৎ। সিদ্ধপদোনান রুঢ়িলাভায়। শাস্ত্র অনুশিক্টোশাস্ত্রপদেষ্ট্যনেনেতি শাস্ত্রং গ্রন্থঃ। শস্ত্রহিংসায়াং। শস্ত্রমায়ুধলোহয়োঃ। পত্৯পথেগতে পত্রং বাহনপক্ষপলাশেয়। পৃত্ত পৃঞ্জোঃ পোত্রং বরাহতুওং। ৩২৯॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

শাস্ত্রেতি। চকারান্নেডিতিসমুচ্চীয়তে। সর্ব্বিত্রধাতোস্ত্রেট্কর্মাদাবর্থে। শাস্ত্রংনদ্বয়োরাগমাজ্ঞয়ো-রিতি শস্ত্রং লোহাস্ত্রয়োঃ ক্লীবং ছুরিকায়ান্ত্রযোষিতীতি পত্রস্তবাহনেপর্ণেস্থাৎ পক্ষেশরপক্ষিণোরিতি পোত্রং বজ্রেমুখাত্রেচশূকরস্য চেতিচমেদিনী। পূর্ব্বসূত্রমেতৎ সূত্রঞ্গ্রসঙ্গান্তক্তং। ৩২৯॥

क्ल्थमोिका।

ভূশ। ভূশপ্রতিজ্ঞয়োরত্যর্থাঙ্গীকারয়োঃ। ভূশপ্রতিজ্ঞয়োরিতিমেদিনী। এতেধামিতি। অগ্রেণাবিশব্দেদ্বিত্যগ্রিমসূত্রর্তিস্থেনপদেন যথাযোগ্যমন্বয়ঃ কর্ত্তব্যইত্যর্থঃ। ৩০০॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

ভূশেতি। বাহ্ধাতোঃ ক্তেহোঢ়ঃ ঢ়াঁত্তশুধঃ চটবর্গাবিতিধস্থাচ়ঃ ঢ়েধাতুঢ়োলোপঃ। বাহিত-মিতাঁট্। ৩৩০॥

क्९ थ्रमी शिका।

মস্থে। মস্থেবাচ্যেক্স্ভ্দঞ্চলনে। মস্থার্থমাহদ্রবদ্রব্যেতি। মস্থ্ বিলোডনেমথ্যতেতদিতিকর্মণিবঞ্জেনেমস্থান্দেনদ্রবদ্রব্যালোডিতং জলাদিনামিশ্রিতং দদ্যনং কাঠিন্যবদ্য্নতাদিবস্তৃ চ্যতে। অনেনেতি
করণব্যুৎপত্ত্যামস্থানদণ্ডশ্চোচ্যতে। মস্থং স্থাৎপুংদিমস্থানে দাক্তবেচদিবাকরেইতিমেদিনী। একপদেহ-

কষ্টংকৃচ্ছে। কষ্টহেতৃত্বাৎ কষ্টোবহ্হিঃ। কষিত্যন্যত্র। ৩৩২॥ অন্ধকারেতৃধ্বান্তং স্যাৎ। ধ্বনিতোহন্যঃ। ৩৩৩॥ স্বান্তং ননস্মুক্তং। স্বনিতোহন্যত্র। ৩৩৪॥

পীতিদীর্ঘঃ। মস্থানোমস্থদগুকেইত্যমরঃ। তত্রক্ষুকংসিদ্ধাতীত্যর্থঃ। যথা ক্ষুকং ঘ্নতং। মন্দর ক্ষুক-ক্ষোভিতাস্থোধিবর্ণনৈতি মাঘঃ। মন্দরএবক্ষুকোমস্থানদগুইতিবিগ্রহঃ। উপচারাদিকি। দ্রবেঘনা-রোপাদিত্যর্থঃ। উপমানাদিতিভট্টঃ। অন্যত্রমস্থাদন্যত্র। ৩৩১॥

গূতপ্রকাশিকা।

মস্থইতি। মস্থেদ্রবদ্রব্যালোডিতঘনমূতাদোমস্থানদণ্ডেচ। ক্ষুভ্ধাতোঃ ক্তেভাতস্থধঃ তুর্ম্যে-ভস্থবঃ। ৩৩১॥

क् अमोशिका।

কফ্টং। কৃচ্ছে তুষ্থে। ক্যাগতিশাতনয়োঃ ভাবেক্তঃ। স্থাৎকফ্টং কৃচ্ছু মাভীলমিত্যমরঃ। কফ্টহেতু স্বাদিতি। হেতু হেতু মতোরভেদাৎ কফ্টোইগ্লিঃ যথাস্বত্যু ব্যাস্ত্রইতি। ঈদসুবন্ধ স্বাদিডভাবেসিদ্ধে কৃচ্ছু নিয়মাৎ ক্যিত্ম ন্যাদিতিবজুঃ। ক্ষিত্র পাশ্বয়মিত্যনর্যঃ। ৩৩২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

কফীমিতি। কৃষ্হিংসায়ামিতিগণদর্পণে। ক্ফীমিতিভাবেক্তেশকারাত্রস্ভটঃ। ক্ষিতং হিংসিত-মিতার্থঃ। ৩৩২॥

क्ट श्रमीशिका।

আন্ধ। অন্ধোদৃষ্ট্যপঘাতে চুরাদিঃ। আন্ধং করোত্যন্ধকারঃ রণ্ধবন্ স্বন্ শব্দে। চৌরাদিবারণায় প্রাহরিকৈথ্য তাতি হত্তেতিরায়ঃ। কাককোকিলাদিসাদৃশ্যেনধ্বনিতং শব্দিত্যেত্ৎ ধ্বান্তমিতি তার্কিকাঃ। ৩৩৩॥

গূতপ্রকাশিকা।

অন্ধেতি। ধ্বন্শব্দাৎ ক্তে অঃ পঞ্মোপ্ধাদীর্ঘঃ। অত্রান্ধকারাদ্ভিন্নইট্ধ্বনিতঃ। ৩৩৩॥

क्ल्भूमीलिका।

স্বান্তং স্থানসংমনইত্যমরঃ। ক্ষিত্যপ্রেজোমরুদ্ব্যোমকালদিদেহিমনাংসিদ্রব্যাণীতি দ্রব্যত্ত্বেন তার্কিকৈঃস্থানিতং শব্দিতং প্রতিপাদিতমিত্যর্থঃ। ৩৩৪॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

স্বান্তমিতি। স্বন্শব্দেক্তেঅঃপঞ্চমোপধাদীর্যঃ। ভূশেতিএতৎপর্য্যন্তং বক্তুচ্ছন্দঃ। যথাছন্দোমঞ্জর্য্যাং বক্তুং যুগ্ভ্যামগোস্থাতামকের্য্যোহনুষ্টুভিখ্যাতমিতি। অস্থার্যঃ অনুষ্টুভিঅফীক্ষরবৃত্তোযুগ্ভ্যাং

বিশস্তপ্পকৌবৈজাত্যে। প্রাগল্ভ্যে। অন্যোবিশসিকোধর্ষিতঃ। ৩৩৫॥ অনায়াসকতেফাণ্টং। সদ্যঃ সমুদ্ধৃতদ্রবৌষধমুচ্যতে অনায়াসনির্য্যাসত্তাৎ। ফণ্গতৌফণিতোইন্যঃ। ৩৩৬॥

সমপাদোপ্রাপ্যল্যব্রোপেপঞ্চমীমগোস্থাতাং সমপাদয়োঃ প্রমথং চত্বারোগুরবঃ অব্ধেশ্চতুর্থবর্ণাৎপরঃ যঃ আদিলঘুবর্ণত্রয়রূপোয়গণঃ স্থাৎ বক্তুং ছন্দঃ খ্যাতমিতি এতেনান্থাক্ষরেম্বপ্রথমতৃতীয়চরণয়োশ্চনিয়মোনা-স্তীতিলবং। ৩৩৪॥

क्र अमोशिका।

্ বিশ। ধ্রেইফ্ ধিজাত শ্বেত সমরঃ। বিজাত শুভাবো বৈজাত্যং বৈজাত্য এব সবিধীয়তে নাশুত্র তেনবিশসিতোধর্ষিত ইতি। যদ্যপিধ্বেরাদিকর্মণি বিকল্পসম্ভবান্নিত্যমিত্ভাবোনোপপদ্যতে তথাপিসিদ্ধ-পদ্য রুচিপরিগ্রাহকত্বাদিই বিষয়প্রসাধকত্বাচ্চাদিকর্মব্যতিরেকেনাপ্যনেননিষিধ্যতে তেনাদিকর্মণ্যপি নিত্যমিট্ ধর্ষিত ইতিনবেট্ তর্ম্প লমাদনুবন্ধেনেতি নৈবং ক্তবন্তোত শুসার্থকত্বাৎ তেনধ্রইবানিতিভট্টঃ। ৩৩৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

বিশেতি। বৈজাত্যেপ্রাগল্ভানির্ল্ল জৈইতিযাবং তিষামর্থেবিশস্তধ্যেষ্টা দিদ্ধাতইত্যর্থঃ। তত্যদাভূদণং পুং সঃ ক্ষমালজ্জেবযোগিতঃ। পরাক্রমঃ পরিভবেবৈজাত্যং স্থরতেশ্বিবেতি। অন্তস্থমধ্যবানপিযথা।
ধ্যেষ্ঠধ্যেথিযাতশ্চেত্যমরঃ বিরুদ্ধং যাতং প্রাপণমস্তেতি বুংপিতিঃ। অত্যইতি প্রগল্ভভিন্নইত্যর্থঃ
বিপূর্ব্বশস্ত্রহিং সায়াং কর্মণিজেইট্ বিশেষেণহিং সিতইত্যর্থঃ। বিশসিতবিষমক্ষত্রজাতিপ্ররোহইত্যনর্যে।
ক্রিধ্বাপ্রাগল্ভ্যে ধর্বিতইত্যন্ত ধাতৃনামনেকার্থিয়াং পরাভূতইত্যর্থঃ। তধাচভট্টো। প্রহস্তম পুরোহ্মাত্যান্ জিহিংস্কর্প্রথা। বানরাঃ কর্মসেনানীরক্ষসাংচক্ষমেনতদিতি। দধ্যুঃ পরিভূতবন্তইতিভট্টাকা। ৩৩৫॥

क्र थमिशका।

অনা। কৃৎপ্রত্যয়বিধায়কসূত্রাদিস্বাভাবাৎ স্বজ্ঞাপনাদ্বানোপপদস্থং। অনায়াদেনাপরিপ্রমেণ কৃত্রেদাধিতেদদ্যএবসাধিতং যত্তৎফান্টং ক্তেন্সঃ পঞ্চমোপধাদীর্ঘঃ চটবর্গাবিতিতস্থাধঃ। কিং তদিত্যাহ্-সদ্যইতি। তৎক্ষণাৎ সমৃদ্ধতং দ্রবৌষধমর্কক্ষীরাদিকান্টমূচ্যতে অনায়াদেনসিদ্ধস্থাদিতিকেচিৎ। উদক-নিমজ্জনমাত্রেণ সদ্যএবযৎসাধিতং ক্যায়দ্রব্যাল্লকমৌরধং তদনায়াসকৃতং ফান্টমুচ্চতেইতিবজ্ঞঃ। ৩৩৬॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অনেতি। আয়াদঃ পরিশ্রমঃ নআয়াদোহনায়াদঃ অনায়াদেনাপরিশ্রমেণ কৃতমিতিবিগ্রহাঃ। ফণ্গতিনিঃ স্নেহয়োঃ কর্মণিক্তঃ। অনায়াদকৃতইত্যস্থার্থ মাহদদ্যইতি। হেতুমাহঅনায়াদনির্ঘাদত্বাদ-নায়াদেনকাথ ছাদিত্যর্থঃ। অনায়াদকৃতং ফাণ্টমিত্যমরঃ। অতঃ অনায়াদকৃতাদতঃ ফণিতঃ গতঃ নিঃ-স্নিধাবাগত্যর্থেত্যাদিনাকর্তরিক্তঃ যনস্বরাদিভিন্নানামিতীট্। ৩৩৬ ॥

অবিশব্দেত্বৃষ্টং স্যাৎ। এতেষামিট্ক্লেনাস্তি। ঘূষ্টারজ্জুঃ ষর্ষিতেত্যুর্থঃ ॥ ঘূষ্টং শরীরম্ উপযুক্তমিত্যুর্থঃ ধাতোরনেকার্থত্বাৎ। বিশব্দেতৃস্যাদিট্ অবদুষিতং বাক্যমাহপূর্বাপর বিরুদ্ধমিত্যুর্থঃ। বিরুদ্ধশব্দেরাৎ উদ্দুষ্টং কোকিলয়েত্যুত্ত-মশব্দেসিদ্ধং। ঘূষির্ বিশব্দে অর্চাদিত্বা দেন্ তেন। মহীপালবচঃ শ্রেত্বাজুঘুযুঃ সঙ্গরেভটাঃ। ইতিসিদ্ধনের স্বস্থাভিপ্রায়ং প্রকাশিতবস্তুইত্যুর্থঃ। ৩৩৭॥

লগ্নমিফবিরিক্কাঃ স্থ্যঃ সক্তাস্পাইস্বরার্থকাঃ। অনিট্ক্তান্তানিপাত্যন্তে। আসক্তাদন্যলগিত্য অবিস্পাইটাদন্যং শ্লেচ্ছিতং রেভূশকেস্বরাদন্যদিরে-ভিতং। ৩৩৮॥

क्रथमीरिका।

অবি। তথাক্বেংপ্যের নোপপদতেত্যুক্তমুপপদসূত্রে। বিরুদ্ধশক্তিমেংর্থের্ক্টং স্থাৎ। এতেযামিতি। বাহুপ্রভৃতি ঘুনিপর্যান্তানাং। ঘুকারজ্জ্য কৃষ্টেত্যর্থঃ। উপযুক্তং তৈলাদিনেত্যর্থঃ এষচার্থো
ধাতোরনেকার্থরাদিত্যরয়ঃ। অবঘুনিতমিতি। বিরুদ্ধশক্ষেইট্ বিরুদ্ধেশক্ষমাত্রত্যাগাছ্ত্রমশক্ষেংপিনেট্।
নসুবিশক্ষো বিরুদ্ধশক্ষঃ সচচৌরাদিকস্থানুয়েঃ সম্ভবতিত্রচনিত্যমিন্ প্রাপ্তৌকথমবঘুনিতমিত্যরুচেরাহ্
অর্চাদিরাদিতি। অর্চাদয়স্বাধ্বাদেতি বেনন্ততন্তথাত্বমিত্যর্থঃ। এতদেবমহাকবিপ্রয়োগেণ প্রমাণয়তি
মহাতি। অরিরক্তাদবৈস্থিং নেল্যামোরক্তপানিহেতিপরার্দ্ধং রখো। তেনবেন্ত্রেনজুযুয়ুরিত্যামং
বিনাসিদ্ধমিত্যরয়ঃ নিত্যমিন্থাম্ ভুরির্কারঃ স্থাৎ। ৩৩৭॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

অবিতি। নমুঘর্ষিতাউপযুক্তমিত্যাদ্যর্থপ্রতীতিঃ কথমিত্যতআহধাতোরনেকার্থহাদিতি। উক্তঞ্চলাধাদবগন্তব্যাঅনেকার্থাহিধাতবইতি। মহাপালেতি। এতৎপদ্যং রঘাবিতিকৃৎপ্রদীপিকায়ামুক্তং কিন্ত্বাধূনিকরঘোনদৃশ্যতে তত্মাদ্ধন্তলিখিতপ্রচানরঘোত্মিতমিত্যকুমীয়তে। বিশন্তেত্যাদি এতদন্তং বিশেষ্চলেদাক্ষণাব্যাপিত্বেহপি অফাক্ষরতয়াহমুক্ত্প্ছন্দোহন্তগতং। পঞ্চমং লঘুসর্কাত্রসপ্রমং দিচতুর্থয়োঃ। গুরুষষ্ঠকপাদানাং শেষেদ্বিরমামতঃ। প্রয়োগেপ্রায়িকং প্রাহ্থং কেহপ্যেতদ্বকুলক্ষণং। লোকেহনুক্ত্বিতিখ্যাতং তত্মাফাক্ষরতামতেত্যত্র প্রায়িকমিত্যুক্তত্বাৎ তত্মাফাক্ষরতামতেত্যত্র প্রায়িকমিত্যুক্তত্বাৎ তত্মাফাক্ষরতামতেত্যত্রেননাফাক্ষরত্বত্ব নিয়ন্তব্যচন। ৩৩৭॥

क्र थमिशिका।

লগ্ন। যথাক্রমং সক্তাস্পান্টস্বরার্থকাঃ সিদ্ধাঃ স্থাঃ। লগেসঙ্গেলগতিম্মেতিক্তঃ লগ্নঃ সংসক্তঃ।
লগ্নং রাশুদ্রেক্লীবং সক্তলজ্জিতয়োস্ত্রিম্বিতিমেদিনী। ক্লেছ্অব্যক্তশব্দেক্লেছনং ক্লিষ্টং। যদ্যপিসামান্তেনোক্তং তথাপ্যবিস্পান্টলিপিবিষয়েইতিবজ্ঞঃ। অথক্লিষ্টমবিস্পান্টং বচইত্যমরঃ। ক্লিন্টং ত্রেম্বব্যক্তবাচীতিমেদিনী। কর্মাণিক্তঃ বিরিক্কঃ বৈদিকস্বরসংজ্ঞেয়ং। প্রতিশ্রণমশীর্ণজ্যোতিরগ্ল্যাহিতানাং বিধিবিহিতবিরিক্কঃ সামিধেনীরধীত্যেতিমাঘঃ! কেচিক্ত্রিজিং সোত্রং পঠন্তি। ৩৩৮॥

প্রতিপরিরতঃ প্রোক্তোদৃতঃ স্থূলেবলিন্যপি। রংহ্দৃংহোর্বিহ্দৃহোর্বায়ং নিপাতঃ। সংগ্রাময়তে রেবসোপসর্গন্য ধাতৃত্বাদন্যত্র প্রাদিনাসমাসেপরিব্রত-য্যগতইত্যাদৌযপ্। ৩৩৯॥

চাষ্চিঞাঃ পূজার্থে অপচায়িতাপচিতৌসিদ্ধৌ। ২৪০॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

লয়েতি।লয়েতিনিপাতনাশ্নিষ্ঠাতোনঃ। শ্লিফেতিক্তেধুট্যক্তেচ্ছশোদত্বং ধকারাক্তস্টঃ নিপাতনাদেকারস্তইত্বং। বিরিক্ষেতি বিপূর্ববেরভ্ধাতোঃ ক্তেভাক্তস্তধঃ ধেবস্তবঃ নিপাতনাদেকারস্তেত্বং সক্তমাসক্তম্
অস্পান্টবাকাং স্বরোবৈদিকস্বরবিশেনঃ তেহ্থাযেনাংতে। আসক্তাদন্যদিতি লগ্দাদ্প্রাপ্তে চুরাদিঃ
অস্মাৎ ক্তেইটিইল্লোপেলগিতং স্বাদিতং প্রাপ্তদ্বেতার্থঃ। অবিস্পান্টাদন্যদিতি। শ্লেছ্সব্যক্তেশকেহপশক্ষেচ শ্লেছিত্মপশকঃ চুগাগমঃ। স্বরাদন্যদিতি। বিরেভিতং বিশেষশক্ষইত্যর্থঃ। ৩০৮॥

क्र<थ्रिमीशिका।

প্রবিদ্যাল কথা । দৃহ দৃহি বৃহ বৃংহির্দ্বাপরিবৃংহতি দৃহতীত্যুপচিতোভবতীতিকর্ত্রিক্তঃ তত্রবৃহবৃংহোঃ পরিবৃত্দ্রাবিহৃকে দৃহদ্যোদ্ তইতি । বৃহ্বংহিদৃহ্দৃহীণাং প্রয়োগাবিতিপঞ্জিকা । মতান্তরেবৃহ্দৃহোঃ পরিবৃত্দৃতাবিহৃকেং । বৃহিদৃহিপক্ষেনুমোলোপঃ দর্বতনেট্ তলোপেপৃর্বাদীঘাভাবশ্চনিপাতঃ । ননুপরিবৃতাদিন্ত্রাভাগে কথং পরিব্রত্যাততআহ সংগ্রাময়তেরিতি । সংগ্রামেঃ দোপসর্গতেতানেন সম্প্রবিগ্রাম্ বৃদ্ধেইতাত্তৈব দোপসর্গভাগাহু ইং নিপাতসমাসাভাগাবিনেত্রক্ত দোপসর্গতেতিনিয়মাৎ পরিবৃত্বং করোতাচন্টেবেতি তৎকরোতীতীনিপৃথাদিহাদ্রে নিপাতসমস্তপরিব্রুতঃ পরিং বিনাসনাদ্যন্তাশ্বেতি ব্রুদ্ধাত্ত্ব বেনপুনঃ প্রাদিস্যাদেক্ত্বেপ্ লঘুপুর্বেনাহ্য । এতেনপরাহ্যপলক্ষণং কচিংতইতিনিপাত্যতে তেনপরিব্রত্যাআগতইতি অথবাসন্ধাণে বৃধুংগৃহ্ইতি বদসমাদেহপি যবিতিভট্টনারায়ণোক্তমুপ্রি প্রমিতিভাবঃ ।৩৩৯॥

গুতপুকাশিকা।

প্রভাবিতি। প্রভাবর্থেপরির্তঃ স্থুলেবলিন্সপ্রথিদ্তইতিপ্রোক্তইত্যর্থঃ। অপিনাঅতিশয়েচ।
প্রভঃ পরির্টোহ্রিপইত্যনরঃ। হদন্বোভদ্রাণিদ্রতয়তুমুড়ানীপরির্টইত্যনর্বে। শক্তস্থুলোত্রিষুদ্রতালিত্যমরঃ। দৃতঃস্থুলেনিতান্তেচ প্রগাতবলবত্যপীতিমেদিনা। ননুপরির্টশব্দক্ত নিপাতেএকশব্দস্থাৎ
কথং পরির্টিয়েতিদিদ্ধাতীত্যতআইদঙ্গামেঃ দোপদর্গরং পাতৃত্বং নেতরক্তরিতিনিয়্নাৎ দঙ্গাময়তেঃ
সোপদর্গক্রণাত্তরং অন্যত্রসঙ্গামাদন্যত্রপরির্টইত্যাদে তৎকরোতীত্যাদিনাইনি অকারলোপেরঝকারক্ত
পৃথাদেরিতিঝকরেল রহেপরিব্টিগাতোঃ ক্রাপ্রতায়েপ্র্বিক্তিপরেরুপ দর্গহাত্তনসহদ্যাদে অনঞ্দ্যাদেক্রে যবিত্যনেন পরিব্রাইত্যাদোশ্য তথাচপরির্টইত্যেকলিঙ্গত্বেহিপি দনাদ্যন্তাশ্তেনেধাতুত্বেপরেরুপদর্গহ্বের নতুতেনদহৈকপাতৃত্বমিতিভাবঃ। যপিল্যুপ্র্বেনোহ্যাপিদ্যাদিতীনোহ্যাদেশঃ। ৩৩৯॥

क्थमीशिका।

চানৃ। চানৃপুজানিশামনয়েঃচিঞ্ চয়নেঅপপুর্বয়োরনয়োর্য্থাক্রমং গাতোরনেকার্থহাৎ পূজার্থে-দোনিপাতেত্ত দদদধোর্দদদধন । পরেণভুচায়তে দৌশাধিতৌতত্বপক্ষিগুমিভিভাবঃ। ৩৪০॥

নার্মোব্যর্ম: সমর্ম ক সমীপেইভার্ণ ইত্যপি। নিবিদমভিপূর্বস্যার্দ্দেরনিট্ ক্রান্তা এতেসিদ্ধান্তি। ৩৪১॥

বাস্কৃষ্টং স্বিতং লোমিপ্রতীঘাতেচ বিশ্বয়ে। প্রতীঘাতবিশ্বয়ানপেক্ষরৈব-লোমিক্তরি। স্কৃষানি স্বিতানি লোমানি স্কৃষ্টং স্বিতঞ্চকেশাঃ লোমে-তিকেশস্যাপিগ্রহণং। অত্র স্ব্রু অলীকে নিষ্ঠায়ামনিট্ স্ব্ তুফৌ সেট্ উভাবপিক্তে বেটাবিতি সূত্রার্থঃ। বিশ্বয়ে স্কৃষ্টা স্বিতালোকাঃ স্কৃষ্টা স্বিতাদন্তাঃ প্রতিহতা ইত্যর্থঃ। লোমি কিং স্কৃষ্টশ্রাত্রঃ প্রগল্ভইত্যর্থঃ স্বিতশ্চাত্রঃ তুফ্টইত্যর্থঃ। ৩৪২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

চায়চিঞোরিতি। উভয়ত্রকর্মণিক্তঃ পৃর্ব্বত্রইট্ পরত্রনেট্। পৃজানমস্থাপচিতিরিতি স্থাদহিতে-নমস্থিতং নমসিত্রমপচায়িতার্চ্চিতাপচিত্রমিতিচামরঃ। চাক্ষুম্বজ্ঞানে চয়নেচাপ পূর্ববানয়োর্ম ক্রইতিভাবঃ। ইদমপ্যসুফুপছন্দোহন্তর্গতং। ৩৪০॥

क्र थ्रमी शिका।

ন্তর্ণো। অর্দ্ হিংসায়াম্ অর্দ্ গতোঁযাচনেচেতি দ্বয়োগ্রহণং ক্তোপাধিমাসাদ্যোপদর্গোনিয়ম্যতে ইডভাবোনিপাতঃ কর্মণিক্তঃ ন্তর্পোব্যার্গঃ সমর্গ ইতি নিতরাং হিংসিতোগতোযাচিতোবেত্যাদ্যর্থাঃ অভ্যর্গঃ সন্মিহিতইত্যর্থঃ। এভাঃ কিং প্রার্দ্দিতঃ। সমীপে কিম্ অভ্যন্দিতোব্যন্ধঃ শীতেন পীড়িতইত্যর্থঃ। ৩৪১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ন্ত্র ইতি। নিপ্রবার্দেঃ ন্তর্গ বিপ্রবার্দেঃ ব্যর্গঃ সম্ প্রবার্দেঃ সমর্গঃ এতেমূপপদেয় ক্তেপরে আর্দরে ডিতি নিপাতঃ সমীপেহর্থে অভিপ্রবার্দেরে ট্ ইতিনিপাতঃ অন্তর্তার্থে ইট্ স্থাদেব। সর্বত্ত দাদদেশতি দতয়োর্নঃ ণত্বঞ্চ। সমীপে নিকটাসন্ন সন্নিকৃষ্ট সনীড়বং। সদেশাভ্যাস সবিধ সমর্য্যাদ-সদেশবং। উপকণ্ঠান্তিকাহভার ভিত্তাঅপ্যভিতেশহব্যয়মিত্যমরঃ। ৩৪১॥

क्टबनिका।

বাঙ্গ। লোম্মিকর্ত্তরি হৃষ্টং হৃষিতং প্রতীঘাতেনাশেবিশ্বয়ে আশ্চর্য্যেচ বাচ্যেছ্যইং হৃষিত্মিত্যর্থঃ। বাশনোহৃষ্ হুষোঃ ক্রমনিরাদেনোভয়োর্বিকল্পসূচকঃ। প্রতীঘাতেতি। অভ্যথালোম্মীতির্যর্থং স্থাৎ তথাহি প্রতীঘাতে বিশ্বয়েচ সামাভাতোভবন্ লোম্মাপি ভবেৎ কিং লোম্মীতি অতএতয়োরনপেক্ষয়েতিভাবঃ। হৃষ্টানি হৃষিতানি পুলোকিতানীত্যর্থঃ হৃষ্টং হৃষিত্মিতিভাবে কেশৈরিত্যনভিহিতম্বেন গোণং কর্তৃত্বং। পৃষ্টাভু নথলোমানীতি কেশস্পর্শেহপি শোচদর্শনাৎ লোমশন্দেন মূর্দ্ধজাভঙ্গ জাভাপি গৃহস্তেইত্যাহলোমেতি। সূত্রার্থং বর্ণয়তি অত্তেতি। হৃষু অলীকে প্রাগল্ভ্যেনিষ্ঠায়ামনিভিতি উদমুবদ্ধিম্বেন

আস্বান্তঃ সংঘূষ্টোৰুষ্টোইভ্যান্তস্তূর্ণঃ ক্রান্তাবেটঃ। ৰুষিত্বরোর্ন্নিত্যমনিট্-প্রাপ্তোবেট্ৰুষিতঃ ত্বরিতঃ অন্যেষাং নিত্যমিট্প্রাপ্তোবেট্পাস্থনিতঃ অভ্য-মিতঃ সংঘূষিতঃ। তারকাদিত্বাৎমূচ্ছিতঃ। ৩৪৩॥

ক্ত্বিবট্রাদিত্যর্থঃ। বস্তুতস্ত ধাতুদ্বয় গ্রহণং ক্লেশপরীহারার্থং। চাস্চিঞোরিতিবৎ সামান্ততঃ সিদ্ধেঃ। বিশ্ময়ে হুফী হুষিতা লোকাবিশ্মিতাইত্যর্থঃ। প্রতীঘাতে হুফী হুষিতাদন্তাইতি। ধর্মিণি ভবন্ ধর্ম-মাদার ভবতীতি বিশেষণত্বেন তাবপিবাচ্যা বিত্যুক্তং প্রতীঘাতে বিশ্ময়েচ বাচ্যইতি। ৩৪২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

বৈতি। ক্ষয়ু অলীকে ভচ্চমিথ্যাকরণং প্রগল্ভশ্চ হর্বেচ ভুপক্ষয়্তোষে দিপ একার্থবাত্ত্ভয়োগ্রহণং লোম্মিকর্ত্তরি ক্ষয়্টং ক্ষরিত। প্রতীঘাতইতি। প্রতিহননং প্রতীঘাতঃ ঘঞি হত্তেম্বর্যাৎ স্মৃতঃ উপদর্গদ্য ঘঞ্জেইতি দীর্ঘঃ। বিস্ময়োদ্ভ্তমাশ্চর্যমিত্যমরঃ। প্রতীঘাতে বিস্ময়েচ বাচ্যেক্সটং ক্ষরিতম্ এতদর্থব্বয়ে ধাতুনামনেকার্থবাং। সূত্রাক্ষ্ট্তাৎপর্য্যং বির্ণোতি প্রতীঘাতেতি। লোম্মীতি কর্ত্তরি নহর্থে অযোগ্যহাৎ প্রতীঘাতে বিস্ময়েচত্যুক্তে প্রতীঘাতে বিস্ময়েচ দামান্সতা ভবন্ লোম্মপি স্পাদিতি এতয়োরনপেক্ষয়েবেতিভাবঃ। নচ প্রতীঘাতে বিসময়েচার্থেলাম্মিকর্ত্রের স্থাদিতিকথং প্রতীঘাতাদ্যনপেক্ষয়ের্যুক্তমিতিবাচ্যং বিস্ময়ার্থপক্ষেলোমঃ কর্ত্ত্রামন্তবানিয়মানুপত্তেঃ। নমু কথং ক্ষয়ং ক্ষরিতং কেশৈরিত্যুচ্যতে সূত্রে কেশস্থাপ্রহণাদিত্যত আহ লোমেতি। তনুক্রহং রোমলোমেত্যমরকোষে তনুক্রহুস্থ লোমন্বাভিধানামন্তক্সাপি তনুভোহভিন্নবাত্রন্ত্রভানাং কেশানামপি লোমন্বাভিন্নবান্মান্সক্রেন জুপ্ড্রিশাম্বকারানুবন্ধান্ধ বিভাগয়েত্যনেন ক্রি বেট্রেন ক্রেহ্ননিট্রানেট্ । প্রগল্ভঃ প্রতিভানিত্রতামরঃ। প্রজ্ঞা নবনবোন্মেশালিনা প্রতিভোচ্যতইতি। ক্ষরিত ইতি। ক্ষয়্ তোমে অন্তমেট্রাৎ ক্রেইট । ৩৪২॥

क्र९प्रमीशिका।

আবা। স্বন্শব্দেঘূরির্বিশব্দে অনয়োরূপসগৃনিয়মঃ যদ্যেষনাদ্রিয়তে সামান্তেনৈববিকল্পঃ ক্রিয়তেতর্হিস্বান্তঃ মনস্যক্তমবিশব্দে ত্বিতিসূত্রবয়ং ব্যর্থংস্থাৎ। রুষিষ্বরোরিতি। রুষেস্তকারাদাবিত্যনেন ত্বর এবমাদকুবন্ধাদিতিবেট্রানিত্যমনিট্প্রাপ্তিঃ অন্যেষাং স্বন্যুয়অমাং সাচস্বন্যুয়োব্বিশেষত্বাৎ সামান্ত-বিধ্যভিপ্রায়োণাক্তা। মূচ্ছিতইতি। মূচ্ছামোহনকুৎসনয়োঃ এবমাদকুবন্ধাদিতিবেট্ত্বেননিষ্ঠায়ামসিদ্ধিরতঃ মূচ্ছনং মূচ্ছাসাহস্থান্তীতিতারকাদেরিতচ্। ৩৪০ ॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

আবান্তইতি। আঙ্ স্বনঃ ক্তে অঃ পঞ্মোপধাদীর্ঘঃ সম্পূর্বাঃ ঘূম্ সংযুক্তঃ রুষ্কোপেরুক্তঃ অভিপূর্বাঃ অমৃরোগেঅঃ পঞ্মোপধাদীর্ঘঃ মোনত্বঞ্চ ঞিত্বরাসন্ত্রমেক্তেঞ্জিব্যবিজরীত্যাদিনাবতঃ ভূণঃ। এতেক্তান্তাবেটঃ স্থ্যরিত্যর্থঃ। রুষিত্বরোরিতি। তকারাদোপাক্ষিকেটঃ সহীষুরিষিলুক্রুষইত্যনেন

দান্তঃ শান্তঃ পূর্ণোদফঃ স্পাফচ্ছনজ্ঞপ্রিশ্চিবং। এতেইনস্তাঃ ক্তেবেটঃ
স্থাঃ। দমিতঃ শমিতঃ পূর্নিতঃ দংশিতঃ স্পাশ গতৌস্পাশিতঃ ছদ্ খটুসম্বরণে
ছাদিতঃ জ্ঞপেঃ জ্ঞপিতঃ বেট্ছানিত্যমনিট্ প্রাপ্তোপুনরিড্বাবিধারতে। ৩৪৪॥
ভিত্তংখণ্ডেখাণং শোধ্যদ্রব্যেবিত্তংধনেম্মতং। ভিন্নমন্যংখাধাতোঃ খাতং
সত্যমন্ত্রবিক্ষবিশ্বমন্ত্র। ৩৪৫॥

রুষস্তকারাদোবেট্ছাৎ এবমাদসুবন্ধাদিড্বেতি ভাবাদিকশ্ববিহিতক্তেম্বরোবেট্ছাৎ সামান্যক্তেউভয়োরনিট্প্রাপ্তোবেডিত্যর্থঃ। অন্যেশং স্বন্যুর্ অমাং নিত্যমিট্প্রাপ্তোম্বান্তং মনস্যক্তমিতি অবিশব্দেতুমুইং
স্থাদিতি বিশেষসূত্রেণবিশেষার্থেইনিট্ছেইপিসামান্তত ইট্প্রাপ্তাবুক্তোপদর্গেভ্যোবেডিত্যর্থঃ। আম্বনিতইত্যাদোক্তে সর্ব্বিধিভ্যোলোপবিধির্বলবান্ম্রাদেশস্ততোবলী ততোপ্যাগমোবলাতিন্যায়াদিডাগমস্থ
বলিছেনপ্রথমমিডাগমে ন পঞ্চমোপধাদীর্ঘাদি। নসুকথং মুচ্ছিতইতি অস্তাদনুবন্ধত্বেনভাবাদিকশ্ববিহিতক্তেবেট্য়াৎ সামান্যক্তেইনিট্প্রাপ্তেরিত্যত্তআইতারকাদিয়াদিতি। ইতচ্নিম্বিডিভিভাবঃ। ৩৪৩॥

क्ट्थमीशिका।

দান্তঃ। ইনন্তানামেযাং ধাতৃনাংনিত্যমিট্প্রপ্তৌবেড্বিধীয়তে। কেচিত্তুদমুশমোরুদসুবন্ধিন্ধন পূরেরীদসুবন্ধিন্ধেনবেট্রেনদন্শেরনিট্রেনস্পশছদোঃসেট্রেনজ্ঞপের্কেট্রেনসেডনিটাং বেড়িধানমিত্যাহ্য। দান্তঃ শান্তইতি। ক্তেহেরিল্লোপেপঞ্চমান্তানিয়মাৎ পঞ্চমোপধার্দার্যঃ সোত্রনির্দ্দেশান্বাসঃ উপশান্তিং নীতাবিত্যথোঁ। স্বার্থেনপূর্ণআপ্যায়িতইত্যর্থঃ। দন্শের্হেরিল্লোপেসোত্রনির্দ্দেশান্ধলোপেদফ্টঃ অদন্তচৌনাদিকস্তম্পশবন্ধনেইত্যস্ত গ্রহণং চৌরাদিকস্তছদঃ সোত্রনির্দেশাৎক্রমঃ ইতোদন্তানিয়মান্বাদাদ্শ্চনঃ জ্ঞপ্যারণতোব্যনিসানের চুরাদিমসুবন্ধীবেটোদরিদ্রইতি সনিবহুদ্রস্তবেট্রাদিহেট্প্রাপ্তোবেট্ জ্ঞপ্তঃ জ্বিতঃ। ৩৪৪॥

गृष्धकामिका।

দান্তইতি। দমুশমুউপরমেঅনয়ােরুকারাত্বদ্ধরাং ক্রিবেট্রেনানিট্রং প্রীআপ্যায়নেইত্যন্তনেট্ স্থাড়টীদস্বদ্ধেত্যাদিনাহনিট্রং দন্শদংশনে অস্থানিট্রং স্পশছদোঃ দেট্রং বেটোদরিদ্রোণ্ভরেত্যাদিনাজ্ঞাপ্টেং দন্শদংশনে অস্থানিট্রং স্পশছদোঃ দেট্রং বেটোদরিদ্রোণ্ভরেত্যাদিনাজ্ঞাপ্টেং। বস্তুতস্তু ইনন্তানামেবামনেকাচ্রেননিত্যমিট্নপ্রেরেত্বিধীয়তে। দমিতইত্যাদি। মিতাং ব্রস্থং ইল্লোপঃ। দান্তস্তুদমিতেশান্তঃ শমিতেপ্রার্থিতে হিল্ডইত্যমরঃ। পূর্ণস্তপ্রতেইত্যমরঃ। জ্ঞপ্যতোশ্চেৎজ্ঞপ্তস্তুদাবেটোদরিদ্রোণ্ভরেত্যাদিনাসনিবেট্ রেন ইহনিত্যমনিট্প্রার্থেপ্ররিভ্বাবিধীয়তেইত্যাহজ্ঞপেরিত্যাদি। আস্বান্তইত্যাদি এতৎসূত্রান্তং বিদ্যানালছিলঃ। সর্বেবর্ণাদীর্ঘাযস্থাং বিশ্রামঃ স্থান্থেদৈর্বেদিঃ। বিদ্বন্থানাবিণিব্যাখ্যাতাসাবিদ্যানালেতিশ্রুতবোধে। ৩৪৪॥

क्र ९ अमी शिका।

ভিত্তং। ভিদির্বিদারণেহনিট্থণ্ডেইর্থেনদাদ্দশ্চনঃ। ভিত্তং সকলথণ্ডেবেত্যমরঃ। ঋগতোঁ অবশ্যোদ্ধার্য্যদ্রব্যেনিষ্ঠাতোনঃ। ঋণং নির্য্যাতনীয়দ্রব্যং। স্থাদৃণং পর্যুদঞ্দমিত্যমরঃ। উপচারাদ্দশ- রতং রতেরিনম্ভস্যাধ্যয়নে। রতং পারায়ণং দিজেন। অন্যন্ত্-বর্ত্তিতং। ৩৪৬॥

ফুলং ক্ষীবক্শোলাযখঞ্জাঅপ্রাদিযোগিনঃ। এতেক্তানিপাত্যস্তে। ঞিফলাবিসরণে তচ্চবিকাসঃ ফুলঃ। ক্তবস্তোরপিতকারস্যলমিচ্ছস্ত্যেকেফুল্ল-

ঋণানিজলহুর্গভূময়ইতি। বিদ৯লাভেভোগ্যাদন্যত্রলাভার্থাৎসদাতোনইতিষোক্তেঃ ভোগ্যেবিত্তস্তুবিন্দতে-রিতি পরোক্তেশ্চভক্ষ্যভিন্নেগোহিরণ্যাহ্যুপভোগ্যেদ্রব্যেবিত্তং দাদ্দশ্চনঃ নস্থাৎ। দ্রব্যং বিত্তং স্বাপতেয়ং রিক্থস্ক্বংং ধনং বস্থিত্যমরঃ। ৩৪৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ভিত্তমিতি। কর্ম্মণিক্তঃ ভিত্তং। ঋণং স্থাদধমগ্রাহেজলত্বর্গেনপুংসকমিতি বিক্রমাদিত্যঃ। ভিন্নমিতি। রোধাদিকাৎক্তেভিন্নং চৌরাদিকাৎক্তেইটি ইল্লোপেভেদিতং। দারিতেভিন্নভেদিতাবিত্যমরঃ। সত্যং তথ্যমূত্যবিত্যমরঃ। লব্ধং প্রাপ্তং বিভূমিত্যাদ্যমরঃ। ৩৪৫॥

क्ट्थमीशिका।

রত্তং। ধাতোরনেকার্থরাদধ্যয়নেপঠনেগম্যেরতং নিপাত্যতে। রতুপ্রবর্ত্তনে হেছিনন্তস্থাদক্ষি হাৎ কর্মাণিক্তেইডভাবেইল্লোপেগুণনির্ভিশ্চনিপাতঃ লুগ্লোপ্যইত্যাদিসূত্রস্থাবিষয়াৎ নিমিত্তাপায়েত্যাদিস্যায়ুসরণাদ্বাসঃ। রতেরিনন্তস্থাপুদেনুবন্ধিরেনেডভাবপ্রাপ্তাবধ্যায়নাদ্যত্রইড্বিধীয়তেইতি কেচিৎ। পারায়ণং ব্রাহ্মণাথ্যবেদভাগইতি বজ্ঞঃ। অধীতত্বেনবর্ত্তে প্রবর্ততে স্মেতি সকলশাস্ত্রং র্ভমধ্যাপিত্মিত্যর্থঃ। সাকল্যাসঙ্গবচনেপারায়ণপরায়ণেইত্যমরঃ। যদ্যপ্যন্তরিনর্থত্বেভদ্রং তথা পীনন্তস্থাপররূপনির্যাগ্রিহ্বিন্মিদং। ৩৪৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

র্ত্তমিতি। র্ত্যতেস্মৈতদিতি র্ত্তমধীতমিত্যর্থঃ। পারায়ণমিতি। পরমায়নমাসক্তিস্থানং পরায়ণং পরায়ণমেবপারায়ণং প্রজাদিস্থাৎ স্বার্থেবাহণ্ কিন্তুভিধানবশাদণ্পক্ষেসাকল্যবচনাদিজণভাব-পক্ষেমাসক্তিবচনং। যথাপারায়ণং ,পরায়ণং পূর্ব্বপদাৎসংজ্ঞায়ামিতিণস্কং। সাকল্যাসঙ্গবচনেপারায়ণ পরায়ণেইত্যময়ঃ। পারায়ণং সমাসঙ্গেকাৎস্মের্পারগতাবপীতি মেদিনী। পারগমনপক্ষেযৌগিকম্ অন্যত্রয়ঢ়ং। রত্নপারায়ণং নামালক্ষেতি মমমৈথিলীতিভট্টিঃ। সকলরক্সস্বরূপাসকলরক্সাশ্রেয়েবেত্যর্থঃ। অত্তপারায়ণং সকলশাস্ত্রম্ অধ্যয়নসম্বন্ধাৎ। অত্তপুঅধ্যয়নাদ্যত্তুবর্তিতং। অত্তইনস্তাদনেকস্বরাদিটি ইল্লোপঃ প্রবর্ত্তিতমিত্যর্থঃ। বৃত্তং রতেরিনস্কস্থাধ্যয়নেহ্ন্যত্তুবর্তিতমিত্যবং ছন্দঃ। ৩৪৬॥

क्९ अमोशिका।

ফুল্লং। অপ্রাদিযোগিনঃ উক্তান্যপ্রাদিযোগরহিতাঃ। ফুল্লেতি। কর্ত্তরিক্তেচফুল্লঃ চর্ফলোশ্চুরফুলো লহং নিপাতঃ। ক্তবন্তোরপীতি বক্তব্যং ক্তান্তোপলক্ষণাদ্বেদং। ফলিতমিতি। কর্ত্তরিক্তঃ নিষ্পন্ন- বান্ ফল্ নিষ্পত্ত।বিত্যস্যফলিতং ক্ষীর্মদে কৃশ্ তন্করণে উৎপূর্বলায়েং ক্তন্থানে
হবং ক্ষীবোমতঃ কুশোন্তর্বলঃ। উল্লাযোনির্গতোগদাং ।খঞ্জঃ। প্রাদিযোগেতুপ্রফুল্তঃ প্রক্ষীরতঃ প্রকশিতঃ প্রোল্লাঘিতঃ পুখঞ্জিতঃ পরিক্রশইতিনাম্যুপধত্বাং

কঃ। নঞ্জোইনিত্যত্বাং উৎফুল্লঃ পুফুল্লইতি ফুল্বিকসনেইত্যত্রবাসিদ্ধং। ৩৪৭॥

সংক্রিম্বাক্তি স্বাহ্যসূত্তিঃ স্বাহ্যসূত্তিঃ স্বাহ্যসূত্তি বিভিন্ন ক্রিম্বাক্তির স্বাহ্যসূত্তি বিভিন্ন ক্রিম্বাক্তিঃ

দ্যতি স্যতি স্থামান্তইঃ স্যাত্তেকসুবন্ধিনি। দোদিতঃ দিতবান্ দিতিঃ দিত্বা দিখাসো অবসিতঃ স্থিতঃ স্থিতা মামাঙ্ মেঙাং মিতঃ মিতবান্ মিতিঃ। এষাংকিং গীতিঃ। তেকিম্ অনুমায়। কনুবন্ধিনি কিম্ অবদাতব্যং। ৩৪৮,॥

মিত্যর্থঃ। বাম্নাম্বতায়্দামর্থ্যেএমুকর্ত্তরিনিষ্ঠাতস্থাত্বম্ এতত্রপলক্ষণং খজিগতি বৈকল্যেইত্যতোহিপি তথা। পরিকৃশইত্যত্তনঞোহনিত্যত্বাদম্বন্ধোবাপ্যময়ঃ। যদ্যপি ফুল্ল্ বিকদনেইত্যাদাবচাদিনা ফুল্লাদয়ঃ দিদ্ধান্তি তথাপিক্তেফুল্লিতইত্যাদ্যপররূপনিরাদার্থমিদং। ৩৪৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ফুল্লেতি। ফুল্লন্চ ক্ষীবন্দ ক্শন্দ উল্লাঘন্ট খঞ্জন্চেতি দ্বন্ধঃ প্রাদীনাং যোগঃ প্রাদিযোগঃ দোস্তোষামিতি ইন্ ন প্রাদিযোগিনোংপ্রাদিযোগিনইতি বিগ্রহাঃ। সর্ব্যত্তকর্ত্তরিক্তেফুল্লইত্যত্রফুলাদেশঃ ক্তম্পলঃ ক্ষীবাদিয়ক্তমাকারোনিপাতঃ। প্রফুল্লোৎফুল্লনংফুল্লব্যাকোষবিকদক্ষ্টাঃ। ফুল্লন্ডৈতে বিকসিতে স্থারিতি মত্তেশোণ্ডোৎ কটক্ষীবাইতি শ্লক্ষং দল্রং কৃশং তদ্বিতি খোড়েখঞ্জস্ত্রিষিতিচামরঃ! গত্যন্তরসম্ভবেনঞোহনিত্যতাস্বীকারোক্রঘন্যইত্যাশস্ক্যাহকুল্লিতি। সিদ্ধমচাসিদ্ধমিত্যর্থঃ। ৩৪৭॥

क्ल्थ्रानीशिका।

দ্যতি। দ্যতিশুভিশ্বামাইরিতি কৃতে মামাঙোল্রান্তিরতোহন্তইতি। তইতি স্বরাদিভেদমনালোচ্যতমাত্রগ্রহণং করুবন্ধিনীতি বিশেষণাৎ প্রকৃতক্রগ্রহণে তস্ত বৈফল্যাচ্চ। অনুমায়েতি যপান্তরঙ্গবাধেন পূর্বাং নেম্বমনন্তরং যপিতদাদেশন্যায়াৎ করুবন্ধিমাদিদীঙেত্যতোহস্ত পরোক্ত স্থাদিঃ স্থাদিতি
তস্বরূপাভাবাত্তদভাবঃ। অনন্তরং মধ্যেহপবাদইতিন্যায়াৎ স্বিশ্বিরূপি ভূতস্বাচ্চকিতিহলীতি সম্পোদিদীঙেত্যাত্বমিতিপ্রাঞ্চঃ। যন্বাদ্ফান্তমিদং তথাহি ক্রিদাতিশ্রতীস্বস্তমাদিদীঙেত্যাত্বে এতৎদিদ্ধোব্যাবৃত্তিরফলেতি
দৃষ্টান্তেতু যথাতেপদাভাবেহপ্যেতৎদিদ্ধিস্তথাসতি তান্যান্মিন্ দীবরী স্থাবরীত্যাদ্যদিদ্ধিরিত্বাপত্তেঃ। তর্হ্যস্ত
দশনমকলমিত্যপি ন বাচ্যমনবস্থাপত্তিনির্তেঃ। মতান্তরং মাদিদীঙাদি সূত্রেহন্তুসন্ধেরং। ৩৪৮॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

দ্যতীতি। দোঅবথগুনেষোহস্ত কর্মাণিষ্ঠাগতিনিরক্তো মামানে মাঙ্ মানে মেঙ্ প্রণিদানে এষা-মস্তইঃ স্থাৎ কন্থবন্ধিনিতে পরেইত্যর্থঃ। দীয়তেহস্মাদোদিতঃ দ্যতি স্মেতি দিত্বান্ দানং দিতিঃ ক্তিঃ স্ত্রিয়ামিতি ক্তিঃ দ্যতীতি দিত্বাকর্ত্ত্রিক্যে ইত্যাদিনাক্তা সর্বতাকারস্থ ইঃ। এবমন্যত্রাপিজ্ঞেয়ং। ছাশোস্ত্রা। আকারইঃ স্যাৎ তেকস্বন্ধেপরে। ছোছিতঃ ছিতবান্ ছিতিঃ ছিত্বা শোশিতঃ শিতবান্ বাছাতঃ ছাতবান্। ৩৪১॥

ধাঞোহিঃ স্যাং। কিতিতকারে পরে। নিহিতঃ নিহিতবান্ বিহিতঃ হিত্বা। ধাঞঃ কিং ধেট্ ধীতং ধীত্বা। ৩৫০॥

এষাং কিষিতি। দ্যত্যাদীনাং কিষিত্যর্থঃ। গীতিরিতি। কৈ গৈশব্দে ভাবেক্তিঃ কিতিহলিমাহাগি-ভ্যাদিনা আকারশু ঈকারঃ। তেকিমিতি। ক্সুবন্ধিনীতি উক্তেতেইত্যসুক্তে জ্বাম্থানে যপি তদাদেশ-ন্যায়েন যপঃ ক্সুবন্ধত্ব স্বীকারাৎ অত্রাপিইঃ স্থাদিত্যর্থঃ। নচৈবমসুমায়েতি ব্যার্ভিরফলামাদি দীঙ্রা-দ্যন্ত আস্যাৎ যপিপরে ইত্যনেন ইবাধাদিতিবাচ্যং কিতিহলীতীবাধেনৈব তম্ম চরিতার্থত্বাৎ। নমু তর্হি-মাদিদীঙাদ্যেতি সূত্রেমাদিগ্রহণং ব্যর্থমিতিসভাষ্ উভয়োঃ কৃৎসূত্রত্বেন তম্ম যপিবিশেষত্বাদন্যান্তগ্রহণেন বিশেষত্বান্ত্রলাবলতয়া পক্ষে অনুমায়েতি পক্ষে অনুমীয়েতিস্থাদতোন্তইতি গৃহীতমিতিভাবঃ। অবদাত-ব্যমিতাত্র তব্যঃ। ৩৪৮॥

क्रथमीणका।

ছা। ছোছেদনে শোতনৃকরণে অনয়োরন্ত এচামন্তইঃ স্থাদ্বা। তুশব্দাৎ সম্ পূর্ববস্ত শোনিত্যং সংশিতইতি বজ্ঞঃ। ৩৪৯॥

গু ঢপ্রকাশিক। ।

ছাশোরিতি। ওসি অঘুট্ স্বরেষু ধাতৃনামালোপঃ তুগ্রহণমন্তবিকল্পয়োরসুরতি বারণার্থং। ছিতঃ শিত ইত্যুভত্র কর্ম্মণিক্তঃ সকর্মক ত্বাৎ ছিতিরিত্যত্রভাবে ক্তিঃ স্ত্রিয়ামিতিক্তিঃ। ৩৪৯॥

क्र॰ श्रमी शिका।

ধাঞা। দম্বরে দম্বরইতি ন্যায়াদন্ত প্রদঙ্গাচ্চ হিরিদন্তঃ। নিহিতঃ অর্পিতঃ প্রতিপাদিত-ইত্যর্থোহিত্বা ধ্রত্বেত্যর্থঃ। যদ্যপি ধাতোরনেকার্থত্বাৎ হিনোতেরপীদংসিদ্ধাতি তথাপি ধাঞোহপররূপ-নিরাসার্থমিদং। ৩৫০॥

পুঢপ্রকাশিকা।

ধাঞাইতি। তুধাঞ্ ধারণপোষণয়োঃ অশুহি আদেশঃ শ্বাৎ কমুবন্ধেতেপরে। নচ ধাঞঃ পরঃ শ্বাদিতি বাচ্যম্ আদেশপ্রস্তাবে আগমানবকাশাৎ। তনু তর্হিধাঞােহস্তাহিংশ্বাদিতি কথমান্ত্রতি সজ্যং সম্বরাদেশশ্ব সম্বরবর্ণস্থানীয়ত্বাৎ। বস্তুতস্তু পূর্বসূত্রেভু গ্রহণাৎ বাস্তানুরন্তের্বারিতত্বাৎ তচ্চপ্রাণেবাক্তং। নিহিতঃ বিহিত ইত্যুভয়ত্র কর্মণিক্তঃ। হিছেতি। ক্রাপ্রত্যায়ঃ। ধীতমিতি। ধেট্ পানে ধীয়তে স্মৈতৎ ধীতং কর্মণিক্তঃ এচাং পাঠস্থিতাস্তানামিত্যেকারস্বাদ্ধে কিতিহলীত্যাদিনা আকারশ্ব স্কঃ পীত-মিত্যর্থঃ। ধীত্বা পীত্রতর্থঃ। ৩৫০॥

অধেড্দাদং। তেকিতিপরে। দাঙ্ দাণ্ দেঙাং। প্রদত্তবান্। দতঃ দত্তিঃ দত্ত্বা। দাসংজ্ঞকস্যকিষ্ অবদাতঃ পটঃ। অধেডিতিকিংধীতঃ ধীতবান্। ৩৫১॥

প্রাদিষরাদ্ধতে। দোলুক্তং প্রাগদীর্ঘশ্চনান্ত্যপি। আতং ধনং প্রাত্তং নীত্তং পরীত্তং পরীক্তবান পরীত্তিঃ। প্রাদিষরাংকিং সন্দত্তং ভবদত্তং। নভবত্যপি অবদত্তং বিদওঞ্চ প্রদত্তস্থাদিকর্মণি। স্থদত্তথন্থ নিদত্তং প্রত্মিত্যপি। ৩৫২॥

क्ट्थमीशिका।

অধেট্। ধেত্ভিন্নদাসংজ্ঞকস্থাঞোহিরিতি বিশেষান্ত্রাতত্বাদ্ধাঞ্ভিন্নস্ত তেন দাঞ্দাণ্দেঙাং দৎস্থাৎনদাপ্দৈপোস্তয়োর্দ্দাসংজ্ঞাভাবাৎ দভোদলুগিভিজ্ঞাপনাৎ দদিতিতান্তঃ। দান্তেদোধোনিষ্ঠানত্বং ধাস্তেচৈবধকারতা। থাস্তেচাতিক্রমেদোষস্তশ্মাত্রান্তোনত্ব্যতীতিপ্রাঞ্চঃ। অবদাতমিতি। দৈপ্ শোধনে। ৩৫১॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

আধেডিতি। ধেট্পানেএতদ্বিদ্ধান্ত কেবাদংস্কাৎ করুবদ্ধেতেপরে। দাঞিতি। যদ্যপিড়্ধাঞ্ ধারণপোষণয়োরিত্যস্ত দোঅবথগুনেইত্যস্তচ দাসংক্ষকত্বেন গ্রহণসম্ভবস্তথাপিধাঞোহিস্তাদিতি ধাঞো-বিশেষাদ্রাতত্বাৎদ্যতিস্ততীত্যাদিনা দোধাতোরস্তস্ত ইত্ববিধানান্নতয়োর্গ্রহণমিত্যালোচ্যহাদাঞ্দাণ্ দেঙামিতি। দাপ্ছেদনেদৈপ্শোধনেবা অবদাতঃ ছিন্নঃ শোধিতোবেতিদর্থঃ। ধীতইত্যাদি। পীতঃ পীতবানিত্যথোঁ। ৩৫১॥

कृश्भृहोशिका।

প্রাদি। আদিউন্সদতোদোলুক্সম্বরদকারোলুপ্যমানস্থতন্ত প্রাগ্দীর্ঘশ্চযোগপদ্যংকাচিৎকম্বার্থক তেন প্রত্তমিত্যপীতি। যদানযোগপদ্যং নাস্ত্যপীতিদ্বয়োর্মিষেধঃ তেন প্রদত্তমিতি দোলুক্নাস্ত্যপি। আত্মিতি। গৃহীতমিত্যর্থঃ। আঙ্পুর্কোদাসমাখ্যাতোগ্রহণেভাষণেহপিচেতি। প্রতং প্রদত্তং পরীক্তং পরিদত্তমিত্যর্থঃ। সন্দত্তমিতিপ্রাদিব্যাবৃত্তিঃ। নভবত্যপীত্যপের্কহুলার্থক্রেনাদিকর্মণিক্তে অবাহ্যপদর্গে ভ্যোনভবতীতিভট্টঃ। প্রদত্তত্ত্বাদিকর্মণীতিবহবঃ। ৩৫২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

প্রাদীতি। দইতিপ্রথমান্তঃ। লুগিতি। লুন্চ্ অপয়নেলুচ্যেতাসাবিতি কর্মনিকিপ্অগুণেহস্তাব্দ্ধনাদীত্যাদিনানলোপঃ দিলোপেচজঝাং গইতিচস্থগত্বে অন্তেত্তীয়প্রথমোধ্টামিতিগস্তকঃ। তক্ষলুপ্যমানস্থপ্রাগ্দীর্ঘন্তংপ্রাগ্দীর্ঘন্তংপ্রাগ্দীর্ঘন্তংপ্রাগ্দীর্ঘন্তংপ্রাগ্দীর্ঘন্তংপ্রাগ্দীর্ঘন্তন ভবত্যপি। নাস্ত্যপীতিকাচিৎকত্বার্থং তেন নবাগ্রহণেনদিদ্ধিঃ। আত্মিতি। আঙ্পুর্বেদাঞঃ কেদাঞোদদাদেশেদোলুক্ আকারস্থদীর্ঘন্তনার্ঘনির্ঘন্ত। প্রতিমিতি। কর্মনিকেদোলুক্পুর্বস্থপ্রশক্ষাকারস্থদীর্ঘন্ত। নীত্রমিতিনিপুর্বস্থপরীক্তইতি পরিপুর্বস্থা। ভবদত্তইতি। ভবেনদতঃ ভবেদত্তইতিবাবিগ্রহঃ। অপের্বাহ্রলার্থন্থ আদিকর্মণ্যেরপ্রদন্তং দলুক্তৎপ্রাগ্দীর্ঘাভাবঃ। প্রত্মিত্যপীত্যক্ত দস্থপুক্ নপ্রাগ্দীর্ঘাভাবঃ। প্রত্মিত্যপীত্যক্ত দস্থপুক্ নপ্রাগ্দীর্ঘাভাবঃ। এত্মিত্যপীত্যক্ত দস্পপুক্ নপ্রাগ্দীর্ঘাভাবঃ। এত্মিত্যপীত্যক্ত দস্থপুক্

চর্ফলোশ্চুর্ ফুলোস্যাতাং। তেকিতি চূর্ত্তিঃ ক্তোনেট্ শাখীপ্রফুল্তবান্। ক্রিফলাপ্রফুল্তঃ সংফুল্তিঃ। তেকিং চরিতং ফল্নিম্পত্তৌফলিতং। ৩৫৩॥

অদোজি ্ধিঃ স্যাদ্যপিচ। তেকি তিপরতশ্চ। জগ্ধমন্ধং প্রজ্ম্যাচ। ব্রজ্ম্বান্
জি ্ধিঃ। জামে নিদ্ধেই স্তান্যপিচেতি যত্নচাতে। জ্ঞাপরত্য স্তরাঙ্গাণাং
যপাভবতি বাধনং। তেন প্রহায় পুধায় প্রশাস্য প্রদীব্যেত্যাদে নিট্
হিত্বাদিকার্য্যং। কথমন্নম্ অনন্নেদইতি জ্ঞাপকান্নাদে জি ্ধিঃ। ৩৫৪॥

क्थ्थिमीलिका।

চর্। ঞিফলাবিসরণে। ফুল্তিরিতি। ঘোষেতোচৈতিনেট্। অকুচ্চ র্যোরিতিচুর্মাত্রনিষেধা দগুণেহলীতিনদার্যঃ। চর্চংচুর্ত্তঃ অগুণেহলীতিনঞােহনিত্যস্থাদীর্ঘইত্যাখ্যাতেস্বয়মুক্তং। কেচিভুচুর্ধাতুং নিষিধ্যঅগুণেহলীতিনঞােহনিত্যস্থাৎ গুণিহল্যপিচংচুর্ত্তীত্যাখ্যাত্মাখ্যায়চুর্ত্তিরিত্যত্তদীর্ঘয়ন্তি কলা-পানুসারেণ। ক্তেচর্সেট্ চুর্ত্তিরিতিভুচুরীদাহেইতত্রসিদ্ধমিতিবজ্ঞঃ। প্রফুলইত্যাদমুবদ্ধস্বামেট্। ৩৫৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

চরিতি।চর্গতিভক্ষণেঞিফলাবিসরণে এতয়োশ্চুর্ফুলাদেশোভবতস্তে। চুর্ভিরিতি। অকুর্চুর্য্যো-রিতিনিষেধানদীর্যা। চুর্ভিরিতিদীর্যপাঠেনঞোনিতাত্বাদীর্যা। চরিতমিতি। ৠদস্তর্শ্রিঞ্বর্ণাদিতি সূত্রেণানিড্বিধানাচ্চর্ধাত্বা ক্তেসেট্। ফলিতমিতি। ফল্নিম্পতাবিত্যস্তদেট্রাদিট্। ফুল্তিঃ শাখী প্রফুল্তবানিত্যস্তংছন্দঃ। ৩৫৩॥

क्९ थ्रमोशिका।

আদো। জগ্ধিরিতিব্যঞ্জনাদিষ্টত্বাদেকোন্থেকইতি স্থায়াচ্চব্যঞ্জনাস্তাদেশঃ সাম্প্রদায়িকইঃ। অদ্ভক্ষনেহনিট্। জগ্ধমিতি। ক্তেজগ্ধাদেশেঘঢ়ধভতইতি তম্ভধত্বেতুর্য্যেমুপ্ত্যরিতি তৃতীয়ত্বেসবর্ণেধুটীতি এবং ক্রিপ্রজন্ধ্যক্তবস্তোজগ্ধবান্কোজিরিতি। ক্রিতেকিতীতি দিদ্বেৎপ্যারস্তো-মধ্যধুটোলোপঃ। জ্ঞাপনায়েত্যাহবররুচিপদ্যেনজগ্ধাবিতি। প্রকৃত্যাগ্রিতমন্তরঙ্গং প্রত্যয়াগ্রিতং বহিরঙ্গম্ অন্তরঙ্গবহিরঙ্গয়ো রম্ভরঙ্গং বলবানিতি আয়াৎ জধ্বের ন্তরঙ্গত্বেন যপাদেশাৎ প্রাকৃত্তিতি কিতাতি জগ্নোদিদ্বেহপি যপিচেত্যুদ্ধতং যহুচ্যতেতৎক র্বপান্যেযামন্তরঙ্গকার্য্যাণাং বাধনং জ্ঞাপয়তি অন্তরঙ্গেত্বেপ্যাত্মনঃ প্রাথমিকীমবস্থামানেদয়-তীত্যর্থঃ ধাতোরূপদেশাবস্থায়ামেবভবতীতিতাৎপর্য্যং। উক্তঞ্চদদ্ধেসূত্রারস্তোনিত্যায়নিয়মায়জ্ঞাপনায়-বেতি পূর্ব্বসিদ্ধস্থিতিচ এতচ্চনিমিত্তাপায়ন্তায়ানিত্যতয়োক্তং তেনচতথোৎপত্তেঃ। ষষ্ঠীস্থাদিত্যনভিহ্তিকর্ত্তরিবাহতীয়া। অন্তরঙ্গাণামিতি কর্ম্মণিনিত্যংষ্ঠী। তেন যপান্তরঙ্গকার্য্যবাধেন নেট্হিস্বাদিকার্য্যমিত্যম্বরঃ। তদ্যথাপ্রহায়েতিজ্বিহাকশ্চেতিনেট্যপিমাদিদিঙেত্যাত্বকরণান্নকিতিহলীতীত্বং। মতান্তরং মাদিদীঙেতিসূত্রেউক্তং। ,প্রধায়েতি নধাঞোহিঃ। আদিনাপ্রদিব্যেতিনোঠ প্রশম্যেতি নন্ম্যদ্যেবংক্তে অন্নমিত্যঙ্গরঙ্গবাধেকিং জ্ঞাপকমিত্যাহপ্রাগুক্তসূত্রজ্ঞাপনাদেব নোপধাদীর্ঘইত্যাদি। কাপিক্তেনাদৌজগ্নিরিতার্থঃ। ৩৫৪।

वस्त्र निविष्किष्ठोर न तार्रिकारिक यस्त्र । अयार न तर्रास्कि का वर्ष পরে। প্রবত্য প্রগত্য ষণু প্রসত্য ক্ষণু কিণু হিং সায়াং প্রক্ষত্য প্রক্ষিত্য তৃণু প্রভৃত্য পূহত্য অবমত্য বামস্য তকারঃ প্রগত্য প্রগম্য নিযত্য নিযম্য রম্-নমোরেবং। আখ্যাতনিষিদ্ধেটাং গ্রহণাৎ প্রশম্য। ৩৫৫॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

অদইতি। অদ্ভক্ষণেঅদিতুদীত্যাদিনানেট্। প্রজগ্ধাপ্রজগ্ধ্যপ্রাদিসমাসেক্ত্রোযপ্। প্রহায়েতি। নচত্রশ্চেরিট্ব্রিহাকশ্চেত্যনেনইটিমাদিদীঙেত্যাদিনাইকারস্থ আকারেপ্রহায়েতিসিদ্ধ্যতীতিবাচ্যং সতীটি করণদামর্থ্যাত্তরাশাসম্ভবাৎ। নচযপিবিষয়েনইট্ তেনপ্রহায়েতিসিদ্ধ্যতীতি বাচ্যং তৎসূত্রস্থ বিশেষত্বে-নাগমস্য বলবত্ত্বনচক্ত্রিইটোতুর্মিবারাৎ। ননুযদ্যন্তরঙ্গত্বেন জগ্ধাদেশস্য বলবত্ত্বং তর্হি অন্নমিত্যত্রকথং নজশ্ধাদেশইত্যাহকথমিতি। অন্মেহদঃ কিপ্ ইতিপ্রাগুক্তসূত্রজ্ঞাপকাৎক্তেনাদোজ্গ্নিরিত্যর্থঃ। অন্তথা অন্নমিতি প্রয়োগোনস্থাদিতিভাবঃ। অমরকোষেহপি ভিস্মান্ত্রীভক্তমশ্বোহন্নমোদনোহন্ত্রীসদীদিবি-রিতি। ৩৫৪॥

क्र थ्रमी शिका।

বন্। বন্তনাদিশ্চ নিষিদ্ধেটশ্চেতি দ্বন্ধঃ। প্ৰানুর্তনিমিত্রদ্ধন্নাসায় তয়োশ্চার্পক্সনা-ভঙ্গায় এষাং নণয়োস্তোয়পীতি বিবৃতং। বনুযাচনে বন্ সম্ভক্তো বা প্রবত্য তনুবিস্তারে প্রতত্য। মতা-ন্তব্যে তনাদিত্বেহপি বনঃ পৃথগুপাদানং নিত্যার্থং তেন তনাদেঃ কাপি ন ভবত্যপি তেন প্রতন্তেতি কেচিৎ। তৃণু অদনে প্রতৃত্য ষণুক্ষণুতৃণবঃ টবর্গ পঞ্চমান্তাঃ। প্রহত্যেতি। হনাদয়োমভাতি হন্তীত্যা-যত্তু আরক্ষমগ্রমবমন্যশৃণিং দিতাগ্রমিতিমাঘেচতুর্দশীদানবমন্যমানিনীতি নৈষধেচনত-খ্যাত নিষিদ্ধেটঃ। ইতি তস্তাপিতনাদি দেট্ মনুনাসম্বৃত্তিঃ। অবমত্যেতি পাঠে মন্ততিৰ্ম্মননীয়ঃ। আখ্যাতেতি। তনা-দেরুদকুষক্ষত্বেন নিষ্ঠায়াং নিষিদ্ধেটো হপুলাদানা নিষিদ্ধেটা মিত্যাখ্যাতনিষিদ্ধেটাং গ্রহণমিত্যাশয়ঃ। শমুশান্তো উদকুবদ্ধত্বেনজ্বিবেট্যামিষ্ঠায়াং নিষিদ্ধেট্ নাখ্যাতনিষিদ্ধেট্ নাতোম-প্রশম্যেতি। স্থাতঃ। ৩৫৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

বস্তুনাদীতি। তুশব্দোবামুর্ত্তিবারকঃ। ভিন্ন ক্রমেণমস্ত্রিতিগ্রহণাম্নবা শব্দঃ পূর্বব্রাম্বেতি। যণুদানে ধাত্বাদি ষস্ত সঃ তদ্যুজোণস্থনঃ তৃণুপ্যান্তস্তনাদিঃ। প্রহত্যেত্যাদি। হন্ হিংসাগত্যোঃ মন্জানে গম্৯ গতো যমুউপরমেরমুক্রীড়ায়াং ণম্ প্রহ্মত্বেশব্দেচ। অশুৎ কুৎপ্রদীপিকায়া মৃক্তমনুসর্ত্তব্যম্। ৩৫৫॥

এষামতিশ্বুট্যগুণেলোপঃ। এষাঃ নমণাং লোপঃ স্যাৎ। তত্বাততির্গতিঃ। গতবান্গত্বা যত্বাযতঃ নতঃ হতঃ হতবান্ক্লণুক্ষতঃ ক্ষত্বা বনতিস্তাবনিট্ বননং বতিঃ। বস্তুনাদিনিষিদ্ধেটামিত্যেবশাস্তঃ শান্তবান্। অতিগিতিকিং বন্যাদ্ধন্তিঃ তন্তিঃ। ধুটিকিং ক্ষণিত্বা তনিত্বা। অগুণেকিং গন্তব্যং। ৩৫৬॥

খাজাসাঃ খন্জনিসনাং। অতিগ্লুট্যগুণেপরে। খাতং খাতৃাজাতং জাতিঃ সাতং সাতিঃ। অতিগ্লুটাত্যেবখনিতাসনিত্বা তিকিখন্তিঃ। ৩৫৭॥

क्र थमी शिका।

এষাং। এষামিত্যাবৃত্ত্যোভয়থাস্বয়ঃ অবিনিগমাৎযথা এষাং বন্ তনাদি নিষিদ্ধেটাং সম্বন্ধিনা-মেষাং নমণাং লোপইত্যর্থঃ। তত্ত্বত্যাদোনোপধাদীর্ঘইতি বক্ষ্যতি। ভুবাদিরপ্যয়মিতিবনতিরিভ্যুক্তং ঘোষেতোচেতি তাবনিডিত্যর্থঃ। ৩৫৬॥

गृष्धकानिका।

এবামিতি। আগুণেতিগ্ভিন্ন ধূটিপরে এবাং বন্ তনাদি নিষিদ্ধেটাং সম্বন্ধিনাং নমণাং লোপঃ স্থাদিত্যর্থঃ। তত্বেত্যাদি। তনুবিস্তারে তথ্বাক্তোতিতঃ গম্৯গতো গতিঃ ক্তেগতঃ ক্তবন্তোগতবান্ ক্তিগুলা বনুবাচনে উদবনুবন্ধবাৎ ক্তিবেট্বথাযমুউপরমেযথা গম্ প্রস্থাদেন চণাদিপ্থানাদিঃ নতঃ হন্ হিংসাগত্যাঃ হতঃ ক্ষণুহিংসায়াং ক্ষতঃ। বনতিরিতি। বন্ সম্বক্তো ভুবাদি পরিশ্বেপদী অয়ং সেট্তো অনিট্ বিতিঃ। শান্তইত্যাদি। শমুউপশমেক্তে অঃ পঞ্মোপধাদীর্যঃ। বন্ধিরিতি। তিক্ স্থান্ধামন্যাশিযিক্তিতি তিক্ এবং তন্তিঃ। ক্ষণিথেতি। উদনুবন্ধত্বেন ক্তিগুলাং পক্ষেইট্ এবং তনিত্বা। গন্তব্যানিতি। ভাবেতব্যঃ কর্মাণিবা তব্যতকারস্থ গুণিপ্থান্ধনকারলোপঃ। ৩৫৬॥

क्९श्रमीशिका।

খাজা। সমানবিভক্তিকত্বাদযথাক্রমমাদেশাঃ ঘোষেতো চেত্যনিট্। খনিত্বেতি। জুপুঙ্ ক্লিশামিতি। ক্লি বেট্ থকু সন্বেটো জনীসেট্ ক্লো.নিষ্ঠায়ান্ত্রনিটঃ সর্বেব। সাতিদ্দানং। ৩৫৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

খেতি। খনু অবদারণে জনীপ্রাত্র্ভাবে ষণুদানে ধান্বাদেঃ যস্ত সং তদ্যুজোণস্তনঃ এষাং ক্রমাৎ থাজাসা আদেশাঃ স্তঃ। থনু সন্জ্রিবটো জনীঈকারান্ববদ্ধঃ অতঃ সর্বেনিষ্ঠায়ামনিটঃ। পুকরিণ্যাস্ত থাতং স্থাদিত্যমরঃ। জাতিশ্ছন্দি সামান্যেমালত্যাং গোত্রজন্মনোঃ। জাতির্জ্জাতিফলেধাত্যাং চুল্লীকম্পিল্লয়োরপীতি বিশ্বঃ। সাতির্দানাবসানয়োরিত্যমরঃ। অবসানপক্ষেয়োহস্তকর্মণি এষামান্তেরপং। ৩৫৭॥

সনঃ সাসচবাতিকি। সন্মতাৎসাতিঃ বাসন্তিঃ। ৩৫৮॥

যমিমন্তন্গমাং ক্লোভঃ স্যাৎ। সংযৎ বিমৎ প্রগৎ। শান্ত্রগৎ পূরীতৎ मीर्घ= । ७৫৯॥

অঃ পঞ্চোপধাদীর্ঘঃ। কৌচ। অতিগুট্যগুণেচ পরতঃ। প্রশান্ প্রতান্ প্ৰদান্ পুশান্ভ্যাং ধুটিশান্তঃ শান্তিঃ ভ্ৰান্তঃ ভান্তা কান্তং। অঃ কিং তিম্ স্তিম্ আর্দ্রীভাবে প্রতিন্। ধুট্যগুণেকিং বিভাম্যগন্তা। বনাদীনাং বিশেষ-বিধিত্বাৎ প্ৰাক্ পঞ্চমলোপেগত ইত্যাদৌ ন দীৰ্ঘঃ। ৩৬০॥

क्र थर्मा शिका।

যকুলানে সাসাবাদেশোবাভবতঃ পক্ষে সন্ স্থিতিঃ তিক্ স্যাদিতিতিক্ ঘোষেতোচেতি त्निष्ठे । ७৫৮॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

সনইতি। ষণুদানে ইত্যাস্য স্থানে। সচ বেতি ক্তে সচ প্রাগুক্ত সাইত্যাদেশ ইত্যান্বয়াপত্তেঃ দাইতি গৃহীতং। অত্রচকার উক্ত সমুচ্চায়কঃ। সনুতাদিতি। তুহোরাশিষিতাৎসবেতি স্বাদিতনা-দ্যোস্ত স্থানেতাদাদেশঃ। উভয়াভাবপক্ষে দন্তিঃ তিকিনলোপোপধাদীর্ঘাপ্রাঃ। ৩৫৮॥

क्र॰ श्रमी शिका।

যমিঃ। যমুউপপরমে দিবাদিঃ তনুবিস্তারে তনাদিঃ অনয়োরন্তরপাঠাৎ মন্জ্ঞানে মনুবোধনেইতি ছয়োগ্রহণমিতি বজ্রঃ। এষাং স্লোঃ তঃ স্যাৎ কিপি। একযোগেতি ছয়োর্বিকল্পয়োরিতি ন্যায়াভ্যাং নানয়োক্তানুবুত্তিঃ। সংযচ্ছতীতি সংযৎ। পুরীতদিতি। কিবত্তেয়্নহাদিম্বিতি দীর্ঘঃ। ৩৫৯॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

যমীতি। প্রদঙ্গাদেতে । সংযচ্ছতি বিমনতি বিমন্ততিবা প্রগচ্ছতি পুরিতনোতীতি সর্ববিধাতোঃ কিপু স্যাদনিয়মাদিতি কিপ্। পুরীতদিতি সপ্তম্যলুখাকৃদন্তেষিত্যাদিনা সপ্তম্যলুক্। দীর্ঘশ্চেতি-চকারেণ সপ্তম্যালুক্ সমুষ্ঠায়তে। অত্রবিকল্পন্নরোশ্মধ্যবর্ত্তিম্বেন নিত্যতা। ৩৫৯॥

কৃৎ প্রদীপিকা। অঃপঞ্চমো। উপাস্তউপধেতি বচনাদন্তপঞ্চোপধাঅঃ দীর্ঘঃ স্থাৎ কোচ। অতিশ্বুট্যগুণইতি শমুশান্তৌ কিপিদীর্ঘোমোনত্বং প্রশান্লাক্ষণিকত্বান্ন ন লোপঃ এবং তমুপ্রতান্ কিতিসম্বন্ধভয়াদিরতং। দমুপ্রদান্। ধুটিকিং বিভ্রম্যেতি। যপান্তরঙ্গবাধেনজ্বাবস্থায়াং নদীর্ঘঃ যপাদেশেধুডভাবঃ। অগুণেকিং নমুস্বরাদেশবিধেঃ সর্বতোবলিত্বাদকার্ন্তরিদিতিবলাতইত্যাদৌকথং ন দীর্ঘইত্যতত্থাহ্ব-গন্তেতি ভূচ। माभाग्यवित्भवराक्तित्भवविधिर्व्यवनानिजिन्नाग्रयाज्ञात्रक्षिवनीग्रयानिजार्थः। त्नाभण-নাদীনামিতি। স্বন্ধবিষয়ত্বেন প্রকৃতিলোপত্বেনচবিশেষত্বং দৃষ্টান্তেতুবলীলোপঃ প্রত্যয়স্থস্বরাদেশস্ততোবলাতি স্থায়ান্তস্থৈ-ববলীয়স্থমিত্যদোষঃ। ৩৬০॥

नवाञ्चिक्कमः। मीर्यः। काञ्चा कञ्चा १०७১॥

মোনত্বং স্যাৎ কৌবনোশ্চনাদনর্পোনচেন্তবেং। নাংপশ্চাম্বদিপ্রত্যয়যম্বরৌ নভবিষ্য ভইত্যর্থং। প্রতান্ প্রশান্ভ্যাং জগম্বান্ সর্বধাতোর্মন্ গন্ধা। অর্পান্যাবিছিতৌতু প্রশামে প্রশামঃ জগ্মুষঃ জগ্মুষী প্রশামিষ্টিতি প্রশাম্যতি প্রশাম্যং প্রশামীয়ং। অপ্রত্যয়েতু প্রশানত্রেতি। ৩৬২॥

गृष्यकानिका।

অইতি। অঃ পঞ্চোপধাইত্যনয়েঃ সামানাধিকরণ্যেনাম্বয়ঃ তেন পঞ্চমোপধাসরপঅঃ দীর্ঘঃ স্থাৎ কোচচকারাদতিয়ুটাগুণেচপরতঃ। প্রশানিত্যাদি। শমুউপশমে তমু আকাজ্জায়াং দমু উপশমে দিবাদিপরশৈপদিনঃ ভ্রমুঅনবস্থানেভূপ ক্ষমুষ্মহনে ভূ আ ক্ষমুমহনেদিপউভয়োঃ ক্ষান্তং। ধুটাগুণেকি-মিতি। ধুটিকিম্ অগুণেকিমিত্যর্থঃ ধুটিকিমস্থবিভ্রম্যেতি অগুণেকিমিত্যস্থগন্তেতি ব্যাস্তিস্থানং। বনাদীনামিতি। আদিনাতনাদিনিধিদ্ধেটামিত্যেষাং গ্রহণং। বিশেষবিধিস্বাৎ এখামতি য়ুটাগুণেলোপ-ইত্যেসবিধেস্বাদিত্যর্থঃ। ৩৬০॥

क्र॰ श्रमी शिका।

নবা। তুশব্দোভেদে তেন পূর্ব্বপ্রাপ্তোবিকল্পঃ সাচধুডবস্থায়াং তুশব্দাভাবেবিশেষকল্পনীয়াতি-ক্রম্যেত্যাদাবপিতদাদেশাদার্ঘঃ স্থাদিতি। ৩৬১॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

নবেতি। জ্বীতি। অক্সন্তকচিদিত্যালোপ:। জ্বুপাদবিক্ষেপে। জ্বি জ্বাপ্রতায়েপরে। তুশন্দোবিকল্লানুবর্ত্তনবারক:। ননুপ্রক্রম্যেত্যাদোকথং ন দীর্যস্তদাদেশেতদ্বদিতি আয়েনযপ: জ্বাতুল্যদ্বাদিতি মৈবং কিঞ্চিন্নং বতেরর্থ ইতি বচনাং ন্যুনতাচতদ্বিমন্বেদতি তদগতধর্মবত্তাততশ্চযপ: জ্বাতুল্যবেনজ্বাভিন্নবেনজ্বাগতাগুণহাদিধর্মবন্ধান্যবিদার্ঘইতি পর্যবেদিতার্থঃ। জ্বাম্যতীতি জ্বাত্বাত্মং পঞ্চমোপধাদীর্যঃ মোনহঞ্চ। অত্রবাপাঠোনযুক্তঃ একাক্ষরহাত্যানুষ্টুপ্ছন্দোভঙ্গাপতেঃ। বহুষুপুস্তকেমন্তিচেত্দোএকাক্ষরহানপাদেনোপলক্ষিতং গাথাছন্দোন্তর্গত্যব্যহন্ত্রং। ৩৬১॥

क्र श्रमी शिका।

মোন। কৌবনোশ্চপরেরুমোনত্বং স্থাৎ। বলীলোপঃ প্রত্যয়স্তেতি স্থায়াৎ কিপঃ পস্থাস্থিতেঃ কাবিত্যক্তং। অতএবস্বয়ং বক্ষ্যতি যবোচেতি। যদিভাব্যাশ্লাৎ পরোঅনর্ণোনভবিষ্যতি কিন্তুর্ণবিরামৌ যদিভবিষ্যতইত্যর্থঃ। ৩৬২॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

মইতি। কোঁকিপিবমোশ্চপরতঃ। অত্রকিপঃ পকুবন্ধংতজ্বা কাবিত্যক্তং ছন্দোকুরোধাৎ।
চেদ্যাদিনাং ভাবিনকারাৎ পরোহনর্ণোহণভিন্নোনভবিষ্যতি তদামোনত্বং স্থাদিত্যর্থঃ। এতেনকাদিষুচ

চ্ছোঃ শৃঠোপঞ্চাধুটিকিপিতৃপ্রায়িকাবিমো। বিছ্প্রচোর্ত্বিশ্বঃ প্রশ্বঃ
বিষ্টাইতিবংদংজ্ঞাপূর্বকত্বার্মসম্প্রমারণং। ধাতৃত্যোমন্ স্যোমারশ্মিঃ
ধুটিপৃষ্টঃ পৃষ্টবান্ পৃষ্টাম্যুতঃ মৃতবান্ মৃত্বাদ্যুতঃ কিপিপথি প্রাট্ পথিপ্রাশে
গোবিট্ গোবিশো অক্ষদ্যঃ। প্রায়িকত্বাৎ কচিরশ্ঠো স্থপাট্ স্প্রাচ্ছে
স্প্রাচ্ছঃ রেরবিরেব তইতি কিপিবলোপঃ বিরেঃ পরিদেরিত্যাদি। ৩৬০॥

পরেষু মোনত্বং স্থাদিতি সূচিতং। নাদনর্গ ইতি বিরুণোতি নাৎপশ্চাদিত্যাদি। মকারাৎ পরস্থ থকারস্থা-প্রস্তু প্রত্যয় যম্বরাবিত্যক্তং। অর্ণবিরামোযদি তিবিয়তইতি কুৎপ্রদীপিকোক্তং চিন্ত্যং বিরামস্থার্ণ ভিন্নত্বাৎ প্রতানিত্যাদেঃ কিপিসিদ্ধত্বাচ্চ। প্রতানিত্যাদি। তম্ প্রতান্ শমুপ্রশান্ গমঃ কন্সো দিছে-ক্রর্গদ্য চবর্গঃ। সর্বধাতোরিতি। মন্ কনিবিত্যাদিনামনিত্যগঃ। প্রশামাবিত্যাদো কিপি উপধাদীর্ঘঃ কিন্তুনর্গে ভবিষ্যতি নমোনত্বং। জগ্মুষ্ইতাাদো কন্সো গম্ বিদ্ত হন্দ্ দৃশ্ বিশান্ত্রতি ইটি জগ্মাদেশে তদ্ধিত্যেত্যাদিনা সেটোবন্সোবস্যা উঃ প্রশাম্যতীত্যত্র যিন্ চানব্যয়মান্তাভ্যাং। প্রশাম্যমিতি। হিতেগ্রান্ত্রবেণিন্তাদ্যঃ। প্রশামীয়মিতিহিতার্থ ঈয়ঃ শেবেচ। অপ্রত্যয়েপ্রত্যয়ম্বভিন্নেপ্রকৃতিস্বরেছ্ত্যর্থঃ। প্রশানত্রত্যত্র অত্যেতি প্রকৃতিস্বরেছ্রের্গেয়ে। ৩৬২॥

क्ल्थनीिशका।

চেছ্নাঃ। পঞ্চমেধুটিচপরতঃ। অত্তৈকস্বমন্ত্রকার্যং দিতীয়ছকারবকীরয়োঃ স্থানেক্রমেণ শ উঠাদেশৌনিত্যং ভবতঃ অধুটিকিপিছ্নোরিমো শুঠো প্রায়িকোন্তঃ কচিমভবতঃ এভচ্চশন্বভিপ্রায়েশ উঠাদেশস্তুজুলাবল্যায়াদ্যবেণিচেতি বৈকল্লিকএবেতিভাবঃ। প্রায়েমরণানশনেমত্যোবাহুল্যভুল্যমোরিতি মেদিনী। কিপোহধুট্বং যোবঃ প্রত্যয়দন্ধিজইত্যক্তত্বাৎ। ঠন্তুবন্ধঃ নূপোঢ়াভাবোঢ়িরিত্যাদো নাবর্ণাদুদোরিত্যযোগব্যবচ্ছেদার্থঃ তদন্তপ্রভাবাদিহধুটাতি সংজ্ঞাপুর্বকার্থং গুণাদিকার্থমা। বিছ্গতে প্রচ্ছজ্ঞাপায়াং বাচি ঘাচি বিচ্ছাতি নঙ্ নির্দ্দিশ্যানস্থাৎ ছরেইনক্যাচ্চন্বিভূত্তছন্বয়শ্রমণ মন্তিস্থাইলি বিজ্ঞঃ। বিশ্বইতিবইতিবদিতি। নাদিস্থিম্বাভ্যামগুণেহপি নিন্তিপ্রাইত্যত্রগ্রহিদ্যেতি সম্প্রায়ণব্যাপ্রার্থিক সংজ্ঞাপুর্বকোবিধিরনিত্যইতি আয়ায়তৎ বর্তমানায়াস্তদিবশোবউইত্যত্রগ্রহিদ্যেতি দম্প্রায়ারণপ্রাপ্রার্থ বিশ্বভার্তি প্রায়ার্যজ্ঞান কর্মান্ত বিশ্বভার্তি ত্রায়ার্যজ্ঞান কর্মান্ত বিশ্বভার্তি। বন্তবন্ধতি নিত্তাকিত লাক্রামান্ত ক্রাম্বার্যমান্তি ব্যক্তঃ। স্থোমেতি। বিবৃত্তম্বস্তানেমনিঘোবেনেট্ অল্লাঞ্জিত্বেনবিশেষদাদান্ত্র্ততোহন্তরঙ্গলাবিশেষদাচাঞ্গুটি অনেকাচইতি যত্ত্বং প্রক্রে প্রক্রমন্ত পরাম্বার্গতি ভট্টঃ পরিদ্য্যমান্যাহিদ ব্যক্তনোপধায়াগ্রণঃ ন কাপ্যপধায়াঃ স্বরান্তস্তেত্যে। স্থোমারশ্রিকিন্তার্গইত্যার রিশ্রঃ পুমান্দী বিত্তা স্থাৎ পক্ষপ্রগ্রহরোরপীতি মেদিনী। সংজ্ঞাশকাৎ দিন্ধইতি প্রাঞ্জঃ। দিবুদ্যতঃ। কিপিবলো-প্রতি। যবোচেত্যনেনেত্যর্থঃ। রের্গতে দের্লেবেনেচেত্যাদেনিনার্চ। ৩৬০।

ব্রিব্যবিজ্বরিত্ররিমবাং দোপধস্যাপিবস্যুউঠ্। ধুটিপঞ্চেকিপিচপরতঃ। ব্ৰজ্যতঃ ব্ৰজ্ঞি জুৰ্জিঃ ভূৰ্জিঃ ভূৰ্ণঃ মবমবিবন্ধনেমূতিঃ মনিব্ৰোমা ওমা জূর্মা তূর্মা মোমা স্প্রিব্যতীতি জাঃ স্রুবৌ স্থাবা জাবা উ উবৌ জাঃ জুবৌ মূঃ भूटवोभूवः। ७७८॥

গৃতপ্রকাশিকা। ছোরিতি। পঞ্চমেধুটিচপরতঃ। ধাতোরন্তছকারবকারয়োঃ স্থানেক্রমাৎ শৃঠোস্থাতাং কিপিতু-ইমো শুঠোপ্রায়িকাবিত্যর্থঃ। ইমাবিতিছন্দোহর্থং উঠিতিঠনুবন্ধাকরণে অবর্ণাদূতঔরিতি সূত্রকরণাবশ্য-কতয়াবিপ্রোঢ়াইত্যাদেভিকারশুঔশ্বাপতিঃ স্থাৎ। বিচ্গতে প্রছম্ভীপ্সায়াং। বিচ্ছতীতি পৃচ্ছতীতি দ্বিছকারযুক্তইতি ন সম্যক্পশ্নইতি যঙ্লুগন্তশ্রপরিপণ্ডী ত্যাদিপ্রয়োগানুপপতে:। চুগাগমেনসিদ্ধং। একছকারান্তপাঠেনোপপত্তোছদ্বয়ান্তপাঠং **নচছত্বেনৈ**ক্যাত্মভুকারস্থাদেশইতিবাচ্যম্ তাদৃশকল্পনস্থান্যায়াখাং গৌরবাচ্চ। অন্তস্থশত্বেনিমিতাপায়ত্বাদপরস্থাপ্যপায়ইতি কল্পনস্তকল্পনমেবধাতু-নির্দেশেযুগপং ছন্বয়ান্তপাঠেনিমিত্তনৈমিত্তিকভাবাভাবাৎ। নকুপ্রশ্নইত্যত্তকথং ন সম্প্রসারণমিত্যতৃত্বাহ বষ্টইতি বদিতি। যথা বষ্টইত্যত্রক্তে গ্রহিজ্যেত্যাদিনা ন সম্প্রদারণং তথাত্রাপিসংজ্ঞাপুর্ব্বকত্বাল্পসম্প্র-তহুক্তং নঞাগমবিনির্দ্দিউদংজ্ঞাপুর্বাত্মনিত্যগাইতি। স্থোমেতি। সারণমিত্যর্থঃ। মন্কনিবিত্যাদিনামনিস্বল্লাঞিতত্বন বিশেষস্বাদ্ঠাদেশেসর্বত্রব্যঞ্জনোপাস্তস্তগুণদর্শনাৎ **শী**ব্যতীতি সাংদৃষ্টিকন্তায়াৎ স্বরোপান্তলঘোর্গণাভাবেক্সন্তাম্ভর্তাদেশস্তরণে ইবর্ণোযমিতীকারস্থাত্বেপরগামিত্বেচ স্যোমনৃশব্দ স্মানান্তানীমিত্যাদিনা উপধাদীর্ঘেসিলোপেবিরামেনোলোপঃ। পৃষ্টইত্যাদি। প্রছ্ধাতোঃ क्लानियुमस्थानात्रात्भुद्रेगुरस्रुह इत्भाः यद्भः । मृत्वहेन्द्रात्मी भूर्ववमृत्रीतन्त्रभाक्षणान्यात्रमिकः । नियुक्ती-ড়ায়ামিত্যস্তদ্যতঃ পূর্ববৎ স্থপুচ্ছতী স্থপাট্ কিকাচ্প্রছীত্যাদিনা কিপ্দীর্ঘোছঃ শঃ সিলোপেন ছহাঞেতি শস্ত জন্তেইতি চম্যটঃ গাংবিচ্ছতীতি গোবিট্ধাতোঃ কিপ্সাদিতি কিপ্ অন্তৎ পূর্ববৎ স্থপ্রাডিত্যত্রছঃ ডঃ ডম্মটঃ। আদিনাতের্ক্রীড়নেসস্তেরিত্যাদি। ৩৬৩॥

क्र श्रमीशिका।

ব্রিবা। ব্রিবুগতিশোষণয়োঃ অবরক্ষণে জ্বর্ অম্রোগে ঞিত্বরাসম্ভ্রমে মব্ মবিবন্ধনেএষাং ধাতুনা-মুপধাদহিতস্থাপিবস্থ স্বরপরবস্থ উঃ। উঠিতানুবর্ত্তনাল্লকে তথাপীহ উগ্রহণং কিপিপ্রায়িকতানিরাদার্থং। নোপধেতিবৎবস্থোপধাগ্রহণেতু জ্ব্জবোর্জকারতকারয়োরতিব্যাপ্তিঃ নধাতৃপধাবস্থেতিদোষঃ স্থাৎ। অবনমৃতিরিত্যাদৌক্তিঃ মনিসোমাওমা অবেশ্মনোহস্তাম্বরাদেলু ক্চেতি নাস্ত্যম্বরাদিলুক্চ। তত্তচাভাবঃ পুস্তকে হস্তিচেৎ অন্তরঙ্গ হাৎপ্রাগূত্বে তদাদেশ যায়ানাদরামমনো হস্ত্যস্বরাদিলোপঃ এমুঘোষেতোচৈতিনেট্ क्षतिजारनेकिश्। ७५8॥

গ্তপ্ৰকাশিকা।

ব্রেব্যবীতি। ব্রিব্ধাভুদিন্ত্যাদিঃ গণদর্পণেতথালিথিতত্বাৎ। সোপধস্থাপিঅপিনাকেবল म্যাপিবস্ত উঠ্। উরিতি কচিৎপাঠ্ন্তদাসুবন্ধংবিনাপাঠঃ। অপের্বহুলার্থত্বাদ্যত্রম্বরাৎপরোবস্তত্ত্রদোপধস্ত

व्यादर्भात्र अवादम्बर् विकार । अवादम्बरः। ०७८॥

অবর্ণাদূঠ তাঃ স্যাৎ। শ্লৌ ধৌ ধৌ বৌ নৃপতির্জ্জনৌঃ। অবর্ণাত্রস্য গ্রহগাৎ জনস্যোতিঃ জনৌতিঃ ধারু ধৌতং বস্ত্রং প্রাবয়তেঃ নাবয়তে ক্ষ অম্বিকরণাদ্য
বিষয়ইলোপে কিপিবস্যোঠ তাঃ প্রোঃ নোঃ। অবর্ণাৎকিং দের্দ্যুং দুয়ো
গিয়ু তিঃ। ৩৬৬॥

যত্তব্যঞ্জনাৎপরোবস্তত্তকেবলস্থ তস্থ উঠিতি পর্য্যবস্থাতি অতঃ স্রিব্যাবিষ্ণবাং কোপধস্থজ্বর্ত্ রোঃ কেবল স্থাত । অত্ত্রযদ্যিবস্থেত্যুক্তে পূর্বস্মাদমুবর্ত্তনাদ্ঠিতিলভাতে তথাপ্যঠিতিএইণং কিপিপ্রায়িকত্বনিরাসার্থং। স্রিবৃদিপ অব্রক্ষণাদিয়ুভূপজ্বরুভূআমব্ভূপপ্রয়োগদৃষ্ট্যা যথাযোগ্যবাচ্যেযুক্তাদয়োবিধেয়াঃ স্রোমাইতি। মনিগুণঃ ওমাইতি। অবের্মনোহস্ত্যস্বরাদেল্লুক্চেতি চকারাৎ লুক্নস্থাচ্চ। উতিঃ স্ত্রীবক্ষণেস্থতাবিতিমেদিনী। স্মৃতিপক্ষেধাত্নামনেকার্থক্সীকারঃ। নিষ্ঠায়ামবিতং। অথ জ্বেজুর্তিরিত্যমরঃ। নিষ্ঠায়াং জ্বিতং। মৃতির্বন্ধনং নিষ্ঠায়াং মবিতং। যত্ত্বদেনদানিতংম্তমিত্যরোক্তং তৎমৃত্বন্ধনেভূবাদাদ্যাত্মনেপদিনোরপং তত্রঋদস্তব্রপ্রিঞ্বর্ণাৎ কমুবন্ধেষ্কনেভ্ভবেদিতিনেট্। ৩৬৪॥

क्ट्थमीशिका।

অবে। অবেঃ পরস্থমন্ প্রত্যয়স্থাকারনয়োলুক্চ। স্বরাদেতিত্যক্তেবিভিন্নপ্রাদিরপশব্দাঘা পরস্থমন্ধাতোরিতিদন্দিহেতেতি প্রত্যয়লাভার্থমন্ত্যগ্রহণং। অবতীতিমনিউঠ্গুণঃ তদাদেশন্যায়াৎণ তৎপরস্থমনোহন্ত্যস্বরাদেল্লোপঃ মদন্ধ্যক্ষরান্তাঃ কৃতোহ্ব্যয়াঃ মঙ্গলইত্যর্থঃ রুট্যাম্বয়ার্থহানিঃ। ওমুপ-ক্রেম। প্রণবেচাভ্যুপগমে চাপাক্বতোচমঙ্গলইতিমেদিনী। ৩৬৫॥

गृष्यकामिका।

অবেরিতি। চকারাল্লুক্নস্যাচ্চ বাহুল্যেনলোপার্থং চকারোগৃহীতোনতুবাশকইতি। ওম্মতে নঙ্গলোবা। ওমেবং পরমং মতেইত্যব্যয়বর্গে। মহেশ্বরঃ শিবঃ। শস্তুরীশঃ পশুপতিঃ শিবঃ শূলী মহেশ্বরইত্যমরঃ। ৩৬৫॥

क्ट्यमोशिका।

অব। অশ্চাদৌবর্ণশ্চেতিপঞ্চাত্রবন্ধিরতকর্মধারয়ইতিবজ্ঞ:। তদ্গুণদম্বিজ্ঞানোবহুব্রীহিরিত্যক্ষে দ্বিদ্ধকন্তাবইত্যপরে। প্লব্গতে ধাবুগতিশুদ্ধোঃ কিপিছেনাঃ শৃচাবিত্যুঠিন্তঃ দদ্ধিঃ প্লোঃ ধোঃ। জনমবতীতি স্রিব্যবীত্যুঠিএবাসুবন্ধংহিত্বান্তঃ পঠিতঃ অতউরোঃ জনোঃ। অবর্ণমাত্রেতি। যদ্যপ্যধিকারা-দ্বাত্বগ্রহণমূচিতং তথাপি স্রিব্যাদেঃ পরত্রবিধানাত্তদ্গ্রহণেপ্রাপ্তেতত্রধাত্ববর্ণভাবাদবর্ণমাত্রগ্রহণমিতিভাবঃ তেন জনৌতিরিতিলিঙ্গাবর্ণাদূঠিন্তঃ। প্রাবয়তেরিত্যাদি। ছ্রন্দ্রপ্রক্ষ্পাত্রগ্রন্থতো। পায়তেরিতি পাঠেপুঞঃ হেত্বিনন্থাৎ কিপিভাবিনীল্লোপেধাত্বস্তলোপেনলাক্ষণিকত্বেহপি। চিনাবেরুপলক্ষণাদিতিস্বোক্ত মুক্ত্যাবদ্যোঠিন্তঃ প্রোনৌরিত্যাদি। দের্দেবনেকিপিবদ্যোত্বেহ্বর্ণপরত্বাভাবাদোঠ তঃ এবং গিরেরতিঃ গির্মুতিঃ। ৩৬৬॥

রেফাৎপরৌ ছবে লোপ্যো। ধূটিপঞ্চমে কৌচ পরতঃ। কুচ্ছা কুর্বিঃ কুর্ণঃ কুর্মা কুঃ কুরৌ মূচ্ছা মূর্ব্তিঃ ধুর্ব্তঃ ধুর্মা মূঃ মূরৌ ধূঃ ধুরৌ। ৩৬৭॥

যবৌচ ব্যঞ্জনেত্বযে। লোপ্যো। কুয়ী ক্লৃতঃ ক্লৃতবান্ ক্ষায়ী ক্ষাতঃ ক্ষাতবান্ কুঃ ক্ষাঃ দিদিবান্ সিসিবান্ চক্ষাবান্। তুশবদাৎ কিপিচবিরেরি-ত্যাদি। ব্যঞ্জনেকিং দেবিতাচক্ষায়ুষী দিবিবুষী। অযেকিং প্রকৃষ্য প্রদীব্য। *। ইতিক্তাদিপ্রকরণং । *। ইতিপ্রাগরত্বমালায়াং কৃৎস্কৃততুর্থোবিন্যাসঃ । *। ৩৬৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

• অবেতি। বর্ণশব্দসাস্বয়ুগাদীর্ঘ প্রাহিত্বেন অআ ইতিবর্ণদ্বয়াদিত্যর্থঃ। জনোরিতি। প্রিন্যতীত্যাদিনা অব্ধাতোঃ সোপধস্য বস্য উঠ তত উঠ ঔঃ। তত্রকেমুচিদূরিতিপাঠোদৃশ্যতে তত্রাসুবন্ধং হিত্বাপঠিত-ইতিকল্পনীয়ং। বস্তুতস্তু তত্রাপুঠইতিপাঠঃ সম্যক্ তথাত্বেইপিসূত্রস্যতৌল্যাৎ পূর্বেরাক্তকল্পনাভাবেলাঘ-বাচ্চ। অবর্ণমাত্রেতি। এতৎপূর্বেং প্রিব্যবাদের ঠ্বিধানাত্তদূঠোইপিপ্রাপ্তোতত্রধাত্বর্ণাভাবাদবর্ণমাত্রগ্রহণমিতিভাবঃ। তেন জনোরিতিলিঙ্গাবর্ণাদপিউঠ ঐঃ। অন্বিকরণাদ্যবিষয়ইতিস্থাবোধার্থমুক্তং। ৩৬৬॥

क्ल्थमीशिका।

রেফা। কুর্ছাকোটিল্যেদীর্ঘবান্ ব্রস্ববানিতিকেচিৎ ঘোষেতোচেত্যনিট্কৃতিঃ ক্রেকৃণঃ কিপিকৃঃ অবিশেষাচ্ছন্বয়স্যলোপঃ নিমিত্তকাপায়েনৈমিত্তিকাপায়োবা। এবং মুচ্ছামোহনকুৎসনয়োঃ ধুব্বীগতো প্রেবলোপঃ লাক্ষণিকত্বেহপিক্রপধাগুণেহলীতিদীর্ঘঃ ধুব্বীযুচ্ছীমদিবর্জমিতিননঃ কিপিধাত্বিরুরাবী রূরো। ৩৬৭॥

গৃত্পকাশিকা।

রেফাদিতি। কৃত্তিমূতীতাত্তিঃ কূর্ণঃ ধূর্ত্তইতাত্ততঃ কূর্মাধ্র্মেতাত্তমন্ অন্যত্তিকপ্। অন্যৎ কৃপ্রদীপিকায়াংজ্যেয় । ৩৬৭॥

क्र ९ अमीशिका।

যবো। অযেযভিন্নেব্যঞ্জনে। কু য়ীশব্দেন্দনয়োঃ ক্ষায়ীবিধুননে। তুশব্দাদিতি। বলীলোপইতি নিমিত্তাপায়তায়াৎইতি প্রাক্তিরোপেব্যঞ্জনমিমিত্তাভাবাহুক্তং কিপীতি। এতেনতন্ধ্যায়বাধইত্যর্থঃ। চক্ষায়ুদীত্যাদি। স্বরাদেশহাদ্বতোত্বেদতি নয্বোর্লোপঃ। নিমিত্তাপায়তায়াৎপুনয়োঃ স্থিতিরিতিভট্টঃ। প্রকু য্যেতি। যপান্তরঙ্গবাধেন যপিনতন্তলোপঃ এতচ্চসকৃষাধিততায়ানবগাহাহুক্তং। *। ইতি-শ্রীমহেক্তভট্টাচার্য্যোপাধ্যায়বিরচিতায়াং কৃৎপ্রদীপিকায়াং চতুর্থবিত্যাসবিবরণম্। *। *। ৩৬৮॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

যবোচেতি। চোহ্বধারণে যবাবেবলোপ্যোতেননরেকাৎ পরাইত্যস্থাসুবর্তনং কুরতেম্বেভিকুতঃ গতার্থাকর্মকেতিকর্ত্তরিক্তঃ যলোপেকুতঃ এবং কৃতবান্ ক্ষায়ী ভু আ পূর্ববং ক্তক্তবভূকুঃ ক্ষাইত্যত্ত কিপ্। দিদিবানিত্যাদি। দিবুক্রীড়ায়াং দিবুতস্তুসন্তানে ক্ষায়ীকন্দুপ্রত্যমেদির্ভাবে পরত্রেঅভ্যাসম্প্রম্বে অনাদিহলোক্রোপেকবর্গস্থ চবর্গঃ কন্দোয়োল্লোপঃ। বিরেরিত্যাদাতি। বিপূর্ববঃ রের্গতোবিরেবতইতি কিপিবলোপঃ। আদিনাপরিদের্দেবনেপরিদেঃ সম্তের্ক্রীড়নে সন্তেরিত্যাদের্গ্রহণঃ। দেবিতেতি। দের্ভ্রেত্যমে শ্রস্থাস্তাবিভক্তো বা ইডাগমেব্যঞ্জননিমিত্রাভাবান্নবলোপঃ। চক্ষায়ুষীত্যাদে ক্রপ্রত্যমেক্রীবেপ্রথমাদ্বিচনে বা তদ্ধিত্যেদিনা আদেবিস্থান্তঃ অতোনয়োল্লোপঃ। প্রকৃষা প্রকৃষ্য প্রদেবিত্বা প্রদিবসাপে যপান্তরঙ্গবাধাদাদে যপ্যপিনযোল্লাপঃ। ইতিশ্রীসিদ্ধনাথ বিদ্যাবাগীশবির্চিতায়াং গৃতপ্রকাশিকায়াং কৃৎচতুর্থবিস্থাসবিবরণম্। *। *। ১৬৮॥

চজোঃ কগৌষসুবন্ধে ধুটিচ। স্যাতাং। অর্কোক্তি যুক্তয়ঃ। পাকো-বিবেকী সম্ভোগী যোগীরোগ্যেবমাদয়ঃ। পকঃ ৰুজোৰুয়ঃ ভূমে-বান্। বিশেষবিধিত্বাৎ প্রাশ্বত্বনত্বেচ কগৌনস্যাতামিতি তয়োঃ প্রাশ্বিধানার্থং ধুড় এইণং। ধুড্যসুবন্ধে কিং যাচঞা সোম্যাজী। ৩৬৯॥

ন্যঙ্কাদীনাং হশ্চয়ঃ স্যাৎ। চজোঃ কগোস্যাতাং। ন্যঞ্চাদেঃ কুঃ। ন্যঙ্কু র্যাদ্পুভ্ গুর্লুকো। লুঞ্চনং লুক্ স্থানং পচতীতি কর্মণ্যণ্ স্থপাকোইয়ং ফলেপাকঃ নিপাতনা দেত্বং নিদায়ঃ মেহত্যপোমেয়ঃ অর্হণমর্যঃ। ৩৭০॥

क्र ९ अमी शिका।

চজোঃ। যথাক্রমং চজোঃ কর্গোদ্যাতাং। অরু পূজায়াং ঘঞি অর্কঃ বিশ্বঃ প্রশ্নবৎ একস্মন্বরো-র্বাদেশো। ভূজাদেরিতি দ্বিনিবিবেকীত্যাদি ক্তেপকঃ রুগঃ ভূজোকোটিল্যভূগঃ। নম্বত্র ধূড়গূহণং ব্যর্থং ধূট্যন্তেচেতি তৃতীয়মপীচ্ছন্ত্যেকে ইত্যাখ্যাত দিদ্ধেরিত্যত আহ বিশেষেতি। মকবা ইত্যস্তল্পাদে-রোকুরদ্ধাচ্চেত্যস্ত চাল্লবিষয়ত্বেন বিশেষবিধিত্বাদন্তরঙ্গমনপেক্ষাপকাদো নিষ্ঠাতস্তবত্বেরুগ ভূগাদোচ নত্বে সতি ধূট্ নিমিত্রাভাবাৎতাভ্যাং তয়োঃ কর্গো নস্তাতামিতি হেতোর্বব্বনম্বয়োঃ প্রাধিশানার্থং ধূটীতি গ্রহণমিত্যর্থঃ। চজোঃ কিং পৃষ্ঠমোক্সামিতি। ৩৬৯॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

পায়ানোহজস্থতঃ স্বাস্ত্রস্তঃ শক্তেভবক্তোদ্যুতঃ শশ্বমন্ত্রজপৎপ্রণাশিতবিপংশক্রাদি সন্ধ্যাতপং। বিশ্বধ্বংসকরঃ স্বভক্তস্থকরঃ সন্দত্তসিদ্ধ্যৎকরঃ সংসারাস্থ্রনিধি প্রময়নিরধিত্রাণাবনেনোরধি।

চজারিতি। ঘনুবন্ধে ধৃটিচেতি চকারগ্রহণাদেকৈকনিমিত্তেকগোনাত্র যথাক্রমং কিন্তু চজোর্য্যথাক্রমং কগাবিতি। অর্চ্ পূজায়ামেকচকারোগণদর্পণে লিখিতঃ অর্চতীতি প্রয়োগেতু স্বরাৎপরেতি বাচস্থান্বিত্ব: কর্মণি ঘঞি চস্তকঃ। বচ্পরিভাষণে বচনমুক্তিঃ ভাবেক্তিঃ ধুটিচস্তকঃ যুজির্যোগেক্তো জস্তকঃ অর্কন্দ উক্তিন্দ যুক্তিশেচতি ছন্দ্রঃ। ভূপচঞ্বপাকে ঘঞ্ আদৌর্দ্ধিঃ চস্তকঃ বিপূর্বে বিচির্ পৃথক্করণবিবেচনয়োঃ বিবেক্তাতি বিবেকী ভূজাদেশ্চসমঃ পশ্চাদিত্যাদিনা দ্বিন্ বিবেচনশালইত্যর্থঃ এবং সম্ভোগীত্যাদয়ঃ তত্র ভূজ্ পালনাভ্যবহারয়োঃ যুজির্যোগে রুজোপীড়ায়াং। আদিনা ত্যাগীশোক উদ্বেগইত্যাদয়ঃ। পকৃইতি। মকবাঃ কৈন্তবি পচামিতি নিষ্ঠাতস্থ বঃ। রুয়ইতি। ধুটিজস্থগদ্ধে আদিনাল্যক্রাদেচতি তস্থ নঃ। ধুডিত্তি। ধুটিজিল ঘনুবন্ধে কিমিত্যর্থঃ। যাদ্ধেতি। টুযাচ্ প্রার্থনায়াং যাচনং যাদ্ধা যাচি বিচি প্রচিযজামিত্যাদিনা নঙ্ নত্যা ধুট্ দ্বান্ধচন্তকঃ স্তিয়াং রুড়িছাৎ চটবর্গা-বিতি নস্তঞ্যঃ। তথাচামরঃ যাদ্ধা ভিক্ষার্থনার্দ্ধনেতি। সোম্যাজেতি। সোম্যাক্রতি করণ-পরাদ্যজতের্ণিন্ ভূতেস্থাৎ নিত্যসমাসঃ অত্রইনিঘনুবন্ধবাভাবান্ধজন্তগঃ। ৩৬৯॥

क्र ९ अमी शिका।

च्छा। च्छां निष्ठभरनाभानां यथान्छव প্রত্যয়ে च्छां नीनाः निष्ठ राहि कर्शाचाराः

কবর্গাদি ব্রজ্য জারগত্যথেবন্চতেরপি। চজোঃ কগৌনস্তঃ। কৃজঃ গর্জঃ পরিব্রাজঃ সমাজঃ আজ্যমিত্যাদি। বঞ্চুমাপ্তবান্ গন্তব্যং প্রপ্রিইত্যর্থঃ। কৌটিল্যেতুবস্ক্যং কাঠং। ৩৭১॥

হস্তাং স্যাৎ যথাসিদ্ধি অন্তানিপাতাদি কার্যামিত্যর্থ:। ন্যঙ্কুরিত্যোনাদি ককোনিপাতনায়নলোপঃ মৃগভেদঃ ন্যঞ্চাদেরুরিতি প্রাঞ্চঃ। টুমজ্জ্ শুদ্ধো কৌ পূর্বজস্তাদঃ মদ্গুঃ পক্ষিভেদঃ। ভূজীভর্জনে ভূগুঃ পতনশীলঃ ঋষিবিশেষশ্চ। ভ্রজ্জঃ কোসম্প্রসারণাদিজলোপে ভৃগুরিতি শস্তুঃ। লুন্চ অপনয়নে সম্পদাদিষাৎ কিবিপি অগুণেহন্ত্যেতি ন লোপশ্চ চঃকঃ লুক্ কর্মাণ্যণিশ্ব পাকশ্চাণ্ডালেরুঢ়ঃ ফলং পচতীতি ফলে পাকঃ নিপাতশ্চানেন। যদ্যপেতদ্বয়ং ঘঞি বহুব্রীহিণাসিদ্ধ্যতি তথাপ্যাণ অপররপ্রমাসার্থমিহোজিঃ। হশ্চ্য উদান্থিয়তে। নিদহন্তিরবিরশ্রয়োহিশ্বিশ্বনেনবা ঘঞি নিদাঘোগ্রীষ্মকালঃ মিহ্ সেচনেহচিমেঘঃ অর্হতের্যঞ্। মূল্যেপূজাবিধাবর্ঘঃ। ন্যঞ্জাদয় আকৃতিগণাঃ। ৩৭০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অঙ্কাদীনামিতি। কুরিতি করুবন্ধকরণং ভ্রজ্জণাতোর্ভুগুরিতিপদিদ্ধ্যর্থমন্তথা ভ্রপ্তরিতিস্থাৎ।
অঙ্কুর্মুনৌমৃণে পুংদীতি মেদিনী। মদ্গুঃ কারগুবঃ প্লবইত্যমরঃ। ভৃগুঃ পুমান্। মনোহরেতটে
শুক্তেতি মেদিনী। যদ্যপি নিষাদ শ্বপচাবিত্যমরকোষে শ্বপচইত্যুক্তং তথাপি শ্বপাকোপি চাণ্ডালঃ যোগার্থতোল্যাৎ। নিদাঘোগ্রীপ্মকালেদ্যাত্তপ্রথেদাস্থুনোরপীতি মেঘোমুস্তাজলদয়োরপীতি অর্থঃ পূজাবিধী মূল্যেইতিচ মেদিনী। অন্যৎ ক্রংপ্রদীপিকায়াং ক্রেরং। ৩৭০॥

क् श्रमी शिका।

কব। কবর্গাদীনাং ব্রজেরজেঃ গতাবর্থেবঞ্চতেরপিঘনুবদ্ধেধুটিচচজোঃ কর্গোনস্তঃ। কৃজ্থুজ-স্তেয়করণেগর্জগর্জনে ঘঞিকৃজইত্যাদি। এবং পরিব্রাজইতি। বায়তামগ্রোক্ষিপ্যতামেতদিতিঘাণি আজ্যং ঘৃত্যু অন্ ঘ্যণ্ ক্যপ্রনাজেবর্গী। এবং বন্চুগতিকোটিল্যয়োঃ বঞ্চ্যং গন্তব্যং প্রাপ্তবান্বঞ্পাঠে ঘঞ্বঙ্ক্যং কাষ্ঠমিতিকুটিলং ক্রিয়তামিত্যর্থঃ। যদ্যপিবকিকোটিল্যেবঙ্ক্যমিতিসিদ্ধ্যতি তথাপিকোটি ল্যেবঞ্চতেরপিবঙ্ক্যমিতিসূত্রার্থঃ। বঙ্কপাঠেকর্ত্রিরঘঞ্। ৩৭১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ক্বর্গেতি। কৃজইতি। কৃজ্অব্যক্তশব্দেভাবেঘঞ্ঘঞাদ্যাঃ পুংদীতিপুল্লিঙ্কঃ। পরিব্রাজইতি। বজ্গতোঘঞিরদ্ধিঃ। দমাজইতি। দম্পূর্ব্বঅজ্গতা ভাবেঘঞ্দমূহার্থঃ। পশ্নাং দমজোহত্যেষাং দমাজইত্যমরঃ। ঘতমাজ্যংহবিঃ দর্গিরিত্যমরঃ। আদিনাকচ্বদ্ধনেকাচঃ কজ্মদেকাজ ইত্যাদি। বঙ্ক্ষ্যমিতি। প্রাক্ চটবর্গাবিতিনস্থঞকারেহপিচস্থকত্বেনিমিত্তাপায়েনৈমিতিকস্যাপ্যপায় ইতিন্যায়াৎঞ্চনিরত্তোবিন্দোত্স্য বর্গেত্দ্বর্গপঞ্চমইত্যনেনঙ্কারঃ। ৩৭১॥

ক্চার্চিত্রজ্যাচিষজাং ঘ্যণি। চজোঃ কণোনস্তঃ। রোচ্যার্চ্যাচ্যাচ্যকাঃ। যাজ্যং।

ঘ্যণিকিম্ অর্চাতেইসৌ অর্কঃ যাগঃ রোকঃ যাচের্ঘঞ্ নাস্ত্যনভিধানাৎ। ৩৭২॥

অাবশ্যকার্থেঘ্যণিচ। চজোঃ কণোনস্তঃ। অবশ্যং পাচ্যমোদনং। অবনেজ্য
মবশ্যং যোজ্যং। আবশ্যকার্থেকিং পাক্যমামিষং যোগ্যঃ পুমান্। ৩৭৩॥

নিপ্রপ্রত্তঃ শক্যে। ঘ্যণিজন্যগোনস্যাং। নিযোজ্বং শক্যঃ।

নিযোজ্যোইয়ং প্রযোজ্যবং। অন্যত্নিযোগ্যোমান্যঃ। ৩৭৪॥

कृ श्रमी शिका।

কচ্য। অনাবশ্যকার্থং সূত্রমিদং তত্রপরেণসিদ্ধত্বাৎ। রোচনং রোচ্যং। অচ্চ্যুপ্তায়ামচ্চ্যঃ ঋচ্স্ত তৌএতবচনাদেবঘ্যণ্ অত্যথাঋতুপধ্যাহ্ক্যপিকত্বং নপ্রাথোতিকিং বর্জনেনেতিভট্টঃ। দ্বয়মপ্যুপাদেয়ং যাচ্যশ্চেতিবন্দ্বস্থার্থেকঃ। অচ্চ্যুতইত্যুপলক্ষণমূচ্যতেহপি। ৩৭২॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

ক্র চোতি। ক্রচ্নী প্রাবভিপ্রীত্যাঞ্চ অর্চ্পুজায়ান্ ক্রপ্রনীপিকামতেখাচ্স্তুতিগত্যোরিত্যস্যাপি গ্রহণং। অজ্হানো টুযাচ্প্রার্থনায়াং যজ্নেবপুজাসঙ্গতকরণদানের এষাং ঘ্যণিচজাঃ কগৌনস্তইত্যর্থঃ। রোচ্য শ্চাচ্য শ্চযাচ্য শেচতি দ্বলঃ ছন্দো হ কুরোধা ং স্বার্থেকঃ। অচ্চ্য ইতি দ্বিচকারপাঠে পরার্থ পরহরেভা-ভ্যামিত্যাদিনাচস্তারিত্বং। অক্ইত্যাদি। যঞ্চিচজাঃ কগৌ। যাচেরিতি। অনভিধানাং শিক্ষানা মকথনাক্রেতোঃ যাচের্যঞ্জনাস্তীত্যর্থঃ। তথাচ্যাকই তিপ্রয়োগোনস্তাদিতিভাবঃ। ৩৭২॥

क्र॰ अमी शिका।

আব। পুনর্যাণীতিপাঠাৎ রুচ্যাদিমাত্রস্থনানুর্তিঃ সামান্ততোবিধানাদাবশ্রুকেইপিভবতীতি আবশ্যকতাঘ্যণর্থং সাচাত্র্যদিঘ্যপ্প্রত্যয়ার্থোনিশ্চিতরূপেণভবতিতদেত্যর্থঃ। পাচ্যমিতি। ঋবর্ণ ব্যঞ্জনান্তাদ্যণ্শ্রবশ্যং পচ্যতামিত্যর্থঃ। অবপূর্বঃ নিজির্শুদ্ধৌ অবনেজ্যং যুজির্যোগেযোজ্যঃ। পাক্যমিতি। পচ্যতামিত্যর্থঃ। যোগ্যঃ কর্মাণ্যই ইত্যর্থঃ। ৩৭৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

আবশ্যকার্থ ইতি। যদ্যপ্যাবশ্যকার্থেঘ্যণ্বিশিষ্যনোক্তস্তথাপি ঋবর্ণব্যঞ্জনান্তাদ্যাণিত্যস্তসামান্তে নবিধানাদাবশ্যকার্থেইপিভবতীতি অতএব আবশ্যকের্থেভূবর্ণাদিত্যক্ত ভূশব্দোহ্বধারণার্থউক্তঃ। ভূপচ ঞ্ব্পাকেপাচ্যং। যোগ্যইতি। যোগ্যঃ প্রবীণযোগার্হোপায়িশক্তেম্ব্রাচ্যবদিতিমেদিনী। ৩৭৩॥

क्रश्रमीशिका।

নিপ্র। নিশ্চপ্রশ্রেভিদ্বন্দঃ তৌপুর্ব্বোযস্যসচাদোযুজ্চেতি দ্বন্দ্বাৎপরইতিন্যায়াৎ। অত্রসামান্ত তোহভিধানাদর্থাৎ নিযোগং কর্ত্তঃ শক্রোভীতিকুদ্ব্যভিচারাৎকর্ত্তরিয়ঃ শক্যেনিযোগাহে হর্থেঘ্যণিঘ্যপ- বাক্যং পদকদম্বঞ্চে গ্রেণ ভক্ষান্যবস্তুনি। অনয়োরর্থয়োর্বচিভুজ্যোঃ কগৌননিষিদ্ধ্যেতে। অন্যত্রবাচ্যায়ুক্তিঃ ইদং বাচ্যং বাচ্যোকাকঃ ভোজ্যমন্যং মৃতাদিকং ভক্ষ্যং। ৩৭৫॥

ষঞ্ভাবেন্যাদনংজ্ঞায়ামপ্যকর্ত্তরিকারকে। করণং কারোভাবোনায়ঃ।
সংজ্ঞায়াৎ কর্মাদৌতু প্রকুর্বস্তিতমিতি প্রাকারঃ দীর্য্যতেএভিরিতিদারাঃ পদ্যস্তেইনেনেতিপাদঃ জারঃ প্রসাদস্যাম্মিলি প্রাসাদঃ। অকর্ত্তরীতি কিং নদতীতি
নদঃ পঠঃ অসংজ্ঞায়ামপিদায়োদক্তঃ লাভোলবাঃ। নঞোইনিত্যত্বাং পদ্যতেইসৌপাদঃ ৰুজত্যসৌরোগঃ। ভাবাকত্ কারকয়োরিত্যস্বর্ত্তেণচঃ প্রাক্। ৩৭৬॥

পিকর্ত্তরিনিযোক্ত্রং শক্যইতি যোগ। ইইতিতাৎপর্য্যার্থঃ। নিযুজ্যতামসাবিতিঘ্যণিযোজ্যোর্রুটো প্রেয্যােইভি-ধীয়তইভিবক্তঃ। নিয়োজ্যেকিস্করপ্রেয়ভুজিয় পরিচারকাইত্যমরঃ। এবং প্রযোজ্যােইপীতিবেত্যর্থঃ। যদাবতিরত্যোপ লক্ষকঃ তথাচ অনয়োরুপলক্ষণতয়া অভিযোজ্যােইনুযোজ্যােনিরনুযোজ্যােইপীতি-কাতন্ত্রবৃত্তিঃ অন্যত্র শক্যাদন্যত্র নিযুজ্যতামা শ্রীয়তামসাবিতিঘ্যণিনিযোগ্যঃ এবং প্রযোগ্যইমৌস্বামি-নিরুচাবিতিভট্টঃ। ৩৭৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নিপ্রপূর্বেতি। নিপূর্বে প্রপূর্বে যুজেঃ শক্যেহর্থেঘাণিজস্তাগোনস্তাদিত্যর্থঃ। নিপ্রপূর্বেযুজেঃ শক্যেনিযোজ্যোহয়ং প্রযোজ্যবদিত্যেবং ছন্দঃ। ৩৭৪॥

क्र ९ अमी शिका।

বাক্যং। যদিপদানাং স্থপ্তিওন্তানাং কদম্বকং বৃন্দং বাক্যং ভবেত্তদাবাক্যমিতি দিদ্ধং ভবেৎ ভক্ষ্যান্যবস্তুনিঅদর্নায়ান্যদ্রব্যেশ্রক্চন্দনাদে ভোগ্যং স্থাৎ। স্ত্রিয়ান্ত্রসংহতির্ব্দৃন্দং নিকুরুম্বং কদম্বকং। তিঙ্ স্থবন্তচয়োবাক্যং ক্রিয়াবাকারকান্বিতেত্যমরঃ। নিষেধানুর্ত্তের্বিধিমুখেননিষেমাহঅনয়োরিতি। অন্যত্রনিষিদ্ধ্যেতেইতি দিদ্ধং। বাচ্যইতি। বচনীয়োনিন্দিতোবেত্যর্থঃ। বাচ্যস্তর্কুৎদিতেহানেবচনার্হেচ্ বাচ্যবদিতি মেদিনী। নিন্দায়াং প্রয়োগোযথা। অদাতাতুপিতাবাচ্যঃ স্থতানাং স্থায়ধন্মতইতি নিন্দিতইত্যর্থঃ। যত্ত্বদশরাত্রদাধ্যযজ্ঞস্থদশর্ধত্রসংজ্ঞায়ামধিবাক্যমিতি তৎন্যস্ক্র্বদোপ্রদাধ্যমিতি ভট্টঃ। ৩৭৫॥

গু ঢপ্ৰকাশিকা।

বাক্যমিতি। বচ্ পরিভাষণে উচ্যতামেতদ্বাক্যমিতি ঋবর্ণব্যঞ্জনান্তাদ্ব্যণিচস্যকঃ। তথা ভুজ্ পালনাভ্যবহারয়োঃ ঘ্যণিজস্যগঃ। অন্যত্তেতি। পদকদম্বাদন্যত্রভক্ষ্যবস্তুনিচেত্যর্থঃ। ৩৭৫॥

क्र ९ अमी निका।

ঘঞ্। ভবনং ভাবঃ প্রাদ্যযোগইতি ঘঞ্। অবিশেষাদ্ভাবশব্দোহত্রধাত্বর্থবাচী। ধাতোরর্থঃ ক্রিয়াস্ক্রেয়াভাবইত্যভিধীয়তইতি। ভাবঃ সতাস্বভাবাভিপ্রায়চেস্টাত্মজন্মস্ক। ক্রিয়ালীলাপদার্থেযু বিস্তৃতি বুণজন্তুস্বিতি মেদিনা। এতেনভাবেবাচ্যেসর্ব্বধাতুভ্যোষঞ্স্থাৎ অকর্ত্তরিকারকেহপি সংজ্ঞাবিষয়ে প্রায়েণাদংজ্ঞায়ামপিঘঞ্দ্যাদিভিলভাতে। নতুপূর্ব্বোক্তবচিভুজোর্ম্বাপি প্রত্যাদত্ত্যাভুবোনবাপোত-দর্থকাদিতি। নকুভাবোধাত্বর্থঃ সচধাতুনৈবোচ্যতে কথমুচ্যতে ঘঞ্ভাবইতি সত্যং ধাত্বর্থস্তধাতুনৈবোচ্যতে সচিষ্ণি সভাবঃ সাধ্যতাসিদ্ধতাভেদাৎ যস্তত্তসিদ্ধতানামধর্মস্তং ক্রবস্তোঘঞাদয়োভাবমপি দ্যোভয়স্তীতি ভাবইত্যুক্তং তস্তাশ্চদ্ৰব্যস্বভাবতিদ্বাচকানামনেকলিঙ্গসখ্যাযোগঃ। উক্তঞ্চক্ৰিয়ায়াঃ সাধ্যতাবস্থাসিদ্ধতা চপ্রকীর্ত্তিতা। সিদ্ধতাং দ্রব্যমিচ্ছন্তিততৈবেচ্ছন্তিঘ্যণ্বিধিমিতি। উভয়াবস্থাতুকার্য্যগত্যোভয়গতেতি দ্বিঃ স্বভাবইজুক্তেং। অপিশন্দঃ কাকাক্ষিবহুভয়সমুচ্চায়কঃ তথাহি যথা কাকাক্ষিগোলকমেকপাৰ্শস্তজ্জ-পরপার্খং ভজতে ক্রমাদ্দ্রমপিভজতে এবমন্যোয়একং ভজরপরমপিভজতে সকাকাক্ষিবহুচ্যতে অত্রবাম-দক্ষিণাবিশেষণাক্ষিমীত্রমুভয়োঃ পার্শ্বয়োর্ব্যাপারং করোতীত্যভিপ্রেতম্ অন্তথা ক্ষোর্দ্বিতয়ত্বাদিপি শব্দ স্তৈ কথান্নসাম্যংদৃষ্ঠান্তংস্থাৎ অতএবৈকোনৃপোদাবপিবলবস্থোভজন্ কাকাক্ষিবদিতি পদেন বিশেষিত দ্বৈধী-ভাবেনবর্ত্তেহতঃ কাকাক্ষিবহুপলক্ষিতইত্যুচ্যতে তথাপি পরিভাবমানয়ন্নকর্ত্তরিসংজ্ঞায়ামিত্যানয়ংশ্চ সহামুর্ভাবেয়মপুত্রেত্রনয়তাতি অভাথাকর্তরীত্যতি ক্রম্যোত্রত্তভাবপ্রবর্ত্তনং ক্লেশকর্মিতি। যদাপি সামানাতোবিধানে ন ঘঞাদয়ঃ সংজ্ঞায়াং ভবন্তি তথাপিপ্রকৃতে প্রতায়ার্থমাত্রদর্শনেনাকর্ত্তরিতেন কিন্তুবাহুলোনাদংজ্ঞায়াং তত্তবিশেষাঝুদারেণেত্যর্থঃ। অন্যথালোকপ্রদিদ্ধাঝুশরণং ক্লেশকরমিতি। অথকারকগ্রহণমনর্থকং কর্তৃবর্জনেনঘঞঃ দাদৃশ্যগ্রাহিত্বাৎ কন্মাদিকং প্রতিপৎস্থামহেইতি। নচতস্থপ্রসজ্যবৃত্তিত্বাদ্তাবেদমুংসহতে পূর্বেেণসিদ্ধত্বাৎ নৈবং ভাবইত্যনেনসিদ্ধতাবাচ্যেকতম্ ইদানীস্ত-সাধ্যতায়ামিতি বুদ্ধোতএবঞ্দতি দিদ্ধং সাধ্যায়ভবতীতি নোপপদ্যতামিতি ভট্টঃ। বস্তুতস্তুসাধ্যতায়ামিধা-নেহপিম্বভাবতো যাদিদ্ধাদাদিদ্ধৈৰ স্বভাবোহিত্বরতিক্রমঃ নহিবিধানতাং বাধতেকিস্তুতদভাবে অকর্ত্তরিকা-রকেহকারকেভবতীতি ততশ্চপচ্যতেহয়শ্বলভতেলবণস্থেতিষষ্ঠীন্যবচ্ছেদার্থং তদিতিবজ্রঃ। কারইতিরৃদ্ধি নিয়মান্নাল। ভাবইত্যাদিৰয়েপ্ৰাদ্যযোগে ইত্যদাধনাদনেনঘঞ্। সংজ্ঞায়াং প্ৰায়েণকৰ্ম্মাদে তত্ৰকৰ্মণি-প্রাকারোত্র্গঃ উপদর্গস্থেতিদীর্ঘঃ। দূবিদারণে জ্বয়োহানো অনয়োঃ করণে। দারাঃ স্থাতু কুটুম্বিনী জারস্তৃপপতিঃ অনয়োঃ কুদ্ব্যভিচারাৎ সংজ্ঞায়ামল্বাধকোঘঞ্। অধিকরণেপ্রাসাদোদেবভূভুজাং গৃহং। নদঃ পাঁচইতি সংজ্ঞাসংজ্ঞায়ে তদ্মুক্তে২চম্বাধিত্বা স্থাদিতিনিরস্থতে। অসংজ্ঞায়াং কচিৎদীয়তামসোদায়ঃ বাদরপ্রসায়াৎ ক্তঃ কর্মার্থদর্শনার্থঃ এবং লাভোলরঃ। সংজ্ঞায়াঞ্চ যৌতুকাদিয়ু যদেয়মিতিলাভোহধিকং ফলমিতি। নঞইতি। অকর্ত্তরীতি নঞোহনিত্যভাৎ কর্ত্ত্যাপীত্যর্থঃ। তথাচপদরজবিশম্পুশেভ্যঃ কর্ত্তরাতিকালাপাঃ। ভাবেইতি দপ্তম্যন্তমিদং পদ্যুগম্ইতেরাদ্যর্থত্বাদ সংজ্ঞায়ামপীতিচেতোহ্নুবর্ততে মণ্ডুকপ্লু ত্যাধিকরোতি নচস্থাদিতি সূত্রপ্রাক্তনেসূত্রগণে নতত্তাসুর্তিঃ ক্রিয়াবিনিময়েইতি বিশেষাভিধানা দিভিভাবঃ। ৩৭৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ঘঞিতি ভাবেগম্যোগতুভ্যোঘঞ্সাং ভাবোধাত্বর্থোগতুমাত্রব্যাচ্যোঘঞাজ্ঞাপ্যতে গাতুমাত্রার্থভাব-জ্ঞাপকতয়া ঘঞ্ধাতুমাত্রাদিতি লভাতেনতুপ্রাগুক্ত বচ্ভুজোরেবানুবর্ত্তনমিতি। অত্রসংজ্ঞায়ামসংজ্ঞায়াঞ্চ নকশ্চিদ্বিশেবঃ অকর্ত্তরিকারকে বাচ্যেসংজ্ঞায়াং বাহুল্যেন কুচিদসজ্ঞায়ামপীত্যপিগ্রহণাৎ সূচিতমিতিযোজনা। স্যাদোজবৈএধইন্ধেরাগঃ করণভাবয়োঃ। এষাং ঘঞিনলোপঃ পরয়োগুণ-রদ্ধীচ নিপাত্যন্তে। অশ্বস্যদঃ। জবেকিং মধুরস্যন্দঃ ইন্ধীএধঃ এধৌরজ্যতেইনেনেতি রঞ্জনং বা রাগঃ অন্যত্তরজ্ঞত্যশ্বিন্ধিতিরঙ্গঃ। ৩৭৭॥

উন্দেরবোদঃ শ্রাপ্তস্তু প্রশ্রে প্রথাইয়ং হিমশ্রথঃ। এষাং যঞ্জিনলোপঃ। ৩৭৮॥

কারকইতিপদং সম্বন্ধ ষষ্ঠীব্যবচ্ছেদার্থং তেনদীয়তেহস্তেত্যাদৌনঘঞ্। ভাবোনায়ইত্যনয়োঃ প্রাদ্য-যোগেইতিবক্ষ,মাণেনালোনিবেধাদনেনঘঞ্ইতিভাবঃ। থাতোদ্ধতস্ত্রপাকারমূর্ত্তিকোপরিইফকাদি-নিন্মিতহুর্গঃ প্রাকারঃ। প্রাকারেগঃ সালইত্যমরঃ। পদ্গতোপাদঃ পাদোব্রপ্পেরীয়াং শেশৈলপ্রত্য-ন্তুপর্বতে। চরণেচময়্থেচেতিমেদিনী। প্রপূর্বসদ্ত্রিসরণগত্যোঃ প্রাসাদঃ নদ্থলৎকারেশন্দেচননঃ। দায়ইতিঘঞিইচ্যাদন্তেভ্যোযুট্। দায়ঃ সংজ্ঞায়ামপি। তথাচমেদিনীদায়ঃ সোৎকণ্ঠভাবণে। বিভক্ত-ব্যপিত্দব্যতথাহরণদাময়োরিতি। সোৎকণ্ঠভাবণ হরণপক্ষেধাভূনামনেকার্থতাস্বীকারঃ। পদ্যতইতি ব্রপ্পক্ষেহ্যং যোগঃ। রোগইতি। রুজোপীড়ায়াং। ভাবাকত্র্কারকয়োরিতি। বিশেনোক্তিরহি-তন্থলেতয়োরেবাধিকারঃ ণচঃ প্রাক্ ণচ্ স্থাৎ ক্রিয়াবিনিময়েইতিবক্ষ্যমাণণচঃ প্রাগিত্যর্থঃ। এতেনপরত্র সংজ্ঞাসংজ্ঞয়োস্তুল্যবলম্বমিতিভাবঃ। ৩৭৬॥

ক্ৎপ্রদাপিকা।

শ্বনা । স্থান্দ্ স্রবণে জবেবেগেন্সদঃ ঞিইন্ধাদীপ্রোএধঃ করণভাবয়োরন্জেরাগোঘঞিনিপাত্যতে। পরয়োরিন্ধরন্জাঃ। নিপাতশ্চ গুণিনিঘঞি অগুণেহন্ত্যেতি নলোপাপ্রাপ্তের্মলোপঃ উপান্তলোপেনো-পান্তস্থ লাক্ষণিকত্বাত্রন্দের্মনিতি কৃতিগুণনিয়মাঘাভর্মাভর্মাতীতি বা সম্প্রদারণমিতি তুবাশব্দশ্যব্যবস্থয়া কৃদন্যতয়া বাগুণঃ। অশ্বস্থমানোবেগইত্যর্থঃ। মধুনঃ স্রবণমিত্যর্থঃ। ইন্ধতেহয়িরনেনেতিএধঃ। কাষ্ঠং দাবিষ্ধনন্ত্রেধইত্যমরঃ। রাগস্তমাৎসর্যালোহিতাদিয়ু। কেশাদাবনুরাগেচ গান্ধারাদৌনৃপেহপিচেতি-মেদিনী। অন্যত্তেতি। করণভাবাভ্যামন্যত্ত। রঙ্গোনারাগেন্ত্ররণক্ষিতে।। অস্ত্রীত্রপুণীতিসা। ৩৭৭॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

স্থাদইতি। জবেবেগেম্মদঃ ইন্ধেকাষ্ঠেএধঃ করণভাবয়োরাগইতি ঘঞিনিপাত্যন্তে। নিপাতপ্র-কারমাহএষামিতি এষাং ত্রয়াণাং নলোপঃ পরয়োরিশ্ববন্জোর্য্যথাক্রমং গুণর্দ্ধীচেত্যর্থঃ। রংহস্তরদীতুরয়ঃ স্থাদঃ। জবোহথেত্যমরঃ। জবোবেগবতিত্তিষু । পুলিঙ্গস্তভবোদ্বেগেইতিমেদিনী। ৩৭৭॥

कृ श्रमी शिका।

উন্দে। উন্দীউৎক্লেদনেগ্রস্থ্যস্পন্তে। এষাং যথোক্তপদানামিতি পদাপেক্ষয়াবহুত্বং। অন্যত্ত্র-সমুন্দনম্ অবোন্দনং প্রশ্রস্থনমিতি। ৩৭৮॥

গ্ঢপ্ৰকাশিকা।

উন্দে। এধামবোদশ্রস্থ্রশ্রথহিমশ্রথানামিত্যর্থঃ। অঘ্ঞিতুননলোপইতিলভ্যতে। সোদাহরণং সূত্রমিদং। ৩৭৮॥ অদোষস্দ্যাৎ। যঞিপরে। যথাদূর্র্যাসস্তম্বেরমাননে। ৩৭৯॥ স্ফুরপ্তকারআত্বং বা। যঞিপরে। স্ফারঃ স্ফোরঃ সরোক্তহাং কপিরি-কাদিত্বাল্লত্বঞ্চস্কালঃ স্ফোলঃ। ৩৮০॥

ইঙাদস্ভাদযঞ্। অলো২পবাদঃ। অধ্যায় আদয়োধায়ইত্যপি। উপেত্যা-ধীয়তেইস্মাদিত্যুপাধ্যায়ঃ আমায়তেইদাবিত্যামায়োবেদঃ। ৩৮১॥

क्र ९ अमे शिका।

অদো। উপদর্গাদদোঘন্লিতি দোপদর্গদ্যাল্বিধানাদনুপদর্গদ্য ঘঞিঘদ্ ঘঞবগমার্থং রুদ্ধের্মনি-দ্বোঘাদইবৈতিরূপকং। যদাপি ঘদ্তইত্যা ঘাদইতিদিদ্ধাতিতথাপ্যদ আদইত্যপর রূপনিরাদার্থ-মিদং। ৩৭৯॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

আদইতি। আদ্ভক্ষণে। ঘাসইতত্র ভাবেকশ্মণিবাঘঞ্ পূর্ব্বকল্পেদ্বাণাং ঘাসং পরকল্পেদ্বাত্রবাত্র ঘাসাইতিবিগ্রহো। শব্দং বালতৃণং ঘাসইত্যমরঃ। মতঙ্গজোগজোনাগঃ কুঞ্জরোবারণঃ করা। ইভঃ স্তম্বেরমঃ পদ্মীযুথনাথস্তু যুথপইত্যমরঃ। ৩৭৯॥

क्र थमी शिका।

স্কুর। আছং বা প্রাপ্রোতীত্যর্থং। স্কুর্বিকদনে। উকারইতি বক্তব্যেয়দোকারইতিনির্দিষ্টং তংদনিমিত্তক্যঙ্ লুকিঘঞিআত্বনির্ত্ত্যর্থং যথাপোস্কুরঃ কপিরিকাদিছাৎ প্যেস্কুলইতিভট্টঃ। স্ফারইতি বিকাদইত্যর্থঃ। এরুনিপাতাদিবিধিঃ। ৩৮০॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা ৷

ক্ষুরইতি। ক্ষোরণং ক্ষারঃ। অরং দন্ত্যসাদিধাতুঃ। কপিরিকাদিস্বাদিতি। রোলঃ কপি-রিকাদের্কোতিসুত্রেণেত্যর্থঃ। ৩৮০॥

क्र ९ अमो शिका।

ইঙা। স্বরান্তরাদল্ প্রাপ্তেরলোপবাদইতি সামান্ততএতত্ত্তং সংজ্ঞায়ং ঘাপবাদোহণীতিজ্ঞেরং। এবমূত্তরত্রাপি। অধ্যয়নমধ্যায়ঃ আদানমাদায়ঃ ধানং ধায়ঃ উপেত্যসমীপং গত্বাঅধীতেশাস্ত্রার্থং গৃহ্লাতীত্য স্মাদিত্যপাদানেঘাপবাদোঘঞ্। উপাধ্যায়োহধ্যাপকঃ স্থাৎ শ্রুতিঃ স্ত্রীবেদআত্মায়ইত্যমরঃ। ৩৮১॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ইঙেতি। ইঙ্অধ্যয়নেইঙ্চ আদস্তশ্চেতি দ্বন্দ্বৈজ্বং। অলোহপবাদইতি। অস্তবিশেষদ্বাদিতি-ভাবং। আন্নায়তইতি। আঙ্ন্নাঅভ্যাদেসর্ব্বত্রাপাদানেঘাপবাদোঘঞিতি কুৎপ্রদীপিকায়ামুক্তং তচ্চিস্ত্যং করণাধিকরণয়োর্ঘস্ত বাচ্যহাদত্রঘাপ্রাপ্তেঃ। ৩৮১॥ বৌক্ষুশ্রুভাগে। ঘঞ্স্যাৎ। বিক্ষাবং বিশ্রাবং। বৌকিং ক্ষবং প্রবং। ৩৮২॥ স্তুঞাইশব্দপ্রথনে। ঘঞ্। প্রথনং বিস্তীর্ণতা বিস্তারং পট্টবাসসাং। অশব্দেকিংবাক্য্যা বিস্তারং। প্রথনেকিং তৃণস্য বিস্তরোবাহুল্যং। বাবিত্যেব আস্তরং প্রস্তরং। ৩৮৩॥

প্রেপ্য যজ্ঞকে। প্রস্থারস্থানাং। যজেতু বহিঃ প্রস্তরঃ। ৩৮৪॥

क्९ अमो शिका।

বো। অভিধানাতুপদর্গবিশব্দেউপপদে। প্রাদিত্বেহপ্যেষামুপপদস্বিধানবীজমুক্তমুপপদসূত্রে। টুক্ষুশব্দে শ্রুশ্রবণেবিক্ষবণং বিক্ষাবইত্যদি। ৩৮২॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

বাবিতি। অত্রাপ্যল্বাধঃ। নিগারোকারবিক্ষাবোক্যাহাস্তগরণাদিম্বিত্যমরঃ। ক্রমান্তোজন বমনশব্দউর্জাধারণেম্বিতিতদর্থঃ। অতিশয়খ্যাতিবিক্রশাবঃ। বিশ্রাবস্তপ্রতিখ্যাতিরিত্যমরঃ। ৩৮২॥

क्रथ्यमीशिका।

স্থানে । স্থাকাদনেস্ক্ৰাস্তরণেবা আচ্ছাদনাস্তরণেচ সন্ধৃচিতস্থ প্রদারণরপে অশবপ্রথনেশ-কাল প্রদারণে। প্রথ্বধানেইনট্ প্রথনং বিস্তার্ণতা প্রপঞ্চল প্রদারণিমিতিয়াবং। পট্রাসসাং বিস্তার-ইত্যর্থঃ। বিস্তরোবাক্প্রপঞ্চেলাহিস্তারেপ্রথহিপিচেতিমেদিমাঃ। প্রথনেকিমিতি প্রসারণেকিমিত্যর্থঃ। ত্রণস্থেতি। জাত্যে কত্বং তৃণানাংবিস্তারোবাক্ল্যমিত্যর্থঃ। প্রভূতং প্রচুরং প্রাজ্ঞাং মদত্রং বক্ত্লং বক্তইত্যমরঃ প্রস্তারক্তরেশকাল প্রথনেপরসূত্রেণঘঞ্ প্রাপ্তারপি স্থলালসম্ভ্রেপি প্রোনিতি বন্ধার্ত্যাবাধ্যতে। শক্ষান্ত্রেপ্রত্র প্রথনাভাবার্যঞ্ আস্তরইতি তৃণ্য সম্বন্ধাদশক প্রথনমন্ত্র এতেনপরত্রনবেঃ প্রবৃত্তি ক্রোক্রণ তৎপরত্রেক্তং। ৩৮০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

স্থাইতি। অশব্দপ্রথনে শব্দভিন্নস্থবিস্তারে। প্রথনমিতি। প্রথ্বিস্তারে ইত্যমান্তাবেহনট্। বিস্তারইতি। বিস্তারোবিগ্রহোব্যাসইত্যমরঃ।, বিস্তারোবিস্তৃত্তে স্তবেইতিমেদিনী। বাক্যস্থেতি। সচ শব্দস্থবিস্তরইত্যমরঃ। তৃণস্থবিস্তারোবাহুল্যং নতু বিস্তার্ণতা। প্রস্তরইতি যজ্ঞসম্বন্ধে ইত্যভি-প্রেতং। ৩৮৩॥

क्ल्भूमीशिका।

প্রেপ্য। অপিরুক্তবাচ্য সমুচ্চায়কস্তেন ন কেবলং পূর্ব্বপরয়োব্বিপ্রাভ্যাং স্থণতের্ঘঞ্ অযজ্ঞীয়বিষয়েশকান্যপ্রথনেপ্রেইপিস্থাদিত্যর্থঃ। পূর্ববিশার্ত্তিবলান্নাত্রবেরনুর্ত্তিঃ পরত্রোক্তমেব। তৃণানাম
যজ্ঞীয়ানাং প্রস্তারঃ প্রদারণমিত্যর্থঃ। যজেশকান্যরূপকরণবিষয়কপ্রথনে ত্বল্ বহিঃ প্রস্তরইতি। বহিঃ
কুশোহগ্নিন্চ। বহিন্নাক্শাশুশুক্ষণ্যোরিতি রুদ্রঃ। ৩৮৪॥

রত্তা নামি। প্রবিপূরাং জ্ণাতের্বঞ্ স্যাং। বিফারঃ পজ্জিজ্জেনা-রহত্যপি। প্রস্তারশ্চন্দসাং। ৩৮৫॥

সমিস্ত্রবো যজ্ঞদেশে। সংস্তাবোইন্যত্র সংস্তবঃ। ৩৮৬॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

প্রইতি। অপিঃ অশব্দপ্রথনেহস্ত সমূচ্চায়কন্তেন প্রেউপপদে অষজ্ঞকে অযজ্ঞীয়বিষয়ে শব্দান্ত প্রথনে স্থণাতে র্ঘঞ্ স্থাদিত্যর্থঃ। বহিঃ প্রস্তরইতি। যজ্ঞীয়কুশানাং বিস্তীর্ণতেত্যর্থঃ। প্রস্তরো-গ্রাবিচমণাবিতিমেদিনী তত্র প্রস্থণাতি আচ্ছাদয়তীতি অচ্ গ্রাবপক্ষে প্রস্তীগ্যতে আচ্ছাদ্যতে গুপ্যতে হুসাবিতি কর্মণ্যন্ মণিপক্ষে অত্রবিস্তীর্ণতার্থাভাবান্নঘঞোবিষয়ইতি। ৩৮৪॥

क्थमोिशका।

বৃত্ত । বৃত্ত ক্ষর সন্থাতিপদ্য সামিবিষয়েধাত্বর্থে ইত্যর্থঃ। তছুক্তং পদ্যং চতুম্পদী কচ্চবৃত্তং জাতিরিতি দ্বিধা। বৃত্তমক্ষর সন্থাতিং জাতির্মাত্রাক্তাভবেদিতি। বিস্তীর্য্যতামসাবিতি র্যথাকথঞ্চিদ্-বৃৎপত্তিঃ বিস্তারঃ। পঙ্ক্তিচ্ছন্দইতি। ছন্দঃ পদ্যেহভিলাষেচ গায়ক্রীপ্রমুথং ছন্দইত্যমরঃ। তত্র ষড়ক্ষরপাদোগায়ক্রী সপ্তাক্ষরপাদ উষ্ণিক্ অফাক্ষরপাদোহকুটুপ্ নবাক্ষরপাদোবৃহতী দশাক্ষরপাদঃ পঙ্কিশ্ছন্দইতি। প্রস্তারশ্ছন্দসামিতি। ভাবেপদ্যানাং প্রস্বরণমিত্যর্থঃ। বৃত্তপ্ত নাম্নাতি কিং বিষ্টর আসনং বৃক্ষণ্ট। ৩৮৫॥

গুতপুকাশিকা।

র্ত্তখেতি। প্রবিপূর্ব্বাদিতি। এতৎকথনান্নপূর্ব্বত্রবেরসূর্ত্তিরতস্তত্তব্যুপদর্গাত্দাহরণঞ্চ নদন্ত-মিতি। বিষ্টারইতি। বিষ্টরাদেস্ত নামনীতি ষয়ং। প্রস্তারঃ প্রপঞ্চইত্যর্থঃ ইদমপি পদ্যানাং নাম ঘঞাদ্যোতিতং। ৩৮৫॥

क्थमीशिका।

সমি। যজ্ঞস্থানে বাচ্যে। স্তুঞ্ স্তুতো সভ্যুস্তবত্যশ্মিনিতি সংস্তাবঃ। সসংস্তাবঃ ক্রভুরু যাস্তুতি ভূমিদিজমানামিত্যমরঃ। যজ্ঞদেশে যজ্ঞেনিদেশইতি সম্বন্ধান্তাবেংপি। তথাচ কচিদধ্বর সংস্তাব যুপ-লভ্যক্ষিণমিতি চান্দ্রবৃত্তিঃ। কচিৎ প্রদেশে অধ্বর সংস্তাবং যজ্ঞস্তুতিপাঠমুপলভ্য শ্রুত্তে ভট্টীকা। অন্তর্ত্ত সংস্তবনং সংস্তবঃ স্থোত্রং বা। ৩৮৬॥

गृष्धकाभिका।

সমীতি। সমুপদর্গে উপপদে যজ্ঞদেশে যজ্ঞস্থানে বাচ্যে ফুঞ্স্তুতা ইত্যন্মাদ্বঞ্। অন্যত্ত্র যজ্ঞদেশাদক্তত্তেত্যর্থ: সংস্তবং সম্যক্স্তুতিঃ অত্রাল্। ৩৮৪॥ প্রাদ্যযোগে প্রিনীভূভ্যঃ। ষঞ্ স্যাৎ। প্রাম্যোনায়োনয়োইপিচ। ভাবো-ভবঃ প্রভাবশ্চ প্রাদৌতু প্রণয়া প্রয়ো। উদ্ভবঃ সম্ভবঃ। ৩৮৭।

চিজোহন্তেনগ্রহণে। পুষ্পপুচায়মাতনোণ। ৩৮৮॥

কিশ্চাবাসেশরীরেচ। চিনোতের্ঘঞ্স্যাৎ। চেঃ ক্যাদেশন্চ। কায়নিকায় আলয়ঃ। ৩৮৯॥

क्र ९ अमी शिका।

প্রাদ্য। প্রাদীনাম সম্বন্ধেসতি স্বরান্তরাদল্প্রাপ্তো ঘঞ্ স্থাৎ তথাত্বেংপ্যের্নোপপদন্তমিত্যুক্তমুপপদসূত্রে। প্রায়নং নয়নং প্রায়ঃ নায়ঃ নয়োহপিচেতি কুদ্যভিচারাৎ। যথানয়বিনয়সম্পন্নমুখানশিচন্তমেংপ্রিয়ং। নয়স্থ বিনয়েমূলং সনয়ঃ শাস্ত্রনিশ্চয়ঃ। বিনয়োহীন্দ্রিয় জয়ন্তর্কুয়ঃ শাস্ত্রমুচ্ছতীতি
কামন্দকী। এবং ভবপ্রভবাদিঃ। এবঞ্চেং প্রাদ্যযোগইতি ভূয়োহভিপ্রায়াত্বক্তং। ৩৮৭॥

গৃতপ্রকাশিক।।

প্রাদ্যেতি। প্রাদীনামযোগেৎসম্বন্ধে জ্ঞিঞ্ সেবায়াং গীঞ্ প্রাপণে ণাদিম্বায়াদিঃ ভূসভায়াং এভ্যো

য়ঞ্। প্রয়ণং প্রায়ঃ মঞি বৃদ্ধিঃ এবং নায়ঃ। নয়েছিপিচেতি কচিদলপি অতএব অপিচেত্যুক্তম্ এবঞ্চ
বাহুল্যার্থং সূত্রং। এতৎসূত্রেণাল্বাধনং প্রত্য়মন্ত পূর্ববসূত্রেণ অতএব তত্ত্বৈব ভাবেনায় ইত্যাদাহরণদ্বয়ং
দত্তং। এবং ভাবোভবং। নঞােহনিত্যয়ৎ প্রাদিযোগেছপি কচিৎপ্রভাবং। প্রণয়ইত্যাদিয়্ অল্
য়রান্তেত্যাদিনাহল্ গুণঃ। প্রঀয়াশ্রয়াবিত্যন্তং ছন্দঃ। ৩৮৭॥

क्ः अमीलका।

চিঞো। প্রদিদ্ধ্যাপ্রয়োগেপ্রাধিকারেপরোক্তেঃ হস্তেনগ্রহণইতি প্রত্যাদভিল্ল ক্ষ্যতে নাক্ক্শাদিনাগ্রহণেতত্ত্বিপারস্পর্য্যেণ হস্তমগ্রহণেকারণত্বমিতি গ্রহণংহিহস্তধর্মঃ। হস্তেনগ্রহণেকিং
বৃক্ষশিখরেভূমিদ্বঃ ফলপ্রচয়ং করোতাত্যত্ততাবদ্রস্বং ফলং হস্তেন সাক্ষান্নপ্রাপ্যতইত্যক্ষ্পেনেতি
গম্যতইত্যল্। অভিধানাদন্তেয়ে স্তেয়েভূপুস্পপ্রচয়ন্চোর্য্যেণেতি বরক্রচিব্রভিঃ। ৩৮৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

চিঞ্ছতি। চিঞ্চয়নেভচ্চরাশীকরণমেব অত্তগ্রহণার্থ ইত্যুক্তে প্রোপদর্গস্থোপপদত্বং লভ্যভেছতি পুষ্পপ্রচায়মিত্যুদাহরতি। পুষ্পানাং প্রচয়নংপুষ্পপ্রচায়ইতিবিগ্রহঃ হস্তেনপুষ্পগ্রহণমকরোদিভার্থঃ। ৩৮৮॥

क्ष्य्रमोशिका।

কিশ্চা। আবাদেআলয়ে। প্রসিদ্ধানিয়োগেশরীরং প্রাক্তক্ষসমূদায়ঃ। চীয়তেইন্নপানাদিনা-হুমোকায়ঃ দেহঃ নিচীয়তেঘটপটাদিকমশ্মিন্নিতিনিকায়আলয়োগৃহং। ৩৮৯॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

কিশ্চেতি। আবাদেশরীরেচার্থে ঘঞিপরেচেঃ স্থানে। কিশ্চস্থাদিত্যর্থঃ। চিনোভেঃ পরঃ কিশ্চস্থাদিত্যম্বয়নিরাদার্থমাহচিনোতের্যঞ্চেঃ ক্যাদেশশ্চেতি। শরীরেচেতি চকারস্থাসূক্তদমুচ্চয়ার্থম্বাৎ সমূহলক্ষ্যমভাবেষ্চ। যথা মেদিনীকায়ঃ কদৈবতেমূর্ত্তে সঞ্জেলক্ষ্যমভাবয়োরিতি। ৩৮৯।

রাশ্যথেইপিন্যাৎ। নিকায়ঃ পুষ্পাণাং নিচয়োইস্ক্রদাং। ৩৯০॥
উদিগ্রহঃ সমিমুফীববেবাবর্ষরোধনে। গৃহ্লাতের্যঞ্। উদ্যাহোবাদিনাং
গাঢ় সং প্রাহোবাভযোধিনাং। প্রতিবদ্ধেচরফীনামবগ্রাহোইপ্যবগ্রহঃ। ৩৯১॥
প্রেরজ্জৌ। গৃহ্লাতের্যঞ্স্যাদ্ধা। প্রগ্রহেশ্গদিবদ্ধে প্রগ্রাহ ইত্যপি।
ভুলাপগ্রাহেণ চরতি বণিক্ জন্যশ্চ। ৩৯২॥

क् श्रमीशिका।

রাশ্য। প্রদিন্ধানিপূর্ব্বাৎ রাষ্ট্রংপুঞ্জার্থেঘঞপিষ্ঠাৎ। নিকায়স্তপুমান্লক্ষ্যেদধর্মিপ্রাণিসং-হতাবিতিমেদিনী। অপিনানিচয়ঃ। ৩৯০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

রাশ্রর্থ ইতি। অপিনালক্ষ্যান্যর্থেষপি। অপের্বহুলার্থস্থাৎ স্থাদপীতিবিপর্য্য়ান্বয়ান্নস্থাদপি তেন রাশ্রান্যর্থের্চিঞোঘঞ্চেঃ ক্যাদেশকনস্যাচ্চেত্যর্থঃ। নিকায়স্তপুমাল্লক্ষ্যেস্থাপিসংহতোঁ। সমুচ্চয়ে সংহতানাং নিলয়েপরমাত্মনীতি মেদিনী। স্যান্নিকায়ঃ পুঞ্জরাশীইত্যমরঃ। নিচয়ইতি ঘঞ্জনস্থাচ্চ তেন ভাবেহল্নিচয়োহপি সমূহবাচকঃ। রাশ্র্যেইপিস্থান্ধিকায়ঃ পুষ্পাণাং নিচয়োহস্তসামিত্যেবংছনঃ। ৩৯০॥

क्श्थमीशिका।

উদি। উদ্যাপপদেএইঃ সমিমুষ্টিবিষকধাহর্থে অবেবর্ষরোধনেবাগ্রহোঘঞ্সাৎ। উদ্যাহণমুদ্যুহঃ স্পর্করাগিরামাশ্রয়ণং কস্তাচিদ্বস্তুনউদ্বৰ্ত্তকরণমা। গাঢ়ং সংগৃহতেইসোধাতোরনেকার্থস্বাৎ প্রক্রিরতেইনেন বৈ তিসংগ্রাহোমুস্টিরস্থানিবশেভাগিতি যক্তর চিরিতিবজ্ঞঃ মুষ্টিঃ সংগৃহতেই আরিত্যম্বরাৎ। কলকোই-স্থাকলং চর্মানং গ্রাহোমুষ্টিরস্য যদিত্যমরঃ। স্বাদন্তক্তেকলরস মুষ্টিসং গ্রহেণীড়িতমিতিভটিঃ। প্রাপ্তকালস্য বর্ষস্তাক্তিৎ কারণাদভাবঃ রুষ্টি প্রতিবন্ধঃ রোধনপ্রতিবন্ধোপর্যায়ো অতোহরুষ্টাবিতির সাতনোদ্ধারণীয়ং বর্ষাব্রপান্যমন্ত্রাবপ্যতিব্যাপ্তেঃ। অবগ্রহণমব্যাহঃ। রুষ্টির্বর্ষং তদ্বিঘাতেবগ্রাহাবগ্রহোসমাবিত্যমরঃ। কালগ্রহাদিদোবাদ্ধিনিরোধইতিরায়ঃ। ৩৯১॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

উদীতি। উদিউপপদে গ্রহউপাদানেইত্যস্মাদ্যক্গ্রহইতি সর্ব্বতাম্বেতি। অবেবেতি অবেইত্যস্মাৎ পরত্রবাগ্রহণান্নবিকল্পঃ পূর্বব্রান্থেতি। মুকৌকিং সমান্তব্যস্তমগ্রহইত্যমরঃ। বর্ষরোধনেকিম্ অবগ্রহো-ললাটংস্থাদিত্যমরঃ। সমান্ধতো হস্তিললাটেতন্মঞ্ কিন্তু অল্স্বরান্তগ্রহিগমির্দৃভ্যইত্যনেনালেব। ৩৯১॥

क्र ९ थमी शिका।

প্রে। সামান্ত উক্তাবপ্যভিধানাদ্রথাদি নিযুক্তাশ্বাদি সংযমার্থরক্ষো বণিজাং ব্যবহরণে তুলার্নিজা বাচ্যায়াং বা ঘঞলোস্তঃ। প্রগৃহতেহ্শ্বাদিঃ দ্রব্যমানার্থতুলাবানেনেতি। প্রগ্রহস্ত তুলাসূত্রে বন্দ্যাং নিয়মনেভুজে। হয়াদিরজ্জো রশ্মেচ স্থবণালু মহীরুহেইতি মেদিনী। চরতি ব্যবহরতি বনিগন্ত-শেচতি। যদা বণিক্ ব্যবহরতি তদাঘঞ্ স্থলভএব যদাতু কশ্চিদবণিক্ প্রয়োজনবশান্তদাচার মাচরতি তেনাপি আহে তদানীং তত্যাপি তংক্রিয়াকারিয়ায়ণিগিতি। ৩৯২॥

পরিণায়ঃ শারিনয়েন্যায়েক্তি ব্যবস্থিতো। অন্যত্র পরিণয়ঃ নিশ্চিত-ময়নং ন্যয়ঃ। ৩৯৩॥

উদক্ষোইনুদকাৎ পশ্চাৎ। অন্চতের্যঞ্। স্থাদেশঃ। অনুদকাৎ কিম্ উদকোদঞ্জল । ৩৯৪॥

গৃতপ্রকাশিকা ৷

প্রতি। প্রেউপপদে রক্ষাবর্থে বা ঘঞ্ ইতিপূর্ব্ববা সম্বন্ধঃ রক্ষাবিতি সামান্তত উক্তাবিপি বা শব্দব্যবস্থায়া রক্ষ্বিশেষে তেন অশ্বাদিবন্ধে তুলাসূত্রেচেতি। তুলাসূত্রেহশাদিরশ্যো প্রগ্রাহঃ। প্রগ্রহোহপিচেত্যমরঃ। প্রগ্রহোভাসিযোক্ত্রেচ বল্গো নিয়মনে তথা। তুলাসূত্রে স্ক্বর্ণাদো প্রতীকাঙ্গ প্রতীপয়োরিত্যজয়ঃ। প্রোপদর্গবলাদ্দীপ্তাদ্যর্থেহল্। তুলাপ্রগ্রাহেণ তুলাসূত্রেণ তুলারক্ষ্বিশেষেণেতি যাবং। ৩৯২॥

कृश्भूमोशिका।

পরি। শারীণামক্ষোপকরণানাং নয়েচালনে যুক্ত্যাধর্মাচ্যুততয়া ব্যবস্থিতাবর্থনির্ণয়ে। যুক্তের্ব্যস্থিতাবিতি কেচিৎ। শারিম্বাক্ষোপকরণেইতি মেদিনী। পরিণায়ঃ শারিনয়ে সমন্তাময়নেক্রতঃ। নীয়তে যুক্ত্যাধর্মাপেততয়া নির্ণীয়তেহনেনেতি নিপ্র্বাদিণোঘঞ্ ভায়োধর্মনির্ণয়ঃ। আশ্রয়ভায়কল্পাস্ত দেশরূপং সমঞ্জসং। পঞ্চোচিতস্ভেতিরায়ঃ। অভাত্রেতি। পরিণয়োবিবাহঃ অয়নং গমনং সিদ্ধপদো-পাদানায়াত্রবাসুরুত্তিঃ। ৩৯৩॥

গূতপ্রকাশিক।।

পরীতি। পরিপূর্ববাৎ ঀীঞ্ প্রাপণে ইত্যমান্তাবে ঘঞ্ উপদর্গস্য ঘঞন্তে দীর্ঘপ্রাথাবিপি কৃচি-মেতি নদার্যঃ। বিপূর্ববাদিনোভাবে ঘঞ্ যুক্তিব্যবস্থিতো যুক্ত্যাধর্মনির্ণয়ে। এতদর্থদয়ং ঘঞাদ্যোত্যতে। পরিণায়স্ত শারীনাং দমন্তাময়নে ইত্যমরঃ। শারিগুটিকেতি নস্তপ্রদিদ্ধিঃ। অহ্যত্র শারিনয়য়ুক্তি ব্যব-স্থিত্যোরন্যত্রেত্যর্থঃ। পরিণয়োবিবাহঃ। বিবাহোপযমোদমো। তথাপরিণয়োদ্বাহোপযামাঃ পাণি-পীড়নমিত্যমরঃ। পূর্ববদূত্রের্ত্তোবা গ্রহণাদত্রবা প্রবৃত্তিঃ। ৩৯৩॥

कृश्थमीशका।

উদ। উদকভিন্নাৎ পরস্মাত্দকানেতি নিয়মঃ। অন্চুগতি কোটিল্যাল্লীভাবেষু। য়তোদক্ষঃ য়ত স্যাল্লীভাব ইত্যর্থঃ। অকিবকিকোটিল্যেধাতোরনেকার্থস্বাৎসিদ্ধেহপ্যন্চতঃ উদকোদঞ্চ সিদ্ধার্থমিদ-মন্যতোহপিচেত্যল্। ৩৯৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উদেতি। অনুদকাত্বদকভিন্নাৎপশ্চাদন্চতের্যঞ্। অন্চুগতি পূজনয়োরিত্যস্যাপিগ্রহণং সামা-ক্যতো গ্রহণাৎ। মৃতস্থাতিঃ পূজনম্বা অল্লত্বং বা ইত্যর্থঃ। ৪৯৪॥

জালমানায় ইরিতঃ। ৩৯৫ ॥

শীঙো। ব্যুপাভ্যাৎ পর্য্যায়ে। বিশায়োভবতোনিশি। রাজ্ঞ উপশয়দাব সরঃ তবরাজোপশায়ঃ। অতএবসৌত্রপর্য্যায়ইতি নির্দ্ধেশাৎপরীণোঘঞ্। ৩৯৬॥

অল্ স্বরান্ত গ্রহিণমিরদৃভ্যঃ। যথে গ্রহণ বাদে হিল্ স্যাং। জয়ঃ ক্রয়ঃ স্তবঃ প্রবঃ গ্রহঃ গমঃ রঙ্ রক্রোঃ বরঃ দৃদরঃ। রদ্যোরেবেতি নিয়মাদন্যখাদন্ত দ্বঞ্ কারঃ হারঃ দীর্ঘাদল ফুকরঃ গুগরঃ ভয়মিতিক্রীবেইল্ অভিধানাং। তথা চভীতি ভীঃ সাধ্বসংভয়ং। ৩১৭॥

क्र ९ अमी शिका।

জাল। আনীয়ন্তেমংদাদিয়োখনেনেতি। আনায়ঃ পুংদিজালং দ্যাদিত্যমরঃ। ৩৯৫॥

গুঢপ্রকাশিকা।

জালমিতি। জলঘাতন জীবন আচ্ছাদন সমৃদ্ধিয়ু জলতি মৎস্যাদিকমাচ্ছাদয়তীতি আদস্ত ব্যধ্য দিণ্ শ্যাদেণঃ স্যাৎ ণসুবদ্ধস্বাতশ্বিশ্বাদে বৃদ্ধিঃ। জলতি জীবতি কৈবর্তোহনেনেতি রায়ঃ এতশ্বতে কৃষ্যভিচারাৎকরণেণঃ ঘঞ্বা রুড়ন্বাৎ ক্লীবন্ধং। অহাত আনীয়তেহসো আনয়ঃ কুস্তাদিঃ স্বরাস্তাদল্ শুণঃ। ৩৯৫॥

क्र ९ अमी शिका।

শীঙো। পর্য্যায়েহ্বদরঃ। পর্য্যায়েহ্বদরেক্রমইত্যমরঃ। বিশেষেণশেতেহ্ত্মিন্নিতিবিশায়ঃ শয়নাবদরইত্যর্থঃ। রাজানমুপগম্যশেতেহ্ত্মিন্নিতি শয়নাবদরইত্যর্থঃ। অতএবেতি। দূত্রেপর্য্যায়ইতি-পাঠাৎ পরিপূর্ব্বেণোঘঞ্ অভ্যথান্থায়েযুক্তাতি নিয়মান্নস্থাদিতিভাবঃ। পর্য্যায়ঃ ক্রমইতিচাক্রঃ। ৩৯৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

শীঙ্ইতি। ব্যুপাভ্যাং পরস্মাৎশীঙ্মপ্নেইত্যস্মাৎ পর্য্যায়েহর্থেঘঞ্সাদিত্যর্থঃ। বিউপোপদর্গপরশীঙঃ শয়নাবদরোহর্থেঘঞাদ্যোত্যতে। বিশয়নং বিশায়ঃ যদ্বাবিশেষেণ্লেতহিস্মিন্নবদরেবিশায়ঃ উপশয়নমুপশায়ঃ উপনিকটেশেতহিস্মিনিতি বা উপণায়ঃ। রাজ্যোনিকটেতবশয়নাবদরইত্যর্থঃ। উপশায়োবিশয়ণ্চ পর্যায়শয়নার্থকাবিত্যময়ঃ। সেত্রিতি। সূত্রেভবঃ দৌত্রঃ অণ্তত্রজ্ঞাত মিত্যাদিনাহণ্
সৌত্র-চাদোপর্যায়ন্চেতিত্বস্যনির্দেশাৎ পাঠাদিত্যর্থঃ পরীণেঘঞ্ পরিপুর্বইণ্ গতাবিত্যস্মাদ্যঞ্। ৩৯৬॥

क्र अमी शिका।

অল্। দামান্ত প্রাপ্তবঞ্বাধকঃ। অলিগুণঃ জয়ইত্যাদি। স্বরাস্তত্বেনদিদ্ধেপি রুদ্রোপ্রহিন বিরুদার্থনিত্যাহ রুদ্রেবেতি। হ্রস্থনিয়মান্দ্রার্যাদলিত্যর্থঃ। ক্বিক্ষেপেগৃনিগরণেকরোগরঃ। অভিধানক্রীতিতীঃ দাধ্বসংভয়মিত্যমরঃ। অন্তথাঘঞাদিত্বেনপুংদীত্যর্থঃ। ৩৯৭॥

কৃচিদন্যতঃ। অন্যথাতোর্লক্যানুসারাদল্ভবঃ কচঃ রণঃ রণঃ রসঃ রশ প্রশঞ্চঃ উপরমঃ গোচরাপণ বছব্যজক্রমাঃ। সঞ্চরব্রজক্ষাখলাদ্য় আখালশ্চ অধিকরণকরণয়োরল্ গোচরাদৌ। ৩৯৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

আনিতি। ঘঞোপবাদইতি বিশেবস্থাদিতিভাবঃ। জিজয়েডুক্রীঞ্ দ্রব্যবিনিময়েফুক্সতো-প্লুগতোগ্রহ উপাদানে গম্৯গতো রঙ্গন্তকো রঞ্বরণে দৃঙ্আদরে দর্বত্রভাবেহল্গুণঃ। রুদ্রোরেবেতি। রুদ্রোঃ স্বরাস্তত্যাদিদ্বেহপি তয়োরেবেতিনিয়মাদিত্যর্থঃ। ঞি ভীভয়েভাবেহল্ভয়ং। অভিধানাৎ কোষাদিত্যর্থঃ। ৩৯৭॥

क्र९ अमी शिका।

কচি। স্বরান্তাদন্তধাতোঃ প্রদিদ্ধানুদারাৎ কৃচিদলস্থাৎ কৃতশ্চান্তত্ত্ত্ত্পিঞ্চঃ। লক্ষ্যং স্থাদ-পদেশেহপি শরব্যেহপি নপুংশকমিতিমেদিনী। প্রদিদ্ধানুদারাৎ ক্লেশক্রাভিচারনিরাদার্থমা। রুদ্রো–
রির্মান্ত্ ঞোহপান্তম্বাৎভরঃ কচ্বদ্ধনেকচঃ কেশঃ নাত্রঘঞ্ব্যভিচরঃ এবমন্তত্ত্বাবাধিকরণয়োঃ রণ্ ধ্বণ্ কৃণ্
শব্দে কৃণোবীণাকৃণিতে এতচ্চমতান্তরমাদায়োক্তং তত্তপ্রাদোবীণাকৃণিতেই প্রাপ্তিঃ তথাচবীণায়াঃ কৃণিতে-প্রাদেরিতি। স্বমতেতুকৃণঃ প্রাদোচতিদিদ্ধাতি। রয়গতো বশ্কান্তো পচিবিস্তারে। বিস্তারেইপি
প্রপঞ্চইত্যমরঃ। গোচরেত্যাদি। গোশব্দেন চক্ষুরপ্যুচ্যতেত্ত্বপলক্ষণত্ত্রা অন্তান্তপীন্দ্রিয়াণিগোশব্দেনবক্তব্যানি। গাবইন্দ্রিয়াণি চরন্ত্রাম্মিতি গোচরাইন্দ্রিয়ার্থাশ্চ । আপণঃ পণ্যবিথিকা। ক্ষম্প্রদেশস্তবহঃ। বিপ্রবাজোব্যজনম্ অলিনাজেব্যক্রিয়ুপাদবিক্ষেপে। ক্রমণ্টনক্রমণক্রে কল্পেনব্রেমাণ্ডান্ত্রিরিতিঃ আথ আথল থলিপর্যান্তেগোচরাদে। আদিনায্যসমাদ্রঃ। ৩৯৮॥

गृष्धकाणिका।

কৃচিদিতি। স্বরাস্তাদিভিয়ধাতাঃ লক্ষ্যানুশারাৎ প্রাসিদ্ধানুশারাদল স্থাদিত্যর্থঃ। অথাতিশায়ো-ভরইতিকচঃ কেশঃ শিরোরুহইত্যমরঃ। রণঃ কোণেকৃণেপুংসিদমরেপুয়পুংদকমিতি মেদিনী। নিকৃাণঃ নিকৃণঃ কৃণঃ কৃণনমিতি রয়ঃ স্থাদঃ। জবোহথেতিচামরঃ। রসআস্বাদনেহদন্তশ্চুরাদিঃ। রসোগন্ধরদেজলে। শৃঙ্গারাদৌবিষেবীর্য্যেতিক্তাদৌদ্রবরাগয়োঃ। দেহধাতুপ্রভেদেচপারদস্বাদয়োঃ পুমানিতিমেদিনী। বশঃ কাস্তাবিত্যমরঃ। উপরমোবিরতিঃ ব্যজোবিশিষ্টগতিঃ আথলঃ কোষগৃহাদিঃ আদিনাযমসাদয়ঃ। আথালইতি ঘঞ্চ চশব্দাদেতৎ। আথখইতিপাঠেনিমুঅবদারণে। তদর্থঃ থনিত্রাদিঃ। ৩৯৮॥

উপদর্গাদদোঘস্ঠ। অলিঘসাদেশশ্চ। বিঘাসঃ। ৩১১॥

ণশ্চনেঃ পরাং। অদোইল্স্থাৎণশ্চ। নিঘসঃ ন্যাদঃ ঘঞিতু্ঘস্স্যাদিতি পবিধানং। ৪০০॥

প্রসম্পূর্বমদেইর্বে। অল্স্যাং। প্রমদঃ সন্ধাদঃ সতাং। হর্বেকিং প্রমাদঃ। ৪০১॥

অপ্রাদৌমদ্ব্যধিজপাং। অল্স্যাৎনদোমন্ত্রজপোব্যধঃ। প্রাদৌতু প্রব্যাধঃ উপাজাপঃ। ৪০২॥

क्< श्रमीशिका।

উপ। ৯দকুবন্ধঃ সম্প্রদায়ঃ। বিঘদোবাস্তানং। উপদর্গাৎকিংঘাসঃ। যদ্যপিঘস্৯ধাতোরু পদর্গাদ্বিঘসইতিসিদ্ধ্যতি তথাপিকুদ্ধাভিচারেপ্যদোব্যদইতি নিরাসার্থমিদং। ৩৯৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

উপেতি। উপদর্গাৎপরস্থ অদ্ভক্ষণেইত্যস্মস্থানেঘদাদেশঃ স্থাদলিপরেইত্যর্থঃ॥ ৯কারাকু-বন্ধআদেশার্থঃ। বিশেষেনাদ্যতেহয়মিতি কর্ম্মণিঅলঘদাদেশন্চ। গুর্বাদিভোজনশেষোবিঘদঃ। অমৃতং বিঘদোযজ্ঞশেষভোজনশেষয়োরিত্যমরঃ। এবং ভাবেভোজনদামান্যেপ্রঘদাদয়ঃ। ৩৯৯॥

क्ट्थमीशिका।

ণশ্চ। অল্সাদিত্যমুবাদঃ পূর্বোহর্থঃ পূর্ববিশপ্রাপ্তেঃ। নিতরামদনংনিঘদঃ ন্যাদঃ ঘঞিতু ঘাসঃ। ৪০০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ণংশ্চতি। নেঃ মুপেদর্গাৎপরাদদোহল্ণশ্চস্থাদিত্যর্থঃ। নিঘদইতি। নিঘদঃস্থাদইত্যপীত্য মরঃ। নমুঘঞ্প্রত্যয়েদতিস্থাদইতিসিদ্ধাতি কুতোণবিধানমিত্যত আহ্ঘঞিজিতি। অদোঘদ্স্থাদিতি প্রাঞ্জেদ্ত্রেণঘঞিঘদ্স্থাদিতিহেতোঃ ণবিধানমিত্যর্থঃ। উপদর্গাদদোঘদ্কবিঘদেশশ্চনেঃ পরাদিত্যে-বংছন্দঃ। ৪০০॥

क्र अमिनिका।

প্রসং। চাকুৎকৃষ্টকাশ্লণাকুর্তিঃ। প্রমোদামোদসম্মদাইত্যমরঃ। আভ্যাং কিম্ উন্মাদঃ প্রমাদোহনবধানতা। ৪০১॥

গুঢপ্রকাশিকা।

প্রদানতি। মদীহর্ষেইত্যমাদল্। প্রধানপ্রত্যয়ত্বাংশকারস্থনানুর্ত্তিঃ। অপ্রধানত্বাং। এতদেববির্ণোতিঅল্সাদিতি। প্রমদনং প্রমদঃ এবং সম্মদঃ। মুৎপ্রীতিঃ প্রমদোহর্ষঃ প্রমোদামোদ-সম্মদাইত্যমরঃ। প্রমাদইত্যত্রভাবেঘঞ্। ৪০১॥ স্বন্হসোর্বা। অল্স্যাৎ। স্বনঃ স্বানোহসোহাসশ্চযোষিতাং। অপ্রাদাবি ত্যেবপ্রস্থানঃ প্রহাসঃ। ৪০০॥

সম্বিন্যুপেভ্যশ্চয়মঃ। অল্ম্যাদাঅপ্রাদেচি। সংযামঃ সংযমোয়মঃ। যামোপয়ামনিয়ামবিয়ামবিয়াদয়ং। চকারাভ্রদ্যমশ্চ। অন্যত্রস্থামঃ। ৪০৪।

क्र ९ प्रमी शिका।

অপ্রা। প্রাদিসম্বন্ধাভাবে। সূত্রোক্তদূর্ব্বোধাপত্তিভ্যাং নানদন্তাদ্বিভক্তেলু ক্তথাত্বেহপ্যস্থ নোপপদস্বমিত্যুক্তমুপপদসূত্রে। মদীরহর্ষেগ্রাপনেচব্যধ্তাড়নে জপ্মন্ত্রাব্বতো। মদেরেতসিকস্তর্য্যাং গর্বের্ব্ব হর্ষেভদানয়োরিতিমেদিনী। জপনং জপঃ ব্যধনং ব্যধঃ। ৪০২॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

অপ্রাদাবিতি। প্রাদীনামঅভাবঃ অপ্রাদিঅভাবেচেত্যব্যয়ীভাবঃ। অব্যয়ীভাবস্য ক্লীবিলঙ্গছে২পিস্ত্রেলিঙ্গবচনকালাশ্চাস্বতন্ত্রানীতিবচনাৎ পুল্লিঙ্গতা তেন অনদন্তাদ্বিভক্তেলুর্গিতিবিভক্তিলোপঃ।
মদইতি। মদনংমদঃ ভাবেহল্। মদোদানমিতি মদউদ্বেগউদ্ব্রমইতি হর্ষেহ্প্যামোদবন্মদইতি
চামরং জপ্ভাবণেমানসেচমন্ত্রসাজপইতিবৃষ্ঠিদমাসঃ। স্বাধ্যায়ঃ দ্যাজ্জপইত্যময়ঃ। যতুমন্ত্রজাপং
পুরাকরোদিতিশ্রেতে তত্ত্রপ্রজাদিতস্তবেতিসার্থেহণ্প্রত্যয়েনসিদ্ধিঃ। ব্যধোবেধেইত্যময়ঃ। ভেদোপ
জাপাবিত্যময়ঃ। ৪০২॥

क्ट अमोशिका।

স্ব্। স্থান্ত্র অপ্রাদ্ধিল বাস্তাৎ। শব্দেনিনাদ্নিনদ্ধানিরবস্থনাঃ। স্থান-নির্ঘোদনির্ঘননিস্থাননিস্থনাঃ। হুসোহাস্চহাস্ত্রতেমরঃ। ৪০৩॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

স্বন্হসোরিতি। সর্ববিভাবেহল্। প্রস্থানঃ প্রকৃষ্ঠবানিঃ। প্রহাসইতি নিক্ষুটব্যঙ্গোক্তিঃ প্রহাসঃ। ৪০৩॥

क्र श्रमी शिका।

সম্বি। অপ্রাদোসম্বিনিউপেভ্যশ্চযমোহল্কান্তাৎ। সংযমনং সংযামইত্যাদি। চকারোহনুক্ত সমুচ্চায়কঃ। সমাদিভ্যোহ্যাত্রস্থামঃ। ৪০৪॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সমিতি। উদযমশ্চেতি। গুরণমুদ্যমেইত্যমরঃ। যমুউপরমেইত্যস্পপ্রয়োগাঃ।৪০৪॥

নৌগদ্নদ্স্বন্পঠাং। অল্ যঞৌস্যাতাং। নিগাদোনিগদোষথা। বেণোর্নিনাদোনিনদোনিস্থানো নিস্থনোইলিনাং। নিপাঠনিপঠোপাঠে। নৌকিংনাদঃ প্রণাদঃ। স্বন্হসোর্বেতিস্বন্পাঠাৎ অপ্রাদর্রতিঃ। ৪০৫॥

পণতেশ্চ। অপ্রাদৌ নৌচপণতেরল্স্যাদ্ব। পণঃ পাণঃ। নিপাণো নিপণঃ। ৪০৬॥

. পরিমাণেজুনৈত্যিকঃ। ইয়ন্তায়াং গম্যমানায়াং পণতের্ন্নিত্যমল্স্যাৎ। আদ্রুকিপণঃ শাকপণঃ স্বর্ণপণঃ মূলকনিপণঃ। সম্যবহারার্থং মুফিতোলকাদ্য বচ্ছেনঃ পরিমাণং। ৪০৭॥

क्लथमीशिका।

নো। নিগদনংনিগাদইত্যাদি। ননুপ্রাদেঃ কথংনাত্রসম্বন্ধইত্যত আহস্বনহসোর্বেতীতি। যদ্যপ্রাদোচস্বনোহনেনাল্ডাৎ তহিস্বনহসের্বেত্যত্রস্বনঃ প্রাদাবলর্থং স্বন্পাঠোব্যর্থোনিবিবশেষাৎ অতোত্রস্বনিনাপ্রাদিসম্বন্ধঃ তৎসাহচর্য্যাদগদাদিম্বপি কিন্তু বাধকাভাবাৎ পরত্রান্ত্রবৃত্তিরস্তীতিভাবঃ। ৪০৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

নাবিতি। নৌমুপেদর্গেউপদদে। গদ্ব্যক্তায়াংবাচি নদ্শব্দে পঠ্ব্যক্তায়াংবাচি। এষাংবাজন্ স্থাদিত্যর্থঃ। বেনোর্ব্ধংশ্যাইত্যর্থঃ। অলিনাংভ্রমরানাং। মধূকরোমধূলিগ্রধুপালিনইত্যমরঃ। নিপাঠ নিপঠোপাঠেইত্যমরঃ। নাদনিস্থাননিস্থনাইত্যমরঃ। প্রণাদস্তপুমান্তারশব্দেচ প্রবনাময়েইতি মেদিনী। ৪০৫॥

क्र ९ श्र मी शिका।

পণ। অপ্রাদোনোচ। পণ্ব্যবহারেস্ততোচপণনং পণঃ পাণঃ নিপানোহধিকরণেচ। পণোবরাট মানেস্ঠাম্পুল্যেকার্যাপণেগ্রহে। ক্রয়শাকাচীকাদ্যুতব্যবহারেভূতোধনেইতিমেদিনী। ৪০৬॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

পণতেরিতি। কার্ষিকেতাত্রিকেপণইতি ভরণ্যংভরণংমূল্যংনির্বেশঃপণইত্যপীতিচামরঃ। ৪০৬॥

क्ट्थमीशिका।

পরি। নিত্যমেবনৈত্যকঃ স্বার্থেহণ্কো। অণ্তত্তেতিকেচিৎ। পরিমিতিঃ পরিমাণমিয়ন্তা এবন্মুস্টিতোলকাদ্যবচ্ছেদঃ। পণ্যতেপরিমীয়তেহসোপণঃ বিক্রয়শাকাদিমুস্টিরুচ্যতে। তথাচ পণো বিক্রয়শাকাদিবন্ধমুক্তো ভূতোধনইতিবিশ্বঃ। আর্দ্র কপণইতি। আর্দ্র কন্তপণইতি ষষ্ঠীসমাসঃ বিক্রয়ার্থং বদ্ধমুস্টিরিত্যর্থঃ। এবং শাকপণঃ মূলকনিপণইতি। স্বর্ণেতি। ব্যবহারার্থং স্বর্ণস্ততোলকাদি

385-C

কণঃ প্রাদেবিণায়াং। অপ্রাদেবিনীচকণতেরলস্যাদ্ব। নৃপুরাদিকণে। বীনাবিষয়েপ্রাদেবি। নিকাণোনিকণঃ কণঃ। কঙ্কণানাং। কাণপ্রকাণ প্রকাণা বীনায়াঃ। বীনায়াং কিম্অতিকাণোভের্য্যাঃ। ৪০৮॥

পরিমাণমিত্যর্থঃ। ব্যক্তমাহদন্ত্যবহারার্থং সম্যক্ ক্রয়বিক্রয়ার্থং মুষ্টিতোলকাদিনাহবচ্ছেদোহন্যনানতি রিক্তত্বমিদমেতাবদিতীয়ত্তাপরিমাণমিত্যর্থঃ। আদিনাদজ্যাবিতস্ত্যাদিপরিগ্রহঃ যথাকপর্দকপণঃ ইক্ষুপণঃ ব্যবহারাদ্যর্থং কপর্দকস্থাবিংশতিগগুকঃ বিক্রয়ার্থমিক্ষোব্বিতস্ত্যাদিমিতাবচ্ছেদইত্যথে । পুনরারস্তান্ধিত্যতালাভেহপিতত্বপাদানং পরত্রবান্থবর্ত্তনার্থং। ৪১৭॥

গুঢপ্ৰকাশিকা ৷

পরীতি। পরিপূর্ব্ব মামানেপরিমিতিঃ পরিমাণমিতিভাবেহনট্ভাদিবর্জং স্বরাৎকৃমোণঃ স্থাদিতিণস্বং। নিত্যেভবোনৈত্যিকঃ অধ্যাত্মাদের্ভবার্থেস্থাদিতীকণিরদ্ধিং। নৈত্যকইতিপাঠে প্রজ্ঞাদিত্বাহ স্বার্থেহণ্ততঃ স্বার্থেকঃ॥ তুশকঃ সমুচ্চয়ে। পণতেশ্চপণঃ পাণঃ পরিমাণেভুনৈত্যিক ইত্যেবং ছলঃ।৪০৭॥

क्९ श्रमीशिका।

কৃণঃ। নূপুরাদি কৃাণে বর্ত্তমানাদপ্রাদে নাচ কৃণতেরল্বাস্যাদিত্যেকং সূত্রং বীণাবিয়কে ধান্বর্থে বর্ত্তমানাৎ প্রাদেচি চকারাদপ্রাদেচি কৃণতেরল্বাস্থাদিত্যপরং তেন বীণাকৃণিতে কৃণোহপি ভাবীতি নব্যন্ত্রে। প্রাচাং নয়েবীণায়াং প্রাদেচিতি চোহ্বধারণে তেন প্রাদাবেবালিতি তথাচ বীণাগ্রহণং প্রাদ্যর্থং প্রকৃণঃ প্রকৃণঃ। ঘঞ্ নিয়মাৎ কৃণইতি প্রাঞ্চঃ। ভূষণানাস্ত্র শিঞ্জিতং। নিকৃানোনিকৃণঃ কৃাণ কৃশঃ কৃণনমিত্যপি। বীণায়াঃ কৃণিতে প্রাদেঃ প্রকৃণ প্রকৃণণাদয়ইত্যমরোপি। অতএবস্থাগ্রহণবদ্বীণা গ্রহণাদেব প্রাদ্য প্রাদিলাভেপ্যব ধারণার্থত্বনোদ্ধত্মিতি বীণাকৃাণে কৃণইতিনোদাহতঞ্চ। ৪০৮॥

गृज्यकानिका।

কৃণইতি। অপ্রাদেশ কৃণ শব্দে ইত্যন্থাৎ বীণায়াং বীণায়াং শব্দে প্রাদেশিক কৃণ শব্দে ইত্যন্থাৎ বীণায়াং বীণায়াং শব্দে প্রাদেশিক প্রাদাবেব তন্মাদ্বাহল স্থাদিত্যর্থঃ। চোহবধারণে। তু স্থান্তেদেহবধারণে ইত্যনরঃ। সূত্রার্থং বিব্ব-শোতি অপ্রাদাবিতি। প্রাদেশিক প্রাদাবেব নিয়মম্বালং প্রতিতেনা প্রদেশ ঘঞ স্থাদেব অতএব কান প্রকান প্রকৃণাবীনায়া ইত্যুদাহতং। অতিকৃণইতি। অতিশয়শব্দইত্যর্থঃ। ভেরীবাদ্যবিশেষযন্ত্রং। ভেরীস্ত্রী তুন্দুভিঃ পুমানিত্যমরঃ। অবীনায়াং প্রাদেশিনাল কিন্তু ঘঞেব। কৃণঃ প্রাদেশি বীণায়াং নিকৃণোনিকৃণঃ কৃণইত্যেবং ছন্দঃ। ৪০৬॥

শ্লে থিক। এথেমগর্ভ গ্রহণেদর্ত্তেরল্ন্যাৎ। গ্রামুপসরঃ উপসারো-ইন্যঃ। ৪১০॥

क्रथमिशिका।

মহো। অক্ষোজ্ঞাতার্থ শকটব্যবহারের পাশকে ইত্যক্ষশব্দেনদূত্যভিধীয়তে। গৃহতেহসে পণোহক্ষের গ্লহইত্যমরোক্তঃ। এতেনাক্ষেগম্যে নতু বাচ্যে। যদাতু অথাক্ষমিন্তিয়ে। নাদ্যতাঙ্গ ইত্যঙ্গকল্পনয়ালক্ষণয়া বা ক্ষপণএবতেনাভিধীয়তে তদাক্ষোবাচ্যোভবতি। তথাচ গ্লহীকৃততনারিতি ভারবো অক্ষাকৃতাত্ত্যুয়েন যুধিষ্ঠিরেণেতি বিগৃহীতং। রশ্চলইতি। অল্ স্বরান্তেত্যল্ দিদ্ধাবত্তরলত্ত্ব মাত্রং নিপাত্যতে। কপিরিকাদি প্রপঞ্চইতি কলাপটীকা। তবায়ং গ্রহণং গ্লহং অক্ষেহজ্ঞানমিত্যর্থঃ। যত্ব্যাত্যক্ষীমভিসরণ গ্লহামিতি মাঘে তৎক্ষ্যভিচারাৎ কপিরিকাদি ত্বাদ্বানক্ষে সাধু। যদ্যেবং দূত্রং কিং নৈব্য অক্ষেভ্যোহর্থহাৎ। ৪০৯॥

গ্ঢ়প্ৰকাশিকা !

গ্লহীত। অক্ষেদ্যতে গৃহীতপণেগ্লহঃ অথাক্ষেগমোগ্লহোহল্ স্থাৎ। গ্লহশব্দস্যাক্ষবিষয়কপণ বাচকত্বেনাক্ষস্থ গমামানত্বমবিরুদ্ধং রশ্চলইতি। কপিরিকাদিস্থাদিতিভাবঃ। গ্লহীকৃততনোরিতি কিরাতাভর্জুনীয়ে তত্র গ্লহীকৃতা অক্ষেপণীকৃতাতকুঃ স্বশরীরং বেন ইত্যর্থঃ। বতুমাদে ব্যাত্মক্ষীমভিসরণ গ্লহামদী ব্যন্নিতি তদপি অভিসরণং কান্তিঃ সহস্বয়মভিগমনং গ্লহোহক্ষেপণইব বস্থামিতুংপ্রেক্ষিতত্বান্ন বিরুদ্ধঃ। অক্যত্রাক্ষ বিষয়কপণাদন্যত্তেত্যর্থঃ। গ্লহইতিসিদ্ধপদোপাদানাত্রবা প্রবৃত্তিঃ। ৪০৯॥

क्र९अमीर्शिका।

দর্ভেঃ। প্রজনার্থমাহ প্রথমেতি। স্ত্রীগবাদিয় পুঙ্গবানাং গর্ভাধানায় প্রথমমূপসরণে। প্রজনঃ স্থাতপসরইতামরঃ এতেন প্রজায়তেহনেনেতি করণেযক্ত। গ্রহণইতি। কার্য্যেকারণোপচারাৎ কারণেহনভিধানত্বাত্তদর্থতা। উপসরণমূপসরঃ গর্ভাধানার্থ স্থরতাভিলাধিনোগবাদেরুপসরণমিতিভট্টঃ। উপসারোয়ত্র তত্ত্ব উপাগমনমিত্যর্থঃ। কেচিদ্যথাশ্রুতমেব ব্যাখ্যান্তি তদযোক্তিকং। ৪১০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সর্ত্তেরিতি। সগতো ইত্যস্থাৎ। প্রজনইতি। প্রজায়তেহিম্মন্নিতি ব্যুৎপত্যা প্রথমগর্ভগ্রহণ মৃচাতে। অতএব বির্ণোতি প্রথমগর্ভগ্রহণে সর্ত্তেরল্ স্থাদিতি। সর্ত্তেরিতি ছন্দোহসুরোধান্মসরতেরিতি। ত্রণাদিকতি প্রত্যয়োবা। গ্রামুপ্সরঃ স্ত্রীগ্রীনাং প্রথমগর্ভগ্রহণমিত্যর্থঃ। উপসারইতি। উপসরতি অগ্নিত্যিধকরণে যঞ্ অন্যোগ্রামাদিঃ। ৪১০॥

সমুদ্রামজতেঃ পশো। পশুসম্বন্ধেগম্যেইজতেরল্স্যাৎ। সম্পুর্বোইজিঃ সমুদায়ে। পশুনাং সমজঃ উদজঃ পশুপুরণং। অ্যাত্রসমাজঃ সাধুনান্ উদাজঃ থলানাং। অল্যঞ্ক্যপ্স্নাজেরীঃ। ৪১১॥

অর্থভেদে প্রাদিষোগেচাল্যঞোব্যতায়ঃক চিং। লক্ষ্যান্সারাং। যথা সখ্যা প্রস্থানিপরিমাণেযঞ্একস্তণ্ড্লমিশ্চায়ঃ দৌশৃপৌ ধান্যমিপাবৌনিস্তম ধান্যং শূর্পদ্বয়মিত্মিত্যর্থঃ। প্রস্থ প্রচায়ঃ অল্চএকোনিচয়ঃ। উর্ন্নোর্গিরতে র্যঞ্। উদ্ধারঃ মিগারঃ। কিরতের্ধান্যবিষয়ে। উংকারোনিকারশ্চধান্যানাং। নৌরঞঃ। নীবারাব্রাহয়ঃ। প্রেক্রস্ত ক্রবঃ। ঘঞ্। প্রদাবঃ প্রস্তাবঃ প্রস্তাবঃ। উদিনীপ্রিপ্রভ্যোবা। ঘঞ্। উন্নায়ঃ উন্নয়ঃ উপ্রয়ঃ উপ্রয়ঃ উৎপ্রবঃ। আচ্ছাদনেপ্রাবারঃ। প্রবঃ। কৃষ্ণাবতারঃ। ভয়স্য পূর্বাবতরঃ। যবো যাবো দবো দাবো নয়ো নায়ো ভবো ভাবইত্যাদয়ো-দ্বের্যাঃ। ৪১২॥

क्ल्थमोिका।

সমু। অজ্গতিক্ষেপণয়োঃ। উদজঃ পশুপ্রেরণং পশ্নাং সমজোহত্যেযাং সমাজোহথসধর্মিণামি-ত্যমরঃ। উদজনমুদজঃ। অহ্যত্রপশোরহাত্রউদাজঃ উদ্গমনমিত্যর্থঃ। সংসভাতোনিঃ সরণ-দ্বেত্যর্থঃ। ৪১১।

গৃতপ্রকাশিকা।

সমৃদ্যামিতি। পশুসম্বন্ধেপশুসমূহেগম্যে। পশুসমূহস্থপশুতোহনতিরিক্তরাৎ পশাবিত্যক্তং। সম্পূর্ব্বোহজিরিতি। ধাতৃনামনেকার্থরাৎ সম্পূর্ব্বোহজ্ধাতৃঃ সমুদায়েহর্থেবর্ততে সমুপসর্গস্ততদর্থদ্যোতকঃ ক্ষচিদ্রিদ্রতিধাত্বর্থমিতৃ্যক্তরাৎ। অলিতি। অজেন্ধীরননাদিষিত্যক্তরাৎ অল্ ঘঞ্ ক্যপ্ স্থ অজেন্ধী-রাদেশোনস্থাদিত্যর্থঃ। ৪১১॥

क्रथमीशका।

অর্থ। সন্ধ্যাপ্রস্থাদীতি কিরতের্দ্ধান্যত্যাদ্যর্থ বিশেষেগম্যে উর্ম্যোর্গিরতেঃ নৌর্ঞইত্যাদি প্রাদিসম্বন্ধেচ সতি কৃচিদল্ ঘঞোর্বিপর্য্যয়োভবতী ত্যুপসংহারঃ কৃতশ্চান্যত্তেতি প্রপঞ্চঃ। ভেদোরিধেধিবিশেষেন্সাত্নপঙ্গাপেবিদারণে। স্থান্নত্যাদোবিপর্য্যাদোব্যত্যয়শ্চবিপর্যয়ইতি মেদিণ্যমরে)। যথেতি নিদর্শনে কাংশিচদ্দর্শয়তীত্যর্থঃ। সন্ধ্যাতি। সন্ধ্যাচ প্রস্থাদিপরিমাণঞ্চেতি হল্বঃ তন্মিন্ গম্যেত্হাচ্ কৈকাদি প্রস্থাদিশন্দেত্তি দেশব প্রস্থামানেহলবাধো ঘঞিত্যর্থঃ। তত্ত্রসম্যাদেক ইত্যাদি। নিশ্চয়নং নিশ্চায়ঃ তণ্ডুলেন ষষ্ঠীসমাসঃ উপচিতস্তণ্ডুলরাশিরেক ইত্যর্থঃ। দ্বৌশূর্পাবিতি। পৃঙ্ প্রবনে নিম্পাবঃ ভারস্থমানাযোগ্যন্থালক্ষণয়া কর্ম্মণিযঞ্ বা পবিত্তীকৃতধান্যমেবাচ্যতে ততোধান্যেন-

কর্মধারয়ঃ পশ্চাৎ কারণেকার্য্যোপচারেণ শূর্পমিতনিষ্পৃতধান্তরাশিষয়ে শূর্পশব্দপ্রয়োগাদ্ধান্তনিষ্পারে বে শূর্প।বিভ্যুক্তম্ অর্থস্তনিস্তমধান্যং শূর্পমিতরাশিষয়মিতি। নিষ্পাবঃ শূর্পপবনেরাজমাষেকড়ঙ্গরুইতি মেদিনী। নিষ্পাবপবনেপবইত্যমরঃ। ধাস্তাদীনাম্বত্লীকরণস্তত্ত্রমিতি রায়ঃ। যদ্বাকরণেঘঞ্ দ্বৌ শূর্পে গিল্ডানিস্পবনেদাধকতমাবিত্যর্থোহ্পীতে রাদ্যর্থত্বাদ্বোদ্ধব্যঃ। প্রস্থাদিপরিমাণোপপদে যথা প্রচয়নং প্রচায়ঃ লক্ষণয়া কর্মাদিব্যুৎপত্ত্যা বা পুঞ্জীকৃততণ্ডুলরাশিরুচ্যতে তথাপ্রস্থশব্দেনচ প্রস্থমিতসত্রবোচ্যতেইতি তেন কর্মধারয়ঃ প্রস্থমিততভুলরাশিরিত্যর্থঃ। যদ্বাকরণব্যুৎপত্যাতভুলপ্রচায় পরিমাণেপ্রস্থঃ সাধকতমইতার্থঃ। প্রস্থার্থোমিতনখসূত্রবিবরণেউক্তঃ। এবং খারীনিশ্চায়োদ্রোণ নিম্পাবইত্যাদি। অল্চেতি। কৃদ্বাভিচারপ্রপঞ্জাদিত্যর্থঃ। তথাচ নিপূর্বাচ্চিঞঃ স্থাাবচ্ছিমোপচয়ে পুঙস্তথাপননেপ্রচিঞঃ পরিমাণাবচ্ছিয়োপচয়েঘঞিত্রর্থঃ। তস্মিন্ কিং নিচয়ঃ নিষ্পাবঃ প্রচয়ইতি ধার্থবিংতা:। উল্লোরিতি। গিরতেরিতি নির্দেশাৎ গৃ নিগরণে ন ব্দাদি গৃ শব্দেউদগরণমুদগারঃ উৰমন প্ৰনিশ্চ। তথাচন্দ্ৰালোকে অটবী গাহ্মানাস্তেগজোদ্গাররবাকুলামিতি তৰ্হিগৃশব্দেইত্যস্থনিরা-সোবার্থংগ্রইতি নির্দ্ধিশ্যতামিত্যুচ্যতে নোকেবলশব্দার্থপরিত্যাগাৎ। নিগারোভক্ষমিতি বজ্রঃ। নিগারোদগারবিক্ষাবোদ্ গ্রাহাস্ত্রগরণাদি ষিত্যমরঃ নিগারোহভাবহারেউদ্গারোবমনশব্দ ইতি। কিরতে-রিভি। ধান্যবিষয়েধাত্বর্থে। কিরতেরিভি নির্দেশাৎ কৃবিক্ষেপেনকীর্ণাভেঃ। উৎকারশ্চ নিকারশ্চ ছোণান্যেং ক্ষেপণার্থকাবিত্যমরঃ। কর্মণাপি অটবীংগাহ্মানাস্তেগান্যাংকারাম্বিতাং কৃচিদিতিচন্দ্রা-লোকঃ। উৎকারোরাশিরিতি কাতন্ত্রটীকা। ধান্যবিষয়ইতি কিং মুষিকোৎকরঃ। কুদ্যভিচারাৎ নিকারঃ স্থাৎ পরিভবেধানাস্থোৎ ক্ষেপণেহপিচেতি মেদিনী। নো। বাচ্যবেন ধান্যবিষয়েধার্থে। বিষ্ঠেপবিত্রাম্নিভিভূজিউটিত উড়িকাখ্যাঃ। তৃণ্ধান্যানিনীবারাইত্যমরঃ। যদাপি ব্রাহয়ইতি সামানোনোক্তং তথাপিপ্রসিদ্ধরাত্তেএবভণ্যন্তইতি বজ্রঃ। প্রে। প্রদ্রবনং প্রদ্রোবঃ। প্রস্তাবং স্থাদবসরঃ সূত্রং প্রস্রাবঃ। এবং প্রদ্রাবোদ্দ্রার সংদ্রাব বিদ্রাবাবিদ্রবোদ্রবঃ। অপক্রমোহপ-মানপেতামরঃ। উদি। উলায় উলয় উচ্ছায় উচ্ছায় উর্জিবিস্তারঃ। সমুচ্ছায়োহপি নহিসমুপপদেনো-ছুপপদরং বিহন্ত ইতি। প্রাদ্যোগোশিরো মিত্যং ঘঞ্। উৎপ্লবনমুৎপ্লাবঃ। আচ্ছা। আচ্ছাদনে বস্ত্রেশ্চ্যে অস্তর্থাত্তেপিনোপপদর্মাত্যক্তমুপপদরং। প্রাসিদ্ধাতু প্রপূর্ব্বাৎ তথাচ'প্রতিবরইতিচন্দ্রঃ। আচ্ছাদনে প্রাণারপ:ঠোডদ্রঃ প্রব্রিয়ন্তেখনেতি প্রাণারউত্তরাসঙ্গঃ কম্বলেখপিচ প্রাণারঃ। প্রবরং সন্ততোগোতে ক্লীবং শ্রেষ্ঠেতু বাচ্যবদিতি মেদিনী। বৈকল্পান্যনাং শ্চাল্ ঘঞ্স্তানাহ কৃষ্ণেত্যাদি। কৃষণভিচারাৎ কর্ত্তরিঘঞ্। অবতরণমবতরঃ। সমংসরেণা হুরইত্যুপেয়ুদা চিরায়নাম্নঃ প্রথমাভিধেয়তাং। ভয়তা পূর্কাবতরস্তরস্বিনাং মনঃ প্রযেনত্নাসদাং অধীয়ত ইতিমাঘঃ। যবেবেগঃ। যাবোহলক্ত ক্রমাময়ঃ দবোদাবোবনারণ্যবহ্না জমাহরো ভবো। আদিনাপরিভাবঃ পরিভবঃ নিগ্রাহোনিগ্রহ ইত্যাদয়োব্যত্যয়া দ্রফব্যাইত্যুপদংহার:। পরৈস্তবাতরতেঃ যোতেশ্চনী ভুবোরিত্যাদিনা সাধিতং। ৪১২॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

অর্থেতি। অর্থভেদে প্রাদিযোগেচ চকারাৎ প্রাদ্যযোগেগ্র্ভেদেসতি অল্ ঘঞোঃ কচিৎ প্রসিদ্ধ প্রয়োগেব্যত্যয়ঃ অল্ প্রাপ্তিস্থলে ঘঞ্ অঞ্ প্রাপ্তিস্থানেহলিত্যর্থঃ লক্ষ্যানুসারাৎ প্রয়োগানুসারাদিত্যর্থঃ।

অত্যুপনিবিষুহ্বেঞােহব্চ। অল্স্যাৎ হবাদেশক। অভিহবোন্ণাং নিহবঃ। এষুকিং প্রহ্বায়ঃ। ৪১৩॥ আহবইতি যুদ্দেন্যাং। যঞ্চনিপানে। ৪১৪॥

যথেতি প্রসিদ্ধপ্রয়োগদর্শনার্থং। সখ্যায়াং দর্শয়তি এক ইত্যাদি। প্রস্থাদি পরিমাণেদর্শয়তি প্রস্থ প্রচায় অল্চেতি। স্বরাস্তস্থাদল্চেত্যর্থঃ। তথাচব্যত্যয়োনৈত্যিকোবৈকল্পিকশ্চ উভয়ত্রব্যত্যয়স্ত তোল্যাদিতিতাবঃ। চিঞ্চয়নে নিচয়ঃ সমূহঃ এবং নিশ্চয়ঃ সচ তদভাবাপ্রকারত্বেসতি তৎপ্রকারক জ্ঞানং। ধান্যবিষয়ইতি। ইদং প্রায়িকত্বাত্নক্তং তেনবিকারঃ স্থাৎ পরিভবেধান্যস্থোৎক্ষেপণেহপিচেতি মেদিন্যুক্তং সঙ্গচ্ছতে। যদ্বানিপূর্বকৃঞোনিকারঃ পরিভবে কিরতের্ন্নিকারস্ত ধান্যোৎক্ষেপণে নিকারইঙি আকার সাম্যাত্মক্তং। যথোক্তং তত্ত্বৈর কায়ঃ কদৈবতে মূর্ত্তোইতি তত্ত্বকঃ প্রজাপতির্দেবতাহস্তেত্যর্থঃ দেবাদণ সাম্মদেবতেতি তদ্ধিতাণিকঃ কৈচেতি কম্মকৈ আদেশকায়ঃ মূর্ত্তোভুচিধাতোর্ঘঞি কিশ্চাবাদে শরীরেচেতি চিঞঃ কিআদৌ রুদ্ধোকায়ইতি। প্রদ্রাবইত্যাদি। ক্রগতো ফুঞ্ স্তুতো ক্রক্ষরচণপ্রস্তাবঃ স্থাদবদরইতিসূত্রং প্রস্রাবইতিচামরঃ। উদীতি। উতুপদর্গে উপদেশ নীঞ্প্রাপণে শ্রিঞ্ দেবায়াং প্লগতো এভ্যোবা ঘঞ্। উন্নায় উন্নয়েইতি নগাদ্যারোহ উচ্ছায় উৎসেধন্চোচ্ছায় দুইতি চামরঃ। উৎপ্লাব উৎপ্লবন্দোর্জবিস্তার উচ্চুয়োন্নয়াবিতিকোসঃ। প্রাবারইতি। রুঞ্ আবরণে উপদর্গস্থাযঞ্স্তে ইতিদীর্ঘঃ। দ্বোপ্রাবারোভরাসঙ্গাবিত্যমরঃ। অল্চ প্রবরঃ। অত্যাংশ্চ ঘঞ্ লন্তান দর্শয়তি কুষেতি। কুষ্ণস্থাবতারইতি বিগ্রহঃ তৃপ্লবনসন্তরণয়োঃ। অবতারোহবতরণে পুন্ধরিণ্যাদিতীর্থয়োরিতি মেদিনী। বনজোবনজো থকাস্ত্রিরামাঃ সক্পোহকৃপঃ। কল্যাণং তবকুকান্ত অবতারাহবেদ্দেশত্যতাবতারপদং নঞোহনিত্যত্বাহ কর্ত্বঞাসিদ্ধং। যবইত্যাদি। যুমিশ্রণে যুয়তেহস্তদেতি যবঃ। শিতশূক যবে সমাবিতি নয়োনায়েইতি ভাবঃ সত্তস্বাভাবাভিপ্রায় চেফীত্মজন্মস্ত। স্থাদুৎপাদেইতিচামরঃ। অত্তনায়ঃ ভাবইতি দ্য়ভিনেয় অল স্বাস্তেত্যাদিনাংল্ প্রাপ্তো তদাধকোঘঞ্ নয়োভবইত্যত্রতু প্রাদ্যযোগেশ্রিনী ভূভাইতি ঘঞ্ প্রাপ্তোতদাণকোহল্। ৪১৩॥

क्र ९ अमोशिका।

অভ্যু। আদন্তব্বেন ঘঞ্ প্রাপ্তাবল্বিধীয়তে। হ্বেঞ্ আহ্বানে অভিহ্বানমভিহ্ব ইত্যাদি। ৪১৩॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

অভ্যূপেতি। ইঙাদন্তাদ্যঞ্ প্ৰাপ্তো তরাধকোংল্ বিধীয়তে। অভিহব আহ্বানম্ এবমুপহ্বঃ বিহবইতি। ৪১৩॥

क्र९ अमोशिका।

श्रार । আঙ্ পূর্বাৎ হোযুদ্ধেংলি আহবঃ। সংগ্রামাভ্যাগমাহবা ইত্যমরঃ! নিপানে। অল্ ঘঞে হ্বাদেশন্চ আহবঃ। আহ্বস্তুনিপানং স্থাত্নপুকুপজলাশয়েইত্যমরঃ। ৪১৪॥ হবোভাবে। আহ্য়স্তেবীরাগাবোবাজলপানায়াম্মিন্নিতি নিপানে আহবঃ সাহবশ্চ হবোহূতি অন্যত্রাহ্বায়ঃ। ৪১৫॥

হস্তের্ধ্র। অপ্রাদৌহস্তেরল স্যাণভাবেবধাদেশক। হননং বধঃ চকা-রাদ্যাতঃ প্রাদৌতুবিঘাতঃ। ৪১৬॥

যন্চ কাঠিন্যে। হস্তেরলিপরে। অন্মুমুচাং যনং। দধিয়নইতিপুংসীত্যন্যে। যনং দধীত্যভেদেপচারাং। ৪১৭॥

গৃত্পকাশিকা।

আহবইতি। সোদাহরণং সূত্রং। ঘঞ্চেতি চকারাদল্চ। ৪১৪॥

क्रथमीशिका।

হবো। আজ্ঞাধ্বরাহ্বানইত্যধ্বরেহ্দানেসাধ্যং ভাবেহ্নুপদর্গাদলি। হবোহুতাবিত্যমরঃ। ভাবইত্যর্থান্তরনিরাদার্থং। যুদ্ধনিপানানুপদর্গভবেভ্যোহ্মত্র আহ্বানমাহ্বায়ঃ।৪১৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হবইতি। ভাবেবাচ্যেহবঃ স্থাৎ। আহ্বাদের্য্যোগার্থন্দর্শয়তি আহুয়ন্তইতি। আহুয়ন্তে বীরা অশ্মিন্নিতি আহ্বযোগার্থঃ আহ্বায়ইতি। আদন্তাদ্যঞিইজুদ্ধাবে ইচ্যাদন্তভ্যোযুডিতিযাগমঃ। ৪১৫॥

क्रथमी शिका।

হন্তে। অপ্রাদিবিতি বিশেষাভাবাদপ্রাদে মহাধীত্যতোহসুবর্ত্তনাৎ প্রদিদ্ধেক্ষাক্তং। হবোভাব ইত্যতোহসুবর্ত্তনাদ্ধাবইতি। ভাবেকিংঘাতশ্চৌরঃ। ৪১৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

হন্তেরিতি। হন্হিংসাগত্যোরস্মাদল্ ভাবেহলিবধাদেশশ্চ। চকারাদিতি। চকারস্থ সমুচ্চয়ার্থস্থাৎ নকেবলম লিবধাদেশোঘঞিঘাতাদেশশ্চ অন্যথাভাবেঘাতইতি প্রয়োগানুপপত্তেঃ। নচালিঘাতাদেশশ্চেতি বক্তব্যমিতিবাচ্যং তশ্মিন্ঘাতাদেশস্থ সূত্রাভাবাৎ হন্তেস্তব্যৎ স্মৃতইত্যস্থ ঞ্জুবন্ধেকৃতিবিধনাৎ। ৪১৬॥

क्र ९ अमो शिका।

ঘন্চ। কাঠিন্সেইভিধেয়েভাবেইলিঘনাদেশঃ প্রকৃতেরাদেশবিধিঃ। নিবিড়াবয়বসংযোগঃ কাঠিন্সং যক্ত নিবিড়াবয়বসংযোগস্তক্তান্তেন্সমপি ভবতীতি হননং ঘনং নিরস্তরমিত্যভিধানাৎ দ্ব্যভিচরাদ্বাক্লীবং। অন্যেকুর্গিসিংহাদয়ঃ ঘঞাদিয়াৎ পুংসিত্যাহঃ। ঘনোমেঘেমুর্তিগুণেত্রিয়ু মুর্ত্তেনিরস্তরইত্যমরঃ। ঘনং দ্বীতিভাব প্রত্যেহিতুল্যাধিকরণং নযুজ্যতে তথাপিধর্মধর্মিণোরভেদারোপাৎ সমানাধিকরণং যথাপটুঃ পুরুষইতি। কচিদপবাদবিধাবিতি স্থায়াদ্বাচ্যলিঙ্গতা যথাঘনাকান্তিঃ ঘনোরক্ষোঘনং বনমিতি। মেঘপর্যায়ে ঘনশব্দস্ত কৃষ্যভিচারাদ্বস্তীতিবৃৎপত্যাসাধ্যইতিবক্তঃ। ৪১৭॥

প্রথাণ প্রযথে দারপ্রকোষ্ঠাভ্যাং বহিস্থলে। যঞলম্ভৌ নিপাত্যেতে। ৪১৮॥ উদ্যানস্তক্ষণাধারে। নিধায়তক্ষতেযত্রকাষ্ঠেকাষ্ঠং সউদ্যানঃ। ৪১৯॥ অন্তর্যনোইভ্যন্তরস্থলে। ণত্বক্ষৈকে। তিমায়ন্তর্যনেইপশ্যাৎ। ৪২০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ঘন্চেতি অম্বুমুচাং মেঘানাং ঘনং কাঠিতাং। যদ্যপি ঘঞাদ্যাঃ পুংদীত্যন্তুদারাৎ পুংদীতি-লভ্যতেতথাপিঘনং নিরন্তরং দান্দ্রমিত্যভিধানাৎ ক্লাবলিঙ্গোপি এবং প্রীপুল্লিঙ্গেহপি। ভাবেতুঘন-এবামরাদোদৃশ্যতে যথাঘনোমেঘেমূর্ত্তিগুণেইত্যমরঃ । ঘনং স্থাৎকাংস্থ তালাদিবাদ্যমধ্যমনৃত্যয়োঃ। নামুস্তাব্দোঘদাঢ়্যেমু বিস্তারেলোহমুদ্গরে। ত্রিমুদান্দ্রেদ্ঢেচেতিমেদিনী। অভ্যুপেত্যাদিএতৎপর্যন্ত-মুপগীতিছন্দঃ। ৪১৭॥

क्टबिमीशिका।

প্রধা। প্রকৃষ্টা কোষ্ঠা প্রকোষ্ঠা পুংসিকোষ্ঠোইন্তর্জঠরং কুসূলোইন্তর্গূহং তথেত্যসরঃ। দ্বিধাবিভক্তব্য গৃহস্ত দারাদ্বহিঃ স্থলং যেনগৃহং প্রবিশ্যতে প্রকোষ্ঠাদ্বহিঃ স্থলং মঝিয়েতিযক্ত রূঢ়িন্তত্রপ্রধাণ-প্রধান। প্রকর্ষেণহন্যতে গমতেহিন্যন্যঞলোর্নিপাতইতিবজ্ঞঃ। প্রধাণপ্রধাণলিন্দাবহিদ্বার প্রকোষ্ঠ-কেইত্যমরঃ এবং দারপ্রকোষ্ঠরোর্বহিঃ স্থলইতিরায়োহিপি। এতেনদারাদ্বহিঃ প্রধাণইতি কৈশ্চিত্রক্তম-বোক্তিকং। পূর্ব্বপদাৎসংক্রায়ামিতিণত্বং। ৪১৮॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

প্রঘাণেতি। 'বহিঃ স্থলেইত্যেকত্বনির্দ্দেশান্ধক্রমেণান্বয়ঃ কিন্তুন্বারপ্রকোষ্ঠাভ্যাং ন্বারগৃহাভ্যন্তরাভ্যাং বহিঃ স্থলেবারেন্দাইতিযম্ম প্রদিদ্ধিস্তত্র প্রঘাণপ্রঘণে। নিপাতনাদ্ধম্মঘঃ। যোগার্থস্তপ্রকর্ষেণহন্মতে গুমাতে গৃহাভ্যন্তররূপ প্রকোষ্ঠোহনেনেতি। ৪১৮॥

क्र ९ अमी शिका।

উদ্য। তক্ষণক্রিয়াধারস্বন্যোপীতিনিরস্তন্ধভিধানং প্রমাণয়তিনিধায়েতি। উতুল্যহন্যতেহিস্মি-ন্নিত্যাদ্যনঃ। ৪১৯॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

উদ্যানইতি। তক্ষণস্থা কাষ্ঠতনুকরণস্থাধারেকাষ্ঠভেদে উদ্যানইতিনিপাত্যতে। অত্রমরকোষং প্রমাণয়তিনিধায়েতি। যত্রকাষ্ঠেনিধায়স্থাপয়িত্বাকাষ্ঠং তক্ষ্যতেতনুক্তিয়তে দউদ্যানইত্যর্থঃ। তেনউদ্ধান্তত্তনুক্তিয়তে যশ্মিরত্যিধিকরণেহল্। ৪১৯॥

क्र ९ अमी शिका।

অন্ত । অন্তর্শ্মধ্যেহন্যতেহ্সাবিতিঅন্তর্ঘনঃ। পূর্ব্বপদাৎসংজ্ঞায়ামিতি গত্তমেকেপ্রাঞ্চোবদন্তীত্যর্থঃ। কচনদেশেকস্তচিমাতুলস্ত সংজ্ঞেয়মিতিকেচিৎ। অভ্যন্তরমাত্রস্তেতিবহবঃ। অত্রভট্টিঃ। প্রঘাণেসৌধ-সদ্মনঃ। লোহোদ্যন্থনস্বন্ধেললিতাপ্যনাং স্ত্রিয়মিতিপাদত্রয়ং। ৪২০॥

অঙ্গস্থপয়নঃ। শোভমানৈরপ্যনিঃ স্ফুরন্। ৪২১॥

দ্রুঘণায়োঘনবিঘনাঃ করণেইলস্তানিপাত্যস্তে। দ্রুইন্যতেইনেনৈতি পূর্ব-পদাপ্পত্বং। অয়োলোহঃ বিঃ পক্ষীঅনটি অয়োহননী। ৪২২॥

শুস্বঘন শুস্বম্মে। নিপাত্যেতেকরণেইলি। শুস্বোহন্যতেইনয়েত্যপি বাক্যে-স্তম্বন্ধঃ ছুরিকাইত্যত্রপুংস্তমেব। বাচ্যালঙ্কমিত্যপ্যাহঃ। ৪২০॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অন্তরিতি। অস্মিন্নন্তর্যনে ২পশ্যন্ প্রঘাণে দেখিদদানঃ। লোহোদ্যন্থনস্কন্ধাললিতাপঘনাং স্ত্রিয়-মিতিভটিঃ। তিমান্ অন্তর্গনেগৃহাভ্যন্তরস্থলে দৌধসদ্মনঃ ইফকাদিরচিত ধবলগৃহস্থ প্রঘাণেদারপ্রকোষ্ঠ-য়োর্ব্বহি স্থলেলোহোদ্যনঘনক্ষন্ধাঃ লোহস্যউদ্যনস্তক্ষণাধারকাষ্ঠং তদ্বৎঘনোনিবিড়ঃ ক্ষন্ধোযোষাং তেললি-ভাপঘনাং মনোহরান্ধীং স্ত্রিয়মপশ্যন্ধিত্যর্থঃ। ইত্থঞ্চনিধায়েত্যমরকোষেয়ৎ কান্ঠমিত্যুক্তং ততুপলক্ষণং (लाशिकिवाममिशिकाशाः । १२०॥

কৃৎপ্রদীপিকা। অঙ্গ। অপকৃষ্টরূপেণহন্যতেহসো। অঙ্গং প্রতীকোহবয়বোহপঘনইত্যমরঃ। ৪২১॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

অঙ্গব্ধিত। তুশব্দোহল্মমুচ্চায়কঃ। শোভমানৈরিতি। শুভ্দীপ্রোশোভতইতি শোভমানঃ বর্ত্তমানেশন্ত শানাবিতি শানেশিতি অন্বিকরণে অকারাক্ষুড্ভবত্যানেইতিমুট্। শোভমানেরপঘনৈঃ ক্ষুরন্ শোভাবিশিক্টেরক্সৈদীপ্তিং কুর্ব্বন্নিত্যর্থঃ। এতদন্তং ছন্দঃ। ৪২১॥

क्र ९ अमी शिका।

দ্রুঘ। দুর্বাক্ষঃ। পলাশীদ্রুদ্রুমাগ্যাইত্যুমরঃ। গ্রুমিতি। পূর্বাপদাৎ সংজ্ঞায়ামিত্যুনে-নেত্যর্থঃ। কুলুদিরিত্যন্তে। ত্রুঘণোমুলারঘনাবিত্যমরঃ মুলারাকৃতিরস্ত্রভেদইতিরায়ঃ। রুহদাটালঃ পক্ষিভেদোবা। অয়োঘনঃ কর্মকারাণাং হাতোরিইতি বজ্রঃ। লোহনির্মিতাস্ত্রইতি কেচিৎ। বিঘনঃ। পক্ষিভেদনাস্ত্রবিশেষইতিবজ্ঞঃ। ৪২২॥

গ্ ঢপ্ৰকাশিক।।

ক্রুগণেতি। নিপাতনাদ্ধকারস্থ ঘাদেশঃ। অয়োলোহইতি। লোহোহক্রীশস্ত্রকং তীক্ষ্ণং পিগুং কাল্যসাহ্যুদাইত্যমর:। বিঃপক্ষাতি। শকুন্তিপক্ষিশকুনিশকুন্তশকুনিদ্বিজা:। পত্ত্তিপত্তিপত্তগপতৎ নগোকোবাজিবিকিরবিকিরপতত্তয়ইত্যমরঃ। বিঘনঃ পক্ষিহ্ননেঘনাভাবেনপুং পত্রবাওজাঃ। সকমিতি কোণান্তরং। ৪২২॥

क्टबर्माशका।

ক্যঞ্লাং সমরূপাভাবাৎ স্থাম্বেত্যদিদ্ধোপ্রতিপত্তিরপি গরীয়সীতীদং। উপধালো-পোহলিনিপাতঃ। ত্তমোগুচ্ছস্ত্ণাদীনাং। পুংস্তুমেবেতি। ঘঞাদেঃ পুংস্কুস্তোক্তস্তাৎ। আহুরিত্য স্বরদোক্তং। ৪২৩॥

বিষঃ পরিযন্তথাপ্রতিষঃ। বিহ্ন্যতে পরিহ্ন্যতে প্রতিহ্ন্যতে হনেনে-ত্যর্থে। ৪২৪॥

নিষ্ণু কর্মণি। নিহন্যতে বশীক্রিয়তে নিষ্ণো>ধীনঃ। ৪২৫॥ নিমিতোনিষঃ। আরোহ পরিণাহাভ্যাং পরিমিতোরক্ষধান্যাদির্মিষঃ।৪২৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্তম্মেতি। তিষ্ঠতীতিস্তম্বঃ তিষ্ঠতেওঁস্বঃ পুনোদরাদিস্বাৎ থস্মতঃ। স্তচ্ছোগুম্বোস্থাদিনইতি। স্তম্মমন্ত্র স্তম্মানে স্তম্মোযেননিহন্মতেইতিচামরঃ। ৪২৩৩॥

क्थमीशिका।

বিল্ল:। তথাকরণে। বিশেষণশুভংহস্যতেহনেনেতি বিল্লোহন্তরায়ঃ। পরিদর্শ্বতোভাবেন হন্যতেহনেন। পরিঘঃ পরিঘাতনইত্যমরঃ। পরিঘোমূলারেশস্তেহকথ্যতের্গলঘাতয়োরিত্যজয়ঃ। প্রতিহ্ন্যতেহনেন। কোপকোধামর্ধরোষপ্রতিঘারুট্কুধৌস্ত্রিয়াবিত্যমরঃ। ৪২৪॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

বিশ্বইতি। বিশ্বোহন্তরায়প্রতায়ইতি। পরিঘঃ পরিঘাতেঅস্ত্রেইতিচামরঃ। পরিঘোযোগভে দেঅস্ত্রবিশেষেহর্গলঘাতয়ারিতি মেদিনী। যোগবিশেষপক্ষেপরিহন্যতেহশুভগমনেনেতি বাক্যং। অর্গলপক্ষেপরিহণ্যতে গৃহপ্রবেশাদিকমনেনেতি। ঘাতপক্ষেপরিহন্নমিতিভাবে। যদ্যপিকরণেউদাহরণং দর্শিতং তথাপিতথাশক্রপ্রহণাৎ প্রসিদ্ধানুস্বাবেণভাবেবাচ্যেইপি স্থাদিতিজ্ঞাপিতং। সাস্তম্বন্নপ্রসামান্ বিঘনেন্দুসমত্যুতিঃ। পরিঘোরুভুজানাহহদন্তীস্বাগতং কপীনীতিভটিঃ। ক্রঘণেত্যাদি এতৎসূত্রান্তমুপ্রণতিছন্দঃ। ৪২৪॥

क्ट श्राणिका।

নিম্নঃ। নিতরাং হন্যতেহসোনিম্নঃ অধীনেনিম্নঃ আয়তোহস্বচ্ছন্দোগৃহকোহপ্যদাবিত্যমরঃ। ৪২৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

নিম্নইতি। কর্ম্মণিবাচ্যে নিম্নোনিপাত্যতইত্যর্থঃ। বশীক্রিয়তইতি। উপদর্গেণতাদৃশাথোঁ-দ্যোত্যেতে। ৪২৫॥

क्९%मोशिका।

নিম। নিঘার্থং কথয়িষ্যন্ নিমিতার্থমাহ আরোহেতি। দৈর্ঘ্যমায়াম আরোহঃ পরিণাহোবিশালতেত্যমরঃ। আরোহঃ দৈর্ঘ্যং মূলাগ্রদূরতা পরিমাণঃ পার্যভাগেন বিস্তীর্ণতা অর্থান্তাভ্যাং নিমীনয়তেহুদো পরিমিতঃ সদ্মতো রক্ষধান্তাদিঃ কর্মানুরুত্তেঃ কর্মাখ্যঃ নিশ্চিতেন হন্যতে পরিমীয়তে হুদোনিঘইতি স্বরসঃ। বজ্ঞধরস্তুকরণাসুবর্ত্তনাৎ নিশ্চিতেন মীয়তে ছিল্যতেহুনেনেতি নিমিতঃ নিশ্চিতেন হন্যতে জ্ঞায়তেহুন্যোন্তমেতৈঃ করণৈরিতি নিঘারক্ষাঃ নিঘাঃ পর্বতাঃ পরিমিতইতি নিমিতশব্দশ্র পরিমিত্ত্যমরঃ সমন্তাত্ত্রাহে। তত্ত্ববিশ্বক্সমেনিঘ ইত্যমরঃ সমন্তাত্র্ল্যারোহ পরিণাহে রক্ষাদো নিঘইতি রায়শ্চ। ৪২৬॥

উদযন্ত প্রশংসায়াং। সঙ্বঃ সমুহে। আগ্রয়বচন উপদ্বঃ। কুড্যোপদ্বং বসতি। নিপাতনাদেতেইলন্তাঃ শিদ্ধ্যন্তি। ৪২৭॥

স্থানাপাব্যধ্ যুবাদেঃ কঃ। প্রতিষ্ঠতে প্রস্নাতি প্রপিনন্ত্যাম্মন্নিতিপ্রস্থঃ
প্রস্নঃ প্রপা প্রপাভাবে আখুনাং সমুখানমাখুসমুখং শলভোখং মতান্তরে
পুংসি। আবিধাবিধ্যতে যেন আয়ুধোয়েন যুধ্যতে। ত্রয়োদীব্যন্ত্যাম্মিন্নিতি
ত্রিদিবঃ ভুজ্যন্তেইনেনেতি ভুজোবাহঃ ন্যুক্ততি অধোমুখঃ শেতুইনেনেতি
ন্যুক্তোরোগবিশেষঃ। ৩২৮॥

'

গূ ঢপুকাশিকা ৷

নিমিতইতি। নিপূর্বাঃ মামানে কর্মাণিক্তঃ দাতিশুতি স্থামামন্তইঃ স্থাত্তেকমুবন্ধিনীতিমান্তইঃ। নিমিত্ত আরোহপরিণাহাভ্যাং (দৈর্ঘ্যবিস্তীর্ণতাভ্যাং) পরিমিতঃ (সমরূপয়াসন্মিতঃ) পরিণাহইতি কচিমদীর্ঘঃ। ৪২৬॥

क् श्रमी शिका।

উদ্বঃ। অভিধানাৎ কর্মকরণয়োঃ তথাচ উদ্ধিং গচ্ছন্তি পিতৃপিতামহাদয়োহনেনেতি উদ্বঃ পূণাবান্ ধর্মাদিশ্চ। সংহন্তি সঙ্গছতে সঙ্গতোভবতানেনেতি সজ্ঞাং সমূহঃ আশ্রায় কর্মণ্যের সিদ্ধন্থাৎ উপসমাপে হলতে গম্যতে হসৌ উপল্পঃ সনিহিত্যশ্রঃ। বদ্যপ্যাশ্রায়া শ্রিয়ভাবোবিদূরেইপি ভবতি যথামুকমাশ্রিত্যময়ার্জীব্যতে ইতিদূরেইপি প্রয়ুজ্যতে তথাপ্যাশ্রয়ঃ সমাপাশ্রয় এববাচ্যঃ উপল্পঃ শব্দস্থ সমাপাশ্রয়ে প্রয়োগদর্শনাং যথা। ভর্তুঃ প্রণাশাদমুশোচনীয়ং রূপান্তরং তত্র সমং প্রপন্নে। অপশ্রতাং দাশরগীং জনন্যোছেদাদিনোপল্লররাব্বিত্তাাবিতি রঘুঃ। মতল্লিকামচর্চিকা প্রকাণ্ডমুদ্বতল্লজো। প্রশন্তবাচকাল্যমূনি সঞ্জ্যাথে জন্তব্যাক্তিভা উপল্লোইন্ডিকাশ্রয়ইত্যমরঃ। কুড্যেতি। ভিত্তিঃ স্ত্রাকুড্যমেছুকং। কালভাবেতি দ্বিতায়াকুড্যস্থ সমাপস্থানে বসতীত্যর্থঃ। উপসংহরতি নিপাতনাদিতি। এতে বিশেষাকুক্তান্তব্যব্যান্য ইত্যর্থঃ। ৪২৭॥

গূঢপ্রকাশিকা।

উদ্বস্থিতি। তুশদঃ করণবাচ্যে প্রত্য়োর্থঃ। প্রশংসায়ামিতি বিশেষণতয়া প্রশংসাবগম্যতে উদ্বস্থ অমরকোষাদো প্রশন্তবাচকত্ব প্রতিপাদনাৎ যোগার্থস্ত উদ্বস্থি উদ্ধিং গচ্ছন্তানেনেতি অলিহনোঘাদেশঃ। অমরটীকাকারস্থ ঘণ্ মুগুদীপ্রো উদ্বণোতি উদ্বঃ গমাদিস্বাৎ ড ইত্যাহ। অস্মন্মতে ডপ্রত্যয়স্থ সূত্রোভাবাৎ হনোহলিঘাদেশে সিদ্ধমিতি। বচনইতি পদাধিক্যাত্বপত্ম ইত্যত্র কর্মাণবাচ্যেইল্। নিত্ম ইত্যাদিবসতীত্যস্তমার্য্যাছন্দঃ। ৪২৭॥

क्ल्भूमीलिका।

স্থান্না। অধিকারান্তাবাকর্ত্কারকয়োঃ সংজ্ঞাসংজ্ঞয়োঃ। প্রতিষ্ঠতে জন্তুর্দেরপদার্থোবাহন্মিন্। প্রস্থোহন্ত্রী সামুমানয়োঃ। প্রপঞ্চিতো নাড়ীতিসূত্রবিবরণে। প্রস্নঃপ্রপন্তড়াগাদিঃ। প্রপাপানীয়শালিকেত্য- টুনুবন্ধাদপুচ্কার্য্যঃ। নন্দপূর্জাজপুশুব। টুবেপ্বেপনে বেপথাঃ টুব্ন্ বন্যতেইসাবিভিব্নথাঃ টুগুধিখয়পুঃ শোথঃ টুত্রদবপুঃ। ৪২১॥

দুসুবন্ধাত্রিমক্ তেন নির্নৃত্তে। তেন ধাত্বর্থেননিষ্পন্নে দানেননির্নৃতং। দক্রিমং ধনং। বিহিত্রিমং কৃত্রিমান্ত্রীঃ উপ্তিনুমা লক্ষ্রিমাযবাঃ। ৪৩০॥

মরঃ। বাচ্যলিঙ্গন্ধং। উন্দুরুশ্মিকোহপ্যাখুঃ সমৌপতঙ্গশলভাবিত্যমরঃ। উত্থানমুজ্জয়নম্ উদঃ স্থেতি সন্ধিঃ ক্লীবেভাবপ্রত্যয়ান্তাঃ। মতান্তরে বররুচ্যাদিমতে ঘঞাদিত্বাদিত্যর্থঃ। একদেশপ্রয়োগাৎত্তয় স্ত্রিদশকোটয়োদেবা ব্রহ্মবিষ্ণুরুদ্রাবাত্রিদিবঃ স্বর্গঃ। ৪২৮॥

গুঢ়প্ৰকাশিকা।

স্থামেতি। ষ্ঠাগতি নির্ভৌফাশোচে ধাত্বাদেঃ ষস্ত সঃ পাপানে। যদ্যপি স্নাব্যধ্ সাহ্চর্য্যামির্কিবকরণ বিকরণিনোএ হণসম্ভবেন পারক্ষণে ইত্যস্তাপিগ্রহণং সম্ভবতি তথাপি প্রপিবন্ত্যামিমিতি
বিবরণাৎপাপানে ইত্যস্ত ন গ্রহণং ব্যধ্তাড়নে যুধ্দংপ্রহারে এতে আদয়োযস্ত তম্মাৎ। প্রস্নাদৌ কমুবন্ধে আকারলোপঃ। আখু সমুখমিতি। কপ্রত্যায়স্ত ঘ্ঞাদাবনন্তর্ভাবাৎ তদন্তস্ত ক্লীবত্বং। আবিধ
ইত্যত্ত গ্রহিক্যেত্যাদিনা সম্প্রদারণমন্তেযু গুণাভাবঃ। দীব্যন্তীত্যাদি। দিবুক্রীড়ায়াং ভুজ্পালনাভ্য
বহারয়োঃ নিপূর্ব্ব উজ্ আর্জবে। স্থামাপাব্যধ্ যুবাদেঃ কঃ প্রস্থঃ প্রসঃ প্রপঃ প্রপেত্যবং ছন্দঃ। ৪২৮॥

क्र ९ अमी शिका।

টুকু। নন্দথ্রিত্যাদিভাবে। ভাজনং ভাজথুং। শূয়তেবাতপিত্তাদিনাহসোশোথস্তশ্বয়থুং।
মদীমদথুর্ব্বচনে তথীক্রমথুর্জঘনোদ্বহেইতি ক্রাভিচারাৎ। টুধাতোরভাবাৎ টুকুবদ্ধোলভাতে কিমকুবদ্ধেনেতি নোহং টুকারীয়টুকারায়াদেং টুপলক্ষিতধাতোং সম্ভবাৎ তেনাকুবদ্ধেকিং টুকারীয়ণং টুকারায়ণং।
এবং পরত্রাপি। ৪২৯॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

টুনুবন্ধাদিতি। টুনুবন্ধকরণাদন্যত্রাপি কচিৎকার্যাইত্যায়াতি তেন মদথুর্বচনেত্রীক্লমথুর্য্যনাদ্বহে ইত্যত্র টুনুবন্ধাভাবেহপি। নচতয়েঃ টুনুবন্ধঃ কর্ত্তব্যইতিবাচ্যং তথাত্বে সর্ববদৈবাপুচ্প্রত্যয়াপত্তেঃ। অকর্ত্তরিকারকেইতি নঞোহনিত্যত্বাৎ কর্ত্ত্যাপি। টুনদিসমুদ্ধোনন্দনং নন্দথুঃ টুলাজ্দীপ্রোলাজপুঃ টুবেপ্কম্পনেবেপথুঃ টুবম্উলিারণেবমথুঃ টুওশ্বিগতির্দ্ধোঃ শ্বয়তিবর্দ্ধতে শরীরমনেনেতিকরণেহপুচ্। টুরুঞ্উপতাপেদবনং দবথুঃ। স্থাদানন্দপুরানন্দইতি অথবেপপুঃ কম্পোহথেতি প্রচ্ছদিকাবমিশ্চন্ত্রীপুমাং স্ত্রবমথুঃ সমাইতি শোথস্কশ্বয়থুঃ শোথইতিচামরঃ। ৪২৯॥

क् थमीशिका।

ভুনু। বিশেষবচনান্তাবাদেশ্ব ত্রিবৃত্তি মণ্ডুকপ্লু ত্যাপরগমনং কিন্তু নির্বৃত্তকর্ত্তরিবাচ্যেপ্রতায়ঃ। নির্ত্তি তিপাঠেতুনির্ভেত্বঙ্গদন্তামিতিবন্ধিঃ শব্দার্থেনিশব্দঃ। দিদ্ধেনির্ত্তিনিম্পন্নাবিত্যমরঃ। নির্বৃত্তি ইত্যতীতরূপোত্তরাবস্থা বাচ্যশক্তপ্রত্যয়েননির্দ্দেশাৎ কৃত্রিমাদিনাতীতরূপোত্তরাবস্থাচ্যতে নপূর্ব্বাবস্থা বারণাদিঃ নাপিভবিষ্যম্বর্ত্তমানঃ। অতএবকর্মণীতিনকৃতং। তেন ধাম্বর্থেনেতি। যদ্যপ্যধিককৃতস্বাদ্ধাস্থ

যাচিবিছিপ্রছিষজাৎ স্বপিরক্ষিযতাঞ্চত্ত। যাচনং যাচ্ঞা স্ত্রিয়াং রুঢ়িস্বাৎ। বিশ্বঃ প্রশ্বঃ যজনমিজ্যতেযেন্বযেজ্ঞঃ স্বপুঃ রক্ষ্ণঃ ত্রাণেযত্তঃ। ৪৩১॥

উপসর্গেদঃ কিঃ স্যাণ। আদির্ব্যবিষ্ট প্রধিঃ প্রণিধিৰুপাধিঃ। বিধিরিতি নঞোইনিত্যত্ত্বাৎ কর্ত্তর্যাপি। ৪৩২॥

রেবতৎ শব্দেনপরামর্ফুর্য যুজাতেনার্থঃ তথাপুপেচারাদর্থ সৈত্রবপরামর্শোধাতুনাবস্তুনোনির্বৃত্ত্বাসস্তবাদিতি ভাবঃ। অথধার্থঃ দাধ্যরূপঃ তস্থাসত্ত্বাৎ কথমস্থানিষ্পত্তোদাধনতানহিস্বয়মিদিদ্ধঃ পরান্ দাধ্যতীতিনৈবং কোহিনামাব্রবীদদিদ্ধসৈত্বসিদ্ধর্থকুদ্ধাকল্লিতমিতি। অতএবভাবপ্রতায়েনবিগৃহীতং। দানেনেত্যাদি। দতির্দানম্ ঐহিকেনজন্মান্তরীয়েনবাদানেন সিদ্ধমিত্যর্থঃ। এবমন্যৎ পূর্ববিৎ। অনুবন্ধাদিতিকিং ডুগুভীয়নং। ৪৩০॥

গ্ৰহপ্ৰকাশিকা।

ভূমুবন্ধাদিতি। যদ্যপিতং শব্দা পূর্বপ্রত্যবমর্বকতয়াভূমুবন্ধধাতোরেবপরামর্শঃ সম্ভবতি তথাপি ধাতুনাতত্ত্বসূনাং নিপ্সন্ধাভাবাদ্ধান্ধর্যএবতচ্ছন্দেনপরাম্ব্যতেইত্যভিপ্রেত্যাহ তেন ধান্ধর্থেনেতি। নিপ্সন্ধানিদ্ধান দলিম্মিত্যাদি। ভূদাঞ্দানে দানেননির্ভং নিপ্সন্ধং দলিমং দলিমং ত্বিপূর্বাং ভূধাঞ্ ধারণপোষণয়োঃ ধাঞোহিং স্থাত্তেকিতি। ভূকৃঞ্করণেকৃত্রিমাভূবপ্বীজতন্ত্বসন্তানে ত্রিমকি বচিম্ববিত্যা-দিনাসম্প্রদারণেপ্রউপ্তিমাভূলভ্র্প্রাপ্তোতিমকিশ্বদ্ধভতইতি তস্পব্রভূর্য্যমূল্যরিতি ভস্তবন্ধেনিধুমাঃ ববাঃ শস্তবিশোষাঃ। ৪৩০॥

कृश्थमीशिका।

যাচি। ভাবাকর্ত্কারকয়োঃ সংজ্ঞাসংজ্ঞয়োরেয়াং নঙ্স্থাৎ। স্তিয়ামিতি। ঘঞ্চিত্রেহপ্যস্থ স্ত্রিয়াং রূঢ়ি রাৎ। যাচ্ঞাভিক্ষার্থনার্দনেতি প্রসিদ্ধেঃ। বিচ্ছগতোভাবেনঙ্ড্যেঃ শূঠোবিশ্লঃ। নাদিত্বেহপিঙকুবন্ধকরণং কচিদ্গুণার্থং তেন প্রশ্নইতিপ্রাচাং মতসহকৃতসংজ্ঞাপুর্বকিস্বায়সম্প্রসারণমিতি ড্যোঃ শূঠাবিতিসূত্রব্রাবুক্তং। ৪৩১॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

যাচীতি। যাচভিক্ষায়াং। বিছগতোপ্রছজ্ঞীপ্পায়াং যজদেবপূজাসঙ্গতকরণদানেষু ঞিহপ্শয়েরক্ষ্ পালনেযভীপ্রযত্নেএষাংনঙ্। ওনুবন্ধকরণং কচিল্লিঙ্গব্যত্যয়ার্থং তেনাহ্যাচ্ঞাস্ত্রিয়াং রুঢ়িত্বাদিতি। ৪৩১॥

क्र ९ अमी शिका।

উপ। সপ্তম্যুক্তেবিজমুপপদমূত্রেউক্তং। মতান্তরেহস্তঘঞাদিস্বং স্বমতেহভিধানাৎ পুংসি সংজ্ঞায়াং। কনুবন্ধবৈয়র্থ্যাশ্লাদের্ধাতুগ্রহণং। ভাবকর্মণােঃ পুংস্থাদিঃ ভাবকরণয়ােঃ ব্যবধিঃ। কর্ম্মণিপ্রণিধিঃ প্রার্থনেচরে। উপাধির্দ্ধাচিন্তায়াং কুটুশ্বভরণেহপিচেতি রুদ্রঃ। বিধাতাবিশ্বস্থিধিঃ। অকর্ত্তরীতি নঞােহনিত্যস্থাৎ কর্ত্তরি। বিধির্বিধানেদৈবেচেতি ভাবেচবিধানে বিদধাতি ঈশ্বরঃ পুরাহনেতিদৈবেব্যুৎপারং। ৪৩২॥

কর্মণ্যধিকরণেইর্থে। কর্মোপপদদানংজ্ঞকাৎ কিঃ ন্যাং। জলনিধিকদিধিঃ প্রোনিধির্বারিধিঃ। অপ্যধিকারাং অন্তর্জিরপবারণং শরধিনিযুধির্দ্ধরোঃ। ৪৩৩॥ অনড্ভাবাধিকরণ করণেয়ু। যথাটনং। স্থানং গোদোহনা বারিধানা যানং প্রদীপনা। ৪৩৪॥

গ্ঢপ্ৰকাৰিকা।

উপেতি। উপদর্গেউপপদে দাদংজ্ঞকাত কিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। যদ্যপিঘঞাদ্যাঃ পুংসীত্যাদি শব্দব্যবস্থয়া ঘঞ্ অল্ ণ ঘ নঙ্ অপুচ্ এতেকড্ ঘঞাদিগৃহীতাঃ তপাপ্যভিধানাৎ কিপ্রতায়ান্তাঃ পুংসিবর্ত্তরে যথামরঃ কোঘোঃ কিঃ প্রাদিতোক্ত্যুতইতি। নামুপেধপ্রীকৃগুজ্ঞাত্যঃকইতিকঃ দাদংজ্ঞকস্থ ঘুরিতি সংজ্ঞাপাণিনিমতে তেন প্রাদিতোঃ ঘোঃ কিঃ অস্মাতে উপদর্গেদঃ কিরিতি তথা অন্তঃ কর্মণাধিকরণেহর্থেইতি কিঃ পুংসাতি। পুংস্থাদিঃ পূর্বপোরস্তাপ্রথমাদ্যাইতি নেমিঃ জ্রীম্পাৎ প্রধিঃ পুমানিতিচামরঃ। প্রধীয়তে ণিয়তেহনেনেতি করণেকিঃ। উপধানমুপাধিঃ। উপাদির্মাধ্মিতিতেত্যারয়ঃ। বিদধাতীতি বিধিঃ কর্ত্রিকিঃ তক্রেত্রমাহনঞাহনিতায়াদিতি। এবন্ আবিউপধিসন্ধিনিধি পরিধিপ্রভৃতরোক্ষেরাঃ। আদিরিত্যেত্রদাঞ্দাঞ্দানিধানিধি পরিধিপ্রভৃতরোক্ষেরাঃ। আদিরিত্যেত্রদাঞ্দাঞ্দানিধানিধানিধি

क्रथ्यमोशिका।

কর্ম। অর্থন্তেরনিরাসায়াধিকরণইতি। অন্তেপ্যর্থোহ্ন্যর্থ ইত্রক্তমূপপদস্ত্রে। ধাত্রাজলানি নিধীয়ন্তেহ্স্মিনিতি জলনিধিরিতি। অপ্যধিকারাদিতি। অসংজ্ঞায়ামপ্যেতস্মাদপানুর্ত্তেরনুপদর্গান্তরা-চুপেপদেহপি কিরিতার্থঃ। অকর্মোপপদেহনধিকরণেহ্প্যন্তর্জানমন্তর্জিরিতি। ৪৩৩॥

গ্রচপ্রকাশিকা।

কর্মেতি। উদয়াসুদ্ধিঃ দিঝুঃ দরস্থান্ দাগরোহর্ণিঃ। রত্নাকরোজলনিধির্দাদঃ পতিরপাম্পতি রিত্যমরঃ। অপ্যধিকারাদিতি। অসংজ্ঞারামপীতাপাসুরতেঃ কর্মাণাপি অধিকরণেহপীতার্থাৎ অকর্মণি অনধিকরণেচ অন্তর্দ্ধিরিতি। শরধিরিষুবিরিতাত্রাধিকরণেকিঃ। তুণোপ্যুদঙ্গতুণীরনিষঙ্গাইধির্দ্ধিরাত্রামরঃ। উপদর্গ ইত্যাদি বারিধিরিতান্তং গীতিচ্ছন্দঃ। তত্রাদি রিত্যাদি উপাধিরিতান্তোমিতীয়ঃ পাদঃ। ৪৩০॥

क्रथ्यमीशिका।

অনট্। ধাতুমাত্রাৎ নানস্তরোক্ত দাসংজ্ঞকাৎ একযোগাকরণাৎ। বিশেষবচনায়াত্রসংজ্ঞায়ামপ্য-কর্ত্তরীতি। করণাধিকরণয়োরপানট্ গোদোহনী ঘটা বারিধানা কলসীযানং গতির্বিমানক্ষ ভান্যার্থঃ প্রদীপ্যতেহ্নয়েতি প্রদীপনীটীকা এয়ুকুদ্বাতিচারাৎ স্ত্রিয়াং নদাদি হাদী। কেচিভ্র্টসুবন্ধসামর্থ্যায়দাদি-দ্বাদীত্যাত্থঃ এবং প্রসাধনী রাজধানীত্যাদয়ঃ। ৪৩৪॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

অনডিতি। ধাতুমাত্রাৎ নাব্যবহিতোঁক্তদাসংজ্ঞকাৎ। যথা শব্দেন প্রদিদ্ধপ্রয়োগদূচনাৎ।
আটনমিত্যাদি। আট্গতো আটরটনংষ্ঠাগতি নির্তোভাবেহধিকরণেবাহন্ট্ হৃত্পপুরণেগাংদোগ্ধিঅস্মিন্

স্বরংস্তেভ্যোনামিয়ং স্যাং। ঘেইস্বশ্চ। সন্নিহিতত্তাং করণাধিকরণয়োঃ।
তন্তৃচ্ছাদ্যতেইনেন তন্তৃচ্ছদঃ কর্মস্তানেনকরঃ শৃণস্তানেন শরঃ নিলীয়তেইস্মিন্নিতি
নিলয়ঃ প্রলয়ঃ বিষিণুস্ত্য স্মিন্নিতি বিষয়ঃ। স্বরাস্তেভ্যঃ কিম্ আচরস্তি প্রবর্ত্তস্তেইস্মিন্নিতি আচারঃ অপামজন্তানেন অপামার্গঃ। ঘনির্দ্দেশাদ্ধলম্ভাদপি কচিং
ভক্তাতে ইস্মিন্নিতি ভগং। ৪৩৫॥

ক্তিঃ স্ত্রিয়াং। যথানীতি গীতি ভূতি গতিঃ কৃতিঃ। ভাবেইকর্ত্ কারকেচ। স্ত্রিয়ামিত্যধি ক্রিয়তে। ৪৩৬॥

বারিধীয়তেহি শ্রিমিত্যধিকরণেহনট্টিত্বামদাদি স্থাদী স্রিয়াং। যতু অনভন্তং নপুংসকমিতি বচনং তহুভাব-বাচ্যেনিয়ত্মন্সত্রবাচ্যাকু দারাহ। অতএবামরকোনেমহ স্থানী কুবেণী স্থাদিত্যক্তং। যোগস্তমহ স্থানী কুবেণী স্থাদিত্যক্তং। যোগস্তমহ স্থানী বিভিন্ন বিশ্বিদ্যালিত। যাগমনে ভাবেকরণেচ প্রপূর্বিদী পিদী প্রেণিকরণেহনট্। ৪৩৪॥

क्र थमिशका।

সরা। নামিদংজ্ঞায়াং। ঘেরস্বশ্চেতি সম্ভবমাদায়বিধিঃ। সন্নীতি। সন্নিহিতত্যাগেবিদূর-কল্পনাযোগইতিভাগাদেত্যোরেবাকুবর্ত্তনং তেনাকর্ত্তিরিকারকেইতি। নামাসম্ভবাদ্যাবাসঙ্গঃ। ছদ্ সম্ব রণেচুরাদিঃ তকুচ্ছদঃ কবচঃ উরশ্ছদোহপি শৃ হিংসায়াং শরঃ নিলয়োগৃহং প্রলয়ঃ প্রলয়কালঃ। বিঞ্বন্ধনে-বিষয়ইন্দ্রিয়ার্থঃ আচারঃ সদাচরিত্তিবিধিঃ অপামুজন্তিশুদ্ধান্তানেন অপামার্গঃ শৈথরিকঃ। ঘনির্দেশাদিতি। ঘনুবদ্ধাহন্তচ্চোঃ কর্গার্থঃ স্বরান্তেত্দসদ্ভাবাদিতিভাবঃ। ভজ্মেবায়াং। ভগং শ্রীকামমাহাত্মবীর্যু-যুত্তাকরাত্তিবিত্তানরঃ। ৪৩৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

স্বান্তেভাইতি। অন্তগ্রহণাভাবে স্বাদেবস্থান্তবাদিতি শক্ষাবাবণার্থনন্তগ্রহণং ছন্দেহির্থক। ছন্ অপবারণেতনুচ্ছনঃ ভূক্ঞ্করণেকরঃ শৃ হিংদায়াং শরঃ লাঙলােষণেনিলয়ঃ প্রলয়ঃ আঙ্পূর্বেশ্চরগতাে আচরন্তা তাস্থার্থ প্রবর্ত্তইতি। অপআঙপূর্বিঃ মৃজ্শুদ্ধা ঘঞিজস্থাগঃ। ভজাতে দেবাতেই শ্লিমিতিভগং। অলিজস্থাগানস্থাং ঘঞিরদ্ধিঃ স্থাদিতিঘনিধানং। যদ্যপিঘপ্রত্যয়ান্তত্যাপুলিস্বাপতিঃ স্থাভথাপি নিঙ্তিভুনুবদ্দেন প্রদিদ্ধিশাং বাদ্দেভাত্তপুলিস্বাতায়বদিহাপি প্রদিদ্ধিশাং পুলিস্বাতায়োজাতবাঃ। ভগং দ্রীযোনিবার্বাচ্ছাজ্ঞানবৈরাগ্যকাতিয়্। মহোইল্যম্বাগ্যমেল্যুবর্ণেমান্তেচ নারবাবিতি মেদিনা। এবং যুক্ত্যাঘঞ্জবর্বনপি পুরপুংসকং। র্ষ্টিক্বিমিত্যমরঃ। র্ষ্টিঃ দ্রিয়াংবর্ষমন্ত্রীতি বাচম্পতিঃ। ত্রম্ভ্রেট্ডান্তঃ ছলঃ। ৪৩৫॥

क्र १ अमी शिका।

ক্তি:। ক্তিপ্রতায়ান্তঃ স্ত্রিয়াংবর্ত্তে। কুন্নভিচারাদন্যত্রাপি যথা। ত্রিয়ুনীতির্ময়েহপি স্থাৎ প্রাপণেহপিচযোষিতি গীতিশ্ছন্দিসানেস্ত্রী ভূতির্ভন্মনিসম্পত্তি হস্তিশৃঙ্গারয়োঃ স্ত্রিয়াং গতিঃ স্ত্রীমার্গদশ- য়োজ্রানেযাত্রাভূপোয়য়োঃ কৃতিঃ করণহিংসয়োরিতি মেদিনী। অধিক্রিয়তে ইত্যধিকারোণচ্পর্যান্তঃ তত্রিস্তিয়ামিতি বাচ্যত্বাৎ। ৪৩৬॥

ৠদস্তত্তাদিতোনিঃ স্যাদ্ গ্লামাছাজ্যাং ত্বনিশ্বতঃ। শীর্নিঃ কীর্নি গীর্নি লুনি ধুনি গ্লানি ম্লানি হানি জ্যানিঃ। অকারাদিত্বেনগুণিত্বান্ধ সম্প্রসারণং।৪৩৭॥ ক্ষয়াদেঃ কিঃ। কৃষিঃ শূলিজনি ধুলির্ষিদৃশিঃ। রোচনং ৰুচ্যতে ইনয়াৰুচিঃ। ৪৩৮॥

গৃতপ্রকাশিকা।

कृश्भूमोशिका।

ৠদস্ত। নিস্করণঃ প্রত্যয়ঃ। নতুবদ্ধেবৈফল্যাৎ। শৃ হিংসায়াং নাদিছেনাগুণে নৌ ইর্ শীর্ণিরিত্যাদি। অকারেতি। সম্প্রসারণমিত্যুপলক্ষণং গ্লাদীনামপিনিকৃতে নাদিছেনাগুণে গ্রহিজ্যে-তিজ্ঞাং সম্প্রসারণং গ্লাদাহাং লাদাবপঠিতত্বেপঠিতত্বেবাদস্তত্বেনবিশেষাদঙ্গেবস্তাদিতিদোষঃ। ৪৩৭॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

য়দন্তেতি। অত্তনিশ্বরূপঃ প্রত্যয়ঃ। নকারস্থইকারস্থবাসুবন্ধনীকারেশীর্ণিরিত্যাদি প্রয়োগহান্তাপত্তেঃ। শীর্ণিরিত্যাদি। শৃ হিংসায়াং নাদিন্ধেনাগুণে য়দন্তস্থেরগুণে অগুণেহলীতি দীর্মঃ
গত্বঞ্চশীর্ণিঃ এবং কৃ বিক্ষেপেকীর্ণিঃ গৃ নিগরণেগীর্ণিঃ লৃঞ্ছেদনেলূনি ধূঞ্কস্পনে ধূনিঃ গ্লৈ বৈ হর্ষক্ষেএচাং পাঠেতি ঐআন্থেমানিঃ রানিঃ ওহাক্ত্যাগেওহাঙ্গতোহানিঃ জ্যাবয়োহানোজ্যানিঃ। অনিপ্রত্যয়স্থ
ফলমাহ অকারাদিন্তেনেতি ল্লাদিমধ্যপাতিতয়া নিকরণে তস্তাগুণিন্বাহ গ্রহিজ্যেত্যাদিনা সম্প্রসারণং
স্থাদিত্যর্থঃ। নমু মাদীনামনিকরণং ব্যর্থং ল্লাদিন্থেন নিকরণে মানিরিত্যাদি প্রয়োগাব্যাহতত্বাৎ সত্যং
মাদীনাং ল্লাদিমধ্যপাঠেহপি আদন্তাচ্চেত্যনেনাঙেবস্থান্বিশেষত্বামত্বনিঃ ল্রাধিকারেবাসরূপ স্থায়্মপ্রাহ্
অধ্নাতু শৃক্ষগ্রাহিকয়া গ্রহণাদনিরেবনাঙ্ অত্রবাবধারণার্থতু শব্দোহত্রগৃহীতঃ। শীর্ণিরিত্যাদি জ্যানি
পর্যান্তবাং প্রয়োগাঃ কন্তাছন্দোনিবদ্ধাঃ। তত্বকং প্রাক্। ৪৩৭॥

क्र श्रमीणिका।

कुष्या । कृष् আকর্ষণেকৃষিঃ শৃল্ রুজায়াং শূলিঃ ধূল্ উৎসর্গেধূলিঃ পাংশুঃ ধূলিপাঠেধূনিঃ শব্দঃ কৃষিবর্ষণং দৃশিদ্দর্শনং । ৪৩৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

কৃষ্যাদেরিতি। কৃষ্যাদেঃ সিদ্ধয়েকিঃ স্থাদিত্যর্থঃ। কৃষ্ বিলেখনে কর্ষণং কৃষিঃ কিন্তান্ধণঃ
শূলরোগ শব্দস্থাতেরু শূলিঃ জনীপ্রান্ধর্ভাবে জনিঃ অমর্যটাকাকারস্ত ধূঞঃ নিঃ ধূনিরিত্যান্থ। রুষুসেচনে
ব্রুষিঃ দূশির্ প্রেক্ষণে দূশিঃ রুচ্ দীপ্তাবভিপ্রীত্যাঞ্চ রুচিঃ। সর্বতেইদস্ভাদ্বাক্তিং হিছেতি ঈপ্রতায়োবা।

অজাদিভ্যস্তুণিঃ। আজিঃ সারীরাজিশ্চ রাজ্যপি। রঞ্ বারিঃ শালিঃ। ৪৩৯॥ সম্পদাদেঃ কিপ্চ। সম্পৎসম্বিদ্ণ গভার্বিপৎ ত্রিরং। ক্তিশ্চ সম্পত্তিঃ দৃষ্টিঃ। কৃতশ্চান্যত্রচেতি বচনাৎ ধ্বনিঃ লুক্ নীরদাদেঃ পুংস্ত্রঞ্চ। যথা তদ্ধিতলুকিসতি স্ত্রীপ্রত্যয়স্যাপি লুগিতি প্রযুজ্যতে। ৪৪০॥

স্ত্রিয়াং কৃষিঃ পাশুপাল্যমিতি জনিরুৎপতিরুদ্ভবইতি রেণুদ্বয়োঃ স্ত্রিয়াং ধূলিরিতি অভিযঙ্গে স্পৃহায়াঞ্চ গভস্তৌ রুচিস্তিয়ামিতিচামরঃ। রুচিঃ শ্রীদীপ্তো শোভায়ামভিম্বন্ধাভিদাধয়োরিতি মেদিনী। ৪৩৮॥

क्श्थहीिका।

অজা। ণিত্তাদিজ্বংকার্যাং। অধিকরণেআজির্যুদ্ধং সারিকারাজীতি ইদস্তাদ্বেতীপ্রত্যয়ং শ্রেণী। অথোবারীতুগজবন্ধনী। শন্চলনসম্বরণয়োঃ শালিঃ কলমাদিধান্তং শারিপাঠে শৃহিংসায়াং। ৪৩৯॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অজেতি। অত্তপ্রকাশেভেদবোধকং তেন সর্ববেশ্বরূপঃ প্রত্যয়ঃ অত্তণসুবন্ধপ্রত্যয়ইতি। আজি রিত্যাদি। অজ্গতিক্ষেপণয়োঃ বীয়তেক্ষিপ্যতেহস্তাদিকমিমিমিত্যাজির্যুদ্ধন্ বীয়তেগম্যতেহত্তেতিব্যুৎ পত্ত্যাসমভূমিন্ট। অথাজিঃ স্ত্রীসমভূমেচি সঙ্গ্রামেইতি মেদিনী। স্থাতোত্তিয়তে গম্যতেহসোসারিঃ পক্ষিবিশেষঃ। রেপরেনামিপশ্চাদিতিবিসর্গস্তরত্বে রোরেলোপঃ পূর্ববদীর্ঘশ্চ। সিধুকাসারিকাহিকেত্যমর কোষীয়স্ত্রীলঙ্গসঙ্গ্রহে। রাজ্দিপ্রোরাজ্যতেহনয়েতি রাজিঃ রাজিঃ স্ত্রী পঙ্ক্তিরেখয়োরিতি মেদিনী। রঞ্ আবরণেত্রিয়ন্তেরুধ্যন্তেগজা অনয়েতিবারিঃ। ইদস্তাদ্বেতাপ্রতারেগরীত্গজবন্ধনীত্যমরঃ। শালিরিতি কর্মাণিণিঃ অয়ংপুল্লিঙ্গঃ তৎকারণমূক্তং ক্তিঃ স্ত্রিয়ামিতিস্ত্রটিকায়াং। শালিস্তকলমাদেচি গন্ধমার্জ্রকেপুমানিতি মেদিনী। ৪৩৯॥

क्ट्थमीशिका।

সম্প। কর্মনিসম্পদ্বিভৃতিঃ ভাবেস্ত্রীসন্থিৎ জ্ঞানং দৃক্ দৃষ্টিঃ ভীর্ভয়ং বিরুদ্ধং পদ্যতেহসৌবিপৎ ত্রিভির্জ্বাবিষ্ণুমহেশৈরিয়তেহসৌত্রির্ৎপ্রণবঃ। ক্তিশ্চেতি। চকারাদিত্যর্থঃ। ক্ষ্যাদিত্বাৎ কোশব্দেনিনাদনিনদ্ধনি ধ্বানরবন্ধনাঃ। সম্পদাদিত্বাৎ কিপিলুগ্লোপঃ নীর্জ্জনপদোদেশইত্যমরঃ। চকারঃ শব্দভেদেনলিঙ্গান্তরসমুচ্চায়কোনৈতেয়ু তেন ক্ষিসম্পদাদেশ্রিত্বিষ্ এয়ুপুং স্বঞ্চেত্রর্থঃ। চোহবধারণেবা। স্বোক্তৈকিম্মিভিযুক্তোক্তিং প্রমাণয়তি প্রযুজ্যতে বৃত্তিকৃত্তির্ব্ববক্ষচিপ্রভৃতিভিরিত্যর্থঃ। স্ত্রীত্বেসতি লুকিসত্যামিতি প্রযুজ্যতেতিভাবঃ। প্রয়োগপ্রত্যক্ষেণঐদানিককর্তৃপ্রত্যক্ষেণব্যাবর্ত্তমানা। ৪৪০॥

গृष्यकाशिका।

সম্পদাদেরিতি। সম্পূর্বাং পদ্গতো। সম্পদ্ধতোগুণোৎকর্ষেহারভেদেহপিচ স্ত্রিয়ামিতি মেদিনী। সম্বিদ্জ্ঞানেদন্ধিং। সন্ধিংস্ত্রিয়াং প্রতিজ্ঞায়া আচারজ্ঞানসঙ্গরেইতি মেদিনী। দৃশির্ প্রেক্ষণেভাবেকরণেবাকিপ্। দৃক্স্তিয়াং দর্শনেনেত্রেবৃদ্ধোচ ত্রিষ্বীক্ষকেইতি মেদিনী। বীক্ষকপক্ষেধাতোঃ কিপ্যাদিত্যনেনকর্ত্রিক্রিপ্। দৃগাদিত্বাং শস্তগঃ। ঞিভীভয়েভাবেক্রিপ্। ভীতিভীরিত্যমরঃ।

.

ক্তিরপিভাবে পচিগাপাস্থাং। পক্তিঃ স্থিতিঃ পীতিৰুদ্দীতিঃ। অঙপি গানং গাপাসংস্থাব্যবস্থা। ৪৪১॥

ব্রজিযজি সমজাদিভ্যঃ ক্যপ্। ব্রজ্যেজ্যা সমজ্যাচ। আস্যামন্যা ভূত্যা স্থত্যা ইত্যাচর্য্যা অট্যাভাবেস্থ্যঃ। শেরতে নির্যাদন্তি নিপতস্ত্যস্যামিতি অধিকরণে শয্যানিষদ্যা নিপত্যা খট্টাপণ গুহার্থকাঃ। ভাবকরণ ব্যুৎপঞ্জ্যা-বিদ্যা॥ সংজ্ঞায়ামভিধানাৎ স্থ্রঞ্ সবনং স্থৃতিঃ সম্বিত্তিঃ। ৪৪২॥

বিপদঃ কর্মনিকিপ্বিপৎ। বিপদ্যাং বিপদাপদাবিত্যমরঃ। রুঞ্ আবরণেত্রিভিরবয়বৈর্ত্তিয়তেহসৌত্রির্হ কিপিহ্রম্বান্ত্রক্পমুবন্ধেস্থাৎ শুক্লতেয়ুড়য়াম্বেতিখ্যাতে। সর্ববান্মুভূতিঃ সরলাত্রিপুটাত্রির্বাত্তির্দিত্যমরঃ। ক্রিংচিতিচকারাদিত্যর্থঃ। সম্পত্তিঃ শ্রীশ্চলক্ষীশ্চেতি দৃষ্টিজ্ঞানেহক্ষিদশনেইতিচামরঃ। এবং বিপত্তি রৃষ্টি ভীতিপ্রভূতয়োহপি। কৃতশ্চান্যত্রচেতিবচনাদিতি। অন্যত্রার্থেয়্ব অন্যত্রধাত্মু অন্যত্রলিক্ষেমু কৃতোভবন্তীতিবচনাদিত্যর্থঃ। কৃদ্ধাভিচারাদিত্যস্থাপ্যয়মেবার্থঃ। এতম্বচনাশ্রয়ণকারণমুক্তং ক্রিঃ স্থিয়ামিতি সূত্রটীকায়াং। ধনন্ শব্দে লুঞ্ অপনয়নেকিপি অগুণেহন্তাতিনলোপঃ নিপূর্বঃ রৃত্বর্তনেনি তরাং বর্ততেহত্রেতি অধিকরণেকিপ্ নীর্দিত্যত্রকিবন্তেয়ু নহাদিষিতিদীর্ঘঃ আদিনাশালিপ্রভৃতিনাং গ্রহণং। প্রুম্বঞ্চ পুংস্থমেব। চোহবধারণে। চাম্বাচয়েসমাহারেহন্যোন্যার্থসমুক্তয়ে। পক্ষান্তরে তথা পাদ্পুরণেহপ্যবধারণেইতি মেমিনী। ৪৪০॥

क्९श्रमीशिका।

ক্তি। ডুপচ্ঞ্ষ্পাকেগাঙ্গতোগৈশব্দে বা অশ্বিকরণস্থান্তঃ পাঠাৎ পাপানে এষাংষমুবন্ধাদন্তত্বেন নিত্যমঙ্প্রাপ্তোক্তিরপিবিধীয়তে। পচনং পক্তিঃ গানং গীতিঃ পূর্বেবাক্তাগীতিশ্ছন্দসিকর্মাণি। অঙপীতি। অপ্যভাবে ক্রুক্ত্যোবিশেষত্বাদঙনস্থাদিত্যর্থঃ। ৪৪১॥

গুঢপ্রকাশিকা।

ক্তিরপীতি। পূর্ববিদ্ত্রেভাবনিয়মোনাস্তি অত্তত্তিয়য়য়ঃ। পক্তিরিতি ধূট্যন্তেচ চজোঃ কঃ স্থাৎ। স্থিতিরিতি দ্যতিস্থতিস্থামেত্যাদিনা আইঃ পীতিরিত্যাদোকিতি হলীত্যাদিনা আঈ। পক্তিঃ স্ত্রীগোরবে পাকেইতি স্থিতিঃ। স্ত্রিয়ামবস্থানে মর্য্যাদয়াঞ্চনীমনীতি পীতিয়ামেস্ত্রিয়াং পানেইতিচ মেদিনী। অশ্ব-পক্ষে তিক্ স্থায়ামন্থাশিষিচেতি কর্ত্তরি তিক্। ৪৪১॥

क्र थ्रामिका।

ব্রজি। ব্রজিশ্চ যজিশ্চ সমজাদিশ্চেতিছন্তঃ। ভাবাধিকারাদেভ্যোভাবেক্যপ্ কৃষ্যভিচারাদাদেব্যবস্থাবা সমজ্যাদেরগুত্রাপিসংজ্ঞায়াং। ব্রজ্যাটাট্যাপর্য্যটনম্ ইজ্যাযজ্ঞপথস্থিতিঃ সমজ্যাপরিষদ্যোষ্ঠীতি। ততুপলক্ষিতে তচ্ছকইতিখ্যায়াদাদিগ্রাহ্য আখ্যাদয়ঃ। স্থাদাস্থাদ্মানান্থিতিঃ। মন্জ্ঞানে। পশ্চাদণীবাশিরামন্থেতি। ব্যভিচারাদেতে সংজ্ঞাসংজ্ঞয়োর্ভাবে শয্যাদয়স্ত সংজ্ঞায়ামেব বাহকর্তরিশীঙ্

ক্বণ্ডোষক্ চ। ক্রিয়াক্বত্যাক্বতিঃ। ৪৪৩॥ সর্ক্তেন্তেষ্টেবাইপিচ। পরিসর্য্যা পরিসৃতিঃ পরিসৃত্যা পরিব্রিয়া। ৪৭৪॥

শরীরিতঃ শয্যাক্রমেণথট্বাপণগুহার্থকাঃ আপণঃ পণ্যবীধিকা বিদ্যাহেতাশ্চতুর্দ্দশ অভিধানাৎ সংজ্ঞায়াং অসংজ্ঞায়াং ক্যপ্ ক্র্যাদিরিত্যর্থঃ। কর্মাণিতস্ক্ষজ্রিয়ত্নঃ যুতেরিতি। সম্বেদনং সম্বিতিঃ। ৪৪২॥

গৃতপ্রকাশিক।।

ব্রজীতি। ভাবেহকর্ত্তরিকারকেচ ব্রজিযজিসমজাদিভঃ ক্যপ্সাদিত্যর্থঃ। ব্রজ্যেতি। ব্রজ্গতো ভ্রমপ্রস্থানয়োর্ত্রজ্যান্ত্রিয়াং পর্যাটনেইপিচেতিরুদ্র:। যজ্দেবপূজাসঙ্গতকরণদানেযু ভাবকর্মকরণেযু ক্যপিবচিম্ববিত্যাদিনাসম্প্রসারণেইজ্যা। ইজ্যাদানেহধ্বরেহর্চায়াং সঙ্গমেন্ত্রীগুরোত্রিছ-তিমৈদিনী। সম্পূর্কঃ অজ্গতো সমজন্তিঅস্থামিতিসমজ্যা। সমজ্যাপরিশদ্যোষ্ঠীসভাসমিতি সংসদ-ইত্যমরঃ। আদিগ্রাহানাহ আসামন্যেত্যাদি। আস্উপবেশনেআস্থা। স্থাদাস্থাদনান্থিতিরিত্যমরঃ। পশ্চাদগ্রীবাশিরামন্মেত্যমরঃ। ভৃঞ্ভরণে। ভৃত্যাভৃত্য়ো ভর্মবেতনমিত্যমরঃ। যুঞ্জভিষ্বেধাত্বাদেঃ ষস্তসঃ। স্বত্যাহভিষবঃ স্বনঞ্চেত্যমরঃ। ইল্গতে অয়নমিত্যাক্যপ্ভত্যাদিয়ু ব্রস্বাভূ ক্। ইত্যাস্থাদ্গ-মনেপ্রাপ্তাবিতিযাদবঃ। চর্যোতি। চর্গতো। চর্যাত্বীজ্ঞাপথেস্থিতিরিত্যমরঃ ঈর্যাধ্যানধারণাদিরিতি-তটিকা। অট্গতৌ। রুথাট্যাথলুসাতস্থাইত্যমরটীকা শেবতইত্যাদি। শীঙ্মপ্রেশীঙঃ শয়ীরিতঃ শয়া। শয্যাভুশয়নীয়বং। শয়নং মঞ্চপর্য্যঙ্গপণ্যক্ষাঃ খটুয়াসমাইত্যমরঃ নিপুর্বঃ সন্তবিসরণগত্যবসাদনভেদেযু ক্যপিদীদতেঃ প্রতিং হিম্বেতিষত্বং। আপনস্তুনিষদ্যায়াং বিপণিপণ্যবিথিকেত্যমরঃ। পত্ ৯গতোনিপত্যা। নিপত্যাগহ্বরঞ্চাপিদেবথাতবিলং গুহাইতিত্রিকাণ্ডে। বিদ্যে।বিদ্জ্ঞানে। বিদ্যাশ্চতুর্দ্দশাফীদশচ। বিদ্যাক্তেয়াপ্রভাপ্রকাশিকায়াং কারকেইহথলুনিখিলবদ্যেতিবিবরণে। সংজ্ঞায়ামিতি। ইদং প্রায়িক-ছেনোক্তং কোষাদাবসংজ্ঞায়াং মপিকচিদ্বেদ্যং। ব্রজ্যাইজ্যাদের্য্যোনার্থস্থাপিকোষাদৌদৃষ্টত্বাদিতি। সব-নাদিসংজ্ঞায়াং কোষাদোক্যবস্তত্বপ্রোপ্তর্মক্যপ্ ক্তিরপিত্যাদি সমজ্যাচেত্যন্তমার্য্যাছন্দঃ তত্রস্থাং পক্তিঃ ন্দ্ৰিতিঃ পীতিৰুদ্গীতিদ্বিতীয়ঃ পাদঃ। ৪৪২॥

इर्थिशिका।

কুঞো। চকারাৎক্যপ্ ক্তিশ্চ ঘঞাদিরপি। যকি ঋকারস্থারিঃ ক্রিয়াক্যপি ভুক্ কৃত্যা। ৪৪৩॥

गृष्धकाणिका।

কুঞ্ছতি। ভুকুঞ্করণে কুঞ্ হিংসায়ামিভ্যুভয়স্মাৎ ধান্বর্থোহি ক্রিয়াজ্ঞেয়াইতি কার্য্যমাত্রং ক্রিয়োচ্যতে ইতিচ। কুত্যাক্রিয়াদেবতয়োস্ত্রিয়ু ভেদে ঘনাদিভিরিত্যমরঃ। কুত্যাক্রিয়াদেবতয়োস্ত্রিয়ু বিশিষ্ট কার্যায়োরিভিমেদিনী। কৃতিঃ করণহিংসয়োরিভিমেদিনী। ৪৪৩॥

क्ट्थमीशिका।

সর্ত্তে। অপিশব্দাৎ ক্যপ্ত্রিশ্চ চকারাচ্চামুৎকৃষ্টোযগাদিঃ। তুশব্দোযেপর্য্যবধারকঃ। তথাচ শস্তু: নাপরের্য্য: তেন সংস্তিরিতি অতঃ পরিণোদাহতঃ। পরিস্র্য্যাপরিসর ইত্যামরঃ। ৪৪৪॥ উতিসাতিহেতিয়ৃতিজৃতয়ঃ স্থার্রিপাতনাৎ। অবোবেঞশ্চউ তিঃসনোতেঃ সিঞশ্চসাতিঃ ইস্তেহিনোতের্হেতিঃ যোতেযুঁ যিতঃ জবতের্জ্জ্তিঃ। ৪৪৫॥ পর্য্যেষণাপরীষ্টিশ্চ কীর্ত্তনাকীর্ত্তিরিত্যপি। ইনস্তাৎ রুতের্ন্নিপাতঃ। ৪৪৬॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

সর্ত্তেরিতি। সগতাবিত্যম্মাৎ। তুশব্দঃ পর্যুপসর্গাদযপ্রত্যরজ্ঞাপকঃ। যেগুণে পরিসর্য্যাক্তে পরিস্তিঃ ক্যপি তুকি পরিস্ত্যা যকি ঋকারস্থারিকারে পরিস্রিয়া। কুঞোযক্ চ ক্রিয়াক্ত্যাকৃতিঃ সর্ত্তেপ্তযোহপিচেত্যেবং ছলঃ। ৪৪৪॥

क्र्थिनीं शका।

উতি। ক্ত্যান্তা এতেসিদ্ধাঃ স্থ্যভাবে। অত্রাব্বেঞােঃ সারূপ্যদর্শনমেব যথা অবঃ স্রিব্যবীস্থাম্বে বতঃ সিদ্ধাতি বেঞস্ক সম্প্রসারণে কাবেবেতি নিয়মেইপি দীর্ঘোনিপাতঃ। উতীরক্ষণং তন্তুসন্তানক। যণুদানে তনাদিঃ অত্রথাজাদেতি সাতিঃ সিদ্ধাতি যিঞ্ বন্ধনেনিপাতঃ। সাতির্দানাবসানয়াঃ হিগতি-রুদ্ধােঃ হয়োদ্ধিপাতঃ। রবেরর্চ্চিশ্চ শস্ত্রঞ্চ বহিং জ্বালাচ হেতয়ঃ। যুমিশ্রনামিশ্রণয়ােঃ দীর্ঘোনিপাতঃ যৃতির্য্যোগঃ জু আশুগতো সোত্রস্থেনাম্য অগ্রহাদীনামিতি সাদৃশ্যবাচি নঞাইগ্রহণাদি ড ভাবোদীর্ঘশ্চ নিপাতঃ জুতির্জ্রবঃ। অত্রাবতের্ব্রায়তর্বা উতিঃ। স্থাতে সনোত্রের্বাসাতিঃ হস্তের্হিনোতের্বাহেতিঃ যোতের্যাতের্বাযুতিঃ জায়তে র্জ্বতের্ব্রাজুতিরিতি কলাপচন্দ্রো। ৪৪৫॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

উতীতি। অত্রাব্রক্ষণানে ইত্যস্য সনোতে কনানেননিপাতঃ স্রিববিজ্ব রিমবামিত্যাদিনা বউতিরিতিথা জাসাঃ খন্জনিসনামিত্যনেন সনোতেঃ সাদেশেসাতিরিতিসিদ্ধেঃ কিন্তু সারূপ্যদর্শনার্থমূক্তং তথাহি যথা অবউতিস্তথাবে এউতিঃ যথাসনোতেঃ সাতিস্তথাসিনোতেঃ সাতিরিতিত্ব্যরূপদ্বিতি । উতিঃ স্ত্রীরক্ষণে স্মৃতাবিতি সাতিদ্দানে হ্বসানেস্ত্রীতি হেতিঃ স্থাদায়ুধজ্বালাস্থ্যতেজঃ স্থােষিতীতিচ মেদিনা । জ্বনে জ্তিরিতঃ মরঃ। ৪৪৫॥

क्र ९ अमी शिका।

পর্যো। ইষুইচ্ছায়াম্ ইষুআভীক্ষ্যেবাহেত্বিনন্তো। কীর্ত্ত্রন্থিক চুরাদিরিতিপঞ্জিকা। ইনন্তত্বেনানঃ প্রাণোতি বাসরূপাভাবাৎ অত্রক্তেনিপাত ইডভাবেল্লোপঃ অপিনানোহপি সহোদাহতঃ। পর্যোষণাপরীষ্টিঃ স্থাদিত্যমরঃ। দ্বোপরিচর্য্যাবাচকোকীর্ত্তনাকীর্ত্তিগাদিকীর্ত্তনং। কীর্ত্তিরিষ্টিশ্চেতিকাতন্ত্রং। ৪৪৬॥

गृष्प्रकाणिका।

পর্য্যেষিতি। পরিপূর্ব্বইষ্ইচ্ছায়াং ভাবেহনট্স্ত্রীত্বং নিপাতনাৎ পর্য্যেষণাক্তোপরীষ্টিঃ অর্থনিপাতঃ।
কৃতসংশব্দনেছেত্বনস্তাৎ ঈষিপ্রস্থাসিবিশ্বন্দইনস্তাদপ্যনঃ স্মৃতইত্যনঃ ইডভাবেল্লোপোনিপাতনাৎ। কীর্ত্তনা
ক্রেক্তির্মিপাতঃ। যশঃ কীর্ত্তিঃ সমজ্ঞাচেত্যমরকোষোক্তস্ত অনিনস্তক্তঃ কর্মণিক্রোসিদ্ধং। ৪৪৬ ॥

অপীচ্ছামূগরা বহাজাগর্যাজাগরাঝরা। অযপ্রত্যরাম্ভানিপাত্যম্ভে। অপিনাচিম্ভরাইটিঃ মুগণামূগবর্হাইত্যাদি। ৪৪৭॥

গুরোঃ সেটোহলস্তাদঃ সনাদিপ্রত্যয়াদপি। অপ্রত্যয়ঃ স্যাৎ। স্ত্রিয়াং ভাবেক্তেরপবাদঃ। আশংসা ঈহা প্রতীক্ষা উহা চিকীর্যা ঈপ্সা পনীপতা অটাটা দৃশদো যিন্ দৃশদাকণ্ট্যা। অপের্বন্ধার্থত্বাং শোভাকণ্ড্তিঃ প্রশক্তিঃ ধ্বস্তিঃ। ঈদনুবন্ধানাঞ্চনগ্রহণং দীপ্তিঃ ক্ষাতিরিত্যাদয়ঃ। গুরুমতঃ কিং গৃহীতিঃ। সেটঃ কিং সন্জসংসক্তিঃ। হলস্তাং কিং জাগর্তিঃ দীধিতিঃ গ্রহাদিত্বাদিটীবর্ণলোপঃ। ৪৪৮॥

क्ट्यमीशिका।

অপী। অকারয়কারপ্রত্যান্তাভাবেনিপাত্যাঃ। ইযুইচ্ছায়ামপ্রত্যয়েয়ন্ত ছোনিপাতঃ ইচ্ছা এবং মৃগঅন্বেমণেহদন্ত করাদিঃ অল্বাধোয়ইল্লোপঃ যন্ত্যইনন্তলক্ষণানাং বাধিকাসনাদিপ্রতায়াদপীতঃইল্লোপাভাবক্ট। আচ্ছাদনং মৃগব্যং স্থানাথেটো মৃগয়াস্তিয়াং। বর্ছ্বর্ণপরিভাবণহিংসাদানেয়ু চুরঃদিঃ অল্বাধঃ অঃ। বর্ছংপিচ্ছেদলেস্তিয়াং বর্ছা। ব্রহেবর্হেভিকেটিৎ। জাগুঃ ক্তিবাধোয়ঃ যদাক্যপোবাধঃ। শন্ত্ কিম্বর্জিতেগুণঃ জাগর্যা। জাগরেতি। স্বরান্ত ক্রাদপ্রত্যয়াপ্রাপ্রাবপ্যঃ। জাগর্যাজাগরাদ্বয়োরিত্যমরঃ। বার্শক্ষেগতোচবারণং বারা অঃ বারোহঙ্ বাধোবাঅঃ। অপিনেতি। অপিরনুক্তপ্রকৃতিপ্রস্বাস্ক্রামক্তায়কঃ। চিন্তরাম্বগয়াবং ইচ্ছোক্তাইপ্রিপিম্গণেত্যনঃ মৃগোবর্ছইতি ঘঞ্পি। আদিনাএমণং মৃগণং চিন্তনমিত্যাদি। ৪৪৭॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

অপীতি। ইচ্ছতি। ছেআঙ্মাঙ্সরাদিতিচুক্। ইচ্ছাকাঞ্চ্যাম্পৃহেহার্ড্ বাঞ্চালিপ্যামনারথ-ইত্যমরঃ। বর্হং পিচ্ছেদলেন্দ্রিয়ামিতি মেদিনা। জাগর্যাজাগরা। ঝরেতি। ঝৃষ্বয়োহানৌঝরণং ঝরাঅর্থনিপাতঃ। বারিপ্রবাহেনিঝ রোঝরইত্যমরঃ ঝরাচেতিতটীকা। অপিনেতি। অপিনাউক্তে ভ্যোহন্যঃ অপ্রত্যয়াতঃ তথা উক্তেবৃত্ত প্রত্যয়াতঃ সমুচ্চীয়তে। চিন্তয়েতি। চিতিয়্বত্যাং ইদনুবন্ধ হালুম্ চুরাদিয়াদিন্ততঃ অঃ। চিন্তাধ্যাচিন্তয়াম্বৃতিরিতিরভসঃ। ইপ্তিরিতিক্তিশ্চ। ইপ্তির্যাগেচ্ছয়ো রিত্যমরঃ। স্বগণেতি। মার্গণং স্বগণাস্বগইত্যমরঃ। স্বগশ্চ্বিহশ্চেতিদ্বন্দ্রেস্ববর্থে বর্হ ইতি কালিদাসইত্যমরটীকাকারঃ। ৪৪৭॥

क्र ९ अमी शिका।

গুরো:। গুরো: সেটা হলন্তাদিতি সমানার্থন্তেনগুরোর্মন্তলোপা ন গুর্বন্তাদিতি। ক্তিঃ
স্ক্রিয়ামিতি ক্তের্বাধকা। এতত্বপলক্ষণা পর্যায়ার্হখণে হকণ্বাধকো হিপি যথা ঈহাভবতঃ পর্য্যায়েণচেন্টেতি
বক্তা। আপত্রব্যাপ্তো সনি আপ্নোতে রীপ প্রাণ্ লুক্ ইপ্সা পত্ত যঙ্লুকি বন্চি প্রস্কীতি নীঃ পনীপত্য

1

ষল্বন্ধভিদাদেরঙ্ ভীষিচিন্ত্যাদিকাদিপ। জৃষ্ অঙ্ গুণঃ জরা ড্পচঞ্ষ্ পচা ক্ষিষ্ ক্ষয়ে ক্ষিয়া এপূষ্ এপা ডুলভ্ষ্ লভা ক্ষমূষ্ ক্ষমা। অপিনালব্ধিঃ ক্ষান্তিঃ। ঘটাদয়ঃ খালুবদ্ধাঃ ঘটা প্রথা ব্যথা। ভিদাদিরাকৃতিগণঃ ভিদাবিদারণে ভিত্তিরন্যা ছিদাকর্ত্তনে বিচ্ছিত্তিরন্যা হরিচন্দনস্য গহররে গুহা গৃঢ়িরন্যা ধারা প্রণতনে অন্যাভুগ্গতিঃ কারাবদ্ধনে ক্তিরন্যা ক্রথা রেথা বিদাচ্ডাক্ষিপাহারা মুজা তুলা কথা স্পৃহা ক্জাপীড়া বসা গোধা ক্রপাদয়ঃ। রদ্ধ্যাদিরপিগণসাসাং এবং ভীষা চিন্তা পূজা চচ্চা অধ্যয়নেচচ্চা তুল্ উন্থানে তোলা কেয়া বাধা ইনন্তাদনক্ষ । ৪৪৯॥

যঙন্তাদটোইটাটা আচারেঘিনন্তাদ্ শদোদৃশদা কণ্ডুঞ্গাত্রবিনামেঘনন্তাৎ কণ্ডুয়া। বহুলার্থসাদিতি। যথা অপিসন্তাবনাপ্রশাস্কার্গহাসমূচ্চয়ে। তথা যুক্তপদার্থেইপি কামকারক্রিয়াস্কচেতি মেদিনী। তথাচাপ্তরু-মতোইপ্যঃ সনাদিপ্রত্য়াৎ ক্তি রপি ঈদসুবন্ধগুরুমতোনস্থাদপীত্যর্থঃ। শুভ্দীপ্রৌত্মঃ শোভাকান্তিঃ কণ্ডুতিঃ ধাত্বতলোপেযলোপঃ যনন্বিনাপি গুরুমতোইপিক্তির্বা ক্ষায়ীর্দ্ধোয়লোপেশাতিঃ। জাগর্তি-রিতি। অপীচ্ছেত্যপিশকাৎ ক্তিঃ দীধাঙ্দীপ্রে) ইটিযেবর্ণয়োরিতালোপেদীধিতিঃ। ৪৪৮॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

গুরোরিতি। গুরুমতঃ সেটে। হলন্ত। দ্বাতিঃ সনাদিপ্রত্যয়ান্তাদিপি অঃ স্থাদিত্যর্থঃ। ভাবইতি। ক্তিরপিভাবেইত্যতঃ প্রবর্ততে ভাবেইতি। ক্তেরিতি। বিশেষদাদিতিভাবঃ। আশংসেত্যাদি। আঙ্শন্ত্রকথনে সহ্চেন্টায়াং প্রতিপূর্ববঈক্ষ্নলশনে। উহবিত্তকি সনন্তাৎ কর্ত্মিচ্ছা চিকার্যা ঈপ্সা যঙ্ন্তাৎ পত্রগতে অত্যর্থং পুনং পুনর্বাপততাত্যর্থে ক্রিয়াসমভিহারে যঙ্পস্থাদিরে বন্চি প্রান্সকিদিবাদির ভাসিপ্রক্ষাদিপরহাং নীঃ কর্ত্রবাইতি অভ্যাসান্ধীঃ পনীপত্যনং পনীপতা অঃ ব্যঞ্জনাদ্যঙইত্যননিযঙ্লোপঃ। অট্গতে অত্যর্থং কুটিলমটিত অট্ সূত্রিমূত্রসূচ্যশ্ভাইতি যিও পরবর্ণযোজনে স্বরাদিদ্বামিবাচরতীতি আচারে বিনিবার্থকাৎ তম্মাদপ্রত্যয়ে বিন্ বিভোবেরতি বিল্লোপেদৃশদা যনন্তাৎ কণ্ডুঞঃ স্বার্থেকগুণদিভ্যোযগন্তিঃ। থর্জ্বঃ কণ্ডুন্চ কণ্ডুরেত্যমরঃ। নির্বিদ্ব শীরিয়মভিনবাকীদৃশীতে প্রশন্তিরিত্যনর্যরাঘবে। ধ্বস্কু অধঃপতনে ধ্বন্তিঃ উভয়ত্রাগুণে ন লোপঃ দাপাদীপ্রোদীপ্রিঃ। আদিনা পুচীসম্পর্কে পৃক্তিঃ ভূজীবক্রীকরণে ভূক্তিরিত্যাদয়ঃ। গ্রহ্উপাদানেক্রৌ সম্প্রসারণেগৃহিতিঃ সন্জপরিম্বন্ধে সংসক্তিঃ অগুণেনলোপঃ জন্তকঃ। জাগ্নিভাক্ষয়ে শস্ত্ কিন্বজিতেজাগুণ্ডণ এবজাগর্তিঃ। ৪৪৮॥

क्ट्थिमीशिका।

यञ् । यञ्च तक्षा ९ ভিদাদেঃ ভীষ্ধাতোশ্চিন্ত্যাদিকাদপ্যঙ্সাৎভাবে। জৃষ্বয়োহানো বৃদ্ধত্বজা। অঙিগুণইতি। অগুণাঅতসুরিতি নঞোহনিত্যত্মাদিতি পঞ্জিকা। তত্মাদিতিশেষঃ। ঘটাদয়ইতি।

ষকারমকারানুবন্ধাঅতিদিষ্টাঃ মনুবন্ধেন ষনুবন্ধাবিহিতেভ্যোহপ্যঙিত্যর্থঃ। ঘট্ চেষ্টায়াং চৌরাদিকোহপি মিতাংক্রমঃ অপিনাহনোহপি। করিণাং ঘটনাঘটেতি। প্রথ্প্রথ্যাপনে প্রথা প্রথনঞ্চ ব্যথ্ ভয়সঞ্চলনয়োঃ বাথাত্র্থং। আকৃতিগণঃ তত্তদর্থা আকারেণ গণনীয়াঃ এতেনভিদ আদিঃ ভিদ্ আদিই্যস্তেভ্যুভয়সমাদে ২র্থব্যবস্থা বিদারণে স্ফোটনে ভিদেত্যাদি। ভিদ্যতে হসে।ভিত্তিঃ স্ত্রীকৃড্যং বিচ্ছিত্তিবিলোপঃ কৃদ্ব্যভি-চারাদ্ধিকরণে গহ্বরে পর্বভন্ত শিলাদ্যার্ভদেশে গুহা। গুহেঃ শৈলৌষধ্যোরিতি শস্তুঃ। গৃঢির্গোপনং। ধুঙ্ অবস্থানে ইতিবজ্ঞ:। ধুঞ্ ধারণে ধুঞোনিপ্রপাতইতি শন্তুঃ। প্রকর্ষেণানবচ্ছিন্নরূপেণ জলাদে-র্দ্রবস্থ প্রপতনং ধারাসম্পাত আদারঃ। লক্ষণয়া প্রপতনোপলক্ষিতোপিধারা। প্রপাতনপাঠে হেছিন-ন্স্তাদনট্ ধৃতি ধৈর্যাং কুঞ্ বন্ধনে বন্ধনালয়ে। কারাস্থাদন্ধনালয়ে ইত্যমরঃ। কৃতিঃ করণহিংসয়ো-রিতিমেদিনী। রুধির্ রোধনং রোধা লিখ্লেখালিপিরাজিকয়োর্মতা বর্ণবিকারাৎরেখাচ। বিদাজ্ঞানেচ बिर्फिकोমনা গায়াঞ্চ যোষিতি। চূড় হারকরণে চূড়াকীরিটং ক্ষেপণং ক্ষিপাহরণং হরা। স্থামাষ্টি র্মার্জনা ষ্কা। তুল্উমানে চুরাদীনন্তঃ চুরাদীনোহনিত্যপক্ষেহনেনাঙ্ এবমপরে। তুলাসাদৃশ্যমানয়োঃ। কর্থবাক্প্রবন্ধে। প্রবন্ধকল্পনাকথা। স্পৃহ বাঞ্চারাং রুজোপীড়ারাং স্ত্রীরুণুক্তা পীড়্ অবগাহনে চুরাদিঃ পীড়াবাধা বস্ নিবাসে বস্ আচ্ছাদনে দন্ত্যান্তঃ বসাহ্যমেদঃ তালব্যপাঠে বশ্কান্তো বশাবন্ধ্যা গুধ্ পীড়ায়াং পরিবেউনেচ গে:ধাতলজ্যাঘাতবারণে গোধিকায়াঞ্চ ক্রপ্ কুপাদয়া। ত্রপুসংজ্ঞায়াং রস্তঋত্ত্বকুপেতি বজ্রঃ। আদিনাশিথাজটাদয়ঃ। গণপাঠাদিতি। পৃর্বোচাইয়্যভিদাদির্মধাতুগণেপঠিতঃ কিন্তু নন্দ্যাদি-বৎ প্রাতিপদিকগণে যুভিদাপ্রভৃতিউদ্ধৃত্য নির্দ্দিষ্টঃ তেষাং তত্তৎপাঠাদেবকারারেথাদৌ রৃদ্ধিগুণাদিঃ অপিনার্থ্যবন্থাদিশ্চেত্যর্থঃ। ঞি ভীভয়েহেশ্বনিভিয়োভাপ ভীমো ভাষাভীষণং। স্থাচিত্তামাতিরাধ্যানং। পুজানমস্যাপচিতিঃ। তুল্ উন্মানেবেন্ তোলাতোলকং তুল্সম্পত্তো দোলাযানবিশেষঃ। কুবিআচ্ছাদনে কুষাস্তগহনার্তিঃ যজ্ঞাগ্রেরাবরণার্থ স্বৃত্তিকাপ্রাকারবিশেনঃ। ইনস্তাদিতি। ভীষিচিন্ত্যাদিকাদিপি শব্দান্ত,লবেলেতি আয়াদ্বা অনশ্চেত্যর্থঃ। সর্বেন্চুরাদীনন্তা ইতিভট্টঃ। ৪৪৯॥

গৃঢ়প্ৰকাশিকা।

ষকুবন্ধতি। গুণইতি। অগুণা অত্ত্র্রিতি নঞোহনিত্যন্তাৎ। গুণঃ সংজ্ঞান্ধানগুণেহপীতি ক্লচিনাথ ভট্টাচার্যাঃ। বিশ্রদান্ধরেত্যমরঃ। ডুপচঞ্ষ্পাকে পচা ক্ষিয়েতাত্র ইয় ত্র পূষ্ লজ্জায়াং ত্রপা। পতাপাকেইতি ক্ষয়েক্ষিয়েতি মন্দাক্ষং ব্রীত্রপা ব্রীড়ালজ্জেতিচামরঃ। ডুলভ্যপ্রাপ্তে লভা ক্ষর্য্ সহনে ক্ষমা। লব্ধিরিতি। ক্রেলী তস্ত্রখঃ। ক্ষান্তিরিতি অঃ পঞ্চমোপধাদীর্যঃ মন্ত্রবিন্দারণে বিন্দার্মঃ। ক্ষিতি ক্ষান্ত্যাঃ ক্ষমেতি ক্ষান্তিন্তিতি ক্ষেতিচামরঃ। প্রথাগ্যাভাবিত্যমরঃ। ভিদির্ বিদারণে ভিদা। ভিদরঃ ক্ষুট্নং ভিদেত্যমরঃ। বিচ্ছিত্রিরঙ্গরাগেচ বিচ্ছেদে হারভেদে স্ত্রীতি হ্রিচন্দনমন্ত্রীস্তান্দেবতানাং মহাক্রহে। নপুংসকস্ত গোশীর্ষে জ্যোৎস্থা কুষ্কুময়োরপীতিচ মেদিনী। গুহুসন্থরণে। গুটিরিতিক্রো হোটইত্যাদি। লিথ্ অক্ষরবিস্তানে রেখা। শিখাচুড়েতি ক্ষিপায়াং ক্ষেপণমিতি। ক্রঞ্ হরণে হিয়তে মনোহনয়েতি হারা। হারামুক্তাবলী হারইতি রভসঃ। মৃজুশুদ্ধো মুজা ক্রপ্ কুপায়াং গতেচি প্রণাচাৎরক্ত অত্বং ধারাদীনাং বৃদ্ধিং গোধাদীনাং গুণঃ অর্থব্যবন্থাদিশ্চ। চিতি স্মৃত্যাম্ ইদকুবন্ধবাস্মৃ

আদস্তাচ্চ। অঙ্ভাবে। প্রমা প্রস্থান্ত্রাপধা প্রদা। দানং দাপা নংপা চকারাং প্রমিতিঃ। ৪৫০॥

ঈষিশ্রস্থ্যাসিবিদ্বন্দইনস্তাদপ্যনঃ স্মৃতঃ। স্ত্রিয়াংভাবে ঈষ্ণতি ছিংসাদানেষ্ ঈষণাশ্রস্থনাউপাসনাআন্তঃ সাহচর্য্যাৎবৈক্তঃ বেদনাবন্দনাইনস্তাৎ কারণা হারণা ষট্টনা অপিনা ঈষণমীষাকরিণাং ঘটনাঘটাবিত্তিঃ অধ্যাপনং চিন্তনং। ৪৫১॥

চার্চিক্যমিতি চামরঃ। দোলানীল্যাং যানান্তরেহপি চেতিমেদিনী। ইনস্তাদিতি। ভীষিচিস্ত্যাদিকাদিত্যর্থঃ। তেন ভীষণাচিস্তনা পুজনা চর্চনা তোলনা দোলনা কুম্বনাইতি চ। এতেচুরাদয়ঃ। ভুল্
ধাভুস্ত বিকল্পেনস্তঃ। পূর্বসূত্রে পরসূত্রেচ ভাবেইতি কথনাদত্র তদকথনাদ্তাবেহ কর্তরিকারকেচেত্যব
গস্তব্যং। ৪৪৯॥

क्ल्थमीशिका।

আদ। প্রমাসত্যামুভবঃ। শ্রদব্যয়মভ্যুপগমে আন্তিক্যবৃদ্ধিহিশ্রদাঅন্তর্জানং অন্তর্জামানং মাত্রাণং ত্রা। ত্রিপধাধর্ম্মান্যৈর্য্যৎ পরীক্ষণং। কৃদ্যভিচারাৎ কর্মাণচ উপান্ত উপধা ইতি। অধিকরণে প্রপাপানীয়শালিকা। ৪৫০॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

আদেতি। নচেদং ব্যর্থং সম্পদাদি গণপাঠাৎ কিপ্ প্রত্যয়েন সিদ্ধন্থাদিতিবাচ্যং মাভিমানাং জিবাধনেন সার্থক্যাৎ। মাঙ্মানে মামানে প্রমাণং প্রমা। প্রমিত্যে প্রমেত্যমরঃ। শুত্রপপদেধাঞ্। শুদ্ধাদরেচকাঙ্ক্রায়ামিতি। ত্রৈঙ্ রক্ষণে এচাং পাঠেতি ঐ আত্বেহঙি আলোপে আপ্রত্যয়ঃ। দাঞ্ দানেদো অবথগুনে দেঙ্ পালনে দাপ্ ছেদনেদৈপ্শোধনে দা পাপানে পারক্ষণেপা। চকারাদিতি। চকারাৎক্তিশ্চেত্যর্থঃ। প্রমিত্যে প্রমেত্যমরঃ। ৪৫০॥

क्र थमीशिका।

ঈষি। ঈষিমুদ্ধস্থান্তঃ শুস্থ গ্রন্থসন্দর্ভেআস্উপবেশনে বিদ্ঞানে বদিবাদনস্তত্যোঃ ইনস্তইত্যন্তগ্রন্থানিন্ অন্তোহবয়বোযস্তেত্য়বয়ে বিষয়বিবক্ষয়া প্রাপ্লোপেক্তিরেব যথাকার্তিহার্তিরিভিভট্টঃ। ঈষ্যাদীনক্তেন্তোগুরোঃ সেটইত্যনেন বিদেভিদাদিনাপ্রাপ্রপ্রেয়বাধোহয়ং। ঈষ্গতোইভিমতান্তরে। ঈশ্ঐশ্বর্যোঈশনেতিপঞ্জিকা। ঈষ্টিরিষণা। শুন্থনাপরিচর্য্যাপ্যুপাদনা। আন্তেরিত্যাদাদিকস্তেত্যর্থঃ। সম্বেদোবেদনাবন্দনং বন্দনা। কারণেতি। হেছিল্লোপেসেটোহপি বস্পতরিভিজ্ঞাপনাৎ লুক্লোপ্যইতিবিধানাচ্চ ।
নিমিত্তাপায়ন্তায়ানবতারঃ। ঘট্চেফায়াং চুরাদিঃ ঘটনাঘট্ট নাপাঠেঘট্ট্ সংঘটনেতথা। অপিনেতি।
অনট্সবণং গুরোঃ সেটইভিজঃ ঈষাবসুবদ্ধেত্যঃ ঘটা ক্তিঃ বিত্তিঃ ক্যাপিবিদ্যাত্মান্তাস্যঃ উপাসনমিত্যাদি। ৪৫১ ॥

স্বন্ ভবতিসংজ্ঞারাং। উদ্যানপুষ্পভঞ্জিকা। পুষ্পাণিভজ্ঞান্তেইস্যামিতি পুষ্পভঞ্জিকা ক্রীড়াবিশেষঃ ক্রীড়ায়াং নিত্যসমাসঃ দমনভঞ্জিকা শালভঞ্জিকা রোগসংজ্ঞায়াং প্রচ্মান্দিকা প্রবাহিকা বিসূচিকা বিপাদিকা। ৪৫২॥

गृष्यकानिका।

ঈষীতি। ঈষিশ্রন্থিকাদীনাং ধাতুনির্দেষেইঃ। ইনস্তাদপীতিপৃথগুপাদানাৎ বন্দ্পর্য্যন্তাদনিন-স্তাদিতিলভ্যতে। গ্রন্থনাশ্রন্থনাসমেইতিকোষাস্তরং। উপাসনাউপাস্তিশ্চেতিভরতঃ। কৃঞ্হিংসায়াং চুরাদিঃ। কারণাভুযাভনাভীব্রবেদনেত্যমরঃ। এবমধ্যাপনাচিন্তনাদয়োহপিজেয়াঃ। ব্রীঞ্হরণেঘট্ট্ হেত্বিনস্তৌ অনেইল্লোপঃ। অপিনেতি। অপিরন্তপ্রত্যয়সমুচ্চায়কঃ। অধিইঙ্ অধ্যয়নে হৈতুকেনি আস্বরন্ত শ্রিজিক্রীঙামিত্যাত্বে অর্তিব্রীরীব্র্যাদস্তাৎপঃ চিতিস্মৃত্যাং মুম্চুরাদিত্বাদিন্ অনিটিইল্লোপঃ। এবং শ্রন্থনং মুপাসনং বন্দনমিত্যাদয়োহপ্যবগন্তব্যাঃ। ৪৫১॥

क्र थ्रमी शिका।

অকণ্। সংজ্ঞাক্তেঃ পরত্রভাবোক্তেশ্চ ইহাকর্ত্রিকারকেদর্বস্মাদ্ধাতোরকণ্ ভবতিসমূদায়েন সংজ্ঞায়াং গম্যমানায়াং!। প্রাঞ্জ্ঞভাবেহকণ্ ভবতিতত্বপলক্ষিতেতৎপ্রয়োগইতিভায়াদকর্ত্তরিপ্রয়োগমাহঃ। জ্যাদিনাং বাধকঃ। ভন্জোআমর্দনে আপ্রত্যয়ন্থইতিইঃ নিত্যং ক্রীড়াজিবিকার্থেষষ্ঠীসমাসঃ উদ্যানেন-সপ্রমীসমাসঃ। এবং দমনভঞ্জিকা শালভঞ্জিকা দমনশালোরক্ষবিশেষো ক্রীড়াসংজ্ঞাএতা। ছর্দ্ভিষম-নেকরণেহকণ্। প্রক্রেদিকাবমিশ্চন্ত্রী গ্রহণীরুক্প্রবাহিকা। সূচ্পৈশৃত্যে বিসূচিকাম্ত্ররোগঃ। পাদক্ষোটোবিপাদিকেত্যমরঃ। ৪৫২॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অকণিতি। উদ্যানেপুপাণাং ভঞ্জনং তস্তাং ক্রীড়ায়াং সাউদ্যানপুপাভঞ্জিকা। তথাপুপাভঞ্জিকা এতেক্রীড়াসংজ্ঞে। নিত্যসমাসইতি। নিত্যং ক্রীড়াজীবিকার্থ ক্বতাকপ্রত্যয়ান্তকৈরিতি ষষ্ঠীসমাসোনিত্যঃ তথাদমনত্ম বৃক্ষবিশেষত্মভঞ্জনং যত্মাং শালস্তভ্রমমবৃক্ষত্মভঞ্জনং যত্মাং সাএবং চম্পকপুপানাং প্রচয়নং যত্মাং সাচম্পকপুপাপ্রচায়িকাক্রীড়া। রোগসংজ্ঞায়ামিতি। উদাব্রিয়তইতিশেষঃ। প্রছর্দ্দাতহ্নয়েতি প্রবাহতে ক্রধিরাদিকং গুহুদেশাদন্মেতি প্রবাহিকা। অকণির্দ্ধিঃ। বিসূচ্পৈশুত্মভদন্তশ্চ রাদিঃ অত্রাপিকরণেত্মকণ্ ইল্লোপঃ বধ্যঘাতকত্মায়া চ্চকারেহকারগমঃ বিসূচিকামৃত্ররোগইতি। ম্ফোটরো-গেণপাদত্ম বিদার্যমাণত্বাংবিক্রজ্ঞং পদ্যতেগম্যতেহ্নয়েতি বিপাদিকাপদ্গতাবিত্যমাদকণির্দ্ধিঃ। পাদক্ষোটোরিপাদিকেত্যমরঃ। সর্ব্বান্তিয়ামাপ্রত্যে আপ্রত্যয়ক্তেপ্রত্তায়কেইতিজ্ঞত্বীঃ। ৪৫২॥

অকণ্পর্য্যায়ার্ছৠণেভাবমাত্রেচ কুত্রচিং। পর্য্যায়োইবসরঃ। তবাদ্যশারিকা। অর্হেযোগ্যতায়াং ত্বমর্হসীক্ষুভক্ষিকাং। ঋণেপায়সভোজিকাং
মেধারয়সি। ভাবমাত্রেচ উদপাদিইক্ষুভক্ষিকা। অধীয়ানেষু বালেষু কানামতবশায়িকা। তীর্থং গচ্ছৎ স্থসর্বেষু রদ্ধস্যকথমাসিকা। ৪৫৩॥

ইঞপি প্রশ্নোতরয়োঃ। যথা প্রাপ্তিক্ত্যাদয়োইপি। কাকারিঃ কারিকা-ক্রিয়া। ক্ত্যাইফেঃ কারিমকার্যং ক্রতিমথিলাং কারিকাং ক্নত্যাং কাংগণি-মজীগণঃ গণিকাং গনিতিং তাং গণিমজীগণদিত্যাদি। ৪৫৪॥

क्ल्थमोिशका।

অকণ্। এমর্থেয়ু গম্যমানেয়ু সংজ্ঞাসামান্তার্থমকলিতি। শয়নং শায়িকা শয়নাবসরইত্যর্থঃ। এয়ুত্জকাভ্যাং কর্মকর্ত্রোরিতি ন সমাসঃ। যোগ্যতায়ামিতি। যক্মাদ্ধাতোঃ প্রত্যােরিধাতব্যস্তদর্থেই-ইতায়ামিত্যর্থঃ। ইক্ষোর্ভক্ষণং ভক্ষিকা ইক্ষুভক্ষণার্হতা অর্হসীত্যস্তুক্লয়ন্ বচনকরইতি বদ্যোতকং তক্মিন্ প্রত্যয়বিধানাৎ এবং ধারয়সীত্যপিজ্ঞেয়ং। ঋণইতি। ঋণং শোধ্যদ্রব্যং যৎপরস্থার্ঘ্যতে অর্থাদ্যদিধাত্বর্থোধার্যমাণোভবতিতদেত্যর্থঃ। পায়সভোজনয়্বনরূপমিতি বজ্ঞঃ। কশ্চিছ্দ্দোবালকমাহ-অধীয়ানেষিতি। সর্দ্ধমাহতীর্থমিতি। ৪৫৩॥

গৃতপ্রকাশিকা।

অকণিতি। বিশেষসংজ্ঞাবারণার্থমকি। গৃহীতং। কুত্রচিদিতি ভাবমাত্রেচেত্যত্রাম্বেতি সর্বাবার্থমন্তমন্তম্বরং কৃতং নস্থাদিত্যবধেয়ং। পর্যায়ইতি। পর্যায়েহ্বসরঃ ক্রমইত্যমরঃ। শীঙ্ স্বপ্রেশায়িকা। অইইতি। অর্হ পূজাযোগ্যতয়োঃ ভাবেঘঞ্ অর্হোযোগ্যতা। ভক্ষ্ অদনে ইক্ষোরসালস্থভক্ষণযোগ্যতা ইক্ষুভক্ষিকা। রসালইক্ষুরিত্যমরঃ। ঋণইতি। ঋণংস্থাদধমগ্রাহেজলহুর্গেন
পুংসকমিতি বিক্রমাদিত্যঃ। পায়সোত্রশ্বপকায়ং। পরমানস্তপায়সইত্যমরঃ। পায়সম্যভোজনমিতি ভুজ্
পালনাভ্যবহারয়োরিত্যমাদকণ্। উদপাদীতি। উদ্পূর্বঃ পদ্গতো স্তবিভক্তো স্বেম্থাদিজিত্যাদিনা
ইচ্ আদেরিদ্ধিঃ স্তলোপঃ। আসিকেতি আস্ উপবেশনে সর্ব্বব্রেয়ামাপ্রত্যয়ে অস্তইঃ। ৪৫৩॥

क्रथमिशका।

ইঞ্। প্রশ্নোহনুযোগঃ পৃচ্ছাচ প্রতিবাক্যোত্তরেসমেইত্যমরঃ। তয়োর্গম্যমানয়োর্ভাবেস্থাৎ। কাকারিরিত্যাদি। প্রশ্নেইউর্য্যাগস্থকারিরিত্যাদ্যত্তরে। ইন্চঙিগণেজকারোজী অজীগণৎ। আদিনা গণিতিং গণিকামিভূয়েং। তয়োঃ কিং গণনাং করোতি। ৪৫৪॥

गृष्धकाणिका ।

ইঞেতি। যথা প্রাপ্তীতি। অপিশব্দগ্রহণাত্তেন সমুচ্চিতাঃ ক্ত্যাদয়ঃ আদিনাধাতুসামান্ত-প্রত্যায় অকণ্ কুঞঃ যক্ ক্যপ্ গ্রাহ্যাঃ। ভুকুঞ্করণেকারিঃ ইঞ্ ইন্ধ্ বৃদ্ধিঃ কারিকা ইত্যক্রাকণ্ নঞ্ পূর্বাদাক্রোশে নিঃ স্যাণ। দিষতামজীবনিভূ রাণ ছন্চেফানামকর-ণিরাস্তাম্ অসতামবেশনিঃ সদসি। তদ্যাজননিরেবাস্তু। ৪৫৫॥

গচ্স্যাৎ ক্রিয়াবিনিময়ে। ব্যাক্রোশীব্যবহাস্যপি। কথং ব্যতীহাব্যতীক্ষা ব্যবকুষ্টিরিভি ক্তোইন্যত্রেভিবচনাৎ। স্ত্রিয়ামিভিনিরত্তং। ৪৫৬॥

পর্য্যায়েত্যাদিনাকণ্ ক্রিয়াক্ত্যত্যত্রক্ঞাযক্চেতি যক্ক্যপৌ ক্যপি ব্রস্বান্ত্রক্পমুবন্ধে ইফেরিভ্যন্তরেহপি কারিরিভ্যাদরোহ্যেত্ব্যাঃ। অকার্যমিতি। অদ্যতন্ত্যাসম্বিভক্তে বৃদ্ধিঃ স্বরান্তন্তেত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ ধত্বং। কৃত্যামিত্যন্তানামকার্যমিত্যনেনাশ্বয়ঃ। গণিমিতি। গণস্থ্যানেহদন্তক্রাদিঃ ইঞিইলোপঃ। অজীগণইতি। লুঙঃ দীসি স্প্রত্যয়াদিতি সীসঃ সভাবেরসোর্বিস্গ ইতি সোবিস্গঃ। ৪৫৪॥

क्९ अमी शिका।

নঞ্। আক্রোশোহনিউভাষণং তশ্মিন্ গম্যেভাবেস্থাৎ। অজীবনিজীবনাভাবোমরণমেবাস্থিত্য-নিষ্টোক্তিঃ নিন্দাতাৎপর্যার্থঃ। এবমস্থৎ। মাজীবন্নিত্যক্তং। অজননির্জন্মাভাবোনিন্দাং জন্মেতি তাৎপর্যাং। ৪৫৫॥

गृण्यकाणिका।

নঞি তি। অজীবনিরিতি। জীব্বলপ্রাণধারণয়োঃ। অবেশনিরিতি। বিশ্ প্রবেশনে সদসিসভায়াং। অজননিরিতি। জনীপ্রাত্তাবে। এতৎপদ্যমাক্রোশেমাঙ্ যুতাদেতাবিতি সূত্রটীকায়াং দ্রুষ্টব্যং। স্ত্রীছন্দঃ। ততুক্তং। ৪৫৫॥

क्र९थमीशिका।

গচ্। বিনিময়োব্যতীহারঃ পরিবর্ত্তহিতিযাবৎ। যথা পরিবর্ত্তঃ পরীবর্ত্তোবিময়োবীময়োহপিচেতি শব্দার্বঃ। সচাত্রান্তসম্বন্ধিক্রিয়ান্তস্বীকারঃ। নম্বেতদশক্যং সমবেতদ্বাদিত্যুচ্যতে। যোযদবসরেযাং ক্রিয়াং করোতিস তৎক্রিয়াকারীভ্যুচ্যতেলোকৈরিতিন্তায়াৎ শক্যং বস্তুতঃ সাহিত্যরূপইতিবন্ধঃ। যতু বিনিময়ঃ ক্রিয়াপরিবর্ত্তইতিসন্ধাবুক্তং তৎপ্রকৃতাভিপ্রায়েণবিনিময়শব্দক্ত ক্রব্যাদেরপিব্যতীহারবোধিতদ্বাৎ। যথাক্রিয়েতি কিং বিপ্রক্ত পত্যুাউপহসনং ছাত্রাণামিতি বিপ্রসম্বন্ধিন্তাঃ পত্যাশ্ছাত্রৈঃ সম্বাদোহত্ত ক্রব্যুতীহারইতিবন্ধঃ। ব্যাক্রোশনং ব্যাক্রোশোণচ্ততইনণস্কণক্রতাদণ্যার্থেকশ্বযুতীহারেণক্রন্তক্র স্বাগতাদিদ্বান্নামরন্ধিঃ নদাদিদ্বাদীব্যাক্রোশী অন্তদীয়ব্যাক্রোশনমন্তব্যুর্ত্তই সাহিত্যেন ব্যক্রোশনমিতি তাৎপর্য্যার্থঃ। এবমপরং। কথমিতি। বাসরূপাভাবাদত্রকম্মাদাদিরিতিবিতর্কে। নির্ত্তমিতি। গচ্পর্য্যস্কমিধিবারাৎ পরত্রনামুবর্ত্তইত্যর্থঃ। ৪৫৬॥

गृष्धकाणिका।

ণজিতি। ক্রিয়ায়াবিনিময়েপরিবর্ত্তেদাহিত্যেবাধাভুভ্যোণচ্ স্থাদিত্যর্থঃ। বিআঙ্পূর্বঃ ক্রুশ্ আহ্বানেরোদনেচ ব্যাক্রোশীবিঅবপূর্বঃ হুদোহসনেব্যবহাসী। নমুক্রিয়াবিনিময়েণচ্বিধানাৎ কথং

ইনণ্ক্রিয়াভিব্যাপ্তোস্যাৎ। সতাং সাম্বেশিনং ক্রতৌ। সাম্বোচিনং খলানাং। সাংরাবিণং রাবণঃ। নজিনণস্তাৎস্বার্থেইণ্। *। ইতিক্ত্যাদি-প্রকরণং। *। ৪৫৭॥

ব্যতিপূর্ব ঈহ্চেফীয়ামপ্রত্যয়েব্যতীহাব্যতি পূর্বেঈক্সন্দর্শনেব্যতীক্ষাব্যবপূর্ববকুশঃ ক্তিপ্রত্যয়েব্যতিকুষ্টি-রিত্যাশঙ্কতেকথমিতি। সমাধতেকৃত্যইতি। তথাচ ণজিতিচকুবন্ধকরণং ণচেরনিত্যতাসূচনার্থঞ্চতন কৃতোহ্মত্রেতিবচনাদপ্রভৃতয়োহপীত্যর্থঃ। স্ত্রিয়ামিতিনির্ত্তমিতি। ক্ত্যাদয়ইত্যাদিশন্ধব্যবস্থয়াএতৎপর্যা-স্তমধিকারস্মেফস্থাদেতৎপরং নানুবর্ত্ততেইত্যর্থঃ। ৪৫৬॥

कृश्थिमीशिका।

ইনণ্। ক্রিয়য়াভিদর্ববেতাভাবেনব্যাপ্তোব্যাপনরূপেভাবেবিধিঃ তদত্যস্তাভাবাভাববন্ধং ব্যপ্তিঃ। সম্বেশনক্রিয়য়াব্যাপ্তির্ব্যাপনং সম্বেশনং ততইনণস্তেত্যণ্ সাম্বেশিনং ভাবকর্মণোরদস্তপ্রত্যয়াইতি ক্লীবং। ক্রতোয়স্তে। কচ্সংযমেসচাত্রনিরাকরণং ক্রতোহ্যটানাং নিরাকরণক্রিয়াভিব্যাপ্তিরিত্যর্যঃ। সাংরাবিণং সংরাবেণব্যাপনং। *। ইতিক্র্যাদিপ্রকরণবিবরণং। *। ৪৫৭॥

गृष्धकानिका।

ইনণ্। সম্পূর্ববিশ্প্রবেশনেদম্বেশনক্রিয়য়াহভিন্যান্তিঃ সম্বেশনমিনণিধাতোরুপান্তক্র গুণঃ
ততইনণন্তণজন্তাদণ্যার্থে অণিআদৌর্দ্ধিঃ ক্লীবেভাবপ্রতায়ান্তাবিশেষাকুক্তিগোচরাইতি নিয়মাৎক্লীবং।
সতাং পণ্ডিতানাং। সন্স্থীঃ কোবিদোর্ধইত্যমরঃ। এবং থলানাং চুর্জনানাং সাঙ্কোচিনং ক্রতাবিত্য
কুষঙ্গেণান্বয়ঃ। পিশুনোচুর্জনঃ থলইত্যমরঃ। সম্পূর্বরুরাবেইনণিইদ্বন্তাবেধাত্বস্তস্থোকারক্রব্দ্ধিঃ ততঃ
সংরাবিণমেবসাংরাবিণং স্বার্থেহণিআদৌর্দ্ধিঃ উক্তনিয়মাৎ ক্লীবং। অনর্যরাঘনীয়পদ্যক্তৈকদেশোহয়ং
তৎপদ্যমুক্তং প্রকীণবিত্যাসেডাদ্বামন্ প্রত্যয়ামন্সরিতি স্ব্রটীকায়াং। নজিনণন্তাদিতি। তদ্বিতলিখিত
স্ব্রাদিত্যর্থঃ তচ্চইনণন্তামজন্তাদণ্ স্বার্থইতি। *। ইতিগৃঢ্প্রকাশিকায়াং ক্র্যাদিপ্রকরণবিবরণম্। *। ৪৫৭॥

ঈষৎ স্থপূর্বাৎ সৌকার্য্যেদৃষ্খেতঃ পূর্বকাত্ত্বখল্। ধাতোঃ স্যাদ্ভাবকর্মণোঃ। ঈষদ্মত্বেন ভবন মীষদ্ভবং শ্রেয়াতস্য ঈষৎ ক্রিয়তে ঈষৎকরোমখন্তয়া স্থকরঃ স্থলভঃ তুষ্খেণক্রিয়তে ভ্রন্ধরারাজসেবা। সৌকার্য্যেকিম্ ঈষল্লভ্যং ধনং রূপণাৎ অপ্পমিত্যর্থঃ। ৪৫৮॥

ঈষৎস্কৃত্ঃ পূর্বকর্তৃ কর্মপূর্বকভূক্তেগাঃ। খল্ চ্যুর্থেইভিধানাৎ খনুবন্ধেমুট্ ঈষদাঢ়্যেনভবনমীষদাঢ়্যম্ভবম্ অনীষদাঢ়্যেঈষদাঢ়াঃ ক্রিয়তেঈষ্দাঢ়্যম্বোভবান্ স্বাদ্যমারঃ দ্বাঢ্যমারাস্ত্রা অচ্যুর্থেমাভূৎ অয়মীষদাঢ়াঃ ক্রিয়তেপটুরিতি। ৪৫৯॥

क्ल्थ्रमोशिका।

ঈষৎ। সেকৈার্য্যের্য্থেচগম্যে। ভাবকর্মণোরিতি। কৃত্যক্তেতি পরিভাষণাৎ। ঈষৎশব্দঃ স্থোকার্থবাচী। ক্রিয়াসুগতত্বাৎ যত্নার্থ: অতোবক্তিঈষদয়ত্বেনেতিকরণত্বং। স্থল্থ: শর্কোস্থগত্বাৎ বির্বার্থ: অতোবক্তিঈষদয়ত্বেনেতিকরণত্বং। স্থল: শর্কোস্থগত্বাদিনি। স্থার্য্যেককিমং কিন্তাপারেভবতঃ অতস্ত্যোঃ করণত্বমিতিবক্তঃ তেনস্থস্থেনেতিবিগ্রহঃ। কেচিত্র্স্থংযথাভবতি এবংস্ক্রাদেশিবগৃহ্নন্তি। ক্রিয়েত্যনভিহিতকর্ত্তরিত্তীয়া নিষ্ঠাদিত্বাম্বষ্ঠীউপপদসমাসঃ এবামব্যয়ত্বাম্মুট্নপ্রাথোত্যের তথাপি খনুবন্ধউত্তরার্থঃ। ঈষল্লভামিতি। কুপণাদ্ধনলাভোনস্থকরঃ এবং স্থাপাং চিত্রং শোভনমিত্যর্থঃ। তুষ্থেকিং তুর্যমাং গৃহং দূরমিত্যর্থঃ। ৪৫৮॥

গূঢ়প্রকাশিকা।

ঈবদিতি। স্থানে ক্রিয়তে ২ সোম্বরঃ অনেনথল্ স্করস্থভাবঃ সোকার্যাং যণ্ভাবেকর্মাণ্যশীত্যাদিনা-যণি আদৌর্দ্ধিঃ যেহস্থাকারলোপঃ সোকার্য্যে স্থকরণে ছ্রিন্দিতং খনতীতি উণাদিকোডঃ ইছকারাভ্যা-মিতিবিসর্গস্থাত্বং। পুষ্পাত্কর পুরীষ পুকরমিত্যুত্মভেদঃ। তুশকঃ পরত্রসোকার্য্য তুষ্থার্থরোর সুর্তিবারকঃ। ঈষদ্ধবমিতি। ভাবপ্রত্যয়ান্তত্যাক্রীবে। ঈষৎকরইতিকর্মণি। ক্র্মাচ্যালিঙ্গত্বং। মথোযজ্ঞঃ। যজ্ঞঃ সবোহধ্বরোযাগঃ সপ্ততন্ত্রর্মাথঃ ক্রভুরিত্যমরঃ। স্থলভইতি। ভুলভষ্প্রাপ্তো। ৪৫৮॥

क्र श्रमीशिका।

ঈষৎ। ঈষৎস্থল্নঃ পূর্বেষয়ান্তেকত্ কর্মণীপূর্বেষয়াে স্তেচিতে ভূক্ঞে চেতিতয়াঃ। অত্রহেত্মিরগদনাৎ নদৌকার্ঘাদ্যমুর্তিঃ কিন্তুস্থলঃ শব্দার্থেচ্ছততদ্ভাবেগমাে। অনীষদা্চাম্থেষদপিশুণাদ্যদশ্পরস্থেদা্চাম্থকর্ত্বনমিতার্থঃ। অনিষদাদা্চাম্থ বহ্বাচ্যমেতার চিঃ ঈষদাঢ়েনভূয়তইতি
কচিৎপাঠঃ। ঈষদাঢ়েন ভবনমিতি পাঠোনসমাক্ কাতস্ত্রাদাবদর্শনাৎ। যদ্যন্তিবহুতরেষু তদাক্বৎ
প্রত্যাহাৎ প্রাণ্ড্রগর্থকত্ স্ববিবক্ষণাৎ কচিদপবাদবিধাবিতিয়ায়াৎ প্রক্রত্যাদিয়ায়াত্তীয়েতিসম্ভিঃ।
ঈয়দাত্যক্ষরইতি। ভবদাদেকির্মণোবিশেষণয়াৎপ্রথমা। ঈয়দাত্যঃ ক্রিয়তেপটুরিতি। আ্লাণ্ডাশব্দম্
ধর্মিসমাশ্রয়ত্বেপ্য ভূততন্ত্রাবাবিবক্ষণাদ্চ্যুর্থতা। কর্ত্বর্মেতিকিম্ অনীষদাত্যেভবনং ক্রিয়তেবা। ভূক্ঞোঃ
কিং তথেষদাত্যেন পচাতেভবতেতি। ৪৫৯॥

হিত্বাদরিদ্রোমাদস্তাদনঃ স্যাৎ খল্কিরোধকঃ। ঈষৎপানোইস্বৃধিঃ গাবঃ স্থানাঃ ত্র্য্যানং বনং দরিদ্রাতেস্ত ঈষদ্বিদ্রঃ আকারলুগ্দরিদ্রাতেঃ। ৪৬০॥ শাস্থ যুধ্ মুষ্ দৃশ্ ধ্বায়া। অনঃ স্যাৎ খল্চ। ঈষৎশাসঃ স্থাসনঃ। দেশঃ ঈষৎশাসনঃ স্থাসঃ সংখ্যাসনঃ স্থাসনঃ ক্র্য্যানঃ ক্র্য্যা

नान्न यूर् मृश् मृश्वाया। अनः गार यन्। अवरनामः न्नामनः।

(मनः अवरनामनः न्नामः द्वःनामः द्वःनाममः द्वर्राधनः द्वर्षादः द्वर्षादः।

केषकर्ननः अवक्षः न्वर्षः द्वर्षाः। वाव्यक्षः थन् विद्योवामक्रमविधि
व्यास्ति। ८७५॥

গৃঢ়প্রকাশিকা।

ঈষদিতি। যদিচুর্থোন ভবতিতদাপুর্বোক্ত সোকার্য্যন্ত্য্থার্থয়ারসুবৃত্তির্কু ব্বারেভিতৃশব্দেন তয়ারসুবৃত্তিবারণাৎ স্নতরাং চ্যুর্থোগম্যতইত্যভি প্রেত্যাহচুর্থেহভিধানাদিতি। শিফানাং কথনাদিত্যর্থঃ। মুডিতি। ব্রস্বান্থ্যুর্কু থমুবন্ধান্তধাতুষিত্যনেনেত্যর্থঃ। ঈষদাঢ়েনেতি। যদ্যপ্যত্রকৃদস্ত কতৃ তয়াষষ্ঠী ভবতুমইতিতথাপি কচিদপবাদবিধাবুৎসর্গস্ত প্রবৃত্তিরিতিত্যায়াৎষষ্ঠীং বাধিত্বাতৃতীয়ায়াভবনং প্রকৃত্যাদিত্বাদ্যষ্ঠীং বাধিত্বাতৃতীয়াভূদিতি। তুরাত্যক্ষরাপ্রীতি। ধননাশকরেত্যর্থঃ। অয়মিতি। দরিদ্রেস্বদাত্যঃ
ক্রিয়তেইত্যর্থাৎ চুর্থোভাবেনথল্। ৪৫৯॥

क्र ९ अमी शिका।

হিত্বা। খল্বিরোধকইতি। ঈষৎস্তৃত্বেকাদিনিরাসেন পূর্বতরেষৎ স্থপূর্বাদিলাভার্থং। কৃত্যক্তখলর্থাভাবকর্মণোরেতদর্থং। খলোহনইতিবিধানে বাচ্যসূত্রেবৈকল্পিকাদেশে বা গ্রহণাদিনোপ-পদ্যতে কিঞ্চলাদেশন্যায়ানঙ্গীকারেণানস্থকত্ কর্মণোঃ ষষ্ঠ্যপিস্থাদিতি। ঈষৎপানোহস্বৃধিঃ অগস্ত্যেনেতি শেষঃ। ঈষদ্রিদ্রেইতি ভাবেখল্ অন্তরিনর্থকত্বেকর্মণিবা। ৪৬০॥

গুঢ়প্রকাশিকা। •

হিছেতি। দরিদ্রাত্নগতি তংহিত্বা আদস্তাৎ থল্বিরোধকোহনঃ স্থাদিত্যর্থঃ। থল্বিরোধকইত্যানেন থলর্থকোদ্যোতিতঃ তেন ভাবকর্মণাের্কাচ্যয়ােরিতি কর্তৃকর্মণােঃ ষষ্ঠীনিষেধইতি ঈষৎ স্থতঃ
পূর্ব্বাদিতিচলভ্যতে। পাপানে ঈষৎপীয়তেহসৌঈষৎপানঃ অমুধিঃ সমুদ্রঃ। স্থ স্থথেনদীয়ন্তএতাঃ
স্থদানাঃ। যাগতে তুর্ব্থেনযায়তেএতৎ ত্র্ব্যানং। ঈশদ্বিদ্রইতি। ঈষদ্বিদ্রাণমীষদ্বিদ্রঃ
অল্ আকারলুগ্দরিদ্রাতে রশিত্যসননাকণিত্যালােপঃ নাত্রথল্সোকার্য্যাদ্যর্থাভাবাৎ ভাবেথলিপুল্লিঙ্গজামুপপত্তেশ্চ। নাপিকর্মণি অকর্মকত্বাদন্তবিনর্থবীকারেণ সকর্মকত্বস্বীকারেগােরবাচ্চ। ৪৬০॥

क्र<थ्रमीशिका।

শাস্ত। থল্বিরোধকোহনঃ। শাস্ত্রঅনুশিক্টো ত্রঃশাদনোহভিমানিত্বাৎ স্থশাদনোহপিদএব ভীমাদিভিরারতত্বাৎ তুর্য্যোধনঃ স্থশক্ত্যবহিতত্বাৎ স্থযোধনোহপিদএবরণাদহিষ্ণুত্বাৎ। নয়েনজেত্বং জগতীং স্থযোধনইতি ভারবিঃ। বাগ্রহণাদিতি। বা শব্দদ্বিনাপি বাদরূপন্থায়েনেযাং থলপি ভবিষ্যতি

ণিন্স্যালবিশ্যকে। অর্থে অবশ্যস্কারী লক্ষপ্রদায্যপি। ৪৬২॥ অধমর্ণার্থেচ ণিন্স্যাং। মহ্ম্নায়ী শতম্বান্ নিষ্ঠাদিত্বান্নষ্ঠী। ৪৬৩॥

তথাপিতদগুহণাৎ সন্থায়োহত্তনান্তি তেনেষদাত্ব্যপপদে সৌকার্য্যাদৌ নতব্যাদয়ঃ নানবিষয়ে খল্
যথেষৎপানইতি। নক্তযুট্ থলর্থেষু বাসরূপবিধিরিতি কলাপচন্দ্রয়োঃ যুট্ অনট্। ক্বছাভিচারাৎ ছ্প্রাপ্যং
স্থাধ্যমিত্যাদি। ৪৬১॥

गृष्यक्षिका।

শাস্থিতি। শাস্ত যুধ্ সম্প্রহারেযুধ্চ সৃষ্তিতিক্ষায়াং সৃষ্চ দৃশির্প্রেক্ষণে দৃশ্চ ঞিধ্বা প্রাপল্ভ্যেধ্য্চ এষাং। যত্তু হংসাধ্যং স্বসাধ্যমিতি দৃশ্যতে তৎদূরসাধ্যং ভূশসাধ্যং শীস্ত্রসাধ্যমিত্যথোঁ। নাত্রখল্প্রাপ্তিঃ। নতুর্ব্যভিচারাৎ খল্প্রাপ্তিস্থলেঘাণ্বাগ্রহণাদিতি গ্রন্থক্দ্বচনস্থবৈয়র্থ্যাদিতি। ৪৬১॥

क्ष्थ्रमीशिका।

ণিন্। আবশ্যকেহর্থেগম্যেকর্ত্তরিবাচ্যে যশ্মাদ্ধাতোঃ ণিন্বিধীয়তে তদর্থাবশ্যক্কারি কর্ত্তরিবাচ্যইতি যাবং। অবশ্যক্ষরোতীতি অবশ্যক্ষারীত্যাদি। ৪৬২॥

গৃচপ্ৰকাশিকা।

ণিনিতি। নাত্রবানুর্তিঃ খল্বিধোবাসরপবিধিনিষেধেনান্যত্ততদ্বিধেঃ সন্ত্রাদ্বাপ্রবৃত্তিকৈয়র্থ্যাৎ। অবস্থাং লক্ষং প্রদদাতীতি লক্ষপ্রদায়ীণিনাহ্বস্থার্থউক্তঃ। পূর্ব্বাত্রাবশ্যমিতিত্ব দ্যোতনার্থং। অপিনাবশ্য-স্কাবীত্যাদি। ৪৬২॥

क्रथमीलका।

শ্বধ। সোদয়দেয়ত্বাদধমমূণং স্বস্তুসচাসাবর্ধশ্চেতি তস্মিন্ গ্রাহকেকর্ত্তরিবাচ্যে। উত্তমর্ণাধমর্ণে বি প্রযোক্তৃগ্রাহকো ক্রমাদিত্যমরঃ। ঋণেহধমোহধমর্ণঃ ঋণাধমোভণ্যতে সোত্রাদসন্ধিরিতিবজ্ঞঃ। মহুমিতি গোণং সম্প্রদানং মত্তোগৃহীতং শতমুণমবশ্যন্দদাতীত্যর্থঃ। পৃথগারন্তঃ ষষ্ঠীনিষেধার্থ ইত্যাহনি-ষ্ঠাদিত্বাদিতিভাবঃ। ৪৬৩॥

भूष्यकाश्विका।

অধমেতি। অধমমূণং যস্ত তশ্মিন্ ঋণগ্রহীতরিকর্ত্তরিবাচ্যে ণিন্ স্থাৎ। চকারঃ ণিন্ সমুচ্চায়কঃ। মহ্মমিতি। গৃহীতঋণদানস্থোদেশ্যতয়া গোণং সম্প্রদানং। শতমিত্যত্ত যন্ত্যভাবেহেতুমাহ নিষ্ঠাদিম্বাদিতি। অধমর্ণে ণিম্নিতি ণিনোনিষ্ঠাদ্যস্তঃ পাতাদিত্যর্থঃ। ৪৬৩॥

গৌণাদ্বে প্রত্যয়ামুখ্য ক্রিয়াকালে ভবস্তিতে। সাধবঃ। গৌণাদ্বিশেষণাং। আমিষ্টোমযাজীপুল্রস্তে ভবিষ্যতি অমিষ্টোমযাজীত্যতীত বিহিতোণিন্ মুখ্যভবন ক্রিয়াকালে ভবিষ্যতি সাধুর্ভবতি এবং ক্রক্রতঃ খোভবিতাভাবিক্রত্যমানীৎ। গৌণাদিতি কিং গায়তি যাস্যতি চেতি দ্বয়োরপি মুখ্যত্বাত্মভয়কালত্বমিতি। প্রত্যয়গ্রহণাং গোমানানীদিত্যাদে বর্ত্তমানে মস্তঃ। আসীদিত্যনেন সম্বন্ধেইতীতেসিদ্ধইতি। ৪৬৪॥

क्ट श्रमोशिका।

গোণাৎ। গুণো গোণেবিশেষণে গুণমেবগোণং স্বার্থেহণ্। অত্যেমুখ্যক্রিয়েতি বচনাধিকারাৎ গোণাদিশেষণরপ্রক্রিয়াবাচকাদ্ধাভোঃ প্রত্যয়গ্রহণাদ্ধাভোর্বাবিহিতা অযথাকালোক্তা অপিপ্রত্যয়াঃ মুখ্যক্রিয়াকালেসাধনঃ প্রযুক্তাভবন্তীত্যর্থঃ। তিঙাং ধাতৃপধা অতোবিশেষণমবয়বত্বাদক্তব্যমন্যথাবিশেষ-ণাৎপ্রত্যয়াসস্তবঃ তথাহি বিশেষণং কৃত্তদ্ধিতপ্রতায়ান্তমপ্রাধান্তাৎ তচ্চতেষাংত্যাদিনা বিনাকাজ্ফানিবর্ত্তনা-ভাবাৎ বিশেষ্যং প্রধানীভূতং ত্যাদ্যন্তং প্রাধান্যন্ত তেনাকাজ্ফানিবর্ত্তনাৎ। অতএবো দনঃ পত্তা ভূজ্যতে কটঃ কৃষানেতব্যঃ স্থাদিত্যাদাবভিহিতত্বং। উক্তঞ্চ যেনৈবলক্ষেদমন্ত্ৰইতি। এতেন কদাচিৎ কুদাদি কালে আখ্যাতঃ কাপ্যাথ্যাতকালে কুদাদীতি নবিপৰ্য্যয়ঃ কিন্তাখ্যাতকালএব কুদাদিনকুদাদিকালে আখ্যাতঃ গোণমুখ্য রোবিক ক্লাযোগাৎ। কাল সৈত্র ব্যভিচারোনকারক ব্যভিচারস্তেন ভোক্তোদনং পচ্যত ইত্যাদিঃ কারকব্যভিচারঃ বিপ্রয়োগেন ভবতীতি বজ্রঃ। অগ্নিকৌমেতি। তবপুলোখ্যিকৌমেন যক্ষ্যতীত্যর্থে-করণপরাদ্যজতেণিন্ ভূতইতি ভবিষ্যত্যপিণিন্ অগ্নিফোমেন যজনক্রিয়াবিশিকস্তব পুজোভবিষ্যতীত্যা-খ্যাতস্থ বিশেষ্যত্বং যদাত্বনুৎপন্ন পুত্ৰং কশ্চিদ্বদতি তদাগ্নিষ্টোমেন যজনক্ৰিয়াবিশিষ্টস্তব পুত্ৰোজনিষ্যত ইত্যর্থঃ। স্বয়ং বির্ণোতি অগ্নিন্টোমেতি। মুগ্যক্রিয়াকালে আখ্যাতান্তবাক্যাকাজ্ঞানিবর্ত্তক ভবনক্রিয়া কালে ভবিষ্যতি ভূতকালীনোহপি ণিণ্ প্রয়ক্তোভবতীত্যর্থঃ ৷ অত্র ভূতভবিষ্যতোরসঙ্গতিঃ তথাই যোহ্যিক্টোমেনেইটবান্ সকথং ভবিষ্যতি অথযোভবিষ্যতিসকথম্যিক্টোম্যাজীতি তক্ষাৎ স্বকালং পরি-ত্যজ্যত্যাদেঃ কালমমুসরতি বিশেষণত্বাৎ। ততুক্তং পরার্থেম্বার্থনিঃক্ষেপাদিত্যাদি। এবমন্তৎভূতেক্তঃ ভবিতেতিশ্বস্তনীসাধুঃ। ভাবীতি ভবিষ্যতি ণিন্ আসাদিতিভূতে সাধুঃ। এবং বসন্দদশাবতবন্তমম্বরাৎ সোহস্তাংসিমেঘান্ পিবতোদদর্শেত্যাদয়ঃ! অত্রাগ্নিফোমেসতি যৎপ্রত্যয়োবক্তব্যস্তস্থানুকারাদ্গ্নিফোম-যাজীভবত্যেবেতি কিমস্ত সূত্রস্ত প্রয়োজনং তথাচগতোবনং খোভবিতেতিরামইতি সত্যম্ অনুকারক্লেশ-নিরাদার্থমিতিবজ্ঞঃ। বস্তুতস্তু যত্রার্থেবিহিত ইত্যর্থপদেন কালস্থাপ্যুক্তস্থাৎ কৃতশ্চান্তত্ত্বেত্যস্থানুবাদো-২য়ং সপ্রয়োজনঃ পুনর্কাচনমনুবাদঃতচ্পপ্রত্যয়গ্রহণাদিত্যাদি জ্ঞেয়ং। গায়তি যাস্যতীতি দ্বয়োরপ্যাকাজ্ঞা নিবর্ত্তকত্বেন প্রাধান্তাৎ বিশেষ্যবিশেষণত্বানুপপতেরৈ ককালত্বং। প্রত্যয়েতি। কুদধিকারেণ কুল্লভ্যতে প্রতায়পদেন তদ্ধিতস্থাপি গ্রহণমিতিভাবঃ। তেনগোমানিত্যাদি স্থাদিনাভাগুগারিকঃ সম্পৎস্থতে আক্ষিকোজিতবানিত্যাদি। স্বয়ং বর্ণয়তি বর্ত্তমানইতি। সচতদস্যাস্তীতিবচনাৎ অত্তবার্ত্তমানিকোমস্তঃ স্বকালং পরিত্যজ্যাতীতে সঙ্গতঃ তত্মাকাজ্মানিবর্ত্তকত্বেন প্রাধান্যাৎ। ৪৬৪ 🛭

তিক্দ্যাশ্বামন্যাশিষিত কেচিংক্পপ্রত্যয়াঅপি। তনুতাৎতন্তিঃ সনুতাৎ
সন্তিঃ বধ্যাদ্ধন্তিঃ। ক্পপ্রত্যয়াঃ কুমারোইস্যন্তরিতং শীর্য্যাৎ কুমারশর্মা বীরোভূয়াদস্য বীরভূঃ বীরভূতিঃ দেবাএনং দেয়াস্থঃ দেবদতঃ সংজ্ঞাশব্দত্বাদ্ যথা
কথঞ্চিদ্যুৎপত্তিঃ। চকারাদনাশিষিত তিক্ ভাবেচ ক্তিতৌল্যাৎ স্থিয়াং
প্রোটিঃ প্রোটী ঈপ্রত্যয়োবা। *। ইতিপ্রয়োগরত্বমানায়াং কৃৎস্পঞ্চমোবিন্যাসঃ। *। *। ৪৬৫॥

গৃটপ্ৰকাশিকা।

পোণাদিতি। গুণোহপ্রধানে বিশেষণইতি যাবহণ্ডণএব গোণং প্রজ্ঞাদিতিস্তু বেতিস্বার্থেহণ্। অপ্রধানে স্থপকারে রূপাদাবিন্দ্রয়েগুণইত্যজয়ঃ। গুণোমোর্ব্যামপ্রধানেরপাদো সৃদইন্দ্রিয়েইতিমেদিনা। গোণাদপ্রধানরপ বিশেষণাৎ যেপ্রত্যয়াবিহিতান্তেমুখ্যক্রিয়াকালে বাক্যাকাজ্ঞানিবর্ত্তক ত্যাদ্যগুপ্রধান ক্রিয়াকালে সাধবঃ প্রযুক্তাভবস্তীত্যর্থঃ। অত্রবিশেষণং কৃত্তভিত্রপ্রত্য়াস্তং বাক্যাকাজ্ঞাহিনিবর্ত্তক্রেরাপ্রাথান্তাৎ বিশেষ্যং ত্যাদ্যস্তং বাক্যাকাজ্ঞানিবর্ত্তক্রের প্রাধান্যাৎ। উদাহরতি। অমিক্টোম্বাজীপুল্লস্তেভবিষ্যতীতি। স্বয়ং বির্ণোতি অমিক্টোম্বাজীত্যতীতেত্যাদি। অয়মর্থঃ যত্তগোণ ক্রিয়াদিবাচকমুখ্যক্রিয়াবাচকধাছোঃ প্রয়োগস্তত্রগোণাৎ প্রত্যয়োহন্তকালেবিহিতোহিপ মুখ্যক্রিয়াকালেলাধুং তেন করণপরাদিত্যাদিনাভূতকালেবিহিতোহিপাণন্ অমিক্টোমেন্যক্ষ্যতীতি ভবিষ্যৎকালেদাধ্যতেইতি। এবং করিষ্যতইতিকৃতঃ ভবিষ্যভিকালেদাধ্যতে অভূদিভিভাবিক্ত্যবিশেষণমিদং গম্যাদ্যইত্যনেন ভবিষ্যতিবিহিতোহ্প্যাদীদিতিমুখ্যভবনক্রিয়াকালেভূতেসাধ্রিত্যর্থঃ। গায়তিষাস্থতীত্যনয়োমুখ্যমাহভ্যকালম্বাজ্যতিবিহিতোহ্প্যাদানিতি। গোরস্থান্তাতি বর্তমানকালেবিহিতোহ্পি মন্তর্মাদিতি মুখ্যক্রিয়াকালেভূতেসাধ্রেত্ত এতদেবস্বয়মাহাদীদিত্যনেন সম্বন্ধেহতীতে দিন্ধইতীতি। এবমস্ত্রাপিজ্ঞাতব্যং। ৪৬৪॥

क्र श्रमी शिका।

তিক্। কর্ত্তরিকেবলাশিঘিচ। যথা শৃহিংসায়াংমন্কুমারঃ কার্ত্তিকেয়ঃ কুমারশর্মাকশ্চিৎ। কিপবীরভূববীর পুত্রঃ তিকিবীরভূতিঃ কর্মাণিক্তেদেবদতঃ এবং বিষ্ণুরেনং শ্রেয়াৎ বিষ্ণুশ্রুতিঃ যজ্ঞএনং ত্রিয়াৎ যজ্ঞভূতিঃ গঙ্গাএনং মীয়াং গঙ্গামিত্রইত্যাদয়ঃ কেয়াঞ্চিৎ সংজ্ঞাশব্দাঃ। যদ্যপি কৃতাক্রিয়োচ্যতে কারকম্বাকুমারোহস্ভেত্যাদি বাক্যেক্রিয়াকারকবাচ্যতাব্যতিরেকেণকথমিত্যত্থাহুসংজ্ঞেতি। সংজ্ঞাশব্দাৎ রুচ্তিস্তাভ্যামন্যদপিকৃতাং বাচ্যং ভবতীতি যতোহনয়ৈবব্যুৎপত্ত্যাকুমারশর্মাদয়োব্যুৎপাদিতা বৈয়াকরণাচার্যারিতি যথা কথঞ্চিয়্বুৎপত্তিঃ নকৃতঃ কর্ত্তরীতি পরিভাষাপেক্ষেত্যর্থঃ। চকারাদিতি। অনামন্যনাদিলভাবেচ যম্বাজ্ঞিতোল্যাৎ ক্তিসাদ্খ্যান্তাবেস্তিয়াঞ্চ। প্রবহণং তিক্প্রোঢ়ঃ উঢ়োঢ়োরিতিসন্ধিঃ। ইনস্তাদ্বেতীপ্রত্যয়ঃ প্রোঢ়ী। #। ইতিকৃৎস্পঞ্চমবিস্থাদাবিবরণম্। #। #। ৪৬৪॥

गृष्यकाशिका।

তিগিতি। এবমন্যোন্যকৃৎপ্রত্যয়প্রসঙ্গেনামনিতিগন্তপ্রত্যয়ং দর্শয়িষ্যন্প্রথমভন্মাশিষিতিগন্তপ্রয়োগং দর্শয়িত তমুতাদিত্যাদি। তমুবিস্তারেতন্তিঃ ষমুদানেষত্য সত্তেণত্য নত্বেসন্তিঃ হন্হিংসাগত্যোঃ হন্তিঃ। কংপ্রত্যয়াইতি। উদারিয়স্তইতিশেষঃ। যদ্যপিকৃদভিহিতাৎ কারকমাত্রাদিত্যুক্ত স্বেনকৃতাকারকমন্তিধীয়তে নাকারকং তথাপিমাত্রপদাৎ ক্ত্রচিদকারকমপীত্যত্রয়ষ্ঠীচাভিহিতা। সর্ব্রাশিষিনামনিপ্রত্যয়াঃ। ব্যুৎপত্তেরনৈয়ত্যমাহদংক্রেতি। অবয়বার্থানাং তথা সঙ্গতার্থস্বাভাবাদিতিভাবঃ। চকারাদিতি। তেন নামন্যাদোবাহুল্যমিতিজ্ঞাতব্যং। প্রোচিরিতি। বহ্প্রাপণেভাবেতিকিবিচিম্বিত্যাদিনাসম্প্রসারণং হোচঃ ঢ়াক্তপ্রথং পরগমনে চটবর্গাবিতিধত্যতত্বে রোরেলোপইত্যাদিনাধাত্তুলোপন্তৎপূর্বক্ত দীর্ঘতাচ উল্যেট্যোঃ প্রাদিত্যনেন রন্ধিঃ। প্রোচীতি। তিকঃ ক্তিতুল্যম্বেপিতন্তিমন্তাদিত্যপ্রত্যয়াবেণ্ত্যর্থ: * । ইতিশ্রীসিদ্ধনাথ বিদ্যাবাগীশনির্মিতায়াং গৃঢ়প্রকাশিকায়াং প্রয়োগরত্বমালাটীকায়াং কৃৎপঞ্চমবিন্যাদবিবরণম্। * ! * । ৪৬৪॥

পরাবরাভ্যাং যোগেক্ত্বা। পূর্বাপরদেশ কালসম্বন্ধে গম্যে ধাতৃভ্যঃ ক্ত্বাস্যাং। অপ্রাপ্যবার্দ্ধিং বলং। বার্দ্ধকাপ্রাপ্তি সম্বন্ধিনা পূর্বকালেন বলদ্য যোগোগম্যতে। মংপ্রসৃতিমনারাধ্য প্রজেতি ত্বাং। মংপ্রসৃত্যনারাধন সম্বন্ধিনা পূর্বকালেন প্রজান্ধংপত্তি যোগোগম্যতইত্যর্থঃ। বাল্যমুংক্রম্যতারুণ্যং বাল্যাপ্রন্মমমম্বন্ধিনা পরকালেন যৌবনযোগইত্যর্থঃ। অতিক্রম্য গিরিং নদী পূর্বদেশস্থ গিরেরপরদেশেন নদীযোগঃ প্রতীয়তে। অনাসাদ্য গিরিং গ্রামঃ। পরদেশস্থ গিরেঃ পূর্বদেশ ক্ষমন্ধীগ্রামঃ প্রতীয়তে। অন্যক্র ক্রিয়ারোরের পৌর্বাপর্য্যাতিরঃ। অস্ত্যাদি ক্রিয়াধ্যাহারে গৌরবমিতি সূত্রমিদং। স্কাত্বাস্থ্যং ভবতি পাপং ক্রাত্রম্থং স্থাদিতি স্থিত্য্যেত্য্যাহারাদাইঃ। ৪৬৬॥

क्रथ्यमोशिका।

পরা। পরাবরাভ্যামিতি করণেসহার্থেনা তৃতীয়া। দ্বয়োরেকার্থদ্বেনেকতরবৈয়র্থনাৎপরঃ পূর্ব্বার্থঃ অতআহ পূর্ব্বেতি। অর্থাপেক্ষনীয় স্থাদশ আদি স্থাদচিবা পূর্ব্বাপরদেশকালী নাভ্যামভি ক্লৈক ক্রিয়া কর্তৃকর্মভ্যাং সম্বন্ধে নতু পরাবরশব্দাভ্যাং যোগইত্যর্থঃ। তথাচ পরেণ কর্ভূতেনপূর্ববিকর্মভূতস্ত যোগেসতি পরদেশকালীন কর্ত্তরিবাচ্যে তথা২বরেণকর্ভৃত্তেন পরস্থ কর্মাভূতস্থাযোগেসতি অপরদেশ-কালীন কর্ত্তরিবাচ্যেধাতোঃ পরঃজ্ঞাস্থাদিত্যর্থঃ। অধ্যয়ত্বেনভাবেপ্রাপ্তবিধিং বাধিত্বাহনেন নিত্যং কর্ত্তরি বিধীয়ত ইতিকালাপাঃ। পরস্থাবরেণ অবরশুপরেণ যোগেদতি কর্ত্তরিক্রাস্থাদিতি চল্রোহপি। নব্যাস্ত প্রবাপরদেশকালীন ক্রিয়াতিরিক্ত পদার্থরয়সম্বন্ধইতি বদন্তি। কালেযথা অপ্রাপ্যেতি। নপ্রাপ্রোতীতি অপ্রাপ্য তাৎপর্য্যতঃ স্বয়ং বিরুণোতি বার্দ্ধকৈতি। পরভাবিরুদ্ধাবস্থা প্রাগভাবসম্বন্ধবতা পূর্ব্ধকালেনার্থা-দেয়াবনেনযোগঃ তথাচ পূর্বকালীনং বলং কর্তৃপরকালীন বার্দ্ধক কর্মনপ্রাংগ্রোতীতি এতাদৃক্ কন্মণো-যোগঃ। নব্যনয়েবার্দ্ধকগত পরকালেন বলগত পূর্ব্ধকালস্থাপ্রাপ্তিরিতি পূর্ব্বাপরকালযোগইতি। মৎ-প্রসূতিমিতি। অবজানাদিমাং যম্মাদতস্তেন ভবিষ্যতি। মৎপ্রসূতিমনারাধ্য প্রজেতি স্বাং শশাপদেতি রঘে দিলীপং প্রতি বশিষ্ঠবচনং। পূর্ব্বকালানমং প্রদৃতি কর্মকারাধনাভাবপ্রতিযোগিনী প্রজাকত্রীত্যর্থঃ। নব্যনয়ে পূর্ববং মংপ্রদৃতিমনারাধয়তন্তব প্রজাসন্ততির্নভবেদিত্যনারাধনসম্বন্ধি পূর্ববকালে প্রজাপ্রাগভাব-য়ের্যোগঃ। এবং বাল্যমিতি। বাল্যং কশ্মতারুণ্যং কর্তৃপ্রবাপরদেশদম্বন্ধে। অতিক্রম্যেতি। গিরিং পূর্ব্বদেশস্থং গিরিং ন প্রাপ্নোতীত্যর্থঃ। অনাসাদ্যেতি। গিরিপূর্ব্বদেশস্থোমাঃ পরদেশস্থগিরিং ন প্রাপ্রোতীত্যর্থঃ। দেশশব্দেনদিগুপলক্ষণং তেন প্রাচীমুৎক্রম্য সূর্য্যইতি বররুচিঃ। ইত্যনেনাসিদ্ধিরিত্যাহ অন্যত্তেতি। কর্তুরৈক্য ইত্যত্ত। ইহতু কর্তৃকর্মণোঃ পদার্থয়োভিন্নকর্তৃক ক্রিয়ান মপীত্যারস্তইতিভাবঃ। অস্ত্যাদিক্রিয়াধ্যাহারে সূত্রমিদং ব্যর্থমিত্যপি নসম্যাগত্যাহ অস্ত্যাদীতি। অপ্রাপ্য বৰ্দ্ধকং বলমন্ত্ৰীত্যেৰ ক্ৰিয়াধ্যাহারে কর্ত্তব্যে গৌরবং বোধক্ষং তিমিন্নাকাঞ্চশাপুর্ত্তেরিতি হেতোঃ সূত্রমিদং

মেঙোমিশ্চ যপিনবা। মেঙঃ ক্লান্যাৎ ক্রিয়রোরিনিময়েযপিম্যাদেশশ্চ। অপমিত্যাপমায়চ। যাচতে যাচিত্বাপময়তইত্যর্থঃ। ৪৬৭॥

তথাচ পূর্ব্বাপরভাব ক্রিয়ায়য়ং নাস্তীতিবচনমিদম্ অধ্যাহারেচ বোধকন্টমিতি। চন্দ্রোহপি নম্বেং পরাবর যোগাভাবেকর্ত্ত্ব্রেচ্চকথং ক্রেড্যাহ মাজা অধংমানসহকালীন অধং মানকর্ত্তাজনঃ ভবনকর্ত্ অধমিত্যসিদ্ধৌ ছিতস্থেত্যধ্যাহারেকর্ত্ত্ব্রেচ্ছতিসিদ্ধিমাহ। স্বমতেত্বধ্যাহার ক্লেশাৎ পরাবরযোগস্তদসম্ভবে কৃদ্যভিচারালম্বনং অগমমিত্যান্থরিক্যক্তং। যথাহ বজ্রধরঃ কৃত্যযুটোহপ্যশুত্রাপীত্যস্থ বাহুলকত্বাৎষ্টেভাবৈশ্বফবান্ শ্বেজাবিনাশং যাতিকিল্বিষং মৎপ্রসূতিমনারাধ্যেত্যাদোভিন্নকর্ত্ কেহপি ক্রাভবতীতি। ৪৬৫॥

गृष्यकाणिका।

যংশান্তঃ শুদ্ধচিত্তোহভিল্যিতবরদঃ সর্বাদােশারবক্তোত্রিকাকধ্যাননিষ্ঠঃ সিতবসন্যুগোজ্ঞানদানা- পিঘাতৈঃ। ছিত্বামোহান্ধকারং পরমকরুণয়া প্রোদ্ধরত্যাশুশিষ্যং তংবন্দেহস্মুগ্র্লাভং গুরুমমলমতিং সর্বাশাস্ত্রার্থবেদং।

পরাবরেতি। পরশ্চাবরশ্চতোপুর্বাপরদেশকালোতাভ্যাং সহযোগেসম্বন্ধেহর্থাৎ কর্ম্মকর্ত্রোঃ সতিধাতুভ্যং কর্ভরিবাচ্যেক্রাস্থাদিত্যর্থঃ। শ্বয়ং সূত্রার্থং বির্ণোতি পূর্বাপরদেশকালেতি। উদাহরতি অপ্রাপ্যেতি। তদর্থং প্রকটয়তি বার্দ্ধকেতি। বৃদ্ধস্থ ভাবোবার্দ্ধকং মনোজ্ঞাদেরকণিত্যকণ্ আদৌর্দ্ধিঃ বার্দ্ধকং বৃদ্ধাবন্ধাতভাগাপ্রাপ্তঃ তস্থাঃ সম্বন্ধিনাপ্রাগভাবসম্বন্ধবিশিষ্টেন পূর্বকালেনসহবলম্ভ কর্ত্র্যোগঃ সম্বন্ধোগম্যতেজ্ঞায়তইত্যর্থঃ। তথাচাপরকালানবার্দ্ধককর্মকাপ্রাপ্তিপ্রাগভাববিশিষ্টপূর্বকালীনং বলমিতিশান্দবোধঃ। অপ্রাপ্যেত্যম্ভন্তঃ কর্ত্তা। প্রআঙ্পূর্বআপ্তব্যাপ্তোপ্রাদি সমাসেক্রোয়প্ পশ্চামঞ্ সমাসঃ। এবমন্তর্ত্তাপি। অনারাধ্যেতি। আঙ্রাধ্সংসিদ্ধে। উৎক্রম্পোদবিক্ষেপে। বাল্যাপগমসম্বন্ধিনাবাল্যাবস্থাধ্বংসবিশিষ্টেন। অনাসাদ্যেতি। আঙ্পূর্বহ হৈতুকেনন্তম্ভ সদ্ভবিসরণগত্যারিত্যম্বরূপং। কৃৎপ্রদীপিকায়ামন্তদ্দ্রেইব্যং। ৪৬৬॥

क्र ९ अमी शिका।

মেঙো। মেঙ্প্রণিদানে তচ্চান্যোন্যদানং ক্রিয়য়োর্বিনিময়ইত্যুক্তঃ। মেঙোব্যতীহারইতিকালাপাঃ। সচেদৃক্ পূর্ব্বকালাদ্যাচেঃ প্রাপ্তাবুত্তরকালান্মেঙোবিধীয়তইতি। যাচিত্বেতি। অপময়তেদদাতীত্যর্থঃ অতোনপূর্ব্বাপরাভ্যাং সিদ্ধিঃ। যপান্তরঙ্গবাধেনদ্যতি স্থতীত্বাপ্রাপ্রোমিবিধানং। ৪৬৭॥

गृष्धकाष्मिका।

মেঙইতি। ক্রিয়য়োবিদনিময়েহর্থেমেঙঃ জ্বাস্থাৎ ক্ত্রোযপি নবাবিকল্পেন ম্যাদেশশ্চস্থাদিত্যর্থঃ। অপমিত্যযাচতে অত্রক্রিয়য়োর্য্যাচনাপমানয়োবিদনিময়ং দর্শয়তি যাচিত্বাত্মপময়তইত্যর্থঃ। বিনয়ং কৃত্বাপ্রত্যতিতস্থার্থঃ। ৪৬৭॥

নিষেধবাচ্যকং খলোঃ পক্ষেক্তান্যাৎ। অলং খল্পপদাদ্ধাতোঃ পক্ষেক্তান্যাং। অলং কৃত্যখল্বিত্বা খলুভুক্তেনতিক্তানাং খলুক্তা খলুবাচিকং। নিষেধবাচিনোঃ কিম্পানস্কারঃ স্থবর্ণস্য খলুদানং কন্যায়াঃ। অলং ভূষণেখলুনিশ্চয়ে। বাগ্রহণাং ক্রিয়াভেদাভাবেক্তা প্রকরণেবাদরূপ বিধিন্নান্তিতেন সমূলকামং ক্ষতীত্যাদৌনক্তা। ৪৬৮॥

क्रश्यमीशिका।

নিষেধ। অব্যয়ক্তেপ্যভিধানাৎ প্রায়েণ কর্ত্তরিচেতি চকারাৎ কন্মণিচ। অলং ভ্রণমিত্যাদি।
খলুস্থানিশ্চিতে জিজ্ঞানায়াং বাক্যাদিপুরণে। বীপ্পায়াং সাম্বনেবাক্যভ্রণ প্রতিষেধয়েরিতিশব্দর্ত্তং।
অলং ক্ষেতি। অনমস্তাব্যয়েননসমাসঃ। নকর্ত্তব্যমিতি। ভাবকন্মণোর্নিষেধঃ। অলং কৃত্তেতি
পাঠেনঞাহনিত্যন্তাদভিধানান্নাসমাসঃ। খল্যিক্সন্ত্তব্যং। খলুভুক্তেনেতি। বাসরপ্যায়াদ্রাবেক্তঃ
প্রকৃত্যাদিন্নাতৃতীয়াতিক্তানামিতি ভাবেক্তযোগেবেতিষ্ঠী। তিক্তানাং ভুক্তং বর্জামিত্যর্থঃ। সম্প্রত্যসাম্প্রতং বক্তুমুক্তেমুমলপাণিনা। নির্দারিতেহর্থে লেখেনখলুক্তা খলুবাচিকং। বাচিকং সন্দেশবাক্
খলুনিশ্চয়ে খলুক্তানবাচ্যমিত্যর্থঃ। কন্মণিভাবেবাক্তঃ। বাসরপসরপদত্ত্বিক্সয়কেক্তিরা গ্রহণংতাদৃশে
তৎস্থলে তন্মিষেধমিত্যাহ বাগ্রহণাদিতি। ক্রাপ্রকরণেবাসরপবিধিন্নান্তি তেন যথাক্রিয়াভেদাভাবে
সমূলকাষং ক্ষতীত্যাদে ক্রিয়াভেদাভাবেনক্রা তথাচৌরক্ষারমাক্রোশদিত্যাদে ক্রিয়াভেদেহপিনক্রেতি।
অথবাঅভাব ব্যাখ্যানেহপি সমূলকাষ্মিত্যাদে ক্রিজিভিচারাদপিক্রান্তীতি। ৪৬৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

নিষেধেতি। নিষেধং বক্তুং শীলমনয়ারিত্যর্থে নিষেধযুক্তইতি কর্ত্তরিনামন্তজাতাবিতি 'ণিন্
নিষেধবাচিনোচতাবলং খলুচেতি তয়োর্ব্যোগেধাতুভ্যঃ পক্ষেক্তাম্যাদিত্যর্থঃ। ভাবেকর্ত্তরিচ কাপিকার্য্যঃ
কৃৎসংজ্ঞকাব্যয়াইত্যুক্তাচ্চকারাদত্রকর্মণাপি। অত্রপক্ষেগ্রহণং পরত্রনির্ত্ত্যর্থং কৃাগ্রহণং দামান্যধাতুপ্রাপ্তর্থং। অলং কৃষ্ণেতি। কর্মণিক্তাকর্ত্রবাং বারণীয়ং ন কর্ত্বগমিত্যর্থঃ। অলং ভূষণপর্য্যাপ্তিশক্তি বারণবাচকমিত্যমরঃ। অলং ভূষণপর্য্যাপ্তিবারণেয়্নিরর্থকে। শক্তাবিতি মেদিনী। নিষেধবাক্যালক্ষারজ্ঞাদাক্রেরে পরিত্যমরঃ। পলুস্থাদাক্যভূদায়াং জিজ্ঞাদায়াস্ত্রদাস্থনে। বীপ্লামাননিষেধয় পূরণেপদবাক্যয়োরিতি মেদিনী। অত্যৎপ্রমাণং কৃৎপ্রদীপিকায়াং। নম্বত্রবাগ্রহণং কথংবা সরপন্যায়াদেবক্ত্রাদয়ঃ স্থরিত্যত
আহবা গ্রহণাদিতি এতচ্চপক্ষইত্যস্তবার্থরাত্তং তথাচবা গ্রহণাদ্যথাপ্রাপ্তিক্রাদয়ঃ স্থাঃ কিন্তুণ্য
ক্রিয়াভেদাভাবেনাস্তীত্যর্থঃ। সমূলেতি। সমূলং ক্ষতীতি নিম্লেকষতের্গম্ভাৎ সমূলেতু হনেরপীত্যনেন
ক্য্হিংসায়ামিত্যমামক্রা ক্রিয়াভেদেত্বাসরপন্যায়াৎক্রাচন্তাহ। তৃতীয়াস্তেম্পদংশেরিতি সূত্রবিবরণেম্বয়ং
তথাবক্তবাং চৌরস্কারমাক্রোশৎ চৌরক্ত্যাক্রোশদিভিচ। অত্রনিষেধবাচ্যলং থলোঃ পক্ষেক্রাম্যাদলং
কৃষেতি চহন্দদি দ্বিতীয়পাদস্তসপ্তমাক্ষরস্তক্রত্বেহ্প্যমুক্তুপ্ ছন্দোজ্রেয়ং। দৃইঞ্চসপ্রশতিকায়াং যথা।
দুর্গায়ৈরূর্গপারায়ৈর সারায়ৈর সর্বকারিগাঃ। খ্যাত্যৈ তথৈবক্ষায়ৈর ধূমারৈর সততং নমইতি। ৪৬৮॥

1

কর্ত্রক্যেক্রিয়ানৈক্যে পূর্বকালক্রিয়ার্থকাং। ধাতোঃ জ্বাস্যাং। জাগ-রিত্বাহভ্যগাং স্বাত্বা ভুক্তা পীত্বা কলং জগে। জাগরানন্তরং গতইত্যর্থঃ অত্রক্রিয়াস্বেবপৌর্বাপর্য্যমিতি পূর্বতোভেদঃ। ৪৬১॥

অপূর্বকা নাংকুত্রাপি। জ্বা। ঝনংকুত্বাহপতস্কুবি। মুখং ব্যাদায়স্বপিতি হসত্যুত্মীল্যচক্ষুষী। উত্তরকা নীনস্বাপাদ্যপেক্ষয়া পূর্বকালত্বং কাম্পনিকমিতি বচনমিন্থ। ইত উদ্ধ্বং যথাসম্ভবং পূর্বকালইত্যধিকারঃ। ৪৭০॥

क्र अमीशिका।

কর্ত্বঃ। প্র্বঃ কালোযন্তাঃ দাক্রিয়ার্থোযন্তথাতোন্তমাৎ কর্ত্রেক্ষেক্ত্বান্তাবি । তথাচ এককর্ত্ কয়োরেককর্ত্রীণাঞ্চক্রিয়াণাং মধ্যেদারিইতক্রিয়ান্তরাপেকয়া প্র্বিকালীনোযো যোধাতুর্বর্ততে তত্মাদয়ং বিধিঃ অত্রচ স্বরূপনেতি রিক্রেয়ং শক্তিরিতি। বৈশেষিকাণাং মতে শক্তিমতঃ কর্ত্রাদনেক ক্রিয়ার্থেককর্ত্রমূচ্যতে মণিমস্রৌষধাদিনা বহুেদাহশক্তিনিরোধেতপ্তায়ঃ পিণ্ডাদেঃ করতলগ্রহণদর্শনাৎ শক্তিঃ। মীমাংসকমতেহপি শক্তি শক্তিমতোরভেদোপচারাদেককর্ত্রম্বগন্তর্যং। বৈয়াকরণানাং সর্বেমতাবলম্বিয়াৎ অন্তথাভুক্তাত্রজতি পীয়াগায়তীত্যাদে প্রকিলজন্তাপরাচোতরজাশক্তিঃ পাংশুকাদাবেকতরসত্ত্রেপ্রেক্তর্গত্তাবাৎ কথমেককর্ত্রমমিতি। ভূতকালক্রিয়ার্থকাদিত্যকরণাৎ একম্মিশ্ব্রহর্ত্তেভুক্তাত্রজতি হোভুক্ত্বাথ্যাতীতিচ সিন্ধং। তথাক্রতেজাগরিষাভ্যগাদিত্যাদে মরেছেতিত্বভূক্ত্বাত্যাদিতি দোষঃ। জাগরিছেতি। শস্ত্রকিন্বর্গিকইতিগুণঃ। অত্রেতি। এতৎক্র্ণপ্রত্যে প্র্বিতঃ পরাবরাভ্যামিতি বিহিতাৎক্তাৎ তথাহি ক্রিয়াতিরিক্রপদার্থয়োঃ পৌর্বাপর্যমিতিভেদঃ। কর্ত্রিক্রেক্সিকং ভুক্তবতি দ্বিজগতশৈচত্তঃ। প্রকালেতি কিং প্রতি পঠতি যুগপদাচরণান্নাস্ত্যেকস্থাপি প্রকালতা। ৪৬৯॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

কর্ত্ত্রিতি। ভিন্নক্রিয়েককর্ত্রমানন্তর্য্যঞ্চ ক্রা প্রত্যার্থাং কিন্তুপূর্বকালক্রিয়ার্থকান্ধাবির পরঃ ক্রাপ্রতায়ঃ তেন ক্রাপরিস্থাহভাগাদিত্যন্ত স্বক্রজাগরণানন্তরগমনানুক্লব্যাপারবানিতি বোধঃ। নতুপূর্বকালীনস্বমর্থাঃ অভ্যগাদিত্যক্তে জাগরণাদা বা কাজ্যাবিরহাৎ পূর্বকালীনস্বাপ্রতীতেঃ! সর্বত্যা-থ্যাতান্তপদার্থ সৈব ক্রনন্তাদিক্রিয়াবিশেয়্যপ্রপ্রতীতিবিষয়ন্ত্রাৎ। জাগরিছেতি। জাগ্নিদ্রান্ধ্রেয়া আভ্যগাদিতি। অভিপূর্বইণ্গতৌ অদ্যতভাঃ দীতি অভাগমঃ ইণোগান্সদিচোল্লুক্ত্রাৎ পরক্রৈ। স্নাম্বেতি ফ্যাশোচেধান্তাদিমস্তন্যঃ ণস্তনঃ। ভূক্ত্বেতি। ভূজ্পালনাভ্যবহারয়োঃ ধূটিচস্তকঃ। পীত্বেতি। পাপানেকিতি হলাভ্যাদিনা আস্রঃ। ধ্বনোভূমধুরাক্ষুটে। কলইত্যমরঃ। জগাবিতি। গৈশব্দে অটিন্বিভাবাদি অবর্ণা দ ট ওঃ। ক্রিয়ানৈক্যেকিম্ অপরাহ্রাৎ পূর্বেভুঙ্ক্ত নাত্রক্রা ক্রিয়ান্ধ্রান্দ্রাদিতি। ৪৬৯॥

क्र ९ अमी शिका।

গম্চাভীক্ষ্যে। ধাতোঃ পরোণম্স্যাৎজ্ঞ্বাচ। ছরির্গায়ৎ গায়ংক্রীড়তি কাননে। গীত্বাগীত্বাগামং গামমধীয়ানঃ পায়ং পায়ং কলংজগৌ। গত্বাগত্ব। পীত্বা পীত্বাচ। আভীক্ষ্যেকিং যদয়ং ভুডেক্তভদয়মধীতে অব্যয়ত্বাং যদ্যদাভত্তদে ভার্থঃ। তদিভানেনক্রমস্যাপ্রাপ্তত্বাং নক্ত্যাচ। ৪৭১॥

অপ্র্কালাদ্যুগপৎক্রিয়ার্থকাদ্ধান্তোঃ কর্ত্তু রৈক্যাদৌকাপিজ্বান্তাৎ। অথকথমিদংযুজ্ঞাতে ক্রিয়াহ্বি সাধ্যাদাচসাধনমপেক্ষতেভচ্চমনোব্যাপারঃ মনসন্দাঞ্চল্যছেনযুগপত্ভয়ীংক্রিয়াং কর্ত্তানব্যাপ্রাভি তথাচ কলাপসূত্রং বিভূত্ববাদ্মহাকাশস্তথাদিক্ তথাচাত্মাতস্তাবাদমুমননই।ত। একস্ঠানেকযোগেহনেককালেনৈরউপপদ্যতেইত্যেবং কালোনঘটত ইতিচেম্মিবং যদ্মতে আত্মবদ্ধনাহপীতিমনোবৈভবং ভদ্মতমিহাভ্যুলাদেয়ং তেন যথাত্মনঃ সর্বান্তিশ্রেলংযোগএকদৈবান্তিভদ্মনসোহপীত্যেককালন্তমবিক্লং। অভ্যমতেহিপিমনসআশুসঞ্চারিছেনান্তরকালস্ঠাল্লত্মান্তম্বাণিত্য যথৈকএবদেবদত্তোব্রজতিশরীরমিপ ধাবতি যথা বাকদল্যাদিকং ভক্ষয়েকদৈবরপরসগদ্ধস্পাশ্রম্যাপরিমানত্বং গৃহ্লাভিভক্ষরতি। কনৎ ক্ষেত্যভিধানান্তমান্তম যদৈবপততিতদৈবক্ষমৎ করোতীতিযোগপদ্যেনক্রিয়য়োরমুষ্ঠানাবগমাদপুর্ব্ব কালত্ম্ব্রমন্তিলাদ্বান্ত প্রকালত্বং কাল্লানিকা বাদ্যানাদ্যপেক্ষয়াব্যাদানাদেঃ প্রকালত্বং কাল্লানিকং বৃদ্ধিদামর্থ্যরিচিত্যতোহ্যোগ্যম্ অপরবুদ্ধাভিতরকালীন ব্যাদানাদ্যপেক্ষয়া স্থাপাদেরপিতথাত্বেহনবন্ত্যপিভিদোযোপহতত্বাং সূত্রমিদং কৃত্মিভিভাবঃ। ইতউদ্ধিতি। অতঃ পরং ক্রিয়ানৈক্যাদিসহচরয়াৎ ণম্ক্রপর্যন্তং পূর্বকালক্রিয়র্থেকাদিত্যস্থ যথাসন্তর্মিত্যসন্ত্রে পূর্বকালেচ যথা যাবজ্জীবমল্লাশীউদর-পূরং ভূপ্তক্তইত্যাদি। ইতেরাদ্যর্থত্বাৎ কর্ত্ত্রিরক্যইত্যাদেরপ্রাধিকারঃ। ৪৭০॥

গঢপ্ৰকাশিকা।

অপুর্বেতি। অপুর্বেকালাৎ পূর্বেকালক্রিয়ার্থকভিন্নাৎ যুগপৎক্রিয়ার্থকাৎ পরকালক্রিয়ার্থ-কাদ্বাধাতোঃ কুত্রাপিপ্রসিদ্ধপ্রয়োগেক্লাস্থাদিত্যম্বয়ঃ। ঝনৎক্ষেতি। ঝনৎশব্দবিশেনং কৃত্বাভূবিঅপত দিত্যত্রপতনানস্তরং ঝনৎকারসন্তবাদপূর্ব্বকালয়ং বোধাং। শান্দবোধস্তঝনৎকারশব্দপূর্বকালীনপতনবান্ আখ্যাতাস্তক্রিয়ায়াঃ শান্দবোধেবিশেষ্যত্বাৎ এবং মুখং ব্যাদায়পতিত্যিত্রস্থাপানস্তরমেবমুখ ব্যাদান সন্তবাৎ পরকালীনমুখব্যাদান পূর্ব্বকালীনস্বাপাশ্রয়ইতিবোধঃ। হসতীতি। হস্ত্সনেউদ্পূর্বাঃ মীল্ নিমেষে কর্ত্তরিক্ত্বা প্রাদিসমাসেক্রোয়প্ অত্তহসনসমানকালীনচক্ষ্রন্দ্র্মীলন সম্ভবাদক্রনাশ্রয়ইতি শান্দবোধঃ। অত্রয়্পপৎকালবোধনাদপূর্ব্বকালাৎক্ত্বা। নমুমুখব্যাদানানস্তরমপিস্বাপা মুর্ত্তেঃ এবমেকাবয়বভয়্রিকাবয়বপাতানস্তরং যোঝনৎকারস্তত্ত্তরং সর্ব্বাবয়বপাতাৎ চক্ষ্রন্দ্রশীলনানস্তরং যদ্ধনান্তাদ্বালার্রকালীনস্বাপাদ্যপেক্ষয়াব্যাদানাদেঃ পূর্বকালম্বসম্ভবাৎ সূত্রমিদং ব্যর্থমিত্যত আহকাল্পনিক্রিতি ব্রক্রালাদ্ব্যিতিস্ক্রিতং। যথা সম্ভবমিত্যনেন ক্রচিদপূর্ব্বকালাদ্ব্যিতিস্কিতং। ৪৭০॥

क् थमीशिका।

ণম্। আভীক্ষ্যেপোনঃ পুস্থার্থে প্রবর্ত্তমানাৎ পূর্ব্বকালক্রিয়ার্থকাদ্ধাতোঃ কর্তুরৈক্যেক্রিয়ানৈ-ক্যেচসতি বাসরূপস্থায়াভাবাৎচইপ্যুক্তং। গায়ং গায়মিতি। আভীক্ষ্যার্থস্থণম্ক্রোর্বাচকত্বাৎদিঃ। ৪৭১। স্ব্যেপ্রথমপূর্বেরু। উপপদেরু ণম্ ক্ত্রে স্যাতাং। স্ব্যেভাজং জগামসং। স্ব্যেভুক্ত্রা প্রথমং ভোজং ব্রজতি পূর্বং পাঠং শেতে পূর্বং পঠিত্বা শেতে অভিধানামএষাং সমাসঃ অনমিতি নঞোইনিত্যত্বাদ্বা। ৪৭২॥

নিন্দ্যেকর্মণি ইস্বাস্তস্বাদর্থেইপি কৃঞঃ খমিঞ্। আক্রোশনকর্মণি ইস্বাস্ত-স্বাদর্থেচ কর্মণ্যুপপদেকৃঞঃ শমিঞ্ স্যাৎ। তঞ্চৌরঙ্কারমাক্রোশং চৌরমুক্ত্ব।-নিন্দতীত্যর্থঃ ইহবচনার্থঃ কৃঞ্ ভীতস্কারমাক্ষিপং খনুবস্কেমুট্ স্বাদর্থে স্বাভ্রস্কারং স্বতং ভূতেক মধুরক্ষারমুজ্জগৌ। এবং সম্পন্নমিফলবণক্কারঞ্চপঠতি। ইস্বা-স্তেতি কিং স্বাদ্কৃত্য স্বাদীং কৃত্বা শস্কুলীং ভূতেক্ত। ৪৭৩॥ .

গঢপ্ৰকাশিকা।

ণম্চেতি। . আভীক্ষ্ণোরে পুরে চকারাৎক্ত্বাচ। অব্যয়স্থানেকার্থস্থানিত্যর্থঃ। তদেত্যনেনেতি তদিত্যনেনতদাইত্যর্থকেনযুগপদ্বোধনাৎ ক্রমস্থপৌর্ব্বাপর্য্যস্থাপ্রাপ্তস্থামক্ত্বাচেত্যর্থঃ। ৪৭১॥

क्थमीणिका।

•অগ্রে। সপ্তম্যন্তাকুকরণমব্যয়স্থা অথবা সূত্রেসপ্তম্যন্তদর্শনাৎ কালাধ্বনোরিত্যনেন নদিতীয়া। অনাভীক্ষ্যার্থমিদং সূত্রং। প্রথমং পূর্ব্বমিতি কালভাবেতি কর্মত্বং ভজেরবিবক্ষিতকর্মকত্বেনাকর্মত্বাৎ। ক্রিয়াবিশেষণদ্বা প্রথমং যথা স্থাদাদোভুক্তাব্রজতি। এষামনমন্তাব্যয়েনেতি সমাসপ্রাপ্তো নসমাসঃ।৪৭২॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

অগ্রইতি। অগ্রেআদো ভোজং ভুক্তাট। জগামেতি। গম্ধাতোরটিরপং। ব্রজ্গতো ব্রজন্তি শীঙ্ স্বপ্নেশীঙোনিত্যমিতি গুণেশেতে। নমুকথমেষাং সমাসঃ অনমস্তাব্যয়েনেত্যনেন সমাসপ্রাপ্তেরিত্যত-আহ অভিধানাদিতি। কুত্রচিন্নসমস্ততে ইত্যভিধানাদিত্যর্থঃ। নমুকর্মধারয়স্থলেতদভিধানাৎ কর্মধারয়স্থৈব কচিনিষেধঃ কুতইত্যতআহ অনমিতি। অনমস্তাব্যয়েন উপপদং নহিসমস্ততে ইত্যত্ত অমস্তভিন্নাব্যয়েনেতি নঞোহনিত্যত্বাদমস্তেনাপি উপপদং ন সমস্ততে ইত্যর্থান্নসমাসইত্যর্থঃ। ৪৭২॥

क्ट्थमीशिका।

নিন্দ্য। ক্ঞোবচনার্থত্বন ক্রোশনস্থানিউবচনস্থকর্মণি। নমুবচনার্থত্বেহপি চৌরশব্দঃ করোতেঃ কর্মভবত্যেব যত্নচ্যতে আক্রোশন কর্মণীতি তদ্বাচ্যাভিপ্রায়েণ। নমুলোপ্রাদিনা চৌরত্বং নিষ্পাদ্যতত্ত্ব পদেশেনবাচৌরোভবানিতি বচনাস্তরেণ ক্রোশতীত্থনেবার্থঃ ক্তোনোচ্যতামিতি চেন্ন ভ্রুতত্ত্বাংকর্মণোপ-পদেনবযদাক্রোশঃ সম্পদ্যতেতদৈবভবতীত্যভিমতং তত্মিন্পক্ষেত্যেনবাক্যেনাক্রোশনং ক্রিয়তে তন্মাপেক্ষণীয়ত্বান্নবাক্যং নিরাকাজ্কাভবতীতি চৌরক্ষরোতি উচ্চারয়তীতি চৌরক্ষারমিহ চৌরশব্দঃ ক্রঞঃ ক্রম্বত্বাচ্যমাক্রোশনকর্মেতি সাকাজ্কত্বমিতি বজ্ঞঃ। ভীতাদিশক্ষোচ্যাবগ্রাক্রোশনিক্পত্তরে

সন্থিবং কথমিশ্বং পূর্বাদনধিকার্থকাং। বাক্যালঙ্কারমাত্রাং ক্রঞঃ খমিঞ্ স্যাং। অন্যথাদয়ঃ প্রকারার্থাঃ। এষভুডেক্ত্ইন্যথাকার্মেবকারং ক্রবস্তামী। অন্যথা ভুডক্ত ইত্যর্থঃ। কথক্কারমনালম্বা। ইম্বক্কারং যাতি। অন্যিকার্থা-দিতি কিম্ অন্যথাকৃত্বাশিরঃ শেতে। ৪৭৪॥

ভবতীতি। আক্রোণেকিং সাধুরুত্বাশ্লাঘতেইতিচন্দ্র:। স্বাহুক্কারমিতি। স্বাহুলবণাদি বাচ্যব্যাপারেণ মনসিবা স্বাদূক্ত্বাভুঙ্কুইত্যর্থঃ। সম্পন্নং স্থসংস্কৃতং স্বাহুভবত্যেব মিউং মধুরং লবণং প্রসিদ্ধং স্বাদ্ধং। স্বাহুমিউমনোজ্ঞারেতি মেদিনী। স্বাদূরুত্যেতি চ্বিঃ কর্তুরৈক্যইত্যাদিনাক্ত্বা। স্বাদ্বীতি রোদন্তাদিতী-প্রত্যায়:। ৪৭৩॥

भूष्णुकाश्विका।

নিন্দ্র ইতি। থমিঞ্ থকার ইকারঞকারা মুবন্ধাহম্ প্রত্যায় । থমুবন্ধঃ মুডাগমার্থঃ ইনমুবন্ধঃ ব্যঞ্জনাস্তপ্রত্যার্থাং ঞে মুবন্ধইন্ধুদ্রাবার্থঃ। নিন্দ্রেইতি। নিনিকুৎসায়াম্ ইনমুরন্ধহান্নুম্ হাণস্তঃ। নিন্দ্রেকর্মণীত্য অবিবরণমাক্রোশনকর্মণীতি। আক্রোশনিতি। আঙ্ ক্রুশ্ আহ্বানেরোদনেচ হস্তত্যা-দিবিভক্তোরপং। অনর্ঘেচ ধিগপসর সিচোরন্ধারমাক্রুশ্যমানইতি। ইহেতি। ধাতৃনামনেকার্থহাদিত্যর্থঃ কিন্তুত অক্রাণমন্ত থৈ প্রয়োগঃ শিক্তাশন্তঃ। ভীতমিতি। ভীতমিত্যুক্রানিন্দতি ম্মেত্যর্থঃ। স্বাহ্নশ্বরমিতি স্বান্ধিত্যুক্র্বান্ধিতি। উদ্ পূর্বঃ গৈ শব্দে অটিরপং। সম্পন্নমিক্তিনিত। সম্পন্নস্কারং মিক্তার্পারনিতিচ পঠতীত্যর্থঃ এবামপিস্বান্ধর্থহাৎ। স্বাদ্ক্রত্যতি চ্প্রত্যয়ে অবর্ণহ্রম্বয়োশ্চ্বানীর্ঘাবিতিনীর্ঘঃ। শস্ক্লীশকঃ স্ত্রীলিঙ্গঃ পিইক্ববাচকঃ। ৪৭৩॥

क् श्रमीशिका।

অন্য। অর্থাৎ সম্বন্ধিধার্ম্বাদনধিকার্থকাৎ এতেনাত্র পূর্ব্বকালক্রিয়ানৈকত্ব। প্রকারার্থাভেদার্থাঃ। কথঙ্কারমিতি। অক্তরাহেলয়াপাদমুচ্চৈমূর্দ্ধিস্থবিদ্বিধাং। কথঙ্কারমনালম্বা কীর্ত্তির্দ্যামধিরোহতীতিমাঘে। অন্যথাকৃত্বতি। ছগলাদেরাত্মনোবাশিরঃ স্বরূপতোহ্মথা কৃত্বাশেতইত্যর্থঃ। সত্যত্রানধিকার্থছে-অন্যপ্রকারং শিরঃ শেতইত্যযুক্তোহর্থঃ শিরসঃ শয়নাকর্ত্বাৎ। ভুঙ্কু ইতি কচিৎ পাঠঃ। ৪৭৪॥

गृष्धकाणिका।

অন্তেতি। অনধিকার্থকাৎ স্বদ্ধন্ধি অন্তথাদি পদার্থাতিরিক্তার্থরিহিতাদাক্যলস্কারমাত্রাদিত্যর্থঃ। প্রকারার্থাভেদার্থাঃ। প্রকারোভেদ সাদৃশ্রেইত্যমরঃ। অন্তথাকরোতীতি অন্তথাকারং। অত্রক্ত্রঞঃ অন্তথার্থবোধকত্বেননাধিকার্থতা এতচ্চসূত্রবলাৎ। অন্তথাকারং প্রকৃতাদন্তপ্রকারেণেত্যর্থঃ। এবস্কারমেবং প্রকারেণ কথক্ষারং কেনপ্রকারেণ ইপস্কারং ইদং প্রকারেণ। অমস্তস্তাব্যয়দ্বেন তৃতীয়া বিভক্তোরূপং প্রকৃত্যাদোত্তীয়া। অন্তথাক্বছেতি। অন্তপ্রকারং শিরঃ কৃত্বাশেতইতি কৃধাতোর্থাবগতেরধিকার্থ সন্থারণম্ কিন্তক্তাইত্যর্থঃ। ৪৭৪॥

ø.

প্রত্যুক্তরস্যাক্ষময়া দানে যথা তথাপরাং। রুঞঃ খনিঞ্স্যাং। যথাকার-স্তথাকারমহং ভোক্ষ্যেতবাত্র কিং। অনধিকার্থকাদিত্যের যথাকৃত্বা তথাকৃত্বা-শিরোভোক্ষ্যে কিন্তবানেন। ৪৭৫॥

যাবতিজ্ঞীব বিষ্ণভাগং ণম্। যাবজ্জীবমণ্পাশী। যাবজ্জীবং প্রবসতি যাব-দ্বেদং দদাত্যসৌ বিক্তং যাবল্লভতে তাবদ্দদাতীত্যর্থঃ। ৪৭৬॥

কর্মণিসাকল্যেদৃশিবিদ্ধ্যাং। গম্যতিদর্শমাঞ্জয়তে। কন্যাদর্শম্বরয়তিযাং যাং কন্যাং পশ্যতিতাং তাং বরয়তীত্যর্থঃ সদ্গুণবেদং সমাদ্রিয়তেযংযংসদ্গুণং বেত্তিবিস্কেবিন্দতিবাতং তমাদ্রিয়তইত্যর্থঃ। কর্মোপপদমধিক্রিয়তে। ৪৭৭॥'

क्९ श्रमी शिका।

প্রত্য। দানেগম্যে যদ্যসহমানঃ পৃচ্ছতি বক্তিচাসহমানস্তদাপ্রত্যুত্তরস্থাক্ষময়াদানং ভবতিযোগ্যত্বাৎ উত্তরস্থ নালমিত্যর্থেহপি প্রতিবাক্যলাভায় প্রতিপদং কথং ত্বং ভক্ষদি ভিক্লুকেণ পৃষ্ঠস্তস্থ বচনমাজ্ঞায়াসহমান আহ্যথাকারমিত্যাদি। যথাকুত্বেতি। মৎস্থাদেরাত্মনোবাশিরঃ। স্বরূপতো যথাকুত্যেত্যধিকার্থত্বং। ৪৭৪॥

গুঢপ্রকাশিকা।

প্রত্যুত্তরস্থেতি। ক্ষমূন্দহনে অপ্রত্যয়ঃ নক্ষমাঅক্ষমা অসহনম্ অক্ষময়াহদহনেন প্রত্যুত্তরস্থ দানেগম্যে যথাতথাপরাদনধিকার্থাৎ কৃঞঃ খমিঞ্স্থাদিত্যর্থঃ। অত্র থকুবন্ধস্থ নিক্ষলত্বেহপি পূর্বেস্মাদকু-বর্ত্তনলাভারদোষঃ। কশ্চিৎ পৃচ্ছতি কথং ভক্ষদি তম্ম বচনমাজ্ঞায় অসহমানোহদহনেন প্রত্যুত্তরস্থ দানে আহ যথাকারং যৎপ্রকারেণ তৎপ্রকারেণাহং ভোক্ষ্যেত্যত্র প্রশ্নে তব কিং প্রয়োজনমিত্যর্থঃ। যথাকুত্বতি। যৎপ্রকারং তৎপ্রকারং শিরঃ কৃষাহং ভোক্ষ্যে অনেন প্রশ্নেনতব কিং প্রয়োজনমিত্যর্থঃ অত্রক্ষাতোরধিকার্থাবগতের্ম্থ মিঞ্ কিন্তুক্রা। ৪৭৫॥

क्र श्रमोशिका।

যাবতি। অবিশেষাৎ যাবত্তাবচ্চ দাকল্যেহ্বধাবিত্যব্যয়ং মনব্যয়ন্থা যৎপরিমাণং কালং জীবতি তাবদল্লাশীত্যসম্ভবান্নপূর্বকালত্বং। যাবদ্বদমিত্যত্রাস্তি তাবদ্দদাতীত্যর্থঃ। ৪৭৬॥

गृष्यकाशिका।

যাবতীতি। যাবৎপদে উপপদে জীব্বল প্রাণধারণয়োঃ বিদ্ঌলাভে আভ্যাং ণম্ স্থাদিত্যর্থঃ। অল্পমশাতীতি অশ্ভোজনে নামশুজাতাবিতি ণিনন্তঃ। বস্ নিবাসে প্রবসতি নাত্রপূর্বকালার্থজং। ৪৭৬॥

क्र श्रमीशिका।

কর্মাণি। কর্মাণুপেপদেসাকল্যেগম্যে তচ্চেহকর্মাণিশ্রুতত্বাৎ তেন বীপ্সায়ামিত্যর্থঃ। বরঙ্গপ্সা য়ামদন্তশ্চুরাদিঃ। বেত্তীত্যাদিনাজ্ঞানলাভবিচারণার্থ বিদের্গ্রহণম্ অকর্মকন্ধান্মসন্তার্থস্য। ইতঃ পরং কর্মাণীতিপদাধিকারঃ করণোপপদাদ্ধন্তেঃ প্রাকৃ। ৪৭৭॥ পুরের্ণম্ স্যাদৃশ্চলুয়ার্ষ্টিপ্রমাণবোধনে। সীতা প্রমন্ত্র দেইবর্ষণসীতাপুরঞ্ রফীবান্। গোষ্পদপূরং রফৌদেবঃ গোষ্পদং পূর্রিজেত্যর্থঃ। ৪৭৮॥ চর্মোদরপরাৎপূরেঃ। গম্স্যাৎ। চর্মপূরক্ষণৌদ্ধি। চথাদোদরপূরৎসঃ। ৪৭১॥

गृष्प्रकाषिका।

কর্মণীতি। দৃশির্প্রেক্ষণেদৃশ্বিদ্আভাগ ণম্স্থাদিত্যর্থঃ। যতীতি। যতীপ্রযম্বে যততেই দ্রিয়-জ্যায়যত্বং করোতীতিয়তিঃ যতেরিঃ। যেনির্জিতে দ্রিয়গ্রামায়তিনোয়তয় দ্রুতেইত্যমরঃ। সফলান্ যতীন্পশাতীতিয়তিদর্শং ণমিগুণঃ উপপদসমাসঃ আঙ্গ্রিঞ্ সেবায়ামাশ্রয়তে যংযংয়তিং পশাতিতং তমাশ্রয়তেইত্যর্থঃ। এবং কন্যাদর্শং বরয়তি। সাকল্যার্থং বীপ্রয়াদর্শয়তিয়াং যামিতি। বেজীতি বিদ্জানেবিস্কইতি বিদ্বিচারণেবিন্দতীতি বিদ্জলাভে। সমাদ্রিয়তইতি। সম্ দৃঙ্আদরে ভুদাদিঃ অনিইযু কারস্থান্থতিতি ঋকারস্থইয়্। যাবতীত্যাদিআশ্রয়তইত্যন্তং মুপগীতিচ্নুন্দস্তত্রণম্ যাবজ্জীব-মঙ্গানীতিদ্বিতীয়পাদঃ। ৪৭৭॥

क्र्थमीशिका।

পূরে। রৃষ্টিপ্রমাণবােধনে সমুদায়েনবিফেরিয়তাগমে। পূরেরলােপইতিসম্বন্ধাৎ কূপপ্রাংর্ফ ইতিনােপপদােকারলােপঃ। পূরীআপ্যায়নেহকর্মকঃ কর্মােপপদাধিকারাদন্তরিনর্থকাাদ্ধেবিনন্তাদ্বা। সীতালাঙ্গলপদ্ধতিঃ। তাবদবর্ধদ্যাবত্যার্ফ্যা সীতাপ্র্যতে ইত্যতির্ষ্টিবােধঃ ইত্থমপূর্বকালত্বার্থমেবগম্গ্রহণং পরতঃ সাকল্যার্থনির্ত্ত্যর্থক। অত্রগোষ্পদপূরং যথাভবত্যেবং রুফইতি ক্রিয়া
বিশেষণেসামান্যতােঘঞ্ রৃষ্টিপ্রমাণাদিকমুৎপত্যইত্যভিপ্রায়েণতৎসূত্রমাদায়নিমূলক্ষতের্বাচ্যত্বাৎ
সূত্রমপ্যুপক্ষিপ্তং চন্দ্রেণ তত্তপক্ষিপ্তং গ্রন্থক্তাগোম্পদপ্রমাণাদ্যনবগ্নমাৎ। ৪৭৮॥

गृष्यकाणिका।

পুরেরিতি। চকারাৎ বাউশ্চলুগিত্যত্তাম্বেতিনণম্ইত্যত্ত্ব। ণম্গ্রহণং সাকল্যার্থস্থ পূর্বকাল স্বস্থাচনির্ভর্থং। পুরীআপ্যায়নেচুরাদিরাত্মনেপদীতচ্চপ্রীণনং পুরণঞ্চ। সীতাং পুরয়তীতিসীতাপ্রং সীতাং পুরয়িছেত্যর্থং যাযাসীতাতাংতাং পুরয়িছাহ্বর্ষৎর্ফেরসার্ক্তিকত্বাৎ নাত্রপুরণানন্তরং রৃষ্টিঃ কিন্তু রুষ্ট্যনন্তরমেব পুরণমিত্যপূর্ক্ষকালত্ব্য। গোষ্পদপুরমিতি। গাবং পদ্যন্তেহ্মাদিমান্বেতি কৃষ্যভিচারাদচ্নত্বল্কীবলিঙ্গামুরোধাৎগবাং পদমিতিবিগ্রহং গোষ্পদং পুরয়িত্বেতিবাক্যেণম্ গোশব্দাৎ পদশব্দেষ্ট্মানাসেবিতসেবিতইতিষ্ট্। রুষুসেচনেগত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনাকর্ত্রিক্তঃ।গোষ্পদপ্রদা। ৪৭৮ ॥

इष्यमीलिका।

চর্ম। পৃথক্করণান্ধাত্রয়ষ্টি প্রমাণতেতি কিন্তু পরত্তামূর্ত্তিঃ। চর্মপুরমিতি। দধ্যাধাররূপং চর্মপুরয়িত্বাচেত্যর্থঃ। চথাদেতি। যদ্যপিভোজন পূর্বকালেনোদরপুরণং ভবতিতথাপ্যতিশয়-বিবক্ষয়াপূর্বকালত্বংবা। ৪৭৯॥

गृष्धकाणिका।

চর্ম্মেতি। দদাবিতি দাঞঃ অটিরপং। চথাদেতি। থাদৃভক্ষণেঅটিরপং নাত্রাপিপূর্বব কালস্থং। ৪৭৯॥ 4)

ণম্চেলার্থপরাৎ ক্লোপেঃ। বর্ষপ্রমাণে। চেলক্লোপমপোইমুচৎ। বস্ত্রকো পমস্বুবর্ষজলদেন। বস্ত্রন্তেমনপ্রমাণং র্ফইত্যর্থঃ। ৪৮০॥

গাত্রপুৰুষয়োঃ স্নাতেরস্তর্ভব দিনর্থকাৎ। ববর্ষপুৰুষস্নায়ং গাত্রস্নায়ঞ্চবারিদঃ। গাত্রং স্নাপয়িত্বেত্যর্থঃ। ৪৮১॥

নিমূলেকষতের্ণম্ন্যাৎ সমুলেজুহনেরপি। ক্ষতেশ্চণম্ন্যাৎ। নিমূলকাষং ক্ষতিপ্রতিপক্ষান্ ক্ষিতীশ্বরঃ। নিমূলং ক্ষতীত্যর্থঃ। সমূলকাষং ক্ষিত্রপা-স্বয়মদ্যমান্ধিনোষি। সমূল্যাত্মস্বস্তুঃ প্রাল্লোদ্যন্তিমানিনইতিমাযে। ৪৮২॥

क्र थ्रमी शिका।

ণম্। চেলার্থপরাদস্তবাচকপরাৎ। ণমাবর্ধপ্রমাণমাকৃষ্টং। হেত্বিনিকুয়ীক্ষায্যোঃ কোপক্ষাপো। ক্ষেহনির্ভরমধন্তবধূনামার্ক্রভাং বপুরসংশয়মন্তঃ। যুনিগাচপরিরন্তিণিবস্ত্রক্রোপ মন্ত্রুব্রষেজলদেনেতিমাঘে। যেন্বস্ত্রং স্থিমিতং ভূতঃ তথাবর্ষেইত্যর্থের্স্টিবিশেষাবগমঃ বস্ত্রং শব্দয়িত্বাবর্ষেইত্যর্থের্স্টিপ্রমাণং লক্ষ্যতে-ইত্যর্থঃ উভয়থাপুর্বকালত্বং। ৪৮০॥

গুতপ্রকাশিক।।

ণ্মিতি। চেলং বসনমংশুক্ষিত্যমর:। তেনবস্ত্রবাচকপরাৎ ক্লোপেঃ পরোণম্ স্থাদিত্যর্থঃ। কুয়ীশন্দেন্দনয়োঃ হেশ্বিনিকুপাদেশঃ মুচ্৯মোক্ষণেদীতি পুবাদের্ভ্যতাদের্জকার্নাকুবন্ধাদিত্যাদিনাঅঙিদী-তোদিঃ। যদিশন্থপ্তিদাপুর্ব্বকালয়ং যদীন্দনং তদাজলমোচনানন্তরমাদ্রী ভাবাদপুর্ব্বকালয়ং। র্ফইতিজ্লদইতিশেবঃ। ৪৮০॥

क्थमीिका।

গাত্র। অকর্মকত্বেহপি কর্মাধিকারাদিনন্তস্ত স্নাতের্মিরাদায়ান্তর্ভবদিতি। অনুর্ত্তের্ষ্টিপ্রমাণে বৃষ্ট্যনন্তরমেবাশুভাবিত্বেনগাত্রস্নানস্তোপলম্ভত্বাৎ কার্য্যসৈত্রপূর্ব্ধকালত্বং যস্তাউৎপত্যনন্তরমেব মাতাত্রিয়তে সলোকৈর্মাতরং হত্বাজাতোহয়মিত্যুচ্যতইতিকাতন্ত্রটীকা। ৪৮১॥

গৃতপ্রকাশিকা।

গাত্রেতি। ফার্শোচেআদিষস্থ সং ণস্তনং ধাতুনির্দেশেশতিপ্। অন্তর্জবন্ধিনর্থোষস্থ নদ্যস্থাদিতি-বাকপ্। এতৎপদমিনন্তস্থবারণার্থং। নচেনন্তাৎণম্ কথনেকোদোষইতিবাচ্যং তথাসতিপুরুষস্মাপমিতি প্রয়োগাপত্তেঃ। নচণমিইল্লোপেনিমিতনৈমিত্তিকস্থায়াৎ পলোপেপুরুষস্নায়মিতি সিদ্ধ্যতীতিবাচ্যং তল্লায়স্বীকারাপেক্ষয়াহন্তরিনর্থস্বীকারস্থ লঘুত্য়াযুক্তত্বাৎ। স্পত্রগাত্রপুরুষয়োঃ সমানাঞ্মন্তান্তি-ক্রমোদাহরণেহপিনদোরঃ। স্লায়মিতি ণমীজ্ব্তাবেযাগমঃ। ৪৮১॥

क्र अमीशिका।

নিমূল। ণম্এহণাদন্তরিনর্থকাদিতিনিরাসঃ। কর্মাসুর্ত্তেরিমূলে সম্লেকর্মণ্যপপদে। নির্মিশ্চিতং মূলমন্তিকং যন্তানিমূলং নিঃ শেবং সমূলং সশেবং। মূলং র্ত্তেহন্তিকেলাভেইতিমেদিনী। মূলং কারণধা। জীবেগ্রহঃ শুক্ষচূর্ণক্লকপূর্বাৎপিষস্তুণম্। জীবগ্রাহং বিগৃহ্ণাতি শুক্ষ-পেষং পিনষ্টিচ। জীবং গৃহ্ণাতি শুক্ষং পিনষ্টীত্যর্থো। চূর্ণপেষমপি নড্ গজ্যুথং। ক্লক্ষপেষং পিনষ্টিদঃ। ক্লক্ষশকোদীর্ঘবান্। যথা সপুনাতু ব্রজেযশ্চণোরজঃ পাতক্রক্ষিতো। শিশুৰুচ্ছিদ্য যমজৌ নিম্পিপেষ তক্রক্ষিতোইতিকীচকবধে। ৪৮৩॥

মূলমাদ্যেশিকার্থয়ারিত্যমরঃ। আদ্যেকারণে। কয়ৃহিদায়াং মূর্দ্ধন্যান্তইতিবহুবঃ। পাণিনিমতেকয়্পতিলিল্ড্যান্তঃ। তথাচভট্টিঃ দমূলকাদং চ ক দূ য় দস্তোরামান্তিকং রংহিতমমুদ্যেগাইতি। রামান্তিকং জ্বায়ুরিতিবজ্ঞঃ। কস্হিংদায়াং দন্ত্যান্তঃ রামান্তিকং দেশং দমূলকাদং পুনঃ পুনঃ ভূশম্বারুদন্তইতিচন্দ্রঃ। কয়্গতিশাতনয়ারিতিকেচিৎ। নিমূলং কয়তীত্যর্থঃ অনুপ্রয়োগঃ প্রয়োগদাধ্বর্থইতিবক্তব্যম্বাৎ ণমন্ত-স্থায়মর্থঃ। বজ্রধরস্ত্রতাৎপর্যার্থএবদর্শিতঃ নিমূলং কয়্সাকয়তীত্যর্থঃ ণমন্তক্ষামন্তএবার্থ ইতিকয়াদি সূত্রটীকাক্তাবক্তব্যম্বাদিত্যাহ। সমূলেতি। সবিধমুপসরণ সমূলকায়ং কয়্যতন্ত্রপায়য়য়ন্তমান্ধিনোষি। হরিমিব করিক্স্তক্টকোটিপ্রকটকঠোরনথাক্রয়য়ুরয়্ব ইত্যনর্যঃ। প্রধানিতান্ধতমসন্তত্রোদাহরণং রবিরিতিপরার্ধং। ৪৮২॥

গृष्धकानिका।

নিমূলেইতি। মূল্প্রতিষ্ঠায়াং মূলতীতি মূলবিভুজাদিয়াৎকঃ। হনেরপীত্যপিনাকষতেরপি।
স্বয়ং পদ্যার্দ্ধেনোদাহরতি নিমূলেতি। ক্ষাদোণম্ ক্তোযস্মাৎ সএবানুপ্রযুজ্যতেইতি ক্ষাদ্যনুপ্রয়োগঃ
প্রয়োগসাধ্বর্যঃ। ধিনোধীতি। ধিষ্প্রীণনেশৃধিক শুধিষিক্ণামিতিধিয়ঃ স্থানেধিঃ পরশুরামবাক্যমিদং।
অন্বস্তইতি। হন্ধাতোঃ শস্তঃ। উদ্স্থিতি। উদ্পূর্বহন্গতোইণঃ শিতীতিযাদেশঃ। মানশ্চিত্তসমুম্বতিরিত্যমরঃ। সোস্তেষামিতি অকারাস্তাদপি ব্রীহাদিভাইন্বন্থিকামতাইতিইন্। ৪৮২॥

कृ श्रमी शिका।

জীবে। স্বস্তং সূত্রং। জীবে উপপদে তচ্চজীবনরত্তিজীবন্ধা। পিষ্টং চূর্ণং। রক্ষন্তপ্রেম্বি-চিক্কণ ইতিমেদিনী। যথেতি। ভল্লদেবস্থ নিদর্শনং। সপুনাত্বিত্যাদি। পূর্ব্বপরপদয়োর মুপ্রাসো-দীর্ঘবন্ধাং। ব্রজ্ঞেগোষ্ঠে চকারোভিন্নসমুচ্চয়ে নকেবলমন্থানিকার্য্যাণি কুতানি যমজোচ তর্ক্ষিতাবৃচ্ছিদ্য যঃ শিশুঃ সম্বাপ নিম্পিপেষ সপুনাত্বিত্যর্থঃ। ৪৮৩॥

गृष्धकाणिका।

জীবইতি। ণমিতি অমুবর্ত্তনলব্ধং ছন্দোহর্থমেকত্রলিথিতং। তুশব্দোণম্ সমৃচ্চায়কঃ। স্বয়ং পদ্যার্দ্ধেনোদাহরতি জীবগ্রাহমিতি। চূর্ণপেষমপিনড্ গজযুথং যোহতিমন্ত ইভরাডতিদর্পাৎ। তঞ্চ কুম্বদরণং তরসাহয়েকসিংহতনয়োবলদৃপ্তঃ। রক্ষণক্ষ দীর্ঘবত্বে প্রমাণমাহযথেতি। অস্থার্থঃ। ব্রজেণোপ্তে যশ্চ শিশুঃ কৃষ্ণঃ যমজো যমলার্চ্ছ্নো তর রক্ষো উচ্ছিদ্য ভঙ্জ্বা ক্ষিতো ভূবিনিম্পিপেষ ঘর্ষতিম্মসপুনাত্ পবিত্রান্ করোভু যুম্মানিতিশেষঃ কীদৃশো গোরজঃ পাতৈরুক্ষিতো অমিগ্রোইতি। ৪৮৩॥ অক্তেতু কঞঃ। গমস্যাং। লোকেইকতকারং করোতি কিং। অকৃতং করোতীত্যর্থঃ। ৪৮৪॥

করণোপপদেহস্তে:। গম্স্যাং। পাদ্যাত্মহুমহীং। পাদেনহৃত্বানিত্যর্থ:। কৌক্ষেয়্যাতং নিজ্যাননাগান্। মল্লব্যু ফিয়াতং মুস্তো। ৪৮৫॥

ণম্ এহেরপি বর্ত্তি রত্তিভাগ হস্তবাচিকরণোপপদেষু। হস্তবর্ত্তমুদবর্ত্তত পাণিপ্রাহমেব জগৃহেসমহেভং। হস্তেনোদর্ত্ততেম্ম পাণিনাজগৃহেইত্যর্থে। করেণবর্ত্তরতি করবর্ত্তর্যুত্তর রজ্জং। ৪৮৬॥

क्९ अमोशिका।

অক। কর্মারপাকৃতশব্দে উপপদে। নকৃতমকৃতং। কিং করোতি অপিতৃ পূর্ব্বেরাচরিতমেবপরং কয়োতীতার্থঃ। ৪৮৪॥

गृष्धकाणिका।

অকৃতইতি। অত্রাপিতু শব্দোণম্ সমুচ্চায়কঃ। ডুকুঞ্করণেক্রিয়তে সৈতদিতিকৃতং নক্তমকৃতং নঞ্ সমাদে নঞোহকারঃ। লোকে অকৃতকারং পূর্ব্বেরকৃতং। কিং করোতি নকরোতি কিন্তু পূর্ব্বিঃ কৃতংমেব করোতীত্যর্থঃ। ৪৮৪॥

कृ श्रामिका।

কর। করণে কৃতেদিদ্ধেংপ্যুপপদগ্রহণবীজমুক্তমূপপদসূত্রে। ক্রিয়য়োরেককর্তৃস্বইতিদিদ্ধে সূত্রমিদং হিংসাহিংসয়োস্তদমুপ্রয়োগার্থমতস্তয়োরুদাহৃতং। প্রাণিপীড়াহিংসা। পাদঘাতমিতি। মহাঅপ্রাণিস্বান্ধহিংসা। কোন্দেয়ঘাতমিতি। কোন্দেয়কোমগুলাগ্রঃ করবালঃ কৃপাণবং। মল্লেতি।
রোষাবেগাদাভিমুখ্যেন কোচিং প্রাণিগ্রাহং রংহসৈবোপযান্তো। হিস্বাহেতিং মল্লবন্মুষ্টিঘাতং দ্বস্তো
বাহুবাহবিব্যাসজেতামিতি কিরাতাব্দুনীয়ে। ৪৮৫॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

করণোপপদাদিতি। করণবাচকোপপদেহন্ হিংসাগত্যোরিত্যস্থাৎ ণম্ স্থাদিত্যর্থঃ। যদ্যপি বধবৎপ্রাণিপীড়া হিংসেতি উক্তং তথাপি কেবলং পীড়াচ হিংসা অতঃ মহ্যাহিংসাঘটতে। কোক্ষেরেতি। কুক্ষোভবঃ স্থিতঃ কোক্ষেয়ঃ শেষেচানদ্যাঃ কোষাচ্চেত্যেণ্ স্বার্থেকঃ। দস্তাবলারোহিসমূহসুদ্মাসুকাপ্র ভুল্যানতিদানযুক্তান্। স্বাগচ্ছতোবীক্ষ্যরণেকুমারইতি পূর্বপাদত্তয়ং। ৪৮৫॥

क्रथमीशिका।

ণম। পূর্ববাপরত্বেচ তথা ক্বতেলাঘবেহপি বৈচিত্র্যার্থমিখমুক্তমুপপদস্ত্ত্র। রভু বর্ত্তনে হৈদ্বিনস্তানিনস্তো বর্ত্তিরন্তা। উন্বর্ত্তবেশ্ব মাধাদিনাঙ্গমঘর্ষয়দিত্যর্থঃ। উন্বর্ত্তনমুৎপত্নে বিলেপনে ঘর্ষণে ক্লীবমিতি মেদিনী। বর্ত্তয়তি রচয়তীত্যর্থঃ। ৪৮৬॥

স্বার্থবাচিকরণের পুষোণম্ শ্লেছনীয়করণের পিষস্তা। আত্মনীয়বিজ্ঞাতয়ঃ। আত্মনাপুষ্যতিস্ম। আত্মপোষষপুষৎ গজপোষং পোষতি দ্রবিণপোষমপুষ্ণাৎ। এবং স্ব পোষং গোণপোষং রৈ পোষং জ্ঞাতৌ মাতৃপোষং পুষ্যতীত্যাদি এতৈঃ করণভূতিঃ পুষ্যতীত্যর্থঃ। শ্লিশ্ধ দ্রব্যকরণোপপদে স্বতেনপিষ্টাঃ স্বতপেষং যবাঃ পিষ্টাঃ উদপেষং পিনষ্টিচ উদকেন পিনষ্টীত্যর্থঃ। ৪৮৭॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

• ণমিতি। রভীতি। রংধাতোঃ শতিপ্ সংজ্ঞাপুর্ব্বকদাদনিনন্তবাধনার্থং বা ন গুণঃ। হস্তবাচিনএবকরণানিতানি চতান্যুপপদানিচেতি। বহুত্বং ছন্দোহর্থং। হস্তবাচিকরণোপদেয়ু সৎস্থ্রতহঃ বর্ত্তি রভিভ্যামপিপরোণম্ স্থাদিত্যর্থঃ। আদিণম্গ্রহণংসূত্রাস্তগৃহীতস্থাপ্যুপপদার্থং। ছন্দোহনুরোধাদ্যতিজ্ঞানাহরণং ন দোধার। রত আত্মনেপদিত্বাৎ হস্তত্যাস্তবিভক্তোরপং। সরাবণঃ মহেভং মহাহস্তিনমরাবতং। মহেভমিত্যন্তং পদ্মটিকাছন্দঃ। ৪৮৬॥

क्श्भूमोशिका।

স্বার্থ। কৃদ্বাভিচারাৎ কর্ত্র্যোবানীয়ঃ স্নেহনীয়ং দ্রবন্দ্রবাং। আত্মাচ স্বীয়শ্চবিত্তবাচকঞ্চ জ্ঞাতিশ্চেতি স্বশব্দস্থার্থাঃ। স্বোজ্ঞাতাবাত্মনি স্বংত্রিম্বাত্মীয়েস্বোহস্ত্রিয়াংধনে। ক্রনেণ আত্মনি আত্মপোবন্ আর্ত্মায়েগজপোষং বিত্তেদ্রবিণপোষন্ এবং পরত্রয়ং। স্বগোত্রবান্ধবজ্ঞাতীত্যাদি। আত্মনঃ করণত্ববিক্ষা। স্নিগ্নেতি। কর্ত্তরিক্তঃ। স্নিগ্নং স্নেহযুক্তেচিকণেহপি স্থাদিতি মেদিনী। ভাবেকর্ত্ত-রিচেতি চকারাদ্য্তপেয়মিত্যাদে কর্ম্মণাপিণম্ পিন্টাইতি কৃতত্বাৎ। ৪৮৭॥

গৃতপ্রকাশিকা।

ষার্থেতি। মধ্যেণম্গ্রহণং পূর্ব্বাপরয়োর্বিধিসূত্রাদিস্বজ্ঞাপনার্থং তেন স্নেহনীয়করণেয়্পপদেশ্বিত্যর্থঃ অন্যথা তাদৃশার্থেশ্বিতি প্রতীতিঃ স্থাদিতি। অত্রপূষ্ পুর্যৌ ভুবাদিদিবাদিঃ ক্র্যাদিশেত্যবিশেষাক্রয়াণাং গ্রহণমিতি দর্শয়তি আত্মনাপুয়্যতীত্যাদিনা। অপুয়দিতি। সীতি পুয়াদেরিত্যাদিনা পরস্মৈপদেশ্বঙ্ সাঁতোদিঃ। দ্রব্যং বিত্তং স্বাপতেয়ং রিক্থ স্ক্রং ধনং বস্থ। ছিরণ্যং দ্রবিণং ক্রান্ধমর্থ রৈবিভবা-অপীত্যমরঃ। মাতৃপোষ্মিতি। মাত্রাপুয়্যতি মাতৃপোষ্মিত্যাদি। আদিনাপিতৃপোষং পুল্রপোষ্মিত্যাদিগ্রহণং। এতৈরাত্মাদিভিঃ। পিন্টাইতি। পিষ্৯সংচূর্ণনে। অপুঞ্চাদিত্যন্তং পল্পটিকাছন্দঃ তত্রসূত্রং পাদরয়্যমান্থপোষ্মিত্যাদি গঙ্গপোষ্মিত্যন্তঃস্বতীয়ঃ পেষতীত্যাদি অপুঞ্চাদিত্যন্তঃশুর্থঃ পাদঃ। উদপের্যাতি উদশন্দেহত্র। ৪৮৭॥

অধিকরণেযুচ বন্ধঃ। গম্। অধিকরণেযুপপদেয়ু। কাননবন্ধং ব্ৰহ্মদাসেরং। কাননেববন্ধেত্যর্থঃ। চক্রবন্ধং সবদ্ধঃ হস্তবন্ধং বদ্ধবস্তু শচ্। চকারাৎ
ময়ুরীবন্ধং বন্ধাতীত্যাদি। সংজ্ঞায়াং ক্রৌঞ্চেন বদ্ধঃ ক্রৌঞ্চবন্ধং বদ্ধঃ
অট্রালিকাবন্ধং বদ্ধঃ। মলশাস্ত্রোক্তবন্ধানাং সংজ্ঞাএতাঃ। ৪৮৮।

জীবেকর্ত্তর্গুপপদেনশোণন্ পুৰুষেবহং। জাবনাশং নেশুরেতে যুধিবিপ্লুত-মানসাং। জীবন্তএবনফাইত্যর্থং। পুৰুষং সন্বহতিপুৰুষবাহং বহতি। ৪৮১॥ উদ্ধেক্তরিশুষ্পুরেং। উদ্ধিশোষং বিশুষ্কবান্। উদ্ধিপ্রমপূর্য্যতউদ্ধৃঃ সন্শুষ্কঃ পূর্ণশ্চেত্যর্থো। ৪১০॥

क्ल्भूमीशका।

অধি। চকারাৎ করণোপপদেসংজ্ঞায়াঞ্চ। দাসেরমুট্রং। দাদেরোদাসিকাপত্যেত্তিরু পুংসিক্রমেলকে। চক্রে ব্রজে। চক্রঃ কোকেপুমান্ ক্লাবং ব্রজেদৈন্তরথাঙ্গয়োরিতি মেদিনা। ময়ুরীত্যাদি। ময়ুরীক্রেঞ্চিটালিকাঃ সংজ্ঞামল্লশাস্ত্রোক্রাঃ ময়ুর্য্যাদিবন্ধবিশেষেণ বগ্গাতীত্যর্থঃ। ময়ুরস্ত ভার্যাময়ুরীতক্রপংকৃত্বা বগ্গাতীতি বজ্রঃ। ৪৮৮॥

गृष्यकानिका।

অধীতি। বন্ধ্ বন্ধনে। ববন্ধেত্যটিরপং। দাসেরমুট্রং। যত উট্রেদাসীস্থতে চৈবদাসেরকইতি স্থতইতি হারাবল্যামূক্তং তৎস্বার্থিককপ্রত্যয়ান্তং পদং। চকারাদিতি। চকারাৎ করণোপপদেচেত্যর্থং। ময়্রীত্যাদি। ময়ুর্য্যাবগ্গাতি ময়ুরীবন্ধং বগ্গাতি আদিনাক্রোঞ্চবন্ধমিত্যাদেগ্রহণং। বন্ধন্ত শেচত্যন্ত নার্য্যাছন্দন্ত ব্রস্ত্রং প্রথমঃ কাননবন্ধং ববন্ধদাসেরমিতিদ্বিতীয়ঃ চক্রবন্ধং সবন্ধইতিতৃতীয়ঃ হন্তবন্ধং বন্ধনন্ত তিচ্তুর্থঃ পাদঃ। ৪৮৮॥

क्र श्रमोशिका।

জীবে। তথাত্বেংপুপেদইতি বীজমূক্তমুপপদসূত্তে। পুরুষেকর্ত্তর্যুপপদেবহোণমিত্যর্থঃ। নশো-২কর্মকত্বেংপ্যন্তরিনর্থস্য তস্তবহশ্চাপেক্ষয়াকর্ত্তরীতি। জীবস্তোনফীইত্যর্থঃ। সাধুপুরুষঃ জ্ঞানীভূত্বা-লোকান্ধর্মঃ প্রাপয়তীত্যর্থঃ। পুরুষঃ পুরুষিষোদ্মাজ্যেচ পুরাগপাদপেইতিমেদিনী। ৪৮৯॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

জীবইতি। জীবেপদেকত্ বাচকেউপপদণশ্ নাশাদর্শনয়োরিত্যন্মাৎ পুরুষেকর্ত্তরিউপপদেবহ্প্রাপ-ণেইত্যন্মাৎণমিত্যর্থঃ। কর্ত্তরীত্যনুষঙ্গেণ্যয়ঃ। মধ্যেণম্গ্রহণং পূর্ব্বোক্তার্থার্থং। নেশুরিতি। এত্বপ্রাপ্রোপৌ। বিপ্লুতমানসাভয়যুক্তচিত্তাইত্যর্থঃ। নফাঃ পলায়িতাঃ। পুরুষঃ সন্বহতিধর্মং প্রাপয়তীত্যর্থঃ। ৪৮৯॥ উপমানকর্মকত্যোৰুপপদয়োদ্ধাতুতোণম্স্যাং। স্বর্ণনিধায়ং নিহিতং স্তম্ভশ্বায়ং স্থিতারণেযোধাঃ। তথাইক্ষুভঞ্জং বভঞ্জয়তবিলায়ং বিলায়তে। স্বর্ণমিবনিহিতং স্তম্ভাইবস্থিতাইতিবদর্থাঃ। তংসমাকেসহস্রাং শুদর্শং পশ্যম্ভিবৈরিণঃ। স্বয়ং পাপহরশ্চাপমর্জ্জুনগ্রাহমগ্রহীং। ৪৯১॥

कृष्थमीशिका।

উর্দ্ধে। নির্বকারোহয়মূর্দ্ধশব্দঃ যদিবত্তরপুস্তকেহস্তিতদামতান্তরেণোভয়বাচকঃ সবকারঃ উর্দ্ধ-উভয়াশ্রিতঃ সন্শুদ্ধঃ পর্ণ ইতিবজ্ঞঃ। সবকারোদীর্ঘশ্চোর্দ্ধউপরিস্থঃ সন্নিত্যর্থঃ উর্দ্ধং স্থাত্নচ্ছিত্রত তুঙ্গেচো-পরিফাদপিস্মৃতইতিমেদিনী। সউর্দ্ধশোষং তৃণবদ্বিশুদ্ধইতিভট্টিরিত্যন্তে। ৪৯০॥

গুঢপ্রকাশিকা।

উদ্ধাইতি। উদ্ধিশব্দোনির্ব্বকারঃ তত্তুক্তং বর্ণদেশনায়াম্ উদ্ধাতি উদ্দাছতীতি উদ্ধাঞে ডঃ উরা-দেশ-চাদিবর্ণস্থেতি। উদ্ধিশব্দোদীর্ঘাদিঃ সবকারঃ উদ্ধনতীতি কৃদ্যভিচারাৎডঃ পূনোদরাদিরিতিবহুসন্মতং। তথাচকীচকবধ্যমকং। কুর্বতীরূপলৈস্তক্ষৈভুবনং নীচমূদ্ধিজঃ। তস্থাশ্চলানির্ব্বেতি চিত্রানাগচমূদ্ধিজৈরিতি। বিশুক্ষবানিতি। শুর্শোষেক্তবন্তোমকবাঃ ক্ষেশুবিপচামিতিশুবঃ পরস্থনিষ্ঠাতস্থকঃ। অপুর্য্যতইতি। পুরীআপ্যায়নেদিবাদিশ্চুরাদিশ্চাত্মনেপদী হস্তমাস্তবিভক্তোরপং। ৪৯০॥

क्थ्यमी शिका।

উপ। ষষ্ঠ্যন্তলান্ত্যাউপপদয়োরিতি। একস্বনির্দ্দেশেংপি কশ্মকর্তৃলান্তিরিতি। মণ্ড্কপ্লুত্যা-পরত্রানুর্ত্ত্যর্থং ণমিতি। প্রসিদ্ধর্শ্মাশ্রয়উপমানং। স্বর্ণং যথাস্তপ্তপ্তং নিধীয়তেখনেন তথাতাত্রাদিকমপি কৃপণেননিহিতমিতি কর্ম্মণিচণম্। তমিতি। তংসমীকেসহস্রাং শুদর্শং পশ্যন্তিবৈরিণঃ। অয়ং পাপ-হরশ্চাপমর্জ্বন গ্রাহমগ্রহীৎ। অয়মিতি। অর্জ্জ্বনইবগৃহ্লাতীত্যর্থঃ। ৪৯১॥

গৃঢপ্ৰকাশিকা।

উপেতি। উপপূর্ববিশাসানে উপনীয়তেহনেনেত্যুপমানং প্রিদিন্ধর্মাশ্রয়ঃ উপমানস্বরূপকর্মকত্রেরিকে ত্যর্থঃ। নিহিতমিতি। ধাঞা কর্মণিক্রেধাঞোহিঃ। স্থিতাইঙি। গত্যর্থাকর্মকেত্যাদিনা কর্ত্তরিক্তেদ্যতিস্থিতিষ্বেত্যাদিনাস্বাইঃ। বভঞ্জেতি। ভন্জোস্বামর্দ্দনে। বিলীয়তেইতি। লীঙ্গ্লেষণে। তমিতি। তং বারং বৈরিণঃ শত্রবঃ সমাকেযুদ্দেসহস্রাংশুদর্শং সূর্য্যমিবপশ্যন্তি পাপহরশ্চায়ং চৃপিং ধনুঃ অর্জ্বনগ্রাহমর্জ্বনইবাগ্রহীদিত্যর্থঃ। পূর্বপ্রতীকেউপমানকর্মোপপদে পরপ্রতীকেকত্র্পপদেণম্। যোধাইত্যস্তমুদ্দীতিছেন্দঃ। ৪৯১॥

ক্ষাদৌণম্কতোয়স্থাৎ সত্রবান্ধ প্রযুজ্যতে। নান্যইত্যর্থঃ। নিমূলেক্ষতে-রিত্যারভ্যত্রতংসূত্রপর্য্যন্তং তলৈয়বান্ধপ্রয়োগঃ প্রয়োগসাধ্বর্থঃ। নিমূল-কাষং ক্ষতীত্যাদৌনিমূলং ক্ষতীত্যাদিব্যাখ্যাতং রতিক্ষদ্রিঃ। অত্রচক্রিয়ান্ত-রান্ধপ্রয়োগবং অব্যবধানেপরত্বেচানিয়মাং। মৃতনিধায়ময়ং নিদধেজ্বলং। সমূলযাতংন্যবধীদরীংশ্চ। ৪৯২॥

क्ल्थनीिशका।

क्यार्ति। क्यान्मिर्या यत्राक्यार्तिवियस त्यानीय्रा त्यानीय्रा त्यानीय्राह्म विवक्षनार সত্রবকষাদিধাতুরেবানুপশ্চাৎকালীনক্রিয়ার্থকতয়াদীয়তে কষোপলক্ষিত্তিনমূলকষতেরিত্যাদিনেত্যর্থঃ পৃৰ্ব্বকালাধিকারাদিতিভাবঃ। তথাহিকর্ত্তু রৈক্যইতিজ্বাবিধানপূর্ব্বকালেণম্স্থাৎ সচপরকালমপেক্ষতে কালয়োঃ পৌর্বাপর্য্যং ক্রিয়ানৈক্যেসতিঅতঃ সামান্যতোহ্নুপ্রয়োগেদিদ্ধে সএবেতিনিয়ম্যতে অতো-নান্তইতি অন্তথা২প্রদক্তস্থনিষেধোনোপপদ্যতইতি তাৎপর্য্যার্থং বির্ণোতিনিমূলইতি। ততুপলক্ষিতে নিমূলক্ষতেরিত্যাত্মপুমানকর্মেত্যেতৎপর্যান্তসূত্রোক্তধাতোরেবানুপ্রয়োগো ধাত্বন্তরা প্রয়োগাদপিতদর্থাবগমে২পিতস্থায়ংপ্রয়োগঃ সাধ্বার্থঃ শোভনার্থঃ পরকালত্বং সাধয়ম্মপিপ্রয়োগ-সোন্দর্যাইত্যর্থঃ। স্থন্দরং সাধুশোভনমিত্যমরঃ। ক্রিয়াভেদঃ খলুপূর্বকালৈককত্ ত্বেদতি বুদ্ধতে ক্ষাদিরুপুনস্তেগামেবানুপ্রয়োগঃ কুত্রকালভেদঃ তথাচনিমূলকাষং ক্ষতীত্যস্থানিমূলং ক্ষতীভ্যর্থ উক্ত-সত্যমুখ্যত্যাদিসামান্যধাত্বর্থভবনপূর্বকালতাং গময়ত্যেবাসুপ্রয়োগঃ তেন নিমূলক্ষিহাস্তীতি যথোক্তঞ্চ ণমন্তমত্যার্থমুশন্তি কেচিদ্পুপ্রযুক্তিন্তিতরেবদন্তি। ণমর্থমর্থেনবিহীনমত্যেহপ্যাহঃ পুরাণাঃ কবয়শ্চদর্কেইতি। স্বোক্তং প্রাচাং মতেন প্রমাণয়তিব্যাখ্যাতমিতি। রুত্তিকৃদ্তির্কারক্রচ্যা দিভিঃ। আচার্য্যস্তকষাদোক্রিয়েক্যাৎ পৃর্বকালাভাববান্ ণমস্তইতিষথোক্তং ব্যাখ্যাতি। অন্বয়ার্থং ব্যভিচর্য্যহনুপ্রয়োগশব্দইতি দন্দেহবিরুদ্ধদৃষ্টাস্তমাহঅত্রচেতি। অভেদোপচারার্থানুপ্রয়োগাভাবঃ ক্রিয়াভাবকক্রিয়াশব্দঃ অত্রসূত্রেযম্মাৎণমন্তস্ত প্রয়োগোনধাত্বন্তরস্তেতি তথাসামীপ্যে পশ্চাঘাতয়ো-র্রনিয়মাদিত্যর্থঃ। অনুহানেসহার্থেচপশ্চাৎসাদৃশ্যয়োরপীতিমেদিনী। প্রয়োগান্তরেণদ্রতয়তিঘ্তনিধায়-মহাকবিপ্রয়োগত্রব প্রমাণমিত্যপরঞ্চাহ। সোধ্যৈক্টবেদাংস্ত্রিদশান্যক উপমানেতিণম্। পিতৃনপারীৎসমমংস্তবন্ধূন্। ব্যজেউষজ্বর্গমরংস্তনীতোসমূলঘাতং অবধীদরাংশচ। ৪৯২॥

गृष्यकानिका।

ক্ষাদাবিতি। ক্ষাদোবিষয়ে অর্থান্নিমূলেক্ষতেরিত্যারভ্যএতৎসূত্রপর্য্যন্তং যম্মাদ্ধাতোঃ পরোণম্ কৃতঃ সত্রবধাতুরমূ প্রযুজ্যতেনান্মইত্যর্থঃ। অত্রক্রিয়ানৈক্যেপূর্বকালক্রিয়ার্থকাদিতি নাজীতিসূচিতং। অত্রব যথাসম্ভবমিতিপ্রাক্তক্তং। নমুক্স্মান্তস্থৈবামুপ্রয়োগইত্যত আছ প্রয়োগসাধ্বর্থ ইতি। প্রয়োগশ্চাসোসাধ্যুং শোভনশ্চেতি রুন্দারকাদিত্বাদ্বিশেষনোত্তরপদঃ কর্মধারয়ঃ। সত্রবার্থঃ প্রয়োজনং যক্ষসঃ। নমুন্যং নিমূলং ক্ষিত্বাহপরং ক্ষতীত্যর্থে সপ্রয়োজনোহমুপ্রয়োগঃ পূর্বকালক্রিয়ার্থকাদ্ধাতোঃ তৃতীয়াস্তেষ্পদন্শে:। তৃতীয়াস্তেষ্ পপদেষ্ পদন্শের্ম ব্সাং। জ্বার্থে।
মাংসেনোপদং শমত্তিমাংসোপদং শমতিসঃ যুলকেনোপদং শমতিয়লকোপদং
শমতিসঃ। উপদং শেঃ কর্মত্বেইপি মুখ্যভুক্তিজিয়াকরণত্বিবক্ষয়া মাংসাদেশুতীয়া এভদারভানিহিতণমস্তৈশুতীয়াদেরমস্তর্গতি বিকম্পসমাসঃ। ক্রিয়াভেদে বানরপ ন্যায়াৎক্ত্বার্ট্য যুলকেনোপদশ্যভুতেক যুলকোপদং শনয়ং
ভুতেক্ত । ৪৯০॥

প্রত্যয়শ্চঘটতেকুতোব্যাখ্যাতং নিমূলং ক্ষতীত্যাদীত্যতংস্বোক্তং প্রমাণয়তিনিমূলকাষ্মিত্যাদিনা।
সূত্রোক্তানুপ্রয়োগে বিশেষমাহাত্রচেতি। অত্রস্ত্রেক্তিয়ান্তরানুপ্রয়োগবৎষম্মাপ্পন্ তন্তিমক্রিয়ানুপ্রয়োগেয়খাননিয়মঃ কিন্তু তৎক্রিয়ানুপ্রয়োগেনিয়মস্তবং অব্যবধানেব্যবধানপরত্বেচানিয়মাৎ কিন্তু
সামান্যতং পরত্বেনিয়মাদিত্যথং। ব্যবহিতানুপ্রয়োগস্থোদাহরণ মাহয়তনিধায়মিতি। অত্র কক্রপিসর্গব্যবধানেহনুপ্রয়োগং। ইনং মহাকবিপ্রয়োগেণদ্রেয়তি সম্লঘাতমিতি। ভট্টিপদ্যস্তত্র্পপাদোহয়ম্
অত্রন্থাসগ্যবধানেহনুপ্রয়োগং। ৪৯২ ॥

क् श्रमोशिका।

ভৃতীয়া। ক্লার্থে পূর্ববালে। পরস্থাৎকর্মন্বপ্রাপ্তাবিপি ভৃতীয়েত্যাই উপদংশেরিতি। পরসমবেত দংশনক্রিয়া ফলাশ্রয়ন্থ পরস্থাচ্চ কর্মন্থে প্রাপ্তেইপি বাক্যাকাঞ্চ্পানিরর্ত্তক ভূজি ক্রিয়াকরণত্ববিবক্ষয়া অদনক্রিয়াকরণত্ববচনেচ্ছয়াকরণত্বেলকেযেনৈব লক্কইতি দর্শনাত্তীয়েবেত্যর্থঃ। তর্হি
আকাঞ্চাবিরহাত্বপদংশেন কথং সমাসইত্যত উক্তমুপদংশেঃ কর্মন্তেইপীতি। কর্মন্থেনোপদংশিনাপি
তেষাং সম্বন্ধঃ। নচৈকস্থ যুগপৎ কর্মকরণভাবোনোপপদ্যতইতিবাচ্যং যুক্তিসিদ্ধন্থাৎ তথাহি মাংসাদিনা ভূজক্রিয়ং ক্র্বাণোমাংসাদিকমুপদশ্য ভূঙ্কেইতি। বিবক্ষয়া যদাত্তীয়া তদাণম্ যদাভূ দ্বিতীয়া
তদাক্ত্বেতি। এতদারভ্যত্বিগ্রন্থ ইত্যন্ত পঞ্চদশ্ত্রবিহিতণমন্তৈরিত্যর্থঃ। ক্রিয়াভেদেহভেদোপচারাৎ
ক্রিয়াভাবক ধাত্বপ্রথাগে তদভেদেভূবা গ্রহণানান্তীতি স্বয়মুক্তং কর্ভু রৈক্যইভিক্ত্বাচেতি। ৪৯৩॥

গৃঢপ্ৰকাশিক।

ক্রিয়ায়োরেককর্মত্বে তদ্বদিং সার্থকান্ত নুণন্। তদ্বত তীয়াস্তোপপদে। হল্ডোপঘাতং মাতঙ্গান্ বভঙ্গরাজকুঞ্জরঃ। হস্তেনোপঘাতং দণ্ডেনোপতাড়ঞ্চ দণ্ডোপতাড়ংগাঃ কালয়তি। ভিন্নকর্মত্বেমাভূৎ। দণ্ডেনাহত্যশাদূলং গোপালাঃ কালয়স্তিগাঃ। ৪১৪॥

সপ্তম্যস্তেত্তীয়ান্তে চাত্যাসতিপ্রমাণয়োঃ। সপ্তম্যস্তত্তীয়ান্তোপপদে সান্নিধ্যপ্রমাণ প্রতীতৌধাতৃভ্যোণ্ম্। কেশেষুগ্রাহং কেশিগ্রাহং কেশগ্রাহ-মযুধ্যস্তদ্যস্ত্রেক্ষণকর্ষং দ্যস্ত্রেক্তন্ত্রিক্তন্ত্রেক্তন্ত্রিক্তন্তিক্তন্ত্রিক্তন্তিক্তন্ত্রিক্তন্তিক্তন্তিক্তন্তিক্তন্তিক্তন্তিক্তন্ত্রিক্তন্ত্রিক্তন্তিক

क्थ्यमोशिका।

ক্রিয়য়ে। একং কর্ম্মযয়েত্রোভাবেত্বঃ। প্রাণুপেদ্রবমাত্রং হিংসা। হস্তোপেতি। হননভঞ্জনক্রিয়য়োর্মাভঙ্গানিত্যেকং কর্ম। রাজকুঞ্জরোরাজশ্রেষ্ঠঃ। স্থ্যক্রতরপদেব্যাত্রপুঙ্গবর্ষভ কুঞ্জরাঃ।

সিংহশাদূলনাগাদ্যাং পুসিশ্রেষ্ঠার্থবাচকাইত্যমরঃ। তড্আঘাতে। কলাবলীচলনে চুরাদিঃ। কল্ সঙ্খানে

হৈছিনিকালয়তি গণয়তীতি বজ্ঞঃ। ভিমেতি। হননস্থ শাদূলঃ কাননস্থ গোংকর্ম। ৪৯৪॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

ক্রিয়েরারিতি। পূর্ব্বাপরীণ গৌণ মুখ্যাক্রয়য়োরেককর্মছেসতি তৃতীয়াস্তোপপদেসতি হিংসার্থ-কাতুণ্ম্ স্থাদিতার্থঃ। ছন্তং সূত্রং। ছুঃ হিংসার্থানুবৃত্তি বাবকঃ। উপঘাতমিতি। হন্ধাতোর্ণমি ইক্ষড়াবেহস্তেম্ব ঘাৎস্মৃতঃ। বভঞ্জেতি। ভন্জো আমর্দ্ধনেহটিরপং। রাজ্দীপ্রো রাজতীতিরাজঃ অচ্ সচাসো কুঞ্জরোহস্তীচেতি দীপ্রিশালি কুঞ্জরইতার্থঃ। যদা কুঞ্জরাণাং রাজা রাজকুঞ্জরঃ রাজনস্তাদিঃ। শাদ্লি দ্বীপিনো ব্যাদ্রে ইত্যমরঃ। অত্রগোণমুখ্যক্রিয়য়োদ্বিকর্মছেমাভূরম্ কিন্তক্ত্রাক্রেয়প্। ৪৯৪॥

क्र ९ अमे शिका।

সপ্ত। প্রত্যাসতিরতিসামিধ্যং প্রমাণমিহরটিয়াদীর্ঘস্যেতিবক্তঃ। কেশৈরিত্যতাধিককরণম্বনিকাযুদ্ধসংরম্ভাৎসামিধ্যমিত্যর্থঃ। দ্বাঙ্গুলেতি। সমাহারদ্বিগৌদ্বিত্রিতোঙ্গুলেরিত্যৎ। সূর্যপুজ্যো-যদাকর্ণোহর্জুনেনবিনিপাতিতঃ। তদৈবোৎশ্বসিতাভূমিরঙ্গল্যা একবিংশতিরিত্যঙ্গুল্যার্থাপ্যস্তীতিকেচিৎ।
দ্বাঙ্গুলেনপরিমায়দীর্ঘদণ্ডাদিক মভিনদিত্যর্থঃ। ৪৯৫॥

গৃতপ্রকাশিকা।

সপ্তেতি। অত্যাসভিরতিসমিধাং। আসতিঃ সঙ্গমেলাভেইতিমেদিনী। সঙ্গমঃ সামিধাং।
প্রমাণং পরিমাণং। সপ্তম্যন্তেত্তীয়ান্তেচ উপপদে অত্যাসভিপ্রমাণয়োরর্থয়ার্গমায়োর্যাত্ত্তাণম্।
পূর্বত্ত তুশব্দেনহিংসার্থকামুর্ভিবারণাদত্ত ধাতুভ্যোণমিতিলভাতে। কেশগ্রাহমিতিগ্রহ্উপাদানে।
অযুধ্যন্তেতি। যুধ্সম্প্রহারেলভোহন্তবিভক্তোদিবাদিত্বাদ্যণিরপং। অত্তাতিসামিধাং কেশসংযোগাং।
স্বাঙ্গুলেমিতিবহুত্বং ব্যঙ্গুলেম্বাঙ্গুলেইতার্থপ্রাপ্তার্থং। উদ্পূর্বঃ কৃষবিলেখনেউৎকর্মউর্জপরিমাণং দ্বাঙ্গুলেইবাঙ্গুলেইতার্থপ্রাপ্তার্থং। উদ্পূর্বঃ কৃষবিলেখনেউৎকর্মউর্জপরিমাণং দ্বাঙ্গুলেইবাঙ্গুলেইবার্থপ্রাপ্তার্থং। উদ্পূর্বেঃ কৃষবিলেখনেউৎকর্মউর্জপরিমাণং দ্বাঙ্গুলেইবার্গুলেইবার্গিতার পরিমায়েতার্থঃ। অভিনদিতি। ভিদির্বিদারণেলভোদিবিভক্তোমভাগমঃ স্বরতোনোহস্বর্বনান্তোর্কখাদীনামিতি সম্বরনকারাগ্রেদিদোপোব্যঞ্জনান্তাদিতিদিলোপেলিঙ্গবৎ প্রথমোধ্টামিতি
দক্তিও। এবং দ্বাঙ্গুলাপকর্মভিনদিত্যাদি। ৪৯৫॥

উপপীড়ৰুধ্কষণ্ট। সপ্তমান্তত্তীয়ান্তোপপদেএভ্যোণম্স্যাং। পার্থ রো ৰুপপীড়ং পার্থোপপীড়মম্বপীং ব্রজেউপরোধং ব্রজেনোপরোধং ব্রজোপ-রোধং গৌর্বদ্ধা পাণার্পকর্ষং পাণিনোপকর্ষং পাণ্যুপকর্ষং ধানাভুজ্জে। অব্রোপপীড়সম্বানেক্র্যোরপীত্যেকে। এবং শুনোপপীড়মাশ্লিক্ষং। হস্ত-পীড়ং দদদ্বন্থরিভিভট্টঃ। পাণিকর্ষং ফলান্যতীত্যুদাজহুঃ। ৪৯৬॥

অপাদানেত্বরায়াং ণম্। অপাদানেউপপদেধাতোর্ণম্ স্যাৎ ত্বরায়াং গম্যমানায়াং। রস্ক্রাদাকর্ষং রক্ত্রাকর্ষং পরিঃ পপৌ। ভাষ্ট্রাদপকর্ষং ভাষ্ট্রাপকর্ষমম্বাতিমাং নম্ এবং নামত্বরাঘদাবশ্যকপরিবেশনাদিকমিপি নাপেক্ষতইত্যর্থঃ।
শ্যায়াউত্থায়ং শ্যোত্থায়ং যদ্থিলমহঃ প্রীণয়ন্তিদ্বিক্যান্। ৪১৭॥

क्रथमोशिका।

উপ। পীড়্অবগাহনেরুধির্ আবরণেরুষ্বিলেখনে তুদাদৌরুধাদোচপঠ্যন্তে তত্ত্রপরস্থগ্রহণং কৃষতেঃ ক্ত্রপ্রত্যেনভূয়ঃ প্রয়োগঃ কর্ষতেস্ত্রণম্ বাসরূপন্তায়াৎক্ত্রাচেতি উভয়গ্রহণেতৃণমোভূয়স্ত্রং স্থাদিতি ভট্টঃ। কৃষ্ আকর্ষণেইত্যন্তে। পার্মাভ্যামুপপীড়াশেতেস্মেত্যর্থঃ। একেত্রগাদয়ঃ। উপপূর্ব্বেভ্যঃ পীড়্রুধ্কৃষিভ্যইতি বর্রুচ্যাদিমতে কৃষ্যভিচারাৎ ক্রিয়াবিশেষণাদ্বা মহাক্বিপ্রয়োগঃ সিদ্ধইতিবক্তঃ।৪৯৬॥

গূতপ্ৰকাশিকা।

উপেতি। সম্পীদিতি। ঞিষপশয়নেছস্ত্যাদিবিভক্তো উভাবপিরুদাদিতইন্তানেনস্ট্ উভোঅটীটো ভেনাম্বপদিতিট। ধানাভ্র্টযবচূর্ণানি। ধানাভ্র্টযবেস্ত্রিয়ইত্যমরঃ। ভূঙ্ক্তেইতি। সাধিতংপ্রাক্। হুর্গাসিংহাদীনাং মতমাহাত্রেতি। অত্রণম্বিষয়ে উপপীড়স্তসম্বন্ধঃ নরুধক্ষোরপিউপস্বন্ধাইত্যেকেহুর্গাসিংহাদয়ঃভন্মতোদাহরণমাহস্তনোপেতি। আশ্লিক্ষদিতি। আঙ্পুর্বিশ্লিষ্ আলিঙ্গনেক্রিয়াতি পত্রাঃস্তত্তিঅভাগমেষটোঃ কদেককারাৎষত্বং। অভ্যমতমাহহস্তপীড়মিতি। অত্রনোপদর্গসম্বন্ধইতিভাবঃ। অন্তর্ধংস্বর্যুব্যান্ত্রান্তশ্বাৎত্বং রাক্ষদেশ্বর। যোরণেহুরপদ্বাইতিপুর্বিপাদত্রয়ং। অত্তীতিসাধিতং। উদাজহুনু রিতি। উদাওহ্নঞ্হরণেপরোক্ষায়াউদিদ্বিভাবাদিকার্যং। স্বমতেপীড়্ক্ষোভাবের্যঞ্ ক্রিয়াবিশেষণং হস্তন্তিং যথাস্তাৎ পাণিকর্ষং যথাভবতীত্যর্থো। উপপীড়রুধ্কৃষশ্চ পার্যোপীড়মস্বপীদিত্যবংছন্দঃ। ৪৯৬।

क्रब्यमीलका।

জ্ঞপা। পৃন্তহণমুপপীডাদিমাত্রনিরাসায়। ঞিত্বরাসস্ত্রমে। শীত্রং ত্বরিতমিত্যমরঃ। রন্ধাদপক্ষোত্যর্থঃ। ভাষ্ট্রাৎ পাকপাত্রাৎ। ত্বরাত্র ত্বরয়াবিবক্ষেত্যাহএবমিতি। নামপ্রাকাশ্যেভাষ্ট্রাদানীয়ভূঙ্ক্তেইতি বিবক্ষয়াত্বরত্যর্থঃ। গোত্রেসাক্ষাদজনি ভগবানেষয়ৎ পদ্মযোদিঃ শয্যোত্থায়ং যদখিলমহঃ
প্রীণয়ন্তিভিরেফান্। একাগ্রাং যদ্ধতি ভগবভ্যুক্ষভানোচভক্তিং তৎপ্রাপুন্তেহতকুবদনোপম্যমন্ত্রোক্ষহাণি। এবং হিত্বরাযদাবশ্যকং হুখধারণাদিকং নাপেক্ষতইতি। ত্বরায়াং কিম্আসনাচুত্থায়শনৈর্গছতি। ৪৯৭॥

দিতীয়াস্তেচ। উপপদেধাতোর্ণম্স্যাৎ ত্বরায়াং গম্যমানায়াং। লোফানি-আহং যুধ্যম্ভেলোফ আহং পদাতয়ঃ। মুফিং আহং মুফিআহং প্রহরম্ভি এবং নামত্বরায়দায়ুধমপি নাদ্রিয়ম্ভে। ৪৯৮॥

অধ্রুবেঙ্গেদিতীয়ান্তে। উপপদেধাতোর্নম্ন্যাং। জ্রবিক্ষেপং সজম্পতি। জ্রুবৌবিক্ষেপঞ্চ। কার্ণনিমীলনে অক্ষিণীকাণ মক্ষিকাণং হসতি। অধুবেকিম্ উক্ষিপ্যশিরঃ কথয়তি। যশ্মিন্ধক্ষেছিন্নে প্রাণীনম্মিয়তে তদ্ধুবং। ৪১১॥

गृष्यकानिका।

অপেতি। অপাদানবাচকেউপপদে। রক্ষুচ্ছিদ্রাদাকর্ষং পয়োজলং তুর্বং বাপপাবিত্যর্থঃ। এবং নামত্বরাযন্তাজনস্থাপনমপি নাপেক্ষতইত্যর্থঃ। রক্ষ্ণং স্থাদ্যণেছিদ্রেইতিমেদিনী। পয়ঃ ক্ষীরং পয়োহস্বচেত্যমরঃ। পাপানেঅটি অবর্ণাদট উকারঃ। ভ্রাষ্ট্রঃ খোলাইতিখ্যাতঃ। ক্লীবেহম্বরীয়ং ভ্রাফোনেত্যমরঃ। অক্ষাতীতি। অশ্ভোজনে। উত্থায়মিতি। উদঃ স্থাস্তন্ত্রোঃ সোলুক্। প্রীণয়্স্তীতি। প্রীঞ্
প্রীতৌ হৈতুকেনিধূঞ্ প্রীঞ্ভ্যানঃ অস্তোরপং। দ্বিরেফান্ ভ্রমরান্। দ্বিরেফপুষ্পালিত্ ভূঙ্গষট্ পদভ্রমরালয়ইত্যমরঃ। ৪৯৭॥

क्र॰ अमोलिका।

দিতী। লোফানিলেফবঃ। সমলোফাশ্মকাঞ্চনইতি। আয়ুধমপি নাদ্রিয়স্তইতি। যৎ-কিঞ্চিদাসন্নলোফাদিকমেব গৃহস্তীত্যর্থঃ। ৪৯৮॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

দ্বিতীয়েতি। চকারস্বরাদীনাং সমুচ্চায়কঃ। দ্বিতীয়ান্তেচোপপদেশ্বরায়াং গম্যমানায়াং ধাতৃভাগেন্ স্থাদিতার্থঃ। দ্বর্য়ালোন্টানিগৃহীদ্বা লোন্টানিগ্রাহং বাসমাসঃ লোন্টগ্রাহমিতি। লোন্ট্সঙ্গাতে লোন্টতীতি লোন্টমচ্ তচ্চমৃত্তিকাপিণ্ডং। লোন্টানিলেন্টবঃ পুংসীত্যমরঃ। যুদ্ধস্তইতি।
যুধ্সম্প্রহারে। পদাতয়ঃ পাদচারিদৈস্থানি। প্রহরন্তীতি। প্রপৃক্ষঃ ক্ষঞ্হরণে অন্তিবিভক্তোত্মন্
বিকরণেগুণঃ। অত্রাপিপদাতয়ইত্যস্থানুষঙ্গোদ্বয়ঃ। দ্বিতীয়ান্তেচ যুধ্যন্তেলোন্টগ্রাহং পদাতয়ইত্যেবং
ছলঃ। ৪৯৮॥

क्र श्रमीशिका।

অধ্বব। অন্বরার্থং দ্বিতীয়াস্তইতি। ধ্রুবস্তুনিশ্চিতেতর্কেনিশ্চলেসস্ততেহ্স্তবদিতিবিশ্বঃ। শিরসোধ্রুবন্ধং যশ্মিদিত্যাদিনা। ৪৯৯॥

शृष्यकाणिका।

অঞ্চবইতি। গ্রুবং শক্ষোচরেবিফোবটেচোত্তানপাদজে। বহুযোগভিদোঃ পুংসিক্লীবং নিশ্চিত-তর্কয়োঃ। স্ত্রীমূর্কাঢ্যোঃ শালপর্গ্যাংগীতি ত্রুগ্ভেদয়োস্ত্রিয়ু। সন্ততে শাখতে চেতিমেদিনী। অত্তশাখ- অঙ্গেপরিক্লিশ্যমানে। উপপদে পীড়ার্থমাতোর্গম্যাং। শিরঃ ক্লেশং ন্যযুধ্যত। শিরাং সিক্লেশঞ্চ। উরোবিদারং প্রতিচক্ষরেলথেঃ। পীড়িতে পুরউরঃ প্রতিপেষং ভর্ত্তরিন্ডনযুগেন যুবত্যেতি মাঘঃ। ধ্রুকার্থোইয়ং যোগঃ। ৫০০॥

বীক্সাবিষয়েকর্মণি বিশি পদি পতি ক্ষন্দতিভ্যোণম্। আভীক্ষ্যার্থে চৈষাং কর্মণাপুপদে প্রবেশাদীনাং পৌনঃ পুন্যেচ বিশ্যাদিভ্যোণম্ স্যাং। বী-ক্ষায়াং কর্মণোদ্বিচনম্ আভীক্ষ্যেভূবিশ্যাদীনাং। গেছং গেছং প্রবেশমাভ্রার গৃহপ্রবেশমাজহার এবং গেছং প্রবেশমাভ্রার গৃহপ্রবেশমাজহার এবং গেছং গেছং মন্প্রপাদং গেছমন্প্রপাদং প্রপাদমান্তেগেছং গেছমন্প্রপাদং বিপক্ষানব-ক্ষন্দমান্তে গেছমন্প্রপাতমন্প্রপাতমন্প্রপাতমান্তেরিপুমবক্ষন্দমবক্ষন্দ্ধাণাং গেছাম্প্রপাদং গেছান্প্রপাতং বিপক্ষাবক্ষন্দমান্তে সমাসেন বীক্ষার্থস্যোক্তত্বায়্মিদ্বিদং। অব্রাভীক্ষ্যেপুনর্ণম্ বিধানং বিকম্প্রমাসার্থম্। ৫০১॥

তার্থস্থ গ্রহণং তেনাঞ্জবেশস্থিরতরেহঙ্গেইবয়বে। জ্রবিক্ষেপমিতি। বিক্ষেপ্প্রেরণে জ্রেবেণিক্ষিপতীতি জ্রেবিক্ষেপং জল্পভাষণে জল্পতি। অক্ষিণীকাণং তেনিমীলিতেকৃত্বাহদতি হদেহাস্থেভুবাদিপরস্থৈপদী। জ্রু চক্ষুষোম্ছেদনেহপি অঙ্গিনোহমরণাত্তে অদদাতনস্থায়ি রূপাঞ্জবাঙ্গেইতিতাৎপর্য্যং। ৪৯৯॥

क्ट श्रामिका।

আঙ্গে। দ্বিতীয়ান্তে পরিক্লিশ্যমানে ক্লেশাশ্রায়ে অতঃ পীড়ার্থেতি। ক্লিশ্বিবাধায়াং দৃ বিদারণে। উরোবিদারং প্রতিচন্ধরেইতি মাঘঃ। পিষ্৯সংচূর্ণনে প্রতিপেষং। স্পর্ফমেবদলতঃ প্রতিনার্যা-স্তন্ময়ত্বমভবদ্ধদয়স্থেতি পরার্দ্ধম্——। ধ্রুবার্থইতি। অন্যথাপুর্ব্বেণৈবিদ্দ্ধিঃ। ৫০০॥

গ্তপ্ৰকাশিকা।

অঙ্গইতি। পরিক্লিশ্যতইতি পরিক্লিশ্যমানং সানপ্রত্যয়েদিবাদিত্বাদ্যণ্ অকারাশ্মৃত্ভবত্যানে পরিক্লিশ্যমানেহঙ্গে দ্বিতীয়ান্তেউপপদে পীড়ার্থধাতোর্ণম্ স্থাদিত্যর্থঃ। পীড়ার্থধাতোরিতি বিবরণাদমূপসর্গাদন্যোপসর্গাদিপি পীড়ার্থধাতোর্ণম্। প্রতিচন্দরেইতি। হিংসায়াস্কপ্রতেরপীতি সূত্রটীকায়ামবলোকনীয়ং। অয়ং যোগঃ অয়ং সূত্রপ্রয়োগঃ সূত্রারম্ভইতি যাবৎ। ৫০০॥

क्र श्रमी शिका।

বীপ্সা। বিশ্ প্রবেশনে পদ্পৎগতো ক্ষন্দির্গতি শোষণয়োঃ। কর্মণীত্যঙ্গনির্ত্ত্যর্থং। এক-যোগভায়াৎ ণম্। আভীক্ষ্যার্থ ইন্ড্যস্থাবিবরণং প্রবেশাদীনামিতি। প্রবেশপতনক্ষন্দনানাঞ্চ পৌনঃ- কালবাচিন্য স্থৃত্যোর্ব্যায়িক্রিয়ার্থয়োঃ। কালবাচিদ্বিতীয়াস্তোপপদে অস্যতে স্তর্যভেশ্চণম্ স্যাৎ। দ্ব্যহ্মত্যাসংদ্যহাত্যাসং পায়য়তিদ্বাহতর্যঞ্ব৯-সকান্ দ্ব্যহংতর্যং পায়য়তি গাঃ অদ্যযংপানং যচ্চদ্ব্যহানন্তরংতন্মধ্যবর্ত্তিনা অত্যসনেন তর্যনেনচ গবাং পানং ব্যবধীয়তইতি অত্যসনমতিক্রমঃ। কালবাচিনীতি কিং যোজনমত্যস্যগাং পায়য়তি। ৫০২॥

পুত্যেবীন্দাবিষয়ন্বাৎ কর্মণোদিঃ আভীক্ষ্যস্ত ক্রিয়াবিষয়ন্বাভ্রাচকণমস্তবিশ্রাদীনাং সোপসর্গাণাং দ্বিরিত। প্রবেশাদী নামিতি পাঠেহপ্যভেদোপচারাদ্ধাতৃর্বাচ্যঃ। গেহমিতি। প্রবেশনক্রিয়া নিথিলগেহানিকর্ত্তাব্যথাতিত্যর্থেগেহং বীন্দাবিষয়ঃ সমাসাভাবপক্ষেগেহং প্রবেশং সমাসপক্ষেগেহপ্রবেশমিতি এবমন্তেযাং। গৃহপ্রবেশমিত্যাভীক্ষ্যেপুনঃ পুনঃ প্রবিশ্রেত্যর্থঃ। এবমন্তেযাং। বীন্দার্থস্তি। বীন্দাচঅর্থ আভীক্ষ্যার্থন্চেতি দ্বন্দ্বক্যং বীন্দার্থেনিভীক্ষ্যার্থস্থোপলক্ষণম্বা। যদ্যপি তৃতীয়াদেরমইন্ত-র্বেতি বীন্দাভীক্ষ্যার্থণে সমাসেননোচ্যতে যতোগেহমনুপ্রবেশমিত্যুক্তেপ্রকরণবশাদ্বীন্দাভীক্ষ্যয়োদ্রমিপ প্রতীতিরিত্তি সমাসেননোক্তত্বং তথাপ্যাদিনা তদ্বাচকপ্রত্যয়ান্তমাসানতেন তন্মোক্তম্বাদিতিন দিঃ। তত্তদ্বিদ্যুক্তেত্তদিত্যাদৈ নিবমতোদিঃ। অথতয়োর্ণম্ বিধানাপ্রমৈবতন্তোক্তত্বং বাক্যেতৃণম্ মাত্রসম্ভবান্দিঃ যথা প্রতির্ক্ষং বৃক্ষং বৃক্ষং প্রতীতি। নম্বাভীক্ষ্যবৌন্দাহত্যুক্তরপ্রাপ্তবাধানোপ-পদ্যতইতি নৈবম্ এতম্ম লত্বেনত্সানুবাদকত্বাৎ। বীন্দাভীক্ষ্যয়োঃ কিং গেহমনুপ্রবিশ্যভুঙ্কে। ৫০১॥

গূতপ্রকাশিকা।

বীপ্সতি। ক্রিয়াগুণদ্রবৈর্বান্ ব্যাপ্ত্রমিচ্ছাবীপ্সা বিপূর্বর আপ্৯ধাতোঃ সন্ আপেরীপ্ বীপ্সায়া বিবিষয়ঃ বীপ্সাবিষয়স্তাদৃশে কর্মণি উপপদে বিশিপদি পতিস্কল্ তিভ্যোণম্ এষাং প্রবেশাদীনামাভীক্ষ্যার্থেচ পোনঃ পুত্যেচতেভ্যোণমিত্যর্থঃ। অঙ্গে ইত্যুস্থনির্ত্তর্থং কর্মণীতি। ণমিতি নসূত্রং ছল্লোহমুরোধা-দেকত্রলিথিতং। সূত্রার্থং বির্ণোতি কর্মণ্যপপদইতি। বীপ্সায়ামিতি। প্রবেশাদি ক্রিয়াভির্ব্যাপনেবীপ্সাবিষয়স্থাৎ কর্মণোদিঃ আভীক্ষ্যস্ত্র ক্রিয়াবিষয়স্থাৎ ক্রিয়াবাচকবিশ্যাদীনাং সোপসর্গানাং দিঃ এষামিত্যুক্ত্বাপ্রবেশাদীনামিতি বির্তাবুপসর্গগ্রহণাৎ। আজহুইতি। ক্রঞ্হরণে পরোক্ষায়া এবিভক্তে বির্তাবাদি অত্রকর্মণোদ্বির্বীপ্সায়াং। গৃহং প্রবেশং প্রবেশমিতি। অত্রদোপসর্গধাতোর্দ্বিরাভীক্ষ্যার্থে এবমন্যত্রাপি। সমাদেনেতি। এতচ্চব্যাসইত্যস্ত বীজোদ্বাটনং তত্তক্তং সমাসোদৃশ্যযোগ্যতেতি স্ত্রটীকায়াং। নমু নম্চাভীক্ষ্যেইতি প্রাক্তক্তর্থৎ সামান্যতোবিশ্যাদীনামপি ণম্ কুতঃ পুনস্তেষাং ণম্ বিধান মিত্যুত্ত আই আভীক্ষ্যে পুনরিতি। বিশ্যাদীনাং পুনর্ণম্ বিধানং তৃতীয়াদেরমক্তর্বেতি বিকল্পন্যাগ্রি মিত্যুর্থঃ। বীপ্সাবিষয়ইত্যাদি প্রবেশমান্তহে ইত্যস্তমুদ্গীতিক্তক্ষঃ। ৫০১॥

क्रथमोशिका।'

কাল। ব্যবধায়োব্যবধানং বিদ্যতেহস্তাইতীনি ব্যবধায়িনী যস্তাঃ কস্তাশ্চিৎ ক্রিয়ায়া আমুপুর্বী-বাধিকাত অধ্যবর্তিনী ক্রিয়াহর্থোযয়োস্তয়োঃ। অহুক্ষেপণে ভৃষ্পিপাসায়াং। ছাহ্মিতি সমাহার ছিগো

নামশকে গ্রহাদিশ্যোর্থ্য নামশকৈ উপপদেনামগ্রাহ্যাহাত। নামানি-গ্রাহঞ্চ তন্নামাদেশযাচফনামান্যাদেশমাক্ষিপং। ৫০৩॥

নাহ্লাদেশ:। ব্যবধানং দর্শয়ন্তি অদ্যেত্যাদিনা। অত্যসনেন তর্ষণেন চ গবামসুপূর্বপানব্যবধানাভয়োন্তদর্থ ইত্যর্থ:। অত্যসনমতিক্ষেপণং নেত্যাহ অতিক্রমইতি পাঠাল্লজ্মনং। যোজনমধ্ববাচি অত্র
যৎপানং যচ্চযোজনান্তরং পানং তন্মধাবর্তিনাত্যসনেন ব্যবধানেহপিন গম্। অস্তৃহযোঃ কিং দ্ব্যহমুপোষ্য
ভূজ্কে। ব্যবধায়িক্রিয়েতি কিম্ অহরত্যস্থ গতইতি গমনবিচ্ছেদন একমহোহতিক্রম্যগত ইত্যর্থে ন
গতিব্যবধীয়তইতি। ৫০২॥

গুঢ়প্রকাশিকা।

কালেতি। কালবাচিনি দিতীয়ান্তে উপপদে যক্তাঃ কম্তাশ্চিদ্ব্যবধায়ক ক্রিয়ার্থয়োরয়ভূষোঃ
পরোণম্ স্থাদিত্যর্থঃ। দ্বাহমিতি। দ্বয়োরক্ষোঃ সমাহার ইত্যর্থেদ্বেচতে অহ্নীচেতি সমাহারদিগৌ
রাজমহন্ সথিভাষ্টজিতিটিনস্ত কচিত্তদ্বিতেইতি নলোপে অলোপেচদ্বাহমত্যাসংদ্ব্যহমুল্লজ্যপায়্যতীত্যর্থঃ।
পায়য়তীতি। পাপনেহেদিনি আকারান্তাদ্যআগমঃ। দ্বাহতর্বমিতি। অদ্যথংপানং যচ্চদ্ব্যহানন্তরং
তদ্মধ্যবর্ত্তিনা তর্বণেন পিপাসয়াগবাং তাদৃশপানং ব্যবধীয়তইতি ব্যবধায়িক্রিয়ার্থছাৎভূষেণ্ম্। অভ্যসনস্থার্থ মহাতিক্রমইতি। উপসর্গবলাদিত্যর্থঃ। যোজনমিতি। যোজনমধ্ববাচি। তচ্চক্রোশ,চতুক্ষং।
তত্তক্ষং ত্রিষবৈরঙ্গুলিঃ প্রোক্তাচতুরঙ্গুলিমুষ্টিকা। ধ্যুষ্টিকোভবেদ্ধন্তোধনুহন্ত চতুক্টয়ং। দ্বিসহ্রপ্রধনুঃ
ক্রোশশ্চতুক্রোশস্ত যোজনমিতি। অত্যস্তেত্যত্র প্রাদিসমাদে অনঞ্ সমাদেক্রোয়প্। ৫০২॥

क्थमीशिका।

নাম। নাম্নিকৃতে সংজ্ঞাপ্রাপ্তিরিতি শব্দোক্তিঃ। নামশব্দেকশ্বণি। দিশ্ অতিসর্জ্জনে নাম-গ্রাহং নামোচ্চার্য্য নামাদেশং নামোদ্দিশ্যেত্যর্থে। বাহ্সমাসে নামানীতি।৫০৩॥

গৃতপ্ৰকাশিকা।

নামেতি। নামচাদোশকশেচতিতি স্মিন্। গ্রহ্ উপাদানে গ্রহণ্চ আঙ্পূর্ব্ব দিশোধাভূনির্দেশেইঃ আদিশিশ্চ ষষ্ঠীন্বিচনেরপং। যদ্যপি দিক্ কালদেশযোগেভূপঞ্চনী ষষ্ঠ্যপীষ্যতেইত্যনেনপঞ্চমাবাহুল্যমুক্তং তথাপি ছন্দোর্থনঅষ্ঠীপ্রয়োগদানং। গ্রহাদিশ্যোঃ পরোণম্ স্থাদিত্যর্থঃ। নামস্বরূপগ্রহণার্থং শব্দপদং। নামগৃহীদ্বানামগ্রাহম্। আহতেতি আঙ্ হ্বেঞ্ আহ্বানে ঞিত্বেনোভয়পদিদ্বাদাত্মনেপদম্ আত্মনেভূ বিভাগয়েতিস্তবিভক্তো অঙ্ আকারলোপঃ কর্ত্তব্যইত্যালোপঃ ধুড্ হ্রন্থতোধুটীতি সলোপঃ। আচফইতি। আঙ্পূর্ব্ব চক্ষঙ্ কথনদর্শনয়োঃ হস্তম্মান্তবিভক্তো সংযোগাদিককারলুক্ ষকারাচ্চ টবর্গঃ স্যাদিতি তস্যটঃ। আক্সিপদিতি। আঙ্ ক্ষিপ্ প্রেরণে ভূদাদিরভয়পদীলঙোদিবিভক্তোরপং নিন্দতিশ্বেত্যর্থঃ। ৫০৩॥

অব্যয়ের্কঞঃ তঃ ত্বাণমৌযোগ্যান্যথোজির। গম্যাস্থ অব্যয়োপপদে কঞঃ ত্বাণমৌতঃ। পুলোইভূত্তবছাত্তেতি নীচৈঃ কৃত্বানীচৈঃ কৃত্যাচটে উচ্চৈর্মামপ্রিয়াখ্যানং যুক্তং চিরপ্রবাদিন্ পত্নীতেগর্ভিণীকিন্তর্হিত্বফাউচিঃ কারম্চিঃ কৃত্যউচিঃ কৃত্বাজ্রতে। আবেদয়ন্তঃ ক্ষিতিপালমুচিঃ কারং মৃতংরামবিযোগশোকাদিতিভটিঃ। নীচৈর্মামপ্রিয়বচনং যুক্তমিত। ৫০৪॥

তির্য্যক্ রুঞঃ সমাপ্ত্যুর্থে। গম্ক্তেন্ব । তির্যুক্কারং রিপূন্যযৌ। তির্যুক্রত্য তির্যুক্রত্বাযযৌ অরীন্সমাপ্যেত্যুর্থঃ। ৫০৫॥

क्ल्थ्रमोशिका।

অব্য। ভয়দ্বেয়াদিনাযোগ্যান্যথোক্তিয়ু অযুক্তাখ্যাপনেয়। বাসরপন্যায়েনক্রাচভবত্যেবতথাপিতদগুহণং বিকল্পন্যামার্থং। পুত্রোহভূদিতি প্রিয়াখ্যানং নীচৈরপমযুক্তং। চিরেতি। চিরপ্রবাসিন্
তেপত্নীগর্ভিণীতি লোকেঃ শ্রুতেনলজ্জাকারিদ্বাদপ্রিয়ত্বং। আবেদয়ন্তঃ ক্ষিতিপালমুচ্চৈঃ কারং য়ুতং
রামবিয়োগশোকাৎ। সমূলকাসং চকসূরুদন্তোরামান্তিকং বৃংহিতমন্ত্যুবেগাইতিভট্টিঃ। ৫০৪॥

গূঢ়প্ৰকাশিকা।

অব্যয়েশ্বিতি। অব্যয়বাচকশব্দগ্রহণার্থমব্যয়েশ্বিতিবহুবচনং। যোগস্থ উচিতস্থ অন্তথোক্ত্রো অনুচিতকথনেইত্যর্থঃ। অবোচতেতি। ক্রবচ্ বচেরঙ্ বশ্চবোভবেদিতি অঙিবঃ স্থানেবোস্তস্থানেতঃ। চিরপ্রবাদিশ্বিত। অপ্রয়াখ্যানমুচ্চঃ কৃত্বাকথনমযুক্তমিতি। আবেদয়ন্তইতি। কৃৎপ্রদীপিকায়ানে-তৎপদ্যং লিখিতং কিন্ত্রাধুনিককাব্যেপুর্ব্বপরার্দ্ধয়োব্বৈপরীত্যং দৃষ্ঠতে। ৫০৪॥

क्र थमिशिका।

তির্যাক্। উক্তপদাৎজ্বান্তেনচেতিসূত্রজ্ঞাপনাদ্বাসপ্তম্যুক্বারাদত্রপরত্রচ তয়ারপপদত্বমিত্যুক্তং সংজ্ঞাসূত্রে। তিরোর্থাব্যয়তির্যাকৃপুর্বার্কঞঃ অব্যয়স্থ নানার্থত্বান্তদর্থতা। ইহনভবতি তির্যাকৃরুত্বাকাষ্ঠং গতঃ বক্রং ক্ত্বতার্থঃ। ৫০৫॥

शृष्यकाणिका।

তির্যাগতি। সমাপ্তার্থেগম্যমানেতির্যাপব্যয়াত্বপপদাৎ কুঞঃ পরোণমৃক্ত্বোস্তইত্যর্থঃ। অত্রভ্কুঞ্করণেকুঞ্হিংসায়মুভয়োগ্রহণমবিশেষাৎ সমাপ্তার্থসম্ভবাৎ। তির্যাককত্যতি সমাসপক্ষেক্ত্বোষপ্।
সমাপ্তিরবসানেস্থাৎ সমর্থনেইতি মেদিনী। উভয়ার্থগ্রহণং। সমর্থনে তির্যাক্কারমূত্তরং দদতে
ইত্যাদয়োহপিস্থাঃ। সমাপ্যেতি। নাশয়িষ্ণেত্যর্থঃ।৫০৫॥

তসপ্তাঙ্গধমেধাধাবিনানান্যভূক্তেণা। তস্প্রত্যয়াস্তাঙ্গধমেধাধাপ্রত্যয়াস্তেচ বিনানানাশকেচোপপদেভূক্তেগার্গ ক্রিঃ। দ্রর্হচোমুখতঃ কারং পৃষ্ঠতোভ্ ভূয়তিষ্ঠতি। ক্রত্তামুখতঃ কত্যচ দৈধং কারং দিধাকারং দৈধীভূয়মনঃ স্থিতং ॥ দ্বোকারং দ্বিধাভূয়দ্বৈধন্ত্যান্তিদাক্তং। চ্যুর্থঃ সামর্থ্যাক্ষাম্যতে বিনাকারং বিনাভ্য়তক্ষো। এবং দ্বৈধাভূত্বাদ্বিধাভূয়েত্যাদয়ঃ। ৫০৬॥

তৃষ্ণীং ভূবোইষণ্ডুবস্তুপরন্যে ছানুবর্ত্তনে। গম্ক্রৌস্যাতাম্। তৃষ্ণীস্তাবং সদস্যাসন্ তৃষ্ণীভূয়তৃষ্ণীং ভূত্বাচ অম্বগ্ভাবং জগুর্গিরং। অম্বগ্ভূত্বা অম্বগ্-ভূয়জগুঃ। ৫০৭॥

क्र श्रमीशका।

তস। আদ্যাদিম্বাত্তস্। দুষ্টং বাক্যং মুখেক্তেত্যর্থঃ। মিত্রিভ্যাং ধমুণেধাচদৈমং দ্বেধাবিধপ্ প্রকারেসখ্যার্থাদ্ধাচ দ্বিধা। দ্বেধীভূয়েতিচ্বিঃ দ্বৈধীপাঠেডাজ্বাস্বার্থেধমন্ততইতি ডাজন্তাং চ্বিঃ। চ্বার্থোহভূততদ্ভাবসামর্থ্যাৎ দ্বিধাদিপদবলাৎ পূর্ব্বমভূতত্ত দ্বিধাসন্তবাদিতিসূত্রেনোক্তং বৈকল্পিক্সাৎ লব্বেঃ। নানাবিনার্থেচ্যুর্থইতি চক্রঃ। বিনাকারং বর্জনং কৃত্বানানাকারং বর্জনং কৃত্বেত্যর্থঃ। পৃথিবিনান্তবেগর্ত্তে নানানেকোভ্যার্থয়োরিত্যমরঃ। ৫০৬॥

গৃতপ্রকাশিকা।

তদস্থেতি। প্রতিনাযুক্তাচ্চাদ্যাদিকাদপীতিসূত্রবিহিত্তস্ অস্তোযস্ততচ্চতদঙ্গমঙ্গবাচকঞ্চেত। তচ্চধম্এধা ধা প্রত্যয়াস্তশ্চবিনাচ নানাচেতিশ্বন্ধঃ নচাব্যয়ৈরিতি শ্বন্ধনিধেপ্ত অব্যয়মাত্রস্তেতিনাত্র নিষেধঃ। ভুকুঞ্করণেভূদভায়ামিত্যনয়োঃ। মুখেমুখতইতি আদ্যাদিশ্বাৎ সপ্তম্যস্তাভদ্। দ্বৈধমিত্যাদি। দ্বোপ্রকারোহিধম্ এবং দ্বোপ্রকারাবস্তেতি প্রকারবত্যর্থেচস্তাৎ এবং দ্বিধাদয়োহপিপ্রকারপ্রকারবদর্থয়োঃ দিদ্যুন্তি। দ্বিধাভূয়েত্যাদয়ইত্যাদিনাত্রেধং কারং ত্রিধাভূত্বাত্রধাভূয়েত্যাদিত্রহণং। ৫০৬॥

क्र अमीर्शिका।

ভূফীং। পরেচছাতু্সরণে ভূফীমব্যয়ম্ অম্বগম্বক্ষমনুগেহব্যয়ং। অম্বগ্ভাবং পরেচছাত্মসারীভূত্তে ত্যর্থো। ৫০৭॥

গূঢপ্ৰকাশিকা।

ভূফীমিতি। পরস্তেছানুবর্তনে পরেছানুসরণেগমেতৃফীংপুর্বান্ধকৃপুর্বভূবোণম্জ্বোস্থাতা-মিত্যর্থ:। ভূফীমিতি। পরস্তেছামনুরত্ত্যসদিসভায়াং ভূফীস্তাবং মৌনীভূত্বা আসন্নিত্যর্থ:। অত্ত পরেছানুবর্তনং গম্যমানং। মৌনেভূভ্ফীং ভূফীকামিত্যমর:। অন্ধগ্ভাবমিতি পশ্চাদগামিনোভূত্বাগিরং জন্তঃ গৈশব্দেঅন্ত এচআত্বে উসিদ্বিভাবাদিআকারলোপ: কর্ত্তব্যঃ স্বরেকঙ্মুবন্ধিনীত্যালোপ:। অত্তাপি পরেছানুবর্তনংগম্যতে। অন্ধগন্ধক্ষমনুগেইত্যমর:। পরস্তেতিকিং স্বেচ্ছয়াভূফীম্ভৃত্বান্তে অত্তন গম্। ৫০৭ ॥ ইশ্তিপৌধাতুনির্দ্ধেশেসিদ্ধ্যতঃ॥ ত্বহিযুজ্যজিঃ। জুহোতিঃ শুতিরাপ্ধোতিঃ প্রীণাতিরিতিসিদ্ধ্যতি। ধাত্বস্থারত্বাহ্বাদেশেক্রবিরিতি॥ অতএবনক্রবোবচ্। শত্রবন্ধসাধর্যাং শিতিতিপিতনৌযদ্ধাতুকার্যাং সংসিদ্ধ্যতীতিসিদ্ধ্য। ৫০৮॥ সন্ধ্যভাবঃ পৌনকক্ত্যং বিভক্তীনাঞ্চলোপন। ব্যাখ্যেয়ব্যাখ্যয়োরৈক্যং স্থাবোধকতেক্তং। ৫০১॥

क्र॰ श्रमी शिका।

ইশ। ধাতুনির্দেশেমুখ্যধাতুকথনেশুদ্ধক্রিয়াবাচকে শব্দেবাচ্যেগোণাদ্ধাতোরিতিযাবং। ধাত্ব মুকারাত্বাদেশইতি। ইবর্ণোবর্ণয়োরিত্যসুকারবিহিত্তবাং তেনোবাদেশেক্রবিরিতিসিদ্ধং নাত্রগোণ ধাতোক্রবোবজিতি মুখ্যধাতুকার্য্যমিতিনিদর্শনং নাপিতুহিযুজ্যাদোমুখ্যধাতুকার্য্যং গুণাদিবিধ্যঙ্গশৈষিকস্বাৎ নক্তঃ কর্ত্তরীতি। নির্দেশঃ শাসনেহপিস্থাৎ কথনোপান্তয়োরপীতিমেদিনী। ইশ্চশতিপ্চেতিতোঁ প্রত্যয়দ্যোতকো। তুহিযুজ্যজিঃ তুহাদিধাতুতেত্যের্থঃ। অকুকারস্বাদেব তুহিযুজ্যজ্যাদীনাং নধাতুরূপ পরিত্যাগঃ। সন্ধিনোবাদেশেনগুণঃ। অতএবেতি। যতোহসুকারস্বান্ধগুণোহপ্যত এবাশিত্যপিতস্মিন্ধ প্রকৃত্যবচ্ছেদীবজিতি। জুহোভিস্তোতীত্যাদেশ শতিপিতুশনুবন্ধকরণবৈকল্যাৎ তনোত্যাদাবুক্তং কার্যমিতি সামুকারিস্বাদ্ধাত্ররপাপরিত্যাগঃ। যদ্বাইশ্চতিপ্চেতি শকারস্বোভয়ান্বয়াৎ শিতীকারেত্রহাদোন গুণাদিধাত্রকুকারস্বাৎসদ্ধিরিতি। গুণিস্বাৎ গ্রন্থিগুহীত্যাদোননলোপাদিঃ তিসদৃশ্বাভিপ্চতন্ত্রং অনুবন্ধ শতিবিত্যক্তংসঙ্গতং। যথা ই ইক্ শতিপোধাতুনির্দেশে ই ইক্ শতিপ্সক্রমেণঞ্জিং ভিদিঃ পচতিরিত্য গ্রত্ত। ই ইক্তিপোধাতুনির্দেশেইতি চন্দ্রোহপি। সতিসম্ভবেহ্নতুৎসর্গবাধকতয়াবাসরূপস্থায়াৎ শকানুকরণইতি সূত্রসামর্থ্যাৎপক্ষে কেবলাদপি স্থপ্যথাত্রহং কোক্রবইত্যাদেশ। ৫০৮॥

गृष्धकाणिका।

ইশ্তিপাবিতি। ইশ্চশতিপ্চেতিদ্বন্ধঃ। নচইশিতিশনুবন্ধঃ কথং নস্থাদিতিবাচ্যং তথাসতি শিদ্ধোতনুম্বাদগুণম্বেপ্রাপ্তে গ্রহীজ্যেতান্ত্রসম্প্রসারণক্ত শ্রন্থীত্যাদোনলোপক্ষচপ্রাপ্তেঃ। তহিছুহি যুজ্যাদোকথংনগুণঃ সত্যং ধাম্বনুকারাৎ অনুকারোহিসাদৃশ্যং মুখ্যকার্যং নবিদ্যতেইতিবচনামগুণঃ। ননুকথংগোহেরিতি নঞোহনিত্যঘাৎ। জুহোতিরিত্যাদোতুশনুবন্ধকরণবৈফল্যামূখ্যকার্যং। অথশনুবন্ধঃ কথং তিপ্সদৃশম্বাতিপ্চতমুরিত্যুক্তমাৎ শিদ্ধপ্রাপ্তেরিতিচেম শনুবন্ধকরণাদেবশিৎস্বরূপক্তিপন্তি সদৃশম্বাতন্ত্রমূত্যক্তমাৎ শিদ্ধপ্রাপতেঃ। পনুবন্ধকরণাদেবশিৎস্বরূপক্তপিতি সদৃশম্বাতন্ত্রমূত্যক্তমান বিকরণাদিঃ অন্যথামতের্থ ছেতি অতিবেগার্থেসতের্থাবেতি সূত্রন্থের অর্তিদ্বাতি পদেনাদিদ্বাতঃ। ছহিত্যাদি। ছহ্প্রপ্রণে যুজির্যোগে অজ্গতিক্ষেপণয়োঃ হুদানেক্ত্র্যুক্ততো আপ্রব্যাপ্তে প্রীঞ্ প্রীণনে ক্রঞ্ব্যক্তায়াং বাচীতি যথাযথং। ৫০৮॥

क्र९ अमी शिका।

গ্রন্থান্তেংশুথাদোষপরীহারমাহসদ্ধ্যভাবইত্যাদিনা। হেমাতঃ সরস্বতি। হেতৎস্থতাভ্রাতরোবিদ্বাং সন্দেত্যাভিপ্রায়িকং। অর্থানাং স্থবোধার্থং কুতমিত্যাহ অ ই উ ঝ ৯ আ ঐ ঔ ইত্যাদোসদ্ধ্যভাবঃ গগনগ্রহমনুসাকেনা কেন্দ্রাচার্য্যবাসরেশবদি। অধিপৌর্ণমাসিপূর্ণাসম-পদ্যত শব্দবিদ্যেই। ইতিদ্বিজ কুলকমলপ্রকাশকৈকভাষ্কর মহামহোপাধ্যার জ্রীবিদ্যাবাগীশভট্টাচার্য্যাপরনাম জ্রীপুরুষোত্তমশর্মনির্মিতায়াই প্রয়োগরত্ব-মালায়াই কুংসুষষ্ঠোবিন্যাসঃ। ৫১০॥ সমাপ্রমিদমুক্তরার্দ্ধং। *। *। *। *।

একোবিন্দুঃ শিটোহনাদিকখোঃ শিটোহনাদিপফোরিত্যাদৌ পৌনরুক্ত্যং তৃস্চতস্ক্র্যাদের্মানীত্যাদৌ বিভক্তীনাং লোপনং কৃত্য এতেনৈতেয়ু বিভক্তিলোপনং সূত্রেণাবগন্তব্যং চকারাৎ য়জল্রাজেত্যাদাবকার্নাদিদানঞ্চকি । আদিলোপশ্চান্তলোপোমধ্য লোপস্তথৈবচ । বিভক্তিপদবর্ণানাং দৃশ্যতেসার্ব্ববিদ্ধিকরিতি পরোক্তস্থচগ্রহণং । ব্যাখ্যেয়ব্যাখ্যয়োঃ সূত্রর্ভ্যোরৈক্যমেকত্বং পূর্ব্বেরকৃতত্বাদয়ুক্তমপিকৃতং । তদ্যথাবিশ্লিইসন্ধিভির্মার্থেতিরুর্ব্যাহতএবচ । পুনরুক্তপদার্থশ্চ পঞ্চদোর্যাঃ প্রকৃতিতাঃ । এতৎসর্বাং ময়িগ্রন্থকত্ বেনতেবাং গুরোভবিদ্ধিঃ ক্ষন্তব্যং দৃষণদানেনদন্দীপনং নকর্ত্ব্যং কিন্তভদ্রানুমত্যাপ্রোৎ সাহিতব্যং । উপদেকীকুমন্তাচলোকেতস্থকলং স্মৃতমিতি বহস্পতিঃ । বর্ণানুশাসনেকলমুক্তমিতি দোষপরীহারঃ । কৃত্যমিতি । ক্লীবিলঙ্গম ক্লীবেনকবচ্চবেতি ক্লীবৈকত্বং । কৃতংযুগেহলমর্থেহথহিতেচহিং দিতেতিরু । ব্যর্থার্থকং কৃত্তিগৈ নিমিত্রার্থেকৃতেহব্যয়মিতিজয়ঃ । ৫০৯ ॥

গৃড়প্রকাশিকা।

স্বকৃতগ্রন্থেবিহিতদোষান্ পরিহরিষ্যশ্লাহসন্ধ্যভাবইতি। সন্ধ্যভাবঃ নিত্যসন্ধিপ্রাপ্তাবপি বিসন্ধিকরণং পোনকক্তাং পুনকক্তাম অনুবর্ত্তনাদিনালাভসম্ভবেহপি পরত্রপুনকদীরণং বিভক্তীনাং লোপনং। বিভক্তি লোপস্থ সূত্রাসদ্ভাবেহপি বিভক্তানাং লোপনং চকারাচ্ছন্দউচ্চারণাদ্যর্থ মকারাদিদানঞ্চ ব্যাখ্যায়তামেতদিতি ব্যাখ্যায়ং সূত্রং ব্যাখ্যানং ব্যাখ্যার্ত্তিস্থােবিক্যমেকত্বং যথাদীর্ঘং সবর্গ ইতিসূত্রস্থ সবর্ণবর্ণদ্বয়মেকং দীর্ঘনাপদ্যতেইতি ব্যাখ্যায়ান্চ যথাবাতসন্তাঙ্গধমেধাধাবিনা নানাস্থভুক্ঞোরিতিসূত্রস্থ তস্প্রত্যয়াঙ্গধমেধাধাপ্রত্যান্তেচ বিনানানাশন্দেচোপপদেভূক্তঞার্ণম্ ক্রেন্তিইতির্ত্তেন্চক্যম্ এবমন্ত্রাপিতয়ােবিক্যং স্থাবাধনিমিত্তং কৃতং ময়েতিশেষঃ তথাচগ্রন্থোহ্যহয়ং দোষত্বউইতিকৃত্বানাবমন্তব্যঃ কিন্তুবলোকনীয়এবেতিভাবঃ। ৫০৯॥

क्र॰ अमी शिका।

গগনগ্রহমনুশাকেনাকেন্দ্রাচার্য্যবাসরেশরদি। অধিপোর্ণমাসিপূর্ণাসমপদ্যতশব্দবিদ্যেরং। শরদিবংসরেইরং শ্রীপুরুষোত্তমকৃতাপূর্ণাসমপদ্যতেত্যর্থঃ। #। আরাধ্যরাধাধবপাদপদ্মং মহেন্দ্রনামাভবিসন্ধু-সংক্রমং। অর্কেংখদিঙ্ নাগরসেন্দুশাকেপ্রদীপিকা কার্তিকিকেকৃতাকৃতঃ। যদত্রবালাবগমার্থনির্দ্মিতে প্রমাদমোহাযদথাকৃতীহিজং। তদস্তপূতং ভবতাং বচোভিদ্নমোহস্ত সম্ভোনচমেহস্তদোষঃ। শ্রীমহেন্দ্র্যপাধ্যায়নির্দ্মিতারাং কৃৎপ্রদীপিকারাং ষষ্ঠবিক্তাসবিবরণম্। #। #। #। ৫১০॥

গুঢপ্ৰকাশিকা।

গ্রন্থসমাপনশকান্দাদিকং পদ্যেনবেদয়ভিগগনেতি। গগনং শৃত্যান্ধঃ গ্রহোনবান্ধঃ মনুশ্চতুর্দশান্ধঃ অন্ধ্যুবামাগতিরিতি প্রাচামুক্তেঃ বামক্রমেণ যোজনীয়াস্তেনচতুর্দশশতনবতিপরিমিত শাকেনাকেন্দ্রাচার্য্য-বাসরের্হস্পতিবারেশরদিশরদৃত্যে প্রথমোপন্থিতত্বাৎ শরৎসন্বন্ধ্যান্থিনেমাসি পৌর্ণমাস্থাতিকারকার্থে-ব্যয়ীভাবঃ পৌর্ণমাস্থাং তিথোইয়ং শব্দবিদ্যাততুর্দশবিদ্যান্তর্গতব্যাকরণরূপাঙ্গবিদ্যাপূর্ণাসমপদ্যত পূর্ণাভূদিত্যর্থঃ। শরদিবৎসরেইতি কুব্যাখ্যানমনাদেয়ং আর্য্যাছন্দঃ। #। #। ইতীত্যাদিস্থগমার্থঃ। #। ইতিকোচবিহারনিবাদিশ্রীদিদ্ধনাথবিদ্যাবাগীশনির্মিতায়াং গৃড়প্রকাশিকায়াং প্রয়োগরত্বমালাটীকায়াং কুৎষ্ঠবিন্তাসবিবরণম্। #। ৫১০॥ সমাপ্তমিদমুত্রার্দ্ধং। #॥

ममारखार्यः अन्यः।



জন্মমৃত্যুবিহীনোযোমহাদেবোজগংপতিঃ। আসীতত্ত্বনয়োবিশ্বসিংহনামা-नुशार्थानीः। १ । विश्वादान्वराप्तरमारिशायनामकः। याभ्यावरेखव-বসতিং চক্রেসগিরিশাজ্ঞয়। ২। নরনারায়ণস্তদ্যপুত্রঃ ক্ষাপালকেশরী। অভূমারায়ণীমুদ্রাত সৈ্তবসময়েপুরা। ৩। ধরাদেবান্সমানীয়নানাস্থানেভ্য-এবসঃ। অস্থাপয়নিজেরাজ্যে নানাশাস্ত্রবিশারদান্। ৪। পুরুষোত্রনামে-কস্তেষাং ভদ্ভপদেশনাৎ। প্রয়োগ্রত্বমালাখ্যং চক্রেব্যাকরণংবুধঃ।৫। তদ্ভূপতনয়োভূপো লক্ষ্মীনারায়ণাহ্বয়ঃ। তস্যপুল্রোমহীখ্যাতোমহীনারায়ণা-হ্বয়ঃ। ৬। তৎস্থতোজগতীখ্যাতোজগন্ধারায়ণাভিধঃ। তৎপুল্রোভূপতিশ্রেষ্ঠো-রূপনারায়ণাহ্বয়ঃ। १। তদাত্মজোমহাধীরঃ খড়ানারায়ণাহ্বয়ঃ। তৎস্থতো-বিজ্ঞ ধৈর্য্যেক্রনারায়ণইলাপতিঃ।৮। তস্যাত্মজঃ খ্যাত্যশা ধরেক্রোহরেক্র-নারায়ণআত্মজোইস্য। বজেন্দ্রনারায়ণ আত্মজোইস্য নরেন্দ্রনারায়ণনাম-কোরাট্। ১। তদাত্মজোবিশ্রুতকীর্ত্তিকঃ শ্রীনৃপেব্রুনারায়ণনামধেয়ঃ। মহাননাইব্ৰুতয়ানৃপাণাং স্থযোগমাপ্লোন্ধিজনামএব। ১০। যঃ সৰ্বক্ষণ সৰ্ব-সুক্ষণযুতঃ সর্বাদৃতঃ সর্বদাস্মেরঃ পার্বণসর্বরীশবদনঃ সর্বং সহাবৎক্ষমী। দানৈঃ খৰিতসৰ্বগৰ্বমহিমাইগৰো বিহারাহ্বয়েদেশে সৰ্বস্থলক্ষণায়িতবপুৰ্বৰ্বতিসৰ্বো-পরি। ১১। गांखोर्यगाद्योग्या भार्मिक्यारियम् भार्मिक्यारियः। वीर्यानि-ৰ্জ্জিত সূৰ্য্যস্যূপস্যাস্যনিদেশনাং। ১২।

রায়বাহাদ্ররোপাধির্মন্ত্রীত্স্যাবনীপতেঃ। অস্তি শ্রীকালিকাদাসদত্তঃ সর্বগুণাম্বিতঃ। ১। যঃ পক্ষপাতরহিতঃ সহিতঃ স্থবিজ্ঞিরালয়্যশাস্ত্রবিহিতংনয়মাত্মবৃদ্ধ্যা। সর্বক্ষণেম্বহিতো হিতসাধনেচ্ছ্রাজপ্রজাঃ স্থথয়তে স্থবিচার্য্যযত্মাৎ। ২। অস্যোপরিপরিন্যম্যনিজরাজ্যধূরংনৃপঃ। নিশ্চিস্তোবিহরত্যেববিহারেইন্মিন্যথাস্থং। ৩। সমন্তকার্যাদক্ষন্যসূক্ষরবৃদ্ধেঃ কৃপানিধেঃ। মহোদারচরিত্রস্যামুষ্য প্রোৎসাহতোইধুনঃ। ৪।

নরনারায়ণা ীতোনারায়ণপরায়ণঃ। • শাস্ত্রপারায়ণাভিজ্ঞ আসীমারায়ণা-ভিধঃ। ১। তদাত্মজোহিসিদ্ধান্ত পঞ্চাননইতিশ্রুতঃ। লক্ষ্মীপত্যভিধঃ শাস্ত্র-দিদ্ধান্তকরণক্ষমঃ। ২। তৎস্তঃ শ্রীপতিন্যায়পঞ্চাননইতিশ্রুতঃ। শ্রুতকানন-সঞ্চারকারিপঞ্চাননোবুধঃ। ৩। তজ্জঃ স্বাচারবারপ্রমুদিতহৃদয়ঃ শব্দবিদ্যৈ-কবিজ্ঞো ধন্যোমান্যাগ্রগণোগুণি গণগণিতোযশ্চিরঞ্জীবনামা। তৎপুত্রশ্চক্র-লাথোবিবুধচয়বরঃ সর্বশাস্ত্রার্থবেতাছেতায়ঃ সংশয়ানামতিবিমলযশশ্চন্দ্রসংকা-শিতাশঃ।৪। আনন্দনাথন্তনয়ন্তদীয়োধীরঃ সদানন্দমনাঃ স্বচিত্তে। যোমুত্যু-কালেপরিকম্প্যকাল্যারূপাদি কৈবল্যমিতোইমিতশ্রীঃ। ৫। শ্রীসিদ্ধনাথন্তনয়-खनीरात्रादि श्रः व्यक्तीन्तृषि भारत् । अक्ष श्र श्र श्र क्ष त्र व्यक्त विश्व स्थानिक स হনিচৈত্রযব্যে। ৬। পুরুষোত্তনসখ্যাবদ্রচিতারাঃ সমাপরং। প্রয়োগরত্ব-মালায়াঃ টাকাং গৃঢপ্রকাশিকাং । ৭। যদ্যপিমন্দবুদ্ধিত্বায়্টীকা করণেক্ষমা। মমশাস্ত্রগ্রণাকৃষ্টঃ প্রব্রেভাঙ্ত্রতথাপ্যহং ।৮। যদিনংকৃতটীকায়াং সভাং সম্ভোষণং ভবেৎ। তদাপরি শ্রমোমেস্যাৎ সফলোবিফলোহন্যথা। ১। যাচে-২হং ক্লতিনঃ কৃতাঞ্জলিরিদং টীকামিমাংমংকৃতাৎ কুৎপর্যান্তসমাপিতামস্কৃতী-টীকাক্নতোচাক্নতী। কৃত্বাসুক্ষণ মীক্ষণাতিথিমিহাশুদ্ধংবিৰুদ্ধঞ্চ যত্তৎসংশোধ্য স্থবুদ্ধয়ো>তিরুপয়াসংশীলয়ধ্বং মুহুঃ। ১०। ∗। ॐতৎসং। ∗।

পরিভাষাসূত্রাণি।

তত্রাদৌসূত্রলক্ষণং। অস্পাক্ষরমসন্দিশ্বং সারবদ্গৃঢ়নির্ণয়ং নির্দ্ধোষং ছেতু-মত্তথ্যং সূত্রমিত্যুচ্যতে বুধিঃ। ১॥

অল্লাক্ষরেত্যাদিসূত্রব্যাখা।

যৎপদ পূজনাচ্ছক্রঃ শক্রচক্রমনাশয়ে। বিশ্বব্যূহ্বিঘাতায় বিশ্বরাজ্য নুমামিতং।

অল্লান্যক্ষরাণি যত্ত সূত্তেতত্তথা। অল্লাক্ষরযুতং। তথাহি বর্ণমালেত্যল্লাক্ষরং নতু বর্ণানাং মালেতি বহুক্ষরযুক্তম্ এবং রাগাদণিতাল্লাক্ষরং নতুরাগবাচিনইতি বহুক্ষরযুক্তং। সত্ত্বে বহুবক্ষরাণ্যপিন দোষায় অস্মাকং সূত্রাণাং কারিকাত্বেন ছল্দোহসুরোধান্তাদৃশ বহুবক্ষরসত্ত্বেইপি ন দোষঃ। যদ্বা অলাক্ষরং নির্পৃকাক্ষররহিতং তথাহি বর্ণমালেত্যত্রবর্ণমালিকেতি স্বার্থিক কপ্রত্যয়রহিতং। অসন্দিশ্বমিতি।সম্পূর্ব্বদিহ্ সন্দিশ্বমিতি অকশ্বকাদ্গত্যর্থকশ্বকেত্যাদিনা কর্ত্তরিক্তঃ দাদেস্তঘোধূট্যস্তেচেতি হস্যথঃ ঘট্যভতস্তথ্যোর্ধঃ তুর্যেষু স্থার্ধু টাং তৃতীয়াঃ স্বাঃ নঞ্ সমাদেনঞকারঃ সন্দেহকর পদরহিত্মিত্যর্থঃ। তথাহি অ ই উ ঋ ৯ইত্যত্রাসন্ধিকরণং সন্ধৌতু অয্বৃইতি স্থিতো অযবঋ৯ইতি পঞ্চানাং ব্রস্থাংজেতি এবং বাহোবাশব্দ ঔভবেদিত্যত্ত শব্দপদাভাবে বিকল্পার্থ সন্দেহঃ স্থাদিতীদৃশসন্দেহকরপদরহিতং। সারব-দিতি। সারং স্থাযাং বিদ্যতে২স্তেতি বস্তুঃ তথাহি বম্নসাবিতি সাক্ষাদ্বিতীয়া দ্বিবচনান্তং বাম্নাবিতি লুপ্ত-দ্বিতীয়া দ্বিচনান্তমিত্য বিপর্যান্তরূপং সারবংবৈপরীত্যেতু নসোনেত্যাদ্যাদেশাদ্যায্যতাস্থাদিতি। यद्या-সারবং প্রয়োজনবং তথাহি বর্ণমালেত্যত্র স্বকল্পি তবর্ণ নিরাস প্রাসদ্ধবর্ণশ্রেণিগ্রহণায়মালেতি পদমিতি প্রয়োজনবিশিষ্টং। গৃঢ়নির্ণয়মিতি। গুঢ়স্থাব্যক্তার্থস্থ নির্ণয়োহয়মেবার্থোনান্থ ইত্যেবং রূপোযশ্মিন্ তত্তথা এতহুক্তং ভবতি দার্ঘং সবর্ণ ইত্যত্র একং দীর্ঘমাপদ্যতে নতু সবর্ণবয়ং দীর্ঘবয়মিতি তথানিইস্কতাইত্যস্ত নিগদিতাইতিযত্ত্রকুত্রচিদস্তিভবতি সিদ্ধ্যতীত্যাদি তথাপ্রায়োপঃশকদ্ধাদেরিত্যাদে পূর্ব্বপদান্তলোপইত্যাদি-গৃঢ়ার্থ নির্ণয়যুক্তং। নির্দোষং দোষরহিতং। দোষাশ্চযথা। বিশ্লিউসন্ধিভিন্নার্থোগুরুর্ব্যাহত এবচ। পুন-রুক্তপদার্থশ্চ পঞ্চদোষাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ। অস্থার্থঃ বিশ্লিফোগতশ্চাদো সন্ধিশ্চেতি কর্ম্মধারয়ঃ প্রয়োজনা-मृत्व मक्षाज्ञातः अथरवाधामिश्वरम्भक्तमरख्यू मक्षाज्ञारवा नु माधावदः यथा व हे छ ॥ » हेनारमी। বক্ষ্যতিহি গ্রন্থকৃৎ কৃৎষষ্ঠবিষ্থাদে সন্ধ্যভাবঃ পোনরুজ্যুং বিভক্তীনাঞ্চলোপনং ব্যাথ্যের্যাখ্য-রোরৈক্যং স্থথবোধেক্তে কৃতমিতি। ভিন্নার্থ ইতি। ভিন্নঃ পরস্পরাদম্বন্ধোহর্থ ইতি পূর্ব্ববৎ-সমাসঃ তথাচ নদ্যদন্তয়োরম্ শদোল্লু গানিতি নকুতং ভিন্নার্থস্থাৎ। গুরুরিতি। প্রয়োজনম্বিনাল্লাক্ষরশব্দে প্রতিপাদ্যে বহুক্ষরশব্দপ্রয়োগে গুরুদ্দোষঃ। তথাচ সেল্লোপঃ শ্রদ্ধায়াইত্যত্ত সেল্লোপ আপ্রত্যয়ান্তশব্দা-দিতি ন কৃতং শুরুত্বাৎ প্রয়োজনবশাৎসোহপি ন দোষায় যথা সখ্যঃ সেডাইতি লঘুসূত্রং ন কৃত্বা স্থি-রজু নইত্যত্র স্থিরিতি পদসিদ্ধার্থং সিযুক্তস্থস্থীকারস্থাত্বমিতি গুরুসূত্রংকৃতং। ব্যাহতইতি। যুক্তিলভ্যে- 🔾 ২র্থে শব্দপ্রয়োগোব্যাহতদোষঃ তথাচ অগ্নিভ্যামিছুতোস্থাতামিত্যত্ত স্ত্রীপুংসয়োরিতি ন কৃতং ক্লীব*লিকে* **ও**রীক্রেইতি সূত্রসন্ত্রাৎ স্ত্রীপুংসয়োরিত্যর্থ লভ্যস্থাৎ যত্রপ্রয়োজনমন্তিত্ত তাদৃশপ্রয়োগোহছুন্টঃ যথাঘুটঃ স্থোজনমো স্ত্রীপুংসয়োঃ হ্যঃ শির্ম পুংদেকেইতি তৎপ্রয়োজনং তৎসূত্রব্যাখ্যায়াযুক্তং। পুনরুক্তেতি।

অন্যচ্চসূত্রলক্ষণং। অপ্লাক্ষরমসন্ধিশ্বং সারবিদ্বিশ্বতোমুখং। অন্তোভমন-বদ্যঞ্চসূত্রং সূত্রবিদোবিছঃ। ২॥

অন্যচ্চসূত্রলক্ষণং। লঘুনিসূচিতার্থানিস্বন্পাক্ষরপদানিচ। সর্বতঃ সার-ভূতানি সূত্রাণ্যাভ্রমনীষিণঃ। ৩॥

পুনরুক্তশ্চাসো পদার্থশ্চেতিবিগ্রহঃ উক্তস্থপুনরুদীরণমিত্যর্থঃ। যথাসস্থানাকোদেহিতি নক্বতংসস্থানাকাবিতিদ্বিচন বিভক্ত্যাদ্বিদ্বোক্তোদ্বাবিত্যকে পুনরুক্তথাপাতাৎ প্রয়োজনসত্ত্বেসাহিপি ন ছফীঃ যথাপঞ্চমী সপ্তমী
চস্থান্মধ্যেকারকোদ্ব রোরিতি। এতেপঞ্চদোষাঃ প্রকীর্তিতাবুধৈরিতিবাক্যশেষঃ। এতৎপঞ্চদোষরহিতং সূত্রমিত্যর্থঃ। হেতুমদিতি হেতুঃ কারণং তদস্থান্তীতিমন্তঃ অয়মর্থঃ নেট্স্থাজ্ঞীদনুবন্ধশি বেটামপতিনিক্ষু যোরিতিসূত্রেনিক্ষু যোর্বির্জনং ব্যর্থং নহিগ্রন্থক্তা ক্রোপি নিক্ষু য্ধাতুর্বেট্কুতঃ তথাচাত্রবেটাং মধ্যেনিক্ষু যং গণয়িত্বা
যিমিত্বর্জনমুক্তং তদন্তত্রতন্মাদ্বিকল্পেনেট্কার্য্যং প্রতিকারণং প্রতিপাদিতমিতিকারণবং।
তথ্যমিতি। সপ্রকারস্তথা তথাভবমিতি দিগাদিভ্যোভবার্থেঃ যেনপ্রকারেণ সাধ্যসিদ্ধির্জ্জায়তে তৎকল্পনবিষয়ইত্যর্থঃ নিদর্শনন্ত্র অনামিনঃ পরস্থাশীত্যত্রাপির্বহলার্থ ইতি সমাদেস্থবিভক্তেল্পু ক্তদ্ধিতাখ্যাত্য়োরশীত্যপি শব্দাৎ কচিত্তদ্ধিতেহলুগিতি নাদ্বিপ্রযুদ্ধ্যমানেহপীত্যত্রাপিরভিপ্রায়স্থস্চকইতি নবস্থিবচ্যাদেরিত্যত্র
নঞ্জোহনিত্যত্বমিত্যাদি এবমন্যত্রাপি এতৎষড্বিধং সূত্রমিতি বুধৈক্ষচ্যতেইতিপদসন্বন্ধঃ। এবং ষট্সুসূত্রলক্ষণেয়্দাহরণমাত্রমুপদর্শিতমন্তৎস্বয়মূছং। ১॥

অল্লাক্ষরেত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

অল্লাক্ষরেতি। অল্লাক্ষরমিত্যক্ত পূর্ববদেবার্থঃ। অসন্ধিন্ধমিতিগতার্থং। সারবদিতিপূর্ববদ্যান্থিকং। বিশ্বতোমুখং বহুবিষয়কং প্রকরণানুরন্ত্যাদিভিঃ যথাসোহন্তক্ত বিসর্গোণিবিরাময়োরিতি রেক্ত্যতুপদান্তক্তেতি প্রকরণবশাল্লিঙ্গান্তক্ত লিঙ্গায়পদান্তক্তলাভঃ রসোর্বিসর্গঃ পদান্তইতিপ্রকরণবশাল্লান্থায়পদান্তইতিলাভঃ যথাচকচিদিতি অরণাত্বপ্রয়ঃ কামইতিনসইত্যক্তানুরন্তিত্মরণাদিতি এবং টিকঃ আদর্ধকংসাভ্যামিত্যত্র পূর্ববদূত্রক্ত বন্ধন্তেভ্যইট্চ বেত্যক্তচকারসম্বন্ধাৎ কার্যাপণক্ত প্রতাদেশক্ত্যাদিকং বোধ্যং। অন্তোভ্যননিধিকমর্থলভ্যার্থপ্রদর্শকপদরহিত্যিতিয়াবৎ তন্ধিদর্শনং প্রাক্ষণিতং। অনবদ্যং শিক্টানামত্মপ্রতীতিকরং তথাপ্রশব্দক্তান্তলাপ্রেনানিব্রেয়রোঃ পরস্থরোরিতি ক্রতেক্লিতার্থক্ত ত্রপ্রতীতিঃ আদপিত্বব্র্যায়াং পরস্থরোঃ বৈনিশ্চয়ং প্রশব্দক্তান্তলোপোনক্তাদিতিসন্দেহঃ আৎয়ন্তাকারাদমোহকারলোপইত্যত্রাকারাদমোলোপইতি ক্তেহ্মোহকারলোপেত্মত্রতীতিঃ আৎকিন্তম্বান্যান্তিসক্তর্থন তথ্যান্তর্ভাব্যান্যত্রিকরং। বস্তুতন্ত্রক্রনবদ্যং নির্দোষ্যিতি পূর্ব্বস্থানার্থকং। বিশ্বতোমুথ্যিত্যক্ত তথ্যান্তর্ভাবান্ত্রির্যাঘাতইতিজ্ঞেয়ং। ২॥

लघूनौज्यां मिमृत्वव्यां था।

লঘূনীতি। লঘূনি অনধিকানি অর্থলভ্যার্থ প্রদর্শক পদরহিতানীতিয়াবৎ সূচিতঃ অর্থঃ স্পাফীর্থো-যেষুতানিসংশয়করপণরহিতানীত্যর্থঃ স্বল্লাক্ষরাণিযত্ততাদৃশানিপদানিয়েষু নিরর্থকপদরহিতানীত্যর্থঃ। সর্বব্যঃ সর্বেষু বিষয়েষু সারভূতানিপ্রয়োজনবন্তীত্যর্থঃ ঈদৃশাণিসূত্রাণিমনীষিণঃ পণ্ডিতাআভ্রুবন্তীত্যম্বয়ঃ। ৩॥ এতৎ সাধারণ সূত্রলক্ষণং সম্প্রতিপ্রতিব্যক্তিলক্ষণমূচ্যতে। সংজ্ঞাচ পরিভাষাচ বিধির্মিয়মএবচ। প্রতিষোধোইধিকারশ্চ ষড্বিধং সূত্রলক্ষণং। ৫॥

মধুরেত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

মধুরেতি। মধুরং স্থথবোধ্যমদন্দিগ্ধমিতিযাবৎ তচ্চঅল্লাক্ষরাণিচতৈযুর্তং গূঢ়কর্মকং গূঢ়ং চতৎ-কর্মাচেতিতৎকায়তি কথয়তি নির্ণয়তীতি গূঢনির্ণয়মিত্যস্থ দমানার্থকং। চিত্রং নির্দোষম্ অন্থৎ পূর্ববৎ।৪॥

সংজ্ঞেত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

পরিভাষাঅনিয়মেনিয়মকারিণী ইয়ঞ্চবিধালিঙ্গবতী সংজ্ঞানামস্বরাদিকা। লিঙ্গং বিদ্যতেহস্থাইতিলিঙ্গবতী ক্রমেণকার্য্যবিধানচিহ্নবতীত্যর্থঃ সাচৈকত্র বিধ্যঙ্গশৈগভূতাচ গৃহীতসম্বন্ধাসকলং • প্রকরণমভিদীপয়তি বেশানিদীপবৎ যথাকারকপ্রকরণেএষামুভয় প্রাপ্তাবিতি যথাচাখ্যাতপ্রকরণেএষাং যুগপছুক্তাবিতি এতৎসূত্রদ্বয়মন্তরেণযুগপৎপ্রাপ্তাবিপি যুগপদভিধানে২পি নৈকস্তাপি প্রবৃত্তিরন্যোশ্বিরোধাৎ যথাদেবদত্যজ্ঞদত্যোর্বিরূদ্ধদিক্ প্রয়োজনবতোরেকং প্রেষ্যং যুগপৎ প্রেয়য়িয়তোঃ সোহবিরোধার্থী নৈকত্রাপিপ্রবর্ত্তইতি ক্রমেণভুভবত্যের যথাচভুর্ণাম্বর্ণানামেকত্র পাত্রেক্রমেণভোজনং যুগপদ্ধোজনঞ্চের্বসম্বর্যাং স্থাৎ। বিধেরস্বং তস্থ শেষস্তত্রভবতিম্মেতীত্য-র্থাকর্মকেত্যাদিনাকর্ত্তরিক্তঃ বিদ্ধঙ্গণেষভুতা নিয়মদারা বিধিসূত্রেণ সহৈকবাক্যতামাপদ্যমানা বিধেরুপকারিকা সাচপ্রতিসূত্রমুপতিষ্ঠতে তথাহি অত্যোহগ্যস্থ ব্রম্বদীর্ঘৌম্বরমাত্রস্থ কুত্রচিদিতি সবর্ণইত্যাদিবিধিদূত্রেণসহৈকবাক্যতামাপন্নাসস্থানাগ্দয়রূপঃ সবর্ণঃ পরস্পার্রপসস্থানদীর্ঘং প্রাপ্নোতীতিদার্ঘবিধের্মিয়মকারিত্বেন ততুপকারিণীকৃতঃ কর্ত্তরীতি কর্ত্তরীতিপদং অকণ্ ভূচাবিত্যাদি-সূত্রমন্বেতি। যদিচলিঙ্গবতীস্থাত্তদাস্থাবিধিসূত্রস্থাধীনত্বাদ্বিধোনেহপি কর্ত্তরীতি প্রবর্ত্তমানং স্থাৎ তথাচ্যঞ্ভাবেস্থাদিত্যাদৌ কর্ত্তরিচ্যঞাদেঃ প্রদক্তিঃ স্থাদিত্যতোবিধ্যঙ্গশেষভূতাপরিভাষা নলিঙ্গ-বতীতি। বিধিরজ্ঞাতজ্ঞাপনং তচ্চপ্রকৃত প্রমাণাতিরিক্ত প্রমাণাপ্রতিপাদ্যত্বেদতি প্রকৃত প্রমাণপ্রতি-পাদনং দীর্ঘং দবর্ণ ইতি দূত্ররূপপ্রমাণং দবর্ণস্থদীর্ঘত্বং জ্ঞাপয়তি এবমন্যত্রাপি। নিয়মঃ দজাতীয়ব্যব-চ্ছেদঃ সচপ্রকৃতি প্রত্যয়োপপদকালভেদাচ্চতুর্বিধঃ যথা ব্রহ্মজ্রণর্ত্রপরাদ্ধনোখ্তীতে কিবিষ্যতইত্যত্ত্রএ যুপপদেষুহনএবকিপ্নাঅস্মাদিতি প্রকৃতিনিয়মঃ এষুপপদেষুহনঃ কিবেবনাঅপ্রত্যয়ইতি প্রত্যয়নিয়মঃ এষূপপদেম্বেবহনঃ কিপ্নান্ডেম্বিভুগপপদনিয়মঃ এষূপপদেয়ু অতীতএবহনঃ কিপ্নান্ডদাবর্ত্তমানেভাবিনি চেতিকালনিয়মঃ। এবমন্যত্র একাদিনিয়মোবোধ্যঃ। প্রতিষেধোনিষেধঃ যথা নভবতিনাথতিনন্দতী-ত্যাদো। অধিকারঃ প্রবর্ত্তনম্ অয়মপিনদীস্রোত আদিভেদাচ্চতুর্বিধঃ। তথাচোক্তং নদীস্রোতো-গবাং যুথোমপূকপ্লুভিরেবচ। সিংহাবলোকনঞ্চৈবাধিকাস্তচভুর্বিবধইতি। অস্তার্থঃ অনেকাসুরুত্তি-মুদীস্রোতঃ যথা বর্ণমালামুবর্ত্ততেইতি বর্ণনালামুরুত্তিঃ যথাচ অর্ণেবিরামে২পাস্তম্ভেতি অর্ণবিরামানু-

পরিভাষাসূত্রাণি।

স্পরঞ্সূত্রং যথা। সংজ্ঞাবিধির্ন্নিষ্টেশ্চ নিয়মোজ্ঞাপকশুথা। পরিভাষাতি-দেশ-চাধিকার-চাষ্টধভবেৎ। ৬॥

র্ভিরস্তানুর্ভিশ্চেতি। যথা গোযৃথং পরস্পারং বাধতে তথাএকস্থবাধেন প্রভির্গোযৃথাধিকারঃ যথা প্রায়োপঃ শক্ষাদেরিতিপ্রায়োপাধিকারোদীর্ঘণ্ডাদিবাধেন এবমন্যত্রাপি। বিলজ্যানুর্ত্রনং মণ্ড্কপ্লুভিঃ যথা তাদৃগ্জাতেরস্বাঙ্গাদেত্যনুর্বর্তনেন ঈপ্রত্যয়স্থলাভসম্ভবেপিস্ত্রিয়াং দ্রবার্থকোদন্তাদৃঙ্ বেত্যাদিস্ত্রাণিবিলজ্যনোষ্থাত্রাদিভাইত্যত্রানুর্ভিঃ এবমন্যত্র। এতজ্রয়াদন্তৎ দিংহাবলোকনং তচ্চ পরত্রপৃর্বত্রচানুর্ভিঃ। দিংহাবলোকনং যথা ভূজকাভ্যাং কর্মকত্রোক্তেভি পৃর্বস্ত্রেক্তান্তাদিপ-দর্যোগেদার্যন্তী নসমন্যতেইভি পরস্ত্রম্থ যথা নসমন্যতেইত্যক্ত পূর্বত্রানুর্ভিঃ। নচাধিকারোহমুন্বর্ত্তনং তচ্চাগ্রেপ্রাথিভাগিন্থমিতি জয়কৃষ্ণভট্টাচার্য্যোক্তং কথং সঙ্গচ্ছতইভিবাচ্যং নদীস্রোতঃ প্রভৃতিভ্রিকিল তচ্চাগ্রেক্তান্তর্গান্ত প্রক্রিয়ান্তদভ্রায়েবৈর তদী-রোক্তেঃ দামঞ্জস্থাৎ। যচ্চোক্তং চক্তশেখরভট্টাচার্য্যোক্তা পরিকারাভদভ্রিয়াত তদপি পূর্ববিদ্যানা-। র্থকম্ অন্যথাভূজকাভ্যামিত্যত্র যধীনসমন্যতে ইত্যগ্রেণযোজ্যমিতি গ্রন্থক্তনিভি স্থাৎ। সংজ্ঞাদিভিদভিন্নং যত্রিধং সূত্রলক্ষণং ভবতীতি বাক্যযোজনা। অথ সংজ্ঞাদীনাং পঞ্চানাং বিধিছেনপরীণামাৎ কথং যত্রিধন্থমিতিনচোদ্যং দামান্য লক্ষণস্থ বিধের্বিবশেষেণব্যপদেশাৎ যত্রভ্রিবিশেষাযোগন্তত্র সামান্যেন ব্যপদেশইতিষ্ট প্রকারন্তং দিক্ষ্ম। ৫॥

সংজ্ঞেত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

সংজ্ঞেতি। সংজ্ঞাদিচতুষ্টয়ং পূর্ব্বসমানার্থকং। জ্ঞাপকঃ সূত্রান্তরেণ প্রাপ্তবিধেঃ প্রদর্শকঃ যথা नकरेगर्त्रा अभवारयहे ि भरतानतानिरवनशाखिविर्यः अनर्गकः यथावित्रिननगरनिर्विक स्त्राति नक्कुणात-রিত্যাদি শব্দব্যবস্থয়া প্রাপ্তবিধেঃ প্রদর্শকঃ যথাবা এষামুভয়প্রাপ্তাবিতি বিবক্ষাতইত্যনেন প্রাপ্তবিধেঃ প্রদর্শকঃ। পরিভাষাগতার্থা। অতিদেশ-চাপ্রাপ্তিপ্রাপণমিতি গ্রন্থকুতোক্তং নান্তিপ্রাপ্তিঃ প্রবৃত্তির্যাত্ত-বিষয়েতত্রবিধেঃ প্রাপণং প্রবর্ত্তনমারোপইতিযাবৎ। সচাতিদেশে৷ নিমিত্তরূপসংজ্ঞাশাস্ত্রকার্য্যাণামিতি তত্রপ্রবৃতিনিমিতারোপোনিমিতাতিদেশঃ একরূপং বাধিস্বাহপররূপারোপোরূপাতিদেশঃ সংজ্ঞান্তরং বাধিত্বাহপরসংজ্ঞাপ্রাপণং সংজ্ঞাতিদেশঃ কম্মচিদবাধেন বিধিপ্রবর্ত্তনং শাস্ত্রাতিদেশঃ কার্য্যান্ত-রবাধেন কার্য্যান্তরারোপঃ কার্য্যতি দেশঃ আদ্যো যথা ডিবত্তসাদাবিতি ঙেঃ প্রবৃত্তিনিমিতং বিভক্তিত্বং তসাদাবতিদিশ্যতে নিমিত্তয়ারোপঃ ইত্যর্থেইপিনক্ষতিঃ ডিবিভক্তিবল্লিমিত্তাতিদেশঃ এবমুখ্পদোদোদভো-যৎ স্বরবদিতি স্বরশব্দশুপ্রবৃত্তিনিমিত্তং স্বরত্বং যত্যতিদিশ্যতে স্বরবল্পমিতভাগীযদিত্যর্থঃ নচাত্ররূপাতি-দেশস্তলক্ষণাব্যাপনাৎ নচসংজ্ঞাতিদেশঃ তসাদাবিতি সপ্তম্যস্তত্বেনতস্থাপ্রসক্তেঃ নাপিশাস্তাতিদেশঃ সর্ব্বত্রেত্যাদে বিধ্যদর্শনাৎতাদৃশেপদেশাস্ত্রারোপাসম্ভবাৎনচায়ংকার্য্যাতিদেশঃকার্য্যান্তরবাধককার্য্যাভাবাৎ অতএবোক্তং গ্রন্থক তাদর্বনামবিহিতে তদাদে ছিবিভক্তাবিবত্যদাদ্য স্থাদিকার্য্যক্ষর্ত্তব্যমিতি। সর্ব্বত্তেত্যাদৌননিমিত্তাদেশকলং তথাপি যত্তেত্যাদৌকলসত্তান্ধাসঙ্গতিরিতি। দ্বিতীয়ো যথা যৎপ্রবৃত্তি-নিমিত্তৈক্যইত্যাদৌ ক্লীবলিঙ্গরূপবাধেন পুলিঙ্গরূপাতিদেশঃ কার্য্যাতিদেশেতু গ্রামণয়ে কুলায়েতি

স্থাৎ নভুত্নস্বনির্ত্ত্যাগ্রামণেকেলায়েতি অতএবস্বরেকিং গ্রামণিভ্যাং কুলাভ্যাম্অত্তন হ্রস্থনির্ত্তিরিতি প্রভূগান্ত । পুরুঁ দ্বাষিতপুংস্কাইত্যক্রম্পর্ট এবরপাতিদেশঃ নিমিত্তসংজ্ঞাশাস্ত্রকার্য্যাতি দেশস্ত্রহুদূরপ-রাহতস্তত্তলক্ষণাব্যাপনাৎ। তৃতীয়ো যথা বাঙবৎস্থনদীস্ত্রিয়ামিত্যত্রায়িসংজ্ঞাংবাধিত্বা নদীসংজ্ঞাতি দিখাতে নচনিমিত্তাতিদেশঃ তাদৃশেদূত্বয়োরারোপাসম্ভবাৎ নদ্যানিমিত্তয়ারোপাসম্ভবাচনাপি রূপাতি দেশঃ ব্রম্বেকারব্রস্বোকাররপবাধেনাপররপারোপাভাবাৎ নচশাস্ত্রাভিদেশঃ অগ্নি কার্য্যবাধেন নদীবিধ্যতি দেশাৎ নাপিকার্য্যভিদেশঃ তথাত্বেঙে ঐইতি নদীকার্য্যানন্তরং তদাদেশেতদ্বদিষ্টইতি স্থায়স্বীকারপক্ষে-বুদ্ধ্যৈ ইত্যাদো সন্ধিকার্য্যং বাধিস্বা জদ্ঙেঙ দিঙদ্স্গুণঃ স্মৃতইতি গুণপ্রদক্তো বুদ্ধয়ৈইতি প্রয়োগাপতেঃ অগ্নিসংজ্ঞাংবাধিত্বা নদীসংজ্ঞাতিদিশাতইতি মূলকুল্লিথিতবিরোধাচ্চ এতেন বাঙবৎস্থনদী স্ত্রিয়ামিত্যাদৌ কার্য্যাতি দেশ-চন্দ্রশেথরভট্টাচার্য্যেণোক্তঃ পরাহতঃ। তথা কন্দুকার্নোপরোক্ষাবদিত্যাদেচি পরোক্ষায়া বিভক্তেরিবব্যপদেশমাপুতইত্যর্থঃ নচনিমিত্তাতিদেশঃ পরোক্ষায়াবিভক্তেঃ প্রব্রন্তিনিমিক্ত মতীত \$ং তচ্চেদ্তি দ্বিশ্যতে তদানধাতোৰ্দ্বিব্চনাদিকং স্থাৎ তন্নিবন্ধনশ্বপরোক্ষাতিদেশস্থাভাবাৎ নিমিত্ততয়ারো-পইতি নিমিত্তাদেশোহপি ন সম্ভবতি কৃষ্ণুকানাবিতি প্রথমান্ততয়াগ্রহণাৎ পরোক্ষাসংজ্ঞাতি দেশএব তাৎপর্য্যাৎ নচরূপাতি দেশঃ কন্স্কানয়োঃ পরোক্ষারূপত্বাভাবাৎ নচ কার্য্যাতি দেশঃ কন্স্কানয়োঃ পরোক্ষাকার্য্যাভাবাৎ দ্বিবিচনাদিকংছিধাতোরেবকার্য্যং । অথপরোক্ষায়াং দৃষ্টং কার্য্যং কম্পুকানয়োরভি দিশাতে ইতিন তথাত্বেপ্রতীতি গৌরবং স্থাৎ কিঞ্চকার্য্যান্তরবাধোহপিনান্তি তথা অন্পরোক্ষেবর্জয়িছে-ত্যাদি শাস্ত্রাতিদেশোপ্যসম্ভবী প্রথমান্ত ত্বেনা প্রতীতে:। নমুদংজ্ঞাতি দেশোনসংজ্ঞাতোভিদ্যত কিং বলাহণেনেতিচেম কন্দুকানোপরোক্ষেস্তইত্যুক্তেতো পরোক্ষা বিভক্তীভবতইতি বিভক্তিত্বান্তদন্তশুলিঙ্গ সংজ্ঞানস্থাৎ সতিতুরতোতিয়াঃ পরোক্ষাতুল্যত্বেন লিঙ্গত্বং ন বিরুধ্যতে এবমেবত্রিলোচনচন্দ্রশেখরাদয়ঃ। গ্রন্থকুতাপুক্তেং বৎকরণাল্লিঙ্গত্বমিতি। চতুর্থো যথা পরেদ্যোজ্যোরপি গোবদ্বিধিং বিছুরিত্যাদৌকস্তচি দবাধেনবিধি প্রবর্ত্তনম্ অত্রনরূপাতি দেশসংজ্ঞাতি দেশোদ্যোজ্যোশব্দয়োর্গোরূপত্ব গোসংজ্ঞারোপাভাবাৎ নাপিকার্য্যাতিদেশঃ কার্য্যান্তরং বাধিত্বাকার্য্যারোপাভাবাৎ নাপিনিমিত্তাতি দেশস্তয়োর্গোত্বাপেস্থ কার্য্যনিমিত্ততারোপস্থচাভাবাৎ নিমিত্ততাচাত্রসপ্তম্যন্ততয়োপস্থিতস্থৈব। পঞ্মোযথা কর্মস্থভাবধাতুনাং কর্মকর্ত্তাভুকর্মবদিত্যাদৌ কর্মবৎ কর্মকার্য্যভুল্যকার্য্যভাগ্ভবতীত্যর্থ: নচাত্রনিমিত্তাতিদেশ: ক্রিয়াফল-শালিত্বং হি কর্মণোনিমিত্তং তচ্চকর্ত্তিগ্যাধাতুমভিযুক্তেনাপিনশক্যতে নহিগোত্বমশ্বেআধাতুং শক্ষোতিকশ্চিৎ নচরূপাতিদেশোহ্ সম্ভবাৎ নচসংজ্ঞাতিদেশঃ তথাসতি কর্ত্ত্বাংজ্ঞাবাধেন কর্ম্মণংজ্ঞাতিদেশেকর্মসংজ্ঞায়া নিত্যতাস্থাৎ নহিসংজ্ঞাপ্রব্রাকদাচিদপি নির্বাভবতি নচশাস্ত্রাতিদেশঃ কম্সচিদবাধেন তম্মতত্মাদত্রতু-কার্য্যান্তরবাধাৎ অতএবকার্য্যাতি দেশোহয়মিতি গ্রন্থকৃতাপুক্তেমিতি। বিকল্পভুকার্য্যাতিদেশস্থাদ্ বিধত্বস্থনহানিঃ। অথবা প্রাপ্তেবিকল্পস্থ নিষেধেহন্তর্ভাবাদপ্রাপ্তেবিধাবন্তর্ভাবাদফবিধত্বং টাদিস্বরেডু বা অম্বাতৃতীয়াসপ্তম্যোরিতিপ্রাপ্তয়োঃ পুকাঁ দ্ভাবাম্ ভাবাবিকল্পেন নিষেধান্নিষেধেহন্তর্ভবৃতি তথাচেঃ কীর্কেতি বিকল্পেন কীবিধানাদ্বিধাবন্তর্ভবতীতি এবমশ্যত্রাপি। নমু তথাপি নাইতিধন্থং সংজ্ঞাদিযুবিধেঃ প্রবেশা-হৈবং সংজ্ঞাদিপরীহারেণাপি কেবলশুবিধেঃ সম্ভবাৎ। অত্রাষ্টবিধন্ধং পূর্বসূত্রে ষড্বিধন্ধং প্রাপ্তং তত্রজ্ঞাপকস্ম পরিভাষায়ামন্তর্ভাবাৎ অতিদেশস্ম বিধাবন্তর্ভাবাৎ ষড্বিধত্বং। ৬॥

সংজ্ঞাং নিমিত্তং কর্ত্তারং পরি,মাণং প্রয়োজনং। প্রাগুক্ত্বাসর্বতন্ত্রণাৎ পশ্চাদ্বক্তান্ত্রবর্ণয়েং। ৭॥

সংজ্ঞামিত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

সংজ্ঞাদীনাং পঞ্চানামঙ্গজাত্তপুত্থাদোযুক্তইতি সংজ্ঞাদীনাং কথনস্থাবশশ্যকত্বমাহ সংজ্ঞামিতি। সংজ্ঞায়া অকরণে গ্রন্থস্যাব্যপদেশঃ স্যাদিতি সংজ্ঞাকরণং সংজ্ঞাচ প্রয়োগরত্বমালেতি। তচ্চপ্রস্তত্বাৎ জ্রোতেবতদ ভাবাদরণ্যপ্রলপিতবৎশাস্ত্রমনুপাদেয়ং স্যাদতঃ জ্রোতৃরূপ নিমিত্তসূচনং সচ কামরূপান্তর্গত রত্নপীঠাত্মকবিহারদেশাধিপঃ শ্রীশ্রীমল্লদেবভূপঃ নরনারায়ণপরনামা। শাসনং নিমিত্তবেন বক্তুং শক্যতে তথাপি প্রয়োজনত্বেনতস্যগ্রহণাৎ জ্রোত্বৈনিমিত্রমিতি। ক্র্তারমিতি। কর্ত্ত্ররূপাদানে গ্রন্থকরণক্ষমেণকৃতং নবেতি সন্দেহাৎশাস্ত্রস্যানুপাদেয়ত্বশঙ্কাস্যাদিতি বৈদব্যাসেন প্রণীত্রিত্যাদিবাক্যবৎ কর্ত্তিদিশআবশ্যকঃ সচদ্বিজকুলকমলপ্রকাশকৈকভাষ্ণুরমহামহোপাধ্যায় শ্রীপুরুষোত্তমবিদ্যাবাগীশইতি। তথাচ প্রসিদ্ধপণ্ডিতস্থগ্রন্থকর্তৃত্বেন গ্রন্থস্য স্থাইরচিত্তয়া উপাদেয়ত্বমা-য়াতি। পরিমাণমিতি। পরিমাণমিয়তাবচেছদঃ অপরিমিতে বস্তুনি গৌরীবভয়ভীতান্ প্রবর্ত্তিয়িতুমনধ্য-বসায়াতত্বপন্যাসঃ। যদ্যপি গ্রন্থকৃতামাদ্গ্রন্থেসূত্রাণাং পরিমাণং নোক্তং তথাপ্যেকবিংশতিবিভাসাত্মক কুদন্তগ্রন্থান্তর্গতানিকারিকাবলীমধ্য প্রথিতানি চতুর্কিংশত্যধিক সপ্তবিংশতি শতসূত্রাণি, এবং র্ভাবুক্তানি দাবিংশতি সূত্রাণি 'মলিত্বাষট্ চত্বারিংশদধিক সপ্তবিংশতি শতস্থ্যানি সূত্রাণ্যত্রসন্তি তত্র পঞাধিক সপ্তবিংশতিশত সূত্রানামধ্যেকানিসূত্রৈঃ সহকানিচিছ্নভিভিঃ নহামুফুবাদিনানাছন্দোবদ্ধতয়া কারিকারপাণি পাণিঅমুদারিতয়োক্তাত্যেকচয়ারিংশৎস্থ্যানি ছন্দোরহিতানি দূত্রাণি এতদেবগ্রন্থস্থ পরিমাণং বোধ্যং ভদবধারণাদেবপ্রবৃত্তিঃ স্থাদিতি ততুক্তেরাবশ্যকত্বমিতি। প্রয়োজনমিতি। ফলমিতিযাবৎ তস্থাপ্রবণে শাস্ত্রস্থ হেয়ত্বশঙ্কয়াতত্ত প্রবৃতির্ম স্থাদিতি ফলোদেশঃ ফলঞ্চ প্রথচুষ্থাভাব হেকুতয়াত্র প্রতিভারে পরিধত্ত রত্নমালামিতি। প্রজ্ঞা নবনবোন্মেষশালিনীপ্রতিভোচ্যতে ক্ষৃর্ত্তিরিতিয়াবৎ তথাশব্দাসুশাসনং তথাসৎপ্রয়োগগ্রহণং তথা ব্যুৎপত্তিশ্চ সাচ ব্যাকরণশাস্ত্রজন্মসক্ষারঃ। নচাত্রপর্য্যস্থাজ্যং শব্দানামানস্ত্যাত্ত্তদর্থাকুশাসনস্থ পরিমিতেন সূত্রেণাশক্যকরণীয়হাচ্ছাত্রেণালমিতি প্রায়শঃ শাস্ত্রাণাং ম্বমতি প্রকর্ষপর্যন্ত পরিগণিত শব্দব্যুৎপাদকত্বং নতু নিঃশেষশব্দব্যুৎপাদকত্বং তছুক্তং শব্দাকের গতাবস্তং তাবপীন্দ্রার্হপাতীইতি। তত্মাদিহাপি প্রদিদ্ধশব্দদাধনায়শিষ্টব্যবহার ইত্যারস্তোপ-স্বরূপতস্ত পারস্পর্য্যেন ধর্মার্থকামমোক্ষাঃ প্রয়োজনং শাব্দবুৎপতে শব্দোপনিবদ্ধেভ্যোধর্মাদি শাস্ত্রেভ্যোহধ্যয়নাদিনার্থপ্রাপ্তাহমুষ্ঠানবিশেষাত্তৎ দিদ্ধে। সর্ব্বতন্ত্রাণাং সর্ব্বশাস্ত্রাণামিত্যর্থঃ। মেদিনী তন্ত্রং কুটুম্বকৃত্যেন্তাৎ সিদ্ধান্তেচৌধধাত্তমে। প্রধানেতন্ত্রবাপেচ শান্তভেদেপরিচ্ছদেইত্যাদি। অত্রদর্বেতি বিশেষণাৎ শাস্ত্রমাত্রমূচ্যতে। প্রাক্ প্রথমতঃ সংজ্ঞাদিকমুক্ত্রাপশ্চাদ্বক্তাগ্রন্থকারোই সুবর্ণয়েদ্ গ্ৰন্থং ব্যাচক্ষীতেতি পদযোজনা। ৭॥

উপোদ্ঘাতঃ পদক্ষিব পদার্থঃ পদবিগ্রহঃ। চালনাপ্রত্যবস্থাচ ব্যাখ্যাতন্ত্র-স্যবড্বিধা। ৮॥

পদচ্ছেদঃ পদার্থোক্তির্বিগ্রহোবাক্যযোজনা। আক্ষেপস্থসমাধানং ব্যাখ্যাসূত্রস্যপঞ্চধা। ১॥

উদান্ধতিঃ পদক্তিঃ পদার্থানাৎ বিবেচনং। তদ্ধাণাং ত্রিবিধাব্যাখ্যালি-শুনাং শীস্ত্রবোধনী। ১০॥

উপোদ্যাতইত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

সূত্রাণাং ব্যাখ্যানক্রমমুদ্দিশতি উপোদ্যাতইতি। উপোদ্যাতঃ সূত্রপদসমুদায়পাঠঃ যথা অকারাদিক্ষকারান্তাবর্ণমালাহমুরর্ত্তভইতি। পদং পদবিচেছদঃ পদবিভাগইতি যাবৎ যথা অকারাদি-ক্ষকারান্তেতি প্রথমৈকবচনান্তং বর্ণমালেতি প্রথমৈকবচনান্তম অমুবর্ত্তইতি বর্ত্তমানাত্মনেপদস্তৈকবচ-নান্তং। পদার্থঃ পদারামর্থকথনং যথা অকারাদিক্ষকারান্তা অকারবর্ণাদিক্ষকারবর্ণান্তা বর্ণমালা বর্ণশ্রেণিঃ অনুপূর্ব্বর্থাতুরধিকারার্থঃ। পদবিগ্রহঃ পদানাং শরীরং তচ্চদমাসবাক্যাদিকং পদানাং বিস্তরাদিকরণ-মিতি যাবৎ। বিস্তারোবিগ্রহোব্যাসঃ সচশব্দস্থবিস্তরইত্যমরঃ। যথা অএবাকারঃ বর্ণাৎকারঃ তদ্ধিতে স্থ্রুকি অকারদাপ্রথমান্ততা পশ্চাদকারআদির্ঘ্যস্থাঃ এবং ক্ষকারোহস্তোযস্থাইতি বহুত্রীহিঃ ততঃ কর্মধারয়ঃ তত্ত্বাপ্রত্যয়স্ততঃ প্রথমৈকবচনেদের্লোপঃ শ্রদ্ধায়াইতি সিলোপঃ বর্ণানাংমালাবর্ণমালেতি ষষ্ঠীদমাদানন্তরং প্রথমৈকবচনেপূর্ববৎসাধ্যম অনুপূর্ববর্তু প্রবর্তনে রংধাতোব্বর্তমানায়ান্তেবিভক্তো ভুবাদিস্বাৎ কর্ত্তর্যানিগুণিক্যস্তক্ষেতিগুণঃ রুচাদিস্বাদাস্থনেপদং। চালনাবাক্যযোজনাসাচপদানাং পরস্পরসম্বন্ধঃ যথা বর্ণমালাবর্ণশ্রেণিঃ অমুবর্ত্ততে অগ্রেহ্ধিকুরুক্টে কীদৃশীঅকারাদিক্ষকারান্তেতি। প্রত্যবস্থাদোষপরীহারঃ পূর্ব্বপক্ষসমাধানমিতিযাবৎ যথা নমু অকারাদিক্ষকারান্তেতি কথমিতি পূর্ব্বপক্ষস্ত তদ্বয়েহসুক্তেহনধ্যবসায়াপত্তিঃ স্থাদিতি সমাধানং নসুকথং ক্ষকারপাঠইতি পূর্ব্বপক্ষশু তদসুক্তে পাণিনীয়বর্ণক্রমোপস্থিতিঃ স্থাদিতি সমাধানং গ্রন্থকর্ত্তেবৈতদমুপদং বক্ষ্যতি। কথমিতি পূর্ব্বপক্ষস্তক্ষকারপাঠেন পাণিনীয়বর্ণক্রমস্তনিরাদে২পি স্বকপোলকল্পিতাকারাদিক্ষকারাম্ভবর্ণ-নিরাসপূর্ব্বকন্থপ্রসিদ্ধবর্ণশ্রোণ লাভার্থংমালেতি পদমিতি সমাধানামতি স্থপ্রসিদ্ধবর্ণশ্রোণশ্চ অ আ ই ঈ উ ঊ ঋ ৠ ৯ % এ ঐ ও ঔ অং অঃ ক খ গ घ ঙ চ ছ জ বা ঞ ট ঠ ড ঢ ণ ত থ দ ধ ন প ফ ব ভ ম য র তন্ত্রস্থসূত্রস্থব্যাখ্যাষ্ড্বিধাভবতীতি শেষঃ। ল ব শ ষ স হ ক ইতিবর্ণসমুদায়ঃ। সূত্ররূপশাস্ত্রমূচ্যতে প্রস্তুতত্বাৎ।৮॥

अमराज्य महे जामिनृ ज्वा था।

উক্তসূত্রসমানার্থমপরঞ্চসূত্রং যথা পদচ্ছেদইতি। অস্তার্থঃ পূর্ববংকিন্তুপাঠং বিনাপদচ্ছেদাসম্ভবা-ছুপোদ্যাতস্থতত্ত্রবাম্বর্ভাবইতি পঞ্চবিধত্বমূক্তং। ৯॥

উদাহ্বতিরিত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

অপরঞ্সূত্রমাহউদাহ্রতিরিতি। উদাহ্রতিঃ পাঠঃ সচ কণ্ঠতাল্লাদ্যভিঘাতানন্তরং সূত্রবর্ণানাং

পরিভাষাস্ত্রাণি।

সূত্রার্থোবর্ণ্যতে যত্রপদৈঃ সূত্রান্স্কারিভিঃ। স্বপদানিচ বর্ণাস্তেভাষ্যং ভাষ্যবিদোবিদ্রঃ। ১১॥

সূত্রএবছিতৎসর্বং যদ্ধতৌ যচ্চ বার্ত্তিকে। সূত্রং যোনিরিছার্থানাং সূর্বং সূত্রেপ্রতিষ্ঠিতং। ১২॥

ব্যক্তীকরণমুচ্চারণমিতি যাবং। পদক্ষতিঃ পদচ্ছেদকরণং তদ্মিন্ সতি ঝটিতি কার্য্যিনমিত্তাদীনা-মবগমঃ। পদানিচার্থান্চ তেষাং বিবেচনং তত্ত্রপদানাং বিবেচনং বিগ্রহসমাসপ্রত্যয়াদিনানিষ্পাদনং তদ্মিন্ সত্যেবঝটিত্যর্থাবগমঃ অর্থানাং বিবেচনং কখনং পদার্থানাং প্রকৃতিপ্রত্যয়াদ্যসুসারেণ ব্যাখ্যানঞ্চ তেষাং পূর্ব্বপক্ষখণ্ডনবিচারশ্চইতি ত্রিধাব্যাখ্যাতন্ত্রাণাং সূত্রাণাং কীদৃশীশিশ্নাং বালকানাং শীদ্রবোধনী ঝটিতি বোধজনিকেত্যর্থঃ। অত্রপদার্থানাং বিবেচনমিত্যনেনপদার্থোক্তিবিগ্রহ্বাক্যযোজনাপূর্ব্বপক্ষ-সমাধানানিপ্রাপ্তানীত্যতঃ পূর্ব্বসমানার্থকমেতং। ১০॥

সূত্রেত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

ভাষ্যলক্ষণমাহসূত্রার্থ ইতি। যত্রসূত্রানুকারিভিঃ সূত্রানুকুলকারকৈঃ পদৈঃ সূত্রার্থোবর্ণ্যতে তথা স্থপদানিচ সূত্রাতিরিক্ত গ্রন্থকারোক্তনিজপদানিচবর্ণ্যতে ভাষ্যবিদঃ পণ্ডিতাস্তদ্ভাষ্যং বিহুর্জানস্তীত্যর্থঃ। খত্রযাছক্ষসন্ত্রাৎ তদিত্যধ্যাহর্ত্ব্যং। ১১॥

সূত্রএবেত্যাদিসূত্রব্যাখ্যা।

সূত্রবৃত্তিবার্ত্তিকানামন্তোন্তবিরোধদ্যণং পরিহরন্ধভিদধাতি সূত্রএবেতি। সূত্রস্ববচনয়োর্ব্যাখ্যায়িকার্ত্তিঃ ভাষ্যসমানার্থা বৃত্তেভিশ্ববার্ত্তিকম্ অধ্যাত্মাদের্ভবার্থেলাদিতীকণ্ তথাহি উক্তান্মক্তর্কক্তব্যাখ্যাবিশিষ্টং বার্ত্তিকমিতি বৃত্তে যত্নক্তং বার্ত্তিকেচ যদ্বিহিতং তৎসর্ববং সূত্রএবসূত্রান্মগতমেব হি যন্মাদিহ
বৃত্তি বার্ত্তিকয়োরর্থানাং প্রমেয়াগাং সূত্রং যোনিক্রৎপতিস্থানং সূত্রদারৈবতয়োঃ প্রমেয়াগাং প্রকটনং
ভবতীতি ফলিতার্থঃ তন্মাৎ সর্ববং সূত্তেপ্রতিষ্ঠিতমিতি পূর্ব্বোক্তার্থ দৃটীকরণার্থ মুপসংহারবচনমতোন
পৌনক্রক্তামিতি। য়॥ শ্রীশ্রীমৎকমলেশ পাদকমলং নম্বামলং কোমলৈঃ প্রব্যক্তার্থপদৈরিমাং ক্রচিতবান্
শ্রীদিদ্ধনাথান্তিয়ঃ। টীকাং সূত্রবিবোধনীং শরধরাদন্তীন্দুমেয়েশকেমেবং যাতি বিভাকরেহরমুথব্রক্ষপ্রমাণেদিনে। য়। য়। ইতিকোচবিহারদেশনিবাদি ধীরপ্রবারানন্দনাথাত্মক্ত শ্রীদিদ্ধনাথশর্ম বিদ্যাবাগীশ
বিরচিতাসূত্রবিবোধনীটীকাখ্যপরিভাষাসূত্রব্যাখ্যা। য়। য়॥ ১২॥

व्यथमविन्यामीयमः खाकातिकावली।

জননীচুচুকলগ্নং বদনং বনমালিনঃ কিমপি। চুম্বদিবামুজ কলিকাং নির্মালবিধুমণ্ডলং জয়তি। ১॥ অকারাদিক্ষকারান্তাবর্ণমালানুবর্ত্তে। তস্তামকারাদৌকারং যাবদ্বর্ণাঃ স্বরাঅচঃ। অকারাদয়-ষ্ক্রদন্তাঃ সমানাঃ স্থার্কশ্চতে। সম্থানাকোসবর্ণঃ স্থাৎ সাবর্ণ্য মু৯বর্ণয়োঃ। অ ই উ ঋ ৯ হ্রস্বাঃ স্থার্ল্য-বশ্চৈকমাত্রকাঃ। অন্যেম্বরাদীর্ঘসংজ্ঞা জ্ঞাতব্যান্তেদ্বিমাত্রকাঃ। গানাহ্বানক্রন্দনেষু স্বরাস্ত্রিমাত্রকাঃ প্লুতাঃ। অত্যোহ্যসন্ত্রমদীর্ঘেষরমাত্রসকুত্রচিৎ। এদৈতোরিরোদোতোরু ব্রমিকুদিক্ষাকারৈঃ। সংযোগস্তত্ব্বং গুরুত্ৎপ্রয়োস্তবা। সানুষারবিসর্গঞ্দীর্ঘঞ্চ গুরুসংজ্ঞকং। ইকারাদ্যাবদীকারং একারাদিচতুর্ব্বর্ণাএচঃ সন্ধ্যক্ষরাণিচ। ককারাদিহকারান্তা ব্যঞ্জনানিহল চ্চত। নাম্যুকারান্তইক্সভু। কাদিমান্তাঃ পঞ্চপঞ্চাবচ্ছিল্লাবর্গসংজ্ঞকাঃ। বর্গবর্ণাঃ স্পর্শসংজ্ঞাঃ কথিতান্তন্ত্রবেদিভিঃ। প্রথম দ্বিতীয়-বর্ণাঃ শ্বদাশ্চাঘোষদংজ্ঞাঃ স্থাঃ। যে২ন্সে২ঘোষালাদ্যাস্তেঘোষাঘোষণস্তোহপি। জ্ঞেয়াযরলবো-হন্তস্থাঃ পঞ্চমাঅসুনাদিকাঃ। অন্তস্থ পঞ্চমান্হিত্বাকাদিবর্গাধুটঃ স্মৃতাঃ। শিট্দংজ্ঞকাঃ শ ষ দ হা-এতএবোশ্বসংজ্ঞকাঃ। একোবিন্দুরমুস্বার স্তিলবদার্দ্ধটন্দ্রবং। উদ্ধাধঃস্থং বিন্দুযুগং বিসর্গইতিগীয়তে। অনুস্বারোবিদর্গশ্চস্বরোজ্ঞেয়োহলাবপি। প্রত্যয়থ্য স্বরাদন্যোহর্ণঃ স্থাৎপ্রত্যয়যস্তব্ধ। সম্বব্লিঙ্গদতিঙ্-ধাজোরর্থানুভাবকঃ পদং। ইগ্যুগ্মানাং গুণাএওঅরলঃ স্থারনুক্রমাৎ। আ ঐ ঔ আর আল্ ঐ ঔ স্বর্যু-থোষুর্দ্ধয়ঃ। স্বর্যুণ্ যবরস্থানমিত্নদৃৎসম্প্রদারণম্। প্রাক্সব্রোচ্চারণীয়োঽপিসম্বরোহল্পরস্বরৈঃ! ব্যঞ্জনং পরগামিস্থাদ্যথাবাক্পাবনীদতাম্। যথাক্রমং স্বরহলোভেদনীয়াঃ প্রয়োজনাৎ। #। ইতিবর্ণ-मःखाकातिकवली। #।

প্রথমবিন্যাসীয় সন্ধিকারিকাবলী।

দীর্ঘং সবর্ণঃ প্রায়োপঃ শকদ্ধাদের্ব্যবস্থা। অত্রথাতোহেমন্ত বদন্তো শক্দ্ধাদীসীমন্তঃ। কেশ-কোশলেন্ত্রীণাং সমার্দ্ধপুরুষাঅশনান্তাবা। অনিযোগেএবশব্দাৎ। ওম্যাং যুক্ত্যেচিচাবর্ণ লুগিহোমিতি সোজ্জ্বতা। গুণাশ্চাবর্ণাদ্রদ্ধিঃ স্থাদ্ভতকস্থতবাদ্মমাৎ। বৃদ্ধিশ্চিচাম্বকারস্থাতোঃ প্রাদেরবর্ণতঃ। বা লিঙ্গধাতোঃ সমাদেতৃতীয়য়াঋতস্থতু। ঋণস্থ প্রগবাদিত্যোম্থাত্বে ছধমোত্তমাৎ। ঈরেরণাঃ স্বাদ্ধাতোঃ প্রাদৃহিস্থান্তথাক্ষতঃ। অকাম্বকারেহ্রমঃ স্থাৎসদ্ধাতাবশ্চপাক্ষিকঃ। প্রাদ্যকাং নিত্যসমাদেচন। ভকারেহপীত্যেকে। ধাতৃনামেদেতোরনিণেধাঃ প্রাদ্যবর্ণস্থা। লোপঃ কার্য্যোলৈঙ্গিকধাত্বেদোতোক্রিকল্পেন। প্রশব্দস্থানাব্যারাঃ পরস্থয়োঃ। সমাসমধ্যাবর্ণস্থ গুঠোছোলোপনং নবা। ইবর্ণোযম্বরণাব্যুভবর্গারাক্রমান হকাং পদান্ত্রসংস্থানাং হ্রমঃ সদ্ধির্বিসদ্ধিচ। প্রাদীকাং নিত্যসমাদেচন। অন্ধং জাতীপ্রত্যয়স্থা সমাদেগুদিকেপরে। কুরুটাগুং ম্বগপদং কাকপক্ষইমাদিশঃ। ইগ্ভোবাযবরো-ব্যাড়িমতা ভ্রাদ্যোগণাঃ। ইবর্ণোবর্ণরাদ্ধাতোরমুকারস্থবেয়ুর্বো। একারেকারয়োঃ স্থাতাময়া । ব্যোন্নারকো। ওঅবস্থাদেগাঃ সমাসানন্তেগববিসদ্ধিবা। অক্ষেন্দ্রয়োগ্রোকারস্থাবমাদিশেৎ। অন্নানীনাং বাপদান্তয্বেল্লাপঃ সদ্ধ্যভাবরূৎ। এদোদন্তপদাদস্থ লোপত্তহ্মীপটোহর্পর। ইকারাকার্যান্ত্রাপেং কাচিৎ কংছান্দগংবিত্রঃ। *। ইতিস্বরসদ্ধিকারিকাবলী। *।

ર

দ্বিচন্মীদূদেস্থাৎ সন্ধিবিরোধিষতঃ পরত্রাপি। ওদস্তাস্ত্রনিপাতা অ ই উ আচকেবলাস্তম্বৎ। অদুদোনিস্পান্নং যদমীতিপদং হে প্লুতাশ্চৈবং। ইহহিমণীবাদীনামমুকেইত্যস্তচেষ্যতে সন্ধিঃ। সম্বুদ্ধিসিদ্ধমোদন্তমিতোবা হে প্রভোইতি। কচিৎপ্লুতাশ্চসন্ধেয়াশ্চিনুইদং চিম্বিদং যথা। ॥ ইতিষ্বসন্ধিনিষেধকারিকাবলী। ॥ ॥

প্রথমানাং পদান্তানাং তৃতীয়াঃ স্বরঘোষয়োঃ। তৃতীয়ানাং পঞ্চমাঃ স্থাঃ পঞ্চমে বাঙ্ময়ংমধু।
প্রথমানাং পঞ্চমাবা বাঙ্ম্মী বাঙ্মধুপমা। স্বরপাঠক্রত্ববরেষন্তাৎ প্রথমাৎ পরস্বোবা। ছম্প্রামোতি
শকারঃ কাপিককারাল্লকারস্থঃ। বাক্তৃত্বুভারন্তভগাবপত্যেবলিরাগয়োঃ। ঙণাভ্যাং কৃক্টুকোস্থাভাং
শবসাদীবিভাষয়া। তৃতীয়প্রথমাভ্যামাহস্তম্বর্চতৃর্বতাং। তদেশিলচটবর্গেরু তান্ চং শেছাপ্রসঙ্গতঃ।
মুস্বাৎ পরস্বাঙণনাঃ পদান্তাম্মিভবন্তাচি। সমাদেপ্রায়শোন্দিরসমাদেহপি কৃত্রচিৎ। নোন্তশ্চছার্কিদ্পূর্ক্রং শং টঠোঃ বং তথোস্তমং। বাকানোনঃ কানিপরেন্নোনঃ পেপরেতথা। প্রশানাদের্মকারস্থ
ক্রুশ্চছোক্টিরয়ন্তার্গঃ। নম্পলেপরতোলঃ স্থাদ্যথাভবালিলেখতৎ। জ্বাঞ্ছের ক্রুকারঃ স্থাৎ ক্রন্টোবা
শে পদান্তরঃ। সেপদান্তামকারাঘাটালিঙ্গান্তাক্রতাসমঃ। ভটণেরু নকারস্থণত্বং ভবতিণাদিপ। মকারম্পপদান্তস্থানুরাব্যপ্রনেপরে। সমাদেতুম্সমোর্ম্মসলোপঃ কানেমনস্থপ। অবশ্যনোব্যক্তের্যু
সমস্ত্র বা হিত্ততে। অনুষারোবর্গবর্ণেবাস্থান্তর্বর্গপঞ্চমঃ। সম্রাজোন্মানানুষারোমন্যবলম্বহুকারে।
মন্যবলাম্বালভন্ত্যুস্বারো্যবলেম্বত্যুবলামা। বিন্দুর্ধু ট্যপদান্তম্মোর্ক্রের্গপঞ্চমঃ। কিবন্তস্থানুনাবিদ্বর্শ্বারোণ ভবত্যপি। চটবর্গে বিন্দতি প্রাক্তবর্গশ্চটবর্গযুক্। যকারাচ্চটবর্গঃ স্থাৎ ষষ্ঠমিন্টং বপুক্ররং। ২ ॥ ইতিব্যঞ্জনদন্ধিকারিকাবলী। ২ ॥

বিদর্জনীয়স্থচছোঃ শকারউদ্ভাবনীয়স্টঠয়োঃ ষকারঃ। তথোরশিট্সংস্থিতয়োঃ সকারোযথা তমালস্তরুণস্থসংস্থঃ। শিটোহনাদিকথোজিজ্বামূলীয়ঃ স্থাদ্বিভাষয়া। শিটোহনাদিপফোর্কাস্থাত্রপ-শ্বানীয়সংজ্ঞকঃ। শ্বসেষু বিদর্গতা শ্বদাঃ স্থ্যবিজ্ঞাষয়া। উদঃ স্থাস্তন্ত্রাঃ দোলুগুত্থাতোত্তস্তকো-সবর্ণে ধুটি ধুড্লোপো ধূট্ত্রয়স্থ ব্যবস্থয়া। আৎপরস্থ বিদর্গস্থ উকারোহকারঘোষয়োঃ। কাপ্যাকারে২পু্যুকারঃ স্থাৎ কুরবোত্মহিতং যথা। অশুস্বরে সন্ধ্যুহেভুল্লোপোভবতি য*চবা। আকারা-ষ্টোভগোহঘোভ্যম্বর্থবদ্তাঃ স্বরেপরে। বিদর্গঃ পূর্ববল্লোপং যদ্বা ঘোষেতু লোপভাক্। এতত্তদোরেষ-সাভ্যাং নঞ্ সমাসাদৃতেহলি। তদ্বদিস্পলোপঃ স্থান্নভবত্যপি কুত্রচিৎ। নামিপশ্চাদ্বিস্গস্থ রেকঃ স্থাৎস্বরঘোষয়োঃ। অনামিনঃ পরস্থাপিরস্থানপ্রভবস্থতু। অহ্ণোর্ত্তাবরেফেবাস্বরহর্গী ধুরাং পর্তো। প্রচেতসোরাজনিবা প্রদিদ্ধৈরবান্তদূহতাং। রোরেলোপোধাতুটোটে তৎপূর্ববিশ্রচ দীর্ঘতা। আঙ্ মাঙ্ স্বরাৎ পরশেস্তু গুণীর্ঘাৎ পদান্ততস্ত্রবা। যবরোদ্ধিন্থিতমশিড্ ব্যঞ্জনম্বা দ্বিরিষ্যতে। স্বরাৎপরহরেফাভ্যাং পরস্থং দ্বিস্তদেববা। হরিপুরিভ্যাং পরশ্চন্দ্রেপরেশুভৃষিনামনি। আশ্চর্য্যমিত্যদ্ভুতে২র্থে গুরাবাচার্য্য-উচ্যতে। গোশকাৎপদশকেষুট্ মানাদেবিত দেবিতে। সম্পরিভ্যাং কৃঞঃ প্রাক্ স্থট্ সংস্করোতি 🖊 পরিষ্কৃতং। উপাৎপরঃ কৃঞঃ প্রাকৃ স্থট্ প্রতিযত্ত্বে বিভূষণে। সম্বন্ধমাত্রেবৈকৃত্যেপদাধ্যাহরণেহপিচ। ছেদেকিরত্যাদিরুপাদ্ধিং সায়াস্ত প্রতেরপি। অপাদ্ধর্যান্নবাসেযু পশুপক্ষিশ্ব কর্তৃরু। পরাক্তাস্তোহক্ষান্তরোঃ হুট্ পরাবরাপরাৎপরে। হুট্ সাতত্যে তচ্চ ভূয়ঃ সহচারক্রিয়াম্বয়ঃ। অভ্যোহ্যাদেবিভক্তীনামাম্বা স্থাৎ স্ত্রীনপুংসকে। নিপাত্যন্তে কৃত হুডাগমাঃ পারস্করাদয়ঃ। আস্পদং বিষয়েপ্রোক্তং ততোহম্বত্রা-

পদং বিদ্য়। কুস্তম্ব ক্ষাদ্ধান্তাকং ফলং তদ্বৎ কু সুস্কু । তদ্বহুটাং করপত্যোশ্চের দেবত য়োস্তথা। মস্করঃ কথিতোবেণো পরিব্রাজিতু মস্করী। পৃষোদরাদয়োবর্ণবিকারনাশনাদিভিঃ। লক্ষণৈরে পিপদ্ধায়ে শব্দার ঢ়াই হৈবতে। বিজ্ঞাতব্যালিঙ্গ স্থাদয়োলোকপ্রসিদ্ধিতঃ। ছন্দসিসর্বেবিধয়োবিজ্ঞাতব্যা বিক্রেন। বহুলং ব্যতয়মাহুঃ সোপি স্থপাং স্থপিঙাং তিঙ্চ। প্রকৃতেঃ প্রত্যয়ত্যাপি সম্বন্ধনিয়মম্বিনা। বর্ণসংজ্ঞানুবন্ধীয়ঃ কার্য্যঃ সদন্ধিকচ্যতে। বিলম্বিতোচ্চারণেতু সন্ধ্যভাবঃ কচিন্তবেৎ। ॥ ইতিস্থিবিত্যাসকারিকাবলী। ॥।

দ্বিতীয়বিত্যাসীয়স্বরাস্তসাধ্যকারিকাবলী।

শব্দোহর্থবাল্লিঙ্গসংজ্ঞোবিভক্তি ধাতুবর্জিতঃ। শব্দাসুকরণে ধাতুবিভক্ত্যোল্লিঙ্গসংজ্ঞকে। এধা-দয়োধাতবঃ স্থাবিভক্তী স্বপ্তিঙো স্মতে। বিভক্তিতদ্ধিতাখ্যাত কৃতশ্চ প্রত্যয়ামতাঃ। লিঙ্গাৎ পরাবি-ধীয়ন্তেদপ্তৈতাঃ স্থাকিভক্তয়ঃ। প্রথমাদ্যভিধানাস্তাবচনৈঃ স্থ্যক্তিভিন্তিভিঃ। আসাম্বিধাননিয়মঃ পুরস্তাদ্-ভিধাস্যতে। প্রক্রমতোনাম্বাস্থ্যস্তাস্থপ্যেক দ্বিবহুবচনানি। বাচ্যেষেক দ্বিবহুষু কার্য্যাণ্যেততিঙাসদৃশং। আত্মন্তাদরণীয়েচ একত্বেহপি বহুত্ববং। বন্দামহেপদদ্বন্দ্বং ভবতাং মহতাং বয়ং। ঘুটঃ স্তোজসমৌ স্ত্রীপুংসয়োঃ স্থ্যঃ শির্মপুংসকে। আমন্ত্রিতে সিঃ সম্বুদ্ধিরুপান্ত উপধোচ্যতে। আপ্রত্যয়ান্তশব্দাঃ শ্রদাসংজ্ঞাঃ স্থ্যরিত্রদগ্নিঃ। স্ত্রীলিঙ্গাবীদূতোধাত্বনবয়বে নদীসংজ্ঞো। লোপ্যোহসুবন্ধঃ সোহস্তস্থ বিদর্গোহর্ণবিরাময়োঃ। রেফশুতু পদান্তশুনাগ্রেস্থাঃ ধণদন্ধয়ঃ। লিঙ্গাধিকারোযবিধোপ্রতায়শু পরিগ্রহঃ। সামান্যগ্রাহকাভাবে বিভক্তিরনুবর্ত্তে। অদন্তাদিক্রমেণাত্রশব্দানাং সাধ্যমূচ্যতে। অকারাদমোহকার-লোপঃ শদান্টাইনভ্যাম্যকারস্থাএস্থভোঃ স্থাৎ। অকারাদ্ভিদৈস্ঙে অয়স্থাৎঙদেরাৎঙদঃ স্থোভবত্যোদি যুক্ আম্যুক্ ভাৎ। দেল্লেপিঃ শ্রদ্ধায়া ঔরীভাদন্তএটোদোঃ। ঙেঙদি ঙদ্ ঙীনাং ঘৈযাভাদ্যামো-সুরামিস্থাৎ। ব্রস্থাৎসমুদ্ধিলোপোহস্মিন্ শ্রদ্ধায়া অন্তএভবেৎ। অদম্বাদেস্তলন্তস্য বাঙোচেত্বদৃতাং গুণঃ। জরায়াজরসাদেশঃ পাক্ষিকঃ প্রত্যয়স্বরে। নপুংসকাদ্বাস্যমোরম্ যথাতিজরসংকুলং। অমো-লোপশ্চ কেষাঞ্চিন্মতেহস্ত্যতি জরঃ কুলং। অঘুট্ স্বরেষু ধাতৃনামালোপোহন্মস্যচ কচিৎ। সংজ্ঞোপ-সর্জ্জনেহিত্বা বিশেষার্থব্যবস্থয়া। সর্ব্বাদ্যাঃ সর্ব্বনামানিচত্বারিংশৎসমীরিতাঃ। অকারান্ত সর্ব্বনাল্পঃ পরস্য জসইর্ভবেৎ। ঙেম্মৈ ঙদেঃ স্মাৎ ঙিস্মিন্ স্যাৎ স্বরাস্তাদাম আদিহঃ। সমঃ সমস্তেহস্তরস্ক বাহার্থে পুর্য্যধোহংশুকে। পূর্বাদ্যোহ্বধিদাপেক্ষঃ স্বমজ্ঞাতিধনার্থকং। অল্লাদের্জ্জদ ইঃ পক্ষে পূর্ববাদেঃ স্থাৎ স্মিনাবপি। চরমপ্রথমাৎস্মৈবাতীয়ান্তাৎ স্থাৎ স্মিনাবপি। অসাকারস্যসর্বাদের্য্যে-তীয়াস্ত্রস্য পাক্ষিকঃ। দ্বন্দ্রেতু সর্কনামাস্তাৎ পাক্ষিকোজসইর্ভবেৎ। জস্ কার্য্যাদিতরৎ সর্কনাম-কার্যান্নবিদ্যতে। তথাতৃতীয়াসমাসেহসমাসেচ তৃতীয়য়া। দিকু শব্দানাং বিদিশ্যর্থে বহুত্রীহোবিভা-অগ্নিভ্যামিছতে ভাতামোকারভেকুনোশদঃ। অমাদেরভ লুপ্ টানাপুং দিদপ্রাক্ষরোঙিরো। আমীকুনাগমোজস্ঙেঙদিঙদ্ হল্ডণঃ স্মৃতঃ। স্ত্রিয়াং শদোনোবিদর্গোবাঙৰ হু নদীস্ত্রিয়াং। সথে স্থীন্ স্থানামিত্যগ্নিকার্য্যং নচেতর্ব। সিযুক্তস্ত স্থাকারস্তাত্বং ঘুট্ট্যায়মাদিশেব। উকারঃ স্থান্ ওসিওসোরকারস্ত ঙিরোভবেৎ। অনমাদেপতেফাদোদাধ্যমিষ্টং দখেরিব। অধাত্বীকারতঃ দেল্লুপ্ নদ্যাত্মশদোরলুপ। ঙে ঐ ঙিদ ঙদোরস্থাঙেরাম্ ষষ্ঠ্যামিমুর্ভবেৎ। হ্রস্থঃ সম্বুদ্ধাবধাতোঃ সম্বুদ্ধিল্লু প্যতেততঃ। প্রকৃতিবদিষ্টং পুংস্থাপিকিপ্ তদ্ধিতলুপ্ সমাদেষু। দেহিকুমার্য্যৈ পুংদেহুজেয়স্তৈ নরায়থরকুট্যৈ। অবিশেষবিধাে পুংদি- সমানোহগিবদম্শদোঃ। যথাবাতপ্রমীমশ্বং পশ্যবাতপ্রমীন্ মুগান্। ঋকারআসিসহিতো ভিষুটোরর্
শত্ব ততঃ। স্ত্রিরান্তৠন্ভদেউদস্প্রমুসমানিৠ। সমুদ্ধৌস্থাছত্ত্রীহোমাতৃশ্বাতঃ স্বতস্ততো।
নৃশব্দাদামিৠণ পক্ষেত্র স্থানৃণাং নৃণামিতি। অনিপাতভূচ্ত্রনন্তস্বস্রাদেঘু ট্যরারসো। ঘুটিস্ত্রিরামপি
কোন্টোস্তন্ ভূচ্টাদিস্বরেত্রবা। সভাের্ক্রপেটিরেরাঃ স্থাদেরারাএবমাদয়ঃ। গোরোদোঘুটাম্ শসোরাওতোঙ্গিঙদোরলুর্। একারাচ্চপরেদ্যোর্জ্যারপি গোবদ্বিধিং বিহুঃ। এদোদ্যাং সম্বুদ্ধিলোপোয়থা
হেদেবিরেস্ততো। স্ববস্তোক্তসমাদেনবিনৈবানেকবর্ণয়োঃ। ধাতৃসংযোগান্থিতয়োর্ধাত্মিদুতোর্য্যবৌশ্বরে।
নিয়োঙিরান্বাদেনান্থাং নিয়াং দেনান্থিনিযাপ। স্থাশব্দস্থনযত্ত্বং স্থায়োর্থা। ইকারোকারয়োর্দাতোরিয়ুর্বোভবতঃ স্বরে। ভূর্তুব্ স্বরেপুনর্ব্বিভ্ণকারাৎ পরোনচেৎ। জ্রশব্দান্তঃ স্বরেউব্
স্থামদীকার্য্যাবিরোধতঃ। স্বরেস্ত্রীস্তিয়মোদোদোস্ত্রিশ্চ দাবপিবাম্পদোঃ। নিত্যস্ত্রীবিষয়াণাং সম্ভবিদয়ুবাং
ভবন্তিবচনানি। ঐআসাসামোবাআমিভুমুর্ব্বাজ্রিয়াং শ্রীণাং। পন্থি মন্থি ঋভুক্ষ্যন্ত আঘুট্যাতঃ স্বরেমুনুঃ।
ইলোপোহচ্যন্ত্বভ্রনশূভপ্রকৃতিন্থিতিঃ। পথ্যত্তমঃ পথিপ্রজ্ঞঃ পথিতাপৃথিকঃ পথী। পথয়ন্তীন্কিবন্তস্থপাঃ পানোপানআদয়ঃ। য় । ইতিস্বরান্তমাধ্যকারিকাবলী। য় ।

সন্ধ্যা একাদিবহুর্থভতিবস্তুকামতাঃ। সন্ধ্যেয়ে প্রবর্ত্তে সন্ধ্যায়াবদ্দশশুতিং। বিংশত্যাদ্যাঃ সদৈকত্বেদর্বাঃ সন্ধ্যেয় সন্ধ্যয়ে। তদ্বিদ্বাদিবিবক্ষায়াং দ্বিদ্যানবতঃ দ্রিয়ঃ। ক্লীবেশতাদিলক্ষপ্তিত্রেয়ু কোটিঃ দ্রিয়াং স্মৃতা। অগোণস্থ ত্রেস্ত্রমাণ্ স্থাদামিত্রীণাং পদং কচিৎ। ত্রয়ঃ সমাসেসখ্যায়াং বাচদ্বারিংশদাদিরু। সন্ধুদ্ধোচভুরোব্রস্বোযুটোহস্থত্রচভুরঃ স্থিতিঃ। দ্রিয়াং ত্রিচভুরোস্থিস্চতস্ভবতঃ ক্রমাৎ। স্বরেতয়োশ্ব কারস্তরয়্ব স্থাদামিকঃ স্মৃতঃ। যুট্স্বরেণ্ডোচরম্বস্তবহিরর্থেবিভাষয়া। নপুংসকেবিকয়েনস্থান্তিছেরাঃ স্থিতঃ। ষট্দংজ্বেভ্যোক্স্ শদোলু ধ্মুখ্যত্বে পঞ্চষট্কতি। নঃ পূর্বব্যামিদার্ঘঃ স্থাৎ বর্মামিতি নিপাত্যতে। ডত্যন্তাঃ যনকারান্তাঃ সন্ধ্যাঃ ষট্সজ্বলাঃ স্মৃতাঃ। বাই্টনোহন্তাক্রাচদ্বারিংশদাদিরু। শতাৎপূর্বত্রসন্ধ্যায়াং পরস্থাং ম্ব্যুর্তনোহন্ত্রখা। স্থাদবহুব্রীফ্লীত্যোর্ব্বাচদ্বারিংশদাদিরু। অন্টা গবান্টাকপালন্টা বক্রাঃ স্থার্ব্যবন্থয়া। সন্ধ্যাবাচিষ্কেকশন্দামঞ্চোহ্মাক্রেসমাসগো। পরশাতাদ্যাঃ সঞ্জোয়েত্রিষেতদ্বিকার্থকাঃ। ৯। ইতিসন্ধ্যাকারিকাবলী। ৯।

क्रीवार्श्यात् क् उट्यक्टें वित्रामवाङ्कातानिकः। मून्ठाकात्रानम्बूकावशातिञ्च वृत्रावानः। खेतीकाद्रायम्गरमाः निर्ध् अञ्चल्र प्रदः। स्रतार स्रताञ्च पृष्टिक्रेलिक्षानामिनः स्रतः। क्र्यूक्त्वामिनीर्धावावातीनाः
वातिनामिनि । नपुः मरकाक्वाविद्राधाक् वीद्रानियुप्ति धिः। यथ्यत्रिनिमिटेखर्का प्रतः न्कर्छः श्रानिक्रः।
व्यक्नीविक्षः नामान्तः प्रतः विद्रानिस्त क्र्वा। व्यक्षिनधाक्तिमक्षीनामिनिकात्रश्च वेषानि । वर्ष्कोटिवामिन्
किवन्तानामन्त्रश्च प्रतः । व्यक्षेत्रद्भात्तार्थाः स्ताकातः मः यूथमान्तिकः। देखार्विकाव्याधान्नी
धामनी मक्ष्य मक्ष्यनि । भूवताक्रन् यन् दनन्त्रदेगावानिकाक्क्षमाननः। ॥ देखिनपूः मक्कातिकावनी । ॥ ।
देखिषिकीय्रविश्वानीयस्तान्त्रमाधाकातिकावनी । ॥ ।

তৃতীয়বিন্সাদীয়ব্যঞ্জনাস্তদাধ্যকারিকাবলী।

অথব্রুবেহলন্তানাং সাধ্যং লিঙ্গত্রয়াশ্রিতং। কার্য্যমর্ণাধিকারোক্তং নান্তিসন্ধেরনন্তরং ব্যঞ্জনান্তাৎ সিলোপোহন্তেতৃতীয়প্রথমোধুটাং। তৃতীয়োর্ণেষ্বঘোষেতুপ্রথমঃ পৎস্থবিত্তমঃ। অর্ণেবিরামেইপ্যন্তক্ত প্রায়েণ-ধাতুকক্তদঃ। চ জ ঝাং গোদৃগাদীনাং মুহাদীনাং পুনর্ডগৌ। যজ ভ্রাজ পরিব্রাজ্ রাজ্ ভ্রজ্জি ভ্রন্চিস্ক্রাং শৃক্ষঃ। চজোর্ডঃ স্থাৎযশ্চহাঞ্চনহোহোদঃ কচিতুড়ঃ। তৃতীয়াদ্যাস্তর্য্যহাস্তাগণোক্তাধাতবোযদি।
তুর্যাদ্যাঃ স্থাদিহোঘোগর্দভোদস্থঞ্জ । ইকরাবিস্থদোর্দ্ধাতোরঘোষেহপিকচিৎস্মৃতে। ধাত্বিকরাবীকরোস্থাতাং সমুঘাশিষাঃ যোরঃ। যৌচাফোহহঃ কার্য্যঃ সংযোগান্তস্থলোপনং রাৎসঃ।
সংযুক্তয়োধুটোরাদেরদ্রুন্চ চ জ ঝাং নকঃ। নোহস্তস্থ যৌচাসমুদ্ধে সমুদ্ধোবানপুংসকে। মোনোবর্ণকুপান্তবাদিত্বত্রিয়তং প্রতি। নেন্টং লাক্ষণিকঞ্চেইং ক্রপধানাদিযিচিয়ু। ৯। ইতিব্যঞ্জনাদেশকারিকাবলী। ৯।

নান্তানামুপধায়াদীর্ঘঃ স্থাদ্ব ট্যুদলুদ্ধে। ইনহনপৃষার্য্যন্তাং দোশাবেবোপধাদীর্ঘঃ। হনোক্ষোহোঘ-ঈতিত্বার্ত্রত্বোহজন্যতপ্রিয়ং। অধাত্বসন্তোপধায়াদীর্ঘোহসন্ধুদ্দিলুপ্তসো। অন্তস্তুদকুবন্ধস্থাদীর্ঘ-মাপুয়াৎ। অনেহमः मनूক্চৈবমুশনঃ পুরুদংশদোঃ। সম্বোধনেহেউশন উশননুশনোশনা। সান্তং নান্ত মদন্তঞাদন্তকেতিনিপাতনাৎ। ইন্কিবন্তান্ত আনোলুক্চাত্রোশাপুরুদানয়া। ভবদ্তগবদ্ঘব্তাং সম্বুদ্ধোবাদিরুর্নবা। হেভগোভগবন্ হেভো হেভবয়ঘবয়ঘোঃ। অপোহকারস্থদীর্ঘঃ স্থাদ্যুটিসমুদ্ধি-বজিতে। আপঃ স্বাম্পিতড়াগানিভেপোদোহন্তিরভিপ্লুতং। নযুক্তসাস্তমহতোঃ প্রাগদীর্ঘঃ স্থাদধাতুনঃ। তদ্ধিত্যাঘুট্স্বরয়োর্কান্যঃ সেটোহপিক্সউজ্জেরঃ। মত্বর্থেচ ক্সোত্তমিনিকেচিল্লোত্তমিচ্ছন্তি। অন্সিধ্বদাং দশুদঃ স্থাদণ্বিরাময়োঃ। যথাবিদ্বৎকুলং পেচিবদ্যামিত্যেবমাদয়ঃ। অন্ত্যব্যঞ্জনপূর্বোনো-লোপ্যঃ স্থাদঘুটিস্থিতিঃ। কুন্চশন্দোর্মেনতথেকারামুবন্ধিনাং। অনকারাদেবস্থাদীকারেশস্তৃ-নোলোপঃ। ভাদিতুদাদিস্তেভ্যোবাভ্যস্তাচ্ছোনকারবান্শস্ত্। পুম্সোহবস্থেন্যুড্যাত্রসোলুঙ্নাস্ত্যন-ঘোষগৈ। অশিট্যঘোষেপুংস্কামঃ পুংস্থাভূগঃ পুংস্বপুংস্ক্লমাঃ। অযুট্সৱেতদ্বিত্যবাহোবা শব্দউভবেৎ। কচিদাঅনবর্ণাচ উঃ শালূ হাগবাযথা। শ্বন্যুবন্মঘবন্মেযামনন্যুট্স্বরেপরে। তদ্ধিতেযেচবস্থোত্বং যেবা শুনউকার উঃ। মঘবস্তুরুকারাতুবন্ধোহস্তিমঘবার্থকঃ। সেরনাত্রানঞ্সমাদে অর্বস্তাস্তোহবতি-ষ্ঠতে। অন্তানিতিসোহোনঃ সম্বুদ্ধোতিদ্ধিব্রস্ববং। অযুট্যনভুহোবস্থাবিরামে২র্ণেচহস্তদঃ। অন্চি ক্রুন্চি-যুজাং নোঙোব্যাদেযুঞ্জযুজি যুঁটি। সম্স্থাৎসমিসহঃ সধিতিরস্তিষ্যঞ্চতীকিপি। অন্চেরলুক্পৃক্দীর্ঘ-স্তদ্ধিতেযে২প্যযুট্দ্বরে। পূজার্থেহঞোর লোপোহনোরুত্রদীচিতিরেস্তিরস্। দিবোদ্যোদাবমিদ্যাবাছ্য-বর্ণেব্যঞ্জনেহ্যতি। মাসনাসা নিশাযুষাসনাস্গ্দোস্যক্ৎ শক্ৎ। মাস্ত্রস্থিশোযুষয়সন্দোষন্ যকন্ শকন্। দন্তোদকোদত্রদনা বঘূটিপ্রাপ্লুবন্তিবা। নিশঃ সোজোহস্বরেস্থঃ শুরিতি পাণিনিদর্শিনঃ। * । ইতিদীর্ঘনলোপাদিকারিকাবলী। *।

অকারোহস্তাস্বরাদেঃ স্থান্তাদাদের্ঘাদ্যগোণতা। তানাং সদোস্থাদিদমেতয়োরুক্তানুকীর্ত্তনে।
বৈনোদিতীয়াটোস্স্বেনস্থান্তলুয়াহ্যুটিস্মৃতঃ। ইদমঃ প্রত্যক্ষীভবদল্লান্তরিতং তদেতদোর্বাচাং। অদসঃ
পরোক্ষভূতং বুদ্ধিবিশেষাস্পদং বদন্তোকে। ইদমঃ সাবয়ংপুংসিদ্রিয়ামিয়মিদংস্থামোঃ। দোমোঅনোহনকফোসোর্ভ্যামাদানন্তিসীট্ততঃ। নিপাত্যতেহদসোহকন্তস্থামুকোঅস্করং কচিৎ। সম্পদ্যাহ্যাবসকোটানান্তিসৈস্পদেতুদঃ সাচঃ। মুঃস্থাদেকত্বোস্ত্রিত্বশসোর্মুঃ পরত্রমীপুংসি। দ্রিয়ামমীবহুত্বেচ্মুর্ননান্তদ্যথোদিতং। স্থামাঃ পদমদোহমুন্সেব্রেম্মুনিজসশসোঃ। অদ্দ্রীচ ইবিল্লেবেদস্মুর্কেন্চক্ত্রিছে। দ্রোশ্চন
দ্যোশেচতিমোরুকারোনবত্বভাক্। যুত্মৎপরাত্মার্থকোহম্মবক্তাত্মার্থঃ সমৌত্রিয়ু। একত্বেরুম্মদন্তদ্সাদম্মদোমদিতিস্থিতিঃ। অনয়োত্ত্বমহ্ম্পোন্তঃ সজসোর্যুয়্য্র্ বয়্ম্ ভণিতো। তুভ্যম্ মহম্ সঙ্য়োন্তব্যমসঙ্

সোর্ভ্যমভাসোহস্বরতঃ। এষাং দলুক্সাদমোচাম্যুবাবদ্বিত্বআন্শসঃ। ভাস্ ভাস্ সামাকমেদস্পরেহ্নাদেশআন্তভোঃ। যুম্মদম্বাক্যকালেযৎসম্বান্তৎস্বরূপভাক্। সমাসাদস্পম্যোহপিত্বমহং প্রভৃতির্বলী।
ইন্কিবন্তস্থামোলুখাসাধ্যমন্তৎ সমাসবং। ভাস্তাদিব্যঞ্জনাদট্দ্যাদামাকং গোণতঃ কচিং। পাদস্যচাদেশ্চানাদ্যে একবাক্যপদান্ধবা। যুম্মদম্মৎপদেত্বামাহমিতে মেঙ্যিঙ্গ্যপি। বান্ধোতেভাঃ পরেদ্বিত্বে
শস্ভাসামিত্বস্নসো। টাতেমেভামিবানোস্তোবস্পনাভিসিপ্র্ববং। অনালোচনদৃশ্যর্থে নৈতেন্ত্যর্বস্পন্তানারঃ। আমন্ত্রিতং প্র্বিপদমবিদ্যমানবদ্ভবেং। অম্বাৎ সামান্তব্যনাদ্বিশেষ্যাৎ সবিশেষণাং।
নিত্যং স্থ্যরেত্বাদেশাবহুত্বেত্বিভাষয়া। সপ্র্বপ্রথমান্তাদ্বাস্বিকাবলী। ৩। ৩০দ্বার্তিবিষয়ে
নিত্যমুক্তানুকীর্ত্তন। ৩০দ্বার্বিন্যাদীয়ব্যঞ্জনান্তসাধ্যকারিকাবলী। ৩। ৩০দ্বার্তিবিষয়ে

সর্বাব্যয়াখিতক্তের্লুক্শশ্বৎ সম্দ্রাঙ্মনাগপি। স্বরাদিঃ প্রাদিরুর্ব্যাদিরাবতের্দ্ধাদিতদ্বিতাঃ। বিভক্ত্যাভাঃ ক্রামসন্ধ্যক্ষরান্তাঃ কৃতোহ্ব্যয়াঃ। অব্যয়ান্তস্বরাৎপ্রাগধাতচ্ছব্দান্তক-চতঃ। নসামের-ক্সামিকৃতং তিঙামপিদদাতকি। #। ইত্যব্যয়কারিকাবলী। #।

দর্বনাম্বাহন্ত্যস্বরাৎ প্রাগথাস্থাত্তৎস্থপামপি। আপ্রত্যয়ম্প্রেত্যয়কে অস্যইঃ স্যাদ্যতদাঃ। নাশিষিক্ষিপকাদেশ্চ বহুব্রীহৌকচিন্তবেৎ। ইউওস্তারকাদের্ভং তারকাক্ষ্ণ কনীনিকা। বঙ্গকাদেস্তবা বৃন্দারকা বৃন্দারিকা যথা। দ্বাস্থাজাজৈষাভস্ত্রাণাং বাজ্ঞাদের্ম ঞ্ পূর্বস্থাপি। সংজ্ঞানুকম্পাকুৎসাল্লহ্রস্বত্বাজ্ঞাতনীতিষু। আক্ষেপেহপিচকঃ কার্য্যঃ স্বার্থেহপি কৈশ্চিদিয়তে। ৯ । ইত্যক্কারিকাবলী। ৯ ।

নদ্যদন্তাবহুবহোসমাদেকপ্ কচিত্র। নকপ্সতৌ ভাতৃশব্দানদ্যক্তমাদিভাষয়। উরঃ প্রভৃতিতঃ কপ্সান্নিত্যং স্ত্রিয়ামিনন্ততঃ। গোণগোস্ত্রীপ্রত্যয়য়োহ্রস্ফ কপিতুনেয়তে। ঈয়ন্সোর্ন্তরস্বকপোযথা স্ল্রে য়সীঃ পুমান্। ব্রস্বআঈপ্রতায়য়োঃ সমাদেহগুত্রচক্ষচিৎ। নপুংসকেস্বরোব্রস্বো ব্রস্বস্থাবিতাক্ষ্যিৎ। উপনর্গন্য ঘঞত্তে কিবত্তেরু নহাদিষু। কচিদেকপদেহপিদ্যাৎপুরুষঃ পুরুষোযথা। অনব্যয়বিদর্গদ্যদঃ স্যাৎ কথপফেপরে অব্যয়স্যকদাচিৎ স্যাদসমাসেহপিকুত্রচিৎ। অজাদ্যদন্তন্ত্রীলিঙ্গশব্দাদাব্যঞ্জনাৎকচিৎ। অজাকুঞাকোকিলাশাবালারুদ্ধৈড়কাদয়ঃ। ডাজানন্তাছত্ত্রীহোডাজামন্ প্রত্যয়ানস্ট । অন্তন্চসন্তবাহস্ত-স্থীনান্তঋদন্ততঃ। নদাদেশ্চ দ্রিয়ামীদ্যাদকারস্তত্তলুপ্যতে। অণ্ণ্যেকধায়নধেযণ্নণ্ স্নণ্ কণ্ পুরণেডমো। দল্পতাত্রন্তাশ্চ করপ্ ষটসুবন্ধিনঃ। এতদন্তানদাদ্যাঃ স্থ্যরূপসর্জনবর্জিতাঃ। বনোনোরশ্চ ঘোষাভূন ঈযূনস্ত্রতিত্যপি। ইদন্তাদ্বাক্তিং হিস্বাবোদন্তাদ্গুণবাচিনঃ। অসংযোগোপধখরোঃ ক্রীতাৎকরণপূর্বকাৎ। অল্লাখ্যায়াং ক্রাদযক্তদংযোগেপভূরিশ্চনঃ। সমানবীরৈকপিগুদন্যস্মাত্রপরস্যবা। অন্তর্কৎ পতিবদ্ত্যাং লুগন্তর্বাহ্রাহৃগভিণী। হয়াদিভিয়াযোপান্তাদিলিকাজ্জাতিবাচিনঃ। নশ্দাদমহৎপূর্ববাৎ পুলিকেভান্ত-অল্লাপায়াং মৃণাল্যাদেঃ কচিচ্ছত্রীবনীমঠী। কুসীদপুতক্রতুর্যাকপায়িকুৎসিত্স্যতু। व्यत्त अर्थामात्नारतो छ । प्रवादिक । प्रवादिक विकाद के वि इटब्यवनालिए। बाहार्य्याभाषायाकारूक् खब्बाहार्य्याभाषायाया। बर्याकवियमाजून नकामना-তর্স্যামসুগেন্টব্যঃ। লোহিতশ্যেতহরিতৈতানাং তস্যচনোভবেৎ। পলিতাসিতয়োস্তরুঃ কচিৎস্যাদিসু-গশ্চলুক্। শবলাদেরপিতথা কল্মাধীশবলীলতা। অৃসংযোগোপধাৎ স্বাঙ্গাদদন্তাদেগীণতন্ত্ববা। দন্তোষ্ঠ-কণ্ঠগাত্রাঙ্গ শৃঙ্গকর্ণোদরাদিকাৎ। পাদোবাঈবহুত্তীহোপাৎ পৎস্যাদঘূটিম্বরে। অনার্তাজ্জাতিশব্দাৎ পরাৎক্তাদকৃতাদিতঃ। তাদৃগজাতেরস্বাঙ্গাদা। স্ত্রিয়াং দ্রব্যার্থকোদন্তাদৃঙ্ বাশ্বশ্রমিপাত্যতে। উরোঃ সপৃর্ব্বাদৌপম্যেবাহ্বন্তেভ্যস্ত্রনামনি। পঙ্গুর্মান্ত্রনরত্বাদেঃ কমগুরাস্তহন্দি। সহসহিতবামসংহিত-শফলক্ষণপূর্ব্বকাচ্চোরোঃ। নোষথাত্রাদিভ্যোবমসংযোগাদনোবহুত্রীহো। ॥ ইতিকবাদিকারিকাবলী। ॥।

নামিকরেভ্যোধাতাবপঠিত সঃ যঃ পদানন্তাঃ। সুবিদর্গব্যবধাবপি ভাদপ্যেকেজগুঃ প্রাভ্র্ । উপদর্গনাং তম্মাদ্ধাদ্ধাদেঃ দস্তব্যং তাৎ। নিমিষদি হপি হক্র মুকুস্ত্যামুদীকুদে ক্রাদেঃ। প্রাছ্ঃ শব্দাচ্যান্তর্ব্যেষরেরাঃ দীদতেঃ প্রতিংছিল। উর্জিত্যাদ্যর্থেইবাৎস্তর্কুল্লন্ত্পাৎ। পরিনিবিতঃ দহস্ট্ সিবু দেবাং। স্বনোব্যবাভ্যামশনেহব্যবত্যামিয়ং শিবা। স্থাদেনিদেধি সিচ্ সন্জ্বামাদীদত্তরপি। দ্বয়ন্তাপিদিক্রক্তোদঃ যত্ত্যব্যবধাবপি। আদদঃ স্বঞ্ তাত স্তোভি স্বতিস্তোভতরপি। অদিকরেছেইভ্রেবায়েরা স্থামাদের্ব্যবস্থা। নিরভ্রন্তপরিভ্যঃ দ্যান্দোহপ্রাণিনিবা। নিবিপরিতঃ দয়দিতরোঃ। ক্রুক্ত্রেল্যার্নির্নিতিভাবা। বেঃক্ষণাত্রিরতঃ । নিদন্তপতাবনাদেবনে। স্থাবিনির্ভঃ স্পাদ্তি দমাঃ। প্রাদেঃ স্থানেতর্ম দন্দ্যে সিবু স্তন্ত্র্যারিস্তরে দিশালাকেন। প্রক্রের্যারের দম্যঃ। প্রাদেঃ স্থানেতর্ম দন্দ্যে সিবু স্তন্ত্র্যারিস্তরানিপাতনাৎ। যত্ত্রতে দনিক্রেতানন্তরেরের দম্যঃ। দদি দাধি স্থিদি দহামিনন্তানাঞ্চরজ্জনং । সমাদেক্লি ষঙ্গাদেঃ। ভীরোঃ স্থানদ্য । অগ্রেঃ প্রথ স্তোম্বামানাং। দীর্ঘাদেবদোমদ্য । জ্যোতিরায়ুয়ঃ স্তোমদ্য । গবি যুধিভ্যাং স্থিরদ্য । নির্নাণিভ্যাং সাতেঃ কোশলে। প্রস্তোহ্রির্শক্র দিবিবর্ছিয়ঃ। ভূম্য্যপাদপিক্রঃ প্রস্তাং পর্মেষ্ঠানিপাভনাৎ। অদ্বর্গরেরির্বারিস্ক্রির্পিজ্র কুষ্ঠকাঃ। ইত্রকারাভ্যাং প্রকৃতিবিদর্গঃ ক থ প ফ প্র্রিঃ ষত্বং লভতে। বাক্যেপ্রত্রারেরিস্বান্রিস্থানির্বা ভিদ্নিত্বাদাবিপিচ স্থ্যেরা। ৯। ইতিবত্বনারিকাবলী। ৯॥

রম্বর্ণায়োণোহযবস্থরকপবর্গদান্তরস্যাপি। ভিন্নপদেহপি প্রাদেরত্রোরাদন্তরশ্চ ধাছাদেঃ।
ন ভবতি নাথতি নন্দিনৃনর্দতি নৃতনানৃনটি নর্কাং। নিন্দতি নিজ্ঞ্জতিনিসাংপক্ষে হন্তেরকারপূর্ববস্য।
অন্তরশ্চাপ্যদেশেবাবমোর্বালোট আনিনঃ। হিমীঞোরনিতেরভ্যস্তস্যচান্তেবিভাষয়া। নের্গদ নদপদ-পতহনদোবা যামাতনিস্যতিপ্লাস্থ। শম্বপি ছুন্থহিদাস্থচ শেষেত্বকথাদিষান্তেবা। ভাদিবর্জস্বরাৎ কুন্নোণঃ
স্যাৎপক্ষ ইনন্ততঃ। অনুস্বারবতাং নাম্যাদীনামেব নিরিঙ্গণং। পূর্ববিপদাহসংজ্ঞায়াং বননোণঃ প্রগাদিভ্যঃ। প্রেণিরন্তঃ থদিরেক্ষু প্লক্ষশরাআদিকাদনামনিচ। রক্ষোষ্যিভ্যাদ্বাহ্লস্যাদন্তাদ্বাহন আহিতাৎ। দেশেকর্মান্থানান্ত স্থাবাণাঃ শকা যথা। বা ভাবকরণার্থস্ত ক্ষীরপাণং প্রবর্ততে। নিক্ষবর্গস্থানানাচোলিঙ্গস্তান্তপ্রবিদ্যাদ্বিবিদ্যাদ্বাহিন চি ধুটিনান্ত্যোনানাঙ্ পদব্যবধে। ৯।
ইতিগছকারিকাবলী। ৯। ইতিচতুর্থবিস্থাসীয়প্রকীর্ণকারিকাবলী। ৯। ৯॥

পঞ্চমবিন্থাসীয়কারককারিকাবলী।

যতোহপায়াদানরক্ষাবারণান্তর্দ্ধিজন্মভীঃ। যশ্চাসহঃ পরাজেঃ স্থান্তদপাদানকারকম্। প্রভুবঃ
প্রভবোগঙ্গাহিমাদেঃ প্রভবত্যসোঁ। জুগুপতের্বিরমতেঃ প্রমদেরপি কর্ম্মণ । তদপাদানমিছন্তি,
যথাহধর্মাজ্গুপতে। সম্যাদানং যমুদ্দিশ্যরুচ্যর্থেপ্রীতিমাংস্ত্রয়ঃ। ধারেশ ণপ্রদাতাযোযশ্চেচ্ছাবিষয়ঃ "
স্পূহেঃ। ক্রিয়াযোগেযন্নিমিত্তং সম্প্রদানং তদিষ্তুতে। যজোবাকর্মকরণং সম্প্রদানস্থকর্মতা। যজতে
পশুনারুদ্ধে পশুং রুদ্রায় বা দ্বিজঃ। প্লাঘহু ধুন্থাশপাং বিজ্ঞাপনেচ্ছাবিষয়স্তথা। ক্রুধক্রহেধ্যাসূয়ার্থ-

যোগেয়ং প্রক্তিকুপ্যতি। ন সম্প্রদানতাসোপসর্গয়েজকুধক্তহোঃ। রাধীক্ষোর্য্য তবিবিধপ্রশ্লোদৈবাদি-গোচরঃ। প্রত্যকুভ্যামুত্তরস্থ গ্ণাতেঃ পূর্ব্বশংদিতা। প্রত্যাঙ্ পূর্ব্বশৃণোতেস্ত যাচিতুঃ সম্প্রদানতা। স্থাদাধারোহধিকরণং সচাধার চতুর্বিবঃ। সমবায়ীত সংযোগীবিষয় দেচাপচারিকঃ। করণং সাধকতমং তমবর্থঃ ফলম্প্রতি। ব্যাপারান্যাব্যবহিতফলানাশ্রয়কারকং। দীব্যতেঃ করণং কর্মচাক্ষানক্ষৈশ্চ দীব্যতি। পরিক্রয়ম্ভকরণং সম্প্রদানং বিভাষয়া। যৎ কর্ত্ত্বঃ ক্রিয়য়াব্যাপ্যং তৎকশ্মপরিকীর্তিতং। তুহি যাচি রুধি প্রচিছ ব্রুবো বহি জিগ্রাহি চিদণ্ডি নীক্ষঞঃ। কৃষ্ভিক্ষতি শাসিমন্থয়ঃ কবিনাখ্যায়ি-ষতদ্বিকর্মকাঃ। গৌণস্কর্মাভিধেয়ং স্থাদ্ভবিষ্ঠানাং দ্বিকর্মণাং। স্বঞ্ নীবহিক্ষাং মুখ্যং গত্যাদেরিনি কর্ম্মান্ত। কালভাবাধ্বগন্তব্যদেশাঃ কর্মাণ্যকর্মণাং। উপান্নধ্যাঙ্ পূর্ব্যকস্যবসভের্ব্বাভিনেবিশঃ। অধেঃ পরেষাং শীঙ্স্থাসামাধারঃ কশ্মগীয়তে। নির্ত্তার্থে বা বসতের্গ্রামেউপবসত্যসো। গতি বুদ্ধি-প্রত্যবসিতি শব্দার্থানামকর্ম্মকাণাঞ্চ। ইন্সকৃতে যঃ কর্ত্তাসইনি সতি কর্মসংজ্ঞকঃ স্যাৎ। হুকুঞোর্বাকর্ণ-শিরেরাহারয়ত্যর্জ্বনং হরিঃ। নীবছদিখাদীনাং ন ভবতি ভক্তেরহিংসায়াং। যথা ভক্ষরতি পিণ্ডীং দেবদত্তেন যজ্ঞদত্তঃ। ক্রন্দিশব্দায়তি হ্বাঞ্চ শব্দায়য়তি বীণয়া। অন্যতরস্যাং জ্ঞেয়ং দৃশভিবদোরাত্ম-নেপদিনোঃ। যথা দশ্যতে হরিং হরিপরিচারকোলোকান্ লোকৈর্বা। ক্রিয়াসিদ্ধোয়ঃ স্বতন্ত্রঃ সকর্ত্তাপাতুবোহরিঃ। বিশ্বানিযেনস্জান্তেভেনাপি মনুজায়িতং। উপচারাদসিশিছন্তেভিক্ষাবাসয়তে বিজং। কর্তপ্রযোজকহেতুঃ কর্ত্তাচেত্যুপনিশ্যতে। গুরুণাধ্যাপ্যতেশিয়ো জীবয়ত্যুচ্যতোজগৎ। এষামুভয়প্রাপ্তো পরকারকমেবমন্তব্যং। স্থাল্যাং ভুঙ্ক্তেধনুষাবিধ্যতিবাণোরি পুনিতিবং। বিবক্ষাতঃ কারকাণিভবন্তীতি ব্যবস্থিতে:। বৃক্ষদ্যপর্ণং পততীত্যাদয়োনবিরুদ্ধতে। লিঙ্গার্থেহভিহিতে সম্বোধনেচ প্রথমামতা। অপ্রাপ্তো প্রথমায়াবিজ্ঞাতব্যাদিতায়াদ্যাঃ। কশ্মপ্রবচনবোগেহভিহিতে প্রথমাপি বাধিতাভবতি। দ্বিতীয়াকশ্মণ্যত্যন্তবোগেকালাধ্বনোরপি। অপবর্গেহধ্বকালাভ্যাং তৃতীয়েববিধীয়তে। পঞ্চমানপ্তমাচ দ্যান্যধ্যেকারকয়োর্ছয়ো:। এনবন্তপদৈয়া ক্তাদ্বিতায়াদষ্ঠাপি কচিৎ। অভিতঃ পরিতঃ সময়ানিকযোভয়তোহন্তরান্তরেণ পৃথক্। ধিক্ সর্বতোবিনর্ত্তেহাহধোধোহধ্যধুপেরুপরি। নানাপ্রতি-পুর্বোভাচৈভির্যোগেরিতীয়াস্যাৎ। অভিতঃ প্রভৃতিভির্য্যোগেতদ্যোগিভ্যোরিতীয়াস্যাৎ। সহার্থে হের্থে হানেচানুরুপোহপিচ। যাবদ্ব্যাপ্তো পূজনেতঃ পূজাতি ক্রময়োরতিঃ। লক্ষণইথস্কৃতা-খ্যানেভাগেত বীপ্নায়াং। প্রতিপর্য্যনবোভাগং হিত্বাভিল্ল কণাদ্যর্থে। অন্বাদয়ঃ সহার্থাদৌকশ্মপ্রবচ-নীয়কাঃ। এতৈর্যোগেদ্বিভীয়াস্যাদ্বিসয়ার্থেহ্ধিনাপিচ। ঈশরেহ্নীশ্বরেচাধির্ধিকার্থউপঃ আভ্যাং যোগেদপ্তমী দ্যাদ্যথা মধ্যধিমাধবঃ। তৃতীয়াকত্ করণহেত্বর্থেষ্ বিশেষণে। প্রকৃত্যাদে সহার্থেন যোগেদ্যাদপ্রধানতঃ। যেনাঙ্গবিকৃতিস্তত্মাদ্রা সংজানাতিকর্মণি। অশিষ্টব্যবহারেষু . চতুর্থ্যর্থেহপি সাস্মৃতা। পৃথঙ্নানাবিনাযুক্তাভৃতায়াপঞ্মাচবা। দ্বিতীয়াচ তৃতীয়াচ জুহোতেঃ কশ্মণিস্মৃতা। সম্প্রদানেচভুর্থীদ্যাদ্যথাদভেদ্বিজারগাং। তাদর্থ্যেচ যথা দারুষ্ঠ্পারদ্ধিস-পিষে। উৎপাতেনজ্ঞাপ্যমানাদ্বাতায়কপিলাতড়িৎ। ক্৯প্তার্থানাং বিকারেভ্যঃ কল্পতেদধিদর্পিষে। 🥒 উক্তক্রিয়ার্থাপ্রযুক্তক্রিয়াকর্মণিসাম্মৃতা। নমঃ স্বস্তিপ্রধাস্বাহাববট্শক্তার্থ কৈযুর্তাৎ। চেন্টাগত্যর্থধাতূনা-মকাম্যাধ্বাক্তকর্মণি । স্যাদ্ধিতীয়াচতুর্থীচগ্রামায়ৈতিদ্বিজোষথা । নাবাদিপ্রাণিনিতদন্যস্যাপ্রাণি নিম্মততেঃ। কর্মণ্যনাদরব্যঞ্জিবিশেষণ্উভেম্মতে। ষঁষ্ঠী চতুর্থীচবলিহিতার্থস্থরক্ষিতৈঃ। আশিষ্যায়ুষ্য-

ক্শলমদভদ্মৈর্তাংপুনঃ। পঞ্মীস্যাদপাদানে যথাগ্রামাদপৈতিসঃ। ল্যান্ত্রোপকর্মাধ্যরাভ্যাং প্রাসা দাংপ্রেক্ষতেনৃপঃ। প্রশ্নেতছ্ভরেচৈষাকৃতত্ত্বং নগঁরাদহং। উৎকর্বদ্যাপকর্বদ্যাপ্যবধেঃ প্রক্রীমতা প্রতিদানং প্রতিনিধির্ব্যস্য প্রতিযুতাততঃ। গুণাদ্ধেতোঃ পঞ্মী বা স্তোকাদেরবিশেষণাৎ। অফার্থারা দৃতে পর্যাপাঙ্যুক্তাৎ পঞ্মীমতা। দিকালদেশযোগেতু পঞ্মী ষষ্ঠ্যপীষ্যতে। দূরান্তিকার্থাৎ প্রথম চতুর্থ্যন্তাবিভক্তয়ঃ। পঞ্চম্যাচাহিচোর্য্যোগে ষষ্ঠীদ্যাদতদর্থ কৈঃ। যতঃ কালাধ্বকথনং কথিতাপঞ্চমীত সম্বন্ধেষ্ঠানিষ্ঠাদিকদন্ত কর্তৃকর্মণোঃ। শ্রিয়ঃ স্বামীক্ষিতেঃ কর্ত্তাভজতাং পালকোহস্তনঃ কর্মাণ নিত্যং ষষ্ঠীদ্যাৎকর্ত্তরিবোভয়প্রাপ্তো। আশ্চর্য্যোছিমহাদ্রেরুদ্ধারোহয়ং শিশোরথশিশুনা। শব্দানামনুশাসনমাচার্য্যাণামথাচার্ট্যেঃ। বিচিত্রাসূত্রস্যক্তিঃ পাণিনেঃ পাণিনিনাবা। কর্ত্তরিবা কৃত্যানিষ্ঠাদয়োদ্ব য়োঃ প্রাপ্তো। কিংরাজ্ঞোহিসমজ্যাং বিদ্বন্তির প্রবেষ্টব্যম্। ষষ্ঠীমুভয়ত্ত্রবব্যা খ্যদকাকারয়োঃ স্থ্রিয়াং কৃতয়োঃ। ক্তক্তবন্তুশন্ত্রানাবুকঞকন্স্বব্যয়ং কিতৃণো। ইনকোভবিষ্যত্নকা মধমর্ণোণন্ খলর্থকোদন্তাঃ। ' নেফানিষ্ঠাদানা মেতেষাং কর্তৃকর্মণোঃ ষষ্ঠা। শল্তুকঞোঃ প্রতিষেধং দ্বিষিকমিধাত্বোর্বিভাষয়াপ্রাভঃ। অধিকরণ বার্ত্তমানিকক্তযোগেদাভাবেক্তযোগেবা। প্রয়োগে হেছু শব্দস্যহেতো ষষ্টীমতাযথা। হেতোশ্চতুঃ পুমর্থস্য যাদবেন্দ্রমুপাম্মহে। সর্বনাম্বস্তু তীয়াচ সোগমৎ কেনহেতুনা। নিমিত্তাদিরুসর্ব্বাসাং বিভক্তীনাং প্রদর্শনং । স্মৃত্যর্থানাং কণ্মণিষষ্ঠীস্যাদ্বাদ্বয়ীশোশ্চ। কর্ম-ণ্যুপক্ষরোতেঃ প্রতিবত্নে২র্থেবিভাবয়াবস্ঠী। জানাতে রমার্থেবাজানতে মাধবস্যতাঃ। নাথতেরাশিষিহরি-প্রদাদস্য সনাথতে। ব্যবহৃঞ্দিবুপণকর্মণিদ্যুতেক্রয়বিক্রয়েচ বাষষ্ঠী। সব্যবহরতেদীব্যতিপণতেলক্ষস্য জানের বিটানাথঃ ক্রাথঃ ক্রাথঃ পিষশ্চনিপ্রহনাং। অজ্বরিহিংদার্থানামপিভাবএবকর্তাচেত্র স্যাৎ। यष्टी ভৃতীয়েভবতস্তুল্যার্থকপদৈর্ঘুতাৎ। ভৃতীয়ার্থং পরিত্যজ্ঞার্থকভুলোপমে। সপ্তম্যধি-করণেস্যাদ্বিহরতির্ন্দাবনেযদূত্তংসঃ। ইন্যুক্তস্যক্তস্যতুক্র্মণ্যেষা যথা স্মৃত্যেজ্ঞাতী। ক্রিয়য়াকর্ম্মসম্বন্ধে নিমিত্তাৎ সপ্তমীমতা। ভাবেকালেচসামুখ্যক্রিয়ায়াশ্চেদকারকং। অর্চ্চণিয়াং সাধুনিপুনাভ্যাং যুক্তাৎ সপ্তমীমতা। প্রসিতোৎস্ক্যোগেতুতৃতীয়াচোৎস্কঃ কচৈঃ। নক্ষত্রবাচিশব্দাল্লুপ্রাণঃ সপ্তমীতৃতীয়েন্তঃ। আযুক্তকুশলযুক্তাদাদেবায়াং হিষষ্ঠীসপ্তম্যো। নির্দ্ধারণেচতেস্থাতাং তচ্চজাতিক্রিয়াগুণৈঃ। দেকদেশপৃথক্করণমুচ্যতে। স্কামীশ্বরদায়াদ প্রতিভূসাক্ষ্যধিপতিপ্রসূতিশ্চ। ষষ্ঠীসপ্তম্যোক্তোহনাদরণীয়া দনাদরেগম্যে। বিশেষণেসমানার্থে বিশেষ্যস্থবিক্তয়ঃ। জহল্লিঙ্গেতুতল্লিঙ্গং সঞ্যাপ্যুৎসর্গতন্তথা। বহুত্রীহৌ • বাচ্যলিঙ্গা অবায়া অপ্যনব্যয়াঃ। অব্যক্তগুণ সন্দোহ একতাক্লীবলিঙ্গতে। नर्भः नकषः विटब्ख्यमग्रम् বিশিষণে। অম্ নপুংসকলিঙ্গত্বেদ্যাতাং ক্রিয়াবিশেষণে। প্রকৃতিবিকৃত্যোকক্তোপ্রকৃতেরপুসারতঃ विकृ ि विवक्षाधीनाविकृ राजीन्ध्यावशस्त्र । रादेनवन स्वत्र स्वर्षाका कार्यानिवर्त्त । কুদাখ্যাতে। তদপেক্ষ্যপ্রযোক্ত্রাঃ সর্বাএববিভক্তয়ঃ। *। ইতিকারককারিকাবলী। *। *।

वर्ष्ठविद्यामीयम्याम कात्रिकावनी।

বাক্যং দানাসোহতিগুন্তং বাস্যাদ্বাক্যং ততুচ্যতে। আকাজ্জাযোগ্যতাসন্তিযুক্তং পদকদম্বকং।
সমাস-চানেকপদদৈয়কলিক্ষত্বযুচ্যতে। নবিধেয়ৈর্মচম্বান্তসাপক্ষকবিশেষণেঃ। সমাসোনিত্যসাপেকৈন্তে
কারক ক্রিয়াগুণাঃ। সদম্বন্ধিপদার্থান্চ যথা গুরুকুলন্তব। কর্মধারয়আদ্যঃ স্যাদ্বিগুন্তৎ পুরুষোহপরঃ।
বহুব্রীহিরথদ্বন্দ্বোহব্যয়ীভাবঃ ষড়ীরিতাঃ। সমাসেহ্যবিভক্তেল্লুক্ তদ্ধিভাখ্যাতয়োরপি। তৃতীয়ায়াঅলুক্সাদো

জঃসংহাহস্তস্তমোহঞ্জসঃ। অনুজান্ধেপুংজনুষোর্য্যথাপুংসানুজাত্মজা। মনসোনাস্ক্রাত্মনস্ত পূরণপ্রত্যয়াস্তকে। চভূর্থলুখ্যাকীরণেসংজ্ঞাচেদবগম্যতে। স্তোকাদিভাঃ ক্তান্তেষুলোপনীয়ানপঞ্মী। বিদ্যাসম্বন্ধিনি ঋদস্ততঃ। পিতৃমাতৃভ্যাং স্বস্থাব্দেবা। আক্রোণে চৌরস্যকুলং পুত্রেবা চৌরপুত্রকঃ। বাচোযুক্তিৰ্দিশোদণ্ডঃ পশ্যতোহ্রইত্যপি। শুনঃ শেফঃ শুনঃ পুচ্ছোবাচস্পত্যাদিনামনি। যঃ ক্সাচিম্নপ্রিয়ঃ म्यार्गराहे निर्माय । সপ্তম্য नृथीकृषर स्वयास्थ । । সমূদ্দি । সমূদ্দি । স্থান্দি । স্থান্দি । স্থান্দি । স্থান্দি । স্থান্দি সাহিদ্দি । স্থান্দি । স্থান্দি । স্থান্দি । স্থান্দি । স্থান্দি সাহিদ্দি । স্থান্দি । স্থানি । স্থান্দি । স্থানি । স্ স্তেয়ুনান্মিচ। এবার্থব্যঞ্জিতক্ষেপাঃস্থাঃ পাত্রেসমিতাদয়ঃ। ইবেনাশুক্সমাসঃ স্যামিত্যং প্রাক্পকৃতিশ্বরঃ। नुक्नाक्रशार्षिवानीनाः त्रशुम्रांखमाठक्वि । श्वार्थ्जूनाधिक त्रगम्यामः कर्म्मधातमः । वित्यवणः विरम्पान যথা লীলোৎপলং বভৌ। অভিধানাৎ কচিন্নিত্যং কুত্রচিন্নসমস্যতে। বর্ণোবর্ণৈর্য্যথাক্তান্তস্তুক্তান্তৈরেব-মাদয়ঃ। কোঞ্চং কবোঞ্চং কছ্ষুমুফেকোঃ কবকাক্তঃ। প্রাক্কালৈকজরৎসর্বপুরাণ নবকেবলাঃ। তুল্যাধিকরণৈরেব পূর্বস্থাএবচাপরে। রুন্দারকপ্রভৃতিভির্বিশেষ্যুদ্ধবিশেষণেঃ। কুৎসিতং কুৎসনৈশ্চ্যর্থে শ্রেণ্যাদয়ঃ কুতাদিভিঃ। যুবাথলত্যাদিভিস্তপোটাদ্যৈজাতিবাচিনঃ। উপমানানিসাধশ্ম্যৈগ্যথেয়ংহংস-করণমেবার্থযুখিশেষণে:। সম্যার্থকানামনিচ যথা সপ্তর্ষয়োদিবি। সম্যাপৃর্বঃ সদ্বিতঃ স্থাতদ্ধিতার্থস্থয়ং ত্রিয়। ক্লীবলিঙ্গঃ সমান্থারঃ সচসংহতি মুখ্যকঃ। অপাত্রাদিরদস্তঃ সনদাদ্যন্তর্গতঃ স্ত্রিয়াং। ত্রিনেত্রীচপশগ্রামী চতুর্মুখী। আপ্রত্যয়ান্তনান্তোহয়ং স্ত্রিয়াং ক্লীবেচনশ্চলুক্। যথা ত্রিখটুং ত্রিখটুী ত্রিতক্ষণ ত্রিতক্ষাপি। অহৃহান্তাঃ পুংসিরাত্রান্তাঃ প্রাগসন্ত্রাকাঃ। ক্লীবেসন্ত্রাব্যয়াৎ পশ্চাৎ প্রথোহর্দ্ধর্কাদিরন্তিয়াং। ময়ুরব্যংসকাদিত্বাৎ কেচিত্তৎপুরুষাঃ স্মৃতাঃ। কচিতিঙতৈরত্যার্থে যথা এহীহাদ্যাঃ সাধবঃ স্মান্তদ্কতে যত্রকশ্মণি। তিঙক্তঞ্চিঙক্তেন সাতত্যেননিযুক্তিয়। আভীক্ষ্যেকর্মণাছম্ভং সমাসার্থেতুকর্ত্তরি। দ্বিতীয়াদিবিভক্ত্যন্তঃ প্রথমান্তিঃ সমস্ততে। ক্তান্তেন কালবাচিদিনাদয়ঃ। খট্টাক্ষেপেহত্যন্তযোগেকালাঃ শ্রিতাদিভিন্তথা। হেতো তৃতীয়াবহুলং তৎকৃতাদ্রব্যবাচকৈ:। স্তুতিনিন্দারোপিতার্থেকৃত্যৈ: পূর্ব্বাদিকৈরপি। ভক্ষ্যেণোপস্কারকাণিয়তান্নং চতুর্থ্যস্তান্তদর্থাদিবলিহিতস্থরক্ষিতৈঃ। অর্থেননিত্যং সমাসঃ সচবাচ্যস্থলিঙ্গভাক্। পঞ্চ্যান্তাভয়ার্থেন অপেতাদিভিরল্পাঃ। ষষ্ঠ্যন্তাশ্চ যথা রাজপুরুষঃ পদ্মশ্বেরিভং। কায়েনস্থৈকদেশার্থাঃ পূর্ব্বাপরাধরোত্তরাঃ। অর্দ্ধং নপুংসকং স্বৈকদেশিনাতৎসমেহংশকে। নিত্যং ক্রীড়াজীবিকার্থকৃতাক-প্রত্যয়ান্তকৈ:। তৃজকাভ্যাং কর্ম্মকত্রে ক্লিকারণেচযা। শস্ত্রানাব্যয়তব্যেনপূরণেথডমান্তকৈ:। গুণিভাষণযোগ্যৈস্তগুণবাচিপদৈরপি। ক্তান্তাদিপদৈর্য্যোপে সাষ্ঠী ন সমস্যতে। . क्लारखनावयवानिवताज्याः। कृरेकार्मिरयाराथ्याध्यार्थः स्मर्परमाधानिरेकत्रि। পদস্তে উং দ্বন্দ্বতৎপুরুষেংপিচ। নঞ্মুখ্যো यथा দৃষ্টমশক্তোংয়মকারণম্। সংসর্গাভাবেগোণস্তুত্বতি। সাদৃশ্যপর্যুদাদেষবিরোধকুৎসিতেষ্চ। নঞ্কারঃ সমাদেস্থাদন্ স্বরেন 💅 নথাদিগঃ। কেপেকচিত্তিঙন্তেন জাল্মহেঅকরোষিতৎ। অত্যাদয়ঃ সমস্তন্তেক্রান্তাদ্যর্থেদিতীয়য়া। व्यवानयञ्जीयारिषः क्रुकीनार्यश्वरकार्किनः। পर्याानयन्त्रपूर्यारेषः भानानार्य পत्रिवायः। গতानार्थं পঞ্ম্যानिर्व्यताञ्चाः। প্রাক্পদার্থপ্রধানোহয়ং স্মাসোবাচ্যলিক্ষ ः। क्क श्वत्रवानिय्। काञ्चीयन (र्थकार्यकार्यकार श्वर्यक्षा। नमानार्था त्नक श्वर्ण नमञ्जल ।

নিত্যং यर्भनवङ्बीहिर्विनिशर्ष তথাদিশো। অসমানাধিকরণপ্রথমার্থন্চ কুত্রচিং। সঙ্গাশকৈঃ সমস্যন্তেদুরাসন্নাধিকাব্যয়াঃ। স্বন্ধবার্ধয়োঃ সখ্যাঃ সখ্যাহৈর্থত্ত্ততঃ স্মৃতঃ। সপ্তম্যন্তং গৃহীত্ত্বতি ভূল্যরূপং সমস্থতে। দ্বিদণ্ডাদ্যাঃ সাধবঃ স্থাঃ সমাদেষু প্রয়োগতঃ। . ভৃতীয়ান্তিসহস্তত্তকর্তব্যো-বা সহস্তদঃ। অদৃশ্রাধিকয়োর্মাশিষ্যগোবৎসহলেপরে। অকালার্থে পরেনিত্যমব্যয়ীভাবেসহস্তদঃ। মানদৃগদৃ শদৃক্ষেযুজ্যোতির্জ্জনপদাদিয়। মানলোপঃ সমানস্থধর্মপক্ষাদিকেতুবা। চার্থেদ্বন্দঃ সমাহার-ইতরেতরযুক্চসঃ। সমুচ্যাম্বাচয়য়োর্দ্ধানান্তিনচাব্যয়ৈঃ। অবায়োর্দ্দেবতাম্বন্দ্রপ্রদান্তক্ষীর্ঘতা। नमीर्याराय्क् क्षिमिक ज्वविकाविकावणा। तनव्यत्विमितावा शृथिवगः निवैमिकाशि। अकावणा **अकातात्छिविमामश्वित्वार्च (याः। यानिमश्वित्वारे**ण्डवः श्रू<u>क्रणस्</u>वि । পিছুরবশেষোমাত্রা-কর্ত্তব্যোবা যথা পিতরো। মাতাপিতরোমাতরপিতরাধেযোহদস্তোহপিনিপাত্যতে। পুজােছহিত্রাব-শেষ্যঃ স্ব্র্ঞাভ্রাতাবশিষ্যতে। শৃঞ্জ্বাবা শৃশুরঃ সূর্ব্বেস্ত্যদাদ্যাস্তত্ততৎপরং। পর্ত্তোজংদ্ঞ্জায়ায়া-জম্পতী দম্পতী যথা। সরূপাণামেকশেষোহং শতোভেদবতামপি। পুমান্ স্ত্রীপ্রত্যয়াস্তেন রূদ্ধোযুনা-বশিষ্যতে। স্ত্রীপুকাঁচ ক্লীবলিঙ্গমক্লীবেনৈকবচ্চবা। বহুত্বেগ্রাম্যপশুভিরতারুণ্যাশ্বিভঃ স্ত্রিয়ঃ। यः সরপবিরুপৈকশেষঃ পাণিনিসম্মতঃ। চান্দ্রাঃ প্রকৃতি বৃত্তিভ্যাং সিদ্ধেতিয়াসুমেনিরে। ক্লীবলিঙ্গঃ সমাহারস্তভ্যনিত্যত্বনির্বয়ঃ। প্রাণ্যক্ষভূষ্যকাঙ্গানাং দেনাঙ্গানাস্তভ্যনি এষাং ন স্খ্যাযুক্তানাং সমীপযোগিনান্তবা। অনুবাদেচরণানাং ছেনাদ্যতনীপ্রয়োগযোগেচ। অনপুংসকলিঙ্গানাং যজুরুক্তানাং ক্রতুনাঞ্চ । সন্নিহিতাধ্যেতৃণা মপ্রাণিদ্রব্যজাতীনাং। দেশনদীনগরাণাং লিঙ্গভেদে অথকারূণাং। শাশ্বতিকবৈরভাজাং দেবাম্বরানৈমিত্তিকবিরোধিনঃ। বিপ্রতিষিদ্ধগুণানাং প্রযুক্তানাং। রক্ষতৃণব্যঞ্জন মুগপশুশকুনীনাং বহুত্বেবা। পূর্ব্বাপরমধরোত্তরমেবং স্থাদখবড়বঞ্চ। পুংস্থা বড়বা অশ্ববড়বা অসমাহতো। বহুত্বে কুদ্রজন্তুনাং ফলানামপি তাদৃশাং। গ্রাশ্বপ্রভৃতিত্বেন সমাহারস্তুকেযুচিৎ। এম্বেনদধিপয়ঃ প্রভৃতীনাং সমাহুতিঃ। ষষ্ঠীসমাদে ক্লীবেস্থাৎ কম্থোশীনরনামস্থ। উপজ্ঞোপক্রমো ক্লীবে তদাদিত্ব প্রকাশনে। ছায়াবতাং বহুত্বেতু ছায়াস্থাৎ সংহতৌ সভা। শালার্থাপ্য-মনুষ্যার্থাদ্রাজার্থাদপ্যরাজভঃ। সেনাশালাস্থরাছায়া নিশাবা ক্লীবলিঙ্গকাঃ। সোহব্যয়ীভাবো যত্তনানাবিভক্তি-ষেকরপতা। কারকার্থে সমীপেচ সমৃদ্ধিঋদ্ধাভাবয়োঃ। অমুপূর্ব্বেযোগপদ্যে পর্যান্ত পরিকীর্ত্তনে। শব্দপ্রান্থভাবে পশ্চাদর্থেহভাবে হতীতত্বেচ। ভোগাকালে সম্পন্নত্বে সাকল্যেহপ্যর্থান্তর্ভাবাৎ। সাদৃশ্য যোগ্যতাবীপ্সা পদার্থানতিবৃত্তয়ঃ। যথার্থাবাচকন্তেষাং সাদৃশ্যে নযথাদয়ঃ। তৃতীয়ান্তশলাকাক্ষ সম্ব্যার্থাঃ পরিণাসহ। স্থবন্তং প্রতিনাল্লার্থেঅভিপ্রত্যভিলক্ষণে। দৈর্ঘ্যেহ্মুর্য্যাবদেতাবদবচ্ছেদে সমস্ততে। বংশ্যেন সম্যাবচনাস্তেনদী বাচকৈরপি। সংজ্ঞায়াং বহিরর্থে তৈন্তিষ্ঠদ্গুপ্রভৃতীনিচ। পঞ্চম্যকৈছিঃ পর্য্যপাঙঃ প্রাগাদয়শ্চবা। ষ্ঠ্যন্তির্ব্বাপারমধ্যাবেত্বমন্তস্থতৈতয়োঃ। অব্যয়ীভাবঃ ক্লীবলিক্সোযথোপবধুশোভনং। অম্বিভক্তেরপঞ্চম্যা অব্যয়ীভাবাদদন্ততঃ। নদ্যদ্ধিবংশ্যসখ্যার্থ সমাসাদি তরত্ত্ব । অস্বা তৃতীয়া সঞ্চম্যর নদস্তান্বিভক্তি লুক্। সমাসকাণ্ডেপ্রথমানিদিষ্টমুপসর্জনং। পূর্বং যাতিন্বয়োর দ্বসমাসেহল্ল স্বরার্চিতে। অনুপূর্বেণবর্ণাস্ত নিত্যং জ্যায়ান্ কনীয়সঃ। সমান স্বরয়োর্গ্রিসংজ্ঞং লঘুক্ষরঞ্যৎ। স্বরাদ্যদন্তঞ্ ঋতু-নক্ষত্রাণ্যসূপ্র্বশঃ। এষাং প্রবিপাতানাং ব্যভিচারোহপি ভূরিশঃ। বিশেষণং বছত্রীছো সপ্তম্যস্ত-পদঞ্চ যৎ। সপ্তম্যন্তাচ্চ নিষ্ঠান্তমন্ত্ৰাৰ্থক পদান্তুবা। সৰ্ব্বেভ্যঃ সৰ্ব্বনামানিসন্থ্যাশব্দান্ততোহপিচ। পূৰ্বং যাস্তার্মন্থ্যার্থশব্দাঃ স্থ্যাভিধায়িনাং। সপ্তমান্তন্ত্রগড়াদেঃ পরমন্ত্রার্থকাদপি। রাক্তদন্তাদিযু পরং যাতি বাম্যাহিতাদিয়। পূর্ব ছাষিত পুংক্ষাঃ স্ত্রালিঙ্গা উঙন্তবর্জিতাঃ। স্ত্রালিঙ্গল্যার্থপদে স্ত্রাপুরণ্যাদি বর্জিতে। পূরণ্যাদি নিমেধােহয়মন্সত্র কর্মধারয়াৎ। তরাদােচ গুণার্থানাং ছতলােরপি গৌরতা। অমায্যাএবৈযণিন্তাদ্যথায়েয়য়তাদনঃ। বহুব্রীহো ন পূর্ব হুয়ঃ সংজ্ঞাপুরণকোপধাঃ। নচাজাতীয়-দেশীয়র্দিভাভার্যোহন্তমাগতিঃ।. ঈপ্রত্যান্তবাঙ্গানামমানিনিচ পূর্ববং। জাত্যর্থন্ত স্বরান্ত্রতব্রজিমন্তজিতন্তা। অণ্ চেদ্রক্তবিকারার্থে তদন্তন্ত্র পুর্বিটিঃ। তরতমরপপ্ কল্পক্রবমতহত গোল্র-চেলেয়ু। ঈপ্রত্যয়ন্তব্রেরমাণিতরা ব্রাহ্মণিক্রবাচাসাে। স্তিয়া অক্সন্তান্তয়ােদ্র পক্ষেত্রয়ন্তচ। সর্বনাম্মেরিভিমাত্রে পূর্বে ছাবঃ কচিতুন। অচ্যুর্থে মহতন্তন্ত আছং তুল্যার্থকেতথা। কর্ঘাসবিশিন্টেয় তাকারন্থাত্বমাদিশেৎ। উদকন্তকলুঙ্নান্ধি পূর্ববৃদ্ধনাত্তরস্কাচ। পেষেপিষোহনুপ্রয়োগেহদয়ং হলণাদিয়ু তিরাগোৎস্করেয়্চ । ঘষ্ঠীতৃতীয়াসমাসে নচেদর্থে বিভাষয়া। ইতিসমাস্কারিকাবলী। ৯ ॥ সপ্তমবিভাসীয়ভিজিতকারকাবলী।

একবাক্যেতদ্বিতাবাপদাদর্থানুসারিণঃ। অণপত্যে ঋষিকুরুর্ফান্ধকবিদাদিতঃ। শিবাদেশ্চ পৃথিব্যাস্ত্রণশ্চ সাপার্থিবা যথা 📍 অণশ্বপত্যাদিভাঃ স্যাৎ কন্সায়াস্ত কনীনচ। উর্চ্চমাতুর্খ কারস্য সন্থ্যা-সম্ভদ্রপুর্বকাৎ। পার্শ্বাচ্চবদ্য উত্বঞ্চ পরশুশ্চ পরস্ত্রিয়াঃ। অকারবাহ্বাদিভ্যামিণস্তুদাদেরদশ্চ লুক্। স্থাত্ব্যাসবরুড়নিযাদাদেরকঙ্ঙিণি। দ্রিয়ামনার্ঘাণিণোঃ শুঙ্ তিচতুর্থ গুরুষরাৎ। ন পুত্রপত্যোস্তৎ-পুরুষে বহুব্রীহে নবন্ধুনি। স্ত্রীপ্রত্যয়ান্তাদত্ত্যাদেরপ্যেযণ্ জ্র ক্র বিত্যপি। কুর্মাদকবিকণাভ্যামে যণ্ কাশ্যপবংশজে। কল্যান্যাদেরিনঙ্চ দ্যাৎ ক্ষুদ্রাভ্য এরণে যণো। শীলাঙ্গবিকলাঃ ক্ষুদ্রা আরণ্ দ্যাজ্জা-**ণ্টফাণ্টতঃ। চটকায়াভবেদৈরণ্ ব্রিয়াং লুক্ চটকাযথা। এরধারধে**যধ্বি গোধাশব্দাত্রদীরিতাঃ। শেষাইদং জাতভব ক্তশিষ্যাগতাদয়ঃ। শেষেচনদ্যাঃ কোষাচ্চ এষণ্ নাদেয়মস্তুতং। তিকাদেরায়নিণ্ তৈকায়নির্গাঙ্গায়নিস্তবা। স্বস্থরীয়ঃ পিতৃমাতৃভ্যাং স্বস্তুর্ভে যণী যণো। স্বশুরাদ্যঃ কুলাদেযণীনোচ ছুকুলাৎ পूनः । क्रेनक्षरायगीनाः द्यारमिक् नीरनार्थरमिक् नः । वस्त्र पूर्व्यकामीरनामराक्नामगीनरार्ग। ঈনকৈকে। ভাতুরীয়োব্যদিষিচরেবত্যাদেরিকণ্ স্মৃতঃ। অণ্ ষণ্ষ্যাঃ স্ত্রানার্জ্ঞাতো নিপাত্যো-মাণবঃ শিশো। অপত্যমাত্রে গোত্রাদ্যান্তদন্তাতু বিবক্ষয়া। পৌত্রাদ্যপত্যং গোত্রং তজ্জীবৎ পিত্রাদিকং যুবা। গর্গাদেণ্যঃ স্মৃতোগোত্তে পুত্রেতু কচিদর্গপি। মধোর্ণ্যোত্রাহ্মণাপত্যেবলোঃ কুশিকবংশজে। কপিবোধাদাঙ্গিরসে বতণ্ডাচ্চ স্ত্রিয়াং ণ্য লুক্। অণ্ণ্যশ্চ কুরুনাদিভ্যঃ কোরবায়ঃ কোরবানৃপাঃ। কুঞ্জা-দেরায়নণ্ তত্মাৎণ্যঃ স্বার্থে প্রাণ্ডুড়াদিতঃ। অস্ত্রিয়ামবহুছেচ কৌঞ্জায়ত্যোহ্য়মাগমৎ। ণ্যেণস্তাভ্যামায়-ভৰ্গাক্তৈগৰ্ভেশ্বকাদাৎদেশরদ্বতান্ত্র্গা। দ্রোণপর্বতজীবাস্তাদিণ্ চ নণ্সাদ্দগ্রাদাগ্রায়ণোড্রবে। দ্রোণায়নোযথা। দ্রিয়াং গোত্রপ্রত্যয়ান্তাৎ কুৎসায়ামণিকর্গপি। ইদং ভবার্থেবহিষোযণীকণ্বাছ-भिक्तियः। यगरगीयमरमवाज्याः रेनव्यारेनवीष्ठजात्वी। दिववश्रज्यानार्थञ्चीश्रःजाः नग्नरगीमरकी। অন্ত্রীলিঙ্গেদেশনামপ্রসিদ্ধ ক্ষত্রিয়স্তত্ব। তদন্তেনবহুত্বোক্তাবপত্য প্রত্যয়স্তলুক্। গর্গাদীনাং বিদাদীনাং যক্ষাদীনাঞ্চতাদৃশঃ। ভৃগুকুৎসবশিষ্ঠাত্রি গোতমাঞ্চিরদামপি। কুণ্ডিমগস্তায়োঃ কুণ্ডিনাগস্তী ভবতো-বুকি। বহুষরেভ্যোভরত প্রাচ্যুগোত্তেম্বিণস্তথা। রাজপ্রসিদ্ধবং শাদ্বাজাতার্থাণশ্চকুত্রচিৎ। কাপীণ-

স্তাদায়নণঃ পান্নাগারিঃ স্ততো যথা। গর্গাদীনাংবিদাদীনামেকত্বদ্বিত্বয়োস্তবা। ষষ্ঠীতৎপুরুষে পুরুলং গর্গকুলেযথা। অবেণাদেঃ ফলেহণোলুগ্জম্বাবাক্লীবভাতথা। ইলুক্স্যাভদ্ধিতলুকিহরীতক্যাদিকংবিনা। नूरभारिशय क्रिं कार्याः श्रक्तर्को किर्वे । त्यारिना भाषा सन्वर्ति श्रीय विश्विष्ठ । व्यात्र स्वाति । व्याति । সোর্যার্যাস্যলোপঈয়েহণিচম্বৃতঃ। ঈয়েকণীয়ুমৎস্যাদের্যাথামৎসীমনুষ্যসো । অণ্ তত্তজাতং দৃশ্যঞ্ ভবং ক্ষুধং সমুদ্ধৃতং। তেন প্রোক্তং কৃতং গৃহং তচ্ছিষ্যস্তত আগতঃ। তদদূরভবস্তেন নির্বত্তআর্তো-রথঃ। তেসন্তিদেশেতকাল্লিযুদ্ধেযোদ্ধে প্রোজনাৎ। তেন দৃষ্টঞ্বাশিষ্ঠং সামযোবামদেবতঃ। শেষার্থ-উত্তরাদাহণারণ্যাগ্রউদাইতঃ। অকণ্মসুষ্যেনগরাৎপুনঃ প্রাবীণ্যকুৎসয়োঃ। অণ্তদ্যেদং বিকারাদি যান্তাবণিজভুত্তপু। ভূচঃ প্রাণিট্চ সম্বোদুঃ সাম্বহিত্রমিদংধনং। এণ্যাএযণ্রথাদ্যঃ স্যাদবাহনপর-স্থিতাং। রাগাদণ্ তেন রক্তার্থেহণিকণ্শকলকর্দমাং। ইকণ্লাক্ষারোচনাভ্যাং নীলপীতাদকয়নো। অণ্তত্রসংস্কৃতং ভক্ষ্যং শূলোখাভ্যাস্তযঃ স্মৃতঃ। ক্ষীরাদেযণ্দ্রপ্ইকণণিকর্মপ্যুদশ্বিতঃ। তদ্যুক্তকালেক ক্ষত্রাদণ্দ্যাদিহ্যকারলুক্। সাপেষ্যাদিঃ পৌর্ণমাদামাদেহস্মিমিতিনামনি। অণোলুক্চেদ্দিনং রাত্রি-স্তিথিব্বানবিশিষ্যতে। নক্ষত্রাদ্দন্দ্গাদীয়োদেবাদণ্দাস্থদেবতা। কঃ কৈচদোমাদ্যণণো দোমীঋক্ শেলিয়ানোদনং। পৈক্লাক্ষিপুত্রাদেরীয়ইয়ঃ শুক্রাচ্চশুক্রিয়ঃ। সর্ব্বতায়িকলিভ্যাং স্থানেয়ণায়েয়নৌষধং। মহেন্দ্রশতরুদ্রাভ্যামিয়েয়াণোমহেন্দ্রিয়ং। ঈয়য়োগৃহমেধাদের্বায়পিত্রাদিকাতুমঃ। অণ্সমূহেসমূহি-ভ্যোগোত্রোক্ষোষ্ট্রাদিতস্থকণ্। গণিকাদের্য্যণকণো কেদারাদ্যণিকপ্পকণ্। ইকণ্কবচিহস্তিভ্যাং চেতনা-রহিতাদৃপি। ধেনোঃ কণশ্বাদ্যগীয়ে কেশাদ্যণিকণীয়চ। শেষেচপুরুষাদেযণ্পার্খং পরশুরুদ্দকে। ব্রাহ্মণমানববাডবপৃষ্ঠেভ্যোযঃ স্ত্রিয়ান্তপাশাদেঃ। ইন্চথলাদ্রথগোভ্যাং কড্যত্রোযশ্চরথকড্যারথ্যা। পদ্মাদেরিন্ পদ্মিনীয়ং নলিক্যুৎপলিনীযথা। জনবন্ধুগজগ্রামসহায়েভ্যস্তলং বিছঃ। ক্রীড়ায়াং ণঃ প্রহরণাৎ পৌষ্পাক্রীড়াস্ত্রসাযথা। ঘঞস্তেভ্যঃ সাক্রিয়াস্থাং মুট্চশ্যেনতিলাদিহ। দ্বন্দাদ্বিণাহেবৈরেচ-কন্ যথাভর্গগর্গিকা। বেদ্যাদণ্ বেত্ত্যধীতেবাক্রতৃক্থাদেরিকণ্স্মৃতঃ। বসস্তাদিপুরাণাখ্যায়িকাখ্যানেতি-হাসতঃ। বিদ্যালক্ষণকল্লান্তসূত্রান্তাদপিকীর্ত্তিতঃ। ফলাঙ্গতিক্ষত্রধর্মাদিদ্যায়া অণিকগ্পপি। অকন্ক্রমা-দিকাশ্মীমাংসকক্রমকসামকাঃ। ইকঃ পদোত্তরপদাৎ শতষ্ষ্টিপথষ্টিকঃ। সর্ব্বপৃক্ষিন্ধভায়ং লুকুপ্রোক্তার্থ প্রত্যয়াদপি। ইনণস্তণজন্তাদণ্ স্বার্থেপ্রজ্ঞাদিতস্ত বা। স্থস্নাতাদেঃ পৃচ্ছতিমাশব্দাদেন্তদাহেতি। পরদা-রাদেগচ্ছত্যর্থ ইকণ্সাদ্দিতীয়্যন্তাৎ। দিব্যতি খনতি জয়ত্যপি জিতমিত্যর্থেত্তীয়ান্তাৎ। তরতীত্যর্থে-চৈকদ্বিস্বরশব্দাদিকঃ কার্য্যঃ। ইকণ্তেনচরত্যর্থেরথাদিভ্যপ্তিকঃ স্মৃতঃ। ইকণ্চশ্বগণাৎ শ্বাগণিকঃ শ্বগণিকীচমুঃ। তেন সংস্ফ্রীত্রার্থ ইকণ্সালবণাতু লুক্। মুদ্যাদণ্ শক্ষু লীমোদ্যীচুর্ণাদিন্ চুর্ণিনীসিতা। ওজস্মহোহস্তসইকর্মর্থন্চেত্তেনবর্ত্তে। দণ্ডাজিনায়ঃ শুলাভ্যাং দম্ভতীক্ষার্থয়োরিকণ্। তথাবর্ত্তইত্যর্থে-প্রতিকূলাদিকাদপি। পরিপার্শাৎ পরিমুখাদপ্যয়ং পারিপার্শ্বিকঃ।ধর্মাধর্মাদাচরতি ধার্মিকোইয়মধার্ম্মিকঃ। তত্ত্রোপপন্নেসময়াত্তদাপন্নেতু সংশয়াৎ। গর্হ্যং প্রযক্ষতীত্যর্থে রুদ্ধের্ধুষিচেষ্যতে। টিকঃ কুসীদাদ্দশৈকা-দশাদিপ কুসীদিকঃ ইকণ্ডচ্ছীলমস্তার্থে করোভ্যুঞ্তিরক্ষতি। পক্ষমৎস্তম্বগান্ হন্তিপরিপত্তঞ্চিত। ধাবত্যমুপদাদিভ্যোগৃহ্লাত্যর্থেপদোত্তরাৎ। ললামপ্রতিকণ্ঠার্থাচ্চার্থিকঃ প্রাতিকন্ঠিকঃ। উপজানুপকর্ণো-পনীবিভ্যোবহুধাগতে। তদশুপণ্যং পণ্যেভ্যঃ টিকঃ স্যাৎ কিশরাদিকাৎ। শিল্পালম্বাদিকণ্ শিল্পমণ্চ মড্ডুকঝর্মরাং। শস্ত্রাদিকণ্ প্রহরণমিত্যর্থ ইন্থসস্তুকণ্। ঈকণ্ স্থাচ্ছক্তিযন্তি ভ্যাং শাক্তীকোরাক্ষসাধিপঃ।

ইকণ্ তত্রনিযুক্তেহর্থে আগারাস্তাদিকঃ স্মৃতঃ। বেতনাদেক্ষীবতীক্ষিক্স ক্রয়বিক্রয়াৎ। আয়ুধাদিক-ত্তেতিদৈষ্টিকঃ। অকালদেশাদধ্যায়িশুসাবাইমিকঃ শ্রুতেঃ। প্রস্তাবাদের্ব্যবহারাদার্থেচাবস্থাটিকঃ। অবৈদ্যাদীয়তইত্যর্থ ইকণ্ ভক্তাদিকগ্নণো। অণ্ সাধ্বর্থেহিতং ভক্ষ্যমিতী কণ্ পৌপিকঃ শ্রমী। অধ্যাত্মানের্ভবার্যেন্তাৎ স্বার্থেহপি বিনয়াদিকাৎ। তীয়ান্তাৎ স্বার্থন্টকণ্ স্থাবিদ্যাচেন্নাভিধীয়তে। উপ্তপুষ্পাৎ পঢ়ামানসাধুষণ্ কালবাচিনঃ। ইকণ্ চেদং ভবার্থেবু প্রারুষস্ত্রেণ্যইষ্যতে। বর্ষাভবং वार्षिकः श्राटक्षमञ्ज्ञानिजन्ठनुक्। ইकरनानुक् ठकानार्थाष्ट्रिशीकारकामरहारमवः। क्रीजानार्थिषकन् কার্য্যঃ শতান্ত্র্যদিকৌস্মতো। তিশদস্তান্তস্থারাঃ কন্বস্বস্তেভাইট্চবা। টিকঃ স্থাদর্দ্ধকংসাভ্যামণ্ স্থাদিংশতিকাদিকাৎ। শূর্পাদিকণ্চ কংসাদেদিধধ্যদ্ধপরাত্রপুক্। স্থবর্ণাদেন্তথা লুখানিকাদিত্তিব-ब्रुखतार । विखाक्रवािविखः विविधिकः वक्टविखिकः । वेशकः भारती कािकिनी जािमी नािवः मिछ-কাল্লুকি। ইকণ্ স্থাতত্ত্রবিদিতেলোকাৎ সর্বেবাতরাদিপ। পৃথিবীসর্ব্বস্থাত্রামণ্ নিমিতেশয়োরপি। ইকলিকোন্তঃ কাম্পাদেঃ শেষেহর্থে বৈদিকীক্রিয়া। ত্যদাদির্দ্ধ্যাকারাদিস্বরার্দ্ধাঃ পরেভুবা। হিতার্থ ঈয়ঃ শেষেচ বৃদ্ধাৎ কাণ্যাদিকাদৃতে। কুক্চ রাজপরাদীয়ে ভবতস্তশ্চুদঃ স্মৃতঃ। কচিৎ কদাচিদ্তাঃ কণ্কার্য্যোভবতস্তবা। মুখশার্শতদোরীয়োমুথতীয়ং তবাস্কৃতঃ। তদর্থকপ্রকৃত্যর্থ-ঈয়োবিকৃতিবাচিনঃ। ছদির্বলুপেধেরেযণ্ ছাদিদেয়াযথোলুপাঃ। স্থানান্তেভাস্তলাঈয়োগুরুস্থানীয়-যমসন্দশিশুক্রন্দস্বন্দ্রেক্রজননাদিকাৎ। অধিকৃত্যকৃতেগ্রন্থঈয়ঃ স্থাদণ্ হিতেগবাদ্যুবর্ণান্তাদ্যউধন্ধ ধসস্তবা। নাভেন্ধ ভশ্চাপৃপাদেরীয়যো পৃপ্যমৈক্ষবং। দিগাদিভ্যোভবার্থে যোষণ্ স্থাৎ পঞ্জনাদিকাৎ। ইয়ঃ সমুদ্রনক্ষত্রাদব্লাচ্চাগ্রাদিয়েয়যাঃ। সমানতীর্থাদ্বাসীতি যঃ ममात्नामत्रामि । वङ्बार्थ युगात्मर्याभूतः स्रात्त्रयगीनयाः । क्रेनः मर्व्यभूतात्मकभूतांमीनस्रान् क्रिया । বিধ্যত্যথেঁয় করণামুক্তো পাদ্যঃ কুশাক্ক্রঃ। নাবস্তার্য্যেবিষাদ্বধ্যেতুলায়াঃ সন্মিতেহপিচ। ধর্মাৎ প্রাপ্যেহ্নপেতেতুন্যায়পথ্যর্থধশ্বতঃ। সীতায়াঃ সমিতেতুল্যেবয়সশ্ছন্দসংক্তে। অণ্ চোরসোজনা-चारमयः कार्याः कर्यर्गह्मार । मर्थामिरञ्जार्श्वजेजार्थ यर्ष्ट्रमारमित्रकश्वि। शाखारमत्रोग्ररयोयस्कामिग्र-क्रेन् पृक्षिष्ठः। প্রয়েক্তন্যঃ স্থাদেরিক্ষিত্রমহাদিকাং। সপ্তম্যন্তাত্ত্রসাধোষ্ট্রকণ্ স্থাদগুড়া-এয়গ্ধতিথি পথ্যাদেশ্যাণো পরিষদঃ স্মৃতো। ঈনণ প্রতিজনাদিভাঃ कथारमञ्च । मिकार। সাংযুগীনা যথা ভটাঃ। যোগাস্তাত্মন্ বিশ্বজনাদিভ্যঙ্গনঃ স্মৃতোহিতে। ঈনণীনো সর্বজনাদিক্ষিত্যং মহাজনাং। অজাবিভ্যাংথ্যমজথ্যঃ প্রদেশোহবিধ্যমৌষধং। রাষ্ট্রাদিয়ঃ স্থাচেছশেহর্থে রাষ্ট্রিয়া-ধাশ্যসম্পদঃ। যোনিবিদ্যাযোগিনঃ স্থাদকণ্ কণ্ ভুঞ্মদস্ততঃ। পারাবারাদিকাদীনঃ পারাবারীণ-त्योयथः। গ্রামাদ্যঈনশ্চ যথা গ্রাম্যোগ্রামীনইত্যপি। অলঙ্গামিস্তধ্বনস্তোতাবীয়শ্চাভ্যমিত্রতঃ। ঈনআপ্রপদাৎ প্রাপ্তাবনুগোর্বনগামিনি। দর্শনং সমুখ যথা মুখাভ্যাং যত্তজায়তে। সর্বান্নান্তোজিশুনুপদাহদ্বেন-য়েত্বয়ানয়াৎ। ব্যপ্তো দর্ব্বপরাৎ পাত্রপত্রপথ্যকর্মণঃ। গন্তর্য্যত্যন্তামুকামাদত্যন্তীনো বিষাময়ং। পরম্পরা পুত্রপোত্রপারাবারাদবাগুরি। গোষ্ঠাদীনণ্ ভূতপূর্ব্বে ছৌ সর্ববর্দ্মণঃ ক্বতে। তত্নভবোচি-**ज्यक्ट**द्ध वयन् स्थान्दी हिणालिकः । स्रेनन्त्रस्थात्वापनार्याः स्थारम्बी चिलानिकः । देन दिन स्थारमान्

श्योनाधीनः गगनःतराः। जेरनार्न्छानिनि वा चार्याधीनमृखतः। जानिज्ञ्रवष्कानः कर्मानः-পুরুষাদপি। নবাদ্যদীনত্বতনানবোন্চতনত্বয়েঃ। পুরাতনার্থাৎ প্রাদীনত্বতনাঃ প্রতনং যথা। বা ভাগরূপনামভ্যোধেয়ট্ তল্ দেবশব্দতঃ। বর্ণাৎকারঃ স্বরাক্তশ্চরাদেকোরেফউল্বনঃ। ঈনণস্তানি-পাত্যন্তেকেচিদর্থামুসারতঃ। কর্ণাদিভ্যোজাহমূলেপাকেপীল্বাদিকাৎকুলঃ। পুরঃ পশ্চাদক্ষিণাভ্যস্তাণ্ কালার্থকাব্যয়াৎ প্রাহ্লেচিরংভ্যাঞ্চনট্ স্মৃতঃ। ঐষমোহঃ শ্বদোবাত্যপ্ শেষেহর্থেত্যবব্যয়াৎ। নিসন্ত্যপ্ দেশনির্গতে। অবেদ্র্রি ষোচদূষমরীষানিক্ষলাত্তিলাৎ। পিঞ্জপেজোতিলপিঞ্জন্তিলপেজো-लंलाठेकर्गार कमलकादत्रदर्भावर्गकर्गिका। धीवादमः নিরস্থতাং । च्यानरगयन हरे अरवारे भरवं य-ইত্যপি। ময়ত্বিকারেপ্রাচুর্য্যেস্বরূপেপ্রস্তুতেহপিচ। ভাগাধিকং মূল্যমস্তেত্যর্থে সম্মার্থকাম্ময়ট্। এতচ্ছরারাচিকিৎস্থোযস্তত্তক্ষেত্রিয়ঃ স্মৃতঃ। স্থাকর্ষাদেঃ কন্কুশলেকামেধনহিরণ্যতঃ। প্রদক্ত দরাদাদূান ইকণীরিতঃ। স্ত্রিয়াং ভবার্থের্জিমদ্রাভ্যাং কন্ র্জিকাবধুঃ। প্রাক্সম্খ্যুশত-পাদাদেঃ কন্ বীপ্সাদানদণ্ডনে। ইবার্থেকন্ প্রতিক্তেসংজ্ঞায়াং লুম্মনুষ্যকে। অপণ্যেজীবিকার্থেচ যথা দিত্যোযমোজনঃ। শিলায়া এযণীয়েচি শাখাদিভাস্তযঃ শ্বতঃ। ঈয়ঃ কুশা গ্রাদিবার্থে-সমাসগপদাদপি। ঈকণ্ লোহিতককাভ্যাং লোহিতীকং জলং যথা। তদ্বোভাবইমন্ত্ পৃথাদেঃ প্রথিমাঞ্রিয়াং। বর্ণবাচিদূঢ়াদিভ্যঃ কর্তব্যোমণিমন্নপি। স্ত্রিয়ামণ্চ বিদশ্ধাদেকৈদশ্ধীমাধুরী গিরাং। যণ্ভাবে কর্মণ্যপি গুণবচন ব্রাহ্মণাদিভাঃ। স্থিদূতীবণিজোয়ঃ স্তেনাদেযানশ্চ লুগ্ যণ্ চ। প্রাণিজাতিবয়োবাচিহায়নম্ভযুবাদিকাৎ। উদ্গাত্রাদেশ্চ নাম্যন্তলঘুপুর্বাদণিষ্যতে। যোপধাৎ প্রাক্-স্বরগুরোর্বহুস্বরপদাদকণ্। সহায়াদ্যণ্চ সাহায্যং সাহায়কমিদং কৃতং। দ্বন্ধাৎ স্ক্রিয়ামকণ্ পৈতাপুত্রিকা-কৌশকাশিকা। মনোজ্ঞাদেরকণ্ মানজ্ঞকং মানুষ্যকং যথা। এযণ্ জ্ঞাতিকপিভ্যাং স্থাদৃত্বিগ্ভা ঈয়-ইষ্যতে। স্বার্থেচতুর্ব্বর্ণাদের্ঘ্যণ্ চাতুর্ব্বণ্যং পুরাস্ক্রজং। তেন নির্ব্তমিত্যর্থে কৃদ্তাবপ্রত্যয়াদি মঃ। ইফাদেরিমনেতি পূর্বাদপিক্তাৎপরাৎ। অম্বেফাচেদনুপদীদ্রফাসাক্ষা সঈশ্বরঃ। তদস্যান্তীতি মন্তব্ত বিনিনঃ প্রথমান্ততঃ। অবর্ণান্তাশ্মকারান্তাদবর্ণোপধ্মোপধাৎ। অশিড্ ধৃডন্তশব্দাচ্চবন্তঃ স্থান্নযবাদি-কাৎ। তদোস্তদৌ স্তোমস্থাদৌ সোনভোহঙ্গিরদোর্বতো। মস্থাদেগুণবাচিভ্যোলুগিষ্ঠেয়স্গুনোরপি। অঞ্মায়া২সম্তমেধাভ্যোবিন্ দীর্ঘশ্চাময়শুভু। অকারান্তাদপি ত্রীহাদিভ্যইন্ বন্ধিকামতাঃ। শিথাদি-ভ্যোবস্থিনোন্তঃ সশিখাবান্ শিখীযথা। বলাদ্বাহুরুপুর্ব্বাদিন্ বাহুবল্যুরুবল্যপি। সর্ববৃর্ব্বকবীজাদের-र्थामयाठाधनार्थका । ইশ্বশীলধর্মাস্ভাদ্বর্ণাত্ত্রক্ষচারিণি। স্থাদেরিন্ স্থীচুষ্থীকরুণীর্কপীহলী। कृष्ट्रामोकी প্রভীপীচ ক্ষিপ্রীযোঢ়ীচ বস্তুপি। হস্তদস্তকরাজ্জাতাবিন্ দেশেপুষ্ণরাদিকাৎ। ইন্ পুরণাস্তা-षय्रिनवानकः পঞ্চনীযথা। পিশাচবাতাতিসারাৎ কুক্চগ্রামঃ পিশাচকী। দ্বন্দাদনন্তাৎপ্রাণিভাদ্রোগাৎ ক্লকণাদপি। স্বাঙ্গেভ্যস্ত যথাপ্রাপ্তং স্তনকেশবতীযথা। স্বাঙ্গাদন্তাত লজ্বাস্থাৎ দিখাদিভ্যশ্চ দিখালঃ। **क्रू**प्रकल्प्रभाक यंथा यूकालमञ्चतः। वरमार्द्रियाविनाः मात्ररमाः अपूतः मनः। यानाहिक्रियाकोवासः रक्ननः रक्निनानमा । त्नामारमः भहेनः शिष्टामिन्तः शामामिकानु मः। कन्तानारमण्ड इयण्ड कन्तानिनः প্রণাদিনঃ। স্থাৎ প্রজাত্রাদ্ধার্কারভিভ্যোণঃ পক্ষে। অণ্ বাতপঃ সহআভ্যাং জ্যোত্রাদের্জ্ঞোত্রমঙ্গণং। সিকতাশর্করাভ্যামধিলদেশে বাকচিত্রলুক্। আদেশ্বধ্যাক্তমোবাত্থাৎ সলোপশ্চাধমোহধমঃ। ঊষাদেরঃ क्याच्यत्राकष्ट्राङ्करण्डकुः । वःखाद क्यानिक्वानामसार्थनाम् निर्माहिक

পার্থস্থগাণ্ডীবং গাণ্ডিবংধকুঃ। ঈরণ্বাস্থাদণ্ডকাণ্ডাদিরোমেধারথাতু বা। জ্যোৎস্নাদয়োনিপাত্যন্তে ইনজীম-मरको मलार । तकः পরিষদাসূতি কৃষিভাত্রাদিকাদ্বলু । শৃঙ্গরুন্দাদারকন্ বা ফলবর্হাদিনস্তথা । গোমিন্ পুজ্যেশালিনীশে অর্শ আদেরজর্শনঃ। তারকাদেরিতচ্কার্য্যোযথা তারকিতং নভঃ। বাচোগ্মিন্ চস্তলোপশ্চ যথায়ং বাগ্মিনাং বরঃ। বহুভাষিণ্যালজটজ্ বহুকুৎসিতভাষিণি। বলিভূণ্ডিবটিভ্যোভো-দস্তাগ্রব্তগ্রহমতো। উলোললাটবাতাভ্যাং বাতুলোহয়ং ললাটুলঃ। হৃদয়দয়াদেরালুর্ব্বাতদদহনে হিম ভিদ্দাশীতোফাচ । খল্পমুফালুঃ শুভমহমূর্ণাভ্যোযুর্কিজ্ঞেয়ঃ । কংশং পশ্চান্তবযুতি তুত্যাঃ স্থাঃ প্রত্যাঃ সপ্ত। কন্তঃ শস্তঃ কংবঃ কংযুক্তথা শংযুঃ। অনির্দ্ধারিত সংখ্যায়াং কিং যতন্তোডতিঃ স্মৃতঃ। পরি-মাণে তথাবন্তঃ কিং যত্তদিদমেতদঃ। ষডাদেন্তিদিশগুণে যক্তিসপ্তত্যশীতয়ঃ। ডতরঃ কিং যত্তদেকান্যে-ভ্যোহনিদ্ধারণে ঘয়োঃ। বছুনাং ভেদক প্রশ্নে ডত্মঃ কতমঃ কঠঃ। প্রমাণার্থে দম্মাত্রদ্বয়সাঃ স্থার্থ্যব স্থয়া। অণ্ মাত্রদ্বয়সা হস্তিপুরুষাদ্ধান্তিনং জলং। বস্তুস্তপরিমাণেভ্যঃ স্বার্থেদ্বয়সমাত্রচো। একাদাকিন্ পাক্ষিকঃ স্যাদেকাকীত্বেকএককঃ। উট্ স্তোমেপ্রিমাণেভ্যঃ শন্শদ্বিংশতিতস্ত ডিন্। পুরণেডো নাস্তামঃ প্রাগদখ্যকাৎ। দ্বেন্তীয়ত্রেস্ত্চরদাৎ কতি কতিপরাচ্চ থট্। চতুরস্ত যদীয়েচ চকারস্থ চলুক্ তয়োঃ। বহুপুগদজ্বগণাত্তিথড্বস্তুস্তকাদিথট্। তমট্শতাদিমাদার্দ্ধমাদ দক্ত শ্রাৎপরঃ। প্রাগদঝ্যকষষ্ঠ্যাদেক্বিংশত্যাদেস্তবা তমট্। স্থ্যার্থকাদবয়বে তয়ট্ কার্য্য উভাদট্। অয়ট্ তয়ট্চ দ্বিত্রিভ্যাং দ্বয়দ্বিতয়মিত্যপি। ষষ্ঠান্টমাভ্যাং ভাগেণঃ যাষ্ঠোহয়ং ভাগআন্টমঃ। বিধপ্প্রকারে স্থ্যার্থা-দ্ধাচ একাদ্ধামুগপি। দিত্রিভ্যাং ধমুণেধাচ ডাজাস্বার্থেধম্ন্ততঃ। বারেদিত্রিচতুর্ভ্যঃ স্বজ্রলুক্ কৃত্ব-স্থজন্মতঃ। অদ্যাদিসর্বানাতেগাবহোশ্চ স্থান্তবাদয়ঃ। ঙিবত্তসাদৌ তেম্বেতদত্বং স্থাদিদমিভিবেৎ। এতরেফইঅকারেসর্ব্বশব্দস্তদেসবা। পঞ্চমান্তাভ্রস্ প্রতিনাযুক্তাচ্চাদ্যাদিকাদপি। অজহাতিরুহোর্য্যৎ স্থাদপাদানং ততোহপিচ। সপ্তম্যন্তাত্রেদমোহঃ কিমো২চ্চ কাতিকুন্তহোঃ। ভবদীর্ঘায়ুরাযুত্মদেবানাং প্রিয়যোগতঃ! কালেপরাঃ স্থ্যান্দাসর্কায়কেমার পরঃ। ইদমোর্ছ্যধুনেদানীং দাদানীমোতদঃ স্মৃত্রো। অনদ্যতনকালেষু কিং যত্তটোর্হিকহ্যভূৎ। সদ্য আদ্যানিপাত্যন্তে তত্তদর্থ ব্যবস্থয়া। পূর্ব্বসব্ব ৎসরে পৃক্ষতরবর্ষেহত্তবৎদরে। পরুৎপরার্ষ্যিষমঃ স্থাৎপরুদস্থাৎ পরাধ্যগাৎ। এছ্র্যন্ পৃক্ষান্যান্যতরেতরো-ত্রাধরাবরাৎ। পৃর্বাদাবহনীত্যর্থে যথাপুর্বেক্যুরাদয়ঃ। উভয়াতু ছ্যুসেত্যুস্ চ পরাদেদ্যবিকীর্তিতঃ। প্রকারেথাইদং কিন্ত্যাং থমুরিখমিদং কথং। প্রথমাপঞ্চমীসপ্তম্যন্তাদিখাচিনঃ পরঃ। দিগেদশকালেম-স্ত্যাতিরস্ চ পূর্ববাধরাবরাৎ। তয়োঃ পুরধরশৈচ্যামস্তাতাববরস্থবা। অন্চন্তেভ্যোলুগস্তাতের্দক্ষিণোত্তর পরাবরাদ্বাপৃক্ষাচ্চ পুরাদেশ চ তস্ততু। উর্জশব্দাদ্রিরিফাতো প্রকৃতেশ্চোপমাদিশেৎ। দক্ষিণাত্বভরাচ্চাতিরবরাদধরাদপি। পশ্চাদেশশ্চাবরস্থ দিখাচি পূর্ববক্ষত। অপঞ্চম্যা অদূরেদিক্ শব্দাদেন-বিবভাষয়া। দক্ষিণাদাচ দূরেচাদূরেচ দক্ষিণাগৃহাৎ। আহিচ্ দূরেদক্ষিণাহিস্থিতবাসুত্তরাছুভো। ইফানিষ্ট প্রবৃত্তোশস্ বহুল্লার্থককারকাৎ। একাবচ্ছিন্নসন্থ্যাভ্যাং বীপ্লায়াং প্রস্থলোদ্বিশঃ। চুঃ স্থাদভূত তদ্তাবেভাব্যাৎ कृञ्जु खिर्याणिनः। व्यर्ग इसर्यान्ठा वीमीर्यारवः त्कवमस्रमू । यनम्ठक्रू तकः एक राजात्रहः मका तनुक्। কাৎস্ক্রেগন্যেসাতির্ব্যাপ্তোসম্পদ্যতেশ্চযোগেহপি। তদধীনোক্তোসাতিঃ সম্পৎকুঞাদিকযোগেস্থাৎ। দেয়েবস্তুক্তধীনেবাত্রাদেবত্রাকরোৎশ্রিয়ং। সম্বন্ধিতীয়ভূক্তীয়বীজেভ্যোডাচ্কৃষোকৃঞঃ। সম্থ্যাপরস্থাদ্গুণাচ্চ সময়াৎ কালযাপনে। শূলাত পাকেনিম্পত্তসপত্তাভ্যামতিব্যধে। সত্যাদশপনেভদ্রমদ্রাভ্যাং ক্ষেমমুগুনে।

নিকোষণেনিক্ষলাস্তানিক্সলাজ্মণ। অথপ্রিয়াদামুক্ল্যেপ্রতিক্ল্যেড্ছ্ম্থতঃ। ভাজব্যক্তামুকরণাদনি-তৌষিবহুসরাং। শব্দাসুকৃতিভাচিষিঃ পটপটাকুরুতেপটঃ। ক্রিয়াপ্রকর্মেতিঙস্তাং কিমেদন্তাব্যয়াদিপি। তরাম্তমামোভবতোযথা হয়ং রোচতেতরাম্। ু কিমশ্চিচ্চনচস্থাতাং বিশেষানবধারণে। উপমানাত্নপ-মেয়েবতিরিফীঃ পদ্মবদ্বদনং। স্থামবলোকেদেববদ্রাজ্ঞেব ব্যবহৃতমনেনরাজবং। অর্হত্যর্থেচরাজবদ্রস্থ ক্ত্রচিন্তাবে। পিতৃমাতৃভ্যাং ডামহপিতরি তেন খ্যাতেচুঞ্প্চনপো। আখ্যাতাচ্চতমাদ্যাঃ স্থারিষ্ঠেয়-ব্দু পুনগুণাৎ। গ্যোপদার্থপ্রকর্ষেত্রবীয়ক্ষু নৌমতো। তদভূাৎকর্ষকথনেভবেতাং তমবিষ্ঠনো। প্রকার-বতিজাতীয়ত্তে য়োরপপ্প্রশংদনে। অল্লাসমাপ্তোভুকল্পকেশ্যদেশীয়রঃস্মৃতাঃ। স্বব্তাৎপ্রাথহজ্বাস্থালযুর্বহ-নিন্দ্যেপাশব্ ভূতপুর্বেচরট্ ষষ্ঠ্যাস্তরপাচ। মস্বাদীনাং লুগিষ্ঠেয়শী নোর্লোভিষ্ঠআগভঃ। প্রিয়স্তপ্রতিরস্ত্রস্থিরস্কৃতিরোর্বর। বৃদ্ধস্তবর্ষদীর্ঘস্তদোঘভূপ্তপ্রেগ্র। বহুলস্ভতুবংহস্তাছুন্দবৃন্দার-कञ्जू। इरिछंत्रस्मि मनिरव्यर्छः थ्यान्थिरेम्नमामतः। नरहार्ज् रहनर्नन्रुर्छिपि हेर्ज्यर्घनामतः। চক্তঃপ্রশংস্থস্ত জ্যেষ্ঠোহয়ং ' শ্রেষ্ঠইত্যপি। বৃদ্ধস্তজ্যজ্যাদীয়ন্দোরীকারস্থাত্বমাদিশেৎ। ধোহন্তিকভানেদঃ কন্বাযুবাল্লয়োঃ। সরপপ্রত্যয়ান্তেভ্যঃসরপপ্রত্যয়ান্তরং। নান্তির্ত্তোসমানায়াং তত্ত্ব-विश्वकर्गाविना । ' व्यमानिर्वाममाश्वरस्थनामाज्यस्मामजा । व्यथ्माननकत्रभूतः भूत्रभ्भविश्वहस्था । কৃষ্ণপাণ্ডুদকামূনেঃ কৃষ্ণভূমং সরস্তটং। সন্মোত্তরনদী গোদাবরীভ্যাং ত্রিনদংবনে। প্রত্যকুভ্যাং সামলোক্ষঃ প্রতেরাধারাত্রসঃ প্রাধান্তবাচকাদপি। অন্ধাবসম্ভান্তমসামধান্ধতমসংনিশি। প্রতিসাম্ময়ংপটুঃ। রাজভ্রহ্মহস্তিপণ্যাম্বর্চসোরাজবর্চসঃ। উপসর্গাদধ্বনঃ স্যান্নিরধ্বাস্তীর্থগামিনঃ। তপ্তাম্ববেভ্যোরহসোযধা- ২বরহসংযথো। অব্যয়ীভাবেহক্ষঃ সমন্ত্রপ্রত্যধিভ্যোজরাজরস্। শরদাদেরপিশরত্বপানিদ্ধিমবচ্চত্বঃ। যত্তদিবোবিপাদিক্চস্ফিঙ্মনোহনোমহোনডুৎ। নিপাতনাতুপশুনং রজ্সঃ সহপূর্বকাৎ। ক্লীবলিঙ্গানস্তেভ্যোবাধুডন্ততঃ। নদ্যাগ্রহায়ণীপোর্ণমাসীভ্যশ্চগিরেরপি। সমাহারদ্বন্দগতাচ্চবর্গদধহা-ঋক্সামপ্রমুখাচ্চাক্ষিক্রবাদিস্তনিপাত্যতে। সখ্যাব্যয়াভ্যাং তৎপুরুষেংসুলের্ছ্যসূলমংশুকং। অহঃ সম্যাতৈকদেশসর্বপুণ্যাচ্চরাত্রিতঃ। এভ্যোহক্ষোহক্চপুণ্যেকাৎ সমাহারদ্বিগোচন। রাজন্ম-স্থিভ্যুক্তজ্গ্রামকোটাত তক্ষণঃ। অভদ্ধিতার্থেগোশন্দাৎ পুঙ্গবঃ স্ত্রীগ্রীযথা। অদ্ধাদ্বিগোচনাবঃ স্থাৎ খার্য্যাবাদ্বিত্রিতোহঞ্জলে:। অতেঃ পরাচ্ছুনোহতি চ উপমানাদচেতনে। শক্থঃ পূর্ব্বোন্তরম্বগাছুপ-মান চেটচ্ম্মৃতঃ। দেশার্থকাদ্রক্ষণঃ স্থাৎকুমহন্তাং বিভাষয়া। জাতোকোহয়ং মহোক্ষণভাৱ দ্বোকঃ बााबूवः खााबूवः यः त्यावनीय नः । निः त्यावनकर्णाष्ठेय हे जीत्मनिकिमाध्र बुः । मक् थाक्कि छाः वह बीरशियात्त्रश्त्रमाञ्चनाक्रान । विविश्वक गृद्धं के ज्विम्र्रकाश्याशिकारमा । अमानी-পুরণাভ্যামল্লোম্বেভ্রেকিছিসঃ পরাধ। নক্ষত্রবাচকান্নেভুর্বগনেত্রাহ্বরাত্তির। স্বর্গ্তিনঞঃ পশ্চাচ্চভু-রোহচভুরাপুরা।. নাভেল্পনামনিহুতুর্ম ঞ্ভ্যঃ শক্থোবিভাষরা। নঞঃ পূজার্থসতেশ্চাবহুবীহাবুভো চন। নঞঃ পথোবানকিমঃ পরাৎক্ষেপেসকিংসথা। অসঙ্প্রজামেধয়োঃ অতুর্ম ক্ভোৎস্লাচন্ত্রজাঃ। ধর্মস্থানঙ্কেবলস্থাপ্রিয়ধর্মাতপোনিধিঃ। জায়ায়াজানিরুধসোনঙ্দ্রিয়াং ধকুবল্বনঙ্। সংজ্ঞায়াং বাবয়-সিভুদন্তক্তদন্ত নালিচ। ভদ্ধভদ্ৰবরাহাঞ্দিধরপ্রভুতেন্তব্যু। প্রসন্ত্যাং জানুনোজ্যুকাব্রাবোর্জ্জার্ **७कः । थानिर्ভागानिकायानम्कः गमाना यथायथः । मिक्तः ग्यान्यः यथायथः ।** स्त्रभूर्प्रिस् (जारकामां शक्काकृ वा । अहा भा त्रामां प्रायमिकथा (जासनः मधिशक्किकरः । . जेनमानामिनतार

পদাগিদ্ধমুখন্তব। ডকুবদ্ধেহন্তাস্বরাদের্লোপন্তেরপিবিংশতে:। ইবর্ণোবর্ণয়ার্লোপোযেচাযোঁতদ্ধিতেম্বরে।
নস্তুকচিৎসর্যাযইক্লাকোরুক্লপ্যতে। অব্যরানাং শর্মাদিং বিহায়ান্তাস্বরাদিকুত্ । ঋদোদোন্তায়ং হরপ্রবহ্বণ্ডিরমাধ্রাং।
বদ্ধিরাদোণস্বদ্ধেতদ্বিতে যাদবোহরি:। দেবিকাশিংশপাশ্রেয়াদীর্ঘদ্রস্য আস্তঃ। যাদেরিয়শ্চ প্রমামিত্রয়েঃ কেকয়্সত। পদাদাদ্যোর্য্যঃ প্রাগাগমবৃদ্ধির্মতৎপরা। দ্বারাদেরপদাদ্যোক্তয়াথস্থাপি
তাদৃশঃ। স্বাগতাদেরাগমস্ত বৃদ্ধির্মাণস্থ তদ্দমত্ পরস্থ আ। এবেপ্রান্থন্যস্থা। নঞঃ পরপদস্যাদের্বিদ্ধির্বতি তস্তবা। অদ্বান্ত্র পরিমাণস্থ তদ্দমত্ পরস্থ আ। এবেপ্রান্থন্য পর্যায়েণা যথাযথম্।
স্থাস্ক্রিক্রিতি তস্বা। অদ্বান্ত্র পরিমাণস্থ তদ্দমত্ পরস্থ আ। এবেপ্রান্থন্য পর্যায়েণা যথাযথম্।
স্থাস্ক্রিক্রিতালাক্রমান্ত । দেবদন্দে হবিঃস্কু বাচিনীন্দ্রপরস্তন। দীর্ঘান্ত্র ক্রেলামৈত্রাবর্জণং গ্রহমগ্রহীৎ।
ক্রিক্রিক্রির্বা পিতৃপিতামহং যথা। একদেশাদ্তোঃ পূর্ক্রবার্ষিকং পরহৈমনং। সর্বার্দ্ধির্ম্বতাদেশস্য সর্বপাঞ্চালিকীযথা। সন্থ্যান্তঃ পরিমাণস্থ সন্থ্যাস্বর্ম ৎসরস্থচ। জঙ্গলং বলজংধেনু স্তুদন্তানাং পরস্থব। পূর্বস্থ নিত্যং বৃদ্ধি: স্থাদ্বাশী রাখ্যাতকারিকাবলী। ৯।
প্রথমবিন্যাসীয়াখ্যাতকারিকাবলী।

ভুবাদ্যাদিগণাদ্ধাতোক্তে রাল্ডিঙ্ কুৎসনাদয়:। চুরাদয়োভুবাদো হ্যঃ সনাদ্যস্তাশ্চ ধাতবঃ। অপরে প্রত্যরাজ্ঞেরাঃ স্বস্থবিধ্যমুসারতঃ। ধাত্বাদেঃ ষস্তসন্তদ্যুক্টঠণাং তথনাঃ ক্রমাৎ। হিত্বাচিবুংশুক্তিঞ্-ণাদয়োনাদয়ঃ স্মৃতাঃ। প্রত্যেকমন্টাদশভির্বচনৈস্তিঙ্ বিভক্তয়ঃ। দশস্থ্যরেষাং নবকং নবকং যদিভাগতঃ। পূর্বাং পরস্মৈপদং স্থাত্তৎপরস্থাত্মনেপদং। ত্রয়ং ত্রয়ং স্থাৎপ্রথমধ্যমোত্তমমেতয়োঃ। নাম্নিপ্রযুজ্য-মানেহপিপ্রথমঃ পুরুষঃ শ্মৃতঃ। মধ্যমোযুল্লদিপ্রোক্তোঅস্মত্যত্তমপূরুষঃ। অস্মি অস্মদ্দকত্বে যথাত্বাম-শ্বিবিচ্যুত্ত। এষাং যুগপত্নকৌ যোষৎপরঃস্থাৎসপুরুষঃ। সমুদায়স্থ সঞ্জাবাংস্তদ্বাচ্যশ্চপরস্তথা। প্রহাদেমন্যতদ্যুক্তাদ্যত্যাসাম্মধ্যমোত্তমো। মন্যতাবেকবচ্চত্বং মন্যেদধ্যৎস্থহং যথা। ব্দুর্কিমানোভবিষ্যন্ ভূতইত্যপি। বর্ত্তমানবর্ত্তমানা। ভূবাদেঃ শিতিকর্ত্ত্ব্যন্ লোপআদস্ত আবমোঃ। অকারাত্ত্বয়োরাদিরাইঃ স্থাদেচ্যবর্ণলুক্। গুণিসম্ভশ্রধাভূনামুপান্তশ্র লঘোগুণিঃ। অগুণাঅতমুর্মাদি-কণঙ্মুবন্ধাকুটাদিতোহনিচিনট্। অন্ দন্শ্রাদেরিড্বিজ উর্ণোতের্বাবিদেরেবাম্। গমিষ্যমোহস্তশ্ছোহ-নিস্তাদীর্ঘঃ দ্যাদাচমঙ্গমোঃ। ক্রমঃ পরস্মৈদাণঃ দ্যাদ্যছ্ডোজিত্রপঃ পিব। স্থাগ্যোস্তিষ্ঠধর্মোস্তোম্বোমন্ কার্য্যোদৃশঃপশ্য। অর্ত্তেশ ছাতিবেগার্থেসর্ত্তেধাবসদঃ সীদ। শদেঃ শীয়ঙ্ ক্লপেরোলখ৯ কাপিগিরোহচি বা। রিযৃকারস্যাত্ত্তণেমুচাদেমু মৃ স্বরাৎপরঃ। মুচ্চ লুপ্চ সিচির্বিদ্চ লিপ্ থিদো পিশ্ঞিতঃ কৃতী। ভুদাদ্যস্তর্শ্বুচাদিঃ স্যান্নভূন্ফাদেন কারলুক্। ওকার উঃ স্বরেগোহেগু হত্যেবং নিগৃহিতা। ধাতোরিদ-সুবন্ধস্য স্বরান্নুম্ স্যাদ্যথেন্দতি। অগুণেহস্তাব্যঞ্জনাদিনলোপঃ স্যান্নুমংবিনা। দিবাদেঃ কর্তুরিশিতি यर्गाकात्रमा नूग्यि। भिम जिम अभि जिम किम किम किमार। किमार यिनिर्मिश मान् लानि जानि वनि बनः। यग्रा यमः मःयमन जात्यानी जिम्मानिक जात्यानी जिम्मानिक जात्यानी जिम्मानिक जात्यानी जानिक जात्यानी जानिक जात्यानी जातिक जात्यानी जातिक जाति খ্তক্তপ চ শিচ্চ শিৎ শিতামেব। ুউত্তমপুরুষো লোটন্তিসিমি ভুদি সমস্তমুঃ পরস্তৃত মুঃ। তনাদিভ্যস্তনাওউরতনাবগুণাবুভো ! কর্কুরোচকুঞঃ স্থাদেদে তিনাবতনোভূমুঃ। স্থাক্ঞাধিশ্বিক্ষা-শ্বমোর্ব্বাদ্বিগণাত্রপু। নিত্যং ক্রোতেঃ সংযোগান্নসলোপ্যউবং শ্বরে। আদক্তমাৎ পশ্চাদন্তে অস্তামন্তে- ত্যেষাং নোলুক্ ! তদ্বৎক্র্যাদেশ নিনীরয়মচিনিস্বরোজ্ঞোজা ৷ ব্রস্বঃ পাদেঃ স্বরতোনাস্বরনোস্তোরুধা-দীনাং । ঘট্যভতস্তথয়োদ্ধস্তর্য্যেষুস্তাধু টাং তৃতীয়াঃ শ্বাঃ। ব্যঞ্জনপরধুড্রোপোধৃটিনিজবর্গ্যেবিকল্পেন। ধুট্যস্তেচচজোঃ কঃ স্থাৎষঢ়োঃ কঃ সেপিনক্ষিতৎ। চতুর্থেসস্তডঃ কার্য্যখাভ্যাং নন্ভাং নকারলুক। **ष्ट्रिं । त्रहिल्ल क्रिं क्रिंग्यान व्यापन क्रिंग्यान क्रिंग्यान** भौरिक्षानिजारक्षमः भिन्ति। जञ्चक्रामाः अकार्षामानाया जञ्जक्राहारमः। बारहारखस्य व्यवस्रो ইবর্ণবর্ণয়োদ্ধাতোরিযুবাবগুণেস্বরে। অনেকাচস্ত্রসংযোগস্থেবর্ণোযইণঃ শিতি। অস্তলোপোহতনাবস্তেঃ সোসোহ অস্ত ধ্রতথা। হস্তের পূর্ণুট্যতনৌম্বঃ স্থাদগুণিনিম্বরে। ধুট্যস্তেচছশোঃ বত্বং সংযোগাদিককার-ৰুক্। মুজোগুণিনির্দ্ধিঃ স্থামাষ্টি অচ্যগুণেতুবা। হোঢোদাদেস্তঘোধুট্যস্তেচস্থাৎ সধ্বকারয়োঃ। **ज्जी**शांनाम्हजूर्थाखाखर्यानानिमन्**रापि । कन् खर् धर्मा**बर्याक्च हेरे गिजानित्रयस्र । जेगीज् जनिजाः मस्यातिक्नामः निषश्वत्वहिन । अञ्जाकाः भाम्कवाकाकिनतिकाञावितिकाः । अञ्जानस्यातिनाशः । স্থাব্দুহোতণদেব্দুহোতেমে বিব্দুহাতি। ঋধাতোঃ স্থাদিযভ্যাদে ইয়তীযুতইযুতি। নিজ্ বিজ্ বিষাংগুণঃ কার্য্যঃ পৃভূঞ্ মাঙ্ হাঙকারই:। অভ্যস্তস্থাকারোহল্যতনাবীস্বরেহগুণেলোপ্যঃ। ভীহাকোরীব্রস্বঃ পক্ষেনিত্যং দরিদ্রাতেঃ। দাধোরীলুগ্দধোধৎস্থাত্তথসধ্বেপরেষথা। বর্তমানেবর্ত্তমানাস্মে-নাতীতে পুরাতুবা। প্রত্যুত্তরেনমুভ্যাঞ্যাবৎ পুরাভবিষ্যতি і *। ইত্যাখ্যাতেবর্ত্তমানায়াগণদাধ্য-विन्तामोशकातिकावनी । # । # ।

দ্বিতীয়বিন্যাসীয় আখ্যাতকারিকাবলী।

বিধ্যাদিযুলিঙ্লোটাবাশিষিসম্ভাবনায়াঞ্চ। ইচ্ছার্থোপপদেসতিকামাভিব্যঞ্জনেচন্তঃ। কামপ্রবে-, দনেহকচ্চিল্লিঙ্সাৎ সম্ভাব্যতেযদি। অলমিত্যলমোহসুক্রো ভবিষ্যস্তীচবাহ্যদি। সম্ভাবনার্থধাতৃক্রো হেডুহেতুমতোরপি। লোডধীউপ্রেষণাদোল্মযোগেহসুমতাবপি। অকারাৎ পরস্ত্রযাইস্থাদযুরিষুর্য্যামিয়-মালুগ্হাকঃ। উলোপঃ করোতের্য্যেয়াৎ কুর্য্যাৎ কুর্য্যাতাং কুর্যুঃ। লোটিহিলোপ্যোহকারাৎস্থাদি তনাদ্যোরসংযোগাৎ। ক্র্যাদিহলস্ভামীস্থোরানোস্ভোনন্চগ্রহোধুটোহের্দ্ধিঃ। ঐত্যাবহৈ আমহৈচক্রধাদের-রতকুশ্চবা। সূতের্মিত্যংবিদেরাম্বাকরোত্বাদ্যান্ততঃ পরাঃ। দেহিধেহিজুত্ধ্যেধিজহিশাধিজহাহিচ। নিপাতনাদ্ধাত্বম্বাত্রত্থারাশিবিতাৎশ্বা। *। ইতিলিঙ্লোট্ কারিকাবলী। *।

श्रुकी श्री हर्त । श्रुक्त विश्व व

ভূতীয়বিক্যাসীয়াখ্যাতকারিকাবলী।

অথভাবেকর্মণ্যপি সর্বস্মাদাত্মনেপদং প্রীহঃ। তিত্রভু শিতিষক্ মন্যতঈক্ষ্যত ইত্যাদিবক্রপং। ক্লান্তেরের তথে উর্স্তাদোষ্ঠ্যাৎপরস্থস্য। অঞ্জণে হলিরবুপাস্তোনামীদীর্ঘোভবত্য কুর্চ্চুর্য্যোঃ। কিতি

हिनाहाक् श्रृं शिक्षां श्रृं शिक्षां श्रृं श्रृ

ভবিষ্যতিশ্বঃ প্রভৃতোকালেশ্বস্তুমুদীরিতা। অস্থাংকুপেঃ স্থান্থভয়মিট্ তাসেপরতোভবেৎ। অনে-কাচঃ খিশীঙ্ ডীঞ্রিক্ষু যুরুক্ষু মুরুঙ্ রুঞঃ। উদৃদস্তাশৈচত এবাজন্তাঃ সেটোহপরেহনিটঃ। দীঙ্ মীনাতি-**बिद्याजीनाट्यामाष्ट्रः नियुक्षता । बिद्यामि थन्टार्ट्यान्यम्बद्यामयः । यनस्रापि जिम्रानामि जिल्ला ७८वर । इ**ङ् मीर्यावात्रश्चमस्थाम अतरेश्विमिकानिरयाः। म्यामाज्ञरन्त्रभारयारगञ्जूकिमिङ्यामिङ्याभारतः । कर्ळाज्ञरन পদপ্রাপ্তো ক্রমঃ কৃতিতু নেড্ ভবেৎ। বাস্বৃস্যতি ধৃঞ্ সৃতিরধাদ্যদমুবন্ধতঃ। বধিন্ধ শিস্ত্পি দৃপো ক্রছি-সুহি মুহি স্নিহঃ। সুহাদীনাং হস্তঘত্বং বিকল্লেন ধুডস্তয়োঃ। ধুটিস্বরাশ্মজ্জিনশোর্ট্সালংকীবিনজ্জাতি। भूज्खरत्राच्छानिरङानुश् जञ्जारमञ्जलकाराভराय। वामन्ध्रमात्रगः जरञ्जर्का जर्काकिरासियः। यः मत्नाश्रम् बक्षांबकाणि मक्रमान्। ष्ठिताभीर्त्वाश्रशाकाग्नामिर्द्वाणिर्दाश्रह्यथा। भक्षः कारस-চাত্তে পচি বচি সিচোমুঞ্তিরিচোবিচিশ্চৈকঃ প্রচিছ্যু জিরুজি স্থজি অভিজ যজয়ঃ। অথোমজ্জির্ভনজি-ত্যজি ভুজি নিজি স্বন্জি বিজিরস্তথা রন্জিঃ সন্জিভঁজতি রপি জান্তেনিগদিতাঃ। অদিতুদিসুদয়ঃ স্থিদ্যতি विमाछि विन्मि विनर्शान्छ। थिनिनिमिममः ऋन्मिक् निष्टिमि श्रापकां त्रास्थ । ऋधिताधि क्र्धि-নবন্ধি ক্রুধি বধি সিধি যুধি বুধিব্যধয়ঃ। শুধিসাধী অপিধান্তেমশ্যতি হস্তীনকারান্তে। অপি বপি স্বপি-তপ্তিপিক্ষিপি শপি লিপি লুপি স্থপি ছুপশ্চপান্তে। যভিরভিলভয়োভান্তে গছতি যমিরম্পমোমান্তে। কুশি বিশি লিশি পশ্যতি স্পৃশোরিশিষ্শিদিশি দন্শিরিমে ভবন্তিশান্তে। কৃষি পিষি ছুষি পুয়তি দ্বিষ শ্লিষি দিয়ি বিষিত্বয়ঃ শুটিশ্চ যান্তে। বদতি ঘর্সো দোসান্তে মেছতি লিছি দোগ্ধিরোহতয়ঃ। অপি महि मिहि नहिवह दाहार खिनिक कि जा जिन्हा । जा अर एक प्राप्त कि विकास कि । जिन्हा कि পাক্ষিকেটঃ সহীযু রিষিলুভ্রুষঃ। ভাবেকর্মণ্যপিতদ্বৎ কর্ত্বগ্রাত্মনেপদেরপম্। স্থাদধিকং যত্তদাচকে। স্বরাস্তধাতু গ্রহিহন্ দৃশিভ্যোভাবকর্মণোঃ। তাসী স্থাদ্যতনীবিত্বদিত্রাসইট্ পরং প্রতি। আশীষ্যাশীর্ঘ্যোইস্থায়ঝনপ্রাদ্যস্তস্যেনোদীর্ঘঃ। মাদীনামাএকারোযে বাসং যোগাদীনামস্থঃ। माजनी (धारणानामाख्यधाषुजः। जामाः (धाष हरेणावामा। स्रविधीपुः यथातिशृन्। मः रयाशामि अमृनखत्रुजा অশিৎসকারেসন্তঃ স্থাদ্যথাবৎসীষ্টবৎস্থতি। ভবিষ্যতি ভবিষ্যন্তী। সন্সাযোগি ইডাত্মনেতয়োঃ। পরশ্রেচ বৃৎ বৃধ্স্থান্দি শৃধ্ কৃপঃ। বৃৎ স্বৃধ্ কৃপশুন্দ ইট্ স্যাদাত্মনে পদদেপরে। কৃতী নৃৎ নিদি স্বৃদ্ ছर्छाः मर्व्वजामिहिरमन्या । माकारत रन्मखानिष्णमः तमर्नाषात्माता । ভविषाकि ভविषाखी षाकार्यानाः यम अद्यार्श कृत्व माका एक यर भरत कृता । जामा चला का किः इत्व निभागाः লিন্দিতসিদ্ধোটেত। আদ্যাপ্রকৃতেকদাকভোঁঃ। আদ্যাং ভূতোক্তা অপ্যান্তরাশংসায়ামক্ষিপ্রার্থিঃ। ক্রিয়াতিপত্তিভূতিচ বিধেয়া গীরিঙোনবা। অধ্যগীব্যতাধাগীব্যেতাং বাধৈযাস্তবদানী। # । ইত্যাখ্যাতেতৃতীয়বিক্সাসীয়াসাঁবিধাতুক কারিকাবলী। #। #।

ठपूर्विकामीयाथाराक्रांतिकावनी ।

ভূতেপরোহক্ষাট্ থলতাকিদ্বিক্তনপ্রক্রিয়া। ইকামস্তৈবোপধায়া অটীচীনিচর্দ্ধয়ঃ। অট্যুত্তমেবার্দ্ধিঃ স্থাৎসজ্দৃশোথলিবানিটো। অস্ট্রু আ রু ভ স্তু জ জ আ এবানিটোলিটি। ঋস্ট্জুন্থেখল্যদন্তাএবা-জন্তাস্ত্রবানিটঃ। আকারাদটঔকারইট্যবর্ণস্তলোপনং। অতুপাস্তাব্যঞ্জনাদ্যাঅনিটোবানিটঃস্থলি। অস্তা-নাদেশ্যেকহলোশ্মধ্যএম্বনট্মরে,। অভ্যাদলোপশ্চ ফলিশ্রথিভজ্ গ্রথিতৃত্রপাং। বাজ রজিত্রদিল্রাদিল্রম্-ভাজিশ্যম্ ফণিস্বনাং। আকারস্থচহিদায়াং রাধোনবাদিদদ্শদাং। জভঃ স্বরাৎস্বরেবিন্দুঃ প্রক্ষেট্স্বর-মোরধঃ। অন্পরোক্ষেবর্জয়িত্বাবিন্দূরভিলভোস্তথা। নাত্রনোলুক্ শ্রন্থি দন্ভি গ্রন্থি স্বন্জাস্তবানটি। ঋকারস্তঞ্চঃ কার্য্যঃ সংযোগাদেঃ স্থটাপিচ। ৠদন্তঋচ্ছ জাগৃতামপি শু দৃ পুণস্তবা। অস্থাভ্যাসস্থানৃ-কারেংক্লোতোচ ব্যানশেদিশ:। রদংযোগাৎ পুরোইকারেচান্সতোনভবত্যপি। অভ্যাদেইন্সম্বরেস্থাতা-মিছ্দ্যামাগমোযবো। প্রাদেরিণোবানদ্বিঃ স্থাৎ কিতিদীর্ঘস্তদঃ কচিৎ। জেগীরিঙোগাঃ প্যায়ঃ পীশ্চে-কীব্বাতথাহেঘীঃ। চক্ষঃ খ্যাঞ্ বাকার্য্যোহন্তের্ঘন্স্যাদথোনিপাত্যন্তে। খনশ্চখ্যোঘদোজক্ষো যজ্ঞযুগ্মী •তুজন্গমোঃ। কনুবন্ধস্বরেম্বেতে ভূর্ব্বভূর্ব্বাগমোহপ্যচি। দয়তেঃ স্থাদ্দিগীৰ্দ্দিগ্যেদিগ্যাতিদিগ্যিরেযথা। ব্যয়তে বিব্যয়কি তিপক্ষেখ্যোলুক্চবিব্যতুঃ। স্বয়তেন্তঃ শিশ্বিশুশ্হেবঞোজহুৰ্ছ্ম্বাবসঃ। দীঙঃস্ব রেযুগ্দিদী-য়েজকারোদ্বিঃ স্বরেভূজঃ। অভ্যাদেগ্রহিবচ্যাদ্যোলিটিস্থাৎ সম্প্রদারণং। নত্রশ্চিভ্রজ্ঞিপ্রচ্ছীনাং যথা-তোত্রশ্চতুস্তরন্। বেঞোবয়ির্বাকিতিযোবত্বং বোয়তুর্রবতুঃ। নবেঞ্টর্য্যথাবন্ত্রং সম্ববোববুতুর্ববুঃ। অয়াসদয়কাশিভ্যোহনেকাচঃ প্রত্যয়ান্ততঃ। 'গুরুনাম্যাদিধাতোশ্চ আম্স্তাদ্চছূ পুবিৰ্জ্জিতাৎ। উষজাগৃ-বিদামাম্বা ওবামাসউবোষচ। ভীব্লীভৃঞ্হভাত্থাম্ বাস্থাদামিশিৎকার্য্যমিষ্যতে। কুঞঃ প্রয়োগ<mark>আমন্তা</mark>-দশ্ভুবোঃ কত্রনাত্মনে। অধ্যক্ষেহপি কুত্রচিচিত্তবিক্ষিপ্তো সাহপ্রকৃতাবস্থা। ক্রোধাহ্যমভোক্তোচ অত্যন্তাপহ্নবেহপিচ। *। ইত্যাখ্যাতে চতুর্থোবিষ্যাসীয় লিট্ সাধ্যকারিকাবলী। *। *।

পঞ্মবিন্তাদীয়াখ্যাতকারিকাবলী।

ইন্চঙ্গুপান্তহ্র প্রাংশ কাব্দরাহক্ষরেল যোঁ। উপাত্তকল যোদীর্যো প্রাক্ত পাদের রঞ্বা। স্বরাদীনামিকা-রোহ স্বং বেস্টি চেট্টোর্কিভাষয়া। গণের্জ্জকারোজীপ্রাপেরাকার ইরজিপ্রিপৎ। নিত্যং স্থাপেঃ পায়য়তের রলোপোহ্রয়তেন্তহুঃ। স্বাপেঃ স্বাস্থঃ শেন্তশুর্ক বিশ্বাপণ দিশ্বরং। উটোটকার স্থাভ্যাদেজঃ স্থাদে ক্রিলোপি ক্রিলে ইঙোগাবাবেদ মধ্যাপিপদে যোহ ধ্যজীগপং। গুণিনো বাঞ্চুপধা অবর্দ্ধদবীর্ধং। চঙীনন্ত প্রক্রপাণামিত্যহার মিদিগীরিতা। ইল্লোপইডনামাদিবর্জেনি ঠেটিচ স্মৃতঃ। ধেটঃ দিট্ চঙ্ চবাধাসীদদধং ক্ষীরমপ্যধাং। শ্বের্জন্ত গ্রাদিচিগুণেশ্বয়ীদশ্বদশিশ্বিরং। স্তেম্থাদিচ্ন্ত স্থাদিন্ত স্বাদানার বিশ্বরিশান্তাবিকর্মিণাঃ। পদেঃ কর্ত্রিদীপ্রায়িপ্যায়িজন্ পূর্ব্রম্বরা। ইচ্যাদন্তে ভ্যোরুড্ হ্রম্বোবামান্তবন্ধানাং। জনিবধ্যাইন্তের্ধন্ ভন্জোনোবালভংযাতি। ইচ্কার্যং নান্ত্যমন্তানাং দেটাং কন্বম্ চমং বিনা। বিশ্রমের্কাযথাপান্তি-ক্যেশামিব্যশ্রমিক্ষণং। যিন্মন্ ধাতোর্যান্ত লোপন্তত্র বৃদ্ধিগুণশ্চন। *। ইত্যাধ্যাতে পঞ্চমবিন্থাসীয় লুঙ্গাধ্যনারিকাবলী। *। *।

ষষ্ঠবিন্তাদীয়াখ্যাতকারিকাবলী।

কর্মন্থভাবধাতৃনাং কর্মকর্ত্তাতৃ কর্মবৎ। রজিক্ব্যোঃ পরিম্মবণ্ স্বাদীনামাত্মনেপদং। ইজ্বাতৃহি স্বরান্তেভ্যোনরুধােহরুদ্ধােঃ স্বয়ং। তপস্তপঃ কর্মকস্থতপ্যতেতাপসন্তপঃ। মুচেঃ সনিগুণানদ্ধিবিংসােহয়ং মাক্ষ্যতে স্বয়ং। চঙ্ সন্ যঙ পরাক্ষান্তধাত্তাবিদ্বিঃকৃতস্থতু। আদ্যাক্ষরং দিন্তৎপূর্বাং
প্রাঙভ্যাসন্দ কথাতে। তত্রানাদিহলােলুন্সেদ্ঘােষােদ্ধিস্থিতান্ শিটঃ। ব্রয়ঃ পপৌ ঋবর্ণস্থাকারঃ সম্ম
হস্পয়ঃ। প্রথমঃ স্থাদ্দিতীয়স্থ চতুর্থস্থ তৃতীয়কঃ। কর্বাস্থ চবর্গঃ স্থাদিতি সাধারণােবিধিঃ। স্বরাদীনাাং
দিতীয়স্বক্ষরং দিঃ স্থাদ্যথাপিপং। পরং প্রতিদ্বিরীর্ব্যািষিঃ সন্ চের্ষ্যিযিইতি স্লিয়ং। নবদরসংযােগাাস্থাক্ষরমেষাম্পুর্তিথানিটি। উন্দিদির্ত্যুজ্জিদ্বত্যােজ্জিবদত্যাদ্দিদংপ্রায়াঃ। নাম্যাদেশানরাত্মের্ষং
পরবর্ণেন বােজনং। ইন্যায়াবােকেবলাচঃ কৃত্যাদ্বিব্রিচনং কুরু। সম্প্রাসারণমত্যাদে ব্যথিত্যুত্যােরবিব্যথং। নামধাতােরনিয়মান্দিঃ পুপুত্রীয়িষত্যােনা। আভীক্ষ্যবীপ্রযাের্য্যাসেপদং দিল্লিশ্ব সন্তর্ম।
একস্থ প্রাচি স্বরুক্চ যথৈকৈকং ফলং দদে। শব্দানুক্তি ডাচিদ্বিঃ পটপটাকুরুতেপটঃ। পুরুর ভাবশ্চ
পীড়ায়াং সদৃশেগুণবাচিনঃ। অক্চেছুবা প্রিয়হথে কৃতং স্থম্বথেন তং। সন্মত্যস্বয়াঃ সম্বোধনবাক্যাদিসংস্থিতং। উপর্যাধ্যধনােদিঃ স্ত্যঃ সামীপ্যে বর্জনেপরি। উপপ্রসম্বদাং পাদপুরণেদিঃ পরেরপি।
কেচিদ্বিদ্বিক্রক্তাভ্যাং দিল্লাঘনাঘনাদ্বঃ। রোলঃ কপিরিকাদের্বাব্যাড়াদানাস্তভ্তভলঃ। #। ইতিদ্বিব্রচনাদি কারিকাবলী।

ব্য বিক্রাব্যাক্ষা বিদ্যাহান্য নাম্বাদ্বনাদ্বনাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদান্ত্রভ্তলঃ। । । ইতিদ্বিব্রচনাদি কারিকাবলী।

বিক্রাব্রিকাবলী।

বিক্রাব্রিকাবলী।

স্বর্গার বিক্রাব্রাক্র বিক্রাব্রাক্র বিক্রাব্রান্তির বিক্রাব্রান্য দিনাস্বভ্তলাঃ।

স্বর্গার বিক্রাব্রাক্র বিক্রাব্রাক্র বিক্রাব্রাক্র বিক্রাব্রাক্র বিক্রাব্রা

ক্ষচাদেওঁ বুবন্ধান্দ আং কর্ত্তর্যান্ধনেপদং। ক্রিয়াবিনিময়ে সর্বধাতু ভ্যোনহসাদিকাৎ। অন্ধ্রু হার্থান্থ সালোজাদি পদাদিপ। প্রাদীনাং বিপরাভ্যাংক্রের্বিপর্য্যবপরাৎক্রিয়:। স্বান্ধবিকাশআঙ্ দাঞ্জের্প্রছাশ্চনেবিবশঃ। ক্রীড়তের মুপর্য্যাঙ্ভ্যঃ সমশ্চাকৃজনার্থকাৎ। সংবিন্যুপাদ্স্নঃ স্প্র্রায়ামাঙ আশিষি নাথতেঃ। সাদৃশ্যশীলনেন্ধ গুঃ শিক্ষেজ্জিজাসনার্থকাৎ। সমোগম্বছিপ্রছাত্তিদ্যিদি হ্যবিত শ্রুণ আকর্মকাৎ স্বর্দীয়ান্দ কর্মকান্ত ক্রিয়ান্দ কর্মকান্ত ক্রিয়ান্দ কর্মকান্ত লাক্ষি । এবমাঙোয়মহনোজানাতেঃ আদপক্রে। সম্প্রতিভ্যামনুৎ কঠান্মরণেই কর্মকাদিপ। উদস্থেই নৃর্দ্ধিচেন্টায়াং স্থঃ স্থেয়াখ্যাপ্রকাশনে। সমবপ্রবিভ্যআঙঃ প্রতিজ্ঞানউপাৎপথি। প্রজাদিশ ক্রেরবান্ত্রকরণেলিপ্রায়ান্বাসমঃ ক্লুবঃ। নিয়ঃ সন্মাননার্দীবেঃ কর্তৃন্থেই দেহকর্মাণ। পরোপাভ্যাঞ্বর্জ্যাদৌ ক্রেয়াবানুস্বর্গতঃ। উদ্যুমজ্যোভ্রিয়ামাঙঃ প্রোপাভ্যামাদিকর্মণি। পদন্যাদবিশেষে বের্য্যথাবিক্রমতে-

হয়:। ভাষণজ্ঞানবিমতি যত্বোপমস্ত্রণেবদঃ। সজ্যোক্তোবাদিনাং বিপ্রলাপেবাহনোরকর্ম্মকাৎ। অবাৎ পরস্মাদিগরতের্য্যথাবিগরতেদ্ধি। সমোহভূপগথমদাগশ্চভূর্য্যভূতীয়য়া। প্রাদিষরাদ্য জােযজ্ঞপাত্তেম্বনবন্ভুজঃ। করােতের্গন্ধনাদ্যর্থেশবাভাকর্মণস্তবেঃ। অধেঃ প্রহাদেত্রিয়তের শীরদ্যতনীশিতাং। উদশ্চরঃ সকর্ম্মকাৎ সমস্থতীয়য়াযুতাৎ। উপাদ্যমঃ পরিগ্রহেক্ষমার্থআগমেরিনঃ। কিরতেক্ষ্মীবিকাহর্ষকুলায়করণের্চ। প্রকাব বেন্চিগর্দ্ধ্যোরেবমাদিরবাদিদিক্। সনস্তাৎ প্রকাব জ্ঞাক্রম্মদৃশামাত্মনেপদং। অনােঃ সকর্মেকাৎ জ্ঞানপ্রভাগ্রভাগ্রহাৎশ্রুণঃ। যজাদিঞ্জুবদ্ধাভ্যামিনন্তাচ্চোভয়ং বিতঃ। স্বাম্বর্থপূর্বমপ্রাদেক্তের্ব্যাহ্মদাং যমঃ। প্রাদেরস্ভূত্তিভ্যাং বদতেরপ্যপাৎপরাৎ। স্থাৎপরিস্পাদং কর্ত্র্যাত্মনেপদিশেষতঃ। ব্যাঙ্পরিভ্যোরমাবোপাৎ প্রত্যভ্তিপরাৎক্ষিপঃ। পরের্ম্ম্যঃ প্রান্থতেঃ পরামুভ্যাং ক্ঞক্তথা। বৃধ্ যুধ্ নশ্ জনিঙঃ প্রুদ্ধ ক্র জ্বান্থান্যাত্মনিকাবিলী। ২। ২। ইত্যাখ্যাতেষ্ঠবিন্যানীয়াত্মনেপদাদিকারিকাবলী। ২। ২।

সপ্তমবিন্যাসীয়াখ্যাতকারিকাবলী।

• ধতোঃ দন্বাকর্ত্ নিচ্ছত্যাদ্যর্থেদস্কনেহপিচ। সম্বর্ণ ইরভ্যাদেশনিট্ সম্প্তদীর্যতা। গুণোনান্তিনামিন তামপিরুদ্বিদ্যুবাং বউঃ। শ্বেধনার্থপ্রেণোগম্ দীঙোদাস্থাদদপ্তথে। ঘনোঘান্ স্থাদিঙোগাম্ স্থাদ্যথৈযোহধিজিগাংসতি। প্রছেরিট্ স্থাদ্গ্রহিপ্রছিম্বপাং স্থাৎসম্প্রমারণং। গুরুবর্ণগ্রহিভ্যোনেত্ জুযুক্ষতিবুজুরতি। ৠ কু গৃ দৃ ধু পৃঙন্জুমিঙ্ঙশুভঃ দনীড্ভবেৎ। বেটোদরিদ্রেণ্ ভরভ্রজ্ রুযুক্তিক্তাদয়ঃ। ঋদন্তেবন্তকোদন্তপ্রতিজ্ঞপৃধিসন্তনঃ। দীর্ঘোহনিট্ সনিতন্ সন্যোঃ সনোতের্বানকারলুক্। প্রায় গ্রনভ্স্তিরিপ্ ধীপৌজ্ঞপেজ্ঞীপৃধইর্ত্ভবেৎ। ইৎ স্থাৎ স্বরস্থমীমাদামিঃশক্পৎপদিরভ্রভাং। আপ্রোতেরাপ্ রাধতেরিৎ হিদায়াং রিৎসতিদ্বিষং। জেজিগী শেচশ্চেকী চিচ্যে হৈজ্জিঘীর্দ্যাং জিঘীর্যতি। স্থেত্রাপ্ রাধতেরিৎ হিদায়াং রিৎসতিদ্বিষং। জেজিগী শেচশ্চেকী চিচ্যে হৈজ্জিঘীর্দ্যাং জিঘীর্যতি। স্থাপেঃ স্থাপায়িজের্গ্র ইনীঙোগাজিগাপয়ি। শুন্তস্কপ্রবর্গস্থোবর্ণেন্ কার্য্যোদ্বিরিন্সনি। শুন্ত বু ক্র ক্রপ্রান্থা শিশ্রাব্যিবিতিপ্রিয়ং। গুপ্তিজ্কিন্ত্যঃ সন্স্বার্থেহনিট্। বীভজ্জুগুপনেমীমান্ দীদান্ শীশান্নিপাতনাৎ। নেচ্ছাদনঃ সন্বিধেয়োযথেচ্ছত্যন্ত দিৎসিতুং। ঋ। ইতিসন্কারিকারলী। ঋ।

চুরাদেরিন্ হেম্বধীনধাম্বর্থেদর্শ্বধাতৃতঃ। চুরাদিমুপদাদীনামাগর্বাদাম্মনেপদং। অর্চাদয়ম্বাধ্বামাআদন্তাঃ প্রাং কথাদয়ঃ। দংগ্রামেঃ দোপদর্গন্তধাতৃত্বং নেতরস্তৃ । হনোঘাৎ স্থাদিনিমিতাং ইমোবাদীর্ঘইচ্ণমোঃ। জ্রন্জিজন্ রুষোহমন্তাঃ কমিচয়ামিবর্জিতাঃ। জ্বল হ্বল ক্ষাল নমোহতুদর্গাদ্বিভাষয়া। ছহৎসাহেচলিঃ কম্পেজিহ্বাব্যাকৃলনেলিডিঃ। মদীহর্ষেয়াপনেচফণ্ গতৌশমদর্শনে। ষম্স্থাদপরিবাদার্থেরাজানিয়ময়েৎ প্রজাঃ। আপাকেজ্ঞামারণতোষণনিশানেয় বাতৃবিজ্ঞকৌ। য়ায়াবন্ বময়শ্চামুপদর্গায়াপয়ত্যঙ্কং। শাছাসাহ্বাব্যাবেপাং য়ঃ রুয়ক্ষাযোঃ কোপক্ষাপো। অর্তিহ্রীরীয়্র্যাদন্তাৎপঃ পাতের্লোধৃঞ্প্রীঞ্ভ্যাং নঃ স্থাৎ। ফাযোযোবঃ শদোদন্তমগতৌ স্নেহনেলিয়ঃ। লীনলীয়াপোবিজ্ঞেয়ঃ পৃজাভিভবয়োম্বলাপ্। আম্বনেচ স্ফুরিয়োভাপ্ ভীষোহৈতোর্ভয়ং য়ি। বোজ্বিধুননেপকৈরূপবাজয়তিক্রমান্। বিয়োবা- প্রজনেতচপ্রথমং গর্ভধারণং। হ্রেরুকারদীর্যঃ স্থাচিতাদিবিরতৌত্বা। আম্বরস্থাজিক্রীঙাং চিক্ষ্ব্-রোর্বাক্রহঃপুনঃ। রোহরোপোগুণোজাগুরিণোগমিরবোর্থনৈ। তৎকরোতিতদাচন্টইত্যদ্যর্থেরুনাম্মইন্। রঞ্জারস্থ পৃথাদেরিনীতিয়্বিজ্বিম্বান্ত। লিঙ্গস্থানেকাক্ষরস্থ লুপ্যন্তেহস্তাম্বাদয়ঃ। পুচ্চীবরভাণ্ডে-

ভ্যোঙিন্ স্যাত্র্দসনাদিষু। সত্যার্থবেদাদাপক্ স্যাদদন্তাচ্চইনীষ্ঠবং। স্থুলদূরযুবহ্রস্বন্ধিপ্রস্কুদ্রস্যুলুপ্যতে। অন্তস্থাদিগুণিশ্চেষ্টঃ শ্বেতাশ্বাদেঃ পরাংশলুক্। আব্যানাৎ কৃতইন্ কললুক্প্রকৃতেরিবকারকং। নক্ষত্র-যোগাজ্জানার্থে পুরিষ্যণযোজয়ত্যয়ং। *। ইতীনাদিকারিকাবলী। *।

বাজ্মেচ্ছায়াং নাল্পঃ কাম্যঃ। যিন্চানব্যয়মান্তাভ্যামাচারেযিন্নিবার্থকাৎ। যাববর্ণস্থাঈকারঃ পুত্রীয়তি স্থতীয়তি। ইকারোকারয়োদীর্ঘোযোপরে ঋতইড্ভবেৎ। ঋদোদোদ্ভোষৎ স্বরবদ্যথা গব্যতি নাব্যতি। নমস্তপোবরিবসঃ কৃত্যাদ্যথে যিনীরিতঃ। আধারাচ্চযিনাচারেচিত্রাদ্ঙ্যিরমূতার্থকাৎ। উদন্যতি পিপাদায়াং ধনায়তিতুগৰ্দ্ধনে। অশনায়তি বুভুক্ষায়ামন্যত্ৰউদকীয়তি। মৈপুনেচ্ছায়াং রুষাশ্বোর্যসম্বদো। অহৃকৃহ্সক্চাদনেচ্ছায়াং দধ্যস্ততি দধিষ্যতি। উপমানাৎ কর্ত্বিয়ঙঙাচারেসদ্যলোপশ্চ। কার্য্যমবর্ণদ্যান্ধং যিঙি যিঞিচান্যত্ত্বাবুক্তং। গল্ভক্লীববিহোডে-ভ্যোঙির্বাযিঙ্লুক্চ দর্বতঃ। যিঙলুগস্তাঃ পরস্মৈপদিনোরাজীয়তি পুংদ্যতি। বাম্পোশ্মফেন ধূমেভ্যউদ্বাক্তো যিঙ্বিধীয়তে। রোমস্থাদ্ধসুদঞ্চালেদরোমন্থায়তে রুষঃ।. শব্দাদেঃ করণেকভূ বেদনায়াং স্থাদিতঃ। কন্টকুচ্ছু সত্রগহনায়পাপায়ক্রমণে। যিঙ্দ্যাদভূততদ্ভাবে ভূশাদিভ্যোহলশ্চলুক্। লোহিতাদিডাজন্তাদিয়ঞ্ কণ্ডাদিভ্যোষণং বিহঃ। গুপু ধ্বিবছিপণ্ পন্ভ্য আয়স্ভাদাপণোহস্ততো। কমের্ভিন্স্যাদৃতেরীয়ঙ্ঙশিত্যাযাদয়স্তবা। ক্রিয়াসমভিহারেঙ্ঙেকাচোব্যঞ্জনাদিকাৎ। যৎকৃতং যকি তৎকার্য্যামতনের্ঘ্যঙি ঋস্তরী। অভ্যাসস্তওণোহকারাদট্ স্থাদ্রীতু ঋবর্ণিনি। অনুস্বারঃ পঞ্চমান্তজপাদীনাং চলস্তুবা। বন্চি স্রান্সি কসি ধ্বন্সি ভ্রন্সি পৎক্ষন্দিপদ্বহাং। নীঃ কর্ত্তব্যোগিরোলোযথা জেশিল্যতে ফলং। নসম্প্রদারণং বস্তিবচ্যাদেঃ শ্বয়তেস্তবা। হ্বয়তি স্বপ্ শ্রামিব্যেঞাং বিধেয়ং সম্প্রদারণং। হের্জেঘীঃ কবতেঃ কোকূর্হনোজেদ্বীর্বিহিংসনে। গতে জংহন্ চরশ্চঞুর্ ফলঃ পংফুল্ নিপাতনাৎ। ত্রোজে-ত্রীধ্মে দেখ্রীঃ কার্য্যঃ প্যায়ঃ পেশীশ্চায়শ্চেকীঃ। লুপাদের্ভাবগর্হায়াং কোটিল্যেগমনার্থকাৎ। অট সূত্রি মৃত্যুস্চ্যশ্ভ্যোগৃণাতি শুভ্রচাং নযঙ্। ধাত্বস্তুস্তাস্তলোপঃ স্তাদননিব্যঞ্জনাদ্যঙঃ। যিন্ যিঙোৰ্কাযথা বিদ্বস্থিতাপয়সিতাদয়ঃ। যঙ্লুয়াসর্বস্মাদ্ধাতোঃ। যঙ্লুগন্তাশ্চর্করীতাঃ পরসৈপদ্যদাদয়ঃ। যঙ্লুক্য-ভ্যাসকার্য্যাণিনিপাতঃ সম্প্রসারণং। ননিবর্ত্ত্যং যথা প্রাপ্তমিতরৎকার্য্যমিষ্যতে। অম্মাদীডুাহলিতনৌ বোভোতি বোভবীতিচ। বউত্বং স্থাদ্ধুটিপরেমোনোধাতোর্ব্বমোরপি। উপান্তলোপং কোপ্যাহ্গমা-দেরগুণেস্বরে। রিরোচরীবদভ্যাসাদ্দন্শিদন্ভোঃ পরং নলুক্। রধাদিবত্তেবেটঃ স্থ্যরনিটোযেশকাদয়ঃ। অন্মেভ্যোনিত্যমিট্ কার্য্যোযথা শাশক্ষিতাদয়ঃ। অত্মবন্ধশতিব্ গণোদিতেতরধাতৃদিত কার্য্যমত্রচ। প্রকৃতিগ্রহণেনযঙ্লুকামপিযৎসংগ্রহমাহপাণিনিঃ। সর্কত্রৈব যঙর্থেবাহিস্বোস্তোবাচতপ্রমো। দ্বিক্র-ক্তানুপ্রয়োগোচম্বেচ্ছয়াস্তঃ সমুচ্চয়ে। * । ইতীনাদিকারিকাবলী। * । ইতিসপ্তমবিন্যাসীয়া-খ্যাতকারিকাবলী। * ॥

অন্তমবিক্যাসীয়াখ্যাতকারিকাবলী।

বৃদ্ধিক্রীড়াক্ষয় জীবনভীলজ্জাজন্মস্থিতিজাগরণে। দীপনকম্পনমোদনসিদ্ধিগ্নানাদ্যর্থে ধাতুরকর্মা। প্রাপরাপসমন্ববনিত্র রভিব্যধিসূদতিনিপ্রতিপর্য্যপয়ঃ। উপআঙিতি ধাতুপুরস্থিতিভাগুপসর্গণণাহর্থপরঃ প্রকৃতেঃ। কচিন্তিনভিধাত্বর্থং কচিত্তমন্ত্বর্ততে। পরিশিনস্থিতমেবার্থমুপসর্গণতিস্ত্রিধা। অবাপ্যোরস্থ লোপোবাবতংসঃ পীতয়ঃ প্যধুঃ। কচিদর্থে প্রাদিযোগে হৃকর্মাণোহপিধাতবঃ। সৎকর্মাণঃ প্রজায়ন্তে

সতাং সঙ্গাজ্জনাইব। আপঞ্চত্যঃ প্রযুজ্জন্তে প্রাদয়োবাধিশারদৈঃ। অতঃপরং ন শোভন্তেনবার্থমসুরুজ্জনতে। ক্রিয়াবাচিত্বমাখ্যাভূমেকৈকোহর্থঃ প্রদর্শিতঃ। প্রয়োগাদবগন্তব্যা অনেকার্থাহি ধাতবঃ। আ আ কবর্গোহ্বকারোবিদর্গন্তেতি কণ্ঠজাঃ। ই ঈ চবর্গোযকারঃ শকারশ্চেতি তালুজাঃ। ঋ ৠ টবর্গোরেফশ্চ যকারশ্চেতি মূর্জজাঃ। ৯ ৡ তবর্গোলকারঃ সকারশ্চেতি দন্তজাঃ। উবর্গন্চ পবর্গশ্চোপথানীয়ান্চ ওঠজাঃ। এ ঐ চ কণ্ঠতালব্যা ও ঔ কণ্ঠোষ্ঠজা স্মৃতৌ। বোদন্ত্যোষ্ঠইতি স্থানাত্যক্তী বর্ণসমূদ্ধবে। যাবতাফলবত্যুক্তিস্তাবৎ পর্যান্তকল্পনা। জ্যেমস্ফু টতাৎপর্যাং আয়াদ্বিবরণাদপি। প্রাক্সপ্রমাবিনিদিটেপঞ্চম্যাপরতোবিধিঃ। প্রথমায়ন্তুর্গাভস্তস্থানে শৃন্তোত্ম আগমঃ। তদাদেশাস্তদ্বিতীবিভক্তির্গোগ্যতান্থিতে। অর্থে বিপরিণন্তব্যা প্রাহ্যোগোণোহপ্যবর্জনে। প্রায়িশেষবিধিঃ পশ্চাৎপ্রাপ্তাবেণ্ডিং স্গিকোবিধিঃ। ইত্যাখ্যাতেইউমবিত্যাদীয় কারিকাবলীসমাপ্তা। ৯।৯।

প্রথমবিস্থাদীয়কুৎকারিকাবলী।

কৃতঃ কর্ত্তরিকৃত্যক্তখলর্থাভাবকর্মণোঃ।ভাবেকর্ত্তরিচকাপিকার্য্যাঃ কৃৎসংজ্ঞকাব্যয়াঃ। কৃদ্বাচ্যলিক্সো-ঘূঞাদ্যাঃ পুংসিক্ত্যাদয়ঃ স্ত্রিয়াং। ক্লীবেভাবপ্রত্যয়ান্তাবিশেষাকুক্তিগোচরাঃ। ইত্বৎকার্য্যং একুবন্ধে কৃতিহন্তেস্ত্রঘাৎস্মৃতঃ। বৃদ্ধিগুণিঃ কুটাদেরপ্যাকারান্তাদ্যআগমঃ। ব্রস্থেজরিম্বরিবধিজনামিজ্ৎফলং বিছঃ। শন্ত্ কিন্বজিতেজাগুর্ত্ত এবপ্রজাগরঃ। অকাং হ্রেষোহনব্যয়ানাং খনুবন্ধান্তধাতুষু। নোমত্বঞ্চ যথাজ্ঞানিমন্তো ২ দৌনাদিকক্ষমঃ। স্বীয়ং স্বীয়মনোরপং নাম্যত্তৈকস্বরস্তত্ত্ব। প্রিয়ম্মতান্ত্রিয়ম্মতঃ স্ত্রীম্ম-ভোনাবমেজয়ঃ। হ্রসামুট্সাদস্থগদসত্যাৎ কারেহগিলাদ্গিলে। রাত্রেশ্বট্কৃতিবা রাত্রিকরোরাত্রিকরো-যথা। মধ্যন্দিনং লোকম্প্রীণোভদ্রস্করণমীদৃশং। উষ্ণক্ষরণং ভ্রাষ্ট্রমিন্ধোইগ্রিমিন্ধশ্চপ্রকীর্ত্তিতাঃ। সপ্তম্যুক্তং বিধিদূত্রাদাবর্থপদেনাযুক্তঞ্চেত্ত। পূর্ব্বপরাচ্যঞ্চোপপদং স্থাভূপালোহস্কূচরোহস্বুজ্যাজী। বাসরূপো-হপবাদঃ স্থাত্ত্বৰ্গবাধকোহস্তিয়াং। প্ৰাদূৰ্য্যাদি চ্বিডাজন্তানামান্যুপপদানিচ। ক্লন্তেন সমস্তত্তোনি প্ৰাঙ্ নিপত ন্তিচ। উদর্যুরীচোররীচ বিস্তারে২ঙ্গীকৃতাবপি। শ্রোষড্ বেষড্ বষট্ স্বাহাবিঃ প্রাত্তঃ শ্রৎ স্বধাপি চ। সজুঃ সহার্থেহিংসার্থে তাল্যাতালীচ সংস্কলা। ধ্বংস্কলাভ্রংস্কলাধূলীদেবালাসকলাতথা। কেবল্যা-লীচ বেতালাসম্ সমাসমস্য্যপি। সজুর্থারয়স্তালীকৃত্যচ ভ্রংক্ষলাঃ কৃতাঃ। আক্লীবিক্লাইল্লইলীবিস্তারার্থে হলীকৃতং। সদাদরেনাদরেহসদলমলক্ষরণে তথা। ধাঞ্যোপেচপুরঃ শাস্ত্রং পুরোধায় পুরস্কৃতং। অন্তঙ্গ-ত্যর্থেন চাস্তং কৃত্যাস্তঙ্গত্যভানুমান্। বদিনা চাচ্ছ অচ্ছোদ্য অচ্ছগত্যপ্রভাবভো। অশিক্ষায়ামদঃ কাণ্ডমদঃ কৃত্যজগামসঃ। তিরোহন্তর্জোকৃঞানবাসাক্ষাৎ প্রভৃতয়োহপিচ। মধ্যেপদেনিবচনে চাকুপধানে তথা মনস্থারসি। উদ্বাহার্থে নিত্যং হস্তেপাণোচবন্ধনেপ্রাধ্বং। উপমায়ামুপনিযজ্জীবিকাচ সমস্ততে। অগ্র-হেহন্তর ত্তিপ্রা হল্তের্যোগেকণেমনঃ। অনমন্তাব্যয়েনোপপদং নহিসমস্ততে। বেলাভুং সময়োদাতুং গন্তুং শক্তইমাদিশঃ। তৃতীয়াদেরমত্তৈর্বামাংদোপদংশ মত্তিসঃ। ক্লান্তেন চবাউচ্চৈঃ কুত্বোচ্চঃ-কৃত্যগায়তি। অনএ সমাদেক্তোযপ্ প্রাপ্যাগত্য প্রগত্যত। ব্রস্বাৎ তুক্ পতুরন্ধেস্তাৎ স্ত্রাসংস্কৃত্য সোমস্থ । লঘুপূর্বেনোহ্যাপি স্থাদাগ্ময্যার্চিতোদ্বিজং। আপোবাপ্রাপ্য প্রাপয্য অধ্যাপ্যেত্যত্তনাপইন্। ব্যেঞ্জ্যোঃ সংবায়াজ্যায়ত্স্তিঃ। ুব্যেঞ্চ পরিসম্ভ্যান্বাযথা সন্বীয়কং গতঃ। ন সম্প্রসারণং মাদিদীঙাদ্যন্ত আস্যাদকুমায় বিহায়চ। সম্প্রসারণশ্বত্যশেদীর্ঘমাহুয়জীনবান্। বেঞঃ কৌস্যাৎ। আঙো-লভের্য্যেলাং পশ্চামুট্ স্থাত্নপাৎ প্রশংসনে। প্রাদ্যযুক্ত স্তর্কর্জপ্রাদিযোগেছি খল্ঘঞোঃ। * ॥

ইতি ব্যবস্থাকারিকাবলী। 🕸 ॥

তব্যানীয়োবদেন্তব্যোদীর্ঘশ্চ কর্ত্তরিস্মৃতঃ। • প্রছোহনীয়েরস্থ ঋদ্যাৎ কেলিমঃ কর্ম্মকর্ত্তরি। যঃ স্থাৎ স্বরপবর্গান্তশক্ সহুসি যতাদিকাৎ। ডেট্ চাদন্ত থনিভ্যাং স্থাদেয়াগোঃ পেয়মম্বৃতৎ। **অপ্রাদে** যম্ গদিমদাং য আঙ্শ্চাগুরোচরেঃ। নান্মিবদঃ ক্যপ্চ হনোভাবে ক্যপ্ নশ্চতোভুবঃ। রঞ্ দৃস্তশাস্থ-জুযিণাং ক্যপ্ স্থান্নত্যাস্থকনাকা। ঋতুপান্তাৎ কৃপি চৃতিবর্জাৎ ক্যব্ বৃদ্ধামোজদা। অসং জ্ঞার্থেভ্ঞঃ ক্যপ্সাদ্যথাভ্ত্যামহীপতে:। বাক্যপ্ কৃষ্জিশন্সিক্তহ্ গুহিত্বহুষি সম্ভূঞাং। পদপক্ষাস্বতন্ত্ৰার্থে বাছায়াঞ্গ্ৰহঃ শ্বৃতঃ। ঋবৰ্ণব্যঞ্জনান্তাদ্য্যণ্ কাৰ্যাং তাৰ্যানদীত্বয়া। আবশ্যকৈহৰ্থেভূবৰ্ণাদাপ্লাব্যং নাব্য-ঈশ্বরঃ। আহুঞোযুত্রপিবপিদভিরপ্লপি কম্ চমাং। স্তক্ষেঃ সমবপাণিভ্যাং পাণিসর্গ্যা বটীযথা। যক্যব্-ঘ্যণন্তানিপাত্যার্রাচতোহত্যোত্যবাধনাৎ। অর্ঘ্যঃ স্বামিনিবৈশ্যেচ পণ্যং বিক্রেয়বস্তুনি। বর্ষ্যাবদ্যেতু-বরণপ্রাপ্ত স্বাচ্ছন্দ্যগর্হ্যয়োঃ। বাহুং স্থাৎ করণেবাহেহজর্যাং সঙ্গতকর্মণি। প্রজনে প্রাপ্তকালাগৌরু-পদর্য্যেতি কীর্ত্ত্যতে। তিলাদিকক্ষোবিনীয়োবিপুয়োমুঞ্জউচ্যতে। অব্যুথ্যোযোনব্যথতে সূর্য্যঃ সবিতরি স্মৃতঃ। রোচতে যস্ত্রদোরুচ্যোভিদ্যোজ্যোনদ কর্ত্তরি। পুষ্যঃ দিদ্ধ্যশ্চনক্ষত্রে কার্য্যপোষণদাধনাৎ,। যুগ্যং স্থাদ্বাহনে কৃষ্ট পচ্যঃ কুপাঞ্চ নামনি। ঋক্ সামিধেনীধায্যাস্যাৎ পায্যমানেতু বস্তুনঃ। প্রাণায্যো-২প্রিয় আনায্যোদক্ষিণাগ্নো প্রকীর্ত্তিতঃ। পরিশেতরি পরিণায্যইত্যপি। রাজনূয়ঃ কুণ্ডপায্যঃ সঞ্চায্যক্চ ক্রতোস্মৃতাঃ। হবিব্যস্ত্রনি সান্নায্যং নিকাষ্য আলয়েস্মৃতঃ। চিতো২গ্নিচিত্যাপরিচায্যোপচায্যোতু পাবকে। স্থাতাং শক্যেহক্ষয় জয়োক্রয়াং ক্রয়প্রসারিতে। কেন্সত্ব কেতবৈরূপং দিদৃক্ষেণ্যং হরের্ম্ময়া। তব্যানীয়ে কেলিমযোক্যব্ ঘ্যণ্ কেন্ত্ৰকেতবৈ। কৃত্যালিঙৰ্থাঃ কৃত্যানট্ কৃতশ্চান্তত্ৰ কুত্ৰচিৎ। ভব্যো-পস্থানীয়গেয়জন্যা প্লাব্যাশ্চ কর্ত্তরি। *। ইতিকুৎপ্রথমবিন্যাসীয়কারিকাবলী।। *। *।

षिञीयविगामीय कुरकातिकावनी।

অবণ্ ত্চোকারকোহয়ং কর্তাপাচক এবিতা। অচ্পচাদেঃ পচঃ ম্পর্দ্ধোদেরঃ মর্পোজরদগরঃ। বন্দ্যাদেরনকার্য্যোনন্দনরমণপ্রসাধনালবণঃ। ক্রুধিকম্পন কম্পার্থাৎশব্দার্থভ্যস্ত কর্মারহিতেভ্যঃ। অপিচ হলাদিরুচাদেরোচন বিদ্যোতন প্রমুখাঃ। চংক্রমণোদংক্রমণোজবনোজলনোহথ গর্জনোরবণঃ। এহা-দেণিন্ যথা গ্রাহীস্থায়াযাচ্যপরাধ্যপি। নাম্যুপধপ্রীকৃগুজ্ঞাভ্যঃ কঃ স্ঠাদ্বির্ধাযথা। অপ্রাদিনাম পূর্বান্দান্তাংস্থন্ন ডোগাবিরাহাত গোরার্যাতান্ত্রাধানির । মামুপরাপরিপিবতঃ শীধুপ আগাৎ স্করাপীচ। অন্ততাহিপিচডঃ প্রাঞ্জঃ পরিশ্লোগিরিশঃ প্রদঃ। খুগোহস্তকোবরাহন্দ ময়ুরস্বরকুঞ্জরাঃ। প্রদাদিন্যঃ কর্ম্মদন্ত্রাম্পরে। কন্যাপ্রাণ কন্যাপ্রদান পথিপ্রজ্ঞাগোস্থাইতি সিদ্ধাতি। স্যাম্পুলবিভুজাদেকঃ কুধ্যোনখনুচদ্ধসুঃ। অব্রুকেশিল্প কুমুদনদীফাজোক্রহাদয়ঃ। উপদর্গেবেট্ দৃশিপান্তাায়াভ্যঃ শঃ স্তনপ্রধয়ঃ। উৎপশ্তঃ প্রপিবোহসাবুজ্জ্রঃ সন্ধমশ্চায়ং। কচিদপ্রাদেজিত্রঃ সপশ্যোনস্যাত্রনামনি। সাহিশাতিধারিপরিবেত্নান্দ্রাদিকাদিপ। আদস্তব্যধ্র্যাপ্ স্ঠাদের্যেগ্রহাঃ। গেহেহর্থেভু গ্রহঃ কঃ স্যাদ্গৃক্লাতীতি গৃহং গৃহাঃ। রিজনৃত্যাদেঃ শিল্পিনিকউক্তো নর্তকীতথা রজকী। গৈধাতোন্থক্ গনটোহস্তুণনড্ বৎসরব্রীহ্যোঃ। প্রস্ক্রন্থ সাধ্বারিণ্যকঃ স্থাৎ প্রবক্ষহরঃ। অকঃ স্কাদাশিষিচিরং জীবকোনন্দকঃ তথং। ২। ইতিবুণ্তৃ-চাদি কারিকাবলী। ২।

কর্মণ্যণ্ স্যাদ্হবাবামশ্চ। শীলিকামিচরিভক্ষিভ্যোণঃ পূজনশীলাবিভ্রমকামাঃ। ওদনভক্ষাইনন্তা-এতে হরতে রজমুৎক্ষেপণ বয়সোঃ। তাচ্ছীল্যার্থেছাক্ষঞঃ স্যাৎ পুষ্পাহরঃ ফলাহরা। অহতেশ্চ যথাসাধুমানাহাব্রাহ্মণস্ত্রিয়ঃ। দশুসূত্রাদৃতে শস্ত্রেষশস্ত্রেষু কচিদ্ধঞঃ। দশুকুণ ধনুর্য্যপ্তি ৎসরুতোমর-লাঙ্গলে। ঘটণটোশ্চ প্রহের্বাদণ্ড গ্রাহোহস্কুশগ্রহঃ। অধিকরণেশেতেরচ্ থশরঃ সিন্ধুশয়োবিলেশরশ্চ। প্রথমান্তোত্তানাদাবপি পার্শ্বাদে তৃতীয়ান্তে। নামপূর্ব্বাচ্চরন্টঃ স্থাৎ থেচর্য্যস্থ্রচরাদয়ঃ। পুরোখ্এতো-২ত্রেষুদর্ভেঃ পুরঃ দরোহগ্রতঃ দরী। কল্রর্থ পূর্ব্বযুক্তাচ্চ অশ্বাৎ পূর্ব্বদরীমূগী। আদ্যাদি পূর্ব্বকাৎ কুঞ্চীঃ স্থাদাদিকরাদয়ঃ। হেতুতচ্ছীলাসুকূলার্থেযু শব্দাদ্য কর্মকাৎ। শকুৎস্তম্বপরাৎকৃঞ ইঃ স্থাদ্বৎসঃ শকুৎকরি। নাথদৃত্যোঃ পশাবর্থেহ্যঞোনাথহরিঃ পশুঃ। রজঃ ফলেমনপরাদ্যুহেঃ পদাং রজোগ্রহি। বাতদেবপরা-দাপের্বাতাপিরস্থরোহভবৎ। আত্মকুক্ষুদেরপূর্বকাদ্ভুঞঃ থির্বিধেয়উদরস্তরির্ভবান্। এজতেখশভবে-দিনস্ততঃ শক্রমেজয়ইবেন্দ্রমেজয়ঃ। ধেটোমুঞ্জশুনীকূলপুষ্পাশ্ত স্তনপূর্বকাৎ। নাড়ীমুষ্টিঘটীবাতনাদিকা-করপাণিয়। থার্যামপিয়শচ নাড়িক্ষমনাড়িকয়াদয়ঃ। বাতপ্রবাদজঃ থশ্স্থাদমিবাতমজায়্গাঃ। শর্কপ্রেজ-.হাতেশ্চমাবাঃ শৰ্দ্ধঞ্জহাযথা। বহবিধুতিলাৎ পরস্মাতুদতেঃ থশ্স্যাদ্বহন্তদঃ কাকঃ। মিতনথপরিমাণার্থাৎ পরপচতেঃ থশ্মিত্সপচঃ কৃপণঃ। ললাটপৃর্বাতপতেরুগ্রাসূর্য্যপরাদ্শঃ। কুলপৃর্বাছুক্রজতেরুদ্বহেরপি খশ্ভবেৎ। বাচং যমদিষন্তপপুবন্দর পরন্তপাঃ। অরুন্তদোবহংলিহাভ্রংলিহেরম্মদাঅপি। থঃ স্থাৎ প্রিয়বশপূর্ব্বাদ্দাতাপ্রিয়ম্বদঃ। কূলদর্ব্বকরীযাত্রেকষঃ কূলক্ষধানদী। ঋতিভয়মেঘেযুক্তঞঃ ক্ষেমপ্রিয়ভদ্রপুর্বকাদণপি। আশিতপরাদ্ধুবঃ খঃ করণেভাবেচ কর্ত্তব্যঃ। সংজ্ঞায়াং তৃ রু ভূ ঞ্ধারি-জিদম্তপিদহান্তথা। গমোডঃ থোহপিপ্লবগোভুজগোহয়ং ভুজঙ্গমঃ। ত্বরোরদোস্তরোরোস্তস্তয়োর্বি-হায়সোবিহঃ। পতঙ্গঃ প্লবঙ্গোভুজঙ্গস্তরঙ্গঃ। বিহঙ্গশ্চ ডপ্রত্যয়স্তানিপাত্যাঃ। মন্যতের্ণিন্ থশাবাত্ম-মানেশোভনমানিনী। নগ্নান্ধপলিতস্থলপ্রিয়াঢ্যস্তভগাৎ পরাৎ। ভুবশ্চ্যর্থেপুকঞ্ থিফুনগ্নস্তাবুকআগতঃ। কুঞঃ খনট্স্থাৎ করণেতথান্ধস্করণীরুজা। *। ইতিথমুবন্ধকারিকাবলী। *।

কুমারশীর্ষোপপদাদ্ধন্তের্ণিন্ শীর্ষঘাত্যদো । নরান্তকর্তৃকাদ্ধন্তেইণ্ বাতত্বং ঘৃতং পিব । কপাটহন্তিনোঃ শক্তেকিপাটন্নেইয়মর্ভকঃ । হন্তিমাবাললালাস্ত নগরম্বস্থান্তিন । জায়াপন্ত্যালক্ষণবভিটগ্জায়ান্নেইয়ং ব্রাহ্মণবালঃ । পাণিঘতাড়ঘশকোশিল্পিনিরাজ্ঞাং জেভরিরাজঘইইঃ । দার্ববাঘাটালাক্রান্নেইয় বাহ্মণবালঃ । বর্ণদংঘাটাল রুচাএতেদার্ববাঘাতাইক্রমণঘাতঃ । হুহংকোহন্ট্রা সর্বত্বা কামতুঘাচগোঃ । প্রাদোচভজতের্বিণ্ স্তাদর্থভাক্ স্কুক্পপ্রভাক্ । সহস্তত্ত্বালং সংজ্ঞায়াং বিণ্লোকেইপিপ্রযুজ্যতে । বহন্ট্রাই সোডোঅনজুন্ প্রষ্ঠবাজিপ । পুরোজাশাবয়ভূত্ব্বশক্তবেত্বহন্টবিণ্ । নামপূর্বাৎ খনিজনিদনঃ ক্রমিগমন্টবিট্ । নমণাং বিজ্বনোবাস্তাদ্বিদ্ধাঃ দিল্পুজামণিঃ । ধাতোঃ কিপ্স্তাদনিয়মাৎ কংসজিজ্জিৎ প্রণীর্বিরাট্ । পরোব্রজঃ স্তাদ্বিশিল পরিব্রাত্ত্তণভূষণঃ । মন্কনিক্রনিপত্তবদাদস্তাদিইট্নসাসাঃ । উল্লেশ্মনিগুণোনাল্রক্রীত্যোদ্মপ্রমনী । অনমেদঃ কিপ্কদলাৎ ক্র্যাদমূদকেম্পৃশঃ । ঋত্বিদাধুক্ত্রিফিগুড্গেতেইকিপিনিপাতনাৎ । উপমানেইস্তত্যাদিকর্ম্বণুপপদেদৃশঃ । টক্ সক্রিপঃ কর্মণিস্যুদ্শেদ্কহ্বণৃস্তাপ । অদামুইদমীকিম্ কীসর্বনামান্তজাভবেৎ । জ্যাদ্শেহ্যাদ্যাদ্ক্তাদৃশাদয়ঃ । দেববিশ্বক্স্ব্রাজ্জিত । সম্স্তাৎ সমিসহঃ সঙ্রিতি-স্ব্রাজ্জিত স্তাদ্নাদ্কতি । দেবানঞ্জি দেব্রাজ্জিবিয়ান্তের্ড বিশ্বগঞ্জিত । সম্স্তাৎ সমিসহঃ সঙ্রিতি-

রম্ভির্যান্চত্রে কিপি। সমাঙ্ সপ্রাঙ্ঙ্রে সিভির্যাঙ্ সাসপ্রীচীসমীচ্যপি। করণপরাদ্যজতের্ণিনভূতেস্থাৎ সোম্যাজিনা বিপ্রাঃ! কর্মপরাদ্ধন্তের্ণিন্ কুৎসায়াং মাতৃঘাতীসঃ। বিপ্রবাৎক্রীঞইন্ যজ্ঞান্ধিঃ সার্যাঃ সোম্যাজিনা বিপ্রাং । দৃশঃ কনিপ্কর্মপরাদ্ধর্ম দৃশেক্ষদ্ধরী। সহরাজপরাৎ কুঞোর্ধন্চান্তরিনর্থকাৎ। স্ব্যাজিভ্যাং ঙ্বিপ্ সোমস্থল্যাজাভিন্তত্বরী। ব্রহ্মজন্বত্রপরাদ্ধনোহতীতে কিবিষ্যতে। চতুর্মিয়ময়ুক্ পাপীব্রহ্মভান্তাহাযথা। সোমস্থল্যাদ্মিচিচ্চতথাশ্যেন্চিদাদিচ। পুণ্যকর্মমন্ত্রস্পদেয়ু কুঞঃ স্বক্তং। উপমানকর্তৃপ্রবাদ্ধাতোর্ণিন্ স্বগেন্দ্রগামীসঃ। ধান্বর্থসাধুকারিণ্যর্থেণিন্ সাধুকারীচ। উদাঙ্ প্রত্যাঙ্পরাৎসর্ত্তির্নি স্থাদ্বন্দ্রবাদরি । নামান্তজাতোতাচ্ছীল্যেণিন্ স্থাতের্দ্ধদেবিনঃ। 'ব্রতাভীক্ষ্যার্থয়োর্ণিন্ স্থাদ্বথাস্থিত্বশাষ্যসো। সপ্তমী পঞ্চমী প্রবাজ্জনের্ডোহ্ন্তব্রুত্বিহে। অন্তঃ স্থজাতমন্ত্রোজমজং সরসিজন্তথা। বুদ্ধের্জাতোবৃদ্ধিজোহ্মং জয়ঃ শংস্কারজাম্মৃতিঃ। ইতিকৃদ্বিতীয়বিন্যাসীয়কারিকারলী। া ।

ভৃতীয়বিন্যাসীয়কুংকারিকাবলী।

গম্যাদয়ঃ সাধবঃ স্থারিন্ ণিনস্তাভবিষ্যতি। ক্রিয়ার্থকক্রিয়াযোগেধাতুভ্যস্তমকন্মপি। কর্মণ্যপপদেত্বণ্চ ধেকুদায়োহস্থপায়কঃ। স্থাযুক্ শন্তৃ স্থমানোস্তঃ ক্রিয়াকুপপদেহপিচ। অভিন্ন-কত্ কৈজ্ঞালাশক্তীচ্ছান্তিদহার্থকে। ঘটরভ্লভ্ ধ্রুষাহার্থেকালবেলাদিকেচতুম্। বর্ত্তমানেশন্ত্ শানাবানঃ কুদাত্মনেপদং। বেত্তেব্বাশন্ত্বকাঃ স্থাদিদন্ বিদানরৌদিধন্। জরন্রদ্ধেপ্রশংস্থেইন্ সম্বন্ যজেনযোগিন। ইঙ্ধারিভ্যাং স্থেশন্তৃ অধীয়ন্ ধারয়ন্ শ্রুতিং। অকারানুজ্ভবত্যানেরোচমানে ষ্যমাণবৎ। আস আনস্তঈনঃ স্তাদাসীনঃ কাঞ্নাসনে। আক্রোশেমাঙ্ যুতাদেতৌমাপচন্নুদরস্তরিঃ । পর-স্মৈপদিনোহপ্যানশ্বয়স্তাচ্ছীল্যশক্তিষু। যজমানোযফরিস্থাৎপবমানঃ সমীরণে। আকিপ্তচ্ছীল-তদ্ধর্মতৎ সাধুকারিণিস্মৃতাঃ। তৃন্তচ্ছীলেমথং কর্তাতুর্কাদান্বাদিতাথলঃ। ইফুজ্লাজিনিরালংকৃঞ্ রুচিচর্র্ধির্ৎসহাং। প্রজনাপত্রপেনন্তোন্মত্রৎপত্যুৎপচামপি। জেঃ ফুগ্জিফুভু বস্তদ্বে ভবিফুভূ ফু-রাদৃতঃ। গ্রাফ্লাক্ষাপচিম্বলাং স্থ্রাস্কুক্রেক্ত্রপক্ষ্ণ । গৃধিত্রপ্ক্ষিপ্ধ্নাং রুঃ স্থানগৃধুস্ত্রস্কু স্চধ্যুত । শমাদেরউকস্ত ত্মিন্শমীভ্রমিপ্রমাদিনো। ভুজাদেশ্চসমঃ পশ্চাৎস্জ্পৃচিজ্র রামপি। শৃক্মগমহন-ব্বফুলষপদপং স্থামুকঞ্কার্য্যঃ। বুড্ভিক্ষিজল্পিলুউতিকুট্টাং মাকোবরাকভিক্ষাকো। শীঙ্দয়িপতি পৃহি-গৃহিশ্রদ্ধা নিদ্রাতন্দ্রাভ্যত্মালুঃ স্থাৎ। শদিসদিধেড্দাসিভ্যোক্তঃ স্থাৎশত্রুগুতনন্ধারুঃ। স্থাস্থদাং মবক্ স্থাত্রুসমরোভুবিঘম্মরোহন্মরোহন্মস্থ। ছিদিভিদিবিদাঙ্কুরঃ স্থাচ্ছিত্ররোভিত্ররোগিরাং বিত্ররঃ। মিদিল ন্জোর্থ রঃ কার্য্যোমেছুরোভঙ্গুরস্তরুঃ। ভাদেরুরবরোস্থাতাং ভান্থরোভাষরোরবিঃ। জাগর্ত্তের 🕫 স্থাক্ষাগরিতায়ঃ সজাগরকোহপি। উকঃ কার্য্যোযজিজপিদন্শিবদিভ্যোযঙক্তেভ্যঃ। অচিযঙলুগ্ ভূরিশঃ স্থানেঅকলোলুবাঃ। যাতের্বরশ্চ যাযানশীলোযাযাবরোমুনিঃ। কদীশস্থাপিস্ প্রমদাং বরঃ কস্বরঈশ্বরঃ। স্জীণ্নশাং ক্রপ্সাৎ স্তরজিত্বরইত্বরাঃ। গমঃ ক্রপ্মস্ততশ্চগত্বরোগত্বরী-. রুচিঃ। দীপিকম্পিস্মিনম্ হিন্সিকম্যজস্ভ্যোরঈরিতঃ। সনস্তভিক্ষাশংসামুন্চিকীয় শিংস্লভিক্ষবঃ। ইস্কুবিন্দুনিপ।তেয়তেত্বি স্বপিধ্যাং নজিঙ্। তৃফগ্লোভীশয়ালুস্ত স্বপ্গ্ ধ্ফ্যক্চধাফ্যবান্। শৃবন্দোরারুর্বন্দারুঃ শরারুর্বিশাত্রবান্ ৣ ভিয়োরুক্লুক্চতে ভীরুভীলুভীরুক ভীলুকাঃ কৃষ্জন্ধাঞ্মদিনমাং কিঃ পরোক্ষাবদিশ্যতে। হলাদ্যবর্ণাদক্তেভ্যশ্ছন্দক্তেবং পপিঃ স্থাং। পৃধু-

বিজ্ঞাজিভাসাং কিপ্পূর্থ লাড্ভাঃ পুরেম্বরে । গমিছ্যত্যোর্জ্ঞগদিছ্যদ্দৃদ্হে ত্যোর্দদৃর্জ্ছ । ধ্যাপ্যোধাঁপীচভবতঃ কোধারাপীঃ স্থধীঃ প্রপীঃ । কিবচ প্রছিপ্রজ্ঞাঞ্জাং দীর্ঘোনসম্প্রসারণং । বিসম্প্রেষ্
ভূবোড়ং স্থাছিভুং সন্তুং প্রভূর্ভবান্ । মিত্রভাদেশ্চড়ং কার্য্যঃ শতক্র কক্রশস্তবং । ধাতোন্ত্রট্কর্মাদাবর্ধে
অর্ত্তিপূধ্রথনিসসিহিচরইত্রন্ স্থাৎ পুরস্ত সংজ্ঞায়াং । উণাদয়ঃস্থ্যবিত্তলং যথাযোগ্যকালেক্রাদেরুণ্
ছিদাদেরগজিচিরীস্থাভ্যোঘিত্যেবমাদ্য়ঃ । রুতাদেশ্মন্ । ভীমাদয়োহপাদানেস্থভীমোভীম্বস্তরু ক্রেবঃ
ক্রোতঃ শঙ্কুংসমুক্রশ্চ পিত্রাদয়োনিপাভনাৎ । কচিৎপ্রার্তিঃ কচিদপ্রার্তিঃ কচিছিভাষা কচিদগ্রদেব
অর্থেমুলিঙ্গেপি রুটিযোগাচ্চভূর্বিধং বাত্তলকং বদস্তি । কন্সুকানৌপরোক্ষাবদভিদেশপ্রয়োজনং
ছিক্তেন্ত্রাভ্যাসলোপাদেশানামাদিভদ্বিধিঃ । ভূক্ট্বাংশ্চক্রিবান্ যজং চক্রাণঃ পেঠিবান্ ক্রুতিং । কিত্ত্যাদন্তিগুণোনেহনলোপোননিষিধ্যতে । ভূতমাত্রেসদবপক্রবং কন্সুঃ প্রসেদিবান্ । আরিবান্ চথিবান্ দাখান্ সাহ্বান্ মীঢ়ামিপাত্যতে । কুন্সোসেটৌন
ছিরক্তেন্ত্রকস্বরাদস্তোনচাপরে । গম্বিদ্ভহন্ দৃখিশান্বাজগন্ধান্ জগ্মিবানপি । ২ । ইতিকৃৎভূতীয়বিন্যাসীয়
কারিকাবলী । ২ । ২ ।

চতুর্থবিস্থাসীয়কুৎকারিকাবলী।

ক্তক্তবস্তুনিষ্ঠাসংস্কৌভূতেযথাকৃতঃ কৃতবান্। ক্তিক্তঃ কর্ত্তব্যপিকশ্বারম্ভেস্তুতিং দিজঃ প্রকৃতঃ। গত্যর্থাকর্মকরুহিশীঙ্ স্থাজ্জন্ বসিগ্লিষাসাদেঃ। ভোজনগমনাকর্মকধাতুভ্যঃ ক্তোহধিকরণেচ। বন্ধাৰ দ্বীচ্ছাপুলাৰ্থাৰৰ্ত্তমানেচ। অত্যেভ্যোহপিচ তৃপ্তাশিতস্থ্যস্থিনস্বালপ্তাদ্যাঃ। রান্নিষ্ঠাতোনঃ স্থাৎপু-খ্যাধ্যাধুর্নিমূচিছ্মদিবর্জ্জঃ। আকারাদন্তস্থাসংযুক্তান্ত্রানবান্ত্রানঃ। দাদশ্চভিন্নবান্ ভিন্নোত্রশ্চোরুক্চ সর্কবান্। ল্লাদেরোদকুবন্ধাচ্চলুনোবৈরोবিলুনবান্। প্রায়ঃ পীঃ স্বাঙ্গকতৃ ত্বেপীনোদোঃ পীনবন্মুখং। আঙস্তম্প্রদেদি রোদ্দিক স্থাদিন্ববান্। প্রেলাশেষবাঃ প্নাঃ দিনোতেঃ কর্মকর্ত্তরি। ক্ষেঃ ক্ষীশ্চ-चास्रायनचारका नार्थ्यु जूपा किकः। जन्हर जनपानार नममकः ममक्रवान्। निवस्रविकिशीयार्थानामृा-নোদান 'নপি। ব্রীঘ্রাকুদিত্তোব্দবিদাং বাব্রীণোব্রাণবানয়ং। ভোগ্যাদভাত্তলাভার্থাৎ সত্তার্থাচ্চবিদেঃ সদা। তোনেবিচারণার্থাদ্বাজ্ঞানার্থাদ্ধিত্যমিট্ ননঃ। শ্যঃ শীঃ স্পর্শেদ্রব্যনার্থেতোনশ্চ প্রতেরুজি। ए. - ত্যাং তুশীৰ্কাস্থাদভি শীনোহভি শীনবান্। মকবাঃ ক্ষেশুষিপচাং ক্ষামঃ শুকোনিপকবান্। প্ৰসম্ভ্যাং ক াতেঃ স্তাঃ স্থান্নিষ্ঠাতস্থৃমোনবা। প্রসংস্তীতঃ প্রসংস্তীমএমপ্রস্তীতবানপি। বাতানাশ্রিতধাত্বর্থেনির্ব্বাণঃ নেশৃতং। রামিষ্ঠায়াং স্ফারতঃ স্ফীঃ স্ফাতাশীঃ স্ফীতবামৃপঃ। স্পাদের স্থঃ প্রহলমোহয়ং ক্রেচিআস্প-🜈 ं .রন্দ্বী । নেট্স্থাড়টীদকুবন্ধ খবেটামপতিনিক্ষোঃ । ব্যঙ্ভ্যাংশ্বদোবমিজপোঃ পৃঙ্ক্লিশোশ্চবিভায়য়া । নঠেটি গুণিনঃ শীঙ্পৃঙ্ধ্বিক্ষ্বিদিষিদি স্বিদঃ। স্বৃষ্ণি ক্ষান্তাবুতুপধাস্তবা ভাবাদিকর্মণোঃ। এবমাদসুবন্ধাদিভ্বা নিষ্ঠাক্ত্রোরড্বস্কুধিভ্যাং লুভন্চোশ্মোহনার্চয়োঃ। ত্রশ্চেরিট্সাৎজ্বিহাকশ্চ মিন্নং মেদিতংত্বয়া। বিশ্বিতাতরুমাগতঃ। জুপুঙ্ক্লিশামুকারামুবন্ধানাঞ্বিভাষয়া। ক্ষন্দশুন্দোগুণীক্ত্রাতঃ সেডক্ষুধরুদাদিতঃ। ইদূপাস্তাবকারাস্তহলাদেঃ সন্চপাক্ষিকঃ। ভূষোম্বঃ কুশোবন্চিলুন্চোশ্চৈবমূতেরপি। থফাস্তানাং নোপ- ' ধানামনিড্জান্তনশান্তথা। ঋদন্তর্প্রিঞ্বর্ণাৎ কন্তুবন্ধেষুনেড্ভবেৎ। গোষেতোচাগ্রহাদীনাং শান্ত্র-শস্ত্রাদিকস্যচ। ভূশপ্রতিজ্ঞয়োর্ব্বাঢং বাহের্দ্মস্থেক্ড: 'ক্ষুব্ধ:। কফীং ক্লছে ৃহন্ধকারেভূধ্বান্তং স্বান্তং মনস্থাক্তং। বিশন্তধুটোবৈজাতে হেন্ডোবিশসিতোধর্ষিতঃ। অনায়াসক্তেকাণ্টমবিশব্দেতুঘুটংস্থাৎ।

লগ্রমিন্টবিরিকাঃ স্থ্যঃ সক্তাম্পন্টস্বরার্থকাঃ। প্রভৌপরির্তঃ প্রক্তোদৃতঃ স্থুলেবলিন্সপি। চাষ্ চিঞোঃ পূজার্থেইপচায়িতাপচিতোদিকো। ন্যুর্বোক্তরে সমর্গন্তমনীপেইভার্ণ ইত্যপি। বাহুন্টং হ্রষিতং লোম্মি প্রতিঘাতেচবিস্ময়ে। আস্বান্তঃ সংঘুক্তৌক্রফৌইভ্যান্তস্ত র্ণঃ ক্তান্তাবেটঃ। দান্তঃ শান্তঃ পূর্ণোদন্টঃ স্পন্ট-চহ্মজ্ঞাপ্তাইশ্বরণ । ভিত্তংপণ্ডেমণং শোধ্যদ্রব্যেবিত্তং ধনেস্মৃতং। বৃত্তংব্রুতেরিনন্তস্পাধ্যয়নেইস্ত বৃত্তিতং। স্কুল্কৌবকুরোলাঘর্থঞ্জাঅপ্রাদিযোগিনঃ। দ্যুতিস্পতিস্থামামন্তইঃ স্থাত্তেকসুবন্ধিনি। ছাশোস্তবা ধাঞ্চোহিঃ স্থাদধেত্দাদহ প্রদত্তবান্। প্রাদিস্বরাদ্বতোদোলুক্ তহপ্রাদার্যখনতাক্র্যুক্তরাক্রা কর্মেন প্রতিঃ শাধীপ্রস্কুল্তবান্। অদোয্যিঃ স্থাদ্যপিচ জন্ধমন্ধ প্রজ্ঞাচ। বন্ধনাদিনিষেদ্রেটাং নণোঃস্তোবিসমন্ত্রণ । এযামতির্মুট্যগুণেলোপস্তম্বাততির্গতিঃ থাজাসাঃ থন্জনিসনাং সনঃ সাসচবাতিকি। যামমন্তন্যমাংস্রাঃ কৌতঃ স্থাহসংঘদ্বিমহপ্রগহ। আঃ পঞ্চমোপধাদীর্যঃ কৌচনবান্তিভুকুক্রমঃ। মোনত্বংস্থাহকোবমোশ্চ নাদনর্গোনচেন্তবেহ। ছোঃ শৃঠোপঞ্চমেধৃটিকিপিতুপ্রায়িকাবিমো। স্রিব্যবিক্র্রিরম্বাং সোপ্রস্থাপিবস্থ উঠ। অবের্শ্বনোহস্ত্যম্বরাদেলুক্ ক্স্থাদোশ্বহেশ্বরঃ। অবর্ণাদৃঠিতঃ স্থাহ গ্রেণি বিলিপ্তির্জনেঃ। ব্রফাহপরেছিরোলোপ্যোয্বেটি ব্যঞ্জনেত্বযে। ৯। ইতিক্রাদিকারিক্রানী। ৯। ইতি কৃচজুর্থবিস্থাসকারিকাবলী। ৯। ৯।

পঞ্চম বিন্যাদীয়কুৎকারিকাবলী।

চজোঃ কগৌঘসুবন্ধেধুটিচার্কোক্তিযুক্তয়ঃ। অঙ্ক্বাদীনাং হশ্চঘঃ স্কুল भन्र (को। কবর্গাদিব্রজ্যজান্নগত্যর্থেবন্চতেরপি। ক্লচার্চিত্যজ্যাচিযজাং ঘ্যণিরোচ্যার্চ আবশ্য-কার্যেঘ্যণিচ অবশ্যং পাচ্যমোদনং। নিপ্রপূর্বযুক্তেঃ শক্যেনিযোজ্যোহ্যং প্রয়ে **গাক্যং** পদকদম্বঞ্চেব্যাং ভক্ষ্যান্সবস্তুনি। ঘঞ্ভাবেস্থাদসংজ্ঞায়ামপ্যকর্ত্তরিকারকে। স্থ ग्ना করণভাবয়োঃ। উল্কেরবোদঃ গ্রন্থস্ত প্রশ্রথে হয়ংহিমশ্রথঃ। অদোঘস্স্থাদ্যথাদূর্বনা TI স্ফুরওকার আত্বদাস্ফারঃ স্ফোরঃ সরোরুহাং। ইঙাদন্তাঘঞধ্যায় আদায়োধায়ইত্যপি স্তৃ ঞোহশব্দ প্রথনেপ্রেহপ্যযজ্ঞকে। ব্যক্তস্থনাশ্লিবিষ্টারঃ পঙ্ক্তিচ্ছন্দোবৃহত্যপি। সা সংস্তাবোহ্স্তব্যংস্তবঃ। প্রাদ্যযোগেঞিশীভূভ্যঃ প্রায়োনায়োনয়োহপিচ। ভাবোভবঃ প্রভ প্রণয়াশ্রয়ো। চিঞাহন্তেনগ্রহণেপুষ্পপ্রচায়মাতনোৎ। কিশ্চাবাদেশরীরেচ কায়োনি রাশ্রর্থেংপিস্তান্নিকায়ঃ পুষ্পানাংনিচয়োহস্তসাং। উদিগ্রহঃ সমিমুন্টাববেবাবর্ধরোধনে। প্রতি নামবগ্রাহোহপ্যবগ্রহঃ। প্রেরজ্জোপ্রগ্রহোহখাদিবদ্ধে প্রগ্রাহইত্যপি। পরিণায়ঃ শারি যুক্তিব্যবস্থিতো। উদক্ষোহসুদকাৎ পশ্চাজ্জালমানায়ঈরিতঃ। শীঙোব্যুণাভ্যাং পর্য্যায়েবি অল্স্বরাস্তগ্রহিগমিরুদৃভ্যঃ কচিদ্যুতঃ। উপদর্গাদদোঘদ্ধবিঘাদোণশ্চনেঃ প্রদম্পূর্বব্যদেহধেপ্রমদঃ সম্মদঃ সতাং। অপ্রাদেমিদ্ব্যধিজপাং মদোমন্ত্রজপোব্যধঃ। স্বন্হসোক সকর স্বানোহসোহাসশ্চযোষিতাং। সন্ধিন্ম্যুপেভ্যশ্চযমঃ সংযামঃ সংযমোষমঃ। নৌগদ্নদন্ত্বনপঠাং নিগাদে जि গদোযথা। পণতেশ্চপণঃ পাণঃ পরিমাণেভুনৈত্যিকঃ। কণঃ প্রাদেচিবীণায়াং নিকাণোনিকণঃ কণ্ঃ প্লহোহক্ষেদর্ভেঃ প্রজনে সমুদ্র্যামজতেঃ পশো। অর্থভেদেপ্রাদিযোগেচাল্যঞোর্যত্যয়ঃ কচিৎ। অভ্যুপাল বিষুল্বেঞাহব্চাভিহবোনৃণাং নিহবঃ। অহিবইতিযুদ্ধেস্তাদ্ধন্তের্বধ্চঘন্চকাঠিতে। ষারপ্রকোষ্ঠাভ্যাংবহিঃ ছলে। উদ্বনস্তক্ষণাধারেহস্তর্ঘনোহভ্যস্তরম্বলে। অঙ্গস্থপঘনঃ শোভমানৈরপ-

ঘনৈঃ স্ফুরন্। ত্রুঘনায়োঘনবিঘনাঃ করণেহলন্তানিপাত্যন্তে। স্তম্মঘনন্তমন্ত্রোবিল্লঃ পরিঘন্তথা প্রতিঘঃ। নিদ্রঃ কর্ম্মণিনিমিতোনিঘউদ্যস্তপ্রশংসাসাং সঞ্জঃ। সমূহআশ্রয় বচনউপদ্রঃ কুড্যোপদ্রং ্বসতি। স্থাস্মাপাব্যধ্যুধাদেঃ কঃ প্রস্থঃ প্রস্থা প্রপা। টকুবন্ধাদপুচ্কার্য্যোনন্দপুর্ভাজপুস্তব। ভুকুবন্ধাত্রিষক্ তেন নির্নুতেদজ্রিমংধনং। যাচিবিছিপ্রছিযজাং স্বপিরক্ষিয়তাঞ্চন্ড। উপসর্গেদঃ কিঃ স্থাদাদি ব্যবধিঃ প্রধিঃ প্রণিধিরুপাধিঃ। কর্মণ্যধিকরণেহর্থেজলনিধিরুদধিঃ প্রোনিধির্কারিধিঃ। অনভভাবাধিকরণকরণেযুযথাটনং। স্বন্নান্তেভ্যোনাম্বিঘঃ স্থাদেবহুস্বশ্চক্তিঃ স্ত্রিয়াং। ঋদস্ভল্বাদিতোনিঃ স্থাদ্যামাহাজ্যাং ছনিঃ স্মৃতঃ। কৃষ্যাদেঃ কিঃ কৃষিঃ শূলির্জনিধূ লির্ ষিদূ ষিঃ। অজাদিভ্যস্তণি রাজিঃ সারীরাজিশ্চরাজ্যপি। সম্পদাদেঃ কিপ্চসম্পৎসন্বিদ্ গ্ভীর্বিপত্রির্ৎ। ক্তিরপিভাবেপচিগা-পান্থাং পক্তিঃ ন্থিতিঃ পীতিরুলগীতিঃ। ব্রজি যজি সমজাদিভ্যঃ ক্যব্ব্রজ্যেজ্যাসমজ্যাচ। ক্যঞোযক্চ ক্রিয়াক্ত্যাক্তিঃ দর্ভেস্ত্রযোহপিচ। উতিসাতিহেতিযুতিজ্তয়ঃ স্থ্যন্ত্রপাতনাৎ। পর্য্যেষণাপরীষ্টিশ্চ কীর্ত্তনাকীর্ত্তিরিত্যপি। অপীচ্ছামুগয়াবর্হাজাগর্যাজাগরাঝর।। গুরোঃ সেটোহলস্তাদঃ সনাদিপ্রত্যয়া-দিপি। ষরুবন্ধভিদাদেরঙ্ভীষিচিন্ত্যাদিকাদপি। আদন্তাচ্চ প্রমাপ্রস্থাজামাত্রোপধাপ্রদা। ঈষিশ্রস্থ্যা-সিবিদ্বন্দইনস্তাদপ্যনঃ স্মৃতঃ। অকণ্ভবতি সংজ্ঞায়ামুদ্যানপুষ্পভঞ্জিকা। অকণ্পর্য্যায়ার্হঋণেভাবমাত্রেচ কুত্রচিৎ। ইঞ্পিপ্রশ্নোত্তরয়োঃ কাকারিঃ কারিকাক্রিরা। নঞ্পুর্ব্বাদাক্রোশেহনিঃ স্থাৎ। নচ্স্থাৎ ক্রিয়াবিনিময়েব্যাক্রোশীব্যবহাস্থাপি। ইনণ্ক্রিয়াভিব্যাপ্তোস্থাৎ সতাং দাম্বেশিনং ক্রতো। 🕸। ইতি क्लाभि कात्रिकावनी। #1

ঈষৎস্থপ্রবিংসোকার্য্যেত্র্য্থেত্রংপ্রবিকান্ত্র্থল্। ঈষৎস্তৃত্যুপ্রবিকর্ত্কর্মপ্রবিকভূক্ঞোঃ। হিত্বাদরিদ্রোমাদন্তাদনঃ স্থাৎ থলিরোধকঃ। শাস্থ যুধ্ মুষ্ দৃশ্ ধ্রমাদ্রাঈষৎশাসঃ স্থশাসনঃ। ণিন্স্থাদাবশ্যকেহবশ্যক্ষরী লক্ষপ্রদায্যপি। অধমর্ণার্থেচ ণিন্স্থান্মহ্যন্দায়ীশতস্তবান্। গোণাদেযপ্রত্যয়ামুখ্য ক্রিয়াকালে
ভবন্তিতে। তিক্স্যান্নামন্যাশিষিচ কেচিৎ কৃৎপ্রত্যয়া অপি। ॥। ইতিকৃৎপঞ্চমবিন্যাসকারিকাবলী।

য়্প্রিন্যাসীয় কৃৎকারিকাবলী।

পরাবরাভ্যাং যোগেজ্বাঅপ্রাপ্য বার্দ্ধকং বলং। মেণ্ডোমিশ্চ যপিনবা অপমিত্যাপমায়চ। নিষেধবাচ্যলংখলোঃ পক্ষেজ্বাস্যাদলং কৃষা। কর্ভু রৈক্যেজিয়ানৈক্যে পূর্ব্বকাল জিয়ার্থকাৎ। অপূর্ব্বকালাৎ
কৃত্রাপি বনৎ কৃষাপততুবি। গম্চাভীক্ষ্যে হরিগায়ং গায়ং জীড়তি কাননে। অপ্রেপ্রথমপূর্বেষ্ অপ্রেভোজং জগামসং। নিল্যে কর্মণি হ্রস্বান্ত্র্যাহর্থেইপি কৃঞঃ থমিঞ্। অভ্যথৈবং কথমিথং পূর্বাদনধিকার্থকাৎ। প্রভুত্তরস্যাক্ষময়াদানে যথাতথাপরাৎ। যাবতি জাববিদ্মভ্যাং গম্ জাবজ্জাবমল্লাশী। কর্মণি
সাকল্যে দৃশিবিদ্ভাং যতিদর্শমাঞ্রতে। পূরের্ণম্স্যাদৃশ্চ লুয়ার্ষ্টিপ্রমাণবোধনে। চর্ম্মোদরপরাৎ
পূরেশ্বর্দদেগদিধি। গম্ চেলার্থপরাৎ কোপেশ্চেলকোপমপোহমূচৎ। গাত্রপুক্ষয়োঃ স্নাতেরস্কর্ভবদিনার্থকাৎ। নিমূলেক্যতের্গম্ স্যাৎ সমূলেতু হনেরপি। জীবেগ্রহঃ শুক্ষপূর্বাৎপিষস্তুণম্।
জীবগ্রাহং বিগৃহণতি শুক্ষপেষং পিনষ্টিচ। অকৃতেতু কৃঞ্চোলোকে কৃত্রকারং করোতি কিং। করণোপপদেহন্তেং পাদ্যাত্মহন্মইাং। গম্গ্রহেরপি বর্ত্তিবৃত্তিভাং হস্তবাচিকরণোপপদেবু। হস্তবর্ত্তম্পান্ত্রতপাণিগ্রাহ্মেব জগৃহেসমহেভং। স্বার্থবাচিকরণের পুয়েণ্ডান্ম ক্রেনের পিরস্তু। আত্মপোষমপুয়দগজপোষং
পোষতি দ্বিণপোষমপুঞ্চাৎ। অধিকরণেরুচ বন্ধঃ কাননবন্ধং বরন্ধান্যেরং। চক্রবন্ধং সবদ্ধাহস্তবন্ধং বন্ধ-

कात्रिकावणी।